

जेताचार्य-जैन-प्रतिपादक-पुण्य-श्री-श्री-तीलकजी-परमात्म-

विश्वविद्यालय-अवगारधर्मपुस्तकविद्यालय-पुण्य-१९७०

हिन्दी-गुरुजी-भाषा-मुद्रा-१९८६

श्री-साताधर्मकथासूत्रम्

SRI SATADHARMA

KATHANCA SUTRAM

(तृतीयो भागः)

संयोजकः

संयोजक-श्री-साताधर्मकथासूत्र-विश्वविद्यालय-

महोदय-श्री-साताधर्मकथासूत्र-विश्वविद्यालय-

प्रकाशकः

प्रकाशक-श्री-साताधर्मकथासूत्र-विश्वविद्यालय-

प्रकाशक-श्री-साताधर्मकथासूत्र-विश्वविद्यालय-

क०-गु०-ने०-सा०-जैन-प्रतिपादक-पुण्य-१९७०

ने०-श्री-साताधर्मकथासूत्र-विश्वविद्यालय-

गु०-गुरुजी

प्रकाशक-श्री-साताधर्मकथासूत्र-

१९८६/१००

श्री-साताधर्मकथासूत्र-

१९८६

श्री-साताधर्मकथासूत्र-

१९८६

श्री-साताधर्मकथासूत्र-

१९८६

प्रकाशक-श्री-साताधर्मकथासूत्र-

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज-
 निरचितया अनगारधर्माभूतवर्णिष्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं
 हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्-

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम् ।

SHREE GNĀTĀDHARMA
 KATHĀNGA SOOTRAM

(तृतीयो भागः)

नियोजकः

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-
 पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराजः

प्रकाशकः

‘मद्रासनिवासी-श्रीमान्-शेट-ताराचंदजी-साहेब
 गेलडा’ तत्प्रदत्त-द्रव्यसाहाय्येन अ० भा० श्वे०
 स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः श्रेष्ठि-
 श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः
 मु० राजकोट

प्रथमा-आवृत्तिः
 प्रति १५००

वीर-संवत्
 २४८२

विक्रम-संवत्
 २०२०

ईसवीसन
 १९६३

मूल्यम्-रु० २५-०-०

भगवानुं ठेकाछुं :
 श्री अ. बा. प्रवे. स्थानकवासी
 जैन शास्त्रोद्धार समिति,
 ठे. गरेडिया कुवा रोड, श्रीन बॉन्ग
 पास, राजकोट, (सौराष्ट्र).

Published by :
 Shri Akhil Bharat S. S.
 Jain Shastroddhara Samiti,
 Garedia Kuva Road, RAJKOT,
 (Saurashtra), W. Ry, India.



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
 जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यन्नः ।
 उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि सन्नानधर्मा,
 कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्दः



करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
 जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
 जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
 है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान में यह लायगा ॥ १ ॥

मूल्यः ३. २५=००

प्रथम आवृत्ति : प्रत १२००
 वीर संवत् : २४८८
 विक्रम संवत् २०१६
 धसवीसन् १९९३

: मुद्रक :
 मण्डिलाल छगनलाल शाह
 नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस,
 धी कांटा रोड, अभहावाड.

दक्षिण भारत में जैन समाज के प्रखर नेता दानवीरशेठ स्व० श्रीमान ताराचंदजी साहेब गेलडाकी

जीवनझलक

दक्षिण भारत के प्रवास पर आये हुए किसी भी व्यक्ति के दिलमें, मद्रास जैसे शहर के जैन समाज की शिक्षण और-वैद्यकीय संस्थाओं का सुव्यवस्थित क्रम और प्रबंध देखकर आनंद हुए बिना नहीं रह सकता। और स्वतः ही जैन समाज की दान-दिशा को इस ओर ले जाने वाले व्यक्तिके रूपमें दानवीर शेठ स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलडाका नाम व व्यक्तित्व नजरमें आये बिना नहीं रहता।

मध्यम कदका इकहटा बदन, खादीकी धोती, खादीका कुरता और खादी की टोपी, पैरमें केन्वासके पादत्राण हाथमें छोटीसी लकड़ी-चमकती तेज आंखें और ७० वर्ष की अवस्थामें भी-जवानों की तेजी-ये आप के अभिन्न गुणों के सूचक थे। उनके यह सादगी अंत समय तक भी कायम रही थी।

सन १९३७ में आप राजकोट पधारे थे वहां अनेक शिक्षण संस्थाओंको देखकर आपने अपने मनमें तय किया कि मैं मद्रास जाकर शिक्षाकी ऐसीही संस्थाएँ बनाऊंगा। उनके विचारों की पुष्टि के रूपमें श्रीमान् विरदीचंदजी सा. मलेचाने ५००००) रुपया दान दिया और वहांकी श्री एस.एस.जैन एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई। इस सोसायटी के विकास के लिये आपने अपने व्यापार से भी-निवृत्ति ले ली और-क्रमशः इसका विकास करते रहे। इस सोसायटी के तत्वावधानमें क्रमशः प्राथमरी स्कूल, बोर्डिंग होम; हाईस्कूल एवं कॉलेज भी-स्थापित हुए और आज भी सुचारु रूपसे चल रहे हैं। जब तक ये संस्थाएँ पूर्णरूपसे आत्म-निर्भर नहीं हुईं तबतक आप सोसायटी के प्रारंभ कालसे मंत्री बने रहे। इतनाही नहीं प्रत्येक संस्था के लिये आपने दान दिया था ही-किन्तु ताराचंद गेलडा जैन विद्यालयके लिये ३१०००) रु.का भव्य दान दिया। इसके उपरांत भी २२००० रु. का और दान आपका ऐसे आप

सोसायटी के पेइन (संरक्षक) बने। सन १९५६ में अन्धों को भी-कार्य संचालन का अनुभव हो एतर्था आप निवृत्त हुए, किन्तु अंत समय तक सोसायटी के प्रत्येक कार्य के लिये आप सलाह देते रहे और वह समाज का गौरव था कि आप जैसे कुशल एवं विचक्षण सलाहकार मिले।

दानके प्रवाह को शुभ मार्गमें बहाने का आप का प्रयास अत्यंत अनुकरणीय रहा। और मद्रास के जैन समाजने वैदकीय राहत क्षेत्रमें “जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी” स्थापित की-जिसके तत्त्वावधानमें कई डीसेपेंसरियां और एक प्रभूतिगृह चल रहा है। आप उसकी कार्य कारिणी के पदाधिकारी व सदस्य रहे।

इतनाही नहीं आपने अपने व्यापार क्षेत्रको नहीं भूला और सैदापेट (भूदान) में शुद्ध आयुर्वेदिक औषधालय-जिनेश्वर औषधालय खोला जिसके साथ आगे जा कर अपनी पत्नीके नामपर रामपुरजवाई गेलडा प्रभूतिगृह भी खोला। एतदर्थ आपने अपने द्वितीय पुत्र स्व. नेमीचंदजी की इच्छाके अनुसार अलग ट्रस्ट बना दिया है।

आपने अपनी जन्मभूमि कुचेरा के लिये भी कुछ करने के विचार से वहां पर भी छात्रालय शुरू १९४२ में करवाया और उसके प्रारम्भकाल से आपकी ओर से २५० मासिक सहायता उसे दी जा रही है-जो अब भी चालू है।

तदुपरांत ताराचंद गेलडा ट्रस्ट भी आपने कायम किया जिससे कई उदीयमान जैन समाज के विद्यार्थियों की आशाओं को प्रोत्साहन दिया गया और दिया जा रहा है।

उनके अदम्य उत्साह और जोश के साथ उनके दृढ मनोबल का परिचय न दिया जावे तो उनका व्यक्तित्व अधूरा रहेगा। वे अपने आप आगे बढ़ने वाले थे। बहुत ही छोटी उम्र में उन्होंने व्यापार किया और ताराचंद गेलडा एन्ड सन्स, टी. बी. ज्वेलरीज एवं महेन्द्र स्टोर्स आदि व्यापारिक फर्म चले। सामान्य पूंजीसे लेकर वे लाजोपति बने। सामान्य शिक्षा ज्ञान के बाद भी चार भाषा की जानकारी और प्रबल व्यापारिक ज्ञान आपकी विशेषता थी।

आजीवन खादीव्रत, हाथघंटी का पीसा हुआ धान और गायका दूध-घी कठिन व्रत वे आजीवन निभाते रहे। समाज-सुधारणा भी आपने कई प्रकारसे की।

५

७८ वर्ष की आयुमें आपका पंडित-मरण हुआ जो आपके यशस्वी जीवन की यशकलगी के समान था। अर्थात् यशस्वी पुरुषों के शिरोमणि थे।

आपके सुपुत्र श्रीमान् भागचंदजी सा. गेलडा भी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। जैन एन्ड नेशनल सोसायटी के आप सदस्य एवं पदाधिकारी रह चुके हैं-वर्तमानमें आप सोसायटीके सभापति हैं। गोसेवा और पांजरापोल के कार्यके लिये आप घर २ जाकर चंदा करने में संकोच महमूस नहीं करते और विगत आठेक वर्षों से आप मद्रास पांजरापोलके मंत्री हैं और उसका बहुत ही विकास किया है। द्वितीय पुत्र श्री नेमचंदजी स्वर्गवासी हुए हैं किन्तु आप भी औषधालय निमित्त ट्रस्ट करके गये हैं। तृतीय पुत्र श्री खुशलचंदजी व्यापार-कुशल हैं और कार्य-भार सम्हाले हुए हैं।

इस आगम प्रकाशन के लिये जब आपके पास डेप्यूटेशन पहुँचा तब इन सुपुत्रोंने उदारता से ५००१) रु. दिये हैं एतदर्थ धन्यवाद है। अन्य सज्जन भी उनका अनुकरण करें यही अभ्यर्थना है।

सेक्रेट्री
शास्त्रोद्धार समिति

ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र तृतीय भा. की विषयानुक्रमणिका

क्रमाङ्क	विषय	पेज
	चौदहवां अध्ययन	
१	तेतलीपुत्र प्रधानके चरित्रका वर्णन	१-१८
	पंद्रहवां अध्ययन	
२	नंदिफलके स्वरूपका निरूपण	११-१३१
	सोलहवां अध्ययन	
३	धर्मरुचि अनगारके चरित्र निरूपण	१३२-१८२
४	सुकुमारिका के चरित्रका वर्णन	१८३-२५१
५	द्रौपदी के चरित्रका निरूपण	२५२-२९६
६	द्रौपदी पूजा चर्चा	२९७-४२६
७	द्रौपदी के चरित्रका वर्णन	४२७-५८५
	सत्रहवां अध्ययन	
८	नावसे व्यापार करने वाले वणिजोंका वर्णन	५८६-५९०
९	नावके निर्णामक का दिङ्मूढ होनेका कथन	५९१-५९५
१०	कालिक द्वीपमें सुवर्ण आदिका वर्णन	५९५-५९६
११	कालिक द्वीपमें हिरण्य आदिसे पोतकाभरना	५९७-६००
१२	कालिक द्वीपमें रहे आकीर्णाश्वों का वर्णन	६०१-६१९
१३	आकीर्णाश्वोंके द्रष्टांतको दार्ष्टान्तिक के साथ योजना	६२०-६३७
	अठारहवां अध्ययन	
१४	सुंसमा दारिका के चरित्रका वर्णन	६३८-७०७
	उन्नीसवां अध्ययन	
१५	बुड्ढरीक-कंडरीक मुनिके चरित्रका वर्णन	७०८-७५२
	द्वितीय श्रुतस्कंध	
१६	द्वितीय श्रुतस्कंध का मङ्गलाचरण	७५३-७६०

७

१७ द्वितीय श्रुतस्कंधका उपक्रम	
प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन	
१८ कालीदेवीका वर्णन	७६१-८०५
दूसरा अध्ययन	
१९ रात्रीदेवीका वर्णन	८०६-८१०
तीसरा अध्ययन	
२० रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण	८११-८१४
दूसरा वर्ग	
२१ शंभानिशंभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन	८१५-८१९
तीसरा वर्ग	
२२ अल्लादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८२०-८२५
चौथा वर्ग	
२३ रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२५-८२८
पांचवा वर्ग	
२४ कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२९-८३३
छठवा वर्ग	
२५ उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिषियों का वर्णन	८३४-८३५
सातवां वर्ग	
२६ सूर्यमादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३६-८३८
आठवां वर्ग	
२७ चन्द्रमादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३९-८४२
नववा वर्ग	
२८ यमादिदेवियों के चरित्रका वर्णन	८४२-८४५
दशवां वर्ग	
२९ कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८४६-८५१
३० शास्त्र प्रशस्ति	८५२

તા. ૧૫-૭-૬૩ ના રોજ કલાસવાર

મેમ્બરોની સંખ્યા.

૨૭	આદ્ય મુરખીશ્રી, ૫૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૩૨	મુરખીશ્રી, ૧૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૧૩૩	સહાયક મેમ્બરો, ૫૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૫૮૬	હાઇફ મેમ્બરો, ૨૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૪૬	બીજા નંબરના જુના મેમ્બરો, ૧૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૮૨૭	કુલ મેમ્બરો

રૂપિયા બસો પચાસ તથા રૂપિયા પાંચસો વાળા મેમ્બરો લેવાનું હવે બંધ છે. ફક્ત રૂ. ૧૦૦૧ થી મુરખીશ્રી માટે ૭૦ સીતેર જગ્યા ખાલી છે અને આદ્ય મુરખીશ્રી રૂ. ૫૦૦૧ થી હાખલ કરવામાં આવે છે.

મેમ્બરોની સંખ્યા પૂરતાં જ શાસ્ત્રો છપાય છે જેથી પાછળથી હાખલ થનારને સૂત્રો મળવાં મુશ્કેલ છે માટે જાણસુ ભાઈઓ તથા બહેનોને અમારી વિનંતી છે કે તેઓ મુરખીશ્રી અથવા આદ્ય મુરખીશ્રીમાં પોતાનું નામ જલ્દી મોકલી આપે.

રાજકોટ
તા. ૧૫-૭-૬૩

નમ્ર સેવક,
સાકરચંદ ભાઈચંદ શેઠ
મંત્રી.

आद्यमुखाश्री

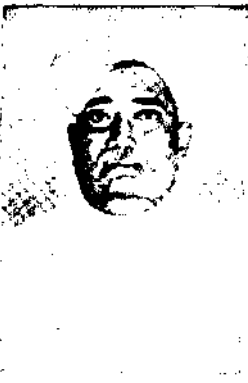


शेठ साहेबश्री ताराचंदजी साहेब. गेलडा
मद्रास

आद्यमुर्खीश्री



शेठ साहेबश्री ताराचंदजी साहेब. गेलडा
मद्रास



(स्व.) श्रीश्री हरप्रभुचंद्र कालीदास पारिव्या
भाष्यवडः



કોહારી હરગોવિંદ જ્યોત્સનાઈ
રાજકોટ.



शेठश्री शांतिलाल मंगणदासलाल
अमदावाद.



(સ્વ.) શેઠશ્રી વાર્શીભાઈ અવજલાલ
બારસી.



(સ્વ.) શેઠશ્રી છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર
અમદાવાદ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી હરખચંદ કાલીદાસ વારિયા
ભાણુવડ.



કોઠારી હરજીવિંદ જયંદભાઈ
રાજકોટ.



શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી ધારશીભાઈ જીવજીલાલ (સ્વ.) શેઠશ્રી છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર
ખારસી. અમદાવાદ.



આધ્યમુરખીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ.) વિનોદકુમાર વીરાણી
રાજકોટ.
(દીક્ષા લીધા પહેલાં શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતાં)



શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા., લુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેવંતરાજજી લાલચંદજી સા.

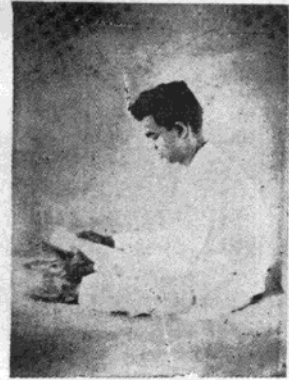
આધ્યમુરખીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ.) વિનોદકુમાર વીરાણી
રાજકોટ.
(દીક્ષા લીધા પહેલાં શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



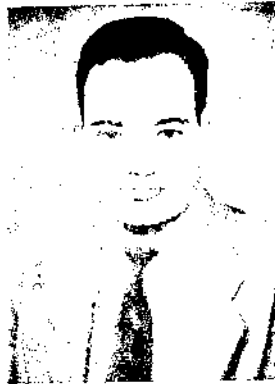
શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા. હુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેવંતરાજજી લાલચંદજી સા.

આવિમુરખીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
વ્યવસ્થાપક.

સ્વ. શ્રીમાન્ શેઠશ્રી મુકુન્દચંદ્ર મા.
ખાલિયા પાક્ષી મારવાડ.



(२५) शेरश्री दिनेशबार्ध कान्तिनाथ शाह
ज्यमहापाद.

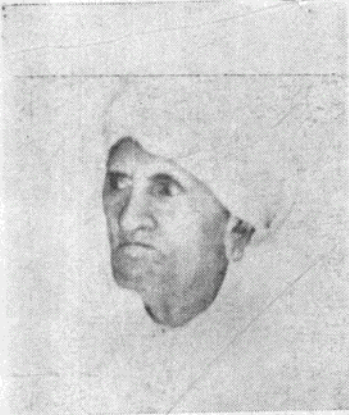


શ્રી જીજિભાઈ પાવાલાલભાઈ
અમદાવાદ.



સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

આદ્યમુરખીશ્રીઓ



સ્વ. શ્રીમાન્ શેઠશ્રી મુકતચંદ્ર સા.
બાલિયા પાલી મારવાડ.



(૨૫.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ.



(સ્વ) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



શ્રી જીજીભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ.



સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

આદ્યમુરજીશ્રીઓ



શેઠ સાહેબ શ્રી કીશનચંદ્ર સાહેબ
જેહરી દિલ્હી



સ્વ. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ શાહ
અંભાલ



૧ વચ્ચે બેસેલા મોટાભાઈ શ્રીમાન
મૂલચંદ્ર જવાહરલાલ અરાડયા
૨ બાજુમાં બેસેલા મિત્રીલાલ
અરડયા
૩ ઉભેલા સોથી નાનાભાઈ પૂનમચંદ
અરડયા



શ્રી વૃજલાલ દુર્લભ પારેખ
રાજકોટ.

આદ્યમુરજીશ્રીઓ



શેઠ સાહેબ શ્રી કીશનચંદ્ર સાહેબ
જેહરી દિલ્હી



સ્વ. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ શાહ
ખંભાત



૧ વચ્ચે બેઠેલા મોટાભાઈ શ્રીમાન
મૂલચંદ્ર જવાહરલાલજી બરાડયા
૨ બાજુમાં બેઠેલા મિશ્રીલાલજી
બરડિયા
૩ ઉભેલા સોથી નાનાભાઈ પૂનમચંદ
બરડિયા



શ્રી વૃજલાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.

॥ श्रीचीतरागाय नमः ॥

श्रीजैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-पासीलालव्रतिविरचितया अनगार-
धर्माभूतवर्णिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

तृतीयो भागः

अथ चतुर्दशाध्ययनं प्रारभ्यते

अस्य व्याख्यायमानचतुर्दशाध्ययनस्य व्याख्यातेन त्रयोदशेनाध्ययनेन सहाय-
मभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने सतां गुणानां गुणाभिर्वद्भक्तसद्गुरुदेवरूप-
सामर्थ्यभावे हानिरुक्ता, इदं तु-तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसंपदुपजायते, इत्यभि-
धीयते, इत्येवं पूर्वेण सदाभिसंबद्धस्यास्वेदमादिसूत्रम्-‘जइणं भंते’ इत्यादि ।

मूलम्-जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
संपत्तेणं तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणणत्ते, चोद्द-
समस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महा-
वीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणणत्ते? एवं खलु जंबू ! तेणं

चौदहवां अध्ययन प्रारंभः-

इस चौदहवें अध्ययन का तेरहवें अध्ययन के साथ इस प्रकार का
संबन्ध है-तेरहवें अध्ययन में जो यह बान कही गई है कि आत्मा में
सम्यग्दर्शन आदि प्रकट भी हो गये, हों परन्तु यदि उन को बढ़ाने वाली
सद्गुरु आदि की उपदेश रूप सामग्री का अभाव रहे तो उन गुणों की
हानि हो जाति है । इस अध्ययन में अब सूत्रकार यह स्पष्ट करेंगे कि
यदि जीव को तथाविध सामग्री प्राप्त होती रहनी है तो गुण संपत्ति
भी बढ़ती रहती है:-‘जइणं भंते’ इत्यादि ।

चौदस्य अध्ययन प्रारंभ-

चौदस्य अध्ययनने तेरमा अध्ययननी साथे आ ज्ञातने सम्बन्ध छे के
तेरमा अध्ययनमां के आ वातनुं स्पष्टीकरबु करवामां आबु छे के आत्मामां
सम्यग्दर्शन वगेरे प्रकट पबु थछ गयां डोय छतां जे सद्गुरु वगेरेनी उप-
देश रुप तेमनुं वर्धन करनार सामग्री डोय नछि तो ते गुणोनी हानि थछ
जय छे. आ अध्ययनमां सूत्रकार डवे ओ ज वात स्पष्ट करवा मागे छे के
अवने जे तथाविध सामग्री भगती रहि छे तो गुण संपत्ति पबु वधती रहि छे.

‘जइणं भंते’ इत्यादि-

हा १

કાલેણં તેણં સમણં તેયલિપુરં નામ નગરં પમયવણે ઉજ્જાણે
 કણગરહે રાયા । તસ્સ ણં કણગરહસ્સ પડમાવર્ઘે દેવી ।
 તસ્સ ણં કણગરહસ્સ તેયલિપુત્તે ણામં અમચ્ચે સામદંડ-
 દક્ખે । તત્થ ણં તેયલિપુરે કલાદે નામં મૂસિયારદારણહોત્થા
 અટ્ટે જાવ અપરિભૂ । તસ્સ ણં ભદ્દા નામં ભારિયા । તસ્સ
 ણં કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા, ભદ્દાણ અત્તયા
 પોટ્ટિલા નામં દારિયા હોત્થા રૂવેણ ય જોઢવણેણ ય લાવ-
 ણ્ણેણ ય ઉક્કિટ્ટા ઉક્કિટ્ટસરીરા । તણં પોટ્ટિલા દારિયા
 અન્નયા કયાઈ ણહાયા સઢ્ઢાલંકારવિભૂસિયા ચેડિયાચક્ર-
 વાલમંપરિવુડા ઉપ્પિ પાસાયવરગયા આગાસતલગંસિકણ-
 ગમણં તિંદૂમણં કીલમાણીરં ત્રિહરઈ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—જમ્બુસ્વામી પૃચ્છતિ—યદિ સ્વલુ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહા-
 વીરેણ યાવત્સંપ્રાપ્તેન ત્રયોદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમર્થઃ પ્રજ્ઞસઃ ચતુર્દશસ્ય સ્વલુ
 ભદન્ત ! જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્સંપ્રાપ્તેન કોડર્થઃ

ટીકાર્થ—જંબુ સ્વામી પૂછતે હૈં કિ (ભંતે—જહ્ણં સમણેણં ભગવયા
 મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં) હે ભદંત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને કિ
 જિન્હોને સિદ્ધિગતિ નામ કા સ્થાન પ્રાપ્ત કર લિયા હૈ (તેરસમસ્સ ણાય-
 જ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે ચોદસમસ્સ ણં ભંતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણં
 ભગવયા મહાવીરે ણં જાવ સંપત્તેણં કે અટ્ટે પણ્ણત્તે) તેરહવે જ્ઞાતાધ્યયન
 કા પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞસ કિયા હૈ—તો હે ભદંત ! ચોદહવે જ્ઞાતા-
 ધ્યયન વા ઉન્હોં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કયા અર્થ નિરૂપિત કિયા

ટીકાર્થ—જંબુ સ્વામી પૂછે છે કે (ભંતે ! જહ્ણં સમણેણં ભગવયા મહા-
 વીરેણં જાવ સંપત્તેણં) હે ભદંત ! જો શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે—કે જેઓ સિદ્ધ
 ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે.

(તેરસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે, ચોદસમસ્સ ણં ભંતે ! ણાયજ્ઞ-
 યણસ્સ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં કે અટ્ટે પણ્ણત્તે)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદંત ! તે
 શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે જ આ ચોદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

भूमिगारधर्मासुतवर्णिनी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

३

प्रज्ञप्तः । सुधर्मा स्वामी कथयति-एवं खलु जम्बू ! । तस्मिन् काले तस्मिन् समये तेतलिपुरं नाम नगरम् आसीत् । तत्र प्रमदवनं नाम उद्यानमासीत् । तस्य नगरस्य कनकरथो नाम राजाऽसीत् । तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी । तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः तेतलिपुत्रो नाम अमात्यः 'सामदंडदक्खे' साम-दण्डदक्षः=अत्र सामदण्डग्रहणाद् दानभेदयोरपि ग्रहणं तेन सामदानभेददण्डात्मक-चतुर्विधोपायनिपुण इत्यर्थः आसीत् ।

तत्र खलु तेतलिपुरे कलादे नाम 'मूसियारदारण' मूषीकारदारकः=सुवर्णकारदारकः, 'मूषी' इति मूषापर्यायः, गौरादित्वाद्दीर्घ यत्र सुवर्णादि है ? (एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया, । तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी) श्री सुधर्मा स्वामी अब श्री जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के अभिप्राय से कहते हैं-जम्बू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है-उस काल और उस समय में तेतलिपुर नाम का नगर था । उस में प्रमदवन नाम का उद्यान था । उस नगर के राजा का नाम कनकरथ था । इस कनकरथ राजा की रानी का नाम पद्मावती देवी था । (तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे सामदंडदक्खे । तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारण होत्था अड्डे जाव अपरिभूए) उस कनकरथ राजा का अमात्य था जिस का नाम तेतलिपुत्र था । यह साम, दान, भेद और दंड इन चार प्रकार की राजनीति में विशेष पटु निपुण था । उसी तेतलिपुर में कलादे नाम का

(एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया । तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी)

श्री सुधर्मास्वामी डवे श्री जम्बू स्वामीने आ प्रश्नोना जवाब आपवान्नी धुच्चिथी डंडे छे के डे जम्बू ! सालणे। तमार प्रश्नोना जवाब आ प्रभाणे छे के ते कणे अने ते सभये तेतलिपुर नामे नगर डतुं । तेमां प्रमदवन नामे उद्यान डतुं । ते नगरना राजानुं नाम कनकरथ डतुं । ते कनकरथ राजनी राणीनुं नाम पद्मावती डतुं ।

(तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे सामदंडदक्खे । तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारण होत्था अड्डे जाव अपरिभूए)

ते कनकरथ राजानो ओक अमात्य (मंत्री) डतो जेतुं नाम तेतलिपुत्र डतुं । ते साम, दान, भेद अने दंड ओ यादे प्रकारनी नीतिमां सविशेष निपुण-कुशल डतो । ते तेतलिपुरमां कलादे नामे मूषीकार दारक (सोनीना पुत्र)

ગાલ્યતે સા, તાં કરોતિ=સાધનસામગ્રીત્વેન નિષ્પાદયતિ, इतिव्युत्पत्त्या मूषीकार-
इति सुवर्णकारे योगारूढोऽयं शब्दः । ' होत्था ' आसीत् । यो हि आढ्यो यावद-
परिभूतः । तस्य खलु कलादस्य मूषिकारदारकस्य दुहिता भद्राया आत्मजा
पोटिला नाम दारिका आसीत्, याहि रूपेण च=आकृत्या, यौवनेन च=तारुण्येन
च लावण्येन च=शरीरोत्कृष्टकान्ति विशेषेण उत्कृष्टा अएव उत्कृष्टशरीराऽसीत् ।
ततः खलु पोटिला दारिका अन्यदा कदाचित् स्नाता सर्वालङ्कारविभूषिता

મૂષીકાર દારક-સુવર્ણકાર કા પુત્ર-રહતા થા । મૂષી શબ્દ કા અર્થ
સાંચા હૈ । હિસ મેં સુવર્ણાદિ દ્રવ્ય પિચલાયે જાતે હૈ । હિસ સાંચે કો જો
બનાતા હૈ ઉસ કા નામ મૂષીકાર હૈ । હિસ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર યહ
શબ્દ સુવર્ણકાર (સોનાર) મેં યોગારૂઢ હુઆ હૈ । યહ મૂષીકાર દારક
આઢ્ય યાવત્ અપરિભૂત થા । (તસ્સ ણં ભદ્રા નામં મારિયા, તસ્સ ણં
કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા, ભદ્રાએ અત્તયા પોટિલા નામં દારિ-
યા હોત્થા, રૂવેણ ય જોવ્વણેણ ય લાવણેણ ય ઉક્કિટ્ટા ઉક્કિટ્ટ
સરીરા) હિસ મૂષિકાર દારક કલાદ-સૌની કી અત્યન્ત પ્રિય પોટિલા
નામ કી લઢકી થી જો હિસ કી પત્ની ભદ્રા કો કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુઈ
થી । યહ આકૃતિ સે, યૌવન સે એવં લાવણ્ય સે-શારીરિક ઉત્કૃષ્ટ કાંતિ
સે-બહુત હી અધિક મનોહર થી-અતઃ હિસ કા શરીર વહુત અધિક
ઉત્તમ થા । (તણં પોટિલા દારિયા અન્નયા કયાઈ ણ્ઠાયા સવ્વાલંકાર-

રહેતો હતો. ' મૂષી ' શબ્દનો અર્થ સાંચો (ખીણ) છે. તેમાં સાંચું વગેરે
દ્રવ્યો ઓગાળવામાં આવે છે. આ સાંચાને બનાવનારનું નામ મૂષીકાર છે. આ
વ્યુત્પત્તિને લઈને આ શબ્દ સુવર્ણકાર (સોની) માટે યોગારૂઢ થઈ ગયો છે.
તે મૂષિકારદારક આઢ્ય (ધનવાન) યાવત્ અપરિભૂત હતો.

(તસ્સ ણં ભદ્રા નામં મારિયા તસ્સ ણં કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા
ભદ્રાએ અત્તયા પોટિલા નામં દારિયા હોત્થા, રૂવેણ ય જોવ્વણેણ ય લાવણેણ
ય ઉક્કિટ્ટા ઉક્કિટ્ટસરીરા)

તે મૂષિકારદારક કલાદ સોનીની ખૂબ જ વહાલી પોટિલા નામે પુત્રી હતી
જે તેની પત્ની ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ હતી. તે આકૃતિથી, યૌવનથી,
લાવણ્યથી-શરીરની ઉન્નત-કાંતિથી બહુ જ મનોહર હતી, એથી તેનું શરીર
ખૂબ જ ઉત્તમ હતું.

(તણં પોટિલાદારિયા અન્નયા કયાઈ ણ્ઠાયા સવ્વાલંકારવિભૂસિયા ચેલિયા-
ચક્કવાલસંપરિવુડા ઉર્ણિ પાસાયવરગયા આગાસતલગંસિ કળમમણં તિંદ્સ-
ણં કીલમાળી ૨ વિહરહ)

भेनगारघमांमृतवर्षिणी लोका अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

५

‘ चेडियाचक्रवालसंपरिवुडा ’ चेटिकाचक्रवालसंपरिवृता=चेटिकाः=दास्यस्तासां यच्चक्रवालं मण्डलं तेन संपरिवृता=सद्विता दासीसमूहपरिवेष्टितेत्यर्थः, उपरिप्रासादवसगता प्रासादोपरिस्थिता-आकाशतले=अनावृतप्रदेशे ‘ छत ’ इति प्रसिद्धे कनकमयेन=स्वर्णनिर्मितेन ‘ तिंदूसएणं ’ तिन्दूसकेन=कन्दुकेन क्रीडन्ती २ विहरति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे णहाए आसखंधवरगए महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइव-यइ। तएणं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे२ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणीं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारि-याए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता। एवं वयासी - एसा णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा ?। तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भहाए अत्तयापोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठ-सरीरा। तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे

विभूसिया चेडियाचक्रवालसंपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगास तलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी २ विहरइ) एक दिन की बात है कि यह स्नान कर के तथा समस्त आभरणों से विभूषित हो करके अपनी दासियोंके साथ प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण निर्मित कन्दुक (गेंद) से क्रीडा कर रही थी । सूत्र ॥ १ ॥

अेउ दिवसे ते स्नान कर्था णाह पोताना णधा अणोने धरेणुंआथी शलुगारीने पोतानी दासीओनी साथे भडेलनी उपरनी अगाशीमां सोनाथी अनापवाभां आवेदी इडीथी रमी रही छती. ॥ सूत्र “ १ ” ॥

६

ज्ञाताधर्मकथासूत्रे

अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, एवं वयासी-
 गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारयस्स
 धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह ।
 तएणं ते अब्भंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा
 हट्टतुट्ठा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु
 तहत्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवा-
 गया । तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे
 पासइ, पासित्ता हट्टतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्त-
 ट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, आसणेणं उवणिमंतेइ उव-
 णिमंतित्ता, आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी-
 संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ? तएणं ते
 अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियारदारयं एवं वयासी-
 अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं
 तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जइ णं जाणासि देवाणु-
 प्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो संजोगो ता
 दिज्जउणं पोट्टिला दारियातेयलिपुत्तस्स, तो भण देवाणुप्पिय !
 किंदलामो सुक्कं ? तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भित-
 रट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी-एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम
 सुक्के, जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गहं करेइ ।
 ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे त्रिपुलेणं असणपाणखाइमसाइ-
 मेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेणं सक्करेइ, सम्माणेइ, सक्का-
 रिता सम्माणित्ता पडिविसुज्जेइ । तएणं ते कलायस्स मूसिया-

अनगारधर्माभूतवर्षिणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

७

रदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिन्ता, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिन्ता, तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदेति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘इमं च णं’ इत्यादि । अस्मिंश्च खलु समये तेतलिपुत्रोऽमात्यः स्नातः ‘आसखंधवरगण’=अश्वस्कंधवरगणः=अश्वारूढः ‘महया भटचडगरवंदपरिक्खित्ते’ महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्तः महान्तो भटचटकराः=भटसमूहाः तेषां वृन्दैः=समूहैः परिक्षिप्तः=परिवृतः सन् ‘आसवाहणियाए’ अश्ववाहनिकायै=अश्ववाहनेन क्रीडनार्थं ‘णिज्जायमाणे’=निर्यान्=निर्गच्छन् कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन पार्श्वभागेन ‘वीइवयइ’=व्यतिव्रजति=गच्छति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन् पोट्टिलां दारिकाम्

‘इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(इमं च णं) इसी समय (तेयलिपुत्ते अमच्चे) ण्हाए आसखंधवरगण महया भटचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामन्तेणं वीइवयइ) तेतलिपुत्र अमात्य स्नान से निबट कर घोड़े पर चढ़ा हुआ बड़े २ भटसमूहों के वृन्दों से घिरा होकर अश्वक्रीडा के लिये मूषीकारदारक कलादके (स्येनार) मकानके पास से निकला । (तएणं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामन्तेणं वीइवयमाणे २ पोट्टिलं दारियं उप्पि पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिदूसएणं कीलमाणी पासइ) मूषीकारदारक कलाद के मकान के पास से होकर जाते हुए

‘इमं च णं तेयलिपु अमच्चे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(इमं च णं) ते वप्पते

(तेयलिपुत्ते अमच्चे) ण्हाए आसखंधवरगण महया भटचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामन्तेणं वीइवयइ)

तेतलिपुत्र अमात्य स्थानधी परवारीने घोडा ७५२ सवार थथा अने त्थारपथी विशाण लटो (थोद्धाओ) ना समूहोथी वीटणाधने अश्वक्रीडा भाटे मूषीकारदारक कलादना घरनी पासे थधने नीडण्था.

(तएणं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामन्तेणं वीइवयमाणे २ पोट्टिलं दारियं उप्पि पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिदूसएणं कीलमाणी पासइ)

ઉપરિ પ્રાસાદવરગતામાકાશતલે કનકતિન્દૂસકેન ક્રોડન્તીં પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા, પોદ્ધિ-
લાયા દારિકાયા રૂપે ચ યૌવને ચલાણ્યે ચ 'જાવ અઙ્ગોવવન્ને' યાવત્-મૂર્છિતઃ,
ગૃદ્ધઃ, પ્રથિતઃ, અધ્યુપવન્નઃ = અત્યન્તસક્તાશ્ચર્યઃ કૌદુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ,
શબ્દયિતા, એવમવદત્-એવાં સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! કસ્ય દારિકા કિં નામધેયા ? ।
તતઃ સ્વલુ કૌદુમ્બિકપુરુષાઃ તેતલિપુત્રમ્ એવમવદન્-એવાં સ્વલુ સ્વામિન્ ! કલાદસ્ય
મૂષીકારદારકસ્ય દુહિતા, મદ્રાયા આત્મજા પોદ્ધિલા નામ દારિકા રૂપેણ ચ
ઉસ તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને પ્રાસાદ કે ઉપર છત પર સુવર્ણ કી કન્દુક
(ગેંદ) સે ક્રોડા કરતી હુઈ ઉસ પોદ્ધિલા દારિકા કો દેખા । (પાસિત્તા
પોદ્ધિલાએ દારિયાએ રૂવે ય જાવ અઙ્ગોવવન્ને કોદુંચિયપુરિસે સદાવેહ
સદાવિત્તા એવં વપાસી-એસા ણં દેવાણુપ્પિયા કસ્સ દારિયા ? કિં નામ
ધેજ્જા ?) દેવ કર વહ ઉસ પોદ્ધિલા દારિકા કે રૂપ, યૌવન એવં લાવણ્ય મેં
મૂર્છિત, ગૃદ્ધ, પ્રથિત બનકર ઉસ પર અત્યન્ત આસક્તિ મેં યુક્ત હો
ગયા । ઉસી સમય ઉસ ને કૌદુમ્બિકપુરુષોં કો બુલાયા-બુલાકર ઉન
સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! કહો યહ કન્યા કિસકી હૈં ઓર
હસકા નામ ક્યા હૈં ? (તણે કોદુંચિયપુરિસા તેયલિપુત્તં એવં
વપાસી-એસા ણં સામી ! કલાયસ્સ મૂસિયારદારગસ્સ ધૂયા મદ્રાએ
અત્તયા પોદ્ધિલા નામં દારિયા રૂવેણ ય જાવ ઉક્કિદ્ધસરીરા) ઉન કૌદુ-
મ્બિક પુરુષોં ને તેતલી પુત્ર સે એસા કહા-હે સ્વામિન્ ! યહ મૂષીકાર
દારક કલાદ કી પુત્રી હૈં જો મદ્રા માર્યાં કી કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈં ।

મૂષિકારદારક કલાદના ઘરની પાસે થઈને જતા તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે
મહેલના ઉપરની અગાશી ઉપર સોનાની દીથી રમતી તે પોદ્ધિલા દારિકાને બોલ્યો.
(પાસિત્તા પોદ્ધિલાએ દારિયાએ રૂવે ય જાવ અઙ્ગોવવન્ને કોદુંચિયપુરિસે સદા-
વેહ સદાવિત્તા એવં વપાસી એસા ણં દેવાણુપ્પિયા કસ્સ દારિયા ? કિં નામધેજ્જા ?)

તે પોદ્ધિલા દારિકાને બોલ્યો તે તેના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમાં મૂર્છિત
ગૃદ્ધ, પ્રથિત બનીને અત્યન્ત આસક્ત થઈ ગયો. તરત જ તેણે કૌદુમ્બિક
પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવા
નુપ્રિયો ! બોલો, આ કન્યા કોની છે અને એનું શું નામ છે ?

(તણે કોદુંચિયપુરિસા તેયલિપુત્તં એવં વપાસી-એસા ણં સામી । કલાયસ્સ
મૂસિયારદારગસ્સ ધૂયા, મદ્રાએ અત્તયા પોદ્ધિલા નામં દારિયા રૂવેણ ય જાવ
ઉક્કિદ્ધ સરીરા)

તે કૌદુમ્બિક પુરુષોએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ !
તે મૂષિકારદારક કલાદની પુત્રી છે અને મદ્રામાર્યાના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો

अमरधारधर्मासुतवर्णिणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

९

यावत्-उत्कृष्टशरीरा अस्ति । ततः खलु स तेतलिपुत्र अश्ववाहनिकायाः मति-
निवृत्तः=प्रत्यागतः सन् 'अर्द्धमंतरठाणिज्जे' अभ्यन्तरस्थानीयान्=अन्तरङ्गप्रेष्य-
पुरुषा शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः! कलादस्य
मूषीकारदारकस्य दुहितरं भद्राया आत्मजां पोष्टिलां दारिकां मम भार्यात्वेन
वृणुत । हे देवानुप्रियाः यूयं तथा प्रयतधाम्, यथा समूषीकारदारकः स्वदुहितरं
मम भार्यात्वेन मह्यं दद्यादिति वाचः । ततः खलु ते अभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषास्ते-
तलिना एवमुक्ताः सन्नो हृष्ट तुष्टाः करतलपरिगृहीतं शिर आवृत्तं मस्तकेऽञ्जलिं
कृत्वा, 'तद्वत्ति' तथेति तथा करिष्यामीति 'किञ्चा' कृत्वा=स्वीकृत्य यत्रैव कला-

इस का नाम पोष्टिला है । रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर
वाली है । (तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणिएओ पडिनियत्ते समाने
अर्द्धमंतरठाणिज्जे पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी, गच्छहणं
तुब्भे देवानुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भदाए अत्तयं
पोष्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह) इस के बाद वह तेतलि पुत्र
अमात्य, अश्ववाहनिका से पीछे जब लौटा तो लौटते ही उसने अपने
अन्तरंग प्रेक्ष्य पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-
हे देवानुप्रियों ! तुम लोग जाओ-और मूषीकार दारक कलाद की पुत्री
जिसका नाम पोष्टिला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी
भार्यारूप से वरआओ । तात्पर्य इस का यह है कि तुमलोग वहां
जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मूषीकारदारक कलाद अपनी
पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे दें । (तएणं ते अर्द्धमंतरठाणिज्जा
पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाना हइ तुट्ठा करयल परिग्गहियं सिरसा

छे. तेनुं नाम पोष्टिला छे. ते इय वगेरेशी भूमज उत्कृष्ट शरीरवाणी छे.

(तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाने अर्द्धमंतरठाणिज्जे
पुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी गच्छहणं तुब्भे देवानुप्पिया ! कलादस्स
मूसियारदारयस्स धूयं भदाए अत्तयं पोष्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह)

त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्य अश्ववाहनिकाथी घेर पाछे आये।
त्यारे आवतांणी साथे ज तेछे पोताना-अन्तरंग प्रेक्ष्य पुरुषोने ओलाव्या अने
ओलावीने तेमने आ प्रभाछे कहुं के के देवानुप्रियो ! तमे जओ अने मूषी-
कारदारक कलादनी पुत्री छे-के जेनुं नाम पोष्टिला छे, अने जे लद्राना गर्भथी
उत्पन्न थई छे-तेने भार्या उपमां मने आपो। तात्पर्य आ प्रभाछे छे के तमे
लोके त्यां जईने जेनी केशिश करे के जेथी ते मूषीकारदारक कलाद पोतानी
पुत्रीने पत्नी इपमां मने आपी हे.

दस्य मूषीकारदारकस्य गृहं तत्रैव उरागताः । ततः खलु स कलादो मूषीकारदारकः
 तान् अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषानेजमानान् पश्यति । दृष्ट्वा हृष्टतुष्टोऽतिशयप्रमुदितः
 आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय तान् मञ्जानयितुं तेषामभिमुखं सप्ताष्टपदानि
 वृत्तं मत्थय अञ्जलिं कश्चु तद्वत्ति किञ्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स
 गिहे तेणेव उवागया) इस प्रकार तेनलि पुत्र के द्वारा कहे गये वे
 अन्तरंग प्रेक्ष्य पुरुष हृष्ट तुष्ट होते हुए वहाँ से निकल कर मूषीकार
 कलाद का जहाँ घर था वहाँ आये । आते समय उन्होंने तेनलि पुत्र
 को दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख कर नम-
 स्कार किया-और हम आपने जैसा कहा है वैसा ही करेंगे इस बात
 को उसे आश्वासन देकर स्वीकार किया था । (तएणं से कलाए मूसि-
 यारदारए ते पुरिसं एज्जमाणे पासइ, पासित्ता दृष्ट तुष्टे आमणाओ
 अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणे-
 णं उवणिमंतेइ, उवणिमंतित्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं
 वयासी संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं-तएणं ते अ-
 भिभतरठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियदारयं एवं वयासी) जब उस
 मूषीकार दारककलादने उन पुरुषों को आपने घर की ओर आते हुए
 देखा-तो वह देखकर हृष्ट तुष्ट हो अपने आमन पर से उठ बैठा-उठ

(तएणं ते अब्भंतरठाणिज्जा पुरिसा तेवल्लिणा एवं युत्ता समाणा दृष्ट्वा
 करयलारिगहिंयं विरसावत्तं मत्थय अञ्जलिं कश्चु तद्वत्ति किञ्चा जेणेव कलायस्स
 मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया)

आ रीते तेतलिपुत्रे जेज्जोने आदेश आप्थो छे जेवा ते अन्तरंग प्रेक्ष्य
 पुरुष हृष्ट तुष्ट थतां त्याथी रवाना थधने मूषीकार कलादने न्यां घर छतुं त्यां
 पछोत्था । तेतलिपुत्रनी पासेथी पाछां इस्तां तेज्जोने जेने छाथोनी अञ्जलि
 बनावीने अने तेने भरतके भूछीने नमस्कार कर्या अने अमे आपे जेम हुकम कर्यो
 छे तेना यथावत पालन करीशुं । आ रीते तेमनी आज्ञा तेज्जोने स्वीकारी ।

(तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता
 दृष्टतुष्टे आमणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता
 आसणेणं उवणिमंतेइ, उवणिमंतित्ता आसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी संदिसतु
 णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं-तएणं ते अभिभतरठाणिज्जा पुरिसा
 कलायं मूसियदारयं एवं वयासी)

मूषीकारदारक कलादे न्यारे ते पुरुषोने पोताना घर तरइ आवता जेवा
 त्यारे ते जेधने हृष्ट तुष्ट थधने पोताना आसन उपरथी जेबो थर्ष भयो अने

गत्वा तानग्रे कृत्वा स्वयम् 'अणुगच्छ' अनुगच्छति, तेषां पृष्ठवर्तीभूत्वा गच्छति, अनुगम्य, आसनेन उपनिषन्वयति=आसनदानेन तान् पुरुषानुपवेशयति, उपनि-
मन्व्य, आस्वस्यः, विश्वस्यः एतेषाममात्यपुरुषाणां सत्कारो यथावज्जात इति
हेतोः स्वस्थमनाः भूत्वा सुखासनवरगतः=स्वयमपि स्वकीयासने सुखोपविष्टः
सन् एवमवदत्-संदिशन्तु खलु हे देवानुप्रियाः! भवतां किमागमनप्रयोजनम्? ततः
खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलादं मूषीकारदारकम् एवमवदन्-वयं
खलु देवानुप्रिय! तव दुहितरं भद्राया आत्मजां पोष्टिलां दारिकां तेतलिपुत्रस्य
भार्यात्वेन वृणुमः, तद् यदि खलु त्वं 'जाणसि' जानासि=मन्यसे, हे देवानुप्रिय!
यद् अस्माकमेतच्चत्कन्याविषयकं याचनं 'जुत्तं वा' युक्तं वा=उचितम् 'पत्तं वा'
प्राप्तं वा मनसिसंलग्नं वा 'सलाहणिज्जं वा' श्लाघनीयं वा=प्रशंसनीयं वा अपि च
'सरिसो वा संजोगो' सदृशो वा संयोगः तेतलिपुत्रेण सद तव कन्याया वैवाहिकः

कर फिर वह सात आठ डग प्रमाण आगे उन का सत्कार करने के
लिये गया। वहां से उन्हें आगेकर के वह स्वयं उनके पीछे २ आया।
आकर के फिर उसने उन्हें आसनों पर बैठाया-बैठा कर आश्वस्त
विश्वस्त होकर बाद में वह स्वयं दूसरे अपने आसन पर शान्ति पूर्वक
बैठ गया। बैठ जाने के बाद फिर उसने इस प्रकार कहा- हे देवानुप्रि-
यो! कहिये-किस कारण से आग यहां पधारे हैं-आपलोगों के आने
का क्या प्रयोजन है-इस प्रकार उसके पूछने पर उन अभ्यन्तर स्थानीय
पुरुषों ने उस सुवर्णकार के पुत्र कलाद से इस प्रकार कहा (अम्हे णं
देवाणुप्पिया! तव धूर्यं भद्राए अत्तयं पोष्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स
भारियत्ताए वरेमो, तं जइणं जाणसि देवाणुप्पिया! जुत्तं वा पत्तं वा
सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउणं पोष्टिला दारिया तेयलि-

ओलो यधने तेमना स्वागत साठे सात आठ पगडां सामे गये। त्यांथी तेछे
आवनाशओने आगण करीने ओटवे के पोते तेओनी पाछण पाछण आबतो
त्यां आओये अने आपीने तेछे तेओने आसने ओपर ओसाउया। त्थारपछी
आश्वस्त विश्वस्त यधने ते पोने पीण आसन ओपर शान्तिपूर्वक ओसी गये।
ओसीने तेछे तेओओ विनय पूर्वक कहुं के छे देवानुप्रिया! ओलो, तमे शा कारणुधी
अहीं आओया छे? तमे शा प्रयोजनथी आओया छे? आ रीते कलाद (सुव-
र्णकार) नी वात सांलगिने ते आभ्यन्तर स्थानीय पुत्रोओ तेने आ प्रमाणे कहुं के

(अम्हेणं देवाणुप्पिया! तव धूर्यं भद्राए अत्तयं पोष्टिलं दारियं तेयलि पुत्तस्स
भारियत्ताए वरेमो, तं जइणं जाणसि देवाणुप्पिय! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं

सम्बन्धो योग्यो भवतीति, यदि जानासि तदा दीयतां खलु पोष्टिला दारिका तेतलिपुत्राय 'तो' तर्हि भण=ब्रूहि, हे देवानुप्रिय ! किं दद्याः शुल्कम् सम्मानपुरस्कारं भवते किं समर्पयामः । ततः खलु कलादो मूषीकदारकः अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषान् एवमवदत्-एतदेव खलु देवानुप्रियाः ! मनःशुल्कम्, यत्खलु तेतलिपुत्रो मम दारिकानिमित्तेन अनुग्रहं=दयां करोति । इत्युक्त्वाऽसौ तान् अभ्यन्तरस्थानी-

पुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुक्कं ? तएणं कलाए मूसियार दारए ते अढ्मिन्तरठाणिज्जे पुरिसं एवं वयासी) हे देवानुप्रिय हम लोग तुम्हारी पुत्री पोष्टिला दारिका को कि जो भद्राकी कुक्षि से उत्पन्न हुई है तेतली पुत्र अमात्य की वह भार्या बने इस रूप से चरण करने के लिये आये हुए हैं-तो यदि तुम हे देवानुप्रिय ! हमारी इस याचना को उचित, प्राप्त, और श्लाघनीय-प्रशंसनीय मानते हो और यह समझते हो कि यह तेतलिपुत्र के साथ तुम्हारी कन्या का वैवाहिक संबंध योग्य है-तो पोष्टिला दारिका तेतलि पुत्र के लिये प्रदान कर दो-और साथ में यह भी कह दो कि हम आपके लिये इस निमित्त क्या सम्मान पुरस्कार दें। इस प्रकार उन सब की ऐसी बातें सुनकर उस सुवर्ण कार पुत्र कलादने उन आये हुए अभ्यन्तर स्थानीय पुरुषों से इस प्रकार कहा-(एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुक्के जन्नं तेयलिपुत्ते-मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गहं करेह, ते अढ्मिन्तरठाणिज्जे पुरिसे वा सरिसो वा सज्जोयो ता दिज्जउणं पोष्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया ! किंदलामो सुक्कं तएणं कलाए मूसियारदारए ते अढ्मिन्तरठाणिज्जे पुरिसं एवं वयासी)

हे देवानुप्रिय ! तमारी भद्रा लायीला गर्भस्थी जन्म पायेही तमारी पोष्टिला दारिका अमात्य तेतलीपुत्रनी भार्या थाय आ जतनी भांगणी करवा अमे तमारी पासो आव्या छीये, हे देवानुप्रिय ! तमे तेतलिपुत्रनी भांगणी उचित, श्लाघनीय अने प्रशंसनीय मानता होय तेमज्जेम पणु तमने थतुं होय के अमात्य तेतलिपुत्रनी साथेने आ लग्न संबंध योग्य छे तो तमे अमात्य तेतलिपुत्रने पोष्टिलादारिका आपी हो अने ऐनी साथे तमे अमने ऐम पणु जणुपी हो के तमने अमे ऐना जइल सम्मान पुरस्कारना इपमां शुं आपीये ? आ रीते तेओ अधानी वात सांजणीने ते सुखुंकारना पुत्र कलादे आभ्यन्तर स्थानीय पुरुषोने आ प्रभाणु कहुं के—

(एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुक्के जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारिया

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦અ૦ ૧૪ તેતલિપુત્રપ્રવાનચરિનર્ણનમ

૧૩

યાન્ પુરુવાન્ વિપુલેન અશનપાનસ્વાદ્યસાગ્રેન પુષ્પાસ્ત્રગન્ધમાલ્યાલંકારેણ ચ સત્ક-
રોતિ, સન્માનયતિ, સત્કૃત્ય સન્માન્ય, પ્રતિવિસર્જયતિ । તત- સ્વલુ તે=આશ્ચર્યંતર
સ્થાનીયાઃ પુરુષાઃ કલાદસ્ય મૂર્ધીકારદારકસ્ય ગૃહાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામ્યન્તિ, પ્રતિષ્ક્રિમ્ય
યત્રૈવ તેતલિપુત્રોઽમાત્યસૌત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય તેતલિપુત્રાય અમાત્યાય 'એ-
મદ્વં' એતમર્થમ્=વિવાહસ્ય સ્ત્રીકૃતિરૂપમર્થ નિવેદયન્તિ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

વિપુલેણં અસળપાળસ્વાઈમસાઈમેણં પુષ્પવત્થ જાવ મલ્લાલંકારેણં
સવકારેઈ, સન્માણેઈ, સવકારિત્તા, સન્માણિત્તા પઢિ વિસર્જેઈ । તણં
તે કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ગિહાઓ પઢિનિક્કલમંતિ, પઢિનિક્કલ-
મિત્તા જેણેવ તેયલિપુત્તે અમચ્ચે, તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા
તેયલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ એમદ્વં નિવેદંતિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! મેરા
સન્માન પુરસ્કાર યહી હૈ કિ જો તેતલિ પુત્ર દારિકા કે નિમિત્ત સે મેરે
ઝપર એસી દયા કર રહે હૈ—અર્થાત્ મેરી પુત્રી કો જો વે અપની પત્ની
બનાને કી ટાહના કર રહેં યહી સચ સે બડા ઝન કી ઓર સે મેરે લિયે
સન્માન પુરસ્કાર પ્રદાન કિયા જા રહા હૈ । ઇસ પ્રકાર કહ કર ઝસ
કલાદ ને ઝન અભ્યંતરસ્થાનીય પુરુષોં કા વિપુલ અશન, પાન, સ્વાદ્ય,
સ્વાદ્ય સે એવં પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ માલા એવં અલંકારોં સે સ્વૃવ સત્કાર
કિયા-સન્માન કિયા । સત્કાર એવં સન્માન કરને કે બાદ ફિર ઝસને
ઝન્હે વિસર્જિત કર દિયા । વહાં સે વિસર્જિત હોકર વે અભ્યંતર સ્થાનીય

નિમિત્તેણં અણુમદ્વં કરેઈ, તે અર્ધિમતરદ્વાણિઝ્જે પુરિસે વિઝલેણં અસળપાળસ્વાઈમ-
સાઈમેણં પુષ્પવત્થ જાવ મલ્લાલંકારેણં સવકારેઈ, સન્માણેઈ, સવકારિત્તા, સન્મા-
ણિત્તા પઢિવિસર્જેઈ । તણં તે કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ગિહાઓ પઢિનિક્કલ-
મંતિ, પઢિનિક્કલમિત્તા જેણેવ તેયલિપુત્તે અમચ્ચે, તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગ-ચ્છિત્તા
તેયલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ એમદ્વં નિવેદંતિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આમાત્ય તેતલિપુત્ર મારી દારિકાને સ્વીકારવા ઇપ જે મારા
ઝપર દયા ખતાવી રહ્યા છે તે જ ખરેખર મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કારની
જ વસ્તુ છે. એટલે કે તેઓ મારી પુત્રીને પોતાની પત્ની પત્ની તરીકે
ધરતી રહ્યા છે, એજ તેમના તરફથી મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કાર ઇપ
છે. આ રીતે કહીને તે કલાદે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરુષોના વિપુલ અશન, પાન,
આદ્ય, સ્વાદ્યથી અને પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માળા અને અલંકારોથી ખૂબ જ સરસ
રીતે સત્કાર કર્યો અને તેમનું સન્માન કર્યું. સત્કાર અને સન્માન કર્યા પછી
તેણે તેમને વિદાય આપી. ત્યારપછી તે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરુષો તે સુવર્ણ-

मूलम्—तएणं कलाए मूसियारदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारयं पहायं सब्वालंकारमूसियं सीयं दुरूहइ, दुरूहिता मित्तणाइसंपीरिबुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सट्ठिबड्ढीए तेयलीपुरं मज्झं मज्झेणं जेणेव तेयलिस्सगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ । तएणं तेयलिपुत्तं पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सट्ठि पट्टयं दुरूहइ, दुरूहिता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता पाणिग्गहणं करेइ, करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजणं विउलेणं असणपाणखाइम साइमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ । तएणं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरेइ॥सू०३॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि, ततः खलु कलादो मूषीकारदारकः अन्यदा कदाचित् ‘सोहणंसि’ शोभने=शुभावदे विवाहयोग्ये ‘तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि’ तिथिनक्षत्रमुहूर्ते पुरुष उक्त सुवर्णकार पुत्र कलाद के घर से निकले और निकल कर जहाँ तेतलि पुत्र अमात्य था वहाँ आये—वहाँ आकर उन्होंने तेतलि पुत्र अमात्य को विवाह स्वीकृति रूप अर्थ की खबर दी । सूत्र ॥ २ ॥

“ तएणं कलाए मूसियारदारए ” इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इस के बाद (मूसियारदारए) मूषीकार दारक ने (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि

कार पुत्र कलाहना धरणी नीकल्या अने त्यांनी ज्या अमात्य तेतलिपुत्र होते त्यां पडोऱ्या. अमात्य तेतलिपुत्रनी पासे जेवने तेजोजे रक्तसंजंघ स्वीकारवा इय अजर आपी. ॥ सूत्र “ २ ” ॥

‘ तएणं कलाए मूसियारदारए ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) तयारपत्री (मूसियारदारए) मूषीकार दारके (अन्नया कयाइं) कौर्ध ओक वणते

પોટિલાં દારિકાં સ્નતાં સર્વાઝઙ્કારભૂષિતાં 'સીયં' શિવિકાં દુરોદયતિ=આરોદયતિ, દુરોદય=આરોદય'મિત્તગાઢ સંપરિવુડે' મિત્રજ્ઞાતિ સંપરિવુડે=મિત્રજ્ઞાતિ સ્વજનસંબન્ધિપરિવેષ્ટિઃ, સર્વાન્ વૈવાહિકાન્ સંધારાન્=વિવાહસંસ્કારોચિત સામગ્રીન ગૃહીત્વા સ્વકાદ્ ગૃહાત્ પ્રતિનિષ્કામ્યતિ, પ્રતિનિષ્કામ્ય 'સન્વિઙ્કુળે' સર્વદ્રવ્યા=સર્વપ્રકારિકયા ઋદ્રવ્યા સહ 'તેયલિપુરં' તેતલીપુરસ્ય મધ્યમધ્યેન નિર્ગચ્છન્ યત્રૈવ તેતલેર્ગૃહં તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પોટિલાં દારિકાં તેતલિપુત્રાય સ્વયમેવ ભાર્યાત્વેન દદાતિ । તતઃ સ્વલુ તેતલિપુત્રોડમાત્યઃ પોટિલાં દારિકાં સ્વભાર્યાત્વેન 'ઉવળીયં' ઉપની-પોટિલં દારિયં ણ્ઘાર્યં સન્વાલંકારવિભૂસિયં સીયં દુરુદ્દહ) શુભ તિથિ નક્ષત્ર, મુહૂર્ત્તમાં પોટિલા દારિકાં કો સ્નાન કરા કર સમસ્ત અલંકારોં સે વિભૂષિત ક્રિયા ઓર વિભૂષિત કર કે ફિર ઉસે શિવિકા પર બેઠા દિયા-(દુરુદ્દિત્તા મિત્તગાઢ સંપરિવુડે સાતો ગિદાઓ પડિનિક્ત્વમઢ, પડિનિક્ત્વમિત્તા સન્વિઙ્કુળે તેયલી પુરં મઙ્ગળં મઙ્ગળે ણં જેણેવ તેયલિસ્સ ગિદે તેણેવ ઉવાગચ્છઢ, ઉવાગચ્છિત્તા પોટિલં દારિયં તેયલિપુત્તસ્સ સયમેવ ભારિયત્તાણ દલયઢ) બેઠા કર ફિર વહ મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સંબન્ધી પરિજનોં સે પરિવેષ્ટિત હોકર ઇવં વૈવાહિક સમસ્ત સામગ્રી કો લેકર અપને ઘર સે નિકલા । નિકલ કર સર્વ પ્રકાર કી અપની ઋદ્ધિ કે સાથ ૨ તેતલિ પુર કે બોચ સે હોતો હુઆ જહાં તેતલિ કા ઘર થા વહાં પહુંચા । વહાં પહુંચ કર ઉત્તને અપની પુત્રો પોટિલા દારિકા કો તેતલિ પુત્ર કો અપને આપ સે ભાર્યા રૂપ સે પ્રદાન કર દી । (તણં

(સોદ્ધણંસિ તિદ્ધિનક્ષત્તમુહૂર્ત્તંસિ પોટિલં દારિયં ણ્ઘાર્યં સન્વાલંકાર, ભૂસિયં સીયં દુરુદ્દહ)

શુભ તિથિ નક્ષત્ર, મુહૂર્ત્તમાં પોટિલા દારિકાને સ્નાન કરાવીને બધી બાતના અલંકારોથી શણગારીને તેને પાવણીમાં બેસાડી દીધી.

(દુરુદ્દિત્તા મિત્તગાઢસંપરિવુડે સાતો ગિદાઓ પડિનિક્ત્વમઢ, પડિનિક્ત્વમિત્તા સન્વિઙ્કુળે તેયલીપુરં મઙ્ગળં મઙ્ગળે જેણેવ તેયલિસ્સ ગિદે તેણેવ ઉવાગચ્છઢ, ઉવાગચ્છિત્તા પોટિલં દારિયં તેયલિપુત્તસ્સ સયમેવ ભારિયત્તાણ દલયઢ)

બેસાડીને તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સંબન્ધી અને પરિજનોની સાથે લગ્નની બધી સાધન સામગ્રી લઇને ઘેરથી નીકળ્યો. નીકળીને તે નવં પ્રકારની પોતાની ઋદ્ધિની સાથે તેતલિપુરની વચ્ચે થઇને ત્યાં તેતલિપુત્રાનું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે પોતાની પુત્રી પોટિલા દારિકાને તેતલી પુત્રને તેની ભાર્યાના રૂપમાં આપી દીધી.

ताम् उपनयनीकृतां पश्यति, दृष्ट्वा पोष्टिलया साद्वं पट्टकं दूरोदति, दुरुह 'सेय पीएहि' श्वेतपीतैः = रजतसुवर्णनिर्मितैः 'कलसेहि' कलशैः = घटैः आत्मानं 'मज्जावेइ' मज्जति = नपयति, मज्जयित्वा अग्निसाक्षिको विवाह इति हेतोः 'अग्निहोमं करावेइ' अग्निहोमं कारयति, कारयित्वा 'पाणिग्रहणं' पाणिग्रहणं = विवाहं करोति, कृत्वा पोष्टिलया भार्यायाः 'मित्तगाइ जाव परिजणं' मित्र ज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् विपुलेन अशनयानवाद्यस्याद्येन चतुर्विधादारेण तेयलिपुत्ते पोष्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोष्टिलाए सद्धि पट्टयं दुरुहइ) तेतलिपुत्र अमात्य ने पोष्टिला दारिका को अपनी भार्या रूप से अपने लिये प्रदान की हुई देखा तो देख कर वह उस पोष्टिला दारिका के साथ पट्टक पर बैठ गया। (दुरुहिता सेयपीएहि कलसेहि अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्निहोमं करावेइ, करावित्ता पाणिग्रहणं करेइ करित्ता पोष्टिलाए भारियाए मित्तगाइ जाव परिजणं विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पुण्ण जाव पडिविसज्जेइ। तएणं से तेयलिपुत्ते पोष्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाई जाव विहरेइ) बैठ कर फिर उसने रजन एवं सुवर्ण से निर्मित कलशों द्वारा अपना अभिवेक करवाया। अभिवेक करावा कर "अग्नि साक्षिक विवाह होता है" इस ख्याल से फिर उसने अग्नि में होम करवाया। करवा कर बाद में उसने उस पोष्टिला दारिका का पाणि ग्रहण कर लिया। विवाह हो चुकने के अनन्तर फिर उस तेतलि पुत्र अमात्य ने

(तएणं तेयलिपुत्ते पोष्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोष्टिलाए सद्धि पट्टयं दुरुहइ)

तेतलिपुत्र अमात्ये पोष्टिला दारिकाने तेनी भार्या रूपमां आपेली जेधने ते पोष्टिला दारिकानी साथे पट्टक उपर जेसी जये।

(दुरुहिता सेयपीएहि कलसेहि अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता- अग्निहोमं करावेइ, करावित्ता पोष्टिलाए भारियाए मित्तगाइ जाव परिजणं विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पुण्ण जाव पडिविसज्जेइ। तएणं से तेयलिपुत्ते पोष्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाई जाव विहरेइ)

जेसीने तेहे सांढी अने सोनाना कणशे वडे पोताने। अबिषेक करावडाये। अबिषेक करावडायेने तेहे 'अग्नि साक्षिक लग्न थाय छे' आस विश्वासीने तेहे अग्निमां छवन करावडाये। त्थारपछी तेहे पोष्टिला दारिकानुं पाळि अळुषु कथुं। लग्ननी विधि पूरी थया जाइ तेतलिपुत्र अमात्ये

कणगरधमामृतवर्षिणी टी० अ० ४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

१७.

‘पुष्पजाव’ पुष्पयावत्=पुष्पवस्त्रादिना यावन्माल्यालङ्कारादिना सत्कारयति, सत्कार्यं ‘पडिविसज्जेइ’ प्रति विमर्जयति । ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽमात्यः पोद्दिलायां भार्यायाम् ‘अणुरत्ते’ अनुरक्तः=आसक्तः ‘अविरत्ते’ अविरक्तः=अत्यन्तानुरक्त इत्यर्थः, ‘उरायाइ जाव’ उदारान् यावत्=उदारान् भोगभोगान्=विषयभोगान् भुञ्जानो विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं से कणगरहे राया रज्जे य रट्टे य बले स बाहणे य कोसे य कोट्टागारे य अंतेउरे य मुच्छिण्ण जाए पुत्ते वियंगेइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्टए छिंदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्टएवि, कन्नसक्कुलीएवि, नासापुडाइं फालेइ, अंगमंगाइं वियंगेइ । तएणं तीसेपउमावईए देवीए अन्नया पुवरत्तावरत्तकालसमयांसि अयमेयारूवे अज्झरिथिए५ समुप्पज्जितथा—एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ, जाव अंगमंगाइं वियंगेइ । तं जइ अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु ममं तं दारयं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगो-

पोद्दिला भार्या के मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबन्धि परिजनो का अन्नन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलंकार आदि से सत्कार करवाया, सत्कार करवाने के बाद फिर उन सब को वहाँ से बिदा कर दिया । इसके पश्चात् पोद्दिला भार्या में आसक्त एवं अनुरक्त बने हुए उस तेतलि पुत्र अमात्य ने उसके साथ पंचेन्द्रिय संबन्धी सुखों का अनुभव करने लगा । सूत्र ॥ ३ ॥

पोद्दिला भार्याना मित्र ज्ञाति, स्वजन संबन्धी अने परिजनोना अन्नन, पान, भाष अने स्वद्य इय अर जतना आहारथी तेभज पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलंकार वगेरथी सत्कार करावडाओ अने सत्कार करावडाओ पछी तेजु अधाने पोताना घरथी बिदाय अपी. तयारपछी पोद्दिला भार्यामां आसक्त अने अनु-रक्त थयेओ ते अमात्य तेतलिपुत्र तेनी साथे पंचेन्द्रिय संबन्धी सुखोना उपभोग करवा लाओ. ॥ सूत्र “ ३ ” ॥

વેમાળીય વિહરિત્તણ તિકટ્ટુ એવં સંપેહેડ, સંપેહિત્તા તેયલિ-
પુત્તં અમચ્ચં સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી એવં ચલુ દેવા-
ણુપ્પિયા ! કળગરહે રાયા રજ્જે ચ જાવ વિયંગેહ, તં જહ્ ણં
અહં દેવાણુપ્પિયા ! દારગં પયાયામિ । તણં તુમં દેવાણુ-
પ્પિયા ! કળગરહસ્સ રહસ્સિયં ચેવ અણુપુલ્લેણં સારક્કલે-
માળે સંગોવેમાળે સંવહેહિ । તણં સે દારણ ઉમ્મુક્કવાલ-
ભાવે જોલ્લવણગમણુપ્પત્તે તવ ચ મમ ચ ભિક્ખવાભાયણં
ભવિસ્સહ । તણં સે તેયલિપુત્તે પડમાવર્ણેણ ઇયમદ્દં પડિ-
સુણેહ, પડિસુણિત્તા પડિગણ ॥ સૂ૦ ૪ ॥

ટીકા—‘તણં સે’ इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा राज्ये च=राष्ट्रे
च=देशे बले=सैन्ये च, वाहने=अश्वादिषु च कोशे=भाण्डारे च धान्यादीनां
कोष्ठागारे च अन्तः पुरे च, ‘मुच्छिण्ण’ मूर्च्छितः=मोहं प्राप्तः, गृद्धः=आसक्तः
प्रथितः=विशेषेणासक्तः, अध्युपपन्नः=सर्वथा तत्परायणः, जाए २=जातान् २=
उत्पन्नान् २ पुत्रान् ‘वियंगेह’ व्यङ्ग्यपति=विगतानि अङ्गानि येषां तान् व्यङ्गान्

‘તણં સે કળગરહે રાયા’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણં) इसके बाद (से कगगरहे राया रज्जे य रट्टे य बले य
वाहणे य कोसे य कोष्ठागारे य अंतरे य मुच्छिण ४) वह कनकरथ
राजा राज्य में राष्ट्र में सैन्य में अश्वादि वाहन में, धान्यादिकों के
कोष्ठागार में एवं अन्तःपुर में मूर्च्छित, गृद्ध अत्यंत अनुरक्त एवं
अध्युपपन्न-सर्वथा तत्परायण बन गया । सो (जाए पुत्त वियंगेह)

તણં સે કળગરહે રાયા इत्यादि—

(તણં) त्यारणાદ

ટીકાર્થ—(સે કળગરહે રાયા રજ્જેય રટ્ટે ચ બલે ચ વાહણે ચ કોષ્ઠાગારે ચ
અંતરે ચ મુચ્છિણ ૪)

તે કનકરથ રાજા રાજ્ય રાજ્યમાં, રાષ્ટ્રમાં, સૈન્યમાં, અશ્વ વગેરે વાહ-
નામાં, ધાન્ય વગેરેની ધાન્યમાં, કોષ્ઠાગારમાં અને રણવાસમાં મૂર્છિત, ગૃદ્ધ,
ધક્ષા જ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન સંપૂર્ણપણે તત્પર થઈ ગયો. એથી (જાણ
પુત્ર વિયંગેહ) તે જન્મેલા પોતાના પુત્રોને અંગડીન બનાવી દેતો હતો.

अंगमंगारधर्माभ्युत्पत्तिविणी टीका अ० १४ तैत्तिलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

१९

करोतीति व्यङ्ग्यति=अङ्गहीनान् करोति । 'विंतेइ' इति पाठे विकर्तयति छिनत्ति इत्यर्थो बोध्यः । तत्प्रकारमाह-अप्येकेषां=केषांचिदुत्पन्नानां पुत्राणां हस्ताकुली-छिनत्ति, अप्येकेषां=केषांचित् बालानां हस्ताकुलान् छिनत्ति । एवं पादाकुलिकाः पादाकुलान् अपि, एवं 'कणसकुलीए वि' कर्णशङ्कुलीरपि=कर्णानपि तथा नासा-पुटानि च 'फालेइ' पाटयति=छिनत्ति, इत्यर्थः । अनेन प्रकारेण एव कनकरथो राजा बालानाम् 'अंगमंगाइ' अङ्गानि अंगानि सर्वाण्यङ्गानि व्यङ्ग्यति=छिनत्ति । ततः खलु अनेन प्रकारेण समुत्पन्नानां पुत्राणां विनाशानन्तरम् 'तीसे' तस्याः कनकरथस्य राज्ञ्याः पद्मावत्याः देव्या अन्यदा 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः=आत्मगतो

उत्पन्न हुए अपने पुत्रों को अंगहीन कर देता । (अप्पेगइयाणं हत्थं गुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्टए, छिदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्टए वि कन्नसक्कुलीए वि, नासापुडाइ फालेइ, अंगमंगाइ विंगेइ) किन्तुनेक बालकों के वह हाथों की अंगुलियों को छेद देता था, कितनेक बालकों के हाथों के अंगुठों को-काट देता था, इसी तरह वह पैरों की अंगुलियों को पैरों के अंगुठों को, कानों को नासा पुटों को छेद देता था । इस तरह यह कनक रथ राजा बालकों के अंगों का भंगकर देता था । (तएणं तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेवारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) इस प्रकार समुत्पन्न पुत्रों के विनाश के बाद उस कनकरथ राजा की रानी पद्मावती देवी के किसी एक समय रात्रि के पश्चिम भाग में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न

(अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिदइ अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्टए छिदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्टए वि कन्नसक्कुलीए वि, नासापुडाइ फालेइ, अंगमंगाइविंगेइ)

डेटलाक भाण्डोनी ते हाथोनी आंगणीओ कपावी नंभावतो हतो, डेटलाक भाण्डोना हाथोना अंगूठाओ कपावी नंभावतो हतो, आ रीते ते पणोनी आंगणीओने, पणोना अंगूठाओने, कानोने, नाकने कपावी नंभावतो हतो. आस ते कनकरथ राजा भाण्डोना अजोतुं ते छेदन करावी नंभावतो हतो.

(तएणं तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेवारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था)

आ प्रभाणे जन्मेसा पुत्रोना विनाश पछी ते कनकरथ राजा नी राणी पद्मावती देवीने कोरि ओक समये रात्रिना छेत्वा पडोरमां आ जातने आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न थयो हे—

ચિન્તિતો યાવત્ મનોગતઃ સંકલ્પઃ, 'સમુપ્પજ્જિત્યા' સમુદ્પદ્યત । સંકલ્પપ્રકાર-
સ્વરૂપ- 'એવં સ્વલુ' ઇત્યાદિ-એવં સ્વલુ કનકરથો રાજા રાજ્યે ચ યાવત્ વ્યજ્ઞયતિ ।
યાવત્ અજ્ઞાનિ અજ્ઞાનિ વ્યજ્ઞયતિ અનેન પ્રકારેણ કુત્સિતમારેણ મારયતિ । તદ્યદિ
સ્વલુ અહં દારકં 'પયાયામિ' પ્રજનયામિ, સેયં સ્વલુ મમં તં દારગં કળગરહસ્ત
રહસ્તિયં ચેવ સારસ્વલેમાળીણ સંગોવેમાળીણ વિહરિત્તણ 'શ્રેયઃ સ્વલુ મમં તં દારકં
કનકરથસ્ય 'રહસ્તિયં ચેવ' રહસ્તિકમેવ=ગુમમેવ આપદઃ સંરક્ષન્ત્યા 'સંરક્ષ-
માળીણ' સંરક્ષન્ત્યાઃ ભૂપદ્વચાદેઃ, 'સંગોવેમાળીણ' સંગોપાયન્ત્યા ભૂપકૃતોપ-
દ્રક્ષત્ વિહરતુમ્, 'ત્તિકદ્દુ' ઇતિ કૃત્વા=ઇતિ મનસિ કૃત્વા એવં સંપેક્ષતે=એવં
ચિન્તયતિ સંપેક્ષ્ય=વિચાર્ય તેતલિપુત્રમમાત્યં પ્રધાનં શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા
એવમગ્રદત્-એવં સ્વલુ દેવાનુપ્રિય ! કનકરથો રાજા 'રજ્જેય જાવ વિયંગેહ'
રાજ્યે ચ યાવદ્ વ્યજ્ઞયતિ=રાજ્યાદિષુ ચ મૂર્ચ્છિતો જાતાન્ પુત્રાન્ વિકૃતાજ્ઞાન્
ક્રોતિ એવં તેષામજ્ઞોપાજ્ઞાનિ લખ્ણયતિ । અનયા રીત્યા પુત્રાન્મારયતિ, તદ્યદિ સ્વલુ
અહં દેવાનુપ્રિય ! દારકં પ્રજનયામિ । તતઃ સ્વલુ ત્વં કનકરથસ્ય રહસ્તિકમેવ

હુઆ- (એવં સ્વલુ કળગરહે રાયા રજ્જે ય જાવ પુત્તે વિયંગેહ, જાવ અજ્ઞ
મંગાઈ વિયંગેહ) યહ કનકરથ રાજા રાજ્ય આદિમેં મૂર્છિત ગૃહ, અત્ય-
ન્ત અનુરક્ત એવં અધ્યુપપન્ન અત્યન્ત તત્પર બનકર પુત્રોં કો કાટ દેતા
હેં-બુરી તરહ સે ઝહેં માર ઢાલતા હૈ (તં જહ અહં દારયં પાયાયામિ,
સેયં સ્વલુ મમં તં દારગં કળગરહસ્ત રહસ્તિયં ચેવ સારસ્વલેમાળીણ
સંગોવેમાળીણ વિહરિત્તણ ત્તિ કદ્દુ એવં સંપેહેહ, સંપેહિત્તા, તેયલિપુત્ત
અમચ્ચં સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી-એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! કળ-
ગરહે રાયા રજ્જે ય જાવ વિયંગેહ તં જહણં અહં દેવાણુપ્પિયા ! દારગંપ-
યાયામિ, તણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! કળગરહસ્ત રહસ્તિયં ચેવ અણુપુઢ્વે

(એવં સ્વલુ કળગરહે રાયા રજ્જે ય જાવ પુત્તે વિયંગેહ, જાવ અંગ મંગાઈ વિયંગેહ)

કનકરથ રાજા રાજ્ય વગેરેની આબતમાં મૂર્છિત ગૃહ, ખૂબજ આસક્ત અને
અધ્યુપપન્ન-અત્યન્ત તત્પર થઈને-પુત્રોને અંગઢીન કરાવી નાખે છે યાવત્ તેમના
અંગોને કપાવી નાખાવે છે અને ખરાબ હાલતમાં તેઓને મરાવી નાખાવે છે.

(તં જહ અહં દારયં પાયાયામિ, સેયં સ્વલુ મમં તં દારગં કળગરહસ્ત રહ-
સ્તિયં ચેવ સારસ્વલેમાળીણ સંગોવેમાળીણ વિહરિત્તણ ત્તિકદ્દુ એવં સંપેહેહ, સંપેહિત્તા
તેયલિપુત્ત અમચ્ચં સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી-એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા !
કળગરહે, રાયા રજ્જે ય જાવ વિયંગેહ તં જહણં અહં દેવાણુપ્પિયા ! દારગં પયા-
યામિ, તણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! કળગરહસ્ત રહસ્તિયં ચેવ અણુપુઢ્વે સારસ્વલે-

અનંગાર્ધમામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૪ તેતલિપુત્રપ્રધાનચરિતવર્ણનમ્

૨૧

‘અણુપુલ્લેણ’ આનુપૂર્વ્યેન=યથાક્રમમ્ સંરક્ષન્ ખૂદદૃશ્યાદિતઃ સંગોપાયન્ ભૂપકૃતો પદ્મવાત્ તે દારકં ‘સંવદ્દેહ’ સંવદ્ધય, તસ્ય ચાલસ્ય વૃદ્ધિમુપનય । તતઃ સ્વલુ સ દારકઃ ‘ઉમ્મુક્કવાલભાવે’ ઉન્મુક્કવાલભાવઃ=ઉન્મુક્તઃ પરિત્યક્તો ચાલભાવો ચાલત્વં યેન સઃ, ‘જોવ્વણગમણુપ્પત્તે’ યૌવનક્રમનુપાપ્ત=પ્રાપ્તતારુણ્યઃ તવ મમ ચ ણં સારક્ષેમાણે સંગોવેમાણે સંવદ્દેહિં । તણં સે દારણ ઉમ્મુક્કવાલ ભાવે જોવ્વણગમણુપ્પત્તે તવ ય મમ ય ભિક્ષ્વાભાયણં ભવિસ્સહ તણં સે તેયલિપુત્તે પડમાવહણ્ણ ઇયમદ્દં પડિસુણેહ, પડિસુણિત્તા પડિગણ્ણ) તો યદિ મેરે યદાં પુત્ર ઉત્પન્ન હોતા હૈ-મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૂં-તો મુझे યહી યોગ્ય હૈ કિ મેં રાજા કનકરથ કો સ્વર ન પડે इस रूप से उसकी रक्षा करूँ-उनकी दृष्टि से -उसे बचाकर रखूँ-ऐसा उसने मन से विचार किया । विचार कर फिर उसने अमात्य तेतलिपुत्र को बुलाया-बुलाकर उस से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्छित गृद्ध-अत्यंत अनुरक्त एवं अध्युपपन्न बना हुआ है जो वह उत्पन्न हुए बालकों को अंग हीन कर देता है-उनके हाथों की अंगुलियों आदि अङ्गों को काट देता है । तो हे देवानुप्रिय ! यदि मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ तो देवानुप्रिय तुम उसे राजा को स्वर न पड़े इस रूप से रक्षित करते हुए और उनकी दृष्टि से बचाते हुए क्रमशः वृद्धिगत करो । जब वह बालक-क्रमशः संवर्द्धित होता हुआ बाल्यावस्था से रहित होकर यौवनावस्था वाला बन जायगा

માણે સંગોવેમાણે સંવદ્દેહિં । તણં સે દારણ ઉમ્મુક્કવાલભાવે જોવ્વણગમણુપ્પત્તે તવ ય મમ ય ભિક્ષ્વાભાયણં ભવિસ્સહ તણં સે તેયલિપુત્તે પડમાવહણ્ણ ઇયમદ્દં પડિસુણેહ પડિસુણિત્તા પડિગણ્ણ)

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરું. તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવું. આ પ્રમાણે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમાં આટલો બધો મૂર્છિત, ગૃદ્ધ-ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડ્યો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અંગો કપાવી નાખે છે. તેમના હાથોની આંગળીઓ વગેરે અંગોને કપાવી નાખે છે. જો હે દેવાનુપ્રિય ! હું પુત્રને જન્મ આપું તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરતા તેનું ભરણુ-પોષણુ કરજો. જો તે

‘મિત્રસ્વાભાવળ’ મિત્રાભાવનમ્=મિત્રાયા આધારભૂતો મિત્રિણ્યતિ । તતઃ સ્વલુ
સ તેતલિપુત્રઃ પદ્માવત્યાઃ પદ્મમયે પ્રતિશ્રુજ્ઞોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય
પદ્માવત્યાઃ સમીગત્ પ્રતિગતઃ સ્વગૃહે ગતવાન્ ॥૩૦૪॥

મૂળમ્—તણં પડમાવડેં ય દેવી પોટિલા ય અમચ્ચી સય-
મેવ ગઢમં ગિળહડ, સયમેવ પરિવહડ । તણં સા પડમાવડેં
નવળં માસાળં જાવ પિયદંસળં સુલ્લવં દારગં પયાયા, જં રથળિં
ચ ણં પડમાવડેં દારયં પયાયા તં રથળિં ચ ણં પોટિલા વિ
અમચ્ચી નવળં માસાળં વિળિહાયમાવલ્લં દારિયં પયાયા ।
તણં સા પડમાવડેં દેવી અમ્મધાં સદાવેડેં સદાવિત્તા એવં
વયાસી—ગચ્છહ ણં તુમે અમ્મો ! તેતલિગિહે તેતલિપુત્તં અમચ્ચં
રહસિયં ચેવ સદાવેહ । તણં સા અમ્મધાં તદત્તિ પડિસુણેડેં,
પડિસુળિત્તા અંતેરસ્સ અવહારેળં ળિગ્ગચ્છડેં, ળિગ્ગચ્છિત્તા,
જેળેવ તેતલિસ્સ ગિહે જેળેવ તેતલિપુત્તે તેળેવ ઉવાગચ્છડેં,
ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ એવં વયાસી—એવં સ્વલુ દેવાળુપ્પિયા !
પડમાવડેં દેવી સદાવેડેં । તણં તેતલિપુત્તં અમ્મધાં એ અંતિણ
એયમઠં સોચ્ચા હટ્ટુતુટ્ટે અમ્મધાં સદ્ધિં સાઓ ગિહાઓ
ળિગ્ગચ્છડેં, ળિગ્ગચ્છિત્તા અંતેરસ્સ અવહારેળં રહસિયં ચેવ
અળુપ્પવિસડેં, અળુપ્પવિસિત્તા જેળેવ પડમાવડેં દેવી તેળેવ

તો હમારે તુમ્હારે દોનોં કે લિયે ભિક્ષા પાત્ર—ભિક્ષા કા આચાર ભૂત-
ચન જાયગા હમ—પ્રકાર પદ્માવતી કે હમ કથન રૂપ અર્થ કો ઉસ તેત-
લિપુત્ર અમાત્યને સ્વીકાર કર લિયા । ઔર સ્વીકાર કારકે ફિર વહ
પદ્માવતી દેવી કે પાસ સે અપને ઘર પા ચલા આયા ॥ સૂ ૪ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ પટારીને બુવાન થઈ જશે તો
મારા અને તમારા બંનેને મોટે ભિક્ષાપાત્ર ભિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે.
આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર
કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘર આવી ગયો. સૂ. ૪

अनगरधर्मासृतवर्णिनी टीका अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम् २३

उवागए करयलपरिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मरथए अंजलिं
 कट्टु एवं वयासी-संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ?
 तएणं पउमावई तेतलिपुत्तं एवं वयासी-एवं खलु कणगरहे
 राया जाव वियंगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारगं पयाया
 तं तुमं णं देवाणुप्पिया ! एयं दारगं गेणहाहि जाव तव मम
 य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्ति कट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं
 तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेणहइ गिणहत्ता उत्त-
 रिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवदारेणं णिग्गच्छइ,
 णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु देवा-
 णुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं च णं दारए
 कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, तं णं तुमं देवाणुप्पिया !
 इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि
 य संगोवाहि य संवड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कवालभावे
 तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टि-
 लाएपासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनि-
 हायमावन्नियं दारियं गेणहइ, गेणहत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता
 अंतेउरस्स अवदारेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउ-
 मावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए
 पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिणिग्गए । तएणं तीसे पउमा-
 वईए अंगपरियारियाओ पउमावई देविं विणिहायमावन्नं च

दारिद्र्यं पासंति, पासित्ता जेगेव कणगरहं राया तेणेव उवाग-
च्छंति उवागच्छित्ता करयलपरिगहियं दसनहं सिरसावत्तं म-
त्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी एवं खलु सामी ! पउमावई
देवी मइल्लियं दारियं पयाया । तएणं कणगरहे राया तीसे
मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, वट्ठणि लोइयाइं मयकि-
च्चाईं करेइ. करित्ता कालेणं विगयसोए जाए । तएणं से तेत-
लिपुत्तेकोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, एवं वयासी—खिप्पा-
मेव चारगसोहणं जाव ठिइवडियं, जम्हाणं अम्हं एस दारए
कणगरहस्स रजे जाए, तं होउ णं दारए, नामेणं कणगज्झसु
जाव भोगसुमत्थे जाए ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः खलु पद्मावती च देवी पोट्टिला च अमात्यी
सममेव गर्भं गृह्णाति, सममेव गर्भं परिवहति=धारयति । ततः खलु सा पद्मावती
‘नवणं मासाणं जाव’ नवानां मासानां नवसु मासेषु व्यतीतेषु यावत् सत्सु
‘पियदंसणं’ पियदर्शनम्=पियं चेतोहरं दर्शनमश्लोकनं यस्य तं = दर्शकजन-
चेतोहादजनकं सुरुपं दारकं ‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती । यस्यां रजन्यां च

‘तएणं पउमावई य देवी’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पउमावई य देवी पोट्टिलाय अमच्ची
सयमेव गर्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी और पोट्टिला अमात्यी ने साथ ही
गर्भ धारण किया । (तएणं सा पउमावई नवणं मासाणं जाव पियदं-
सणं सुरुपं दारणं पयाया) पद्मावती देवी ने जब नौ मास अच्छी तरह
गर्भ के समाप्त हो चुके तब दर्शकजन चित्ताह्लाद जनक अच्छे रूप
शाली पुत्र को जन्म दिया । (जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया

‘तएणं पउमावई य देवी’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपथी (पउमावई य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गर्भं
गिण्हइ) पद्मावती देवी अने पोट्टिला अमात्यीके साथे साथे ७ गर्भधारण क्योई.

(तएणं सा पउमावई नवणं मासाणं जाव पियदंसणं सुरुपं दारणं पयाया)

अथारे नव भाप्र सारी रीते पसार थई गया थारे पद्मावती देवीके
जेनाशके जेधने प्रसन्न थई अथ अथेवा इपाणा पुत्रने जन्म आये.

खलु पद्मावती दारकं प्रजाता तस्यां रजन्यां च खलु पोष्टिलापि अमात्यी ' नवण्हं-
मासाणं ' नवानां मासानाम्=नवसु मासेषु व्यतीतेषु ' विणिहायमावन्नं ' विनि-
घातमापन्नम्=मृताम् दारिकां प्रजाता=जनितवती । ' तएणं ' ततः खलु पुत्रजन्मा-
नन्तरं सा पद्मावती देवी अम्भधात्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत
स्खलु यूयमम्भ ! ' तेतलिगिहे ' तेतलिगृहे=तेतलेरमात्यस्य गृहे तेतलिपुत्रममात्यं
रहस्विकम्=अन्यैरपरिज्ञातमेव शब्दयत=आह्वयत । ततः खलु सा अम्भधात्री तथेति
प्रतिश्रुणोति,=अङ्गीकरोति, प्रतिश्रुत्य अन्तः पुरस्य ' अवदारेणं ' अपद्वारेण=पृष्ठ-
द्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव तेतलेष्टुहम्, यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपा-
गच्छति, उपागत्य करतल यावद् अञ्जलिपुटं कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे
तं रयणिं च णं पोष्टिलावि अमच्छी नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं
दारियं पयाया) जिस रात्रि में पद्मावती देवी ने पुत्र को जन्म दिया था
उसी रात्रि में पोष्टिला अमात्यी ने भी नौ मास व्यतीत हो जाने पर
एक मरी हुई कन्या को जन्म दिया (तएणं सा पउमावई अम्मधायं
सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमे अम्मो ! तेतलिगिहे
तेतलीपुत्तं अमच्चं रहस्सियं चैव सदावेह) इस के बाद उस पद्मावती
ने अम्भधात्री को बुलवाया और बुलवाकर उससे ऐसा कहा है अम्म !
तुम तेतलि अमात्य के घर पर जाओ । और किसी को पत्ता न पड़े
इस रूप से तुम तेतलि पुत्र अमात्य को बुला लाओ । (तएणं सा अ-
म्मधायं तहत्ति पडिसुणेह, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवदारेणं णिग्ग-
च्छह णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्सगिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-
गच्छह, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया

(जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोष्टिला वि अमच्छी
नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं यारियं पयाया)

ये रात्रिमें पद्मावती देवीमें पुत्रने जन्म आय्थे ते ज रात्रिमें पोष्टिला
अमात्यीमें पणु नव मास पूरा थवाथी अेक भरेली कन्याने जन्म आय्थे।

(तएणं सा पउमावई अम्मधायं सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी गच्छह णं
तुमे अम्मो ! तेतलिगिहे तेतलिपुत्तं अमच्च रहस्सियं चैव सदावेह)

त्यारपली ते पद्मावतीमें अम्भधात्रीने बोलावी अने बोलावीने तेने
आ प्रभाणे कहुं के छे अम्भ ! तमे तेतलि अमात्यने घर अये अने डोहने
अपर पडे नडि तेम तेतलिपुत्र अमात्यने तमे अडीं बोलावी लावे।

(तएणं सा अम्मधायं तहत्ति पडिसुणेह, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवदारेणं
णिग्गच्छह णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-

देवानुप्रिय ! पद्मावती देवी भवन्तं शब्दयति । ततः खलु तेतलिपुत्रः ' अंबधाईए-
अंतिए ' अम्बधात्र्या अन्तिके=अम्बधात्र्याः सकाशात् एतमर्थं श्रुत्वा हृष्टतुष्टोऽम्ब-
धात्र्याः सार्द्धं स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य अन्तपुरस्य अपद्वारेण रहस्यक-
मेव=अच्छममेव अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य, यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव ' उवागए '
उपागतः=संप्राप्तः करयलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्तं मस्तकेऽञ्जलिकृत्वा एवं=
वक्ष्यमाणप्रकारेण अवदत्- ' संदिसतु ' संदिशतु=आज्ञापयतु खलु हे देवानुप्रिये !

पडमावई देवी सदावेइ । तएणं तेतलिपुत्ते अम्भधाईए अंतिए एयमट्ठं
सोच्चा इट्ठ तुट्ठे अम्भधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) पद्मा-
वती देवी के इस प्रकार वचन सुनकर उस अम्बधात्री ने तथेति
कह कर उसकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया । स्वीकार कर के फिर
वह अंतः पुर के अपद्वार से-पीछे के दरवाजे से बाहिर निकली-निकल
कर जहां तेतलि का घर और उसमें भी जहां तेतलिपुत्र था वहां गई।
वहां जाकर पहिले उसने तेतलिपुत्र अमात्य को दोनों हाथ जोड़ कर
नमस्कार किया-बाद में बोली-हे देवानुप्रिय ! आपको पद्मावती देवी
बुला रही हैं । अम्बधात्री के मुख से इस प्रकार वचन सुन कर व
तेतलि पुत्र हर्षित एवं तुष्ट होता हुआ अम्बधात्री के साथ ही अपने
घर से निकला । (णिग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सि यं चेव
अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पडमावई देवी तेणेव उवागए
करयलपरिग्गहिंयं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठइ एवं वधा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवानुप्रिया ! पडमावई
देवी सदावेइ । तएणं तेतलिपुत्ते अम्भधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा इट्ठतुट्ठे अम्भ-
धाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ)

आ रीते पद्मावती देवीनी बात सांलणीने अंबधात्रीअ ' तथेति ' (साई)
आम कहीने तेमनी आशा स्वीकारी लीथी. स्वीकारिने ते रञ्जवासना पाछला
आरखेथी अहार नीकणी अने नीकणीने ज्वां तेतलिपुत्रनुं धर अने तेमां पछ
ज्वां तेतलिपुत्र अमात्य उता त्यां पडोथी. त्यां पडोथीने तेले सौ पडोवां
अने हाथ जोडीने तेतलिपुत्रने नमस्कार कर्था अने त्थारपछी तेले कहुं के हे
देवानुप्रिय ! तमने पद्मावती देवी भोलावे छे. अंबधात्रीना सुअथी आ जतनी
बात सांलणीने तेतलिपुत्र हर्षित तेमज संतुष्ट थतो अंबधात्रीनी साथे
साथे ज ते पोताना घेरथी रञ्जवास तरइ रवाना थयो.

(णिग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्प-
विसित्ता जेणेव पडमावई देवी तेणेव उवागए, करयलपरिग्गहिंयं दसणहं सिर-

શ્રીમતી

ઘરિણી ટી૦બ્ર૦ ૧૪ તેતલિપુત્રપ્રધાનચરિતવર્ણનમ્

૨૭

‘જં મણ કાયવ્વં’ યન્મયા કર્તવ્યમ્, તતઃ સ્વલુ પદ્માવતી દેવી તેતલિપુત્રમેવમ્-
વત્ ‘એવં સ્વલુ કળગરહે રાયા વિયંગેઈ’ એવં સ્વલુ કનકરથો રાજા વ્યક્તિયત્=
હે દેવાણુપ્રિય ! મયા પૂર્વમેવકથિતં-યત્કનકરથ ઉત્પન્નાનુપુત્રાન્ વિકૃતાઽત્રાન્
કૃત્વા મારયતિ । અહં ચ સ્વલુ દેવાણુપ્રિય ! દારકં પ્રજાતા=પ્રજનિતવતી, ‘તં’
તસ્માત્ કારણાત્ ત્વં સ્વલુ દેવાણુપ્રિય । એતં દારકં મૃદાળ યાવત્ તવ ચ મમ ચ

સી સંદિસંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! જંમણ કાયવ્વં ? તણં પડમાવઈ તેતલિ
પુસં એવં વયાસી-એવં સ્વલુ કળગરહે રાયા જાવ વિયંગેઈ, અહં ચ ણં
દેવાણુપ્પિયા દારગં પયાયા તં તુમં ણં દેવાણુપ્પિયા ! એવં દારગં મેળહાહિ)
ચલકર વહ અંતઃ પુર કે પૃષ્ઠ ભાગ કે દ્વાર સે કિસી કો આને કા પતા
ન લગે હસ રુપ સે વહાં પ્રવિષ્ટ હુઆ । પ્રવિષ્ટ હોકર જહાં પદ્માવતી દેવી
થી વહાં ગયા । વહાં જાકર ઉસને દોનોં હાથ જિસમેં જુડે હુઈ હૈં ઔર
દશોંનલ્લ જિસમેં હૈં એસી અંજલિકો દક્ષિણ તરફ સે ઘુમોકર બાયે
તરફ છેજાકર ઔર મસ્તકપર અંજલિ કો રસ્કર કહા-અર્થાત્ નમ-
સ્કાર કર પૂછા હે દેવાણુપ્રિયે ! જો મુક્ષે કરને યોગ્ય કાર્ય હૈં ઉસ કે
કરને કી આપ આજ્ઞા લીજિયે । હસ કે બાદ પદ્માવતી દેવી ને તેતલિપુત્ર
સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાણુપ્રિય ! મૈને તુમસે પહિલે હી કહ રક્ષા હૈં
કિ કનકરથ ઉત્પન્ન હુઈ પુત્રોં કો વિકૃત અંગ બનાકર માર ઢાલતા હૈં ।
ઔર મૈને હે દેવાણુપ્રિય ! પુત્ર કો ઉત્પન્ન કિયા હૈં । હસલિયે તુમ હે દેવા-

સાવસં મત્થણ અંજલિ કહ્ણુ એવં વયાસી-સં દિસંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! જંમણ કર-
ણિજ્જં તણં પરમાવોઈ દેવી વયાસી-એવં સ્વલુ કળગરહે રાયા જાવ વિયંગેઈ અહં
ચ ણં દેવાણુપ્રિયા ! દારગં પયાયા તં તુમં ણં દેવાણુપ્પિયા ! એવં દારગં મેળહાહિ)

ત્યાં પહોંચીને રણુવાસના પાછલા બારણેથી કેઇને બબર પડે નહિ તેમ
રણુવાસમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો. પ્રવિષ્ટ થઇને તે જ્યાં પદ્માવતી દેવી હતી ત્યાં
પહોંચ્યો. ત્યાં પહોંચીને તેણે દશે નખો જેમાં છે એવા બંને હાથ બેડીને
અંજલિ બનાવીને તેને જમણી બાજુથી ફેરવીને ડાબી બાજુ તરફ લઈ જઇને
મસ્તક ઉપર અંજલિ મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યું-એટલે નમસ્કાર કરીને પૂછ્યું
કે-હે દેવાણુપ્રિય ! મારે લાયક જે કંઈ પણ કામ હોય તે મને કહો. ત્યાર
પછી પદ્માવતી દેવીએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાણુપ્રિય !
તમને મેં પહેલેથી કહી રાખ્યું છે કે રાજા કનકરથ ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રોને
અંજલીન કરી નાખે છે. અને હે દેવાણુપ્રિય ! મારે પુત્ર થયો છે. હે દેવા-
ણુપ્રિય ! એ બાળકને તમે લઈ આવો.

भिक्षाभाजनमिव भिक्षाभाजनं, यथा भिक्षाभाजनं जीवनं निर्वाहयति तथाऽयमपि जीवननिर्वाहको भविष्यति 'त्तिकट्टु' इति कृत्वाः इत्युक्त्वा 'तेतलिपुत्तं' तेतलिपुत्ताय प्रकृतत्वाद् द्वितीया ददाति=तेतलिपुत्रस्य हस्ते दारकमर्पयति। ततः खलु तेतलिपुत्रः पञ्चावत्या हस्ताभ्यां दारकं गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण=उत्तरीयवस्त्रेण तं 'पिहेइ' पिदधाति=आच्छादयति, 'पिहित्ता' पिधाय अन्तः-पुरस्य 'रहस्सियं' रहस्सियकं=प्रच्छन्नं यथा स्यात्तथा अपद्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव पोष्टिला भार्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पोष्टिलामेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिये ! कनकरथो राजा राज्ये च यावद् व्यङ्गयति स्वपुत्रान् मारयति अयं च खलु मम हस्तस्थितो दारकः कनकरथस्य पुत्रः पञ्चावत्या आत्मजो मया-ज्जानीतः, 'तं' तस्मात् कारणात् खलु हे देवानुप्रिये ! इमं दारकं 'कणगरहस्स-

नुप्रिय ! इस बालक को लेलो (जाव तव मम य भिक्षाभायणे भविस्सइत्तिकट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ) यावत् यह हमारे तुम्हारे लिये भिक्षा का भाजन हो जायगा जिस प्रकार भिक्षा भाजन जीवन निर्वाहक होता है-उसी तरह यह भी जीवन निर्वाहक होवेगा इस प्रकार कहकर उसमे तेतलिपुत्र के हाथमें आने पुत्र को दे दिया । (तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हई) तेतलिपुत्र ने भी पञ्चावती देवीके हाथसे बालक को ले लिया । (गिण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अन्ते उरस्सरहस्सियं अवद्वारेणं गिग्गच्छइ, गिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोष्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-पोष्टिलं एवं वयासी एवं खलु देवानुप्रिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं

(जाव तव मम य भिक्षाभायणे भविस्सइत्तिकट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ)

એ મારા અને તમારા માટે 'ભિક્ષાભાજન' થશે એટલે કે જેમ ભિક્ષાનું પાત્ર જીવનને ટકાવનાર હોય છે તેમજ આ બાળક પણ જીવન નિર્વાહક થશે. આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેતલિપુત્રના હાથમાં પોતાના નવ જાત પુત્રને સોંપી દીધો.

(તएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हई)

तेतलिपुत्रे પણ પञ્चाવતી દેવીના હાથમાંથી બાળક લઈ લીધું.

(ગિણ्हિત્તા ઉત્તરિજ્જેણં પિહેइ पिहित्ता अन्ते उरस्सरहस्सियं अवद्वारेणं गिग्गच्छइ, गिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोष्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोष्टिलं एवं वयासी, एवं खलु देवानुप्रिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अणए

કનકરથમામૃતવર્ષિણી ટીકા અ. ૧૪ તેતલિપુત્રપ્રધાનચરિતવર્ણનમ્ ૨૬

રહસિયં ચેવ ' કનકરથસ્ય રહસ્યકમેવ=કનકરથો યથા ન જાનીયાતચેવ ' અણુ-
પુલ્વેણં' આનુપૂર્વ્યેણ=અનુક્રમેણ તત્કૃતોપદ્રવતશ્ચ 'સારક્વાહિ ય' સંરક્ષ્ય કનકરથનુ-
પદ્ધિતઃ સંગોપાય ચ તત્કૃતોપદ્રવતઃ, તથા સંવદ્દેહિય ' સંવર્ધય ચ=સ્તન્યપાનાદિ-
માડસ્ય ચાલસ્ય વૃદ્ધિમુપનય । તતઃ સ્વલુ એવ દારકઃ ઉન્મુક્તવાલભાવઃ તથ ચ મમ
થ પદ્માવત્યાશ્ચ 'આહારે' આધારઃ=આધારસ્વરૂપો ભવિષ્યતિ ' તિકદુ 'ઇતિકૃત્સા

ચ ણં દારણ કળગરહસ્સ પુત્રે પડમાવર્ણે અત્તણ, તં ણં તુમં દારગં
કળગરહસ્સ રહસિયં ચેવ અણુપુલ્વેણં સારક્વાહિ ય સંગોવાહિ ય સં-
વદ્દેહિ ય) લેકર ફિર ઉસે અપને દુવટ્ટે સે ઢક લિયા ઓર ઢકકર
પ્રચ્છન્ન ગુપ્તરૂપ સે અંતઃ પુર કે પીછે કે દરવાજે સે બાહર નિકલ ગયા ।
નિકલ કર જહાં અપના ઘર ઓર પોટિલા ભાર્યા થી વહાં ગયા । વહાં
જાકર ઉસને પોટિલા ભાર્યા સે હસ પ્રકાર કહા-દેવાનુપ્રિયે ! કનકરથ
રાજા રાજ્ય આદિ મેં હતના અધિક મૂર્ચ્છિત હો રહા હૈ કિ વહ ઉત્પન્ન
હુએ અપને બાલકોં કો અઙ્ગ વિચ્છેદ કર મોર ડાલતા હૈ । યહ જો પુત્ર
મેરે હાથ મેં હૈ વહ કનકરથ રાજા કા પુત્ર હૈ યહ પદ્માવતી દેવી કી
કુશ્લિ સે ઉત્પન્ન હુઆ હૈ । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ હસ પુત્ર કો
કનકરથ કો સ્વધર ન પડે હસ તરહ પ્રચ્છન્ન રૂપ સે કમણઃ રક્ષિતં
કરતી રહો-પાલતી રહો ઉસકી દૃષ્ટિ સે બચાતી રહો ઓર સ્તન્ય પાન
આદિ સે બઢાતી રહો । (તણં એસ દારણ ઉન્મુક્તવાલભાવે તથ ય

તં ણં તુમં દેવાનુપ્રિય ! હમં દારગં કળગરહસ્સ રહસિયં ચેવ અણુપુલ્વેણં સાર-
ક્વાહિ ય સંગોવાહિ ય સંવદ્દેહિય)

લઇને તેણે ખેસમાં ઢાંકી દીધું, અને ઢાંકીને છુપી રીતે રણુવાસના પાછલા
ખરણેથી બહાર નીકળી ગયો. બહારનીકળીને ત્યાં પોતાનું ઘર અને ખેટિલા
ભાર્યા હતી ત્યાં ગયો. ત્યાં પહોંચીને તેણે પોટિલા ભાર્યાને એમ કહ્યું કે-હો
દેવાનુપ્રિયે ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં એટલો બધો આસક્ત થઈ
ગયો છે કે તે જન્મ પામેલા પોતાના બાળકોના અંગોને કપાવીને મારી નાખે
છે. મારા હાથમાં જે બાળક છે તે પણ કનકરથ રાજાનો જ પુત્ર છે. પદ્માવતી
દેવીના ગર્ભમાંથી આવેલો જન્મ થયો છે. એથી હો દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાને
બચાવ થાય નહિ તે પ્રમાણે તમે છુપી રીતે આ પુત્રનું રક્ષણ કરતા રહો,
પોષણ કરતાં રહો, રાજાની કુદૃષ્ટિથી એને દૂર રાખતા રહો અને સ્તન્યપાન
એટલે કે દૂધ વગેરે પીવડાવીને એને મોટો કરો.

ઇત્યુત્ત્વા પોટિલાયાઃ પાર્શ્વે ' ણિક્લિવવ્હ ' નિક્ષિપતિ=સ્થાપયતિ, તથા પોટિલાયાઃ પાર્શ્વાત્ તાં ' વિણિહાયમાવણ્ણ ' વિનિઘાતમાપન્નાં=મૃતાં દારિકાં મૃક્ષાતિ, ગહીત્વા ઉત્તરીયેણ પિદધોતિ, પિધાય અન્તઃ પુરસ્ય અપદ્વારેણ અનુપવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય યત્રૈવ પદ્માવતી દેવી તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પદ્મવત્યાઃ દેવ્યાઃ પાર્શ્વે સ્થાપયતિ, સ્થાપયિત્વા તાવત્ ' પઢિનિગ્ગણ ' પ્રતિનિર્ગતઃ પ્રતિનિવર્ત્ય સ્વગૃહં મમ ય પડમાવર્હૈય ય આહારે ભવિસ્સહત્તિ કદ્દુ પોટિલાય પાસે ણિક્લિવવ્હ, ણિક્લિવવિત્તા પોટિલાઓ પાસાઓ વિનિહાયમાવણ્ણિયં દારિયં ગેણ્હ, ગેણ્હિત્તા ઉત્તરિજ્જેણં પિહેહ પિહિત્તા, અંતેરસ્સ અવહારેણં અણુપ્પવિસહ) હસ તરહ ક્રમશઃ વૃદ્ધિગત હોના હુઆ યહ બાલક જય બાલ્યાવસ્થા સે રહિત હો જાવેગા તો હમારા તુમ્હારા ઓર પદ્માવતી દેવી કા આધાર હોગા, એસા કહકર ઉસ તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને ઉસ પુત્ર કો પોટિલા કે પાસ રખ દિયા । ઓર પોટિલા કે પાસ સે મરી હુઈ કન્યા કો ઉઠા લિયા-ઉઠાકર ઉસે અપને ઉત્તરિયવચ્છ સે ઢંક લિયા, ઢંક કર ફિર અંતઃ પુર કે પિછલે દરવાજે સે વહાં આયા (અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવર્હૈ દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પડમાવર્હૈ દેવીય પાસે ઠાવેહ, ઠાવિત્તા જાવ પઢિનિગ્ગણ) વહાં આકર જહાં પદ્માવતી દેવી થી વહાં પહુંચા, વહાં પહુંચ કર ઉસને ઉસ મૃત કન્યા કો પદ્માવતી દેવી કે

(તણં એસ દારણ ઉમ્મુક્કવાલમાવે તવ ય મમ ય પડમાવર્હૈય ય આહારે ભવિસ્સહ ત્તિ કદ્દુ પોટિલાય, પાસેણિક્લિવવ્હ, ણિક્લિવવિત્તા પોટિલાઓ પાસાઓ વિનિહાયમાવણ્ણિયં દારિયં ગેણ્હ, ગેણ્હિત્તા ઉત્તરિજ્જેણં પિહેહ, પિહિત્તા, અંતેરસ્સ અવહારેણં અણુપ્પવિસહ)

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક ન્યારે બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીના આધાર થશે. આ પ્રમાણે કહીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોટિલાની પાસે મૂકી દીધો અને પોટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી. ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાંકી દીધી અને ત્યારપછી તે રજુવાસના પાછલા ખારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમાં ગયો.

(અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવર્હૈ દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા, પડમાવર્હૈ દેવીય પાસે ઠાવેહ, ઠાવિત્તા જાવ પઢિનિગ્ગણ)

ત્યાં જઈને ન્યાં પદ્માવતી દેવી હતી ત્યાં ગયો અને ત્યાં પહોંચીને તેણે તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામાં મૂકી દીધી. અને ત્યાં મૂકીને તે ત્યાંથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો.

गतवान् । 'तएणं' ततः खलु तस्याः पद्मावत्याः 'अंगपरियारियाओ' अङ्गपति-
चारिकाः=दास्यः पद्मावतीदेवीः विनिघातमापन्नं प्राणरहितं दारिकां च पश्यन्ति,
दृष्ट्वा यत्रैव कनकरथो राजा, तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य करयलपरिगृहीतं दस-
नखं शिर आवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'एवं' = वक्ष्यमाणरीत्या अवदत्-हे
स्वामिन् ! पद्मावतीदेवी 'मइल्लियां' मृतां दारिकां 'पयाया' प्रजाता=प्रजनित-
वती । 'तएणं' इति ततः खलु दासीपुत्रान्मृतवालिं काजन्मश्रवणानन्तरं कनकरथो
राजा तस्या 'मइल्लियाए' मृतायाः दारिकाया 'नीहरणं' निर्हरणं = निष्काशनं
'करेइ' करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति, कृत्वा 'कालेणं'
पास रख दिया । और रखकर फिर वह वहां से चल दिया चलकर
अपने घर आ गया । (तएणं तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउ-
मावई देवि विणिहायमावन्नं दारियं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे
राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिगहियं दसनहं
सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी एवं खलु सामी पउमावई
देवी मइल्लियं दारियं पयाया) इसके बाद पद्मावती देवी की अंगपरि-
चारिकाओं ने पद्मावती देवी को और मरी हुई उस कन्या को देखा देख
कर वे सष जहां कनक रथ राजा थे वहां गईं-वहां जाकर उन्होंने दो
नों हाथों की अंजलि बना कर और उसे मस्तक पर घुमाकर-अर्थात्
नमस्कार कर इस प्रकार कहा हे स्वामिन् ! पद्मावती देवी ने मृत कन्या
को जन्म दिया है । (तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीह-
रणं करेइ, बहूणि लोइयाइं मयकिन्चाइं करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए
जाए) इस प्रकार उन के मुख से सुनकर कनक रथ राजाने उस मृत

(तएणं तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउमावई देवि विणिहायमावन्नं
दारियं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता
करयलपरिगहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-एवं खलु
सामी पउमावईदेवी मइल्लियं दारियं पयाया)

त्यारथाह पद्मावती देवीनी अंग-परिचारिकाओं ने पद्मावती देवी तेमअ
ते भरेली कन्याने जेध. जेधने तेओ अधी ज्यां कनकरथ राजा हुता त्यां गध
अने त्यां जेधने तेओ जेधने हाथोथी अंजलि बनावने अने तेने मस्तक
उपर ईश्वरीने आ प्रभु जे कछुं डे डे स्वामी ! देवी पद्मावती ने भरेली
कन्याने जन्म आप्यो छे.

(तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि
लोइयाइं मयकिन्चाइं करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए जाए)

कालेन समये व्यतीते 'विगयसोए' विगतशोकः=शोकरहितो जातः। ततः खलु स तेतलिपुत्रः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्- 'खिप्पामेव' क्षिप्पमेव 'चारगसोहणं' चारकशोधनं=वन्दीजनमोक्षणं यावन्मानोन्मानवर्द्धनम् पुनजन्मोत्सवनिमित्तकं राजकर्मचारिणां वेतनवृद्ध्यादिना सत्कारसम्मानवर्द्धनं कुरुत, इत्येवंरूपामाज्ञां दत्त्वा स्वयं 'ठिड्वडियं' स्थितिपतितां कुलमर्यादान्तर्गतां पुनजन्मनिदशदिवससाध्यमद्योत्सवरूपां प्रक्रियां करोति। पुनश्चाशनादिना मित्र-ज्ञातिप्रभुवान् सत्कृत्य सम्मान्य तत्पुरत एव कथयति-'जम्हाणं' यस्मात्खलु

कन्या का निर्हरण-श्मशान में ले जाना-किया। निर्हरण कर के फिर अनेक लौकिक मृतकृत्य किये। मृत कृत्य कर चुकने के बाद धीरे २ बे विगत शोक हो गये। (तएणसे तेतलिपुत्ते कोडुंविगयपुरिसे सदावेइ, सदाविस्ता एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिड्वडियं जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउणं दारए नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए) इस के बाद तेतलिपुत्र अमात्यने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-शीघ्र ही तुम लोग चारक शोधन करो-वन्दीजनों को मुक्त करो यावत् मानो-न्मान का वर्द्धन, और पुत्र जन्मोत्सव के निमित्त को लेकर राज कर्म चारिय के वेतन की वृद्धि आदि करके उनके सम्मान का वर्द्धन करो-इस प्रकार आज्ञा देकर स्वयं उस तेतलिपुत्र अमात्यने अपनी कुल मर्यादा के अनुसार पुत्र का जन्म होने के कारण दश दिवस तक बड़ा

आ रीते तेमनां मुग्गथी आ वात सांभणीने कनकरथ सान्भये ते भरेली कन्याने श्मशानमां पडोयाडी अने त्यारभाद तेणु भरणु पछीनी धणी कियाओ। पूरी करी. भरणु कियाओने पताव्या पछी राज कनकरथ धीमे धीमे शोक श्रुति थय गया.

(तएणं से तेतलिपुत्ते कोडुंविगयपुरिसे सदावेइ, सदाविस्ता एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिड्वडियं, जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउणं दारए नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए)

त्यारभाद तेतली पुत्र अमात्ये पोताना कौटुम्बिक पुरुषाने ओलाव्या अने ओलावीने तेमने आ प्रभाणु कहुं के-तमे लोको सत्तरे चारक शोधन करो-अटले के जेलआनामांथी डेहीओने छोडी भूको यावत् मानो-न्मानतुं वर्द्धन तेमज पुत्र जन्मोत्सव णटल राजकर्मचारीओना पगार वगेरेनी वृद्धि करीने तेमना सम्मानतुं वर्द्धन करो आ रीते कौटुम्बिक पुरुषाने आज्ञा आपीने तेतलिपुत्रे जाते पोतानी कुल मर्यादा मुग्गथ पुत्र जन्म होवा णटल दश दिवस

अनंगारघमस्मृतवर्णिनी टीका अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

३६

अस्माकमेव दारकः कनकाथस्य राज्ये जातः, 'तं' तस्मात् भवतु खलु दारको नाम्ना 'कनकध्वजः' इति । अनन्तरमसौ दारकः क्रमेण वृद्धिं गच्छन् यावद् 'भोगसमर्थे जाए' भोगममर्थो जातः=ताहयं प्राप्त इत्यर्थः ॥ सू० ५ ॥

मूलम्—तएणं सा पोढिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था, नेच्छइ य तेतलिपुत्ते पोढिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए, किंपुणदरिसिणं वा परिभोगं वा ? । तएणं तीसे पोढिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था—एवं खलु अहं तेतलिस्स पुर्व्वि इट्ठा ५ आसिं इयाणि अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोगं वा ओहयमणसंकप्पं जाव झियायइ । तएणं तेतलिपुत्ते पोढिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि । तुमं च णं मम महाणसंसि विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं

भारी उत्सव किया । तथा भोजन आदि द्वारा मित्र ज्ञाति द्वारा प्रमुख जनों का सत्कार सम्मान करके फिर उसने उनके समक्ष इस प्रकार कहा—यह हमारा पुत्र कनक रथ राजा के राज्य में उत्पन्न हुआ है—इस लिये यह “कनकध्वज” इस नामसे प्रसिद्ध होवे । इस के बाद यह पुत्र क्रमशः वृद्धिमान हुआ यावत्—भोग समर्थ हो गया—अर्थात् जवान युवा—बन गया ॥ सू० ५ ॥

सुधी लारे जित्तप उज्जये। तेमज्ज लोअन वगेरेथी मित्र ज्ञाति वगेरे प्रमुख लोकाने। सत्कार अने सम्मान करीने तेज्जे तेज्जोनी समक्ष आ प्रमाणे कहुं के आ अमारो पुत्र राजा कनक रथना राज्यमां उत्पन्न थये। छे ज्येथी ज्ये “कनकध्वज” नामे प्रसिद्ध थाय. त्यार पछी ते कनकध्वज समय पसार थतां धीमे धीमे मोटो थतां यावत् लोग समर्थ थर्ग जये। ज्येठवे के युवान थर्ग जये। ॥ सू० ५ ॥

हा ५

समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि । तएणं सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणित्ता, कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपूलं असण जाव दवावेमाणी विहरइ ॥सू०६॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः खलु स पोट्टिला अन्यदा कदाचित् केनापि कारणेन तेतलिपुत्रस्य अनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता चाप्यऽभवत् । नेच्छति च तेतलिपुत्रः पोट्टिलाया नाम गोत्रमपि ‘सवणयाए’ श्रवणतायै=श्रूयतेऽनेनेति श्रवणं कर्मः, तस्य कर्म श्रवणता तस्यै, श्रवणविषयोऽकर्तुम् इत्यर्थः किं पुनः तस्या ‘दरिसणं वा’ दर्शने वा तथा सहपरिभोगं वा, वाञ्छेत्, अपितु न । ततः खलु तस्याः पोट्टिलाया अन्यदा कदाचित् पुष्करतावर-

तएणं सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सा पोट्टिला) वह प्रधानकी स्त्री पोट्टिला (अन्नया कयाई) किसी समय—कोई निमित्त को लेकर—किसी भी कारण से—(तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा जाया यावि होत्था) तेतलिपुत्र के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमनोम बन गई । (जे-च्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसणं वा परिभोगं वा) इस प्रकार वह तेतलिपुत्र उस पोट्टिला के नाम गोत्र तक को भी सुनना पसंद नहीं करता तो फिर उसके देखने और परिभोग पास जाने की तो बात ही क्या है । (तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्न-

तएणं सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थार पत्नी (सा पोट्टिला) ते अमात्यनी पत्नी पोट्टिली (अन्नया कयाई) कोई वणते गमेते कारणे (तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था) तेतलि पुत्रने भाटे अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोम थर्ध पडी.

(जेच्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसणं वा परिभोगं वा)

अथी तेतलिपुत्र अमात्यने तेनुं नाम गोत्र सुद्धां सांजणवुं पणु पसंद पडुं न उतुं त्थारे तेने जेवानी अने तेनी पासे जेवानी तो बात जे शी ?

(तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुष्पावरनकालसमयंसि इमेयारुवे

अनेगारधर्मासुतवर्णिणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

३५

त्तकालसमम् ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रोः पश्चिमे भागे ' इमेयारूवे ' अय-
मेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारः ' अज्जत्थिए जाव ' आधारिमिको यावत् मनोगतः
संकल्पः ' समुप्पजित्था ' समुदपद्यत, संकल्पप्रकारमाह-एवं खलु अहं ' तेतलिस्स '
तेतलेः=तेतलिपुत्रस्यामात्यस्य पूर्वम् इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा
' आसि '=आसम्, परन्तु ' इयाणि ' इदानीम् अनिष्टा यावद्-अमनोऽमा जाता।
नेच्छति च तेतलिपुत्रः मम नाम यावत् परिभोगं वा=मम नाम गोत्रमपि श्रोतुं
नेच्छति किंपुन मम दर्शनं मया सह परिभोगं वा। इत्थमेवा पोहिला ' ओहय-
मणसंकप्पा ' अपहतमनः संकल्पा=अपहतो=दुःखावेगवशाद् रुद्धो, मनः संकल्पो=
मानसिको विचरो यस्याः सा, ' जावझियायइ ' यावद् ध्यायति=यावदावर्ध्यानं
करोति। ततः खलु तेतलिपुत्रः पोहिलामपहतमनः संकल्पां ' जाव झियायमार्णि '
या कयाइं पुव्वावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्जत्थिए जाव समुप्प-
जित्था) जब पोहिलाने अपनी तरफ तेतलि पुत्र अमात्य की इतनी
अधिक उपेक्षा-अनादरता देखी तो एक दिन किसी समय उसे रात्रि
के मध्यभाग में इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प
उत्पन्न हुआ-(एवं खलु अहं तेतलिस्स पुन्वि इट्ठा ५ आसिं, इयाणि
अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोगं वा ओ-
हयमणसंकप्पा जाव झियायइ) मैं तेतलि पुत्र अमात्य के लिये पहिले
इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी, परन्तु इस समय मैं-उन्हे
अनिष्ट यावत् अमनोम बन रही हूँ। वे तेतलि पुत्र अमात्य देखने और
परिभोग करने की तो बात कौन कहे मेरे नामगोत्र तक को भी सुनना
पसंद नहीं करते हैं। इस तरह वह अपहतमनसंकल्प होकर यावत्

अज्जत्थिए जाव समुप्पजित्था)

ज्यारे अमात्य तेतलिपुत्रने पोहिल्ला अने पोताना प्रत्ये आटली अधी
उपेक्षा अने अनादरता जेठ त्यारे कोठि वणते अेक द्विपस रात्रिना मध्यभा-
गमां तेना मनमां आ जातने आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न येथा के

(एवं खलु अहं तेतलिस्स पुन्वि इट्ठा ५ आसिं इयाणि अणिट्ठा ५ जाया
नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव झियायइ)

पछेलां हुं तेतलिपुत्र अमात्यने माटे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम
हती. यणु डमछां हुं तेमना माटेअनिष्ट यावत् अमनोम थरुं पडी. छुं. तेतलि-
पुत्र अमात्य ज्यारे मांरुं नाम गोत्र सुद्धां सांलगहुं छंछता नथी त्यारे भारी
सांने जेवानी अने भारी सांथे परिभोगनी तो बात ज शी करवी ? आ रीते
ते पोहिल्ला अपहत मन संकल्प थरुने यावत् आर्ध्यान करती जेडी हती.

યાવદ્ધ્યાયન્તીમ્=યાવદાર્તધ્યાનં કુર્વન્તી પश्यति, દૃષ્ટ્વા એવમવદત્-માં ચલુ ત્વં
 હે દેવાનુપ્રિયે ! અપહતમનઃ સંકલ્પા ' જાવ જિયાહિ ' યાવદ્ધ્યાય=યાવદાર્તધ્યાનં
 માકુરુ । હે દેવિ । ત્વં ચ ચલુ મમ ' મહાણસંસિ ' મહાણસે=મોજનશાલાયામ્
 વિપુલમ્ ' અસણ જાવ ' અશન યાવત્=અશનપાન સ્વાદિમ સ્વાદિમં ચતુર્વિધમાહારમ્
 ' ઉવક્ષઢાવેહિ ' ઉપસ્કારય, ' ઉવક્ષઢાવિત્તા ' ઉપસ્કાર્ય ' વહૂણં સમણ માહણ
 જાવ વળીમગાણં ' વહુભ્યઃ શ્રમણબ્રાહ્મણ યાવદ્ વળીપકેભ્યઃ=યાચકેભ્યઃ, સ્વયં
 દેયમાણી ' દદતી ચ, અન્યૈઃ ' દવાવેમાણી ' દાપન્તી ચ વિહર । તતઃ ચલું સા

આર્તધ્યાન કર રહી થી-(તણં તેતલિપુત્તે પોટ્ટિલં ઓહ્યમણસંકલ્પં
 જાવ જિયાયમાણિં પાસહ, પાસિત્તા એવં વયાસી માણં તુમં દેવાણુપ્પિયા
 ઓહ્યમણસંકલ્પા જાવ જિયાહિ, તુમં ચ ણં મમં મહાણસંસિ વિઝલં
 અસણપાણં સ્વાહમં સાહમં ઉવક્ષઢાવેહિ, ઉવક્ષઢાવિત્તા વહૂણં સમ-
 ણ માહણ જાવ વળીપગાણં દેયમાણી ય દવાવેમાણી ય વિહરાહિ, તણં
 સા પોટ્ટિલા તેતલીપુત્તેણં એવં વુત્તા સમાણા હદ્ધુ તુટ્ઠા તેયલિપુત્તસ્સ
 ઇયમદ્ધં પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા કલ્લાકલ્લિલં મહાણસંસિ વિપુલં અસણ
 જાવ દવાવેમાણી વિહરહ) इतने में तेतलिपुत्र ने उस अपहतमनः
 संकल्प होकर आर्तध्यान करती हुई पोट्टिला को देखा-तो देखकर उसने
 उससे कहा-हे देवानुप्रिये तुम अपहतमनः संकल्प होकर आर्तध्यान
 मत करो-तुम तो मेरी भोजनशाला में विपुलमात्रा में अशन, पान,
 स्वादिम एवं स्वादिम इस तरह चतुर्विध अहार बनवाओ बनवाकर उसे
 अनेक श्रमण ब्राह्मण यावत् याचकजनों के लिये स्वयं दो और दूसरों

(તણં તેતલિપુત્તે પોટ્ટિલં ઓહ્યમણસંકલ્પં જાવ જિયાયમાણિં પાસહ
 પાસિત્તા એવં વયાસી માણં તુમે દેવાણુપ્પિયા ઓહ્યમણસંકલ્પા જાવ જિયાહિ, તુમં
 ચ ણં મમં મહાણસંસિ વિઝલં અસણપાણં સ્વાહમં સાહમં ઉવક્ષઢાવેહિ, ઉવક્ષઢાવિત્તા
 વહૂણં સમણમાહણ જાવ વળીપગાણં દેયમાણી ય દવાવેમાણી ય વિહરાહિ તણં સા
 પોટ્ટિલા તેતલિપુત્તેણં એવં વુત્તા સમાણા હદ્ધુતુટ્ઠા તેયલિપુત્તસ્મ ઇયમદ્ધં પહિસુણેહ,
 પહિસુણિત્તા કલ્લાકલ્લિલં મહાણસંસિ વિપુલં અસણ જાવ દવાવેમાણી વિહરહ)

આટલામાં અપહતમન સંકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરતી તે પોટ્ટિલાને
 અમાત્ય તેતલિપુત્રે જોઇ અને જોઇને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિયે !
 તમે અપહતમનસંકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરો નહિ-તમે મારી ભોજન
 શાળામાં જઇને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, આદિમ અને સ્વાદિમ આમ
 આર જાતના આહારો બનાવડાવો અને બનાવડાવીને તેને ઘણા શ્રમણ બ્રાહ્મણ

अन्नगारघमांमृतवर्णिणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

३७

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एच' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एयमट्ट' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्रायं 'पडिसुयइ' प्रतिश्रुणोति=स्वीकरोति, 'पडिसुणिता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'करळाकळि' करवादिप=प्रतिदिनम्, महानसे विपुलम् 'अमण जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्वाद्यं चतुर्विधमाहार-मुपस्कार्य ददती च 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तवंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुर्व्विंचरमाणागामाणुगामं दुइज्जमाणा जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणैव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिणिहत्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणिओ विहरंति । तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे । तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता, हट्टुट्टा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, विउलं असण जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता, एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुवं

से दिलवाओ । इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से कहा—तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एवं संतुष्ट हुई । और उमने तेतलिपुत्रकी इस बातको मान लिया । मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला में चारों प्रकार का आहार बनवा कर उसे भ्रमण, माहण आदि जनोंके लिये स्वयं देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

यावत् याथकेने पोते आपो अने भीज्जोने हुक्क करीने अपावो. तेतलि पुत्र अमात्ये ब्यारे आ प्रभाणु पोट्टिलाने कळुं त्यारे ते पूणअ प्रसन्न तेमअ संतुष्ट थछ गछ अने तेणु तेतलिपुत्रनी आ वात स्वीकारी दीधी. अने ते इररेअ भोजन शालामां थारे नतना आहारो जनापडावीने श्रमणु प्राक्षणु बगेरे ने पोते आहार आपवादागी अने भीज्जो द्वारा अपाववा दागी सू६

ઇટ્ટા ૫ આસિ, ઇયાણિ અણિટ્ટા ૫ જાવ દંસણં વા પરિભોગં વા,
 તં તુબ્ધેણં અજ્ઞાઓ સિલ્લિયાઓ બહુનાયાઓ બહુપદિયાઓ
 બહૂણિં ગામાગર જાવ આહિંદહ બહૂણં રાઈસર જાવ ગિહાઈં
 અણુપવિસહ, તં અત્થિ આઈં મે અજ્ઞાઓ ! કેઈ કહિંચિ ચુન્ન-
 જોણ વા મંતજોણ વા કમ્મણજોણ વા હિય ઉડ્ઠાવણે વા કાડ-
 ડુવણે વા આભિઓગિણ વા વસીકરણે વા કોડયકમ્મે વા
 મૂલકમ્મે વા મૂલે કંદે છછી વછી, સિલિયા વા ગુલિયા વા
 ઓસહે વા મેસજે વા ઉવલદ્દુપુવ્વે વા જેણાહં તેતલિપુત્તસ્સ
 પુણરવિ ઇટ્ટા ૫ મહેજ્જામિ । તણંતાઓ અજ્ઞાઓ પોટિલાણ
 એવં વુત્તાઓ સમાણીઓ દો વિ હસ્થે કન્ને ઠવેતિ ઠવિત્તા,
 પોટિલં એવં વયાસી-અમ્હે ણં દેવાણુપ્પિયા ! સમણીઓ નિગ્ગં-
 થિઓ જાવ ગુત્તવંભયારિણીઓ, નો ચ્ચલ્લ કપ્પઈ અમ્હં ઇયપ્પ-
 યારં કન્નેહિ વિ નિસામેત્તણ, કિમંગ યુણ ઉવદિસિત્તણ વા
 આયરિત્તણ વા ? અમ્હેણં તવ દેવાણુપ્પિયા ! વિચિત્તં કેવલિ-
 પન્નત્તં ધમ્મં પડિકહિજ્જામો । તણં સા પોટિલા તાઓ અજ્ઞાઓ
 એવં વયાસી-ઇચ્છામિ ણં અજ્ઞાઓ ! તુમ્હં અંતિણ કેવલિપન્નત્તં
 ધમ્મં નિસામેત્તણ, તણં તાઓ અજ્ઞાઓ પોટિલાણ વિચિત્તં
 ધમ્મં પરિકહેતિ । તણં સા પોટિલા ધમ્મં સોચ્ચા નિસમ્મ
 હટ્ટુટ્ટા એવં વયાસી-સદ્દહામિ ણં અજ્ઞાઓ ! નિગ્ગંથં પાવયણં
 જાવ સે જહિયં તુબ્ધે વયહ, ઇચ્છામિ ણં અહં તુબ્ધં અંતિણ
 પંચાણુવ્વઇયં જાવ ગિહિધમ્મં પાડિવાજ્જિત્તણ, અહાસુહં, તણં

अभयारधमांमृतवर्षिणी टी०अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानवरितवर्णनम्

३९

सा पोडिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहि-
धम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ णमंसइ, वंदित्ता ण-
मंसित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं सा पोडिला समणोवासिया
जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तेणं कालेणं’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुव्रतानाम
आर्या ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो बहुश्रुता बहुपरिवाराः ‘पुव्वाणुव्वि’
पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया विचरन्त्यः ‘जेणामेव’ यत्रैव तेतलिपुरं नगरं तत्रैवो-
पागच्छन्ति, उपागत्य ‘अहापडिरूवं’ यथाप्रतिरूपम्=यथाकल्पम् ‘उग्गहं’
अवग्रहम्=वसत्पर्यमाज्ञाम् ‘उग्गिण्हन्ति’ अवगृह्णन्ति=याचन्ते, अवगृह्य ‘संजमेण’
संयमेन सप्तदशविधेन, ‘तवसा’ तपसा द्वादशविधेन आत्मानं भावयन्त्यो

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें
(सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ
बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव
उवागच्छइ) सुव्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परंपरा के अनुसार विहार
करती हुई उस तेतलिपुर नगर में आई । ये ईर्यासमिति आदि पांच
समितियों की पालक थी-गुप्त ब्रह्मचारिणी थीं । बहुश्रुत थी । अनेक
परिवार से युक्त थीं । (उवागच्छित्ता अहा पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हन्ति,
उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरन्ति तएणं

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये
(सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सु-
याओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ)

सुव्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परंपरा मुख्य विहार करती तेतलिपुर
नगरमें आवी ते ईर्यासमिति वगेरे ५ (पांच) समितिओंनुं पालनकरनारी
हती तेमज् शुभ्र ब्रह्मचारिणी हती, ते बहुश्रुत तेमज् धर्मा परिवारे थी
वीट्ठायेही हती.

(उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हन्ति, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा

विहरन्ति । ततः खलु तामां सुव्रतानामार्याणामेकः संघाटकः प्रथमायां पौरुष्याम् स्वाध्यायं=सूत्रमूलपठनरूपं करोति, 'जाव अडमाणे' यावदन्त्याः, यावच्छब्दात् 'द्वितीयस्यां पौरुष्यां सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यानं करोति, तृतीयस्यां पौरुष्यां सुव्रतामार्यामापृच्छथ उच्चनीचमध्यमकुलेषु गृहसामुदानिकभिक्षार्थमटन् इत्यर्थो बोध्यः, तेतलेगृहमनुमविष्टः । ततः खलु सा पोष्टिला ताः संघाटकस्या आर्या एजमानाः पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वन्दते

तासि सुव्यायाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायंकरेइ, जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) वहां आ कर उन्होंने यथाकल्प ठहरने की आज्ञा मांगी-मांगकर फिर वे १७ सतरह प्रकारके संयमऔर १२ बारह प्रकार के तपसे अपने आपको वासित करती हुई ठहर गईं । इन सुव्रता आर्या का एक संघाटक था जो प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करता-द्वितीय पौरुषीमें सूत्रार्थका चिन्तनरूप ध्यान करता और तृतीय पौरुषीमें सुव्रता आर्या की आज्ञासे ऊँच नीच एवं मध्यम कुलोंमें भिक्षा के लिये अटन करता । इस तरह वह संघाटक (संघाड)तृतीय पौरुषीमें इन उच्चादि घरों में भिक्षार्थ अटन करता हुआ तेतलिपुत्र अमात्य के घर पर आया (तएणं सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ) इतने में उस पोष्टिलाने उन संघाटकस्थ आर्याओं को ज्यों ही अपने घर पर आया हुआ देखा तो (पासित्ता हट्टतुट्ठा आसणाओ अ-

अपपाणं भावेमाणीओ विहरन्ति तएणं तासि सुव्यायाणं अज्जाणं एगेसंघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) त्यां आवीने तेमण्णे यथाकवप (साधुकवप प्रमाण्णे) रडेवानी आज्ञा मांगी અને ત્યારપછી તે ૧૭ બતતા સંયમ અને ૧૨ બતતા તપ વડે પોતાની બતને વાસિત કરતાં તે ત્યાં રોકાઈ. સુવ્રતા આર્યાના એક સંઘાટક હતો જે પ્રથમ પૌરુષીમાં સ્વાધ્યાય કરતો હતો, દ્વિતીય પૌરુષીમાં સૂત્રાર્થનું ચિંતન રૂપ ધ્યાન કરતો અને તૃતીય પૌરુષીમાં સુવ્રતા આર્યાની આજ્ઞા મેળવીને ઊંચા, નીચા અને મધ્યમ કુળોમાં ગોચરી માટે જતા હતા. આ પ્રમાણે તે સંઘાટક તૃતીય પૌરુષીમાં ઉપરોક્ત ઊંચા વગેરે કુળોના ઘરોમાં ગોચરી માટે ફરતાં ફરતાં તેતલિપુત્ર અમાત્યને ત્યાં આવ્યો. (તएणं सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एज्ज-માणीओ पासइ) પોષ્ટિલાએ જ્યારે સંઘાટકસ્થ આર્યાઓને પોતાને ઘેર આવેલી બોધ ત્યારે તે (પાસિત્તા હટ્ટ તુટ્ટા આસણાઓ અબ્બુદ્દેહ) બોધને તે ખૂબ જ પ્રસન્ન થઈ અને પોતાના આસનથી ઊભી થઈ.

असंगारधर्माभूतवर्णिनी टी० अ० ४ तैत्तिरिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

४१

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यस्वा, विपुलमशनगानखाद्यस्वाद्यरूपं चतुर्विधमाहारं
'पडिलामेड' प्रतिलम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भ्य, एवमवदत्-एवं खलु अहं हे
आर्याः ! तैत्तिरिपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्,
पान्तु 'इयार्णि' इदानीम् 'अणिट्ठा' जाव दंसणं परिभोगं वा' अनिष्टा' यावत्
दर्शनं परिभोगं वा=साम्प्रतं तैत्तिरिपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा,
अमनोऽमा जाता, तस्मादेव तैत्तिरिपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतुं नेच्छति, किं
पुनर्हं आर्याः ! स मम दर्शनं मया सह परिभोगं वा कथं वाञ्छेत् ? । 'तं तुम्भेणं

व्हेट्टेह) देवकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से
उठी (अब्भुट्ठिता वंदइ णमंसइ, वंदित्वा, णमंसित्ता विःलं असण जाव
पडिलामित्ता एवं वयासी) उठकर उसने उसको वंदना की-नमस्कार
किया । वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन
पान आदि चतुर्विध आहार दिया-और दे कर वह इस प्रकार कहने
लगी-(एवं खलु अहं अज्जाओ ! तैत्तिरिपुत्तस्स पुब्बं इट्ठा' आसि,
इयार्णि अणिट्ठा' जाव दंसणं वा परिभोगं वा-तं तुम्भेणं अज्जाओ
निविस्सयाओ वहुनायाओ बहुपडियाओ बहूणि गामागार जाव अहिं-
डइ, वहुणं राईसर जाव गिहाई अणुपविसइ) हे आर्याओ ! पहिले मैं
तैत्तिरिपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं
मनोम थी परन्तु अब इस समय में उनके लिये अनिष्ट, अकान्त,
अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमनोम बन रही हूँ । वे मेरा नाम गोत्र तक
भी सुनना पसंद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अब्भुट्ठिता वंदइ णमंसइ, वंदित्वा, णमंसित्ता विःलं असण जाव पडिलामेड
पडिलामित्ता एवं वयासी)

उसी थडने तेणे तेमने नमन कर्या. वंडन अने नमन करीने तेणे तेमने
पुष्कण प्रमाणयां अशन, पान वजेरे चार नदतना आहारो आप्या अने
आपीने ते आ प्रमाणे कहेवा लागी के—

(एवं खलु अहं अज्जाओ ! तैत्तिरिपुत्तस्स पुब्बं इट्ठा' आसि, इयार्णि' जाव
दंसणं वा परिभोगं वा तं तुम्भेणं अज्जाओ निविस्सयाओ वहुनायाओ बहुपडि-
याओ बहूणि गामागार जाव अहिंडइ, वहुणं राईसर जाव गिहाई अणुपविसइ)

हे आर्याओ ! हुं पडेल तैत्तिरिपुत्र अमात्यना भाटे णूण अ इष्ट, कान्त,
प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम હતી પણ હવે હું તેમના भाટે अनिष्ट, अकान्त,
अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोम થઈ પડી છું. તેઓ :મારાં નામ ગોત્ર સુદ્ધાં
સાંભળવા ઇચ્છતા નથી ત્યારે મારી સાથે પરિભોગ કરવાની અને મને બેવાની

અજ્ઞાઓ ' ઇતિ, તત્=તસ્માત્ કારણાત્ યૂયં સ્વલુ હે આર્યા: ! ' સિન્ધિયાઓ ' શિક્ષિતા:=શિક્ષાં માત્રાઃ, ' બહુણ્યાઓ ' બહુજ્ઞાતા:=અનેકશાસ્ત્રજ્ઞાનનિપુણાઃ ' બહુપઠિયાઓ ' બહુપઠિતા:=નાનાવિધવિદ્યાકુશલાઃ સ્થ: પુનઃ ' વઢ્ઢણિ ગામાગર જાવ અદિંહ ' બહુનિ ગ્રામાકર યાવત્ આદિન્દથ=બહુષુ ગ્રામાકરનગરાદિષુ પરિ-
ભ્રમણં કુરુથ । તથા ચ ' વહૂણં રાઈસર જાવ ગિઠાઈં અણુપવિસઈ ' વહૂનાં રાજેશ્વર યાવદ્ ગૃહાણિ અણુપવિસથ=હે આર્યા: ! યૂયં વહૂનાં રાજેશ્વર તલ્લવરશ્રેષ્ઠિ સેના-
પત્યાદીનાં ગૃહે પ્રવેશં કુરુથ, ' તં ' તત્=તસ્માત્ કારણાત્ 'અત્થિ અઈં મે અજ્ઞાઓ ! ' અસ્તિ આઈં યુષ્માકમાર્યા: ! ' આઈં ' ઇતિ વાક્યાલકારે દેશી શબ્દ: । હે આર્યા: ! અસ્તિ ' કેઈ કહિં ચિ ' કોઽપિ કુત્રચિત્=યુષ્માકં જ્ઞાનવિષયે ' ચુન્નજોણ વા ' ચૂર્ણયોગો વા=ચૂર્ણનાં દ્રવ્યચૂર્ણનાં યોગઃ, સ્તમ્ભનાદિકર્મકારી, ' મંતજોણ વા ' મન્ત્રયોગો વા=મન્ત્રાણાં યોગો વ્યાપારો વા વશીકરણાદિ મન્ત્રયોગઃ ' કમ્મણજોણ

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती है, अनेक राजेश्वर आदिकों के घरों में आती जाती रहती हैं (तं अत्थिआइं मे अज्ज्ञाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) कहीं कोई चूर्ण योग - द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मंतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्ढावणे वा, काउड्ढावणे वा अभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली, बल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्वपुव्वे वा जेणाहं तेतलिपुत्त-
स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मंत्र योग-वशीकरण आदि मंत्रों का

તો વાત જ ક્યાં રહી ? એથી હે આર્યાઓ તમે સૌ શિક્ષિતા છો, બહુજ્ઞાતા છો-એટલે કે ઘણા શાસ્ત્રોના જ્ઞાનથી નિપુણ છો, બહુપઠિતા છો-અનેક જાતની વિદ્યાઓમાં કુશળ છો, ઘણાં ગામ, આકર સ્થાનોમાં વિહાર કરતાં રહો છો, અને ઘણા રાજેશ્વર વગેરેના મહેલોમાં આવજા કરતાં રહો છો. (તં અત્થિ-
આઈં મે અજ્ઞાઓ) તો હે આર્યાઓ ! (કેઈ કહિંચિચુન્નજ્જોણવા) ક્યાંક ગમે તે ચૂર્ણ યોગ-દ્રવ્ય ચૂર્ણોનો સ્તંભન વગેરેનો યોગ,

(મંતજોણવા કમ્મણજોણ વા હિય ઉડ્ઢાવણે વા, કાઉડ્ઢાવણે વા અભિ-
ઓગિય વા વસીકરણે વા, કોઉયકમ્મે વા, ભૂઈકમ્મે વા મૂલે કંદે છલ્લી બલ્લી સિલિયા, વા ગુલિયા વા, ઓસહે વા, મેસજ્જે વા ઉવલ્લદ્વપુવ્વે વા જેણાહં તેતલિ-
પુત્તસ્સ પુણરવિ ઇટ્ઠા ૫ ભવેજ્જામિ)

अनगारधर्माभूतवर्षिणी टी० अ० ४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

४३

वा 'कर्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, 'हिय उड्ढावणे वा'=हृदयो-
 ड्ढायनं वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा 'काउड्ढायनं वा' कायोड्ढायनं वा=शरीरा-
 कर्षकवस्तुविशेषो वा 'आभियोगिण वा' अभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो
 वा, 'वशाकरणे वा' वशीकरणं वा=वशीकरणयोगो वा, 'कोउयकम्मे वा' कौतुक-
 कर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा 'भूइकम्मे वा' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रित-
 भस्मप्रक्षेपणं वा तथा-औषधीनां 'मूले' मूलम् 'कंदे' कन्दः 'छल्ली' त्वक्
 'बल्ली' लता 'सिलिया वा' शिलिका=तृणविशेषः, 'गुलिया' गुलिका=
 गुटिका 'ओसहे वा' मेसज्जे वा 'औषधे वा' भैषज्यं वा, इत्यादिकं वस्तुजातं
 युष्माभिः 'उवलद्वयुवे' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः! भवत्य एषु किमपि
 उपलब्धपूर्वं अवश्यं भवेयुः, तत्कृपया मह्यमर्पय, 'जेणाहं' येनाहम्, यत्सेवनादहं
 तेतलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोब्रामनोऽपि भवेयम् । ततः खलु ता
 आर्याः षोडशलाया एवमुक्ताः सत्यो द्वावपि हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा
 योग कामेण योग-उच्चाटन आदि मंत्रो का योग हृदयोड्ढायन-
 चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्ढायन—शरीराकर्षक वस्तु
 विशेषका योग, आभियोगिक-पराभव करने का योग, वशाकरण-
 वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग,
 भूति कर्म-मन्त्रादि से अभिमन्त्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा
 औषधियों के मूल, कंद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष
 गोली, औषध-भैषज्य इत्यादि वस्तुओं का योग आरके देखने में अवश्य
 आया होगा-इस लिय कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हमें
 अवश्य-अवश्य प्रदान करें कि जिससे मैं-जिस के सेवन से मैं-तेत-
 लिपुत्र का पुनरापि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोमय बन जाऊँ (तएवं
 ताओ अज्जाओ पाट्टेलाए एवं बुत्ताओ समाणीओ दावि हत्थे कन्ने ठवेति,

मन्त्रयोग-वशीकरण वगेरे मंत्रोना योग-कामंभुयोग, उच्यारण वगेरे
 मंत्रोना योग, हृदयोड्ढायन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेषना योग, आभियोगिक-
 पराभव करवाना योग, वशाकरण-वशीकरण योग, कौतुककर्म-सौभाग्यवर्द्धक
 स्नान वगैरेना योग, भूतिकर्म-मन्त्र वगेरेथो अलिमन्त्रित करीने भस्म
 (राशीडा) लुं प्रक्षेपण रूप योग तेमन्त्र औषधीओना भूग, कंद, त्वक (छाल)
 तेमन्त्र लता, शिलिका-तृण विशेष ओणी, औषध, भैषज्य वगेरे वस्तुओना
 योग तनारा जेनामा याक्कल आओओ छे. ओटला भाटे तमे कृपा करीन
 ओमाका जमे त योग मन याक्कल आपा के जेना सेवनया छुंदरी तेतलि-
 पुत्रो छे, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोमय थई जाई.

पोट्टिलाम् एवमवदन-वयं खलु हे देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थः, बाह्याभ्यन्तरग्रन्थि-
रहिताः, यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यः, नो खलु कल्पतेऽस्माकम् 'एयप्पयारं' एतत्प्र-
कारं=कर्णोरपि 'णिसामेत्तए' निशामयितुं=श्रोतुं न कल्पत इति पूर्वंग सम्बन्धः ।
'अज्ज इति सम्बोधने' हे पोट्टिले ! किं=कथं पुनः 'उयदिसित्तए वा' उपदेशदुम्
वा, स्वयम् 'आयरित्तए वा' आचरितुं वा कल्पते । न कल्पत इत्यर्थः, वयं खलु
तव हे देवानुप्रिये ! विचित्रं केवलपन्नत्तं धर्मं परिकथयामः । ततः खलु सा पोट्टिला

ठावित्ता पोट्टिलं एवं वयासी-अम्हेणं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ
जाव गुत्तवंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारकन्नेहि वि
निसामित्तए किमंग उयदिसित्तए वा, आयरित्तए वा । अम्हं णं तव
देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो) इस प्रकार
उस पोट्टिला के द्वारा कहीं गईं उन आर्याओं ने अपने दोनों कानोंपर
हाथ रख लिये-और रख कर पोट्टिला से इस प्रकार कहने लगीं-हे
देवानुप्रिये ! हम तो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ हैं, नव कोटि से पूर्ण ब्रह्मचर्यको
हम पालती हैं। हमें तुम्हारी ऐसी बातें कानों से सुनना भी कल्पित
नहीं हैं तो फिर हे पुत्रि ! हम इनका उपदेश तुम्हें कैसे दे सकते हैं-
और स्वयं भी इनका आचरण कैसे कर सकता हैं। अर्थात् इन बातों
का उपदेश देना और स्वयं इनको अपने आचरण में लाना यह सब
हमारे कल्प के अनुसार निषिद्ध है। हम तो हे देवानुप्रिये ! तेरे हितके

(तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवंजुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने
ठवेंति, ठावित्ता पोट्टिलं एवं वयासी अम्हेणं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ
जाव गुत्तवंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारकन्नेहि वि निसामित्तए
किमंग उयदिसित्तए वा, आयरित्तए वा ! अम्हं णं तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं
केवलपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो)

आ भ्रमाणु पोट्टिलानी बात सांलणीने ते आर्याओओ पोताता अने
कानो उपर हाथ भूझी दीधा अने भूझीने ओम कडेवा लागी डे देवानुप्रिये !
अमे तो निर्ग्रन्थ श्रमणीओ छीओ, नवराउ सङ्कित पद्मार्थनुं अमे पालन
करीओ छीओ, डे पुत्रि ! तमारी ओवी बातो अमारा भाटे कानथी सांलगवी
पणु येओ लेणाय नहि त्थारे तेना विशेष उपदेशानी बात तो साव अथोउयओ
छे, अमे आ विशेष तमने कोछ पणु जतनेओ उपदेश पणु आपी शङ्कीओ नहीं
तो पछी जते आनुं आयरणु केवी रीते करी शङ्कीओ ? ओट्ठे के आ आण-
तनेओ उपदेश आपवेओ तेमओ पोते आनुं आयरणु करवुं ते अधुं अमारा कल्प

अनगारधर्माभूतवर्णिना टीका अ०८ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

४५

ता आर्याः एवमवादीत्-इच्छामि खलु हे आर्याः । युष्माकमन्तिके केवलप्रज्ञसं धर्मं निशामयितुम्=श्रोतुम् । ततः खलु सा पोष्टिला धर्मं श्रुत्वा 'निसम्म' निसम्म=हृदयेनाधार्यं हृदनुष्टा एवमवादीत्-अदधामि खलु हे आर्याः । नैर्ग्रन्थं मवचनं यावत् 'से' तत् तथैव यथैतद् यूयं वदथ । हे आर्याः ! 'इच्छामिणं' इच्छामि खलु अहं युष्माकमन्तिके 'पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं' पञ्चाणुव्वतिकं यावत् पृथिवीधर्मं 'पाडवज्जित्तए' प्रतिपत्तुं=स्वीकर्तुम् । अनन्तरं ता आर्या एवमवा-

लिये विचित्र केवल प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश कहते हैं (सो तू सुन)- (तएणं सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हें अंतिए केवलपन्नके धम्मं निसामेत्तए-तएणं ताओ अज्जाओ पोष्टिलाए विचित्तधम्मं परिकहेति) उनकी इस प्रकार बात सुन कर उस पोष्टिलाने उनसे कहा-हे आर्याओ ! मैं आप लोगों के मुख से केवल प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहती हूं । पोष्टिला की ऐसी प्रार्थना सुन कर उन आर्याओं ने उस पोष्टिला के लिये विचित्र केवल प्रज्ञप्त धर्म सुनाया (तएणं सा पोष्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टा एव वयासी) उन के मुखसे केवल प्रज्ञप्त धर्म सुन कर और उसे अपने हृदयमें अवधृत कर अत्यन्त हर्षित एवं संतुष्ट हुई उस पोष्टिलाने उनसे ऐसा कहा (सदहामि णं अज्जाओ ! जिग्गंथं पावयणं जाव से जहियं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए-अहासुहं, तएणं सा पोष्टिला तासि अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं

सुअण अथोग्य गणाय छे. छे देवानुप्रिये ! अमे तो तारा छित भाटे विचित्र केवणिप्रज्ञप्त धर्मने उपदेश आपीअे छीअे तेने तुं सांलण.

(तएणं सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हें अंतिए केवलपन्नके धम्मं निसामेत्तए-तएणं ताओ अज्जाओ पोष्टिलाए विचित्त धम्मं परिकहेति)

तेमनी आ जतनी बात सांलणीने ते पोष्टिलाअे तेमने अेम उहुं के छे आर्याओ ! तमारा सुअथी हुं केवणी प्रज्ञप्त धर्मने सांलणया धम्मं छुं. पोष्टिलानी अेवी विनंती सांलणीने ते आर्याओअे तेने विचित्र केवणि-प्रज्ञप्त धर्मने उपदेश आप्थे. (तएणं सा पोष्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टु-ट्टा एव वयासी) तेमना सुअथी केवणी प्रज्ञप्त धर्मनुं श्रवणु करीने तेने हृदयमां धारणु करीने भूअ न हर्षित अने संतुष्ट यती ते पोष्टिलाअे तेमने अेम उहुं के (सदहामिणं अज्जाओ ! जिग्गंथं पावयणं जाव से जहियं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए-अहा-

દિષુ:- 'અહાસુહં' યથા સુખં, હે દેવાનુપ્રિયે ! । તત્ સ્વલુ સા પોટ્ટિલા તાસા-
માર્યાણામન્તેકે પચ્છાણુવતિક યાવદ્ ગૃહધર્મપ્રતિપદ્યતે, પુનસ્તા આર્યા વન્દતે
નમસ્પતિ, વન્દિત્વા નમસ્વિત્વા પ્રતિવિસર્જયતિ । તતઃ સા પોટ્ટિલાશ્રમણોપાસિકા
જાતા, 'જાવ પઢિલાભેમાણિ' યાવન્ પ્રતિલમ્પવન્તી=નિર્ગ્રન્થેભ્યઃ શ્રમણેભ્યઃ
શ્રમણીભ્યશ્ચ ચતુર્વિધમાદારં દદતી વિહરતિ ॥ મુ. ૭ ॥

જાવ ગિહિધર્મં પઢિવજ્જેહ, તાઓ અજ્જાઓ વંદહ, ણમંસહ વંદિત્તા
ણમંસિત્તા પઢિવિસજ્જેહ) હે આર્યાઓ ! મેં હસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પર
શ્રદ્ધા કરતી હું યાવત્ એસા માનતી હું કે યહ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જૈસા
આપ કહતી હૈ વૈસા હી હૈ । અતઃ હે આર્યાઓ ! અવ મેં આપકે પાસ
પંચાણુ વ્રત સાત શિક્ષાવ્રત આદિ રૂપ ૧૨ ચારહ પ્રકાર કા ગૃહસ્થ ધર્મ
કો ધારણ કાના ચાહતી હું । હમ તરહ પોટ્ટિલા કી ભાવના જાન કર
उन आर्याओं ने उससे कहा-यथा सुखं देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह
सुख हो वैसा तू कर-श्रयस्कर कार्यमें विलम्ब करना योग्य नहीं हैं-हम
प्रकार उन आर्याजनोंकी आज्ञा प्राप्त कर उस पोट्टिलाने उन्हीं आर्याओं
के पास से श्रावकधर्म पंच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रतोंको धारण कर
लिया । इस प्रकार श्रमणोपासिका बनी हुई उस पोट्टिला ने उन आर्याओं
को वन्दना एवं नमस्कार की-वन्दना नमस्कार करके फिर उन्हें विस-
र्जित कर दिया । (तएणं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडि-

સુહં, તएણં સા પોટ્ટિલા તાસિ અજ્જાણં અંતિણ પંચાણુવત્તયં જાવ ગિહિધર્મં પઢિ-
વજ્જેહ, તાઓ અજ્જાઓ વંદહ, ણમંસહ વંદિત્તા ણમંસિત્તા પઢિવિસજ્જેહ)

હે આર્યાઓ ! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર હું શ્રદ્ધા કરું છું. યાવત
આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જેવું તમે કહો છો તેવું જ છ. એથી હે આર્યાઓ !
હવે હું તમારી પાસેથી પાંચ અણુવ્રત વગેરેનો ગૃહસ્થ-ધર્મ ધારણ કરવા
છું. આ રીતે પોટ્ટિલાના વિચારો બાણીને તે આર્યાઓએ તેને કહ્યું કે
'યથાસુખમ્' એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમાં સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ તું કર
સારા કામમાં વિલાંબ કરવો જોઈએ નહિ. આ પ્રમાણે તે આર્યાઓની આજ્ઞા
મેળવીને તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓની પાસેથી શ્રાવક-ધર્મ-પાંચ અણુવ્રતો
અને સાત શિક્ષાવ્રતો-ને ધારણ કરી લીધો. આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ
ગયેલી તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓને વંદન તેમજ નમન કર્યા અને વંદન તથા
નમન કરીને તેમને વિદાય આપી. (તएणं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया
जाव पडिळाभेमाणो विहरइ) આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલા

मूलम्—तएणं तीसे पोहिलाए अन्नया कयाइं पुठवरत्तावर-
त्तकालसमयसि कुडुंवजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे
अज्झरिथए जाव समुप्पन्ने। एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुठिं
इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव पारिभोगं वा, तं सेयं
खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पठवइत्तए, एवं संपेहेइ,
संपेहित्ता, कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयलपरिग्गहियं दसनहं
सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कहु एवं वयासी — एवं खलु
देवाणुप्पिया ! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मं णिसंते
जाव अब्भणुन्नाया पठवइत्तए । तएणं तेयलिपुत्ते पोहिले एवं
वयासी—एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा पठवइया समाणी
कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उवव-
ज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए ! ममं ताओ देवलो-
याओ आगम्म केवलि पन्नत्ते धम्मं वोहेहि, तोहं विसज्जेमि,
अह णं तुमं ममं ण संबोहेसि, तो ते ण विसज्जेमि । तएणं
सा पोहिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ । ततः खलु तेत-
लिपुत्ते विपुलं असणं४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ
जाव आमंतेइ, आमंतित्ता, जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता, पो-
हिलं पहायं जाव पुरिससहस्सवाहिणि सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता,
लाभेमाणी विहरइ) इस प्रकार श्रमणोपासिका वनी हुई वह पोहिला
निर्ग्रन्थ श्रमणजनोंकोएवं निर्ग्रन्थ श्रमणियों को दान-चारों प्रकार का
आहार देती हुई अपना समय व्यतीत करने लगी ॥ सू० ७ ।

निर्ग्रन्थ श्रमणोः अने निर्ग्रन्थ श्रमणीओने दान-चारो जलना आहारो-आपत्ती
पोतानो वधत पसार करवा लागीः ॥ सूत्र “ ७ ” ॥

मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सविविद्धिए जाव रवेणं तेयालिपुरस्स
मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ ।
पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ । तेतलिपुत्ते पोट्टिलं पुरओ कट्टु
जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ
नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ४, एसणं संतारभउविवगा जाव
पवइत्तए, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिव्वं अहा-
सुहं मा पडिवंधं करेहि । तएणं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं
एवंवुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ,
अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता,
सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं वंइ, करित्ता, जेणेव सुव्वयाओ तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता,
एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव
एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाणि सामन्नपरियाणं पाउणइ,
पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइं
अणसणाए छेदित्ता, आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे
कालं किच्चा अण्णत्तरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववणणा ॥सू०८॥

टोका—‘तएणं तीसे’ इत्यादि । ततः खलु तस्याः पोट्टिलायाः ‘पुण-
स्तासत्तहालसमयसि’ पूर्वरात्रावररात्रहालसमये—रात्रेः पश्चिमेभागे ‘लुहुं व जाण-

तएणं—‘तीसे पोट्टिलाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तीसे पोट्टिलाए) उस पोट्टिला के
जय कि वह (अन्नया कयाइं) किसी एक दिन (पुणवावरत्तकालसम-

‘तएण—तीसे पोट्टिलाए’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थार यही (तीसे पोट्टिलाए) ते पोट्टियाने—के न्याये ते
(अन्नया कयाइं) कोय ओक दिवसे (पुणवावरत्तकालसमयसि) रात्रिना

अमगारधर्मासुतवर्षिणी टी० भ० १४ तैत्तलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

४९

रियं जागरमाणीए' कुटुम्बजागरिकं जाग्रत्या अयमेतद्रूप 'अज्झत्थिए जाव' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिकः=आत्मगतो यावन्मनोगतः संकल्पः समुत्पन्नः। संकल्पप्रकारमाह-एवं खलु अहं तैत्तलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा आसम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोगं वा। अस्याभिप्रायः-अहो मनुष्याणां मनोवृत्तेरस्थिरता। पूर्वं यस्याहम् इष्टा कान्ता प्रियाऽदिकाऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि। अयं तैत्तलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोगं वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः। 'तं' तत्=तस्मात्कारणात् 'सेयं'

यंसि) रात्रि के पिछले भागमें (कुटुम्बजागरियं-जागरमाणीए अयमेया-रूपे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने) कुटुम्ब की चिन्ता से जाग रहा थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-(एवं खलु अहं तैत्तलिपुत्रस्य पुर्वि इष्टा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए) मैं पहिले तैत्तलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हूं-अनिष्ट आदि बन गई हूं। और बातों की बात ही क्या है-वै तो अब मेरा मुख तक नहीं देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है-पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अ-निष्ट अप्रिय आदि बन गई हूं। यह तैत्तलिपुत्र तो मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उद्भवो है

(एवं खलु अहं तैत्तलिपुत्रस्य पुर्वि इष्टा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए)

पछेलां हुं तैत्तलिपुत्रने भूअअ छट्ठांतं, प्रिय, मनोज्ञं अने मनोम હતી પણ હવે હું તેમના મટે તેવી રહી નથી અનીષ્ટ વગેરે થઈ પડી છું. મારી સાથે વાતચીતની વાત તો દૂર રહી પણ તેઓ માં મોં પણ જોવા માગતા નથી ગોરખર પુણ્યોની મનોવૃત્તિ કેટલી બધી ચંચળ હોય છે? જેને પછેલાં જે હું ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, વગેરેના રૂપમ હતી, હવે તેને તેજ હું અનિષ્ટ અપ્રિય વગેરે થઈ પડી છું આ તૈત્તલિપુત્ર મારા નામગોત્ર સુદ્ધા સાલ-વણ નામગતા નથી ત્યારે મને જોવાની અને મારી સાથે રહેવાની તો તેમને પાપના પહેરમા (કુટુમ્બજાગરિયં જાગમાણીએ અયમેયારૂપે અજ્ઞત્થિએ જાવ સમુત્પન્ને) ઘર-ગૃહસ્થીના વિચારકરતી જાગી રહી હતી ત્યારે-આ જાતનો

भेयः=उचितं खलु मम सुव्रतानामार्याणामन्तिके प्रव्रजितुम्, एवं संप्रक्षते=विचार-
यति, संप्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्लं जाव पाउप्पभायाए' कल्पं यावत् प्रादुष्पभाता-
याए=प्रातः सूर्योदयसमये यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य 'करयल-
परि०' करतलपरीगृहीतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय !
मया सुव्रतानामार्याणामन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, 'जाव अब्भणु

उसे कैसे हो सकती है। इस लिये मुझे अब यही उचित है कि मैं
सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रजित हो जाऊँ। (एवं संपेहेइ, संपेहिता
कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) इस
प्रकार जब वह विचार कर चुकी तो विचार करके फिर जब प्रातःकाल
हुआ और सूर्य का उदय हो चुका तब जहाँ तेतलिपुत्र था वहाँ पहुँची
(उवागच्छिता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए
सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुजाया पव्वइत्तए,
तएणं तेयलिपुत्ते पोडिलं एवं वयासी-एवं खलु-तुमं देवाणुप्पिए !
मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नरेसु देवलोएसु
देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए ! ममं ताओ देवलो-
याओ आगम्म, केवलपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि) वहाँ जा
कर उसने दोनों हाथ जोड़ कर उस को नमस्कार किया-बाद में वह
इस प्रकार उससे कहने लगी है देवानुप्रिय ! बात ऐसी है कि मैंने

हरकार ७ शी डाय ? अथी भने डवे अे ७ थोअ्य डागे छे डे डुं सुमता
आर्यिकाओनी पासे प्रव्रजित थछ जउ.

(एवं संपेहेइ, संपेहिता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव
उवागच्छइ)

आ रीते न्यारे तेहे थोअ्य विचार करी दीथो त्यारे ते सवारे सूर्योदय
थतां न्यां तेतलिपुत्र अभात्य डतो. त्यां पडोंची

(उवागच्छिता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुव्व-
याणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुजाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते
पोडिलं एवं वयासी-एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे
कालं किच्चा अन्नरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि तं जइ णं तुमं देवाणु-
प्पिए ! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो व विसज्जेमि)

त्यां ७धने तेहे तेभने भने डाय जेदीने नमस्कार कर्यो भने त्यारपट्टी
ते आ प्रभाहे डडेवा डागी डे डे देवानुप्रिय ! मे सुमता आर्यानी पासेथी

71642

अनगारधर्मोत्तवर्णिनी टीका अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

५१

०णाया यद्वत्तए ' यावदभ्यनुज्ञाता प्रव्रजितुम्=स धर्मो मम मनसि रुचितः तस्माद्भवताऽभ्यनुज्ञातासती प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः । ततः खलु तेतलिपुत्रः पोट्टिला-भेवमवदत्-एवं खलु त्वं देवानुप्रिये ! मुण्डा प्रव्रजिता सती कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपत्स्यते । ' तं ' तदा यदि खलु त्वं देवानुप्रिये ! मां ततो देवलोकदागत्य केवलप्रज्ञसं धर्मं बोधये; ' तोहं ' तदाऽहं त्वां ' विसज्जेमि ' प्रव्रजितुमाज्ञापयामि । ' अहं णं ' अथ खलु यदि खलु त्वं मां ' णं संबोहेसि ' न संबोधयसि=केवलप्ररूपितं धर्मं बोधयितुं प्रतिज्ञां न करोषि ' तो ' तदा ' ते ' त्वां न विसृजामि=प्रव्रजितुं नाज्ञापयामि । ' तएणं ' ततः खलु=तेतलिपुत्रस्य एतद्वचनश्रवणानन्तम्, सा पोट्टिला तेतलिपुत्रस्य ' एयमट्ठं ' एतमर्थं=धर्मं प्रति बोधनरूपमर्थं ' पडिसुणेइ ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तेतलिपुत्रो विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यं चतुर्विधमाहारम्, ' उवक्खडावेइ ' उपस्कारयति=निष्पादयति, ' उवक्खडावित्ता ' उपस्कार्य ' मित्तणाइ जाव आमंतेइ ' मित्रज्ञाति सुव्रता आर्थिका के पास धर्म का उपदेश सुना है वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ है । इस लिये मैं आपसे आज्ञा लेकर दीक्षित होना चाहती हूँ । पोट्टिला को ऐसी बात सुन कर तेतलिपुत्रने उससे कहा—देवानुप्रिये ! बात ऐसी है कि तुम दीक्षित हो कर जब काल अवसर काल करोगी (यह निश्चित है) अन्यतर देवलोक में देवता की पर्याय से उत्पन्न होओगी—तब यदि देवानुप्रिय ! मुझे वहां से आ कर तुम केवलप्रज्ञसं धर्म समझाओ—तो मैं तुम्हें प्रव्रजित होने के लिये आज्ञा दे सकना हूँ (अहं णं तुमं ममं णं संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, ततः खलु तेयलिपुत्ते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ जाव

धर्मनो उपदेश सांलज्यो छे अने ते मने गमरी गये छे, ओटला भाटे हुं तमारी आज्ञा भेगवीने दीक्षा ग्रहण करवा धम्भुं छुं । पोट्टिलानी आ नतानी बात सांलणीने तेतविपुत्रे तेने कछुं के छे देवानुप्रिये ! तमे दीक्षित भधने न्यारे डाणना समये डाण करेशे अने अन्यतर देवलोकमां देवताना पर्यायथी जन्म पावशे त्यारे ने तमे छे देवानुप्रिये ! त्यांथी आवीने मने केवणि प्रज्ञसं धर्म समझये तो हुं तमने अत्यारे पुशीथी प्रमल्लत थवानी आज्ञा आपी शकुं तेम छुं ।

(अहं णं तुमं ममं णं संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, ततः खलु तेतलिपुत्ते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमंतेइ, आमंतिता, मित्तणाइ सम्माणित्ता पोट्टिलं

યાવદામન્ત્રયતિ, મિત્રજ્ઞાતિસ્વજનસમ્બન્ધિપરિજનાન્ આમન્ત્રયતિ, 'આમંત્રિતા' આમન્ત્ર્ય 'જાવ સંમાણે' યાવત્-સંમાનયતિ=અશનપાનાદિ ચતુર્વિધાહારેણ સંમાન્ય, 'પોટિલં પઠાયં જાવ પુરિસસહસ્સવાહિણિં સીઅં' પોટિલાં સ્નાતાં યાવત્ પુરુષસહસ્રવાહિનીં શિવિકામ્, 'દૂરોદે' દૂરોદયતિ=આરોહયતિ, 'દુરુહિતા' આમંતે' આમંત્રિતા જાવ સમ્માણે, સમ્માણિતા પોટિલં પઠાયં જાવ પુરિસસહસ્સવાહિણિં સીયં દુરુહદ, દુરુહિતા મિત્તણા' જાવ સંપડિ-બુડે સવ્વિહૂણે જાવ રવેણં તેયલિપુરસ્સ મજ્ઞં મજ્ઞેણં જેણેવ સુવ્વયાણં ઉવસ્સણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) યદિ તુમ સુઝે સંબોધિત નહીં કરોમી અર્થાત્ કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મ કો સુઝે સમજ્ઞાને કી પ્રતિજ્ઞા નહીં કરોમી તો મૈં તુમ્હે દીક્ષિત હોને કી આજ્ઞા નહીં દૂંગા—ઇસ પ્રકાર કે તેતલિપુત્રકે ઇસ કથનકો ઉસ પોટિલાને સ્વીકાર કર લિયા । અર્થાત્ મૈં દેવલોક મૈં જાઝંગા તો વહાં સે આ કર આપ કો પ્રતિષેધ દૂંગી ઇસ પ્રકાર જબ પોટિલા ને સ્વીકાર કર લિયા । ઇસ કે ઘાદ તેતલિપુત્ર ને વિપુલ માત્રા અનજ્ઞાનાદિ રૂપ ચારોં પ્રકાર કા આહાર નિષ્પન્ન કરવાયા-કરવા કરકે ફિર ઉસને અપને મિત્ર, જ્ઞાતિ, આદિ જનો કો આમંત્રિત ક્રિયા । મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબન્ધી પરિજનોંકો આમંત્રિત કરકે યાવત્ અજ્ઞાન પાના-વિરૂપ ઇસ ચતુર્વિધ આહાર સે ઉનકા સન્માન કરકે ઉસને પોટિલાકો સ્નાન કરવા કર યાવત્ ઉસે પુરુષ સહસ્રવાહિની શિવિકા પર બેઠાયા,

પઠાયં જાવ પુરિસસહસ્સવાહિણિં સીયં દુરુહદ દુરુહિતા મિત્તણા' જાવ સંપડિબુડે સવ્વિહૂણે જાવ રવેણં તેયલિપુરસ્સ મજ્ઞં મજ્ઞેણં જેણેવ સુવ્વયાણં ઉવસ્સણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

જો તમે મને સંબોધશે નહિ એટલે કે જો તમે મને કેવળિ પ્રજ્ઞસ ધર્મને સમજાવવાની પ્રતિજ્ઞા કરશે નહિ તો તમને હું કેઇપણ સંભોગોમાં પણ દીક્ષા સ્વીકારવાની આજ્ઞા આપીશ નહિ. આ રીતે કહેવાથી પોટિલાએ તેતલિપુત્રના કથનને સ્વીકારી લીધું એટલે કે પોટિલાએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઇને કહ્યું કે હું દેવલોકમાં જઇશ અને ત્યાંથી આવીને તમને ધર્મનો બોધ આપીશ. આમ બ્યારે પોટિલાએ સ્વીકારી લીધું ત્યારપછી તેતલિપુત્રે પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરેના રૂપમાં ચાર જાતના આહારો બનાવડાવ્યા અને ત્યારબાદ તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, વગેરે સ્વજનોને આમંત્રણ આપ્યું. મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબન્ધી પરિજનોને આમંત્રણ આપીને યાવત્ અશન-પાન વગેરે ચાર જાતના આહારોથી તેમનું સન્માન કરીને તેણે પોટિલાને સ્નાન કરાવડાવ્યું અને યાવત્ તેને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીમાં બેસાડી.

અનવારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦૧૪ તેતલિપુત્રપ્રજ્ઞાનચરિતવર્ણનમ્

૫૩

દૂરોદ્ધ=આરોદ્ધ 'મિત્તળાઃ જાવ સંપરિવૃદ્ધે' મિત્રજ્ઞાતિ યાવત્ સંપરિવૃત્તઃ=મિત્ર-
જ્ઞાતિસ્વજનસમ્બન્ધિપરિજનાદિભિર્યુક્તઃ 'સન્વિદ્ધૌ' સર્વદ્વર્ધા 'જાવ રવેણ'
યાવદ્રવેણ=ધેર્યાદિનિનાદેન સહ તેતલિપુરસ્ય મધ્યમધ્યેન યજૈવ સુવ્રતાનામુપાશ્રય-
સ્તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ । સા પોદ્દિલા શિવિકાતઃ 'પચ્ચોરુહૃ' પ્રત્યવરોહતિ=અવતરતિ ।
તતઃ સ તેતલિપુત્રઃ પોદ્દિલાં પુરતઃ કૃત્તા યજૈવ સુવ્રતા આર્યા તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ,
ઉપાગત્ય, વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવમવદત્-એવં સ્વલુ હે
દેવાનુપ્રિયાઃ મમ પોદ્દિલામાર્યા ઇષ્ટા કાન્તા પ્રિયા મનોજ્ઞા મનોડમા, વર્તતે,
બૈઠા કર મિત્ર, જ્ઞાતિ સ્વજન સંબન્ધી પરિજનોં સે યુક્ત હોકર અપની
સમસ્ત વિભૂતિ કે અનુસાર ગાજે બાજેકે સાથ તેતલિપુર નગર કે બીચોં-
બીચ ચલ કર વહ જહાં સુવ્રતા આર્યિકા કા ઉપાશ્રય થા વહાં પહુંચા ।
(પોદ્દિલા સીયાઓ પચ્ચોરુહૃ, તેતલિપુત્રે પોદ્દિલં પુરઓ કદ્દુ જેણેવ
સુવ્રયા અડ્ઝાઓ તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા, વંદદ, નમંસદ, વંદિત્તા નમંસિત્તા
નમંસિત્તા એવં વયાસી, એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મમ પોદ્દિલા મારિયા ઇદ્ધા
૫ એસણં સંસારમઉવ્વિગ્ગા જાવ પવ્વહિત્તે પહિચ્છંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા !
સિસ્સિણીમિક્કલં અહાસુહં મા પહિવંધં કરેહિ) પોદ્દિલા શિવિકા સે
ઉતરી-તેતલિપુત્ર પોદ્દિલાકો આગે કરકે જહાં સુવ્રતા આર્યિકા થીં વહાં
ગયા । જા કર ઉસને ઉનકો વંદનાકી નમસ્કાર કિયા । વંદના નમસ્કાર
કરકે ફિર હસ પ્રકાર કહને લગાં હે દેવાનુપ્રિયે ! યહ મેરી પોદ્દિલા નામ
કી પત્ની હૈ । યહ મુદ્દે ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, મનોજ્ઞ એવં મનોમ હૈ । હસને

પાલખીમાં બેસાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબન્ધી પરિજનોને સાથે લઇને
તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાળવાળની સાથે તેતલિપુર નગરની
વચ્ચેવચ્ચે થઇને જ્યાં તે સુવ્રતા આર્યિકાને ઉપાશ્રય હતો ત્યાં પહોંચ્યો.
(પોદ્દિલા સીયાઓ પચ્ચોરુહૃ, તેતલિપુત્રે પોદ્દિલં પુરઓ કદ્દુ જેણેવ સુવ્રયા અડ્ઝાઓ
તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા, વંદદ, નમંસદ, વંદિત્તા નમંસિત્તા એવં વયાસી એવં
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મમ પોદ્દિલા મારિયા ઇદ્ધા ૫ એસણં સંસારમઉવ્વિગ્ગા જાવ
પવ્વહિત્તે પહિચ્છંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! સિસ્સિણીમિક્કલં અહાસુહં મા પહિવંધં કરેહિ)
પોદ્દિલા પાલખીમાંથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોદ્દિલાને
આગળ રાખીને જ્યાં સુવ્રતા આર્યિકા હતી ત્યાં ગયો. ત્યાં જઇને તેણે તેમને
વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યો, વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોદ્દિલા નામે મારી પત્ની છે. મને એ ઇષ્ટકાંત,
પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે. એણે તમારી પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે

एषा खलु भवतीनां समं धर्मं श्रुत्वा, धर्मश्रवणजनितवैराग्यवशात् संसारभयो-
द्विग्ना 'जाव पव्वइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके
प्रव्रज्यां प्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानु-
प्रियाः ! इमां शिष्याभिक्षाम्, सुव्रतार्यां प्राह—यथासुखम् मा प्रतिबन्धं कुरुष्व ।
ततः खलु सा पोड्डिआ सुव्रताभिरार्याभिरिवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्थं
दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्राम्यति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्या-
लंकारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता
आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दिस्त्वा नमस्यित्वा एवमव-
दत्—'अलिस्तेणं भंते ! लोए' आदीप्तः खलु भदन्त ! लोकः—हे आर्ये ! एष
कोको जन्म नरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एव' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणंदा'
यथा देवानन्दा=देवानन्दे एषाऽपि सुव्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यावत्—एकादश
अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या
आपकं पास धर्मं सुना है सो उमके प्रभाव से यह संसार भय से
उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, व्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित
होना चाहतो है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! आप मेरे द्वारा दी गई इस
शिष्य भिक्षाको अंगीकार कीजिये । तब सुव्रता आर्यिका ने कहा—
यथा सुखं मा प्रतिबन्धं कुरुष्व—(तएणं सा पोड्डिला-सुव्वयार्हि अज्जाहि
एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुत्थिमं दिसी भागं अवक्कमइ, अवक्क-
मित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंच-
मुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अलिस्ते णं
भंते । लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

तेना प्रभावधी अये संसारलयथी व्यकुण्ठधने जन्म-मरणधी भीत अने व्रस्त
धने तमारी पासैथी दीक्षा ग्रहण करवा छिछे छे. ओट्ठा भाटे छे देवानु-
प्रिये ! मास वडे अपाती आ शिष्या इथी भिक्षानो स्वीकार करे. त्यारे
ज्वाणमां सुव्रता आर्यिकाअये तेने कछु के 'यथासुखं मा प्रतिबन्धं कुरुष्व'
(तएणं सा पोड्डिला सुव्वयार्हि अज्जाहि एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तर-
पुत्थिमं दिसी भागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं
ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—
अलिस्तेणं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

જ નગારચર્મમૃતવચિની ટી૦ અ૦ ૧૪ તેતલિપુત્રપ્રધાનચરિતવર્ણનમ્

૫૫

સંલેખનયા આત્માનેં જુદા પઠિં મક્તાનિ અનશનેન છિત્વા, ' આલોહ્યપડિકંતા ' આલોચિત પ્રતિકાન્તા ' સમાદિપતા ' સમાધિપ્રાપ્તા કાલમાસે કાલં કૃત્વા અન્ય-તરેષુ દેવગોકેષુ દેવતયા ઉપવન્ના । મુ.૨૮ ॥

વાસાણિ સામન્નપરિયાગં પાઉણ્ઠ, પાઉણિત્તા માસિયાણ સંલેહ્ણાણ અત્તાણં જ્ઞોસેત્તા સદ્ધિમ્ભત્તાઈ અણસણાણ છેદિત્તા આલોહ્યપડિકંતા સમાદિપત્તા, કાલમાસે કાલં કિચ્ચા અણતરેસુ - દેવલોણ્ણસુ દેવત્તાણ ઉવવણ્ણા) હમ પ્રકાર સુવ્રતા આર્થિકા કે દ્વારા કરી ગઈ વહ-પોટિલા બહુત અધિક હૃષ્ટતુષ્ટ હુઈ । વાદ મેં વહ ઈશાન કોણમેં ગઈ । વહાં જાકર ઉસને અપને હાથોં સે શરીર પર રહે હુણ આભણ, માલ્ય એવં અલં-કારોં કો ઉતાર દિયા । ઉતાર કર અપને આપ પંચસુષ્ટિક વેશોં કા લુંચન કિયા-લુંચન કર ફિર વહ જહાં સુવ્રતા આર્થા થીં વહાં આઈ । આતે હી ઉસને ઉઝેં વંદના એવં નમસ્કાર કરકે ફિર વહ હસ પ્રકાર બોલી — હે મદન્ત ! યહ લોક જરા મરણ આદિ દુઃખોં સે પ્રફલિત હો રહા હૈ, હસ પ્રકાર સે દેવાનંદા કી તરહ યહ સુવ્રતા આર્થા કે પાસ દીક્ષિત હો ગઈ । યાવત્ ઉસને ૧૧ અંગોં કા અધ્યયન મી કર લિયા । બહુત વર્ષોં તક શ્રામણ્ય પર્યાય કો પાલન કિયા । પ્રીતિપૂર્વક અન્ત મેં એક માસ કી સંલેખના ધારણ કર ૬૦, મક્તોં કા અનશન દ્વારા છેદ

વાસાણિ સામન્નપરિયાગં પાઉણ્ઠ, પાઉણિત્તા માસિયાણ સંલેહ્ણાણ અત્તાણં જ્ઞોસેત્તા સદ્ધિ મ્ભત્તાઈ અણસણાણ છેદિત્તા આલોહ્યપડિકંતા સમાદિપત્તા, કાલમાસે કાલં કિચ્ચા અણતરેસુ દેવલોણ્ણસુ દેવત્તાણ ઉવવણ્ણા)

આ રીતે સુવ્રતા આર્થિકા વડે આજ્ઞા અપ.ચેત્રી પોટિલા ખૂબ જ હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈ ગઈ ત્યારપછી તે ઈશાન કોણ તરફ ગઈ અને ત્યાં જઈને તેણે પોતાના હાથથી જ શરીર ઉપરના આભરણો, માળાઓ અને અલંકારો ને ઉતાર્યા અને ઉતારીને પોતાની મેળે જ પાંચ મુઠી કેશોનું લુંચન કર્યું. લુંચન કર્યા પછી તે જ્યાં સુવ્રતા આર્થા હતી ત્યાં આવતી રહી. ત્યાં આવીને તેણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા, વંદના અને નમસ્કાર કરીને તે આ પ્રમાણે વિનંતી કરવા લાગી કે હે ભદન્ત ! આ સંસાર જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે દુઃખોથી સજળી રહ્યો છે. આ રીતે પોટિલા દેવાનંદાની જેમ સુવ્રતા આર્થાની પાસે દીક્ષિત થઈ ગઈ અને અનુક્રમે તેણે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન પણ કરી લીધું. તેણે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું છેવટે પ્રીતિપૂર્વક એક માસની સંલેખના ધારણ કરીને અનશન વડે સાઠ ભક્તોનું છેદન કર્યું

मूल्य-तएणं से कणगरहे राया अन्नया कयाई कालधम्मणा संजुत्ते यावि होत्था । तएणं राईसर जाव णीहरणं करेति, करित्ता, अन्नमन्नं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था, अम्हेणं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रत्तो सव्वट्ठाणेषु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवट्ठावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तएत्ति कट्ठु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेत्ति, पडिसुणित्ता, जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता, तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ । अम्हे यणं रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रणो सव्वट्ठाणेषु जाव रज्जधुगचित्ता, तं जइणं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, तण्णं तुमं अम्हं दलाहि । जाणं अम्हे महयार रायाभिसेएणं अभिसिंचामो । तएणं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर० एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, कणगज्जयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर

दिया । छेद कर आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त हो गई और काठ अवसर काल कर अन्यतर देवलोकमें देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गई । सू० ८

छेदन करीने आलोचित प्रतिक्रान्त बनेली ते समाधि प्राप्त थर्ध गर्ध अने काण अवसरै काण करीने अन्यतर देवलोकमां देवताना पर्यायधी जन्म पावनी सू. '८'

अमगारधर्मावृतवर्णिनी टीका अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

५७

जाव उवणेइ, उवणिता, एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया !
 कणगरहस्स रणो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नामं
 कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रत्तो
 रहस्सियं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महयार रायाभिसेएणं अभि-
 सिंचह । सव्वं च से उट्ठणपरियावणियं परिकहेइ । तएणं ते
 ईसरं कणगज्झयं कुमारं महयार रायाभिसेएणं अभिसिंचंति ।
 तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलयं
 वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमा-
 वई देवी कणगज्झयं रायं सदावेइ, सदावित्ता, एवं वयासी-
 एस णं पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अंतेउरे यं तुमं च तेतलि-
 पुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, तं तुमं णं तेयलिपुत्तं अमच्चं
 आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि, ठियं
 पज्जुवासाहि, वयंतं पडिसंसाहेहि, अच्चासणेणं उवणिमंतेहि
 भोगं च से अणुवड्ढेहि । तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए
 देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा
 कदाचित् । ‘कालधम्मणा संजुते’ काष्ठधर्मेण संयुक्तः= मृश्राप्यभवत् । ततः

‘तएणं से कणगरहे राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अब्भया कयाइं)
 वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएणं

‘तएणं से कणगरहे राया’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपछी (से कणगरहे राया अब्भया कयाइं) ते कनकरथ
 राजा कोई दिवसे कालकवलित थछ गयो ओटले के मृत्यु पाभ्यो।

खलु 'राईसर० जाव' = राजेश्वर० यावत् = राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकादि-
सार्थवाहप्रभृतयः तस्य 'णीहरणं' निहरणं = मृतककृत्यं कुर्वन्ति. कृत्वा अन्यो-
ऽन्यमेवमवदन्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! कनकरथो राजा 'रज्जे य जाव पुत्ते'
राज्ये च यावत् पुत्रान् = राज्यादिषु मूर्च्छित उत्पन्नान् पुत्रान् 'वियंगित्था'
अव्यङ्ग्यत् = विकृताङ्गान् कृतवान् मारितवानित्यर्थः । 'अम्हेणं' वयं खलु देवानु-
प्रियाः ! 'रायाहीणा' राजाधीनाः = राजवशवर्तिनः, 'रायाहिद्विया' राजाऽधि-
ष्ठिता = राजाश्रिता इत्यर्थः, 'रायाहीणकज्जा' राजाधीनकार्याः, राज्ञामधीनं कार्यं

राईसर जाव णीहरणं करेति, कारित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी-एवं खलु
देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था) राजेश्वर,
तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, सार्थवाह आदि व्यक्तियों ने मिल कर
उसका दाह संस्कार किया । दाह संस्काररूप मृतक कृत्य करने के बाद
फिर उन लोगों ने परस्पर में इस प्रकार का विचार किया । हे देवानु-
प्रियो ! देखो कनकरथ राजाने तो राज्य आदि में मूर्च्छित हो कर
उत्पन्न हुए समस्त पुत्रों को विकृत अंग करके मार डाला है (अम्हे णं
देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिद्विया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेत-
लीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेषु-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए,
दिन्नविचारे-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था) अब इस समय कोई राजा
है नहीं अतः हमलोगों का क्या होगा क्यों कि हम लोग तो हे देवा-
नुप्रियों ! राजा वशवर्ती है, राजा के आश्रित ही रहते आये हैं, हमारा

(तएणं राईसर जाव णीहरणं करेति, कारित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी-एवं
खलु देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था)

રાજેશ્વર, તલવર, માડમ્બિક કૌટુમ્બિક, સાર્થવાહ વગેરે લોકોએ મળીને
તેનો અગ્નિ-સંસ્કાર કર્યો. અગ્નિ-સંસ્કાર આદિ મૃત્યુ વિધિ પતાવીને તે લોકોએ
પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ, રાજા
કનકરથે તો રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં લોકોપ તેમજ મોડિત થઈને ઉત્પન્ન
થયેલા પોતાના બધા પુત્રોના અંગો કાપીને મારી નાખ્યા છે.

(અમ્હેણં દેવાણુપ્પિયા ! રાયા હીના રાયાહિદ્વિયા રાયાહીણકજ્જા, અયં ચ
ણં તેતલીઅમચ્ચે કણગરહસ્સ રન્નો સવ્વટ્ઠાણેસુ સવ્વભૂમિયાસુ લદ્ધપચ્ચ, દિન્ન-
વિચારે સવ્વકજ્જવડ્ઢાવણ યાવિ હોત્થા)

હવે અત્યારે કોઈ રાજા છે જ નહિ તો અમારી શી દશા રહેશે ? હે
દેવાનુપ્રિયો ! અમે તો રાજાના વશવર્તી છીએ, રાજાને અધીન રહેવામાં જ

अतएव तत्तत्प्रमाणानुसारं प्रो० प्र० १४ तेतलिपुत्रप्रधानवर्तितवर्णनम्

५६

येषां ते तथा, सर्वमस्माकं कृत्यं राजाधीनं वर्तते इति भावः । अयं च खलु तेतलि-
रमात्यः कनकरथस्य राज्ञः 'सर्ववृद्धाणेषु' सर्वस्थानेषु=संधिविग्रहादिषु सर्वेषु
कार्येषु, 'सर्वभूमियासु' सर्वभूमिकासु = स्वाम्यमात्यरा'दुर्गकोषवलसुहृत्पौर-
श्रेणिरूपाष्टविधासु 'लद्धपच्च' =लब्धप्रत्ययः-लब्धः=प्राप्तः प्रत्ययो विश्वासो
यस्य सः, सकलजनविश्वासपात्रमित्यर्थः, 'दिन्नविचारे' दत्तविचारः, दत्तः=
राज्ञं वितर्णः, विचारः=तोभनो विचारो येन सः, लोकोपकारि विचारादायक इति-
भावः, 'सर्वरुज्जङ्घाने' सर्वकार्यवर्द्धकः=राज्ये समस्तकार्यसम्पादकश्चापि
'होत्या' अस्ति । 'तं' तत्=तस्मान् कारमात् 'सेयं' श्रेयः=उचितं खलु अस्माकं
तेतलिपुत्रममात्यं कुमारं 'जाइत्तए' याचितुम्, अयमभिप्रायः-यद्यममात्यो
राज्ञः सकलकार्यनिर्वाहकः, अतस्तस्मीपे गत्वा 'कोऽपि राजलक्षणसंपन्नः
कुमारो राजपदे स्थापनीयः' इति वार्तालापमुपक्रम्य, समागते प्रसङ्गे, तत्पुत्रो
राजपदे स्थापयितुं याचनीयः, 'त्तिकड्डु' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा अन्यो-
ऽन्यस्य एतमर्थं 'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणिता' प्रति-
श्रुत्य, यत्रैव तेतलिपुत्रोऽमात्यस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, एवमवदन्-एवं खलु

जितना भी कार्य होता है वह सब राजाधीन ही होता आया है । इस
लिये तेतलिपुत्र जो अमात्य है चलो उनके पास चले क्यों कि वे ही
कनकरथ राजाके लिये संधिविग्रह आदि समस्त कार्यों में एवं स्वामी,
अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग कोश, बल, सुहृत् और पौरश्रेणिरूप आठ भूमियों
में विश्वसनीय थे । राजा के लिये ये ही लोकोपकारी कार्यों में सलाह
दिया करते थे और ये ही राज्यमें समस्त कार्यों के संपादक हैं (तं सेयं
खलु अहं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए त्तिकड्डु अन्नमन्नस्स एय-
मदं पडिसुणेंति, पडिसुणिता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवाग-
च्छंति, उवागच्छिता तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-

देवाध गयेला छीजे. अभास भधा कामे रमाधीन ज डोय छे ओथी आला
आपणे सौ भगोने अमात्य तेतलिपुत्रनी पासे जमजे, डेमके तेओ ज राज
कनकरथना संधिविग्रह वगेरे भधा कामेमां अने स्वामी. अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग,
कोशणज, सुहृत् अने पौर श्रेणिरूप आठ भूमिओमां ते विश्वसनीय छे. लोडोना
छित भाटे तेतलिपुत्र अमात्य ज सलाह आपता रडेता डता तेमज रमथना
भधा कामेने पार पाडनारा पण तेओ ज छे.

(तंसेयं खलु अहं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए त्ति कड्डु अन्नमन्नस्स
एयमदं पडिसुणेंति, पडिसुणिता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छिता तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे

હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથો રાજા રાજ્યે ચ રાષ્ટ્રે ચ યાવત્ વ્યજ્ઞયતિ, વયં ચ સ્વલુ
હે દેવાનુપ્રિય ! રાજાધીના યાવદ્ રાજાધીનકાર્યાઃ, સ્વં ચ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય !

પિપ્પા ! કળગરહે રાયા રજ્જે ય રદ્ધે ય જાવ વિયંગેહ, અમ્હે ય ણં રાયા
હીણા જાવ રાયહીણકજ્ઞા, તુમં ચ ણં દેવાણુપિપ્પા ! કળગરહસ્સ રણ્ણો
સન્વટ્ટાણેસુ જાવ રજ્જધુરા ચિત્તે—તં જહ્ણં દેવાણુપિપ્પા ! અત્થિ કેહ
કુમારે રાયલક્ષણસંપન્ને અભિસેયારિહે, તણ્ણં તુમં અમ્હં દલાહિ)
ઇસલિયે હમકો ઉચિત્ત હૈ કિ હમ તેતલિપુત્ર અમાત્ય સે કુમાર કી
યાચના કરેં . તાત્પર્ય ઇસ કા યહ હૈ કિ યે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજા કે
સકલ કાર્ય નિર્વાહક હૈ—ઇસલિયે ડનકે પાસ ચલકર “ કોઈ રાજ
લક્ષણ સંપન્ન કુમાર રાજપદ મેં સ્થાપનીય હૈ ” ઇસ યાત કી હમ ચર્ચા
કરેં . ઇસ ચર્ચા કે પ્રસંગ મેં ડનસે યહ બી નિવેદન કરેંગે કિ આપ
અપને પુત્ર કી હી રાજ પદ મેં સ્થાપિત કર દીજિયે . ઇસ પ્રકાર કા
વિચાર ડન્હોને કિયા . જબ વિચાર સ્થિર હોચુકા—તબ સબને ઇસ બાત
કો ઇક મત સે સ્વીકાર કર લિયા . સ્વીકાર કર કે ફિર વે સચકે સબ
જહાં અમાત્ય તેતલિપુત્ર યે વહાં ગયે . વહાં જાકર ડન્હોને ઇસા કહા—
હે દેવાનુપ્રિય ! કનક રથ રાજાને રાજ્ય ઓર રાષ્ટ્ર આદિ મેં વિશેષ મૂ-
ચ્છિત્ત બનકર ઉત્પન્ન હુએ અપને સમસ્ત પુત્રોં કો અંગભંગ કર મારડાલ

રાયા રજ્જે ય રદ્ધે ય જાવ વિયંગેહ, અમ્હે ય ણં દેવાણુપિપ્પા ! કળગરહસ્સ રણ્ણો
સન્વટ્ટાણેસુ જાવ રજ્જધુરાચિત્તે—તં જહ્ણં દેવાણુપિપ્પા ! અત્થિ કેહ કુમારે
રાયલક્ષણસંપન્ને અભિસેયારિહે, તણ્ણં તુમં અમ્હં દલાહિ)

એથી અમને એ ઉચિત લાગે છે, કે અમે તેતલિપુત્ર અમાત્યની પાસે
જઘને રાજકુમારની યાચના કરીએ. કારણ કે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજાના બધા
કામોને સારી રીતે પાર પાડનારા છે, એટલા સાથે તેમની પાસે જઘને રાજા
થવા યોગ્ય રાજ-લક્ષણ યુક્ત કોઈ કુમાર મળી શકે તેમ છે કે કેમ ? તે
વિશે ચર્ચા કરીએ. આ જાતની વિચારણાં કરતાં કરતાં અમે બધા તેમને એવી
વિનંતી પણ કરીશું કે તમે પોતાના પુત્રને જ રાજગાદીએ બેસાડી દો. આમ
તે લોકોએ મળીને વિચાર કર્યો. આમ વિચાર પાડે થઈ ગયો ત્યારે સૌએ
એકમત થઈને તેને સ્વીકારી લીધો. સ્વીકાર કરીને તેઓ બધા ત્યાંથી જ્યાં
અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો ત્યાં ગયા, ત્યાં જઘને તેમણે તેતલિપુત્રને કહ્યું કે હે
દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાએ રાજ્ય અને રાષ્ટ્ર બંનેમાં સવિશેષ મૂચ્છિત એટલે કે
બેહોશ થઈને જન્મ પામેલા પોતાના બધા જ પુત્રોના અંગે કાપીને તેઓને મારી

अनभारधर्माभ्युत्थविणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

११

कनकरथस्य राज्ञः सर्वस्थानेषु यावत् 'रज्जधुराचित' राज्यस्य धूः राज्यधुरा, तस्याश्विन्तकः, राज्यभारनिर्वाहकश्चासि, तद् यदि खलु देवानुप्रिय! अस्ति कोऽपि कुमारो राजलक्षणसंपन्नः 'अभिसेयारिहे' अभिषेकाहो राज्यभिक्षेकयोग्यः, 'ते णं' तं खलु त्वमस्मभ्यं 'दलाहि' देहि 'जो' यस्मात् 'णं' तं 'अम्हे' वयं महता २ 'रायाभिसेएण' राज्याभिषेकेण=राजयोग्येनाभिषेकेण अभिषिञ्चामः राज्ये स्थापयाम इत्यर्थः। ततः खलु तेतलिपुत्रः तेषाम् 'ईसर' = ईश्वर = ईश्वरतल्लवमाडम्बिकादि सार्थवदपभृतीनाम् एतमर्थं 'पडिसुणेइ' प्रश्रित्वाति= स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वाकृत्य, कनकध्वजं कुमारं 'ण्हायं सस्सिरीयं' स्नातं यावत् सश्रीकं, स्नातं=कृतस्नानम्, यावत् सश्रीकम्=सर्वालङ्कारविभूषितं शोभासमन्वितं च करोति, कृत्वा तेषाम् 'ईसर जाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरादीनां सम्मुखे 'उवणेइ' उपनयति, उपनीय एवमवादीत्-एष खलु हे देवानुप्रियाः!

है। अब इस समय राज पद में कोई नहीं है। हमलोग तो हे देवानुप्रिय! राजाधीन यावत् राजाधीन कार्य वाले हैं। और देवानुप्रिय! कनक रथ राजा के लिये संधि विग्रह आदि समस्त स्थानों में एवं स्वामी अमात्य आदि आठ भूमियों में विश्वसनीय रहें हैं। राजा के लिये लोभोपकारी कार्यों में आप सलाह देते रहे हैं। और आप ही राज्य भार के निर्वाहक है। इसलिये हमारी आपसे यह प्रार्थना है कि हे देवानुप्रिय! यदि राज्यलक्षण संपन्न कोई कुमार राज्य पद में अभिषेक करने के योग्य होवे तो उसे आप-हमें देवे! (जो णं अम्हे महया २ रायाभिसे एणं अभिसिचामो। तएणं तेतलिपुत्ते तेसि ईसरएयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुगित्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसि ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी) कि जिससे हम उसे

नाम्ना छे। छवे अत्यारे राजपद भाटे कोरि रहूँ नथी। छे देवानुप्रिय! अम्हे लोको तो राजधीन रहूँने न रहैता आव्या छीये अने छे देवानुप्रिय! तमे राज कनकरथना संधिविग्रह वगेरे भधा कामेमां ओटवे के स्वामी अमात्य, विग्रह विगेरे तमाभ कामेमां छमेसा निश्वासपात्र रह्या छे, लोडहितनी भावतमां तमे राजने सलाह आपता रह्या छे, अने तमेन राज्यना भधा कामेने पार पाडता आव्या छे। ओथी अमे तमने ओवी विनंति करीये छीये के छे देवानुप्रिय! राज-लक्षणोपाणे अने अलिषिडत यधने राजगादीये जेसवा योच्य कोरि कुमार छेय तो तेने तमे अभने सोपे। (जे णं अम्हे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिचामो। तएणं तेतलिपुत्तं तेसि ईसर एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीये करेइ, करित्ता तेसि ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी)

કનકરથસ્ય રાજ્ઞઃ પુત્રઃ પદ્માવત્યા દેવ્યા આત્મજઃ કનકધ્વજો નામ કુમારઃ અભિષેકાર્હો રાજલક્ષણસંપન્નો મયા કનકરથસ્ય રાજ્ઞો 'રહસ્તિયં' રહસ્તિકં=પ્રચ્છન્નં યથા સ્થાત્તથા સંવર્દિતઃ, એતં સ્વલુ યુયં મહતા ૨ રાજાભિષેકેણ અભિષિશ્ચત । પુનઃ સઃ સર્વે ચ 'સે' તસ્ય 'ઉદ્ઘાણપરિયાવળિયં' ઉત્થાનપરિયાવળિકમ્=

રાજ યોગ્ય અભિષેક દ્વારા અભિષિક્ત કર રાજ્ય મેં સ્થાપિત કરે । इस तरह के उन ईश्वर, तलवर, मांडम्बिक आदि सार्थवाह वगैरह के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्य ने स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके कनकध्वज कुमार वो उसने नहा धुवाकर सर्वालंकारों से विभूषित किया । विभूषिक करके फिर वह उसे उन ईश्वर तलवर आदिकों के समक्ष ले आया । लाकर के उनसे उसने ऐसा कहा—(एस णं देवानुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह) हे देवानुप्रियो ! यह कनकरथ राजा का पुत्र है जो पद्मावती की कुक्षि से जन्मा है । इसका नाम कनकध्वज कुमार है । अभिषेक के योग्य है और राजलक्षण संपन्न है । मैंने इसको कनकरथ राजा से छिपा कर पालापोषा है और वृद्धिंगत किया है । इसे आपलोग बड़े भारी राजयोग्य अभिषेक के साथ राज्य में स्थापित कीजिये । (सर्वं च से

કે બ્રેથી અને તેનો રાજ્યાસને અભિષેક કરી શકીએ. આ રીતે અમાત્ય તેતલિપુત્રે તે ઈશ્વર, તલવર, માંડમ્બિક, સાર્થવાહ વગેરેના કથનને સ્વીકાર્યું અને સ્વીકારીને તેણે કનકધ્વજ કુમારને સ્નાન કરાવ્યું અને ત્યારપછી બધા અલંકારોથી તેને શણગાર્યો. ત્યારબાદ અમાત્ય તેતલિપુત્રે સુસજ્જ થયેલા કુમારને ઈશ્વર, તલવર વગેરેની સામે લાવ્યો અને તેઓને કહ્યું કે—

(एसणं देवानुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કનકરથ રાજાનો પુત્ર છે અને પદ્માવતી દેવીના ગર્ભથી આનો જન્મ થયો છે. કનકધ્વજ કુમાર આનું નામ છે. આ કુમાર રાજ્યાસને ખેસાડવા યોગ્ય તેમજ રાજલક્ષણોથી યુક્ત છે. રાજા કનકરથને આ બાળવતી બાળુ નથી, મેં આનું પાલન તેમજ રક્ષણ છુપી રીતે કર્યું છે. તમે ભારે મહોત્સવની સાથે આ કુમારને રાજાબાદીએ ખેસાડો.

अनभारधर्मानृतवर्षिणी टीका अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

६३

उत्थानं=जन्म, परियापनिका=जन्मानन्तरमद्यावधिका संवर्द्धनादि-परिस्थितिः, उत्थानं च परियापनिका च=उत्थानपरियापनिकम्=जीवनचरितं परिकथयति । ततः खलु 'ईसर०' ईसरतलवरमाडम्बिकादयः कनकध्वजं कुमारं महताः २ राजाभिषेकेण अभिषिञ्चन्ति । ततः खलु स कनकध्वजः कुमारो राजा जातः, स च कनकध्वजो राजा 'महया हिमवन्त०' महाहिमवद्=महाहिमवन्महामलय मन्दरमहेन्द्रसारः 'महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्राणां सार इव सारो यस्य सः,

उद्घाणपरियावणियं परिकहेइ, तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिचन्ति । तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवन्त मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी) ऐसा कहकर फिर उन तेतलिपुत्र अमात्य ने उस कनकध्वज कुमार का उत्थान-जन्म और परियापनी का-जन्म से लेकर अभी तक की समस्त पालन पोषण संवर्द्धन आदि परिस्थिति रूप-जीवन चरित्र उन्हें कह सुनाया- इस के बाद उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक एवं कौटुम्बिक आदिकोंने कनकध्वज कुमार का बड़े जोर शोर के साथ राज्याभिषेक किया । राज्य में अभिषिक्त होने के बाद वे कनकध्वज कुमार अब राजा बन गये । इसका सार-बल लोकमर्यादा कारी होने के कारण महा हिमवत् जैसा, यश और कीर्ति के फैलाव के कारण महामलय

॥ सव्वं च से उद्घाणपरियावणियं परिकहेइ, तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिचन्ति । तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवन्ता मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी)

આ પ્રમણે કહીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે કનકધ્વજ કુમારનું ઉત્થાન-જન્મ અને પરિયાપનિકા એટલે કે જન્મથી માંડીને અત્યાર સુધીની પોષણ સંવર્દન વગેરેની જીવન ચરિત્ર સંબંધી બધી વિગત અથઈ ઇતિ સુધી કહી સંભળાવી. ત્યારબાદ તે ઈશ્વર, તલવર, માંડમ્બિક અને કૌટુમ્બિક વગેરે લોકોએ કનકધ્વજ કુમારનો બહુ જ મોટા પાયા ઉપર ઉત્સવ ઉજવીને રાજ્યાભિષેક કર્યો. અભિષેક થવા બાદ કનકધ્વજ રાજા થઈ ગયા હતા. તેમનું બળ લોક મર્યાદાને રક્ષનાર હોવા બદલ મહાહિમવન્ત જેવું હતું. તેમના યશ અને કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલા હતા તેથી તે મહામલય જેવા હતા તેમજ તેઓ દૃઢ પ્રતિ-

કોઠમર્યાદાકારિત્વેન મહારાષ્ટ્રપદ્મઃ, પ્રમુનયસઃ કીર્તિત્વેન મહામલયતુલ્યઃ, દૃઢપ્રતિજ્ઞત્વેન કર્તવ્યદિગ્દર્શકત્વેન ચ મન્દરમહેન્દ્રતુલ્યઃ, 'વર્ણમો' વર્ણકઃ વિશેષરૂપેણ અન્યતોડવસેયઃ, 'જાવ રજ્જં વસાસેમાણે' યાવદ્રાજ્યં પ્રશાસદ્ વિહરતિ રાજ્યં કુર્વન્નાસ્તે । તતઃ સ્વલુ સા પદ્માવતીદેવી કનકધ્વજં રાજાનં શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-એતત્ સ્વલુ હે પુત્ર ! તવ 'રજ્જે ય જાવ અંતેરેય૦' રાજ્યં ચ યાવદન્તઃ પુરં ચ એતસ્સર્વં તેતલિપુત્રસ્ય પ્રભાવેન વર્તતે 'તં' તત્=કારણાત્ ત્વં સ્વલુ તેતલિપુત્રમમાત્યં 'આઢાહિ' આદ્રિયસ્વ=આદરં કુરુશ્વ 'પરિજાણાહિ', પરિજાનાહિ=અવેક્ષસ્વ તદનુમત્યા સર્વં કાર્યં સમ્પાદયેત્યર્થઃ સત્કારય વસ્ત્રાદિના, સમ્માનય માલ્યાદિના, 'ઇંતં' યન્તમ્=ભાગચ્છન્તમેતં તેતલિપુત્રમ્ 'અમ્બુદ્દેહિ' અમ્બુત્તિષ્ઠ=અમ્બુત્યાનાદિના વિનયં પ્રદર્શયેત્યર્થઃ 'ઠિયં પજ્જુવાસાહિ' સ્થિતં પર્યુપાસ્ય=સેવસ્વ, 'વયંતં' વ્રજન્તં=ગચ્છન્તમ્ 'પહિસંસાહેહિ' પ્રતિસંસાધય=અનુગમનાદિના પ્રસાદય, તથા 'અદ્દામણેણં ઉવણિમંતેહિ' અર્થાસનેન ઉપનિમન્ત્રય=સ્વસ્થ્યાસને તમુપવેશય, ભોગં=મુલસામગ્રીરૂપં ચ 'સે' તસ્ય અનુરૂપં । તતઃ સ કનકધ્વજઃ 'પડમાવર્દેય દેવીય' પદ્માવત્યા દેવ્યાઃ વચનં 'તદ્વતિ'

કે જેમા, દૃઢપ્રતિજ્ઞા વાણે એવં કર્તવ્ય કા દિગ્દર્શન કરાને વાણે હાંને કે કારણ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ કે જેમા થા । ઓર ખી હન રાજા કે વિષય કા વિશેષ વર્ણન દૂસરોં શાસ્ત્રોં સે જાન લેના ચાહિયે । યાવત્ હસ તરહ યે કનકધ્વજ કુમાર અપને રાજ્ય કે શાસન કરને મેં તત્પર બન ગયે । હસકે થાદ્ હસ રાજમાના પદ્માવતીદેવી ને હન કનકધ્વજ રાજાકો અપને પાસ બુલાયા-ઓર બુલાકર ફિર હનસે હસને હસ પ્રકાર કહા-(તણં પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અંતેરેય૦ તુમંચ તેતલિપુત્તસ અમચ્ચસ પદ્માવેણં, તં તુમં ણં તેતલિપુત્તં અમચ્ચં આઢાહિ, પરિજાણાહિ, સકારેહિ, સમ્માણેહિ, ઇંતં અમ્બુદ્દેહિ ઠિયં પજ્જુવાસાહિ, વયંતં પહિસંસાહેહિ, અદ્દામણેણં

જાનાના અને કર્તવ્યને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા । રાજા કનકધ્વજ વિશે અવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમાં વર્ણવ્યું છે, જ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી બાણી લેવું બેઠાં આ પ્રમ.ણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના વહીવટને સંભાળવા માટે સાવધ થઈ ગયા । ત્યારપછી રજમાતા પદ્માવતીદેવીએ કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમ.ણે કહ્યું કે

(તણં પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અંતેરેય૦ તુમંચ તેતલિપુત્તસ અમચ્ચસ પદ્માવેણં, તં તુમં ણં તેતલિપુત્તં અમચ્ચં આઢાહિ, પરિજાણાહિ, સકારેહિ, સમ્મા-

अनगारधर्मावृत्तवर्षिणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

६५

तथेति= 'तथास्तु' इति कृत्वा प्रतिशृणोति=स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तथैव कुर्वाण
वावद् भोगं च तस्य अनुवर्द्धयति ॥ ९ ॥

उवणिमंतेहि, भोगं च से अणुवर्द्धेहि । तएणं से कणगज्झए राया पउमाव-
ईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोगं च से अणुवर्द्धेइ । हे पुत्र ! यह तुम्हारा
राज्य और अंतः पुर तथा तुम स्वयं यह जो कुछ है वह सब तेतलिपुत्र
अमात्य के प्रभाव से ही है इसलिये तुम तेतलिपुत्र अमात्य का आदर
करते रहो, उनकी अनुमति से काम किया करो उनका चल्नादि द्वारा
समय २ पर सत्कार करते रहो, अभ्युत्थानादि सन्मान करते रहो और
जब तेतलिपुत्र तुम्हें आते हुए दिखलाई दे तों तुम उठकर इनके प्रति
अपना विनय प्रदर्शित किया करो । जब ये जावे-तब तुम बैठ
कर इनकी सेवावृत्ति किया करो, जब ये चलने लगे तो तुम इनके पीछे
२ थोड़ी दूर तक अपने महलों में पहुँचाने जाया करो, अपने बैठने के
आसन पर इन्हें अर्धभाग में बैठाया करो और जो भी सुख साधनकी
सामग्री है वह इनकी बढ़ा दो । इस प्रकार राजमाता पद्मावती देवी के
वचनों को "तथास्तु" कहकर कनकध्वज राजाने स्वीकार कर लिया ।

येहि इंतं अणुवर्द्धेहि टियं पज्जुवासादि वयं तं पडिसंसाहेहि, अद्वासणेणं उवणिमं
तेहि, भोगं च से अणुवर्द्धेहि । तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए
तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोगं च से अणुवर्द्धेइ ।

हे पुत्र ! आ तमाइं राज्यं रणुवास तेभञ्ज तमे पोते आ अणुं ७ कंछ
छे, ते सर्वे तेतलिपुत्र अमात्यना प्रभावथी ७ छे, ज्येथी तमे तेत-
लिपुत्र अमात्यनो रुद्धा आदर करता रहो, हरि क काम तेमनी आज्ञाथी करता
रहो, वओ जेरे आपीने यथा समय तेमनो सत्कार करता रहो, तेमनुं
सन्मान करता रहो जने अमात्य तेतलिपुत्र तमने आवता देणाय त्यारे तमे
उपायछे तेमना प्रति विनय युक्त थछने व्यवहार करे ज्यारे तेओ जवा
नैपार पाथ त्यारे तमे जेसीने तेमनी सेवा करता रहो, अने ज्यारे तेओ
आसना सोटे त्यारे तमे तेमनी पाछण पाछण थोडे दूर सुधी पोताना मछेल
भां पित्तय आपवा सोटे तेमनुं अनुसरणु करेतां जओ, तमे तेमने पोताना
आसनना अर्धांलाग उपर जेसाओ अने तेमनी जधी सुअसगवडनी सामग्री
भां वधादे करी आपो, आ रीते राजमाता पद्मावती देवीनी आज्ञाने कनक
ध्वज राजाओ 'तथास्तु' कहीने स्वीकारी वीथी, स्वीकार्यो पथी तेआओ ते

मूष्म-तएणं से पोष्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २
 केवल्लिपन्नत्ते धम्ममे संबोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबु-
 ज्झइ । तएणं तस्स पोष्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झरिथए ५
 एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं अढाइ जाव भोगं च से
 वड्ढेइ तएणं से तेतलीपुत्ते अभिक्खणं २ संबोहिजमाणे वि धम्ममे
 नो संबुज्झइ, तं सेयं खलु मम कणगज्झयं रायं तेतलिपुत्ताओ
 विप्परिणामेत्तए तिकट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहिता, कणगज्झयं तेत-
 लिपुत्ताओ विप्परिणामेइ । तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं णहाए जाव
 पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे साओ
 गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव
 पहारेत्थए गमणाए । तएणं० तेतलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे
 राईसरतलवर जाव पभियाओ पासंति, ते तहेव आढायंति,
 परिजाणंति, अब्भुट्ठेति, आढाइत्ता, परिजाणित्ता, अप्पुट्ठित्ता,
 अंजलिपरिग्गहं करेति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आस-
 वेमाणा य संलवेमाणा य पिट्ठुओ य पासओ य मग्गओ य
 समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया
 तेणेव उवागच्छइ । तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं
 एजमाणं पासइ, पासित्ता, नो अढाइ, नो परियाणाइ, नो

स्वीकार करके फिर उन्होंने वैसा ही सब कुछ करते हुए तेतलिपुत्र
 अमात्य की यावत् सुख साधन सामग्री बढ़ा दी ॥ सू० ९ ॥

प्रभाषेण अयुं कर्तां तेतलिपुत्र अमात्यनी सुखसंगवड वगेरेनी सामग्रीमां
 वधारे करी आये ॥ सू० ९ ॥

अवगारयवावृत्तविगो टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितनिरूपणम् ६७

अबुमुहेइ, अणाढायमाणे, अपरियाणमाणे, अणबुढायमाणे,
परम्मुहे संचिठ्ठइ । तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं
करेइ । तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए
परम्मुहे संचिठ्ठइ । तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं
जाणित्ता भीए जाव संजायभए एवं वयासी—रुद्धेणं मम कण-
गज्झए राया हीणे णं ममं कणगज्झए राया, अवज्झाए णं
ममं कणगज्झए, राया तं ण नज्झइ णं ममं केणइ कुमारेण
मारेहिइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे५ जाव सणियं२ पच्चोसकइ, पच्चो-
सक्किता, तमेव आसखंधं दुरुहेइ, दुरुहिता, तेतलिपुरं मज्झं-
मज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तएणं
तेतलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव पासंति, ते तहा नो आढायंति
नो परियाणंति नो अबुमुहेइति नो अंजलिपरिगहं करेति, इट्ठाहिं
जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ
य समभुगच्छंति । तएणं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव
उवागच्छइ । उवागच्छित्ता जाविय से तत्थ बाहिरिया परिसा
भवइ, तं जहा—दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सावि य
णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अबुमुहेइ, जाविय से अर्द्धिभ-
तरिया परिसा भवइ, तं जहा — पियाइ वा मायाइ वा
जाव सुण्हाइ वा सावि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ,
नो अबुमुहेइ । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए
सयणिजे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयणिजांसि णिसी-

यइ, णिसीइत्ता, एवं वयासी-एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अग्गितरिया, पुरिसा नो आढाइ नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्टेइ, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जी-वीयाओ ववरोवित्तएत्तिकट्ठु, एवं संपेहेइ, संपेहिता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, से य विसे णो संकमइ । तएणं तेतलि-पुत्ते नीलुप्पल जाव अस्सि खंधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना । तएणं से तेतलिपुत्ते महइ महालयं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसि-यंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए । तएणं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खि-वित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए । तएणं से तेतलोपुत्ते एवं वयासी-सद्धेयं खलु भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समणामाहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि, एवं खलु अहं सहपुत्तेहिं अपुत्ते को मेयं सदहिस्सेइ ? सहमित्तेहिं अमित्तं, को मेयं सदहिस्सइ, एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं परिजणेणं एवं खलु तेतलिपुत्तेणं अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते, से वि य णो कमइ को मेयं सदहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खंधंसि, ओह-

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सदहिस्सइ । तेतलि-
पुत्तेणं पासणं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेयं सदहि-
स्सइ ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव वंधित्ता अत्थाहे जाव
उदगंसि, अप्पासुक्कं, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद-
हिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खि-
वित्ता अप्पासुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं
सदहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तएणं से पोट्टिले’ इत्यादि । ततः खलु स पोट्टिलोदेवस्वेतलि-
पुत्रम् ‘अभिक्षणं २’ अभीक्षणम् २=पुनः पुनः केवलपज्ञप्ते धर्मे संबोधयति ।
परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्रः ‘संबुज्झइ’ सम्बुध्यते=प्रतिबोधं प्राप्नोति ।
ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य ‘इमेयारूवे’ अयमेतदूपः=पुरउच्चमानः ‘अज्झ-
त्थिए’ ५=आध्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः समुद्पद्यत ।
संकल्पप्रकारमाह—‘एवं खलु’ इत्यादि । एवं खलु कनकध्वजो राजा तेतलि-
पुत्रं आद्रियने यावत् भोगं च संबुद्ध्यति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्षणं २ मया

‘तएणं से पोट्टिले’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव
(तेतलिपुत्तं अभिक्षणं २ केवलपज्ञप्ते धर्मे संबोदेइ, नो चैव णं से
तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलपज्ञप्त धर्ममें
प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ ।
(तएणं तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एवं खलु कणज्झए
राया तेतलिपुत्तं अटाइ, जाव भोगं च संबुद्देइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अ-

तएणं से पोट्टिले इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थार पछी (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलानो एव देव
(तेतलिपुत्तं अभिक्षणं २ केवलपज्ञप्ते धर्मे संबोदेइ नो चैव णं से तेतलि
पुत्ते संबुज्झइ)

तेतलिपुत्र अमात्यने बारबार केवणि पज्ञप्तधर्मभां प्रतिबोधित करवा
हाथे पछु तेतलिपुत्रने प्रतिबोध प्राप्त थयो नडि.

(तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एवं खलु कणज्झए
राया तेतलिपुत्तं अटाइ, जाव भोगं च संबुद्देइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अभिक्षणं

‘સંબોહિજ્જમાણે વિ ધમ્મે નો સંબુજ્ઞહં=પ્રતિબોધં ન પ્રાપ્નોતિ ।
 ‘તં તત્=તસ્માન્ કારણાન્ શ્રેયઃ સ્વલુ મમ કનકધ્વજં રાજાનં તેતલિપુત્રાદ્ વિપરિ-
 ણમપિતુમ્=તેતલિપુત્રવિપયે કનકધ્વજસ્ય માનસિકો ભાવો યથા વિપરિણિતો ભવે-
 ત્થયા કર્તુમુચિતમ્, इति कृतम्=इति मनसि विचार्य एवं संप्रेक्षते विचारयति
 સપ્રેક્ષ્ય કનકધ્વજં તેતલિપુત્રાદ્ વિપરિણમયતિ=વિપરીતં કરોતિ । તતઃ સ્વલુ
 તેતલિપુત્રઃ ‘કલ્લં’ કલ્પે દ્વિતીયસ્મિન્ દિને પ્રાયઃ ‘પ્ઠાણ જાવ પાયચ્છિત્તે’
 સ્નાતો યાવન્ પાયશ્ચિત્તઃ=સ્નાતઃ=કૃતસ્નાનઃ યાવત્ પદેન કૃતવલિકર્ષા=કાકાદિ
 નિમિતં કૃતાન્નમાગઃ કૃતકૌતકમાંગલ્યપ્રાયશ્ચિત્તઃ=કતાનિ કૌતુકાનિ દુઃસ્વપ્નાદિ-
 દોષનિવારણાર્થં મરીણુપ્પાદીનિ-માહ્વલ્યાદીનિ = મહ્વકારકાણિ દુર્વાક્ષતાદીનિ
 =પ્રાયશ્ચિત્તવદ્વચર્યં કર્તવ્યાનિ યેન સઃ, ‘આસક્કલ્લંવરમણ’ અશ્વસ્કન્ધ-
 વરગતઃ=અશ્વાલ્લહઃ बहुभिः पुरुषैः संपरिवृतः स्वस्माद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य

ભિક્ષુલ્લણં ૨ સંબોહિજ્જમાણે વિ ધમ્મે નો સંબુજ્ઞહં, તં સેયં સ્વલુ મમ
 કળગજ્ઞયં રાયં તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણમેત્તરં તિ કદ્દુ एवं संप्रेहेइ)
 તત્ત્વ ઉસ પાટિલ દેવકો એમા આધ્યાત્મિક યાવન્ મનોગત મંરુત્પ ઉત્પન્ન
 હુઆ કનકધ્વજ રાજા તેતલિપુત્ર અમાત્યકા આદર કરતે હૈં યાવન્ વે
 ઉનકે સુખ સાયનકી સામગ્રી ચઢા દિયા હૈ-હસલિયે મેરે દ્વારા ચાર ચાર
 પ્રતિબોધિત કરન પર ખીવે ધર્મ મેં પ્રતિબુદ્ધ નહીં બન રહે હૈં-પ્રતિબોધ
 કો પ્રાપ્ત નહીં હો રહે હૈં । હમલિયે મુઝે અબ એસો કરના ચાહિયે કિ
 જિસસે તેતલિપુત્ર કે વિષય મેં કનકધ્વજ રાજા કા માનસિક વિચાર
 બદલ જાયે । હસ પ્રકાર કા વિચાર ઉસ દેવકે મનમેં જગા (સંપેહિત્તા
 કળગજ્ઞયં તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેહ, તણં તેતલિપુત્તે કલ્લં પઠાણ

૨ સંબોહિજ્જમાણે વિ ધમ્મે નો સંબુજ્ઞહં, તં સેયં સ્વલુ મમ કળગજ્ઞયં રાયં
 તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેત્તરં તિ કદ્દુ एवं संप्रेहेइ)

ત્યારે તે દેવકી પાટિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનો-
 ગત સંકલ્પ ઉભાવ્યો કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રને આદર કરે છે
 યાવત્ તેઓએ તેમની બધી બતની સુખસગવડની સામગ્રીમાં વધારો પણ
 કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારંવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાંએ
 તેઓ ધર્મમાં પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારંવાર પ્રેરણા
 આપવા છતાં પ્રતિબોધ થયો નથી. એટલા માટે હું હવે એ પ્રમાણે કંઈક
 કરું કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે
 પ્રતિકૂળ થઈ બાક તે દેવે મનમાં આ બતનો વિચાર કર્યો.

(સંપેહિત્તા કળગજ્ઞયં તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેહ તણં તેતલિપુત્તે કલ્લં
 પ્ઠાણ જાવ પાયચ્છિત્તે આસક્કલ્લંવરમણ, બહુઈ પુરિસેઈ સંપરિવુદ્ધે, સાઓ મિહાઓ,

अनगरधर्मानृतवर्णिनी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानवर्तितवर्णनम्

७२

पश्चैव कनकध्वजो राजा तत्रैव 'पहारेत्थ गमणाए' प्राधारयद् गमनाय-प्रस्थित-
वान् । ततः खलु तेतलिपुत्रममात्यं 'जेजहा' ये यथा=येन प्रकारेण बहवो 'राई-
सरतलवरजावपभियाओ' राजेश्वरतलवर यावत्प्रभृतयः, राजेश्वरतलवरादयः पश्यन्ति,
ते तथैव तममात्यमाद्रियन्ते नमस्कारादिना परिजानन्ति=शुभाग्रमनमित्यनुमो-
दयन्ति, अभ्युत्तिष्ठन्ति=अभ्युत्थानं कुर्वन्ति, आदृत्य परिज्ञाय, अभ्युत्थाय अञ्जलि-
परिग्रहं कुर्वन्ति, तथा इष्टाभिः कान्ताभिः यावत्-प्रियाभिर्मनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिः

जाव पायच्छित्तं आसखप्रवरगए, यद्धहि पुरिसेहि संपगिबुडे, साओ
गिहाओ, गिगच्छइ, गिगच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव
पहारेत्थ गमणाए, तएणं० तेतलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसरत-
लवर जाव पभियाओ पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति, अन्धु-
द्वेति) इस विचार के आते ही उस देवने कनकध्वज राजा को तेतलि
पुत्र अमात्य के प्रति विपरीत परिणमादिया । जब द्वितीय दिन प्रातः
काल स्नान कर बलिकर्म कर-काकादि निमित्त अन्न का विभाग कर,
कौतुक, मंगल, प्रायश्चित्त कर-दुःस्वप्न आदि दोषों को निवारण करने
के लिये मणी पुण्ड्रादि और मंगल कारक दूर्वाक्षतादि तथा प्रायश्चित्तकी
तरह आवश्यक कृत्य समाप्त कर-वह तेतलिपुत्र अमात्य घांढे पर बैठ
कर जब अनेक पुरुषों के साथ सारा अपने घर से निकला तब निकल
कर वह ऊस ओर गया जहाँ कनकध्वज राजा थे । तेतलिपुत्र अमात्य
को ज्यों ही राजेश्वर आदि कौं ने आता हुआ देखा तो उन्होंने पहिले
की तरह ही उसका आदर किया, उसके आगमन की सराहना की

गिगच्छिः गिगच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं०
तेतलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसर तलवर जाव पभियाओ पासंति ते
तहेव आढायंति पमियाणंति, अन्धुद्वेति)

आ जननेना विचार उत्पन्न यतः ते देवे अमात्य तेतलिपुत्र ने भाटे
राज कनकध्वजने प्रतिगूण अतापीदीधो जीव दिसे सवार यतां स्नान, आदि-
कर्म, (उजडा वगेरे पक्षीओ भाटे अन्नलाग अर्पवुं) कौतुक, मंगल, प्राय-
श्चित्त-अटले डे दुःस्वप्न वगेरेना दोषोना उपशमन भाटे मणी पुण्ड्र वगेरे
तेमज मंगल कारक दुर्वा अक्षत (ब्याणा) वगेरेथी प्रायश्चित्त नी आवश्यक
विधिओ पतापीने घझा पुरुषोथी वीटणधने अमात्य तेतलिपुत्र घोडा उपर
सवार थधने नयां कनकध्वज राजा हुता त्यां गयो. अमात्य तेतलिपुत्रने आ-
पतां जेतानी साथे ज राजेश्वर वगेरे लोकेओ पडेक्षानी जेम ज तेमने आहर
क्या, तेमना अग्रमननी सराहना करी अने अघाओ उलाथधने तेमनेवधावी दीधा

વાગ્મિઃ આલપન્તઃ સંલપન્તશ્ચ=આલાપ=સંભાષણ, સંલાપ=પરસ્પરસંભાષણ
 કુર્વન્તશ્ચ પુરતઃ=અગ્ર ધ પૃથતઃ=પશ્ચાદ્ભાગતશ્ચ, પાર્શ્વતઃ=પાર્શ્વભાગતશ્ચ, માર્ગતઃ=
 યસ્માન્માર્ગાત્ તેતલિપુત્રો નિર્ગચ્છતિ, તન્માર્ગતશ્ચ 'સમણુગચ્છતિ' સમણુગ-
 ચ્છન્તિ । તતઃ સ્વલુ સ તેતલિપુત્રો યત્રૈવ કનકધ્વજસ્ત ય ઉપાગચ્છતિ । તતઃ
 સ્વલુ સ કનકધ્વજો રાજા તેતલિપુત્રમેજમાનં પદ્યતિ, દૃષ્ટ્વા નો આદ્રિયતે, નો પરિ-
 જાનાતિ, નો અભ્યુત્થિષ્ઠતિ । અનન્તરં 'અણાદાયમાણે' અનાદ્રિયમાણઃ=સમાદર-

સચને ઉઠકર ઉસે લિયા-(આઢાહત્તા, પરિજાણિત્તા અબ્ધુદિત્તા અંજલિ
 પરિગ્રહં કરેનિ, હૃદ્ધાહિં કેનાહિં જાવ વગ્ગૂહિં આલવેમાણા ય સંલવે
 માણા ય પુરઓ ય પિઢ્ઠઓ ય પાસઓ ય મગઓ ય સમણુગ છેતિ
 તર્ણ સે તેતલિપુત્તે જેણેવ કળમજ્જણે રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છડ, તર્ણ
 સે કળમજ્જણે રાયા તેતલિપુત્તં ઇજ્જમાણં પાસડ, પાસિત્તા નો આઢાહ
 નો પરિયાણાહ, નો અબ્ધુદેહ, અણાદાયમાણે અપરિયાણમાણે અગબ્ધુ
 દાયમાણે પરમ્બુદે સંચિદ્ધહ) આદર દેકર શુભાગમન કી અનુભોદનાકર
 તથા ઉઠકર નમ સચને ફિર દોનોં હાથો કી અંજલિ જોડકર ઉસે
 નમસ્કાર કિયા । બાદ મેં હૃષ્ટ, કાંત યાવત્ પ્રિય-મનોહ-મનોમ
 વાણિયોં સે આલાપ-સંભાષણ, સંલાપ પરસ્પર સંભાષણ-કરતે
 હુએ જે મલબ્રામે, પીછે આજૂ થાજૂ હોકર જિસ માર્ગ સે વહ આરહા
 થા ઉસી માર્ગ સે ઉસકે સાથ સાથ ચલે આયે । ચલતે ૨ તેતલિપુત્ર
 અમાત્ય જહાં કનકધ્વજ રાજા બેઠે થે વહાં આયા । કનકધ્વજ
 રાજા ને ઉન્હે આતા હુઆ દેખા-તૌમી પહિલે કી તરહ દેખકર ન

(અઢાહત્તા, પરિજાણિત્તા અબ્ધુદિત્તા અંજલિ પરિગ્રહં કરેનિ હૃદ્ધાહિં, કેનાહિં
 જાવ વગ્ગૂહિં આલવેમાણા ય સંલવેમાણા ય પુરઓ ય, પિઢ્ઠઓ ય, પાસઓ ય,
 મગઓ ય, સમણુગચ્છન્તિ તર્ણ સે તેતલિપુત્તે જેણેવ કળમજ્જણે રાયા તેણેવ
 ઉવાગચ્છડ, તર્ણ સે કળમજ્જણે રાયા તેતલિપુત્તં ઇજ્જમાણં પાસડ, પાસિત્તા
 નો આઢાહ, નો પરિયાણાહ, નો અબ્ધુદેહ, અણાદાયમાણે અપરિયાણમાણે અગબ્ધુ
 દાયમાણે પરમ્બુદે સંચિદ્ધહ)

તેમને આદર આપીને, શુભાગમનને અનુભોદિત કરીને તેમને તથા કિલ્લા
 થયા અને ત્યાર પછી અને હાથોની અંજલિ બતાવીને તેમને નમસ્કાર કર્યો.
 ત્યાર બાદ ઈષ્ટ, કાંત, યાવત્ પ્રિય, મનોહ અને મનોમ વાતોથી આલાપ-
 સંભાષણ, સંલાપ-પરસ્પર સંભાષણ કરતાં તેઓ સર્વે આગળ, પાછળ અને
 તેમની અને બાજુએ થઈને જે માર્ગથી તેઓ આવતા હતા તે માર્ગથી જ તેની
 સાથે સાથે ચાલવા લાગ્યા તેતલિપુત્ર અમાત્ય ચાલતાં ચાલતાં બંધાં રાજા કનકધ્વજ
 બેઠા હતા ત્યાં આવ્યા પછી કનકધ્વજ રાજાએ તેા તેમને બોલા છતાં પશુતેમને

मनगारधर्मासृतवर्णिनी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

७१

माद्युवन् 'अपरिज्ञानमाणे' अपरिज्ञानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्=अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् 'परम्मुहे' पराङ्मुखः=विमुखः सन् संतिष्ठते। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः मंथुखे अञ्जलिं करोति। 'तएणं' ततः खलु=तेतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि स कनकध्वजो राजा अनाद्रियमाणः, अपरिज्ञानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तूष्णीकः पराङ्मुखः संतिष्ठते। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजं विपरिणतं=विपरीतं ज्ञात्वा 'भीए जाव संजायभए' भीतो यावत् संजातभयः, एवमवदन्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनकध्वजो राजा, उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही। इस तरह अनादर अननुमोदन एवं अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये। (तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ) तौ भी उन कनकध्वज राजा ने उस अंजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुप चाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणिस्ता भीए संजायभए एवं वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् संजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुद्धे णं ममं कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं। (हीणे णं ममं कण-

आदर न कर्धो, तेमना आववाणी सराहना न करी अने उला थडने तेमने सत्कार्या पणु नहि आ रीते अनादर, अननुमोदन अनभ्युत्थान करता ते राजा तेमना तण्डू थी में द्वेषीने जेमी गया। (तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ) तेतलिपुत्रे आववाणी साथे न राजा कनकध्वजने नमस्कार कर्धो।

(तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ) छतांजे राजा कनकध्वजने तेमना नमस्कारने पणु उचित सत्कार कर्धो नहि इत्त तेजो चुपचाप मोद्वेषीने जेमी न रहा।

(तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणिस्ता भीए जाव संजायभए एवं वयासी)

त्यारे तेतलिपुत्र अभात्ये राजा कनकध्वजने प्रतिकूलवर्ध गयेता (नाराज थयेला) जालीने लयलीत यावत् संजातलय वाजा थनां मनमां विचार कर्धो के (रुद्धेण ममं कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरा ऊपर नाराज

‘હીણે નં’ હીનઃ સ્વલુ=પ્રીતિહીનઃ સ્વલુ મમોપરિ કનકધ્વજો રાજા ‘અવજ્ઞાણ’ અપધ્યાત=દુર્માર્ગસમ્પન્નો જાતઃ સ્વલુ મમ વિષયે કનકધ્વજો રાજા ‘તં’ તત્=તસ્માત્ ‘ન નજ્ઞઈ’ ન જ્ઞાયતે સ્વલુ એપ માં કેન કીદશેન કુમારેણ=કુત્સિતેન મારેણ ‘મારેહિઈ’ મારયિષ્યતિ ‘ત્તિકટ્ટુ’ इति कृत्वा=इति विचिन्त्य भीतस्ततः यावत्-व्रसितः, उद्विग्नः, संज्ञातमयः सन् ‘सणियं’ २ शनैः २ ‘पचोसक्कइ’ प्रत्ययस्वप्नकते=प्रत्ययसर्पति=पश्चाद्गच्छति प्रत्ययस्वप्नक, तमेव ‘आसखंधं’=अश्वसन्धं दूरो-इति, दूरुह्य ‘तेतलिपुरं’ अत्र पष्ठर्थे द्वितीया, तेतलिपुरस्येत्यर्थः, मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव माशारयद् गमनाय । ततः स्वलु तं तेतलिपुरं ‘जेजहा’

મગ્જ્ઞણ રાયા) કનકધ્વજ રાજા ભેરે ઉપર પ્રીતિ સે રહિત હો ગયે હૈં । (અવજ્ઞાણ નં મમ કળમગ્જ્ઞણ રાયા) કનકધ્વજ રાજા મેરે વિષય મેં સદ્ભાવ રહિત બન ગયે હૈં । (તં ન નજ્ઞઈ નં મમ કેળઈ કુમારેણ મારે-હિઈ ત્તિ કટ્ટુ ભીણ તત્થે પૂજાવસણિયં ૨ પચોસક્કઈ) તો ન માલૂમ યહ મુઝે કિસ કુત્સિત મરણ સે મરવા હાલે, એમા વિચાર કર વહ બીત (અયયુક્ત) હો ગયા વ્રસ્ત યાવત્ સંજાત અયવાલા બન ગયા । ઔર ધીરે ૨ વહાં સે પીછાહટ કર ચલા આયા-(પચોસક્કિત્તા તમેવ આસલંધં દુરુહેઈ, દુરુહિત્તા તેતલિપુરં મગ્જ્ઞં મગ્જ્ઞેણં જેણેવ સણિહે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ) આકાર કે વહ અપને ડસી ઘોડે પર બેઠકર તેતલિપુર કે બીચ સે હોતા હુઆ અપને ઘર કી તરફ ચલ દિયા (તણં તેતલિપુત્ત જે જહાં ઈસર જાવ પાસંતિ તે તહા નો આઠાયંતિ, નો પરિયા-

થઈ ગયા છે. (હીણેનં મમ કળમગ્જ્ઞણ રાયા) કનકધ્વજ રાજાનો હવે મારા ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી. (અવજ્ઞાણ નં મમ કળમગ્જ્ઞણ રાયા) કનકધ્વજ રાજા મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે.

(તં ન નજ્ઞઈ નં મમ કેળઈ કુમારેણ મારેહિઈ ત્તિ કટ્ટુ ભીણ તત્થે જાવ સણિયં ૨ પચોસવકઈ)

તો કાણુ બાણુ ક્યારે તેઓ અને કમોતે મરાવી નાં આવે આરીતે વિચાર કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે વ્રસ્ત યાવત સંજાત ભયવાળો થઈ ગયો અને ધીમેધીમે ત્યાંથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો.

(પચોસક્કિત્તા તમેવ આસલંધં દુરુહેઈ, દુરુહિત્તા તેતલિપુરં મગ્જ્ઞં મગ્જ્ઞેણં જેણેવ સણિહે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ)

ત્યાંથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઈને તેતલિપુરની વચ્ચે થઈને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો.

તણં તેતલિપુત્તં જે જહાં ઈસર જાવ પાસંતિ તે તહા નો આઠાયંતિ, નો

अनेंगारधर्मासुनवर्णिणी टी० अ० १४ तेनलिपुत्रवधानवरितवर्णनम्

७५

ये यथा=ये यथास्थिताः 'ईसरजाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, 'ते तहेव' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिगृहं कुर्वन्ति, इष्टाभिर्यावद्वाग्भिर्नो संलपन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति । ततः खलु तेनलिपुत्रो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति । यापि च 'से' तस्य 'तत्थ' तत्र भवने बाधा परिहृ भवति, तद् यथा-'दासाइ वा' दासाइति वा, णंति, नो अब्भुद्धेति) मार्ग में तेनलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही (नो अंजलिपरिगृहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार ही किया । न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, संलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग में ही चले । (तएणं तेनलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तेनलिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया । उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइलएइ वा सा वि य णं नो आदाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुद्धेइ) वहाँ पर भी जो दास घर के काम काज करने परियाणंति, नो अब्भुद्धेति)

मार्गमां जतां तेनलिपुत्रने ईश्वर तलवर माडजिक वगेरे दोडोअे जेथो पणु कोडोअे पडेलांती जेम तेने आदर न कर्यो, तेना आगमननी अनुमोदना न करी अने तेने जेधने तेजो जिला न थया.

(नो अंजलि परिगृहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग०)

अने तेजोअे हाथ जेथीने तेने नमस्कार पणु न कर्यो. इष्ट, प्रिय, वयनेथी तेजोअे तेनी साथे आलाप न कर्यो, संलाप न कर्यो अने अने भावुअे थधने तेजो मार्गमां तेनी साथे साथे आल्या पणु नडि. (तएणं तेनलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) आ प्रभाणु आलतो आलतो तेनलिपुत्र अमात्य पोनाने घेर आनी जथो.

(उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा दासेइ वा पासेइ वा भाइलएइ वा, सा वि य णं नो आदाइ नो परियाणाइ, न अब्भुद्धेइ) त्यां पणु जे दासो-घरमां काम करतारा नोकरो, प्रैथो-घरता काम भाटे

દ્રોણાઃ=ગૃહકાર્યકારિણોમૃત્યાઃ, પેસાઈવા'પ્રેષ્યા'ઈતિ વા, પ્રેષ્યાઃ ગૃહકાર્ય કર્તુમન્યત્ર પ્રેષણીયા મૃત્યાઃ, 'માઈલ'ઈતિ વા'માઈલા'ઈતિ વા, 'માઈલ' ઇતિ દેશીશબ્દઃ, હાલિકઃ ભાગિનશ્ચેતિ તદર્થઃ હાલિકાઃ=ભૂમિકર્ષણાર્થ નિયુક્તા મૃત્યાઃ, ભાગિનઃ,=સ્વવ્યયેનાઽ ન્યસ્ય ક્ષેત્રે કૃષિ કૃત્વા ઉપજાતાન્નસ્યાર્ધભાગ ગ્રાહિણઃ, એતદ્ભૂવા યા પરિષત્ સાઽપિ ચ એતં નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ, નો અભ્યુત્તિષ્ઠતે । યાઽપિ ચ તસ્ય આમ્ય-ન્ટરિકો પરિષદ્ ભવતિ, 'તેં જહા' તદ્ યથા 'પિયાઈ વા' પિતા'ઈતિ વા, 'માયાઈ વા' માતા' ઇતિ વા, 'જાવ સુળ્હાઈ વા' યાવત્ સ્તુવા'ઈતિ વા, સ્તુવાઃ=પુત્રવધ્વઃ, તદ્ભૂવાપિ ચ પરિષદ્ એનં નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ, નો અભ્યુત્તિષ્ઠતિ । તતઃ સ્વલુ સ તેતલિપુત્રો યત્રૈવ વાસગૃહં યત્રૈવ સ્વકં શયનીયં તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય, ત્રાલે નૌકર પ્રેષ્ય, ઘર કે કામ કે લિપે જિન્હે' બાહર મેજા જાતા હૈ એસે મૃત્ય, તથા માઈલ-હાલિક-ભૂમિ કર્ષણાર્થ નિયુક્ત મૃત્ય, અથવા ભાગી-દાર-અપને વ્યય સે અન્ય કે સ્વેત મેં કૃષિકરકે ઉત્પન્ન અન્ન કે અર્ધ-ભાગ કો લેને વાલે વઢિયાજન હનરૂપ જો બાહ્ય પરિષત્ થી ઉમ્મને ભી ઉસકા આદર નહીં કિયા, ઉસકે આગમન કી અનુમોદના નહીં કી ઓર ન્ વહ ઉસકે આને પર અપને અધિષ્ઠિત સ્થાન સે ઉઠે । (જાવિય સે અર્ઘ્મિતરિયા પરિસા મ્વઈ-તં જહા-પિયાઈ વા માયાઈ વા જાવ સુળ્હાઈ વા સા વિ ય ણં નો આઢાઈ, નો પરિયાણાઈ, નો અબ્ધુદ્દેઈ) હસી તરઈ જો ઉસકી અન્તરંગ પરિષદ્ થી જૈસે પિતા માતા યાવત્ સ્તુવા-પુત્રવધ્ આદિ જન હન્હોને ભી ઉસકા આદર નહીં કિયા, આગમન કા અ-નુમોદન નહીં કિયા ઓર ન યે કોઈ ભી ઉસકે આને પર અપને સ્થાનસે

જેએને બહાર મોકલવામાં આવે છે તે ભૂત્યો, તથા ભાઈલ-હાળીકો એટલે કે ખેડવા માટે નિયુક્ત કરાયેલા ભૂત્યો અથવા તે ભાગીદારો-કે જે પોતાના ખર્ચે જ ખીજાના ખેતરોમાં અનાજ વાવે છે અને વળતરમાં ખેતરના માલિક પાસેથી અર્ધભાગ મેળવે છે-એવા જે બાહ્ય પરિષત સંબંધી લોકો હતા તેઓ એ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને ન તેના આવવા બહલ પોતાના સ્થાનેથી સત્કાર માટે તેઓ ઊભા થયા.

(જા વિ ય સે અર્ઘ્મિતરિયા પરિસા મ્વઈ-તં જહા-પિયાઈ વા માયાઈ વા જાવ સુળ્હાઈ વા સા વિ ય ણં નો આઢાઈ, નો પરિયાણાઈ, નો અબ્ધુદ્દેઈ) અને આ પ્રમાણે જ તેની અંતરંગ પરિષદના લોકો જેમ કે પિતા માતા યાવત્ સ્તુવા-ખેટા વહુ-વગેરે લોકોએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગ-મનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને તેઓમાંથી કોઈ પણ તેના આવવા બહલ પોતાના સ્થાનથી ઊભા થયા નહિ.

अनंगारघर्मासृत्तवर्णिनी टोका अ० १४ तेतलिपुत्रध्यानचरित्रवर्णनप

७७

शयनीये निपीदति, निषद्य, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-एवं खलु=यथा अद्य
तथैवान्यस्मिन्नपि दिवसे, अहं स्वकाद् गृहान् निर्गच्छामि, 'तं चेव जाव अर्द्धि-
तरिया परिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ नो अब्भुट्टेइ' तदेव यावत् आभ्यन्तरिकी
परिषद् नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति, अस्यायमभिप्रायः-
पूर्वस्मिन् दिवसे राज्ञि प्रसन्ने मां दृष्ट्वा राजेश्वरादयः सर्वे आद्रियन्ते स्म, परिजाना-
न्ति स्म अभ्युत्तिष्ठन्ति स्म, अथाऽपि गृहनिर्गतं मां ते तथैव सत्कारयन्ति स्म। परन्तु
राज्ञि अकस्मात् अप्रसन्ने राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकप्रभृतयः तथा मदीय
ब्राह्मणभ्यन्तरा च परिषदपि सर्वेऽपि च मां नाद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो
उठे! (तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ)
इस तरह घर पर आकर वह तेतलिपुत्र अमात्य
जहां अपना वामगृह और उसमें भी जहां अपनी शय्या थी वहां गया
(उवागच्छित्ता सयणिज्जंति निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) वहां
जाकर वह उस पर बैठ गया-और मनही मन विचार करने लगा-(एवं
खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अर्द्धितरिया
पुरिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ नो अब्भुट्टेइ-तं सेयं खलु मम अ-
प्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तएत्ति वट्टु एवं संपेहेइ) पहिले के दिनों में
जब मैं अपने घर से निकलता था तो लोग-राजेश्वर आदि समस्त जन
मुख पर राजा की प्रसन्नता होने के कारण आता जाता हुआ देखकर
मेरा आदर करते थे-मेरे आगमन आदि की अनुमोदन करते थे वठ-
कर अपने विनय प्रदर्शित करते थे-तथा आज भी जब मैं घरसे निकल

(तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ)

आ रीते घेर आवीने तेतलिपुत्र अमात्य न्यां तेनी रडेवानी ओरडी
अने तेमां पणु न्यां पीतानी पधारी डती त्यां गये। (उवागच्छित्ता सयणि-
ज्जंति निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) त्यां जधने ते तेना उपर ओसी गये।
अने भनमां ज विचार करवा लाग्यो डे

(एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अर्द्धितरिया
पुरिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्टेइ-तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवि-
याओ ववरोवित्तएत्ति वट्टु एवं संपेहेइ)

पडेलीं न्यारे हुं घेरथी जडार नीकणतो डतो तयारे डोको-राजेश्वर
वगेरे जधा डोको-राज भास उपर भुश डता ओटली-आवतां जतां जधने
भासो आदर करता डता, भासो आगमननु अनुमोदन करता डता तेमज जेला
थधने विनय प्रदर्शित करता डता अने आगे पणु हुं न्यारे घेरथी नीकणाने

अभ्युत्तिष्ठन्ति । ' तं ' तत्=तस्मात् कारणात्, श्रेयः खलु मम आत्मानं जीवि-
ताद् व्यपरोपयितुम्, इति कृत्वा, एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य तालपुटं विषम् ' आस-
गंसि ' आस्ये=मुखे प्रक्षिपति, विषं नो संक्राम्यति=विषत्वेन नो परिणमति ।
ततः खलु स तेतलिपुत्रो ' नीलुप्पल जाव असि ' नीलोत्पल यावदसि=नीलोत्पल
गवलगुलिकसमप्रभं=नीलोत्पलं=नीलकमलम् गरलं=माहिषं शृङ्गम्, ' गुलिकं '
नीलरङ्गविशेषः, तैः समा प्रभानेतलि कान्तिर्यस्य स तं तादृशं यावदसि=तीक्ष्ण-
खड्गं ' खंधे ' स्कन्धे=कण्ठमूले ' ओहरइ ' अवहरति=निपातयति । तत्रापि च

कर राजा के पास गया-तब भी इन सब लोगों ने पूर्ववत् मेरा आदर
आदि सब कुछ किया-परन्तु अकस्मात् राजा के रुष्ट होने पर जब मैं
वहाँ से लौटकर वापिस अपने स्थान पर आने लगा-तो किसी ने भी
मेरा आदर आदि कुछ भी सत्कार नहीं किया । यहाँ तक कि जो मेरी
बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् हैं-भीतर बाहरके नौकर चाकर एवं माता
पिता आदि जन हैं-उसने भी आज इस समय आने पर मुझे कुछ
नहीं समझा-अतः मुझे अब ऐसी स्थिति से मरना ही उत्तम है । इस
प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया-(संप्रेक्षित्ता तालउडं विसं
आसगंसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संक्रमइ, तएणं से तेतलिपुत्ते नीलु-
प्पल जाव असि खंधसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, तएणं से
तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०) विचार करके उसने ताल-
पुटविष को अपने मुख में डाला-परन्तु उसने अपना कुछ भी प्रभाव

राजानी पासो जयो त्यारे पणु ओ अधांओ पडिवांनी जेमज भारो आहर
वगेरे पणु कथुं छुनुं पणु ओयिंता राजाने नाराज थई जया अइल न्यारे
हुं त्यांथी पाछो इरीने पोताने धेर आववा लाग्यो त्यारे डोईओ पणु भारो
आहर के सत्कार कथो नडि भारी बाह्य अने आभ्यन्तर परिषद्-ओट्ठे के
अहारता नोकरो-आकरो अने माता पिता वगेरे-छे तेओओ पणु आरे अत्यारे
भारो आववा अइल कंई पणु डिमत्त करी नडि. ओथी ओयी परिस्थितिमां
भाइ भरणु न उत्तम उपाय छे

(संप्रेक्षित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संक्रमइ, तएणं
से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असि खंधसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला,
तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०)

... आ जतने विचार करीने तेछे तालपुट विष (ओर) ने पोताना

‘से’ तस्य खड्गस्य धारा ‘ओपल्ला’ कुण्टिता, ‘ओपल्लं’ इति देशी शब्दः तलपुटेन विषेण, कण्ठे निषातितेनामिनाऽपि च तदभिलषितं मरणं न जातम् । ततः खलु=तदनन्तरं स तेतलिपुत्रो यत्रैव अशोकवनिका=अशोकवाटिका तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पाशकं ग्रीवायां बध्नाति, बद्ध्वा ‘रुखं’ वृक्षं ‘दुरुद्ध, दुरो हति=आरोहति, दुरुद्ध पाशं वृक्षे बध्नाति, बद्ध्वा आत्मानं ‘मुयइ’ मुञ्चति=अघः पातयति । ‘तत्थवि’ तत्राऽपि=एतस्मिन्मरणोपाये कृतेऽपि च ‘से’ तस्य रज्जुछिन्ना=मध्यत एव पाशछटितः । ततः खलु स तेतलिपुत्रः ‘महइमहालयं’ महातिमहतीम्=अति विशालां शिलां ग्रीवायां बध्नाति, बद्ध्वा ‘अत्था-हमतारमपोविंयंसि’ अस्ताघातागभीरूपेये=नास्ति स्ताघः यस्य तत् अस्ताघम्=नहीं दिखलाया-अर्थात् वह विष रूप से परिणत नहीं हुआ । इसके बाद उस तेतलिपुत्रने नीलोत्पल गवल, गुलिक की प्रभा जैसी प्रभावाली अत्यन्त नीलवर्ण वाली-ऐसी तलवार को कि जिसकी धार बहुत तीक्ष्ण थी-अपनी गर्दन पर रखा-अर्थात् उसे गर्दन पर चलाई-परन्तु उसने भी अपना काम नहीं किया-वह भी-कुण्टित हो गई-इस तरह जब इन दोनों वस्तुओं से अपना अभिलषित मरण साध्य नहीं हुआ-अब वह तेतलिपुत्र जहां अशोकवनिका-अशोकवाटिका-थी वहां गया (उवागच्छित्ता पासगगीवाण बंधइ) वहां जाकर उसने अपनी ग्रीवामें फंदा डाला-बांधा (बंधित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से रज्जु छिन्ना) बांध कर फिर वह वृक्ष पर चढ़ गया और वहां से अपने आपको नीचे लटका दिया परन्तु यहां पर भी उसकी रज्जु बीच में से टूट गई (तएण से तेनलिपुत्ते

अण्णमां नाभ्युं) पणु तेण्णे कंथं अस्सर अतावी नडि अेटवे के ते विष इपमां परिण्णभ्युं नडि। त्थार पडी ते तेतलिपुत्ते, नीलोत्पल गवल, गुलिकना जेवी प्रभावाणी तेमज्ज तीक्ष्ण धारवाणी तलवारने पोतानी ओक उपर भूरी अेटवे के तेना वडे तेण्णे पोतानी ओक उपर धा कथे पणु तेनाधी पणु कंथं काम थयुं नडि अेटवे के तलवार पणु भूरी थर्थ गर्ध डती. ‘ओपल्ल’ आ कुण्टित (भूरी) अर्थ भाटे वपरायेडे देशी शब्द छे. न्यारे आ रीते ते अने वस्तुअेथी तेनी छिन्ना भूरी थर्थ नडि अेटवे के तेनुं मरण थर्थ शक्युं नडि त्थारे ते न्यां अशोक वनिका-अशोक वाटिका-डती त्यां अथे। (उवागच्छित्ता पासगं गीवाण बंधइ) त्यां अने तेण्णे पोतानी ओकमां कांसे लेखीने आंधे। (बंधित्ता अप्पाणं मुयइ तत्थ वि से रज्जु छिन्ना) आंधीने ते वृक्ष उपर अडी अथे अने त्यांथी पोतानी अेणे ज ते डटडी अथे परंतु अहीं पणु कांसानुं टारडुं वन्नेथी तूटी अथुं डतुं.

अतैलस्पर्शि, अतारम्=अतरणीयम्, अपौरुषेयम्=पुरुषः प्रमाणं यस्य तत् पौरुषेयम्= न पौरुषेयम्=अपौरुषेयम्=पुरुषप्रमाणरहितम्, एतेषां कर्मधारयः, तस्मिन् अतिगम्भीरे इत्यर्थः, उदके आत्मानं मुञ्चति । तत्रापि=तस्मिन्नुदकेऽपि च 'से' तस्य=तेतलिपुत्रस्य 'थाहे' स्ताधो जातः । ततः खलु स तेतलिपुत्रः शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जे 'अगणिकायं' अग्निकायं प्रक्षिप्य, तत्र आत्मानं मुञ्चति । तत्रापि=शुष्के तृणेऽपि सोऽग्निकायो 'विज्ज्ञाए' विध्यातः=उपशान्तः । 'तृणं' ततः खलु=एतस्य सर्वस्य असम्भाव्यस्य सम्भावनानन्तरम् स तेतलिपुत्र एवमवा-
महइमहालयं सीलं गीवाए-बंधइ बंधित्ता अत्थाह मतारमपोरिमियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए) इसके बाद उस तेतलिपुत्र ने एक बहुत विशालकाय शिला को अपने गले में बांधा-और बांध कर अपने आपको अथाह-अतार एवं अपुरुष प्रमाण जल में छोड़ दिया-परन्तु वह जल भी उसके लिए स्ताध थाह युक्त-बन गया-(तृण से तेतलिपुत्रे सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्ज्ञाए-तृणं से तेतलिपुत्रे एवं-वयासी-सद्धेयं खलु भो समणा वयंति सद्धेयं-खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समणमाहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि एवं खलु अहं सह पुत्तहि अपुत्ते को मेयं सहहिस्सइ ? सहमित्ते हिं अमित्ते को मेयं सहहिस्सइ) इसके बाद तेतलिपुत्रने शुष्क घासके ढेर में अग्नि लगाई-और उसमें अपने आपको डाल दिया-परन्तु वह भी

(तृणं से तेतलिपुत्रे महइ महालयं सीलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिमियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए)

त्यार पछी ते तेतत्रिपुत्रे जेठ गहुं मोटी भारे शिला (पथरे) ने चोतानी जतने अथाह-अतार अने अपुरुष प्रमाणे पाणीमां नाणी दीधी परंतु ते जेठु पाणी पणु तेना माटे थाह वाणुं जेटवे के छीछुं थछिं भयुं.

(तृणं से तेतत्रिपुत्रे सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थवि से अगणिकाए विज्ज्ञाए-तृणं से तेतलिपुत्रे एवं वयासी सद्धेयं खलु भो समणा वयंति सद्धेयं-खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समणमाहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि एवं खलु अहं सह पुत्तहिं अपुत्ते को मेयं सहहिस्सइ ? सह मित्तेहिं अमित्ते को मेयं सहहिस्सइ)

त्यार पछी तेतत्रिपुत्रे सूका घासना ढगलाभां अग्नि प्रगटाव्ये अने चोतानी जतने तेमां नाणी दीधी परंतु ते पणु पथ्येथी ज ओलवाछ गधुं.

જનનારધમામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૪ તેતલિપુત્રપ્રધાનચરિતવર્ણનમ્

૮૧

દીત્=વિત્તં સંવોધ્ય મનસ્યેવમકથયત્-ધો વિત્ત ! શ્રમણા યદ્ વદન્તિ તસ્વલુ
શ્રદ્ધેયં=શ્રદ્ધા યોગ્યં, શ્રદ્ધેયં સ્વલુ સોઃ બ્રાહ્મણા વદન્તિ શ્રદ્ધેયં સ્વલુ મોઃ !
શ્રમણ બ્રાહ્મણા વદન્તિ । અયં માન-આત્મપરલોકોકાર્થ પ્રતિવોધકં શ્રમણાદીનાં વચન
શ્રદ્ધેયં ભવતિ, અતીન્દ્રિયસ્યાપ્યાત્મ પરલોકાદિસ્વરૂપસ્યાનુમાનાદિ પ્રમાણવિષય-
તયા શ્રદ્ધાવિપયત્વાત્ । પરન્તુ અહમેકો અસહાયઃ અશ્રદ્ધેયમ્ અવિશ્વસનીય
વદામિ । યદ્યપિ મદીયં વચનં સર્વથા સત્યમ્, તથાપિ અસમ્ભાવ્યતયા જનૈઃ
પ્રત્યેતુમશક્યમ્ । તદેશઃ-‘ એવં સ્વલુ ’ ઇત્યાદિના ‘ એવં સ્વલુ ’ મયિ અશ્રદ્ધેય-

બીચ હી મેં બુઝા ગઈ । ઇન તરહ ઇન સમસ્ત અસંભવનોં કી સંભવના
કે બાદ તેતલિપુત્રને અપને આપ્નો સંવોધિત કરતે હુણ મન મેં વિચાર
કિયા-હે વિત્ત ! શ્રમણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હેં । બ્રાહ્મણજન જો
કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હેં ઇસી પ્રકાર શ્રમણમાહણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય
હે । ઇસકા ભાવ યહ હે કિ આત્મા, પરલોક આદિ પદાર્થ જો કિ અતીન્દ્રિય
હેં વે અનુમાન આદિ પ્રમાણ કિ વિષયભૂત હો જાતે હે-ઇસલિયે યે શ્રદ્ધાકે
વિષય બન જાતે હેં-અતઃ ઇન અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક આદિ પદાર્થો
કો પ્રતિપાદિત કરને વાલે શ્રમણ માહણ આદિકોં કે વચન ભી શ્રદ્ધેય
હો જાતે હેં, પરન્તુ મેં જો કહ રહા હૂં વહ અશ્રદ્ધેય કહ રહા હૂં એક
અસહાય હૂં-ઇસલિયે-મુઝે ઇસ વિષયમેં કિસી કો ભી સહાયતા મિલને
વાલી નહીં હે । ઇન શ્રમણ માહણ આદિજનોં કે વચનોં કે સહાયક તો
અનુમાન આદિ પ્રમાણ હે-પરન્તુ મેરા સહાયક કોઈ પ્રમાણ હી નહીં
હોતા હે, યદ્યપિ મેં સર્વથા સત્ય કહતા હૂં પરન્તુ વહ મેરા વચન અસં-
ભવિત અસહાય-હોને કી વજહ સે મનુષ્યોં કે લિયે શ્રદ્ધેય નહીં બન

આ રીતે આ બધા અસંભવનેની સંભાવના બાદતે તલિપુત્રે પોતાની બાતનેજ
સંવોધિત કરતાં મનમાં વિચાર કર્યો કે હે વિત્ત ! શ્રમણજનો જે કંઈ કહે છે
તે શ્રદ્ધેય છે, બ્રાહ્મણો જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રાવણ માહણજનો
જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે. આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે
પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ જાય
છે. એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની જાય છે. એથી આ બધા
અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનું પ્રતિપાત્ન કરનાર શ્રમણ માહણ
વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ જાય છે, પણ હું જે કંઈ કહી રહ્યો છે તે
અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છું. એક અસહાય છું એથી મને આ બાબતમાં કોઈની
મદદ પણ મળી શકે તેમ નથી. તે શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનોના સહાયક
તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે. પણ મારા કથનનું સહાયભૂત થાય તેવું કોઈ
પ્રમાણ જ નથી. જો કે હું જે કંઈ પણ કહી રહ્યો છું તે સંપૂર્ણ રીતે યથાર્થ
સત્ય-કહી રહ્યો છું. પણ મારાં તે વચનો અસંભવિત અસહાય હોવા બદલ

वचने सतो यदि अममेदं=एवंभूतं सत्यमपि वदामि, यत्-अहं 'सहपुत्रेहि अपुत्र' सहपुत्रैरपि अपुत्रः=पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि अहं पुत्ररहित एवास्मि तैरनादृत्यात् कः 'मेयं' ममेदं=इदं मदीयं वचनं 'सहहिस्मइ' श्रद्धास्यति=अत्येव्यति, न कोऽपि, तथा अहं 'सहमित्रैरिमित्रे' सहमित्रैरिमित्रः=मित्रेषु विद्यमानेष्वपि 'मित्ररहितोऽहं' को 'मेदं' ममेदं वचनं श्रद्धास्यति ? एवम्=अनेन प्रकारेणैव अर्थेन दारैः दासैः परिजनेन च सहितोऽपि, ते रहितोऽस्मि, इदं मदीयं वचनं कः श्रद्धास्यति, अपितु न कोऽपि । 'एवं' अमुना प्रकारेण ख यद्यहं ब्रवीमि-यत् 'तेतलिपुत्रे' तेतलिपुत्र नामधेये ख मयि अमात्ये कनकध्वजेन राज्ञा 'अवज्ञाएणं समाएणं' अपह्यातेन=दुश्चिन्तकेन सता, अर्थात् कनकध्वजो राजा सकना है जैसा मैं यह सत्य भी कहूँ कि मैं पुत्रों के विद्यमान होने पर भी अपुत्र पुत्र रहित-हूँ, तो कौन मेरी इस बात को श्रद्धा से देखेगा-इसी तरह मैं यह कहूँ कि मैं मित्रों के विद्यमान होने पर भी मित्र रहित हूँ-तो कौन मेरे इन वचनों पर विश्वास करेगा-(एवं अत्येणं दारेणं दासेहि परिजणेणं एवं खलु तेतलिपुत्रेणं अमच्चे कणगज्झएणं रत्ताअवज्ञाएणं समाएणं तेतलिपुत्रेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ कोमेयं सहहिस्मइ ? तेतलिपुत्रेणं नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेयं सहहिस्मइ) इस तरह अर्थ, दारा, दास, परिजन, इन से युक्त होने पर भी मैं-इन से रहित हूँ, कौन मेरे इस वचन को मानेगा ? अर्थात् कोई नहीं मानेगा इसी तरह यदि मैं ऐसा कहूँ कि मुझे तेतलिपुत्र अमात्य के ऊपर कनक

भाणसो भाटे श्रद्धय थई शके तेम नथी. जेम के हुं अत्यारे आ जातनी साथी बात पणु कहुं के पुत्रो होवा छांअे हुं पुत्र वगरनो छुं तो केणु भारी आ बातने श्रद्धानी दछिअे जेशे ? आ पभाणु ज हुं कहुं के मित्रो होवा छांअे हुं मित्र वगरनो छुं तो केणु भारी आ बात उपर श्रद्धा धरावशे ?

(एवं अत्येणं दारेणं दासेहि परिजणेणं एवं खलु तेतलिपुत्रेणं अमच्चे कणगज्झएणं रत्ताअवज्ञाएणं समाएणं तेतलिपुत्रेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ, कोमेयं सहहिस्मइ ? तेतलिपुत्रेणं नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेयं सहहिस्मइ)

आ रीते अर्थ (धन), दारा (पत्नी) दास, परिजन अे भद्रा होवा छांअे पणु हुं अेचना वगर छुं भारी आ बात उपर केणु विश्वास भूझवा तैयार थशे ? अेटके के केई पणु विश्वास करशे ज नछि. आ रीते ज जे हुं आभ कहुं के भारा उपर श्रद्धा इनक वचन नारा ज थई यथा हता अेटला भाटे

मैनगारधर्मासूत्रविंगी टीका अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम् ८३

तेतलिपुत्रे दुश्चिन्तको जातः इति हेतोः, तेतलिपुत्रेण तालपुटं विषम् 'आसगंसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिप्तम्, 'से वि य' तदपि च विषं नो 'कमइ' न क्राम्यति=विषत्वेन न परिणमति को जनः 'मेदं' ममेदं सत्यमपि वचनं श्रद्धास्यति न कोऽपि, तथा 'तेतलिपुत्तेणं' नीलोत्पल जाव खंधसि ओहरिए 'तेतलिपुत्रेण नीलोत्पल यावत् स्कन्धे अपहतः=तेतलिपुत्रेण नीलोत्पलगवलगुलिकरमप्रभाऽसिः 'स्कन्धे कण्ठमूले 'अवहतः' प्रहतः 'तत्पवि' तत्रापि=तस्मिन् मरणोपाये कृतेऽपि च' तस्य=असेः धारा ओपल्ला=कुण्ठीभूता को 'मेदं' ममेदं श्रद्धास्यति । एवमेव यद्यहं ब्रूयाम् यन्मया 'तेतलिपुत्रेण पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जुछिन्ना को मेयं सहइस्सइ' तेतलिपुत्रेण पासकं ग्रीवायां बद्ध्वा यावत् रज्जुछिन्ना, को ममेदं श्रद्धास्यति ? तेतलिपुत्रेण अतिविशालां शिलां यावद् बद्ध्वा अस्ताधयावध्वज राजा दुश्चिन्तक चन गये-इसलिये मैंने तालपुट विष मुख में डाल दिया परन्तु वह विषरूप से परिणामित नहीं हुआ । मैंने विष खाया-पर मैं मरा नहीं-कौन मनुष्य मेरी इस सत्य बात को श्रद्धा की दृष्टी से देखेगा । तथा मैंने नीलोत्पल, गवल एवं गुलिका की प्रभा जैसी प्रभाव वाली तीक्ष्ण तलवार अपनी गर्दन पर मरने के लिये चलाई-परन्तु वह भोटी धारवाली बन गई-कुण्ठित हो गई-उससे मेरी गर्दन नहीं कटी-कौन मेरी इस बात को मानने के लिये तैयार हो सकेगा (तेतलिपुत्तेण पासगं इत्यादि) इसी तरह यदि मैं यह कहूँ कि मुझ तेतलिपुत्रने अपने गले में पासक डाला और वृक्षपर चढ़कर वहां से नीचे मैं लटक पड़ा और फंदा घीच में से टूट गया तो कौन इन वचनों पर विश्वास करेगा । (तेतलिपुत्तेणं भइइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा

मे' तालपुटविष (जेर) आधुं डतुं पणु ते विपना इपभां परिणुत थयुं नथी ओटइडे के विष लक्ष्णु करवा छांयिं हुं भरखु पायेो नडि. आ वात उपर कयेो भाणुस निश्वास भूधवा तैयार थशे ? तेमज नीलोत्पल, गवल अने खुडिकाना जेवी प्रभावागी तीक्ष्ण धारवाणी तरवारनो मे' भरवा भाटे मारी डोड उपर धा कयेो पणु ते तरवार ज थूडी धारवाणी थर्य गछ-कुंडित थछ गछ-तेनाथी मारी डोड कपाछ नडि. मारी आ वात उपर डोडु निश्वास करवा तैयार थशे ? (तेतलिपुत्तेणं पासगं इत्यादि) आ रीते ज हुं आभ कहुं के मे' तेतलिपुत्रे पोताना गणामां क्षिंसा नांण्यो अने वृक्ष उपर चढ्यो. वृक्ष उपर चढीने त्याथी नीचे लटकी पड्यो पणु क्षिंसा वच्च्यथी ज तूरी गये. तो डोडु मारी आ वात उपर निश्वास भूक्षे ?

(तेतलिपुत्तेणं भइइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा मुखे,

દુદકે આત્મા મુક્તઃ, તત્રાપિ ચ સ્વલુ સ્તાથો જાતઃ, કો મમેદં શ્રદ્ધાસ્યતિ=મયા સ્વકળ્પે મહાશિલાં વદ્ધ્યા અગાથે ઉદકે આત્મા મુક્તઃ, પરન્તુ તસ્મિન્નુદકેઽપિ મમ તલસ્પર્શો જાતઃ, ઇતિ મમ વચનં કઃ શ્રદ્ધાસ્યતિ ? પુનશ્ચ-તેતલિપુત્રેણ મયા શુષ્કે તળકૂટે=તળપુલ્જેઽગ્નિકાયં પ્રક્ષિપ્ય પ્રજ્વલિતે તસ્મિન્ આત્મા મુક્તઃ, પરન્તુ સોઽગ્નિકાયઃ ' વિજ્ઞાણ ' વિધ્યાતઃ=ઉત્સાન્ત, ઇત્યેવંલ્પમપિ મદીયં વચનં કઃ શ્રદ્ધાસ્યતિ ? ન કોઽપિ, ઇત્યેવં સ તેતલિપુત્રઃ ' ઓહયમણસંકલ્પે ' અપહ-તમનઃ સંકલ્પઃ=મગ્નોત્સાહઃ સન્ યાવદ્ ધ્યાયતિ=આર્તધ્યાનં કરોતિ ॥સૂ. ૧૦॥

મુક્કો, તત્થ વિ ણં થાહે જાણ કો મેયં સદ્દહિસ્સહ ? તેતલિપુત્તેણ મુક્કંસિ તળકૂડંસિ અગ્નિકાયં પક્કિલ્લવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગ્નિકાણ વિજ્ઞાણ કો મેયં સદ્દહિસ્સહ ? ઓહયમણસંકલ્પે જાવ જ્ઞિયાયહ) મુશ્સ તેતલિપુત્રને એક વહુત વડી શિલા કા ગલેમેં વાંધો ઓર વાદ મેં અથાહ અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જલ મેં કૂંદ પડા પરન્તુ વહ જલ કૂંદતે હી થાહ વાલા બન ગયા અથાહ નહીં રહા મેરી હસ સત્ય વાત પર મી કોન શ્રદ્ધા કરેગા । હસી તરહ મુશ્સ તેતલિપુત્રને એક વડે મારી શુષ્ક વાસ કે ઢેર મેં અગ્નિ લગાઈ ઓર ઉસ મેં અપને આપ કો પ્રક્ષિપ્ત કર દિયા-પરન્તુ વહ અગ્નિ વુજ્જ ગઈ ઉસને મુક્કે અસ્મ નહીં કિયા મેરી હસવાત કો કોન શ્રદ્ધા રૂપ સે સ્વીકાર કરેગા । હસ પ્રકાર અપહત મનઃ સંકલ્પ વાલા બન કર-ઉત્સાહ રહિત હોકર વહ તેતલિપુત્ર અમાત્ય આર્તધ્યાન મેં પડ ગયા ॥ સૂ. ૧૦ ॥

તત્થ વિ ણં થાહે જાણ કો મેયં સદ્દહિસ્સહ ? તેતલિપુત્તેણ મુક્કંસિ તળકૂડંસિ અગ્નિકાયં પક્કિલ્લવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગ્નિકાણ વિજ્ઞાણ કો મેયં સદ્દહિસ્સહ ? ઓહયમણસંકલ્પે જાવ જ્ઞિયાયહ)

મેં તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથરો) બળામા બાંધી અને ત્યાર પછી હું અથાહ (બેંડા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ બેટલા પાણીમાં ફેલી ગયો । પણ ફેલાંની સાથે જ પાણી થાહવાળું (છીછરું) થઈ ગયું, અથાહ (બેંડું) રહ્યું નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કોણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ પ્રમાણે જ મેં તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા વાસના ઢગલામાં અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને તેમાં મેં પોતાની જાતને અંપલાવી દીધી । પણ તે અગ્નિ એકવાઈ ગયો । તેણે મને ભસ્મ કયો નહિ । મારી આ વાતને કોણ શ્રદ્ધેય માનીને સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમનઃ સંકલ્પવાળો (હતાશ) થઈને નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમાં ફેળી ગયો । ॥ “ સૂત્ર ૧૦ ” ॥

अनंगारधमाभृतवर्णिणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

६१

मूलम्—तएणं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ, विउ-
व्वित्ता, तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी—हं
भो ! तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं, दुहओ
अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति, गामे पलित्ते रत्ने
झियाइ, रत्ने पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेतलिपुत्ता !
कओ वयामो ?, तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—
भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं, उक्कंठियस्स सद्देसगमणं
लुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइ-
यस्स रहस्सं अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अच्चाणपरिसंतस्स
वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणाकिच्चं, परं अभिउंजिउ
कामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो
एगमवि णं भवइ । तएणं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं
एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठं आयाणाहि
त्तिकट्ठु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं
पाउव्वभूए, तामेव दिसं पडिगए ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ‘तएणं’ ततः खलु तेतलिपुत्रे आर्तध्यान-
रते सति स पोट्टिलो देवः ‘पोट्टिलारूवं’ पोट्टिलारूपं विकुर्वति=वैक्रियशक्त्या-

‘तएणं से पोट्टिले देवे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) उस पोट्टिल देवने
(पोट्टिला रूवं विउव्वइ) पोट्टिला के रूप की विकुर्वणा की—अर्थात् वैक्रिय
शक्ति के प्रभाव से उसने पोट्टिला का रूप धारण किया (विउव्वित्ता

‘तएणं से पोट्टिले देवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थार पथी (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलदेवे (पोट्टिला रूवं
विउव्वइ) पोट्टिलाना अपनी विकुर्वणा करी ओटले के वैक्रिय शक्तिना प्रभावथी

ધારયતિ, વિકુર્ચિત્વા તેતલિપુત્રસ્ય અદૂરસામન્તે=નાતિદૂરે નાતિનિકટે સ્થિત્વા
 પૃથમવાદીત્-હંભો તેતલિપુત્ર ! ' હંભો ' इत्यामन्त्रणे, हे तेतलिपुत्र ! ' पुरओ '
 पुरतः=अग्रतः ' ' पवाष् ' प्रपातः=गर्तः, अतो निर्गमनमसम्भवि, पृष्ठतः हस्ति-
 भयम्, अतो प्रत्यावर्तने चासंभवि, ' दुहओ ' उभयतः=उभयत=उभयोः
 पार्श्वयोः ' अचक्खुफासे ' अचक्षुस्पर्शः=अन्धकारः, ' मज्झे ' मध्ये=यत्र वयमास्महे
 तत्र ' सराणि ' शराः=शणाः, ' वरिसंति ' वर्षन्ति=निपतन्ति । ' गामे पलित्ते '
 ग्रामे प्रदीप्ते=प्रज्वलिते सति रण्णे ' अण्णं=वनं ' झियाइ ' ध्यायति=गन्तुं
 चिन्तयति, अण्णे प्रदीप्ते ग्रामं ध्यायति=गन्तुं चिन्तयति, ' आउओ तेतलिपुत्ता '
 हे आयुष्मन् तेतलिपुत्र ! ' उभओ रठिते ' उभयतः प्रदीप्ते=उभयस्मिन् प्रज्वलिते
 वयं ' कओ वयामो ' कुतो व्रजामः=कगच्छामः । ततः खलु स तेतलिपुत्रः पोड्डिला-

તેતલિપુત્તસ્સ અદૂરસામંતે ટીચ્ચા એવં વયાસી) ધારણ કર કે વહ
 તેતલિપુત્ર કે સમીપ ગયો । વહાં જાકર ઉમને ઉસમે હસ પ્રકાર
 કહા-(હં ભો તેતલિપુત્તા ! પુરઓ પવાષ પિટ્ટઓ હસ્તિભયં) અરે ઓ
 તેતલિપુત્ર ! આગે પ્રપાત ઘટ્ટા હૈ ઓર પીછે હાથી કા ભય હૈ । (દુહઓ
 અચક્કુફાસે, મજ્ઝે સરાણિ વરિસંતિ) દોનોં ઓર અન્ધેરા હૈ ઓર
 જહાં હમલોગ ઠહરે હુએ હૈં વહાં વાળોં કો વૃષ્ટિ હો રહી હૈ । (ગામે
 પલિત્તે રણ્ણો ઝિયાઈ, રત્તો પલિત્તે ગામે ઝિયાઈ) ગ્રામ મેં આગલગને
 પર મનુષ્ય જંગલ મેં ચલે જાને કો સોચતા હૈ-ઓર જંગલ મેં આગ
 લગને પર ગ્રામ મેં ચલે આને કે લિયે વિચારતા હૈ । (આઉઓ તેતલિ-
 પુત્તા ! ઉમઓ પલિત્તે કઓ વયામો) પરન્તુ જય દોનોં મેં આગ લગ
 જાવે તો હે આયુષ્મન તેતલિપુત્ર ! કહો ! હમ કહાં જાવે ? (તણ્ણે સે

તેણે પોદ્દિલાનું રૂપ ધારણ કર્યું. (વિહરિત્તા તેતલિપુત્તસ્સ અદૂરસામંતે ટીચ્ચા
 એવં વયાસી) ધારણ કરીને તે તેતલિપુત્રની પાસે ગઈ. ત્યાં જઈને તેણે તેને
 આ પ્રમાણે કહ્યું કે (હં ભો તેતલિપુત્તા ! પુરઓ પવાષ પિટ્ટઓ હસ્તિભયં) અરે,
 ઓ ! તેતલિપુત્ર ! તમારી સામે પ્રપાત-ઘાત છે અને તમારી પાછળ હાથીનો
 ભય છે. (દુહઓ અચક્કુફાસે, મજ્ઝે સરાણિ વરિસંતિ) બંને તરફ અંધારું
 છે અને જ્યાં અમે ઊભા છીએ ત્યાં તીરે વર્ષી રહ્યા છે (ગામે પલિત્તે રણ્ણો
 ઝિયાઈ રત્તો પલિત્તે ગામે ઝિયાઈ) ગામમાં આગ લાગતાં માણસ જંગલમાં
 નાસી જવાનો વિચાર કરે છે અને જંગલમાં આગ લાગતાં ગામમાં આવતા
 રહેવાનો વિચાર કરે છે. (આઉઓ તેતલિપુત્તા ઉમઓ પલિત્તે કઓ વયામો)
 પણ જ્યારે બંને તરફ આગ સળગી ઉઠે ત્યારે હે આયુષ્મન તેતલિપુત્ર !
 બોલો, અમે ક્યાં જઈએ ?

મેવમવાદીત્ 'મો' હે પોટિલે ! મીતસ્ય સ્વલુ પ્રવજ્યાશરણં મયતિ તત્ત દદ્ધાન્ત-
માહ-યથા- 'ઉક્કંડિયસ્મ' ઉક્કંઠિતસ્ય=પરદેશવર્તિત્વાદુત્કુકસ્ય સ્વદેશગમનં,
'હુદિયસ્મ' હુદિતસ્ય અન્નમ્, 'તિસિયસ્મ' તુષિતસ્ય પાનં, 'આઝરસ્મ આ-
રસ્ય=રોગિણઃ 'મેસજ્જ' ચૈરય્યં 'માયિસ્મ' માયિકસ્ય=માયાવિનઃ રહસ્યં=ગોપનમ્,
'અમિજુતસ્મ' અમિયુક્તસ્ય = દોષાપવાદયુક્તસ્ય 'પચ્ચયકરણં = પ્રત્યયકરણં
તન્નિરાકરણેન સ્વવિષયે નિર્દોષતાપ્રતીત્યુત્પાદનમ્, 'અદ્દાણપરિસંતસ્સ' અધ્વપરિશ્રા-
ન્તસ્ય=માર્ગગમનપરિશ્લિષ્ણસ્ય 'વાહનગમણં' વાહનગમનં. શકટાદિના ગમનં 'તરિ-
તેતલિપુત્તે પોટિલં એવં વયામી-મીત્તસ્મ સ્વલુ મો પવજ્ઞા-સરણં-ઉક્કં-
ડિયસ્મ સદેસગમણં હુદિયસ્મ અન્નં, તિસિયસ્મ પાણં, આઝરસ્મ મેસ-
જ્જં, માહ્યસ્મ રહસ્સં, અમિજુત્તસ્મ પચ્ચયકરણં, અદ્દાણપરિસંતસ્સ
વાહનગમણં, તરિઝકામસ્સ પહવણકિચ્ચં, પરં અમિઝંજિઝકામસ્સ
સહાયકિચ્ચં સંતસ્સ દંતસ્સ જિહંદિયસ્સ ઇત્તો ઇગમવિ ણ મવ્વહ) હસ
પ્રકાર પોટિલા કી વાત સુનકર તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને ડસસે એમા કહા
હે પાટિલે ! મીત (મય યુક્ત) કે લિયે પ્રવજ્યા શરણ મૂત્ત હોતી હૈ,
જૈસે-પરદેશ વર્તી ઉત્કુક વ્યક્તિ કે લિયે સ્વદેશ ગમન શરણ મૂત્ત
હોતી હૈ, મૂલ્લે કે લિયે અન્ન શરણ મૂત્ત હોતી હૈ પ્યાસે કે લિયે પાની,
આતુર રોગી કે લિયે ભૈષજ્ય, માયાત્રી કે લિયે માયાચારી, અમિયુક્ત-
દોષાપવાદ વાલે કે લિયે દોષોં કે નિરાકરણ સે અપને વિષય મેં નિર્દો-
ષતા કી પ્રતીતિ કા ઉત્પાદન, શરણ મૂત્ત હોતી હૈ । માર્ગ આન્ન કે લિયે
વાહન સે ગમન, કરના શરણ મૂત્ત હોતી હૈ, તૈરને કી ઇચ્છા વાલે કે

(તણં સે તેતલિપુત્તે પોટિલં એવં વયામી-મીત્તસ્મ સ્વલુ મો પવજ્ઞા સરણં
ઉક્કંડિયસ્મ સદેસગમણં હુદિયસ્મ અન્નં તિસિયસ્મ પાણં, આઝરસ્મ મેસજ્જં,
માહ્યસ્મ રહસ્સં, અમિજુત્તસ્મ પચ્ચયકરણં, અદ્દાણપરિસંતસ્સ વાહનગમણં, તરિઝ-
કામસ્સ સહાયકિચ્ચં સંતસ્સ જિહંદિયસ્સ ઇત્તો ઇગમવિ ણ મવ્વહ)

આ રીતે પોટિલાની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યું કે હે
પોટિલે ! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવજ્યા શરણ મૂત્ત હોય છે-જેમ-પરદેશમાં
રહેતી ઉત્કુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ પાછા ફરવું શરણ મૂત્ત હોય છે ભૂખ્યા
ને માટે અન્ન શરણ મૂત્ત હોય છે. આ પ્રમાણે જ તરસ્યાને માટે પાણી, આતુર-
રોગ-ને માટે ભૈષજ્ય-દવા, માયાત્રીને માટે માયા અ રી, અમિયુક્ત-દોષાપવાદ-
વાળા-ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિર્દોષતાની પ્રતીતિનું ઉત્પાદન
શરણ મૂત્ત હોય છે. માર્ગમાં આડતાં ધાકી ગયેલાને માટે વાહનનો ઉપયોગ
શરણ મૂત્ત હોય છે, તરવાની ઇચ્છા ધરાવતા માણસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

ઉંકામસ 'તરીતુકામસ્ય' 'પ્રવહણકિચ્ચં' પ્રવહણકૃત્યમ્-પ્રવહણં=પતરણ કૃત્યં
 યંસ્ય તત્, જલયાનં-નૌકાદિકમિત્યર્થઃ 'પરં અભિયોજિતુકામસસ' પરમભિયોજ-
 યિતુકામસ્ય=સમાક્રમિતુમુદ્યતસ્ય 'સહાયકિચ્ચં' સહાકૃત્યં=મિત્રાદીનાં સાહાય્યં
 શરણં ભવતિ, પરં પ્રવ્રજ્યાનન્તરં 'સ્વંતસ્સ' જ્ઞાન્તસ્ય=ક્ષમાશીલસ્ય, 'દંતસ્સ'
 દાન્તસ્ય ઇન્દ્રિય નો ઇન્દ્રિયાણાં દમનશીલસ્ય, 'જિહંદિયસ્સ' જિતેન્દ્રિયસ્ય=
 વૈશીકૃતેન્દ્રિયસ્ય 'એત્તો' ઇતઃ=એષુ પૂર્વોક્તેષુ મધ્યે 'એગમવિ ન ભવઃ' એકમપિ ન
 ભવતિ । એકમપિ શરણં તસ્ય પ્રવ્રજિતસ્યોપાદેયં ન ભવતીત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ તેતલિ-
 પુત્રસ્યૈતદ્વચનશ્રવણાનન્તરમ્ સ પોદ્દિલો દેવઃ તેતલિપુત્રમમાન્યમેવમવદ્-સુદ્ધુ સ્વલું
 ત્વે હે તેતલિપુત્ર ! એતમર્થમ્='ભીતસ્ય પ્રવ્રજ્યા શરણમ્' ઇત્યેવંરૂપં ભાવમ્
 'આયાણાહિ' આજાનીદિ=અનુષ્ઠાનદ્વારેણાવબુધ્યસ્-પ્રવ્રજ્યાં ગૃહાણેત્યર્થઃ 'તિ

લિયે નૌકાદિ યાન શરણ ભૂત હોતા હૈ, ઓર જો દુમરોં પર આક્રમણ
 કરંને કે લિયે ઉચ્ચત હોતા હૈ ઉમકે લિયે મિત્રાદિકોં કો મહાયતા
 શરણ ભૂત હોતી હૈ । પરંતુ જો ક્ષમાશીલ હોતા હૈ, દાન્ત-ઇન્દ્રિયોં કોં
 એવં મન કો દમન કરાતા હૈ, જિતેન્દ્રિય હોતા હૈ એસે પ્રવ્રજિત કો ઇન
 પૂર્વોક્ત શરણોં મેસે એક ભી શરણ ઉપાદેય નહીં હોતા હૈ । (તણં સેં
 પોદ્દિલે દેવે તેયલિપુત્તં અમચ્ચં એવં વયાસી-સુદ્ધુણ તુમં તેયલિપુત્તા !
 એયમઠ્ઠં આયાણાહિ તિ કઠ્ઠુ દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ એવં વયઃ વડતા જામેવ દિસં
 પાઝમ્મૂ તામેવ દિસં પડિગણ) ઇસ પ્રકાર તેતલિપુત્ર કે વચન સુનને
 કે યાદ ઉમ પોદ્દિક દેવને તેતલિપુત્ર અમાત્ય સે એમા કહાં હે તેતલિ-
 પુત્ર ! ડરે હુણ કો પ્રવ્રજ્યા શરણ હોતી હૈ ઇસ ભાવરૂપ અર્થ કો તુમ
 અનુષ્ઠાન દ્વારા અચ્છી તરહ જાનો અર્થાન્ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરો । એમા

શરણ ભૂત હોય છે અને જે બીજાઓ ઉપર હુમલો કરવા તૈયાર હોય છે તેના
 માટે ત્રિ વગેરેની મદદ શરણ ભૂત હોય છે પણ જે ક્ષમાશીલ હોય છે,
 દાન્ત-ઇન્દ્રિયો અને મનને દમન કરનાર હોય છે-એટલે કે જિતેન્દ્રિય હોય છે
 એવા પ્રવ્રજિતના માટે એ બધી ઉપર વર્ણવામાં આવેલી શરણોમાંથી એકેય
 કામમાં આવતી નથી.

(તણં સે પોદ્દિલે દેવે તેયલિપુત્તં અમચ્ચં એવં વયાસી-સુદ્ધુણં તુમં તેય-
 લિપુત્તા ! એયમઠ્ઠં આયાણાહિ તિ કઠ્ઠુ, દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ એવં વયઃ વડતા જામેવ
 દિસં પાઝમ્મૂ તામેવ દિસં પડિગણ)

આ રીતે તેતલિપુત્રનાં વચન સાંભળીને તે પોદ્દિક દેવે તેતલિપુત્ર અમાત્યને
 કહ્યું કે હે તેતલિપુત્ર ! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવ્રજ્યા શરણ ભૂત હોય છે
 ભાવરૂપ અર્થને તમે અનુષ્ઠાન દ્વારા સારી રીતે સમજો. એટલે કે તમે

अणगारधर्मावृत्तवर्षिणो टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितनिरूपणम् ८६

कहु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा ' दोरुचंपि ' द्वितीयमपि=द्वितीयवारमपि एवं वदति, वदित्वा यस्या दिशः प्रादुर्भूतः, तस्यामेव दिशि प्रतिगतः ॥ सू० ११ ॥

मूळम्-तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने । तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमे-
मेयारूवे अज्झत्थिए५ समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं इहेव
जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजये पोंडरि
गिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था । तएणं
अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोइसपुव्वाइं०
बहूणि वासाणि सामन्नपरियायं० मासियाए संलेहणाए
महासुक्के कप्पे देवे । तएणं अहं ताओ देवलोयाओ आयु-
क्खएणं३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स भद्दाए भारियाए
दारगत्ताए पच्चायाए, तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्व-
याइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तिए, एवं संपेहेइ, संपे-
हित्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता, जेणेव पमय-
वणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, असोगवर-
पावयस्स अहे पुढविसिलापट्ठयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचित्ते
माणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोइसपुव्वाइं सयमेव
अभिसमन्नागयाइं । तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स
सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खयोव-

कहकर उसने इसी बात को उससे दुबारा तबोरा भी कहा और कह-
कर बादमें वह पोटिला रूप धारी देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था
जमी दिशा तरफ चला गया ॥ सू० ११ ॥

प्रमत्तया चरीकारी हो, आ प्रमाळे कडीने तेले गीळ अने त्रीळ वणत पळ
आ रीते न कळुं अने त्याच पळी ते पोटिला रूप धारी देव ने दिशा तरफ
थी प्रकट थयो । ते ते तरफ पाछो जतो रड्यो ॥ सूत्र " ११ " ॥

समेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवर-
णाणदंसणे समुप्पण्णे ॥ सू० १२ ॥

टीका— 'तएणं तस्स' इत्यादि । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य शुभेन परिणामेण जातिस्मरणम्=पूर्वभवज्ञानं समुत्पन्नम् । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः प्रार्थितः चिन्तितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत एवं खलु अहम् इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहेवर्षे पुष्कलावती विजये पुण्डरी-
किण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजा आसम् । ततः खलु अहं स्यविराणामन्तिके-
मुण्डो भूत्वा यावत् 'चोदमपुव्वाइं०' चतुर्दशपूर्वाणि०=चतुर्दशपूर्वाणि अधीत-
वान्, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियायं०' श्रामण्यपर्यायं०=चारित्रपर्यायं पालित-

'तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तेतलिपुत्तस्स) तेनलिपुत्र को (सुभेणं परिणामेणं जाइ सरणे समुप्पण्णे) शुभपरिणाम से जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । (तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समु-
प्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव जम्बूद्वीपे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पौंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था)
उसके प्रभाव से उसने अपने पूर्वभव को जान लिया—उसने जाना कि मैं इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में पुष्कलावती विजय में पुण्डरीकिणी नामकी राजधानी में महापद्म नाम का राजा था
(तएणं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भविता जाव चोदमपुव्वाइं० बहूणि

'तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थारआह (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्रने (सुभेणं परिणामेणं जाइ सरणे समुप्पण्णे) शुभ परिणामथी जति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थई भयुं.

(तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव जम्बूद्वीपे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पौंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था)

तेना प्रभावथी तेहे पोताना पुर्व भवने जाली दीघा. तेने आ जतनुं ज्ञान थयुं के ते आ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमां महा विदेह क्षेत्रमां पुष्क लावती विजयमां पुण्डरीकिणी नामनी राजधानीमां महापद्म नामे राजा इते.

(तएणं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भविता जाव चोदमपुव्वाइं० बहूणि वासाणि

वान् । अनन्तरं मासिक्या संलेखनया कालमासे कालं कृत्वा 'महासुके कप्पे' महासुके कल्पे=सप्तमे देवलोके 'देवे' देवः=देवत्वेनोत्पन्नः । ततः खलु अहं तस्माद् देवलोकात् 'आयुक्खणं' ३ आयुः क्षयेण ३=आयुर्भवस्थिति क्षयानन्तरम् इहैव तेतलिपुरे तेतलेरमात्यस्य भद्राया भार्याया 'दारगत्ताए' दारकत्वेन=पुत्रतया 'पच्चायाए' प्रत्यायातः=उत्पन्नः, तत्=तस्मात् श्रेयः ख मम पूर्व-दृष्टानि=पूर्वभवपालितानि 'महव्वयाइं' महाव्रतानि=पञ्चमहाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य विहर्तुम्, एवं संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य स्वयमेव महाव्रतानि आरोहति=स्वीकरोति, आरुह्य, यत्रैव प्रमदवनम्=उद्यानं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'असोगवरपाय-

वासाणि सामन्नपरियाय० मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे-तएणं अहं ताओ देवलोयाओ आयुक्खणं ३ इहैव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भदाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए) वहां मैंने स्थ-विरी के पाम मुंडित होकर दीक्षा धारण की थी और ग्यारह अंगों का अध्ययन कर विशिष्ट तपस्या की थी अन्त में अनेक वर्षोंतक आमण्य पर्यायिका पालन कर एक मासकी संलेखना धारण कर मैं काल अवसर काल कर सोतवां महासुक्क कल्पमें देवकी पर्यायसे उत्पन्न हो गया । वहां की आयुष्य स्थिति अवस्थिति स्थितिके क्षयके अनन्तर मैं वहांसे चलकर इस तेतलिपुर में तेतलि अमात्य के यहां भद्रा भार्या की कुक्षि से पुत्र रूप में अवतरित हुआ । (तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्ताए-एवं संपेहेइ, संपेहिता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ,

सामन्नपरियाय० मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे-तएणं अहं ताओ देवलोयाओ आयुक्खणं ३ इहैव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भदाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए)

त्यां मे' मुंडित थधने स्थविरेनी पासेथी दीक्षा धारणु करी હતી અને અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કરીને વિશિષ્ટ તપસ્યા કરી હતી. મેંવટે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક મહિનાની સંલેખના ધારણુ કરી અને ત્યાર પછી કાળ અવસરે કાળ કરીને સાતમા મહા શુક કલ્પમાં દેવ ના પર્યાયથી હું જન્મ પામ્યો. ત્યાંની ભવસ્થિતિ ૩ (ત્રણ) ના ક્ષય થવા બદલ હું ત્યાંથી આવીને આ તેતલિપુરમાં તેતલિ અમાત્યને ત્યાં ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી પુત્ર રૂપમાં જન્મ પામ્યો.

(તં સેયં ખલુ મમ પુવ્વદિટ્ઠાઈં મહવ્વયાઈં સયમેવ ઉવસંપજ્જિત્તાણં વિહરિ-ત્તાએ એવં સંપેહેઈ, સંપેહિતા સયમેવ મહવ્વયાઈં આરુહેઈ, આરુહિતા જેણેવ પમયવણે

વસ્સ 'અશોકવરપાદપસ્ય=અશોકવૃક્ષસ્ય 'અહે' અધઃ પરિણતશિલોપરિ 'સુહ-
નિસન્નસ્સ' સુહનિષ્ણસ્ય=સુહોપવિષ્ટસ્ય 'અણુચિત્તેમાણસ્સ' અનુવિન્તયતઃ=
પૂર્વભવે કૃતમધ્યયનાદિકં સ્મરતઃ 'પુવ્વાહીયાઈ' પૂર્વાધીતાનિ=પૂર્વભવે પઠિતાનિ
સામાયિકાદીનિ ચતુર્દશપૂર્વાણિ સ્વયમેવ 'અભિસમન્નાગયાઈ' અભિસમન્વાગતાનિ=
જ્ઞાનવિષયતયા સંજાતાનિ । તતઃ સ્વલુ તસ્ય તેતલિપુત્તસ્ય અનગારસ્ય ધુમેન પરિ-
ણામેન 'જાવ' યાવત્-પ્રશસ્તૈરધ્યવસાયૈઃ, પ્રશસ્તાભિર્લેશ્યામિ વિશુદ્ધચમાનામિઃ
'તયાવરણિજ્જાણં' તદાવરણીયાનાં=જ્ઞાનાવરણીયાદીનાં કર્મણાં 'સ્વયોવસમેણં'

ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુદવિસિલાપટ્ટયંસિ સુહનિ-
સન્નસ્સ અણુચિત્તેમાણસ્સ પુવ્વાહીયાઈ સામાહ્યમાહયાઈ ચોદસપુવ્વાઈ
સયમેવ અભિસમન્નાગયાઈ) હસલિયે અબ મુણ્હે યહી ઉચિત્ત હૈ કિ મેં
પૂર્વ ભવ મેં પાલિત કિયે પંચ મહાવ્રતોં કો અપને આપ ધારણ કરલું ।
એસા ઉસને વિચાર કિયા । વિચાર કરકે ફિર ઉસને અપને આપહી
મહાવ્રતોં કો ધારણ કર લિયા । ધારણ કરકે ફિર વહ જહાં પ્રમદવન
નામકા ઉદ્યાન થા વહાં ચલા ગાયા । વહાં જાકર વહ અશોક વૃક્ષ કે
નીચે રક્ષે હુણ પૃથિવી શિલાપટ્ટક પર પટાકાર સે પરિણત શિલા કે
ઝર-આનન્દ કે સાથ બેઠ ગયા ઓર પૂર્વ ભવ મેં કૃત અધ્યયન આદિ
કા બારં ચિન્તવન કરને લગા । હસ તરહ વિચાર કરતેં ઉસકે પૂર્વ ભવ
મેં પઠિત સામાયિક આદિ ચોદહ પૂર્વ જ્ઞાન કે વિષય સૂત વન ગયે ।
(તણં તસ્સ તેતલિપુત્તસ્સ અણગારસ્સ ધુમેણં પરિણામેણં જાવ તયા-

ઉજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુદવિસિલા
પટ્ટયંસિ સુહનિસન્નસ્સ અણુચિત્તેમાણસ્સ પુવ્વાહીયાઈ સામાહ્યમાહયાઈ ચોદસ
પુવ્વાઈ સયમેવ અભિસમન્નાગયાઈ)

એટલા માટે હવે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે પૂર્વ ભવમાં જે
પાંચ મહાવ્રતોને મેં ધારણ કરેલાં તેને પોતાની મેળે જ ધારણ કરી લઉં.
આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો. વિચાર કર્યા બાદ તેણે પોતાની મેળે જ પાંચ
મહાવ્રતો ધારણ કરી લીધાં ધારણ કર્યા પછી તે જ્યાં પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન
હતું ત્યાં જતો રહ્યો. ત્યાં જઈને તે અશોક વૃક્ષની નીચે મૂકાયેલા પૃથિવી
શિલા પટ્ટક ઉપર-પટ્ટાકાર રૂપથી પરિણત શિલા ઉપર-આનંદ અનુભવતો બેસી
ગયો અને પૂર્વ ભવમાં જે કંઈ અધ્યયન કર્યું હતું તેનું વારંવાર ચિંતન કરવા
લાગ્યો. આ રીતે ચિંતન કરતાં કરતાં પૂર્વભવમાં ભણેલા સામાયિક વગેરે ચોદ
પૂર્વજ્ઞાન તેને વિષયભૂત થઈ ગયાં.

अणगारघमांमृतवर्णिणी टीका० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानस्मरितवर्णनम् १३

क्षयोपशमेन=उदितानां कर्मणां क्षयेण अनुदितानां कर्मणामुपशमेन=निरुद्धोदयस्त्वेन
'कम्मरयविकरणकरं' कर्मरजो विकरणकर्म 'अपुव्वकरणं' अपूर्वकरणम्=अष्टम-
गुणस्थानम् पविट्टस्य तस्य केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम् ॥सू० १२॥

मूलम्-तएणं तेतलिपुरे नयरे अहा संनिहिएहिं वाणमं-
तरेहिं देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसच्चवन्ने
कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयंगधव्वनिनाए कए यावि
होत्था । तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धहे
समाणे एवं वयासी-एवं खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए
मुंडे भवित्ता पव्वइए, तं गच्छामि णं तेतलिपुत्तं अणगारं
वंदामि नमंसामि वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो
२ खामेमि, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पहाए० चाउरंगणीए

वरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं
पविट्टस्स केवलवरनाणदंसणे समुत्पण्णे) इस प्रकार शुभ परिणामों से
यावत् प्रसस्त अध्यवसायों से विशुद्धमान लेश्याओं से, उसके ज्ञाना-
वरणी आदि कर्मों का क्षयोपशम-उदित कर्मों का क्षय एवं अनुदित
कर्मों का उपशम-हो गया-सो इस के प्रभाव से वे कर्मरज को दूर
करने वाले अष्टम अपूर्व करण नामके गुणस्थान में प्राप्त हो गये ।
बाद में बाहरवें गुणस्थान के अंत में और तेरहवें गुणस्थान के प्रारंभ
में उन्हें केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गया ॥सू० १२॥

(तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणि-
ज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्टस्स केवल-
वरनाणदंसणं समुत्पण्णे)

आ रीते शुभ परिणामोत्थी, यावत् प्रशस्त अध्यवसायोत्थी, विशुद्धमान
लेश्याओत्थी तेना ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोना क्षयोपशम-उदित कर्मोना क्षय
अने अनुदित कर्मोना उपशम थर्छ गयो। ओना प्रभावथी तेओ कर्मरज्जे
विकरञ्च करनारा अष्टम अपूर्व करण नामना शुभस्थानमां प्राप्त थर्छ गयो। तयार
पछी पारमा शुभस्थानना अंतमां अने तेरमा शुभस्थानना प्रारंभमां तेभने
केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थर्छ गयो। ॥ सूत्र " १२ " ॥

सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव
 उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेतलिपुत्तेअणगारं वंदइ नमंसइ
 वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२ खामेइ, नच्चा-
 सन्ने जाव पज्जुवासइ । तएणंसे तेतलिपुत्ते अणगारे कण-
 गज्झयस्स रत्तो तीसे य महइ महालयाए० धम्मं परिकहेइ ।
 तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए
 धम्मं सोच्चा णिसम्म, पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावग-
 धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव
 अहिगय जीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइं
 केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू !
 समणेणं भगवथा महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोइसमस्स
 णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिबेमि ॥ सू० १३ ॥

॥ चउइस अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—‘ तएणं ’ इत्यादि । ततः खलु तेतलिपुरे नगरे ‘ अहासंनिहिण्हि ’
 यथा संनिहितैः=आसन्नैः ‘ वाणमंतरेहि ’ वाणव्यन्तरैः देवैः देवीभिश्च देवदुन्दुभयः
 समाहताः=आकाशे देवैः देवीभिश्च देवदुन्दुभयो वादिता इत्यर्थः, ‘ दसद्ववण्णे
 कुसुमे निवाडिए’ दशार्द्धवर्णं कुसुमं निपातितम्, अत्र जाति विवक्षायामेकवचनम्,

‘ तएणं तेतलिपुरे नगरे ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तेतलिपुरे नगरे) तेतलिपुर नगरमें
 (अहासंनिहिण्हि वाणमंतरेहि देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ,
 दसद्ववन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगंधव्वनिनाए कए यावि

‘तएणं तेतलिपुरे नगरे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्था२ पछी (तेतलिपुरे नगरे) तेतलिपुर नगरभां
 (अहा संनिहिण्हि वाणमंतरेहि देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ,
 दसद्ववन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था)

अणगारं धर्मासूतवर्णिणी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

१५

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णाणि अचित्तपुष्पाणि निपातितानि=वर्णितानि, दिव्यः=मनो-
हरः गीतमन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत् । ततः खलु स कनकध्वजो राजा
'इमीसे कहाए लद्धे समणे' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दृष्टचिन्ता विषयी-
कृतस्तेतलिपुत्रः अमात्यः प्रव्रज्य प्रमदवने केवलवज्ञानदर्शनसम्पन्नो जात इति
वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमवादीत्-एवं खलु तेतलिपुत्रो मया 'अवज्झाए' अप-
ध्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः, 'तं' तत्=तम्मात् कार-
णात् नमस्यित्वा 'एयमट्ठं' एतमर्थं=मया कृतमपमानरूपमर्थं त्रिनयेन भूयो भूयः
'खामेमि' क्षमयामि, एवं संप्रेक्षते. संप्रेक्ष्य 'ण्हाए' स्नातः कृतस्नानः 'चाउ-
रंगिणीए सेणाए' चतुर्द्विण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदवनं उद्यानं यत्रैव तेतलि-

होत्था) यथा संनिहित आसन्न भूत हुए बाण, व्यन्तर देवों ने और
देवियों ने आकाश में देवदुन्दुभियां बजाई । पंचवर्ण के अचिन्त कुसुमों
की वृष्टि की । मनोहर गीत मन्धर्व निदान भी किया । (तएणं से कण-
गज्झए राया इमीसे कहाए लद्धे समणे एवं वयासी) जब यह
समाचार कनकध्वज राजा को ज्ञात हुआ मेरो दुष्ट विचारणा के विषय
भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल
ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब
उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एवं खलु तेन-
लि पुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए, तं गच्छामि णं तेतलिपुत्तं
अणगारं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो
खामेमि एवं संपेहेइ-संपेहित्ता ण्हाए० चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमय-
वणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

यथा संनिहित आसन्नभूत थयेत्ता बाणुअन्तर देवोअे अने देवीअे अे
आकाशमां देवदुन्दुभियां वजाडी, पांथ रंगना अचित्त पुष्पोनी वर्षा करी अने
भनोडेर गीत मन्धर्व निनाद (ध्वनि) पणु कर्यो. (तएणं से कणगज्झए राया
इमीसे कहाए लद्धे समणे एवं वयासी) अयारे आ समाचारोनी पणु राणा
कनक ध्वजने थछ के मारी हुण्ट विचरणाने दीधि तेतलिपुत्र अमात्ये दीक्षित
थछनि प्रमदवनमां केवलज्ञान अने केवल दर्शन प्राप्त करी दीधां छे त्यारे
तेणे मनमां विचार कर्यो के

(एवं खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए तं गच्छामि णं
तेतलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २
खामेमि एवं संपेहेइ-संपेहित्ता ण्हाए० चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे
उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्तं अणगारं

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यन्वा एमर्थं=स्वकृताऽपराधलक्षणं विनयेनभूयो भूयः क्षमयति= क्षमां कारयति, तथा 'नच्चासन्ने०' नात्यासन्ने नातिदूरे यावत् पर्युपास्ते= सेवां करोति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्यां च

पुत्रं अणगारं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एमयट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी दुष्ट चिन्ता का विषयभूत बनाया है—सो वह मुंडित होकर दीक्षित हो गया है। इसलिये मैं अब उमके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को वंदना करूँ-नमस्कार करूँ। वंदना नमस्कार कर मैं अपने द्वारा किये अपमान रूप अपराधकी बड़े विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा मांगूँ—इस प्रकार ज्योही उसने विचार किया—कि उसी समय वह उठा और स्नान किया—बाद में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहाँ प्रमदवन था—उसमें जहाँ तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहाँ पहुँचा—वहाँ पहुँच कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की बड़े विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ कर उनकी सेवा सुश्रूषा की (तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ-वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एमयट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवामइ)

तेतलिपुत्र अभात्यने भे' पोतानी दुण्ट चित्ताने विषयभूत (लक्ष्य) अनाव्ये छे तेथी न ते मुंडित धर्मे दीक्षित धर्म गये छे. ओटला भाटे हुवे हुं तेनी पासे जउं अने तेतलिपुत्र अनगारने वंदन कइं नमस्कार कइं वंदना अने नमस्कार करीने हुं' मारा वडे धर्म गयेला अपमान रूप अपराध भइल जहुं न नअपळे तेमनी पामेथी क्षमा याचना कइं. आ रीते विचार थतांनी साथे तसत न ते जित्ते थये अने स्नान धर्यु' तयार पछी पोतानी चतुरंगिणी सेनाने साथे जयां प्रमदवन छतुं अने तेमां पळु जयां तेतलिपुत्र अनगार विराजमान छता त्यां पडे जये. त्यां पडोथीने तेले तेतलिपुत्र अनगारने वंदना करी अने नमस्कार कर्या. वंदना अने नमस्कार करीने तेले तेना वडे धर्म गयेला अपमान रूप अपराधनी जहुं न नअपळे क्षमा मागी अने तयार पछी तेले उचित स्थान उपर भसीने तेमनी सेवा तेमन सुश्रूषा करी.

(तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स एणो तीसे य मदइ महाल-याए० धम्मं परिकहेइ)

अनगारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० अ० १४ तेतलिपुत्रप्रधानचरितवर्णनम्

९३

‘महद्महालयाण०’ महातिमदृश्यां परिपदि धर्मं ‘परिकहेइ’ परिकथयति= उपदिशति । ततः खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रस्य केवलिनोऽन्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय्य पञ्चाणुव्रतिकं समशिक्षाव्रतिकं इत्येवं द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते प्रतिपद्य श्रमणोपासको जातः । कीदृशः ?—अभिगत जीवा-जीवः=परिज्ञात-यस्स रण्णो तीसे य महद्महालयाण० धम्मं परिकहेइ) इसके बाद उन तेतलिपुत्र अनगार केवली ने कनकध्वजराजा को उपस्थित परिषद् को विशाल धर्म का उपदेश दिया—(तएणं से कणज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खाव्वइयं सावगधम्मं पडिविज्जइ पडिविज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइं केवलिरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोदसमस्स णायज्झयणरस्स अयमद्वे पणत्ते त्तिबेमि) उपदेश सुनने के बाद कनकध्वज राजाने तेतलिपुत्र केवलि के समीपश्रुतचारित्ररूप धर्म के प्रभाव से प्रेरित होकर और उस श्रुत धर्म का अच्छी तरह हृदय से विचार कर पांच अणुव्रत एवं सात शिक्षा रूप श्रावक धर्म धारण कर लिया । धारण करके वे श्रमणोपासक बन गये—यावत् जीव और अजीव तत्त्व का क्या स्वरूप है इसके भी वे ज्ञाता हो गये । बाद में तेतलिपुत्र केवलीने अनेक वर्षों तक केवलि

त्यार पछी ते तेतलिपुत्र अनगार डेवणीये कनकध्वज राजाने तेमज् उपस्थित परिषदने सविस्तर धर्म विषे उपदेश आय्ये।

(तएणं से कणज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खाव्वइयं सावगधम्मं पडिविज्जइ पडिविज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइं केवलिरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोदसमस्स णायज्झयणरस्स अयमद्वे पणत्ते त्तिबेमि)

उपदेश सांख्यीने कनकध्वज राजाने तेतलिपुत्र केवलीना श्रुतचारित्ररूप धर्मना प्रभावथी प्रेराने ते श्रुतचारित्ररूप धर्म विषे मनमां सारी रीते विचार करीमे तेमनी पसेथी पांच अणुव्रत अने सात शिक्षारूप श्रावकधर्म धारण करी लीधा, धारण करीने तेओ श्रमणोपासक थई गया अने यावत् एव तेमज् अणुव्रततत्त्वतुं स्वइयं थुं छे ? तेनुं पण्ण तेओने ज्ञान थई गयुं । त्यार पछी तेतलिपुत्र डेवणीये धण्णं वर्षो सुथ्री डेवणी पर्यायनुं पालन इयुं अने आभ तेओने यावत् सिद्धपद

સકલજીવાજીવતત્ત્વશ્ચાઽપિ જાતઃ । તતઃ સ્વલુ તેતલિપુત્રઃ કેવલી વહુનિ વર્ષાણિ
કેવલિપર્યાયં પાલયિત્વા યાવત્ સિદ્ધઃ=મોક્ષં ગતઃ ।

સુધર્માસ્વામી પ્રાહ—એવં સ્વલુ હે જન્મૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ ચતુર્દશસ્ય
જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય ‘અયમદ્રે’ અયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રક્ષપ્તઃ=પ્રસ્ફુટિતઃ, ‘તિ વેમિ’ इति
ब्रवीमि=भगवत्समीपे यथा श्रुतं तथा त्वां प्रतिकथयामि । एतेन अध्ययनेन इद-
मायातं यत्-प्राणिनो यावद् दुःखं मानभ्रंशं च न प्राप्नुवन्ति तावद् बहुशः
प्रबोधिता अपि धर्मं न स्वीकुर्वन्ति, यथा तेतलिपुत्रः ॥ सू० १३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितकलितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-
प्रतिविरचितायां ‘ज्ञाताधर्मकथाज्ञ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव-
र्षिण्याख्यायां व्याख्यायां चतुर्दशमध्ययनं संपूर्णम् ॥ १४ ॥

પર્યાય કા પાલન કર યાવત્ સિદ્ધ પદ પ્રાપ્ત કર લિયા । સુધર્માસ્વામી
કહતે હૈં—હે જન્મૂ ! શ્રમણભગવાન મહાવીર ને હસ ચૌદહવે જ્ઞાતાધ્યયન
કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે ભાવ અર્થ પ્રસ્ફુટિત કિયા હૈ । સો જૈસા મૈને ઉન
ભગવાન કે સમીપ મૈં સુના હૈ યહ વૈસા હી તુમસે કહા હૈ । હમ અધ્ય-
યન સે હમૈં યહ જ્ઞાન હો જાતા હૈ કિ સંસાર મૈં તેતલિપુત્ર કી તરહ
ऐसे भी प्राणी हैं कि वे जब तक दुःख और अपमान को नहीं पालते
हैं तब तक अनेक बार प्रतिबोधित करने पर भी-धर्म को स्वीकार
नहीं करते हैं ॥ सू० १३ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“ જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા
ચૌદહવાં અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

મેળવી લીધું. સુધર્માસ્વામી કહે છે કે હે જન્મૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર
આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનો પૂર્વોક્ત રૂપથી ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. જેવો અર્થ
મેં તેઓશ્રી પાસેથી સંભળ્યો છે તેવોજ તમને કહ્યો છે. આ અધ્યયનથી
અમને આ બાબતું જ્ઞાન થાય છે કે સંસારમાં તેતલિપુત્રની જેમ એવાં પણ પ્રાણી-
ઓ છે કે તેઓ જ્યાં સુધી દુઃખી અને અપમાનિત થતા નથી ત્યાં સુધી ઘણા
વખત પ્રતિબોધિત કરવા છતાં ધર્મને સ્વીકારતા નથી ॥ સૂત્ર ‘ ૧૩ ’ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનું ચૌદમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

॥ अथ पञ्चदशमध्ययनं प्रारभ्यते ॥

गतं चतुर्दशमध्ययनं सम्पत्ति पञ्चदशमारभ्यते, पूर्वाध्ययनेऽपमानाद् विषय-
त्यागः प्रदर्शितः, अत्र तु स जिनोपदेशाद् भवतीति प्रतिपादयिष्यतेऽतस्तस्य
सद्भावेऽर्थप्राप्तिः, अमद्भावेऽनर्थप्राप्तिर्भवतीत्येवं पूर्वेषु सम्बन्धः तत्रोद्मा-
दिसूत्रम्—‘जइणं भंते’ इत्यादि ।

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
संपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पणत्ते पन्नरस-
मस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं
जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, पुन्नभदे चेइए जिय-
सत्तू राया । तत्थ णं चंपाए नयरीए धणणे णामं सत्थवाहे
होत्था अट्ठे जाव अपरिभूए । तीसे णं चंपाए नयरीए
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी होत्था,

—नन्दिफल नामका पन्द्रहवां अध्यायन प्रारं :-

चौदहवां अध्ययन समाप्त हो चुका—अब पन्द्रहवां अध्ययन प्रारंभ
होता है । पूर्व अध्ययन में तेतलि प्रधान के आख्यान द्वारा अपमान से
भी विषयों का त्याग कर दिया जाता है यह बात समझाई गई है ।
इस अध्ययन में यह विषय त्याग जिनके उपदेश से होता है यह कहा
जावेगा । इस लिये उसके सद्भाव में अर्थ प्राप्ति और असद्भाव में
अनर्थ प्राप्ति होती है इस तरह से पूर्व अध्ययन के साथ इसका संबन्ध
बन जाता है—जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि ॥

नन्दिष्ण नामे पंदरमुं अध्ययन प्रारंभ

चौदमुं अध्ययन पुर्ण थयुं छे, हवे पंदरमुं अध्ययन शउ थाय छे,
पडेक्षांना अध्ययनमां तेतलिप्रधानता अण्णान वडे ओ वात समजववाभां
आनी छे डे अपमानथी पयु विषयेना त्याग करवाभां आवे छे, आ अध्ययनमां
आ विषय त्याग जेमना उपदेशथी थाय छे ते निधे कडेवाभां आवशे, ओटला
माटे तेना सद्भावमां अर्थ प्राप्ति आने असद्भावमां अनर्थ प्राप्ति होय छे,
आ रीते पूर्व अध्ययननी साथे आना संबंध समल शक्य छे.

टीकाथ—‘जइणं भंते ! समणेणं’ इत्यादि ।

રિદ્ધતિમિયસમિદ્ધા વન્નઓ । તત્થ ણં અહિચ્છત્તાણ નય-
 રીણ કણગકેઊ નામં રાયા હોત્થા, મહયા વન્નઓ । તસ્સ
 ધણ્ણસ્સ સત્થવાહસ્સ અન્નયા કયાઈં પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસ-
 મયંસિ ઇમેયારૂવે અજ્ઞાતિણ ચિંતિણ પતિણ કપ્પિણ મણો-
 ગણ સંકપ્પે સમુપ્પજ્જિત્થાસેયં યલ્લ મમ વિપુલં પણિયમંડ-
 માયાણ અહિચ્છત્તં નગરિં વાણિજાણ ગમિત્તણ, એવં સંપેહેહ
 સંપેહિત્તા ગણિમંચઃ ચઠઠિવિહં મંડં ગેણહહ, સગડીસાગડં
 સઙ્ગેહ સજ્જિત્તા સગડીસાગડં ભરેતિર કોહુંવિયપુરિસે
 સદ્ધાવેહ સદ્ધાવિત્તા એવં વયાસી-ગચ્છહ ણં તુઠ્ઠમે દેવાણુ-
 પ્પિયા ! ચંપાણ નગરીણ સિંઘાડગ જાવ પહેસુ ઘોસણં
 ઘોસેહ ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ—યદિ યલ્લ મદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહા-
 વીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિમાનથેયં સ્થાનં સમ્પાપ્તેન ચતુર્દશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અય-
 મર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ તર્હિ પશ્ચદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહા-

ટીકાર્થ—જમ્બૂસ્વામી પૂછતે હૈં કિ (જહ્ણં મંતે ! સમણેણં ભગવયા મહા-
 વીરેણં જાવ સંપત્તે ણં ચોદસમસ્સ નાયઙ્ગયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે પન્નર-
 સમસ્સ ણં મંતે નાયઙ્ગયણસ્સ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તે
 ણં કે અટ્ટે પણ્ણત્તે) મદંત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો
 મોક્ષપ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં ચોદહર્વે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ
 પ્રતિપાદિત કિયા હૈ—તો હે મદંત ! મુક્તિ પ્રાપ્ત હુણે ઝન્હીં શ્રમણ ભગવાન

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે—

(જહ્ણં મંતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં ચોદસમસ્સ નાય-
 ઙ્ગયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે પન્નરસમસ્સ ણં મંતે નાયઙ્ગયણસ્સ સમણેણં ભગવયા
 મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં કે અટ્ટે પણ્ણત્તે)

હે ભદ્રંત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી ચુક્યા
 છે—ચોદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે તેા હે
 ભદ્રંત ! મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પંદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો
 શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે.

श्रीनयारधर्मासृतवर्णिणी टीका अ० १५ नन्दिकलस्वरूपनिरूपणम्

१०१

कीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ! सुधर्मस्वामी कथयति—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगर्यासीत् । तत्र पूर्णभद्रं चैतयं जितशत्रु राजा चाभवत् । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां धन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स कीदृशः ? इत्याह—आदयो यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशालीत्यर्थः । तस्या खलु चम्पाया नगर्या उत्तरपौररत्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?—
 त्याह—‘रिद्धत्थिमियसमिद्धा’ ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पृशिवहु-
 मासादयुक्ता, स्तिमिता = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्ण,
 ‘वण्णओ’ वर्णकः=नगरी वर्णनपाठोऽत्रवाच्यः, स तु औपपातिकमूत्रादवसेयः ।
 तत्र खलु अहिच्छत्रार्या नगर्यां कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । ‘महया वण्णओ’
 महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है ।
 (एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानामं नयरी होत्था)
 इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी
 उन से कहते हैं कि जंबू ! सुनो—तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—
 उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी (पुनर्भदे चेहए
 जियसत्तू राया, तत्थ णं चंपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था
 अड्डे जाव अपरिभूए) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था । जितशत्रु
 नामका राजा उसमें रहता था । उसी चंपा नगरी में धन्य नामका सार्थ-
 वाह भी रहता था । यह जन धन धान्यादि संपन्न था । एवं लोकमान्य
 भी था । (तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता
 नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वण्णओ—तत्थणं अहिच्छत्ताए

(एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था)

आ रीते जम्बू स्वामीना प्रश्नना समाधान भाटे श्री सुधर्मा स्वामी
 तेभने डडे छे डे छे जम्बू ! सांलणो, तमारा प्रश्नने जवाब आ प्रमाण
 छे डे ते काले अने ते समये चंपा नामे नगरी હતી.

(पुनर्भदे चेहए जियसत्तू राया, तत्थ णं चंपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे
 होत्था अड्डे जाव अपरिभूए)

तेमां पूर्ण भद्र नामे उद्यान હતું. તેમાં જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો
 હતો. ધન્ય નામે એક સાર્થવાહ પણ તે ચંપા નગરીમાં જ રહેતો હતો. તે જન,
 ધન, ધાન્ય, વગેરેથી સંપન્ન હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો.

(तीसेणं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी
 होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वण्णओ—तत्थणं अहिच्छत्ताए नयरीए कण्णओ
 नामं राया होत्था महया वण्णओ)

महावर्णक = स च 'महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' महाहिमवन्महाम-
लयमन्दरमहेन्द्रसारः, इत्यादिरूपोऽत्र विज्ञेयः। तस्य धन्यस्य सार्थवाहस्य अन्यदा
कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रे पश्चिमे प्रदरे अयमेतद्रूप आध्यात्मिक-
श्रितितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः=विचारः समुदपद्यत-श्रेयः=उचितं
खलु मम विपुलं=प्रचुरं 'पणियमंडं' प्रणितभाण्डं=गणिमादिक्रय विक्रयवस्तुभाण्डम्
'आयाए' आदाय=गृहीत्वा अहिच्छत्रां नगरीं वाणिज्याय गन्तुम्, गणिमादि-
पण्यवस्तुजातं गृहीत्वा व्यापारायाहिच्छत्रां नगरीं मया गन्तव्यमिति भावः। एवं
'संपेहेइ' संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य गणिमं ४-गणिमं धमिं मेयं परिच्छेद्यं
चेत्येवंरूपं चतुर्विधं भाण्डं=पण्यवस्तुजातं गृह्णाति, गृहीत्वा 'सगडीसागडं' शकटी-
नगरीं कणगकेऊ नामं राया होत्था, महया वन्नओ) उस चंपा नगरी
के ईशान कोण में अहिच्छत्रा नामकी नगरी थी। यह नभस्तलस्पर्शी
प्रासादों से युक्त स्वचक्र और परचक्र के भयसे रहित तथा धन धान्य
आदि विभव से विशेष समृद्ध थी। नगरी के वर्णन का पाठ औपपा-
तिक सूत्र में जैसा नगरी का वर्णन किया गया है वैसा ही यहां जनना
चाहिये। उस अहिच्छत्रा नगरी में कनककेतु नामका राजा रहता था।
इस राजा के वर्णन में "महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे"
इत्यादिरूप पाठ यहां लगा लेना चाहिये। (तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स
अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए
पत्थिए, कप्पिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-सेयं खलु मम विउलं
पणियमंडमायाए अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एवं संपेहेइ,
संपेहिस्सा गणिमं च ४ चउव्विहं मंडे गेण्हइ, सगडीसागडं सज्जेइ. स-

ते चंपा नगरीना ईशान कोणुमा अहिच्छत्रा नामे नगरी હતી. આકાશને
સ્પર્શતા એવા ઊંચા પ્રાસાદોથી આ નગરી યુક્ત હતી તેમજ સ્વચક્ર અને પરચક્ર
ના લયથી રહિત તથા ધન ધાન્ય વગેરે વૈભવથી આ નગરી સવિશેષ સમૃદ્ધ
હતી. ઔપપાતિક સૂત્રમાં નગરીના વિષે જેવું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેવું
જ અહીં પણ બાણી લેવું જોઈએ તે અહિચ્છત્રા નગરીમાં કનકકેતુ નામે રાજા
રહેતો હતો, આ રાજાના વર્ણન માટે (મહયા હિમવંત-મહંત-મલય મંદર-
મહિંદસારે) વગેરે પાઠ અહીં સમજવો જોઈએ.

(તસ્સ ધન્નસ્સ સત્થવાહસ્સ અન્નયા કયાઈં, પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસમયંસિ ઇમેયારૂવે
અજ્જત્થિયે વિત્તિયે, પત્થિયે, કપ્પિયે, મણોગયે સંકપ્પે સમુપ્પજ્જિત્થા-સેયં સ્વલુ
મમ વિઉલં પણિયમંડમાયાયે અહિચ્છત્તં નયરિં વાણિજ્જાયે ગમિત્તયે, એવં સંપેહેइ,
સંપેહિસ્સા ગણિમં ચ ૪ ચઉવ્વિહં મંડે ગેણ્હइ, સગડીસાગડં સજ્જેइ, સજ્જિત્તા

શાકટં=લઘુમહચ્છકટમમૂહં સજ્જયતિ,=પગુણી કરોતિ સજ્જયિત્વા શકટોશાકટં
ભરંતિ, મૃત્વા કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ=આહ્વયતિ, આહ્વ્ય એવમવાદીત-ગચ્છત
સ્વલ્લ યૂયં હે દેવાનુપ્રિયા! ચંપાયા નગર્યાઃ 'સિંઘાડગજાવપદેસુ' શૃંગાટક-
ત્રિકચતુષ્ક ચત્વરમદ્દાપથપથેષુ ઘોષણામ્=ઘોષયત ॥ સૂ૦ ૧ ॥

જિજ્ઞાસાગડીસાગડં ભરેહ ભરિત્તા કોટુંબિયપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા
એવં વયાસી-ગચ્છહ્ણં તુભે દેવાનુપ્રિયા! ચંપા નયરીએ સિંઘાડગ
જાવ પદેસુ ઘોસણં ઘોસેહ) એક દિન કી થાન હૈ કિ ઉસ ધન્યસાર્થવાહ
કો રાત્રિ કે પશ્ચિમ પ્રહર મેં યહ્ ઇસ પ્રકાર કા આધ્યાત્મિક ચિન્તિત,
પ્રાર્થિત કલ્પિત મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ કિ મૈં ગણિમાદિ રૂા વિપુલ
પણ્ય વસ્તુ કો લેકર વ્યાપાર કે લિયે જો અહિચ્છન્ના નગરી મેં જાઉં
તો ઘટત અચ્છી થાન હૈ। ઇસ પ્રકાર ઉસને વિચાર કિયા-એવા વિચાર
કાકે ઉસને ગણિમ, ધારિમ, મેય ઓર પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકાર કા
ખાળડ લિયા। ખાળડ લેકર ફિર ઉસને ગાડી ઓર ગાડીં કો તૈયાર
કરવાયા-જબ વે ગાડી ગોડે તૈયાર હો ચુકે તબ ઉસને ઉમ પણ્ય (વિક્રેય
વસ્તુ) કો ઉનમેં ભરા-ભર કર ફિર ઉસને અપને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો
બુલાયા બુલાકર ઉસને એમા કહા-હે દેવાનુપ્રિયોં! તુમ લોગ જાઓ-
ઓર ચંપા નગરી કે શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મદ્દાપથ ઇન
સબ માર્ગોં મેં ઘોષણા કરો। કયા ઘોષણા કરના-યહ્ થાન નીચે કે
સૂત્ર સે સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈં ॥ સૂ૦ ૧ ॥

સગડીસાગડં ભરેહ, ભરિત્તા કોટુંબિયપુરિસે સદાવેહ સદાવિત્તા એવં વયાસી
ગચ્છહ્ણં તુભે દેવાનુપ્રિયા। ચંપા નયરીએ સિંઘાડગ જાવ પદેસુ ઘોસણં ઘોસેહ)

એક દિવસે તે ધન્ય સાર્થવાહને રાત્રિના છેલ્લા પહોરમાં આ બતને
આધ્યાત્મિક, ચિત્ત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે પુષ્કળ
પ્રમાણમાં ગણિમ વગેરે વેચાણની વસ્તુઓ લઈને વેપાર એકના માટે જો હું
અહિચ્છન્ના નગરીમાં જાઉં તો બહુ સારું થાય. આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો.
આવો વિચાર કરીને તેણે ગણિમ, ધારિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારની
વસ્તુઓ વાસણોમાં ભરી. ચારે બતની વસ્તુઓ વાસણોમાં ભરીને તેણે ગાડી
તેમજ ગાડીઓને તૈયાર કરાવ્યા. બપોરે ગાડી અને ગાડીઓ તૈયાર થઈ ચુક્યાં
ત્યારે તેણે તે વેચાણની વસ્તુઓને ગાડી અને ગાડીઓમાં ખૂંટી ત્યાર પછી
તેણે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયા! તમે જાઓ, અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક, ત્રિક,
ચતુષ્ક, ચત્વર, મદ્દાપથ આ બધા માર્ગોમાં ઘોષણા કરો. ઘોષણા કરતાં શું
કહેવું તે નીચેના સૂત્ર વડે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે. ॥ સૂત્ર “ ૧ ” ॥

घोषणास्वरूमाह—‘ एवं खलु ’ इत्यादि ।

मूलम्—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणणे सत्थवाहे विउलं पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोठवइए वा गिहिधम्म-
चित्तए वा अविरुद्ध विरुद्धबुद्धमावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपा-
संडत्थे वा गिहत्थे वा धणणेणं सत्थवाहेणं सुद्धिं अहिच्छत्तं
नगरिं गच्छइ तस्स णं धणणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तं
दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुंडियस्स कुंडियं
दलयइ अपत्थणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं
दलयइ अंतराऽविय से णडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं
दलयइ सुहंसुहेण य णं अहिगच्छत्तं संपावेइ तिकट्टु दोच्चंपि
तच्चंपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह,
तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव एवं वयासी-हंदिसुणंतु भवंतो
चंपानगरीवत्थव्वा वहवे चरगा य जाव पच्चपिणांति ॥सू०२॥

टीका—एवं खलु हे देवाणुप्पिया ! धन्यः सार्थवाहः विपुलान् पणितभाण्डान्
‘आयाए’ आदाय इच्छति अहिच्छत्तां नगरीं ‘वाणिज्जाए’ वाणिज्याय=

‘ एवं खलु देवाणुप्पिया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणणे सत्थवाहे विउलं पणियं
मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्पियो !

एवं खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणणे सत्थवाहे विउलं पणियं मायाए इच्छइ
अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

हे देवाणुप्पियो ! तमे दोडे श्रृंगोटक वगेरे भार्गोमां आ आतनी घोषणा

अन्नक्षरधर्मास्तुतवर्षिणो टोका अ० १५ नंदीकलस्वरूपनिरूपणम्

१०५

व्यापाराय गन्तुं तत्=तस्मात् यः खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं 'गच्छतो' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छे-
दित्याह- 'चरण' इत्यादिना 'चरण वा' चरकः=गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्योदनादे योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्थाप्यते तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहकः, 'चीरिण वा' चीरिकमार्गपतितशटितचीरररिधारकः, 'चम्मखंडिण वा' चर्मखण्डिकः=चर्म-
धारकः, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्डः=अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पंडुरंगे वा' पाण्डु-
रङ्गः=भस्मस्निग्धशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही,
'गोव्वइण वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रियां करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भावः, 'गिहिधम्मचित्ण वा' गृहिधर्म-
चिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्तं चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएक्-
श्रेयान नान्यः' उक्तञ्च—

तुम लोग श्रृंगटक आदि मार्गों में खड़े होकर इस प्रकार की घोषणा करना—कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा में पणित (विक्रय वस्तु) को लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरण वा चीरिण वा चम्मखंडिण वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइण वा गिहिधम्मचित्ण वा अविरुद्धविरुद्ध बुद्ध सावगरत्तपडनिग्गंथप्पमिइपासंडत्थे वा गिहत्ये वा धण्णेणं सत्थवा-
हेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नगरिं गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्त-
गस्स छत्तगं दलाइ) इसलिये हे देवाणुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थ-
वाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो—चाहे वह चरक हो, चीरिक हो, चर्मखंडधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो, गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

इति हे धन्य सार्थवाह पुष्कर प्रमाण्यमां पणित (देवाणुनी वस्तुया) लधने अहिच्छत्रा नामे नगरीमां वेपार जेटवा भाटे जवा धुंछे छे.

(तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरण वा चीरिण वा चम्मखंडिण वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोव्वइण वा गिहिधम्मचित्ण वा अविरुद्धविरुद्धबुद्धसावगरत्तपडनिग्गंथ-
प्पमिइ पासंडत्थे वा गिहत्ये वा धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नगरिं गच्छइ-
तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ)

अटवा भाटे छे देवातुप्रियो ! धन्य सार्थवाहनी साथे जे कोर्ध जवा धुंछतो डोय—सवे ते चरक डोय, चीरिक डोय, चर्म अंड धारी डोय, भिक्षोंड डोय, पांडुरंग डोय, गौतम डोय, गोव्रतिक डोय, गृहस्थ धर्म चितक डोय,

“ગૃહાશ્રમસમો ધર્મો,—ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ ।

પાલયન્તિ નરાઃ શૂરાઃ ક્લીવા પાષ્ઠમાશ્રિતાઃ ॥ ૧ ॥ ”

इत्यभिसन्धाय तथा चिन्तनशीलः, ‘अविरुद्धविरुद्धवृद्धमावगर्तपडनिर्गन्ध-
प्यभिःपांसडत्थे वा’ अविरुद्धविरुद्धवृद्धश्रावकस्तपटनिर्ग्रन्थप्रभृतिपाषण्डस्थः तत्र—
‘अविरुद्ध’ अविरुद्धः विरुद्धः कस्मादपीत्यविरुद्धः=विनयवादी क्रीयावादीत्यर्थः,
परलोकाभ्युपगमात्, ‘विरुद्ध’ विरुद्धः विरुद्धः = विरुद्धवादीऽस्यास्तीति—अर्थ
आदिन्वादच्, विरुद्धवादी आक्रियावादीत्यर्थः परलोकानभ्युपगमात्, ‘वृद्धमावग’
वृद्धश्रावकः=ब्राह्मणः, वृद्धः=वृद्धकालिको यः श्रावकः सः, भरतादिकाले पूर्वं
श्रावकसत्त्वेन पश्चाद् ब्राह्मणत्वभावात्, ‘रक्तपट’ रक्तपट=गैरिकवस्त्रधारीपरि-
व्राजकः, ‘निर्ग्रन्थप्यभिः’ निर्ग्रन्थप्रभृतिः = माधुप्रभृतिरन्यः कोऽपि कपिलादिः
पाषण्डस्थो वा गृहस्थो वा, इति यदि एषु यः कोऽपि गच्छेत् तस्मै खलु धन्यः
सार्थवाहः अच्छत्रकाय=छत्रगहिताय छत्रकं ददाति=दास्यतीति भावः, एवं सर्वत्र
विज्ञेयम् ‘अणुवाहणस्स’ अनुवाहनहे=पादत्राणरहिताय ‘उवाहणाओ’ उपानहौ
ददाति, अकुण्डिकाय=जलपात्रगहिताय कुण्डिकां=जलपात्रं ददाति । ‘अपत्थय-
णस्स’ अपत्थयदनाय शम्बलरहिताय ‘पत्थयणं’ पत्थयणं = शम्बलं ददाति ।
‘अपक्खेवगस्स’ अपक्षेपकाय, प्रक्षेपकः = पूर्तिद्रव्यं, तद्रहिताय मध्यमार्गे न्यून
शम्बलाय प्रक्षेपकं=शम्बलद्रव्यं ददाति । ‘अंतराविय’ अन्तराऽपि च=
मार्गान्तरालेऽपि च ‘से’ तस्मै पत्तिनाय = वाहनाद् पादादिस्वल्पेन वा, वा=

શ્રાવક હો, ગૈરિકવસ્ત્રધારી પરિવ્રાજક હો, નિર્ગ્રન્થ હો, પાશ્વંડી હો,
ચાહે ગૃહસ્થ હો કોઈ બી કયો ન હો, ઉસકે લિયે ધન્ય સાર્થવાહ યદિ
વહ છત્રરહિત હૈ તો છત્ર દેગા (અણુવાહણસ્સ ઉવાહણાઓ દલયહ અ-
કુંડિયસ્સ કુંડિયં દલયહ અપત્થયણસ્સ પત્થયણં દલયહ અપક્કેવગસ્સ
પક્કેવં દલયહ અંતરાઽવિય સે પહિયસ્સ વા ભગલુગસ્સ સાહેજ્જં દલયહ,

અવિરુદ્ધ હોય, વિરુદ્ધ હોય, વૃદ્ધ શ્રાવક હોય, ગૈરિક વસ્ત્ર ધારી પરિવ્રાજક હોય,
નિર્ગ્રન્થ હોય, પાશ્વંડી હોય અને ગૃહસ્થ હોય કોઈ પણ કેમ ન હોય તેના
માટે જો તે છત્ર વગરનો હોય તેવાને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર આપશે.

(અણુવાહણસ્સ ઉવાહણાઓ દલયહ, અકુંડિયસ્સ કુંડિયં દલયહ અપત્થયણસ્સ
પત્થયણં દલયહ અપક્કેવગસ્સ પક્કેવં દલયહ અંતરાઽવિય સે પહિયસ્સ વા

अथवा ' भगवत्संस्कारमृतवर्षिणी टीका अ० १५ नंदिकलस्वरूपनिरूपणम् '
 रुग्णाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा ' साहेज्जं ' साहाय्यम् = औषधो-
 पचारादि करणरूपं ददाति, तथा - सुखं -- सुखेन = सुखपूर्वकं च तम्
 अहिच्छत्रां नगरीं ' संपावेइ ' संप्रापयति = संप्रापयिष्यतीत्यर्थः । ' तिकट्टु ' इति
 कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि चारं घोषयत, घोषयित्वा मम ' एय-
 माणत्तियं ' एतामाज्ञप्तिराम् = एतदूपां ममाज्ञां ' पचवप्पिणह ' मत्पर्ययत = मद्भुक्तां
 घोषणां कृत्वा पुनर्महं निवेदयतेत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः ' तथाऽस्तु-
 सुहंसुहेणं अहिच्छत्तं संपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह) पद-
 त्राण (जूना) रहित है तो जूना (पदत्राण) देगा जलपात्ररहित होगा उसे
 जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्भ
 लपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्भल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य
 देगा, अर्थात् चलते-चलते मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो
 जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलते-चलते यदि
 वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलते-चलते यदि वह पैर फिसल
 कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये
 होंगे तो उसकी सार संभाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े
 आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा । इस प्रकार की
 इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना । और (घोसित्ता मम
 एयमाणत्तियं पचवप्पिणह) करके फिर हमें पीछे इसकी खबर देना
 (तएणं ते कौटुम्बियपुरिसा जाव एवं वयासी हंदि सुणंतु भवंतो चंपा
 भगवत्संस्कारमृतवर्षिणी दलयइ, सुहं सुहेणं अहिच्छत्तं संपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चंपि
 तच्चंपि घोसेह)

जेडा वगरनेा डशे तेने जेडा आपशे, जभवानी सगवड डशे नडि नेने
 जभवानी सगवड करी आपशे. श'णव-पाथेय-पूरक द्रव्य वगरनेा डशे तेने
 श'णव-पाथेय-पूरक द्रव्य आपशे. जेटले ई मार्गमां अधवच्ये लातुं जडास
 थई गयुं डशे तेने थोग्य धन आपशे. मार्गमां अधवच्ये खालतां खालतां
 जे ते घोडा उपस्थी पडी जशे अथवा पगे खालतां खालतां जे ते पग लपसवाथी
 पडी जशे अने तेधी तेना डुथ पग वगेरे. लांगी गया डशे तो तेनी ते
 सुश्रूषा करशे-रोगनी दवा करशे अने सुणेयी तेने अडिच्छत्रा नगरीमां पडेया-
 डशे. आ रीते तमे जे त्रय वपत घोषणा करे अने (घोसित्ता मम एयमाण
 त्तियं पचवप्पिणह) घोषणा करीने अभने जमरे आयो.

(तएणं ते कौटुम्बियपुरिसा जाव एवं वयासी हंदि सुणंतु भवंतो चंपानयरी-

ઈત્યુક્ત્વા ચમ્પાનગર્યાં શૃંગાટકાદિમહાપથપથેષુ સમાગત્ય-एवमवादिषु:-‘हंदि’
 इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः ! शृण्वन्तु-भवन्तः-यत् चम्पानगरी वास्तव्या बहवः
 ‘चरणाय जाव’ इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं
 गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गं च स्वलितेभ्यो
 रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां
 नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येवं घोषयित्वा धन्यसार्थवाढाय ‘पच्चप्पिणंति’
 मत्थर्पयंति-निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

નંગરીવત્થવા વહવે ચરગા ય જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ) इस प्रकार धन्यसा-
 र्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने “तथास्तु” कहकर स्वीकर
 लिया और चंपानगरी में शृंगोटक आदि महापथ पर्यन्तके समस्त मार्गों
 में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चंपा
 नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा
 नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि संब
 देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे
 उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह
 उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार
 की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास
 भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक स्वाद्य वस्तुओं का जो
 सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक् कर रख लिया जाता है, उस
 वत्थव्वा बहवે ચરગા ય જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી
 લીધી અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક વગેરે મહાપથોમાં જઈને આ રીતે તેઓએ
 ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સાંભળો, ચંપા નગરીમાં રહેનાર ચરક વગેરે ગમે
 તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમાં જ તેને ધન્ય
 સાર્થવાહ છત્ર વગેરે ખુધુ આપશે, તેમજ માર્ગમાં કોઈ પડી જશે અથવા
 તો માંદો થઈ જશે તો ધન્ય સાથવાહની તેની બરોબર મદદગાર કરાવીને તેની
 સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચાડશે આ રીતે
 ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનું કામ પુરું થઈ જવાની
 ખબર આપી. ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે
 ભો પહેલાં દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામાં આવે છે તે ભાગને જે બીજા
 માંગીને લઈ લય છે તેને ચરિક કહે છે. માર્ગમાં પડેલાં ફાટેલાં વસ્તુ જે

હિસે કો જો ભિક્ષા વૃત્તિ સે લે જાતે હૈં ઉનકા નામ ચરિક હૈ । માર્ગ મેં ગિરે દુખ ફટેચિટે વસ્ત્ર કો લેકર જો પહિનતે હૈં ઉનકા નામ ચીરિક હૈ । ચમડે કો જો અપને પહિરને કે ઉપયોગ મેં લાતે હૈં વે ચર્મ સ્કંદિક હૈ । દુસરે કે દ્વારા લાધી ગઈ ભિક્ષા સે જો અપના નિર્વોહ કરતે હૈં વે ભિક્ષોળ હૈં । અપને શરીર પર જો ભસ્મ લપેટે રહતે હૈં વે પાંદુરંગ હૈં । ચેલ કો લેકર જો દુસરોં કે ઘરોં સે અનાજ માંગતે હૈં વે ગૌતમ હૈ । દિલીપ રાજા કી તરહ જો ગાયકી સેવા કરને મેં લગે રહતે હૈં—જય વહ બેઠતી હૈ તય વે બેઠતે હૈં—વહ સ્વહી હોતી હૈ તો વે ભી સ્વહી જો જાતે હૈં કૃત્યાદિ રૂપ સે ગોચર્યાનુકારી જો જન હોતે હૈં વે ગોવ્રતિક હૈં । ગૃહસ્થ ધર્મ હી શ્રેષ્ઠ હૈ, હસ પ્રકાર માન કર જો હસમેં રહ રહતે હૈં વે ગૃહધર્મ ચિન્તક હૈ । જૈસે—ગૃહસ્થાશ્રમ કે સમાન ધર્મ ન હુઆ હૈ ઓર ન આગે હોગા હી । જો શૂરવીર મનુષ્ય હોતે હૈં વે હી હસે પાલતે હૈં । પાષંડ ધર્મ કો પાલને વાલે મનુષ્ય શૂરવીર નહીં હૈં કિન્તુ વે તો કલીબ-નપુંસક હૈં । એસી હનકી માન્યતા હોતી હૈ । અવિરુદ્ધ શબ્દ કા અર્થ વિરુદ્ધ નહીં રહતે હૈં સવકા સમાનરૂપ સે વિનય કરતે હૈં । વિરુદ્ધ શબ્દ કા અર્થ અક્રિયાવાદી હૈ । યે અક્રિયા વાદી પર-

પહેરે છે તેનું નામ ચીરિક છે. ચામડાને જે વસ્ત્ર તરીકે પહેરવામાં કામમાં લે છે તે ચર્મ ખંડિત છે. બીજાઓ વડે લાવવામાં આવેલી ભિક્ષાથી જે પોતાનું ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોળ છે. પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે છે તે પાંદુરંગ છે. બળદને સાથે લઈને જેઓ બીજાઓના ઘરેથી અનાજ માંગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે. રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા કરવામાં વ્યસ્ત રહે છે—જ્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, જ્યારે ગાય ઊભી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ ઊભા થઈ બેસે છે વગેરે રૂપમાં જેઓ ગોચર્યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોવ્રતિક કહેવાય છે. ગૃહસ્થ ધર્મ જ અરેખ્ય ઉત્તમ ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણે માનીને તેમાં દત્ત ચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહધર્મ-ચિન્તક છે. જેમકે:—ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ થયો નથી અને આગળ લવિષ્યમાં થવાની સંભાવના પણ નથી. જેઓ શૂરવીર માણસો હોય છે તેઓ જ આ ધર્મનું પાલન કરે છે. પાષંડ ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી પણ તેઓ તો નપુંસક છે. ગૃહસ્થીઓની આ જાતની માન્યતા હોય છે. અવિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે. કેમ કે જેઓ કોઈ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ કરતા નથી તેઓ બધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે. વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે. અક્રિયાવાદી લોકો પરલોક જેવી વસ્તુમાં

मूल-तएणं तेसिं कोडुंवि य पुरिसाणं अंति ए एयमट्ठं
 सोच्चा णिसम्म चंपानयरी वत्थवा बहवे चरगा य जाव गिहत्था
 य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति तएणं से धण्णे
 सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स
 छत्तं दलयइ जाव पत्थय णं दलाइ दलइत्ता एवं वयासी-
 गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए वहिया अग्गु-
 ज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठह, तएणं ते चरगा य जाव
 गिहत्था य धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति,
 तएणं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विउलं
 असणं ४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० आमंतेइ
 आमंतित्ता भोयणं भोयावेइ भोयावित्ता आपुच्छइ आपुच्छित्ता
 सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ
 निग्गच्छित्ता चरगा य जाव गिहत्था य सद्धिं घेत्तूण णाइवि-
 प्पइट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणेऽ सुहेहिं वसहिं पायरासेहिं अंगं

लोक नहीं मानते हैं । वृद्धश्रावक-ब्राह्मण-अर्थ का वाचक है । क्यों कि
 ये पहिले भरत चक्रवर्ती के समय में श्रावक थे-पश्चात् ब्राह्मण बन
 गये इसलिये “ वृद्धकालिको यः श्रावकः ” इस व्युत्पत्ति के अनुसार
 वृद्धश्रावक शब्द ब्राह्मण अर्थ का वाची बन जाता है । बाकी अवशिष्ट
 शब्दों का अर्थ स्पष्ट है ॥ सू० २ ॥

विश्वास करता न थी वृद्ध श्रावक-ब्राह्मण अर्थने स्पष्ट करे छे केम के ओओ
 पडेवां भरत चक्रवर्तीना वण्णते श्रावक हुता त्थार पछी ओओ ब्राह्मण थर्थ
 गया ओएला माटे ‘ वृद्ध कालिको यः श्रावकः सः वृद्ध श्रावकः ’ आ व्युत्पत्ति
 मुज्जम वृद्ध श्रावक शब्द ब्राह्मण अर्थना वाचक थर्थ जाय छे, बीज्ज शेष
 शब्दोना अर्थ तो स्पष्ट न छे ॥ सूत्र “ २ ” ॥

अनगारघर्मांमृतवर्णिणी टोका अ० १५ नंदिफलस्वरूपनिरूपणम्

१११

जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देसगं तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेइ
करित्ता कोडुंघियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं
देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया महया सदेणं उग्घोसेमाणा
२ एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगमियाए
छिन्नावायाए दीहमट्ठाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे
णंदिफला नामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया
फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसांभेमाणा
चिट्ठांति मणुण्णावत्तेणं४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए,
तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा कंद०
तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ
छायाए वा वीसमइ तस्सणं आवाए भइए भवइ तओ पच्छा
परिणममाणा२ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेति, तं माणं
देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए
वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरो—
विज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! अन्नेसि रुक्खाणं मूलाणि-
य जाव हरियाणि य आहारेह छायासु वीसमहत्ति घोसणं
घोसेह जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से धण्णे सत्थवाहे सगडी-
सागडं जोएइ२ जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसं करेइ
करित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंघियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता

एतं वयासी-तुम्हेणं देवाणुप्पिया ! मम सत्थानिवसंति महयाः
महया सदेणं उग्घोसेमाणाः२ एवं वयह-एएणं देवाणुप्पिया !
ते णंदिफला रुक्खा किण्हा जाव मणुन्ना छायाए तं जो णं
देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद०
पुष्प० तय० पत्त० फल० जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
वेहं तं माणं तुम्हे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा-
णं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं
मूलाणि य जाव वीसमहत्तिकहु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति, तत्थ
णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सदहंति
पत्तियंति रोयंति एयमट्ठं सदहमाणाः३ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं
दूरेण परिहरमाणाः२ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति-
तेसिं णं आवाए नो भइए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणाः२
सुद्धरूवत्ताए भुज्जोः२ परिणमंति, एवामेव समणाउसो ! जो
अम्हं निगंथो निगंथी वा जाव पंचसु कामगुणेसु नो सजेइ नो-
रजेइ से णं इह भवे चेव वट्ठणं समणाणं अच्चणिज्जे५ परलोए-
नो आगच्छइ जाव वीइवइस्सइ, जहा य ते पुरिसा तत्थ णं
अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं नो सदहंति३
धण्णस्स एयमट्ठं असदहमाणाः३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव
उक्कामच्छंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव
वीसमंति तेसिं णं आवाए भइए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा-
जाव ववरोवेति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा

भनगारघमांमृतवर्षिणी टीका अ० १५ नन्दिफलस्वरूपनिरूपणम्

११३

निगंथी वा जाव पठवइए पंचसु कामगुणेषु सज्जेइ सज्जिता
जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएणं तेमिं’ इत्यादि । ततः खलु तेषां कौटुम्बिकपुरुषाणा-
मन्तिके एतमर्थः=पूर्वोक्तमद्विच्छन्नानगरीमनार्थघोषणारूपं भावं श्रुत्वा=कर्ण-
विषयीकृत्य, निश्चयः हृदयार्थं चम्पानगरी वास्तव्या अद्विच्छन्नानगरीमनुकामा
वहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्यः सार्थवाहः-स्ववैवोपागच्छन्ति । ततः
खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषां चरकाणां च यावद् गृहस्थाणां च मध्ये अच्छवकाय-
छत्रं ददाति यावत् पथ्यदत्तं=शुभ्यत्वं ददाति, एवमभादीत्=कथयति गच्छत खलु
युवं हे देवानुमियाः ! चम्पाया नगरी वदिः ‘अगुज्जाणंसि’ अग्रयोद्याने मां
‘पडिवालेमाणा’ प्रतिपालयन्तः=परीक्षमाणास्तिष्ठत । ततः खलु ते चरकाश्च=

—तएणं तेमिं इत्यादिः—

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (तेमिं कौटुम्बिकपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं
सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव
धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से
इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चंपा
नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य
सार्थवाहक था वहां आये (तएणं से धण्णे सत्थवाहे तेमिं चरगाण य
जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्तं दलइ जाव पत्थयणं दलाइ दलइत्ता
एवं वयासी-गच्छइ णं तुम्हे देवाणुप्पिया । चंपाए नगरीए बाहिया अ-
गुज्जाणंसि मम पडिवाले माणा चिट्ठेह) इसके बाद धन्य सार्थवाह

तएणं तेमिं ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएणं) त्थार पछी

(तेमिं कौटुम्बिक पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा
वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति)

ते कौटुम्बिक पुरुषोन्ना मुण्थी आ घोषणा ३५ अर्थने सांभलीने अने
तेने हृदयमां धारण करीने अंथा नगरीना धणा चरकथी भांटीने गृहस्थ सुधीना
अथा भाणुसे ज्यां धन्य सार्थवाह होता त्यां आल्या.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे तेमिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स
छत्तं दलगइ, जाव पत्थयणं दलाइ, दलइत्ता एवं वयासी-गच्छइ णं तुम्हे देवाणु-
प्पिया ! चंपाए नगरीए बाहिया अगुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठेह)

छा १५

ચરકાદયો યાવદ્ ગૃહસ્થા ધન્યેન સાર્થવાહેન-પ્રવપુક્તાઃ સન્નઃ 'જાવ' યાવદ્-ધન્યં સાર્થવાહં પ્રતીક્ષમાણામ્તિષ્ઠન્તિ । તતઃ સ્વલુ ધન્યઃ સાર્થવાહઃ શોભને તિથિ-કારણનક્ષત્રો=શુભદિવસે ત્રિપુલમશનાદિકં ચતુર્વિધાહારમ્ ઉપસ્કારયતિ=નિષ્પાદયતિ ઉપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિસ્વજનસમ્બન્ધિપરિજનાન્ આમન્ત્રયતિ, ભોજનં ભોજયતિ=કાર-

ને ઉન ચરક આદિ સે લેકર ગૃહસ્થ પર્યન્ત કે મનુષ્યોં મેં જિસકે પાસ છત્તા આદિ નહીં થા ઉલે છત્તા દિયા યાવત્ જિસ કે પાસ કલેવા નહીં થા ઉસકો કલેવા-માર્ગ ભોજન-દિયા । બાદ મેં ઉસને ઉન સવસે કહા હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમ યહાં સે ચલો ઓર મુખ્ય ઉદ્યાન મેં મેરી પ્રતીક્ષા કરતે હુઅ ઠહરે રહો-(તણં તે ચરગાય જાવ ગિહ્થા ય ધણેણં સત્થ વાહેણં એવં વુત્તા સમાણા જાવ ચિદ્ધંતિ, તણં ધણે સત્થવાહે સોહણંસિ ત્તિહિકારણનક્ષત્તંસિ વિઉલં અસણં ૪ ઉવક્કલ્હાવેહ, ઉવક્કલ્હાવિત્તા મિત્તનાહં આમંતેહ, આમંતિત્તા ભોયણં ભોયાવેહ, ભોયાવિત્તા આપુ-ચ્છહ, આપુચ્છિત્તા સગડીસાગડં જોયાવેહ, જોયવિત્તા ચંપાનગરીઓ નિગ્ગચ્છહ) હસ પ્રકાર ધન્યસાર્થવાહ કે દ્વારા કહે ગયે વે ચરકાદિ ગૃહસ્થ પર્યન્ત સમસ્તજન વહાં સે ચલકર મુખ્ય ઉદ્યાન મેં ગયે-ઓર ધન્યસાર્થવાહ કી પ્રતીક્ષા કરતે હુઅ વહાં ઠહર ગયે । ધન્યસાર્થવાહ ને શુભ તિથિ, કરણ, એવં નક્ષત્ર મેં ત્રિપુલ માત્રા મેં અશન આદિ સ્વે ચારોં પ્રકાર કા આહાર નિષ્પન્ન કરવાયા । જય આહાર નિષ્પન્ન હો

ત્યાર પછી ધન્ય સાર્થવાહ ઉ તેઓ ચરક વગેરેથી માંડીને ગૃહસ્થ સુધીના બધા માણસોમાંથી જેની પાસે છત્રી વગેરે ન હતી તેને છત્રી વગેરે અને જેની પાસે માર્ગ માટેનું ભોજન ન હતું તેને ભોજન આપ્યું. ત્યાર બાદ તેણે બધા ને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અહીંથી મુખ્ય ઉદ્યાનમાં જાઓ અને ત્યાં મારી પ્રતીક્ષા કરો.

(તણં તે ચરગાય જાવ ગિહ્થાય ધણેણં સત્થવાહે ણં એવ વુત્તા સમાણા જાવ ચિદ્ધંતિ, તણં ધણે સત્થવાહે સોહણંસિ ત્તિહિકારણનક્ષત્તંસિ વિઉલં અસણં ૪ ઉવક્કલ્હાવેહ, ઉવક્કલ્હાવિત્તા મિત્તનાહં આમંતેહ, આમંતિત્તા ભોયણં ભોયાવેહ, ભોયાવિત્તા આપુચ્છહ, આપુચ્છિત્તા સગડીસગડં જોયાવેહ, જોયાવિત્તા ચંપાનગરીઓ નિગ્ગચ્છહ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે બધા માણસો ત્યાંથી મુખ્ય ઉદ્યાનમાં ગયા અને ધન્ય સાર્થવાહની રાહ જોતા. તેઓ ત્યાં જ રોકાયા. ધન્ય સાર્થવાહે શુભ તિથિ, કરણ, અને સારા નક્ષત્રમાં પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતના આહારો તૈયાર કરાવ્યા. ત્યારે

संस्कारधर्माभूतवर्षिणी टीका अ० १५ नन्दिफलस्वरूपनिरूपणम्

११५

प्रति, भोजयित्वा 'आपुच्छइ' आपुच्छति=विदेशगमनार्थमाज्ञां प्रार्थयति, आपु-
च्छय=आज्ञां प्राप्त्य शकटीशावटं योजयति, योजयित्वा चम्पा नगरीतो निर्ग-
च्छति=निस्सरति, निर्गत्य चरकान् यावत् गृहस्थांश्च सार्द्धं गृहीत्वा 'नाइविप्पगिह्हेहि'
नातिविष्कृष्टेषु=नातिदूरेषु पथोचितेषु 'अद्वाणेहि' अध्वसु=मार्गेषु 'वसमाणे २'
वसन्-वमन् स्थाने स्थाने निवासं कुर्वन् 'सुहेहि' शुभैः=प्रशस्तैः 'वसहिपायरा-
सेहि' वसतिप्रातराशैः=निवासस्थाने प्रातःकालीनलघुभोजनैः सह अङ्गजन-
पदस्य=अङ्गदेशस्य मध्य-मध्येन यत्रैव 'देसगं' देशाग्नं=अङ्गदेशसीमा वर्त्तते
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटीशावटं मोचयति, मोचयित्वा 'सत्थनिवेसं'
सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=ब्राह्मयति शब्दयित्वा=
आहूय एवमवादीत्—"हे देवानुपियाः ! यूयं खलु मम सार्थनिवेशे महता-महता
शब्देन=उच्चस्वरेण उद्घोषयन्तः=सन्तः एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदत=कथयत-

शुका-तव उसने अपने मित्र, ज्ञानि आदि परिजनोको आमंत्रित किया।
आमंत्रित करके फिर उन सबको उसने उस चतुर्विध आहारको भोजन
कराया भोजन कराके फिर उन सबसे परदेश गमन करने की उसने
आज्ञा मांगी। आज्ञाप्राप्त करके उसने गाड़ी और गाड़ों को जुतवाया
जुतवा कर फिर वह चंपा नगरी से बाहिर निकला। चरकादि गृहस्थ
पर्यन्त समस्त जन को अपने साथ में ले लिया—(निग्गच्छित्ता चरगाय
जाव गिहत्थाय सद्धिं घेतूण णाइविप्पगिह्हेहि अद्वाणेणि वसमाणे २
सुहेहि वसहिपायरासेहि अंगं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देसगं
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ मोयावित्ता
सत्थनिवेसं करेइ करित्ता कौटुम्बियपुरिसे सदावेइ सद्दवित्ता एवं
वयासी — तुम्हेणं देवानुपिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया २

आहारो तैयार थर्ग गया तयारे तेण्हे पोताना मित्र, ज्ञानि वगेरे परिजनोने
आमंत्रित कयो. आमंत्रित करीने तेण्हे गधाने तयारे जनना आहारो जभाउया.
तयार पछी तेण्हे सौनी पासेथी परदेश जवानी आज्ञा भागी आम तेण्हे
गधानी पासेथी आज्ञा मेणवीने गाडी तेमज गाडांओ जेताराओ अने तयार
पछी ते अपा नगरी थी गडार नीउण्यो. तेण्हे उवानमां राड जेनारा गधा
थरक गृहस्थ वगेरे भाणुसोने पञ्च साथे लर्ग वीधा हुता.

(निग्गच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्था य सद्धिं घेतूण णाइविप्पगिह्हेहि
अद्वाणेहि वसमाणे २ सुहेहि वसहिपायरासेहि अंगं जणवयं मज्झं मज्झेणं
जेणेव देसगं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ,
मोयावित्ता सत्थनिवेसं करेइ, करित्ता कौटुम्बियपुरिसे सदावेइ, सद्दवित्ता

एवं खलु हे देवानुप्रिया ! ' इमीसे ' अस्याः ' अगामियाए ' = ग्रामरहितायाः ' छिन्नावायाए ' छिन्नपातायाः छिन्नः आपातो = जनसञ्चारो यत्र सा, तस्याः जनसञ्चाररहितायाः ' दीहमद्वाए ' दीर्घाध्वायाः-दीर्घः=बहुकालगम्यः अध्वा=मार्गो यत्र सा, तस्याः-चिरकाललङ्घनीयायाः, एतादृश्या अटव्याः बहुमध्यदेश-भागे=अतिमध्यभागे, ' एत्थ णं ' अत्र खलु बहवो नन्दिफलानामट्टकाः मज्झाः=लोकैः कथिताः । कीदृशास्ते ? इत्याह- ' किण्हा ' इत्यादि=कृष्णाः=कृष्णवर्णाः, कृष्णावमासाः=अतिनीलत्वेन कृष्णच्छटासम्पन्नाः यावत्-नीलादिवर्णयुक्ताः,

સહેળં ડમ્મોસેમાણા ૨ एवं वयह-एवं खलु देवानुप्पिया ! इमीसे अगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्वाए अटवीए बहुमज्झदेशभाए बहवे णंदिफलानामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया, पुप्फिया, फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईवर उवसोभेमाणा चिट्ठंति) निकल कर नाति विप्र-कृष्ट-यथोचित-मार्गोंमें ठहरता २ और वहां २ प्रातः कालीन कलेवा करता हुआ वह जहां अंगदेश की सीमा थी वहां पर आया । वहां आकर के उसने अपने शकटी शकटों को ढील दिया और ढील करके फिर अपने सार्थ को ठहरा दिया । ठहरा देने के बाद फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-और उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग हमारे सार्थनिवेश में बड़े जोर २ से घोषणा करते हुए ऐसा कहो कि हे देवानुप्रियो ! सुनो जन संचार रहित दीर्घ मार्ग वाली इस आगे की अटवी के मध्यभाग में लोग कहते हैं कि अनेक नंदीफल नाम के

एवं वयासी — तुम्हेणं देवानुप्पिया ! मम सत्थ निवेशंसि महया २ सहेणं डमोसेमाणा २ एवं वयह-एवं खलु देवानुप्पिया ! इमीसे अगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्वाए, अटवीए बहुमज्झदेशभाए बहवे णंदिफलानामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया, पुप्फिया फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति)

ત્યાંથી રવાના થઇને તે માર્ગમાં યથાસ્થાને નજીક નજીકના સ્થળો ઉપર વિશ્રામ કરતો અને ત્યાં સવાર થતાં જલ્દિયાન (નાસ્તો) વગેરે કરતો તે અંગદેશની હદ ઉપર પહોંચ્યો. ત્યાં પહોંચીને તેણે ગાડી અને ગાડાંઓને ઊડી મૂક્યા અને ત્યાં પોતાના સાર્થને રોક્યો. રોક્યા પછી તેણે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા સાર્થ સંનિવેશમાં તમે લોકો મોટેથી આ પ્રમાણેની ઘોષણા કરતાં કહો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો ! હવે આગળ આવનાર ભાંખા માર્ગવાળા નિર્જન વનમાં લોકો એમ કહે છે કે તેમાં ઘણું નંદિફળ

બેનગારધર્મોમૃતવર્ષિણી ટીકા અ૦ ૧૫ નન્દિફલસ્વરૂપનિરૂપણમ્

૧૧૭

તથા-‘ પત્તિયા ’ પત્રિતાઃ=પત્રવહુલાઃ, ‘ પુષ્પિયા ’ પુષ્પિતાઃ=પુષ્પવહુલાઃ, ‘ ફલિયા ’ ફલિતાઃ=ફલવહુલાઃ ‘ હરિયગરેરિજ્ઞમાણા ’ હરિતકારાજ્યમાનાઃ=હરિતકેન=હરિતવર્ણેન મૃગં શોભમાનાઃ ‘ સિરીય ’ શ્રિયા=હરિતપ્લહવાદિશોભયા અતીવાતીવ્ર ઉવશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ=વર્તન્તે । પુનર્કાદશાસ્તે ! ઇત્યાહ-મનોજ્ઞાઃ=વર્ણેન, ‘ જાવ ’ યાવત્-ગન્ધેન, રસેન સ્પર્શેન, મનોજ્ઞાઃછાયાયા, રમ્યવર્ણાદિના રમ્ય છાયાયા ચ યુક્તા ઇત્યર્થઃ, ‘ તં ’ તત્=તસ્માત્ નન્દિદૃશ્યાણાં સૌન્દર્યાદિકારણ-વશાત્ ‘ જો ણં ’ યઃ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! તેષાં નન્દિફલાનાં=નન્દિફલાભિધાનાં દૃશ્યાણાં મૂલાનિ વા કન્દાનિ વા સ્વચો વા, પત્રાણિ વા, પુષ્પાણિ વા, ફલાનિ વા, બીજાનિ વા, હરિતાનિ વા ‘ આહારેઙ્ ’ આહારયતિ, તેષાં છાયાયા વા ‘ વીસ-મહ્ ’ વિશ્રામ્યતિ તસ્ય સ્વલુ આવાયે ’ આપાતે=પૂર્વ મક્ષણાદિ સમયે ‘ મહ્વ ’

વૃક્ષ હૈં । યે વૃક્ષ કૃષ્ણ વર્ણવાલે હૈં ઓર દેખને પર મી અનિ હરિત હોને કે કારણ કૃષ્ણ હી પ્રતીત હોતે હૈં । પત્ર, પુષ્પ એવં ફલોં સે વે યુક્ત હૈં । વે હરિત વર્ણસે વહે સુહાવને લગતે હૈં । ડનકે પલ્લવ આદિ સવ હરે ર હૈં । હસસે ડન કી શોભા વહી નીરાલી વની હુઈ હૈં । (મણુળા વન્નેણં ૪ જાવ મણુન્ના ફાસેણં મણુન્ના છાયાય, તં જો ણં દેવાણુપ્પિયા ! તેસિ નંદિફલાણં રુક્ષાણં મૂલાણિવા કંદં તયં પત્તં પુષ્પં ફલં બીયાણિ વા હરિયાણિ વા આહારેઙ્, છાયાય વા વીસમહ્, તસ્મ ણં આવાય મહ્વ ભવહ્, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા ર આકાલે ચેવ જોવિયાઓ વ વરો વેતિ) વર્ણ, રસ, ગંધ એવં સ્પર્શ સે વે વહે મનોજ્ઞ હૈં । છાયા મી ડનકી વહી મનોજ્ઞ હૈં । હસ લિપે હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈ ડન કી સુન્દરતા આદિ કારણ કે વશસે આકૃષ્ટ હોકર ડન નંદિફલ વૃક્ષોં કે મૂલોં કો કંટોં કો છાલોં કો, પત્રોં કો, ફલોં કો બીજોં કો અથવા હરિત અંકુરોં

નામે વૃક્ષો છે. તે વૃક્ષો કૃષ્ણ વર્ણવાળાં છે અને ખૂબજ લીલાં હોવાથી કૃષ્ણ વર્ણના જેવા જ લાગે છે. પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી તેઓ સમૃદ્ધ છે. લીલાં છમ્મ હોવાથી તેઓ અત્યંત સુંદર લાગે છે. તેમનાં પત્રો વગેરે બધાં લીલાં છે. તેથી તેમની શોભા એકદમ અનોખી છે.

(મણુળા વન્નેણં ૪ જાવ મણુન્ના ફાસેણં મણુન્ના છાયાય તં જો ણં દેવાણુ-પ્પિયા ! તેમિ નંદિફલાણં રુક્ષાણં મૂલાણિ વા કંદં તયં પત્તં પુષ્પં ફલં બીયાણિ, વા હરિયાણિ વા આહારેઙ્, છાયાય વા વીસમહ્, તસ્મ ણં આવાય મહ્વ ભવહ્, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા ર અકાલે ચેવ જોવિયાઓ વવરોવેતિ)

વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી તેઓ ખૂબજ મનોહર છે. છાંયડો પણ તેઓનો અત્યંત મનોહર છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! કેઈ પણ માણસ તેમની સુંદરતા વગેરે કારણોથી આકર્ષાઈને તે નંદિક્ષ્ણ વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, છાલોને પાંદડાંઓને, પુષ્પોને, બિયાંઓને અથવા તો લીલી કૃષ્ણોને ખાશે કે

મદ્રકં=સુખં ભવતિ, તતઃ પશ્ચાત્=સોકકાલાનન્તરં ' પરિણમમાણાઃ ' પરિણમન્તઃ
૨ રસાદિરુપેણ પરિણમનં પ્રાપ્નુવન્તસ્તે મૂલકન્દાદયસ્તં પુરુષમ્ અકાલે एव
જીવિતાદ્ વ્યપરોપયન્તિ=માણનાશં કુર્વન્તીત્યર્થઃ, ' તં ' તત્=તસ્માત્કારણાત્ મા
ખલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! ' કેહ ' કોઽપિ તેષાં નન્દિફલવૃક્ષાણાં મૂલાનિ વા યાવત્-
કન્દાદીનિ આહારયતુ, તેષાં છાયાયાં વા વિશ્રામ્યતુ તેષાં ફલાનિ મા આહારયતુ,
છાયાયાં વા વિશ્રામ્યતુ, इतिभावः, સોઽપિ ચ=યો નન્દિફલવૃક્ષાણાં મૂલાદીનિ-
નાહારયિષ્યતિ, નાપિ ચ તચ્છાયાયાં વિશ્રામિષ્યતિ સઃ ન ખલુ અકાલ एव
જીવિતાદ્ વ્યપરોપયન્તે, સ ન મરિષ્યતીત્યર્થઃ । યુયં ખલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ !

કો, જાવેગા અથવા ડનકી છાયા મેં વિશ્રામ કરેગા ડસે ડસમમય તો
બડા અનન્દ આવેગા-પરન્તુ ડસકે બાદ મેં થોડે હી સમય મેં જૈસે ૨
રસાદિરુપ સે ડસકા પરિણમન હોગા વૈસે ૨ વે ભક્ષિત મૂલાદિકંદ ડસ
પુરુષ કો અકાલમેં હી જીવન સે રહિત કર દેગે । (તં માણં દેવાણુપ્પિયા
કેહ તેસિં નંદિફલાણં મૂલાણિ વા જાવ છાયાए वीसमउ, માણં સે વિ
અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્ઞિરસહ, તુભેણં દેવાણુપ્પિયા । અન્ને
સિં રુક્ષાણં મૂલાનિ જાવ હરિયાણિય આહારેહ, છાયાસુ વીસમહ ત્તિ
ઘોસણં ઘોસેહ, જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ) ડસલિપે હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ
મેં સે કોઈ બી વ્યક્તિ ડન નંદિફલ વૃક્ષોં કે મૂલ આદિકોં કો ન જાવે
ઔર ન કોઈ ડન કી છાયા મેં હી વિશ્રામ કરે । જો ડન નંદિફલ વૃક્ષોં
કે મૂલ આદિકોં કો નહીં જાવેગા ઔર ન ડનકી છાયા મેં વિશ્રામ હી
કરેગા વહ અકાલ મેં અપને જીવન સે રહિત નહીં વનેગા । વહાં ડનસે

તેમના છાંયડામાં વિસામો લેશે ત્યારે તો તેમને ખૂબજ આનંદ પ્રાપ્ત થશે.
પણ ત્યાર પછી થોડા જ સમયમાં જેમ જેમ તેમનું રસાદિરૂપ પરિણમન થશે તેમ
તેમ તેઓ આધેડા મૂળ કંદ વગેરે તે માણુ અને આગળે જ નિર્ણય બતાવી દેશે.

(તં માણં દેવાણુપ્પિયા ! કેહ તેસિં નંદિફલાણં મૂલાણિ વા જાવ છાયાए
वा वीसमउ, માણં સે વિ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્ઞિરસહ, તુભેણં
દેવાણુપ્પિયા । અન્નેસિં રુક્ષાણં મૂલાનિ જાવ હરિયાણિ य आहारेह, છાયાसु
वीसमह त्तिघोसणं घोसेह जав पचचप्पिणंति)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારામાંથી કોઈ પણ માણુસ તે નંદિક્ષ્ણ વૃક્ષોના
મૂળોને ન ખાય અને તેની છાયામાં પણ વિસામો લેવા બેસે નહિ. જે માણુસ
નંદિક્ષ્ણ વૃક્ષોના મૂળ વગેરેનું ભક્ષણ કરશે નહિ તેમજ તેમના છાંયડામાં પણ
વિસામો લેશે નહિ તેનું આગળે મરણ થશે નહિ. તમે લોકો તે વનમાં
નંદિક્ષ્ણ વૃક્ષોને ખાદ કરતાં બીજ જે વૃક્ષો હોય હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો
તેમના મૂળોને તેમજ લીલી ટૂંપણો વગેરેનું ભક્ષણ કરજો અને તેમની જ છાયામાં
વિસામો લેશો. આ પ્રમાણે તમે ઘોષણા કરો. ત્યાર પછી તે લોકોએ આસા પ્રમાણે

अन्येषाम्=तद्विज्ञानां वृक्षाणां मूलं नि च यावत् हरितानि च 'आहारेत्थ' आहार-
 यत, छायासु विश्राम्यत च " इति=एतद्वर्षां घोषणां घोषयत कुरुत । 'जाव'
 यावत्-ते च तथैव कृत्वा तदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति=तस्मै निवेदयन्तीत्यर्थः । ततः खलु
 धन्यः सार्थवाहः शकटीशकटं योजयति, योजयित्वा यत्रैव नन्दिफलावृक्षास्तत्रैवो-
 पागच्छति, उपागत्य तेषां नन्दिफलानाम् अदूरसामन्ते सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा
 द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमयादीत-

भिन्न जो और दूसरे वृक्ष हों हे देवानुप्रियों ! तुमलोग उन्हीं के मूलों
 को यावत् हगिताङ्गुओं को खाना उनकी ही छाया में विश्राम करना ।
 इस प्रकारकी तुमलोग घोषणा करो । यावत् उन्होंने वैसा ही किया और
 इस की खबर धन्य सार्थवाह को भी दे दी । (तएणं से घण्णे सत्थ वाहे
 सगडीसगडं जोएइ २ जेणेव नन्दिफलरुक्खा, तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
 च्छित्ता तेसि नन्दिफलाणं अदूरसामन्ते सत्थणिवेसे करेइ, करित्ता दोच्चंपि
 तच्चंपि कोहुं वियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी तुब्भे णं देवा-
 णुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया २ सदेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह-
 -एणं देवाणुप्पिया ! ते नन्दिफला रुक्खा, किण्हा जाव मणुन्ना छायाए) इस
 के बाद उस धन्य सार्थवाहने अपनी गाड़ी और गाड़ों को जुनवाया और
 जुनवाकर जहाँ वे नन्दि फलवृक्ष थे वहाँ गया । वहाँ जाकर उसने
 उन नन्दिफल वृक्षों के पास अपने सार्थ को ठहरा दिया-अर्थात् अपना
 पडाव डाला ठहरने के बाद फिर उसने कौटुम्बिक पुरुषों को दोबार और

४ घोषणा करीने धन्य सार्थवाहने घोषणानुं काम थई ज्वानी जमर आयी.

(तएणं से घण्णे सत्थवाहे सगडी सागडं जोएइ २ जेणेव नन्दिफलरुक्खा,
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसि नन्दिफलाणं अदूरसामन्ते सत्थणिवेसे करेइ
 करित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोहुं वियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी तुब्भेणं
 देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया २ सदेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह-
 एणं देवाणुप्पिया ! ते नन्दिफला रुक्खा, किण्हा जाव मणुन्ना छायाए)

त्यार पछी ते धन्य सार्थवाहे गाडीओ, अने गाडांओने जेतराव्यां अने
 जेतरावीने तेओ, जे तन्ध नन्दिफल वृक्षो हुतां ते तरइ रवाना थया. त्यां
 पछोंथीने तेओ नन्दिफल वृक्षोनी पासे पोताना सार्थने रोडओ अर्थात् विसामा
 भाटे त्यां पडाव नाओ. पडाव नाओया गाह तेओ जे त्रय वपत्त कौटुम्बिक
 पुंइषेने जोलाव्या अने जोलावीने तेमने आ प्रभाओ कछु के हे देवानुप्रियो ।

પૂર્વે સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! મમ સાર્થનિવેશે મહતા-મહતા શબ્દેન ઉદ્ધોપયન્તઃ ૨
 एवं वदत-“ एते स्वल्प हे देवानुप्रियाः ! ते इमो नन्दिफलाग्राः यदर्थं, पूर्वमु
 पदिष्टम् कृष्णा यावत्-मनोज्ञा छायाया, तद् यो स्वल्प हे देवानुप्रियाः ! एतेषां
 नन्दिफलानां वृक्षाणां मूलानि वा कन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्वचो वा, पत्राणि वा,
 फलानि वा, यावत्-तानि मूलकन्दादीनि तं जीविताद् व्यपरोपयन्ति, तत् मा
 स्वल्पं पूर्वं ‘ जाय ’ यावत्-तेषां मूलकन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां छायासु
 विश्राम्यत किन्तु तान् दूर-दूरेण=दत्त एव ‘ परिहरमाणा ’ परिहरन्तः=वर्जयन्तः

તીન વાર બુલાયા-બુલાકર ઉસને એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયા ! તુમ મેરે
 સાર્થ નિવેશ મેં જાકર જોર ૨ સે એમી ધોવણા કરો-ક હે દેવાનુપ્રિયો
 જિન નંદિફલ વૃક્ષોં કે વિષય મેં પહિલે સૂચના દી ગઈ હૈ-વે ચેહી
 કૃષ્ણ યાવત છાયા સે મનોજ્ઞ નંદિફલ વૃક્ષ હૈં । તં જો ણં દેવાનુપ્રિયા !
 एएसि नन्दिफलाणं रुक्खाणं मूलानि वा कंद० पुष्प० तय० पत्र० फल
 जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, तं माणं तुभे जाव दूरे दूरेणं
 परिहरमाणा वीसमह, माणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्मइ, अ-
 न्नेसि रुक्खाणं मूलानि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोमणं जाव पच्च-
 पिण्णति) इस लिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति
 इन नन्दिफलवृक्षोंके मूलोंको, कंदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नहीं
 खावे और न वह इनको छायामें विश्राम ही करे-नहीं। वह अकालमें
 ही कालकवलित अर्थात् भर जावेगा हो जावेगा । इस लिये इन्हें बहुत
 दूर छोड़कर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

મારા સાર્થ નિવેશમાં જઈને મોટેથી તમે આ પ્રમાણે ઘોષણા કરો કે હે
 દેવાનુપ્રિયો ! જે નંદિફળ વૃક્ષોના વિષે પહેલાં તમને બહુ કંટાળામાં આવી હતી
 તે એજ કૃષ્ણ તેમજ છાયાથી મનોજ્ઞ લાગતાં નંદિફળ વૃક્ષો છે.

(તં જો ણં દેવાનુપ્રિયા ! एएसि नन्दिफलाणं रुक्खाणं मूलानि वा कंद०
 पुष्प० तय० पत्र० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ तं माणं तुभे
 जाव दूरं दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, माणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्मइ,
 अन्नेसि रुक्खाणं मूलानि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोमणं जाव पच्चपिण्णति)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારામાંથી કેઈ પણ માણસ નંદિફળ
 વૃક્ષોનાં મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય નહિ અને તેમની
 છાયામાં પણ વિસામો લે નહિ, નહિતર તે અકાળેજ મૃત્યુને ભેટશે. એટલા
 માટે એમનાથી ખૂબજ દૂર રહીને વિસામો લેશો તેથી તમારા જીવનને કંઈ

अनगारधर्मासूतवर्णिनी टी० अ० १५ नंदिकलस्वरूपनिरूपणम्

१२१

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमद्' विश्राम्यत=विश्रामं कुरुत तेन न खलु यूयं जीविताद् व्यपरोपिष्यध्वे, तथा-अन्वेषां वृक्षाणां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति कृत्वा घोषणां घोषयत, यावत्-ते घोषणां घोषयित्वा-धन्यसार्थवाहाय तद्वाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति । तत्र=खलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थ-वाहस्य एतमर्थम्=एतद्वपदेऽं श्रद्धयति, प्रतियन्ति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्धावानाः=श्रद्धाविपयिकुर्वीणाः प्रतियन्तः रोचयन्तः तेषां नन्दिकलवृक्षाणां मूलादीनि छायां च दूरं-दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषां वृक्षाणां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणां छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु नहीं होंओगे । तथा इनसे अनिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिकों को खाओ और उनकी छाया में विश्राम करो । इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्होंने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी । (तत्थ णं अप्पेग-इया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एवमट्ठं सदहंति, पत्तिंयन्ति रोचंति, एवमट्ठं सदहमाणाइ तेसि नंदिकलाणं० दूरं दूरेणं परिहरमाणा २ अ-न्नेसि रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति) वहां सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया । उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई । इसलिये इस बात पर श्रद्धा भादि संपन्न बने हुए उन लोगों ने उन नंदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोड़कर अन्य वृक्षों के मूलादि

पणु सुखेदी नउशे नडि. तेमज्ज आ वृक्षो सिवायनां णीळां वृक्षो छे, तेमनां भूण, कंद वगेरे तेमे आव अने तेमना छायाडामां विश्राम करे. तेओओ धन्यसार्थवाहनी आज्ञा प्रमाणेज् घोषणा करीने तेने भणर आपी.

(तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एवमट्ठं सदहंति, पत्ति-यन्ति, रोचंति, एवमट्ठं सदहमाणाइ तेसि नंदिकलाणं० दूरं दूरेणं परिहरमाणा २ अन्नेसि रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति)

त्यों सार्थमां आवेवा डेटलाः जाणुसोओ धन्यसार्थवाहनी सूचना इप आ वातने स्वीकारी दीधी अने तेने श्रद्धाणी अपेक्षाओ पोताना हृदयमां स्थान आपतां भरेणर तेनी छपर प्रतीति करी दीधी ते लोकने ते वात इयिकर पण धर्म पडी. आ रीने श्रद्धावृक्ष थयेला ते लोकओओ ते नंदिकल वृक्षोना भूण वगेरेशी अने तेमनी छायाधी भूअज् दूर रहीने णीळां वृक्षोना भूण तेमज्ज कंद वगेरेने आधां तथा तेमनी छायामां दिसामे दीधो.

आपाते=पूर्वमाहारसमये नो भद्रकं भवति=विशिष्टस्वादादिलाभो न भवति किन्तु ततः पश्चाद्=भक्षणविश्रामानन्तरं परिणम्यमानानि २ रसादिरूपेण परिणतानि मूलकन्दादीदि शुभरूपतया=भद्रकतया भूयो भूयः परिणमन्ति ।

अथोपनयं दर्शयन् सुधर्मस्वामी प्राह-‘ एवामेव ’ इत्यादिना । ‘ एवामेव ! एवमेव=अनेनैव पूर्वोक्तप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ? योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा ‘ जाव ’ यावत्-आचार्योपाध्यायानामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितस्तेषामुपदेशं श्रद्धानः सन् पञ्चसु कामगुणेषु=शब्दादिविषयेषु ‘ नो सज्जेह ’ नो

कों को यावत् कंदों को खाया और उनकी छाया में विश्राम किया । (तेसि णं आवाए णो भइए भवइ, तओ पच्छा परिणयमाणा २ सुइरुवत्ताए भुज्जो २ परिगमंति, एवामेव समणाउसो जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा जाव पंचसु कामगुणेषु नो सज्जेह, नो रज्जेह, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव बीइवयस्सइ, जहा वा ते पुरिसा) परन्तु इन पुरुषोंको उनके मूलादिकों के खाने के समय विशिष्ट स्वादादि को प्राप्तिरूप भद्रक का लाभ तो नहीं हुआ-किन्तु उसके बाद जब खाये हुए उन मूलादिकों का रसादि रूप से परिणमन हुआ तब उन्हें बार २ शुभ रूप परिणमन होने से आनन्द आया और जीवन सुरक्षित रहा-अब सुधर्मस्वामी इसका उपनय (दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृति में जोड़ना) दिखलाते हुए कहते हैं कि इसी तरह से हे आयुष्मन्त श्रमणो । जो हमारे निर्ग्रन्थ श्रमण एवं श्रमणियांजन हैं वे आचार्य उपाध्यायके पास मुंडित होकर दीक्षित हो जाते हैं और उनके उपदेश को श्रद्धा आदि का विषयभूत

(तेसि णं आवाए णो भइए भवइ, तओ पच्छा परिणयमाणा २ सुइरुवत्ताए भुज्जो २ परिगमंति, एवामेव समणाउसो जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा जाव पंचसु कामगुणेषु नो सज्जेह, नो रज्जेह, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव बीइवयस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

ते भाष्यसेने वृक्षोना भूण कंठ वगेरे आती वषते सविशेष स्नाह वगेरेनी अतुलुति तो थई शङ्की नडि पणु आधा पछी ते भूण कंठ रस वगेरे रूपमां परिषुत थयां त्यारे तेमने सुअ भउं अने साथे साथे तेमनां एवन पणु सुरक्षित रह्यां, सुधर्मा स्वामी हवे ओअ वातने दृष्टान्तनां रूपमां रूपइ करतां कडे छे के छे आयुष्मन्त श्रमणो ! आ प्रमाणे अ ने अमारा निर्ग्रन्थ श्रमणीओ, आचार्य तेमअ उपाध्यायनी पासे मुंडित थयने श्रद्धा वगेरेथी

अर्चनारधमांमृतवर्षिणी टीका म० १५ नन्दिकलवृक्षमूलकण्डादि

१२३

स्वप्नते=आसक्तो भवति, 'नो रज्जेइ' नो रज्यते नो अनुरक्तो भवति स खलु इह भवएव बहूनां श्रमणानां श्रमणीनां बहूनां साधूनां साध्वीनां मध्ये-अर्चनीयः=माननीयः सन् परलोके=भवान्तरे नो आगच्छति=जन्म न प्राप्नोति किन्तु-यावत्-अस्मिन्नेव भवे चातुरन्तसंसारकान्तारं व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, मोक्षं प्राप्स्यतीत्यर्थः 'जहा वा ते पुरिसा' यथा वाते पुरुषाः-यथा वा=येन प्रकारेण धन्यसार्थवाहोपदेशश्रद्धया ते=नन्दिकलवृक्षमूलकण्डादि परिवर्जनेन तत्कथनानुसारसमाचरणशीलाः पुरुषाः=सार्थपुरुषाः सुखपूर्वकमहिच्छन्नां नगरीं प्राप्स्यन्ति त्वेत्यर्थः । अथ श्रद्धा रहितान् वर्णयति-'तत्थ णं' इत्यादि । तत्र खलु सार्थे अप्येके=ये तेचित् पुरुषाः धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं=नन्दिकलमसणादि निषेधरूपं

बनाते हुए पांच काम गुणों में-शब्दादि विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं अनुरक्त नहीं बनते हैं वे इस भवमें ही अनेक साधु और साध्वियों के बीचमें माननीय होते हुए परलोक में जन्म से रहित हो जाते हैं-अर्थात् पुनः उन्हें जन्म धारण नहीं करना पड़ता है । कारण वे इसी भव में चतुर्गति रूप इस संसार कान्तार को पार करने वाले बन जाते हैं-उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जावेगा ऐसे वे तैयार हो जाते हैं । जिस प्रकार धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा करने से ये सार्थ के कितनेक पुरुष नन्दि वृक्षों के मूलकण्डादिकों का परिहार-त्याग करते हुए और उसके कथनानुसार अपना आचरण बनाते हुए सकुशल अहिच्छन्ना नगरी को प्राप्त कर लेंगे ऐसे बन गये । अब जिन्होंने धन्य सार्थवाहके वचनों पर श्रद्धा नहीं की-उनकी क्या दशा हुई इस बात का वर्णन सूत्रकार करते हैं-(तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एय-

युक्त यथने पांच काम शुद्धिमां शब्दादि विषयमां-अनासक्त रहे छे ओटवे के अनुरक्त थता नथी, तेओ आ लवमां ज धाया साधुओ तेमज साध्वीओनी पन्थे सम्माननीय थतां परलोकां ज न्मरहित थथ न्दय छे ओटवे के इरी तेओनो जन्म थतो नथी केमके तेओ आ लवमां ज चतुर्गति रुप आ संसार कान्तारने पार करवा लायक सामर्थ्य भेजवी वे छे तेओ मोक्ष भेजववा योग्य थथ न्दय छे, जेम धन्यसार्थवाहना उपदेश उपर श्रद्धा भूझीने सार्थना केटलाक पुत्रोओ नन्दि वृक्षोना भूज कंड वगेरेने त्यजने तेनी सूचना सुज्ज्ज अ.च. रक्ष करतां अहिच्छन्ना नगरीमां पडोन्थी शके तेवा थथ गया हुवे जे पुत्रोओ धन्यसार्थवाहनी बात उपर श्रद्धा भूझी नहि तेओनी शी डालत थथ तेनु वर्णन करतां सूत्रकार कडे छे-

(तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमदं नो सदंति ३

१५४

ज्ञाताधर्मकथाकृत

नो श्रद्धयति नो रोचयन्ति नो प्रतियति। ने धन्यस्य-एतमर्थम् अश्रद्धयाना अरोच-
यन्तः, अप्रतियन्त यत्रैव नन्दिफला वृक्षास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागम्य तेषां नन्दि-
फलानां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, तेषां छायासु च विश्राम्यन्ति
तेषां खलु आपाते=पूर्वं फलभक्षणादिसमये भद्रकं भवति=शुभस्वादादिलाभोभवति
किन्तु 'तत्रो पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तरं परिणम्यमानाः=रसादिरूपेण

मद्वं नो सद्वहन्ति ३ धन्यस्य एयमद्वं असद्वहमाणा ३ जेणेव ते नन्दिफला
तेणेव उवागच्छन्ति उवागच्छन्ता तेसि नन्दिफलाणं मूलाणि य जाव
वीसमन्ति, तेसि णं आवाए भइए भवइ, तत्रो पच्छा परिणममाणा
जाव ववरोवैति एवामेव समणाउसो ! जो अम्वं निगगंथो वा निगगंथी
वा जाव पवइए पंचसु कामगुणेषु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरिय-
ट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा) वहां पर कितनेक पुरुषों ने धन्यसार्थवाह
के इस कथन को कि नन्दिफल वृक्षों के कंदमूलादि नहीं खाना चाहिये
और न उनकी छायामें ही विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं
देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति
का विषय नहीं बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्र-
द्धेय आदि मानकर जहां पर नन्दिफल वृक्ष थे- वहां गये वहां जाकर
उन्होंने उनके मूल कन्दादि कों को खाया उनकी छाया में विश्राम किया
उस समय उन्हें बड़ा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला
-किन्तु जब उनका परिपाक काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धन्यस्य एयमद्वं असद्वहमाणा ३ जेणेव ते नन्दिफला तेणेव उवागच्छन्ति, उवा-
गच्छन्ता तेसि नन्दिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमन्ति, तेसि णं आवाए भइए,
भवइ, तत्रो पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवैति एवामेव समणाउसो । जो अम्वं
निगगंथो वा निगगंथी वा जाव पवइए पंचसु कामगुणेषु सज्जेइ, सज्जित्ता
जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

त्यां डेटलाक भाणुसोअे धन्यसार्थवाहना नन्दिफला वृक्षोना कंदमूलो वगेरे
आवा ओधअे नडि तेमअे ते वृक्षोनी छायाभां पणु विसासो देवेो नडि आ
जातना कथन प्रत्ये श्रद्धायान थया नथी, तेना उपर विश्वास भूकथो नडि अने
प्रतीतिपूर्वक तेमां पोतानी अलिङ्घ्यी अतावी नडि. ते भाणुसो धन्यसार्थवाहना
कथन अश्रद्धेय भानीने ज्यो नन्दिफला वृक्षो डतां त्यां गया. त्यां ज्योने तेमणे
तेमना भूण कंद वगेरे आधां अने तेमना छायाभां विसासो दीयो. ते सभये
तो तेमने भूणअे आनंद प्राप्त थयो, क्षोणा स्वादभां अपूर्व सुख भण्युं,
पणु ज्यारे तेओनी पाथन किया थया मांडी ओटले के आधेला भूणकंद वगेरे

અનેનગારબમાંમૃતવર્ષિની સીકા અ૦ ૧૫ નંદિકલસ્વરૂપનિકુપણમ

૧૭૬

પરિણામં પ્રાપ્નુવન્તઃ સન્તઃ કન્દાદયઃ યાવત્-તાન્ જીવિતાદ્ વ્યપરોપયન્તિ ।
'એવમેવ' એવામેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ યોઽસ્માકં નિર્ગ્રન્થો
વા નિર્ગ્રન્થી વા યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સન્ પશ્ચમુ કામગુણેષુ=શબ્દાદિકામભોગેષુ સ્વ-
જતે, રજ્યતે-કામભોગાસક્તો ભવતિ યાવત્-સ સ્વલુ રૂઢભવે વહૂનાં શ્રમણ-શ્રમ-
ણીનાં, વહૂનાં શ્રાવકશ્રાવિકાનાં મધ્યે હિલનીયો, નિન્દનીયઃ, સ્તિસનીયો ભવતિ,
પરલોકે=ચ ભગાન્તરે ચાતુરન્તસંસારકાન્તારમ્ અનુપર્વટિષ્યતિ ચાતુર્ગતિકસંસાર
એવ સ્થાસ્યતિ ન તુ મોક્ષં પ્રાપ્સ્યતીત્વર્થઃ । યેન પ્રકારેણ તે=ધન્યોપદેશમશ્રદ્ધાનાઃ
પુરુષાઃ=સાર્થસ્થિતા જના નન્દિકલવૃક્ષમૂલકન્દાદિમક્ષણેન તત્રૈવ ધ્રિયન્તે નતુ-
અહિચ્છત્રાં નગરીં પ્રાપ્નુવન્તીતિ ભાવઃ ॥ સૂ૦ ૩ ॥

મૂલમ્—તણં સે ધણે સત્થવાહે સગડીસાગડં જોયાવેહ
જોયાવિત્તા જેણેવ અહિચ્છત્તાં નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવા-

રસાદિરૂપ સે પણિમને લગે-તવ વે સવ અપનેર જીવન સે રહિત હો ગયે
-મર ગયે-। इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो । जो हमारा निर्ग्रन्थ व
निर्ग्रन्थी साध्वीजन यावत् प्रव्रजित होकर पंचकाम गुणों में-पंचइन्द्रियों
के शब्दादि विषयों में-आसक्त बन जाता है-अनुरक्त हो जाता है, वह
इस भवमें अनेक श्रमण श्रमणियोंके बीच हीलनीय, निंदनीय एवं स्तिस-
नीय होता है एवं वह भवान्तर में भो इस चतुर्गति रूप संसार कान्तार
में ही घूमता रहेगा-मोक्ष प्राप्त नहीं करेगा । जिस प्रकार धन्य सार्थवाह
के उपदेश पर श्रद्धा नहीं करने वाले सार्थ के ये कितनेक पुरुष नंदिकल
वृक्षों के मूलादि के खाने से वहीं पर मर गये-अहिचछत्र नगरी नहीं
जा सके ॥ सू० ३ ॥

રસ વગેરે રૂપમાં પરિણુત થવા લાગ્યા ત્યારે તેઓ બધા નિર્ણવ થઈ ગયા,
મૃત્યુ પામ્યા. આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ
સાધુઓ કે નિર્ગ્રન્થ સધિઓ પ્રવ્રજીત થઈને પાંચ કામ ગુણોમાં અર્થાત્
પાંચે ઇન્દ્રિયોના શબ્દાદિ વિષયોમાં આસક્ત થઈ પડે છે-એટલે કે અનુરક્ત
થઈ બંધ છે, તે આ ભવમાં ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓની વચ્ચે
હીલનીય, નિંદનીય, અને ખિસનીય હોય છે અને ખીજા ભવમાં પણ આ
ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર-કાંતારમાં જ ઝમણ કરતો રહેશે. તેને મોક્ષ પ્રાપ્ત થશે
નહિ. ધન્યસાર્થવાહના ઉપદેશને શ્રદ્ધેય ન માનનારા કેટલાક માણસો જેમ નંદિ
રૂપ વૃક્ષોના મૂળ વગેરે ખાઈને ત્યાંને ત્યાંજ મરણ પામ્યા, અહિચ્છત્રા નગ-
રીમાં પહોંચી શક્યા નહિ, તેમજ તેઓની પણ સ્થિતિ થાય છે. ॥ સૂ. ૩ ॥

१२६

शाताधर्मकथासूत्रे

गच्छिता अहिच्छत्ताए णयरीए वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं
 करेइ करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ, तएणं से धण्णे सत्थवाहे
 महत्थं३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ गेण्हत्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं
 संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ अणुप्प-
 विसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं३ पाहुडं उवणेइ,
 तएणं से कणगकेऊ, राया हट्टुत्तु० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं
 महत्थं३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ
 सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुकं वियरइ २ पडिविस-
 ज्जेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ करित्ता पडि-
 भंडं गेण्हइ गेण्हत्ता सुहंसुहेणं जेणे चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता भित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्तगाइं
 कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा-
 गमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मे सोच्चा जेट्टुप्पत्ते कुडुंवे ठावेत्ता
 पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं बहूणि वासाणि
 सामण्णपरियागं पाउणइ पाउणित्ता मासियाए सं० अन्नतरेसु
 देवलोएसु देवत्ताए उववन्ते महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव
 अंतं करेहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण
 जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते
 त्तिवेमि ॥ सू० ४ ॥

॥ पन्नरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

जनगरधर्मासृतवर्णिनी टीका अ० १५ नदिकलस्वरूपनिरूपणम्

१२७

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा यत्नीवादिच्छत्रा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्रायां नगर्यां बहिः अग्रयोद्याने=मुख्योद्याने सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा शकटी-शाकटं मोचयति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः ‘महत्थं’ महार्थं=महाप्रयोजनकं, ‘महग्घं’ महार्घं=महामूल्यं, ‘महरिहं’ महार्हं=महतां योग्यं ‘रायरिहं’ राजार्हं=राजयोग्यं प्राप्नुवन् गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्द्धं संपरिवृतः अहिच्छत्रां नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्नीव कनककेतु राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ‘करयल जाव कद्धावेइ’ करतल यावद् वर्धयति—कर-

‘तएणं से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इमके बाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाहने (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छइ) वहां से अपने गोड़ी और गाड़ों को जुनवाया और जुनवाकर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया। (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नगरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेशं करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया। वहां पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान बगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया। (करित्ता सगडी सागडं मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाड़ी और गाड़ों को ढील दिया। (तएणं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नगरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविमिस्सो जेणेव कणमकेऊ राया तेणेव उवाग-

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्पारणाह (से धण्णे सत्थवाहे) ते धन्यसार्थवाहे (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छइ) त्थांथी पोतानी गाडीओ अने गाडाओने जेतराणीने जे तरइ अहिच्छत्रा नगरी इती ते दिशा तरइ बवाना थयो। (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नगरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेशं करेइ) अने धीमे धीमे अहिच्छत्रा नगरीमां पडोंथी गयो। त्थां पडोंथीने तेज्जे नगरीनी जडःर आवेडा प्रधान उद्यानमां पोताना सार्थनी भुकाभ नाभ्यो। (करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ) अने त्थां जे पोतानी गाडीओ अने गाडाओने छोडावी नाभ्यां।

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नगरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

तलपरिमृहीतं शिरावर्तं दशनसं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा राजानं जयविजयशब्देन
वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा तन्महार्थं महार्थं महार्हं प्राभृतम् उपनयति=राज्ञः समीपे स्था-
पयति । ततः खलु स कनककेतु राजा हृष्टतुष्टहृदयो हर्षवशविमर्षद्वहृदयो धन्यस्य
सार्थवाहस्य तन्महार्थं ३ यावत् प्राभृतं 'पडिच्छइ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति,
प्रतीक्ष्य धन्यं सार्थवाहं सत्कारयति सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य तस्मै 'उस्सुक्कं'
उच्छुल्लं=धुल्लभावापत्रं 'केनापि राजपुरुषेणारमात्करो न प्राहः' इत्येतद्रूपमा-
ज्ञापत्रं विवरति=वदति, वितीर्य तं प्रतिविसर्जयति ।

छइ, उवागच्छित्ता करवल जाव वद्दावेइ, वद्दावित्ता तं महत्थं ३ पाहुडं
उवणेइ) इस के बाद उस धन्य सार्थवाह ने महार्थ साधक, महामूल्य
एवं महा पुरुषों के योग्य-प्राभृत-भेंट को साथ में लिया, और लेकर
अनेक पुरुषों के साथ २ अहिच्छित्ता नगरी में बीच से होता हुआ प्रविष्ट
हुआ । नगरी में प्रविष्ट होकर वह जहां कनक केतु राजा थे वहां गया
वहां जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार किया, और
जय विजय शब्दों को उच्चारण करते हुए उन्हें बधाई दी । बधाई देकर
उसने फिर राजा के समक्ष अपनी भेंट रख दी । (तएणं से कणगकेउ
राया हट्ट तुठं धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३ जाव पडिच्छइ पडि-
च्छित्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता
उस्सुक्कं विवरइ २ पडिविसज्जेइ) कनककेतु राजाने हर्षित एवं संतुष्ट
होकर धन्यसार्थवाह की उस महार्थ साधक महामूल्य राज योग्य भेंट
जेषेव कणगकेउ राया तणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करवल जाव वद्दावेइ,
वद्दावित्ता तं महत्थं ३ पाहुडं उवणेइ)

त्यारपछी ते धन्यसार्थवाहे महार्थ साधक अहु किमती अने महा पुरु-
षोने योग्य भेंट साथे लहने भएल । साण्णोनी साथे अहिच्छित्ता नगरीनी
पर्येता भार्गे (राजभार्ग) धरने नगरीमां प्रविष्ट धये । नगरीमां प्रवेशीने
ते जयां कनककेतु रत्न छता त्यां गये । त्यां जहने तेहे राजाने अने हाथ
जोडीने नमस्कार कयां अने जय विजय शब्दो उच्चारण करतां तेभने बधाई
आपी । बधाई आप्या पछी तेहे राजानी साथे पोतानी भेंट भूझी छीथी ।

(तएणं से कणगकेउ राया हट्ट तुठं धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३
जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्मा-
णित्ता उस्सुक्कं विवरइ २ पडिविसज्जेइ)

कनककेतु राजाने हर्षित तेभज संतुष्ट धरने महार्थ साधक महामूल्य-
वाणी अने राजाओने भाटे योग्य भेंट स्वीकारी छीथी । स्वीकार कयां आह

अनं गारुडमांशुतवर्णिनो दी० अ० १५ नंदिकलस्वरूपनिरूपणम्

१२९

ततः खलु सधन्यः सार्थवाहस्तत्र 'भंडविणिमयं' भाण्डविनिमयं=भाण्डानां=क्रयाणकवस्तूनां विनिमयम्=आदानप्रदानं करोति, कृत्वा 'पडिभंडं' प्रतिभाण्डं=विनिमयेन प्राप्तं वस्तुजातं गृह्णाति, गृहीत्वा शकटीशाकटे भरति भृत्वा शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा सुखं=सुखेन=सुखपूर्वकं यत्रैव चम्पानगरी=स्वनिवासस्थानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनैः सह 'अभिसमन्नागए' अभिसमन्नागतः=संमिलितो विपुलान् मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानो विहरति ।

को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्होंने ने धन्यसार्थवाह का सत्कार एवं सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके "किसी भी राज पुरुष को इन से कर नहीं लेना चाहिये इस प्रकार का शुल्क भाव विषयक आज्ञा पत्र" उसके लिये प्रदान किया और प्रदान करके बाद में उसे वहां से विदा कर दिया। (तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेणं जेणेव चंपा नगरी तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद धन्यसार्थवाह ने वहां रह कर अपनी क्रयाणक वस्तुओं का विक्रय किया और उससे प्राप्त द्रव्य से और दूसरी वस्तुओं को खरीदा। खरीद कर उसने उन्हें गाड़ी और गाड़ों में भरा भरकर उन्हें जुतवाया और जुतवाकर फिर वह वहां से चंपानगरी की ओर वापिस चल दिया। (उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

तेमले धन्यसार्थवाहने। सत्कार तेमज सन्मान कर्युं. सत्कार अने सन्मान करीने राज्ञे 'कोष्ठपण्ण राजपुरुष तेमनी पासिथी राजकर ले नहि' ते प्रमाणेनी व्यवस्था करतां तेमने शुल्क भाद्रीनुं आज्ञापत्र लणी आप्थुं. त्थारपथी तेने त्थांथी ज्वानी आज्ञा आपी.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेणं जेणेव चंपानगरी तेणेव उवागच्छइ)

त्थारभाइ धन्यसार्थवाहे त्थां रहीने पोतानी डयाण्णक वस्तुओने वेथी अने तेनाथी जे धन भण्युं तेनाथी भील्ल वस्तुओ भरीही लीथी. वस्तुओनी भरीही करीने तेले अधी वस्तुओनी भरीही करीने तेले अधी वस्तुओने गाडी तेमज गाडाओमां लरी अने त्थारपथी गाडी अने गाडाओने जेतरावनि त्थांथी चंपा नगरी तरइ पाछे रवाना थेथो.

(उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

१३०

ज्ञाताधर्मकथासूत्रे

तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरागमनम् । धन्यः सार्थवाहो धर्मश्रुत्वा
प्रतिबुद्धः सन् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा प्रव्रजितः, सामायिकादीनि एकादशा-
ज्ञान्यधीते । बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिकया संले-
खनया ऽऽत्मानं जुष्टा षष्टि भक्तानि अनशनेन छित्त्वा कालमासे कालं कृत्वा-

चंपानगरी में आकर वह अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनों
से मिला और विपुल मनुष्य भव संबन्धी काम भोगों को भोगने लगा
(तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा
जेट्ठं पुत्तं कुटुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं बहूणि
वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु
देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झहिइ जाव अंतं
करेहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं
पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि) उसी काल और
उसी समय में वहां पर स्थविरों का आगमन हुआ । धन्यसार्थवाह ने
उनसे धर्म का व्याख्यान सुना सुनकर वह प्रतिबुद्ध हो गया और
प्रतिबुद्ध हो करके फिर वह कुटुंब में अपने ज्येष्ठ पुत्र को रखकर दीक्षित
होकरके उसने सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया । अनेक
वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर १ मास की संलेखना से ६०
भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके काल अवसर काल करके देव-

चंपा नगरीमां आवीने ते पोताना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी
परिजनाने भउथे अने विपुल मनुष्य भवना कामलोगे लोअववा लाग्थे।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठं
पुत्तं कुटुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं बहूणि वासाणि
सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु
देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झहिइ, जाव अंतं करेहिइ । एवं खलु जंबू !
समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति वेमि)
ते क्षणे अने ते समये ते नगरीमां स्थविरे पधार्या धन्यसार्थवाहे तेओना
सुअधी धर्मनुं व्याख्यान सांलउथुं अने सांलणीने तेने प्रतिपोष थये। प्रतिबुद्ध
अधने तेहे पोताना कुटुम्बना वडा तरीके पोताना मोटा पुत्रनीनीमल्लुक करीने
दीक्षा अडुअ करी दीक्षा अडुअ कर्या पाद तेहे सामायिक वगेरे अग्रियार अंगोनं
अभधुअन कथुं अने धलुं वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनुं पालन करीने ओक
भासणी सद्धेअनाथी ६० भक्तोनुं अनशन वडे छेदन करीने क्षणना बभते

अनगारधर्माभूतवर्षिणी टीका अ० १५ नंशीकलस्वरूपनिरूपणम्

१११

अन्यतरेषु देवलोकेषु 'देवचाए' देवतया=देवत्वेन उपपन्नः । महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत्-सर्वदुःखानामन्तं कर्ष्यति । एवं खलु हे जम्बू । श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्-सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन पञ्चदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः 'चित्तेमि' इति ब्रवीमि व्याख्या पूर्ववत् । सू० ४ ।

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक - प्रविशुद्देगयपथनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक

श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालब्रतचिरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्माभूतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां पञ्चदशमध्ययनं समाप्तं ॥ १५ ॥

लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हो गया । महाविदेह क्षेत्र से यह सिद्ध अवस्था को प्राप्त करेगा-यावत् समस्त दुःखों का अन्त करने वाला होगा इस प्रकार हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धगति नाम के स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस पंद्रहवे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त भाव प्रज्ञप्त किया है । ऐसा मैंने उनके मुख से सुना है सो यह वैसा तुमसे कहा है ॥ सू० ४ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्माभूतवर्षिणी व्याख्याका पंद्रहवां अध्ययन समाप्त ॥ १५॥

કાળ કરીને દેવલોકમાં દેવતા પર્યાયથી જન્મ પામ્યો. મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી તે સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત અધા દુઃખોનો તે અન્ત કરનાર થશે. આ રીતે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓએ સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને મેળવી લીધું છે-આ પંદરમા જ્ઞાતાધ્યયનને આ પૂર્વોક્ત ભાવ નિરૂપિત કર્યો છે. મેં જે પ્રમાણે તેઓશ્રીના મુખથી સાંભળ્યું છે તે પ્રમાણે જ તમારી આજ્ઞા સ્વ કયું છે. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની
અનગારધર્માભૂતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું પંદરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૫॥

॥ अथ षोडशाध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्तं षड्दशाध्ययनम्, तत्र विषयसङ्गोऽनर्थस्य कारणमित्युपदिष्टम् इह षोड-
शाध्ययने तु तद्विषयनिदानमनर्थस्य मूलं भवतीत्युच्यते, इत्येवं सम्बन्धेन प्रसङ्गतः
प्राप्तस्यास्याध्ययनस्य प्रथमं सूत्रमाह—‘ जङ्घं भंते ! ’ इत्यादि ।

मूलम्—जङ्घं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते सोल-
समस्स णं भंते णायज्झयणस्स णं समणेणं भगवया महा-
वीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?, एवं खलु जंबू !
तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं
चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमेदिसिभाए सुभूमिभागे
उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चंपा नयरीए तओ माहणा भायरो
परिवसंति, तं जहा-सोमे सोमदत्ते सोमभूर्इ, अड्ढा जाव
अपरिभूया रिउळ्वेय जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि णं माहणाणं
तओ भारियाओ होत्था, तं जहा-नागसिरी भूयसिरी जक्खसिसी

सोलहवां अध्ययन प्रारंभ

पन्द्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका-अब सोलहवां अध्ययन प्रारंभ
होता है । पन्द्रहवें अध्ययन में विषयसंग्रह अनर्थ का कारण कहा गया
है-अब सोलहवें अध्ययन में विषय निदान अनर्थ का कारण होता है
यह स्पष्ट किया जायगा । इस संबन्ध से आया हुआ इस अध्ययन का
यह प्रथम सूत्र है ‘ जङ्घं भंते । ’ इत्यादि ।

सोणभुं अध्ययन प्रारंभ

पंद्रहवें अध्ययन पूरे थाय छे. હવે સોણભું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે.
પંદરમા અધ્યયનમાં વિષયસંગ્રહે અનર્થનું કારણ બતાવવામાં આવ્યું છે. હવે
સોણભા અધ્યયનમાં વિષય-નિદાન અનર્થનું કારણ હોય છે, આ વાત સ્પષ્ટ
કરવામાં આવશે. આ વિષયને લગતું આ અધ્યયનનું પહેલું સૂત્ર આ છે:—

જઙ્ઘં ભંતે ઇત્યાદિ—

पुनरावर्तनीवृत्तविगी टी० प्र० १६ धर्मकवचनगरवर्तितवर्णनम्

१३३

सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ ५, विपुले माणु-
 स्सए जाव विहरंति । तएणं तेसि माहणाणं अन्नया कयाई
 एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे
 समुप्पज्जित्था, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले
 धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ
 पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं तं सेयं खलु अम्हं
 देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विउलं असणं
 पाणं खाइमं साइमं उवक्खडाविउं उवक्खडावित्ता परिभुंज-
 माणाणं विहरित्ते, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति परिसु-
 णित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुलं असणं उव-
 क्खडावेति, उवक्खडावित्ता परिभुंजमाणा विहरंति, तएणं
 तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि
 होत्था, तएणं सा नागसिरी विपुलं असणं उवक्खडेति
 उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंजुत्तं
 नेहावगाढं उवक्खडेइ उवक्खडित्ता एगं बिंदुयं करयलंसि
 आसाएइ आसाइत्ता तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं
 विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी-धिरत्थु णं मम नागसिरीए
 अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिबोलियाए
 जीएणं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्ख-
 डिए, सुबहुदवक्खए, नेहक्खए य कए, तं जइणं ममं
 जाउयाओ जाणिस्संति तो णं मम खिसिस्संति तं जाव
 ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेयं एयं साल-

इयं तित्तालाउ य बहुसंभारणेहकयं एगंते गोवेत्तए अन्नं
 सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं
 संपेहेइ संपेहिता तं सालइयं जाव गोवेइ, अन्नं सालइयं
 महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं पहायाणं जाव
 सुहासणवरगयाणं तं विपुलं असणं४ परिवेसेइ, तएणं ते
 माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परम-
 सुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था, तएणं ताओ
 माहणोओ पहायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं
 ४ आहारोति आहारित्ता जेणेव सयाइं२ गेहाइं तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ॥सू०१॥

टीका—श्रीजम्बूस्वामी श्रीसुधर्मस्वामिनं पूजति—यदि खलु हे भदन्त ! =
 हे भगवन् श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन
 पञ्चदशस्य अयम्=उत्तरूपः, अर्थः प्रज्ञप्तः, षोडशस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन
 भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?,

टीકાર્થ-(જડ્ઠળં મંતે । સમણેળં ભગવયા મહાવીરેળં જાવ સંપત્તેળં
 પન્નરસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લગત્તે સોલસમસ્સ ણં મંતે ? નાય-
 જ્ઞયણસ્સળં સમણેળં ભગવયા મહાવીરેળં જાવ સંપત્તેળં કે અદ્દે પળ્લગત્તે ?
 એવં સ્વલુ જંબૂ ?) શ્રી જંબૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ મંદન્ત ।
 શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને જો કિ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનકો પ્રાપ્ત હો
 જુકે હૈં પન્દ્રહર્વે જ્ઞાતાધ્યયનકા યહ પૂર્વોક્તરૂપસે અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ—તો

ટીકાર્થ-(જડ્ઠળં મંતે ! સમણેળં ભગવયા મહાવીરેળં જાવ સંપત્તેળં પન્નરસ-
 મસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લગત્તે સોલસમસ્સ ણં મંતે ! નાયજ્ઞયણસ્સ ણં
 સમણેળં ભગવયા મહાવીરેળં જાવ સંપત્તેળં કે અદ્દે પળ્લગત્તે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ।)

શ્રી જંબૂ સ્વામી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગ-
 વાન્ મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂક્યા છે-પંદરમા
 જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્તિ રૂપે અર્થ નિરૂપિત કયો છે તો તે શ્રમણ ભગવાન્

શ્રીસુધર્માસ્વામી કથયતિ-‘ एवं खलु जंबू ’ इत्यादि । एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, तस्याः खलु चम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे सुभूमिभागनामकमुद्यानमासीत्, तत्र खलु चम्पायां नगर्या त्रयो ब्राह्मणा भ्रातरः परिवसन्ति, तद् यथा (१) सोमः, (२) सोमदत्तः, (३) सोमभूतिः, ते किं भूताः-आदद्याः=धनवन्तः यावद्-अपरिभूताः, तथा-‘ रिउव्वेय जाव ’ ऋग्वेद-यजुर्वेदसामवेदार्थवेदेषु साङ्गोभङ्गेषु सुपरि-निष्ठिताः । तेषां खलु ब्राह्मणानां तिस्रोभार्या आसन्, तद् यथा-(?) नामश्रीः,

सोलहवें ज्ञाताध्ययन का हे भदंत ? उन्हीं श्रमण भगवान महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रति-पादित किया है ? इस प्रकार के जंबू स्वामी के प्रश्नका उत्तर देते हुए सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जंबू ! (तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चंपाए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सु-भूमिभागे उज्जाणे, होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसंति) उस काल और उस समय में चंपा नामकी नगरी थी । उस चंपा के बाहिर ईशान कोण में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । उसी चंपा नगरी में तीन ब्राह्मण भाइ रहते थे (तं जहा) उनके नाम ये हैं-(सोमे सोमदत्ते सोमभूई) सोम, सोमदत्त, और सोमभूति (अड्डा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्यादि संपन्न एवं जन मान्य (रिउव्वेय, जाव सुपरिनिष्ठिया) ये सबके सब ऋग्वेद आदि चारो वेदों

મહાવીરે-કે જોએ સિદ્ધિગતિ મેળવી ચૂક્યા છે-સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કયો છે ? આ રીતે જ'બૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને ઉત્તર આપતાં કહે છે કે હે જ'બૂ !

(તે ણં કાલેણં તેણં સમણં ચંપા નામં નયરી હોત્થા, તીસેણં ચંપાए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे, होत्था तत्थ णं नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसंति)

તે કાળે અને તે સમયે ચંપા નામે નગરી હતી તે ચંપા નગરીની બહાર ઇશાન કોણમાં સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું તે ચંપા નગરીમાં ત્રણ બ્રાહ્મણ ભાઈઓ રહેતા હતા. (તંજહા) તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે-(સોમે સોમદત્તે સોમભૂઈ) સોમ, સોમદત્ત, અને સોમભૂતિ. (અડ્ડા જાવ અપરિભૂયા) તેઓ ત્રણે ધનધાન્ય વગેરેથી સંપન્ન તેમજ જનમાન્ય હતા. (રિઉવ્વેય, જાવ સુપરિનિષ્ઠિયા) તેઓ ત્રણે ઋગ્વેદ વગેરે ચારે વેદોના સાત જ્ઞાતા હતા. (તેસિ ણં માહણા ણં તઓ મારિયાઓ હોત્થા તે જહા-નાગસિરી, મૂયસિરી

(૨) ભૂતશ્રીઃ, (૩) યક્ષશ્રીશ્ર, તાઃ કિં ભૂતાઃ-સુકુમારપાણિપાદાઃ, યાવત્-સર્વાન્ન-સુન્દર્યઃ, તેષાં સ્વલુ બ્રાહ્મણાનામિષ્ટાઃ=કમનીયાઃ, વિપુલાન્ માનુષ્યકાન્ યાવત્ કામભોગાન્ શુક્ત્રાના વિહરન્તિ ।

તતઃ સ્વલુ તેષાં બ્રાહ્મણાનામન્યદા કદાચિદેકતઃ સમુપાગતાનાં યાવત્ અય-મેતદ્ભૂપઃ=વશ્યમાણસ્વરૂપઃ, મિથઃ=પરસ્પરં, કથામસુલ્લાપઃ=વાર્તાલાપઃ સમુદપ-યત-એવં સ્વલુ હે દેવાનુપિયાઃ ! અસ્માકમિદં વિપુલં ધનં ગણિમધરિમમેયપરિ-ચ્છેદ્ય મેદાચ્ચતુર્વિધં યાવત્ 'સાવતેજ્જે' સ્વાપતેયં - પદ્મારાગાદિરૂપં વા, અથ યાવત્પદ્મોદ્યં-કનકસુવર્ણરત્નાદિકં તથા-મૌક્તિકાદિકં ચ વિદ્યતે, કિંભૂતં તદિ-ત્યાહ- 'અલાહિ' પર્યાપ્ત=પરિપૂર્ણ-યાવત્-આસપ્તમાત્ કુલવંશાત્=સપ્તમવંશપર્યન્તં-

કે અચ્છે જાનકાર થે । (તેસિણં માહણાણં તમ્મો ખારિયાઓ હોત્યા-તં જહા-નાગસિરી, ભૂયસિરી, જવસિરી, સુકુમાલ જાવ તેસિ ણં માહણાણં ઇદ્દાઓ ૫ વિપુલે માં જાવ વિહરંતિ) इन तीनों ब्राह्मणों की तीन स्त्रियां थी । उनके नाम ये हैं ।-नाग श्री, भूत श्री, और यक्ष श्री, ये सब सुकुमार करचरणवाली थी यावत् सर्वाङ्ग, सुन्दर थीं । ये तीनों ब्राह्मण इनके साथ मनुष्यभव संबन्धी काम भागों को भोगते हुए आनंद से रहते थे । (तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगय ओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कदासमुल्लावे समुपज्जित्था) एक दिन की बात है कि जब ये तीनों भाई एक जगह बैठे हुए थे तब इनका परस्पर में इस प्रकार का विचार चला-(एवं स्वलु देवाणुप्पिया । अम्हं इमे विउळे धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुल-

જવસિરી, સુકુમાર જાવ તેસિ ણં માહણાણં ઇદ્દાઓ ૫ વિપુલે માં જાવ વિહરંતિ) આ ત્રણે બ્રાહ્મણેને ત્રણ સ્ત્રીઓ હતી. તેમનાં નામો આ પ્રમાણે છે. નાગશ્રી, ભૂતશ્રી, અને યક્ષશ્રી. તેઓ ત્રણે સુકોમળ હાથ અને પગવાળી હતી અને બધાં અંગો તેમનાં સુંદર હતાં. ત્રણે બ્રાહ્મણે તેમની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતાં સુખેથી રહેતા હતા

(તएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कदासमुल्लावे समुपज्जित्था)

એક દિવસની વત છે કે તેઓ ત્રણે ભાઈ એક સ્થાને બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ ભાવના વિચાર કરવા લાગ્યા કે—

(एवं स्वलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउळे धणे जाव सावतेज्जे अलाहि

અનગારધર્મામૃતધોષિણી ટી૦ અ૦૧૬ ધર્મદશ્યનગારચરિતવર્ણનમ્

૧૩૭

પ્રકામં દાતું, પ્રકામં ભોક્તું પ્રકામં પરિભાજયિતુમ્ તતઃ = તસ્માત્ શ્રેયઃ = શ્રેયસ્કરં સ્વલુ અસ્માકં દે દેવાનુપ્રિયાઃ ! અન્યોન્યસ્ય = પરસ્પરસ્ય પૃથેષુ 'કલ્લાકલ્લિ' કલ્યાકલ્યં પ્રતિદિવસં વિપુલં = વહુલમ્, અશનં પાનં સ્વાદ્યં સ્વાદ્યં 'ઉવક્સલ્લાડ' ઉપસ્કાર્યુપરિશુદ્ધાનાનાં વિહર્તુમ્ । અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પરસ્ય એત-મર્થે તે ત્રયો ભ્રાતરો બ્રાહ્મણાઃ પ્રતિશ્રુષ્વન્તિ=સ્વીકુર્વન્તિ પ્રતિશ્રુત્ય 'કલ્લાકલ્લિ'

બંસાઓ પ્રકામં દાડં પ્રકામં ભોક્તું પ્રકામં પરિભાજડં-તં સેયં સ્વલુ અમ્હં દેવાનુપ્રિયા ! અન્નમન્નસ ગિહેસુ કલ્લાકલ્લિ વિડલં અસળં પાળં સ્વાદ્યમં સાદ્યમં ઉવક્સલ્લાડવિડં) હે દેવાનુપ્રિયો ! અપને પાસ વિપુલમાત્રા મેં, ગણિમ, ધરિમ, મેય, એવં પરિચ્છેદ્યરૂપ ચારોં પ્રકાર કા ધન હૈ, યાવત્ પદ્મરાગ આદિરૂપસ્વાપત્ય ભી હૈં, કનક, સુવર્ણ, રત્ન, મણિમૌલિકા આદિ સય કુચ્છ હૈ-ઔર વહ્ ઇતના અધિક હૈ કિ સાત પીઢી તક ભી યદિ સ્વૂં દાન દિયા જાવે, બૈઠ ૨ સ્વૂં સ્વાયા જાવે-ઔર ઉસકા હિસ્સા ભાગ ભી કર દિયા જાવે-તૌ ભી વહ સમાસ નહીં હો સકતા હૈ । ઇસલિયે હમ લોગોં કો ઉચિત હૈ કિ હમ લોગ પ્રતિ દિન એક દુસરે કે ઘર પર અશન, પાન, સ્વાદ્ય એવં સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર વિપુલ માત્રા મેં બનવાવેં ઔર (ઉવક્સલ્લાડવિત્તા પરિશુજમાણાળં વિહરિત્તે) બનવા કર ઉસ કા ભોજન કરેં । (અન્નમન્નસ એયમદ્વં પડિસુળેતિ) ઇસ પ્રકાર કા આપસ કા વિચાર ઉન્હોને એક દુસરે કા સ્વીકાર કર લિયા ।

જાવ આસત્તમાઓ કુલ્લવંસાઓ પ્રકામં દાડં પ્રકામં ભોક્તું પ્રકામં પરિભાજડં તં સેયં સ્વલુ અમ્હં દેવાનુપ્રિયા ! અન્નમન્નસ ગિહેસુ કલ્લાકલ્લિ વિડલં અસળં પાળં સ્વાદ્યમં સાદ્યમં ઉવક્સલ્લાડવિડં)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણી પાસે પુષ્કળ પ્રમાણમાં ગણિમ, ધરિમ, મેય, અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચારે ભાતનું ધન છે. યાવત્ પદ્મરાગ વગેરે રૂપ સ્વાપત્ય પણ છે. કનક, સુવર્ણ, રત્ન, મણિ, મોતી, વગેરે બધું છે-અને જે કંઈ છે તે એટલું બધું છે કે સાત પેઢી સુધી પણ જે પુષ્કળ પ્રમાણમાં દાન કરવામાં આવે છતાં તે ખૂટશે નહિ. એથી અમને એ યોગ્ય લાગે છે કે અમે બધા દરેકજ એકબીજાને ઘેર અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર ભાતના આહારો પુષ્કળ પ્રમાણમાં બનાવડાવીએ અને (ઉવક્સલ્લાડવિત્તા પરિશુજમાણાળં વિહરિત્તે) બનાવડાવીને જમીએ. (અન્નમન્નસ એયમદ્વં પડિસુળેતિ) આ રીતે બધાએ એકમત થઈને વાત સ્વીકારી લીધી.

कल्याकर्यं=प्रतिदिवसम् अन्योन्यस्य गृहेषु विपुलमशनादिकमुपस्कारयन्ति । उप-
स्कार्य परिभुञ्जाना विहरन्ति । ततः खलु तस्या नागश्रियो ब्राह्मण्या अन्यदा=
कदाचिदन्यस्मिन् समये ' भोयणवारए ' भोजनवारकः=भोजयितुं नियमितो दिवसो
भोजनवारकः जातः=समायातश्चाप्यभवत्, ततः खलु सा नागश्रीः विपुलमशनं
पानं स्वाद्यं स्वाद्यमुपस्करोति=निष्पादयति, उपस्कृत्य एकं महत् ' सालइयं '
सारचितं=सारेण रसेन चितं युक्तं यद्वा-शरदिकं=शरदुत्तुभवं ' तित्तालाउअं '
तित्तालाबुकं=निम्बादिवत् तित्तरसयुक्ततुम्बीफलं बहुसंभारसंयुक्तं=बहुभिः=
अनेकविधैः संभारद्रव्यैः=शाकादौ स्वादसुगन्धविशेषार्थं द्विहुमेयिकाजीरकादीनि
व्याघासकद्रव्याणि निक्षिप्यन्ते, तैर्मिश्रितं, ' णेहावगाढं ' स्नेहावगाढं=घृतादिस्त्रावि-
तम् (युक्तम्) ' उवक्खडेइ ' उपस्करोति, उपस्कृत्यैकं विन्दुकं करतले समादाय

(पडिसुणित्ता कल्ला कल्लि अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्ख-
डावेति) स्वीकार करके अब वे एक दूसरे के घर पर विपुल मात्रा में
निष्पन्न हुए अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाने पीने लगे । (तएणं
तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए याचि होत्था)
किसी एक दिन नागश्री ब्राह्मणी की भोजन बनाने की बारी आई
(तएणं सा नागसिरी विउलं असणं ४ उवक्खडेति) सो उस दिन
उसने विपुल मात्रा में चारों प्रकार का आहार बनाया (उवक्खडित्ता
एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभारसंयुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ)
आहार बनाकर फिर उसने शरदक्रतु में उत्पन्न हुई अथवा रस से
सरस बनी हुई तित्तरसतुंभी का शाक बनाया-और उसमें स्वाद एवं
सुगंधि के निमित्त हींग, मैथी, जीरे आदि का वधार दिया । उसे खूब
अधिक घृत में छोंका था-इसलिये घृत उसके ऊपर तैर रहा था ।

(पडिसुणित्ता कल्लाकल्लि अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्खडावेति)

स्वीकारीने तेओ ओउणीअने घेर पुष्कण प्रभाणुमां अशनपान वगेरे थार
अतना आहारोने आवा-पीवा लाया.

(तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए याचि होत्था)

डोअ ओउ द्विसे नागश्री ब्राह्मणीने भोजन तैयार करवाने वारे आव्यो
(तएणं सा नागसिरी विउलं असणं ४ उवक्खडेति) तेओ ते दिवसे पुष्कण
प्रभाणुमां थारे अतना आहारोने अनाया.

(उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभार संयुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ)

आहार अनायीने तेओ शरद क्रतुमां उत्पन्न थयेदी अथवा रसवा
सरस थयेदी तित्तरसवाणी तुंभीनुं शाक अनाया अने तेमां रस अने
सुगंधीना भाटे हींग, मैथी, जीरे वगेरेने वधार दीया होतो ओउओ तेनी

નગરના પુત્રાચારી ટી૦ અ૦૧૬ ધર્મરુચ્યનગરચરિતવર્ણનમ્

૧૩૧

અર્થવાદયતિ, અર્થવા તત્ સારં કદુકમસ્વાદમમોજ્યં વિપભૂતં જ્ઞાતા એવમવાદીત-
ધિગસ્તુ માં નાગશ્રિપમધન્યામપુણ્યાં દુર્ભગાં 'દુર્ભગસત્તા' દુર્ભગસત્વાં દુર્ભગં=નિષ્ફલં
સત્ત્વં=બલં યસ્યાઃ સા તાં વ્યર્થપરિશ્રમાભિલ્થર્થઃ 'દુર્ભગર્ણિચોલિ' દુર્ભગનિમ્બ-
શુલિકાનિમ્બફલિકા, તદ્વદ્ દુર્ભગા તાં=જનૈરનાદરણીયામિત્યર્થઃ, અત્ર દ્વિતીયાર્થે
ષઠી માક્રુતત્વાત્, 'જી' યથા સ્વલુ મયા શારદિકં વહુસંભારદ્રવ્યસંભૂતં સ્નેહાવ-
(ઉવક્લહિત્તા એમં ચિદુયં કરચલંસિ આસાઈ) જય વહ તૈયાર શાક
હો પુકા-તય ઉસને ઉસમેં સે એક ચિન્દુ માત્ર શાક અપની હથેલી પર
રખા ઓર ફિર ઉસે ચલા-(આસાઈત્તા તં સ્વારં કદુયં અક્લજ્જં અમોજ્જં
વિસન્ભૂયં જાણિત્તા એવં વયાસી-ધિરસ્થુ ણં મમ નાગસિરી' અહનાઈ, અપુનાઈ
દુર્ભગાઈ દુર્ભગસત્તાઈ દુર્ભગર્ણિચોલિયાઈ જીઈણં મઈ સાલઈ વહુસંભારસંભિ
નેહાવગાઢે ઉવક્લહિઈ) ચલ્લકર ઉસે જ્ઞાત હુઆ
કિ યહ શાક તો વહુન સ્વારા હૈ, વહુન અધિક કદુઆ હૈ। સ્વાને કે
યોગ્ય નહીં હૈ ઓજન મેં લેને કે લાયક નહીં હૈ, યહ તો વિષ જૈસા હૈ
એસા જાનકર ઉસને મન હી મન વિચાર કિયા ઉસ વિચાર મેં ઉસને
કહા-પુસ નાગશ્રી કો ધિક્કાર હૈ, મેં અધન્યા ઓર અપુણ્યા હૂં। જનોં
કે દ્વારા આદર પાને યોગ્ય નહીં હૂં। મેરે હમ બલ કો ઘાર ૨ ધિક્કાર
હો-મેરા યહ બલ બિલકુલ નિષ્ફલ હૈ મેંને જો હસ શાક કે બનાને મેં
હતના ઉચમ કિયા હૈ વહ મેરા સર્વથા નિષ્ફલ ગયા। જિસ પ્રકાર નીમ

ઉપર ધી વરતું હતું. (ઉવક્લહિત્તા એમં ચિદુયં કરચલંસિ આસાઈ) જ્યારે
શાક તૈયાર થઈ ગયું ત્યારે તેણે તેમાંથી ફક્ત એક ટીપા જેટલું શાક પોતાની
હથેળી ઉપર લઇને આપ્યું.

(આસાઈત્તા તં સ્વારં કદુયં અક્લજ્જં અમોજ્જં વિસન્ભૂયં જાણિત્તા એવં
વયાસી-ધિરસ્થુ ણં મમ નાગસિરી' અહનાઈ, અપુનાઈ, દુર્ભગાઈ દુર્ભગસત્તાઈ
દુર્ભગર્ણિચોલિયાઈ જીઈણં મઈ સાલઈ વહુસંભારસંભિ નેહાવગાઢે ઉવક્લહિઈ)

આખવાથી તેને લાગ્યું કે આ શાક તો ખૂબ જ ખાઈ છે, ખૂબ જ કડવું
છે, ખાવાલાયક નથી, લોજનમાં કામ લાગે તેવું નથી, આ તો ઝેર જેવું છે,
આમ બાળીને તેણે પોતાના મનમાં જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતાં તેણે
પોતાની બાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યું કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હું ખરેખર
અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છું. હું લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી.
મારા આ બળને વારંવાર ધિક્કાર છે, માં આ બળ સાવ નકામું છે. શાક
તૈયાર કરવામાં જેટલો મેં શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો. જેમ સ્ત્રી-

ગાઢમુપસ્કૃતં, તેન સુબહુદ્રવ્યક્ષયઃ-હિઙ્ગુજીરકાદિદ્રવ્યનાશઃ, સ્નેહક્ષયઃ=ઘૃતાદિ-ક્ષયશ્ચકૃતઃ, તત્=તસ્માત્ યદિ સ્વલ્પ મમ 'જાડયાઓ' યાતૃકાઃ, દેવરામાર્યાઃ જ્ઞાસ્યન્તિ, 'તોણં' તર્હિ સ્વલ્પ મમ 'સ્વિસિસ્સંતિ' સ્વિસિષ્યન્તિ-નિન્દાં કોપં ચ કરિષ્યન્તિ, તત્=તસ્માત્ યાવન્મમ યાતૃકા ન જ્ઞાનન્તિ, તાવન્મમ શ્રેયઃ-ઉચિતં એતત્ શારદિકં તિક્તોલાબુકં બહુસંભારસ્નેહકૃતમ્ એકાન્તે 'ગોવેત્તણ' ગોપયિતુમ્, અન્યત્ શારદિકં મધુગાલાબુકં મધુરતુમ્બીફલં યાવત્ સ્નેહાવગાઢમુપસ્કર્તુમ્। एवं

કી નિઘૌલી કિસી મનુષ્ય કી દૃષ્ટિ મેં આદર પાને યોગ્ય નહીં હોતી હૈં ડસી પ્રકાર મેં બી જનોં દ્વારા અનાદરણીય બની હૈં। જો મૈને શરદ કાલિક અથવા સરસ હસ તુંબી ફલ કા હિઙ્ગુ, જીરકાદિ દ્રવ્યોં સે યુક્ત ઓર ઘૃતાદિ સે યુક્ત શાક બનાયા હૈં (સુબહુદ્રવ્વક્ષણ, નેહક્ષણ ય કણ) હસ કે બનાને મેં મૈને વ્યર્થ હી બહુત સે હિઙ્ગુ જીરે મેંધી આદિ દ્રવ્ય કા ઓર ઘૃત કા વિનાશ કિયા હૈં। (તં જહ્ણં મમં જાડયાઓ જાણિસ્સંતિ, તો, ણં મમ સ્વિસિસ્સંતિ) હસ ઘાત કો યદિ મેરી દેવરાની જાનેંગી તો વે મેરે ડપર ગુસ્તા હોગી ઓર મેરી નિંદા કરેંગી। (તં જાવ તાવ મમં જાડયાઓ ણ જાણંતિ તાવ મમં સેયં ઇયં સાહચર્યં તિક્તોલાઢય બહુસંભારણેહ કયં ઇગંતે ગોવેત્તણ) હસલિયે મુજે અવ યહી ઉચિત હૈં કિ મૈં હસ શારદિક તિક્તોલાબુ કે શાક કો જો બહુત સંભાર ઇવં ઘૃત ઢાલકર બનાયા હૈં કિસી એકાન્ત સ્થાન મેં છુપાકર રખ દૈં ઓર

ડાની હીંગાળી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે હું પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી. એટલે કે હું હોઠાની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છું. મેં શરદ કાલિક અથવા સરસ તુંબીના ફળનું હીંગ, છૂંકે વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ઘી વગેરેથી યુક્ત શાક બનાવ્યું છે (સુબહુ દ્રવ્વક્ષણ નેહક્ષણ ય કણ) અને તૈયાર કરવામાં મેં વ્યર્થ હીંગ, છૂંકે, મેથી વગેરે તેમજ ઘી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યર્થ કયો છે (તં જહ્ણં મમં જાડયાઓ જાણિસ્સંતિ, તો ણં મમ સ્વિસિસ્સંતિ) જે મારાં દેરાણીને આ વાતની બાજુ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે થશે અને મારી નિંદા કરશે.

(તં જાવ તાવ મમં જાડયાઓ ણ જાણંતિ તાવ મમં સેયં ઇયં સાહચર્યં તિક્તોલાઢય બહુ સંભારણેહકયં ઇગંતે ગોવેત્તણ)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિક્તોલાબુ (કડવી તુંબી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ઘી નાખીને વધારવામાં આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ (અન્ન સાહચર્ય

संपेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य तत् शारदिकं यावद् तित्कालावुकं गोपयति=कचित् समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिकं मधुरालावुकमुपस्करोति=रन्धयति शेषवारादिभिः संस्करोति । तेषां ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगतानां निजनिजासने-सुखोपविष्टानां तद् विपुलमशनपानं खाद्यं स्वाद्यं परिवेषयति=तेषां भोजनावसरे भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः । ततः खलु ते ब्रह्मणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

उसके स्थानपर (अन्नं सालइयं मधुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्ख-डेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मैथी का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनालैं (एवं संपेहेइ, संपेहिता तं सालइ य जाव गोपेइ अन्नं सालइयं मधुरालाउयं उवक्खडेइ तेसि महणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाणं तं विपुलं असणं ४ परिवे-सेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी तुंबड़ी के बहुत संभार एवं घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी - का शाक हींग जीरे और मैथी का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया । इनने में वे तीनों ब्राह्मण स्नान आदि से निबट कर भोजन शाला में आकर अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये । उनके बैठते ही उसने उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार थालों में परोसा (तएणं ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरगया समाणा आयंता चोक्खा परम सुइ-

मधुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए) भील शारदिक भीडी तुंबडीतुं भी उपर तरी रह्लुं छे अबुं शाक हींग, अइ अने मेथीमां वघारीने बनाउ.

(एवं संपेहेइ, संपेहिता तं सालाइ य जाव गोपेइ, अन्नं सालइयं मधुराला-उयं उवक्खडेइ, तेसि माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाणं तं विपुलं असणं ४ परिवेसेइ)

आ जतनो तेहे विचार कथी, विचार करीने ते शारदिक कडवी तुंब-डीना सरय धीमां वघारेखा शाकने ओक तरइ छुपावीने भूडी दीधुं अने भील शारदिक भीडी तुंबडी-दूधी-तुं हींग, अइ अने मेथीना वघार करीने उपर धी तरतुं शाक बनावुं. ओटलाभां तो तेओ वहे प्पाहणो स्नान वगेरेथी परवारीने बोअनशायाभां आवीने पोतपोताना आसन उपर शांतिथी ओसी गया. तेमने ओसतां ज तेहे तेओने अशन वगेरे इय थारे जतनो आहार थाणीमां भीरस्थो.

१४२

जाताधर्मकथासूत्रे

भुक्तोत्तरागताः भोजनानन्तरं बहिर्गताः सन्तः 'आयंता' आचान्ताः कृतचुलकाः 'चोक्खा' चोक्षाः=प्रक्षालितहस्तमुखाः परमशुचिभूताः 'सकम्मसंपउत्ता' स्वकर्मसंप्रयुक्ताः=स्वस्वकार्यसंलग्ना जाताश्चप्यभवत् । ततः खलु ताः ब्राह्मण्यः स्नाताः यावत् ब्रह्मालंकारविभूषितास्तद् विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आहारयन्ति=आहारं कुर्वन्ति भुञ्जते स्म । आहत्य, यत्रैव स्वकानि स्पृकानि गृहाणि=आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वकर्मसंप्रयुक्ता जाताः ॥ सू० १ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समणं धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नामं नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था) आहार जब परोसा जा चुका—तब उन सघने उसे खाया पीया—और खा पीकर जब वे निपट चुके तब उन्होंने कुट्टा आदि कर अपने मुँह का प्रक्षालन किया—और हाथों को साफ़ कर वे अपने २ कार्य में लग गये। (तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारेत्ति, आहारित्ता जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवागच्छन्ति उवागच्छित्ता सकम्म संपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्रह्मणियोंने जो कि पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेश-भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाया—और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में चली गईं—वहाँ जाकर अपने २ वे सब काममें लग गईं ॥ सूत्र १ ॥

(तएणं ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयंता, चोक्खा परमसुद्ध भूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था)

आहार न्याये पीरसाई गये। त्याये तेओ ब्रह्मे न्य्या अने नभी पर-बारीने डोगणा वगेरे करीने ढाथ भों साई कथा अने ढाथ भों साई करीने तेओ ब्रह्मे पोतपोताना कामभों परोवाई गया।

(तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारित्ता जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ)

त्यारणा ते ब्रह्मणीओओ—के न्येओओ पहेलां स्नान करीने पोताना शरीरने सुंदर वओथी शङ्खगार्थुं डतुं—ते पुण्ण प्रभाषुमां अनाववाभां आवेडो अशन वगेरे ३५ बार नतने आहार कथो। आहारथी परवारीने तेओ पोतपोताना वासववनमां नती रही अने त्यां न्धने तेओ सवे पोतपोताना कामां परोवाई गईं ॥सू०१॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति २ अहापडिरुवं जाव विहरंति,
 परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं
 तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे
 ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ,
 तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए
 पोरिसिए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसा-
 मी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहिता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ
 जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे
 जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं
 सा नागसिरी माहणी धम्मरुईं एजमाणं पासइ पासित्ता
 तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्त-
 कडुयस्स पटुवणट्टयाए हट्टुट्टा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव
 भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्त-
 कडुयं च बहुसंभारसंभियं णेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगा-
 रस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुईं
 अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ
 पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं
 पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूग्गसामंते अन्नपाणं
 पडिलेहेइ पडिलेहिता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं
 ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं

અભિભૂયા સમાણા તઓ સાલઙ્યાઓ જાવ નેહાવગાઢાઓ
 ઇગં વિદુણં ગહાય કરયલંસિ આસાણ્ઙ । તિત્તગં ત્વારં કઢુયં
 અસ્વજ્જં અભોજ્જં વિસભૂયં જાણિત્તા ધમ્મરૂઙં અણગારં એવં
 વયાસી-જઙ્ગણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! એવં સાલઙ્યં જાવ
 નેહાવગાઢં આહારેસિ તો ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ
 વવરોવિજ્જસિ, તં મા ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! ઇમં સાલઙ્યં
 જાવ આહારેહિ, મા ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવ-
 રોવિજ્જેહિ, તં ગચ્છ ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! ઇમં સાલઙ્યં
 ઇગંતમણાવાણ્ અચ્ચિત્તે થંડિલે પરિટ્ઠવેહિ પરિટ્ઠવિત્તા અન્નં
 ફાસુયં ઇસણિજ્જં અસણંપાણં સ્વાહમં સાહમં પઢિગહિત્તા
 આહારં આહારેહિ ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—‘ તેણં કાલેણં ’ ઇત્યાદિ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ધર્મઘોષા
 નામ સ્થવિરા યાવત્-વહુપરિવારાઃ-વહુસાધુપરિવારેણ સદ્વિતા યત્રૈવ ચમ્પા નામ
 નગરી, યત્રૈવ સુભૂમિભાગપુદ્વાનં તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, અત્ર ‘ ધર્મઘોષા ’ ઇતિ વહુ-
 વચનમાદરાર્થ પ્રયુક્તમ્, ઉપાગત્ય યથા પ્રતિરૂપં યાવત્-અવગ્રહમવગૃહ્ય સંયમેન

તેણં કાલેણં તેણં સમણં ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તેણં કાલેણં તેણં સમણં) ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં
 (ધમ્મઘોસા નામ થેરા જાવ વહુપરિવારા જેણેવ ચંપા નામં નયરી જેણેવ
 સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છઙ, ઉવાગાચ્છિત્તા અહાપઢિરૂવં
 જાવ વિહરંતિ-પરિસા નિગ્ગયા, ધમ્મો કહિઓ પરિસા પઢિગયા-તણં
 તેસિ ધમ્મઘોસાગે થેરાણં અંતેવાસી ધમ્મરૂઙં નામ અણગારે ઓરાલે

(તે ણં કાલેણં તેણં સમણં) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તેણં કાલેણં તેણં સમણં) તે કાલે અને તે સમયે
 (ધમ્મઘોસા નામ થેરા જાવ વહુપરિવારા જેણેવ ચંપા નામં નયરી જેણેવ
 સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છઙ, ઉવાગાચ્છિત્તા અહાપઢિરૂવં જાવ વિહરંતિ
 પરિસા નિગ્ગયા, ધમ્મો કહિઓ, પરિસાપઢિગયા, તણં તેસિ ધમ્મઘોસાણં થેરાણં

अनेकारधर्ममृतदण्डिणी टी० अ० १६ धर्मरुच्यनगरचरितवर्णनम्

१४५

तपसाऽऽत्मानं भावयन्तो विहरति-आसतेस्म । परिषद् निर्गता धर्मः कथितः= धर्मकथा कथिता । परिषद् प्रतिगता=धर्मकथा श्रवणानन्तरं प्रतिनिवृत्ता । ततः खलु तेषां धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तेवासी धर्मरुचिर्नामानगरः उदारः प्रधानो यावत् स क्षिप्रविपुलतेजोलेख्यः=संक्षिप्ता शरीरान्तः संकोचिता, विपुला=अनेकयोजन-प्रमितक्षेत्रस्थितयस्तुदहनसमर्था, तेजोलेख्या=विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषो येन सः जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ) धर्म घोष नामके स्थविर यावत् अनेक परिवार से युक्त होकर जहाँ चंपा नगरी, ओर उसमे जहाँ वह सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहाँ आये । वहाँ आकर के उन्होंने ने वहाँ ठहरने के लिये अपने कल्पानुसार आज्ञा मांगी बाद मे वे वहाँ संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए ठहर गये । चंपानगरी के ममस्म जन उनको वंदना एवं धर्मकथा सुनाने के लिये वहाँ आये । उन्होंने श्रुतचारित्र रूप धर्मका उपदेश दिया । उपदेश श्रवण कर परिषद् अपने २ स्थान पर पीछे गई । इसके अनन्तर इन धर्मघोष स्थविर के अन्तेवासी जिनका नाम धर्मरुचि अनागर था वड़े उदार प्रकृति के थे विशिष्ट तपस्याओं को किया करते थे-उसके प्रभाव से इन्हें तेजोलेख्या की प्राप्ति हो गई थी और वह तेजोलेख्या इन्होंने अपने शरीर के भीतर संक्षिप्त कर रक्खी थी इस तेजोलेख्या का यह स्वभाव होता है कि जब वह शरीर से बाहिर निकलती है तो अनेक योजन प्रमित क्षेत्र में रही हुई वस्तुओं को भस्मकर देती है । मास क्षपण की उपवास रूप तपस्या अन्तेवासी धर्मरुचि नाम अनागारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणं विहरइ

धर्मघोष नामका स्थविर पोताना घण्टा परिवारेनी साथे न्यां अ'पा नगरी अने तेमां पणु न्यां ते सुभूमिभाग नामे उद्यान હતું ત્યાં આગ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે ત્યાં રોકાવાની પોતાના આચાર મુજબ આજ્ઞા માંગી. ત્યારપછી તેઓ ત્યાં પોતાના આત્માને તપ અને સંયમથી ભાવિત કરતાં રહેતા લાગ્યા. અ'પા નગરીના બધા ઢોઢા તેમનાં વંદન તેમજ ધર્મકથા શ્રવણ માટે ત્યાં આગ્યા તેઓશ્રીએ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને ઢોઢા પોતપોતાના નિવાસ સ્થાને જતા રહ્યા. ત્યારપછી ધર્મઘોષ સ્થવિરના અન્તેવાસી-એમનું નામ ધર્મરુચિ અનાગાર હતું, જેઓ ખૂબ જ ઉદાર પ્રકૃતિના હતા, વિશિષ્ટ તપસ્યાઓ કરતા રહેતા હતા. જેના પ્રભાવથી એમણે તેજોલેશ્યા મેળવી હતી અને તેજોલેશ્યાને તેમણે પોતાના શરીરમાં જ સંકોચી રાખી હતી, આ તેજો-લેશ્યાને પ્રભાવ આ જાતનો હોય છે કે બ્યારે તે શરીરની બહાર નીકળે છે ત્યારે ઘણા યોગનો સુધીના ક્ષેત્રમાં મૂકેલી વસ્તુઓને ભસ્મ કરી નાખે છે-માસક્ષપણની ઉપવાસ રૂપ તપસ્યાથી તેઓ

१४४

माताधर्मोपनिषद्

तथा, मास=त्रिंशद्द्वोरात्रात्मकं कालं मासेन=मासक्षणणेन मासोपवासरूपवत् कर्मणा 'स्वममाणे' क्षययन्=याययन् विहरति । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो मासक्षणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां 'सज्जयं' स्वाध्यायं सूत्रपाठरूपं करोति, द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानम् सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यायति-करोति, एवं यथा गौतम-स्वामी, तथैव गौतमस्वामीवत् तृतीयपौरुष्यां भाजनवस्त्राणिप्रमार्जयति, प्रमार्ज्य भाजनानि 'उग्गाहेह' अवगृह्णाति, अवगृह्य यत्रैव धर्मघोषस्थविरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथैव श्रीमहावीरस्वामीवत् गौतमस्वामिवदेव धर्मघोषं स्थविरमापृच्छति,

से ये अपने त्रिंशत् अहोरात्रात्मक काल को उस समय ध्यतीत कर रहे थे । अर्थात् एक महीने की तपस्या इन्होंने उस समय कर रखे थे- (तएणं से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाण पोरिसीए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेह, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ, जाव चंपाए नयरीए उच्च नीय मज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ) ये धर्मरुचि अनगार मासक्षण की पारणा के दिनप्रथम पौरुषी में सूत्रपाठ रूप स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषी में सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान और तृतीय पौरुषी में गौतम स्वामी की तरह वस्त्रपात्रों का प्रमार्जन करते । इस तरह इन्होंने तृतीय पौरुषी में वस्त्र पात्रों का प्रमार्जन कर अपने पात्रों को उठाया और उठकर ये धर्मघोष स्थविर के पास गये ।

पोताना त्रिंशत् अहोरात्रात्मक कालने ते समये पसार डरी रह्हा डता-ओट्ठे डे तेओ ते समये ओक मासनी तपस्या डरी रह्हा डता.

(तएणं से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाण पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेह, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ, जाव चंपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ)

धर्मरुचि अनगार गौतम स्वामीनी जेम प्रथम पौरुषीमां सूत्रपाठ रूप स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषीमां सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान अने तृतीय पौरुषीमां वस्त्र अने पात्रानुं प्रमार्जन करता डता, मास क्षणणुना पोताना पारणुना द्विसे पणु तेओओ तृतीय पौरुषीमां वस्त्र-पोतानुं प्रमार्जन डरीने पोताना पात्राने वीधा अने छधने तेओ धर्मघोष स्थविरनी पासो गया. जेम गौतम

अजगारधर्मोत्तमविणी टी० अ० १६ धर्मरुच्यनगरचरितवर्णनम्

१४३

यावत्-चंपायां नगर्यां पुच्छनीचमध्यमकुलानि यावदटन् यत्रैव नागश्रिया ब्राह्मण्या
गृहं तत्रैवानुप्रविष्टः ।

ततः खलु सा नागश्री ब्राह्मणी धर्मरुचिमनगारम् एममानम्-आगच्छन्तं
पश्यति, दृष्ट्वा तस्य 'सालइयस्स' शारदिकस्य तित्तकडुकस्य=तित्तकडुकतुम्ब-
कस्य बहुसंभारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य 'पट्टवणट्टयाए' प्रस्थापनार्थं=परिष्ठा-
पनार्थं हृष्टतुष्टा 'उट्टाए' उत्थया=उत्थानक्रिया उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव भक्तगृहं
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तद् शारदिकं तित्तकडुकतुम्बकं बहुसंभारसंभृतं
स्नेहावगाढं धर्मरुचेरनगारस्य 'पडिग्गहंसि' पत्तग्रहे-पात्रे, सर्वमेव 'निसिरइ'

जिस प्रकार गौतम स्वामी श्री महावीर स्वामी से पूछकर आहार लेने
के लिये जाते थे उसी प्रकार इन्होंने धर्मघोष स्थविर से आहार लाने
के लिये आज्ञा मांगी । आज्ञा प्राप्तकर ये चंपानगरी में उच्च नीच एवं
मध्यमकुलो में भ्रमण करते हुए जहाँ नागश्री ब्राह्मणी का घर था वहाँ
गये । नागश्री ब्राह्मणी ने इन्हें ज्योंही आते हुए देखा (पासित्ता तस्स
सालइयस्स बहु संभारसंभियस्स जेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पट्टवण-
ट्टयाए हट्ट तुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जेणेव भत्तवरे तेणेव उवागच्छइ)
स्योंही यह बहुसंभार संभृत एवं स्नेहावगाढ उसकडवी तुंबडीका आहार
देने के लिये उत्थान क्रिया द्वारा-उठी-अर्थात् अपने में रही हुई उठने
की शक्ति से उठी और हृष्ट तुष्ट होती हुई जहाँ भोजन-गृह था वहाँ
गई । (उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं च बहुसंभारसंभियं जेहा-
वगाढं धर्मरुइयस्स अजगारस्स पडिग्गहंसि सत्थमेव निसिरइ) वहाँ

स्वामीने पूछीने आहार लाववा भाटे नीकगता हुता तेमज तेओओ पणु
आहार लाववा भाटे धर्मघोष स्थविरनी पास आज्ञा मांगी. आज्ञा भेजवीने
तेओ थंपा नगरीमां उच्यनीय अने मध्यम कुलोमां भ्रमण करतां जथां
नागश्री ब्राह्मणीनुं घर छतुं त्यां गया. नागश्री ब्राह्मणीओ तेओने आवता जेथा
(पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स जेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स
पट्टवणट्टयाए हट्टतुट्टा उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता जेणेव भत्तवरे तेणेव उवागच्छइ)
त्यारे तरतज सरस वधादेवो धी तरतो कडवी तुंबडीनेओ आहार आपवा
भाटे उत्थान क्रिया वडे जेली थर् अटले के पोतानामां रहेवी जिमा यवानी ताकातथी
ते जेली थर् अने हृष्ट तेमज तुष्ट थती जथां लोअनशाणा हुती त्यां गई.

(उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं च बहुसंभारसंभियं जेहावगाढं ध-
र्मरुइयस्स अजगारस्स पडिग्गहंसि सर्वमेव निसिरइ)

निष्कृति=परिष्ठापयति । ततः खलु स धर्मरुचिरनगरः 'अहापज्जत्तं' यथा पर्याप्तम्-उदरपूर्तये पूर्णमेतद् इति कृत्वा=इति मनसि विभाव्य, नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहात् प्रतिनिष्कामति-निर्गच्छति प्रतिनिष्कम्य चम्पाया नगरीं मध्यमन्धेन प्रति-निष्काम्यति प्रतिनिष्कम्य यत्रैव सुभूमिभागमुद्यानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धर्म-घोषस्य स्थविरस्य 'अदूरसामन्ते'=नातिदूरे नातिसमीपे, अन्नपात्रं 'पडिलेहेइ' प्रति लेखयति प्रतिलेख्य अन्नपात्रं करतले पात्रं कृत्वा प्रतिदर्शयति । ततः खलु ते धर्मघोषाः स्थविरास्तस्य शारदिकस्य तित्तकटुतुम्बकस्य यावन् स्नेहावगाढस्य गन्धेनाऽभि-भूतासन्तस्तस्मान्छारदिकाद् यावद् स्नेहावगाढादेकं बिन्दुकं गृहीत्वा करतले कृत्वा आस्वादयति । तित्तकं क्षारं कटुकम् अस्वाद्यमभोज्यं विषभूतं ज्ञात्वा धर्म-

जाकर उसने उस शारदिक कडवी तुंबडी का बहुत संभार संभृत एवं स्नेहावगाढ शाक धर्मरुचि अनगर के पात्र में सब का सब डाल दिया (तएणं धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्तिकट्टु णागसिरीए माह-णीए गिहाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद वे धर्मरुचि अनगर " यह उदर पूर्ति के लिये पर्याप्त है " ऐसा मन में समझ कर नागश्री ब्राह्मणी के घर से बाहर निकले पडिनिक्खमिता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे - तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामन्ते अन्नपात्रं पडिलेहेइ, पडिले-हित्ता अण्णपात्रं करयलंसि पडिदंसइ, तएणं से धम्मघोसा थेरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गन्धेणं अभिभूया समाणा ताओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ)

त्यां जर्धने तेणु ते शारदिक कडवी तू'जडीतु' भूण ज सरस रीते वधा-
रेतुं तेभज धी तरतुं शाक लई आवी अने त्थारपछी धर्मरुचि अनगारना
पात्रमां भधुं नाभी दीधु.

(तएणं धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु णागसिरीए महिणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ)

त्थारपछी ते धर्मरुचि अनगार " आ उदर पोषणु भाटे पर्याप्त छे "

अेतुं जण्णिने नागश्री ब्राह्मणीना घेरथी जहार नीकथ्या.

(पडिनिक्खमिता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमि-
भागे उज्जाणे-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामन्ते अन्न-
पात्रं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अण्णपात्रं करयलंसि पडिदंसइ, तएणं से धम्म-
घोसाथेरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गन्धेणं अभिभूया समाणा ताओ
सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ)

સનનારવર્તનનુવર્તિની ટી૦ મ૦ ૧૬ ધર્મરુચનનારવરિતવર્તનમ્

૧૪૧

રુચિમનનારમેવમવદન્ન યદિ સ્વલ્લ ત્વં હે દેવાનુપ્રિય । એતદ્ શારદિકં યાવત્-
તિક્તકટુરુતુમ્બકં યાવત્ સ્નેહાવગાઢમ્ આહારયસિ=આહારં કરિષ્યમિ, તર્હિ સ્વલ્લ
સ્વમકાલે એવ જીવિતાદ્ વ્યપરોપિષ્યસે' એતદ્દશનેન મરણમવશ્યં પ્રાપ્સ્યસીત્યર્થઃ ।
તત્=તસ્માત્ મા સ્વલ્લ ત્વં હે દેવાનુપ્રિય ! એતદ્ શારદિકં યાવદાહારય, મા સ્વલ્લ

નિકલ કર ચંપાનગરી કે બીચો બીચસે હોકર ચલ દિયે સો જહાં સુભૂ-
મિભાગ નામ કા ઉદ્યાન ધા વહાં આ ગયે । વહાં આકર વે અપને આ-
ચાર્ય ધર્મઘોષ સ્થવિર કે પાસ આયે વહાં આકર ઉન્હોને ભિક્ષામૈં પ્રાપ્ત
હુઆ આહાર બતાયા ઓર બતાને કે બાદ ઉસ શારદિક કડવી તુંબડી
કે યાવત્ સ્નેહાવગાઢ શાક કી ગંધ સે અભિભૂત હોતે હુએ ઉન ધર્મઘોષ
આચાર્ય ને ઉસ શારદિક યાવત્ સ્નેહાવગાઢ શાક મૈં સે એક બિન્દુ માત્ર
કો અપને હાથ કી હથેલી પર રખ કર ચઘા (તિત્તગં સ્વારં કટુયં
અલ્પજ્જં અમોજ્જં વિસમ્ભૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુહં અણગારં એવં વયાસી-
જ્ઞણં તુમં દેવાણુપ્પિયા । એયં સાલહયં જાવ ને હાવગાઢં આહારેસિ તો
ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ) ચઘતે હી “ યહ
તિક્ત હૈં ક્ષાર સે યુક્ત હૈં કટુક હૈં અલ્પાવ એવં અમોજ્જ હૈં તથા વિષભૂત
હૈં ” એસા જાનર ધર્મરુચિ અનગાર સે ઉન્હોને એસા કહા હે દેવાનુ
પ્રિય ! યદિ તુમ શારદિક કડવી તુંબડી કે ઘટ્ટુ સંભોર સંભૂત એવં
સ્નેહાવગાઢ ઇસ શાક કા આહાર કરોગે-તો નિશ્ચય સે વિના સ્તન્યુ કે

નીકળીને ચંપા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતાં ત્યાં સુભૂમિભાગ
નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ
સ્થવિરની પાસે આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેમણે ભિક્ષામાં પ્રાપ્ત થયેલા
આહારને બતાવ્યો અને બતાવ્યાને તે શારદિક કડવી તુંબડીના સરસ વધારેલા
ધી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતાં તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક
સરસ વધારેલા ધી તરતા શાકને હથેળી ઉપર મૂકીને આજીવું.

(તત્તગં સ્વારં કટુયં અલ્પજ્જં અમોજ્જં વિસમ્ભૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુહં અણગારં
એવં વયાસી-જ્ઞણં તુમં દેવાણુપ્પિયા । એયં સાલહયં જાવ નેહાવગાઢં આહારેસિ
તો ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ)

આપતાં જ “ આ તિક્ત છે, ખાર છે, કટુ છે, અખાદ તેમજ અલોભ્ય
છે તથા વિષભૂત છે ” આવું બાણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે શારદિક કડવી તુંબડીના સરસ વધારે
લા ધીતરતા શાકનો આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે ક્રમોતે મરી જશો.

૧૫૦

જાતાધર્મકથાકલ્પ

સ્વમકાલેવ જીવિતાદ વ્યપરોધ્યસ્વ=મા મિયસ્વ । તત્=તસ્માદ ગચ્છ સ્વલુ ત્વં
 હે દેવાનુપ્રિય । इदं शारदिकं 'एगंतमणावाए' एकान्तेऽनापाते=एकान्ते=
 निर्जनस्थाने, अनापाते=आपातः-द्वीन्द्रियादिप्राणिनां संयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते=
 जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिद्वेदि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्यत् प्रासुक्येषणीयं=
 द्वाचत्वारिंशदोपरहितं, शुद्धम्-अशनपानखाद्यस्वाद्यम् प्रतिगृह्य आहारमाहारया॥सू० २।

મૂલ્ય-તણાં સે ધમ્મરુદ્ધ અળગારે ધમ્મધોસેણં થેરેણં एवं
 વુત્તે સમાજે ધમ્મધોસસ્સ થેરસ્સ અંતિયાઓ પઢિનિક્કલમઇ,
 પઢિનિક્કલમિત્તા સુભૂમિભાગાઓ ઉજ્જાણાઓ અદૂરસામંતે થંઢિહં

મરજાઓમે-(તં મા ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા । इमं सालङ्ग्यं जाव आहारेहि
 मा णं तुमं अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जहि तं गच्छणं तुमं
 देवाणुप्पिया । इमं सालङ्ग्यं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले पडिद्वेदि,
 परिद्वित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडि-
 गाहेत्ता आहारं आहारेहि) इसलिये हे देवानुप्रिय ! तुम शारदिक
 कड़वी तुंवडो के शाक किसी एकान्त स्थानमें कि जहां द्वीन्द्रियादि
 प्राणियोंको संचरण नहीं—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परि-
 ष्ठापना कर आओ । और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एषणीय ४
 ४२ दोषों से रहित शुद्ध अशन, पान खाद्य स्वाद्य रूप दूसरे आहार
 को लेकर भोजन कर लो ॥ सू० २ ॥

(તં માણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! इमं सालङ्ग्यं जाव आहारेहि माणं तुमं अकाले
 चैव जीवियाओ ववरोविज्जहि तं गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालङ्ग्यं एगं-
 तमणावाए अचित्ते थंडिले पडिद्वेदि, परिद्वित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं
 पाणं खाइमं साइमं पडिगाहिता आहारं आहारेहि)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ શારદિક તૂંબડીના શાકને ખાશે નહિ
 તેથી અકાળે તમારૂં મરણ પડ્યું થશે નહિ. માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ
 આ શારદિક કડવી તૂંબડીના શાકની કેઈપણુ એકાંત-નિર્જન સ્થાનમાં કે બ્યાં
 દ્વિન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનું સંચરણ હોય નહિ અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ
 ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એષણીય ૪૨
 દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, ખાદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજા આહાર લાવી તે
 આહાર થકણુ કરો. ॥ સૂત્ર “ ૨ ” ॥

अणगारधर्माभूतवर्णिणी टीका० अ० १६ धर्मरुद्धयलभारवितर्णनम् १५१

पडिलेहेइ, पडिलेहिता तओ सालाइयाओ एणं विंदुगं गहेइ
 गहिता थंडिलंसि निसिरइ तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडु-
 यस्स बहुनेहावगाढस्सगंधेण बहूणि पिपीलियासहस्साणि पाउ-
 ँभूयाइं जा जहा य णं पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले
 चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ तएणं तस्स धम्मरुइस्स अणगा-
 रस्स इमेयारूवे अज्झरिथए ५ जाव ताव इमस्स सालइयस्स
 जाव एणंमि विंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलियासहस्साइं
 ववरोविज्जांति तं जइ णं अहं एयं सालइयं थंडिलंसि सव्वं
 निसिरामि तएणं बहूणं पाणाणं ४ वहकारणं भविस्सइ, तं
 सेयं खलु ममेयं सालइयं जावगाढं सयमेव आहारेत्तए, मम
 चेव एएणं सरिरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहिता मुह-
 पोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहिता ससीसोवरियं काथं पमज्जेइ२ तं
 सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतंणं अ-
 प्पाणेणं सव्वं सरिीरकोट्टंसि पक्खिवइ, तएणं तस्स धम्मरुइस्स
 तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेण
 परिणममाणंसि सरिीरगंसि वेयणापाउंभूया उज्जला जाव दुरहि-
 यासा, तएणं से धम्मरुची अणगारे अथामे अवले अवीरिए
 अपुरिसक्कारपरक्कमे आधारणिज्जमित्तिकट्टु आयारभंडगं एणंते
 ठवेइ ठवित्ता थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहिता दब्भसंधारगं
 संधारेइ संधारित्ता दब्भसंधारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुरत्थाभि-
 मुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं वयासी-नमोऽत्थु

१५२

शाताधर्मकथासूत्रे

णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं
 मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं, पुठ्विपि णं मए धम्म-
 घोसाणं थेराणं अंतिए सव्वेपाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए
 जाव परिग्गहे, इयाणिपि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं
 सव्वं पाणाइवाइं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जाव-
 जीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामिति-
 कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥ सू० ३ ॥

टीका—ततः खलु स धर्मरुचिरनगारे धर्मघोषेण स्थविरैर्णैवमुक्तः सन् धर्म-
 घोषस्य स्थविरस्यान्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्कम्य सुभूमिभागो-
 यानाद् अदूरसामन्ते=नादिदूरे नातीसमीपे स्थण्डिलं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य
 ततः=स्माद् शारदिकान् तित्तकडुमात् तुम्बकादेकं बिन्दुकं गृह्णाति, गृहीत्वा
 स्थण्डिले=भूमौ 'निसरइ' निस्तृजति=परिष्ठापयति । ततः खलु तस्य शारदिकस्य

तएणं से धम्मरुई अणगारे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसे णं
 थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ) वे
 धर्म रुचि अनगार धर्म घोष से इस प्रकार कहे जाने पर धर्मघोष के
 पास से चले आये (पडिनिक्खमिस्सा सुभूमिभागाओ उज्जागाओ
 अदूर सामन्ते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहिस्सा तओ सालइयाओ एगं बिंदुगं
 गहेइ, गहिस्सा थंडलंसि निसरइ, तो णं तस्स सालइयस्स तित्त कडुय-

त एणं से धम्मरुई अणगारे इत्यादि

टीकार्थ—(त एणं) त्थारपथी

(से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स
 थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ)

तो धर्मरुचि अनगार धर्मघोषनी आ वात सांखणीने तेमनी पासेथी
 व्यापना रह्या.

(पडिनिक्खमिस्सा सुभूमिभागाओ उज्जागाओ अदूरसामन्ते थंडिलं पडिले-
 हेइ, पडिलेहिस्सा तओ सालइयाओ एगं बिंदुगं गहेइ, गहिस्सा थंडिलंसि निसरइ,
 तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाइस्स गंधेणं बहूणि पिशीलिगा

अनगारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० अ० १६ अर्धद्वयनगारचरितनिरूपणम्

१५३

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसंभारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-
सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'णं' तं=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य
बिन्दुकं पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ"
जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो विद्युज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपी-
लिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्या-
त्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलाषरूपः, कल्पितः=
कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः संकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य
शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् बिन्दुके प्रक्षिप्ते सति अनेकानि
पिपीलिकासहस्राणि 'ववरोविज्जंति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो विद्युज्यन्ते म्रियन्ते ।

स्स बहुस्नेहावगाढस्स गन्धेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाहं
जा जहायणं पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले खेव जीवियाओ ववरो
विज्जइ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर
और न अति समीप भूमि की प्रतिछेखना की । प्रतिछेखना करके फिर
उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुंबडी के शाक में से एक बिन्दुमात्र
शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया । तो इतने में ही
शारदिक तिक्तकटुवी तुंबडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से
वहां हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई । उनमें से जिस कीड़ीने
जिस समय उसे खाया वह कीड़ी उसी समय वहां मर गई । (तएणं
तस्स घम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इम-
स्स सालइयस्स जाव एगंमि बिन्दुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइ पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाहं जा जहायणं पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले खेव
जीवियाओ ववरोविज्जइ)

अने आधीने तेमहे सुभूमिभाग उद्यानथी वधारे इर पणु नहि अने
वधारे नल्लक पणु नहि जेवा स्थाने भूमिनी प्रतिछेपना करी, प्रतिछेपना
करीने तेआओ ते शारदिक-तिक्त कटवी तूणडीना शाकमांथी ओक दीपा नेटवुं
शाक लीधुं अने लधने ते भूमिभाग उपर नाथी दीधुं, नाथतांनी साथे
त्यां शारदिक तिक्त-कटवी तूणडीना थी तरता शाकनी सुवासथी इअरे कीडीओ
ओकडी थरुं गर्ह, तेआमांथी ने ने कीडीओ ते शाकने आधुं इतुं ते ते तरतव
त्यां मरी गर्ह.

तएणं तस्स घम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इम-
स्स सालइयस्स जाव एगंमि बिन्दुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइ पिपीलिया सहस्साइ

તત્=તસ્માદ્ यदि खल्वहमेतत् शारदिकं 'थंडिलंसि' स्थण्डिले=भूमौ सर्वं
'निसिरामि' निसृजामि=परिष्ठापयामि, 'तों' तर्हि खलु बहूनां प्राणानां=
प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूतानां जीवानां तत्=तस्माद्
भेयः=भ्रेयस्करं खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकडुकाळाशुकं यावत्-स्नेहावगाढं स्वय-
मेव आहारयितुं=भोक्तुम्, ममैव 'एण' एतेन=तिक्ततुम्बकाहारेण 'सरीरेण'
शरीरं खलु 'णिज्जाउ' निर्यातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'चिकट्टु' इति कृत्वा इति
यनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्याणं कर्तुं

સહસ્સાઈ વવરોવિજ્જંતિ, તં જણં અહં એયં સાલહયં થંડલંસિ સઘ્વં
નિસિરામિ તણં વહુણં પાણાણં ૪ વહુ કારણં ભવિસ્સહ તં સેયં સ્વલુ
મમેયં સાલહયં જાવ ગાઢં સયમેવ આહારેત્તણં) इस तरह पिपीलिकाओ
की विराधना, देखकर धर्मरुचि अनगार को इस प्रकार आध्यात्मिक
यावत् मनोगत संकल्प-विचार हुआ-यहां संकल्पके चिन्तित, प्रार्थित,
कल्पित इन तीन विशेषणों को ग्रहण कर ने के निमित्त सूत्र में ५ का
अंक दिया है। जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबड़ी की शाक की
एक बिन्दु मात्र जमीन पर डालने पर अनेक पिपीलिका सहस्र प्राणों
से वियुक्त हो जाती हैं तो मैं जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबी के
शाकको पूरेरूपमें जमीन पर परिष्ठापित कर दूंगा तो अनेक प्रणियों ४
के वह विराधना का कारण होगा इसलिये मुझे उचित है कि मैं ही
इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबड़ी के इस बहुत मसालेदार एवं स्नेहा-
वगाढ बहुत घृतसे युक्त शाक को स्वयं आहार कर जाऊँ। (मम चेव
एणं सरीरेण णिज्जाउत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता मुहपोत्तियं २

વવરોવિજ્જંતિ, તં જણં અહં એયં સાલહયં થંડલંસિ સઘ્વં નિસિરામિ તણં વહુણં
પાણાણં ૪વહુ કારણં ભવિસ્સહ તં સેયં સ્વલુ મમેયં સાલહયં જાવ ગાઢં સયમેવ આહારેત્તણં

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના જોઈને ધર્મરુચિ અનગારને આ જાતનો
આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો. અહીં સંકલ્પના ચિત્તિત,
પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમાં ૫ નો અંક આપ-
વામાં આવ્યો છે-કે બ્યારે આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂંબડીના શાકના ફક્ત
એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હબરો પ્રાણોથી વિયુક્ત
થઈ બચ છે ત્યારે હું શારદિક કડવી તૂંબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર
નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે. એથી મને
જોજ થોડો લાગે છે કે હું આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂંબડીના આ સરસ
મસાલાવાળા અને ધી તરતા શાકને પોતે જ ખાઈ જાઉં.

अनवारधर्माभूतवर्षिणी टी० अ० १६ धर्मद्वयनगरवरितवर्णनम्

१५५

निधिनुते । संप्रेक्ष्य-‘ मुहपोचियं ’ मुखपोत्तिकां=सदोरकमुखवस्त्रिकां रजोहरणं च प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य ‘ ससीसोवरियं ’ सशीर्षोपरिकं=चरणतलाद् मस्तकोपरि-भागपर्यन्तं कायं=शरीरं, ‘ पमज्जेइ ’ प्रमार्जयति, प्रमार्ज्यं तद् शारदिकं तिक्तकडुकं बहुसंभारसंभृतं स्नेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना सर्वशरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहितमाहारयतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य धर्मरुचेस्तव

पडिलेहेइ, पडिलेहिता ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ पमज्जिता तं सालइयं तिक्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्टंसि पक्खिवइ) मेरा ही शरीर इस तिक्त कडु तुंबडी के आहार से नाश होवे इस प्रकार उन्होंने अपने मनमें बार २ सोचा सोचकर अपने शरीर के निर्याण करने का उन्होंने निश्चय कर लिया । निश्चय करने के अनन्तर सदोरक मुखवस्त्रिका एवं रजोहरण इनकी उन्होंने प्रतिलेखना करके फिर वे चरण तल से लेकर मस्तकोपरिभाग पर्यन्त तक के समस्त अपने शरीर की प्रमार्जना करके उन्होंने उस शारदिक तिक्त कडवी तुंबडी के बहुत मसाला से युक्त एवं स्नेहावगाढ बहुत घी से युक्त समस्त शाक का आहार कर लिया-जिस प्रकार सर्प जब बिल में प्रविष्ट होता है तब बिल के दोनों पार्श्वभागों को स्पर्श नहीं करता हुआ उसमें सीधा प्रविष्ट हो जाता है-उसी तरह वह शाक रूप सर्प भी मुख रूप बिल के दोनों पार्श्वभागों को स्पर्श नहीं करता हुआ सीधा गले से होकर पेट में चला गया । (तएणं तस्स

(मम चेव एणं सरीरेणं जिज्जाउत्ति कड्डु एवं संपेहेइ, संपेहिता मुहपो-चियं २ पडिलेहेइ, पडिलेहिता ससिसोवरियं कायं पमज्जेइ पमज्जिता तं सालइयं तिक्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूणं अप्पाणेणं सव्वं सरीर कोट्टंसि पक्खिवइ)

माइं शरीरं न आ तिक्त कडवी तूँजडीना आहारथी नष्ट थाय. आ रीते तेण्णे पोताना मनमां वारंवार विचार कथी. विचारीने पोताना शरीरने नष्ट करवाने तेमण्णे भक्कम विचार कथी जाइ तेण्णे सदोरक मुखवस्त्रिका अने रजो-हरणुनी तेमण्णे प्रतिलेखना करी. प्रतिलेखना करीने तेमण्णे पगना तजियाथी मांडीने मस्तक सुधीना पोताना आभा शरीरनी प्रमार्जना करी त्यारे तेमण्णे ते शारदिक तिक्त कडवी तूँजडीना सरस मसालावाणा अने उपर घी तरता जथा शाकने आहार करी लीधा. जेवी रीते साय ज्यारे दरमां प्रवेशे छे त्यारे दरना अने पार्श्वभागने स्पर्श कथी वगर तेमां सीधा प्रविष्ट थर्थ जय छे तेमज ते शाक इपी साय पणु भुज इपी दरना अने पार्श्वभाजने स्पर्श वगर सीधु गगामां थधने पेटमां जडु रक्षु.

शरदिकं यावत्-स्नेहावगाढम् आहारितस्य=भुक्तवतः, सतो मुहुर्तान्तरेण परिणम्यमाने=आहारे परिणामे प्राप्ते सति शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, सा कीदृशी ? त्याह-उज्ज्वला=तीव्रा, यावत् 'दुरधियासा' दुरध्यासा=दुरधिसदा-असह्यत्यर्थः । तत्खलु स धर्मरुचिरनगारो ऽस्थामा, हीनपराक्रमः, अबलः=मनोबलरहितः अवीर्यः=हतोत्साहः अपुरुषकारपराक्रमः,=पुरुषार्थहीनः, 'अधारणिज्जमितिकट्टु' आधारणीयमिति कृत्वा-धारयितुमशक्यमिदं शरीरमिति मनसि त्रिचार्य 'आयारभंडगं आचारभाण्डकम्-आचाराय आचारपाठेनार्थं भाण्डकं=भाण्डोपकरणं वस्त्रपात्रादिक धम्मरुहस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तं तरेण परिणममाणसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरधियासा-तएणं से धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरकमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, ठवित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहिता दम्मसंथारगं संथारेइ, संथारित्ता दम्मसंथारगं, दुरुहइ, दुरुहिता पुरत्थाभिमुहे संगलियंकनिसन्ने करयल परिग्गहियं एवं वयासी) शाक उन धर्मरुचि अनगार के पेट में पहुँचते ही एक मुहूर्त के बाद जब वह पचने लगा तब उनके शरीर में उज्ज्वल यावत् दुरधियासा वेदना प्रकट हुई। इस से वे धर्मरुचि अनगार पराक्रम से हीन, मनोबल से विहीन, हतोत्साह होकर पुरुषार्थ रहित बन गये। यह शरीर अब धारण करने से अशक्य हो रहा है ऐसा जब उन्होंने प्रतीत होने लगा तब उन्होंने अपने आचारभाण्डक पंचविध आचार पालने के लिये जो - वस्त्र - पात्रादिक थे उनको एकान्त में रख दिया-रखकर फिर उन्होंने संस्तारकभूमि की

(तएणं तस्स धम्मरुहस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेण परिणममाणसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरधियासा-तएणं से धम्मरुई अणगारे अथामे, अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरकमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, ठवित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहिता दम्मसंथारगं संथारेइ, संथारित्ता दम्मसंथारगं दुरुहइ, दुरुहिता पुरत्थाभिमुहे संगलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं वयासी) शाक ते धर्मरुचिना पेटमां पडोयतां न ओक मुहूर्तं पछी न्यारे तेनुं पायनं शइ थयुं त्यारे तेमनां शरीरमां उज्ज्वल यावत् दुरधियासा वेदना थवा भांडी, तेथी ते धर्मरुचि अनगार पराक्रम वगर, मनोबल वगर हतोत्साही धर्मेने पुरुषार्थ वगर जनी जया। हुवे आ शरीर टडवुं अशक्य थय पडयुं छे ओवी न्यारे तेओने प्रतीति थवा लागी त्यारे तेभण्णे पोताना आचार

अवतारचक्रांशुनवविंशो टीका अ० १६ धर्मरुच्यनगारचरितवर्णनम्

१५७

मित्यर्थः, एकान्ते स्थापयति, स्थापयित्वा स्थण्डिलं=संस्तारकभूमिं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य धर्मसंस्तारकं 'संधारेइ' संस्तृणाति=आस्तृतं करोति संस्तीर्य, धर्म-संस्तारकं दूरोदति=आरोदति, दूरुह पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिग्भिमुखः, 'संपलियं-कनिमन्ने' संपल्यङ्क निपणः=पद्मासनसंनिविष्टः, करतलपरिशृङ्गातं=संयोजितहस्त-तलद्वयं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=स्वमनस्पुक्तवान्,

“ नमोऽस्त्युणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं,—

— नमोऽस्त्युणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं ”
नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः, नमोस्तु खलु धर्मवोषेभ्यः स्थविरैभ्यो मम धर्मान्तर्यभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि दीक्षाग्रहणकालेऽपि खलु मया धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके सर्वः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवं 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-सर्वो मृषावादः सर्वमदत्तादानं सर्वं मैथुनं च प्रत्याख्यातम्, तथा-सर्वः परिग्रहः प्रत्याख्यातः। इदानीं अपि खलु अहं तेषामेव भगवतामन्तिकं सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिग्रहं प्रत्याख्यामि याव-
प्रतिलेखना की प्रतिलेखना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्शनसं-स्तारक को बिछाया-बिछाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा की ओर मुखकर पर्यङ्कासन से उस पर विराजमान हो गये विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़ा ओर मस्तक पर उसकी अंजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे-
(नमोस्त्युणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोस्त्युणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुब्बि पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए जाव परिग्गहे इयानि पि अहं तेमिचेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव

लांउकने-वस्त्र पात्र वगैरेने अंकांतमां भूझी दीधां, भूझ्या आह तेओओ संस्ता-रक भूमिनी प्रतिलेखना करी, प्रतिलेखना करीने तेनी उपर तेमओ इलं संस्ता-रक कथी इलंसंस्तारक पाथरीने तेओ तेनी उपर ओसीने पूवदिशा तरइ मुख करीने पर्यङ्कासनथी तेनी उपर विराजमान थइ गया, विराजमान थइने तेओओ पोताना णने छथेने जेउया अने तेमनी अंजली अनावीने मस्तक उपर भूझी अने पोताना मनमां न कडेवा लाग्या,

(नमोस्त्यु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं नमोस्त्युणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुब्बि पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्गहे, इयानि पि अहं तेमि चेव

૧૫૮

હાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્રે

જીવં, યથા-સ્કન્દકઃ=સ્કન્દકવત્ યાવચ્ચરમૈ-ચ્છવાસૈઃ, 'વોસિરામિતિકદ્દુ' વ્યુત્સજામિ=શરીરં પરિત્યજામિ' इति कृत्वा 'आलोइय पडिक्कंते' आलोचितप्रति क्रान्तः=पूर्वकृतं यदतीचारजातं तदालोचितं, पुनरकरणप्रतिष्ठाया प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्तः=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरणं प्राप्तः ॥सू०३॥

પૂલ્લ-તણં તે ધમ્મઘોસા થેરા ધમ્મરુઢં અળગારં ચિરં
ગયં જાણિત્તા સમણે નિગ્ગંથે સદાવેતિ સદાવિત્તા એવં વયાસી

પરિગ્રહં પચ્ચક્ખામિ જાવ જીવાણ જહા સ્વંદઓ જાવ ચરિમેહિં ઉસ્સા
સેહિં વોસિરામિત્તિ કદ્દુ આલોइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए)
યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ અરિહંત ભગવંતો કે લિયે
મેરા નમસ્કાર હો-ધર્મોપદેશક મેરે ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષસ્થવિર કે
લિયે મેરી નમસ્કાર હો મૈને પહિલે દીક્ષા ગ્રહણ કે સમયે ઉન ધર્મઘોષ
સ્થવિર કે સમીપ સમસ્ત પ્રાણાતિપાત, સમસ્ત મૃષાવાદ, સમસ્ત અદ-
ત્તાદાન, સમસ્ત મૈથુન તથા સમસ્ત પરિગ્રહ જીવન પર્યન્ત પ્રત્યાખ્યાત
કર દિયા હૈ । અવ ખી મૈં ઉન્હીં ભગવંતો કે સમક્ષ સમસ્ત પ્રાણાતિપાત
યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહ કા યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાત કરતા હૂં । યાવત્
અન્તિમ શ્વાસોત્ક સ્કન્દકકી તરહ હસ શરીરકા પરિત્યાગ કરતા હૂં ।
હસ પ્રકાર મન હી મન કહ કર વે ધર્મરુચિ અનાગાર આલોચિત પ્રતિ-
ક્રાન્ત બનકર આત્મસમાધિમેં તહીન હોતે હુણ મરણ પ્રાપ્ત હુવે ॥સૂ०૩॥

ભગવંતાણં અંતિયં સઙ્ગં પાગાइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्राहं पच्चक्खामि जाव
जीवाए जहा स्वंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहि विसिरामित्ति कददु आलोइयपडि-
क्कंते समाहिपत्ते कालगए)

યાવત્ સિદ્ધિગતિ મેળવેલા અરિહંત ભગવંતોના માટે મારા નમસ્કાર છે.
ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે.
પહેલાં દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મેં તે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણા-
તિપાતો, સમસ્ત મૃષાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત
પરિગ્રહોનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું. અત્યારે પણ તે જ ભગવંતોની સામે સમસ્ત
પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનું યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરું છું. જીવ-
નના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરું છું. આ રીતે
પોતાના મનમાં જ કહીને તે ધર્મ-રુચિ અનાગાર આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને
આત્મસમાધિમાં તહીન થતાં મરણ પામ્યા. ॥ સૂત્ર “ ૩ ” ॥

—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमण-
 पारणगंसिं सालइयस्स जाव गाढस्स णिसरणट्ठयाए बहिया
 निग्गए चिरगए तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्म-
 रुइस्स अणगारस्स सच्चओ समंता मग्गणगवेसणं करेह,
 तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता
 धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनि-
 क्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सच्चओ समंता मग्गण-
 गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति उवा-
 गच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं
 जीवविप्पजडं पासंति पासित्ता हा हा अहोअकज्जमितिकट्ठु
 धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेति
 करित्ता धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति गेण्हित्ता जेणेव
 धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता गमणा-
 गमणं पडिक्कमंति पडिक्कमित्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्हे
 तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
 परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सच्च जाव करेमाणे जेणेव
 थंडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव इहं हव्वमागया, तं कालगए
 णं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए, तएणं
 ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति गच्छित्ता
 समणे निग्गंधे निग्गंधीओ य सदावेति सदावित्ता एवं वयासी
 —एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे

पगइभइए जाव विणीए मासं मासेणं अणिविखत्तेणं तवो-
 कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तएणं
 सां नागसिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई
 अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्ठु जाव कालं अणवकंखेमाणे वि-
 हरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नप-
 रियागं पाउणिता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे
 कालं किच्चा उड्डुं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देव-
 त्ताए उववत्ते, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं साग-
 रोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं
 सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं धम्मरुई देवे ताओ
 देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ तं धित्थुणं
 अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाप्पणि
 वोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मास-
 खमणपारणंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चैव जीवि-
 याओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका— तएणं ते ' इत्यादि । ततः खलु=इतश्च ते धर्मघोषाः । धर्मविग-
 धर्मद्विषयगारं विरं गतं बहुकालो गतं ज्ञात्वा श्रवणान् निर्धन्यान् शब्दवन्तः,

तएणं ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन-धर्मघोष
 स्थविरने (धम्मरुई अणगारं) धर्मरुचि अनगार का (विरगयं जाणिता)
 बहुत देर के गये हुए जानकर (समणे निगंथे सदाबैति, महाविता एवं

तएणं ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्वारणाह (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविर (धम्म-
 रुई अणगारं) धर्मरुचि अनगारने (विरगयं जाणिता) महुं वणत्तं अणु-
 गयेसा जाणीने

અનગારઘર્મામૃતવર્ષિણી ટોકા અ૦ ૧૬ ધર્મરુચ્યનગારચરિતવર્ણનમ્

૧૬૧

શબ્દયિત્વા, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः=उक्तवन्तः, एवं खलु हे देवानु-
प्रियाः ! धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकस्य तिक्तकटुकतुम्बकस्य
यावत्-स्नेहावगादस्य ' णिसिरणद्वयाए ' निसृजनार्थं बहिर्निर्गतश्चिरगतः=तस्मिन्
गते सति बहुतरः कालो व्यतीत इत्यर्थः । तत्-तस्माद् गच्छत खलु पूयं हे देवानु-
प्रियाः । धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गेणगवेषणं=सम्यग्गवेषणं कुरुत ।
ततः खलु ते श्रमणा निर्ग्रन्था यावत् प्रतिश्रूयन्ति=तथा करिष्यामीत्युक्त्वा तामाज्ञां
स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य धर्मघोषाणां स्थविशणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनि-

શયાસી-एवं खलु देवानुप्रिया ! धम्मरूई अणगारे मासखमणपारण-
गंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणद्वयाए बहिया निग्गए-चिरगए,
तं गच्छह णं तुब्भे देवानुप्रिया ! धम्मरूइयस्स अणगारस्स सच्चओ
समंता गवेसणं करेह) श्रमण निर्ग्रन्थों को बुलाया । बुलाकर उन्होने
ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार आज मासखमण की
पारणा के दिन शारदिक तिक्त कटुवी तुंबडी का बहु संभार संभृत
शाक कि जिसके ऊपर घृत तैर रहा था लाये थे-मैंने उसे परिष्ठापन के
लिये उन्हें आज्ञा दिया सो वे उसे परिष्ठापन करने के लिये यहाँ
से बाहिर चले गये-गये उन्हें बहुत देर हो गई-वे अभी तक नहीं
आये इसलिये हे देवानुप्रियों ! तुम लोग जाओ और धर्मरुचि
अनगार की सब तरफ चारों दिशाओं में मार्गणा एवं गवेषणा करो ।
(नएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडि सुणित्ता धम्मघोसाणं

(समणे निग्गंथे सदावेति सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवानुप्रिया !
धम्मरूई अणगारं मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणद्वयाए
बहिया निग्गयाए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवानुप्रिया ! धम्मरूइस्स अण-
गारस्स सच्चओ समंता मग्गणगवेसणं करेह)

શ્રમણુ નિર્ગ્રંથાને બોલાવ્યા. બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે
દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણની પારણાના દિવસે શાર-
દિકે તિક્ત કટુવી તુંબડીનું સરસ વધારેલું ઉપર ધી તરતું શાક આહાર માટે
લાવ્યા હતા. તેઓને મેં પ્રતિષ્ઠાપનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન
માટે અહીંથી બહાર ગયા છે. તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે,
હજી તેઓ આવ્યા નથી. એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને
ધર્મરુચિ અનગારની એમરે માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો.

(તएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

જા ૨૧

ऋम्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं=स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य कालकरणस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेरनगारस्य शरीरकं 'निष्पाणं' निष्पाणं=माणरहितं, 'निच्चेट्टं' निश्चेष्टं=चेष्टारहितं 'जवविप्पजहं' जीव विषत्यक्तं=जीवहीनं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा ! हा ! अहो ! इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्टं जातं यद् धर्मरुचिनगारी मृतः, 'तिकट्टु' तिक्कट्टु

थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुहस्स-अणगाहस्स सन्वाओ समंता मग्गणगवेसणं करे माणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स सरीरगं निष्पाणं निच्चेट्टं जीवविप्पजहं पासंति, पासित्ता हा हा अकज्जमिति कट्टु धम्मरुहस्स अणगारस्स परि निव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं-करंति) उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओमें सब प्रकार से मार्गणा गवेषणा की । इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए जहाँ वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था-वहाँ आये वहाँ आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनागार के शरीर को प्राणरहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा । देखकर के सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बड़ा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया ।

थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स सन्वाओ समंता मग्गणगवेसणं करे माणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स, सरीरगं निष्पाणं निच्चेट्टं जीव विप्पजहं पासंति, पासित्ता हाहा अकज्जमिति वट्टु धम्मरुहस्स अणगारस्स परिनिव्वाण वत्तियं काउस्सग्गं करंति)

ते निर्ग्रन्थ श्रमणोऽपि पोताना धर्माचार्यानी आज्ञाने स्वीकार्यी लीधी अने स्वीकारीने तेजो धर्मघोष स्थविरानी पासिथी नीकणीने धर्मरुचि अनगारानी अधी रीते आभेर मार्गणा तेमज्ज गवेषणा करवा लाग्या. आ रीते मार्गणा गवेषणा करतां न्यां ते स्थण्डिल छतुं-धर्मरुचि अनगारना मृत्युतुं स्थान छतुं त्हां आन्या. त्हां आवीने तेजोऽपि धर्मरुचि अनगारना शरीरने निष्पाण निश्चेष्ट अने निर्जिव जेथुं. आ दृश्य जेतानी साथेज्ज तेजोना सुभथी हाय ! हाय ! ना जेठ सूचक शब्दो नीकणी पड्या. तेजो कडेवा लाग्या के आ वट्टुज्ज जेठुं थयुं छे-धर्मरुचि अनगारनुं देहावसान धर्ध गथुं छे. आ

अनगारधर्ममृतवर्णिनी टी० अ० १६ धर्मरुच्यनगारस्वरितवर्णनम्

१६३

इतिकृत्वा-इतिस्वेदं कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवृत्तियं' परिनिव्वाण-
प्रत्ययिकं=परिनिव्वाणं मरणं तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापनं तदपि परिनिव्वाणमेव
तदेव प्रत्ययोहेतुस्य स परिनिव्वाणप्रत्ययिकः तं तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-
त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डकं=वस्त्रपात्रादिकं
गृह्णन्ति-गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य गमनागमनम्=
ईर्ष्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमयादिषुः एवं खलु हे स्वामिन् । वयं सुष्मा-
कमन्तिकान् प्रतिनिष्कामामः=प्रतिनिर्गताः, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वहीं पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायो-
त्सर्ग किया । (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने
उन धर्मरुचि अनागार के आचार भांडको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा
लिया-उठाकर वे जहां धर्मघोष स्थविर थे-वहां आये (उवागच्छित्ता
गमणागमनं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्हे-
तुभं अंतियाओ पडि निखलमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-
रंतेणं धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव
उवा० २ जाव इहं हव्वमागया, तं कालगणं भंते ! धम्मरुई अणगारे
इमे से आयारभंडए - तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं
गच्छति गच्छित्ता समणे निगंथे निगंथोओ य सदावेति-सदावित्ता
एवं वयासी) आकर के उन्होंने ईर्ष्याधिक प्रतिक्रमण किया ।
प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् ! हम लोग
आपके पास से यहां से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

रीते उड़ने तेमणु त्यांअ मृत शरीरने वोसराना इय कायोत्सर्ग कथी.
(करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करीने तेओओ धर्मरुचि अनगारता आचार
भांडकाने तेमअ वस्त्रोने लपटीयां अने लपने जयां धर्मघोष स्थविर उता त्यां आवा.
(उवागच्छित्ता गमणागमनं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी-एवं
खलु अम्हे तुभं अंतियाओ पडिनिखलमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
परिपेरंतेणं धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करमाणे जेणेव थंडिल्ले
तेणेव उवा० जाव इहं हव्व-मागया तं कालगणं भंते ! धम्मरुई अणगारे
इमे से आयारभंडए तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छति
गच्छित्ता समणे निगंथे निगंथोओ य सदावेति-सदावित्ता एवं वयासी)
त्यां आवीने तेमणु ईर्ष्याधिक प्रतिक्रमण कथुं. प्रतिक्रमण करीने तेओ
आ प्रमाणु कडेवा लाव्या के छे स्वामिन् ! अमे दोके अडुईथी आपनी
भासेथी गया अने जधने सुभूमिभाग उद्याननी ओभेर इरतां इरतां धर्मरुचि

‘પરિપેરંતેણ’ પરિપર્યન્તેન=ચતુર્દિક્ષુ પરિભ્રમન્તો ધર્મરુચેરનગારસ્ય ‘સઘ્વજાવ’ સર્વતઃ સમન્તાદ માર્ગણગવેષણં કુર્વન્તો યત્રૈવ સ્થણ્ડિલં તત્રૈવોપાગચ્છામઃ, ઉપાગસ્ય યાવદ્ ઇદં હવ્યમાગતાઃ સ કાલગતઃ સ્વલુ હે ભદન્ત ! ધર્મરુચિરનગારઃ, ઇમાનિ ‘સે’ તસ્ય, આચારભાણ્ડકાનિ । તતઃ સ્વલુ તે ધર્મઘોષાઃ સ્થવિરાઃ ‘પુન્નગણ’ પૂર્વગતે=દૃષ્ટિવાદાન્તર્ગતશ્રુતાધિકારવિશેષે ઉપયોગં ગચ્છન્તિ=લગયન્તિ યદા ધર્મરુચિરાહારમાનેતું નગર્યાં ગતસ્તદા કસ્ય ગૃહે ગતઃ ? કેનેદમાહારંદત્ત’ મિત્યાદિ જ્ઞાતું સ્વકીયોપયોગં નયન્તીત્યર્થઃ, ગત્વા-સ્વકીયોપયોગં લગયિત્વા, શ્રમણાન્ નિર્ગ્રન્થાન્ નિર્ગ્રન્થીશ્ચ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્—એવં સ્વલુ હે આર્યાઃ ! મમાન્તેવાસી=શિષ્યઃ, ધર્મરુચિર્નામાડનગારઃ ‘પગમ્મદ્દણ’ પ્રતિકમદ્રકઃ=પ્રકૃત્વા

દિશાઓં મેં ફિરતે ૨ ધર્મરુચિ અનગાર કી સર્વ પ્રકાર સે માર્ગણ, ગવેષણા કરને લગે । માર્ગણા, ગવેષણા કરતે હુએ હમ લોગ ફિર ઉસ સ્થાન પર પહુંચે જહાં ધર્મરુચિ અનગાર કા શય પડા હુઓ થા વહાં સે અમી ૨ હમ લોગ આરહે હૈં । હે ભદંત ! વે ધર્મરુચિ અનગાર કાલગત હો ગયે હૈં—યે ઉનકે આચાર ભાણ્ડક વસ્ત્ર પાત્ર હૈં । ઇસ કે બાદ ઉન ધર્મઘોષ સ્થવિર ને દૃષ્ટિ બાદ કે અંતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષ મેં અપના ઉપયોગ લગાયા—તો ઉન્હેં યહ જ્ઞાત હો ગયા કિ જબ ધર્મરુચિ આહાર છેને કે લિયે નગરી મેં ગયે તો વે કિસકે ઘર ગયે, કિસ ને યહ આહાર ઉન્હેં દિયા હત્યાદિ । અપને ઉપયોગ સે ઇસ બાત કો જાનકર ઉન્હેંને નિર્ગ્રન્થ શ્રમણોં ઓર નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયોં કો બુલાયા ઓર બુલાકર ઉનસે એસા કહા—(એવં સ્વલુ અજ્ઞો મમ અંતેવાસી, ધર્મરુચિ, જામ

અનગારની બધી રીતે માર્ગણા ગવેષણા કરવા લાગ્યા. માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરતાં અમે લોકો તે જગ્યાએ પહોંચ્યા ત્યાં ધર્મરુચિ અનગારનું મડદું પડ્યું હતું. અમે લોકો અત્યારે ત્યાંથી જ આવી રહ્યા છીએ. હે ભદંત ! તે ધર્મરુચિ અનગાર મરણ પામ્યા છે. તેઓશ્રીના આ આચાર ભાંડક વસ્ત્રપાત્રો છે. ત્યારપછી તે ધર્મઘોષ સ્થવિરે દૃષ્ટિવાદના અંતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષમાં પોતાના ઉપયોગ લગાવ્યો. તેમાંથી તેઓને આ વાતની બાજુ થઈ કે બ્યારે ધર્મરુચિ આહાર લાવવા માટે નગરીમાં ગયા હતા, ત્યારે તેઓ કોના ઘર ગયા હતા, આ આહાર તેમને કોણે આપ્યો હતો વગેરે. પોતાના ઉપયોગથી આ બધી વિગત બાણીને તેમણે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણો. અને નિર્ગ્રન્થ શ્રમણીઓને પોતાની પાસે બોલાવી અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(એવં સ્વલુ અજ્ઞો મમ અંતેવાસી, ધર્મરુચિ જામ અનગારે પગમ્મદ્દણ જાવ

अणगारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० अ० १६ धर्मरुच्यनगारचरितधर्णनम्

१६५

स्वभावेन भद्रकः-सान्तः, यावद्-यावत् करणादिदं द्रष्टव्यम्-‘पगइ उवसंते, पगइ-पगणु कोहमाणमायालोहे, मिउमइवसंपण्णे, आलीणे, भइए, इति । प्रकृत्यु-पशान्तः, प्रकृति प्रतनुक्रोधमानमाया लोमः, मृदु मार्दवसंपन्नः, आलीनः, भद्रकः, इति । विनीतः ‘मासं मासेणं’ मासं व्याप्य मासेन=मासक्षपणनामकेन, अनिक्षि-प्तेन=अन्तरहितेन, अविश्रान्तेनेत्यर्थः तपः कर्मणा विचरन् पारणकदिने यावत्-नागश्रिया ब्राह्मणशृङ्गमनुमविष्टः, ततश्चदनन्तरं सा नागश्री ब्राह्मणी यावत्-शारदिकं तिक्कालावुक्तं ‘निसिरइ’ निसृजनि=पात्रे निक्षिपतिस्म । ततः धर्मरुचि-

अणगारे पगइभइए जाव विणीए मासं मासेणं अणिकिखत्तेणं तवो क-म्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविष्टे तएणं सा नागमिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिप्ति कइहु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरइ, सेणं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पउणिता आलोइयपडिक्कंते समाहि-पत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्डुं सोहम्म जाव सव्वइसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्णत्ता) आर्थो ! खुन्नो वात ऐसी है मेरे अन्ते वासी शिष्य-धर्मरुचि अनगार स्वभाव से ही भद्र परिणामी थे । यावत् शब्द से इस पाठ का यहां संग्रह हुआ है “पगइ उवसंते पगइ पगणु कोहमाणमाया लोहे मिउमइवसंपण्णे आलीणे भइए” । ये अविश्रान्त अंतर रहित-मास नामस्वप्न पारणा करते थे । आज उनके पारणा का दिन था-सो गोचरीके लिये भ्रमण करते हुए ये नागश्री ब्राह्मणीके घर

विणीए मासं मासेणं अणिकिखत्तेणं तवो कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविष्टे तएणं सा नागमिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जमिप्ति कइहु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरइ, सेणं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पउणिता अलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्डुं सोहम्म जाव सव्वइसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्णत्ता) आर्थो ! सांलणो, वात ऐवी छे के भारा अत्तेवासी शिष्य-धर्मरुचि अनगार स्वभावार्थो न लद्र परिणामी छता । यावत् शब्दार्थो अही आ पाठनो संग्रह धयो छे-“पगइ उवसंते” (पगइपगणुकोहमाणमायालोहे मिउमइव संपण्णे आलीणे भइए) तेओ अविश्रान्त-अंतर रहित-(निरंतर) मास अभणु करता रहता छता । आओ तेमनो पारणुनो द्विष छता, तेओ आहार भाटे अभणु करता नागश्री ब्राह्मणीना घेर गया छता । ब्राह्मणीओ शारदिक तिक्त

રનગારો યથાપર્યાપ્તમિતિકૃત્વા=શુધાનિવૃત્તયે પૂર્ણમિતિ મત્વા યાવત્-કાલમ્
 ‘અવળાંલેખમાણે’ અનવકાલસમાણઃ વિદ્ધરતિ, સંખલુ ધર્મરુચિરનગારો બહુનિ
 વર્ષાણિ શ્રમણ્યપર્યાયં પાલયિત્વા, આલોચિત પ્રતિક્રાન્તઃ સમાધિશાપ્તઃ કાલમાસે
 કાલં કૃત્વા ઝર્ધે ‘સોદમ્મ જાવ સન્નવ્વમિદ્દે’ સૌધર્માદયો દ્વાદશદેવલોકાઃ, તત્
 ઉધર્વે નવપ્રૈવેયકાનિ તદુપરિ યાવત્ સર્વાર્થમિદ્દે, મહાવિમાને દેવત્વેનોપપન્નઃ=દેવમત્તં
 માસવાન્। તત્ર=તસ્મિન્ સર્વાર્થસિદ્ધિરિમાને, સ્વલુ ‘અજહણ્ણમણુક્કોસેજં’ અજઘ-
 ન્યાનુત્ક્રુદ્ધેન=જઘન્યોત્ક્રુદ્ધર્વર્જિતેન તત્ર દિ સર્વેણં દેવાનાં સ્થિતિઃ સમાનૈવ ભવતિ ન
 તુ ન્યૂનાદધિકકાલદયા ત્રિયમેતિમાયઃ। ત્રયત્વિંશત્ સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા,
 તત્ર ધર્મરુચેરપિ દેવસ્ય ત્રયસ્ત્રિંશત્ સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા, સંખલુ ધર્મરુચિ-
 ર્દેવસ્તસ્માદ્ દેવલોકાદ્=સર્વાર્થસિદ્ધિરિમાનાદ્ યાવદ્ વ્યુતઃ સન્ યાવદ્ મહાવિદેહે
 વર્ષે સિઙ્ગિહિદ્ધિ’ સેત્સપતિ, સિદ્ધિ પ્રાપ્સ્યતિ। તત્=તસ્માદ્ ધિગસ્તુ સ્વલુ હે
 પહુંચે। યાવત્ ઉત્તને શારદિક તિક્ત કઢવે તુંબે કી શાક અનેક
 પાત્ર મેં બોહરાગા ધર્મરુચિ અનગાર ને ઉત્તનો ક્ષુધાનિવૃત્તિ કે લિપે
 પર્યાપ્તિ માન કર લિયા। અને ધર્મરુચિ અનગારને અનેક વર્ષો તક
 શ્રમણ્ય પર્યાય કા પાલન કિયા ઓર પાલન કરકે આલોચિત
 પ્રતિક્રાન્ત હોકર વે સમાધિ મેં લીન હો ગયે। કાલ અવસર કાલ
 કરકે અવ વે સૌવર્ત આદિ ૧૨ દેવલોકો સે ૪૨ નવપ્રૈવેય
 કો સે મી આગે જો સર્વાર્થસિદ્ધિ નામ કા વિમાન હૈ દિ જિતમેં ૩૩
 સાગર કી સ્થિતિ હૈ-ઓર યહ સ્થિતિ જહાં સવ દેવો કી સમાન હૈં ઉત્તમેં
 ૩૩ સાગર કી સ્થિતિવાલે દેવ હુ! હૈં। “અજહણ્ણમણુક્કોસેજં” જઘ-
 ન્ય ઓર ઉત્ક્રુદ્ધ તેત્રીસ સાગરોપમ કી સ્થિતિ હૈ। (સે ણં ધમ્મરુદ્ધે
 દેવે તાઓ દેવલોકાઓ જાવ મહાવિદેહે-વાસે સિઙ્ગિહિદ્ધિ, તં ધિરત્યુ

કડવી તુંબીનું શાક તેમના પાત્રમાં વહેંચાવું. ધર્મરુચિ અનગારે
 તેને ક્ષુધા નિવૃત્તિ માટે પર્યાપ્ત ભૂતીને તેને સ્વીકારી લીધું. તે ધર્મરુચિ
 અનગારે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રાવણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું છે અને
 પાલન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થઈને તેઓ સમાધિમાં લીન થઈ ગયા છે.
 કાળ સમયે કાળ કરીને હવે તેઓ સૌધર્મ વગેરે બાર દેવલોકોથી ઉપર નવ
 પ્રૈવેયકોથી પણ આગળ જે સર્વાર્થસિદ્ધિ નામે વિમાન છે કે જેમાં ૩૩ સાગરની
 સ્થિતિ છે અને આ સ્થિતિ બધા દેવોની સરખી છે, તેઓ તેમાં ૩૩
 સાગરની સ્થિતિવાળા દેવ થયા છે. “અજહણ્ણમણુક્કોસેજં” જઘન્ય અને
 ઉત્ક્રુદ્ધ ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે.

(સેજં ધમ્મરુદ્ધે દેવે તાઓ દેવલોકાઓ જાવ મહાવિદેહે-વાસે સિઙ્ગિહિદ્ધિ,

आर्यो ! नागश्रियं ब्राह्मणीमधन्यामपुण्यां यावद् दुर्भग निम्बगुलिकाम्, यथा-
खलु नागश्रिया ब्राह्मण्यातथारूपः प्रकृतिभद्रत्वादिगुणयुक्तः साधुः धर्मरुचिरनगारी
मासखणपारणके शारदिकेन तिक्तालवुकेन यावत् स्नेहावगादेनाऽकाल एव
जीविताद् व्यपरोपितः ॥ सू० ४ ॥

मूलम्-तएणं ते समणा निगंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए
एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स
एवमाइक्खंति-धिरत्थु णं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए माहणीए
जाव णिबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं
जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं
सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ

णं अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिबोलियाए
जाए णं तहारूवे साहू धम्मरूई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइए
णं जाव गाढेणं अकाले, चेव जीवियाओ ववरोविण) वे धर्मरुचि देव
इस देवलोक से चवकर यावत् महाविदेह क्षेत्र से सिद्धिको प्राप्त करेंगे
आर्यो ! अधन्य, अपुण्य यावत् दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय
उस नागश्री ब्राह्मणी को धिक्कार हो-कि जिसने तथारूप, प्रकृति भद्र-
त्वादि गुणों से संपन्न साधु धर्मरुचि अनगार को मासखमण के पारणा
के दिन शारदिक तिक्त कडवी तुंभी का शाक यावत् स्नेहावगाद बना-
कर दिया-कि जिससे वे अकाल में मरण को प्राप्त हुए ॥ सू० ४ ॥

तं धिरत्थुणं अज्जो । नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिबो-
लियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरूई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं
जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविण)

ते धर्मरुचि देव ते देवलोक्षी यवीने यावत् महाविदेह क्षेत्री सिद्धिने
भेजवशी. हे आर्यो ! अधन्य, अपुण्य, यावत् दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अना-
दरणीय ते नागश्री ब्राह्मणीने धिक्कार छे के जेहे तथाइय, प्रकृति भद्रत्व
वगेरे गुणोवाणा साधु धर्मरुचि अनगारने मास णमणुना पारणाना द्विसे
शारदिक तिक्त कडवी तूणडीतुं शाक-के जे सरस वधारेतुं, जेनी उपर धी तरतुं
कटु-वधारेतुं, जेने बीधि अकाले जे तेओतुं भरण धनुं. ॥ सूत्र "४" ॥

धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए,
तएणं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमद्धं
सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव भिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी
माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं
एवं वयासी—हं भो ! नागसिरी ! अपत्थिय पत्थिय दुरंत पंत-
लक्खणे हीणपुण्णचाउदसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए
जाव णिबोलियाए जाव णं तुमं तहारूवे साहू साहूरूवे मास-
खमणपारणांति सालइएणं जाव ववरोविए, उच्चावयाहिं
अक्कोसणाहिं अक्कोसेंति उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति
उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति उच्चावयाहिं णिच्छोड-
णाहिं निच्छोडेंति तज्जेति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ
गिहाओ निज्जुभंति, तएणं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ
निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए दिग्घाडगतियचउक्कचच्चर-
चउम्भुद्द० बहुजणं हीलिज्जमाणी सिंसिज्जमाणी निदिज्जमाणी
गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी
थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ इणं वा निलयं वा अलभमाणी० दंडि-
खंडनिवसणा खंडमल्लयखंडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा
मच्छियाचडगरेणं अन्नज्जमाणमग्गागेहं मेहेणं देहं वलियाए
वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ, तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए
तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं जहा—सासे
कासे जोणीसूल जाव कोढे, तएणं सा नागसिरी माहणी

સુદગારધર્મસૂત્રવર્ણી ટી૦ અ૦૧૬ ધર્મરુચ્યનગરચરિતવર્ણનમ્

૧૬૨

સોલસિંહ રોચાયંકેહિં અભિભૂયા સમાણી અટ્ટદુહટ્વસદ્દા કાલ-
માસે કાલં કિચ્ચા છટ્ઠીય પુઢવીય ઉવકોસેણં વાવીસસાગરો-
વમદ્વિદ્વેસુ નેરણસુ નેરણયત્તાય ઉવવન્ના ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ટીકા—‘તણં તે’ ઇત્યાદિ । તતઃ સ્વલુ તે શ્રમણાઃ નિર્ગ્રન્થા ધર્મઘોષાણાં
સ્થવિરાણામન્તિકે એતમર્થં શ્રુત્વા નિશ્ચય ચંપાયાં શ્રંગાટક-યાવન્મહાપયેષુ બહુ-
જનસ્ય એવમાચ્ચાન્તિ ધિમસ્તુ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! નાગશ્રિયં બ્રાહ્મણીં યાક્ષ
તુર્મગનિમ્બગુલિકામ્ , યયા સ્વલુ તથારૂપઃ સાધુઃ સાધુરૂપો ધર્મરુચિનગારઃ શાર-
દિકેન યાવત્તિક્કાલાબુકેન જીવિતાઽવ્યપરોપિતઃ । તતઃ સ્વલુ તેષાં શ્રમણાનામન્તિકે

‘તણં તે સમણા નિર્ગંથા’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણં) હમકે ઘાડ (તે સમણા નિર્ગંથા ધર્મઘોષા થેરાણં
અંતિએયમદ્દં સોચ્છા નિરુમ્મ ચંપાણ સિંઘાડગતિગ જાવ બહુજણસ્સ એવ-
માદ્ધક્વંતિ-ધિરત્થુણં દેવાણુપ્પિયા ! નાગસિરીય જાવ ણિબોલિયાય જાણં
તહારૂવે સાહુ સાહુરૂવે સાલહણં જીવિયાઓ વવરોવેહ) એન શ્રમણ
નિર્ગંથોને ધર્મઘોષ સ્થવિર કે મુલ્લ સે હસ સમાચાર કો સુનકર ઔર
એસકા હૃદય મેં વિચાર કર ચંપાનગરી મેં શ્રંગાટક યાવત્ મહાપયોં મેં
બહુજનોં સે એસા કહા હે દેવાનુપ્રિયોં ! બ્રાહ્મણી નાગશ્રી કો ધિકાર હે
યાવત્ નિમ્બ કી નિયોલી જૈસી અનાદરણીય હૈ કિ જિસને તથા રૂપ
સાધુ-સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગાર કો શારદિક યાવત્ કડબે તુમ્હે કા
શાક દેકર જીવન સે રહિત કરદિયા હૈ । (તણં તેસિં સમણાણં અં-

‘તણં તે સમણા નિર્ગંથા’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણં) ત્યારબાદ

(તે સમણા નિર્ગંથા ધર્મઘોષા થેરાણં અંતિએયમદ્દં સોચ્છા નિરુમ્મ ચંપાણ
સિંઘાડગતિગ જાવ બહુજણસ્સ એવ માદ્ધક્વંતિ-ધિરત્થુણં દેવાણુપ્પિયા ! નાગ-
સિરીય માહણીય જાવ ણિબોલિયાય જાણં તહારૂવે સાહુ સાહુરૂવે સાલહણં
જીવિયાઓ વવરોવેહ)

તે શ્રમણુ નિર્ગંથોએ ધર્મઘોષ સ્થવિરના મુખથી આ વાત સાંભળીને
અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ચંપાનગરીમાં શ્રંગાટક મહાપયો વગેરેમાં ઘણા
માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! બ્રાહ્મણી નાગશ્રીને ધિકાર છે
અને તે લીમડાની લીંબોળાની જેમ અનાદરણીય છે કેમકે તેણે તથા ૩૫ સાધુ સાધુ-
૩૫ ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક કડવી તૂંબડીનું શાક આપીને મારી નાખ્યા છે.

१७०

ज्ञाताधर्मकथाकसूत्रे

एतमर्थं श्रुत्वा निश्चम्य बहुजनोऽन्योन्यस्य=परस्परस्य एवमाख्याति-एवं भाषते एवं प्रज्ञापयति, एवं प्ररूपयति धिगस्तु खलु नागश्रिया ब्राह्मण्याः, यया धर्मरुचिर-नगरः शारदिकेन यावद् जीविताद् व्यपरोपितः । ततः खलु ते ब्राह्मणा चंपायां नगर्यां बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चम्य, आश्रुत्वाः=शीघ्रं क्रोधाविष्टाः यावत् मिसमिसन्तः=क्रोधानलेन प्रज्वलन्तः, यत्रैव नागश्रीब्राह्मणी, तत्रैवोपागच्छन्ति,

लिए एयमद्वं सोच्चा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहण चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमद्वं सोच्चा निसम्म आ-सुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छन्ति) उन श्रमणजनों के मुख से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण करके अनेक मनुष्य आपस में इस प्रकार कहने लगे बोलने लगे प्रज्ञापना करने लगे प्ररूपणा करने लगे कि ब्राह्मणी नागश्री को धिक्कार है जिसने धर्मरुचि अनगर को शारदिक-तिक्त कड़वे तुंबे के शाक से जीवन रहित कर दिया है । इस प्रकार उन ब्राह्मणों ने तथा सोम, सोमदत्त, सोमभूति आदि ने जब चंपानगरी में अनेक मनुष्यों के मुख से इस बात को सुना-तो वे सुनकर और उसे अपने २ हृदय में धारण कर इकदम क्रोध से तम तमा उठे और यावत् क्रोधानल से जलते हुए जहां नागश्री ब्राह्मणी थी वहां आये-

(तएणं तेसिं समणाणं अंतिए एयमद्वं सोच्चा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइ-क्खइ, एवं भासइ धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमद्वं सोच्चा निसम्म आमु-रत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छन्ति) ते श्रमणु लोडोना भुअथी आ सभायार सांभणीने अने तेने हृदयभां धारणु करीने धणु भाणुसो अेकधीअनी साथे आ रीते वातथीत करवा लाग्या, प्रज्ञापना करवा लाग्या, प्ररूपणु करवा लाग्या के आह्वणी नागश्रीने धिक्कार छे. जेणे धर्मरुचि अनगरने शारदिक-तिक्त कड़वी तूअडीना शाकथी मारी नाग्या. आ रीते ते आह्वणुअे अेटले के सोम, सोमदत्त अने सोमभूतिअे न्यारे चंपा नगरीना अनेक भाणुसोना भुअथी आ वात सांभणी त्यारे तेअे सांभणीने अने तेने हृदयभां धारणु करीने अेकदम क्रोधाविष्ट थई गया अने क्रोधाधी अभिमां सणगता न्यां नागश्री आह्वणी हती त्यां आग्या,

અનગારધર્મોત્તરબિંબી ટી૦ ૨૦૧૬ ધર્મરુચ્યનગારચરિતવર્ણનમ્

૧૭૧

ઉપાગત્ય નાગશ્રિયં બ્રાહ્મણીમેવમવાદિષુઃ-ઉક્તવન્તઃ, હં ભો ! નાગશ્રી ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિકે ! મરણામિલાબિણિ ! દુરન્તપ્રાન્તલક્ષણે ! હીનપુણ્યચાતુર્દશિકે ! ધિગસ્તુ સ્વલુ તવ અધન્યાયાઃ અપુણ્યાયાઃ યાવદ્-દુર્ભગનિમ્બગુલિકાયાઃ, અત્ર દ્વિતીયાર્થે બઢી આર્પસ્વાત્, યયા સ્વલુ ત્વયા તથારૂપઃ સાધુઃ સાધુરૂપો ધર્મરુચિરનગારો માસલ્પણપારણકે શારદિકેન તિક્તાલાબુકેન યાવદ્ વ્યપરોપિતઃ, 'ઉચ્ચાવયાહિ' ઉચ્ચાવચામિઃ=ઉચ્ચનીચામિઃ 'અક્રોસણાહિ' આક્રોશનામિઃ=નિન્દાવચૈઃ નીચા-સિ ત્વમિત્યાદિભિર્વચનૈઃ 'અક્રોસંતિ' આક્રોશન્તિ-ફટકારયન્તિ ઉચ્ચાવચામિઃ ઉદ્દંસનામિઃ દુષ્કુલોત્પન્નાસિત્યાદિવચનૈઃ, 'ઉદ્દંસંતિ' ઉદ્દંસયન્તિ=કુલાદિ-

(ઉવાગચ્છિત્તા ણાગસિરીં માહ્ણીં એવં વયાસી) હં ભો ! નાગસિરી ! અપત્થિયપત્થિય દુરંતપતલલક્ષણે, હીણ પુણ્ણચાઉદસે ધિરત્થુણં તવ અધ-ન્નાએ અપુન્નાએ જાવ ણિંવોલિયાએ જાએ ણં તુમે તહારૂવે સાહૂ સાહૂરૂવે માસ સ્વમણપારણંસિ સાલ્હણં જાવ વવરોવિએ ઉચ્ચાવયાહિ અક્રોસણાહિ અક્રોસંતિ.....ઉદ્દંસંતિ) વહાં આકર ન્હોંને નાગશ્રી બ્રાહ્મણીસે કહા અરીઓ નાગશ્રી ! અરી અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિકે ! હે દુરન્તપ્રાન્ત લક્ષણે ! ઓ હીન પૂણ્ય ચાતુર્દશિકે ! તુહા અપુણ્ય અધન્યા કો ધિક્કાર હો ! તૂં દુર્ભગ નિમ્બગુલિકા જૈસી અનાદરણીય હૈ જો તૂંને માસસ્વમણકે પારણા કે દિન ઘરપર આહાર લેને કે નિમિત્ત આયે હુએ તથા રૂપ સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગાર કો શારદિક તિક્ત કડવે તુંવે કા શાક દેકર જીવન સે રહિત કર દિયા હૈ । તૂંબઢી નીચ હૈ ઇત્યાદિ રૂપ ઝૂંચ, નીચ આક્રોશ નિન્દા-વચનોં સે ઉન્હોંને ઉસે ફટકારા તૂં નીચ સ્વાનદાન કી

(ઉવાગચ્છિત્તા ણાગસિરીં માહ્ણીં એવં વયાસી-હં ભો ! નાગસિરી ! અપત્થિય પત્થિય દુરંતપતલલક્ષણે, હીનપુણ્ણચાઉદસે ધિરત્થુ ણં તવ અધન્નાએ અપુન્નાએ જાવ ણિંવોલિયાએ જાએ ણં તુમે તહારૂવે સાહૂ સાહૂરૂવે માસસ્વમણપારણંસિ સાલ્હણં જાવ વવરોવિએ ઉચ્ચાવયાહિ અક્રોસણાહિ અક્રોસંતિ...ઉદ્દંસંતિ) ત્યાં આવીને તેમણે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને કહ્યું કે-કે મુઠ્ઠા ઓ નાગશ્રી ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિકે ! હે દુરંત પ્રાંત લક્ષણે ! ઓ હીનપુણ્ય ચાતુર્દશિકે ! તારા જેવી પાપણી અધન્યાને ધિક્કાર છે. તું દુર્ભગ નિમ્બગુલિકા (લિંગોળી જેવી અનાદરણીય છે. કેમકે તેણે માસ-ખમણના પારણાના કિવસે ઘેર આહાર લેવા માટે આવેલા તથાપ્ત સાધુ સાધુપ્ત ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક તિક્ત કડવી તૂંબઢીનું શાક આપીને મારી નાખ્યા છે. તું સાવ નીચ છે, આમ બધા ઉચ્ચ-નીચ આક્રોશ-નિન્દાના વચનોથી તેઓએ તેને ફટકારી. તું નીચ

ગૌરવાત્પ્રાપ્ત્યન્તિ, ઉચ્ચાવચાભિર્નિર્મત્સનાભિઃ=પરુષવચનૈઃ ‘જિન્મત્થંતિ’ નિર્મત્સ-
યન્તિ, ઉચ્ચાવચાભિઃ ‘જિન્મત્થોડણાહિ’ નિન્મત્થોટનાભિઃ=‘અસ્મદ્ ગૃહાન્દહિ-
નિન્સર’ ઇત્યાદિ વચનૈઃ ‘નિન્મત્થોડેતિ’ નિન્મત્થોટયન્તિ = ગૃહાદિત્યાગમયોત્પા-
દનેન મીષયન્તિ, ‘તજ્જેતિ’ તજ્જયન્તિ ‘જ્ઞાસ્યસિ પાપે !’ ઇત્યાદિવાક્યૈરકુલી
પ્રદર્શનપૂર્વકં તાડનમયં પ્રદર્શયન્તિ, ‘તાલેતિ’ તાડયન્તિ ચપેટાદિભિઃ, તજ્જયિત્વા
તાડયિત્વા, સ્વકાદ્ ગૃહાદ્ ‘નિન્મત્થમંતિ’ નિન્મત્થપન્તિ = બહિર્નિઃ-સારયન્તિ ।
તતસ્તદનન્તરં સા નાગશ્રીઃ સ્વકાદ્ ગૃહાદ્ ‘નિન્મત્થઢા સમાણા’ નિન્મત્થાસતી=નિઃ
સરિતાસતી, ચંપાયા નગર્યાઃ શ્રુજ્ઞાટક ત્રિકચતુષ્કચત્વરચતુર્મુલમહાપથપથેષુ યત્ર યત્ર

હૈં હસ તરહ કી ઝંચી નીચી વાણિયોં સે ઉસે ખલા ઘુરા કહા કુલાદિ
કે ગૌરવ સે ઉસે પતિત કહા । (ઉચ્ચાવચાહિં જિન્મત્થળાહિં જિન્મત્થંતિ
ઉચ્ચાવચાહિં જિન્મત્થોડણાહિં નિન્મત્થોડેતિ, તજ્જેતિ, તાલેતિ, તજ્જેસા
તાલેસા સયાઓ ગિહાઓ નિન્મત્થમંતિ) ઝંચે નીચે કઠોર વચનોં સે
ઉસકા તિરસ્કાર કિયા । ખલે ઘુરે વચનો સે ઉસે ડરવાયા-હમારે ઘર
સે તૂં બાહિર નિકલ જા ઇત્યાદિ મયોત્પાદક શબ્દોં સે ઉસે મય
દિખલાયા । ઓ પાપિની ! તૂજે માલૂમ પડ જાગ્યા, ઇત્યાદિ વાક્યોં સે
મંથુલી દિશ્વા ૨ કર ઉસે મારને કા મય દિખલાયા ઓર ચપેટા-થપ્પડ
આદિ સે ઉસે પીટા મી । ઓર પીટપાટ કર ઉસે ઉન્હોંને ફિર અપને ઘર
સે બાહિર નિકાલ દિયા । (તણં સા નાગસિરી સયાઓ ગિહાઓ
નિન્મત્થઢા સમાણી ચંપાણ નગરીણ સિંધાડગતિગચ્ઠકચચરચત્તમુહં

ખાનદાનની છે, આ જાતનાં ઉંચા નીચા વચનોથી તેણે ખોટી ખરી સંભળાવી.
ધુળ વગેરેના ગૌરવથી તેણે પતિત કર્યું.

(ઉચ્ચાવચાહિં જિન્મત્થળાહિં જિન્મત્થંતિ, ઉચ્ચાવચાહિં જિન્મત્થોડણાહિં નિન્મત્થો
ડેતિ, તજ્જેતિ, તાલેતિ તજ્જેસા તાલેસા સયાઓ ગિહાઓ નિન્મત્થમંતિ)

ઉંચા નીચા વચનોથી તેનો તિરસ્કાર કર્યો, ખોટાં ખરાં વચનોથી તેને
બીવડાવી. ‘અમારા ઘરથી તું બહાર નીકળી જા’ વગેરે ભયોત્પાદક વચનોથી
તેણીને બીક ખતાવી. ‘એ પાપણી ! તને મળ ખતાવવી દઈશું ?’ વગેરે વચ-
નોથી સામી આંખળી કરીને તેને મારી નાખવાની બીક ખતાવવા લાગ્યા અને
થપ્પડ લાકડા વગેરેથી તેને માર પણ માર્યો, મારપીટ કરીને તેઓએ તેને
ચોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકી.

(તણં સા નાગસિરી સયાઓ ગિહાઓ નિન્મત્થઢા સમાણી ચંપાણ નગરીણ
સિંધાડગતિગચ્ઠકચચરચત્તમુહં બહુજળેણં હોલિજ્જમાણી સ્વિસિજ્જમાણી

गच्छति तत्र तत्र सर्वत्र बहुजनेन 'हीलिज्जमाणी' हील्यमाना-जात्याद्युद्धाटनेन, 'खिसिज्जमाणी' हिस्यमाना-परोक्षकुत्सनेन, 'निदिज्जमाणी' निन्द्यमाना-तत्परोक्षम् 'गरहिज्जमाणी' गर्ह्यमाना-तत्समक्षमेव 'तज्जिज्जमाणी' तर्ज्यमाना-अङ्गुलीचालनेन भयमुत्पादयमाना 'पव्वहिज्जमाणी' पव्वध्यमाना यष्ट्यादिताडनेन 'धिकारिज्जमाणी' धिक्रियमाणा 'शुक्कारिज्जमाणी' शुत्क्रियमाणा कुत्रापि

बहुजनेणं हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी, पव्वहिज्जमाणी, धिकारिज्जमाणी, शुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडि खंडा निवसणा खंड खंडमल्लय खंड खंड धउमहत्थमया फुडुहडाहडसीसा मच्छियाउगरेणं अभिज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देहं बलियाए वित्तिक्कप्पेमाणी विहरइ) अपने घर से बाहिर निकल कर वह मागधी चंपानगरी के श्रृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर चतुर्मुख महापथ आदि मार्गों पर जहां २ गई, वहां २ सर्वत्र अनेक जनों ने उसकी " वह नीचजाति की है " इत्यादिरूप से हीलना की। सब के सब उसपर बहुत क्रोधित हुए सबने उसकी परोक्ष में निंदा की। सामने सबने उसे भला बुरा कहा। अंगुली संचालन पूर्वक उसे मारने पीटने का भय दिखलाया। किन्हीं २ ने उसे लकड़ी आदिसे मारा पीटा भी। अनेकोंने उसे धिक्कारा। कितनेक जनों ने उसे देखकर उसपर थूंक भी दिया। इस तरह की परिस्थिति

निदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी, धिकारिज्जमाणी, शुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडिखंडा निवसणा खंडमल्लय खंड खंड धउमहत्थमया फुडुहडाहडसीसामच्छियाउगरेणं अभिज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देहं बलियाए वित्तिक्कप्पेमाणी विहरइ)

पोताना घरथी जहार नीकणीने ते नाग्री थापा नगरीना श्रृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, चतुर्मुख, महापथ वगेरे मार्गों उपर जयां गधं त्यां त्यां जधे धल्ला भाजुसोअे तेनी " आ नीअ नतनी छे " वगेरे वअेनाथी हीलना करी. जधा भाजुसो तेनी उपर जूअ न शुरसे थया. तेनी गेर डाअ-रीमां दोडोअे तेनी जूअ निदा करी, तेनी साअे तेने जधाअे जरी ज्योटी सलणावी, आंगणी चीधी चीधीने तेनी साअे मारपीट करवानी जिक जता-ववा लाज्या. कोअ कोअअे तो तेने लाकडी वगेरेने इटको पजु भार्यो, धल्ला-ज्योअे तेने इटकारी, कटलाक भाजुसोअे तेने जधने तेनी उपर थूकी झिधु.

स्थानं वा निवासार्थं निलयं वा-अल्पकालविश्रामार्थस्थानम्, अलभमाना २=अमा-
प्नुवती २, 'दंडीखंडनिवसगा' दण्डिखण्डनिवसना=दण्डि-कृतसन्धानं जीर्णवस्त्रं,
तस्य खण्डं, तदेव निवसनं-परिधानं यस्याः सा तथा, 'खंडमल्लयखंडघटगहस्थ-
गया' खण्डमल्लक-खण्डघटकहस्तगता=खण्डमल्लः=भिक्षार्थं शरावरखण्डं खण्डघट-
कश्च पानार्थं घटखण्डं, तद् द्वयं हस्तगतं यस्याः सा तथा, 'फुट्टहडाहड्डीसा' स्फुटितहडाहड्डीशीर्षा-स्फुटितं स्फुटितकेशं 'हडाहड्डी' अन्यर्थं शीर्षं शिरो यस्याः
सा तथा, विकीर्णकेशवतीत्यर्थः 'मञ्जियाचडगरेणं अजिज्जमाणमग्गा' मक्षिका
चटकरेण अन्वीयमानमार्गा मक्षिकासमूहेन अनुगम्यमानमार्गा शरीरवस्त्रादीनां-
मलिनत्वान् मक्षिकास्तत्पृष्ठतो धावन्तीत्यर्थः 'गेहं गेहेणं देहं वज्जियाए' गृहं गृहेण
देहवल्किया=मतिगृहं देहनिर्वाहहेतोः उदरपूर्त्यर्थमेवेत्यर्थः-वृत्ति 'कापेमाणी'
कल्प्यमाना=कुर्वाणा सती विहरति । ततस्तदनन्तरं खलु तस्या नागश्रिया ब्राह्मण्या
स्तस्मिन् भवे एव षोडश रोगातङ्काः प्रादुर्भूताः, तद्यथा-(१) श्वासः, (२)
कासः, (३) ज्वरः, 'जावकुट्टे' यावत्-कुष्ठम्, (४) दाहः, (५) कुक्षिशूलम्, (६)

का सामना करती हुई वह कहीं पर भी बैठने के लिये स्थान को, और
ठहरनेके लिये-विश्राम करनेके लिये-जगह भी को नहीं प्राप्त करती फटे
हुए जीर्ण वस्त्र के टुकड़े को पहिरे हुए भिक्षा के लिये मिट्टी के खप्पर
को और पानी के लिये फूटे घड़े के टुकड़े को हाथ में लिये हुए इधर
उधर एक घर से दूसरे घर पर उदर पूर्ति के लिये फिरने लगी । इसके
शिर के बाल इधर उधर बिखरे हुए रहते थे । शरीर और वस्त्रादिकों
के मैले कुचैले होने के कारण मक्षिकाओं का समूह इसके पीछे पीछे २
भागता रहता था । (तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव
सोलसरोयायंका पाउब्भूया-तं जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव

आवी परिस्थितिना मुक्राव्वेा करती केहं पणु स्थाने ळेसवानी के दाकावानी
के विश्राम करवानी जग्घा ते भेणवी शडी नडि, अने छेवटे क्खट्टेला अन्ना
वस्त्रोना ककडाने वीटाणीने लिक्खाना भाटे भाटीनुं अप्पर अने पाण्णीना भाटे
कुट्टी भाटलीना ककडाने हाथमां लधने पेट लरवा भाटे आमतेम अेक घेरथी
णीजे घेर लभवा लागी. तेना माथाना पाणेा आभ तेम अस्त व्यस्त रहेता
हता, शरीर अने वस्त्रो वगेरे भेला डोवाने लीधे भाणीओना टोणेटोणां तेनी
पाछण पाछण लभतां रहेतां हतां.

(तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलसरोयायंका पाउ-
ब्भूया-तं जहा सासे कासे जोणिसूले, जावकोवे तएणं सा नागसिरी माहणी,

अमगारधर्माभूतवर्णिनी टीका अ० १६ धर्मरुच्यनगारधरितवर्णनम्

१७५

भगन्दरः, (७) अर्शः, (८) योनिशूलम्, (९) दृष्टिशूलम्, (१०) मूर्धशूलम्, (११) अरुचिः, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) कण्डूः, (१५) जलोदरम्, (१६) कुष्ठम् । ततस्तदनन्तरं सा नागश्री ब्राह्मणी षोडशमी रोगातङ्कैरभिभूता-सती आर्तदुःखार्तवशात्तर्त्तु=शारीरिकमानसिकदुःखयुक्ता कालमासे कालं कृत्वा षष्ठ्यां पृथिव्याम् 'उक्कोसेण' उत्कृष्टतः, द्वाविंशति सागरोपमस्थितिकेषु नर-केषु-नरकावासेषु नारकत्वेन उपपन्ना-उत्पन्ना ॥ सू० ५ ॥

मूलम्—सा णं ततोऽणन्तरं स उव्वट्ठित्ता मच्छेसु उववन्ना,
तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कन्तीए कालमासे कालं किच्चा
अहेसत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीसं सागरोवमट्ठिइएसु
नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणन्तरं उवट्ठित्ता दोच्चंणि

कोठे तणं सा नागसिरी माहिणी, सोलसहिं रोयायंकेहि अभिभूया
समाणी अट्ठदुहद्वसट्ठा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसे
णं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना) उस नागश्री
ब्राह्मणी को उसी भव में ये सोलह रोगातंक प्रकट हो गये—(१) श्वास
(२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७) अर्श
(८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२) अक्षि-
वेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ । इन १६
सोलहरोगातंको से अत्यन्त दुःखित हुई—शारीरिक एवं मानसिक व्य-
थाओं से व्यथित हुई—वह नागश्री काल अवसर कालकर छठी पृथिवी
में २२ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावासों नैरयिक को पर्यायसेमें
उत्पन्न हुई ॥ सू० ५ ॥

सोलसहिं रोयायंकेहि अभिभूया समाणी अट्ठदुहद्वसट्ठा कालमासे कालं किच्चा
छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना)

ते नागश्री ब्राह्मणीने तेज भवमां आ सोण रोगांतके प्रकट थया.

(१) श्वास (२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७)
अर्श (८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२)
अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ. आ सोण
रोगांतकेथी अतीव दुःखी थयेवी शारीरिक तेमज्ज मानसिक व्यथाओधी व्यथित
थती ते नागश्री काण अवसरे काण करीने छट्ठी पृथिवीमां बावीस सागरनी
उत्कृष्ट स्थितिवाणा नरकावासोमां नैरयिकनी पर्यायथी जन्म पाभी. ॥ सू. ५ ॥

મચ્છેસુ ઉવવજ્જઈ, તત્થ વિય ણં સત્થવિજ્ઞા દાહવકકંતીં
 દોચ્ચંપિ અહે સત્તમીં પુઢવીં ઉક્કોસં તેત્તીસમાગરોવમ-
 દ્વિંદ્દેસુ નેરંદેસુ ઉવવજ્જઈ, સા ણં તઓહિંતો જાવ ઉવ-
 ટ્ઠિત્તા તચ્ચંપિ મચ્છેસુ ઉવવન્ના તત્થ વિય ણં સત્થવજ્ઞા
 જાવ કાલં કિચ્ચા દોચ્ચંપિ છટ્ઠીં પુઢવીં ઉક્કોમેણં
 તઓડ્ઢાંતરં ઉવવટ્ઠિત્તા મચ્છેસુ ઉરેસુ એવં જહા ગોસાલે
 તહા નેયવ્વં જાવ રયણપ્પમાઓ સત્તસુ ઉવવન્ના તઓ ઉવ-
 ટ્ઠિત્તા જાઈં ઇમાઈં સહયર વિહાણાઈં જાવ અદુત્તરં ચ ણં સ્વ
 વાયર-પુઢવિકાઈં યત્તાતે તેસુ અણેગસતસહસ્સ સુત્તો ॥સૂ.૬॥

ટીકા—‘ સા ણં ’ इत्यादि। सा=नागश्री ब्राह्मणी खलु ततः=पृष्ठ्या पृथिव्याः
 अनन्तरम्=आयुर्भवस्थितिक्षये सति ‘ उववट्ठित्ता ’ उद्वर्त्य=निस्तृत्य मत्स्येषूपस्था,
 तत्र खलु मत्स्यभवे सा ‘ सत्थवज्झा ’ शस्त्रविद्धा। ‘ दाहवककंतीं ’ दाहव्युत्का-
 न्त्या=दाहोत्पत्त्या, कालमासे कालंकृत्वाऽधः सप्तम्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतत्त्वयस्त्रिंश-
 त्सागरोपमस्थितिकेषु ‘ नेरंद्देसु ’ नैरायिकेषु उत्पन्ना। सा खलु ततः=सप्तम्याः
 पृथिव्याः अनन्तरमुद्वर्त्य द्वितीयमारमपि मत्स्येषूपस्थते। तत्रापि च खलु शस्त्र-

‘ સા ણં તઓ ’ इत्यादि।

ટીકાર્થ—(સા) વહ નાગશ્રી (ત ઓડ્ઢાંતરંસિ) ઉમ છટ્ટી નરકની ભવસ્થિતિ
 સમાપ્ત થાને પર (ઉવવટ્ઠિત્તા) વહાં સે નિકલી—ઔર નિકલકર
 (મચ્છેસુ ઉવવન્ના તત્થવજ્ઞા સત્થવજ્ઞા દાહવકકંતીં કાલમાસે કાલં
 કિચ્ચા અહે સત્તમીં પુઢવીં ઉક્કોસાં તેત્તીસં માગરોવમદ્વિંદ્દેસુ
 નેરંદેસુ ઉવવન્ના, સા ણં તઓડ્ઢાંતરં ઉવવટ્ઠિત્તા દોચ્ચંપિ મચ્છેસુ ઉવવ-

‘ સા ણં તઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—(સા) તે નાગશ્રી (ત ઓડ્ઢાંતરંસિ) તે છટ્ટી નરકની ભવસ્થિતિ
 પૂરી થયા બાદ (ઉવવટ્ઠિત્તા) ત્યાંથી નીકળી અને નીકળીને

(મચ્છેસુ ઉવવન્ના તત્થવજ્ઞા સત્થવજ્ઞા દાહ વકકંતીં કાલમાસે કાલં કિચ્ચા
 અહે સત્તમીં પુઢવીં ઉક્કોસાં તેત્તીસં માગરોવમદ્વિંદ્દેસુ નેરંદેસુ ઉવવન્ના
 સા ણં ઉવવજ્જઈ)

विद्धा दाहव्युत्क्रान्त्या द्वितीयवारमपि अधः सप्तम्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतत्त्वयद्विशत्सा-
गरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूपपद्यते, सा खलु 'तओहिंतो' तस्याः=सप्तम्याः
पृथिव्याः, यावद् उद्वर्त्य 'तच्चंपि' तृतीयवारमपि मत्स्येषु उत्पन्ना । तत्रापि च
खलु शस्त्रविद्धा 'जाव कालं किच्चा' यावत् दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे कालं
कृत्वा द्वितीयवारमपि षष्ठ्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतो द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकेषु
नरकेषूपपन्ना, सा खलु ततः=षष्ठ्याः पृथिव्या अनन्तरं 'उवट्ठिता' उद्वर्त्य=
निस्सृत्य उरःपरितर्पेपृत्पन्नाः, तत्र शस्त्रवध्या दाहव्युत्क्रान्त्यामुत्कृष्टतः सप्तदश-
सागरोपमस्थितिकेषूपपन्ना । एवं यथा गोशरलकस्तथा ज्ञातव्यम्=गोशरलकवदस्याः

उज्जई) तिर्यञ्चगति में मच्छ की पर्याय से उत्पन्न हो गई । वहां वह
मत्स्य के भव में शस्त्र से विद्ध होकर दाह की उत्पत्ति से काल अवसर
काल कर मरी सो नीचे सप्तम नरक में ३३ तेतीस सागर की उत्कृष्ट
स्थितिवाले नरकावास में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से
निकलकर फिर वह मत्स्य की पर्याय से उत्पन्न हुई । (तत्थ वि य णं
सत्थविज्झादाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पु०) वहां वह शस्त्र
से पुनः विद्ध होकर दाहकी व्युत्क्रान्ति से मरी और मरकर द्वितीयवार
भी सप्तम नरक में (उक्कोसें तेतीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उवव-
उज्जई) उत्कृष्ट-तेतीस सागर की स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में
उत्पन्न हुई । (सा णं तओ हिं तो जाव उववट्ठिता तच्चंपि मच्छेसु उव-
वक्खा, तत्थ वि य णं सत्थविज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुढ-
वीए उक्कोसे णं तओऽणंतरं उवट्ठिता मच्छेसु उरएसु एवं जहा गोसाले

तिर्यञ्च गतिमां मच्छथी पर्यायनी जन्म पाभी, त्यां ते मत्स्यना लवमां
शस्त्र वडे वींघाधने दाहथी पीडाधने काण अवसरे काण करीने मरए पाभी अने
नीचे सातमा नरकमां उउ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाणा नरकावासमां नैरयिकनी
पर्यायथी जन्म पाभी, त्यांथी नीकणीने इरी ते मत्स्यना पर्यायथी जन्म पाभी.
(तत्थ वि य णं सत्थविज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पु०)
त्यां ते इरी शस्त्र वडे विद्ध थधने दाहथी पीडाधने मरी अने मरीने
भी७ पणत पणु सातमां नरकमां (उक्कोसें तेतीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उव-
वज्जइ) उत्कृष्ट उउ सागरनी स्थिति लधने नैरयिकनी पर्यायमां जन्म पाभी.
(सा णं तओहिं तो जाव उव्वट्ठिता तच्चंपि मच्छेसु उववक्खा, तत्थ वि य णं
सत्थविज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं तओऽणंतरं

वर्णनं बोध्यमित्यर्थः, 'यावरयणप्पभाए सत्तसु उववन्ना' यावद् रत्नप्रभायां सप्त-
सूत्पन्ना=अयं भावः—उरः परिसर्पभवतो निःसृत्य पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्या-
स्तकृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेष्वत्पन्ना, ततो निःसृत्य द्वितीय-
वारसुरःपरिसर्वेष्वत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारपि पञ्चम्यां पृथि-
महा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्ठित्ता जाइं
ईमाइं खहायर विहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खरवायर पुढविकाइयत्ता ते तेसु
अणेगसतसहस्स खुत्तो) वहां से भव स्थिति समाप्त होते ही
वह निकली-निकल कर तीसरी बार भी मत्स्य की पर्याय में उत्पन्न
हुई। वहां शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी सो मर कर
दुबारा भी छठी ही पृथिवी में २२ बावीस सागर की उत्कृष्ट स्थिति ले
कर उत्पन्न हुई। वहां की भवस्थिति समाप्त कर जब वह वहां से
निकली तो उरः परिसर्प की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां पर भी वह
शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से-उत्पत्ति से काल अवसर काल
कर धूमप्रभा नाम की पंचम पृथिवी में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न
हुई। वहां सत्तरह सागर की उत्कृष्ट-स्थिति इसकी हुई। गोशालक
की तरह इसका वर्णन जानना चाहिये। तात्पर्य इसका इस प्रकार है-
१७ सागर की उत्कृष्टस्थिति वाले पंचम नरक से निकल द्वितीय बार
भी वह उरः परिसर्प की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से पूर्व की तरह

उव्वट्ठित्ता मच्छेसु उरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्प
भाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्ठित्ता जाइं ईमाइं खहायरविहाणाइं जाव
अदुत्तरं, च णं खरवायरपुढविकाइयत्ता ते तेसु अणेगसतसहस्सखुत्तो)
त्यांनी भवस्थिति पूरी थतां ज ते त्यांधी नीकणी अने नीकणीने त्रींण वार
पणु माछलीना पर्यायभां जन्म पाभी. त्यां शस्त्रथी वींघाधने तथा दाहथी
पीडाधने भरणु पाभी अने ते वणते पणु छठी पृथिवीभां २२ सागरनी उत्कृष्ट
स्थिति दाधने उत्पन्न थछ. त्यांनी भवस्थिति पूरी करीने ज्यारे ते त्यांधी
नीकणी त्यादे ते उरः परिसर्पना पर्यायभां जन्म पाभी. त्यां पणु ते शस्त्रथी
वींघाधने अने दाहथी पीडाधने काण अवसरै काण करीने धूमप्रभा नामनी
पंचम पृथिवीभां नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी. त्यां १७ सागरनी उत्कृष्ट
स्थिति तेनी थछ. गोशालकनी जेम आनुं वर्धन जाणुी देवुं जेधजे. मतलण
आनी आ छे डे १७ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाजा पंचम नरकथी नीकणीने
भीण वणत पणु ते उरः परिसर्पना पर्यायथी जन्म पाभी. त्यांधी पणु पडे-
लांनी जेमज काण अवसरै काण करीने भीणवार पणु आ पंचम पृथिवीभां

व्याप्तकृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततो निःसृत्य तृतीयवारमपि उरः प्रतिसर्पेष्टपद्यते, अत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यामुत्कृष्टतो - दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निःसृत्य सिंहेष्टपद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि चतुर्थ्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतो-दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततश्चतुर्थ्याः पृथिव्याः निःसृत्य द्वितीयवारमपि सिंहेषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा तृतीयायां बाहुकप्रभायां पृथिव्यामुत्कृष्टतः सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निःसृत्य पक्षिषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि तृतीयायां पृथिव्यामुत्कृष्टतः

काल कर द्वितीयवार भी यह पंचम पृथिवी में १७ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की स्थिति समाप्त कर जब यह वहां से निकली-तो तीसरी बार भी यह उरः परिसर्पों में उत्पन्न हुई। वहां से पूर्व की तरह काल कर चौथी पंक्त प्रभा पृथिवी में कि जहां १० सागर की नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से निकल कर यह सिंह की पर्याय में उत्पन्न हुई। पहिले की तरह वहां से भी मर कर द्वितीय बार भी यह चतुर्थ नरक में दश सागर की स्थिति वाले नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। चतुर्थ नरक से निकल कर यह दुवारा भी सिंह की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से अपने समय पर मर कर फिर यह बालुका प्रभा नाम की तीसरी पृथिवी में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां से निकल कर फिर यह पक्षियों के कुल में उत्पन्न हुई। यहां से मर कर

१७ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाला नरकभां नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी. त्यांनी स्थिति पूरी करीने न्यारे ते त्यांथी नीकणी ते त्रील वार पणु ते उरः परिसर्पभां उत्पन्न थध. त्यांथी पडेलानी जेम काण करीने बोथी पंक्त-प्रभा पृथिवीभां-के न्यां दशसागरनी नैरयिकानी उत्कृष्ट स्थिति छे, त्यां नैरयिकनी पर्यायथी उत्पन्न थध, त्यांथी नीकणीने ते सिंहना पर्यायथी जन्म पाभी. पडेलानी जेम त्यांथी पणु भरणु पाभीने वीलवार पणु अतुर्थ नरकभां दश सागरनी स्थितिवाला नरकभां नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी. अतुर्थ नरकथी नीकणीने ते इरी सिंहना पर्यायथी उत्पन्न थध. त्यांथी भरणु पाभीने इरी ते बालुकाप्रभा नामनी त्रील पृथिवीभां सात सागरनी उत्कृष्ट स्थिति लधने नैरयिकनी पर्यायभां जन्म पाभी. त्यांथी नीकणीने ते इरी ते पक्षीजोना कुणभां

સપ્તસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તતસ્ત્રીયાયાઃ પૃથિવ્યા નિઃ સૃત્ય દ્વિતીયવારમપિ પશ્ચિષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ પૂર્વવત્ કાલં કૃત્વા દ્વિતીયાયાં પૃથિવ્યાં શર્કરપ્રમાયામુત્કૃષ્ટતસ્ત્રિસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તતો નિસૃત્ય સરી-સૃપેષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ શસ્ત્રવેધ્યા દાહવ્યુત્ક્રાન્ત્યા કાલમાસે કાલં કૃત્વા દ્વિતીયવાર-મપિ દ્વિતીયાયાં પૃથિવ્યામુત્કૃષ્ટતસ્ત્રિસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તતો દ્વિતીયાયાઃ પૃથિવ્યાઃ નિઃ સૃત્ય દ્વિતીયવારમપિ સરીસૃપેષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ પૂર્વવત્ કાલં કૃત્વા પ્રથમાયાં પૃથિવ્યાં રત્નપ્રમાયામુત્કૃષ્ટત્ એકસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈર-યિકેષૂત્પન્ના, તતો નિઃ સૃત્ય સંઙ્ગિષુ, તતો નિઃ સૃત્યાઽસંઙ્ગિષૂત્પદ્યતે, તતો નિઃ

ફિર यह पुनः तीसरे नरक में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति वाले नैर-यिकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । यहां से निकल कर पुनः यह पक्षियों के कुल में उत्पन्न हुई । यहां से मर कर फिर यह दूसरी पृथिवी जो शर्करा प्रभा है और जिसके नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिकों की पर्याय से उतनी स्थिति लेकर उ-त्पन्न हुई । वहां से निकल कर सरीसृपों में यह दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी तो मर कर द्वितीय वार भी द्वितीय पृथिवी के नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर उत्पन्न हुई । द्वितीय पृथिवी से निकल कर दुबारा यह सरीसृप में उत्पन्न हुई । वहां से अपने समय पर मर कर रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी में उत्कृष्ट एक सागर की स्थिति वाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां की भवस्थिति समाप्त होने पर यह वहां से निकलकर संज्ञी जीवों में वहां

જન્મ પામી. ત્યાંથી મરણ પામીને ફરી તે ત્રીજા નરકમાં સાત સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નૈરયિકોમાં નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ. ત્યાંથી નીક-જીને ફરી તે પક્ષીઓના કુળમાં ઉત્પન્ન થઈ ત્યાંથી મરણ પામીને ફરી તે બીજી પૃથિવી જે શર્કરાપ્રભા છે અને જેના નરકાવાસોમાં ત્રણ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે ત્યાં નૈરયિકોના પર્યાયથી તેટલી જ સ્થિતિ લઈને જન્મ પામી. ત્યાંથી નીકજીને સરીસૃપોમાં તે ઉત્પન્ન થઈ. ત્યાં શસ્ત્રથી વીંધાઈને તથા દાહથી પીડાઈને મરણ પામી અને ત્યારપછી બીજીવાર પણ બીજી પૃથિવીના નરકા-વાસોમાં ત્રણ સાગર જેટલી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઈને ઉત્પન્ન થઈ. બીજી પૃથિવીની નીકજીને બીજીવાર તે સરીસૃપમાં ઉત્પન્ન થઈ ત્યાંથી યથા સમય મરણ પામીને રત્નપ્રભા નામની પ્રથમ પૃથિવીમાં ઉત્કૃષ્ટ એક સાગરની સ્થિતિવાળા નરકા-વાસોમાં નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાંની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને તે ત્યાંથી નીકજીને સંજ્ઞી-જીવોમાં, ત્યાંથી પણ મરણ પામીને અસંજ્ઞી-જીવોમાં

जेनेगारधर्मोत्तवर्षिणी टीका अ० १३ धर्मरुच्यनगारवरितवर्णनम् १८१

सृत्य द्वितीयवारमपि प्रथमायां पृथिव्यां पल्योपमस्याऽसंख्येयभागस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतयोत्पन्ना ' इति ।

‘ तओ उवट्टित्ता ’ तत् उद्वर्त्य=रत्नप्रभातो निः सृत्य यानि इमानि ‘ खह-यरविद्याणाइ ’ खचरविधानानि चर्मपक्ष्यादीनि भवन्ति तेषु, यावत् अथोत्तरं च खल्ल यानीमानि खरवादरपृथिवी कायिकविधानानि तेषु खरवादरपृथिवीकायिक-तयाऽनेकशतसहस्रकृत्वः समुत्पन्ना ॥ सू० ६ ॥

मूलम्—सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहेवासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया तएणं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं० दारियं पयाया सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं, तीसे दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए अम्मा-पियरो इमं एयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तएणं तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेति सूमालियत्ति, तएणं सा सूमालिया दारिया पंचधाई परिगहिया तं जहा—खीरधाईए

से भी मर कर असंज्ञी जीवों में और फिर वहां से मर कर फिर दुबारा भी प्रथम पृथिवी में १ एक पल्य के असंख्यात वै भाग प्रमाण स्थितिवाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । उस रत्न प्रभा पृथिवी से निकल कर फिर यह जितने ये पक्षिभेद हैं—चर्म पक्षी आदि हैं—उनमें और उनके बाद जो ये खर-बादर-पृथिवीकायादि भेद हैं उनमें खरबादर पृथिवीकायिकरूपसे लाखों बार उत्पन्न हुई ॥सू० ६॥

अने इरी त्यांधी भरणु पाभीने णीणुवार पणु पहेली पृथिविमां १ ओक पल्यना असंख्यातमां लाग प्रभाणु स्थितिवाणा नरकावासेमां नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी. ते रत्नप्रला पृथिविथी नीकणीने इरी ते जेटला पक्षी लेदो छे-धर्म पक्षी वजेरे छे—तेओमां अने त्यारपछी भर-आहर पृथिवीकाय वजेरे लेद छे तेओमां भर-आहर पूच्छिकायिकना इधमां लागो वार जन्म पाभी. सू. १

१८२

जाताधर्मकथासूत्रे

जाव गिरिकंदरमालीणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि
जाव परिववुइ, तएणं सा सूमालियादारिया उम्मुक्कवालभावा
जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावणणेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ
सरीरा जाया यावि होत्था ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘सा णं तओ’ इत्यादि । सा खलु नागश्रीः ततोऽनन्तरम् उद्वृत्य
जम्बूद्वीपे दीपे भारते वर्षे चम्पायां नगर्यां सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य भद्राया भार्यायाः
कुक्षौ ‘पच्चायाया’ प्रत्यायाता गर्भसमागता । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही
नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेणु अर्द्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु दारिकां

‘सा णं तओऽणंतरं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(सा णं तओऽणंतरं उवट्ठित्ता) इसके बाद वह नागश्री खर
पृथ्वी कायिका से निकल कर (इहेव जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे चंपाए
नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्राए भारियाए कुच्छिसिदारियात्ताए
पच्चायाया) इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारतवर्ष नामके क्षेत्र
में वर्तमान चंपानगरी में सागरदत्त सेठ की धर्मपत्नी—भद्रा की कुक्षि में
पुत्रीरूप से अवतरी (तएणं सा भद्रा सत्थवाही नवण्हं मासाणं दारियं
पयासा सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं तीसे दारियाए निव्वत्त
बारिसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नाम
धेज्जं करेति, जम्हाणं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुय समाणा
तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया) भद्रा सार्थ

‘सा णं तओऽणंतरं उवट्ठित्ता’ इत्यादि—

टीकार्थ—(सा णं तओऽणंतरं उवट्ठित्ता) तयारपछी ते नागश्री णर पृथिविडा
यिडथी नीडणीने (इहेव जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरद-
त्तस्स सत्थवाहस्स भद्राए भारियाए कुच्छिसि दारियात्ताए पच्चायाया)
ये ७४ जंबूद्वीप नामना द्वीपमां आयेला भारतवर्ष नामना क्षेत्रमां विरामान
चंपानगरीमां सागरदत्त सेठनी धर्मपत्नी भद्राना उदरमां पुत्री रूपमां अवतरी.
(तएणं सा भद्रा सत्थवाही नवण्हं मासाणं० दारियं पयाया सुकुमालकोम-
लियं गयतालुयसमाणं तीसे दारियाए निव्वत्तबारिसाहियाए अम्मापियरो इमं
एयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेति, जम्हाणं अम्हं एसा दारिया सुकु-
माला गयतालुयसमाणा तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया)

અવતારધર્મામૃતલક્ષણી ડી૦ અ૦ ૧૬ ધર્મદશ્યનગારચરિતનિરૂપણમ્ ૧૮૧

‘પયાયા’ પ્રજાતા=પ્રજનિતવતી, કિં ભૂતાં દારિકામિત્યાહ—‘સુકુમાલકોમ-
લિયં’ સુકુમાલકોમલામ્-અતિમૃદુલામ્ ગજતાલુકસમાનાં અક્લસ્યાતિકોમલતયા
ગજતાલુતુલ્યામિત્યર્થઃ। તસ્યા દારિકાયા ‘નિવ્વત્તચારસાહિયાણ’ નિર્વૃત્તદ્વાદશા-
હિકાયાઃ સમ્પાપ્તદ્વાદશદિવસાયાઃ અમ્બાપિતરૌ=માતાપિતરૌ इदમેતદ્ભૂય ‘ગોણં’ ગૌણં
=ગુણેભ્ય આગતં=પ્રાપ્તં ગુણનિષ્પન્નં=ગુણબોધકં નામધેયં કુરુતઃ કર્તુવિચારયતઃ
તથાઈ યસ્માત્ સ્વલુ અસ્માકમેષા દારિકા સુકુમારા ગજતાલુકસમાના જાતા,
તદ્=તસ્માત્ ભવતુ સ્વલુ અસ્માકમસ્યા દારિકાયા નામધેયં ‘સુકુમારિકા’
ઈતિ। તતઃ વિચારકરણાનન્તરં સ્વલુ તસ્યા દારિકાયા અમ્બપિતરૌ નામધેયં કુરુતઃ
‘સુકુમારિકા’ ઇતિ। તતઃ સ્વલુ સા સુકુમારિકા દારિકા પશ્ચાત્રીપરિગૃહીતા-
પશ્ચસંલ્પકામિ ધર્મત્રીમિઃ=ઉપમાદૃમિઃ સુરક્ષિતા જાતા, તદ્ યથા=તાસાં પશ્ચાન્નાં
ધર્મત્રીનાં નામાનિ દર્શયતિ ‘સ્રીરધાર્ણે જાત ગિરકંદર’ ઇતિ। સ્રીરધાર્ણ્યા=સ્તન્ય-

બાહ્યકે ગર્ભ કે નૌ માસ તથા સાઢે સાત દિન રાત પૂર્ણરૂપ સે વ્યતીત
હો ચુકે તવ ઉસને પુત્રીકો જન્મ દિયા। યહ પુત્રી અત્યન્ત કોમલ અંગ-
બાલી થી હસી લિયે ગજકા તાલુ ભાગ જિસ પ્રકાર મૃદુલ હોતા હૈ યહ
વૈસી હી કોમલ થી। જય યહ ૧૨ બારહ દિન કી હો ચુકી-તથા હસ કે
માતાપિતાને હસકા ‘યથા નામ તથા ગુણ’ હસ કહાવતકે અનુસાર ગુણો
કો લેકર નામ સંસ્કાર કરને કા વિચાર કિયા। વિચાર કરને કે બાદ
ઉન્હોને હસ સ્વાલ સે કિ યહ હમારી પુત્રી અત્યન્ત સુકુમાર ઓર ગજ
તાલુ કા કે જૈસી મૃદુલ હૈ અતઃ હસકા નામ સુકુમારિકા રહે (તણં
તીસે દારિયાણ અમ્મા પિયરો નામધેજ્જં કરેતિ સમાલિયતિ) ઉસ
કન્યા કા નામ સુકુમારિકા રલ્લ દિયા (તણં સા સુકુમારિયદારિયા

ભદ્રા સાર્થવાહીના ગર્ભના નવ માસ અને સાઢા સાત દિવસ રાત પૂરા
થઈ ચૂક્યા ત્યારે તેણે પુત્રીને જન્મ આપ્યો. આ પુત્રી અતીવ કોમળાંગી
હતી. હાથીના તાળવાનો ભાગ જેવો સુકોમળ હોય છે, તે તેવીજ કોમળ
હતી. જ્યારે તે બાર દિવસની થઈ ગઈ ત્યારે તેના માતાપિતાએ જેવું નામ
તેણે શુભવાળી એ કહેવત મુજબ શુભોના આધારે તેનો નામ સંસ્કાર કરવાનો
વિચાર કર્યો. વિચાર કર્યા બાદ તેઓએ પોતાની પુત્રીની સુકોમળ દૃષ્ટિ સમક્ષ
રાખીને એટલે કે તેઓએ આ પ્રમાણે વિચારીને કે આ મારી પુત્રી હાથીના
તાળવા જેવી સુકોમળ છે માટે એનું નામ સુકુમારી રાખીએ.

(તણં તીસે દારિયાણ અમ્માવિયરો નામધેજ્જં કરેતિ સમાલિયતિ)

તે કન્યાનું નામ સુકુમારી રાખ્યું.

દાયિન્યા, યાવત્કરુણાદેવં બોધ્યમ્-‘ મંડનધાર્દૈ ’ મઞ્જનધાર્દૈ કીલાવળધાર્દૈ અંકધાર્દૈ’ ઇતિ । મળ્ડનધાત્ર્યા=વસ્ત્રમાલ્યાઢ્ઢાલરપરિધાપિકયા, મઞ્જનધાત્ર્યસ=સ્નાનકારિકયા, ક્રીડનધાત્ર્યા=યા ક્રીડાં=લેલનં કારયંતિ તયા, તયા અઢ્ઢધાત્ર્યા=ઉત્સજ્ઞે સ્થાપિકયા ચ પાલ્યમાના, ઉપલાલ્યમાના આલિજ્ઞ્યમાના સ્તૂયમાના પ્રચુ-સ્ત્યમાના, ગિરિકન્દરમાલીના ચમ્પકલતેવ નિર્વાતે મહાવાતરહિતે નિર્વ્યાધાતે=

પંચધાર્દૈ પરિગ્માહિયા તં જહા-લ્હીરધાર્દૈ જાવ ગિરિકંદરમાલિણા ઇવ ચંપકલયા નિવ્વાણ નિવ્વાધાયંસિ જાવ પરિવઢ્ઢુહ-તણ્ણં સા સૂમાલિયા દારિયા ઉમ્મુક્કલાલભાવા જાવ રુવેણં ય જોવ્વણેણ ય લાવણેણ ય ઉક્કિટ્ઠા ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા યાવિ હોત્થા) ઇસકી રક્ષા કે લિયે માતા પિતાને ૫ ઘાયમાતા-ઉપમાતા-૨લ્હ દી-ઉનકી દેલ્હેરેલ્હેમેં યહ સુરક્ષિત રહ્ને લગી ઉનકે નામ યે હૈ-ક્ષીરધાત્રી દુગ્ધ પાન કરાનેલાલી ધાય, મંડનધાત્રી-વસ્ત્ર માલા અલંકાર આદિ પહિરાનેલાલી ધાય, મઞ્જન ધાત્રી-સ્નાન કરોનેલાલી ધાય, ક્રીડન ધાત્રી-લેલ કુંદ કરોનેલાલી ધાય, અંક ધાત્રી-અપની ગોદ મેં બેઠાનેલાલી ધાય, ઇસ તરહ ઇન ૫ ઘાય માતાઓ દ્વારા પાલિત હોતી હુઈ, ઉપલાલિત હોતી હુઈ, આલિજ્ઞ્ય માન હોતી હુઈ, સ્તૂયમાન હોતી હુઈ ઓર પ્રચુસ્ત્યમાન હોતી હુઈ યહ સુકુ-મારિકા કન્યા, ગિરિકન્દરા મેં ઉત્પન હુઈ ચમ્પકલતા જૈસે મહાવાતસે વર્જિત ંવં ઉપદ્રવોં સે રહિત સ્થાન મેં આનન્દ કે સાથ બઢતા હૈ-ઉસી પ્રકાર બઢને લગી । ધીરે ૨ લાલ્યાવસ્થા સે જબ યહ રહિત હો ગઈ-તથ

(તણ્ણં સા સુકુમારિયા દારિયા પંવધાર્દૈ પરિગ્માહિયા તં જહા-લ્હીરધાર્દૈ જાવ ગિરિકંદરમાલિણા ઇવ ચંપકલયા નિવ્વાણ નિવ્વાધાયંસિ જાવ પરિવઢ્ઢુહ-તણ્ણં સા સૂમાલિયા દારિયા ઉમ્મુક્કલાલભાવા જાવ રુવેણં ય જોવ્વણેણ ય લાવણેણ ય ઉક્કિટ્ઠા ઉક્કિટ્ઠ સરીરા જાયા યાવિ હોત્થા)

તેના રક્ષણુ માટે માતા-પિતાએ ૫ ધાય-માતાએ ઉપમાતાએની નીમ-ણુકે કરી, તેમનાં નામે નીચે લખ્યા મુજબ છે-ક્ષીરધાત્રી-દૂધ પીવડાવનાર ધાય, મંડનધાત્રી-વસ્ત્ર, માળા, અલંકારો વગેરે પહેરાવનારી ધાય, મઞ્જન-ધાત્રી-સ્નાન કરાવનારી ધાય-ક્રીડનધાત્રી રમડાનાર ધાય, અંકધાત્રી-પોતાના બોળામાં બેસાડનારી ધાય, આ રીતે આ ૫ ધાય માતાએ વડે પાલિત થતી-ઉપપાલિત થતી, આલિજ્ઞ્યમાન થતી, સ્તૂયમાન થતી અને પ્રચુખ્યમાન થતી તે સુકુમારિકા કન્યા ગિરિકંદરાએમાં ઉત્પન્ન થયેલી અપકલતાની જેમ મહાવાતથી રક્ષિત તેમજ બીજા ઉપદ્રવોથી રક્ષિત સ્થાનમાં સુખેથી વધે છે. તેમજ મોટી

अभगराघमामृतवर्षिणी टीका० अ० १६ सुकुमारिकाचरितवर्णनम्

१८५

उपद्रववर्जिते स्थाने यावत् सुखं सुखेन परिवर्धते स्म । ततः खलु सा कुमारिका दारिका
उन्मुक्तबालभावा=व्यतीतबाल्यावस्था, यौवनमनुमाप्ता यावद् रूपेण=आकृत्या च,
यौवनेन=तारुण्यवयसा च, लावण्येन=यौवनवयोजनितकान्तिविशेषेण च, उत्कृष्टा
=विशेषशोभासम्पन्ना, उत्कृष्टशरीरा=सर्वाङ्गसुन्दरी जाता चाप्यभवत् ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे
अड्डे० तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा जाव
माणस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ, तस्स णं जिण-
दत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए
सुकुमाले जाव सुरूवे, तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया
कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागर-
दत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ इमं च णं सूमालिया
दारिया णहाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पि आगासतलगंसि
कणगतेदूसएणं कीलमाणी२ विहरइ, तएणं से जिणदत्ते सत्थ-
वाहे सूमालियं दारियं पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए
रूवे य३ जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं
वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा णामधेज्जं

यौवनने इसके शरीर पर अपना अधिकार स्थापित करना प्रारंभ कर
दिया—उस समय यह रूप आकृति—से यौवन—तारुण्य वय से, और
यौवन वय जनित कान्ति विशेषसे विशिष्ट शोभा संपन्न हो गई और
समस्त इस के शारीरिक अवयव सुंदर हो गये अर्थात् उस समय यह
सर्वाङ्ग सुन्दरी बन गई । सू० ७ ।

थवा लागी. धीमे धीमे न्यारे ते अयपणु वटावीने युवावस्था संपन्न थवा
भांडी त्यारे तेना शरीर उपर यौवनना अिहो देखावालाग्यां. ते समये ते इय-
आकृति-थी, यौवन-तारुण्य-थी अने यौवनावस्था जनित सविशेष कान्तिथी
विशिष्ट शोभा संपन्न थई गई अने तेना शरीरनां अधां अंगो सुंदर थई
गयां, अट्ठे के ते वपते ते सर्वांग सुंदरी अनी गई. ॥ सूत्र ७ ॥

सै ?, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं
 वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी-एस णं देवाणु-
 प्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमा-
 लिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठसरीरा
 तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं
 सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए
 जाव मित्तनाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव
 उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं
 एजमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भु-
 ट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं
 सुहासणवरगयं एवं वयासी-भण देवाणुप्पिया ! किमाग-
 मणपओयणं ?, तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं
 सत्थवाहं एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं
 भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जइ णं
 जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो
 वा संजोगो दिज्जउणं सूमालिया सागरस्स, तएणं देवा-
 णुप्पिया किं दलयामो सुक्कं सुमालियाए?, तएणं से सागर-
 दत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया सूमालिया
 दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमंग पुण पासणयाए
 तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि
 विप्पओगं तं जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए

भवनारभ्यमृतवर्षिणी टी० अ० १६ सुकुमारिकाश्रितवर्णनम्

१८७

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-
तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते
समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साम-
रदारगं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! साग-
रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !
सूमालिया ! दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव तं जइ
णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं
से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे
तुसिणीए, तएणं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि
तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विउले असणपाणखाइमसा-
इमं उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ जाव सम्माणित्ता
सागरं दारगं णहायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता
पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहावेइ, दुरुहावित्ता मित्तणाइ
जाव संपरिवुडे सव्विड्डीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-
च्छित्ता चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-
वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सा-
गरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडा-
वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए
दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरुहावेइ दुरुहावित्ता सेयापीएहिं कल-
सेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्निहोमं करावेइ करावित्ता सागरं
दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

टीका—‘तत्थ णं चंपाए’ इत्यादि । तत्र खलु चम्पायां नगरीं जिनदत्तो नाम सार्थवाह आढ्यो यावद् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्—सा किम्भूता—सुकुमारा इष्टा यावद् मानुष्यकान् ‘पच्चणुन्भवमाणा’ मत्त्यनुभवन्ती विहरति । तस्य खलु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्याया आत्मजः= अद्भुतः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः—सुकुमारपाणिपादः, सर्वलक्षणसम्पन्नः यावत्—सुरूपः । ततः खलु स जिनदत्तसार्थवाहः अन्यदा कदाचित्

‘तत्थ णं चंपाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तत्थ णं चंपाए नगरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्डे, तस्स णंजिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुन्भवमाणा विहरइ) उस्स चंपा नगरीमें जिणदत्त नामको एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एवं जनमान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी । समस्त अंग और उपांग इसके बड़े ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भागती हुई यह आनंद के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूपे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था—जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तत्थणं चंपाए इत्यादि—

टीकार्थ—(तत्थणं चंपाए नगरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्डे तस्सणं जिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुन्भवमाणा विहरइ) ते चंपा नगरीमां एतदत्त नामे ऐक सार्थवाह रहतेता हतेता । ते धनधान्य वजरेथी सविशेष संपन्न तेमज्ज समानमां पृच्छते । भाषुस हतेता । तेनी धर्मपत्नीनुं नाम भद्रा हतुं, ते सर्वांग सुंदरी हती । तेना भद्रा अंगे अने उपांगे अहुज्ज सुकुमार हतां, ते पोताना पतिने अहुज्ज बडाही हती । पतिनी साथे मनुष्य लवना कामलोगे लोगवती ते सुभेथी पोताने वण्णत पसार करी रही हती ।

(तस्सणं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूपे)

लद्राभार्याथी उत्पन्न थयेले । लद्राभार्याने ऐक पुत्र हतेता । तेनुं नाम सागर हतुं । ते सुकुमार यावत् सुंदर रूपवान हतेता ।

अन्नमारघमांमृतचैविणी टी० अ० १६ सुकुमारिकाचरितवर्णनम्

१८१

स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य, सागरदत्तस्य गृहस्य 'अदूरसामन्ते' =नातिदूरे नातिसमीपे 'वीईवयई' व्यतिव्रजति=गच्छति, 'इमं चणं' अस्मिन् समये सुकुमारिका दारिका स्नाता=कृतस्नाना 'चेडियासंघपरिवुडा' चेडिकासंघपरिवृता=दासीसमूहमध्यगता, उपरि आकाशतलके-प्रासादस्याट्टालिकोपरि 'कणगतेंदुसकेणं' कनकतेंदुससयेन 'तेंदुसय' इतिदेशीशब्दः, सुवर्णमयकंदुकेन 'कीलमाणी २' विहरति, ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सुकुमारिकां दारिकां पश्यति, दृष्ट्वा सुकुमारिकाया दारिकाया रूपे च यौवने च लावण्ये च 'जाय विम्हए' यावत् विस्मितः=आश्चर्ययुक्तः सन् कौटुम्बिकपुरुषान्=आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिया ! कस्य दारिका किं वा नामधेयं 'से' इति तस्याः ?, ततः खलु ते

अच्छे रूपवाला था । (तएणं से जिनदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूर सामंतेणं वीईवयई) एक दिन जिनदत्त सार्थवाह अपने घर से निकला और निकलकर सागरदत्तके घरके पास से हो कर जा रहा था । (इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिआगा सतलगंसि कणगतेंदुसएणं कीलमाणी २ विहरइ) इसी समय सुकुमारिका दारिका नहा धो कर अपने प्रासाद की छत पर दासी समूहके साथ २ सुवर्णमय कंदुक (गेंद) से खेल रही थी । (तएणं से जिनदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुंबिय पुरिसे सहावेइ, सदावित्ता एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा-नामधेज्जं से ? तएणं ते

तएणं से जिनदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयई)

એક દિવસે જીનદત્ત સાર્થવાહ પોતાને ઘરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને સાગરદત્તના ઘરની પાસે થઇને બેઠો રહ્યો હતો.

(इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पि आगास-तलगंसि कणगतेंदुसएणं कीलमाणी २ विहरइ)

તે વખતે સુકુમારિકા દારિકા સ્નાન કરીને પોતાના મહેલની અગાશી ઉપર દાસી સમૂહની સાથે સુવર્ણમય કંડુક (દડી) રમતી હતી.

(तएणं से जिनदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुंबिय पुरिसे सहावेइ, सदावित्ता एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा नामधेज्जं से ! तएणं ते कोडुंबिय

કૌંદુમ્બિકપુરુષા જિનદત્તેન સાર્થવાહેનૈવયુક્તાઃ સન્તો હૃદયુષાઃ—અતિસુદિતાઃ ‘ કર-
ચલ જાવ ’ કરતલપરિચ્છીતં શિર આવર્ત દશનસં મસ્તકેઽઞ્જલિં કૃત્વા એવમવાઃ
દિષુઃ—હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! એવા સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાહસ્ય ‘ ધૂયા ’ દુહિતા=પુત્રી,
મદ્રાયા આત્મજા સુકુમારિકા નામ દારિકા સુકુમારપાણિપાદા યાવદ્-રૂપેણ ચ
યૌવનેન ચ લાવણ્યેન ચ ઉત્કૃષ્ટા ઉત્કૃષ્ટ શરીરા । તતઃ સ્વલુ સ જિનદત્તઃ સાર્થ-

કોંદુમ્બિય પુરિસા જિણદત્તેણ સત્થવાહેણં એવં વુત્તાસમાણા હઠ્ઠ કરચલ
જાવ એવં વયાસી—એણં દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદત્તસસ સત્થવાહસસ ધૂયા-
મદ્રાણ અત્તિયા સૂમાલિયા નામ દારિયા સુકુમાલપાણિપાયા જાવ ઉક્કિદ્ધ
સરીરા) સ્વેલતો હુઈં ઉસ કુમારિકા દારિકા કો જિનદત્ત સાર્થવાહે ને
દેસા—દેસકર વે સુકુમારિકા દારિકા કે રૂપ યૌવન એવં લાવણ્ય મેં
આશ્ચર્યચકિત હો ગયે—ઔર આશ્ચર્ય સે યુક્ત હોકર ઉન્હોને કૌંદુમ્બિક
પુરુષોં કો બુલાયા—બુલાકર વે ઉનસેં હસ પ્રકાર કહને લગે—હે દેવાનુ-
પ્રિયો ! યહ કન્યા કિમકી હૈં હસકા નામ કયા હૈં । જિનદત્ત સાર્થવાહ
કે દ્વારા પૂછે ગયે ઉન કૌંદુમ્બિક પુરુષોં ને હર્ષિત હો કર ઔર અપને
દોનોં હાથોં જોડ કર વડે વિનય કે સાથ ઉનસેં એસા કહા—હે દેવાનુ-
પ્રિય ! યહ પુત્રી સાગરદત્ત સાર્થવાહકી હૈં । મદ્રા માર્યાં કી કુક્ષિ સે
યહ જન્મી હૈં । હસકા નામ સુકુમારિકા હૈં । હસકે કર ચરણ વડે હી
સુકુમાર હૈં યાવત્ રૂપ, યૌવન એવં લાવણ્યસે યહ સર્વોત્કૃષ્ટ હૈં ઔર
સર્વોજ્ઞ સુન્દરી હૈં । (તર્ણ સે જિણદત્તે સત્થવાહે તેસિં કૌંદુમ્બિયાણં

પુરિસા જિણદત્તેણ સત્થવાહેણં એવં વુત્તા સમાણા હઠ્ઠ કરચલ જાવ એવં વયાસી—
એણં દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદત્તસસ સત્થવાહસસ ધૂયા મદ્રાણ અત્તિયા સૂમાલિયા
નામ દારિયા સુકુમાલપાણિપાયા જાવ, ઉક્કિદ્ધસરીરા)

રમતી સુકુમાર દારિકાને જીનદત્ત સાર્થવાહે જોઈ જોઈને તેઓ સુકુમાર
દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમાં આશ્ચર્ય ચકિત થઈ ગયા અને ત્યાર-
પછી તેમણે કૌંદુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તે તેમને આ
પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કન્યા કોની છે ? એનું નામ શું
છે ? જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે એવી રીતે પૂછાએલા તે કૌંદુમ્બિક પુરુષોએ હર્ષિત
થઈને પોતાના અને હાથ જોડીને બહુજ વિનયની સાથે તેમને આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાર્થવાહ સાગરદત્તની આ પુત્રી છે. ભદ્રાભાર્યોના ઉદરથી
આનો જન્મ થયો છે સુકુમારિકા આનું નામ છે. એના હાથપગ ખૂબ જ સુકો
મળ યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી આ સર્વોત્કૃષ્ટ છે અને સર્વોગ સુન્દરી છે.

बाह्यस्तेषां कौटुम्बिकानामस्तिके एतमर्थं श्रुत्वा यत्रैव स्नकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नातो यावद् मित्रज्ञातिपरिवृतश्चम्पाया नगर्यां मध्ये भूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, ततस्तदनन्तरम् सागरदत्तः सार्थवाहः खलु जिनदत्तं सार्थवाहम् एजमानम्=आगच्छन्तं पश्यन्ति, दृष्ट्वाऽऽमनादुत्तिष्ठति, उत्थाय 'आसणेणं उवणिमंतेइ' आसनेनोपनिमन्त्रयति=आसन उपवेशनार्थं प्रार्थयति, उपनिमन्त्रय, आसनोपगुपवेशनानन्तरम्, आस्वस्थं=मार्गश्रमापशमात् श्रान्तिरहितं, विस्वस्थं=विशेषतो विश्रान्तिमुपगतं, सुखासनवरगतं=सुखेन विशिष्टासनोपविष्टं, तं

अंतिए एयमद्वं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइपरिबुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंत्तित्ता आसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी) जिनदत्त सार्थवाहने उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से जब इस अर्थ को सुना तो सुनकर वह पहिले अपने घर गया—वहां जा कर उसने स्नान किया । यावत् फिर वह अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के साथ चंपानगरी के बीच से हो कर जहां सागरदत्त का घर था वहां पहुँचा—सागरदत्त ने ज्यों ही अपने घर पर आते हुए जिनदत्त सार्थवाहको देखा - तो वह जल्दीसे अपने स्थान से उठा—और उठकर “ आप यहां बैठिये ” इस प्रकार उनसे कहने लगा जब वे यथोचित स्थान पर बैठ चुके और आस्व

(तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कौटुम्बिकाणं अंतिए एयमद्वं सोच्चा—जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइ परिबुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे, जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंत्तित्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी)

उनदत्त सार्थवाहने ते कौटुम्बिक पुरुषानां मुखे आवात सांभलीने सौ पडेलां तेआ पोताने धेर गया. त्यां पडेलांने तेआ स्नान कयुं. यावत् पछी ते पोताना मित्र, ज्ञाति वगेरे परिजनानी साथे यंपा नगरीनी वन्ने थएने न्यां सागरदत्ततुं धेर छतुं त्यां पडेलां. सागरदत्त उनदत्त सार्थवाहने पोताने धेर आवता जेधने त्वरार्थी ते पोताना आसन उपरधी जेले थए गये. अने जेले थएने “ तमे अहाँ जेसो ”

जिनदत्तं सार्थवाहमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-हे देवानुप्रिय ! भण=कथय, किमा-
गमनप्रयोजनम्=कस्मै प्रयोजनाय समागतो भवान् ? ततः खलु स जिनदत्तः सार्थ-
वाहः सागरदत्तं सार्थवाहमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-एवं खलु अहं हे देवानु-
प्रिय ! तव दुहितरं=पुत्रीं, भद्राया आत्मजां सुकुमारिकां=सुकुमारिकानाम्नी
संगरस्य=सागरनामकस्य मत्पुत्रस्य भार्यात्वेन 'वरेमि' वृणोमि=वाञ्छामि, यदि
खलु त्वं जानीहि हे देवानुप्रिय ! 'जुत्तं वा' युक्तं वा=योग्यं वा-'एतत् कार्यं
समुचितं भवति' ति 'पत्तं वा' प्राप्तं वा=एतत् कार्यं कुलमर्यादामनुप्राप्तं वा,
स्थविश्वस्थ यन चुके-तब विशिष्ट आसन पर शान्तिके साथ बैठे हुए उन
जिनदत्त सार्थवाह से उसने इस प्रकार पूछा ।-(भण देवाणुप्पिया !
किमागमणपओयणं) कहिये देवानुप्रिय ! यहां पधारने का आपका
क्या प्रयोजन है ? किस प्रयोजन से आप यहां आये हैं-कहिये-(तएणं
से जिणदत्तसत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी-एवं खलु अहं
देवाणुप्पिया ! तव धूयं भदाए अंतियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए
वरेमि जइणं जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा
सरिसो वा संजोगो दिज्जउणं सूमालिया सागरस्स) जिनदत्त सार्थवा-
हने सागरदत्त सार्थवाहसे तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! मैं आपकी
सुभद्रा की कुक्षिसे उत्पन्न हुई सूमालिका पुत्री को अपने पुत्र सागर की
भार्या बनाना चाहता हूँ । यदि आप इसे स्वीकार करें कि यह कार्य
योग्य है-उचित है-कुल मर्यादा के अनुसार है अथवा मेरा पुत्र आपकी

आ रीते तेमने छडेवा दाज्यो. ज्यारे तेओ उचित स्थाने भेसी गया अने
आस्वस्थ विश्वस्थ थरं बुक्या त्यारे विशिष्ट आसन उपर शान्तिपूर्वक भेडेका
ते उनदत्त सार्थवाहने तेणे आ प्रभाणे कहुं-(भण देवाणुप्पिया ! किमागमण
पओयणं) हे देवानुप्रिय ! जातावे अही पधारवानी पाछण आपने शो डेतु
छे ? क्या प्रयोजनथी आप अही आन्थी छे ?

(तएणं से जिणदत्त सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी-एवं खलु
अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भदाए अंतियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि
जइणं जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो
दिज्जउणं सूमालिया सागरस्स)

उनदत्त सार्थवाहे सागरदत्त सार्थवाहने त्यारे आ प्रभाणे कहुं हे हे
देवानुप्रिय ! हुं तमारी सुभद्राना उदरथी जन्म पावेवी सुमालिका पुत्रीने मारा
पुत्र सागरनी पत्नी बनाववा धरुं छुं. आप जे मारी भागछी उचित सम-
जता छे, कुण-भर्यादा योग्य तेमज मारे पुत्र तमारी कन्या माटे योग्य

મમગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટીકા અ૦ ૧૬ સુકુમારિકાચરિતવર્ણનમ્

૧૯૩

પાત્રં= 'કન્યા યોગ્યોડયં મત્પુત્રઃ સાગરઃ' ઇતિ, 'સલાહણિજ્જં વા' શ્લાઘનીયં= પ્રશંસનીયં વા 'સરિસો વા સંજોગો' સદૃશો વા સંયોગઃ-અયં કન્યાવરયો વૈવાહિકઃ સંબન્ધઃ કુલેન રૂપેણ ગુણેન વા તુલ્ય ઇતિ, 'તો' તર્હિ 'દિજ્જત' દદાતુ ભવાન્ સ્વલુ સુકુમારિકાં દારિકાં સાગરાય=મત્પુત્રાયેતિભાવઃ। તતઃ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! બ્રૂહિ-કિં દદ્ધ-કિં દદ્ધાં, શુલ્કં=સંમાનાર્થં દ્રવ્યં સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ ? તતઃ સ્વલુ સ સાગરદત્તઃ સાર્થવાદસ્તં જિનદત્તમેવમવાદીત્-અંવં સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! સુકુમારિકા દારિકા મમૈકા એકજાતા=એકોત્પન્ના, તથા-દૃષ્ટા-અનુકૂલા, યાવત્-કાન્તા-દૈષિતા, પ્રિયા=પ્રીતિપાત્રા, મનોજ્ઞા=મનોગતા તથા-

કન્યા કે યોગ્ય છે. યહ સંબન્ધ પ્રશંસનીય છે, કન્યા ઓર વર કા યહ વૈવાહિક સંબન્ધ કુલ રૂપ ઓર ગુણો કે અનુરૂપ છે તો આપ અપની પુત્રી સુકુમારિકા કો મેરે પુત્ર સાગર કે લિયે પ્રદાન કર દીજિયે-(તણં દેવાનુપ્રિયા ! કિં દલયામો સુલ્કં સુમાલિયાએ ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથ મેં યહ મી કહદીજિયે કિ સુકુમારિકા દારિકા કે સંમાનાર્થ હમ કયા દ્રવ્ય દેવે (તણં સે સાગરદત્તે તં જિનદત્તં અંવં વયાસી-અંવં સ્વલુ દેવાનુપ્રિયા ! સુમાલિયા દારિયા મમ એગા, એગજાયા દ્વિદ્વા જાવ કિમંગપુણ પામણયાએ તં નો સ્વલુ અહં હચ્છામિ, સુમાલિયાએ દારિયાએ સ્વળમત્રિ વિષ્ણઓગં તં જહ્ણં દેવાનુપ્રિયા ! સાગરદારએ મમ ધરજામાડએ ભવદ્, તો ણં અહં સાગરસ્સ સુમાલિયં દલયામિ) સાગરદત્તએ ને જિનદત્ત સે તવ હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! યહ સુકુમારિકા પુત્રી મેરે યહાં એક હી લઢકી છે ઓર યહ એક હી ઉત્પન્ન હુઈ

છે, આ સંબંધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સંબંધ કુળ રૂપ અને શુભેને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો. (તણં દેવાનુપ્રિયા ! કિં દલયામો સુલ્કં સુમાલિયાએ ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સંમાનાર્થ અમે શું દ્રવ્ય રૂપમાં આપીએ ?

(તણં સે સાગરદત્તે તં જિનદત્તં અંવં વયાસી અંવં સ્વલુ દેવાનુપ્રિયા ! સુમાલિયા દારિયા મમ એગા. એગ જાયા દ્વિદ્વા જાવ કિમંગપુણ પામણયાએ તં નો સ્વલુ અહં હચ્છામિ સુમાલિયાએ દારિયાએ સ્વળમત્રિ વિષ્ણઓગં તં જહ્ણં દેવાનુપ્રિયા ! સાગરદારએ મમ ધરજામાડએ ભવદ્, તો ણં અહં સાગરસ્સ દારગસ્સ સુમાલિયં દલયામિ) ત્યારે સાગરદત્તે જિનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે.

મમોમા=મતસઃ સ્થાનભૂતા, કિં વહૂના ઉદુમ્બરપુષ્પમિવ 'ઉદુમ્બરપુષ્પં કેનાપિ
 હૃષ્ટમ્' ઇતિવત્ શ્રવણવિષયત્વેન સા દુર્લભા, કિમ્ન ! પુનર્-દર્શનવિષયતયા, તત્=
 તસ્માદ્ નો સ્વલુ અહમિચ્છામિ સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ ક્ષણમપિ વિપ્રયોગં=
 વિયોગમ્, તત્=તસ્માદ્ યદિ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! સાગરદારકો મમ 'ઘરજામા-
 ઉપ' ગૃહજામાતૃકઃ=ગૃહવાસીજામાતા મવતિ 'તોળં' તર્હિ સ્વલુ અહં સાગરાય
 દારિકાય સુકુમારિકાં દદામિ । તતઃ સ્વલુ સ જિનદત્તઃ સાર્થવાહઃ સાગરદત્તેન
 સાર્થવાહેનૈવ મુક્તઃ સન્ યત્રૈવ સ્વકં ગૃહં તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સગરદારકં=
 સ્વપુત્રં શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-એવં સ્વલુ હે પુત્ર ! સગરદત્તઃ સાર્થ-
 વાહો મમ=માં પ્રતિ, 'સમ્બન્ધસામાન્યે પૃષ્ઠી' એવં=વશ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-
 એવં સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! સુકુમારિકા દારિકા મમૈકા એક જાતા ઇષ્ટા 'તં ચેવ'

હૈ । યહ મેરે લિયે ઈષ્ટ યાવત્ મનોમ હૈ-કાન્ત હૈ, પ્રિય હૈ ઓર મનોજ્ઞ
 હૈ । અનુકૂલ હોને સે હૃષ્ટ, ઈપ્સિત હોને સે કાન્ત પ્રીતિપાત્ર હોને સે
 પ્રિય મનકો રુચને વાલી હોને સે મનોજ્ઞ એવં મન કા સ્થાન ભૂત હોને
 સે મનોજ્ઞ હૈ । જ્યાદા કયા કહૂં યહ તો હમૈં ઉદુંબર પુષ્પ કે સમાન
 દર્શન દુર્લભ થી-સુનને કી તો બાત હી કયા । અતઃ મૈં ઇસે દેના નહીં
 ચાહતા હૂં । કારણ ઇસ સુકુમારિકા દારિકા કે વિના મૈં એક ક્ષણ બી
 નહીં રહ સકતા હૂં ઇસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! સાગર યદિ ઘરજમાઈ બન
 કર રહના ચાહે તો મૈં ડગ્હેં યહ અપની સુકુમારિકા પુત્રી દે સકતા હૂં ।
 (તણં સે જિનદત્તે સત્થવાહે સાગરદત્તેણં સત્થવાહેણં એવં વુત્તે સમાણે
 જેણૈવ સણ ગિહે તેણૈવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા સાગરદારગં સદાવેહ,
 સદાવિત્તા એવં વયાસી-એવં સ્વલુ પુત્તા ! સાગરદત્તે સત્થવાહે મમ એવં

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાંત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે.
 અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાંત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય
 અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ
 છે. વધારે શું કહું ! આ તો અમને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી.
 સાંભળવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હું આપવા ઇચ્છતો નથી.
 કારણ કે એના વગર હું ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી. એટલા માટે હે દેવા-
 નુપ્રિય ! સાગર બે ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હું
 આ મારી સુકુમારિકા પુત્રી તેમને આપી શકું તેમ છું.

(તણં સે જિનદત્તે સત્થવાહે સાગરદત્તેણં સત્થવાહેણં એવં વુત્તે સમાણે
 જેણૈવ સણ ગિહે તેણૈવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરદારગં સદાવેહ, સદાવિત્તા
 એવં વયાસી-એવં સ્વલુ પુત્તા ! સાગરદત્તે સત્થવાહે મમ એવં વયાસી-એવં સ્વલુ

જનનારધર્મામૃતવર્ષિણી ટીકા અઠ ૧૬ સુકુમારિકાચરિતવર્ણનમ

૧૨૫

તદેવ=પૂર્વોક્તવર્ણનમેવાત્રવોધ્યં યાવત્-તસ્માદ્ નો સ્વલ્પહમિચ્છામિ સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ સ્નનમપિ વિપ્રયોગં, તત્=તસ્માદ્ યદિ સ્વલ્પ સાગરદારકો મમ 'ઘર-જામાડ' ગૃહજામાતૃકાઃ=ગૃહવાસી જામાતાભવતિ, તર્હિ દદામિ । તતઃ સ્વલ્પ ત સાગરકો દારકો જિનદત્તેન તાર્થવાહેનૈવમુક્તઃ તન્ તૂષ્ણીકઃ=મૌનાવલમ્બી સન્ સંતિષ્ઠતે ।

વધાસી-અં સ્વલ્પ દેવાણુપિયા ! સૂમાલિયા દારિયા મમ ઇગા ઇગજાયા ઇદ્ધા તં ચેવ જઈણં સાગરદારં મમ ઘરજમાડં ભવઈ તા દલયામિ)
 इस प्रकार सागरदत्त सार्थवहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह जहां अपना घर था वहां आया-वहां आकर उसने अपने सागेर पुत्र को बुलाया । बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागर-दत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ । उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं । यह उसे बहुत ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है । इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया । इसलिये वह उसका एक क्षण भी वियोग सहन नहीं कर सकता है । अतः वह

દેવાણુપિયા ! સૂમાલિયા દારિયા મમ ઇગા ઇગજાયા ઇદ્ધા તં ચેવ જઈણં સાગર-દારં મમ ઘરજમાડં ભવઈ તા દલયામિ)

આ રીતે જીનદત્ત સાર્થવાહ તેમની આ વાત સાંભળીને તે જીનદત્ત સાર્થવાહ ત્યાં પોતાનું ઘર છોડી ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેણે પોતાના સાગરપુત્રને બોલાવ્યો. બોલાવીને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હું કે હું પુત્ર ! સાગરદત્ત સાર્થવાહે મને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે તમારો પુત્ર સાગર જે મારો ઘર જમાઈ રહેવા કબૂલતો હોય તો હું મારી પુત્રી સુકુમારિકા તેમને આપવા તૈયાર છું. તેઓ તમને ઘર જમાઈ બનાવવા એટલા માટે ધવિષ્ટ છે કે સુકુમારિકા દારિકા તેમની એકની એક પુત્રી છે. તે તેમને અતીવ ઈષ્ટ યાવત્ મનોમ છે. આ રીતે સાગરદત્તે જે કંઈ કહ્યું હતું તે બધું તેમણે પોતાના પુત્ર સાગર આગળ રજૂ કર્યું. અને છેવટે કહ્યું કે એટલા માટે જ તે એક ક્ષણ પણ પોતાની પુત્રીનો વિયોગ સહી શકતો નથી. તમને તે આ કારણથી જ ઘર જમાઈ બનાવવા ઇચ્છે છે.

ततः खलु जिनदत्तः तार्थवाहो ऽन्यदा कदाचित् शोभने=शुभकारके, तिथिकरणनक्षणमुहूर्ते विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यमपस्कारयति, निष्पादयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रभृतिनामन्त्रयति, आमन्त्र्य 'जाव सम्माणेइ' यावत् सम्मानयति भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रादिभिः सत्करोति, सत्कृत्य स्वागतवचनादिना तुम्हें घरजमाई बनाना चाहता है । (तएणं से सागरए दारए जिणदत्ते णं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समणे तुसिणीए संचिद्धइ, तएणं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहूर्त्तंसि विउलं असण पान खाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ, जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सत्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्स वाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सच्चिद्धीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता चंपा नयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ) जिनदत्त सार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहा जाने पर वह सागर दारक चुपचाप रह गया उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया । एक दिन जिनदत्त ने शुभ, तिथि करण, दिवस नक्षत्र मुहूर्त्तमें विपुल-मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार बनवाया -बनवाकर उसने अपने मित्र ज्ञाति आदिवन्धुओं को आमंत्रित किया आमंत्रित करके फिर उसने उन सबको भोजनकराया-भोजन कराकर

(तएणं से सागरए दारए जिणदत्ते णं सत्थवाहे णं एवं वुत्ते समणे तुसिणीए संचिद्धइ, तएणं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहूर्त्तंसि, विउलं असणपान खाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ आमंतेइ, जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सत्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सच्चिद्धीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चंपा नयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ)

जिनदत्त सार्थवाह वडे आ प्रभाषु कडेवायेला सागर पुत्र ओकदम थूप थडने ओसी ज रह्यो. तेणे कोड पणु जातनो जवाअ आप्यो नडि. ओक दिवस जिनदत्ते शुभतिथि, करण, दिवस, नक्षत्र मुहूर्त्तमां पुष्कण प्रभाषुमां अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप थार जातनो आहार जनावडाव्यो. जनावडावीने तेणे पोताना मित्र, ज्ञाति वगेरे संबधीओने आमंत्रित कथा. आमंत्रित करीने तेणे ते जधा आवेला संबधीओने जभाउथा. जभा.

अंतर्गारवसामृत विंशो टीका अ० १६ सुकुमारिकावर्णनम्

१२७

सम्मानयति समान्य सागरं दारकं स्नातं यावत् सर्वालङ्कारविभूषितं कारयति, कारयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञाति स्वजन-सम्बन्धिभिर्यावत् परिवृतः सर्वद्वर्था सकलविभवेन स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन=मध्येभूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शिविकातः 'पच्चोरुहावेइ' प्रत्यवरोहयति, सागरदारकं स्वपुत्रं प्रत्यवतारयति, प्रत्यवरोह्य सागरकं दारकं सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य उपनयति=समोपमानयति ।

ततः खलु सागरदत्तः सार्थवाहो विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं=चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति, उपस्कार्य यावत् = मित्रादिसहितं जिनदत्तमामन्त्र्य भोजयित्वा, सत्कृत्य, सम्मानयति, सम्मान्य सागरकं दारकं सुकुमारिकाया दारिकाया सार्थं 'पट्टयं' पट्टकं 'दुरूहावेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरुह्य श्वेतपीतकः=सवका वस्त्रादिक से सत्कार किया सत्कार करके फिर उनका स्वागत बचानादिकों द्वारा सम्मान किया- । सम्मान कर के बाद में उसने अपने सागरपुत्रको स्नान कराया- । स्नान कराकर उसने उसे समस्त अलंकारो से विभूषित कराया । विभूषित कराकर बाद में उसने उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिविका पर चढ़ाया चढ़ाकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबंधियो को साथ लेकर फिर वह सकल विभवके अनुसार अपने घर से निकला-निकलकर चंपानगरी के बीचो बीच से होता हुआ सागरदत्त का जहाँ घर था वहाँ पहुँचा । (उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाण खाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणत्ता सागरगं दारगं सुमालियाए दारियाए सद्धि पट्टयं

दीने अधाने वओ वगेरे आपीने सत्कार क्यो, सत्कार करीने तेहे तेमनु स्वागत वयनेो वडे सम्मान क्युं. सम्मान क्यो बाद तेहे पोताना सागर पुत्रने स्नान करायुं स्नान करानीने तेहे तेने अधा अलंकारोथी शणुगार्यो, शणुगारीने तेहे तेने पुत्थ-सद्धअवाडिनी पालणीमां जेसाउयो. त्यारपथी मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबंधीओने साथे लधने ते पोताना सम्पूर्ण बैलवनी साथे पोताना घेरथी नीडोयो-नीडणीने अंधा नभरीनी वओथे थधने ते अथां सागरदत्तनुं घर छतुं त्यां पडोअये।

(उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलअसणपाणखाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणत्ता सागरगं दारगं सुमालियाए

૧૧૬

જાતાયસૈકયાજ્ઞસ્યૈ

રાજતસૌવર્ણેઃ કલશૈઃ = વારિપૂર્ણૈર્ઘર્તૈર્મજ્જયતિ = સ્નપયતિ, મજ્જયિત્વા અગ્નિહોમં
કારયતિ, કારયિત્વા સાગરં દારકં સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ પાણિ ગ્રાહયતિ ॥ સૂ. ૮ ॥

દુરુહાવેહ, દુરુહાવિત્તા સેયાપીર્ણિ કલસેર્ણિ મજ્જાવેહ, મજ્જાવિત્તા
અગ્નિહોમં કરોવેહ, કરાવિત્તા સાગર દારયં સૂમાલિયાણ દારિયાણ પાણિ
ગિળ્હાવેહ) વહાં પહુંચકર ઉસને અપને પુત્ર સાગર કો પાલત્તી સે નીચે
ઉતારા ઓર ઉતારકર સાગરદત્ત સાર્થવાહ કે પાસ ઉસે લેઆયા । સાગ-
રદત્ત સાર્થવાહને ભી પહિલેસે હી ચિપુલમાત્રા મેં અશન, પાન, સ્વાદ્ય,
અર્થ સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર તૈયાર કરવાલિયો થા સો ઉસસે મિત્રાદિ
સહિત જિનદત્ત સાર્થવાહ કો આનંદ કે સાથ ચિલાયા ચિલાકર સબકા
સત્કાર કિયા સન્માન કિયો । સત્કાર સન્માન કરને કે વાદ ફિર
સાગરદત્તને સાગર દારક કો અપની પુત્રી સુકુમારિકા કે સાથ એક
પટ્ટક પર બેઠાયા-બેઠાકર સુવર્ણ ચાંદી કે કલશોસે ઉનકા અભિષેક
કરાયા અભિષેક હો જાને કે વાદ અગ્નિહોમ કરાયા 'અગ્નિહોમ જા
હો ચુકા તબ સાગરદત્તને અપની પુત્રી સુકુમારિકા કા સાગર કે હાથ મેં
હસ્તમિલાપ કિયા-અર્થાત્ લગન કર દિયો ॥ સૂ. ૮ ॥

દારિયાણ સર્દિ પટ્ટયં, દુરુહાવેહ, દુરુહાવિત્તા સેયાપીર્ણિ કલસેર્ણિ મજ્જાવેહ,
મજ્જાવિત્તા અગ્નિહોમં કરોવેહ, કરાવિત્તા સાગરદારયં સૂમાલિયાણ દારિયાણ
પાણિ ગિળ્હાવેહ)

ત્યાં પહોંચીને તેણે પોતાના પુત્ર સાગરને પાલખીમાંથી નીચે ઉતાર્યો
અને ઉતારીને સાગરદત્ત સાર્થવાહની પાસે લઈ ગયો. સાગરદત્ત સાર્થવાહ
પણ પહોંચેથી જ પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર
ભાતનો આહાર તૈયાર કરાવીને રાખ્યો હતો. તેણે મિત્ર વગેરે લોકોની સાથે
જનદત્ત સાર્થવાહને આનંદની સાથે જમાડ્યા અને ત્યારપછી તેણે સૌનો
સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું. સત્કાર અને સન્માન કર્યા બાદ સાગરદત્તે સાગર-
દારકને પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાની સાથે એક પટ્ટક ઉપર બેસાડ્યો. બેસાડીને
સોના-ચાંદીના કળશોથી તેમને અભિષેક કરાવડાવ્યો. અભિષેકનું કામ પૂરું
થયા બાદ તેણે અગ્નિહોમ કરાવ્યો. અગ્નિહોમની વિધિ પૂરી થઈ ગઈ ત્યારે
સાગરદત્તે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાનો સાગરની સાથે હસ્તમેળાપ કરાવી દીધો
અને તેણે કે લગ્ન કરાવી દીધાં. ॥ સૂ. ૮ ॥

मूलम्—तएणं सागरदारए सूमालियाए दारियाए इमं
 एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ
 वा जाव मुम्मुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं
 पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहु-
 त्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स
 दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखा-
 इमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जइ, तएणं
 सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवाग-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिंगंसि
 निवज्जइ, तएणं से सागरए दारियाए सूमालियाए दारि-
 याए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहा नामए
 असिपत्तेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पच्चणु-
 व्वभवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अंगफासं असहमाणे
 अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सूमा-
 लियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए
 पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया
 दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइ-
 मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता
 जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स
 पासे णुवज्जइ, तएणं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए
अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं सेसागरदारएसूमा-
लियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्तासयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता
वासघरस्स दारं विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए
जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू०९॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः खलु सागरदारकः सुकुमारिकाया दारि-
काया इममेतद्रूपं=वक्ष्यमाणप्रकारं पाणिस्पर्शं=करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति,
कीदृशः स करस्पर्शः इति सदृष्टान्तमाह—‘से जहानामए’ इत्यादि । तद् यथा
नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्तं प्रदर्शयति—‘असिपत्तेइ वा’ इत्यादि । असि-
पत्रमिति वा=असिपत्रं=खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकु-
मारिका दारिकायाः करस्पर्शः प्रतिसंवेद्यत इति भावः । ‘जाव मुम्मुरे इ वा०’
यावत् मुम्मुरेति वा=अत्र यावत् करणादिदं बोध्यम्—‘करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा

‘तएणं सागरदारए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद—अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप
किया तब (सागरदारए) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकु-
मारिकादारिकाका (पाणिपासं) वह हस्तका स्पर्श (इमं एयारूवं पडिसंवे-
देइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरे-
इवा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ) जैसे वह
असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श
हो । यहां यावत् शब्दसे “कर पत्तेइ” वा खुर पत्तेइवा, कलंव चीरिया

‘तएणं सागरदारए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपञ्जी ओट्ठे के सागरदारके न्थारे हस्तमिलाप कर्यो त्थारे
(सागरदारए) ते सागरने (सूमालियाए दारियाए) सुकुमार दारिकाने (पाणि-
पासं) ते हाथने स्पर्श (इमं एयारूवं पडिसंवेदेइ) आ प्रमाणे लाग्यो के
(से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव
पाणिफासं पडिसंवेदेइ)

आण्णे ते असिपत्र-तलवार-ने स्पर्श न होय, यावत् अशिक्षु मिश्रित
भस्मने स्पर्श न होय. अर्हो ‘यावत्’ शब्दथी

(करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा, कलंवचीरियापत्तेइ वा सत्ति आमेइ वा कौतगेइ

સમગરધર્મામૃતઘણી શ્રી ૦ અ ૧૬ સુકુમારિકાચરિતવર્ણનમ્

૨૦૧

કલંચીરિયાપ્તેહ વા સત્તિઅગ્નેહ વા કૌંતમ્નેહ વા તોમરમ્નેહ વા મિંદિમાલમ્નેહ વા સૂચિકલાવણેહ વા વિચ્છુયડંકેહ વા કવિકચ્છૂહ વા ઇંગાલેહ વા મુમ્મુરેહ વા અચ્ચોહ વા જાલેહ વા આલાહ વા સુદ્ધાગણીહ વા ભવેયારૂવેસિયા ?, નો ઇળદે સમદે, કરપત્રમિતિ વા ક્ષુરપત્રમિતિ વા કદમ્બચીરિકાપત્રમિતિ વા શક્ત્યગ્રમિતિ વા કુન્તાગ્રમિતિ વા તોમરાગ્રમિતિ વા મિન્દિપાલાગ્રમિતિ વા વૃશ્ચિકદંશ इति વા કપિકચ્છુરિતિ વા અઙ્ગારइति વા મુર્મુર इति વા અર્ચિરિતિ વા જ્વાલેતિ વા, અલાતમિતિ વા શુદ્ધાગ્રિરિતિ વા ભવેદેતદ્રૂપઃ-સ્યાત્ ?, નાયમર્થઃ સમર્થઃ, इति । તત્ર કરપત્ર=ક્રકચં 'કરવત્' इति પ્રસિદ્ધં ક્ષુરપત્રમ્='ઉસ્તરા' इति પ્રસિદ્ધમ્, કદમ્બચીરિકાપત્રમ્-કદમ્બચીરિકા-ત્વણવિશેષઃ, અસ્યા અગ્રભાગોઽતિતીક્ષ્ણો ભવતિ તસ્ય પત્રં, શક્તિઃ=શસ્ત્રવિશેષઃ-ત્રિશૂલં વા તસ્યા અગ્રભાગઃ સ્વ કુન્તઃ 'ખાલા' इति પ્રસિદ્ધઃ શસ્ત્રવિશેષઃ, તદગ્રભાગઃ, તોમરઃ=વાળ વિશેષસ્તદગ્રભાગઃ, મિન્દિપાલઃ=શસ્ત્રવિશેષઃ સૂચીકલાપકં સૂચીસમૂહસ્તસ્યાગ્રભાગઃ, વૃશ્ચિકદંશઃ=વૃશ્ચિક કણ્ઠકઃ, કપિકચ્છુઃ-સ્વર્જુકારી વનસ્પતિવિશેષઃ, અઙ્ગારઃ=જ્વાલારહિતોઽગ્નિઃ, મુર્મુરઃ=અગ્નિ-પત્તેહ વા, સત્તિ અગ્નેહ વા કૌંતમ્નેહ વા તોમરમ્નેહ વા, મિંદિમાલમ્નેહ વા સૂચિકલાવણેહ વા વિચ્છુય ડંકેહ વા કવિકચ્છૂહ વા ઇંગાલેહ વા મુમ્મુરેહ વા અચ્ચોહ વા જાલેહ વા આલાહ વા સુદ્ધાગણીહ વા ભવેયારૂ વેસિયા ? નો ઇળદે સમદે) કર પત્ર-કર વત, ક્ષુર પત્ર-ઉસ્તરા કદમ્બચીરિકા પત્ર છુહિયા ઘાસ-જિસકા અગ્રભાગ અધિક તીક્ષ્ણ હોતો હૈ શક્તિ-અગ્ર-શક્તિ-ત્રિશૂલ અથવા આયુધવિશેષ કા અગ્રભાગ કુન્તાગ્ર ખાલે કી નોક તોમરાગ્ર-વાળ કી અની મિન્દિપાલ-શસ્ત્ર વિશેષ-કા અગ્રભાગ-સૂચી કલાપકા અગ્રભાગ-વિચ્છુ કા ડંક કપિકચ્છુ-કરેંચ-જિસકે સ્પર્શ હોનેપર જુજલી આતી હૈ-જ્વાલા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકણમિશ્રિત તોમરમ્નેહ વા, મિંદિમાલમ્નેહ વા સૂચિકલાવણેહ વા વિચ્છુય ડંકેહ વા, કવિકચ્છૂહ વા ઇંગાલેહ વા, મુમ્મુરેહ વા અચ્ચોહ વા જાલેહ વા, આલાહ વા સુદ્ધાગણીહ વા ભવેયારૂવે સિયા ? નો ઇળદે સમદે)

કરપત્ર-કરવત, ક્ષુરપત્ર - અશ્ત્રો, કદમ્બચીરિકા પત્ર-છુરિકા કે જેને અગ્રભાગ એકદમ તીક્ષ્ણ હોય છે, શક્તિ-અગ્ર-શક્તિ, -ત્રિશૂળ અથવા આયુધ વિશેષનો અગ્રભાગ, કુન્તાગ્ર-ભાલાની અણી, તોમરાગ્ર-તીરની અણી, મિન્દિપાલ-વિશેષનો અગ્રભાગ, સૂચીકલાપનો અગ્રભાગ, વીંછીનો ડાંખ, કવિકચ્છુ-કવચ-જેના સ્પર્શથી અગ્રવાળ આવે છે, જ્વાળા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકણ મિશ્રિત અશ્ત્ર, અર્ચિ-ભાકડાઓથી સજાગતી જ્વાળા, જ્વાળા-ભાકડા ધરાવતી

कणमिश्रितभस्म अर्चिः=इन्धन प्रतिबद्ध ज्वाला, ज्वालातु-इन्धनच्छिन्ना, आला-
तम्=उल्मुकं, शुद्धाग्निः लोहपिण्डस्थाग्निः । असिपत्रादि-शुद्धाग्निर्यन्तानां स्पर्श
इव सुकुमारिकायाः करस्पर्शो भवेत्कथञ्चित्किम्? नायमर्थः समर्थः=अर्थं दृष्टान्तसमूहः
करस्पर्शं साम्यं प्राप्तुं न समर्थः तर्हि कीदृशः? इत्याह 'एत्तो अणिद्वतराए चैव०'
एतरमाद् असिपात्रदीनां स्पर्शादनिष्टतरक एव, अकान्ततरक एव=अत्यन्तमक-
मनीय एव, अप्रियतरक एव=अतिदुःखजनक एव अमनोज्ञतरक एव=अतिशयेन मनो-
विकृतिकारक एव अमनोमतरक एव=अतिशयेन मनः प्रतिकूल एव वर्तते, तमेवम्भूतं
पाणिस्पर्शं सुकुमारिकादारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति ।

ततः खलु स सागरदारकः अकामकः= निरभिलाषः 'अवसव्वसे' अपस्ववशः=
अपगतस्वातन्त्र्यः विवशः सन् मुहूर्तमात्रं=स्तोककालं संतिष्ठते (ततः खलु स
सागरदत्तः सार्थवाहः सागरस्य दारकस्य अम्बापितरौ मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिष-

भस्म अर्चि-इन्धन प्रतिबद्ध ज्वाला, ज्वाला-इन्धन से रहित ज्वाला
अलात-उल्मुक शुद्धाग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि । इन असिपत्र से लेकर
शुद्धअग्नि पर्यन्त पदार्थों का स्पर्श जैसा होता है वैसा ही सुकुमारिका
के कर का स्पर्श हो सकता था-परन्तु यहां यह अर्थ समर्थित नहीं है
-अर्थात् उसके सुकुमारिका के कर स्पर्श में इन दृष्टान्तों के स्पर्श की
समानता नहीं मिल सकती है क्योंकि वह स्पर्श तो इनके स्पर्श से भी
अधिक अनिष्टतर ही था, अकान्ततरक ही था-अत्यन्त अकमनीय था,
अप्रिय तरकही था-अत्यन्त दुःखजनक ही था, अमनोज्ञतरक ही था
-अत्यन्त मनो विकृतिजनक ही था, अमनोमतरक ही था-अत्यन्त
मनः प्रतिकूल ही था । (तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे
मुहुत्तमिच्चं संविद्वइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स

अवाणा, अलात-उल्मुक, शुद्ध अग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि-आटली वस्तुओंनुं श्रद्धा
करवुं लोभये. आ असिपत्रधी भांडीने शुद्ध अग्नि सुधीना पद्याथेनी ने जातने
स्पर्श होय छे तेवे न सुकुमारिकाना हाथने पण स्पर्श हतो.

पणु हकीकतमां तो आ वस्तुओंनी समानता पणु तेना तीक्ष्ण स्पर्शनी साथे
करी शकय तेम नही केमके तेना हाथने स्पर्श तो उक्त वस्तुओंना स्पर्श
करतां पणु पधारे अनिष्टतर हतो, अकांततरक हतो, अतीव अकमनीय हतो,
अप्रियतरक हतो, अत्यंत दुःखजनक हतो, अमनोमतरक हतो, अत्यंत मनो
विकृतिजनक हतो, अमनोम तरक हतो, अहु न मनः प्रतिकूल हतो.

(तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमिच्चं संविद्वइ, तएणं से सा-

अनगारधनोमुतत्रिणी टी० अ० १६ सुकुमारिकावरितवर्णनम्

२०६

रिजनांश्च विपुलेवाशनयानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमालयालङ्कारेण सत्करोति
समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको
दारकः सुकुमारिकाया सार्धं यत्रैव वासगृहं-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उवागस्य
सुकुमारिकाया दारिकाया सार्धं 'तलिमंसि' तलिमे देशीयोऽयंशब्दः तल्पे-शयनीये
'निवज्जइ' निषीदति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया
इममेतमद्रूपमङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति-तद् यथानामकं=तत् प्रतिसंवेदनं दृष्टान्तोपन्या-
सपूर्वकं प्रदर्शयति-असिपत्रं वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अङ्गस्पर्शं
अम्मापियरो मित्तगाइ० विउलेण असणं पाणंखाइमं साइमं पुष्पवत्थ
जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा
से रहित बन गया । फिर भी वहां विवश होकर वह कुछ समय तक
ठहरा रहा । सागरइत्त सार्थवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा
उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, संबन्धी परिजनों का विपुल अशन, पान,
खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला
तथा अलंकार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार सन्मान
करके फिर उसने सबको अपने यहां से बिदा कर दिया । (तएणं
सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगंसि निवज्जइ, तएणं
से सागरए दारए सुमालियाए दारियाए इमं एयाह्वं अंगकासं पडि-
संवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामयरागंचेव अंगकासं

गरदत्ते सत्यवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तगाइ० विउलेण असणं पाणं
खाइमं साइमं पुष्पवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

ज्येष्ठदा भाटे ते सागर तेनां अलिङ्गापाथी रहित जनी गथे। छतांजे
ते त्यां लायार थडने थोडा वजत सुधीं शेकाथे। सागरइत्त सार्थवाहे सागर
दारकना मातापितानो तेमज तेना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनोना
विपुल अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप आर जातना आहारथी अने पुष्प
वस्त्र, गंध, माला तेमज अलंकारथी अहु सत्कार अने सन्मान कथुं। सत्कार
तेमज सन्मान करीने तेणे सोने पोताने त्यांथी विदाय कर्था।

(तएणं सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगंसि निवज्जइ, तएणं से सागरए
दारए सुमालियाए दारियाए इमं एयाह्वं अंगकासं पडिसंवेदेइ से जहा नामए
असिपत्तेइ वा जाव अनगामयरागं चेव अंगकासं पच्चगुग्गममाणे विहरइ तएणं

मयन्तुभवन् विहरति । ततः खलु स सागरदारकस्तस्या अङ्ग स्पर्शमसहमानोऽपस्व-
वशः=अपगत स्वातन्त्र्यः, सन् मुहूर्तमात्रं संतिष्ठते । ततः खलु स सागरदारकः
सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा सुकुमारिकाया दारिकायाः पार्श्वत उत्तिष्ठति,
उत्थाय यत्रैव स्वकं शयनीयं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शयनीये, ' निवज्जइ '
निषीदति स्वयितीत्यर्थः । ततः खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रति-
बुद्धा=जागरिता सति पतिव्रता ' पइमणुरत्ता ' प्रत्यनुस्क्ता स्वपति प्रत्यनुरागिणी,
पार्श्व पतिमपश्यन्ती ' तलिमाउ ' तल्यात्=शयनीयाद् उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्र

पचचणुभवमाणे विहरइ तएणं से सागरए अंगफासं असहमाणे अव-
सव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिद्धइ) इसके बाद सागरदारक सुकुमारिका के
साथ जहां वासगृह-शयन घर-था वहां गया वहां जाकर वह उस सुकु-
मारिकाके साथ एक शय्यापर बैठ गया । बैठ जाने पर उस सागरदारक
को सुकुमारिका दारिकाका अंगस्पर्श इस रूपसे प्रनीत हुआ -जैसे मानो
असिपत्र आदिका स्पर्श हो ! इन असिपत्र (खड्गको यावत्) आदिको
के स्पर्श से भी उसका वह अंगस्पर्श यावत् अमनाप्रतरक ही था । इस
प्रकार का उसका अंगस्पर्श अनुभवता हुआ वह सागरदारक विवश
बनकर वहां कुछ समय तक ठहरी बाद में जब उससे सहन नही
हुआ तो । (तएणं से सागरदारए सुमालियं दारियं सुहपमुत्तं
जाणित्ता सुमालियाए दरियाए पासोउ उट्ठेइ, उट्ठित्तां जेणेव सए सय-
णिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं
सुमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समानी पइव्वया पइ

से सागरए अंगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिद्धइ)

त्यारपछी सागर दारक सुकुमारिकानी साथे ज्थां वासगृह-शयनघर छुं
त्यां गये, त्यां ज्धने ते सुकुमारिकानी साथे ओक शय्या उपर भेसी गये,
ओका भाद ते सागर दारकने सुकुमारिका दारिकाने अंग-स्पर्श ओवा प्रकरने
ज्झाये । ते ते असिपत्र - तरवार वगेरेने स्पर्श न होय ! असिपत्र
वगेरे करतां पछु तेने अंग स्पर्श यावत् अमनाप्रतरक छुतो । आ रीते तेना
अंग स्पर्शने अनुभवतो सागर दारक लायार थछने त्यां थोडा वणत सुधी
शेकाये अने त्यारभाद ज्यारे तेने ते स्पर्श असह थछ पउये त्यारे

(तएणं से सागरदारए सुमालियं दारियं सुहपमुत्तं जाणिता सुमालियाए
दारियाए पासोउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सुमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स

‘से’ तस्य शयनीयं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (निवज्जई) निषीदति=स्वपिति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया ‘दुच्चंपि’ द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारकम् अङ्गस्पर्श प्रतिसंवेदयति यावद्-अकामकोऽपस्ववशो मुहूर्तमात्रं संतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात् उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं ‘विहाडेइ’ विहाटयति = उद्धाटयति विहाटय ‘माराभुक्के विवकाए’ माराभुक्त इव काकः=मार्थन्ते प्राणिनो यस्यां सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता....उवागच्छइ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहाँ अपनी शय्या थी वहाँ चला गया । वहाँ आकर उस पर पड़ गया इतने में ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलंग से उठ बैठी । उठकर वह जहाँ सागरदारक का पलंग था वहाँ गई । (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहाँ जाकर वह उसके पास सो गई । (तएणं से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगकासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिद्धइ, तएणं से सागरदारए सुमालियं दारियं सुहपसुत्तं

पडिबुद्धा समाणी पडव्वया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता उवागज्जइ)

ते सागर दारक ते सुकुमारिका दारिकाने सुभेथी सुतेली जण्णीने तेनी पासेथी उठथे, अने उठीने ज्ञां पोतानी शय्या छती त्यां जतो रह्यो. त्यां जधने ते तेनी उपर पडी गथे. ओटलाभां ओक मुहूर्त पछी पतिभां अनुरक्त अनेली पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जगी गधं अने पोतानी पासे पति न जेतां पोतानी शय्या उपरथी उठी अने जेठी गध. त्थारपछी ते उठीने ज्ञां सागर दारकनी शय्या छती त्यां गध. (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) त्यां जधने ते तेना पडआभां सूछ गध.

(तएणं से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगकासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिद्धइ, तएणं से सागरदारए सुमा-
लियं दारियं सुहपसुत्तं जाणिता सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता वासवरस्स दारे विहा-

શતા વધસ્થાનં, તસ્યામુક્તો નિસ્સૃતઃ કાક ઇવ, પદ્મા-મારાદ્=માત્રકપુરુષારામુક્તઃ
=નિર્મુક્તઃવિચ્છુટિતઃ કાકો યથા વેગતો નિર્ગચ્છતિ તદ્વત્, યસ્મા એવ દિશઃ
માદુર્ભૂતસ્તામેવ દિશં પ્રતિગતઃ ॥ સૂ. ૯ ॥

મૂલ્ય-તર્ણાસૂમાલિયા દારિયા તઓ મુદ્દુત્તંતરસ્સ પડિબુદ્ધા
પડવયા જાવ અપાસમાળી સયણિજાઓ ઉદ્દેહ સાગરસ્સ
દારિયાએ સઠવઓ સમંતા મગ્ગણગવેસણં કરેમાળીર વાસઘ-
રસ્સ દારં વિહાડિયં પાસહ પાસિત્તા એવં વયાસી-ગણ સે

જાણિત્તા સયણિજાઓ ઉદ્દેહ, ઉદ્દિત્તા વાસઘરસ્સ દારં વિહાડેઈ,
વિહાડેત્તા મારામુક્કે વિવ કાણે જામેવ દિસિં પાઉઝ્મૂળ તામેવ દિસિં
પડિગણ) સાગરદારક કો સુકુમારિકા દારિકા કા અંગસ્પર્શ દુવા-
રામી વૈસા હી પૂર્વોક્તરૂપ સે અનુભવ મેં ઓળા-અતઃ ઉસકે પાસ સોને
કી ઇચ્છા ન હોને પર મી વહ વિવશહોકર કુછ સમય તક ઉસકે પાસ
સોતા રહા-જવ વહ અચ્છી તરહ સો ગઈ-તથ વહ ઉસે સુખ પ્રસુષજા-
નકર ઉસકે પાસ સે ઊઠા-ઔર ઊઠકર ઉસને ઉસ વાસ ગૃહ કે દરવાજે
કો ખોલા ખોલકર જિસ પ્રકાર 'મારામુક્ત' કાક વહે વેગસે નિકલતા હૈ
-ઉસી તરહ યહ મી વહુત જલ્દી વહાં સે નિકલકર જિસ દિશા સે
પ્રકટ હુઆ થા-ઉસી દિશા તરફ વોપિસ ચલા ગયા । જિસ મેં પ્રાણી
મારે જાતે હૈં ઉસકા નામ મારા-શૂના- વધસ્થાન હૈ । હિસ મારા સે
નિકલા હુઆ અથવા મારનેવાલે પુરુષ કે હાથ સે છૂટા હુઆ-એસે યે દો
અર્થ " મારમુક્ત " હિસ શબ્દ કે હો સકતે હૈં । સૂ. ૯

હેઈ,વિહાડિત્તા મારામુક્કે વિવ કાણે જામેવ દિસિં પાઉઝ્મૂળ તામેવ દિસિં પડિગણ)

સાગર દારકને સુકુમારિકાનો બીજીવારનો અંગ સ્પર્શ પણ પડેલાની
જેમજ લાગ્યો. એટલા માટે તેની પાસે સૂવાની ઇચ્છા ન હોવા છતાં એ તે
વિવશ થઈને થોડીવાર સુધી તેની પાસે પડી રહ્યો. બ્યારે તે સારી રીતે સૂઈ
ગઈ ત્યારે તે તેને સુખેથી સૂતી બાણીને તેની પાસેથી ઉઠ્યો અને ઉઠીને
તેણે તે વાસગૃહના ખારણાને ઉઘાડ્યું. ઉઘાડીને જેમ મારા-મુક્ત કાગડો જલ્દી
નીકળી બાજ છે તેમજ તે પણ બહુ જ ત્વરાથી ત્યાંથી નીકળીને જે દિશા તરફથી
આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો. જે સ્થાને પ્રાણીઓ મારી
નાખવામાં આવે છે તેનું નામ " મારા " (વધસ્થાન) છે. આ 'મારા' થી
છૂટીને આમ બે અર્થો 'મારામુક્ત' શબ્દના થઈ શકે છે. ॥ સૂત્ર ૯ ॥

सागरे त्तिकट्ट ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दास चेडियं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बहुवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि, तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणंति, मुहधोवणियं गेणहइ गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी - किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ?, तएणं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडी एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासआओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुणइ जाव पडिगए तएणं तओ अहं मुहुत्तं तरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए णं से सागरएत्तिकट्ट ओहयमण जाव झियायामि, तएणं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ, तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जिणदत्तं एवं वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिंसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रूंटणियाहि
य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा
जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-
रयं दारयं एवं वयासी-दट्ठुणं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स
गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता !
एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं
एवं वयासी-अवि आइं अहं ताओ ! गिरिपडणं वा तरुप-
डणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा
विसभवखणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिच्चापिटुं वा
पवज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं
सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे
कुडुंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ निसामित्ता लज्जिए
विलीए विडे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि-
क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सुकुमालियं दारियं सदावेइ सदावित्ता अंके निवेसेइ निवे-
सित्ता एवं वयासी-किणं तुमं पुत्ता ! सागरएणं दारएणं
मुक्का ?, अहंणं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जावें
मणामा भविस्ससित्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं
समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तरं खलु सुकुमारिका
दारिका ततो हृदयवारे प्रतिबुद्धा=जागरिता ततो पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

अनगरधर्मावृत्तविणी टीका अ० १६ सुकुमारिकावर्तवर्णनम्

२०९

शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय सागरस्स दारकस्य सर्वतः समन्ताद् मार्ग-
णगवेषणं कुर्वती २ वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं विधाटितम्=उद्धाटितं पश्यति,
दृष्ट्वा एवमवादीत्-गतः स सागरदारकः, इति कृत्वा 'ओहयमणसंकल्पा' अपह-
तमनः संकल्पः=नष्टमनोरथा, यावद् व्यायति=भार्तध्यानं करोतिस्म । ततस्तदन-
न्तरं भद्रा सार्थवाही 'कल्लं' कल्पे=द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातार्धे रजन्यां यावत्
तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सूर्ये उदिते दासचेटी ॥=दासपुत्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा

'तएणं सूमालिया दारिया' इत्यादी ।

टीकार्थः-(तएणं) इसके बाद (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका
(तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) एक मुहूर्त
के बाद जग पड़ी-सो उस पतिव्रता ने वहाँ अपने पतिको जब नहीं देखा
तब (सयणिज्जाओ उट्टेइ, सागरस्स दारगस्स सब्वाओ समंता मग्गण-
गवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं
वयासी) पलंग से उठी उठकर उसने सागर दारक की वहीँ पर सब
और बार २ मार्गण गवेषणा की- । जब उसने शयन गृह के दरवाजे
को उघड़ा हुआ देखा-तब उसे विचार आया कि (गये से सागरे सि
कहु ओहयमणसंकल्पा जाव श्रियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं
पाउं दासचेडियं सदावेइ) कि सागर चले गये हैं । इस प्रकार अप-
हृतमनःसंकल्प होकर वह विचार में पड़ गई इतने में भद्रा सार्थवा-

(तएणं सूमालिया दारिया इत्यादि—

टीकार्थः-(तएणं) त्पराभाह (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका
(तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) एक मुहूर्त पछी
जगी गर्हिते पतिव्रताये त्यां पोलाना पतिने न्यारे जेया नहि त्यारे

(सयणिज्जाओ उट्टेइ, सागरस्स दारगस्स सब्वाओ समंता मग्गणगवेसणं
करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी)

शय्या उपरथी जेसी थई अने त्यापछी तेखे त्यांज आरुपास बोभेर
सागर दारकनी मार्गणा-गवेषणा करी. न्यारे तेखे शयनगृहना पारणाने
उधारेलुं जेयुं त्यारे तेने विचार आये के

(गए से सागरे निकटहु ओहयमणसंकल्पा जाव श्रियायइ, तएणं सा
भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ दासचेडियं सदावेइ)

सागर जता रह्या छे. आ रीते अपहृत मनः संकल्पवाणी थईने ते

एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! गच्छ खलु त्वं ' बहुवरस्स ' बभूवरयोः समीपे ' मुहधोवणियं ' गुह्यधावनिकां=दन्तधावनादिरूपम् ' उपणेहि ' उपनय=प्रापय । ततः खलु सा दासचेटी भद्रया सार्थवाद्या एवमुक्तासती ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्= एतद्वचनं ' तथा ऽस्तु ' इतिकृत्वा प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य ' मुहधोवणियं ' मुख धावनिकां गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव वासगृहं तत्रैवोवागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामेकाकिनीं यावत् -ध्यायन्ती=आर्त्तध्यानं कुर्वती पश्यति. दृष्ट्वा एवमवादीत्-

हीने द्वितीय दिन प्रातः काल होते ही दासपुत्री को बुलाया (सदावित्ता एवं वयासी गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिए ! बहुवरस्स मुहधोवणियं उपणेहि तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवं बुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडि सुणंति मुहधोवणियं गेण्हइ, उवागच्छित्ता, सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ? तएणं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जणित्ता मम पासओ उट्ठइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुणइ, जाव पडिगए) बुलाकर उससे ऐसा कहा कि हे देवाणु प्रिय ! भूजा, और बभूवर के पास इस दन्त धावन आदिरूप मुख धावनिका को लेजा भद्रा के इस कथन को उस दासचेटी ने " तहत्ति " कहकर स्वीकार कर लिया-और मुख धावनीको को ले लिया-और लेकर फिर वह जहां वासगृह था-वहां गई । वहां पहुँचकर उसने सुकुमारिका दारिका को

ચિતામાં ગમગીન થઈ ગઈ. એટલામાં બીજા દિવસે સવારે ભદ્રાસાર્થવાહીએ દાસપુત્રીને બોલાવી.

(સદાવિત્તા एवं वयासी गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिए ! बहुवरस्स मुहधोवणियं उपणेहि, तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवंबुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणंति मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ओहमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ? तएणं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जणित्ता मम पासओ उट्ठइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुणइ, जाव पडिगए)

બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુ વરવધૂની પાસે આ હંતધાવન વગેરે મુખધાવનિકા લઈ જા. ભદ્રાના આ કથનને સાંભળીને તે દાસચેટીએ " તહત્તિ " કહીને તેને સ્વીકારી લીધું અને મુખધાવનિકા (દાતણ) ને લઈ લીધું અને લઈને તે જ્યાં વાસગૃહ હતું ત્યાં ગઈ ત્યાં

હે દેવાનુપ્રિયે ! હે સુકુમારિકે ! કિં=કુતઃ સ્વલ્પ અપહતમનઃ સંકલ્પા યાત્ત ધ્યાયસિ ?, તતસ્તદનન્તરં સા સુકુમારિકા દારિકા તાં દાસચેટીમેવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિયે ! એવં સ્વલ્પ સાગરકો દારકો માં સુખપસુપ્તં જ્ઞાત્વા મમ પાર્શ્વોદુત્તિષ્ઠિતિ, ઉત્થાય વાસગૃહદ્વારમ્ ' અન્નગુણઃ ' અન્નગુણયતિ=અપાટ્ટણોતિ ઉદ્ઘાટયતિ, ' યાત્ત પ્રતિગતઃ ' યસ્યાઃ એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતસ્તામેવ દિશં પ્રતિગતઃ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્પ ' તઓ ' તતો મુહુર્તંન્તરેડઠં યાવત્-પ્રતિબુદ્ધા સતી સાગરદારકમપશ્યન્તી શયનાં-દુત્તિષ્ઠામિ, ઉત્થાય તસ્ય માર્ગણગવેષણં કુર્વતી વાસગૃહસ્ય દ્વારં વિઘાટિતં પશ્યામિ ગતઃ સ્વલ્પ સ સાગરકઃ ' इति कृत्वा=इति हेतोरहम् अपहृतमनः संकल्पा यावद्-

ચિન્તા મગ્ન દેખા-દેશ્વકર ઉસને ઉસસે પૂછા કિ હે દેવાનુપ્રિયે ! કયા કારણ હૈ જો આપ અપહતમનઃ સંકલ્પા હોકર ચિન્તા મગ્ન બની હુઈ હો ? હસ દાસચેટી કે પ્રશ્નકો સુનકર ઉસ સુકુમારિકા ને ઉસ સે કહા-દેવાનુપ્રિયે-સુનો-સાગરદારક મુઝે સુખ પ્રસુપ્ત જાનકર મેરે પાસ સે ઉઠે ઓર ઉઠકર વાસગૃહ કે દરવાજે કો સ્થોલકર જહાં સે આયે થે વહાં ચલે ગયે હૈ । (તણ નં તઓ અહં મુહુર્તંન્તરસ્સ જાવ વિહાડિયં પાસામિ ગણં સે સાગરણ ત્તિકદુ ઓહ્યમાણં જાવ જિયાયામિ, તણ નં સા દાસચેટી સૂમાલિયાણ દારિયાણ એયમદ્ સોચ્ચા જેણેવ સાગરદત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) ઉસકે વાદ જ્યોહી મૈં જગી-તો મૈંને જવ સાગર દારક કો અપને પામ નહીં દેખા-તો મૈં શય્યા સે ઉઠ બેટી-ઓર ઉઠકર મૈંને ઉનકી યહીં પર સથ તરફ માર્ગણ ગવે-ષણાકી ઉસમેં મૈંને વાસગૃહ કે દરવાજે ઉઘડા પાયા-તવ મૈં સમજ

જઘને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને ચિંતામાં ગમગીન બોલે. બોલને તેણે તેને પૂછ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા કારણથી તમે અપહત મનઃ સંકલ્પા થઈને ચિંતામાં બેઠા છો ? દાસચેટીના પ્રશ્નને સાંભળીને તે સુકુમારિકાએ તેને કહ્યું- હે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાંભળો, સાગર દારક અને સુખેથી સૂતી બાણીને મારી પાસેથી ઉભા થયા અને ઉભા થઈને વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડીને બાંધી બાંધ્યા હતા, ત્યાં જતા રહ્યા છે.

(તણં તઓ અહં મુહુર્તંન્તરસ્સ જાવ વિહાડિયં પાસામિ ગણં સે સાગરણ ત્તિકદુ ઓહ્યમાણં જાવ જિયાયામિ, તણં સા દાસચેટી, સૂમાલિયાણ દારિયાણ એયમદ્ સોચ્ચા જેણેવ સાગરદત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

ત્યાર પછી ન્યારે હું બાગી ત્યારે મેં સાગર દારક ને મારી પાસે બોલે નહિ, હું શય્યા ઉપર ઉઠી અને બેઠી થઈ ગઈ અને ત્યાર પછી મેં અહીં જ તેમની બધે માર્ગણ-ગવેષણા કરી. મેં ન્યારે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડું બેધું ત્યારે હું સમજી ગઈ કે તેઓ ચાલ્યા ગયા છે. આ વિચારથી જ હું અપહત

आर्तध्यानध्यायामि । ततः खलु सा दासचेटी सुकुमारिकाया दारिकाया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा, यत्रैव सागरदत्तः सार्थवाह=सुकुमारिकायाः पिता, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं सागरदत्तमेतमर्थं निवेदयति । ततस्तदनन्तरं स सागरदत्तः सार्थवाहो दासचेटीया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय आशुभ्रूतः=शीघ्रं क्रोधाविष्टः सन् यत्रैव जिनदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे देवानुग्रिय ! किं=कथं खलु एवं युक्तम्=उचितं वा प्राप्तं=कुलमर्यादामनुप्राप्तं वा कुलानुरूपं=कुलयोग्यतानुकूलं वा कुलसदृशं=कुलसाम्यापन्नं वा, यत् खलु सागरो दारकः सुकुमारिकां दारिकामदृष्टदोषां=निर्दोषां पतिव्रतां गई किं वे चले गये है इस विचार से मैं अपहतमनः संकल्प होकर आर्तध्यान-चिन्ता-में पड़ रही हूँ । इस प्रकार सुकुमारिका की बात सुनकर वह दासचेटी बहुत सोच विचार करके वहाँ से सागरदत्त के पास आई । (उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमद्वं निवेएइ-तएणं से सागरदत्ते दासचेटीए अंतिए एयमद्वं सोच्चा निसम्म आसुरस्से जेणेव जिनदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता जिनदत्तं एवं वयासी) वहाँ आकर उसने सागरदत्त से इस बात को कहा-। इस तरह दासचेटी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर सागरदत्त बहुत अधिक-क्रुद्ध हुआ-और उसी समय जहाँ जिनदत्त सार्थवाह का घर था वहाँ गया । वहाँ जाकर उसने जिनदत्त से इस प्रकार कहा-(किण्हं देवाणुप्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुखं वा कुलसरिंसं वा जन्नं सागरदारणं मूमालियं

भनः संकल्प धरने आर्तध्यान-चिन्ता-में पड़ी हूँ आ रीते सुकुमारीकानी बात सांभलीने ते दास चेटी भूषण विचार करीने त्यांथी सागरदत्तनी पास गई.

उवागच्छित्ता सागरदत्तस्य एयमद्वं निवेएइ=तएणं से सागरदत्ते दासचेटीए अंतिए एयमद्वं सोच्चा निसम्म आसुरस्से जेणेव जिनदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता जिनदत्तं एवं वयासी)

त्यां आवी ने तेणु सागरदत्तने आ बात धरी. आ रीते दास चेटीना भुण्थी भन्नी विगत सांभलीने अने तेने हृदयमां धारण करीने सागर दत्त अत्यंत गुस्से थयो अने तरत न नयां जिनदत्त सार्थवाहनुं घर छतुं त्यां गयो. त्यां न्धने तेणु जिनदत्त सार्थवाहने आ प्रभाणु कहुं के

(किण्हं देवाणुप्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुखं वा कुलसरिंसं वा जन्नं सागरदारणं मूमालियं दरियं अदिद्वदोसं पइवयं विप्पजहाय इहमागओ वहुईं खिज्जणियाहि य रुद्धणियाहि य उवालभइ)

विप्रदाय=त्यक्त्वा इहागतः-कथमेतद् युक्तं, यत् निर्दोषां सुकुमारिकां विहाय सागरदारकोऽत्र सभायात् इति । एवं बहोभिः 'खिञ्जणियाहि य' खेदनिष्कामिः=खेदपूर्णाभिस्तथा 'रुंणियाहि य' =रुंणियाभिश्च देशीयोऽयं शब्दः, रोदनक्रियायुक्ताभिः वाग्भिः उपालभते=सागरदत्तो जिनदत्तस्य उपालम्भं करोतीत्यर्थः ।

ततः खलु जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तस्य सार्थवाहस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा विश्रम्य यत्रैव सागरदारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरकं दारकं स्वपुत्रमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण भ्रातृद्वयं हे पुत्र ! त्वया खलु दुष्टु=अशोभनं कृतम् यत्-सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहादिह हव्यमागतः, तत्=उस्माद् गच्छ खलु त्वं हे पुत्र ! एवमपि=यथास्थितस्तथैव सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहम् । सागरदारको जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे तात ! अपि=निश्चयेन 'आई' इति वाक्यालंकारे अहं

दारिकं अदिद्वदोसं पद्वयं विप्पजहाय इह भागओ बहूहिं खिञ्जणियाहि य रुंणियाहि य उवाल्भह) हे देवानुप्रिय ! क्या यह बात योग्य है-अथवा कुलमर्यादा के लायक है, या कुल की योग्यता के अनुसार है या कुल को शोभित करे ऐसी है, जो सागरदारक बिना किसी दोषके देखे-पतिव्रता सुकुमारिका दारिका को छोड़कर यहां आ गया है इस प्रकार अनेक खेदपूर्ण एवं रोदनक्रिया युक्त वचनोंसे सागरदत्तने अपने संबंधी जिनदत्तको ठपका-उलाहना दिया । (तएणं जिगदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं, सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिगदत्तं एवं वयासी-अवि आई अहं ताओ ।

हे देवानुप्रिय ! शुं आ बात वाजणी छे ? कुण भयादाने लायक छे ? अथवा तो कुणनी योग्यता मुज्ज छे ? कुणने शोभावनारी छे ? के के सागर दारक के छे ? पणु जतना दोष जेया वगर पतिव्रता सुकुमारिका दारिकाने त्यज्जने अही आवी जये छे ? आ रीते मनने दुभावनारा तेमज्ज गणगणा थधने रउतां रउतां धणुं वयनेअरी सागरसे पोताना वेवाध जिनदत्तने ठपके आप्थे । (तएणं जिगदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिगदत्तं एवं वयासी-अवि आई अहं ताओ ।

तवाज्ञया गिरिपतनं वा तरुपतनं वा मरुपपातं वा=निर्जलदेशगमनं वा जलप्रपातं वा=अगाधजले पतनं वा, ज्वलनप्रवेशं वा ज्वलद्ग्नौ प्रवेशं वा विषमक्षणं वा, 'सत्थोवाडणं वा' शस्त्रावपाटनं वा=शस्त्रेण शरीरविदारणं वा, 'वेहाणसं वा' वैहायसं वा कण्ठे पाशकग्रहणं वा, तथा-गृध्रस्पृष्टं=गृध्रैः स्पर्शनं मया गजोष्ट्रादीनां कलेवरे प्रवेशितस्य शरीरस्य मृत्युद्वया गृध्रैर्मक्षणं, तथा प्रवज्यां वा, विदेश-

गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुपवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसम्भक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठं वा पवज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा) जिनदत्त सागरदत्त के इस उल्लाहने रूप अर्थ को सुनकरके जहां सागरदारक था वहां गया-वहां जाकर उसने सागर दारक से इस प्रकार कहा-हे पुत्र ! यह तुमने अच्छा नहीं किया-जो तुम सागरदत्त के घर से यहां इतने जल्दी आ गये। इसलिये हे बेटा ! तुम जैसे यहां बैठे हो वैसे ही सागरदत्त के घर चले जाओ। तब सागरदारकने अपने पिता जिनदत्त से इस प्रकार कहा-पिताजी ! मैं आपकी आज्ञा से पर्वत से गिरना स्वीकार कर सकता हूँ, वृक्ष से नीचे पड़जाना स्वीकार कर सकता हूँ-मरुप्रपात-निर्जलप्रदेश में जाना अंगीकार कर सकता हूँ, अगाधजल में डूबकर मर सकता हूँ तथा जलती हुई अग्नि में प्रवेश करना, विषकामक्षण करना, शस्त्र से शरीर का

ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुपवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसम्भक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठं वा पवज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा)

जिनदत्त सागरदत्तना आ ठपकाने सांखणीने जहां सागर दारक डोतो त्यां गये। अने त्यां जधने तेण्हे सागर दारकने आ प्रभाण्हे कहुं के डे पुत्र ! तमे आ जे क'छि क'थुं छे, ते सारुं न कडेवाय तमे सागरदत्तना घेरथी आठला जवही आवता रक्षा आ हीक नथी। जेथी छे जेतां ! तमे अत्थारे जेवी स्थितिमां छे तेवी न स्थितिमां सागरदत्तने घेर जाता रडो। त्तारे सागर दारके पोताना पिताने आ प्रभाण्हे कहुं के डे पितश्री ! तमारी आ-साथी हुं पर्वत उत्तरथी नीचे गण्डी पडवुं स्वीकारी शकुं छुं, वृक्ष उपरथी नीचे पडी जवुं स्वीकारी शकुं छु, मरुप्रपात-निर्जल प्रदेशमां जवुं स्वीकारी शकुं छुं, छिंडा पाणीमां दूथीने मरी शकुं छुं, तेमज सणगता अग्निमां प्रवेशवु, विषवुं लक्षण्ठ करवुं, शस्त्रनाथाथी शरीर ने कापवुं, गणांमां क्षंसे

गमनं वा अभ्युपगच्छामि=स्वीकरोमि, किंतु खलु=निश्चयेन सागरदत्तस्य सार्थसाहस्य गृहे नैयगच्छामि । ततस्तदा-स सागरदत्तः सार्थसाहः कुड्यान्तरितः= भित्तिव्यवधानेन स्थितः सागरस्य दाकस्य एतमर्थम्=उक्तं वचनं निशामयति=शृणोति, निशाम्य लज्जितः स्वयं, व्रीडितः परतः ' विडे ' विडुः=देखीयोऽयं शब्दः स्वपरतोलज्जितः, जिनदत्तस्य गृहाद् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति । प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकां शब्दयति, शब्दयित्वा अङ्के=उत्सङ्गे ' निवेसेद् ' निवेशयति=उपवेशयति, निवेश्य एवमयादीत्-हे पुत्री ! किं=केन कारणेन खलु त्वं सागरेण दारकेण ' मुक्ता ' मुक्ता=त्यक्ता ? ।

विदारण करना गले में फांसी लगाकर मरजाना, गज, उष्ट्र आदि के मृतकलेवर में मैं अपने आपको प्रविष्ट कराकर उस शरीरको मृतबुद्धि की कल्पना से गृह पक्षियों द्वारा भक्षण करवाना यह सब मैं स्वीकार कर सकता हूँ, इसी तरह दीक्षागृहण करना अथवा विदेश में चलेजाना भी स्वीकार कर सकता हूँ-परन्तु मैं सागरदत्त के घरजाना स्वीकार नहीं कर सकता हूँ । अर्थात् ये सब पूर्वोक्त आपकी आज्ञाएँ मुझे बिना किसी संकोचके या विचारके मान्य हैं परन्तु सागरदत्तके घरजाना मुझे मान्य नहीं है । (तएवं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेह, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विडु, जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सदावेइ, सदावित्ता अंकेनिवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी, किण्णं तुमं पुत्ता सागरएणं दारएणं मुक्का? अहं णं तुमं तस्स

क्षेत्रीने भरपुं, छाथी जट वणेरेना भरेखा शरीरमां प्रवेश करी भारा शरीरने मृतबुद्धिनी कल्पनाथी गीध पक्षीओने भवडावहुं आ भुहुं स्वीकारी शकुं तेम छुं, तेनी ज रीते दीक्षा ग्रहण करवी अथवा तो पन्देशमां जाता रहेहुं पणु हुं स्वीकारी शकुं छुं पणु हुं सागरदत्तना घेर जहुं स्वीकारवा तैयार नथी. ओटले के आ अधी उपरनी तभारी आज्ञाओ मने कोछ पणु-जतना विशार कर्था वगर मान्य छे, पणु सागरदत्तने त्यां जहुं मान्य नथी.

(तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विडु, जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सदावेइ, सदावित्ता अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी किण्णं पुत्ता सागरएणं दारएणं

अहं खलु त्वां तस्मै दास्यामि यस्य खलु त्वमिष्टा=अभिप्रेता कान्ता प्रिया मनोज्ञा
मनोमा=मनोगता भविष्यति, इति=एवं सुकुमारिकां दारिकां तामिरिष्टाभिर्वाग्मिः
'समासासेद्' समाश्वासयति समाश्वास्य प्रवित्सर्जयति=प्रस्थापयति ॥ १० ॥

मूलम्—तएणं से सागरदत्ते एणं महं दमगपुरिसं पासइ
दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहरथगयं मच्छियासहस्सेहिं

दहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सुमालियं दारियं-
ताहिं इट्ठाहिं वग्गहिं समासासेइ, सम आसित्ता पडिप्पिमज्जेइ) वहीं
भित्ति के पीछे छुपा हुआ सागरदत्त सार्धवाइ सागर-के उन बचनों को
सुन रहा था । सो सुनकरके स्वयं बड़ा लज्जित हुआ तथा दूसरोंसे भी
उसे बड़ी शर्म आई इस तरह स्व और पर से लजाना हुआ वह जिन-
दत्त के घर से बाहर निकल गया । और जाकर अपने घर पहुँचा ।
वहाँ पहुँच कर उसने अपनी पुत्री सुकुमारिका दारिका को बुलाया
-बुलाने पर जब वह आ गई तब उसे उसने अपनी गोदी में बैठा लिया
बैठानेके बाद फिर उसने उससे पूछा बेटी ! सागरने तुम्हें किस कारण
से छोड़ दिया है मैं तुम्हें उसी के दूंगा । कि जिस के लिये तुम अच्छी
तरह इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा एवं मनोमा होओगी, इस प्रकार उसने
सुकुमारिका दारिकाको उनर इष्ट बचनों द्वारा अच्छी तरह आश्वासन
दिया-धैर्य बँधाया-और आश्वासन देकर उसे वित्सर्जित कर दिया । सू० १०

मुक्का ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्सणं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति
सुमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिप्पिमज्जेइ)
त्वां ज बीतनी पाछण छुपाधने सागरदत्त सार्धवाइ सागरनी ते जधी
वातने सांभणी रह्यो छनो. सांभणी ते जहुज लज्जित थयो तेमज्ज जीम-
ओधी पण ते जूज लज्जित थयो. आ रीते 'जते' अने जीमओधी
लज्जतो ते जिनदत्तना घेरथी जडार नीकणी जयो अने नीकणीने पोताने घेर
पड्यो. त्वां जधने तेण्ण पोतानी पुत्री सुकुमारिका दारिकाने बोलावी. ज्यारे
ते सुकुमारिका दारिका आवी जध त्यारे तेने पोताना ओजाभां जेसाडी दीधी.
जेसाडीने तेण्ण तेने पूछथुं छे जेटी । श्रु काल्पथी सागरने तने त्यज्ज छे ? तने
हुं ते पुटुधने ज आपीय के जेता माटे तुं सारी रीते छंय, कान्ता प्रिया,
मनोज्ञा अने मनोमा थशे. आ रीते तेण्ण सुकुमारिकाने पोताना छंय वय
नेधी सारीरीते आश्वासन आप्थुं अनेत्यार पछी तेने विदाय आपी ॥सू० १०॥

जाव अन्निज्जमाणमग्गं, तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे
 सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया !
 एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेहि
 पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता खंडगमल्लगं
 खंडघडगं ते एगंते एडेह एडित्ता अलंकारियकम्मं कारेह
 कारित्ता पहायं कयवलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह
 करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह भोया-
 वित्ता मम अंतियं उवणेह, तएणं कोडुंबियपुरिसा जाव
 पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेति उवप्प-
 लोभित्ता सयं गिहं अणुप्पवेसिति अणुप्पवेसित्ता तं खंडगम-
 ल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडंति,
 तएणं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एगंते
 एडिज्जमाणंसि महया२ सदेणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते
 तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसियसइ सोच्चा निसम्म
 कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया ! एस
 दमगपुरिसे महया महया सदेणं आरसइ ? तएणं ते कोडुं-
 बियपुरिसा एवं वयासी-एस णं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि
 खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया महया सदेणं
 आरसइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुंबियपुरिसे एवं
 वयासी-मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं

खंड जाव एडेह पासे ठवेह जहा णं पत्तियं भवइ, ते वि
तहेव ठविति. तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स
अलंकारियकम्मं करेति करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिछेहिं
अब्भंगेति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणैणं गायं उव्व-
ट्ठिति२ उसिणोदगेणं गंधोदगेणं सीतोदगेणं ण्हारोति पम्हल
सुकुमाल गंधकासाइयाए । गायाइं ल्हंति ल्हित्ता हंसल-
क्खणं पट्टसाडगं परिहोति पगिहित्ता सब्वालंकारविभूसियं
करेति करित्ता विउलं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेति
भोयावित्ता सागरदत्तस्स उव्वणेति, तएणं सागरदत्ते सूमा-
लियं दारियं ण्हायं जाव सब्वालंकारविभूसियं करित्ता तं
दमगपुरिसं एवं वयासी-देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं
णं अहं तव भारियत्ताए दलामि भइयाए भइओ भवि-
ज्जासि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसु-
णेति पडिसुणिता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं
अणुपविसइ अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं
तलिमंसि निवज्जइ, तएणं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं
एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव
सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ
निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव
काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तएणं
सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्तिकट्ठु ओहय-
मण जाव झियायइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स सागरदत्तः सार्धवा-
होऽन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले ‘उप्पि आगासतलगंसि’ उपरि आका-
शतलके=मासादोपरिभागे, सुहनिसण्णे ‘सुखेनोपविष्टः, राजमार्गमवलोकमानः
२ तिष्ठति । ततः खलु स सागरदत्त एकं महान्तं ‘दमगपुरिसं’ द्रमनपुरुषं
‘दमग’ इति देशीयः शब्दः दरिद्रपुरुषं पश्यति, किम्भूतम् ? इत्याह—‘दंडिखंड
निवसणं’ दण्डिखण्डनिवसनं=दण्डि-कृतसन्धानं जीर्णवस्त्रं तस्य खण्डं तदेव निव-
सनं परिधानवस्त्रं यस्य स दण्डिखण्डनिवसनस्तम्, तथा—, खंडमल्लग घडगहत्थगयं
खण्डमल्लकघटकहस्तगतं=खण्डमल्लकं-खण्डशरावं स्फुटितशरावं भिक्षापात्रं, तथा
खण्डघटकथ=खण्डरूपो घटः स्फुटितस्य घटस्य भागः स एव जलपात्रं, एतद्-
द्वयं हस्तगतं यस्य तम्, ‘मच्छियामहस्सेहिं जाव अनिज्जमाणमग्गं’ मक्षिकास-
हस्रै र्यावत् अन्वोयमानमार्गं, शरीरवस्त्रादेर्मलिनत्वान् तत्पृष्ठतो मक्षिका आप-

‘तएणं से सागरदत्ते’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं से सागरदत्ते) इसके बाद सागरदत्तने किसी एक समय
“उप्पि आगासतलगंसि” अपने घासाद के ऊपर सुख पूर्वक बैठी हुई
स्थिति में राजमार्ग का अवलोकन करते समय (एगं महं दमगपुरिसं
पासइ) एक अत्यंत दरिद्र पुरुष को देखा (दंडिखंडनिवसणं खंडगम-
ल्लगघडगहत्थगयं मच्छियामहस्सेहिं जाव अनिज्जमाणमग्गं) जो
जीर्णवस्त्र के जुड़े हुए चिथड़े को पहिने था और जिसके हाथ में खंड-
मल्लकथा-फुटा हुआ मिट्टि के खप्पर था—तथा पानी पीने के
लिये फुटे हुए घट का एक खप्पर था । हजारों मक्खियां जिसके पीछे
पीछे, शरीर और वस्त्रों के मलिन होने से भिन्न २ करती हुई उड़ रही

‘तएणं से सागरदत्ते’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं से सागरदत्ते) त्थार बाद सागरदत्त कोई ओक वप्पत (उप्पि आगा-
सतलगंसि) पोताना भंडेलनी अपर सुणेथी भेसीने राजमार्गनुं अवलोकनकरतो हतो-
त्थारे तेणे (एगं महं दमगपुरिसं पासइ) ओक भूअअ दरिद्र-कंगाम-पुरुषने भोथो.
(दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियामहस्सेहिं जाव अनिज्जमा-
णमग्गं) तेणे जूना वस्त्रना रीथराओ पंडेरदा हता अने तेना हाथभां
‘पांडमल्लक हतुं’ ओटवे के कुटी गयेला भाटीना पासणुनो ओक ककडो हतो
तेमज्जाणी पीवा भाटे कुटेली भाटलीनुं ओक भप्पर हतुं हत्तेश भाणीओ
तेनीपाछण पाछण-शरीर अने वस्त्रोनी मलीनताने लीघे उडी रहो हती.

२२०

ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रे

तन्तीत्यर्थः । ततः खलु स सागरदत्त कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु एतं द्रमकपुरुषं चरङ्कपुरुषं विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य खंडकमल्लकं=खण्डशरावं खण्डघटकं=पानीयपात्रं ' से ' तस्य द्रमकपुरुषस्य एकान्ते=एकान्त स्थाने ' एडेह ' निक्षेपयत, निक्षेप्य अलंकारिककर्म = केशनखच्छेदनादिकं नापितादिभिः कारयत, कारयित्वा स्नातं कृतवल्किर्माणं यावत् सर्वालङ्कार-
र्थी । (तए णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेह, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवानुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाण-
खाइम साइमं पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडघडगं तं एगंते एडेह एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयवलिं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणु-
णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह)
इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया । बुलाकर उसने इस प्रकार कहा देवानुप्रियो । तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर फिर इसे घर में भीतर करलो । जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब तुमलोग इसके ये खंडमल्ल (फटी लंगोटी) और खंडघटक इससे छुड़ाकर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रख दो । बाद में नापित (नाई) को बुलाकर इसके सुन्दर ढंग से बाल बनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेह, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवानुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अनुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खंडगमल्लगं खंड घडगं तं एगं ते एडेह, एडित्ता अलं-
कारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयवलिं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुणं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह)

त्यारपछी सागरदत्ते आज्ञाकारी पुरुषोने ओलाव्या. ओलावीने तेभने आ प्रभावे उछुं-डे डे देवानुप्रियो ! तभे ओके आ हरिद्र पुरुषने पुष्कण प्रभा-
षुमां अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप चार जातना आहारनी लावथ आपो. लावथ आपीने तेने घरनी अंदर ओलावी हो. ब्यारे ते घरमां आवी जाय त्यारे तभे तेनी पासेना अउमद्वल अने अउघटक लगेने तेने ओकांत सुरक्षित स्थानमां भूझी हो. त्यारपछी डब्भने ओलावीने तेना सरस रीते पाण कपावी नापो अने वध्री गथेला नथ वजेरेने कपावी नापो. त्यारपछी तेने स्नान

विभूषितं कुरुत कृत्वा ' मणुष्यं ' मनोज्ञं=रुचिरम् अशनपानखाद्यस्वाद्यं भोजयत भोजयित्वा ममान्तिकं=समीपमुपनयत । ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-प्रति-
शृण्वन्ति=' तथाऽस्तु ' इति कृत्वा तदाज्ञां स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमकपु-
रुषः=रङ्गपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं द्रमकं रुचिरेण विपुलेनाशनादिना
प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वकं गृहमनुपवेशयन्ति, अनुपवेश्य तं खण्डकमल्लकं खण्डक-
घटकं च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते ' एडंति ' निक्षेपयन्ति, ततः खलु स द्रमक-
स्तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते ' ' एडिज्जमाणंसि ' निक्षेप्यमाणे
सति महता २ शब्देन ' आरसइ ' आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य
द्रमकपुरुषस्य तं महान्तं ' आरसियइ सइ ' आक्रन्दनशब्दं श्रुत्वा निश्चय्य कौटु-

हैं उन्हें कटवाओ । उसके प्रश्नात् इसे स्नान कराओ । बाद में इससे पशु
पक्षी आदिको अन्नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह
बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलंकारो से विभूषित
करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं
स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद में फिर
हमारे पास इसे ले आओ । (तएणं कौटुंबियपुरिसा जाव पडि-
सुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवाग
च्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सयं गिहं
अणुपवेसिति अणुपविसित्ता, तं खंडमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दम-
गपुरिसस्स एगंते एडेंति, तएणं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि, खंड-
घडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सहेणं आरसइ, तएणं
से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया २ आरसियसइ सोच्चो

करावो स्नान कराव्या णाह तेना हाथेथी पशु-पक्षी वगेरेने अन्न वगेरेने
लाग आपवा इय अलिकर्म्म करावडावो. न्यारे अलिकर्म्मनी विधि पती नय
त्यारे तमे लोको अने अथी नतना अलंकारोथी शणुगारे. शणुगारीने तेने
मनोज्ञ, अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य इय आर नतना आहारो नभाडो.
नभाडया पछी तेने अमारी पासे लई आवो.

(तएणं कौटुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमग-
पुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंते उवप्पलो-
भित्ता सयंगिहं अणुपवेसिति, अणुपविसित्ता, तं खंडमल्लगं खंडगघडगं च
तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति तएणं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि, खंडघड-
गंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सहेणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते तस्स
दमगपुरिसस्स तं महया २ आरसियसइ सोच्चा निसम्म कौटुंबियपुरिसे एवं वयासी)

म्बिकपुरुषानेवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः । किं=केन कारणेन खलु एष दमकपुरुषो महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः एव-मवदन्-एष खलु हे स्वामिन् ! तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके एकान्ते निक्षेप्य-माणे महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाह-स्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! मा खलु यूयं एतस्य निसम्म कौटुम्बियपुरिसे एवं वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और स्वीकारकर वहां जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से बार २ लुभाया लुभाकर वे उसे अपने घर तक ले आये और अंत में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन लोगों ने उस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खंड को, तथा फूटे हुए घड़े के सप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख दिया । जब उस दमकपुरुष ने अपने खंडमल्लक(फटी लंगोटी) को और खंडघटकको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आवाजको सुनकर और उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषों से इस प्रकार कहा-(किष्णं देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सदेणं आरसइ ३ तएणं ते कौटुम्बियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सदेणं

आ नतनी सागरदत्तनी आजाने ते कौटुम्बिक पुइयोअे सारी रीते स्वीकारी दीधी. स्वीकार्या जाइ तेओ हरिद्र भाणुसनी पासे गया त्यां न्धने तेमणे तेने ओलाव्यो अने अशन, पान वगेरे इप बार नतना आहारनी बारबार लाइअ आपी. ललयावीने तेओ तेने घर सुधी लई आव्या अने छेवटे तेने घरमां हाणअ करी दीधो. त्थारपछी ते लोकोअे ते हरिद्र भाणुसनी पासेधी कूटेला भाटीना वासणुने कटके तेमज कूटेला भाटवाना अप्परने लईने सुरक्षित स्थाने भूकी दीधु न्धारे ते हरिद्र भाणुसे पोताना अंडमल्लकने अने अंडघटकने पोतानी पासेधी छीनवीने अकान्त स्थानमां भूकतां न्धेयु त्थारे ते भोटेधी घांठा पाडीने उडवा लाओ. तेना उडवाना आवाजने सांसणीने अने तेने पोताना चित्तमां धारण करीने सागरदत्ते कौटुम्बिक पुइयोअे आ प्रमाणे कहुं.

(किष्णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सदेणं आरसइ, तएणं ते कौटुम्बियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सदेणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते सत्यवाहे ते

द्रमकपुरुषस्य तत् खण्डमल्लकं खण्डघटकं यावत्—एकान्ते 'एडेह' निक्षेपयत अस्य परोक्षे मा स्थापयतेत्यर्थः, किन्तु पार्श्वे स्थापयत, यथा खलु 'पत्तियं' प्रत्ययः= विश्वासो भवति । तेऽपि कौटुम्भिकपुरुषान्तथैव स्थापयन्ति । ततः खलु ते कौटु-
आरसइ, तएणं से सागरदत्तं सत्थवाहे ते कौटुंबिय पुरिसे एवं वयासी)
हे देवानुप्रियो ! क्या कारण है जो यह दमक पुरुष जोर २ से रो रहा है ? तब उन कौटुम्भिक पुरुषों ने ऐसा कहा कि हे स्वामिन् ! इसने ज्योंही अपने खंडमल्लक को और घटखंड को लेकर एक ओर सुरक्षित स्थान में रखे जाते हुए देखा वैसे ही यह बड़े जोर २ से रोने लगा है । ऐसा सुनकर सागरदत्त ने उन कौटुम्भिक पुरुषों से इस प्रकार कहा—
(माणं तुभे देवानुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंडं जाव एडेह, पासे ठवेह, जहाणं पत्तियं भवइ, तेवि तहेव ठवेति, तएणं ते कौटुंबिय पुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेति, करित्ता सयपाग-
सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेति, अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्व-
ट्टणेणं गायं उव्वट्ठिति, २ उस्सिणोदगेणं मंधोदगेणं सीतोदगेणं ण्हावेति)
हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खंड को और फूटे हुए घड़े के खप्पर को इससे लेकर परोक्ष में—
अदृश्य स्थान में—मत रखो किन्तु इस के पास में ही—समक्षरखो,
जिससे इसे अपना विश्वास बना रहे । इस प्रकार सागरदत्त की बात
कौटुंबिय पुरिसे एवं एवं वयासी)

हे देवानुप्रियो ! शा डारिअथी आ हरिअ भाणुस मोटेथी घांटा पाडी पाडीने रडी रह्यो छे ? त्थारे ते कौटुम्भिक पुरुषोअे आ प्रभाणे उल्लुं के हे स्वामिन् ! पोताना अंउमल्लक अने अंउघटकने तेनी पासेथी लधने पीण सुरक्षित स्थाने लध जतां जेधने आ हरिअ भाणुस मोटेथी रउवा लाग्यो छे. आ प्रभाणे सांलणीने सागरदत्ते कौटुम्भिक पुरुषोअे आ प्रभाणे उल्लुं के—

(माणं तुभे देवानुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंडं जाव एडेह पासे ठवेह, जहाणं पत्तियं भवइ, ते वि तहेव ठवेति, तएणं ते कौटुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेति, करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गायं उव्वट्ठिति २ उस्सि णोदगेणं मंधोदगेणं सीतोदगेणं ण्हावेति)

हे देवानुप्रियो ! तमे लोके आ हरिअ पुरुषता कूटेला भाटीना दीपकना कटकाने अने कूटेला घडाना अण्णने अेनी पासेथी लधने हूर अेकांतमां भूकथो नडि पणु अेनी पासे अ—अेनी सामे अ भूडी राणो. जेथी अेने विश्वास रडे.

म्बिकपुरुषास्तस्य द्रमकस्य=रङ्गपुरुषस्य अलंकारिककर्म कारयन्ति कारयित्वा शत-
पाक सहस्रपाकैस्तैलैरभ्यङ्गयन्ति=मर्दयन्ति । अभ्यङ्गितः सन् सुरभिगन्धोद्वर्तनेन=
सुगन्धिपिष्टकेन गात्रमुद्वर्तयन्ति, उद्वर्त्य उष्णोदकेन गन्धोदकेन शीतोदकेन
स्नपयन्ति, स्नपयित्वा 'पम्हलसुकुमालगंधकासाइयाए' पक्ष्मलसुकुमारगन्ध-
काषायिकया=पक्ष्मला=पक्ष्मवती मृदुरोमयुक्ता अत एव सुकुमारा तथा कपायेण
रक्ता साटी काषायिका तथा गात्राणि 'लूहन्ति' लूक्षयन्ति = प्रोच्छयन्ति,

सुनकर उन आदेशकारी पुरुषों ने वैसा ही किया-अर्थात् उसके मलक-
खंड और घटखंड दोनों को ही उसके समक्ष उन्होंने रख दिया ।
इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उस दमक पुरुषका आलंकारिक कर्म
करवाया । अब उसका अच्छी तरह अलंकारिक कर्म निष्पन्न हो चुका-
तब उसके बाद उस दमक पुरुष के शरीर की उन लोगों ने शतपाक और
सहस्र पाकवाले तैल से मालिश की-मालिश करनेके पश्चात्, सुगन्धि-
पिष्टक-सुगंधितपिटी-से उसके शरीर का उपटन किया उस सुगंधित
पिटी को उसके शरीर पर रगड़ कर मला इससे जो उसके शरीर
पर मल जमा हुआ था वह चिकनाहट के संबंध से उस पिटीद्वारा
निकल गया । जब उनके शरीर का उद्वर्त्तन हो चुका-तब फिर उन
लोगों ने उसे उष्णोदक से गंधोदक से, एवं शीतोदक से स्नान कराया ।
स्नान कराकर बाद में उसका शरीर (पम्हलसुकुमारगंधकासाइयाए
गायाइं लूहन्ति) पक्ष्मल-रूपवाली-मृदुरोमयुक्त-सुकुमार-नरम, रंगी-
हुई दवाल से-अंगोछी-से-तौलिया से पोंछा । (लूहित्ता हंसलक्खणं

आ रीते सागरहत्तनी वात सांभजीने ते आसाकरी पुइषोअे ते प्रभाणे ज
क्युं. अेटवे के तेना भव्लकअंड अने घटअंडने तेनी साभे ज भूझी दीधा.
त्यारपछी ते डीटुंभिड पुइषोअे ते हरिद्र भाणुसना वाज अने नअ कपाव्या.
ज्यारे आशम सरस रीते पुइ थड गयुं त्यारे तेओअे हरिद्र भाणुसना
शरीरने शतपाक अने सहस्रपाकवाजा तेवथी भाखिश कथी आह
सुगंधिपिष्टक-सुगंधित पीडी-तेना शरीरे ओणीने उपटन क्युं. अथी तेना
शरीर उपर जेटवेा भेल छतो ते पीडीनी स्निग्धताने लीधे साइ थड गये।
ज्यारे तेना शरीरे पीडी ओणाठ गध त्यारे ते बोडोअे तेने गरम पाणीथी,
सुवासित पाणीथी अने डंडा पाणीथी स्नान कराव्युं. स्नान कराव्या आह तेना
शरीरने (पम्हल सुकुमार गंध कासाइयाए गायाइं लूहन्ति) पक्ष्मल-रूपवालावाजा
मुकोभण, नरम रंगीन दुवालथी लूछ्युं.

अमरगारधमासृतवर्षिणी टीका अ० १६ सुकुमारिकाचरितवर्णनम्

२२५

रूपयित्वा 'हंसलक्षणं' हंसलक्षणं = हंसस्वरूपं तद्विधं शुद्धं स्वरूपं यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टसाटकं=क्षौमवस्त्रं 'परिहेति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषितं कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलपशनपानखाद्यस्वाद्यं भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति । ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिकां दारिकां स्नातां यावत्-सर्वालङ्कारभूषितां कृत्वा तं द्रमकपुरुषम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एतां खलु अहं तव भार्यान्वेन ददामि पट्टसाडगं परिहेति, परिहित्वा सञ्चालंकारविभूषितं करेति, करित्वा विडलं असनपाणखाद्यमसाद्यमं भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्य उवर्णेति) जय शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछाजा चुका-तब फिर उन्होंने हंस चिह्नवाला अथवा हंस के जैसा शुभ्रपट्टसाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया । क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया । भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएणं सागरदत्ते सुमालियं दारियं ण्हायं जाव सञ्चालंकार विभू-सियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एसणं देवानुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए ददामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलंकारो से विभूषित करके उस दमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह मेरी लड़की है । और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(लुहित्ता हंसलक्षणपट्ट साडगं परिहेति, परिहित्वा, सञ्चालंकारविभूषितं करेति, करित्वा विडलं असनपाणखाद्यमसाद्यमं भोजयन्ति, भोजयित्वा, सागरदत्तस्य उवर्णेति)

ज्यादे शरीरना अधा अंगो सरस रीते लुछाई गया तयारे तेओओ हंसचित्रित अथवा तो हंस जेवुं स्वच्छ घाणुं पट्टसाटक क्षौम वस्त्र पहिराव्युं. क्षौम वस्त्र पहिरावने तेने विपुल अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य रूप आर नतना आहारे नभाउया. नभाउया पछी तेओ तेने सागरदत्तनी पासो लई गया

(तएणं सागरदत्ते सुमालियं दारियं ण्हायं जाव सञ्चालंकारविभूषितं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एसणं देवानुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए ददामि)

सागरदत्ते पोतानी सुकुमारिका दारिकाने स्नान करावने यावत् अधी नतना अलंकारोधी शशुगारीने ते हरिद्र भाणुसने आ प्रभाणु कहुं हे हे देवानुप्रिय । आ मारी पुत्री छे अने मने जहुं न छिट्ठ, प्रिय, कान्त, मनोश

‘ભદિયાણ’ મદ્રિકયા=ભાગ્યશાલિન્યાઽનયાત્મમપિ મદ્રકો ભાગ્યશાલી મવિષ્યસિ । તતઃ સ્વલુ સ દ્રમકપુરુષઃ સાગરદત્તસ્યૈતમર્થ પ્રતિશૃણોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય સુકુમારિકયા દારિકયા સાર્થ વાસગૃહમ્નુપ્રવિશતિ, સુકુમારિકયા દારિકયા સાર્થ ‘તલિંગંસિ’ તલ્યે=તલનીચે ‘નીવજ્ઞઃ’ નિપીદતિ ઉપવિશતિ । તતઃ સ્વલુ સ દ્રમકપુરુષઃ સુકુમારિકાયા ઇમં=પૂર્વોક્તમ્ એતદ્ગ્રંથં=પૂર્વોક્તસ્વરૂપમ્ અજ્ઞસ્પર્શ ‘પઢિસંવેદેઃ’ પ્રતિસંવેદયતિ=પ્રત્યનુભવતિ કેવં યથા સાગરસ્ય=શેષવર્ણનં સાગરદારકવદ્ બોધ્યમ્, યાવત્-અત્ર યાવચ્છલ્લદાદિદં દ્રષ્ટવ્યમ્-‘અસિપત્રાદીનાં સ્પર્શાદપ્યનિષ્ટતરં તદજ્ઞસ્પર્શ જ્ઞાત્વા સાગરદારકવદ્ દ્રમકપુરુષોઽપિ તાં સુકુમારિકાં સુખપ્રસૂતાં જ્ઞાત્વા, શરનીયાદુલ્લિષ્ટિતિ, અભ્યુત્થાય વાસગૃહાદ્ નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય સ્વંડમલ્લગં=ફુટિ-મનોજ્ઞ એવં મનોમ હૈ । મૈં અપની હમ પુત્રી કો તુમ્હે’ તુમ્હારી ‘ભાર્યા’ કે રૂપ મૈં પ્રદાન કરતા હૂં (ભદિયાણ મદ્રઓ મવિજ્ઞસિ, તણં સે દમગપુરિસે સાગરદત્તસ્ય એમઠ્ઠં પઢિ૦૨ સુમાલિયાણ દારિયાણ મદ્રિં વાસઘરં અણુપવિસઠ્ઠ, અણુપવિસિત્તા સુમાલિયાણ દારિયાણ મદ્રિં તલિંગંસિ નિવજ્ઞઃ) હસ ભાગ્યશાલિની સે તુમ મી ભાગ્યશાલી બનજાઓગે । દમકપુરુષ ને સાગરદત્ત કે હસ કથનરૂપ અર્થ કો અંગીકાર કરલિયા, ઓર ફિર વહ હસ સુકુમારિકા દારિકા કે સાથ વાસગૃહ મેં પ્રવિષ્ટ હુઆ । વહાં જાકર વહ હસ સુકુમારિકા દારિકા કે સાથ સાથ એક હી પલંગ પર-બેઠ ગયા-સોમયા (તણં સે દમગપુરિસે સુમાલિયાણ ઇમં એયારૂવં અંગપાસં પઢિ સંવેદેઃ, સેસં જહા સાગરસ્ય જાવ મયણિજ્ઞાઓ અબ્હુદ્દેઃ, અબ્હુદ્ધિત્તા વાસઘરાઓ નિગગચ્છઠ્ઠ, નિગગચ્છિત્તા સ્વંડમલ્લગં અને મનોમ છે. હું મારી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમાં અર્પું છું. ભદિયાણ મદ્રઓ મવિજ્ઞસિ, તણં સે દમગપુરિસે સાગરદત્તસ્ય એમઠ્ઠં પઢિ૦ ૨ સુમાલિયાણ દારિયાણ મદ્રિં વાસઘરં અણુપવિસઠ્ઠ, અણુપવિસિત્તા સુમાલિયાણ દારિયાણ મદ્રિં તલિંગંસિ નિવજ્ઞઃ)

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો. તે દરિદ્ર પુરુષે સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની સાથે વાસગૃહમાં પ્રવિષ્ટ થયો. ત્યાં જઈને તે દરિદ્ર ગણ્યુત્ર સુકુમારિકા દારિકાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર યેસી ગયો.

(તણં સે દમગપુરિસે સુમાલિયાણ ઇમં એયારૂવં અંગપાસં પઢિસંવેદેઃ, સેસં જહા સાગરસ્ય જાવ મયણિજ્ઞાઓ અબ્હુદ્દેઃ, અબ્હુદ્ધિત્તા વાસઘરાઓ નિગગચ્છઠ્ઠ નિગગચ્છિત્તા સ્વંડમલ્લગં સ્વંડઘડગં ચ મહાય મારામુવકે વિવ કાણ જામેવ

तभिक्षापात्रं, खण्डघटकं=स्फुटितपानीयपात्रं च गृहीत्वा 'मारामुक्के विव काए' मारामुक्तइव काकः मारा-शूना प्राणिवधस्थानं ततो मुक्तः निःशृतः काक इव, अथवा-माराद्-मारकपुरुषात् तदीयहस्तादित्यर्थः मुक्त-विच्छुद्धितः काक इव शीघ्रतया यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु सा सुकुमारिका यावद्-ततो गृह्णन्तितरे प्रतिबुद्धा सती पतिमपश्यन्ती शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रमकपुरुषस्य मार्गणगवेषणं कुर्वाणा वासगृहस्य द्वारं विधाटितं पश्यति

खंडघटगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए) उस समय उस दमक पुरुष को उस सुकुमारिका दारिका का वह पूर्वोक्त तथा पूर्वोक्त स्वरूपवाला अंगस्पर्श अनुभव में आया । शेष वर्णन सागरदारककी तरह जानना चाहिये । इस तरह वह दमक पुरुष भी अतिपत्रादिकों के स्पर्श से भी अधिक अनिष्ट उसके अंग-स्पर्श को जानकरके, सागरदारक की तरह, सुख प्रसुप्त उस सुकुमारिका दारिका को जान उसे छोड़ने के लिये पलंग से उठा और उठकर उस वास घर से बाहिर निकला-निकलकर खंडमल्लक-फूटे हुए भिक्षापात्र को तथा खंडघटक-फूटे हुए पानी पीने के पात्र को-लेकर वध्यस्थान से अथवा मारक पुरुष के हाथ से मुक्त हुए काककी तरह वह बहुत जल्दी जहां से आया था उसी ओर चलदिया (तएणं सा सुमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्ति कहुहु ओहयमण जाव झियायइ) इसके थोड़ीदेर बाद वह सुकुमारिका दारिका जगी और पतिको अपने पास न

दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए)

ते पभते ते हरिद्र भाणुअने सुकुमारिका दारिकाना अंगेनो स्पर्शं पडेक्षां वल्लुन करवांभां आव्वा प्रमाळुनेो कठोर ज लाग्गे। (अही सागरदारक जेवुं ज वल्लुन समञ्ज जपुं जेधजे.) आ रीते ते हरिद्र भाणुअ पणु तरेवारना स्पर्शं करतां पणु वधारे अनिष्टकर तेनो स्पर्शं जाल्लिने सागर दारकनी जेमज सुजेथी सूध गयेली ते सुकुमारिका दारिकाने जेधने, तेनो त्याग करवा भाटे पलंग उपरथी जिलो थयो अने जिलो थधने वासगृहनी भडार नीडज्यो अने नीक-णीने जण्डमल्लक-फूटेला भिक्षापात्र तेमज जण्डघटक-फूटेला पाणी पीवा भाटेना पात्रने लधने वध्यस्थानथी अथवा तो मारक (दिसक) पुरुषना हाथथी मुक्ता थयेला कागडानी जेम ते त्वराथी न्याथी ते आव्वाे हतो ते तरइ ज जतो रह्यो। (तएणं सा सुमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्ति कहु ओहमण जाव झियायइ) थोडावधत पछी ते सुकुमारिका दारिका जगी अने पतिने पोतानी पासे न जेधने

२२८

साताधर्मकथासूत्रे

दृष्ट्वा एवमवादीत् '—इति कृत्वा, अपहृतमनः संकल्पा यावद्-आर्तध्यानं ध्यायति ॥ सू० ११ ॥

मूलम्—तएणं सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं सदावेइ सदा-
वित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं
से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवा-
गच्छइ उवागच्छित्ता सुमालियं दारियं अंके निवेसेइ निवेसित्ता
एवं वयासी—अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरा पोराणा णं जाव पच्चणु-
ब्भवमाणी विहरसि तं मा णं तुमं पुत्ता ! ओहयमण जाव
झियाहि तुमं णं पुत्ता मम महाणसंसि विपुलं असणं४ जहा
पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तएणं सा सुमालिया
दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता माहणसंसि विपुलं
असणं जाव दलमाणो विहरइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘ तएणं सा ’ इत्यादि । ततः खलु सा भद्रा सार्ववाही=मुकुमारिका
दारिकाया जननी ‘ कल्लं ’ कलये द्वितीयदिनसे प्रादुः प्रभातायां रजन्यां यावत्—
देखकर पलंग से उठी । उठकर उसने उस दमकपुरुषकी मार्गणा एवं
गवेषणा की । उसमें उसने वासगृह के द्वार को खुला हुआ देखा । देख-
कर उसने विचारा कि वह दमक पुरुष अब चला गया है । ऐसा सोचकर
वह अपहृत मनः संकल्प होकर यावत् आर्तध्यान करने लगी ॥ सू० ११ ॥

‘ तएणं सा भद्दा कल्लं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं

शय्या उपरथी जभी यर्थ. जभी यर्थने तेणु ते हरिद्र भाणुसनी शोध जेण करी.
तेणु विचार कर्यो के ते हरिद्र भाणुस तो जेतो रह्यो छे. आ रीते विचार करीने
ते अपहृतमनः संकल्पा यधने यावत् आर्तध्यानभां डूणी गछ. ॥ सूत्र ११ ॥

‘ तएणं सा भद्दा कल्लं ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यारभाइ (सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं सदावेइ, सदा-

जेनेगारधर्मोत्तवर्णिणी टी० अ० १६ सुकुमारिकाचरितवर्णनम्

२६२

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटी शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुसन्धेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति । एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यानं ध्यायन्ती पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वम् अपहतमनः संकल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका तां दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमकपुरुषो मां सुखप्रसुप्तं ज्ञात्वा मम पार्श्वोदुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्त्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती ' गतः स द्रमकपुरुषः, इति कृत्वा ऽऽर्तध्यानं ध्यायामि सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमहं निवेदेइं) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहां यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोड़लेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तूं वधू और वर के लिये यह मुख धोने की सामग्री दतौन आदि-लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई-और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये । क्या कारण है जो अपहतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रहीं हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह द्रमक पुरुष मुझे यहां सुख प्रसुप्त जान छोड़कर चला गया है । जब मैं थोड़ी देरबाद उठी तो मैंने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमहं निवेदेइं) सुकुमारिका दारिकानी माता भद्राये भील द्विसे न्यारे सवार थर्ध गयु' अने सूर्य उदय पाग्यो त्यारे तेणु दासीने भोलावी अने भोलावीने आ प्रभाणु कहुं-अहीं यावत् शब्दथी पड़ेलांता सूत्रनी जेम ज वर्णुन सभल लेवु' जेधये. जेमके भद्राये तेने भोलावीने आ प्रभाणु कहुं के वधू अने वरना भुण प्रक्षासन भाटे हातणु वगेरे धर्ध न्. न्यारे भद्राये तेने आ प्रभाणु कहुं त्यारे ते दासी वासगृहमां गध अने त्यां जर्धने तेणु सुकुमारिका दारिकाने आर्तध्यान करती जेध. त्यारे आ प्रभाणु तेनी लावत जेधने तेणु कहुं के हे देवानुप्रिये ! शा कारणथी तमे अपहतमनः संकल्प धर्धने आर्तध्यान करी रह्यां छे. त्यारे सुकुमार दारिकाये ते दासीने आ प्रभाणु कहुं-के ते दरिद्र भाणुस मने अहीं सुणेथी सूतेवी छोडीने जतो रह्यो छे. न्यारे थोडा वणत पछीहुं जगगी त्यारे थे' तेने भारी पासे जेथे नहि अने मे' वासगृहना आरखाने पणु पुव्वुं

તતઃ સા દાસચેટી સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય સમીપમાગત્યૈતમર્થ નિવેદયતીતિ યોજના બોધ્યા । તતઃ સ્વલ્લ સ સાગરદત્તસ્તથૈવ ' સંબંધે ' સંપ્રાન્તાઃ=ઉદ્દિગ્નઃ સન્ યત્રૈવ વાસગૃહં તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉવાગત્ય સુકુમારિકાં દારિકામક્રુદ્ધે નિવેસયતિ, નિવેસ્ય એવમવાદીન્-અદ્યો । इत्याश्चर्यं स्वल्ल हे पुत्रि ! त्वं ' पुरा ' पुरा=पूर्वमवेषु ' पोरणाणं ' पुराणानाम्=अतीतकालकृतानां, यावन्=अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्-' दुष्णिष्णाणं दुष्परकान्तानं कष्टाणं पापानं कर्माणं पावनं फलविति

देखा तब मैं समझ गई कि वह यहां से चला गया है । इस प्रकार मैं चिन्ता में पड़ रही हूँ । सुकुमारिका की इस बात को सुनकर दासचैटी ने उसी समय वहां से वापिस आकर सागरदत्त को इस बात की खबर दी-“ इस प्रकार यह पूर्वोक्त पाठ यहां लगा लेना चाहिये-(तएण से सागरदत्ते तहेव संबंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी, अहोणं तुमं पुत्ता पुरा पोरणाणं जाव पच्चणुग्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि) इसके बाद वह सागरदत्त पहिले जैसा उद्विग्नचित्त होकर जहां वासगृह था वहां गया । वहां जा कर उसने सुकुमारिका दारिका को अपनी गोद में बैठा लिया और बैठाकर कहने लगा-हे पुत्रि ! तुमने पहिले भवों में जो दुश्चर्या कृत, (कठिन-ताईसे भोगने योग्य एवं कृत ज्ञानावरणीय आदि अशुभ कर्म उपार्जित

ભેદ્યું ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાતરી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે. આ રીતે હું ચિંતામાં પડી છું. સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દાસીએ તરત જ સાગરદત્તને અખર આપી. આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ ભણી લેવો બેઠાએ, તણે સે સાગરદત્તે તહેવ સંબંતે સમાણે, જેણેવ વાસહરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા સૂમાલિયં દારિયં અંકે નિવેસેઈ, નિવેસિત્તા એવં વયાસી અહો ણં તુમં પુત્તા ! પુરા પોરાણાણં જાવ પચ્ચણુગ્ભવમાણી વિહરસિ તં માણં તુમં પુત્તા ઓહયમણ જાવ ઝિયાહિ-તુમં ણં પુત્તા મમ મહાણસંસિ વિપુલં અસણં ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિભાએ-માણી વિહરાહિ)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાંની જેમ વ્યાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યાં વાસ-ગૃહ હતું ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પોતાના ખોળામાં બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ ! તે પહેલા ભવમાં જે કંઈ દુશ્ચર્યા, દુષ્પરકાંત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે અશુભ કર્મો ઉપા-

ધિસેસે ' ઇતિ-દુશ્ચીર્ણાનાં-દુશ્ચરિતાનાં વાહ્મનોજનિત મૃષાવાદાદિકર્મણામિત્યર્થઃ, કિં ભૂતાનાં તેષાં? દુષ્ટરાક્રાન્તાનાં-કાયિકાનાં પ્રાણિર્હિસાડ્દત્તાદાનાદીનાં, કૃતાનાં પ્રકૃતિસ્થિત્યનુભાગપ્રદેશભેદેન ચદ્વાનાં પાપાનાં=અશુભાનાં કર્મણાં=જ્ઞાનાવરણી-યાદીનાં પાપક્રમ્-અશુભં, ફલવૃત્તિવિશેષમ્, પ્રત્યનુભવન્તી=વેદ્યન્તી વિદ્યમિ=વર્તસે તત્=તસ્માદ્ મા સ્વલુ ત્વં હે પુત્રિ! અપહતમનઃસંકલ્પા યાવદ્ ધ્યાય=આર્તધ્યાને મા કુરુ ઇત્યર્થઃ, ત્વં સ્વલુ હે પુત્રિ! મમ ' મહાણસંસિ ' મહાનસે-પાકશાલાયાં વિપુલમશનં પાનં સ્વાદ્યં સ્વાદ્યં યથા પોદ્ધિલા યાવત્ પરિમાજયન્તી=શ્રમણાદિભ્યઃ પ્રવિભાગં કુર્વતી ' વિદ્યરાહિ ' વિદ્યર=તિષ્ઠ। તતઃ સ્વલુ સા સુકુ-

કિયે-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ ઓર પ્રદેશ બંધકે ભેદસે બાંધે હૈં-અહીં પુરાને અશુભ જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કે તુમ અશુભ ફલ વિશેષ કો હસ સમય ભોગ રહી હો। પૂર્વ ભવોં મેં જો પાપ કિયે હૈં વેહી યહાં " "પુરાણ " શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈં। પાપ શબ્દ યહાં અશુભ જ્ઞાનાવર-ણીય આદિ કર્મોં કા સોધક હૈ। યે અશુભ જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મ જીવ અશુભ મન, વચન ઓર કાય કી પ્રવૃત્તિ સે જન્ય મૃષાવાદ આદિ ક્રિયાઓં સે, તથા પ્રાણિર્હિસા, અદત્તાદાન આદિ કુકૃત્યોં સે બાંધતા હૈ। બાંધતે સમય હનમેં પ્રકૃતિ, સ્થિતિ અનુભાગ ઓર પ્રદેશ બંધરૂપ વિભાગ હો જાતા હૈ। અધિક સ્થિતિ ઓર અધિક અનુભાગ બંધ હનમેં સંકલેશ પરિણામોં સે પડતા હૈ। હસલિયે હે પુત્રિ। તુમ અપહતમનઃ સંકલ્પ દોષર યાવત્ આર્તધ્યાન મત કરો। તુમ તો મેરી ભોજન શાલા મેં ચતુર્વિધ આદાર તૈયાર કરા કર પોદ્ધિલા કી તરહ શ્રમણ આદિ

નિત કર્યા હતાં-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બંધના ભેદથી બાંધ્યા છે. અર્થારે તું તેજ પડેલાંના અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોના અશુભ ફળ વિશેષને ભોગવી રહી છે. પૂર્વ ભવમાં જે પાપ કરવામાં આવ્યા હોય તેને અહીં " પુરાણ " શબ્દથી ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે. અહીં પાપ શબ્દ અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોને સ્પષ્ટ કરે છે આ બધા અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોં જીવ અશુભ-મન, વચન, અને કાયની પ્રવૃત્તિથી જન્ય મૃષાવાદ વગેરે ક્રિયાઓથી તેમજ પ્રાણીઓની હિંસા, અદત્તાદાન વગેરે કુકર્મોથી બાંધે છે. બાંધતી વખતે એઓમાં પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બંધરૂપ વિભાગ થઈ જાય છે. અધિક સ્થિતિ અને અધિક અનુભાગ બંધ તેઓમાં સંકલેશ પરિણામોથી પડે છે. એથી હે પુત્રિ। તમે અપહતઃ મનઃ સંકલ્પ થઈને યાવત્

મારિકા દારિકા એતર્થ પ્રતિશ્રુણોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય મહાનસે ત્રિપુલમશ-
નપાનત્વાય ત્વાયં યાવદ્ 'દલમાળી' દદતી વિહરતિ=આસ્તે સ્મ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

મૂલ્ય-તેણં કાલેણં તેણં સનણં ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ
બહુસ્સુયાઓ એવં જહેવ તૈયલિણાપ સુઘવયાઓ તહેવ સમોસ-
જ્ઞાઓ તહેવ સંઘાડઓ જાવ અણુપવિઢે તહેવ જાવ સૂમાલિયા
પઢિલાભિત્તા એવં વચાસી-એવં સ્વલુ અજ્ઞાઓ ! અહં સાગરસ્સ
અણિટ્ટા જાવ અમણામા નેચ્છહ ણં સાગરણ મમ નામં વા જાવ
પરિભોગં વા, જસ્સ ૨ ત્રિ ય ણં દિજ્ઞામિ તસ્સ ૨ ત્રિ ય ણં
અણિટ્ટા જાવ અમણામા ભવામિ, તુઘ્મે ય ણં અજ્ઞાઓ ! બહુ-
નાયાઓ એવં જહા પુટ્ટિલા જાવ ઉવલલ્લે જે ણં અહં સાગરસ્સ
દારિયાણે ઇટ્ટા કંતા જાવ ભવેજ્ઞામિ, અજ્ઞાઓ તહેવ મળંતિ
તહેવ સાવિયા જાયા ચિંતા તહેવ સાગરદત્તં સત્થવાહં આપુ-
ચ્છહ જાવ ગોવાલિયાણં અંતિણે પવ્વહિયા, તણં સા સૂમા-

જનોં કે લિયે વિતરણ કરતી રહો (તણં સા સૂમાલિયા દારિયા એ-
મદ્દં પઢિસુણેહ પઢિસુણિત્તા મહાણસંસિ વિપુલં અસણ જાવ દલમાળી
વિહરહ) હસ તરહ પિતા સાગરદત્ત કે સમજાને પર ઉસ સુકુમારિકા
દારિકા ને અપને પિતા કે હસ કથન કો સ્વીકાર કર કે વહ મહાનસ
ભોજન શાલા મેં નિપ્પત્ત ચતુર્વિધ આહાર કો અમણાદિ જનોં કે લિયે
વિતરણ મી કરને લગી ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ, તું મારી ભોજન શાળામાં ચાર ભાતના આહારો
તૈયાર કરાવડાવીને પોટિલાની બેમ શ્રમણ વગેરે બેનોને આપતી રહે.

(તણં સા સૂમાલિયા દારિયા એમદ્દં પઢિસુણેહ, પઢિસુણિત્તા મહાણસંસિ
વિપુલં અસણ જાવ દલમાળી વિહરહ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામાં આવેલી તે સુકુમારિકા દારિ-
કાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધું અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામાં
તૈયાર થયેલા ચારે ભાતના આહારોને શ્રમણ વગેરેને આપવા લાગી. ॥ સૂ. ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवंभयारिणी बहुहिं
 चउत्थल्लट्ठुम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा
 अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवाग-
 च्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-
 इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ
 बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं अणि-
 विखत्तेणं तवोकम्मणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए,
 तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं वयासी-
 अम्हे णं अज्जे ! समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव
 गुत्तवंभयारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पइ वहिया गामस्स जाव
 सण्णिवेसरस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए, कप्पइ णं अम्हं अंतो
 उवस्सयस्स विइपरिविखत्तरस्स संधाडिवद्धियाए णं समतल
 पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एय-
 मट्ठं नो सदहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठं अ०३ सुभूमि-
 भागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—‘ तेणं कालेणं ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ‘ गोवा-
 लियाओ अज्जाओ ’ गोपालिका=गोपालिकानाम्भ्यः आर्याः=साध्यः, ‘ बहुस्सु-
 याओ ’ बहुश्रुताः=श्रुतपारगाम्भ्यः, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ‘ तेतलिणाए ’
 तेतलिजाते=वर्द्धते तेतलिपुत्राध्ययने वर्णिताः ‘ सुव्वयाओ ’ सुव्रताः=सुव्रता-

‘ तेणं कालेणं तेणं समएणं ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं—तेणं समएणं) उस काल और उस समय में
 (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

‘ तेणं कालेणं—तेणं समएणं ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेणं कालेणं—तेणं समएणं) ते क्षणे अने ते समये
 (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

नाम्यः साध्वीः, 'तद्देव समोसङ्गाओ' तथैव समवसृताः=सुव्रतावद् गोपालिकाः समागताः । 'तद्देव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे' तथैव संघाटको यावद् अनुपविष्टः गोपालिकानामार्यणामेकः संघाटकः यावत्=सुकुमारिकाया गृहेऽनुपविष्टः । तथैव यावत् सुकुमारिका ता आर्याः अशनादिना प्रतिलम्भ्य एवं=वक्ष्यमाणमकारेण अवादीत्-हे आर्याः ! एवं खलु अहं सागरस्य दारकस्यानिष्टा यावद्=अकान्ता अप्रिया अमनोज्ञा अमनोमा मनः प्रतिकूलाऽस्मि, नेच्छति खलु सागरको मम नाम वा गोत्रं वा श्रोतुम्, किं पुनर्यावत् मया सह परिभोगं वा, यत्र मम नामाऽपि श्रोतुं नेच्छति तत्र का वार्ता परिभोगस्य, अहं तु तेन सर्वथा परि, त्यक्तेति भावः । अपि च यस्मै यस्मै खलु 'दिज्जामि' दीये=स्वपित्रा प्रदत्ता भवामि, तस्य तस्यापि च खलु अनिष्टा यावद् अमनोमा=मनः प्रतिकूला भवामि, हे आर्याः । ययं च खलु 'बहुनायाओ' बहुज्ञाताः ज्ञानातिशययुक्ताः, 'एवं तद्देव समोसङ्गाओ तद्देव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तद्देव जाव म्मालिया पडिलभित्ता एवं वयासी) गोपालिका नामकी आर्यिका जो श्रुत पारगामिनी थीं इस प्रकार से कि जिस प्रकार से तेतलि प्रधान नामक चौदहवें अध्ययन में सुव्रता साध्वी वर्णित हुई है-थीं-वे उसी तरह से वहां आईं । इनका एक संगडा था, यावत् सुकुमारिका के घर में गोचरी के लिये प्रवेश किया । सुकुमारिका ने बड़ी भक्ति के साथ उन्हें आहार पीनी दिया-और देकर वह फिर इस प्रकार से उनसे कहने लगी-(एवंखलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अमणामा, नेच्छं णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्म-तस्म वि य णं अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि तुम्हे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ, एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे तद्देव समोसङ्गाओ तद्देव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तद्देव जाव म्मालिया पडिलभित्ता एवं वयासी)

गोपालिका नामे आर्यिका के जे श्रुत पारगामिनी હતી. તેતલીપ્રધાન નામના ચૌદમા અધ્યયનની સુવ્રતા સાધ્વી જેવી હતી તેવી જ તે પણ હતી. સુવ્રતા સાધ્વીની જેમ જ તે યાવત્ સુકુમારિકાના ઘેર તે ગોચરી માટે ગઇ. સુકુમારિકાએ જૂળ જ ભક્તિ-ભાવથી તેમને આહારપીણી આપ્યું અને આપીને તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી—

(एवं खलु अज्जाओ अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अमणामा नेच्छं णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स तस्स वि य णं अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि तुम्हे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ,

अनंगारक्षणीमृतवर्षिणी टी० अ० १६ सुकुमारिकानिबन्धनम्

२३५

यथा पोष्टिला यावद् उपलब्धम् ' अयमर्थः—यथा तेतलिपुत्रभार्या पोष्टिला स्वमर्त-
वशीकरणोपायपदार्थनार्थं सुव्रतां साध्वीं पृच्छतिस्म, तथा—सुकुमारिका दारिका
गोपालिका संघाटकं पृष्ठवती, तादृशं चूर्णयोगादिकमुपलब्धं=ज्ञातं किम् ? येनाहं
सागरस्य दारकस्येष्टा कान्ता यावद् भवेयं आर्यास्तथैव भणन्ति=यथा पोष्टिलि-

जे णं अहं सागरस्स दारगस्स इडा कंता जाव भवेज्जाभि, अज्जाओ
तहेव भणंति तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्तं सत्थ-
वाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिण पव्वइया) हे आर्याभो ।
मैं अपने पति सागर दारक के अनिष्ट बनो हूं यावत् अकान्त
अप्रिय अमनोज्ञ एवं अमनोम मनः प्रतिकूल बनो हुई हूं । वे मेरा नाम
गोत्र कुछ भी सुनना नहीं चाहते हैं । ता फिर उनके साथ परिभोग
करने की तो बात ही क्या है । मुझे तो उन्होंने सर्वथा ही छोड़ दी है ।
अपिच—मेरे पिता मुझे जिस २ व्यक्ति के लिये देते हैं—मैं उस २ व्यक्ति
के लिये भी अनिष्ट आदि बन जाती हूं । हे आर्याओ ! आप तो बहु-
श्रुत हैं अनेक शास्त्रों की ज्ञाता है—ज्ञान के अतिशय से संपन्न हैं ।
इस प्रकार उस सुकुमारिका ने पोष्टिला की तरह अपने पति को वश
में करने के विषय में उनसे उपाय पूछा पोष्टिलाने अपने पति तेतलिपुत्र
को वशमें करने को पहिले जैसे सुव्रता साध्वी के संघाटेसे उपाय पूछा
था—और कहा आपको यदि कोई ऐसा चूर्ण आदि का प्रयोग उपलब्ध

एवं जहा पुष्टिला जाव उवलदे जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इडा कंता जाव
भवेज्जाभि, अज्जाओ तहेव भणंति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता,
तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिण पव्वइया)

हे आर्याओ ! मेरा पति सागरदारक भाटे हुं अनिष्ट थर्ध जयेदी छुं
यावत् अकांत, अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोम थर्ध बूझी छुं । तेओ मेरा
नाम गोत्र क'ध पणु सांभजवा छिछता नथी तयारे तेमनी साथे परिभोग
करवानी तो बात न शी करवी । तेओओ मने ओकदम न ने छोडी दीधी छे ।
अने मेरा पिताओ मने ने ने माणुसने आपे छे ते जधा भाटे पणु हुं अनिष्ट
वगेरे थर्ध नउं छुं । हे आर्याओ ! तमे तो बहुश्रुत छे, धणुं शास्त्रोने
नण्णो छे, ज्ञान संपन्न छे । आ रीते पोष्टिजानी नेम न सुकुमारिका दारि-
काओ पणु पतिने वशमां करवा भाटेना उपायोनी पूछपरछ करी । पोष्टिलाओ
पोतान । ते तेतलिपुत्रने वशमां करवा भाटे पडेता सुव्रता साध्वीता संघा-
टाथी नेम उपायो पूछया डता तेमन तेणे पणु तेमने कहुं के-ने ओवे

कया पृष्ठा सुव्रतायाः संघाटकस्थिताः साव्यस्तामवोचन्, तथैव गोपालिका संघाटस्थाः आर्या भणन्ति=वदन्ति स्मेत्यर्थः । 'तथैव साविया जाता' तथैव श्राविका जाता=पोटिला वत् सुकुमारिका दारिकाऽपि श्राविका जाता । तथैव चिन्ता-पोटिलावदेव पश्चान्=प्रव्रज्यां ग्रहीतुं चिन्ता सुकुमारिकाया मनसि प्रादुर्भूता । सुकुमारिका सागरदत्तं सार्थवाहं=स्वपितरं तथैव=यथा स्वपतिं पोटिला, तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामन्तिके प्रव्रजिता=दीक्षां गृहीतवती । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्वी जाता सा किं भूता-ईर्यासमिता यावद् गुप्त हो तो भी बता दीजिये कि जिससे मैं अपने पति सागरदारक को इष्ट, कान्त यावत् मनोम बनजाऊँ । गोपालिका के संघाडे की इन आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोटिला को सुव्रता साध्वी की तरह समझाया-वह उसी तरहसे श्राविका बन गई । पोटिला की तरह इस सुकुमारिका ने भी बाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया-पोटिलाने जिस तरह अपने पति से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की थी-उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली । (तएणं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाव गुत्तवंभयारिणी बहूहि चउत्थ छट्ठइम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइं जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ) इस तरह वह सुकुमारिका आर्या बन गई । वह ईर्यासमिति आदि का पालन करने लगी

कोई यूपुं वगेरेना प्रयोग भणी शके तो पणु भने बतावी हो के नेथी हुं भारा पति सागरदारकना भाटे इरी छण्ट, कान्त, यावत् मनोम थर्छ भण्ड । गोपालिका संघाडानी ते आर्याओओ-सुव्रता-साध्वीओ जेम पोटिलाने सम-भवी तेमज्ज समज्जवी अने छेवटे ते श्राविका भनी गछ । पोटिलानी जेमज्ज ते सुकुमारिकाओ पणु त्थारपछी दीक्षा देवाने मनमां भक्कम विचार करी लीथो । पोटिलाओ जेम पोताना पतिनी आज्ञा लधने दीक्षा धारण करी छती तेमज्ज सुकुमारिकाओ पणु पोताना पति सागरदत्तने पूछीने गोपालिका आर्यानी पासैथी दीक्षा धारण करी लीथी ।

(तएणं सा सूमालिया अज्जा जाया इरिया जाव गुत्तवंभयारिणी बहूहि चउत्थ छट्ठइम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइं जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ)

आ रीते सुकुमारिका आर्या थर्छ गछ, ते छयां समिति वगेरेनुं पालन करवा लागी. अने नवकेटीथी अक्षयर्थ भक्षानतनी रक्षा करवा लागी. धण्डा

अनेकार्थमामृतवर्षिणी टी० अ० १६ सुकुमारिकाचरितवर्णनम्

११७

ब्रह्मचारिणी सा बहुमिश्रतुर्थपष्ठाष्टमभक्तैर्यावत्-तपः कर्मभिरात्मानं भावयन्ती विहरति=आस्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव गोपालिका आर्यास्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु सुभाभिरभ्यनुज्ञाता सती चम्पानगर्या बहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे पष्ठपष्ठेन-पष्ठमक्तानन्तरं पुनः पष्ठमक्तेन 'अणिक्वित्तेण' अनिक्षित्तेन =अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तपःकर्मणा 'सूराभिमुखी' सूर्याभिमुखी 'आयावेमाणी' आतापयन्ती-आतापनां कुर्वती विहर्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तरं ता गोपालिका आर्याः सुकुमानिकामार्गमेवमवादिषुः-हे आर्ये ! वयं खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी । अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित भी करने लगी । एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या साध्वी-जहां गोपालिका आर्या विराज मान थी वहां गई- (उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी, इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हेहिं अब्भणुत्ताया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूर सामंते छट्ठं छट्ठेण अणिक्वित्ते णं तवोक्कमे णं सूराभिमुखी आयावेमाणी विहरित्तेण) वहां जाकर उसने उन्हें वंदना की, नमस्कार किया ! वंदना एवं नमस्कार कर फिर वह इस-प्रकार कहने लगी-हे भदंत ! मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर चंपा नगरी से बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अंतररहित छट्ठ छट्ठ को तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ । (तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालियं एवं वयासी-अम्हेणं

चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम भक्त वगैरे तपस्याओर्यो पोताने लावित पणु करवा लागी. ओक द्विसनी बात छे के ते सुकुमारिका आर्या साध्वी न्यां गोपालिका आर्या विराजमान छती त्यां गइ. (उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी, इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हेहिं अब्भणुत्ताया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेण अणिक्वित्तेणं तवो कम्मेणं सूराभिमुखी आयावेमाणि विहरित्तेण) त्यां गइने तेखे तेभने वंदना करी नमस्कार कर्या. वंदना तेभज नमस्कार करीने तेखे आ प्रभाखे कहुं के छे लहत ! आपनी आज्ञा भेजवीने हुं चंपा नगरीमां अडार सुभूमिभाग नामना उद्याननी पांसे अंतर रहित छट्ठ छट्ठनी तपस्या करतां सूर्याभिमुखी अधने आतापना करवा छिछुं छुं. (तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालियं

निर्ग्रन्थः ईर्यासमिताः=ईर्यासमितियुक्ताः, यावद्-गुप्तब्रह्मचारिण्यः स्मः, तस्माद् नो खलु अस्माकं कल्पते-‘ बहिया ’ बहिः-ग्रामाद् यावद् संनिवेशाद् षष्ठ षष्ठेन ‘ जाव विहरित्ते ’ यावद् विहर्तुम् ग्रामादे बहिः प्रदेशे साध्वीनां स्थितिः शीलभङ्गादिकारणं भवतीति भावः । किंतु कल्पते खलु अस्माकम् ‘अंतो’ अन्तः=अभ्यन्तरे ‘ उवस्सयस्स ’ उपाश्रयस्य=वसतेः, किम्भूतस्य ‘ वितिपरि-क्खित्तस्स ’ वृत्तिपरिसिप्तस्य=भिर्यादिना सर्वतः समावृतस्य, ‘ संघाडिबद्धियाए ’ संकुवाटिका प्रतिवद्धायाः=प्रतिवद्धशटिकायाः सर्वथाऽनुद्धाटितगात्राया इत्यर्थः ‘ समतलपइयाए ’ समतलपदिकायाः=भूतौ समतलतया स्थापितचरणयुग्मलाया आयावित्तए ’ आतापयितुम्=आतापनां कर्तुं कल्पते इति पूर्वणं सम्बन्धः । ततः

अज्जे ! समणीओ निर्गन्थीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तवंभवारि-णीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ बहियागामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से इस प्रकार कहा है आर्ये ! हम लोग निर्ग्रन्थ भ्रमणियां हैं । ईर्या आदि समितियों का पालन करती हैं । और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हैं । इस-लिये हम लोगों को ग्राम से यावत् संनिवेश से बाहिर रह कर षष्ठ षष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है । कारण-ग्रामादि के बाहिरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभंग आदि का निमित्त बन जाता है । (कप्पइ णं अम्हं-अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतल पइ-याए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एवं बयासी-अम्हेणं अज्जे ! समणीओ निर्गन्थीओ ईरिया सामियाओ जाव गुत्त-वंभवारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए) आ रीते सुकुमारिका साध्वीतुं कथन सांख्यीने गोपालिका आर्याओ सुकुमारिका आर्याने आ प्रमाणे कहुं के आर्ये । आपणु निर्ग्रन्थ भ्रमण्यो छीओ, धर्या वगेरे समितियोनुं पालन करीओ छीओ, अने तप-केटिथी प्रह्वचर्यनुं रक्षण करीओ छीओ, ओथी आपणु जामथी यावत् संनिवेशथी जडार नहीने षष्ठ षष्ठनी तपस्या करी यावत् सूर्याभिमुखी धरने आतापन योग धारण करयो कल्पित नथी, जरणु के-जाम वगेरेथी जडारना प्रदे-शमां साध्वीओओ रडेवुं शीलभंग विगेरेनुं निमित्त थरुं जाय छे, (कप्पइ णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपइयाए आया वित्तए) आपणुने तो ओ ओ कल्पित छे के आपणु जीत वगेरेथी ओमेर

अनगारधर्मासृतवर्णिनी टी० अ० १६ सुकुमारिकाचरितनिरूपणम्

२३९

खलु सा सुकुमारिका गोपालिकानामार्याणामेतमर्थं नो श्रद्धाति ' नो पत्तिगइ ' नो प्रत्येति=नो विश्वसिति, ' नो रोएइ ' नो रोचते, एतमर्थम् अश्रद्धाणा, अपत्तिगन्ती, अरोचमाना सति सुभूमिभागस्य उद्यानस्य अदूरसामन्ते पट्ट-पट्टेन पावत्-तपः कर्मणा सूर्याभिमुखी भूत्वा-आतापनां कुर्वती विहरति ॥ सू० १३ ॥

मूलम्-तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोटी परिवसइ,
नरवइ दिणवियारा अम्मापिडिनिययनिप्पिवासा वेसुविहा-
रकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरि-
भूया, तरथ णं चंपाएदेवदत्ता नामं गणिया होत्था सुकुमाला
जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोटीए अन्नया पंच
गोट्टिलगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स

कि जो भित्ति आदि से सब तरफ से परिक्षिप्त है भीतर ही अपने शरीर को शाटिका से अच्छी तरह संवृत्त करती हुई और भूमि पर दोनों चरणों को बराबर स्थापित कर आतापना लें (त ए णं सा सुमालिया गोवालियाए एयमट्टं नो सदहइ नो पत्तिगइ नो रोएइ एयमट्टं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामन्ते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ) इस गोपालिका आर्या के कथन ऊपर उस सुकुमारिका आर्या को श्रद्धा नहीं जमी उस पर उसे विश्वास नहीं आया, वह उसे रुचा नहीं । इस तरह वह उसे अश्रद्धा अप्रतीति और अरुचि का विषय बनाती हुई सुभूमिभाग नामक उद्यान के पास पट्ट पट्ट की तपस्या करती हुई वह सूर्याभिमुख होकर आतापना करने लगी ॥ सू० १३ ॥

परिक्षिप्त उपश्रयनी अदूरञ्च पोताना शरीरने शाटिका-साडीधी सारी रीते दांशने अने भूमि उपर णंने यशेणने बराबर स्थापित करीने आतापना कथने (तएणं सा सुमालिया गोवालियाए एयमट्टं नो सदहइ नो पत्तिगइ नो रोएइ, एयमट्टं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामन्ते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ) गोपालिका आर्याना कथन उपर सुकुमार आर्याने श्रद्धा थछ नहि, तेना उपर तेने विश्वास थयो नहि ते तेने गर्भुं पणु नहि आ रीते ते ते कथन प्रत्ये अश्रद्धा, अप्रतीति अने अरुचि धरावती सुभूमिभाग नामना उद्याननी पास पट्ट पट्टनी तपस्या करती सूर्याभिमुखी थछने आतापना करवा लागी ॥ सूत्र १३ ॥

उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुबभवमाणा विहरंति, तत्थ णं एगे गोठिलगपुरिसं देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरइ एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरइ एगे पुप्फपूरयं रणइ एगे पाए रणइ एगे चामरुक्खेवं करेइ तएणं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोठिलपुरिसेहिं सद्धिं उगालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोरणाणं कम्माणं जाव विहरइ, तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियमव्रंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उगालाइं जाव विहरिज्जामि त्तिक्खु नियाणं करेइ करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ ॥सू. १४॥

टीका — 'तत्थ णं चंपाए' इत्यादि। तत्र खलु चम्पायां नगरीं ललिता नाम्नी 'गोठी' गोष्ठी=मण्डली परिवसति किं भूता सा गोष्ठोत्थाद—'नरवद्दिण्ण-वियारा' नरवत्तिद्विविचारा नपतिना दत्तो विचारः संमतिर्यस्यै सा तथा—सेवा-दिना सन्नुष्टान्नपतेर्लब्धस्वतन्त्रता, तथा — 'अम्मापिइ नियय निप्पिवासा' अम्मापितु निजकृतिः पिशासा=सा तापित्रादि निःपेक्षा 'वेसविहारकयनिकेया'

'तत्थ णं चंपाए ललिया नाम' इत्यादि।

टीकार्थ—(तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोठी परिवसइ) उस चंपानगरीमें 'ललिता' इस नामकी गोष्ठी—मण्डली—रहती थी। (नरवद् दिण्णवियारा, अम्मापिइ नियय निप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया,

तत्थणं चंपाए ललिया नाम' इत्यादि—

टीकार्थ—(तत्थणं चंपाए ललिया नाम गोठी परिवसइ) ते चंपा नगरीमां 'ललिता' नामे गोष्ठी 'मण्डली' रहती હતી. (नरवद् दिण्णवियारा अम्मापिइ नियय निप्पिवासा, वेसविहारकयनिकेया, नाणाविहारविणयव्यवहाणा, अहूदा

वेद्याविहारकृतनिकेता - वेद्याग्रहकृतनिवासा, तथा- ' नाणाविहअविणयप्प-
हाणा ' नानाविधाऽविनयप्रधाना, तथा-आदया=धनधान्यसम्पन्ना, यावद् अपरि-
भूता=परैरनभिभूता, आसीत् । तत्र खलु चम्पायां नगरीं देवदत्ता नाम 'गणिया'
गणिका=वेद्या, आसीत्, सा किम्भूतेस्याह-सुकुमारपाणिपादा, चतुष्पष्टिकला-
विशारदा 'जहा अंडणाए' यथा अण्डज्ञाते=अण्डनामके तृतीये ज्ञाताध्ययने
यथाऽस्यावर्णने तद्वदिह बोध्यम् । नतः खलु तस्या ललिताया गोष्ठ्या अन्यदा=
अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, पञ्च 'गोष्ठिगपुरिसा' गोष्ठिकपुरुषा=मण्डलीपुरुषाः
समानवयस्का इत्यर्थः देवदत्तया गणिकया सार्धं सुभूमिभागस्योद्यानस्योद्यानश्रियं=
उद्यानशोभां पत्यनुभवन्तो विहरन्ति । तत्र खलु एको गोष्ठिकपुरुषो देवदत्तां

नाणाविह अविणयप्पहाणा, अड्डा जाव अपरिभूया) इसने अपनी सेवासे
राजाको प्रसन्न कर रखा था-जो उसकी कृपा से यह बिलकुल स्वच्छंद
थे । अपने माता पिता आदि कुटुम्बी जनों की यह परवाह नहीं किया
करते थे-उनको इन पुरुषों से बिलकुल भय नहीं था । वेद्याओं के
घर में पड़े रहना-यही इनका एक काम था । अनेक प्रकार के अविनय
प्रधान रूप अनाचारों का सेवन करना यही उनका काम था ।
पैसे की-द्रव्यकी उनके- पास कभी नहीं थी । कोई इनको कुछ कह
सुन नहीं सकता था । (तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था,
सुकुमाला, जहा अंडणाए, तण्णं तीसे ललियाए गोठ्ठीए अन्नया पंच
'गोष्ठिगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जा-
णस्स उज्जाणसिर्णि पच्चणुडभवमाणा विहरन्ति) उसी चंपा नगरी में

जाव अपरिभूया) ते मंडलीये येतानी सेवाधी राजने प्रसन्न करेवो हते।
तेमनी कृपाधी ते मंडली अष्टहम स्वच्छंदपणुं आचरती हती, येताना माता
पिता पजेरे कुटुम्बी लोकानी पणु तेओ, हरकार करता न हता तेओने आ
वड्डेलानी केधपणु लानी भीक हती नहि, वेद्याओना घेर पड्या रहेवुं इत्त
ओअ ओमनुं ओअ मात्र काम हतुं, अनेक प्रकारना अविनयपूणुं आचरवो करवां
ओअ तेओना अवतनुं मुण्य काम हतुं, धननी तेओनी पासे जोट हती नहि,
केधपणु नागरिकनी ओटवी पणु ताकात नहोती के तेओ तेमने केधपणु कडे ।
(तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अंडणाए, तण्णं
तीसे ललियाए गोठ्ठीए अन्नया पंच गोष्ठिगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धि
सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिर्णि पच्चणुडभवमाणा विहरन्ति) तेअ अंपा

गणिकामुत्सङ्गे धरति एकः 'पिट्ठओ' पृष्ठतः 'आयवत्तं' आतपयं=छत्रं धरति, एकः 'पुप्फपूरयं' पुष्पपूरकं=पुष्पाणां रचनादिशेषं 'रणइ' रचयति, एकः पादौ-अलक्तकादिना रञ्जयति । एकः 'चामरुखेवं' चामरेण=चामरस्वीजनं करोति । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या देवदत्तां गणिकां तेः पञ्चमिर्गोष्ठक-देवदत्ता नाम की एक गणिका रहती थी । यह चौसठ कलाओं में निष्णात थी । इसके हाथ पैर आदि सब ही अवयव बहुत ही अधिक सुकुमार थे । मयूर अंड नाम के तृतीय ज्ञाताध्ययन में इसका जैसा वर्णन किया गया है-वैसा ही वर्णन इसका यहां जानना चाहिये । एक समय की बात है कि गोष्ठी के ५, पुरुष कि जो समान वयसवाले थे देवदत्ता गणिका के साथ उस सुभूमिभाग उद्यान में आये-और वहां की उद्यान की शोभा का निरीक्षण करते हुए इधर-उधर घूमने लगे-(तत्थ णं एगे गोष्ठिह्मग पुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रणइ, एगे पाण रणइ, एगे चामरुखेवं करेइ, तएणं सा सुमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोष्ठिल्लगपुरिसेहिं सद्धिं उगलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंज-माणी पासइ) वहां एक उस मंडली के पुरुष ने देवदत्ता गणिका को अपनी गोदी में बैठाया, एक दूसरे-मंडली के पुरुष ने उसके पीछे से उसके ऊपर छाता ताना, एक तीसरे पुरुष ने उसके निमित्त पुष्पों की रचना रची, चौथे पुरुष ने उसके दोनों पैरों में माहुर लगाया पांचवें ने

नगरीमां देवदत्ता नामे ये गणिका रहती छती । ते इन्द्र कलाओंमां निपुण छती, तेना हाथ-पग वगेरे अथां अंगो अतीव सुकोमल छतां । कयूरी अंड नामना त्रीण अध्ययनमां देवदत्तानुं जेवुं वर्णन करवामां आवुं छे तेवुं अ वर्णन अही पणु लएही जेवुं लेछथे । ओठ ठिसनी बात छे के गोष्ठी-नगरीना पांथ माणुसे के जेओ सरणी उभरवाजा छता-देवदत्ता गणिकानी साथे ते सुभूमिभाग उद्यानमां गया अने त्यांनी उद्यान शोभानुं निरीक्षण करता आम तेभ इरवा लाग्या । (तत्थणं एगे गोष्ठिह्मगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रणइ, एगे पाण रणइ, एगे चामरुखेवं करेइ तएणं सा सुमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोष्ठिल्लगपुरिसेहिं सद्धिं उगलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ) त्यां ते मंडलीना ओठ माणुसे देवदत्ता गणिकाने पैताना भाजाभां जेसाही थीज माणुसे तेनी उपर छत्री ताएही, त्रीण माणुसे तेना माटे पुष्पोंनी रचना करी, चौथा माणुसे तेना पगमां लाल रंग लगाव्यो, पांथना माणुसे तेना उपर आमर

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટીકા અં ૧૬ સુકુમારિકાચરિતવર્ણનમ્

૧૬૬

પુરુષૈઃ સાર્થમુદારાન્=થેષ્ટાન્ મોગાન્ બુદ્ધાનાં-કુર્વતીં પશ્યતિ, તતસ્ત્વસ્યાઃ સુકુમારિકાયા અવમેતદ્વઃ=વક્ત્રમાણસ્વરૂપઃ સંકલ્પઃ=વિચારઃ સમુદપચત-અહો ! સ્વલુ
ઇયં સ્ત્રી પુ/ન=દૂર્વભવે ' પોરાણાણં ' પુરાણાનામ્-પુરાતનાનાં સંચિનાનાં કર્મણાં
પુણ્યકર્મણાં યાવત્=ફલવૃત્તિવિશેષં પ્રત્યનુભવન્તી વિદ્દરતિ તન્=તસ્માત્ કારણાદ્
યદિ સ્વલુ કોડપ્યસ્ય સુચરિતસ્ય તપોનિયમવ્રત્ત્યવર્ચવાસસ્ય કલ્યાણઃ=ઇષ્ટઃ શુભ-
રૂપઃ, કઠટૃત્તિવિશેષઃ અસ્તિ, ' તો ' તર્હિ સ્વલુ અહમપિ ' આગમિસ્સેણં '
આગમિના મધ્યગ્ધેનેન ઇમાન્ એતદૂવાન્ ઉદારાન્ મોગાન્ યાવદ્ બુદ્ધાનાં ' વિદ્-

ઉસ પર ચમર ઢોરે । હસ તરહ સે ઉસ સુકુમારિકા આર્યા ને ડન
મંડલી કે પાંચ પુરુષોં કે સાથે ઉસ દેવદત્તા ગણિકા કો ઉદાર મનુષ્ય
ભવ સમ્બન્ધી કામ ભોગોં કો ભોગતે હુણ દેખા । (તપ્પણં તીસે હમેયા-
રૂવે સંકલ્પે સમુપ્પજિત્થા-અહો ણં હમા ઇત્થિયા પુરા પોરાણાણં કમ્માણં
જાવ વિહરહ) તો ઉસ સુકુમારિકા આર્યા કો હસ પ્રકાર કા યહ
વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ-અહો ! હસ સ્ત્રી ને પૂર્વભવ મેં જો પુણ્ય કર્મ કમાયે
હેં ઉન્હીં પુરાને પુણ્ય કર્મોં કે યાવત્ ફલવૃત્તિ વિશેષ કો યહ ભોગ રહી
હે । (તં જહ્ણં કેહ્ હમસ્સ સુચરિયસ્સ તવ નિયમવંમચેરવાસસ્સ કલ્લાણે
ફલવિત્તિવિસેસે અત્થિ તો ણં અહમપિ આગમિસ્સેણં મધ્યગ્ધેણં
હમેયાહ્વારં ઉરાલાહ્ જાવ વિહરિજ્જામિ, તિરુદ્ધુ નિયાણં કરેહ, કરિત્તા
આયાવગમૂમિત્થો પચ્ચોરુહ્) હસલિયે યદિ હન પાલિત તપ, નિયમ
એવં વ્રત્ત્યવર્ચ વ્રતોં કા કોઈ શુભરૂપ ફલવૃત્તિ વિશેષ હે તો મેં મી
આગામી અવ મેં હસી તરહ કે ઉદાર મનુષ્ય ભવ સમ્બન્ધી કામ ભોગોં

દેખ્યા. આ રીતે તે સુકુમારિ આર્યાએ મંડળીના પાંચે માણસોની સાથે તે
દેવદત્તા ગણિકાને ઉદાર મનુષ્યલવના કામલોગો લોગવતાં જોયા. (તપ્પણં
તીસે હમેયારૂવે સંકલ્પે સમુપ્પજિત્થા-અહો ણં હમા ઇત્થિયા પુરા પોરાણાણં
કમ્માણં જાવ વિહરહ) ત્યારે તે સુકુમાર આર્યાને આ જાતનો વિચાર ઉ-
ભવ્યો કે આહો ! આ સ્ત્રીએ પૂર્વલવમાં જે પુણ્યકર્મ કર્યો છે તેમને લીધેજ
એટલે કે તેજ પૂર્વલવના પુણ્ય-કર્મોના યાવત્ ફળવિશેષને આ લોગવી રહી
છે. (તં જહ્ણં કેહ્ હમસ્સ સુચરિયસ્સ તવ નિયમવંમચેરવાસસ્સ કલ્લાણે
ફલવિત્તિવિસેસે અત્થિ તો ણં અહમપિ આગમિસ્સેણં મધ્યગ્ધેણં હમેયાહ્વારં ઉરા-
લાહ્ જાવ વિહરિજ્જામિ, તિરુદ્ધુ નિયાણં કરેહ, કરિત્તા આયાવગમૂમિત્થો
પચ્ચોરુહ્) આ બધા મારા વડે આચરવામાં આવેલા તપ, નિયમ અને
બ્રહ્મચર્ય વ્રતોનું શુભ ફળ છે તો હું પણ આવતા લવમાં આ જાતના જ ઉદાર
મનુષ્યભવ સંબંધી કામલોગોને લોગવું. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે નિદાન

२४४

आतापनभूमि

रिज्जामिति कट्टु ' ' विहरामि ' इति कृत्वा ' नियानं ' निदानं करोति, कृत्वा आतापनभूमितः प्रत्यचरोदति-आतापनां परित्यजति ॥ सू० १४॥

मूलम्-तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरवउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतराइं धोवेइ कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव वंभवेरधारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे ! सरीरवाउसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेसि जाव चेएसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तएणं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ, तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारंति, तएणं तीए सूमालियाए समणीहिं निगंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

को भोग् । ऐसा विचार कर उसने निदान बंध किया और करके फिर वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४॥

अ'ध कथो अने करीने ते आतापन भूमिथी आतापना लधने पोताना स्थाने आवी गर्ध ॥ सूत्र १४ ॥

अनगरधर्मोन्मत्तवर्णिनी टीकाअ० १६ सुकुमारिका निष्पणम्

२४६

माणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं
अहं अगारवासमज्झे वसामि तथा णं अहं अप्पवसा, जया
णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तथा णं अहं परवसा, पुट्ठि च
णं ममं सुमाणीओ आढायंतिर इयाणि नो आढंतिर तं सेयं
खल्लु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता
पाडिएकं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्तिक्कट्टु एवं
संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ
पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पाडिएकं उवस्सयं उवसंपज्जि-
त्ताणं विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्ठिया
अनिवारिया सच्छंदमइ अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ
जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारो ओसण्णा
ओसण्णविहारी कुसीलार संसत्तार बहूणि वासाणि सामण्ण-
परियाणं पाउणइ अट्ठमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स
अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे
अणयंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाणं
देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पणत्ता, तत्थ णं सूमालियाए
देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या ‘सरीर

‘तएणं सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर बडसा

‘तएणं सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपधी (सा सूमालिया अज्जा सरीरबडसा जाया यावि

વડસા 'શરીરકુતા શરીરસંસ્કારપરાયણા જાતા ચાપ્પમવ્, અતીશ્ણં ૨ પુનઃ પુનઃ હસ્તો ધોવેહ' ધાતિ=વશાલવતિ, પાશૌ ધાવતિ 'સીસં' શીર્ષ=શિરઃ ધાવતિ, મુહં ધાવતિ, 'ધર્ણતરાઈ' સ્નાન્તરાણિ ધાવતિ 'કક્ષંતરાઈ' કક્ષાન્તરાણિ ધાવતિ, 'ગોઝંતરાઈ' ગુહાન્તરાણિ ગુહ્યપ્રદેશ ધાવતિ, યત્ર ચલુ 'ઠાળં' વા 'સ્થાનમ્-ઉપવેશનાય સ્થાનં' સેઝં વા 'શય્યાં' વા 'તિસીહિયં' વા 'નૈષેધિકીં સ્વાધ્યાયભૂમિં' વા 'ચેણ્' ચેતયતિ-કરોતિ, તત્રાપિ ચ ચલુ પૂર્વગોવોદકેન 'અચ્ચુક્લહતા' અચ્ચુક્લ=અગિષિચ્ચ, તત્રઃ પથ્યાન્ 'ઠાળં' વા 'સ્થાનં' વા શય્યાં વા નૈષેધિકીં વા ચેણ્' ચેતયતિ-કરોતિ ।

જાયા યાવિ હોત્યા-અમિક્કલગં ૨ હત્થે ધોવેહ, પાપ ધોવેહ, સીસં ધોવેહ, મુહં ધોવેહ, ધર્ણતરાઈ ધોવેહ, કક્ષંતરાઈ ધોવેહ, ગોઝંતરાઈ ધોવેહ) વહ સુકુમારિકા આર્યા શરીર સંસ્કાર કરને મેં ખી તત્પર બન गई। વાર ૨ વહ હોથ ધોને લગી, પૈર ધોને લગી, શિર ધોને લગી, મુખ ધોને લગી, સ્નાન્તરોં કો ધોને લગી, કક્ષાઓં કો ધોને લગી ઓર ગુહ્ય પ્રદેશ કો ધોને લગી । (જત્થ ણં ઠાળં વા સેઝં વા તિસીહિયં વા ચેણ્ તત્થ વિય ણં પુવ્વમેવ ઉદ્દણં અચ્ચુક્લહતા તત્થો પચ્છા ઠાળં વા ૩ ચેણ્, તણં તાઓ ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ સૂમાલિયં અઙ્ગં एवं વયાસી) इसी तरह वह जहां अपना बैठने के लिये स्थान बनाती, शय्या-पाथरती, स्वाध्याय स्थान करती, वहां भी वह पहिले से ही उसे जल से सींच देती-तब जाकर वहां वह अपना स्थान, शय्या एवं स्वाध्याय भूमि नियत करती । इस प्रकार की परिस्थिति देख कर गोवा-

હોત્યા-અમિક્કલગં ૨ હત્થે ધોવેહ, પાપ ધોવેહ, સીસં ધોવેહ, મુહં ધોવેહ, ધર્ણતરાઈ ધોવેહ, કક્ષંતરાઈ ધોવેહ ગોઝંતરાઈ ધોવેહ તે સુકુમારિકા આર્યા શરીર-સંસ્કારના કામમાં પરોવાઈ ગઈ. વારંવાર હાથ ધોવા લાગી, પગ ધોવા લાગી, માથું ધોવા લાગી, મુખ ધોવા લાગી, સ્નાનોના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી, બચ્ચોને ધોવા લાગી, અને શુભ સ્થાનોને ધોવા લાગી. (જત્થ ણં ઠાળં વા સેઝં વા તિસીહિયં વા ચેણ્ તત્થ વિય ણં પુવ્વમેવ ઉદ્દણં અચ્ચુક્લહતા તત્થો પચ્છા ઠાળં વા ૩ ચેણ્ તણં તાઓ ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ સૂમાલિયં અઙ્ગં एवं વયાસી) આ પ્રમાણે જ તે જ્યાં પોતાનું બેસવાનું સ્થાન નક્કી કરતી, કે પથરી પાથરતી અથવા તો સ્વાધ્યાય માટે બેસવાનું સ્થાન નક્કી કરતી. ત્યાં પહેલેથી જ તે સ્થાનને પાણી છાંટતી હતી અને ત્યારપછી તે ત્યાં પોતાનું સ્થાન-શય્યા અને સ્વાધ્યાય સ્થાન નક્કી કરતી હતી આ બીજી પરિસ્થિતિ બોધને ગોવાલિકા આર્યાએ તે

जनधारमासुतवर्षिणी टीका अ० १६ सुकुमारिकाचरितनिरूपणम्

२४७

ततः खलु गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः एवं खलु हे देवानुप्रिये ! आर्यै ! वयं श्रमण्यः—तपस्विन्यः निर्ग्रन्थ्यः ब्राह्मभ्यन्तर्ग्रन्थि-
रहितः ईर्ष्यासमिता वाचद् गुप्तब्रह्मचर्यधारिण्यः स्मः, नो खलु कल्पनेऽस्माकं
सरीरवाउसियाए ' शरीरवाकुशिया ' होत्तए ' भवितुम् इति त्वं च खलु हे
आर्ये ! शरीरवाकुशिका जाता, असोद्धणं=पुनः पुनरतिशयेन हस्तौ धावसि
=प्रक्षालयसि, यावत्-स्थानं वा शय्यां वा स्वाध्यायभूमिं वा जलेनाभ्युक्ष्य
' चेएसि ' चेतयसि स्थानादिकं करोषीत्यर्थः । तत्=तस्मात् त्वं खलु हे देवानु-
प्रिये ! तत् स्थानम् ' आलोएहि ' आलोचय, स्वातिचारं प्रकाशयेत्यर्थः । यावत्
' पडिवज्जाहि ' प्रतिपद्यस्व=प्रायश्चित्तं स्वीकुरु ' इत्यर्थः । ततः खलु सा सुकु-
लिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से कहा—(एवं खलु देवानुप्पि-
या ! अज्जे अम्हे समणीओ निर्गन्धीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेर
धारिणिओ, नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए होत्तए, तुमं च णं
अज्जे सरीरवाउसिया, अभिक्खणं २ हत्थे धोवएसि, जाव चेएसि)
हे देवानुप्रिये ! हम आर्याए निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं । ईर्ष्या आदि पांच समि-
तिषोंका पालन करती हैं । नौकोटि ब्रह्मचर्य सहितमहाव्रतको पालन
करती हैं । अतः हम लोगों को अपने शरीर के संस्कार करने में परा-
यण बनना कल्पित नहीं हैं । हे आर्ये ! तुम शरीर संस्कार करने में
परायण बन चुकी हो । बार २ तुम हाथों को धोनी हो यावत् स्थान को
शय्या को, और स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानीसे धोकर नियत
करती हो (तं तुमं णं देवानुप्पिए ! तस्स ठाणस्म आलोएहि, जाव
पडिवज्जाहि) इस लिये हे देवानुप्रिये ! तुम उस स्थान की आलोचना
करो—अपने अतिचारों को प्रकाशित करो यावत् उनका प्रायश्चित्त लो ।

सुकुमारिका आर्याने आ प्रमाणं कथं के—(एवं खलु देवानुप्पिया ! अज्जे अम्हे
समणीओ निर्गन्धीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणिओ नो खलु कप्पइ
अम्हे सरीरवाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे सरीरवाउसिया, अभिक्खणं
२ हत्थे धोवएसि जाव चेएसि) हे देवानुप्रिये ! हम आर्याओ निर्ग्रन्थ श्रम-
णीओ छीओ, ईर्ष्या वगेरे पांच समितिओनुं हमें पालन करीओ छीओ, नव-
कोटिओ ब्रह्मचर्य महाव्रत धारण करीओ छीओ, ओधी पोताना शरीरना संस्कार
करेओ ओ आपणुं भाटे योग्य गणाय नहि. हे आर्ये ! तमे शरीरना संस्का-
रमां पराधणुं जनी चुकी छी. तमे पारवार हाथेने धुओ छी यावत् स्थानने,
शय्याने अने स्वाध्यायभूमिने पडेवेधी ७ पाणुंधी धोछीने नछी करी ले छी.
(तं तुमं णं देवानुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि) ओधी

मारिका आर्या गोपालिकानामार्याणामेतमर्थ 'नो आढाह' नाद्रियते, नो परिजानीते तद्वचने ध्यानं न ददाति । अनाद्रियमाणा=अनादरं कुर्वती, अपरिजानाना=ध्यानप्रददाना विहरति=आस्ते । ततः खलु ताः गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामभीक्ष्णं=पुनः पुनरभिहीलन्ति खंसन्ति निन्दन्ति यावत् परिभवन्ति । अभीक्ष्णं=पुनः पुनः, 'एयमट्ठं' एतमर्थम् उक्तमर्थं शरीरशोभाकरण-जलप्रक्षेपादिकं निवारयन्ति=प्रतिषेधयन्ति । ततः खलु 'तीए' तस्याः सुकुमारिकायाः श्रमणीभिर्निग्रन्थीभिः हील्यमानाया यावद् वार्यमाणाया अवसेतूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिको यावन्मनोगतः संकल्पो=विचारः समुत्पद्यत=पादु-

(तएणं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाह, नो परिजाणाह, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) सुकुमारिका आर्या ने गोपालिका आर्या के इस कथन रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से नहीं देखा उनके वचनों पर उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया । इस तरह उनके वचनों का अनादर और उन पर ध्यान नहीं देती हुई वह रहने लगी (तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारंति, तएणं तीसे सूमालियाए समणीहिं निगंयीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारुवे अज्जन्धिए जाव समुत्पज्जित्था) इस के पश्चात् उन गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या की धार २ अवहेलना की, उस पर वे गुस्सा भी हुई उसकी निंदा भी की यावत् उसका निरस्कार भी किया । बार २ उसे शरीर की शोभा करने से और जल का सिंचन करने से रोका । तब उसे इस प्रकार का

डे देवानुप्रिये ! तमे ते स्थाननी आलोचयता करे=पेताना अतिचारने प्रकाशित करे यावत् तेना माटे प्रायश्चित्त करे । (तएणं सा सुमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाह, नो परिजाणाह, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) सुकुमारिका आर्याओ गोपालिका आर्याना आ कथनरूप अर्थने आदरनी दृष्टिओ जेयो नडि, तेमना वचनेओ उपर तेणु कंठं पणु विचार कयों नडि । आ रीते तेमना वचनेओ अनादर अने ते प्रत्ये गेहरकार थयने ते पेतानेओ वपत पसार करवा लागी । (तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारंति, तएणं तीसे सूमालियाए समणीहिं निगंयीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारुवे अज्जन्धिए जाव समुत्पज्जित्था) त्थारपछी ते गोपालिका आर्याओ ते सुकुमारिका आर्यानी कएवार अवहेलना करी, तेनी तरइ तेमणु गुस्सेओ पणु भटाव्येओ, तेनी निंदा करी यावत् तेना निरस्कार पणु कयों । तेने कएवार शरीरने शोभाववा पदद तेमक जणनु सिंघन करवा पदद

अमंगारवासमृतवर्षिणी टीका अ० १६ सुकुमारिकाचरितवर्णनम्

२४९

भूतः, यदा=यावत् कालं खलु अहमंगारवासमध्ये वसामि, तदा=तावत् कालं खल्वहं 'अप्पवसा' आत्मवशा स्वाधीना आसम्, यदा खल्वहं मुण्डा भूत्वा प्रव्रजिता तदा खल्वहं परवशा पराधीना जाता । 'पुर्व्वि' पुरा पूर्व्वस्मिन् काले च खलु 'ममं' मां श्रमण्यः 'आदायंति' २ आद्रियन्ते, तथा परिजानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, 'तं' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्भूत प्रभातयां रजन्यां यावज्ज्वलति सूर्ये अभ्युद्गते गोपालिकानामार्याणामन्तिकत्वात् प्रतिनिष्क्रम्य 'पाडिक्कं' पार्थक्यं-पार्थक्याश्रयं पृथग्भूतम् अन्यमित्यर्थः 'उव-

यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ--(जयाणं अम्हं आंगारवासमज्जे वसामि तयाणं अहं अप्पवसा जयाणं अहं मुंडे भविस्ता पव्वइया तयाणं अहं परवसा, पुर्व्वि च णं ममं समणीओ आदायंति, इयाणि णो आदंति २ तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) जब तक मैं घर में रही तब तक स्वाधीन रही-और अब जब से मुंडित होकर प्रव्रजित हुई हूँ तब से पराधीन बन रही हूँ । पहिले ये श्रमणियां मेरा आदर करती थीं-मेरी बात मानती थीं परन्तु अबतो कोई भी न मेरा आदर करती है-और न मेरी बात ही मानती है । इस लिये मुझे अब यही उचित होगा कि मैं दूसरे दिन जब प्रातः काल होने पर सूर्य प्रकाश से चमकने लगे-तब मैं गोपालिकों आर्याके पास से निकल कर किसी दूसरे भिन्न उपा-

देश ढोड करी. तयारे तेने आ जातने आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उद्भव्यो के (जयाणं अम्हं आंगारवासमज्जे वसामि तयाणं अहं अप्पवसा जयाणं अहं मुंडे भविस्ता पव्वइया तयाणं अहं परवसा पुर्व्वि च णं ममं समणीओ आदायंति, इयाणि णो आदंति २ तं सेयं खलु मम पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) क्यां सुधी हुं घरमां रही त्यां सुधी स्वाधीन रही पणु न्यारथी मुंडित यधने प्रव्रजित यधं छुं तयारथी पराधीन यधं गर्भं छुं. पडेलां आ श्रमणीओ भारे आदर करती छती, भारी बात मानती छती पणु अत्यारे तो केधं पणु भारे आदर नथी करतुं अने भारी बात पणु मानतुं नथी. तेथी भारे भाटे ओ न उचित छे के भीरे दिवसे सवारे सूर्य उदय पावतां न हुं गोपालिका आर्यांनी पासेथी नीकणीने केधं भीन उपाश्रये नती रहुं. आ जातने तेणु विचार कर्यो (संपेहिता) विचार करीने ते (कल्लपा०

स्सयं ' उपाश्रयम् उपसंपद्य विहर्तुमिति कृत्वा एवं संप्रेक्ष्य कल्पे प्रादुर्भूतप्रमा-
तायां रजन्यां यावज्जलति सूर्ये उदिते ति गोपालिकानामार्याणामन्तिकान् प्रति-
निष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पण्डिक्कं ' प्रार्थयन्-पृथग्भूतमन्यमुपाश्रयमुपसंपद्य
खलु विहरति-आस्ते स्म ।

ततः खलु ता सुकुमारिका आर्या ' अणोहट्टिया ' अनपपघट्टिका अपवारक-
रहिता-उच्छ्वस्वला अनिययतीति यावत् ' अनिवारिया ' अनिवार्या दुर्निवारा
' सच्छंदमई ' स्वच्छन्दमतिः-चारित्रधर्मानुरोधरहितभावा, अभीक्ष्णं-पुनः पुन-
ईस्तौ धावति-प्रक्षालयति यावत्-स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा जलेनाभ्युक्ष्य
चेतयति-स्थानादिकं करोतीत्यर्थः । तत्रापि च खलु पार्श्वस्था, पार्श्वस्थविहारिणी,

अथ मे चली जाऊँ इस प्रकार का उसने विचार किया (संपेहिस्ता)
ऐसा विचार करके (कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं) दूसरे ही दिन
प्रातः काल जब सूर्योदय हो गया-तब वह गोपालिका आर्या के (अंति-
याओ) पास से (पडिनिक्खमिस्ता) निकल कर (पण्डिक्कं) भिक्ष
दूसरे (उवस्सयं) उपाश्रय को (उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) प्राप्तकर
वहां रहने लगी-अर्थात् दूसरे उपाश्रय में चली आई । (तएणं सा
सुमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं
अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेणइ) वहां वह सुकुमारिका आर्या बिना
किसी रोक टोक के स्वच्छंद बनकर रहने लग गई । वहां उसे कोई
रोकने वाला रहा नहीं-सो जो मन में आया वह करने लग गई-इस
तरह वह चारित्र धर्म के भाव से रहित बन गई । बार २ अपने हाथों
को धोनी यावत् स्थान, शय्या, और स्वाध्याय की भूमि को धोकर वहां

गोवालियाणं अज्जाणं) पीछे दिवसे सवरे न्यारे सूर्य उदय पाये। तब ते
गोपालिका आर्यानी (अंतियाओ) पास थी (पडिनिक्खमिस्ता) निकलीने (पण्डिक्कं)
पीछा (उवस्सयं) उपाश्रयने (उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) भेजनीने त्यां रडेवा
लागी, ओटवे के पीछा उपाश्रयणां जाती रही. (त एणं सा सुमालिया अज्जा
अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेणइ) त्यां
ते सुकुमारिका आर्या डेअणु अतनी रोक टोक वगर स्वच्छंतापूर्वक रडेवा
लागी. त्यां तेने डेअ रोक-टोक करनार हुतुं नडि ओटवे के प्रभाणु तेनी
छाछा धती ते प्रभाणु ज ते आचरती छती. आ रीते ते चारित्र धर्माना
भावथी रहित अनी गध. बार-बार ते पोताना हाथोने धेती छती यावत् स्थान,
पथारी अने स्वाध्यायना स्थानने धोछने त्यां पोतानुं स्थान नक्की करती छती.

अवसन्ना, अवसन्नविहारिणी, कुशीला कुशीलविहारिणी, संसक्ता, संसक्तविहारिणी, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्धमासिकया संलेखनया तस्य स्थानस्याऽनालोचना अप्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा, ईशाने कल्पेऽन्यतमस्मिन् विमाने पायुर्थादि वाचनासमये आचार्याणां विमानसंख्याया विस्मरणेन निश्चयाभावादन्यतमस्मिन्नित्युक्तम्, देवगणिकतया उत्पन्ना । तत्रैकैकासां देवीनां नवपल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञता ॥ सू० १५ ॥

अपना स्थान नियत करनी । इस प्रकार (तत्थ वि णं पासत्था पासत्थ विहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला संसत्ता संसत्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहां उस सुकुमारिका ने पार्श्वस्था पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी, कुशीला, कुशील विहारिणी, संसक्ता, संसक्त विहारिणी बनकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया (पाउणिता अर्धमासियाए) पालन करके वह अर्धमास की संलेखना धारण कर (कालमोत) अपनी मृत्यु के अवसर (कालं किच्चा) पर मरी-सो भरकर (अणालोइय अपडिक्कंता) अपने पापों की अनालोचना करने से वह प्रतिक्रान्त नहीं बन सकने के कारण (ईसाणे कप्पे) ईशानकल्प में (अण्णयरंसि विमाणंसि) किसी एक विमान में (देवगणियत्ताए उववण्णा) देवगणिका के रूप में उत्पन्न हुई । (तत्थेगइयाणं देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिइ पण्णत्ता) वहां कितनिक देवियों

आ रीते (तत्थ वि णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीलासंसत्ता २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) त्यां ते सुकुमारिकाये पार्श्वस्था, पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी, कुशीला, कुशील विहारिणी, संसक्ता, संसक्त विहारिणी यद्दने धण्णं वषो सुधी श्रामण्य पर्यायं पालनं कथुं. (पाउणिता अर्धमासियाए) पालन करीने ते अर्धमासिकनी संलेखना धारण करीने (कालमासे) पोताना मृत्यु क्षणे (कालकिच्चा) ते भरणु पाभी. अने भरणु पाभीने (अणालोइय अपडिक्कंता) पोताना पापोनी आलोचना न करवाथी प्रतिक्रान्त न जनी शकवाना कारणे ते (ईसाणे कप्पे) ईशान कल्पमां (अण्णयरंसि विमाणंसि) कैथि ओक विमानमां (देवगणियत्ताए उववण्णा) देवगणिकाना रूपमां जन्म पाभी. (तत्थे गइयाणं देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता) त्यां डेटलीक देवीओनी स्थिति नव पल्योपमनी छडे-

મૂળ—તેણં કાલેણં તેણં સમણં ઇહેવ જંબુદીવે ભારહે વાસે પંચાલેસુ જળવણસુ કંપિછપુરે નામં નયરે હોત્થા, વન્નઓ તત્થ ણં દુવણ નામં રાયા હોત્થા, વન્નઓ, તસ્સ ણં ચુલણીદેવી ધટ્ટજ્જુણે કુમારે જુવરાયા, તણં સા સૂમાલિયાદેવી તાઓ દેવલોયાઓ આઠક્ષણં જાવ ચઇત્તા ઇહેવ જંબુદીવે દીવે ભારહે વાસે પંચાલેસુ જળવણસુ કંપિછપુરે નયરે દુપયસ્સ રણ્ણો ચુલ-
 ણીણ દેવીણ કુચ્છિસિ દારિયત્તાણ પચ્ચાયાયા, તણં સા ચુલ-
 ણીદેવી નવણ્હં માસાણં જાવ દારિયં પયાયા, તણં સા તીસે દારિયાણ નિવ્વત્તવારસાહિયાણ ઇમં ણ્યારૂવં ગોણં ગુણાણિપ્પક્કણં નામધેજ્જં જમ્હાણં ણસ દારિયા દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા ચુલણીણ દેવીણ અત્તયા તં હોઠ ણં અમ્હં ઇમીસે દારિયાણ નામધિજ્જે દોવર્ઘે, તણં તીસે અમ્માપિયરો ઇમં ણ્યારૂવં ગુણં ગુણાનિ-
 પ્પક્કણં નામધેજ્જં કરિતિ દોવર્ઘે, તણં સા દોવર્ઘે દારિયા પંચ ધાઇપરિગ્ગહિયા જાવ ગિરિકંદરમહ્છીણ ઇવ ચંપગલયા નિવાય-

કી સ્થિતિ નૌ પલ્લોપમ કી કહી ગઈ है—सो इस सुकुमारिकादेवी की वहां नौ पल्लोपम की स्थिति हुई । यहां जो ” किसी एक विमान में ” ऐसा अनिश्चयात्मक पद आया है उसका तात्पर्य यह है कि माधुर्यादि-
 वाचना के समय में आचार्यों को विमान संख्या का विस्मरण हो जाने से उसका निश्चय नहीं रहा । अतः ऐसा कहा गया है ॥ सू० १५ ॥

વામાં આવી છે તો તે સુકુમારિકા દેવીની પણ ત્યાં નવપલ્લોપમની સ્થિતિ થઈ. અહીં જે “કોઈ એક વિમાનમાં” આ જાતનું અનિશ્ચયાત્મક પદ આવ્યું છે તેનું કા.ણુ આ પ્રમાણે છે કે માધુર્યાદિ વાચનાના સમયે આચાર્યોને વિમાન સંખ્યાનું વિસ્મરણ થઈ જવાથી તે વિષે નિશ્ચય રહ્યો નહિ. એથી આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

निष्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ । तएणं सा दोवई रायवरकन्ना
उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्टसरीरा जाया जावि होत्था, तएणं
तं दोवई रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंतेउरियाओ पहायं
जाव विभूसियं करेति करित्ता दुवयस्स रण्णो पाएवंदिउं पेसंति
तएणं सा दोवई राय० जेणेव राया तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ, तएणं से दुवए
राया दोवई दारियं अंके निवेसेइ निवेसित्ता दोवइए रायवर-
कन्नाए रुवेण य जोवणेण य लावणेण य जायविम्हए दोवई
रायवरकन्नं एवं वयासी-जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स
वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ णं तुमं सुहिया वा
दुक्खिया वा भविज्जासि, तएणं मम जावजीवाए हिययडाहे
भविस्सइ, तं णं अहं तव पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं विरयामि,
अज्जयाए णं तुमं दिण्णसयंवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा
जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्तिकहु ताहिं
इत्ताहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १६ ॥

टीका—‘तेणं कालेणं’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरं=काम्पिल्यपुरनामकं नगर-

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस
समय में (इहैव जंबूद्वीपे भारते वासे पञ्चालेषु जनपदेषु कम्पिलपुरे नामं
नगरे होत्था) इसी जंबूद्वीप में भारत वर्ष में पांचाल जनपद में

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि—

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये (इहैव जंबूद्वीपे
भारतेवासे पञ्चालेषु जनपदेषु कम्पिलपुरे नामं नगरे होत्था) आ जंबूद्वीपमां
भारत वर्षमां पांचाल जनपदमां कम्पिलपुर नामे नगर छत्तुं, (वज्रओ) आ
नगरत्तुं वर्धुन औपपात्तिक सूत्रमां करवामां आओ छे त्यांथी पाठकोओ आणी

मासीत्, वर्णकः=अस्य नगरस्य वर्णनमौपपातिकसूत्राद् बोध्यम् । तत्र खलु द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुलनी नाम्नी देवी भार्याऽभवत्, तस्य पुत्रः 'धट्टज्जुणे' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत् ।

ततः खलु सा सुकुमारिका देवी तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण यावत्-च्युत्या इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे पंचालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः=चुलन्या देव्याः कुक्षौ दारिकतया=पुत्रीत्वेन 'पञ्चायाया' प्रत्यायाता=समुत्पन्ना । ततः खलु सा चुलनीदेवी नवानां मांसानां बहुभक्षिपूर्णानां यावद् दारिकां पुर्वीं प्रजाता=प्रजनितवती । ततः खलु सा तस्या दारिकाया

काम्पिल्यपुर नाम का नगर था । (वन्नओ) इस नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में किया गया है सो वहाँ से जान लेना चाहिये । (तत्थ णं दुवणं नामं राया होत्था वन्नओ तस्स णं चुलणीदेवी, धट्टज्जुणे कुमारे जुवराया, तएणं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्वीपे दीवे, भारहे वासे पंचालेसु जनवणसु कपिल्लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पञ्चायाया) वहाँके राजाका नाम द्रुपद था । राजाका वर्णन भी पहिले जैसा ही जानना चाहिये । इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था । कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था—यह युवराज था । वह सुकुमारिका आर्या का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के कारण चक्कर इन्ही जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पांचाल जनपद में काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में पुत्री रूपसे अवतरित हुआ । (तएणं सा चुलणीदेवी नवणं मासाणं जाव

लेवुं नेधेये. (तत्थ णं दुवणं नामं राया होत्था, वन्नओ, तस्सणं चुलणी देवी धट्टज्जुणे कुमारे, जुवराया, तएणं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्वीपे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जनवणसु कपिल्लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पञ्चायाया) त्वाना राजानुं नाम द्रुपद इतुं राजानुं पञ्च पञ्च औपपातिक सूत्रमां पञ्चित कोषिक राजान्नी जेमज्ज जाणी लेवुं नेधेये. तेनी राणीनुं नाम चुलनी देवी इतुं. तेना पुत्रनुं नाम धृष्टद्युम्न इतुं. धृष्टद्युम्न युवराज इतो, सुकुमारिका आर्याना एव ते जीजा देवलोकाथी आयु पगेरे क्षय थवा भट्टस यत्रीने आज्ज जम्बूद्वीप नामना द्वीपमां, भरत क्षेत्रमां, पांचाल्य जनपदमां, काम्पिल्यपुर नगरमां द्रुपद राजान्नी चुलनी देवीना उदरमां पुत्री रूपे अवतरित थयो. (त एणं सा चुलणी

અનગારચર્માશ્રુતચર્ચિણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતવર્ણનમ્

૨૫૫

‘નિવ્વત્તવારસાહિયા’ નિવ્વત્તદ્વાદશાહિકાયાં=દ્વાદશેઽહનિ સંપાપ્તે દ્વમેતદ્ભૂપં નામ કૃતવતી યસ્માત્ સ્વલુ ણ્ણ દારિકા દ્રુપદસ્ય રાજો ‘ધૂયા’ દુહિતા-પુત્રી ચુલન્યા દેવ્યા ‘અતિયા’ આત્મજા=અહ્નજાતા, તસ્માદ્ ભવતુ સ્વલ્વસ્માકમસ્યા દારિકાયા નામધેયં ‘દ્રૌપદી’ ઇતિ । તતઃ સ્વલુ તસ્યા અમ્વાપિતરૌ દ્વમેતદ્ભૂપં ગોણં=ગુણમાત્ ગુણનિષ્પન્નં=ગુણસંપન્નં, નામધેયં કુરુતઃ । તતઃ સા દ્રૌપદી દારિકા પચ્ચધાત્રીભિર્યાવદ્ મિરિકંદરમાલીને ચંપકલતા નિર્ધાતિનિર્વાયાતે સુલ્લ-સુલ્લેન પરિવર્ધતે સ્મ ।

દારિયં પચાયા તણં સા તીસે દારિયા’ નિવ્વત્તવારસાહિયા’ હમં ણ્યા સ્વલ્લં ગોણં ગુણનિષ્કલ્લં નામધેજ્જં જમ્માણં એસ દારિયા દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા ચુલની’ દેવી’ અત્તયા તં હોઁણં-અમ્હં હમીસે દારિયા’ નામધિજ્જે દોવ્હં) ગર્ભ કે જય નૌ માસ અચ્છી તરહ સમાસ હો ચુકે તથ ચુલની-દેવી ને એક પુત્રી કો જન્મ દિયા । પુત્રી કો ઉત્પન્ન હુ’ ૧૨ વાં દિન લગા-તથ ચુલની માતાને ડસકો હસ રુપ સે ગુણનિષ્પન્ન નામરક્ખા કયોં કિ યહ દ્રુપદરાજા કી પુત્રી હૈ ઓર સુહ્ર ચુલની કે ડદર સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ-હસલિયે હસ હમારી કન્યા કો નામ દ્રુપદી રહો હસ તરહ કે વિચાર સે (તીસે અમ્મા પિયરો) માતા પિતા ને ડસકો (હમ ણ્યાસ્વલ્લં ગુણં ગુણનિષ્કલ્લં નામધેજ્જં કરિતિ દોવ્હં) હસ તરહ કો ગુણનિષ્પન્ન નામ દ્રૌપદી રક્ષ દિયા । (તણં) હસકે વાદ-(સા દોવ્હં દારિયા પંચધા’ પરિગ્ગહિયા જાવ મિરિકંદરમલ્લી’ણ’હવ ચંપકલયા નિવાયનિવાયાયંસિ સુહં સુહેણં પરિવહ્દે) વહ દ્રૌપદી દારિકા પાંચ ધાયમાનાઓં સે ચુક્ત

દેવી નવળ્હં માહ્ણાણં જાવ દારિયં પચાયા તણં સા તીસે દારિયા’ નિવ્વત્તવાર-સાહિયા’ હમં ણ્યાસ્વલ્લં ગોણં ગુણનિષ્કલ્લં નામધેજ્જં જમ્માણં એસ દારિયા દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા ચુલની’ દેવી’ અત્તયા તં હોઁણં-અમ્હં હમીસે દારિયા’ નામધિજ્જે દોવ્હં) ગર્ભના નવમાસ બ્યારે સંપૂર્ણ’પણે સમાપ્ત થયા ત્યારે ચુલની દેવીએ એક પુત્રીને જન્મ આપ્યો. પુત્રીના જન્મ પછી બ્યારે અગિયાર દિવસ પૂરા થયા અને બારમે દિવસ શરૂ થયો ત્યારે ચુલની માતાએ વિચાર કયો કે દ્રુપદ રાજાની આ કન્યાપુત્રી છે અને મારા ગર્ભથી જન્મ પામી છે, આ પ્રમાણે આનું નામ દ્રૌપદી રાખીએ તો સાઈ આમ વિચારીને (તીસે અમ્માપિયરો) માતાપિતાએ (હમં ણ્યાસ્વલ્લં ગુણં ગુણનિષ્કલ્લં નામ ધેજ્જં કરિતિ દોવ્હં) આ રીતે તે કન્યાનું શુભ નિષ્પન્ન નામ દ્રૌપદી પાડયું. (તણં) ત્યારપછી (સા દોવ્હં દારિયા પંચધા’પરિગ્ગહિયા જાવ મિરિકંદર મલ્લી’ણ’હવ ચંપકલયા નિવાયનિવાયાયંસિ સુહં સુહેણં પરિવહ્દે) દ્રૌપદી

તતઃ સ્વલુ સા દ્રૌપદી રાજવરકન્યા ડમ્બુક્કલાભાવા યાવત્ ઉત્કુષ્ટા, ઉત્કુષ્ટ-શરીરા જાતા ચાપ્યમ્ભવત્ । તતઃ સ્વલુ તાં દ્રૌપદીં રાજવરકન્યામન્યદા કદાચિદ્ 'અંતે ડરિયાઓ' આન્તઃ પુરિક્કયઃ=અન્તઃ પુરવર્તિન્યઃ સ્ત્રિયઃ સ્નાતાં યાવત્-વસ્ત્રા-કંકારવિભૂષિતાં કુર્વન્તિ કૃત્વા દ્રુપદસ્ય રાજઃ પાદીં વન્દિતું 'પેસંતિ' પ્રેપયન્તિ, તતઃ સ્વલુ સા દ્રૌપદી રાજવરકન્યા યત્રૈવ દ્રુપદો રાજા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય દ્રુપદસ્ય રાજઃ પાદગ્રહણં કરોતિ, તતઃ સ્વલુ સ દ્રુપદો રાજા દ્રૌપદીં દારિકામકુલે

હોકર હસ તરહ પલને પુષને લગી કિ જિસ તરહ ગિરિ કી કંદરા કે પ્રદેશમેં ઉત્પન્ન હુઈ ચંપકલતા વાત રહિત નિરુપદ્રવ સ્થાનમેં આનન્દ કે સાથ પલતી પુષતી હૈ । (તપ્પણં સા દોવઈ રાયવરકલા ડમ્બુક્કલાભાવા, જાવ ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા યાવિ હોથા, તપ્પણં તે દોવઈ રાયવરકન્નં અણ્ણયા કયાઈ અંતે ડરિયાઓ પ્હાયં જાવ વિભૂસિયં કરેંતિ, કરિતા દુવયસસ રણ્ણો પાપ વંદિતું પેસંતિ) વહ રાજવર કન્યા દ્રૌપદી લાલભાવ રહિત હોકર જય યૌવન અવસ્થા વાલી હો ચુકી તથ હસ કે શરીર મેં લાવણ્ય કી ચમક સે વિષય સૌન્દર્ય આ ગયા-અતઃ ડસ સમય યહ વિશેષરૂપ સે ઉત્કુષ્ટ શરીર વાલી થનગઈ । કિસી ઇક દિન કી રાત્રિ હૈ કિ અંતઃ પુર કી સ્ત્રિયોં ને દ્રૌપદી કો સ્નાન કરાકર યાવત્ વસ્ત્રાલંકાર સે વિભૂષિત કિયા-ઔર વિભૂષિત કર કે દ્રુપદ રાજા કી ચરણ વંદના કરને કે લિયે ભેજ દિયા (તપ્પણં સા દોવઈ રાયઁ જેણેવ દુવપ રાયા તેણેવ ડવાગચ્છઈ, ડવાગચ્છિતા, દુવયસસ રણ્ણો પાયગગ્રહણં કરેઈ,

દારિકા પાંચ પાયમાતાઓથી યુક્ત થઈને આ પ્રમાણે લાક્ષિત પાક્ષિત થતા માંડી બેઠકે પર્વતની કંદરાના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થયેલી ચંપકલતા નિર્વાત, નિરુપદ્રવ સ્થાનમાં સુખેથી બેઠી થતી ન હોય ! (તપ્પણં સા દોવઈ રાયવરકલા ડમ્બુક્કલાભાવા જાવ ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા યાવિ હોથા, તપ્પણં તે દોવઈ રાયવરકન્નં અણ્ણયા કયાઈ અંતે ડરિયાઓ પ્હાયં જાવ વિભૂસિયં કરેંતિ કરિતા દુવયસસ રણ્ણો પાપ વંદિતું પેસંતિ) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી અચપણુ વટાવીને બ્યારે યુવાવસ્થા સંપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમાં લાવણ્યના ચમકથી સવિશેષ સૌન્દર્ય ઢીપી ઉઠ્યું. તેથી તે વળતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કુષ્ટ શરીરવાળી થઈ ગઈ હતી. કોઈ એક દિવસની વાત છે કે રણુવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપદીને સ્નાન કરાવ્યું યાવત્ વસ્ત્રાલંકારથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને દ્રુપદ રાજાની ચરણ વંદણા કરવા માટે મોકલી (તપ્પણં સા દોવઈ રાયઁ જેણેવ દુવપ રાયા તેણેવ ડવાગચ્છઈ, ડવાગચ્છિતા, દુવયસસ રણ્ણો પાયગગ્રહણં કરેઈ, તપ્પણં

मनहारघमांमृतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितवर्णनम्

२५७

निवेशयन्ति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयमेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीवं 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति ।

तएणं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्येण य जायविम्हए दोवइं, रायवरकन्नं एवं वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहां दुपद राजा था वहां आई । वहां आकर उसने वंदना करने के लिये दुपद राजा के ज्योंही दोनों पैरों को पकड़ा कि इतने में उस दुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया । द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स णं अहं पुत्तो ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो । तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा । (तं णं अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्येण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी ज्यां राज्ञ दुपद छता त्यां गर्ध, त्यां जधने तेहे दुपद राजाने वंदन करवा भाटे जाने पजे पकड्या तयारे तेओओ द्रौपदी दारिकाने पोताना ओणामां भेसाडी द्रौपदी ज्यारे ओणामां भेसी गर्ध तयारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी सविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थधने तेहे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाए कहुं— (जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सवमेव दलइस्सामि, तत्थणं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हुं तने जे राजाने के युवराजने लायाना रूपमां आभीश त्यां तु सुणी पण थर्ध शके तेम छे अने दुःखी पण. तेथी अने

=तत्तस्मात् खल्वहं हे पुत्रि ! तव ' अञ्जयाए ' अद्यतया-एषु दिवसेषु अल्पेषु दिनेषु इत्यर्थः स्वयंवरं वरयामि-कारयामि अद्यतया स्वल्पदिवसेष्वेव खलु त्वं ' दिणसयंवरा ' दत्तस्वयंवरा=त्रियते इति वरः, कन्याया स्वयं वृतः स्वयंवरः, स दत्तः कन्यायाः पित्रादिना यस्यै । दत्तस्वयंवरा भविष्यतीति भावः । ' दत्तस्वयं-वरा ' इतिपदं व्याचक्षाणः कथयति- ' जण्णं तुमं ' इत्यादि । यं खलु त्वं स्वयमेव रा-जानं वा युवराजं वा वरिष्यसि, स खलु तव भर्ता भविष्यति ' इति कृत्वा=इत्यु-क्त्वा ताभिरिष्टाभिर्यावद्=वाग्भिराश्वासयति, आश्वास्य प्रतिविमर्जयति ॥ सू० १६ ।

मूलम्-तएणं से दुवए राया दूयं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! वारवइं नयारिं तरथ णं तुमं कणहं वासुदेवं समुद्विजयपामोक्खे दस दसारे बलदेव-पामुक्खे पंचमहावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुणपामुक्खाओ अद्घुट्ठाओ कुमारकोडीओ संवपामोक्खाओ

अञ्जयाए सयंवरं विरयामि, अञ्जयाए णं तुमं दिणसयंवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्ति कट्ठु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, असासित्ता पडिविसज्जेइ) इस लिये हे पुत्रि ! मैं थोड़े ही दिनों में तुम्हारा स्वयंवर करवाने वाला हूँ । तुम इन दिनों में दत्तस्वयंवरा हो जाओगी, सो तुम जिस राजाको या युवराज को अपनी इच्छानुसार वरोगी वही तेरा भर्ता बन जायगा । इस तरह कहकर राजा ने अपनी पुत्री को इष्ट आदि विशेषणों वाली वाणी से आश्वासित किया और फिर आश्वासित करके उसे वहाँ से भेज दिया ॥ सू० १६ ॥

एवमप्येतद् दुःखं तथा कश्चे. (तं णं अहं पुत्ता ! अञ्जयाए सयंवरं विर-यामि, अञ्जयाए णं तुमं दिणसयंवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ, त्ति कट्ठु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, असासित्ता पडिविसज्जेइ) हे पुत्रि ! थोड़ा दिवसोभां न हूँ तुम्हारा माते स्वयंवर करवाने छुं. त्पारे तु स्वयंवरमां दत्त स्वयंवर. यथं ज्ञेशे. जे राजा के युवराजने तु तारी पसंदगी आपशे तेज तारे पति थेशे. आ प्रभावे कहीने राजाके पोतानी पुत्रीने छष्ट वगेरे विशेषणोथी युक्ता वयने। वडे आश्वासनथी आश्वासित करीने तेने त्यांथी विहाय करी. ॥ सूत्र १६ ॥

अनंगारघमांमृतवर्णिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितवर्णनम्

२५६

सट्टि दुवंतसाहस्सीओ वीरसेणपामोक्खाओ इक्कीसं वीरपुरिस-
 साहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं वलवगसाहस्सीओ
 अन्ने य वहवे राईसरतलवरमाडुंबियकोडुंबियइब्भसिट्ठिसेणा-
 वइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं
 अंजलिं मत्थए कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेहि वद्धावित्ता एवं
 वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स
 रण्णो धूयाए खुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्स
 भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ तं णं
 तुब्भं देवाणुप्पिया ! दुवयं गदं अणुगिण्हेमाणा अकालपरि-
 हीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह, तएणं से दूए करयल
 जाव कट्ठु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठु पडिसुणेति पडिसुणित्ता
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे
 सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामंय भो देवाणुप्पिया !
 चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति, उवट्ठवित्ता
 तएणं से दूए ण्हाए जाव अलंकारं सरीरे चाउग्घंटं आसरहं
 दुरुहइ दुरुहित्ता वट्ठहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउह पह-
 रणेहिं सद्धिं संयरिबुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ
 पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवाग-
 च्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव बारवइ नयरी तेणेव
 उवागच्छइ उवागच्छित्ता बारवइं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप-
 विसइ अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया

२६०

ब्राताधर्मकथाकृतौ

उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउघंटं आस-
रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गु-
रापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता कणहे वासुदेवे समुद्विजयपामुक्खे
य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव
समोसरह । तएणं से कणहे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए
एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियएतं दूयं सको इ सम्मा-
णेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—‘ तएणं से ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं स दुपदो राजा दूत शब्द-
यति, शब्दयित्वा एवमवादीत—गच्छ खलु त्वं हे देवानुपिया ! द्वारवती=द्वारकां
नगरीम्, तत्र खलु त्वं कृष्णं वासुदेवं, समुद्विजयप्रमुखान् दश दशार्हान्, बलदेव-
प्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रद्युम्नप्रमुखाः
अर्धचतुर्थीः कुमारकोटीः=प्रद्युम्नप्रमुखान् सार्धत्रिकोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः
षष्टिदुर्दान्तसाहस्रीः=साम्बप्रमुखान् षष्टिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एक-
विंशतिवीरपुरुषसाहस्रीः=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन-

‘ तएणं से दुवए ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं से दुवए राया दूयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी
गच्छ णं तुमं देवानुपिया ! बारवइ नयरि—तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समु-
द्विजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पंच महावीरे उग्रसेन पामो-
क्खे सोलसरायसहस्से पज्जुणपामोक्खाओ अज्झुआओ कुमारकोडीओ
संबपामोक्खाओ सट्ठि दुइंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीसं

‘ तएणं से दुवए ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं से दुवए राया दूयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—गच्छ णं
तुमं देवानुपिया ! बारवइ नयरि—तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्विजयपामोक्खे
दसदसारे बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे उग्रसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण-
पामोक्खाओ अज्झुआओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुइंत साहस्सीओ वीर-
सेन पामोक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ महसेनपामोक्खाओ छप्पत्तं बलव-

प्रमुखः पट्टपञ्चाशत् बलवत्साहस्रीः=महासेनप्रमुखान् पट्टपञ्चाशत्सहस्रप्रमितबल-
वतो राज्ञः, अन्यांश्च बहून् राजेश्वरतलवरमाडंबिककौटुम्बिकेभ्यश्चेष्टिसेनापति सार्थ-
वहप्रभृतीन् करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तमञ्जलिं मस्तके कृत्वा जयेन विज-
येन=जयविजयशब्देन 'बद्धावेहि' वर्धय=अभिनन्दय वर्धयित्वा एव ब्रूहि=हे
देवानुप्रियाः ! एवं खलु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः, चुलन्या
देव्या आत्मजायाः घृष्टद्युम्नकुमारस्य भगिन्याः, द्रौपद्या राजराकन्यकाया स्वयं-

वीर पुरिससाहस्रीओ महासेनपामोकवाओ छपन्नं बलवगसाहस्री
ओ अन्नेय बहवे राई सरतलवरमाडंबियकोडुंबियइवमसेट्टिसेणावह
सत्थवाहपभिइओ करयलपरिगहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं
मत्थए कट्टु जणं विजणं बद्धावेहि बद्धावित्ता एवं वयाहि) इस
द्रुपद राजाने अपने एक दूत को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा
कहा-देवानुप्रिय ! तुम द्वारका नगरीको जाओ वहा तुम कृष्ण वासुदेव
को, समुद्र विजय प्रमुख दश दशार्ही को, बलदेव प्रमुख पांच महावीरों
को, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजाओं को प्रद्युम्न प्रमुख ३॥)
साढे तीन करोड़ राजकुमारों को ६० हजार दुर्दान्त साम्ब प्रमुखों
को २१ हजार वीरसेन प्रमुख वीरों को ५६ हजार महासेन प्रमुख
बलिष्ठ राजाओं को, तथा और भी अनेक राजेश्वर तलवर, माडंबिक,
कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदिकों को दोनों अपने
हाथों की दशनखों वाली अंजलि बनाकर और उसे मस्तक से छुमाकर
नमस्कार करना तथा "जय विजय" शब्दोच्चारण करते हुए उन्हें
वधाई देना-उनका अभिनन्दन करना। वधाई देकरके फिर उन से ऐसा

गसाहस्रीओ अन्नेय बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइवमसेट्टिसेणावहसत्थवाह
पभिइओ करयल परिगहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जणं विज-
णं बद्धावेहि, बद्धावित्ता एवं वयाहि) तयारपथी दुपद राज्ञे पोताना अेक
इतने भोलाव्यो अने भोलावीने तेने कहुं के डे देवानुप्रिय ! तमे द्वारका
नगरीमां ज्यो. त्यां तमे कृष्णवासुदेवने, जगदेव प्रमुअ पांच महावीरने,
उग्रसेन प्रमुअ सोण हज्जर राज्ञेने, प्रद्युम्न प्रमुअ साडा त्रयु करोड राज-
कुमारने, ६० हज्जर दुर्दांतांअ प्रमुअने, २१ हज्जर वीरसेन प्रमुअ वीरने,
५६ हज्जर महासेन प्रमुअ बलिष्ठ राज्ञेने तेमज्जीण पणु अथा राजेश्वर,
तलवर, मांडविक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह वगेदेने पोताना
अने दश नणेवाणा हाथेनी अंजलि अतावीने तेने मस्तके भूझिने नमस्कार
करजे तथा 'जय विजय' शब्दोच्चारण करतां अथाने तमे अभिनन्दित

वरो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु गूयं हे देवानुप्रियाः । द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः
' अकालपरिहीणं चेव ' कालविलम्बरहितमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समोसरत्, ततः
खलु स दूतः करतलं यावत्-अञ्जलिं मस्तके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञ एतमर्थं प्रति-
शृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान्
शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः चतुर्घण्टं=घंटाचतु-
ष्टययुक्तम् अश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत । यावत्-उपस्थापयन्ति । ततः खलु स दूतः

कहना-(एवं खलु देवानुप्रिया ! कंपिल्लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लीणीए देवीए अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवर कण्णाए सयंवरे भविस्सई, तं णं तुव्मे देवानुप्रिया ! दुवयं रायं अणु-
गिण्हे माणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नगरे समोसरह) हे देवा-
नुप्रियो ! कंपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की
आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयंवर
होनेवाला है, इसलिये हे देवानुप्रियो ! आप लोग द्रुपद राजा के ऊपर
अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र कंपिल्यपुर नगर में पधारे । (तएणं से
दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयसट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंविगपुरिसे सदा-
वेइ, सदावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवानुप्रिया ! चाउग्घंटं
आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेइ जाव उवट्ठवेति) दूतने द्रुपद राजा के इस
कथन को दोनों हाथ जोड़कर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

करने. अलिनदित्ता कथां आह तमे तेअने आ प्रभाणु विनंतीं करणे (एवं
खलु देवानुप्रिया ! कंपिल्लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लीणीए देवीए
अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्य भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सई, तं
णं तुव्मे देवानुप्रिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्ल
पुरे नगरे समोसरह) हे देवानुप्रियो ! कंपिल्यपुर नगरमें द्रुपद राजा की पुत्री
चुलनी देवी की आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का
स्वयंवर होना है. अथी हे देवानुप्रियो ! तमे द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करीने
सत्त्वरे कंपिल्य नगरमें पधारे. (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स
रण्णो एयसट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता कोडुंविगपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवा-
नुप्रिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेइ जाव उवट्ठवेति) द्रुपद राजा की
आज्ञाने होते आने हाथ जोड़ीने स्वीकारी लीधी. स्वीकार कथा आह ते अथां

स्तातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथं 'दुरुहइ' दुरोहति-आरो-
हति । दुरुह बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति
अत्र यावच्छब्देनैवं बोध्यम्-सन्नद्धवद्धवर्मियकवर्हि, उत्पीलियसरासनपट्टगेहिं,
पिणद्धगेविज्जगवद्धाविद्धविमलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपरणेहिं इति । सन्नद्ध-
वद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिणद्धग्रेवैयकवद्धविद्धविमलवरचिह्न-
पट्टैः गृहीतायुधमहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृताः, वद्धाः=कशाबन्धनेन संबद्धा,
वर्मिताः=भङ्गे परिहिताः कवचा ये स्ते सन्नद्धवद्धवर्मितकवचास्तैः, तथा-उत्पीडि-
तशरासनपट्टकैः उत्पीडितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टकानि धनुः
प्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टकाः रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्धारिणस्तैः,

वह जहां अपना घर था वहां आया । वहां आकर उसने कौटुम्बिक
पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! तुम लोग
शीघ्र ही चार घंटों से युक्त अश्वरथ को छोड़े जोतकर यहां ले आओ ।
उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया । वे चार घंटा वाले उस रथ में
छोड़े जोतकर उसे वहां ले आये (तएणं से दूए ण्हाए जाव अलंकार०
सरीरे चाउघण्टं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव
गहियाऽऽउहपरणेहिं मद्धि : संपरिखुडे कंपिल्लपुरनयरं मज्झं मज्जेणं
निगच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को
समस्त अलंकारों से विभूषित किया । बाद में वह उस चतुर्घट वाले
अश्वरथ पर सवार हो गया । उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर
कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे ज्योपर बाण को आरोपित
करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथों में हैं ऐसे अनेक धनुर्धारी

पोतानुं घर छतुं त्यां आव्थे. त्यां आव्थेने तेणु कौटुम्बिक पुश्थेने गोलाव्या
अने गोलावीने तेमने कहुं डे डे देवानुप्रिय ! तमे सत्तरे चार घण्टीओवाणे।
अश्वरथ जेतरीने अही आवे। कौटुम्बिक पुश्थेने तेमअ क्युं. चार घण्टी-
ओवाणे। अश्वरथ जेतरीने त्यां लथ आव्थे। (तएणं से दूए ण्हाए जाव
अलंकार० सरीरे चाउघण्टं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध
जाव गहियाऽऽउहपरणे हिं सिद्धिं संपरिखुडे कंपिल्लपुरनयरं मज्झं मज्जेणं
निगच्छइ) त्थारभाइ इते स्नान क्युं यावत् पोताना शरीरने अधी लतना
अलंकारेथी शणुगारुं. त्थारपथी ते इत यत्तुघण्टवाणा अश्वरथ उपर सवार
थय गयो. ते इतनी साथे अपततथी सुसन्न थयेला धनुा पुश्थे छता.
प्रत्यथा उपर आणु अदाववार्थी वक थय गयेला धनुषो जेमना छाथेभां छे

તથા-પિનદ્વગ્રૈવેયકવદ્વાવિદ્વિમલવરચિહ્નપદ્મૈઃ- પિનદ્વાનિ - પરિધૃતાનિ ગ્રૈવેય-
કાણિ-કઠભૂષણાનિ યૈ સ્તે તથા, વદ્મઃ=આરોપિતઃ સંયોજિતઃ આવિદ્મઃ=મસ્તકે-
પરિધૃતઃ વિમલઃ=સ્વચ્છઃ વરઃ ચિહ્નપદ્મઃ-સ્વપક્ષબોધકચિહ્ન : યૈસ્તે તથા,
તતો દ્વિપદકર્મધારયઃ, તથા-ગૃહીતાયુધપ્રહરણૈઃ=આયુધાનિ અસ્ત્રાણિ, પ્રહરણાનિ-
શસ્ત્રાણિ ગૃહીતાનિ યૈસ્તે ગૃહીતાયુધપ્રહરણા સ્તૈઃ, સાર્થં સંપરિધૃતઃ કામ્પિલ્યપુરં
નગરં મધ્યમધ્યેન મધ્યમાર્ગેણ નિર્ગચ્છતિ, પંચાલજનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન યજૈવ
'દેસપ્પંતે' દેશમાન્તં-દેશસીમા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય 'સુરદ્વાજનવયસ્સ'
સૌરાષ્ટ્રજનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન યત્રૈવ દ્વારવતી નગરી તત્રૈવોપાગચ્છતિ ઉપાગત્ય
દ્વારવતીં નગરીં મધ્યમધ્યેન અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્ત યજૈવ કૃષ્ણસ્ય વામુદેવસ્ય

પુરુષ થે, જિન્હોને ગલે મેં આભૂષણોં કો પહિરરવલે હૈં ઓર મસ્તક કે
ઝપર સ્વચ્છ, સ્વપક્ષબોધક ચિહ્ન ધારણ કિયા હૈં એસે અનેક વ્યક્તિ
થે । તથા આયુધ એવં પ્રહરણોં કો લેકર અનેક સૈનિક જન હસકે
આસપાસ હો કર ચલ રહે થે । સો વહ દૂત જન સબ કે સાથ ૨ ઉસ
કાંપિલ્યપુર નગર કે બીચોંબીચ સે હોકર નિકલા । (પંચાલજનવયસ્સ મઝ્ઞં
મઝ્ઞેણં જેણેવ દેસપ્પંતે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્-સુરદ્વા જનવયસ્સ મઝ્ઞં
મઝ્ઞેણં જેણેવ દ્વારવદ્ નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્) ચલતે ૨ વહ પાંચાલ
જનપદકે બીચોંબીચ સે હોતા હુઆ જહાં પર અપને દેશકી સીમા કા
અન્ત થા વહાં આયા । વહાં આકર વહ સૌરાષ્ટ્ર દેશકે બીચસે નિક
લતા હુઆ જહાં દ્વારવતી નગરી થી વહાં આયા-(ઉવાગચ્છિત્તો દ્વાર-
વદ્ નયરીં મઝ્ઞં મઝ્ઞેણં અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્ત જેણેવ કણ્હસ્સ

એવા ધણા ધનુર્ધરા તેની સાથે હતા, જેઓએ ગળામાં આભૂષણો પહેરેલાં
અને મસ્તક ઉપર સ્વચ્છ સ્વપક્ષ બોધક ચિહ્ન પટો બાંધી રાખેલા એવા પણ
અનેક પુરૂષો તેની સાથે હતા. આયુધ અને પ્રહરણોને ઉચકીને પણ ધણા સૈનિકો
તેની બંને બાજુએ ચાલી રહ્યા હતા. આ રીતે તે ફત તેઓ બધાની સાથે
કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળ્યો. (પંચાલ જનવયસ્સ મઝ્ઞં મઝ્ઞેણં
જેણેવ દેસપ્પંતે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ સુરદ્વા જનવયસ્સ મઝ્ઞં મઝ્ઞેણં જેણેવ દ્વારવદ્ નયરી
તેણેવ ઉવાગચ્છદ્) આમ પોતાની યાત્રા પૂરી કરીને તે ફત પાંચાલ જનપદની
વચ્ચેવચ્ચે જ્યાં પોતાના દેશની હદ પૂરી થતી હતી ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને
તે સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને જ્યાં દ્વારવતી નગરી હતી ત્યાં આવ્યો. (ઉવાગ-
ચ્છિત્તો દ્વારવદ્, નયરિં મઝ્ઞં મઝ્ઞેણં, અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્ત જેણેવ કણ્હસ્સ

अनगरधर्मावृत्तवर्णिनी टीका अ० १६ द्रौपदीवर्तितवर्णनम्

२६५

बाहिरपरधानशाला-आस्थानमण्डपः, तृतीयोपागच्छति, उपागत्य चातुर्थ्यन्तश्चर्यं
स्यापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पञ्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति-प्रत्यवत्-
रति, प्रत्यवरुह 'मनुस्सवग्गुरापरिविखत्ते' मनुष्यवागुरापरिक्षितः=मनुष्यसमूह
परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवो-
पागच्छति, उपगत्य कृष्णं वासुदेवं समुद्रविजयप्रमुखांश्च दण्डशार्होन् यावत्
बलवत्साहस्रीः। अस्तलपरिगृहीतदशनखं शिरावर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा
एवमवादीत- 'तं चेव' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णनं बोध्यम् यावत्-समयसस्त
वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्टाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
चाउघंटं आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ, पञ्चोरुहित्ता
मणुस्सवग्गुरापरिविखत्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव
उवागच्छइ) वहां आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से
होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उप-
स्थानशाला-सभामंडप या वहां गया। वहां पहुंचकर उसने अपने चार
घंटावाले अश्वरथ को खड़ा कर दिया। रोक दिया-उसके रुकते ही वह
उससे नीचे उतरा। उतर कर वह मनुष्यों के समूह से परिक्षित (युक्त) हो
कर पैदल ही जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां गया। (उवागच्छित्ता कण्हं
वासुदेवममुद्रविजयपामुखे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्रीओ
करयल तं चेव जाव समोसरह) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को
समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्हो को यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार ब-
लिष्ठ राजाओं को दोनों हाथों की अंजलिकर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवट्टाणनाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंटं आस-
रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ पञ्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिविखत्ते पाय
विहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) त्यां आवीने ते द्वादा-
वती नगरीना मध्यभागे थडने नगरमां प्रविष्ट थयो अने त्थारपछी ते न्यां
दृण्णु-वासुदेवनी आह्व उपस्थानशाला-दीवाने आम-(अमा भंडप) इती त्यां
गयो. त्यां पछोंथीने तेण्णे पोताना थार घंटडीओवाणा रथने ओलो राख्यो
अने पोते नीचे उतर्यो, उतर्यो पछी ते पोताना नोकरो-सेवकनी साथे न्यां
दृण्णु-वासुदेव इता त्यां गयो. (उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवसमुद्रविजयपामुखे
य दस दसारे जाव बलवगसाहस्रीओ करयल तं चेव जाव समोसरह) त्यां
अडने तेण्णे दृण्णु-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन
प्रमुख ५६ हजार बलिष्ठ राजाओने अने हाथनी अंजलि अतावीने तेने

इति पर्यन्तम्, अयमर्थः—काम्पिल्यपुरनगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् यूयं द्रुपदं राजानमनुग्रहन्तः कालविलम्बरहितं काम्पिल्यपुरे नगरे समागच्छतैति स दूतः प्रोक्तवान्' इति ।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य हृष्टतुष्टः यावत्—हर्षवशेन विसर्पहृदयस्तं दूतं सत्कारयति तथा समानयति, सत्कार्यं समान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० १७ ॥

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि, तएणं से कोडुंबियपुरिसे कर यल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता नमस्कार किया । यहां पर 'एवं खलु देवाणुप्पिया,' से लेकर समोसरह "तकका पूर्वोक्त पाठ इसके द्वारा कहा गया लगा लेना चाहिये—जिसका तात्पर्य यह है कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है सो आपलोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा कर के उसमें शीघ्र पधारें । इस प्रकार (तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) कृष्ण वासुदेव ने उस दूत के मुखसे जब इस समाचार को सुना—तो वे सुनकर और उसे हृदयमें धारण कर बहुत ही अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुए । दूतका उन्होंने सत्कार किया, सम्मान किया । बादमें उसे वहां से विसर्जित कर दिया ॥ सू० १७ ॥

भस्तके भूमीने नमस्कार कथी. अही ' एवं खलु देवाणुप्पिया ' थी समोसरह ' सुधीने. पाठ इत पडे कडेवाभां आवेला छे अम समल देवुं जेधजे तेनी मतलब अे छे के काम्पिल्यपुर नगरमां द्रुपद राजानी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवाने छे तो आप सौ द्रुपद राजा उपर भडेरणानी करीने तेमां सावरे पधारो. आ रीते (तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) कृष्ण-वासुदेवे इतना सुणथी आ जतना सभायारे सांलज्या तयारे सांलजीने अने तेअने अरोअर हृदयमां धारण करीने अत्यंत हर्षित तेमअ संतुष्ट थर्धने तेमअे इतने सत्कार तेमअ सम्मान कथुं. तयारपछी तेमअे इतने विदाय कथी. ॥ सूत्र १७ ॥

जनंगारचमीसुतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितवर्णनम्

२६७

जेणेव सभाए सुहम्भाए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छिता सामुदाइयं भेरिं महया महया सदेणं तालेइ
 तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समु-
 दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ
 छप्पणं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया विभूसिया जहा विभव-
 इड्डिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेणं
 जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता कर-
 यल जाव कण्हे वासुदेवे जएणं विजएणं वच्चावेति, तएणं
 से कण्हे वासुदेवे कोडुंघियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वया-
 सी-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं
 पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चपिणंति, तएणंसे कण्हे वासुदेवे
 जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता समुत्तजा-
 लाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई
 दुरूढे, तएणं से कण्हे वासुदेवे समुदविजयपामुक्खेहिंदसहिं
 दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाह-
 स्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सत्विड्डीए जाव रवेणं बारवइनयरिं
 मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छिता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झं
 मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता
 पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे
 तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १८ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिक-पुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! सभायां सुधर्मायां ‘सामुदायं’ सामुदायिकीं भेरीं ताडय, ततः खलु स कौटुम्बिक-पुरुषः करतल० यावद्—मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् कृष्णस्य वासुदेवस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव सभायां सुधर्मायां ‘सामुदायं’ सामुदायिकीं भेरीं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सामुदायिकीं भेरीं मढ्या २ शब्देन ताडयति, येन मढ्याशब्दो भवति, तथा भेरीं ताडयति स्मे’ इत्यर्थः, ततस्तदनन्तरं खलु तस्यां

‘तएणं से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कौटुम्बियपुरिसं सदावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुलाकर (एवं बयासी) उनसे ऐसा कहा—(गच्छह णं तुमं देवानुप्रिया ! सभाए सुहम्माए सामुदायं भेरिं ताळेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा समामें जाओ और वहां जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएणं से कौटुम्बिय पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमढ्ठं पडि सुणेइ, पडिसुणिता जेजेव सभाए सुहम्माए सामुदायया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सामुदायं भेरिं मढ्या २ सहेणं ताळेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया—और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा में जहां वह सामुदायिकी भेरी थी वहां आया। वहां आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

‘तएणं से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं त्यासपधी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण-वासुदेवे (कौटुम्बिय पुरिसं सदावेइ) पोताना कौटुम्बिक पुरुषाने ओलाव्या अने ओलावीने (एवं बयासी) तेमने आ प्रभावे कहुं डे—(गच्छह णं तुमं देवानुप्रिया ! सभाए सुहम्माए सामुदायं भेरिं ताळेहि) हे देवानुप्रिय ! तमे सुधर्मा सभायां जाओ अने त्यां जधने सामुदायिकी भेरी बजाओ, (तएणं से कौटुम्बियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमढ्ठं पडिसुणेइ पडिसुणिता जेजेव सभाए सुहम्माए सामुदायया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता सामुदायं भेरिं मढ्या २ सहेणं ताळेइ) आ जतानी कृष्ण-वासुदेवनी आज्ञाने ते पुरुषे भूमज नम्र-पणे अने हाथाने मस्तके भूरीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार करी पछी ते त्यांथी जयां सुधर्मा सभायां सामुदायिकी भेरी डती त्यां जधने तेणे मोठी अवाज थाय तेम ते सामुदायिकी भेरीने बजाडी, (तएणं ताए सामुदायया भेरीए

अंतगारधर्मासृतवर्णिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितवर्णनम्

२६९

सामुद्रायिक्यां मेर्यां ताडितायां सत्यां समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हा यावत्-
महासेन प्रमुखाः प्रदूषश्चाशब्दबलवत्साहस्रयाः=प्रदूषश्चाशत्-सहस्रयमिता बलवन्तो
राजानः स्नाता यावत्-सर्वालंकारविभूषिता यथाविभवर्द्धिसत्कारसमुदयेन
'अप्येगद्या' अप्येके-यावत्=केचिद् हयारूढा=अथारूढाः केचिद् गजारूढाः,
केचिद् रथारूढाः केचिद् पादविहारचारेण यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तथैवोपाग-
च्छति उवागच्छतः करतल० यावत् कृष्णं वासुदेवं जयेन विजयेन=जयविजय-
शब्देन वर्धयन्ति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-
यित्वा एवमवादीन्-ओ देवानुमियाः ! क्षिप्रमेव 'अभिसेकं' अभिषेकं गज-
बड़े बल से बजायो कि जिससे उससे बड़ी भारी आवाज निकली
(तएणं ताणं सामुद्राहयाणं मेरीणं तालियाणं समाणीणं समुद्रविजय
पामोक्त्वा दस दसारा जाव महासेण पामुक्त्वाओ छप्पणं बलवगसाह-
स्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी सक्कारसमुदएणं
अत्थेगद्या जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवाग-
च्छति) इस तरह उस सामुयिकी मेरी के बजने पर समुद्रविजय आदि
दश दशार्हों ने यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओं ने
स्नान किया । यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर एवं सबके
सब अपने विभव ऋद्धि और सत्कार के अनुसार जहां कृष्ण वासुदेव
थे वहां आये । इनमें कितनेक घोड़ों पर कितनेक हाथियां पर कितनेक
रथों पर बैठकर आये और कितनेक पैदल ही चलकर आये (उवाग-
च्छित्ता करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं बद्धावेति, तएणं से
कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव

तालियाणं समाणीणं समुद्रविजयपामोक्त्वा दस दसारा जाव महासेण पामु-
क्त्वाओ छप्पणं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी
सक्कारसमुदएणं अप्येगद्या जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव
उवागच्छति) आ रीते ते सामुयिकी मेरी वगाडवामां आवी तयारे समुद्र विजय
वगेरे दश दशार्होअे यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओअे
स्नान कयुं. यावत् तेओ सर्वे समस्त अलंकारोअी सुसज्ज थउने पोताना
विभव अने सत्कारनी साथे अ्यां कृष्ण-वासुदेव इता तया गया. आमां केटवाक
घोडाओ उपर, केटवाक डार्थीओ उपर, केटवाक रथे उपर सवार थउने तयां
पडोअ्या इता ते केटवाक पगे आदीने व कृष्ण-वासुदेवनी पासे डालर थया
इता. (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं बद्धावेति
तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी खिप्पा-

११२७०

ज्ञाताधर्मकथाकृत्ये

रत्नं=मम मुख्यहस्तिनं परिकल्पयत-सज्जीकुरुत, हयगजरथपदातिरूपं चतुरङ्गबलं सज्जीकुरुत, एतां ममाज्ञां प्रत्यर्पयत, इति ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'तथास्तु' इत्युक्त्वा तदाज्ञां स्वीकृत्य सर्वं संघाद्य वाहनं बलं च सर्वं सज्जीकृतमस्माभिरिति यावत् प्रत्यर्पयन्ति=निवेदयन्ति स्म । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव मज्जन-गृहं तत्रोपागच्छति, मज्जनगृहं कीदृशमित्याह-'समुत्तजालाकुलाभिरामे' समु-त्तजालाकुलाभिरामं मुक्ताभिः सहितानि जालानि गवाक्षास्तैराकुलं युक्तमतएवा-भिरामं सुन्दरम्, उपागत्य स तत्र स्नानं कृत्वा यावत्-सर्वालङ्कारनिभूषितः, अञ्जनगिरिकूटसन्निभम्=उच्चतरं श्यामवर्णमित्यर्थः, गजपतिं=हस्तिषु मुख्यं हस्तिनं नरपतिः=श्री कृष्णवासुदेवः 'दुरूढे' दुरूढः=समारूढः, ततः खलु स कृष्णो भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिक्कप्पेह, हयगय जाव पच्चप्पिणति) वहां आकर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेव को नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा बधाई दी-इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-भो देवाणुप्पियो ! तुमलोग शीघ्र ही मेरे मुख्य हाथी को सजाओ-तथा-हय, गज, रथ और पदातिरूप चतुरंग युक्त सेना को भी सजाकर तैयार करो । पीछे हमको इसकी खबर दो । इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने-"तथास्तु" कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार लिया और स्वीकार करके बल और वाहन सब हमने सज्जित कर दिये हैं इस प्रकार की खबर उन्हें पीछे कर दी । (तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जनघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि कूडसन्निभं गयवई नरवई दुरूढे) इसके पश्चात् वे

मेव भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिक्कप्पेह, हयगयजाव पच्चप्पिणति)
 त्यां जघने तेओओ अने हाथ जेडीने 'जयविजय' शब्दोथी कृष्ण-वासुदेवने
 नमस्कार करतां अलिनदित कथो. त्थारपछी कृष्ण-वासुदेवे कौटुम्बिक पुरुषोने
 ओलाव्या अने ओलावीने तेओने आ प्रभावे कहुं के छे देवाणुप्पियो ! सत्तरे
 तमे भारा सुभ्य हाथीने तेमज्ज वीछ पण घोडा, हाथी, रथ अने पायदलनी
 चतुरंगिणी सेनाने सुसज्ज करै अने सेना सुसज्ज थई जाय त्थारे अभने भयर
 आपो. त्थारपछी कौटुम्बिक पुरुषोओ 'तथास्तु' कहीने तेमनी आज्ञा स्वीकारी
 शीघ्री अने स्वीकारीने तेओ पोताना काममां परेवाछ गथा. ज्यारे काम थई
 गथुं त्थारे तेओओ "सेना अने वाहन तैयार छे" आ जतनी भयर आपी.
 (तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जनघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवई नरवई दुरूढे)

अनगारवर्मासुतवर्णिनी टी० अ० १६ द्रोणद्वीपरितवर्णनम्

२७१

वासुदेवः समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्है र्यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखभिरनेकाभिर्गणिका
साहस्रीभिः सार्धं संपरिवृतः सर्वद्वर्चा-छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपण-
वपटहमेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन-निर्गच्छति, निर्गत्य सौराट्जन-
पदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशमान्तं-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चा-
लजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काम्पिल्यपुरं नगरं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=
गन्तुं प्रवृत्तः ॥ सु० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहां स्नान घर था वहां गये-वहां जाकर उन्होंने मुक्ताओं
सहित गवाक्षों से सुन्दर उस स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके
फिर सर्व अलंकारों से विभूषित होकर वे नरपति अंजन गिरि के शिखर
जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरुढ़ हो गये । (तएणं से
कण्हे वासुदेवे समुद्रविजयपामोवस्वेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंग
सेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सच्च-
ड्डीए जाव रवेणं बारवहनपरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता
सुरट्ठा जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसपंपंते तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पंचाल जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कपिल्लपुरे नगरे
तेणेव पहरेतथ गमणाए) आरुढ़ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय
आदि दश दशार्हों यावत् अंगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ
२ छत्र आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शंख, पणव, पटह,
भेरी आदि बाजों की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

त्यारपछी ते दृष्यु-वासुदेव जहां स्नानघर હતું ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને તેમણે
મોતી જડેલા ગવાક્ષોથી સ્નાનીય હોગતા સ્નાનગરમાં સ્નાન કર્યું અને ત્યાર
પછી બધા અલંકારોથી વિભૂષિત થઈને-નરપતિ અંજનગિરિના શિખર જેવા
વિશાળ કૃષ્ણ વર્ણવાળા ગજપતિ ઉપર સવાર થઈ ગયા. (તएणं से कण्हे
वासुदेवे समुद्रविजयपामोवस्वेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणा पामुक्खेहिं
अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सच्चिड्डीए जाव रवेणं बारव
हनपरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव
देसपंपंते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झं मज्जेणं जेणेव
कपिल्लपुरे नगरे तेणेव पहरेतथ गमणाए) सवार થઈ ને તેઓ સમુદ્ર વિજય
વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ અંગસેના પ્રમુખ હજારો ગણિકાઓની સાથે છત્ર
વિગેરે રાજચિહ્ન રૂપ વિભૂતિથી યુક્ત થઈને શંખ, પણવ, પટહ, ભેરી વગેરે
તુમુલ ધ્વનિ રચાને દ્વારવતી નગરીની વચ્ચે થઈને પસાર થયા. ત્યાંથી પસાર

मूलम्—तएणं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमगं गंगेयं विदुरं दोणं जयदहं सउणी किवं आसत्थामं करयल जाव कड्डु तहेव समोसरह, तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव कंप्पिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२ । एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह । पंचमगं दूयं हत्थसीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह । छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह । सनमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह । अट्ठमं दूयं कोडिणं नयरं तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह । नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसय समगं करयल जाव समोसरह । दसमं दूयं अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले । निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचों बीच से चलकर वहां आये जहां देश की सीमा थी । उस सीमा पर आकर के फिर वे पांचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहां कांपिल्य पुर नगर था उस और चल दिये । सू० १८

थअने तेअो सौराष्ट्र देशनी वअये थअने पोताना देशनी डइ सुअी पडोअ्या । त्यांथी तेअो पांचाल जनपदनी वअये थअने त्यां कांपिल्यपुर नगर डतुं ते तरइ रवाना थया ॥ सूत्र १८ ॥

अमंगारधममृतवर्षिणी टी० अ० १६ श्रौपदीचरितवर्णनम्

२७३

नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह । तएणं से दूए
तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह । तएणं ताइं
अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा
निसम्म हट्ठं तं दूयं सक्कारेति सक्कारित्ता सम्माणेति सम्मा-
णित्ता पडिविसज्जिति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायस-
हस्सा पत्तेयं२ पहाया सन्नद्धहत्थिखं धवरगया हयगयरहं० महया
भडचडगररहपहकर० सएहिंतो२ नगरोहिंतो अभिनिग्गच्छंति२
जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १९ ॥

टीका—‘ तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स द्रुपदो राजा द्वितीयं दूतं शब्द-
यति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं पाण्डुं राजं सपुत्रकं=पुत्रैः सहितं

‘ तएणं से दुवए राया ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इस के बाद (से दुवए राया) उस द्रुपद राजाने
(दोच्छं दूयं सहावेइ) अपने दूसरे दूतको बुलायो (सदावित्ता एवं वयासी)
बुलाकर उससे ऐसा कहा—गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया हत्थिणाउरं नयरं
तत्थ णं तुमं पंडुगयं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सह-
देवं दुज्जोहणं भाइमयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीकिवं
आसत्थामं करयल जाव कट्ठु तहेव समोसरह) बुलाकर उससे ऐसा
कहा हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ—वहां जाकर तुम पुत्र

‘ तएणं से दुवए राया ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपथी (से दुवए राया) ते द्रुपद राजाने (दोच्छं दूयं
सहावेइ) पीताना भीष्म इतने ओलाव्यो (सदावित्ता एवं वयासी) ओला-
वीने तेने आ प्रभाणे कट्ठुं के (गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया हत्थिणाउरं नयरं,
तत्थ णं तुमं पंडुगयं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जो-
हणं भाइमयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणी किवं आसत्थामं करयल
जाव कट्ठु तहेव समोसरह) हे देवानुप्रिय ! तमे हस्तिनापुर नगरभां जाओ

युधिष्ठिरं भीमसेनम् अर्जुनं नकुलं सहदेवं दुर्योधनं भ्रातृशतसमग्रं=शतभ्रातृभिः सहितं, गाङ्गेयं=भीष्मं, विदुरं द्रोणं जयद्रथं शकुनिं 'किंव' कृपम्=कृपाचार्यं, अश्वत्थामानं करतल० यावत् मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, तथैव समवसरत यथा पूर्वमुक्तं तथैवात्र 'समवसरत' इतिपर्यन्तं बोध्यम् अयं भावः—जयविजयशब्देन वर्धयित्वा एवं ब्रूहि—काम्पिल्यपुरे नगरे दुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति तस्माद् खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं दुपदं राजानमनुगृह्यन्तः कालविलम्बरहितमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत । ततः स दूतो दुपदस्य वचनं स्वीकृत्य हस्तिनापुरं गत्वा पाण्डुराजादिकमेवमवादीत्='काम्पिल्यपुरे द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति तत्र शीघ्रमागच्छत' इति ततोऽसौ दूतः पाण्डुराजादिना सम्मानितो विसर्जितश्च 'जहा वासुदेवे' यथा—वासुदेवः कृष्णस्तद्वदपि विज्ञेयम्—'नवरं' विशेषस्तु 'भेरी नत्थि' भेरीनास्ति, कृष्णवासुदेव इव पाण्डुराजादिः स्नातः सर्वालंकारविभूषितो गजारूढश्चतुरङ्गसेनया संपरिवृतः सर्वद्वर्षा युक्तो यावत् यत्रैव काम्पिल्यपुरं नगरं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ।

सहित पांडुराज को, युधिष्ठिर को, भीमसेन को, अर्जुन को नकुल को, सहदेव को, सौभाईयों सहित दुर्योधन को, गांगेय भीष्म पितामह को विदुर को, द्रोण को जयद्रथ को, शकुनि को, कृपाचार्य को, और द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा को पहिले दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार करना उन सबको जय विजय आदि शब्दों से बधा देना । बधाकर फिर इस प्रकार कहना कि काम्पिल्य पुर नगर में दुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर है, इस लिये हे देवानुप्रियों ! आप सब दुपद राजा के ऊपर कृपा करके बिना किसी विलंब के शीघ्रही काम्पिल्यपुर नगर में पधारें । (तएणं से दूए एवं वयासी—जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि, जाव जेणेव काम्पिल्यपुरे

अने त्यां जेधने तमे पुत्रे सहित पांडुराजने, युधिष्ठिरने, भीमसेनने, अर्जुनने, नकुलने, सहदेवने, सौ भाईयो सहित दुर्योधनने, गांगेय भीष्म पितामहने, विदुरने, द्रोणने, जयद्रथने, शकुनिने, कृपाचार्यने अने द्रोणाचार्यना पुत्र अश्वत्थामाने सौ पळेवां करणद्ध थधने—अंजलि बनानीने तेने मस्तके भूझीने नमस्कार करले अने 'जय विजय' शण्ठेथी तेज्जोने अभिनंदित करले. त्यारपछी तमे तेमने आ प्रमाद्ये विनंती करले के काम्पिल्यपुर नगरमां दुपद राजानी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवानो छे जेथी छे देवानुप्रियो ! आप सौ दुपद राजा उपर भडेर्यानी करीने सत्तरे काम्पिल्य नगरमां पधारो. (तएणं से दूए एवं वयासी—जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव काम्पिल्य-

अनन्तरधर्मोत्तमविणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितवर्णनम्

२७५

नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं
तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह
चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं, तत्थ णं तुमं सिमुपालं दमघोसमुयं पंच-
भाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत
अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहां से हस्तिनापुर को चला गया।
वहां पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बड़े विनय पूर्वक इस प्रकार
कहा—कांपिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयंवर होगा—सो आप सब कृपाकर
शीघ्रतिशीघ्र वहां पधारें। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पांडुराजा
आदि से सन्मानित होकर वहां से वापिस हो गया। पांडुराज आदि
स्नान कर सर्वालंकारों से विभूषित होकर गजारूढ हो, चतुरंगिणी
सेना के साथ अपनी क्रुद्धि आदि के अनुसार यावत् जहां कापिल्यपुर
नगर था उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहां
पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस में विशेषता केवल
इतनी है कि वे सब जब द्वा रावती नगरी से कांपिल्यपुर नगर को जाने
के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी—यहां वह नहीं है। इसी क्रम
से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया—बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं
तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थं
दूयं सुत्तिमइं नयरिं तत्थ णं तुमं सिमुपालं दमघोसमुयं पंचभाइसयसंप-
रिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह) त्थारपणी इत पोताना राज्ञानी आज्ञा
प्रमाणे त्यांथी हस्तिनापुर तरङ्ग रवाना थई गये। त्यां पडोच्यीने तेणे पांडु
राज वगेरे राज्ञोने नअपणे आ रीते विनंति करी के—कांपिल्यपुरमां
द्रौपदीने स्वयंवर थशे तो आप सौ कृपा करीने सत्वरें त्यां पधारो। आ
रीते समाचारो आपीने ते इत पांडुराज वगेरेथी सन्मान पाभीने त्यांथी
पाछे थ्यो। पांडुराज वगेरे अधाओ पणु स्नान वगेरेथी परवारिने तेमज सर्वा-
लंकारोथी सुसज्ज थईने हाथीओ उपर सवार थया अने पोत पोतानी चतु-
रंगिणी सेना तेमज क्रुद्धिनी साथे यावत् जे तरङ्ग कांपिल्यपुर नगर हुंतुं
ते तरङ्ग रवाना थया। आ प्रमाणे कृष्ण-वासुदेवनी जेमज अर्ही पणु वलुन
समज लेवुं जेथओ। कृष्ण-वासुदेवना पाठमां पांडुराज करतां ओटवी विशेषता
हुती के तेओ ज्यारे द्वा रावती नगरीनी जहार नीकल्या त्यारे तेमनी साथे
भेरी पणु हुती, पांडुराजनी साथे भेरी न हुती आ प्रमाणे द्रुपद राज्ञो
बीज इतने ओझाओ अने तेने पणु आ रीते कहुं के हे देवानुग्रिथ। तमे

एतेनैव क्रमेण तृतीयं दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरीम्, तत्र खलु कर्ण=कर्णनामकम्-अङ्गराजम्=अङ्गदेश-स्याधिपतिं, तथा 'सेल्ल' शैल्यं=शैल्यनामकं नन्दिराजं=नन्दिदेशाधिपं करतल-परिगृहीतं दशनखं यावत्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा एवं ब्रूहि-‘तहेव’ तथैव=पूर्ववदत्र बोध्यम्-तद् यथा-“काप्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरं भविष्यति, तस्माद् खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्यतः शीघ्रमेव काप्पिल्यपुरे नगरे समवसरत” इति एवं द्रुपदो-राजा चतुर्थं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं शुक्तिमतीं नगरीं, तत्र खलु त्वं शिशुपालं दमघोषमुक्तं पञ्चभ्रातृशतसंपरिवृतं करतलं यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-‘तथैव यावत् समवसरत’ यथा पूर्वमुक्तं तद्वदत्र ‘समवसरत’ इति-

कहा-कि हे देवानुप्रिय ! तुम चंपानगरी जाओ वहां अंगदेश के अधि-पति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति शैल्यराजा को कर तल परिगृहीत दशनखवाली अंजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना बाद में जय विजय शब्दों से उन्हें वधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा कहना-कि कापिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है, सो हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके जल्दी से जल्दी कापिल्यपुर नगर पधारें। इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ वहां जाकर दमघोष के पुत्र तथा पांचसौ अपने भाइयों से युक्त शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशनखवाली अंजलि मस्तक पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि कापिल्यपुर नगरमें

अंघा नगरीमां जाओ, त्यां अंघ देशमा अधिपति कर्ण राजने तेमज नंदि देशमा अधिपति शैल्यराजने छाथोनी अंजलि जनापीने तेने मस्तके भूझीने नमस्कार करणे अने जय-विजय शब्दोथी तेमने अभिनंदित करणे. त्थारपछी तेमने विनंती करणे के कापिल्यपुर नगरमां द्रुपद राजनी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवानो छे तो छे देवानुप्रियो तमे सौ द्रुपद राजा उपर कृपा करीने अविलंब कापिल्यपुर नगरमां आवो. आ रीते द्रुपद राजाये बोधा हुतने जालाओ अने तेने पणु आ प्रभाणे कहुं के तमे शक्तिमती नगरमां जाओ अने त्यां जधने दमघोषना पुत्र शिशुपाल राजने ज पोताना, पांचसो भाइओ सहितकरणद्ध यधने अंजलि मस्तके भूझीने विनंती करतां आ प्रभाणेना समाचार आपणे के कापिल्यपुर नगरमां द्रुपद राजनी पुत्री द्रौप-

जनगारधर्मासूतवर्णिनी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितवर्णनम्

२७७

पर्यन्तं वाच्यमित्यर्थः । एवं द्रुपदो राजा पञ्चमकं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-
गच्छ खलु त्वं हस्तिशीर्षनगरं, तत्र खलु त्वं दमदन्तं=दमदन्तनामकं राजानं कर-
तलपरिगृहीतदशनखं यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-‘तथैव यावत् समवसरत’
इति पूर्ववदेवात्रापि ‘समवसरत’ इति पर्यन्तं वाच्यम् एवं स द्रुपदो राजा पष्ठं दूतं
शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं मथुरां नगरीं, तत्र खलु त्वं धरं=धरनामकं
राजानं ‘करतल० यावत् समवसरत’ अत्रापि पूर्ववद्दूतगमनादिकं बोध्यम्, एवं
सप्तमं दूतं शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छ खलु त्वं राजगृहं नगरम्, तत्र खलु त्वं
सहदेवं जरासिन्धुसुतं ‘करतल० यावत् समवसरत’ इति पूर्ववत्-द्रौपद्याः स्वयं-
वरस्य वार्तां कथयित्वा ‘काम्पिल्यपुरं नगरे समवसरत’ इति ब्रूहि । तथा स

द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है-सो आप कृपा
करके शीघ्र ही वहाँ पधारें । (पंचमगं दूयं हस्तिशीसनयरं तत्थ णं तुमं
दमदन्तं रायं करयल तहेव जाव समोसरह, छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं
तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थ णं
तुमं सहदेवं जरासिन्धुसुयं करयल जाव समोसरह, अट्ठमं दूयं कोडि-
ण्णं नयरं तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह,
नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमगं करयल जाव
समोसरह, दसमं दूयं अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं
जाव समोसरह) इसी तरह पांचवे दूत को हस्तिशीर्षनगर में दमदन्त
नाम के राजा के पास छठे दूत को मथुरा नगरी में धर राजा के पास,
सातवें दूत को राजगृह नगर में जरासिन्धु के पुत्र सहदेव के पास

हीना स्वयंवर थवानो छे ओथी तमे कृपा करीने अविद्वंभ त्यां पधारो.
(पंचमगं दूयं हस्तिशीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदन्तं रायं करयल तहेव जाव
समोसरह छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह
सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिन्धु सुयं करयल जाव
समोसरह अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल
तहेव जाव समोसरह नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसय-
समगं करयल जाव समोसरह, दसमं दूयं अवसेसेसु गामागर नगरेसु अणेगाइं
रायसहस्साइं जाव समोसरह) आ प्रभाषे पांचमा दूतने हस्तिशीर्ष नगरमां
दमदन्त नामना राजानी पासे, छठ्ठा दूतने मथुरा नगरीमां धर राजानी पासे,
सातमा दूतने राजगृह नगरमां जरासिन्धुना पुत्र सहदेवनी पासे, आठमा
दूतने कोडिल्य नगरमां भीष्मकना पुत्र इन्दिम राजानी पासे, नवमा दूतने

द्रुपदो राजा अष्टमं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं कौण्डिल्यनगरं तत्र खलु त्वं 'रुक्मिण' रुक्मिणं=रुक्मिणनामकं भीष्मकसुतं करतल तथैव यावत् समवसरत पूर्ववत् 'समवसरत' इति पर्यन्तं वाच्यम् । एवं स द्रुपदो राजा नवमं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं विराटनगरं, तत्र खलु त्वं 'कीचक' कीचकनामकं राजानं शतभ्रातृसहितं करतल यावत् समवसरत अत्रापि व्याख्या पूर्ववत् । एवं स द्रुपदो राजा दशमं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-अवशेषेषु च ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसदस्याणि यावत् समवसरत, अत्रापि व्याख्या पूर्ववत्, ततस्तदनन्तरं खलु स दूतस्तथैव=पूर्वोक्तदूतइव निर्गच्छति काम्पिल्यनगरतो निः

में आठवें दूत को कौण्डिल्य नगर में भीष्मक के पुत्र रुक्मि राजा के पास में नौवें दूत को विराट नगर में सौ भाइयों से युक्त कीचक के पास में, और दशवें दूतों को अवशिष्ट ग्रामों में आकरों में एवं नगरों में हजारों राजाओं के पास जाने के लिये कहा । इन दूतों को राजा द्रुपद ने यह समझादिया कि तुम लोग जब इन राजाओं के पास जाओ तब पहिले उन्हें दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करना और कहना कि कांपिल्य पुर नगर में द्रुपदकी पुत्री द्रौपदी को स्वयंवर होने वाला है सो आप लोग उस में द्रुपद राजा उपर दिया कर के शीघ्र से शीघ्र पधारें । राजाकी आज्ञानुसार तीसरे दूतसे लेकर नौवें दूत तक समस्त दूत जिन्हें २ जहाँ २ जाने को कहा था-वे वहाँ चले गये । वहाँ जाकर उन्होंने ने जैसा द्रुपद राजा ने इन से करने एवं कहने को कहा था-वैसा ही उन्होंने ने वहाँ २ किया और कहा । इस तरह पहिले की तरह यहाँ तक सब व्याख्या समझलेनी चाहिये । (तएणं से दूए तद्देव निगच्छइ,

विराट नगरमां सो भाधओथी युक्त कीचकनी पासे अने दशमां दूतने भाडी रही गथेका भील आभोमां आकरोमां अने नगरोमां डभरे राजओनी पासे जया हुकम कथी । आ भधा दूतोने राज द्रुपदे जतां पडेलां आ पात सरस शीते समजवी दीधी डती के जयारे तमे राजओनी पासे जओ तयारे सौ पडेलां पोताना अने हाथ जेडीने तेओने नमस्कार करन्ते अने तयारपछी तमे तेभने विनंती करन्ते के कांपिल्य नगरमां द्रुपदनी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवाने छे तो आप सौ द्रुपद राजा उपर कृपा करीने अविलज तयां पधारै । राजनी आज्ञा सुजअ त्रील इतथी भांडीने नवमां दूत मुधीना भधा दूतो जयां जयां तेओने जवानुं डतुं तयां तयां पडोअ्या । तयां पडोअीने तेओअे द्रुपद राजअे जेम आज्ञा करी डती तेभज तेओअे कथुं अने कहुं, अहाँ पडेलांनी जेमज समस्त लेवुं जेधओ । (तएणं से दूए तद्देव निगच्छइ, जेणेव गामागर जाव

अमगारधर्मासृतवर्णिनी टीका अ० १६ द्रौपदीवर्णितवर्णनम्

२७९

सरति, निर्गन्त्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य यावत्-समवसरत, ' समवसरत ' इति पर्यन्तं दूतवाक्यं पूर्ववद् बोध्यम् । ततः खलु तानि अनेकानि राजसहस्राणि तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूतं सत्कारयन्ति=सत्कृतं कुर्वन्ति संमानयन्ति, सत्कार्यं, संमान्य प्रतिविसर्जयन्ति ।

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानः,=पर्येकं २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह) वह दशावां दूत उसी तरह से- पहिले के दूतों के समान कांपित्य नगर से निकला और निकल कर जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहां पर अनेक राजसहस्रों के पास गया-वहां जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि कांपित्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है-सो आपसब लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कांपित्य पुर नगर पधारे' (तएणं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठं तं दूयं सक्कारेति, सक्कारित्ता सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेति) इस प्रकार वे अनेक सहस्र राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित बनकर परम संतोष को प्राप्त हुए । उन्होंने उस दूत का सत्कार किया सत्कार करके सन्मान किया और सन्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित कर दिया-भेज दिया। (तएणं ते वासुदेवपामुक्त्वा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं

समोसरह) ते दशमे दूत अधानी जेम कांपित्य नगरथी नीकल्ये अने नीकलीने ज्यां ग्राम आकर अने नगर छता त्यां अनेक सहस्रो राज्ञोनी पासे गयो. त्यां जधने नम्रपण्णे तेण्णे सहस्रे आ प्रमाणे हट्ठं के कांपित्य नगरमां द्रुपद राज्ञी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवानो छे तो आप सौ द्रुपद राजा उपर कृपा करीने अविलम्ब कांपित्य नगरमां पधारे. (तएणं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठं तं दूयं सक्कारेति. सक्कारित्ता, सम्माणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति) आ रीते सहस्रो राज्ञो ते दूतना मुणथी आ समाचार सांलणीने अने तेने पोताना हृदयमां धारण करीने भूअअ प्रसन्न तेमअ परम संतुष्ट थया. तेओअे दूतने सत्कार कयो अने सन्मान कयुं' त्थारपणी दूतने तेओअे विदथ आपी. (तएणं ते वासुदेवपामुक्त्वा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं २ ष्वाया

२८०

जाताधर्मकथाक्रमे

सन्नद्धवद्वर्मितकवचाः यावद् गृहीतायुदप्रहरणाः हस्तिस्कन्धवरगता हयगजरथ
महामटचटकरप्रकरवृन्दपरिक्षिप्ताः=अश्वागजरथमहासुभटसमूहपरिवृताः, स्वकेभ्यः
स्वकेभ्योअभिनिर्गच्छन्ति, अभिनिर्गत्य यद्वैव पञ्चालो जनपदस्तत्रैव प्राधारयन्
गमनाय=गन्तुं प्रवृत्ताः ॥ सू० १९ ॥

मूलम्—तएणं से दुवए राया कोडुंवियपुरिसे सदावेइ सदा-
वित्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! कपिल्ल-
पुरे नयरे बहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं
सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्टियं साल-
भंजिआगं जाव पच्चप्पिणांति, तएणं से दुवए राया दोच्चंपि
कोडुंवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव

१णहाया सन्नद्ध हस्तिखंभवरगया हय गजरह० महया भडचडगररहप-
हकर० संहितो २ नगरेहितो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पांचाले जण-
वण तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बादमें जब दून समाचार देकर वापिस
कांपिल्य पुर नगर में आंचुके तब वासुदेव प्रमुख वे अनेक शहस्त्र राजा
प्रत्येक स्नान से निबटे, और सजाकर अपने २ शरीर पर कवच पहिरा,
यावत् आयुध और प्रहरणों को अपने २ साथ लिया, अपने २ प्रधान
हाथियों पर चढे और हाथी घोडे रथ और महामटों के समुदाय से
घिरे हुए होकर ये सब अपने राज महलोंसे-नगरों से-निकले-निलकर
जहां पांचाल जनपद था उस ओर चल दिये ॥ सू० १९

सन्नद्धहस्तिखंभवरगया हयगजरह० महया भडचडगररहपहकर० संहितो २
नगरेहितो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पांचाले जणवण तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
त्यारपछी न्यारे भधा इतो समाचार आपीने कांपिल्यपुर नगर पाछा
आयी गया त्यारे वासुदेव प्रमुख धनुषा हतारो राज्ञ्योऽन्ने स्नान कर्था
अने त्यारणाड पोताना शरीर उपर कवचो धारण कर्था यावत् आयुधो अने
प्रहस्त्रोने पोतानी साथे लीधा त्यारपछी तेओ भधा पोतपोताना प्रधान
हाथीओ उपर सवार थया अने हाथी, घोडा, रथ अने महामटोना समु-
दायनी साथे पोताना राजभडेलथी-नगरेथी नीकल्या अने नीकणीने न्यां
पांचाल जनपद छतो ते तरइ नवाना थया ॥ सूत्र १९ ॥

अनगारघमामृतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीखरितवर्णनम्

२८१

भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं
 आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणांति, तएणं दूवए
 वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता
 पत्तेयं२ हत्थिखंध जाव परिवुडे अग्रं च पज्जं च गहाय सवि-
 ङ्गिणं कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासु-
 देवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवाग-
 च्छित्ता ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ
 सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं
 पत्तेयं२ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव
 सया२ आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखं-
 धाहितो पच्चोरुहंति पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं
 करेति करित्ता सए२ आवासे अणुपविसंति अणुपविसित्ता
 सएसु२ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य
 संतुयट्ठा य बहूहिं गंधवेहि य नाडणहि य उवगिज्जमाणा य
 उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति, तएणं से दूवए राया कंपिल्ल-
 पुरं नगरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउलं असणं४ उवक्ख-
 डावेइ उवक्खडावित्ता कोडुंवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं
 वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं४ सुरं
 च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुपुप्फवत्थगंधम-
 ल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु
 साहरह, तेवि साहरंति, तएणं तं वासुदेवपामुक्खा तं विउलं

असणं४ जाव पसन्नं च आसाएमाणा४ विहरंति, जिमियाभुत्तु-
 त्तरागया वि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया
 बहूहिं गंधवेहिं जाव विहरंति, तएणं से दुवए राया पुव्वाव-
 रण्हकालसमयांसि कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी
 गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंप्पिल्लपुरे संघाडग जाव पहे
 वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिरुंधवरगया
 महया२ सहेणं जाव उग्घोसेमाणा२ एवं वदह—एवं खलु देवा-
 णुप्पिया कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए
 अत्तयाए धट्टज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णए
 सयंवेरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं
 अणुगिण्हेमाणा पहाया जाव विभूसिया हत्थिरुंधवरगया सको-
 रंत० सेयवरचामर० हयगयरह० सहया भड्चडगरेणं जाव
 परिकिखत्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 पत्तेयं२ नामंकिएसु आसणेसु निसीयह२ दोवइं रायकण्णं पडि-
 वालेमाणा२ चिट्ठह, घोसणं घोसेह२ मम एयमाणत्तियं पच्च-
 प्पिणह, तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं
 से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी
 —गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयंवरमंडपं आसियसंमज्जि-
 ओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजावयारकलियं काला-
 गरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्ठिभूयं मंचाइमंचकलियं अरेह
 करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं२ नामं-

अतदारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० म० १६ द्रौपदीवर्तितवर्णनम्

२८३

काई आसणाई अस्थुपपच्चरथुयाई रएहर एयमाणत्तियं पच्च-
प्पिणह, ते वि जाव पच्चप्पिणांति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा
बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थि-
खंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हयगय जाव परिवुडा
सव्विड्डीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरं तेणेव उवागच्छइ उवाग-
च्छित्ता अणुपविमंति अणुपविसित्ता पत्तेयं२ नामंकिएसु आस-
णेसु नितीयंति दोवइ रायवरकण्णं पडिवालेमाणा चिट्ठंति,
तएणं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंध-
वरगए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरे मज्झंमज्झेणं निगच्छंति
जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसि वासुदेवपामुक्खाणं
करयल० वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय
उववीयमाणे चिट्ठंति ॥ सू० २० ॥

टीका—‘ तएणं से ’ इत्यादि । ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरु-
षान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमनादीन्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ।
काम्बिल्यपुरस्य नगरस्य बहिः प्रदेशे गङ्गाया महानद्या अदूरसामन्ते=नातिदूरे
नातिसमापे एतं महान्तं स्वयम्भारण्डं कुर्वत कौटुम्बिकत्वाद्-‘ अणेन ’ इत्यादि ।

‘ तएणं से दूवए राया कोडुविय पुरि से ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (दूवए राया) द्रुपद राजा ने (कोडुविय
पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया (सदाविता एवं वयासी)
बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा—(गच्छहणं तुमं देवानुप्रिया ! कपिल्लपुरे
नगरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामन्ते एणं महं सयंवरमंडवं करेह,

‘ तएणं से दूवए राया कोडुविय पुरिसे ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपछी (दूवए राया) ड्रुपद राजा ने (कोडुवियपुरिसे
सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषो ने बोलाया. (सदाविता एवं वयासी) बोलायीने
तेमने आ प्रभावे कछुं के (गच्छहणं तुमं देवानुप्रिया ! कपिल्लपुरे नगरे
बहिया गंगाए महानईए अदूरसामन्ते एणं महं सयंवरमंडवं करेह, अणेणं सयंवरमंडवं

યસન્નિવિટું લોહદ્વિયસાઢમંજિઆર્ગં જાત્વ પચ્વતિગતિ) કે દેવાનુપ્રિયો ! કાંપિલ્ય-
પુરનગરની બહાર મહા નદી ગંગાથી વધારે દૂર નહીં તેમજ વધારે નજીક પણ નહિ
એવા યોગ્ય સ્થળે એક ભારે વિશાળ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરો કે જે ધણા
સેંકડો થાંભલાઓવાળો હોય, તેમજ જેમાં અનેક બતની કાંડા કરતી પૂત-
ળીઓ સજવીને મૂકવામાં આવી હોય તે લોકોએ પણ ‘ તથાસ્તુ ’ કહીને
રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને ત્યારથી તેમની આજ્ઞા મુજબ જ સ્વયં-
વર મંડપ તૈયાર કરીને સન્નને તેની ખબર આપી. (તથા) સે દુષણ રાયા
દોષાંપિ કોદ્ધંબિયપુરિસે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવં વવાસી-સ્તિપરામેઽ દેવાણુપિયા !
વાસુદેવ પામુસ્ત્વાર્ણં વહૂર્ણં રાયસદ્દસાણં આવાસે વરેદ, તે ચિ કરેત્તા પચ્વતિગતિ)
ત્યારપછી દુષણ રાજાએ બીજા કૌટુંબિક પુત્રોને યોગ્યતા અને યોગ્યતાને
તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો અવિલાંબ વાસુદેવ પ્રમુખ ધણા

अनगरवर्मासुतवर्णिनी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितवर्णनम्

२८५

खलु द्रुपदो राजा वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां रामसहस्राणाम् आगमं=आगमनं
ज्ञात्वा प्रत्येकं २ हस्तिस्कंधवरगतः, हयगजरथमहाभटसमूहश्चरितः, अर्घ्यं=
पानार्थं जलं पार्थं=वरणप्रक्षालनार्थमुदकं च गृहीत्वा सर्वद्वर्थां छत्रचामरादिरूपया
काम्पिल्यपुरतो निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्याका-
रानानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राजसदृशाणि=
तान् बहुसहस्रसंख्याकान् वासुदेवप्रमुखान् राज्ञः, अर्घ्येण च पात्रेण च सत्कार-

प्रमुख अनेक सहस्र राजाओं को बैठने के लिये पृथक् स्थान बनाओ ।
उन्होंने राजाकी आज्ञानुसार बैसा ही किया और इसकी खबर राजा को
कर दी । (तदणं द्रुपद वासुदेव प्रमुखानां बहूनां रायसहस्राणं आगमं
जाणेत्ता पत्तेयं २ हस्तिखंभ जाव पडिवुडे अर्घ्यं च पज्जं च गहाय सन्वि-
ड्ढीए कं पिहलपुराओ निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव ते वासुदेव पामोक्खा
बहवे रायसहस्रा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामु-
क्खाइ अर्घ्येण य पज्जेण य सत्कारेइ, सम्माणेइ) इसके बाद द्रुपद
राजा वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को आगमन जानकर अपने प्रधान
हस्ती पर आरुढ़ हो हय, गज, रथ तथा महाभटों के समूह के साथ २
प्रत्येक राजा के लिये अर्घ्य-पीने के लिये पानी, पात्र-चरण प्रक्षालन के
जल-लेकर छत्रचामर आदि अपना राजविभूतिसे युक्त होकर कांपिल्य
पुर नगर से निकले-निकलकर जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा थे वहां
गये । वहां जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का अर्घ्य

छत्ररा राजाओंने ऐसवा भाटे जुठा जुठा स्थान तैयार करे। ते लोकोओ पण
राजनी आज्ञा सुणजे अणु काम पतावी दीयुं अने काम थर्जग्यानी अमर
राज सुधी पडोआडी दीयी। (तदणं द्रुपद वासुदेवप्रमुखानां बहूनां राय-
सहस्राणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हस्तिखंभ जाव पडिवुडे अर्घ्यं च पज्जं च
गहाय सन्विड्ढीए कं पिहलपुराओ निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा
बहवे रायसहस्रा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामुक्खाइ
अर्घ्येण य पज्जेण य सत्कारेइ, सम्माणेइ) त्थारपछा वासुदेव प्रमुख छत्ररा
राजोअनुं आगमन सोलगीने द्रुपद राज पोतना प्रधान हाथी उपर सवार
थया अने घोडा, हाथी, रथ तेमअ मडालटोता समूहनी साथे दरेके दरेके
राजने भाटे अर्घ्य-पीवा भाटे पाणी-लधने छत्र चामर वगेरे पोतानी राज-
विभूतिथी युक्ता थधने कापिल्यपुरथी अडार नीडग्या अने नीडगीने ल्यां
वासुदेव प्रमुख छत्ररा राजोअ छता त्यां पडोआया। त्यां अने तेमझे ते

यति, संमानयति, सत्कार्यं सत्कारं कृत्वा, तन्मान्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां प्रत्येकं २ पृथक् २ आवासं 'विचरह' वितरति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखाः सर्वेव स्वकाः २=निजा २ आवासास्तवैशोपागच्छन्ति, उपागत्य दृष्टिस्फुत्वात् प्रत्यवरोडन्ति प्रत्यवरुद्ध प्रत्येकं स्तम्भावारनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा स्वके स्वके आवासेऽनुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य स्वक्षेपु स्वक्षेपु आवासेषु-आमनेषु च शयनेषु च सन्निपन्ना उपविष्टाश्च तथा 'संतुपट्टा' संत्वभर्तिताः परिवर्तिताश्चाथ बहुमिर्गन्धैश्च 'नाड-एहि य' 'नाटैश्च' उवगिज्जमाणा य' उपगीयमानाश्च, 'उवगिज्जमाणा य'

और पाद्य से सत्कार किया-सन्मान किया । (सत्कारित्ता, सम्मानित्ता, तैसिं वासुदेवप्रमुखानां पत्तेयं २ आवासे विचरह, तएणं ते वासुदेव प्रमुखानां जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता दृष्टि खंधाहि तो पचोरोहन्ति, पचोरोहन्ति पत्तेयं खंधावारनिवेशं करोति) सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन सब वासुदेव प्रमुखों को प्रत्येक के लिए पृथक् २ आवास-स्थान-दिया, । इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख राजा जहाँ अपना २ स्थान नियत था-वहाँ गये । वहाँ जाकर के अपने २ हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्तम्भा-वार स्थापित कर दो-अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया । (करित्ता सए २ आवासे अणु०) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेषु य सयणेषु य सन्नि-सन्ना य संतुपट्टा य बहुहि गंधवेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य

वासुदेव प्रमुख इसरी राजाओं अर्थात् अपने पाद्यही सत्कार तेमज्ज सन्मान कथुं. (सत्कारित्ता सम्मानित्ता तैसिं वासुदेवप्रमुखानां पत्तेयं २ आवासे विचरह, तएणं ते वासुदेवप्रमुखानां जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता दृष्टिखंधाहितो पचोरोहन्ति, पचोरोहन्ति पत्तेयं खंधावारनिवेशं करोति) सत्कार तेमज्ज सन्मान करीने तेमणु वासुदेव प्रमुख दरेके दरेके राजा ने जुहुं जुहुं आवास स्थान आणुं. त्थारपणी वासुदेव प्रमुख राजाओं जहाँ पोतपोतानु आवास स्थान नञ्ज करवामां आणुं हुतुं त्यां गया. त्यां जठने तेओ पोतपोताना इत्थीओ उपरधी नीचे उतर्यां अने उतरीने तेओओ पोतपोतानी स्तम्भावार-छावणी स्थापित करी ओटवे के सेनाना पडाव नाभ्ये. (करित्ता सए २ आवासे अणु०) छावणी नाभीने तेओ पोतपोताना आवास स्थानमां प्रविष्ट थया (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेषु य सयणेषु य सन्निसन्ना य संतुपट्टा य बहुहि गंधवेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य

अनगरधर्माश्रमविणी टी० अ० १६ द्वीपदीधरितर्णनम्

१८७

उपनृत्यमानाश्च गीतं श्राव्यमानाश्च, नृत्यं दर्शयमानाश्च विहरन्ति । ततः खलु स द्रुपदो राजा कांपिल्यपुरं नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य विपुलम्-अशनं पानं स्वाद्यं स्वाद्यम् उपकारयति, संस्कारयति, उपस्कार्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! विपुलम्, अशनं पानं स्वाद्यं स्वाद्यं सुरां च मज्जं च मांसं च सीधुं च पसकां च सीधुः पसका च मदिरा विशेषे, तथा सुबहु पुष्पवस्त्र गंधमाल्यालंकारं च वासुदेवपुष्पाणां राजसहस्राणाम् आवासेषु 'साहरह' संहरत=उपनयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव संहरन्ति ।

उवणच्चिज्जमाणा य विहरन्ति, तएणं से दुवए रागा कंप्पिलपुरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता विउलं असण ४ उवक्खडावेह) प्रविष्ट होकर के वे अपने अपने आवास स्थानों में आसनों पर एवं बिरतरो पर जाकर अच्छी तरह बैठ गये लेट गये । वहाँ लेटे हुए उनकी अनेक गंधर्वोंने, अनेक नाट्यकारों ने स्तुति की-उनकी प्रशंसा के गीत गाए, नाटक दिखलाया । इसके बाद द्रुपद राजा कांपिल्यपुर नगर के भीतर आये-वहाँ आकर के उन्होंने विपुलमात्रा में अशन, पान, स्वाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया-पकवाया । (उवक्खडावित्ता कोडुंघियपुरिसे सहावेह सहावित्ता एवं बयासी-गच्छह णं तुवमे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ सुरं च मज्जं च सीधुं च पसणं च सुबहु पुष्पवत्थ गंधमलालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्राणं आवासे सु साहरह) तैयार करवा कर फिर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो तुमलोग जाओ और इस

उवणच्चिज्जमाणा य विहरन्ति, तएणं से दुवए रागा कंप्पिलपुरं नयरं अणुप-विसइ अणुपविसित्ता विउलं असण ४ उवक्खडावेह) प्रवेशिनि तेओ येतयेताना आसने। उपर सारी रीते भेसी गया, सूई गया, त्यां सूई भयेला तेओनी धणु गंधर्वेओ, धणु नाट्यकारेओ स्तुति करी, तेमनी प्रशंसा ना गीतो गायां अने नाटको खज्यां, तयारपछी द्रुपद राजा कांपिल्यपुर नगरमां आव्या, त्यां आवीने तेओओ पुष्पक प्रमाणमां अशन, पान आद्य अने स्वाद्य ३। तार नतने आहार तैयार करावडाव्यो (उवक्खडावित्ता कोडुंघियपुरिसे सहावेह, सहावित्ता एवं बयासी गच्छह णं तुवमे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ सुरं च मज्जं च मांसं च सीधुं च पसणं च सुबहुपुष्पवत्थगंधमलालंकारं च वासु-देवपामोक्खाणं रायसहस्राणं आवासेसु साहरह) तैयार करावने तेमने कौटुम्बिक पुरुषेने ओलाव्या अने ओलावनि तेओने धणुं हे हे देवानुप्रियो ! तमे

૨૯૮

જ્ઞાતાધર્મકથાક્રમસૂત્રે

તતઃ સ્વલુ તે વાસુદેવપ્રમુખાસ્તદ્ વિપુલમ્, અસનં પાનં સ્વાદ્યં સ્વાદ્યં યાવત્ પ્રસન્નં ચ ' આસાયમાણા ' આસ્વાદન્તો વિહરન્તિ, અપિ ચ સ્વલુ ' જિમિયા ' જિમિતાઃ-શુક્તવન્તઃ, ' શુત્તુત્તરાગયા ' શુક્તોત્તરાગતાઃ શુક્તોત્તરં=ભોજનાનન્તરમ્ આગતાઃ શ્રુવતેત્યત્ર ભાવેક્તઃ ભોજનસ્થાનાદાસણવદેશે મુલ્યપ્રક્ષાલનાર્થમાગતાઃ સન્તઃ ' આયંતા ' આચાન્તાઃ-કૃતચુલ્લુકાઃ, યાવત્-સુખામનવરગતાઃ=આસનવરે સુખો-

અશન, પાન, સ્વાદ્ય સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર કો સુરા મધ, સીધુ ઓર પ્રસન્ન મદિરા કો ઓર અનેક વિધ ઇન પુષ્પો કો વસ્ત્રો કો ગંધમાલ્ય એવં અલંકારો કો વાસુદેવ પ્રમુખ રાજસહસ્રો કો આવાસ સ્થાનો પર લે જાઓ. (તે વિ સાદરંતિ) રાજા કી આજ્ઞાનુસાર વે સઘ ડન અશનાદિવસ્તુઓ કો વહાં પર લે ગયે. (તત્પણં તે વાસુદેવપામુ-ક્ષ્વા તં વિડલં અસણં ૪ જાવ પ્રસન્નં ચ આસાયમાણા ૪ વિહરંતિ) ઇસ્કે બાદ ડન વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ ને ડમ આનીત વિપુલ અશનાદિરૂપ પ્રસન્ના મદિરા તક કી આહાર કી સામગ્રી કો સ્વાદ્યા (જિમિયા શુત્તુત્તરાગયા વિ ય ણં સમાણા જાવ મુદાસણવરગયા વહૃર્હિ ગંધવ્વેહિં જાવ વિહરંતિ) સ્વા પી કર જબ વે નિશ્ચિન્ત હો ચુકે ઓર મુખ પ્રક્ષાલન કે લિયે ભોજન સ્થાન સે ડઠકર દૂસરે નિકટ સ્થાન પર આયે-તવ ડન્હોને કુલ્લા કિયા-ઓર ફિર સુન્દર અપને ૨ આસનો પર જાંતિ પૂર્વક આકર બેઠ ગયે. ડનકે બેઠતે હી મનોવિનોદ કે લિયે

લોકો જાઓ અને આ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્ય રૂપ આર બતના આહારને સુરા, મધ, માંસ, સીધુ અને પ્રસન્ન મદિરાને અને ઘણી બતના આ પુષ્પાને, વસ્ત્રોને, ગંધમાલ્ય અને અલંકારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજસહસ્રોના આવાસ સ્થાને પહોંચાડો. (તે વિ સાદરંતિ) રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે તેઓ બધાએ તે ખાદ્ય પદાર્થોને રાજાઓના આવાસ સ્થાને પહોંચાડી દીધા. (તત્પણં તે વાસુદેવપામુક્ષ્વા તં વિડલં અસણં ૪ જાવ પ્રસન્નં ચ આસાયમાણા ૪ વિહરંતિ) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ ત્યાં પહોંચાડવામાં આવેલા પુષ્પા પ્રમાણમાં અશન વગેરેથી માંડીને પ્રસન્ન મદિરા સુધીના બધી બતના આહાર સામગ્રી વગેરેનું ખૂબ રૂચિપૂર્વક પાન કર્યું.

(જિમિયા શુત્તુત્તરાગયા વિ ય ણં સમાણા આયંતા જાવ મુદાસણવરગયા વહૃર્હિ ગંધવ્વેહિં જાવ વિહરંતિ)

જમી પરવારીને બ્યારે તેઓ નિશ્ચિત થઈ ચૂકયાં ત્યારે તેઓ મુખ પ્રક્ષાલન માટે લોબ્ધન સ્થાનથી ઊભા થઇને બીજા પાસેના સ્થાને ગયા. ત્યાં તેઓએ કોમળા ક્રયા અને ત્યારપછી તેઓ દૂરી પોતપોતાના સુંદર આસનો

મનગરાચમામૃતવર્ષિણી ટીકા૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતવર્ણનમ્

૨૮૯

પવિષ્ઠાઃ बहुभिर्गन्धर्वैर्वीर्यं नाटकैश्चोपगीयमानाः उपनृत्यमानाश्च विहरन्ति= આસતે સ્મ ર્ત્વર્થઃ ।

તતઃ સ્વલુ સ દ્રુપદો રાજા પૂર્વાપરાહ્લકાલસમયે કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છત સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! કામ્પિલ્યપુરે નગરે શૃંગાટક યાવત્-ત્રિક્ ચતુષ્ક ચત્વર મહાપથપથેષુ વાસુદેવપ્રમુખાણાં ચ રાજસહસ્રાણામાવાસેષુ આવાસસમીપેષુ હસ્તિસ્કન્ધવરગતા મહતા ૨ શબ્દેન=ઉઘૈઃ સ્વરેણ યાવદ્ ઉદ્ગોષયન્તઃ ૨ એવં વદત-એવં સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! કલ્પે-આગામીનિ દ્વિતીય-

ગંધર્વો ને જાના પ્રકાર કે સ્તુત્યાત્મક ગીત ગાયે ઓર નાટ્યકારોં ને નૃત્ય દિશ્વલાયે । (તણં સે દુવણ રાયા પુઞ્વાવરણ્કાલસમયંસિ કોહું ધિયપુરિસે સદાવેહ,સદાવિત્તા. એવં વયાસી,ગચ્છહ જં તુમે દેવાણુપ્પિયા ! કંપિલ્લપુરે સિંઘાડગ જાવ પહેસુ વાસુદેવપામુક્ત્વાણ ય રાય સહસ્સાણ ય આવાસેસુ હસ્થિ સ્થંધવરગયા મહયોર સદેજં જાવ ઉગ્ગોસેમાણા ૨ એવં વદહ, એવં સ્વલુ દેવાનુપ્પિયા ! કલ્લં પાઠ૦ દુવયરસ રણ્ગો ધૂયાણ ચુલળીણ દેવીણ અત્તયાણ ધદ્વજુણસસ ભગિણીણ દોર્વૈણ રાયવરકન્નાણ સયંવરં ભવિસ્સહ) હમકે વાદ દ્રુપદરાજા ને પૂર્વાપરાહ્લ કાલ કે સમય મેં કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો વુલવાયા ઓર વુલાકર ઉનસે એસા કહા-હે દેવાનુ પ્રિયોં । તુમલોગ હાથી પર બેઠકર કાંપિલ્યપુર નગર મેં જાઓ ઓર વહાં શૃંગાટક યાવત્ ત્રિક્ ચતુષ્ક ચત્વર મહાપથ આદિ માર્ગોં મેં જો વાસુદેવ પ્રમુખ રાજા કે આવાસસ્થાન હેં ઉનકે સમીપ વહે જોર ૨

ઉપર શાંતિપૂર્વક ઝેસી ગયા. તેમના બને-વિનોદ માટે ગંધર્વોએ અનેક જાતના સ્તુત્યાત્મક ગીતો ગાયાં અને નાટ્યકારોએ નૃત્ય કરી બતાવ્યાં.

(તણં સે દુવણ રાયા પુઞ્વાવરણ્કાલસમયંસિ કૌહુંધિયપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા, એવં વયાસી, ગચ્છહ જં તુમે દેવાણુપ્પિયા ! કંપિલ્લપુરે સિંઘાડગ જાવ પહેસુ વાસુદેવપામુક્ત્વાણ ય મહયા ૨ સદેજં જાવ ઉગ્ગોસેમાણા ૨ એવં વદહ, એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! કલ્લં પાઠ૦ દુવયરસ રણ્ગો ધૂયાણ ચુલળીણ દેવીણ અત્તયાણ ધદ્વજુણસસ ભાગળીણ દોર્વૈણ રાયવરકન્નાણ સયંવરં ભવિસ્સહ)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ પૂર્વાપરાહ્લ કાળના સમયે કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો હાથી ઉપર ઝેસીને કાંપિલ્યપુર નગરમાં જાઓ અને ત્યાંના શૃંગાટક યાવત્ ત્રિક્ ચતુષ્ક ચત્વર મહાપથ વગેરે માર્ગોમાં-કે માર્ગોની પાસે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓના આવાસ ધરા છે તેની પાસે જહુ મોટા સાહે આજ્ઞાતની

दिवसे प्रादुर्भूतप्रभातायां राज्ञ्यां तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युदये द्रुपदस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः, चुलन्यादेव्या आत्मजायाः, धृष्टद्युम्नस्य भगिन्या द्रौपद्या राजवर-कन्यायाः स्वयंवरो भविष्यति, रत्न=रत्नमत्तं रत्न हे देवानुप्रिया ! सूर्यं द्रुपदं राजानमनुरुहन्तः स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारविभूषिता-हस्तिस्वन्धवरगताः सकोर-ण्टमाल्यदायना छत्रेण प्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धधूयमानैश्च युक्ताः हयग-जरथमहाभटकरेण चतुरङ्गबलेन यावत् परिक्षिप्ताः=परिवृताः यत्रैव स्वयंवर-से ऐसी घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रिय ! कल सर्वोदय होने पर द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा और धृष्टद्युम्न की बहिन राजवर कन्या-द्रौपदी का स्वयंवर होगा (तं तुभ्ये णं देवानुप्रिया ! द्रुपदं रायाणं अणुगिह्येमाणा ण्याया जाव विभूसिया हस्तिस्वंधवरगया सकोरण्ट० सेयवर चामर० हय गयरह० महया भटचडगरेणं जाव परिविखत्ता जेणेव सयंवर मंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं नामंकिणसु आसणेसु निसीयह २ दोवहं रायकणं पडिवालेमाणा २ चिद्वह) इस लिये हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपदराजा के ऊपर कृपा करके स्नान आदि से निवृत्त कर एवं समस्त अलंकारों से विभूषित होकर जहाँ स्वयंवर मंडप है वहाँ पधारें। आते समय हाथियों पर बैठकर आवें। कोरण्ट पुष्पों की मालाओं से सुशोभित तब उस समय आप सब के ऊपर तने हों और श्वेत गृन्दर चामर ऊपर दोरे जा रहे हों। हय, गज, रथ एवं महाभटों का समूहरूप चतुरंगबल आप घोषणा करो हे देवानुप्रियो ! आवती डावे रावार यतां द्रुपद राज्ञी पुत्री चुलनी देवीनी आत्मजा अने धृष्टद्युम्ननी अहेन राजवर कन्या द्रौपदीने स्वयंवर थरो.

(तं तुभ्ये णं देवानुप्रिया ! द्रुपदं रायाणं अणुगिह्येमाणा ण्याया जाव विभू-सिया हस्तिस्वंधवरगया सकोरण्ट० सेयवरचामर० हय गयरह० महया भटचड-गरेणं जाव परिविखत्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं नामंकिणसु आसणेसु निसीयह २ दोवहं रायकणं पडिवाले माया २ चिद्वह)

अथी हे देवानुप्रियो ! तमे बोडो द्रुपद राजा ऊपर भदिरभानी इरीने स्नान पगेरेथी परवारीने तथा समस्त अलंकारोथी विभूषित करीने न्यां स्वयंवर मंडप छे, त्यां हाथीओ ऊपर सवार थडने पधारो. डोरण्ट पुष्पोनी भाजाओथी शोभतुं छत्र ते वण्णते तमारा ऊपर ताण्णुं हावुं जेठंओ अने सईह यमरो पणु तमारा ऊपर डेणाना होवा जेठंओ. हाथी, रथ अने महा-लटोना समूह इय अतुरंगिणी सेना तमारी साथे होवी जेठंओ. स्वयंवर

मण्डपस्तत्रैवोपागच्छत, उपागत्य प्रत्येकं ' नामंकिण्डु ' नामाङ्कितेषु स्व स्व-
नामाक्षयुक्तेषु आसनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदीं राजकन्यां ' पडिवालेमाणा २ '
प्रतिपाठयन्तः २ प्रतीक्षमाणाः २ तिष्ठत इति घोषणां घोषयत, घोषयित्वा
ममैताभाक्षिकां प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तथैव यावत् प्रत्य-
र्पयन्ति । ततः खलु स दुषदो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा
एवमवशीन्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुमियाः ! स्वयंवरमण्डपम् " आसियसंम-
ज्जिओवलित्तं " आसिकसंमार्जितोपलिप्तम्=आसिकम्-जलपक्षेपेणाद्रीकृतं, संमार्-
जितं-कवचराद्यपनयनेन संशोधितम्, उपलिप्तं-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्तं, तथा-
सुगंधरागंधियं ' सुगंधरागन्धियं-अगुरुगुग्गुलकपूरसरलदाहादिजनितसुगन्धयुक्तं,
' पञ्चवर्णपुष्पकुंजोवयारकलियं ' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जपचारकलितं । ' कालागुरुवर-
कुंदुरुकतुरुह-जाव गन्धवट्टिभूयं ' कालागुरुवरकुंदुरुकतुरुह-यावद्-गन्धवट्टि-
भूतं, अत्र यावच्छब्देन-यूयं इत्येतद्वचनयंतगन्धुदधुयाभिरामं ' इति बोध्यम् ।

सब के साथ हो । मंडप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले
आसन पर बैठजावे । बैठकर फिर वहाँ वह राजवर कन्या द्रौपदी की
प्रतीक्षा करें । (घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तिथं पच्चप्पिणह) इस
प्रकार की घोषणा करो और जब तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब
इसकी हमें पाठे खबर दो । (तएण ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्च-
प्पिणति) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने वृषाज्ञानुसार ऐसा ही किया-बाद
में हमलोग आपकी आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा
के पास भेज दी । (तएणं से दुवए राया कोडुंबिय पुरिसे सदावेइ,
सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्मे देवाणुप्पिया । सयंवरमंडवं
आसियसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवर्णपुष्पकुंजोवयार-
कलियं कालागुरुवरकुंदुरुकतुरुहक जाव गन्धवट्टिभूयं मंचाहमंचकलियं

मंडपमां आसीने दरेके दरेके पोतपोताना नामवाणा आसन उपर ऐसी अथ-
त्यां ऐसीने तेआ राजवर कन्या द्रौपदीना आजमननी प्रतीक्षा करे । (घोसणं
घोसेह २ मम एयमाणत्तिथं पच्चप्पिणह) आ सीते तमे घोषणा करे । अने
आम थर्ध अथ तयरे अने अमर आपो । (तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव
पच्चप्पिणति) ते कौटुम्बिक पुरुषोआ राजनी आज्ञा प्रमाणे अ अधुं काम
पताची दीधुं अने ' अमे होडेओ आपनी आज्ञा अनुसार घोषणा करी छे '
ऐवी अजर राजनी पासे पछोयाडी दीधी.

(तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-
गच्छह णं तुम्मे देवाणुप्पिया ! सयंवरमंडवं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवर-
गंधियं पंचवर्णपुष्पकुंजोवयारकलियं कालागुरुवरकुंदुरुकतुरुहक जाव गन्धवट्टि-

धूपदक्षमानमधमघायमानगन्धोद्धूताभिरामं, तत्र कालागुरुः कृष्णागुरुः, प्रवर-
कुन्दरुक्-चोडानामको गन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्कं च सिल्लकं, धूपश्च गन्धद्रव्यसंयो-
गन इति द्वन्द्वः, यद्वा-एतत्सम्बन्धी यो धूपस्तस्य दक्षमानस्य यः सुरभिर्मधमवा-
यमानः-प्रतिश्रयमान्, गन्ध उद्भूतस्तेनाभिरामो रमणीयः स तथा तं तथा-
गन्धार्तिभूतगन्धार्ति-गन्धद्रव्यगुणैस्तद्भूत-तत्सत्त्वं सोऽभ्यातिशयात् तथा-
'मंचाईमंचकलियं' मञ्जातिमञ्चकलितं कुरुत, कृत्वा वायुदेवममुखाणां बहूनां
करेह, करित्वा वायुदेव पायुस्त्रागं बहूनां रायसहस्रतागं पतेयं २ नामं-
काई आसगाई अत्युपपन्नधुपाई रण्ड २ एयमागतिं पव्यपिगह)
इसके बाद ध्रुपदराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर
उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिया ! तुम जाग जाओ-और स्वयंवर मंडप
को आसिक कर-जल्लिवन से आर्द्र करो, संनार्जित करो-
कचवर आदि को उससे बाहिर कर उसे साफ करो एवं उल्लिप्त
करो मित्र तथा गोवर से उसे लीं। सुगंधवरगंधित करो उसमें-
अगुरु, गुग्गुलु, कपूर आदि को जलाकर उनकी गंध से उसे सुगंध
युक्त बनाओ पंचवर्ग के पुष्पों के पुंज उसमें जगह २ रखो। कृष्णा-
गुरु प्रवर कुन्दरुक्, तुरुष्कशोषान इनके चूर्ण को वहां आप्र में
खूब जलाकर उनके गंध से उसे बहुत ही अधिक मनोभिराम
बनाओ ज्यादा क्या-उस ऐसा करदा कि जिससे ऐसा ज्ञात हो कि
यह एक सुगंधित द्रव्यों को वर्तिका है। वहां मंचों के ऊपर मंचों को

भूयं मंचाईमंचकलियं करेह, करित्वा वायुदेवपायुस्त्रागं बहूनां रायसहस्रतागं पतेयं
२ नामंकाई आसगाई अत्युपपन्नधुपाई रण्ड २ एयमागतिं पव्यपिगह)

त्यापछी दुपद सलये डोटुंमिड पुरेयाने गोलाग्या आने गोलावीने
कछुं के डे देवानुप्रिया ! तमे लोका लये आने स्वयंवर मंडपने आसिक
करो-पाणी छांटी, संनार्जित करो, कथरो वगेरे साई करो, आने उल्लिप्त
करो, अटले के भाटी तेमज छाजुथी लीं। सुगंधवर गंधित करो अटले के
ते स्थाने अगुरु, गुग्गुलु, कपूर वगेरेना धूप करीने तेनी सुगंधथी ते स्थानने
सुवासित करो। पंचवर्षुना पुष्पपुंजना समूडे स्थाने स्थाने गोठवाने तमे मंडपनी
शोभाभां अलिवृद्धि करो। कृष्णागुरु, प्रवर, कुंदरुक्, तुरुष्क, लोषान आ
अधा पदार्थेना धूलुने अग्निभां नाभीने ते स्थानने सुगंधथी पूज्य रम-
णीय बनावी हो। ते स्थानने तमे अबुं सरस सुगंधमय बनावी हो के जेथी
ते सुगंधित द्रव्येनी वर्तिका (अगरभत्ती) अबुं लागे। त्यां तमे मंचो द्विप

अंततारवनामुत्तरविगी दीक्षा अ० १६ द्रौपदीवरितवर्णनम्

२२३

राजसहस्राणां प्रत्येकं २ नामाङ्कितान्यासनानि 'अथुपपञ्चथुपाइं' आसृत
प्रत्यवस्तुतानि=आच्छादित प्रत्याच्छादितानि 'रएइ' रचयत्, रचयित्वा एतामा-
ङ्गसिकां प्रत्यर्पयत्, तेऽपि=कौटुम्बिकपुरुषाः, यावत् प्रत्यर्पयन्ति । 'तएणं ते'
वासुदेवप्रमुखाः बहुसहस्रसंख्यकाराजानः 'कळं' कलये मादुर्भूतप्रमातायां रत्नन्यां
यावत् तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युद्गते स्नाता यावत् सर्वालंकारविभूषिता हस्ति-
स्कन्धवर्गता सकोरंष्टमाल्यदाग्ना छत्रेण त्रिप्रमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्भूयमानैश्च
युक्ता हय गज-धावत्-रथपदातिसमूहेन परिवृता सर्वद्वर्चा यावत् 'सङ्घपणहपट-
हादीनां रवेण यत्रैव स्थाने सयंवरमण्डपस्तत्रैव रोशगच्छन्ति, उपागत्यानुप्रविशन्ति,
अनुप्रविश्य प्रत्येकं २ 'नामंकिएसु' नामाङ्कितेषु=स्वस्वनामाभ्ययुक्तेषु आसनेषु
निषीदन्ति=उपविशन्ति, निषद्य द्रौपदीं राजवरकण्यां 'पडिवालेमाणा' प्रति-
पालयन्तः=प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति ।

रखो । उन पर वासुदेव प्रमुख राजाओं के प्रत्येक के नाम के आसनों
को आसृत-शुभवस्त्र से ढककर प्रत्यवस्तुत-और द्वितीय शुभवस्त्र से
आच्छादित कर रखो । रख कर फिर हमें पीछे इस सब कार्य के समाप्त
होने की खबर दो । (ते वि जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार राजा की
आज्ञानुसार उन कौटुम्बिक पुरुषों ने सब कार्य उचित रूप में करके
पीछे राजा को " सब कार्य आज्ञानुसार यथोचित हो चुका है " ऐसी
खबर कर दी । (तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं
पाउ० पहाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंठ० सेयवर-
चामराहिं हय गय जाव परिवुडा सव्विड्डीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं
नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकणं पडिवालेमाणा २

મંથેની જેઠવણ કરેા. ત્યાં તમે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેકે દરેક રાજાના નામથી
અંકિત થયેલા આસનેને આસૃત-સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાંકીને, પ્રત્યાવસ્તૃત અને
બીજા સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાંકેા આ બધું કામ પતાવીને તમે અમને ખબર આપો.
(તે વિ જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ) આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક
પુરૂષોએ તે મુજબજ બધું કામ પતાવી દીધું અને ત્યારપછી ' તમારી આજ્ઞા
મુજબ કામ બધું પતી ગયું છે ' એવી ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડી.

(તएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० पहाया जाव
विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंठ० सेयवरचामराहिं हय गय जाव परिवुडा
सव्विड्डीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपवि-
संति, अणुपविसित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकणं

३२४

होताथर्मकथासूत्रे

ततः खलु 'पंडुए' पाण्डुनामको राजा 'कल्लं' कल्ये-प्रातः काले स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण धियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृतः सर्वद्वर्चा यावत्-स्वेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन मध्येभूत्वा निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानस्त-जीवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतलपरिगृहीतदशनखं

चिह्नंति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढ़े हुए धियमाण कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरों से वीज्यमान होते हुए एवं हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शंख पणव पटह आदि के साथ २ जहाँ वह स्वयंवर मंडप था-वहाँ आये। वहाँ आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अंकित आसनों पर पृथक् २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएणं से पंडुए राया कल्लं पहाए जाव विभूसिए सकोरंट० हयगय० कंप्पिपुरं मज्झमज्झेण निगच्छन्ति-जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा बहवे रायसहससा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तेति वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिह्न्ति)

त्यारपछी वासुदेव प्रमुख हमारे राजाओं पीछे द्बिसे न्यारे रात्रि पसार थय जय अने सवार थतां सूर्य उदय पाये। त्यारे स्नान वगेरेथी परवारीने पोताना शरीरने अथा आभूषणोथी शण्णगारीने, हृथीओ उपर सवार थाने, सुगंधित कोरंट पुष्पेनी भाणाओथी शोभित अने छत्रथी युक्त थय। उत्तम श्वेत चामरेथी वीज्यमान थता तेमज घोडा, हाथी यावत् रथ पदाति समूहथी परिवृत थता पोताना राज्य वैभव अनुसार यावत् शण्ण पणव पटह वगेरे वालओनी साथे जथा स्वयंवर मंडप हुतो त्यां गया। त्यां जधने तेओ अथा मंडपमां प्रविष्ट थया अने प्रविष्ट थधने तेओ पोत पोताना नामांकित गुदा गुदा आसनेओ उपर जेसी गया अने राजवर कन्या द्रौपदीनी प्रतीक्षा करवा लाग्या।

(तएणं से पंडुए राया कल्लं पहाए जाव विभूसिए हस्तिखंधारगए सकोरंट० हय गय० सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा बहवे रायसहससा तेणेव

शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वामुदेवस्य श्वेतवरचामरं गृहीत्वा 'उववीयमाणे' उपवीजयन् चामराद्धूननेन सेरमान-
स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पामुक्त्वाणं करयलवद्धावित्ता कण्हस्स वामुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिद्धति) इस के बाद पांडु नामक राजा प्रातः काल स्नान से निवृत्त कर और समस्त अलंकारों से विभूषित होकर अपने पट्ट गजराज पर चढ़ कर कांपिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्वयंवर मंडप में आये। जब ये गजराज पर चढ़े हुए आ रहे थे उस समय इन के ऊपर कोरंट पुष्पों की माला से विरजित छत्र, छत्रधारियों ने तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज, रथ एक पदादि समूहरूप चतुरंगिणी सेना इनके साथ चल रही थी। राजसी ढाटबाट से ये सुसज्जित थे। विविध बाजे साथ में बजते हुए आ रहे थे। मंडप में आकर ये जहां वामुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे हुए थे-वहां गये। वहां जाकर उन्होंने उन वामुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को दोनों हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जब विजय शब्दों द्वारा उन्हें वधाई दी। वधाई देकर फिर ये कृष्ण वामुदेव के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए वहां बैठ गये ॥ सू० २० ॥

उवागच्छद्, उवागच्छत्ता तेमि वामुदेवपामुक्त्वाणं करयलवद्धावित्ता कण्हस्स वामुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिद्धति)

त्यारपछी पांडु नामक राजा सवारे स्नानधी परवारीने समस्त अलंकारों पोताना शरीरने शबगारीने अने पोताना मुख्य गजराज उपर सवार थडने कांपिल्यपुर नगरनी वस्त्रेथी पसार थडने स्वयंवर मंडपमां आव्या. न्यारे तेथो गजराज उपर ऐसीने आवता हुता तयारे कोरंट पुष्पेनी गण्ठा-ओथी शोभित छत्र छत्रधारिओओ ताछेलुं हुतुं. चामर ढोरनाओओ श्वेत चामर ढोणी रद्धा हुता, घोडा, हाथी, रथ अने पदाति समूह रूप चतुरंगिणी सेना तेमनी साथे साथे आली रही हुती. राजसी ढाटठी तेथो सुसज्जित हुता, अनेक नताना वाज्जो वागी रद्धां हुतां मंडपमां आवीने तेथो नयां वामुदेव प्रमुख हजारो राजओ ओठेडा हुता त्यां गया. नयां वामुदेव प्रमुख राजओ ओठेडा हुता त्यां तेमनी पासे नथने तेथोओ वामुदेव प्रमुख सर्व राजओने भूषण नम्रपण्णे अने हाथ ओडीने नमस्कार कया. नय विजय शब्दोथी तेओने अलिनदित कया अलिनदित कया आइ तेथो कृष्ण वामुदेवनी उपर श्वेत चामर ढोणता त्यां ऐसी गया. ॥ सूत्र २० ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कय-
कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं
पवरपरिहिया जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ, करित्ता जेणेव
अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं सा द्रौपदी राजवरकन्या
यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता ‘कयवलिकम्मा’ कृतवलि-
कर्मा अन्नादिषु वायसादिप्राणिनां संविभागो बलिकर्म तत् कृतं यथा सा तथा
कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता ‘सुद्धप्पावेसाइं’ शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि
प्रवेश्यानि—सभायां प्रवेष्टुं योग्यानि, यत्परिधानेन सभायां लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती-
त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि ‘पवरपरिहिय’ प्रवरपरिहिता=प्रवरविधिना
प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती आप्तत्वात् कर्तरिक्तः,

‘तएणं सा दोवई रायवर कन्ना’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर
कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहाँ स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ)
उस ओर गई (उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगल
पायच्छित्ता) वहाँ जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, नहाकर फिर
उसने काक पक्षि आदि को अन्नोदि का भाग देने रूप बलि कर्म किया
कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किये । (सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर
परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मांगलिक वस्त्र
अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ)

‘तएणं सा दोवई रायवरकन्ना’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्य.२५छी (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रौपदी
(जेणेव मज्जणघरे) जहाँ स्नानघर હતું (तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં ગઈ.
(उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कय कोउयमंगलपायच्छित्ता) ત્યાં જીने
તેણે સ્નાનઘરમાં સ્નાન કર્યું. સ્નાન કર્યા બાદ તેણે કાકડા વગેરે પક્ષીઓને
અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું—કૌતુક મંગલ પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા.
(સુદ્ધપ્પાવેસાઈ મંગલ્લાઈ વત્થાઈ પવરપરિહિયા મજ્જણઘરાઓ પડિનિક્खમइ)
સભામાં પ્રવેશવા યોગ્ય સ્વચ્છ માંગલિક વસ્ત્રો તેણે સરસ રીતે પહેર્યાં,
ત્યારપછી તે સ્નાનઘરથી બહાર નીકળી. (જિણપડિમાણં અચ્ચણં કરેइ) છન-

અમગાર્ધમામૃતવર્ષિની ટી० અ० ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૨૨૭

વસ્ત્રાણિ પરિધાય ' જિણપહિમાણં અચ્ચણં કરેહ ' જિનપ્રતિમાનાં, કામદેવ પ્રતિ-
માનાંમર્ચનં કરોતિ વિવાહવિધિ નિર્વિધન સંપન્નાર્થ મિતિ ભાવઃ ' કરિત્તા ' કૃત્વા
' જેણેવ અંતેરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ' યદૈવાન્તઃપુરં તપ્રૈવો- પાગચ્છતિ ॥સૂ०૨૧॥

દ્રૌપદીચર્ચા

યત્ન—“ જિણપહિમાણં અચ્ચણં કરેહ ” રૂપિ પાઠં સમાશ્રિત્ય ભગવતોઽર્હતઃ
પૂજનં જૈનધર્માનુયાયિભિઃ કર્તવ્યમિત્યાહુસ્તન્મિથ્યાત્વવિલક્ષિતમ્ , અસ્ય પાઠસ્ય
ચરિતાનુવાદરૂપત્વેન વિધાયકત્વાસમ્ભવાત્ । વિધિવાક્યં દ્વિ જિનાજ્ઞાયા બોધક-
ત્વેન વિધાયકં ભવતિ, યથા—ભગવતા વિધેયતયોપદિદ્ધં વૃદ્ધિવાચક્યકં ચતુર્વિધ-
જિન પ્રતિમા કા કામદેવ કી પ્રતિમા કા નિર્વિધન વિવાહકાર્ય કે લિયે
અર્ચન કરતી હૈ અર્ચન કર કે ફિર વહ (જેણેવ અંતે ઉરે તેણેવ ઉવા-
ગચ્છહ) જહાં અતઃપુર થા વહાં ચલી ગઈ ॥ સૂ० ૨૧ ॥

દ્રૌપદી ચર્ચા

જો “જિણપહિમાણં અચ્ચણં કરેહ” રૂપ પાઠકા આશ્રય લેકર પ્રતિ-
માપૂજન કી ઉપયોગિતા કહતે હુએ યહ કહતે હૈ, કિ “ અર્હત ભગવાન
કી પ્રતિમા કી પૂજા જૈનધર્મ કે પાલકોં કો કરના ચાહિયે” યહ ઉનકા
કથન મિથ્યાત્વ કા વિલાસ હી હૈ । વયોં કિ યહ “ જિનપહિમાણં ”
રૂપાદિ વાક્ય ચરિત કા હી અનુવાદક હૈ—અતઃ એસે વાક્ય કિસી
મુખ્ય અર્થ કે વિધાયક નહોં હુઆ કરતે હૈ । ચારિતાનુવાદ સે તો સિર્ફ
જિસ વ્યક્તિ ને જો ૨ આચરણ કિયો હૈ ઉસકા હી બોધ હોતા હૈ । શાસ્ત્ર
વિહિત માર્ગકે નિર્દેશક વિધિવાક્ય હુઆ કરતે હૈ—વયોં કિ કિ એસે
વાક્ય જિન ભગવાન કી આજ્ઞાકે વિધાયક હોતે હૈ । જિસ પ્રકાર ષડ્

પ્રતિમાનું કામદેવની પ્રતિમાનું નિર્વિધને વિવાહકાર્ય સંપન્ન થવાના હેતુથી
અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (જેણેવ અંતેરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ)
અર્ચા રણુવાસ છે તે તરફ જતી રહી. ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રૌપદી અર્ચા

કેટલાક “જિણપહિમાણં અચ્ચણં કરેહ” આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજન-
ની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતાં આ પ્રમાણે કહે છે કે “ અર્હત ભગવાનની
પ્રતિમાનું પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવું જોઈએ ” તેમનું આ
કથન સત્યથી બહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે. કેમકે
આ “ જિનપહિમાણં ” વગેરે વાક્ય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે
એવાં વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને સ્પષ્ટ કરનારાં હોતા નથી. ચરિતાનુવાદથી
તો ફક્ત જે માણસે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનું જ જ્ઞાન થાય તેમ
છે, શાસ્ત્રવિદિત માર્ગને ખતાવનારા તો વિધિ વાક્યો જ થાય છે, જેવી રીતે

संघस्य कर्तव्यं भवति ।

तथा चोक्तम्—समणेण सावणं य अवस्सकायव्वयं हवइ जम्हा ।

अंतो अहोनिस्सस य, तम्हा आवस्सयं नाम ॥ १ ॥ इति (अनुयोगद्वा०)

छाया-श्रमणेन श्रावकेण च अवश्यकर्तव्यकं भवति यस्मात् ।

अन्तेऽहर्निशस्य च तस्माद् आवश्यकं नाम ॥ १ ॥

“ जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा ।

तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओकालं छव्विहं आवस्सयं करेति (अनु०)

छाया-यदिदं श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा ।

तच्चित्तः तम्मना यावद् उभयकालं षड्विधमावश्यकं नाम ॥ २ ॥

आवश्यक कार्यों को प्रतिपादन करने वाले वाक्य जिन प्रभु की आज्ञा के निर्देशक होने से साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघ को उपादेय माने जाते हैं । शास्त्र में भी यही बात कही गई है

‘ समणे ण सावणं य ’ इत्यादि

शास्त्र विहित षट् आवश्यक कर्तव्य चतुर्विध श्रीसंघ को रात्री एवं दिनके अंतिमभागमें अवश्य करन चाहिये । उनके किये बिना मुनि का मुनिपन नहीं और श्रावकका श्रावकपन नहीं । अतः षट् आवश्यक कार्य अवश्य करने योग्य होनेसे आवश्यक रूप से प्रतिपादित हुए हैं ।

“ जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे वा जाव उभओ कालं ” इत्यादि ।

इसलिये जब ये आवश्यक हैं तब चाहे साधु हो या साध्वी हो श्रावक हो या श्राविका हो कोई भी क्यों न हो उसका यह कर्तव्य हो

छ आवश्यक कार्योंनां प्रतिपादन करनारां वाक्यो जून प्रभुणी आज्ञानां निर्देशक होवाने कारणे साधु साध्वी श्रावक श्राविका इयं चतुर्विध संघना भाटे योग्य गणुय छे । शास्त्रमां पणु आ प्रभाणु कडेवामां आव्यु छे—

“ समणेण सावणं य ’ इत्यादि

शास्त्रविहित छ प्रकारना आवश्यक कर्तव्यो चतुर्विध संघने रात्रि तेमज दिवसना अंतिम लागमां योळस पणु आयरवां जेधये, तेनां आयरणु वगर मुनिनुं मुनिपणु नथी अने श्रावकनुं श्रावकपाणु नथी, अेटला भाटे छ आवश्यक कार्य योळस करवा योग्य होवाथी आवश्यक इपथी प्रतिपादित करवामां आव्यु छे,

“ जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ कालं इत्यादि—आ प्रभाणु न्यारे तेओ ‘ आवश्यक ’ छे, त्यारे लवे साधु होय के साध्वी होय तेमज श्रावक होय के श्राविका होय जमे ते केम

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तु-
नामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेयं स्यात् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र खलु प्रतिमायां भगवतोऽर्हतः पूजनं न कृतम्, जैनप्रवचने
प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य षट्कायजीवहिंसासाध्यतया जैन-
धर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं षट्कायहिंसाऽवश्यंभाविनी, एवं च
जाता है कि वह उन्हीं में चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके
इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले—वाक्य को यदि विधेय रूप
से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में सङ्गादि शस्त्र आदि
वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है—अतः उनमें भी पूज्यता आजानी
चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी
विधेय कोटि में मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहाँ प्रतिमा में जो भगवान अर्हत की पूजन नहीं
की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के
विधान का अभाव है और दूसरे—यह प्रतिमा पूजन षट् काय के जीवों
की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन में जिने-
न्द्र द्वारा प्रतिप्रादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का
अभाव है । षट् काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता
है वहाँ सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न होय तेनी ओ इरज थछ पडे छे के ते तेओभां न पोतानु चित्त पशेवीने
भनने तव्वीन करीने तेने जने काणभां अवश्य आथरे.

चरितने अनुवादक इपे जतावनार वाक्यने जे विधेय रूपभां स्वीकारवाभां
आवे तो सूर्याभदेवना चरितभां शस्त्र वगेरे वस्तुओनी पणु पूजनी वात
सांभजवाभां आवे छे. ओथी तेभनाभां पणु पूज्यता आवी नवी जेछओ अने
आ रीते पूजनना पक्षपातीओओ तेभनी पूज पणु विधेयना रूपभां मान्य
करवी जेछओ.

द्रौपदीओ पणु त्यां प्रतिमाभां भगवान अर्हतनु पूजन कथुं नथी
तेनुं कारणु ओ छे के प्रथम तो जैन प्रवचनभां प्रतिमा-पूजननु विधान नथी
अने जीवुं आ प्रतिमा पूजन षट्कायना जेवानी विराधना द्वारा सांपन्न होय
छे, तेथी आ प्रतिमा पूजनभां जेनेन्द्र वडे प्रतिप्रादित धर्म-आत्मकल्याण
साधक रूप सम्यग्-दर्शन वगेरेना अभाव छे. षट्कायना जेवानी विराधनाथी

પ્રાણાનિપાતવિરમણવ્રતિનાં મુનીનાં પ્રતિમાપૂજનોપદેશે સ્વધર્મસ્ય મૂલોચ્છેદઃ સ્યા-
 દેવ । અત એવ-જિનપ્રણીતાગમે પ્રતિમાપૂજાયાવિધિર્નોપલભ્યતે । પ્રતિમાસ્થાપનાર્થે
 ળંગીકાર કરને મેં ઉસ પૂજન કે સમય મેં ષટ્ કાય કે જીવોં કી વિરા-
 ધના જબ અવશ્યંભાવી હૈ તથ ભલા । હમ હસે વિધેય માર્ગ કેસે માન
 સકતે હૈં, ઓર કેસે યહ સ્વીકાર કિયા જા સકતા હૈ કિ હસ પૂજન
 કા કર્તા સચ્ચે ધર્મ કા ઉપાસક હૈ તથા પ્રતિમાપૂજન કો ધર્મ માના
 જાવે તો એક વડા ભારી દોષ યહ ભી આકર ઉપસ્થિત હોતા હૈ કિ સર્વ
 પ્રકાર કે હિંસાદિક પાપોં સે સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજન જબ હસ
 પ્રતિમાપૂજનરૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ કરેંગે તથ વે ભી કારિતાદિરૂપ કરાને
 આદિ રૂપ સે હસકે કર્તા હોને કે કારણ અપને મુનિધર્મ કે મૂલતઃ હી
 વિધ્વંસક માને જાયેંગે । મુનિજન હિંસાદિક સાવધ વ્યાપારોં કે કૃત,
 કારિત એવં અનુમોદના હન ત્રીન કરણ એવં ત્રીન યોગ સે ત્યાગી હુઆ
 કરતે હૈં । જબ યે પ્રતિમાપૂજન રૂપ ધર્મ કા ગૃહસ્થોં કે લિયે વ્યાખ્યાન
 દેંગે તથ ડનકે વ્યાખ્યાન સે પ્રેરિત હો ગૃહસ્થ જન ઉસ ઓર અપની
 પ્રવૃત્તિ ચાલૂ કરને વાલે હોંગે, ઓર ઉસ પ્રકાર કે ડનકે વ્યવહાર સે
 હસ કાર્ય મેં ષટ્કાય કે જીવોં કી વિરાધના હોને સે ઉસ વિરાધના

જે સાધ્ય થાય છે તેમાં તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધાં દુર્લભ છે. એટલા
 માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામાં તે પૂજન કરતી વખતે ષટ્કાયના જીવોની
 વિરાધના ન્યારે ચોક્કસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા
 આધારે માન્ય કરીએ. અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર
 કરીએ કે આ જાતનું પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે ? જે પ્રતિમા
 પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમાં એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકાર-
 નાં હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો ન્યારે આ
 પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ
 કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલતઃ
 વિધ્વંસક ગણાશે. મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવધ વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને
 અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે. ન્યારે તેઓ
 પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનું ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમનાં
 વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આવશ્યક જ અને આ જાતનાં તેમનાં
 આવશ્યકોથી આ કામમાં ષટ્કાય જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને
 કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહા-
 મતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે ? એથી ધર્મ-
 ભાજને ઇચ્છતાં પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમાં જ મોટી ભૂલ કરી

દેવાયતનપ્રતિમાસ્સરામકૂપાદિકરણે તદુપદેશદાને ચ પૃથિવીકાયર્હિસાયા અવ-
શ્યમાવઃ । દેવાયતનાદિકરણે પૂજાઙ્ગતયાસ્નાન પ્રતિમાસ્નપનવસ્ત્રસાલનાદિક-
રણે ચ તદુપદેશદાને ચાપ્કાયવિરાધનમપિ, તથા-પૂજાઙ્ગધૂપદીપારાત્રિકસમ્પા-
દનં ચાગ્નિકાયવિરાધનયા વિના ન સંભવતિ, વાયુકાયર્હિસનં તુ ધૂપદીપારાત્રિકા-

કે કરાને વાલે યે ઉપદેશક મુનિજન માને જાયેગે-તથા इनके अहिंसादि महाव्रत त्रियोग और त्रिकरण विशुद्ध कैसे रह सकेंगे ? अतः लाभ की चाहना में इन विचारों की भूल में ही बड़ी भारी भूल होने से ये अपने धर्म के सच्चे आराधक नहीं माने जा सकेंगे । इसलिये यह बात अवश्य माननी चाहिये कि जिन प्रणीत आगम में प्रतिमापूजन की विधि नहीं पाई जाती है ।

इसी प्रकार प्रतिमा स्थापन, प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाना, मंदिर वगैरह बनवाना एवं उस प्रतिमा की पूजा निमित्त बगीचा तथा कुआ आदि का करवाना ये बातें पृथिवी कायिक जीवों की हिंसा के कारण हैं अतः त्याज्य हैं । इनके बनवाने आदि का जो उपदेश करते हैं वे भी पृथिवीकायिक जीवों की हिंसा से मुक्त नहीं हो सकते हैं । इसी प्रकार पूजन का अंग होने से स्नान, प्रतिमा के अभिषेक तथा पूजन के वस्त्रों के धोने साफ करने में और उसके उपदेश देने में अप्काय के जीवों की विराधना होती है, धूपखेना, दीपक जलाना, आरती उतारना ये सब बातें अग्निकायिक जीवों की विराधना के बिना नहीं हो सकती है अर्थात् इनमें अग्निकायिक जीवों की विराधना अवश्यंभाविनी है ।

બેસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ. એટલા માટે આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી બોધએ કે ‘ જીન પ્રણીત ’ આગમમાં પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી.

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મંદિર વગેરે બનાવવાં અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉદ્યાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર કરાવવાં એ પૃથ્વી-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય છે. તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વી-કાયિક જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી. આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન, પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામાં અને તેના ઉપદેશમાં પણ અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે. ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સંભવી શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમાં અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

દિભિશ્ચામરાદિવીજનૈર્નૃત્યગીતવાદિત્રૈશ્વ સવિશદં ભવતિ, વનસ્પતિકાયવિરાધનં ચ પ્રતિમાપૂજાનિમિત્તકેડનન્તકાયકોમલવિવિધફલપુષ્પવ્રસંપ્રદે નિયતં ભવતિ । પૃથિ-
વીકાયાદ્યાશ્રિતાં बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसंगोपितशरीरा द्वीन्द्रि-
यादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःख-
स्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्वछितपतिता म्रियन्ते ।

ધૂપકેધું આ સે, દીપ તથા આરતી કી જ્યોતિ સે ચમર આદિ કે ઢોરને સે, નૃત્ય કરને સે, ગીત ગાતે સમય મુલ સે નિકલે હુઃ ગર્મ વાયુ સે, એવં વાજોં કે વજાને સે વાયુકાયિક જીવોં કી વિરાધના હોતી હુઈ સ્પષ્ટ માલૂમ દેતી હૈ । વનસ્પતિ કાયિક જીવોં કી વિરાધના મી હસ સમય હસ પ્રકાર સે હોતી હૈ, કિ-મૂર્તિ પૂજન કે લિયે ઉસકે પૂજક અનન્ત કાયિક એસે કોમલ અનેક પ્રકાર કે ફલ, પુષ્પ ઓર પત્રોં કા સંગ્રહ જો કરતા હૈ હસ પ્રકાર હસ પૂજન મેં વ્રસકાયિક જીવોં કો હિંસા કા આરંભ સ્પષ્ટ દેખા જાતા હૈ । તથા વ્રસ કાયિક જીવોં કા મી હસકે નિમિત્તહનન હોતા હૈ ઓર વહ હસ પ્રકાર સે-કિ જબ પૃથિવીકાયિકાદિ જીવોં કા આરંભ પ્રતિમા આદિ કે નિર્માણ મેં યા દેવ આયતન (મન્દિર) આદિ કે કરાને મેં કિયા જાતા હૈ તો ઉસ સમય ઉસકે આશ્રિત જો બહુત સે અનેક જાતિ કે નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિ સે મયશીલ તથા સંગોપિત શરીરવાલે એસે દ્વીન્દ્રિયાદિકસે લેકાર પંચેન્દ્રિય તક જિતને મી વ્રસ જીવ રહતે હૈં વે સવ કે સવ છેદન, મેદન, એવં સ્વાશ્રય કે વિનાશ જનિત અનંત દુઃખોં સે સંતપ્ત હોકર

થવાની જ છે. ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢાળવાથી તેમજ વાળંચો વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે. વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા-
ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનન્ત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતનાં ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠાં કરે છે આમ આ પૂજામાં વ્રસ-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે. વ્રસ-કાયિક જીવોનું પણ તેને લીધે હતન હોય છે. જેમકે જ્યારે પૃથ્વી-કાયિક વગેરે જીવોને આરંભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તેા દેવ-આયતન (મન્દિર) વગેરે બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી ખીકણ તેમજ સંગો-
પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માંડીને પંચેન્દ્રિય સુધીના જેટલાં વ્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનન્ત

અનગારધર્માનુવચિણી ડી૦ અ૦ ૧૬ દ્રોણીચર્ચા

૨૦૬

ધર્મસ્ય લક્ષણં દિ-જિનાદ્વાપયોઽયપ્રવૃત્તિક્ત્વમ્, “ આણાએ મામગં ધમ્મં ”
 इति भगवद्वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भग-
 वता-“ अणगारधम्मो ताव ” इत्यादिना सर्वपाणातिपातविरमणादि-रात्रिभो-
 जनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिदं कथितम्—

‘अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मं पणत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उव-
 द्विए निगंथे वा निगंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ’ (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुष्मन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्तः ।
 एतस्य धर्मस्य ‘ शिक्षायामुपस्थितः ’=आराधकः, निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा विहर-
 और वहां से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं ।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृत्ति करना यही धर्म का लक्षण है । भग-
 वान का भी आचाराङ्गसूत्र अ- ६ उ- २ सू- ८ में यही कथन है
 “ आणाए माમગં ધમ્મં ” इति । प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश
 दिया उस समय उन्होंने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-
 १ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म । “ अन-
 गार धम्मो ताव ” इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि
 से विरक्त होना यहां से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना
 यहां तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है
 उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि “ अयमाउसो
 अणगारसामइए धम्मं पणत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवद्विए
 निगंथे वा निगंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ” हे
 आयुष्मन् ! यह अनगारसामायिक-मुनियों का सिद्धान्त विषयक

દુઃખોથી સંતપ્ત થઈને અને ત્યારથી પડી જઈને, જાણ્યું થઈને અંતે મૃત્યુને ભેટે છે.

જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવું એ જ ધર્મનું લક્ષણ છે. આચારાંગ
 સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ માં પણ લખાવેલા આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે “ આણાએ
 મામગં ધમ્મં ” પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે
 આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર-ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર
 મુનિનો ધર્મ. “ અનગારધમ્મો તાવ ” વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરા-
 ધના વગેરેથી વિરક્ત થવું અહીંથી માંડી રાત્રિ-ભોજનનો સંપૂર્ણપણે ત્યાગ
 કરવો અહીં સુધી જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામાં
 આવ્યું છે. ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમાં તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે—
 (અયમાઉસો અણગારસામઇએ ધમ્મે પણત્તે, એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાએ, ઉવદ્વિએ
 નિગંથે વા નિગંથી વા વિહરમાણે આણાએ આરાહએ ભવઇ) હે આયુષ્મન્ !

માણ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । એતસ્ય ધર્મસ્યારાધક એવાજ્ઞાયા આરાધક
શ્ચયુક્ત્વાડ્ઙ્ગૈવ ધર્મસ્ય પ્રકાશકતયા મૂલમિતિ બોધિતમ્ । તદનન્તરં ચ ભગવતા-

“અગારધર્મં દુવાલસવિહં આઙ્કસ્વઃ । તં જહા—પંચ અણુઘ્વયાઈ, તિણિ-
ગુણઘ્વયાઈ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઈ” ઇત્યાદિના દ્વાદશવિધં ધર્મં નિરૂપ્ય કથિતમ્ ।

‘અયમાસો ! અગારસામણ્ય ધર્મ્મે પળ્લત્તે ’ એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવ-
ટ્ઠિણ સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવઃ” ઇતિ ।

ધર્મ કહા ગયા હૈ—અર્થાત્ મુનિયોં કા યહ ધર્મ કહા ગયા હૈ । હસ
ધર્મ કી શિક્ષા મેં જો ઉપસ્થિત હોતા હૈ અર્થાત્ જો હસ ધર્મ કી-
આરાધના કરતે હૈ—ચાહે વે સાધુ હૈં ચાહે સાધ્વી હૈં કોઈ ભી હો યે
જિનેન્દ્ર ભગવાન કી આજ્ઞા કે આરાધક હોતે હૈં । હસ ધર્મ કી આરા-
ધના કરનેવાલા જીવ હી જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા કા આરાધક માના ગયા હૈ
હસ કથન સે “ જિસ ઘાત મેં ભગવાન કી આજ્ઞા હો વહી ધર્મ કા મૂલ
હૈ અન્ય આજ્ઞા વિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હૈ ” યહ ઘાત સમજાઈ ગઈ હૈ હસ કે
બાદ ભગવાન ને “ અગારધર્મં દુવાલસવિહં આઙ્કસ્વઃ તં જહા—પંચ
અણુઘ્વયાઈ, તિણિગુણઘ્વયાઈ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઈ” હસ સૂત્ર સે યહ
પ્રકટ કિયા હૈ કિ ગૃહસ્થ કા ધર્મ ૧૨ પ્રકાર કા હૈ ૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણ-
વ્રત ઓર ૪ શિક્ષાવ્રત । હસ પ્રકાર સે કથન કર “ અયમાસો અગાર-
સામણ્ય ધર્મ્મે પળ્લત્તે એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ, ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ
વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવઃ ” ઇતિ—હે

આ અનગાર સામાયિક મુનિઓનો સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામાં આવ્યો છે
એટલે કે આ મુનિઓનો ધર્મ કહેવામાં આવ્યો છે. આ ધર્મની શિક્ષામાં જે
ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે—ભલે તેઓ સાધુ
હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના
આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જ જીનેન્દ્રના આરા-
ધક ગણાય છે. આ કથનથી એ વાત સમજવવામાં આવી છે કે જે વાતમાં
ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજું આચરણ અધર્મ
છે. ત્યારપછી ભગવાન વડે “ અગારધર્મં દુવાલસવિહં આઙ્કસ્વઃ તં જહા પંચ
અણુઘ્વયાઈ, તિણિ ગુણઘ્વયાઈ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઈ ” આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ
કરવામાં આવ્યું છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે—૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણવ્રત
અને ૪ શિક્ષાવ્રત. આ રીતે “ અયમાસો અગારસામાણ્ય ધર્મ્મે પળ્લત્તે એયસ્સ
ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે

અગારાધર્મમૃત્તવર્ણી ટી. ૧૦ ૧૬ દ્વીપવીચર્યા

૩૦૫

છાયા—અયમાયુષ્મન્ ! અગારસામયિકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, એતસ્ય ધર્મસ્ય શિક્ષાયામુપરિથતઃ’=આરાધકઃ શ્રમણોપાસકો વા શ્રમણોપાસિકા વા વિહરમાણા આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । ઇતિ ॥

અત્રાપિ એતસ્ય દ્વાદશવિધસ્ય ધર્મસ્યારાધક એવ શ્રમણોપાસક આજ્ઞાયા આરાધક ઇતિ બોધયતાઽઽજ્ઞૈવ ધર્મસ્ય મૂલમિતિ બોધિતમ્ ।

આચારાઙ્ગસૂત્રેઽપિ મથમાધ્યયને તૃતીયોદેશે ભગવતાઽભિહિતમ્—“ જાણ સદ્દાણિ કલંતે તમેવ મણુપાલિજ્ઞા-વિજ્ઞહિતા વિસોત્તિયં પુવ્વસંજોગં । પણયા વીરા મહાવીરિં । લોગં ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભયં ।” ઇતિ

આયુષ્યમન્ ! યહ ગૃહસ્થ કા ધર્મ કહા ગયા હૈ । ઇસ ધર્મ કી શિક્ષા મૈ ઉપસ્થિત-શ્રમણોપાસક-મુનિજનોં કૈ ભક્ત એસે શ્રાવકજન અથવા શ્રાવિકાજન તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કૈ આરાધક માને જાતે હૈ । ઇસ સૂત્ર મૈં બી યહી પ્રકટ કિયા ગયા હૈ કિ ઇસ ૧૨ પ્રકાર કૈ ધર્મ કા આરાધક હી શ્રમણોપાસક-શ્રાવક, શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા આરાધક હૈ ઇસ પ્રકાર સમજાનેવાલે શ્રી જિનેન્દ્ર દેવ ને આજ્ઞા હી ધર્મ કા મૂલ હૈ યહ સમજાયા હૈ ।

આચારાંગ સૂત્ર કૈ પ્રથમ અધ્યયનકૈ તૃતીય ઉદેશે મૈં ભગવાન ને યહ કહા હૈ “ જાણ સદ્દાણિ કલંતે તમેવ મણુપાલિજ્ઞા વિજ્ઞહિતા વિસોત્તિયં પુવ્વસંજોગં । પણયા વીરા મહાવીરિં લોગં ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભયં” કિ જિસ શ્રદ્ધા ઉત્સાહ સે “અહંત પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત સમ્યગ્દર્શનાદિક મોક્ષકૈ માર્ગ હૈ યા નહીં હૈ” ઇમ પ્રકાર સર્વ

આણાણ આરાહણ ભવહ ” હે આયુષ્મન્ત ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ’ બતાવવામાં આવ્યો છે. આ ધર્મની શિક્ષામાં ઉપરિથત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્તજન-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે. આ સૂત્રમાં પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે. આ રીતે સમજાવનારા શ્રી જિનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનું મૂળ છે આમ સમજાવ્યું છે.

આચારાંગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદેશકમાં ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—“ જાણ સદ્દાણિ કલંતે તમેવ મણુપાલિજ્ઞા વિજ્ઞહિતા વિસોત્તિયં પુવ્વસંજોગં । પણયા વીરા મહાવીરિં લોગં ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભયં ” હે જો શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી “અહંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ ” આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શંકા તેમજ

યયા શ્રદ્ધયા-સમ્યક્ત્વેન 'વિસોત્તિયં' વિસોતસિકાં=શઙ્કાં-સર્વશઙ્કાં દેશ-શઙ્કાં ચેત્યર્થઃ, યથા- 'કિમાર્હતો મોક્ષમાર્ગોઽસ્તિ ન વા' ઇતિ સર્વાગમવિષયિકા શઙ્કા સર્વશઙ્કા, તથા- "કિમપ્કાયાદયો જીવાઃ સન્તિ ન વા" ઇતિ દેશશઙ્કા । તથા 'પુવ્વસંયોગં' પૂર્વસંયોગં=માતાપિત્રાદિસમ્બન્ધં ધનધાન્યસ્વજનાદિસમ્બન્ધં વા, દ્વદ્વપલક્ષણં-તેન પશ્ચાત્સંયોગમપિ શ્વશુરાદિકૃતં, 'વિજહિતા' વિદાય=પરિત્યજ્ય 'ણિક્વલંતે' નિષ્ક્રાન્તઃ=પ્રવ્રજિતઃ । 'તં' તાં શ્રદ્ધામ્, 'અણુપાલિજ્ઞા એવ' અણુપાલયેદેવ-નિરતિચારં રક્ષેદિત્યર્થઃ ।

અથ- 'પરિશીલિતમાર્ગોઽનુગમ્યતે' ઇતિ લોકરીત્યા શિષ્યશ્રદ્ધાદદ્વીકરણાય પૂર્વમહાપુરુષાચરિતોઽયં માર્ગ ઇતિ ।

વીરાઃ-માવવીરાઃ સંયમાનુષ્ઠાને વીર્યવન્તઃ 'મહાવીર્હિ' મહાવીર્યિ=મહાવીર્યિઃ-સમ્યગ્દર્શનાદિલક્ષણો મહામાર્ગઃ મહાપુરુષસેવિતત્વાત્, તાંમહાવીર્યિ આગમ વિષયક સર્વશંકા કા તથા "અપ્ કામિકાદિક જીવ હૈં યા નહીં" ઇસ પ્રકાર કી દેશશંકા ઓર માતા પિતા આદિ કે સાથ કે સંબંધરૂપ પૂર્વ સંયોગ એવં ધન, ધાન્ય, સ્વજન આદિ સંબંધ, ઉપલક્ષણ સે શ્વશુર આદિરૂપ પ્રજ્ઞાત્ સંયોગ કા પરિત્યાગ કર યહ જીવ સંસાર આદિ પદાર્થો કો હેય સમજ્ઞા ઉનસે સર્વથા વિરક્ત હો જાતા હૈં ઉસ શ્રદ્ધા કા અતિચાર આદિ કોં સે રક્ષા કરની ચાહિયે-ઉસ શ્રદ્ધા કા અતિચાર રહિક હોકર મુનિ કો પાલન કરના ચાહિયે । જો માર્ગ પરિશીલિત હોતા હૈં ઉસ પર અનેક પ્રાણી ચલતે હૈં યહ લૌકિકરીતિ હૈં । ઇસીરીતિ કે અનુસાર શિષ્યોં કી શ્રદ્ધા કો દૃઢ કરને કે લિયે "યહ માર્ગ પૂર્વ મેં મહાપુરુષોં દ્વારા સેવિત કિયા ગયા હૈં" હમેં સમજ્ઞાને કે લિયે સૂત્રકાર "પણયા વીરા મહાવીર્હિ" ઇસ અંશ કા કથન કરતે હૈં

"અશ્કાયિક વગેરે જીવો છે કે નથી" આ બાતની દેશ શંકા અને માતા પિતા વગેરેની સાથેના સંબંધ રૂપ પૂર્વ સંયોગ અને ધન, ધાન્ય, સ્વજન વગેરે સંબંધ ઉપલક્ષણથી 'શ્વશુર' વગેરે રૂપ પશ્ચાત્ સંયોગનો પરિત્યાગ કરીને આ જીવ સંસાર વગેરે પદાર્થોને હેય સમજીને તેમના તરફ સંપૂર્ણપણે વિરક્ત થઈ બચ છે તે શ્રદ્ધાની અતિચાર વગેરેથી રક્ષા કરવી જોઈએ. તે શ્રદ્ધાનું પાલન મુનિએ અતિચાર વગર થઈને કરવું જોઈએ જે માર્ગ પરિશીલિત હોય છે તે તરફ ઘણાં પ્રાણીઓ બચ છે, આ લૌકિક પ્રથા છે. આ પ્રથા પ્રમાણે શિષ્યોની શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવા માટે "આ માર્ગ મહા પુરુષો વડે સેવવામાં આવ્યો છે." આ બાત સમજાવવા માટે સૂત્રકાર "પણયા વીરા મહાવીર્હિ" આ વચનને ઠાંકે છે. વીર જે પ્રકારના હોય છે-

અતઃપ્રાર્થનામૃતવર્ષિણી ટીકા અંક ૧૬ દ્રોણદીક્ષણી

૩૦૭

‘પ્રણયા’ પ્રણતા: = પ્રાપ્તા: કઠિનતરતપ:સંયમારાધનેન પ્રાપ્તવન્તે इत्यर्थः । अयमेव मार्गो मोक्षावाप्तिकरोऽशेषसंयमिसेवितत्वात्, तीर्थङ्करादिमहापुरुषा अपि मार्गमिममनुशीलितवन्त इति विश्वसनीयतया शिष्याणां श्रद्धापूर्वकं प्रवृत्तिर्यथा स्यादिति भावः ।

કથિન્મન્દધી: શિષ્યોઽનેકદૃષ્ટાન્તૈર્વૌધ્યમાનોઽપિ અપ્કાયાદિજીવેષુ ન શ્રદ્ધાતીતિ તમુદિશ્ય કથયતિ—હે શિષ્ય ! તવ મતિર્યદપિ અપ્કાયજીવવિષયે ન

વીર દો પ્રકાર કે હોતે હેં ? દ્રવ્યવીર ઓર દસરે ભાવવીર । સંયમ કે અનુષ્ઠાન કરને મેં જો શક્તિસંપન્ન હેં વે ભાવવીર હેં । યે જીવ સમ્યગ્દર્શન આદિ લક્ષણરૂપ હસ મહાવિસ્તૃતમાર્ગ કો કિ જો મહાપુરુષોં દ્વારા સેવિત હુઆ હૈ કઠિનતર તપ ઓર સંયમ કી આરાધના સે પ્રાપ્ત કર લિયા કરતે હેં । કહનેકા સાર યહો હૈ કિ ભાવવીર યહી અપને ચિત્તમેં વિચાર કિયા કરતે હેં કિ સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્ચારિત્ર ઓર સમ્યગ્તપ રૂપ હી માર્ગ હૈ ક્યોં કિ હસી સે મુક્તિ કી પ્રાપ્તી હોતી હૈ—હસીલિયે હસ માર્ગકા સમસ્ત સંયમીજીવોને પૂર્વ મેં સેવન કિયા હૈ ઓર તો કયા સ્વયં તીર્થંકર પ્રભુ ને બી હસી માર્ગ કી પરિશીલના કી હૈ । હસલિયે હસ માર્ગ મેં પ્રવૃત્તિ સર્વહિત વિધાયી હૈ હસ પ્રકાર યહ માર્ગ વિશ્વાસ યોગ્ય હોને સે શિષ્યજન બી શ્રદ્ધાપૂર્વક હસમેં પ્રવૃત્તિ કરેં ।

કોઈ મન્દબુદ્ધિવાલા શિષ્ય અનેક દૃષ્ટાન્તો દ્વારા સમજાયે જાને પર બી યદિ અપ્કાય આદિ જીવોં કી શ્રદ્ધા સે રહિત હોતા હૈ તો ઉસે

૧ દ્રવ્ય-વીર, ૨ ભાવ-વીર. સંયમના અનુષ્ઠાનમાં જે શક્તિશાળી છે તે ભાવ વીર છે. આ યથા જીવે સમ્યાગ્-દર્શન વગેરે લક્ષણ રૂપ આ વિસ્તૃતમાર્ગને કે જે મહાપુરુષો વડે સેવવામાં આવ્યું છે—કહણ તપ અને સંયમની આરાધનાથી મેળવી લે છે. કહેવાની મતલબ એ છે કે ભાવ-વીરો પોતાના મનમાં આ પ્રમાણે જ વિચારો કરતા રહે છે કે ખરી રીતે સમ્યાગ્ જ્ઞાન, સમ્યાગ્ દર્શન, સમ્યાગ્ ચારિત્ર રૂપ જ માર્ગ છે કેમકે મુક્તિની પ્રાપ્તિ એનાથી જ થાય છે. એટલા માટે જ પહેલાં થઈ ગયેલા બધા જીવોએ આ માર્ગનું જ અનુસરણ ક્યું હતું. તીર્થંકર પ્રભુએ જાતે પણ આ માર્ગની જ પરિશીલતા કરી છે. એથી આ માર્ગમાં પ્રવૃત્ત થવું તે બધી રીતે હિતાવહ છે. આ પ્રમાણે આ માર્ગ વિશ્વસનીય હોવા બદલ શિષ્યો પણ શ્રદ્ધા રાખીને તેમાં પ્રવૃત્ત થાય.

કોઈક મંદ બુદ્ધિ ધરાવનાર શિષ્ય પણ દૃષ્ટાંતો વડે સ્પષ્ટ કરવામાં આવવા છતાં પણ જે અપ્કાય વગેરે જીવોની શ્રદ્ધાથી રહિત હોય છે તો

परिस्फुरति, तद्विषये विशेषज्ञानाभावात्, तथापि भगवदाज्ञया श्रद्धा नितरां विधेयेत्याशयेनाह—“ लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ” इति ।

“ लोगं ” लोकम् अत्र लोकशब्देन प्रकरणवशादप्काय लोक एव गृह्यते, तमप्कायलोकं, च शब्देन अन्यांश्चाप्कायाश्रितान् जीवान् “ आणाए ” आज्ञया तीर्थंकर वचनेन “ अभिसमेच्चा ” अभिसमेत्य अभिमुख्येन सम्यग्ज्ञात्वा, अप्कायादयो जीवाः सन्तीत्येवमवबुध्येत्यर्थः, “ अकुतोभयं ” नास्ति कुतश्चित्

समझानेके लिये सूत्रकार कहते हैं कि हे शिष्य ! तुम्हारी बुद्धि अप्कायिक आदि जीवोंकी श्रद्धा करनेमें उन विषयक विशेषज्ञानके अभावसे यदि समर्थ नहीं है, तो भी भगवान् की आज्ञा से तुम्हें उनके विषय में अपनी श्रद्धा को दूषित नहीं होने देना चाहिये—अर्थात् भगवान् की आज्ञा प्रमाण मानकर तुम्हें उनके विषय में अपनी अतिशय श्रद्धा जाग्रत करनी चाहिये । सूत्रकार इसी अभिप्राय से कहते हैं कि “ लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ” इति । अप्काय रूप लोक को तथा “ च ” शब्द से अन्य अप्काय के अश्रित जीवों को तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा से अच्छी तरह जानकर उनकी आज्ञानुसार उनका अस्तित्व मानकर आत्मकल्याण के अभिलाषी मुनियों को संयम का पालन करना चाहिये । सूत्रस्थलोक शब्द, यहां प्रकरण के वश से अप्काय का बोधक है । “ च ” शब्द से तदाश्रित अन्य जीवों का ग्रहण हुआ है । “ अकुतोभयं ” शब्द का अर्थ संयम है कहीं से भी किसी

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય ! તમારી બુદ્ધિ અપ્કાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામાં તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે ને સમર્થ નથી તેા પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મંદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમાં વધારે શ્રદ્ધા બાંધત કરવી જોઈએ. સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે “ લોગં ચ આણાએ અભિસમેન્ચા અકુતોભયં ” ઇતિ । અપ્કાય ૩૫ લોકને તેમજ ‘ ચ ’ શબ્દથી બીજા અપ્કાયાશ્રિત જીવોને તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનું આસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ધ્યેયનારા મુનિઓએ સંયમનું પાલન કરવું જોઈએ. સૂત્રમાં આવેલો ‘ લોક ’ શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્કાયનો વાચક છે. ‘ ચ ’ શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનું ગ્રહણ થયું છે. ‘ અકુતોભયં ’ શબ્દનો અર્થ સંયમ છે. કોઈ પણ જગ્યાએથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જોનાથી ભય હોતો નથી તે અકુતોભય-સંયમ

કેનાપિ પ્રકારેણ પ્રાણિનાં ભયં યસ્માત્ સોઽકુતોભયઃ=સંયમસ્તમ્, “અણુપાલિજ્ઞા” અણુપાલયેત્ इति પૂર્વોક્તેન સમ્બન્ધઃ । સર્વદા જીવાભિરક્ષણરૂપસંયમાણુપાલને સાવધાનતયા યત્નઃ કાર્યઃ इत्यર્થઃ ।

અત્ર “ જાણ સદ્વાણ નિઃકલંતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા વિજહિતા વિસોત્તિયં પુન્નસંજોગં ” इत्यનેન શ્રદ્ધાયા આરાધ્યત્વે જિનાજ્ઞાયાઃ સદ્ભાવાત્ શ્રદ્ધાયા ધર્મસ્ત્વં સિદ્ધમ્ ।

શ્રદ્ધાદઢીકરણમપિ ચ ધર્મસ્તદર્થ “ પળયા વીરા મહાવોહિ ” इति ભગવદુપ-
દેશસ્ય સદ્ભાવાત્ ।

“ લોગં ચ અણાણ અભિસમેચ્ચા ” इत्यનેનાજ્ઞાયાઃ ષટ્કાયજીવતત્ત્વજ્ઞાન-
હેતુત્વેન વર્ણનાત્ તત્ત્વજ્ઞાનસ્ય ધર્મત્વમ્ ।

મો પ્રકાર સે જીવોં કો જિસસે ભય નહીં હોતા હૈ વહ અકુતોભય-
સંયમ હૈ ભાવ હસકા યહી હૈ કિ આત્મ કલ્યાણ કે હચ્છુક મુનિયોં કો
જીવોં કે સંરક્ષણ રૂપ સંયમ કી આરાધના કરને મેં સાવધાનતા પૂર્વક
પ્રયત્નશીલ રહના ચાહિયે । યહાં “ જાણ સદ્વાણ નિઃકલંતે તમેવમણુપા-
લિજ્ઞા, વિજહિતા વિસોત્તિયં પુન્નસંજોગં ” હસ સૂત્રાંશ સે યહ યાત
સમજાઈ ગઈ હૈ કિ શ્રદ્ધા કી આરાધના મેં જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા કા સદ્ભાવ
હૈ અતઃ વહાં ધર્મ હૈ । અપિ ચ શ્રદ્ધા કી દઢતા કરના યહ મો ધર્મ હૈ ।
હસી નિમિત્ત “ પળયા વીરા મહાવોહિ ” યહ ભગવાન કા ઉપદેશ હૈ ।

“ લોગં ચ અણાણ અભિસમેચ્ચા ” હસ સૂત્રાંશ સે યહ પ્રકટ હોતા
હૈ કિ જબ જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા ષટ્ કાયિક જીવોં કે વાસ્તવિક જ્ઞાન
હોને મેં હેતુરૂપ સે વર્ણિત હુઈ હૈ તો હસ સ્થિતિ મેં તત્ત્વજ્ઞાન ધર્મ હૈ ।

છે. મતલબ એ છે કે આત્મકલ્યાણ ઇચ્છનારા મુનિઓને જીવોની રક્ષા રૂપ
સંયમની આરાધના કરવામાં સાવધાન થઈને પ્રયત્ન કરતાં રહેવું જોઈએ. અહીં
“ જાણ સદ્વાણ નિઃકલંતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા, વિજહિતા વિસોત્તિયં પુન્નસંજોગં ”
આ સૂત્રાંશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે શ્રદ્ધાની આરાધનામાં
જીનેન્દ્રની આજ્ઞાનો સદ્ભાવ છે એટલા માટે તેજ ધર્મ છે. અને શ્રદ્ધાને
મજબૂત બનાવવી તે પણ ધર્મ છે. આ નિમિત્તે જ “ પળયા વીરા મહાવોહિ ”
આ ભગવાનનો ઉપદેશ છે.

“ લોગં ચ અણાણ અભિસમેચ્ચા ” આ સૂત્રાંશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ થાય
છે કે જ્યારે જીનેન્દ્રની આજ્ઞા ષટ્કાયિક જીવો વિષે વાસ્તવિક જ્ઞાન કરાવવા
માટે જ કરવામાં આવી છે ત્યારે આવી પરિસ્થિતિમાં તત્ત્વજ્ઞાન ધર્મ છે.

‘અકુતોભયં’ इत्यस्य-“अणुपालिज्जा” इत्यनेनान्वयाद् अकुतोभयं-संयमम् अनुपालयेदित्यपि भगवदाज्ञैव, तथा च संयमस्याऽऽराध्यतया विधानात् संयमस्य धर्मत्वं बोध्यम् ।

अपरं च-उत्तराध्ययनसूत्रे-“धम्माणं कासवो मुहं” इत्युक्तम् “धम्माणं” धर्माणां श्रुतधर्माणां चारित्रधर्माणां च “कासवो” काश्यपः काश्यपगोत्रीयः श्रीमहावीरवर्धमानस्वामी “मुहं” मुखं वक्ता वर्तते ।

अहिंसादो खलु भगवतोऽर्हत आज्ञा वर्तते, पश्यागमेषु । यथा-आचाराङ्गसूत्रे-

“से वेमि-जे य अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो, ते सव्वेवि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पणण्वेति एवं परूवेति—

‘अकुतोभयं’ इस पद का “अणुपालिज्जा” इस क्रियापद के साथ अन्वय करने से यह अर्थ होता है कि अकुतोभयरूप संयम का पालन करना चाहिये, यह भी जब भगवान की आज्ञा ही है तो इससे यह चान स्पष्ट हो जाती है कि भगवान की आज्ञा से संयम आराधन करने लायक होने से धर्म रूप है । अपरं च-उत्तराध्ययन सूत्र में “धम्माणं कासवो मुहं” यह कहा है इसका भाव यह है कि श्रुत एवं चारित्र धर्मों के मुख-वक्ता-काश्यप गोत्रीय श्री महावीर वर्धमान स्वामी हैं । देखो उन्होंने ने आगमों में अहिंसादिक महाव्रतों के पालने का मुमुक्षुओं=मोक्षाभिलाषियों के लिये इस प्रकार आज्ञा प्रदान की है “से वेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे वि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पणण्वेति एवं परूवेति” सव्वे

અકુતોભયં” આ પદનો ‘અણુપાલિજ્જા’ આ ક્રિયાપદની સાથે અન્વય કરવાથી આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે કે અકુતોભય રૂપ સંયમનું પાલન કરવું જોઈએ. આ પણ ભગવાનની જ આજ્ઞા છે તે એનાથી આ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે કે ભગવાનની આજ્ઞાથી ‘સંયમ’ આરાધના યોગ્ય હોવાથી ધર્મરૂપ છે. અને વળી ‘ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર’ માં “ધમ્માણં કાસવો મુહં” આ પ્રમાણેનો ઉલ્લેખ છે. એનો અર્થ એમ થાય છે કે શ્રુત અને ચારિત્ર ધર્મોના મુખ્ય-વક્તા-કાશ્યપ ગોત્રીય શ્રી મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી છે. તેઓશ્રીએ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોના પાલન કરનારા મોક્ષ ઇચ્છનારા લોકોને માટે આગ-મોમાં આ જાતની આજ્ઞા કરી છે કે:-

“સે વેમિ-જે ય અતીતા જે ય પડુવન્ના જે ય આગમિસ્સા અરહંતા ભગવંતો તે સવ્વે વિ એવમાઈક્ખંતિ એવં ભાસંતિ એવં પણ્ણવેતિ એવં પરૂવેતિ સવ્વે

સર્વે પાણા, સર્વે ભૂયા, સર્વે જીવા, સર્વે સત્તા ન હંતવ્યા ન અજ્ઞા-
વેયવ્યા, ન કિલાયવ્યા, ન ઉદ્ધવેયવ્યા ।

एष धम्मे सुद्धे णितिए सासए, समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ।

आर्हतधर्मएव श्रद्धेय इति बोधयितु श्रीसुधर्मास्वामीमाह-“ से वेमि ”
इत्यादि । तीर्थंकरैः स्वस्वशिष्येभ्यो यत् सम्यक्त्वमुक्तं तदहं ब्रवीमि । यद्वा-
‘ से ’ इत्यस्य ‘ स ’ इतिच्छाया । येन मया भगवतः श्री वर्धमानस्वामिनस्तीर्थ-
करस्य सकाशे तद्वचनतरतत्त्वज्ञानं लब्धं, सोऽहं ब्रवीमि ।— भगदुक्तार्थमेव
कथयामि, तस्मान्मम वाक्यं श्रद्धेयमितिभावः ।

પાણા, સર્વે ભૂયા, સર્વે જીવા, સર્વે સત્તા ન હંતવ્યા, ન અજ્ઞાવેય-
વ્યા, ન પરિધેત્તવ્યા, ન પરિતાવેયવ્યા ન કિલામેયવ્યા, ન ઉદ્ધવેયવ્યા ।
एष धम्मे सुद्धे णितिए समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ” (आ. सू. अ-
४ उ. १ सू. १) श्री सुधर्मा स्वामी इस सूत्र द्वारा जम्बूस्वामी को
यह समझाते हैं कि अर्हतप्रभु द्वारा प्रतिपादित धर्म ही श्रद्धा करने
योग्य हैं-वे इसमें कहते हैं कि तीर्थंकर देवों ने अपने २ शिष्यों के
लिये जिस सम्यक्त्व का कथन किया है वही तत्त्व उन तीर्थंकर प्रभुके
वचनों द्वारा श्रवण कर मैं तुम्हें समझाता हूँ अर्थात् मैं अपनी निजी
कल्पना से इस विषय में कुछ भी न कह कर जो कुछ तुम्हें समझाऊँगा
वह तीर्थंकर प्रभु की मान्यतानुसार ही समझाऊँगा अतः इस में संदेह
के लिये थोड़ी सी भी जगह नहीं है-इसलिये इस मेरे कथन का मूल-
स्रोत जब श्री तीर्थंकर प्रभु का उपदेशश्रवण है तब यह श्रद्धेय-श्रद्धा
करने योग्य आवश्यक है भगवान् का यह आदेश है-कि जितने भी

પાણા, સર્વે ભૂયા, સર્વે જીવા, સર્વે સત્તા ન હંતવ્યા, ન અજ્ઞાવેયવ્યા, ન
પરિધેત્તવ્યા, ન પરિતાવેયવ્યા, ન કિલામેયવ્યા, ન ઉદ્ધવેયવ્યા । एष धम्मे सुद्धे
णितिए समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ” (आ. सू. अ. ४ उ. १ सू. १)
श्री सुधर्मा स्वामी आ सूत्र वडे श्री जम्बू स्वामीने आ प्रमाणे समझवे छे
के अर्हत प्रभु वडे प्रतिपादित धर्म आ श्रद्धेय छे, तेओ आ सूत्रमां कडे छे
के तीर्थंकर देवोओ पोतपोताना शिष्यो माटे के सम्यक्त्वनुं निइपणु कथुं छे
ते आ तत्त्व तीर्थंकर प्रभुना मुअथी श्रवणु कथां आह हुं तमने समझवी रह्यो
छुं. ओटवे के हुं पोतानी भेणे आमां कंधं पणु उमेथां वगर तीर्थंकर प्रभुनी
मान्यता मुअअ तमने समझवीश. ओथी आ मां शंकांने माटे सडेअ पणु
स्थान नथी. आ प्रमाणे न्यारे भारा कथनो मूण स्रोत श्री तीर्थंकर प्रभुनुं
उपदेश श्रवणु छे तयारे ते श्रद्धेय आ छे. भगवान्नी आ प्रमाणे आज्ञा छे के

મગ્ધદુક્તાર્થમાહ-“ જે ય અતીતા ” ઇત્યાદિ । યે ચ અતીતાઃ=અતીતકાલિકાઃ, યે ચ ‘પહુળ્પક્ષા’ પ્રચ્યુત્પન્નાઃ=વર્તમાનકાલિકાઃ પશ્ચમરતેષુ પશ્ચરતેષુ પશ્ચમદાવિદેહેષુ વર્તમાનાઃ, યે ચ “ આગમિસ્મા ” આગામિનઃ-ભવિષ્યત્કાલભાવિનઃ, તે સર્વેઽપિ અર્હન્તો મગ્ધવન્તઃ એવં=વક્ષ્યમાણમકારેણ “ આદ્યસ્વંતિ ” આરૂયાન્તિ=પરમશ્રાવસરે કથયન્તિ । અત્ર વર્તમાનગ્રહણમુપલક્ષણં તેનાતીતાનામ-

ભૂતકાલ મેં તીર્થંકર હુએ હૈં, વર્તમાન કાલ મેં ખી પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સમ્બન્ધી જિતને ખી તીર્થંકર હૈં ઓર ભવિષ્યત કાલ મેં જો તીર્થંકર હોંગે ડન સબ ને જબ ડનસે કિસી ને પ્રશ્ન કિયા, તો ઈક યહી ડત્સર દિયા હૈ દેવ એવં મનુષ્યોં કો સભા મેં અપની સર્વભાષા મેં પરિણમિત હુઈ અર્ધમાગધીરૂપ દિવ્યધ્વનિ દ્વારા ડન્હોં ને સમસ્ત જીવોં કો યહી સમજાયા હૈ, ઓર હેતુ, દૃષ્ટાન્તોં દ્વારા હસી બાત કી પુષ્ટિ કી હૈ । વક્તવ્ય વિષય કે ભેદ ઓર પ્રભેદોં કો પ્રકટ કરતે હુએ ડન્હોં ને અચ્છી તરહ સે યહી પ્રરૂપણા કી હૈ કિ સમસ્ત પ્રાણી પૃથિવી આદિક ઈકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોં સે લેકર દ્વીન્દ્રિયાદિક પંચેન્દ્રિય જીવ પર્યન્ત ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામરૂપ સમસ્ત ભૂત, નરકગતિ, તિર્યચ્છગતિ, મનુષ્યગતિ એવં દેવગતિ કે સમસ્ત જીવ, એવં અપને દ્વારા કિયે ગયે કર્મોં કે ડદય કે ફલ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ આદિ કા અનુભવ કરને વાલે સમસ્ત સત્ત્વ દળડ આદિ દ્વારા કખી ખી તાડન કરને યોગ્ય, ઘાત કરને યોગ્ય, યે મેરે આધીન હૈં ઈસા રહ્યાલ

ભૂતકાળમાં જેટલા તીર્થંકર થયા છે, વર્તમાનકાળમાં પણ પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સંબંધી જેટલા તીર્થંકરો છે અને ભવિષ્યકાળમાં જેટલા તીર્થંકરો થશે તે બધામાંથી જ્યારે કોઈએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામાં પોતાની સર્વ ભાષામાં પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમાં તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાંતો વડે આ વાતનું જ સમર્થન કર્યું છે. વક્તવ્ય વિષયને ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતાં તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથિવ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પંચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ, તિર્યંચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામાં આવેલાં કર્મોના ઉદયના ક્ષણ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્ત્વો દંડ વગેરેથી કોઈ પણ વખત તાડન કરવા યોગ્ય કે ઘાત કરવા યોગ્ય, કે એઓ મારા આધીન છે

જનવારવ્રતમાસૂતવર્ણી કો ૦ અ ૦ ૧૬ દ્વીપદીક્ષા

૧૧૧

તયોરપિ પ્રહણમ્, તથા-ચ-‘ એવાચક્ષુઃ, એવાચ્ચાસ્યન્તિ ’ ઇત્યપિ યોજની-
યમ્ । એવં સર્વાસુ ક્રિયાસુ યોજનીયમ્ । તથા-એવં “ માસંતિ ” માષન્તે=સુર-
નરપરિણિ સર્વજીવાનાં સ્વસ્વભાષાપરિણામિન્યાઽર્ધમાગધ્યા માષયા બ્રુવન્તિ ।
તથા-એવં “ પળ્લવેતિ ” પ્રજ્ઞાપયન્તિ=હેતુદૃષ્ટાન્તાદિના પ્રકર્ષેણ બોધયન્તિ । તથા-
એવં ‘ પરુલ્લેતિ ’ પ્રરૂપયન્તિ=તત્તદ્વેદં પ્રદર્શ્ય પ્રકર્ષેણ નિર્ણયન્તિ ।

નનુ સર્વેઽપ્યર્હન્તો ભગવન્તઃ-કિમાચ્યાન્તીત્યાદિજિજ્ઞાસાયામાહ-‘ સન્વે-
ષાણા ’ ઇત્યાદિ । સર્વે=નિરવશેષાઃ, પ્રાણાઃ=પ્રાણિનઃ, પૃથિવ્યાદયઃ સ્થાવરા

કર પરિગ્રહ રૂપ સે સંગ્રહ કરને યોગ્ય, અન્ન, પાન આદિ કે નિરોધ એવં
ગર્મીસર્દી આદિમેં રક્ષને સે કમી મી પીઢા પહુંચાને યોગ્ય ઓર વિષપ્ર-
દાન એવં શસ્ત્ર કે આઘાત સે વિનાશ કરને યોગ્ય નહીં હેં ।

સૂત્ર મેં “ આદિક્ષન્તિ-આચ્યાન્તિ ” યહ વર્તમાનકાલિક-ક્રિયા
પદ અતીત ઓર અનાગતકાલિક ક્રિયાપદ કા ઉપલક્ષક હૈ । અતઃ
હસ સે યહ અર્થ પ્રતીત હોતા હૈ કિ ઉન તીર્થંકર પ્રભુઓં ને વર્તમાન
મેં જૈસા કહા હૈ વૈસા હી ઉન્હોં ને યા અન્ય ભૂત કાલિક તીર્થંકરોં
ને ભૂત કાલ મેં મી કહા હૈ એવં આગામી કાલમેં મી વે વૈસા હી કહેંગે ।
હસી પ્રકાર “ માસંતિ, પળ્લવેતિ ” ઇત્યાદિ ક્રિયાપદોં કે સાથ મી
અતીત ઓર અનાગત કાલિક ક્રિયાદોંકા સંબંધ કર લેના ચાહિયે । હસ
કથન સે સૂત્રકાર ને ઉનકે કથન મેં પરસ્પર મેં વિરુદ્ધ અર્થકી પ્રરૂપણા
કા અભાવ પ્રદર્શિત કિયા હૈ જો કુછ ઉન્હોં ને કહા હૈ । વહ ભૂત,
ભવિષ્યત ઓર વર્તમાન કાલ મેં સે કિસી મી કાલ મેં કિસી મી

એવું સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સંગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેનો
નિરોધ અને ગર્મી, ઠંડી વગેરેમાં રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય
અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી.

સૂત્રમાં “ આદિક્ષન્તિ આચ્યાન્તિ ” આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત
તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનું ઉપલક્ષક છે. એથી એના વડે આ ભાતના
અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થંકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમાં જે પ્રમાણે
કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તેા ખીજા ભૂતકાલિક તીર્થંકરોએ ભૂત-
કાળમાં પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમાં પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે. આ
રીતે “ માસંતિ, પળ્લવેતિ ” વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અના-
ગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સંબંધ જોડવો જોઈએ. આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના
કથનમાં પરસ્પરમાં વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે. તેમણે જે

દ્વીન્દ્રિયાદિપદ્મન્દ્રિયપર્યંતાસુસાશ્વેત્યર્થઃ, હન્દ્રિયાદિપ્રાણાનાં યથાસમ્ભવંધાર-
ણાત્ તેષુ પ્રાણિત્વમસ્તીતિ ભાવઃ । તથા-સર્વે ‘ ભૂયા ’ ભૂતાઃ=भवन्ति भविष्य-
न्त्यभूवन्निति भूताः-चतुर्दशभूतग्रामरूपाः, તથા-સર્વે જીવાઃ=जीवन्ति जीवि-
ष्यन्त्यजीविषु रिति जीवाः-नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवाः, તથા-સર્વે “સત્તા” सत्त्वाः=

પ્રમાણ દ્વારા બાધિત નહીં હો સકને સે પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હી કહા
હે । “પ્રાણ” શબ્દ સે સૂત્રકાર ને ત્રસ ઓર સ્થાવર પ્રણિયોં કા
ગ્રહણ કિયા હૈ । કયોં કિ ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણોં મેં સે इनको अपने २
योग્ય પ્રાણો કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । અતઃ इनके सद्भाव से ही
ये प्राणी कहे जाते हैं । “ भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन् ” यह
ભૂત શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હૈ । इसका भाव यही है कि जो वर्तमान
મેં સત્તા વિશિષ્ટ હૈ, આગામી કાલ મેં સત્તા વિશિષ્ટ રહેંગે एवं भूत-
काल में भी जो सत्ता विशिष्ट थे । इस व्युत्पत्ति से सूत्रकार ने यह
પ્રદર્શિત કિયા હૈ કિ પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કિસી મી કાલ મેં ઉત્પાદ
ઓર વ્યય ધર્મ વિશિષ્ટ હોતે હુઅ મી અપની ૨ સત્તા સે રહિત નહીં
હોતે હૈ । क्यों कि द्रव्य का “ उत्पादव्ययधौव्यं सत् ” उत्पाद, व्यय
ઓર ધ્રોવ્ય યે સ્વભાવ હૈ । इससे यह बात निश्चित कोटि में आता है
કિ કિસી મી નવીન પદાર્થ કા ઉત્પાદ નહીં હોતા હૈ ઓર ન સત્
पदार्थ का विनाश ही होता है । “ सतो विनाशः असतश्चोत्पादो न ”
“ जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीविषु ” यह जीव शब्द की व्युत्पत्ति है ।

કંઈ કહ્યું છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાંથી કોઈ પણ કાળમાં ગમે
તે પ્રમાણ દ્વારા બાધિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહ્યું છે,
“ પ્રાણ ” શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનું ગ્રહણ કર્યું છે.
કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણીમાંથી એમનામાં પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણીનો સદ્ભાવ
મળે છે. એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે. “ ભવન્તિ,
ભવિષ્યન્તિ, અભૂવન્ ” આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે. એનો અર્થ આ પ્રમાણે
છે કે વર્તમાનકાળમાં જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમાં સત્તા
વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમાં પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા. આ વ્યુત્પત્તિ
વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યું છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમાં
ઉત્પાદ અને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાંએ પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા
નથી. કેમકે દ્રવ્યનો “ ઉત્પાદવ્યયધૌવ્યં સત્ ” ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રોવ્ય
સ્વભાવ છે. એથી એ વાત ચોક્કસ રીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન
પદાર્થનો ઉત્પાદ થતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ થતો નથી.
“ સતો વિનાશઃ અસતશ્ચોત્પાદો ન ” “ જીવન્તિ, જીવિષ્યન્તિ, અજીવિષુ ” આ

अन्यारधमानृतवर्षिणी श्लोक ४० १६ द्रौपदीचर्या

३१५

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःखानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुनः पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

‘न हंतव्या’ न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्याः इत्यर्थः, “न अज्जा-वेयव्या” नाज्ञायितव्याः=न घातयितव्या इत्यर्थः, “न परिवेत्तव्या” न परि-ग्रहीतव्याः=इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्याः, “न परिता-

जो जीते हैं, जीवेंगे और जिये है, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व धर्म का अभाव नहीं होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नहीं होता है इससे वृक्षादिकों में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खंडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन “समस्त जीवों में बारंबार दया करनी चाहिये” है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणतिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित हैं । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शाक्य आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषों का सङ्काव पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે. જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમાં ત્રિકાળમાં પણ જીવનત્વ ધર્મનો અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે. ભલે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાંએ તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી. આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમાં અચેતનતા માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનું ખંડન થઈ જાય છે.

સૂત્રકારે સૂત્રમાં જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્ત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય-વાચી શબ્દોનો જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનું ખાસ કારણ “બધા જીવોમાં વારંવાર સદય રહેવું જોઈએ” તે જ છે.

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાક્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપાદિત થયો છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે ખરેખર ધર્મ નથી. કેમકે તેમાં હિંસા વગેરે દોષોનો સંકલ્પ છે. અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

વેયઘ્વા” ન પરિતાપયિતઘ્વાઃ=અન્નપાનાધવરોધનેન પ્રીતપાતપાદૌ સ્થાપનેન ચ ન પીડનીયાઃ, “ ન કિલામેયઘ્વા ” ન ક્લામયિતઘ્વાઃ=ન સ્વેદયિતઘ્વાઃ=ન વિષ-શસ્ત્રાદિના મારયિતઘ્વાઃ ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वाईन्द्रगवत्प्ररूपितः, धर्मः=सर्वमाणिप्राणातिपातविरमण-रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थः । आर्हतधर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु सद्भाव का कारण उसमें असर्वज्ञ और सरागियों द्वारा प्रणीतता ही है पूर्ण ज्ञानीयों द्वारा प्रदर्शित मार्ग ही शुद्ध होता है इसका कारण उनमें राग द्वेष का सर्वथा अभाव ही होता है । असर्वज्ञ या रागद्वेषकलुषित-चित्तवालों द्वारा प्रदर्शित मार्ग इसलिये शुद्ध नहीं होता है कि वे एक तो उस विषय के पूर्ण ज्ञाता नहीं होते, दूसरी अपनी रागद्वेषमयी प्रवृत्ति को पुष्ट करने के लिये उसकी अन्यथा भी प्ररूपणा कर देते हैं । ऐसा धर्म शाश्वतिक नित्य नहीं होता है-क्यों कि ऐसा धर्मका विशिष्ट ज्ञानियों-केवलज्ञानियों द्वारा जीवों का कल्याण की कामना से निराकरण कर दिया जाता है । वीतरागप्रतिपादित धर्म ही अविनाशी रहता है, और उसीसे जीवों का सदा कल्याण होता रहता है । इसमें अन्यथाप्ररूपणाके लिये थोड़ी सी भी जगह नहीं मिलती है । पंच महाविदेह क्षेत्रोंमें अब भी इस शुद्ध धर्मका सद्भाव है । इसी अपेक्षा इसे सूत्रकारने नित्य-अविनाशी कहा है । शाश्वतगतिरूप मुक्ति का कारण होने से

લીધે જ તેમાં હિંસા વગેરે સહોષતા છે. પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગે જ શુદ્ધ હોય છે. કેમકે તેઓમાં સંપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે. અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ બેટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સંપૂર્ણપણે બાણતા નથી અને બીજું તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે. એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનું વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવળજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઈને નિરાકરણ કરવામાં આવે છે. વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનું કલ્યાણ થતું રહે છે. આમાં અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી. અત્યારે પણ પંચવિદેહ ક્ષેત્રમાં આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે. આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકારે નિત્ય-અવિનાશી કહ્યો છે. શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો કારણ હોવાથી આ ધર્મ શાશ્વત માન-

એવનંતાવંશાનુવર્તિની શીકા ૦ અ. ૧૬ દ્રૌપદીયજી

૧૧૭

સદ્ભાવત્ । તથા-શાશ્વતઃ=શાશ્વતગતિકારણત્વાત્ । યદ્વા-યતો નિત્યસ્તસ્માચ્છા-
શ્વતઃ હતિ । અયમેવ ધર્મઃ શ્રદ્ધેયો ગ્રાહ્યથેત્યત્ર હેતું પ્રદર્શયન્ વિશેષણાન્તરમાહ-
સમેત્યૈત્યાદિ । લોકં ષટ્ જીવનિકાયં દુઃસ્વાદાવાનલાન્તઃપતિતં, સમેત્ય=કેવ-
લજ્ઞાનેન પ્રત્યક્ષતયા વિજ્ઞાન, સ્વેદજ્ઞૈઃ=સર્વપ્રાણિદુઃસ્વાભિજ્ઞૈસ્તીર્થકરૈઃ પ્રવેદિતઃ=
આદિષ્ટઃ । 'પ્રવેદિતઃ'ૈત્યનેન ધર્મોઽયં મયા ન સ્વમનીષયા કલ્પિતઃ'ૈતિ ચ
સુધર્મસ્વામિના શિષ્યમુદિષ્ય સૂચિતમ્ । અનુયોગદ્વારે—

યહ શાશ્વત માના ગયા હૈ અથવા હેતુ હેતુમદ્ભાવ સે ભી યો કહ
સકતે હૈં કિ જિસ કારણ સે યહ નિત્ય હૈં હસી કારણ સે યહ શાશ્વત
માના ગયા હૈં । અતઃ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ જીવોં દ્વારા યહ ધર્મ શ્રદ્ધેય શ્રદ્ધા
કરને યોગ્ય એવં ગ્રાહ્ય-આરાધન કરને યોગ્ય હૈં હસ વિષય મેં પૂર્વોક્ત-
રૂપ સે સૂત્રકાર હેતુ કા કથન કર ઉસ ધર્મ કી પ્રરૂપણા કરને કે
કારણ કા પ્રદર્શન કરતે હુએ “સમેત્ય લોકં સ્વેદજ્ઞૈઃ પ્રવેદિતઃ” કહતે
હૈં કિ સમસ્ત પ્રાણીયોં કે દુઃસ્વોં કે વેત્તા કેવલજ્ઞાની પ્રભુ ને હસ ષટ્જીવ
નિકાયરૂપ લોક કો પ્રત્યક્ષરૂપ સે સાક્ષાત્ દુઃસ્વરૂપી દાવાનલ સે જલતા
હુઆ દેખકર હસ શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મ કા કથન કિયા હૈં ।

ભાવાર્થ-અનંત સાંસારિક દુઃસ્વોં સે સંતપ્ત સમસ્ત સંસારી જીવોં
કો સાક્ષાત્ હસ્તામલકવત્ દેખકર દુઃસ્વોં સે ઉનકે ઉદ્ધાર કે નિમિત્ત
વીતરાગ કેવલજ્ઞાનિયોંને હી હસ ધર્મ કી પ્રરૂપણા કી હૈં । મૈં ને અપની
ઓર સે હસકા કથન નહીં કિયા હૈં । હસ પ્રકાર શ્રી સુધર્માસ્વામી
અપને શિષ્ય જમ્બૂસ્વામી કો સમજાતે હૈં ।

વામાં આવ્યો છે. અથવા હેતુ-હેતુ મદ્ભાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે
જે કારણને લઈને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામાં આવ્યો
છે. એથી દરેક મોક્ષને ઇચ્છનારા જીવો વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા
યોગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યોગ્ય છે. આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનું
કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતાં “સમેત્ય લોકં સ્વેદજ્ઞૈઃ પ્રવેદિતઃ” કહે
છે કે બધા પ્રાણીઓનાં દુઃખોને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ ષટ્જીવ-
નિકાય રૂપ લોકને પ્રત્યક્ષ રૂપમાં સાક્ષાત્ દુઃખ રૂપી દાવાનલમાં સળગતા
જોઈને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનું કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સંસારના બધા જીવોને અનંત સાંસારિક દુઃખોથી હસ્તા-
મલકવત્ સંતપ્ત જોઈને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવળજ્ઞાનીએ એ જ આ
ધર્મનું નિરૂપણ કર્યું છે. મેં પોતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી. શ્રી સુધર્મા
સ્વામી પોતાના શિષ્ય જમ્બૂસ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે.

“ જહ મમ ણ પિયં દુઃખં જાણિયં એમેવ સઘ્વજીવાણં ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણો । ઇતિ ”

છાયા-યથા મમ ન પ્રિયં દુઃખં, જ્ઞાત્વા એમેવ સર્વજીવાનામ્ ।

ન હન્તિ ન ધાતયન્તિ ચ સમમ્ અણતિ તેન સ સમણઃ ॥

ચ શબ્દાત્ ઘનતથાન્યાન્ન સમણુજાનીત ઇત્યનેન પ્રકારેણ ‘સમમણતિ’ ત્તિ સર્વજીવેષુ તુલ્યં વર્તેતે યતસ્તેનાસૌ શ્રમણ ઇતિ ગાથાર્થઃ ।

‘એસ ધમ્મે સુદ્ધે’ ઇત્યનેન આર્હત ધર્મસ્ય હિંસાદિ દોષાભાવાદ્ભગવતા શુદ્ધ-ત્વમુક્તમ્ । શુદ્ધધર્મબોધકત્વાચ્ચ દ્વાદશાંગ્યાઃ પ્રવચનત્વસાગમત્વં સર્વોત્કૃષ્ટત્વં ચ સિદ્ધયતિ । પ્રવચનસ્ય સ્વરૂપં માહાત્મ્યં ચાઽઽગમેષુ ભગવતાઽભિહિતમ્ ।

અનુયોગદ્વાર મેં-

જહ મમ ણ પિયં દુઃખં જાણિયં એમેવ સઘ્વજીવાણં ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણો ॥ ઇતિ ।

જિસ પ્રકાર દુઃખ સુદ્ધે હૃષ્ટ નહીં હૈ, ઉસી તરહ વહ દુઃખ કિસી બી સંસારી જીવોં કો હૃષ્ટ નહીં હૈ એસા સમજ કર જો જીવોં કી વિરાધના સ્વયં નહીં કરતા ઓર ન દૂસરોં સે કરવાતા હૈ તથા સમસ્ત જીવોં મેં તુલ્યતા કી ભાવના રખતા હૈ વહી શ્રમણ હૈ । શ્રમણ હોને મેં ચે પૂર્વોક્ત બાતે હેતુ-કારણ હૈ ।

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” હસ સૂત્રાંશ સે શ્રી સુધર્માસ્વામી ને તીર્થંકર કથિન ધર્મ મેં હિંસાદિક દોષોં કે અભાવ સે શુદ્ધતા કા કથન કિયા હૈ । હસ શુદ્ધ ધર્મ કા બોધક-બોધ કરાનેવાલી હોને સે હી દ્વાદશાંગી મેં પ્રવચનતા, આગમતા એવં સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ હોતી હૈ । ભગવાન ને

અનુયોગદ્વારમાં—જહ મમ ણ પિયં દુઃખં જાણિયં એમેવ સઘ્વજીવાણં ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણે ॥ ઇતિ ।

જેમ મને દુઃખ ગમતું નથી તેમજ તે દુઃખ સંસારના કોઈ પણ જીવને ગમે જ નહિ. આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પેતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમાં તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ ‘શ્રમણ’ છે. આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે.

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” આ સૂત્રાંશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમાં હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનું કથન કર્યું છે. આ શુદ્ધ ધર્મને બોધક-બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાંગીમાં પ્રવચનતા આગમતા અને સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે. ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનું સ્વરૂપ અને તેનો પ્રભાવ

યથા ભગવતી સૂત્રે—

પવચણં મંતે ! પવચણં, પાવચણી પવચણં ? । “ ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચણી । પવચણં પુણ દુવાલસંગે ગણિપિટકમે । તં જહા-આયારોં જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ, (શં ૨૦ ઉ ૦૮)

મંતે ! હે મદન્ત ! “ પવચણં ” પ્રવચનં-કિ પ્રવચનં, ઉત્ત-“ પાવચણી ” પ્રવચની પ્રવચનમ્ ? । “ ગોયમા ! ” હે ગૌતમ ! ‘ અરહા ’ અર્હન્ ‘ તાવ ’ તાવત્ નિયમાન્પ્રવચની । પ્રવચનં પુનઃ ‘ દુવાલસંગે ’ દ્વાદશાંગી “ ગણિપિટકમે ” ગણિપિટકમ્ । તદ્ યથા-“ આયારો જાવ દિટ્ઠિવાઓ ” આચારાઙ્ગાદિ યાવત્ દૃષ્ટિવાદઃ । ઇતિ,

પુનસ્તત્રૈવ-“ સે નૂણં મંતે ! તમેવ સચ્ચં નીસંકં જં જિણેહિં પવેહયં ? ।

પ્રવચન કા સ્વરૂપ ઓર ઉસકા પ્રભાવ-માહૃત્મ્ય આગમોં મેં કહા હૈ । જૈસે ભગવતી સૂત્ર મેં “ પવચણં મંતે ! પવચણં, પાવચણી પવચણં ? ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચણી । પવચણં પુણ દુવાલસંગે ગણિપિટકમે । તં જહો-આયારે જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ (શં ૨૦ ઉ ૦૮)

ભાવાર્થ-ગૌતમસ્વામી પૂછતે હૈં હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન હૈ-યા પ્રવચની પ્રવચન હૈ ? ઇસ અંશ કા સમાધાન કરતે હુએ ભગવાન્ કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! ગણિપિટક જો આચારાંગ સે લેકર દૃષ્ટિવાદ તક દ્વાદશાંગ આગમ હૈ વહ સમસ્ત પ્રવચન હૈ । ઇસ પ્રવચન કો અર્થતઃ પ્રકટ કરનેવાલે શ્રી તીર્થકર પ્રભુ પ્રવચની હૈં । ઉસી ભગવતી સૂત્ર મેં ઓર ભી યહ કહા હૈ કિ-“ સે નૂણં મંતે ! તમેવ સચ્ચં નિસંકં જં જિણેહિં પવેહયં ! હંતા ગોયમા ! તમેવ સચ્ચં સે નૂણં મંતે । ઇવં મણે

માહૃત્મ્ય કહ્યો છે. જેમકે ભગવતી સૂત્રમાં “ પવચણં મંતે ! પવચણં પાવચણી પવચણં ? ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચણી ! પવચણં પુણ દુવાલસંગે ગણિપિટકમે ! તં જહા-આયારો જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ (શ. ૨૦ ઉ. ૮)

ભાવાર્થ-ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન છે કે પ્રવચની પ્રવચન છે ? આ શંકાતું સમાધાન કરતાં ભગવાન કહે છે-કે હે ગૌતમ ! ગણિપિટક-કે જે આચારાંગથી માંડીને દૃષ્ટિવાદ સુધી દ્વાદશાંગ આગમ છે તે સમસ્ત પ્રવચન છે. અર્થતઃ આ પ્રવચનને પ્રકટ કરનારા શ્રી તીર્થકર પ્રભુ પ્રવચની છે. તે ભગવતી સૂત્રમાં જ આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે કે- (સે નૂણં મંતે તમેવ સચ્ચં નીસંકં જં જિણેહિં પવેહયં ! હંતા ગોયમા ! તમેવ સચ્ચં સે નૂણં મંતે । ઇવં મણે ઘરેમાણે ઇવં પકરેમાણે આપાપ આરાહપ

હંતા ગોયમા ! તમેવ સચ્ચં । સે નૂનં મંતે ! એવં મણે ધારેમાણે એવં પકરેમાણે આણાએ આરાહણે ભવહ ? । હંતા ગોયમા ! તં ચેવ ” સ્તિ ।

છાયા—અથ નૂનં ભદન્ત ! તદેવ સત્યં નિશ્ચક્કં યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂનં ભદન્ત ? એવં મનસિ ધારયન્ એવં પ્રકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? હન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઇતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઇણમેવ નિગ્ગંથં પાવયણં સચ્ચં અણુત્તરં કેવલિયં પહ્ધિ-પુન્નં નેયાઉયં સંસુદ્ધં સલ્લગત્તણં સિદ્ધિમગ્ગં મુત્તિમગ્ગં નિજ્જાણમગ્ગં નિવ્વાણમગ્ગં અવિતહમસંદિદ્ધં । इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिवाएंति सच्चदुःखाणमंतं करंति ।

ધારેમાણે એવં પકરેમાણે આણાએ આરોહણે ભવહ ! હંતા ગોયમા ! તં ચેવ ઇતિ ” હસ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યહ હૈ કિ પત્યેક મુમુક્ષુ (મોક્ષાભિલાષી) જન કો અપને હૃદય મેં હસ ચાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રચનાં ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ હૈ—ઉસમેં કિસી ભી પ્રકાર કી શંકા કે લિયે સ્થાન નહીં હૈ હસ પ્રકાર કે દૃઢ વિશ્વાસ સે ઉસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર ઉસકે અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાષીજન તીર્થંકરપ્રસુકી આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યક સૂત્રમેં ભી યહી વાત કહી ગઈ હૈ

“ ઇણમેવ નિગ્ગંથં પાવયણં સચ્ચં અણુત્તરં કેવલિયં પહ્ધિપુન્નં નેયા-ઉયં સંસુદ્ધં સલ્લગત્તણં સિદ્ધિમગ્ગં મુત્તિમગ્ગં નિજ્જાણમગ્ગં નિવ્વાણમગ્ગં અવિતહમસંદિદ્ધં । इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिवाएंति सच्चदुःखाणमंतं करंति ।

ભવહ ! હંતા ગોયમા ! તં ચેવ ઇતિ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જિનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્ત્વ છે તેમાં કશીરે શંકા નથી. આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે. આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે—(ઇણમેવ નિગ્ગંથં પાવયણં સચ્ચં અણુત્તરં કેવલિયં પહ્ધિપુન્નં નેયાઉયં સંસુદ્ધં સલ્લગત્તણં સિદ્ધિમગ્ગં મુત્તિમગ્ગં નિજ્જાણમગ્ગં નિવ્વાણમગ્ગં અવિતહમસંદિદ્ધં ! इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिवाएंति सच्चदुःखाणमंतं करंति ।

બનનાર ધર્માનુસંધાન ટીકા મં ૧૧ પ્રોપતીકા

૩૧૧

છાયા—ઇદમેવ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનં સત્યમ્ અનુત્તરં, કેવલિકં, પ્રતિપૂર્ણં, નૈયા-
યિકં, સંશુદ્ધં, શલ્યકર્ત્તનં, સિદ્ધિમાર્ગં, મુક્તિમાર્ગં, નિર્યાણમાર્ગં, નિર્વાણમાર્ગં,
અવિતથમ્, અસન્દિગ્ધમ્, અત્ર સ્થિતા જીવાઃ સિદ્ધયન્તિ, બુદ્ધ્યન્તે, મુચ્યન્તે,
પરિનિર્વાન્તિ, સર્વે દુઃસ્વાનામન્તં કુર્વન્તિ ।

અન્યત્ત્વ—ઇમં ચ ણં સત્ત્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાપ્ પાવયણં ભગવયા સુક-
હિયં ” ઇતિ (પ્રશ્ન૦ સંવર૦)

છાયા—‘ ઇદં ચ સ્વલુ સર્વજગજીવરક્ષણદયાર્થાય પ્રવચનં ભગવતા
સુકથિતમ્ ’ ઇતિ ।

ધર્મધ્યાનસ્યાઽઽજ્ઞાવિચયાદિ ભેદેન ચાતુર્વિધ્યં પ્રદર્શયતા ભગવતા—પ્રાધાન્યા-
દાજ્ઞાવિચયઃ પ્રાથમ્યેન પ્રોક્તઃ ।

ભાવાર્થ—ઇસં કા સ્પષ્ટ હૈ । ઇસમેં સૂત્રકાર ને મુખ્યરૂપ સે યહી વાત
પ્રકટ કી હૈ કિ ઇસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગ મેં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોંકા
વિનાશ કર સિદ્ધદશાસંપન્ન હો જાતે હૈં । ઇસ અવસ્થાકી પ્રાપ્તિ હોના
હી જીવોં કે સમસ્ત દુઃખોં કા વિનાશ હૈ ।

અન્યત્ત્વ—ઇમં ચ ણં સત્ત્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાપ્ પાવયણં ભગવયા
સુકહિયં ” ઇતિ—(પ્રશ્ન. સંવર૦)

ઇસ પ્રવચનં કી પ્રરૂપણા કરને કા શ્રી તીર્થંકર પ્રભુ કા યહી એક
ઉદ્દેશ રહા હૈ કિ સમસ્ત સંસારીજન ઇસ પ્રવચન કે અભ્યાસ સે સર્વ
જગત કે જીવોં કી રક્ષા કરેં ઓર ઉનકી દયા પાલેં ।

ધ્યાન કા વર્ણન કરતે હુએ ભગવાનં ને ઉસ ધ્યાન કેં ૪ ભેદ કહે
હૈં । ઉનમેં ધર્મધ્યાન કે આજ્ઞાવિચય આદિ જો ૪ પાવે પ્રકટ કિયે

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે. આમાં ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ
વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગમાં સ્થિત એવ અષ્ટ
કર્મોના વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સંપન્ન થઈ બચે છે. આ અવસ્થા મેળ-
વવી એ જ એવાના સઘળા દુઃખનો વિનાશ છે.

અન્યત્ત્વ—ઇમં ચ ણં સત્ત્વ જગજીવરક્ષણદયદ્વાપ્ પાવયણં ભગવયા સુકહીયં
” ઇતિ—(પ્રશ્ન૦ સંવર૦)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો
છે કે બધા સંસારીઓનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે એવાની
રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે.

ધ્યાનનું વર્ણન કરતાં ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે. તેઓમાં
ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યા છે

યથા ભગવતી સૂત્રે--(શ. ૨૫ ઉ. ૭)

“ ધર્મ્મે જ્ઞાણે ચતુર્વિદ્હે પળ્ળત્તે, તં જહા-આણાવિચર ” અવાયવિચર, વિવાગવિચર, સંઠાણવિચર ॥

જ્ઞાયા—ધર્મધ્યાનં ચતુર્વિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્ । તદ્ યથા-આજ્ઞાવિચયઃ, અપાય-વિચયઃ, વિપાકવિચયઃ, સંસ્થાનવિચયઃ ।

અત્ર પ્રસન્નવશાદ્ આજ્ઞાવિચય એવ વ્યાખ્યાયતે—

આજ્ઞાવિચયશ્ચ-આજ્ઞાયાઃ પર્યાલોચનં, આજ્ઞા-સર્વજ્ઞપ્રણીત આગમઃ, તમાજ્ઞા-મિત્થં વિચિન્નુયાત્=પર્યાલોચયેત્ - પૂર્વાપરવિશુદ્ધમતિનિપુણામશેષજીવકાયહિતા

हैं उन में सर्व प्रथम आज्ञाविचय को जो कहा है उसका कारण यही है कि शेष तीन पाथों (भेदों) में प्रधान है । भगवती सूत्र श. २५ उ-७ में देखो यह वर्णन इस प्रकार से हुआ है-धर्मे ज्ञाणे चतुर्विदे पण्ण से, तं जहा-आणाविचर, अवायविचर, विवागविचर, संठाणविचर ॥

अर्थ—धर्मध्यान ४ प्रकार का है (१) अज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाकविचय (४) संस्थानविचय ।

પ્રસંગવશ યહાં આજ્ઞાવિચય પર વિવેચન કિયો જાતા હૈ-તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરના સો આજ્ઞાવિચય હૈ સર્વજ્ઞ કથિત આગમ કા નામ આજ્ઞા હૈ । ઉસ આગમરૂપ આજ્ઞા કા ઇસ પ્રકાર સે વિચાર કરના ચાહિયે-યહ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગમ પૂર્વા-પર વિરોધ રહિત હોને સે વિશુદ્ધ હૈ, પ્રત્યેક સૂક્ષ્મ અન્તરિત ઓર દૂરાર્થ કે પ્રતિપાદન કરને મેં અતિનિપુણ હૈ, પ્રત્યેક જીવોં કા યહ હિતકારી

તેઓમાં જે સૌ પ્રથમ આજ્ઞા વિચયનો જે ઉલ્લેખ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ એ જ છે કે બાકી રહેલા ત્રણ ઉપલેદોમાં તે મુખ્ય છે. ભગવતી સૂત્ર શ. ૨૫ ઉ. ૭ માં એના માટે જેવું જોઈએ. ત્યાં આનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે-ધર્મ્મે જ્ઞાણે ચતુર્વિદ્હે પળ્ળત્તે, તં જહા-આણાવિચર, અવાયવિચર, વિવાગ વિચર, સંઠાણવિચર ॥

અર્થ—ધર્મધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે. (૧) આજ્ઞા-વિચય, (૨) અપાય વિચય, (૩) વિપાક વિચય, (૪) સંસ્થાન વિચય.

પ્રસંગવશ અહીં આજ્ઞાવિચય વિષે વર્ણન કરવામાં આવે છે. તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરવો તે આજ્ઞાવિચય છે. સર્વ-જ્ઞકથિત આગમનું નામ આજ્ઞા છે. તે આગમરૂપ આજ્ઞાનો આ રીતે વિચાર કરવો જોઈએ કે આ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગમ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હોવા અહત વિશુદ્ધ છે, દરેક સૂક્ષ્મ અન્તરિત અને દૂરાર્થના પ્રતિપાદન કરવામાં

મનંગારવમાં મુતવાળી ટીંબ ૧૧ દ્રોપદીબંધા

૬૨૬

હૈ, અનવધ હૈ, હસ મેં પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કા વિવેચન બહુત હી અચ્છી તરહ સે કિયા ગયા હૈ અતઃ યહ મહાર્થ હૈ હસકા પ્રભાવ મી અદ્વિતીય હૈ હસકી છત્રછાયા મેં આને સે પ્રત્યેક મૃગ્ય જીવ આત્મક-લ્યાણ કે અપને અન્તિમ લક્ષ્ય કી સિદ્ધિ કર લિયા કરતે હૈં । હસ મેં પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્યજન નહીં જ્ઞાત કર સકતે હૈં-દ્રવ્યાર્થિક ઔર પર્યાયાર્થિક નયરૂપ દો દૃષ્ટિયાં જિનકે પાસ હૈં-વે હી હસમેં પ્રતિપાદિત વિષય કો અચ્છી તરહ જ્ઞાત કર સકતે હૈં । હસમેં જો મી કુછ કથન સર્વજ્ઞ ભગવાન ને કિયા હૈ વહ હન્હીં દો દૃષ્ટિયોં કો સામને રલ્લકર કિયા ગયા હૈ યદિ ઈક દૃષ્ટિ કો હી પ્રધાન રલ્લકર હસકે તત્ત્વ કો સમજ્ઞને કી ચેષ્ટા કો જાય તો વહ પ્રતિપાદ્ય વિષય ઠીક ૨ નહીં સમજ્ઞા જા સકતા હૈ । તથા હસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા અન્યથા મી જ્ઞાત હોને લગતી હૈ હસલિયે દૂસરી દૃષ્ટિ કો સામને રલ્લકર હી વહ વિષય ઠીક ૨ રીતિ સે સમજ્ઞ મેં આ સકતા હૈ, અતઃ હસી અભિપ્રાયસે હસે નિપુણ જનવેચ કહા હૈ તથા હસ મેં પ્રત્યેક પદાર્થ કો ઉત્પાદન વ્યય ઔર ધ્રોવ્ય આત્મક કહા ગયા હૈ-વહ મી દ્રવ્ય ઔર પર્યાય કી અપેક્ષા સે હી કહા ગયા હૈ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ ધ્રોવ્યરૂપ

અતીવકુશળ છે. દરેકે દરેક જીવો ને આ હીતકારી છે. અનવધ છે, એમાં દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનું વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામાં આવ્યું છે એથી આ મહાર્થ છે. આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામાં આવવાથી દરેક ભૌતિક આત્મકલ્યાણ વિષયક પોતાની અંતિમ લક્ષ્યની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે. આમાં પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્ય લોકો બાંધી શકતા નથી. દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે. તેઓ જ આમાં પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે. સર્વજ્ઞ ભગવાને આમાં જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું આ પૂર્વોક્ત બંને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યું છે. જો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્ત્વને બાંધવાની ચેષ્ટા કરવામાં આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ. તેમજ આ બાતની પ્રરૂપણા અન્યથા પણ માલુમ થવા માંડે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય સરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે. આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેધ' કહેવામાં આવ્યો છે તેમજ આમાં જો દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રોવ્ય આત્મક કહેવામાં આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામાં આવ્યો છે. દ્રવ્યની

૩૨૪

જ્ઞાતાધર્મકયાકસૂત્રે

મનવર્ધાં મહાર્થાં મહાનુભાર્થં નિપુણજનવિજ્ઞેયાં દ્રવ્યપર્યાયપ્રપञ्चવતીમનાશ્ચન્નિ-
ધનામ્ । અસ્ય પ્રવચનસ્યાઽઽઽઽન્ટરહિતત્વં ચ ભગવતા નન્દીશૂત્રે નિગદિતમ્—

“ इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी ॥ ”

इत्येतद् द्वादशाङ्गं गणिपिटकं न कदापि नासीत् ॥ इत्यादि ।

है और पर्याय की अपेक्षा से उत्पादन व्ययरूप है, इसलिये भी जिन प्रतिपादित आगमरूप आज्ञा स्वयं द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली है। अथवा जीवादिक समस्त ६ द्रव्यों की त्रिकालवर्ती समस्त पर्यायें इसमें प्रतिपादित हुई हैं, अथवा कोई भी द्रव्य कभी भी पर्याय रहित नहीं हो सकता है—स्वभाव पर्यायें और व्यञ्जन पर्यायें, विभाव पर्यायें और अर्थपर्यायें प्रत्येकक्षण में समस्तद्रव्यों में होती रहती हैं, इत्यादिरूप से द्रव्य और पर्यायों का प्रतिपादन इस आज्ञा में भगवान ने प्रदर्शित किया है इस अपेक्षा भी यह द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली मानी गई है तथा यह अनादि अनन्त है न कभी इस आज्ञा की आदि हुई है और न कभी इसका विनाश होगा। नन्दीसूत्र में भी प्रवचन की अनादि अनन्तता के विषय में “ इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइनासी” यही कहा है—ऐसा कोई सा भी काल नहीं था कि जिस काल में इस द्वादशांगरूप गणिपिटकका सङ्काव नहीं था।

અપેક્ષાથી દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ ધ્રીવ્યરૂપ છે. અને પર્યાયની અપેક્ષાથી ઉત્પાદ વ્યયરૂપ છે. એટલા માટે પણ જિન પ્રતિપાદિત આગમરૂપ આજ્ઞા પોતે દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપંચ (વિસ્તાર) વાળી છે. અથવા તો જીવ વગેરે બધા ૬ દ્રવ્યોના ત્રિકાલ વર્તી સમસ્ત પર્યાયો આમાં પ્રતિપાદિત થયા છે, અથવા કોઈ પણ દ્રવ્ય કોઈ પણ દિવસે પર્યાય રહિત થઈ શકતું નથી. સ્વભાવ પર્યાયો અને વ્યંજન પર્યાયો, વિભાવ પર્યાયો અને અર્થ પર્યાયો દરેક ક્ષણમાં બધા દ્રવ્યોમાં થતી રહે છે. ઇત્યાદિ રૂપથી દ્રવ્ય અને પર્યાયોનું પ્રતિપાદન આ આજ્ઞામાં લગવાને બતાવ્યું છે. આ અપેક્ષાથી પણ આ દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપંચ (વિસ્તાર) વાળી માનવામાં આવી છે. તેમજ આ અનાદિ અનંત છે. કોઈ દિવસ આજ્ઞાની આદિ થઈ નથી અને કોઈ પણ દિવસે આનો વિનાશ થશે નહિ. નંદીસૂત્રમાં પણ પ્રવચનની અનાદિ અનંતતાને લગતી (इच्छे इयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइनासी) એ જ વાત કહેવામાં આવી છે. એવો કોઈ પણ કાળ હતો નહિ કે તે કાળે આ દ્વાદશાંગ રૂપ ગણિપિટકનો સંકલ્પ હતો નહિ. આ રીતે આ આગમની સહજતા અથવા તો એના મહા-

જાતોમારધર્મમાનૃતકથાવિજી હો ૦ જો ૧૬ દ્રોપદીક્ષણ

૩૨૫

इत्थं चागममाहात्म्यपर्यालोचनरूपस्य धर्मध्यानस्याऽऽ - र्हेताऽऽज्ञाविष-
यत्वाद् धर्मध्यानस्य धर्मत्वं सिद्धम् । तथा-हिंसादि-दोषलेशेनाप्यसंपृक्तस्य शुद्ध-
धर्मस्य बोधकत्वादहिंसाप्रधानस्य प्रवचनस्य श्रद्धेयत्वं च सिद्धम् ।

अहिंसायामर्हतो भगवत आज्ञा प्रदर्शिता, एवं संयमेपि तदाज्ञा वर्तते । यथा
-ज्ञाताधर्मकथाऽङ्गसूत्रे-(प्रथमाध्ययने)

“ तएणं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव सयमेव
आयार जाव धम्ममाइक्खइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! गंतव्वं चिट्ठियव्वं णिसीइयव्वं

इस प्रकार इस आगम की महत्ता अथवा उसके महात्म्य का विचार करना यही आज्ञाविचय नामक धर्मध्यान का प्रथम भेद है । इस ध्यान में अर्हंतप्रभु की आज्ञा का ही विचार होता है-अतः इस ध्यान में उन की आज्ञा का विषय करनेवाला होने से धर्मरूपता सिद्ध है तथा हिंसा-दिक दोष के लेश से भी रहित ऐसे शुद्ध धर्म का बोधक होने से अहिंसाप्रधान इस प्रवचन में श्रद्धेयता सिद्ध होती है ।

इस पूर्वोक्त प्रकार से अहिंसा में अर्हंत भगवान् की आज्ञा का प्रदर्शन कर अब संघममें भी उनकी आज्ञा इसी प्रकार को है यह प्रकट करने के लिये सर्व प्रथम ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र से इस विषय की पुष्टि करते हुए सूत्रकार कहते हैं ।

“ तएणं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव
धम्ममाइक्खइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! गंतव्वं चिट्ठियव्वं णिसी-

તમ્યને લગતો વિચાર કરવો એ જ આજ્ઞા-વિચય નામક ધર્મધ્યાનનો પ્રથમ ભેદ છે. આ ધ્યાનમાં અર્હંત પ્રભુની આજ્ઞા વિષે જ વિચાર હોય છે. તેથી આ ધ્યાનમાં તેમની આજ્ઞાનો વિષય પ્રતિપાદિત થયો છે માટે આમાં ધર્મ રૂપતા સિદ્ધ છે તેમજ હિંસા વગેરે દોષોથી પણ રહિત શુદ્ધ કર્મનો બોધક હોવાને કારણે અહિંસા પ્રધાન આ પ્રવચનમાં શ્રદ્ધેયતા સિદ્ધ થાય છે.

આ પ્રમાણે પૂર્વાકૃત રીતે અર્હંત ભગવાનની અહિંસાના વિષે આજ્ઞા બતાવીને હવે આગળ સૂત્રકાર સંયમ માટે પણ તેઓશ્રીની આજ્ઞા આ રીતે જ છે. આ વાત સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૌ પ્રથમ જ્ઞાતા-ધર્મકથાઙ્ગ સૂત્રથી આ વિષયની પુષ્ટિ કરતાં કહે છે—

“ તए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव सय-
मेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! गंतव्वं चिट्ठि-

३२६

जाताधर्मैकयाज्ञसूत्रे

तुयट्टियच्चं भुजियच्चं भासियच्चं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियच्चं, अस्सि च णं अट्ठे णो पमाएयच्चं ” इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघं कुमारं स्वयमेव प्रवाजयति, यावत् स्वयमेव आचार यावद् धर्ममाख्याति—एवं खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्यं, स्थातव्यं’ निषत्तव्यं, त्वग्वर्तयितव्यं भोक्तव्यं भाषितव्यम्, एवमुत्थाय उत्थाय पाणेषु भूतेषु जीवेषु सत्त्वेषु संयमेन संयन्तव्यम्, अस्मिन् खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम् । इति, दशवैकालिक सूत्रे ऽपि—

“ जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।

जयं भुजंतो भासंतो पावकम्मं न वंधई ॥ ”

इयच्चं तुयट्टियच्चं भुजियच्चं भासियच्चं एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियच्चं, अस्सिच णं अट्ठे णो पमाएयच्चं”

श्रमण भगवान् महावीर ने स्वयं अपने ही हाथों से मेघकुमारको जब भागवती दीक्षा प्रदान की उसके लिये मुनि विषयक आचार आदि का जब उन्होंने उपदेश दिया तब उन्होंने उसे यही समझाया कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहारकरते और वातचित्त करते समय प्राणियों, भूतों, जीवों, और सत्त्वों में सदा संयम से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक शारीरिक एवं वाचनिक क्रियाओं में, संयमित प्रवृत्ति करें। इस प्रकार की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने संयम की रक्षा होती है इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिये। दशवैकालिक सूत्र में भी यही कहा है—“ जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं

यच्चं णिसीइयच्चं तुयट्टियच्चं भुजियच्चं, भासियच्चं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियच्चं अस्सि च णं अट्ठे णो पमाएयच्चं ”

श्रमण भगवान् महावीर ने तेने पोताना धाधथी न मेघकुमारने व्यापरे भागवती दीक्षा आपी अने तेने मुनिविषयक आचार वगेरने लगतो उपदेश आपरो त्यारे तेज्याश्रीजे तेने उपदेशमां जे न वात समझवी के छे देवानुप्रिय ! चलतां छेला रडेतां, जेसतां, सूछं जतां, आहार करतां अने वातचित्त करतां प्राणीजो, भूतो, जेवो अने सत्त्वोमां छे भेशा संयमथी न प्रवृत्ति करतां रडेवु जेधजे. मुनिनी जे न करन छे के ते करेक शारीरिक अने वाचनिक क्रियाजोमां संयमित प्रवृत्ति करे. आ रीते प्रवृत्तिशील यधने रडेवाथी न मुनिजो पडे संयमनी रक्षा थाय छे. आ भाजतमां मुनिजे कोर पणु दिवसे प्रमाद करवो जेधजे नहि. दशवैकालिक सूत्रमां पणु जे न वात कडेवामां आवी छे. (जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए, जयं भुजंतो भासंतो पावकम्मं न वंधई)

छाया-यत् चरेत् यत् तिष्ठेत्, यत्मासीत् यत् शयीत् ।

यत् भुञ्जानो भाषमानः पापकर्म न बध्नाति ॥ १ ॥ इति ।

तत्रैव-‘ संजमं निहुओ चर ’ इत्यादि । छाया-संयमं निभृतश्चर ’ इति ।

संयमे तीर्थंकरस्याज्ञा प्रदर्शिता, इदानीं तपसि तदाज्ञा प्रदर्श्यते । यथा-दश-
वैकालिक सूत्रे-(द्वितीयाध्ययने)

“ आयावयाही चय सोगमल्लं ” इति । “ आयावयाही ” आतापय=आता-
पनारूपतपोधर्मांराधनेन तजुं शोषय, “ सोगमल्लं ” सौकुमार्यं “ चय ” त्यज=
परिहर ।

सए, जयं भुंजंतो भासंतो पावकम्मं न बंधई” सकल संयमियो’ को पूर्ण
सावधान ता पूर्वक ही चलना चाहिये और पूर्ण सावधानता पूर्वक ही बैठना
चाहिये । उठने बैठने में तथा आहारादि क्रिया करने और बोलने चलने
में सदा उसे अपनी यत्नाचारमय प्रवृत्ति पर ही लक्ष्य रखना चाहिये ।
इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से वह साधु पापकर्म का बंध नहीं करता
है । इसलिये हे मेघकुमार ! तुम “ संयमं निभृतश्चर ” इस सकल
संयम की अच्छी तरह से-यत्नाचारमय प्रवृत्ति से रक्षा करो-पालन
करो । इस प्रकार से संयम की आराधना में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा
का प्रदर्शन सूत्रकार ने किया है । अब तप के आराधन करने में उनकी
क्या आज्ञा है-वे यह स्पष्ट करते हैं “ आयावयाही चय सोगमल्लं ”
(दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) ‘ हे मुने ! सुकुमालपने को छोड़
आतापनाले ’ आतापनारूप तपधर्म की आराधना से मुनि को चाहिये

जधा संयमी लोकेअे संपूण्णपण्णे सावधान थधनेअे आलवुं जेधअे अने पूण्ण
सावधान थधने अे जेसवुं जेधअे, उठवा जेसवामां तेमअे आहार वजेरे क्रिया
करवामां अने जेसववा आलवामां उभेशा तेने पोतानी यत्नाचारमय प्रवृत्ति
उपर अे लक्ष्य आपवुं जेधअे, आ रीते प्रवृत्ति करवाथी ते साधु पाप-कर्मना
अंध करतो नथी, जेथी हे मेघकुमार ! तमे “ संयमं निभृतश्चर ” आ सकल
संयमनी सारी रीते यत्नाचारमयी प्रवृत्ति वडे रक्षा करो-आतुं पालन करो,
आ रीते सूत्रकारे संयमनी आराधना विषे प्रभुनी आज्ञानुं प्रदर्शन कयुं छे,
हवे तपनी आराधना करवामां तेज्जेश्रीनी आज्ञा शी छे ? ते सूत्रकार अही
स्पष्ट करे छे-“ आयावयाही चय सोगमल्लं ” (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन)
हे मुनि ! सुकुमलपने ते त्यजने आतापना स्वीकारो, आतापना रूप तपधर्मनी
आराधनाथी मुनि पोताना शरीरने कृश (दुर्बल) जनावे अने शारीरिक

કિંચ શ્રમણસ્ય ક્ષાન્ત્યાદિદશવિધે ધર્મે તપોસઃ પાઠો વર્તતે, તસ્માત્ તપોધર્મ
ઈતિ વિજ્ઞાયતે । તથાચોક્તં સમવાયાસસૂત્રે—(સમવાય ૧૦)

“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લસે, તં જહા—(૧) સ્વંતી, (૨) મુત્તી (૩) અજ્જવે
(૪) મદ્ધવે (૫) લાઘવે (૬) સચ્ચે (૭) સંજમે (૮) તવે (૯) ચિયાણ
(૧૦) વંમચેરવાસે ।

અહિંસાદીનાં જિનાશ્સાપયોજ્યપ્રવૃત્તિક્ત્વરૂપસ્ય ધર્મલક્ષણસ્ય સદ્ભાવાદ્
ધર્મત્વં સિદ્ધં ।

ઉક્તં ધર્મસ્ય લક્ષણં, લક્ષ્યા અહિંસાદયથ પ્રોક્તાઃ, તથાહિંસાસંયમતપોરૂપો ધર્મ
ઉત્કૃષ્ટં મજ્જલં વોધ્યમ્ ।

તથાચોક્તં દશવૈકાલિકસૂત્રે—(૫૦ અ૦ ૧)

“ ધર્મો મંગલમુક્ષિદ્ધિં અહિંસા સંજમો તવો ।

દેવાગ્નિ તં નમંસંતિ જસ્સ ધર્મ્મે સયા મળો ॥ ”

કિં વહ અપને શરીર કો કૂશ કરેં એવં શારીરિક સુકુમારતા કા મોહ
છોડે । ઉત્તમ ક્ષમા આદિક જો શ્રમણોં કે દશપ્રકાર કે ધર્મ કહે ગયે
હેં, ઉનમેં તપ કા મી કથન આયા હૈ, અતઃ તપ મેં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ હી
હોની હૈ । સમવાયાંગ સૂત્ર મેં શ્રમણ કે દશ પ્રકાર કે ધર્મોં કા કથન
કરતે હુએ સૂત્રકાર ને યહી કહા હૈ—“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લસે,
તં જહા—સ્વંતી, મુત્તી, અજ્જવે, મદ્ધવે, લાઘવે, સચ્ચે, સંજમે, તવે,
ચિયાણ વંમચેરવાસે ।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होती है कि
वहां पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का
सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत
अहिंसादिकों का कथन है । ये अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે. ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ
કહેવામાં આવ્યાં છે તેઓમાં તપનું કથન છે. એથી તપમાં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ
થાય જ છે. સૂત્રકારે સમવાયાંગ સૂત્રમાં શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનું કથન
કરતાં આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે—

“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લસે.—તં જહા—સ્વંતી, મુત્તી, અજ્જવે, મદ્ધવે, લાઘવે,
સચ્ચે’ સંજમે, તવે ચિયાણ વંમચેરવાસે । ”

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમાં ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે
કે તેઓમાં જિનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્-
ભાવ છે. આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરેનું કથન છે.
અહિંસા, સંયમ અને તપ રૂપ ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મંગળ રૂપ છે. દશવૈકાલિક

નમનારધર્મમૃતવર્ણી શ્રીકા મૃ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૩૨૯

છાયા—ધર્મો મજ્જલમુત્કુષ્ટમ્ અહિંસા સંયમસ્તપઃ ।

દેવા અપિ તં નમસ્યન્તિ, યસ્ય ધર્મે સદા મનઃ ॥

નન્વહિંસા-સંયમ-તપો-રૂપો ધર્મો મજ્જલમુત્કુષ્ટમિત્યેતદ્વચઃ કિમાજ્ઞાસિદ્ધમ્
આદોસ્વિદ્ યુક્તિસિદ્ધમપિ ?

અત્રોચ્યતે—ઉભયસિદ્ધમપિ, તથાહિ-જિનવચનત્વા-દાજ્ઞાસિદ્ધમ્ અનુમાનમ-
પ્યવ્રવર્તતે—‘ અહિંસાસંયમતપોરૂપો-ધર્મો મજ્જલમુત્કુષ્ટમ્’ इति प्रतिज्ञा, ‘ દેવાદિ-

ઉત્કુષ્ટ મંગલરૂપ હૈં દશવૈકાલિકસૂત્ર મેં યહી કહા હૈ “ ધમ્મો મંગલ-
મુક્કિટ્ઠં અહિંસા સંજમો તવો । દેવા વિ તં નમંસંતિ જસ્સ ધમ્મે સયા-
મણો ” ધર્મ હી ઉત્કુષ્ટ મંગલ હૈ । અહિંસા સંયમ ઓર તપ યે હી ધર્મ
હૈં । જિસકા અન્તઃ કરણ ઇસ ધર્મ સે સદા યુક્ત રહતા હૈં ડસકે લિયે
દેવ ભી નમસ્કાર કરતે હૈં ।

શંકા-અહિંસા, સંયમ ઓર તપરૂપ ધર્મ મેં જો ઉત્કુષ્ટ મંગલરૂપતા
કહી હૈં વહ આજ્ઞાસિદ્ધ હૈં ઇસલિયે કહી હૈં કિ યુક્તિ સે સિદ્ધ હૈં ઇસ-
લિયે કહી હૈં ? ભાવાર્થ-અહિંસાદિકોં મેં ઉત્કુષ્ટમંગલતા કિસ પ્રમાણ સે
સિદ્ધ હૈં ? આગમ સે યા અનુમાન સે ?

ઉત્તર-ઇનમેં ઉત્કુષ્ટ મંગલરૂપતા આગમ ઓર યુક્તિ ડોનોં સે સિદ્ધ
હૈં । જિનેન્દ્ર કે વચન હોને સે ઇનમેં આજ્ઞાસિદ્ધતા હૈં તથા અનુમાન સે
પ્રસિદ્ધ હોને સે યુક્તિ સિદ્ધતા હૈં । “ ધમ્મો મંગલમુક્કિટ્ઠં ” ઇત્યાદિ
ગાથા દ્વારા ઇનમેં જિનેન્દ્રવચનરૂપ આગમતા પૂર્વ મેં હી પ્રદર્શિત કી જા
ચુકી હૈં અનુમાન પ્રસિદ્ધતા ઇસ પ્રકાર હૈં-અનુમાન કે પાંચ અંગ હોતે

સૂત્રમાં એ જ વાત કહેવામાં આવી છે—“ ધમ્મો મંગલમુક્કિટ્ઠં-અહિંસા સંજમો
તવો । દેવા વિ તં નમંસંતિ જસ્સ ધમ્મે સયા મણો ” ધર્મ જ ઉત્કુષ્ટ મંગલ
છે. અહિંસા સંયમ અને તપ એ જ ધર્મ છે. જેનું અન્તઃકરણ આ ધર્મથી
સદા યુક્ત રહે છે તેને દેવો પણ નમન કરે છે.

શંકા—અહિંસા, સંયમ અને તપ રૂપ ધર્મને જે ઉત્કુષ્ટ મંગલ રૂપ
કહેવામાં આવ્યો છે તે આજ્ઞાસિદ્ધ છે. માટે કહેવામાં આવેલ છે કે યુક્તિથી
સિદ્ધ છે એટલા માટે કહેવામાં આવે છે ? ભાવાર્થ—અહિંસા વગેરેમાં ઉત્કુષ્ટ
મંગલતા કયા પ્રમાણથી સિદ્ધ છે ? આગમથી કે અનુમાનથી ?

ઉત્તર—આમાં ઉત્કુષ્ટ મંગલરૂપતા આગમ અને યુક્તિ બંનેથી સિદ્ધ છે.
જિનેન્દ્રનાવચનો હોવાથી આમાં આજ્ઞા સિદ્ધતા છે તેમજ અનુમાનથી પ્રસિદ્ધ
હોવા બદલ યુક્તિ સિદ્ધતા છે. “ ધમ્મો મંગલમુક્કિટ્ઠં ” વગેરે ગાથા વડે
આમાં જિનેન્દ્ર પ્રવચનરૂપ આગમતા પહેલાં બતાવવામાં આવી જ છે અને અનુ-

માન્યત્વાત્, इति हेतुः । अर्हदादिवत् इति दृष्टान्तः इह यो यो देवादिमान्यः स स उत्कृष्टं मङ्गलं यथाऽर्हदादयः, 'तथा चायं धर्मः' इत्युपनयः, तस्माद् देवादि-मान्यत्वादुत्कृष्टं मङ्गलमिति निगमनम् ।

वस्तुतस्तु धर्माधर्मस्वरूपं सू-मत्वाच्छ्रमार्थैर्दुर्ज्ञेयं, केवलं सर्वज्ञेन रागादिदोष रहितेन पञ्चत्रिंशद्वचनातिशयसंपन्नेन केवलिना तीर्थकरेण केवलालोकेन सुज्ञेयं भवति । छद्मस्थानां तु भगवद्वचनमेव नियामकं, तथाचोक्तम्—

हैं—१ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ दृष्टान्त, उपनय ४ और ५ निगमन । अर्हंत भगवान की तरह देवादिकों द्वारा मान्य होने से अहिंसा, तप और संयमरूप धर्म उत्कृष्ट मंगल हैं ।

इस अनुमान वाक्य में “अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म उत्कृष्ट-मंगल है” यह प्रतिज्ञा है “देवादिकों द्वारा मान्य होने से” यह हेतु है। “अर्हन्त की तरह” यह दृष्टान्त है पक्ष में हेतु के दुहराने से उपनय और प्रतिज्ञा के दुहराने से निगमन सिद्ध हैं जैसे—“जो जो देवादिकों द्वारा मान्य होता है वह २ उत्कृष्ट मंगल होता है जैसे अर्ह-त प्रभु—ये भी देवादिकों द्वारा मान्य हैं। इस प्रकार पक्ष में हेतु के दुहराने रूप उपनय है इसलिये “वे भी उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं” इस प्रकार प्रतिज्ञा के दुहराने रूप निगमनवाक्य है ।

वास्तव में तो धर्म और अधर्म का स्वरूप सूक्ष्म होने से हम छद्म-स्थों के लिये अत्यंत परोक्ष है—इस लिये हम उसे सिर्फ अनुमान या

માન પ્રસિદ્ધતા આ પ્રમાણે સમજવી જોઈએ. અનુમાનના પાંચ અંગો હોય છે—પ્રતિજ્ઞા ૧, હેતુ ૨, દૃષ્ટાંત ૩, ઉપનય ૪, અને નિગમન ૫,

અહીં તો ભગવાનની જેમ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવા બદલ અહિંસા, તપ અને સંયમ રૂપ ધર્મ ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ છે.

આ અનુમાન વાક્યમાં “અહિંસા, સંયમ અને તપ રૂપ ઉત્કૃષ્ટ મંગલ છે.” આ પ્રતિજ્ઞા છે. “દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવાથી આ હેતુ છે. અહીં તની જેમ” આ દૃષ્ટાંત છે પક્ષમાં હેતુને એવડાવવાથી ઉપનય અને પ્રતિજ્ઞાને એવડાવવાથી નિગમન સિદ્ધ છે. જેમકે “દેવ વગેરે દ્વારા જે જે માન્ય હોય છે તે તે ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ હોય છે જેમ અહીં ત પ્રભુ પણ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય છે. આરીતે પક્ષમાં હેતુને એવડાવવાથી ઉપનય છે, માટે “તેઓ પણ ઉત્કૃષ્ટ મંગલ સ્વરૂપ છે” આરીતે પ્રતિજ્ઞાને એવડાવવા રૂપ નિગમન વાક્ય છે.

વસ્તુતઃ ધર્મ તેમજ અધર્મનું સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ હોવાથી અમારા જેવા છદ્મસ્થો માટે તે અતીવ પરોક્ષ છે એથી અમે ફક્ત તેને અનુમાન કે આગમથી

“ ધર્માધર્મવ્યવસ્થાયાઃ, શાસ્ત્રમેવ નિયામકમ્ ।

તદુક્તાઽઽસેવનાદ્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ॥ ” ઇતિ,

આગમ સે હી જ્ઞાત કર સકતે હૈં । ઘટપટાદિકોં કી તરહ ઉસે સ્પષ્ટ રૂપ સે દેખનહીં સકતે હૈં । ઇસીલિયે વહ દુર્જેય હૈ । જો અનુમાન ઓર આગમ સે ગમ્ય હોતા હૈ વહ અગ્નિ આદિ કી તરહ કિસી ન કિસી કે પ્રત્યક્ષ હોતા હૈ યહ સ્પષ્ટ સિદ્ધાન્ત હૈ । તીર્થંકર પ્રભુ ને કિ જો રાગ ઓર દ્વેષ સે સર્વથા રહિત હૈં, ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત પદાર્થોંકો જો હસ્તામલક-વત્ સ્પષ્ટ જાનતે હૈં, ૩૫ વાણી કે અતિશય સે જો યુક્ત હૈં અપને કેવલજ્ઞાન રૂપી આલોક સે ઉસે વિશદરૂપ સે જાન લિયા હૈ । હમ છદ્મસ્થોં કે લિયે ઇનકે વચનોં કે સિવાય હસ વિષય કા નિયામક ઓર કુછ નહીં હૈ । અતઃ ઉનકે કથનાનુસાર હી ધર્મ ઓર અધર્મ કા સ્વરૂપ હમ સંસારી જીવ જાન સકતે હૈં યા જાનતે હૈં । “ ધર્માધર્મવ્યવસ્થાયાઃ શાસ્ત્રમેવ નિયામકં, તદુક્તા સેવનાત્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ”-ધર્મ ઓર અધર્મ કે સ્વરૂપ કી વ્યવસ્થા કરને વાલે કેવલ સર્વજ્ઞભગવાન કે વચન સ્વરૂપ આગમ હી હૈં । અતઃ ઉનકે દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ કા સેવન કરના ધર્મ ઓર ઉસસે વિપરીત માર્ગ કા સેવન કરના અધર્મ હૈ

ભાવાર્થ-જીવોંકો ધર્મકી પ્રાપ્તિ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ

સમજી શકીયે છીએ. ‘ ઘટ પટ ’ વગેરેની જેમ તેને સ્પષ્ટ પણે બોધ શકતા નથી એથી જ તે દુર્જેય છે. જે અનુમાન અને આગમથી ગમ્ય હોય છે તે અગ્નિ વગેરેની જેમ કોઈને કોઈને પ્રત્યક્ષ હોય છે આ એક સ્પષ્ટ સિદ્ધાંત છે. રાગ અને દ્વેષથી સંપૂર્ણ પણે રહિત એવા તીર્થંકર પ્રભુએ-કે જેઓ ત્રિકાળવર્તી બધા પદાર્થોંને હસ્તામલકવત્ સ્પષ્ટ રીતે જાણે છે, ૩૫ વાણીના અતિશયથી જેઓ યુક્ત છે-પોતાના કેવળજ્ઞાન રૂપી આલોકથી તેને વિશદ રૂપથી જાણી લીધું છે. અમારા જેવા છદ્મસ્થોંને માટે એમનાં વચનો સિવાય આ વિષયનો નિયામક બીજો કોઈ નથી. એથી અમે તેમના કદાચ સુબળ જ ધર્મ અને અધર્મનું સ્વરૂપ-જાણી શકીયે છીએ “ ધર્માધર્મ-વ્યવસ્થાયાઃ શાસ્ત્રમેવ નિયામકં, તદુક્તાસેવનાત્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ” ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપની વ્યવસ્થા કરનાર ફક્ત સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચન સ્વરૂપ આગમો જ છે. એથી તેમના વડે ઠરાવવામા આવેલા માર્ગનું સેવન કરવું એજ ધર્મ અને તેથી વિરુદ્ધ માર્ગનું સેવન કરવું અધર્મ છે. ભાવાર્થ-સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા

પર ચલનેસે હી હો સકતી હૈ, હસસે વિપરીત માર્ગ પર ચલને સે નહીં । અતઃ જો જીવ ધર્મ કો સાક્ષાત્કાર કરના ચાહતે હૈં ઉનકા કર્તવ્ય હૈ કિ વે સર્વજ્ઞ ભગવન દ્વારા કથિત માર્ગ કા સેવન કરેં ઓર ઉસ સે ભિન્ન માર્ગ કા પરિત્યાગ કરેં । હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ સે વે ધર્મ ઓર અધર્મ કે સ્વરૂપ કે જ્ઞાતા બન જાતે હૈં । હસ કથન સે શંકાકાર કી હસ આશંકાકા યર્હા પરિહાર કિયા ગયા હૈ, કિ જો ઉસમેં પહિલે યહ પ્રશ્ન કિયા કિ અહિંસાદિકોં મેં જો ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપતા હૈ વહ કિસ પ્રમાણ સે હૈ । સૂત્રકારને આગમ ઓર અનુમાન દોનોં પ્રમાણોં સે ઉનમેં ઉત્કૃષ્ટ મંગલતા સિદ્ધ કી હૈ હસ કથન સે એક યાત ઓર હમેં યહ જ્ઞાત હોતી હૈ કિ સર્વજ્ઞ કથિત સિદ્ધાન્ત કી જાંચ કે લિયે જલતક તર્ક કા જોર ચલતા રહે બુદ્ધિમાન તલતક અપની તર્કણા કી કસોટી પર ઉસે કસતાં રહે-પર જલ તર્ક કી સમાપ્તિ હો જાવે-તર્કણા શક્તિ કુંઠિત હો જાવે-તો ઉસ વ્યક્તિ કા કર્તવ્ય હૈ વહ આગમ પ્રમાણ સે હી ઉસ સિદ્ધાન્ત કા અનુસરણ કરેં । ફિર ઉસે ઉસ વિષય મેં તર્ક કરને કી આવશ્યકતા નહીં હૈ કયોં કિ સૂક્ષ્માદિક પદાર્થ સર્વજ્ઞ કે સિવાય છદ્મસ્થોં કે

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઈ શકે તેમ છે. એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ. એથી જે જીવો ધર્મનું પ્રત્યક્ષ દર્શન ઇચ્છતા હોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનું સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઈ જાય છે. આ કથનથી શંકાકારની એ આશંકાનો અહીં પરિહાર કરવામાં આવ્યો છે કે જે તેમાં પહેલાં આ પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે કે અહિંસા વગેરે માં જે ઉત્કૃષ્ટ મંગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે ? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બંને-પ્રમાણો થી તેઓમાં ઉત્કૃષ્ટ મંગળતા સિદ્ધ કરી છે. એ કથન વડે બીજા આ વાતનું પણ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યાં સુધી તર્કની શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યાં સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પણ જ્યારે તર્કની શક્તિ મંદ થઈ જાય-તર્કણા શક્તિ કુંઠિત થઈ જાય ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નું અનુસરણ કરે. પછી તે વિષયમાં જ તેને મીનમેષ કરવી જોઈએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

ભગવાન સ્વયંભૂતવર્ણિની ટીકા બે ૧૬ ત્રીપદીચંચી

૩૩૩

સ્વયમેવ ભગવતા-અહિંસાસંયમતપસાં ધર્મત્વં, તથા - તેષામુત્કૃષ્ટમફલસ્વરૂપ-
ત્વેન પ્રાધાન્યં ચ વર્ણિતં, તત્રાપ્યહિંસાયાઃ-સર્વધર્મમૂલત્વેન પ્રાધાન્યાત્ પ્રથમં સ્થાનં
પ્રદત્તમ્ । તસ્ય સર્વધર્માનસ્યાઽહિંસાધર્મસ્ય ષટ્કાયોપમર્દનસાધ્યે મૂર્તિપૂજને
મૂલતઃ સમુચ્છેદં કેવલાલોકેન સાક્ષાત્ પश्यन् ભગવાનર્હન્ મૂર્તિપૂજનાર્થમાજ્ઞાં પ્રદ-
દ્યાદિત્યાકાશકુસુમમિત્રાત્યન્તમસદેવ બોધ્યમ્ ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હૈં । અતઃ એસે વિષયોં
મેં સર્વજ્ઞ કે વચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અંગીકાર કરનાં ચાહિયે ।

ભગવાન ને સ્વયં હી અહિંસા, સંયમ ઓર તપ મેં ધર્મરૂપતા તથા
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈ । અહિંસા મેં જો પ્રધાન
રૂપતા કહી ગઈ હૈં ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈં કિ વહ સમસ્તધર્મોં
કા મૂલ હૈં ઓર હસીલિયે ઉસે ઉન્હોં ને સર્વપ્રથમસ્થાન દિયા હૈં જબ
યહ બાત હૈં તો વિચારના ચાહિયે કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કેસે
દે સકતે હૈં । કયોં કિ વહ પૂજા ષટ્કાય કે જીર્ણોં કી વિરાધના સે
સાધ્ય હોતો હૈં । હસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અભાવ
સમાયા હુઆ હૈં । અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉસ પ્રભુપ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મ
કા સર્વથા ઉચ્છેદ હો જો જાતા હૈં-મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા
ધર્મ કા રક્ષક નહીં હો સકતા હૈં-પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા
હૈં હસ પ્રકાર સ્વયં ભગવાન જબ અપને કેવલ જ્ઞાન સે હસ બાત કો

તેમ નથી. એથી એવી બાબતોમાં સર્વજ્ઞ નાં વચનો જ પ્રમાણ રૂપમાં સ્વીકારવાં બોધ્યો.

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સંયમ અને તપમાં ધર્મ રૂપતા તેમજ
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે. અહિંસામાં જે પ્રધાન રૂપતા
દર્શાવવામાં આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનું
મૂળ છે અને એથી તેને સૌએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અપ્યું છે. બ્યારે એવી
વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવું બોધ્યો કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે
આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય
હોય છે. આ વિરાધનામાં અહિંસા ધર્મ તો, મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ
થયો છે તેમ કહી શકાય છે. એટલે કે મૂર્તિપૂજામાં તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા
ધર્મનો સંપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે. મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા
ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ
બોધવો પડે છે. આ રીતે બ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

एवं लक्ष्याः समालोचिताः, इदानीमलक्ष्या उच्यन्ते—हिंसादौ जिनाज्ञाविरुद्धा प्रवृत्तिर्भवति लोकानां तस्मादधर्मा हिंसादय एव तस्य धर्मलक्षणस्यालक्ष्या भवन्ति।

धर्माधर्मस्वरूपबोधनार्थं हि भगवताऽऽवश्यं नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो निक्षेपः प्रदर्शितः। तत्र भावावश्यंके एव तीर्थकराज्ञायाः सद्भावाद्

साक्षात् जानते हैं तो फिर वे ही मूर्तिपूजा करने की आज्ञा देंगे यह मान्यता आकाशपुष्पकी तरह सर्वथा असत्य ही है यह स्वयं समझने जैसी बात है जहाँ हिंसा है वहाँ धर्म नहीं है अहिंसामें ही सच्चाधर्म है।

इस प्रकार धर्म के लक्ष्यभूत अहिंसा आदि का यहाँ तक विचार किया। अब उससे विपरीत हिंसादिकों का विचार करते हैं—

हिंसा आदि पाप हैं—इन में प्रवृत्ति करने की आज्ञा जिन भगवान ने नहीं दी है फिर भी जो प्रवृत्ति करते हैं वे उस आज्ञा से बहिर्भूत हैं। अतः जिनाज्ञा से विरुद्ध प्रवृत्ति होने से जीवों के लिये धर्म प्राप्ति के बदले इनसे अधर्म की ही प्राप्ति होती है। जिन से जीवों को अधर्म की प्राप्ति होनी हो, वे स्वयं अधर्म हैं। हिंसादिक पापों में अधर्मता होने का कारण उनमें धर्म के लक्षण का अभाव है। इसीलिये ये धर्म के लक्षण के अलक्ष्य हुए हैं। इस धर्म और अधर्म के स्वरूप को समझाने के लिये भगवान ने आवश्यकसूत्र में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव

વાતને સ્પષ્ટપણે પ્રત્યક્ષરૂપમાં બાણે છે તે પછી તેઓ જ મૂર્તિપૂજા કરવાની આજ્ઞા આપે એવી માન્યતા આકાશ પુષ્પની જેમ સંપૂર્ણપણે અસત્ય જ સિદ્ધ થાય છે. આપણે પોતે પણ આ વાત સમજી શકીએ તેમ છીએ. કે બધાં હિંસા છે ત્યાં ધર્મ નથી. અહિંસામાં જ સાચો ધર્મ છે.

આ રીતે ધર્મના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે ને માટે અહીં સુધી વિચાર કરવામાં આવ્યો છે. હવે આગળ તેથી વિરુદ્ધ હિંસા વગેરેની બાબતમાં વિચાર કરવામાં આવે છે—

હિંસા વગેરે પાપ છે—આમાં પ્રવૃત્ત થવાની આજ્ઞા જિન ભગવાનને દેહને પણ આપી નથી છતાં જેઓ તેમાં પ્રવૃત્તિ કરે છે તેઓ તે આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત છે. એથી જિનાજ્ઞાની પ્રતિકૂળ પ્રવૃત્તિ હોવાથી જીવોને ધર્મ પ્રાપ્તિના સ્થાને એમનાથી અધર્મની જ પ્રાપ્તિ થાય છે. જીવોને જેનાથી અધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે તે પોતે અધર્મ છે હિંસા વગેરે પાપોમાં અધર્મતા હોવાને લીધે તેઓમાં ધર્મના લક્ષણોનો અભાવ છે. એટલા માટે જ તેઓ ધર્મના લક્ષણથી અલક્ષ્ય થયા છે. આ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને સમજાવવા માટે ભગવાને

ધર્મસ્વરૂપ, અન્યવિધેષવાચક્યકેષુ રાગદ્વેષદિસાદિદોષસદ્ભાવેન મોક્ષમાર્ગોપદેશે પ્રવૃત્તસ્ય તીર્થંકરસ્ય ચાડ્ડગ્ધાયા અભાવેન ન તત્ર ધર્મલક્ષણં સમન્નુગચ્છતિ, તેવાં મોક્ષસાધકત્વાભાવાદ્જૈનધર્મપદં લઘુ-મનર્હત્વાત્ । તથાચોક્તમનુયોગદ્વારે—

“સે કિં તં નામાવસ્સયં ? । નામાવસ્સયં જસસ ણં જીવસ્સ વા અજીવસ્સ વા

કે ભેદ સે ૪ ચાર નિક્ષેપોં કા કથન કિયા હૈ ઉનમેં નામ સ્થપના ઓર દ્રવ્યરૂપ ધર્મ નિક્ષેપ કે આરાધન કરને કી ભગવાન ને જીવોં કો આજ્ઞા નહીં દી હૈ ધર્યોં કિ ઇનસે જીવોં કો ધર્મ કો પ્રાપ્તિ નહીં હોતી હૈ । ધર્મ કી પ્રાપ્તિ કરાને ચાલા કેવલ ભાવ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યક હૈ । ઇસકી આરાધના સે હી જીવોં કો ધર્મ પ્રાપ્ત હુઆ કરતા હૈ—અતઃ ઇસ મેં હી ધર્મરૂપતા પ્રકટ કી ગઈ હૈ યાકી કે ઇસકે અતિરિક્ત નિક્ષેપોં મેં—આવશ્યકોં મેં રાગદ્વેષ ઓર હિંસા આદિ દોષોં કા સદ્ભાવ હોને સે ઇવં મોક્ષ માર્ગ કે ઉપદેશપ્રદાન કરને મેં પ્રવૃત્ત તીર્થંકરોં કી ઇનકે આરાધન કરને મેં આજ્ઞા કા અભાવ હોને સે ધર્મ કે લક્ષણ કા સમન્વય હી નહીં હોતા હૈ । મુક્તિ કા જો સાધક હોતા હૈ વહી જૈન-ધર્મ હૈ । ઇન ૩ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યકોં મેં મુક્તિ કી સાધકતા કા અભાવ હૈ—ઇસલિયે ચે જૈનધર્મ કે પદકો સ્વપ્ન મેં બી પ્રાપ્ત નહીં કર કતે હૈ ।

અનુયોગદ્વાર મેં યહી ચાત કહી ગઈ હૈ—

સે કિં તં નામાવસ્સયં ? નામાવસ્સયં જસસ ણં જીવસ્સ અજીવસ્સ

આવશ્યકસૂત્રમાં નામ, સ્થાપના દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી ચાર નિક્ષેપો નું કથન કર્યું છે. તેઓમાં નામ, સ્થાપના, અને દ્રવ્યરૂપ ધર્મ નિક્ષેપને આરાધવાની ભગવાને જીવોને આજ્ઞા આપી નથી કેમ કે એમનાથી જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી ધર્મની પ્રાપ્તિ કરાવનારો કેવળ ભાવનિક્ષેપરૂપ આવશ્યક છે. એની આરાધનાથી જ જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે એથી આમાં જ ધર્મરૂપતા બતાવવામાં આવી છે. એના સિવાયના બીજા નિક્ષેપોમાં—આવશ્યકોમાં—રાગદ્વેષ અને હિંસા વગેરે દોષોને સદ્ભાવ હોવાથી અને મોક્ષ માર્ગના ઉપદેશ આપવામાં પ્રવૃત્ત તીર્થંકરોની એમની આરાધના કરવાની આજ્ઞાનો અભાવ હોવાથી ધર્મના લક્ષણોને સમન્વય જ થતો નથી. મુક્તિનો જે સાધક હોય છે તે જ જૈન-ધર્મ છે. આ ૩ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યકોમાં મુક્તિની સાધકતાનો અભાવ છે માટે એઓ જૈન ધર્મના પદને સ્વપ્નમાં ચે ભળવી શકે નેમ નથી.

અનુયોગદ્વારમાં એ જ વાત કહેવામાં આવી છે—

સે કિં તં નામાવસ્સયં ? નામાવસ્સયં જસસ ણં જીવસ્સ અજીવસ્સ વા જીવાણ વા

जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नामं कज्जइ, से तं नामावस्सयं ।

अथ किं तत् नामावश्यकं ? नामावश्यकं—यस्य खलु जीवस्य वा अजीवस्य वा जीवानां वा अजीवानां वा, तदुभयस्य वा तदुभयेषां वा आवश्यकमिति नाम क्रियते तदेतन्नामावश्यकम् ।

“ से किं तं ठवणावस्सयं ? जणं कट्टकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंधिमे वा वेहिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अवखे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सम्भावठवणा वा असम्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणावस्सयं ।

छाया—अथ किं तत् स्थापनावश्यकम् ? स्थापनावश्यकं यत् खलु काष्ठकर्म वा पुस्तकर्म वा चित्रकर्म वा लेप्पकर्म वा ग्रन्थिमं वा वेष्टिमं वा पूरिमं वा सङ्घातिमं

वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नामं कज्जइ से तं नामावस्सयं ।

से किं तं ठवणावस्सयं ? जणं कट्टकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंधिमे वा वेहिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अवखे वा वराडए वा एगो वा सम्भावठवणा वा असम्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणावस्सयं

भावार्थ—जीव, अजीव अथवा तदुभय स्वरूप आदि पदार्थों में “यह आवश्यक है” इस प्रकार नाम संस्कार करना वह जीव अजीव आदि नाम आवश्यक है इस नाम आवश्यक में आवश्यक के वास्तविक गुणादि कुछ भी नहीं होते हैं—सिर्फ लोक व्यवहार के लिये ही इस प्रकार की वहाँ पर निक्षेपविधि करली जाती है काष्ठ, पुस्तक चित्र

अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नामं कज्जइ से तं नामावस्सयं ।

से किं तं ठवणावस्सयं ? जणं कट्टकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंधिमे वा वेहिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अवखे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सम्भावठवणा वा असम्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणावस्सयं ।

भावार्थ—जव, अजव अथवा तदुभय स्वरूप वगेरे पदार्थों में “आ आवश्यक छे” आ रीते नाम संस्कार करवो ने जव अजव वगेरे ‘नाम आवश्यक’ छे आ नाम आवश्यक में आवश्यक ना वास्तविकगुण वगेरे कुछ न होता नथी इकत लोकव्यवहार ना भाटे न आ जतनी त्यां निक्षेपविधि करवा में

અનગારધર્મામૃતલવિષ્ણી ટી૦ અ૦ ૧૬ પ્રોપતીવર્ત્તા

૧૩૭

વા અક્ષં વા વરાટકં વા ઈકો વા અનેકો વા સદ્ભાવસ્થાપના વા અસદ્ભાવસ્થાપના વા ' આવશ્યક ' -મિતિ સ્થાપના સ્થાપ્યતે, તદેતત્ સ્થાપનાવશ્યકમ્ ।

ભાવાવશ્યકસ્વરૂપશૂન્યે ગોપાલદારકાર્દો આવશ્યકેતિ નામકરણે નામના- નામમાત્રેણાવશ્યકં નામાવશ્યકં ગોપાલદારકાર્દિર્ભવતિ । સ્થાપનાઽપિ ભાવાવશ્યક

અવં અક્ષ-શતરંજ કી ગોટી આદિ મેં ઈક અથવા અનેક આવશ્યક ક્રિયા કરને વાલે શ્રાવક આદિ કો તદાકાર અથવા અતદાકાર લિખિત ચિત્ર સ્થાપના આવશ્યક (નિક્ષેપ) હૈ યહ સ્થાપના ઘો પ્રકાર કી હૈ ઈક સદ્ભાવ સ્થાપના ઔર ૨ દૂસરી અસદ્ભાવસ્થાપના । સદ્ભાવ સ્થાપના મેં જિસકી સ્થાપના કી જાતી હૈ ઁસકી સર્વ આકૃતિ કોતરી રહતી હૈ અસદ્ભૂત સ્થાપના મેં ઈસ પ્રકાર કી આકૃતિ આદિ નહીં રહતી હૈ વહાં પર કેવલ સંકેત હી હૈ જૈસે શતરંજ કી ગોટિયાં મેં યહ પ્યાદા હૈ યહ ઘજીર હૈ, યહ હાથી હૈ ઇત્યાદિ સિર્ફ કલ્પના હી કલ્પના રહતી હૈ-વહાં ઁનકા કોઈ મી આકાર કોતરા નહીં રહતા હૈ । નામ નિક્ષેપ મેં જિસ પ્રકાર ભાવ આવશ્યક શૂન્યતા રહતી હૈ ઁસી પ્રકાર સ્થાપના મેં મી યહી ઘાત રહતી હૈ કિસી ગોપાલ (ગ્વાલિયે) કે લડકે કા " આવ- શ્યક " ઈસ પ્રકાર કા નામ જિસ પ્રકાર ભાવ આવશ્યક રહિત નામ નિક્ષેપ મેં હૈ ઁસી પ્રકાર ભાવ આવશ્યક કે સ્વરૂપ સે શૂન્ય સ્થાપના નિક્ષેપ મેં મી " યહ આવશ્યક હૈ " યહ સ્થાપના નિક્ષેપ હૈ ।

આવે છે, કાષ્ઠ, પુસ્તક, ચિત્ર અને અક્ષ-શતરંજ ની સોગડી વગેરેમાં એક કે અનેક આવશ્યક ક્રિયા કરનાર શ્રાવક વગેરેનું તદાકાર કે અતદાકાર લેખિત ચિત્ર-સ્થાપન આવશ્યક (નિક્ષેપ) છે. આ સ્થાપના બે પ્રકારની છે. એક સદ્ભાવ સ્થાપના અને બીજી અસદ્ભાવ સ્થાપના. સદ્ભાવ સ્થાપનામાં બેની સ્થાપના કરવામાં આવે છે તેની આકૃતિ સંપૂર્ણપણે કોતરેલ હોય છે. અસદ્ભૂત સ્થાપનામાં આ જાતની આકૃતિ વગેરે રહેતી નથી ત્યાં ફક્ત સંકેત જ છે. જેમ શેતરંજની સોગડીઓમાં આ પાયદળ છે, આ વજીર છે, આ હાથી છે વગેરે ફક્ત કોરી કલ્પના જ હોય છે તેમાં તેમની કોઈપણ જાતની આકૃતિ કોતરેલી હોતી નથી. નામ નિક્ષેપમાં જેમ ભાવ આવશ્યક શૂન્યતા રહે છે તેમજ સ્થાપનામાં પણ એ જ વાત હોય છે. કોઈ ગોવાળિયાના પુત્રનું ' આવ- શ્યક ' આ જાતનું નામ જેમ ભાવ આવશ્યક રહિત નામ નિક્ષેપમાં છે તે પ્રમાણે જ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય સ્થાપના નિક્ષેપમાં પણ " આ આવશ્યક છે " આ સ્થાપના નિક્ષેપ છે.

સ્વરૂપશૂન્યે કાષ્ટકર્માદૌ ક્રિયતે । અતો માદશૂન્યે ત્રિયમાણત્વાદિશેષાદનયો-
નાસ્તિ કશ્ચિદ્ ભેદ इत्याशयेनाह—

“નામદુવળાણં કો પડિસેસો ? । છાયા-નામસ્થાપનયોઃ કઃ પ્રતિવિશેષઃ ? ।
અત્રોત્તરમુચ્યતે—

‘નામં આવકહિઅં, ઠવળા ઇત્તરિઆ વા હોજ્જા આવકહિઆ વા ’ ॥ છાયા-
નામ-યાવત્કથિકં, સ્થાપના-ઈત્વરિકા વા ભવેદ્ યાવત્કથિકા વા ।

‘ નામં આવકહિઅં ’ નામ યાવત્કથિકં-સ્વાશ્રયદ્રવ્યસ્યાસ્તિત્વકથાં યાવ-
દનુવર્તતે इत्यर्थः, સ્થાપના તુ ‘ ઇત્તરિઆ વા ’ ઇત્વરિકા વા સ્વલ્પકાલસ્થાયિની
વા ‘ હોજ્જા ’ સ્યાત્, યાવત્કથિકા વા, અયં ભાવઃ-કાચિત્-સ્થાપના સ્વાશ્રય-
દ્રવ્યસ્ય સદ્ભાવેऽपि, મધ્યકાલ એવ નિવર્તતે, કાચિત્-તત્સત્તાં યાવદવતિષ્ઠતે

શંકા—જિસ પ્રકાર ભાવ આવશ્યક કે સ્વરૂપ સે શૂન્ય ગાપાલ કે
લઢકે આદિ મેં “ આવશ્યક ” હસ પ્રકાર કા નામનિક્ષેપરૂપ આવશ્યક
હે વસી પ્રકાર ભાવ આવશ્યકકે સ્વરૂપસે શૂન્ય કાષ્ટધર્મ આદિકોં મેં મી
યહી ખાત હૈ । અતઃ ભાવ આવશ્યકકે સ્વરૂપકી શૂન્યતાકી અપેક્ષા સે
હન દોનોંમેં કોઈ મી અન્તર નહીં હૈ । તો ફિર હન દોનોંમેં કયા ભેદ હૈ !

ઉત્તર—“નામં આવકહિઅં ઠવળા ઇત્તરિઆ વા હોજ્જા આવકહિઆ-
વા ” હસ પ્રકાર કી શંકા ઠીક નહીં-કયોં કિ નામ યાવત્કથિત હોતા
હે સ્થાપના ઇત્વરિકા ઓર યાવત્કથિકા દોનોં પ્રકાર કી હોતી હૈ । અપને
આશ્રયભૂત દ્રવ્યકા જબતક અસ્તિત્વ-સદ્ભાવ રહતા હૈ તબતક નામનિ-
ક્ષેપ રહતા હૈ ! ઇત્વરિકા શબ્દ કા અર્થ અલ્પકાલીન હૈ ચિત્ર એવં અક્ષ
આદિકોં મેં યહ સ્થાપના અલ્પકાલીન હોતી હૈ । હસ પ્રકાર નામ ઓર

શંકા—જેમ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય ગોવાગિયાના પુત્ર વગે-
રેમાં “ આવશ્ય ” આ બાતનું નામ નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક છે તેમજ ભાવ
આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય કાષ્ટકર્મ વગેરેમાં પણ એ જ વાત છે. એથી ભાવ
આવશ્યકના સ્વરૂપની શૂન્યતાની દૃષ્ટિએ આ બંનેમાં કોઈ પણ બાતને તફાવત
નથી, ત્યારે આ બંનેમાં ભેદ શો છે ?

ઉત્તર—(નામ આવકહિઅં ઠવળા ઇત્તરિઆ વા હોજ્જા આવકહિઆ વા)
શંકા યોગ્ય નથી કેમકે નામ યાવત્ કથિત હોય છે. સ્થાપના ઇત્વરિકા અને
યાવત્કથિત બંને પ્રકારની હોય છે. પોતાને આશ્રયભૂત દ્રવ્યનું જ્યાં સુધી સદ્-
ભાવ-અસ્તિત્વ રહે છે ત્યાં લગી નામ નિક્ષેપ રહે છે । ઇત્વરિકા શબ્દનો અર્થ
અલ્પકાલીન છે. ચિત્ર અને અક્ષ (રમવાના પાસા) વગેરેમાં એ સ્થાપના
અલ્પકાળ માટે હોય છે. આ રીતે નામ અને સ્થાપનામાં ભાવ નિક્ષેપની

એનેગત્વમાંનૃતવર્ણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રોપદીચર્ચા

૨૧૨

હિતિ । एवं च—नामस्थापनयोर्भावशून्यत्वेनाधारसाम्येऽपि भेदः स्वस्वावस्थानकाल-
कृत एव भगवता प्रदर्शितः । यद्यपि गोपालदारकादौ विद्यमानेऽपि कदाचिद-
नेकनामपरिवर्तनं लोके क्वचिद् दृश्यते, तथा च कालकृतोऽपि भेदो नास्ति,
तथापि—बहुशः स्थले नाम्नो यावत्कथिकत्वमेव दृश्यते, नाम्नः परावर्तनं तु
क्वचिद्विरलतयोपलभ्यते । अतोऽल्पस्थलव्यापित्वेन नाम्न इत्वरिकता भगवता
न विवक्षिता । नाम्नोऽल्पकालिकताकल्पने तूष्णत्रमरूपणापत्तिरिति बोध्यम् ।

સ્થાપનામેં ભાવનિક્ષેપકી શૂન્યતાકી અપેક્ષાસે સમાનતા આતી હૈ તો भी
અપને ૨ કાલકી અપેક્ષાસે હનમેં હસ પ્રકાર ભેદ—અન્તર માના ગયા હૈ ।

શંકા—નામનિક્ષેપ મેં જો યાવત્કથિકતા પ્રદર્શિત કી गई હૈ, वह
ठीक नहीं है—कारण कि हम देखते हैं नामवान द्रव्य—गोपालदारक
आदि के विद्यमान रहते हुए भी उस में अनेक नामों का परिवर्तन
होता रहता है । कभी उसका “आवश्यक” यह नाम होता है, तो
“इन्द्र” यह नाम रख लिया जाता है । फिर “आवश्यक” इस नाम
निक्षेप में यावत्कथिकता कैसे आ सकती है ?

ઉત્તર—શંકા ઠીક હૈ હસ પ્રકાર સે વિચાર કરને પર કાલકૃત
અન્તર યદ્યપિ ડન દોનોં મેં નહીં માલૂમ હોતા હૈ—તો भी હસ વાત કી
યહાં પર વિવક્ષા નહીં હૈ હસકા કારણ યહી હૈ કિ યહ નામપરિવર્તન
અલ્પસ્થલવર્તી હોનેસે વ્યાપ્ય હૈ । યહ વાત સબ જગહ નહીં હોતો । કહીં
૨ હી હોતી હૈ યહાં સામાન્યકથન હૈ—વિશેષ નહીં । સામાન્યરૂપ સે નામ

શૂન્યતાની અપેક્ષાથી સમાનતા આવી જાય છે, છતાંયે પોતપોતાના કાળની
અપેક્ષાથી તેઓમાં આ જાતનો ભેદ અન્તર માનવામાં આવ્યો છે.

શંકા—નામ નિક્ષેપમાં જે યાવત્કથિકતા બતાવવામાં આવી છે, તે ઉચિત
નથી. કારણ કે નામવાળું ગોપાળદારક વગેરેના વિદ્યમાન રહેતા પણ તેમાં
અનેક નામોનું પરિવર્તન થતું રહે છે. કોઈ વખતે તેનું નામ ‘આવશ્યક’
રાખવામાં આવે છે તો કોઈ વખત ‘ઇન્દ્ર’ નામ રાખવામાં આવે છે. તો
પછી ‘આવશ્યક’ આ નામ નિક્ષેપમાં યાવત્કથિત કેવી રીતે આવી શકે છે ?

ઉત્તર—શંકા ઉચિત છે. આ રીતે વિચાર કરવાથી જો કે કાળકૃત અન્તર
તેઓ બંનેમાં જણાતું નથી છતાંયે આ વાતની અહીં વિવક્ષા નથી. એનું
કારણ આ પ્રમાણે છે કે આ નામ પરિવર્તન અલ્પ—સ્થલવર્તી હોવાથી વ્યાપ્ય
છે, આ વાત બધે સ્થાને હોતી નથી કોઈક કોઈક સ્થાને જ હોય છે. અહીં

યત્ત-ઉપલક્ષણમાત્રં ચેદં કાલભેદેનૈતયોર્ભેદકથનમ્-અપરસ્યાપિ વહુપ્રકાર-
ભેદસ્ય સમ્ભવાત્, ઇત્યુક્તં, તદુત્સૂત્રપ્રરૂપણમ્ યથોત્સૂત્રપ્રરૂપણમિયાનામનિક્ષેપે
ઇત્વરિકતાયાઃ ક્વચિત્ સંભવેઽપિ ભગવતાઽનુકૃત્વાદુપલક્ષણમિતિ ન સ્વીકૃતં તથૈવ
સ્થાપનાયાં કાલાતિરિક્તસ્ય ભેદહેતોઃ કલ્પનેઽપ્યુત્સૂત્રપ્રરૂપણં પ્રસજ્યેત કાલાન્યકૃત-

યાવત્કથિક હી હોતા હૈ । હસી અપેક્ષા કો લક્ષ્ય મેં રલ્લકર ભગવાન ને
ઉસમેં ઇત્વરિકતા કા કથન ન કર કેવલ યાવત્કથિકતા કા હી કથન
કિયા હૈ યદિ નામ મેં જો કેવલ ઇત્વરિકતા હી માની જાવેગી-તો યહ
જ્ઞાત સિદ્ધાન્ત સે ષહિર્મૂન હોને સે માનને વાલે કે લિયે ઉત્સૂત્રપ્રરૂપણા
કરને કી આપત્તિ કા દોષ આવેગા-ક્યોં કિ શાસ્ત્ર મેં ભગવાન ને નામ
નિક્ષેપ મેં કેવલ યાવત્ત્રવ્ય ભવિતા હી પ્રદર્શિત કી હૈ ।

જો વ્યક્તિ હસ શંકા કા હસ પ્રકાર સે સમાધાન કરતે હૈં કિ
“કાલ કે ભેદ સે જો નામ ઓર સ્થાપના મેં ભેદ કહા ગયા હૈ વહ
કેવલ ઉપલક્ષણ માત્ર હૈ-હસસે અન્ય અનેક પ્રકારોં સે બી હન દોનોં મેં
પરસ્પર ભેદ હૈ યહ જ્ઞાત જાની જોતો હૈ” સો ઉનકા યહ કથન શાસ્ત્ર-
મર્યાદા કે વિરુદ્ધ હૈ જિત પ્રકાર નામ નિક્ષેપ મેં કહીં ૨ ઇત્વરિકતા
હોને પર બી ભગવાન દ્વારા સ્વીકૃત ન હોને સે વહ ઉપલક્ષણરૂપ સે
સ્વીકૃત નહીં કી ગઈ હૈ-ઉસી પ્રકાર સ્થાપના મેં બી કાલકૃત ભેદ કે

સામાન્ય કથન છે વિશેષ નહિ. સામાન્ય રૂપથી નામ યાવત્ કથિત જ હોય
છે. આ વાતને સામે રાખીને જ ભગવાને તેમાં ઇત્વરિકતાનું કથન ન કરતાં
ફક્ત યાવત્કથિકતાનું કથન કર્યું” છે. જે નામમાં ફક્ત ઇત્વરિકતા જ માનવામાં
આવશે તો આ વાત સિદ્ધાન્તની બહાર હોવાથી માનનાર માટે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂ-
પણા કરવા રૂપ દોષ આવશે. કેમકે શાસ્ત્રમાં ભગવાને નામ નિક્ષેપમાં ફક્ત
યાવદ્-દ્રવ્ય-ભવિતા જ બતાવી છે.

જે માણસો આ શંકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે કરે છે કે “કાલના
લેક્ષી જે નામ અને સ્થાપનામાં તક્ષવત બતાવવામાં આવ્યો છે તે ફક્ત
ઉપલક્ષણ માત્ર છે. એથી બીજા અનેક પ્રકારોથી પણ આ બંનેમાં પરસ્પર
તક્ષવત છે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે. “જેથી તેમનું આ કહેવું શાસ્ત્ર-મર્યાદાથી
વિપરીત છે. જેમ નામ-નિક્ષેપમાં કોઈક કોઈક ઠેકાણે ઇત્વરિકતા હોવા છતાંયે
ભગવાન વડે સ્વીકૃત ન હોવાથી તે ઉપલક્ષણ રૂપથી સ્વીકારવામાં આવી નથી,
તેમ સ્થાપનામાં પણ કાલકૃત લેહ સિવાય બીજા વડે અન્તર-લેહ-માનવામાં

જનનારંધ્રમાં મૃતવર્ષિની ટીકા મં ૧૬ દ્રોણીચંબી

૩૪૧

ભેદસ્ય ભગવતાઽનુક્તત્વાત્ । एतेन-“ यत् कैश्चिदुक्तं यथा प्रतिमारूपस्थापनादर्शनाद् भावः समुल्लसति नैवं नामश्रवणमात्रादिति नामस्थापनयोर्भेदः, यथा चेन्द्रादेः प्रतिमारूपस्थापनायां, लोकस्योपवाचितेच्छा पूजाप्रवृत्ति समीहितत्वाभादयो-दृश्यन्ते, नैव नामेन्द्रादौ, इत्यपि तयोर्भेदः । एवमन्यदपि वाच्यमिति तदुत्सૂत्रप्ररू-

સિવાય અન્ય દ્વારા અન્તર ભેદ માનને મેં ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરને કા દોષ આતા હૈ, કારણ કિ ભગવાન ને કાલકૃત ભેદકે સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપ મેં અન્ય ઔર કિસી દૂસરી અપેક્ષા સે ભેદ કા કથન નહીં કિયા હૈં હિસ પ્રકાર કે કથન સે “યહ યાત મી જો દૂસરોં ને કહી હૈ કિ નામ ઔર સ્થાપના મેં હિસ પ્રકાર સે મી ભેદ હૈ-કિ “જિસ પ્રકાર અર્હંત કી પ્રતિમારૂપસ્થાપના કે દેખને-દર્શન કરને સે ભાવોં કી જાગૃતિ હોતી હૈ, ઉસ પ્રકાર નામ નિક્ષેપરૂપ અર્હંત નામ કે સુનને સે ભાવોં કી જાગૃતિ નહોં હોતી હૈ । અથવા-ઇન્દ્રાદિક કી પ્રતિમારૂપ સ્થાપના મેં જિસ પ્રકાર સે લૌકિકજનોં કી ઉસ પ્રતિમા સે કુછ માંગને કી હ્ચ્છા ઉસકે પૂજન કરને કી ભાવના ઔર ઉસ પ્રતિમા દ્વારા ઉનકે અભિલષિ-તમનોરથોં કી પૂર્તિ હોતી હુઈ દેખી જાતી હૈ; ઉસ પ્રકાર નામરૂપ ઇન્દ્ર મેં ઉનકી હિસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ ઔર અભિલષિત મનોરથોં કી પૂર્તિ હોતી હુઈ નહીં દેખી જાતી હૈ । હિસી તરહ ઔર મી ંસી કઈ બાતેં હૈં જો નામ ઔર સ્થાપના મેં અન્તર કરાતી હૈ । યહ સબ કાલકૃત ભેદ કે સિવાય

ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણુ રૂપ દોષ થઈ જાય છે કારણુ કે ભગવાને કાલકૃત ભેદ સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપમાં બીજી કોઈ અન્ય દષ્ટિએ ભેદ-કથન કયું નથી. આ જાતના કથનથી “ આ વાત પણ જે બીજાઓએ કહી છે કે નામ અને સ્થાપનામાં આ રીતે પણ તફાવત છે કે “ જેમ અર્હંતની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનાને જોવા એટલે કે દર્શન કરવાથી ભાવોની જાગૃતિ થાય છે, તેમ નામ નિક્ષેપ રૂપ અર્હંતના નામને સાંભળવાથી પણ ભાવોની જાગૃતિ હોતી નથી. અથવા તે ઇન્દ્ર વગેરેની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનામાં જેમ લૌકિક માણસોની તે પ્રતિમાથી કંઈક માગણી કરવાની હ્ચ્છા, તેની પૂજા કરવાની ભાવના અને તે પ્રતિમા વડે તેમના અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી દેખાય છે તેમ નામ રૂપ ઇન્દ્રમાં તેમની આ જાતની પ્રવૃત્તિ અને અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી જોવામાં આવતી નથી. આ પ્રમાણે બીજી પણ ઘણી બાબતો છે જે નામ અને સ્થાપનામાં અંતર કરાવે છે.

૬૫૨

જોતાં ધર્મકથાકક્ષે

પણા જનિતાનન્તસંસારજનકમ્ । આગમે યદિદમુપલભ્યતે-“ તહારૂવાણં અરહંતાણં ભગવંતાણં નામગોયસવળયા૯ મહાફલં ।” ઇતિ, તત્ર નાસ્તિ નામનિક્ષેપસ્ય વિષયઃ । “ અરહંતાણં ભગવંતાણં ” ઇત્યુક્તયા તસ્મિન્નર્થે પ્રયુક્તસ્ય નામ્ન ઇવ શ્રવણેન મહા-ફલસંભવાત્, ગોપાલદારકાદૌ પ્રયુક્તસ્ય નામ્નઃ શ્રવણેન તુ ગોપાલદારકાદર્થ-સ્યૈવ બોધાદાત્મપરિણામશુદ્ધિહેતુત્વં તસ્ય નાસ્તીતિ । નામનિક્ષેપસ્થલે ભગવતોઽ-ર્હતઃ સ્મરણાસંભવઃ, તસ્ય ભાવશૂન્યત્વાત્, અત્ર તુ નામગોત્રાભ્યાં ભગવદર્હતઃ સમ્બન્ધં ષઠચન્તપદપ્રયોગાદેવ દર્શયતા ભગવતા નામનિક્ષેપો ન ત્રિવિક્ષિતઃ । ભાવજિન-

નામ ઓર સ્થાપના મેં ભેદ કલ્પના કા કથન ઉત્સુત્ર પ્રરૂપક હોને સે અનન્ત સંસાર કા જનક હૈ અતઃ હેય હૈ । “તહારૂવાણં અરહંતાણં ભગવંતાણં નામગોયસવળયા૯ મહાફલં ” આગમ મેં જો યહ સૂત્ર લિખા હુઆ દેખા હૈ ઉસકા અભિપ્રાય નામનિક્ષેપ પરક નહીં હૈ । અર્થાત્-ઇસ સૂત્ર સે નામ નિક્ષેપ કી પુષ્ટિ નહીં હોતી હૈ । યદિ સૂત્રકાર કો ઇસ સૂત્ર સે જો નામનિક્ષેપ કી પુષ્ટિ કરના ઇષ્ટ હોતા તો “અરહંતાણં ભગવં-તાણં” ઇસ પદ કે સ્વતન્ત્ર દેને કી કોઈ ળાસ આવશ્યકતા નહીં થીં । અતઃ યહ યાન માનની ચાહિયે કિ અરહંત ભગવાન કે હી નામગોત્ર કે શ્રવણ સે મહાફલ હોતા હૈ । કિસી ગોપાલ કે લઢકે મેં નિક્ષિપ “અરહંત ” ઇસ નામ કે સુનને સે નહીં । ઉસ મેં પ્રયુક્ત ખી ઉસ નામ કે શ્રવણ સે તો કેવલ ઉસ ગોપાલ દારકરૂપ અર્થ કા હી બોધ હોતા હૈ । “અરહંત ” યહ નામ જિસરૂપ કે સંકેત સે અરિ-

આ બધું કાલકૃત લેહ સિવાય નામ અને સ્થાપનામાં લેહ કલ્પનાનું કથન ઉત્સુત્ર પ્રરૂપક હોવાથી અનંત સંસારનું જનક છે એથી ત્યાજ્ય છે. “ તહારૂવાણં અરહંતાણં ભગવંતાણં નામ ગોયસવળયા૯ મહાફલં ” આગમમાં જે આ સૂત્ર મળે તેનો અભિપ્રાય નામનિક્ષેપપરક નથી. એટલે કે આ સૂત્ર પડે નામ નિક્ષેપ-પુષ્ટિ થતી નથી. જે સૂત્રકારને આ સૂત્ર પડે નામ-નિક્ષેપની પુષ્ટિ કરવું ઇષ્ટ લાગતું હોત તો “અરહંતાણં ભગવંતાણં ” આ પદને સ્વતંત્ર રૂપમાં મૂકવાની કોઈ ખાસ આવશ્યકતા હતી નહિ. એથી આ વાત માની લેવી જોઈએ કે અરહંત ભગવાનના નામ ગોત્ર-શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે. કોઈ ગોપાળના પુત્રમાં નિક્ષિપ “અરહંત ” આ નામને સાંભળવાથી નહિ. તેમાં પ્રયુક્ત પણ તે નામના શ્રવણથી તો ફક્ત તે ગોપાળના પુત્ર રૂપ અર્થ-નો જ બોધ હોય છે. “અરહંત ” આ નામ જે રૂપના સંકેતથી અરિહંત મણુમાં સંકેતિત થયું છે-તે રૂપના સંકેતથી જ ગોપાળના પુત્રમાં સંકેતિત

हंत प्रभु में संकेतित हुआ है—उसी रूप से संकेत से गोपाल के पुत्र में संकेतित नहीं हुआ है ! लौकिक व्यवहारके लिये ही केवल “अरहंत” ऐसा उसका नाम कर लिया गया है। नाम निक्षेप में जिसका निक्षेप किया जाता है उस जाति के द्रव्य, गुण और कर्म—क्रिया आदि निमित्त की अनपेक्षा रहती है इस निमित्त के सद्भाव में वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना जाता है। भाव निक्षेप का ही वह विषय होता है अतः यह निश्चित होता है कि अरहंत भगवान के ही नाम गोत्र के श्रवण के महाफल सूत्रकार ने प्रकट किया है यदि नामनिक्षेप से यह फल प्राप्त होने लगता तो फिर भावनिक्षेप की आवश्यकता ही क्या थी। उसके श्रवण मात्र से ही जीवों के आत्मिक भावों में शुद्धिरूप महाफल का लाभ होने लगता। तथा जिसका “अरिहंत” यह नाम है वह स्वयं अरिहंत प्रभु की तरह महापवित्र, ३४ अतिशयों समित ८ प्रतिहार्य आदि विभूति संपन्न हो जाता। परन्तु ऐसा नहीं होता है अतः यह मानना चाहिये कि यह सूत्र भावनिक्षेप की ही पुष्टि विधायक है—नामनिक्षेप का नहीं। नामनिक्षेप से भगवान अरिहंत की स्मृति भी नहीं कराई जाती है—कारण कि वह नामनिक्षेप स्वयं उस प्रकार के भावों से शून्य है। अनुभूत पदार्थ की स्मृति हुआ करती

थ्युं नथीं. लौकिक व्यवहार भाटे द्धत “अरहंत” आवुं नाम पाडवामां नामनिक्षेपमां जेना निक्षेप करवामां आवे छे ते जतिना द्रव्य, गुण अने कर्म—क्रिया वगेरे निमित्तनी अपेक्षा रहे छे. आ निमित्तना सद्भावमां ते नाम-निक्षेपना विषय मानवामां आवतो नथी. लाव निक्षेपना ज ते विषय होय छे. जेथी जे सिद्ध थाय छे के अरहंत भगवानना ज नाम गोत्रना श्रवणथी ज सूत्रकारे महाक्षण जताव्युं छे. जे नामनिक्षेपथी आ ३४ भणी शक्युं होत तो पछी लावनिक्षेपनी आवश्यकता ज शी छती ? तेना श्रवण मात्रथी ज जेवानी आत्मिक लावामां शुद्धि ३४ महाक्षणना लाभ थावा मांडतो. तेमज जेनु “अरिहंत” आ नाम छे ते पोते अरिहंत प्रभुनी जेम महापवित्र, ३४ अतिशयो सहित, ८ प्रतिहार्य वगेरे विभूतिओथी संपन्न थछ जत, पण आवुं थतुं नथी जेथी जेम समज लेवुं जेछजे के आ सूत्रथी लावनिक्षेपनी ज पुष्टि थाय छे—नाम निक्षेपनी नछि. नाम निक्षेपथी भगवान अरिहंतनी स्मृति पण करवामां आवती नथी कारण के तेनाम-निक्षेप जते ते जानना लावोथी रहत छे. अनुभूत पदार्थनुं स्मरण थवा करे छे जेछुं

હૈ जिसका “अरिहंत” यह नाम रखा गया है उसके देखने से अरिहंत की स्मृति हो भी कैसे सकती है—स्मृति तो अरिहंत की जब हो सकती कि जब उसमें उनकी स्मृति के चिह्न होते—वह स्वयं उस प्रकार के हेतु हो सकती है माना कि श्रवण कर्त्ता शास्त्र आदिकों में अरिहंतप्रभु के गुणों का वर्णन पढ़कर चित्त में उकेर कर भले ही “अरिहंत” इस नामके श्रवण से उनका स्मरण कर सकता है। परन्तु गोपालदारकादी में कृत्त नाम से उनका स्मरण उसे नहीं हो सकता—उस नाम से तो उसमें ही संकेतित उस शब्द से उस गोपाल दाररूप अर्थ का ही उसे बोध होगा। यदि अरिहंत नाम के सुनने से सुनने वाले को अरिहंत पदार्थ का भान होता हैतो वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना गया है भावनिक्षेप का ही वह विषय है। थोड़ा बहुत भी किसी अपेक्षा से सादृश्य होने पर एक पदार्थ को देखकर सदृश दूसरे पदार्थ का स्मरण हो जाता है परन्तु प्रकृत में गोपालदाररूप अरिहंत नामनिक्षेप में ऐसा कौन सा सादृश्य है जो वह अरिहंत का स्मरण करा सके। अतः नाम और गोत्र के साथ साक्षात् भगवान् अरिहंत का संबंध षष्ठी विभक्ति द्वारा प्रदर्शित करने वाले सूत्रकार ने इस सूत्र में नामनिक्षेप का कोई

“अरिहंत” આ નામ રાખવામાં આવ્યું છે. તેને જોવાથી અરિહંત સ્મૃતિ પણ કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે? સ્મૃતિ તો અરિહંતની ત્યારે જ થઈ શકે કે જ્યારે તેમાં તેમની સ્મૃતિના ચિહ્નો હોય, તે પોતે આ જાતના ભાવોથી રહિત થયેલો હોય, ત્યારે તે કેવી રીતે તેમની સ્મૃતિનું કારણ થઈ શકે છે? આ વાત આપણે સ્વીકારી શકીએ તેમ છીએ કે શ્રવણ-કર્તા શાસ્ત્ર વગેરેમાં અરિહંત પ્રભુના ગુણોનું વર્ણન વાંચીને ચિત્તમાં ધારણ કરીને ભલે ‘અરિહંત’ આ નામના શ્રવણથી તેમનું સ્મરણ કરી શકે છે. પણ ગોપાળદારક વગેરેમાં કૃત નામથી તેનું સ્મરણ થઈ શકતું નથી. તે નામ વડે તો તેમાં જ સંકેતિત તે શબ્દથી તે ગોપાળદારક રૂપ અર્થનો જ તે બોધ થશે. જો અરિહંત નામ શ્રવણથી સાંભળનારને અરિહંત પદાર્થનું જ્ઞાન થાય છે ત્યારે તે નામનિષેપનો વિષય ભાનવામાં આવ્યો નથી ભાવનિષેપનો જ તે વિષય છે. કોઈ પણ રીતે થોડું પણ સરખાપણું હોવાથી એક પદાર્થને જોઈને તેના સરખા બીજા પદાર્થનું સ્મરણ થઈ બંધ છે પણ પ્રકૃતમાં ગોપાળદારક રૂપ અરિહંત નામનિષેપમાં એવું કંઈ જાતનું સરખાપણું છે કે જે તે અરિહંતનું સ્મરણ કરાવી શકે? એથી નામ અને ગોત્રની સાથે સાક્ષાત્ ભગવાન અરિહંતનો સંબંધ ષષ્ઠી વિભક્તિ વડે દર્શાવનારા સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં નામનિષેપનો કોઈ પણ વિષય પ્રતિપાદિત કર્યો નથી. ભાવનિષેપ-

અનગરાધર્મામૃતવર્ણિણી ટીકા ૦ અ૦ ૧૬ ત્રૌપદીચર્ચા

૩૪૫

બોધકસ્ય નામ્ન એવ શ્રવણેન મહાફલસંભવઃ । એવં સ્થાપનાપિ ભાવરૂપાર્થશૂન્યા, સ્થાપનયા ભાવરૂપાર્થસ્ય નાસ્તિ કોઽપિ સમ્બન્ધઃ । ભાવજિનશરીરવર્તિની યાઽઽ-કૃતિરાસીત્, તસ્યા આશ્રયાશ્રયિમાભ્યસમ્બન્ધો ભાવજિનેન સહ તદાત્મી વિચ્ચ-માન આસીત્ । યથા ભાવજિનં પદ્યાસ્તદાત્મી ભાવોલ્લાસોઽપિ કસ્યચિત્ સંજાતઃ,

બી વિષય પ્રતિપાદિત નહીં ક્રિયા છે । ભાવનિક્ષેપ કા હી વિષય હિસમેં કહા છે હિસલિયે ભાવજિન કા બોધ કરાને વાલે જિન ‘અરિહંત’ આદિ નામોં કે સુનને સે હી મહાફલ હોના છે એસા માનના ચાહિયે ।

હસી પ્રકાર સ્થાપના નિક્ષેપ બી ભાવરૂપ અર્થ સે શૂન્ય છે કારણ કિ હિસકા ઉસકે સાથ કોઈ સંબંધ નહીં છે ભાવજિન કી અવસ્થા કી આકૃતિ પાષાણ આદિ કી મૂર્તિ મેં “ યહ વહી છે ” હિસ પ્રકાર કી કલ્પના કરને કા નામ સ્થાપના છે તીર્થંકર પ્રકૃતિ કે ઉદયસે સમવસ-રણાદિ વિભૂતિ સહિત આત્મા કા નામ ભાવ જિન છે હિસ ભાવ જિન કે શરીર કી જો આકૃતિ છે ઉસકા સંબંધ વિચારિયે ઉસ પાષાણ આદિ કી પ્રતિમા મેં કેસે આમકતા છે । કયોં કિ હિસ આકૃતિ કા સંબંધ આશ્રય આશ્રયી ભાવસે વે જિન જિસકાલ મેં થે ઉસી કાલ મેં ઉનકે સાથ થા । ઉનકે નહીં રહને પર પાષાણ આદિ મેં હિસ તરહ કા આશ્રય આશ્રયી ભાવ સંબંધ માનના ઉચિત કેસે કહા જા સકતા છે, ભાવજિન કે સદ્ભાવ મેં જિમ પ્રકર ઉનકે સાક્ષાત્ દર્શન સે પ્રાણિયોં કો એક પ્રકાર

ને જ વિષય તેમાં બતાવ્યો છે એથી જીનને બોધ કરાવનાર જીન “ અરિ-હંત ” વગેરે નામ શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે આમ સમજવું જોઈએ.

આ પ્રમાણે સ્થાપના નિક્ષેપ પણ ભાવ રૂપ અર્થથી રહિત છે. કારણ કે આને તેની સાથે કોઈ પણ જાતનો સંબંધ નથી. ભાવજીનની અવસ્થાની આકૃતિ પથ્થર વગેરેની મૂર્તિમાં “ આ તેઓ જ છે ” આ જાતની કલ્પના કરવાનું નામ સ્થાપના છે. તીર્થંકરની પ્રકૃતિના ઉદયથી સમવસરણ વગેરે વિભૂતિ સહિત આત્માનું નામ ભાવજીન છે. આ ભાવજીનના શરીરની જે આકૃતિ છે તેના વિષે આપણે પણ વિચાર કરીએ કે પથ્થર વગેરેની પ્રતિમામાં તેનો સંબંધ કેવી રીતે આવી શકે છે ? કેમકે તે આકૃતિનો સંબંધ આશ્રય આશ્રયી ભાવથી તે જીન જે કાળમાં હતા તે કાળમાં જ તેમની સાથે હતા. તેમની ગેરહાજરીમાં પથ્થર વગેરેમાં આ જાતનો આશ્રય-આશ્રયી ભાવ સંબંધ માન્ય રાખવો કેવી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તેમ છે ? ભાવજીનના સદ્ભાવમાં જેમ તેમના સક્ષાત્ દર્શનથી પ્રાણીઓમાં એક જાતનો ભાવોલ્લાસ ઉદ્ભવે

તથા મત્તયા તામાકૃતિ સ્મરતો જનસ્ય ભાવોલ્લાસઃ સંભવતુ, તદાઽઽકૃતેર્ભાવજિનેન સંબન્ધાત્, પરંતુ સ્થાપનાયા આશ્રયાશ્રયિભાવસમ્બન્ધો નાસ્તિ ભાવજિનેન સહ। ભાવજિનાત્મનસ્તદ્વાવાહનં સ્થાપનંતુ જિનાજ્ઞાવાહનં પ્રવચનવિરુદ્ધં કર્તુમશક્યં, કથં તર્હિ-ભાવજિનસમ્બન્ધાભાવે પ્રતિમા ભાવજિનં તદ્ગુણં વા સ્મારયિતું શક્તા મહેત્।

કા ભાવોલ્લાસ હોતા હૈ, उसी प्रकार से भक्ति के आवेश से भी उनकी उस आकृति का उस समय स्मरण करने वाले प्राणी को उस प्रकार के भावोल्लास का सद्भाव हो सकता है। इसका निषेध नहीं है। क्यों कि स्मृति के आधारभूत जिन परमात्मा उस काल में स्वयं विद्यमान हैं। उन के अभाव में उन्हें नहीं देखने वाले प्राणियोंको भी उनकी उस प्रतिमा से उसी प्रकार का भावोल्लास होता है यह मान्यता केवल एक कल्पना मात्र है वास्तविक नहीं। इसके समाधान के निमित्त जो यह कहा जाता है कि उस पाषाण प्रतिमा में जिन भगवान की आत्मा का मंत्रादिकों द्वारा आह्वान किया जाता है अतः उस प्रतिमा के दर्शन से साक्षात् भाव जिनके ही दर्शन होते हैं सो यह मान्यता सर्वथा असत्य है-कारण कि मोक्ष में प्राप्त आत्माओं का पाषाण आदि प्रतिमाओं में अपनी मान्यता सिद्ध करने के लिये आह्वान आदि मानना सर्वथा जिनसिद्धान्त से विरुद्ध है मोक्ष प्राप्त आत्माएँ कहीं पर भी किसी भी काल में आह्वान करने से नहीं आती हैं ऐसी जिन-शासन की आज्ञा है इस तरह से उस पाषाण आदि की आत्माओं का

છે, તેમ ભકિતના આવેશથી પણ તેમની એ આકૃતિનું તે સમયે સ્મરણ કરનાર પ્રાણીને તે ભતના ભાવોલ્લાસની અનુભૂતિ થઈ શકે છે. આનો નિષેધ નથી કેમકે સ્મૃતિમાં તે આકૃતિના આધારભૂત જન પરમાત્મા તે કાળમાં જોતે વિદ્યમાન છે. તેમના અભાવમાં તેમને નહિ જોનારા પ્રાણીઓને પણ તેમની તે પ્રતિમાથી તે પ્રમાણેનો જ ભાવોલ્લાસ થાય છે, આ માન્યતા ફક્ત એક કોરી કલ્પના જ છે, વાસ્તવિક નથી. એના સમાધાન માટે જે આમ કહેવામાં આવે છે કે તે પથ્થરની પ્રતિમામાં જન ભગવાનના આત્માનું મંત્રા વગેરેથી આવાહન કરવામાં આવે છે, એથી તે પ્રતિમાનાં દર્શનથી પ્રત્યક્ષ ભાવજનનાં જ દર્શન થાય છે, તો આ માન્યતા સાવ અસત્ય છે કારણ કે મોક્ષમાં પ્રાપ્ત આત્માઓનું પથ્થર વગેરે પ્રતિમાઓમાં પોતાની માન્યતા સિદ્ધ કરવા માટે આહ્વાહન વગેરે માનવું તે તો જન સિધ્ધાંતથી સાવ વિરુદ્ધ છે. મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઓ કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ કાળે આવાહન કરવાથી આવતા નથી, એવી જન શાસનની આજ્ઞા છે. આ રીતે તે પથ્થર વગેરેની પ્રતિમામાં

સર્વથા કુપ્રાવચનિકદ્રવ્યાવશ્યકત્વ પ્રતિમાપૂજનં કુર્વન્તઃ કારયન્તશ્ચ મિથ્યા-
દૃષ્ટિત્વં પ્રાપ્નુવન્તિ ન તુ સમ્યક્ત્વમિતિ ।

દ્રવ્યાવશ્યક-દ્વિવિધ-આગમતો નોઆગમતશ્ચ । યસ્ય જન્તોરાવશ્યકશાસ્ત્રં
શિક્ષિતાદિગુણોપેતં ભવતિ, સ જન્તુસ્તત્રાવશ્યકશાસ્ત્રે શિક્ષ્યાધ્યાપનરૂપયા વાચનયા
શુભં પ્રતિ પ્રશ્નલક્ષણયા પ્રચ્છનયા, પુનઃ પુનઃ સૂત્રાર્થાભ્યાસરૂપયા પરાવર્તનયા, તથા

અહ્વાન હોને સે આના માન લિયા જાય તો ફિર ઉસ પ્રતિમા મેં સજી-
વતા માનને મેં કયા દોષ હૈં હસલિયે યહ સ્વીકાર કરના હીં ચાહીયે ।
કિં ભાવજિન કે અભાવ મેં વહ પ્રતિમા ભાવજિન એવં અનેકે ગુણોં કા
સ્મરણ કરવાને મેં સર્વથા સમર્થહીં હૈં । જવ યહ નિશ્ચિત સિદ્ધાન્ત હૈં તો
ફિર હસકી પૂજનાદિ કરને કરાને સે જો મનુષ્ય સમકિત કી પ્રાપ્તિ
હોના માનતે હૈં વે ઉસ વિધવા કિં દશા જૈસે હૈં જો અપને પતિ કી
ફોટો યા મૂર્તિ કે દર્શન એવં સહવાસ આદિ સે સન્તાન કી ઉત્પત્તિ કી
કામના કરતી હો । હસલિયે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કી તરહ
યહ પ્રતિમાપૂજનાદિ કર્મ કરને કરાને વાલે દોનોં હીં જન મિથ્યાત્વરૂપ
દૃષ્ટિ કે હીં પાત્ર હૈં, સમ્યક્ત્વ કે નહીં ।

દ્રવ્ય નિષ્કેપરૂપ આવશ્યક, આગમ ઓર નોઆગમ કે ભેદ સે દો
પ્રકાર કા હૈં । ઉસમેં જિસ પ્રાણી કે આવશ્યક શાસ્ત્ર શિક્ષિતાદિગુણોં
સે યુક્ત હૈં વહ પ્રાણી ઉસ આવશ્યક શાસ્ત્ર મેં, શિક્ષ્યોં કા પઢાનેરૂપ

તે આત્માઓનું આવાહન હોવાથી આવવું માની લઇએ તો પછી તે પ્રતિ-
માને સજીવ માનવામાં શો વાંધો છે ? એટલા માટે આપણે આ વાત સ્વીકાર-
વી જ જોઇએ કે ભાવજનના અભાવમાં તે પ્રતિમા ભાવજન અને તેમના
શુભોત્તુ સ્મરણ કરાવવામાં સંપૂર્ણપણે સમર્થ જ છે. ન્યારે આ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત
રૂપે માન્ય થયેલો છે ત્યારે તેનું પૂજન વગેરે કરાવવાથી જે લોકો સમકિતની
પ્રાપ્તિ થવી માને છે તેમની તો વિધવા જેવી દશા છે કે જે પોતાના પતિની
છબી કે મૂર્તિના દર્શન અને સહવાસ વગેરેથી સંતાન મેળવવાની ઇચ્છા કરતી
હોય ! એટલા માટે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ આ પ્રતિમા પૂજન
વગેરે કાર્ય કરનાર તેમજ કરાવનાર અને માણસો મિથ્યાત્વ રૂપ દૃષ્ટિનાં જ
પાત્ર છે, સમ્યક્ત્વનાં નથી.

દ્રવ્ય નિષ્કેપ રૂપ આવશ્યક આગમ તેમજ નોઆગમના લેદથી જે
પ્રકાર છે. તેમાં જે પ્રાણી આવશ્યક શાસ્ત્ર શિક્ષિત વગેરે શુભોત્તી યુક્ત છે તે
પ્રાણી તે આવશ્યક શાસ્ત્રમાં શિક્ષ્યોને લણાવવા રૂપ વાચનાથી, શુર-પ્રતિ તદ્

ધર્મકથયા વર્તમાનોપ્યનુપયોગે સતિ આગમતો દ્રવ્યાવશ્યકમ્, 'અણુવઓગો દ્વં' ઇતિ વચનાત્ । અનુપયોગો ભાવશૂન્યતા ।

વાચના સે, ગુરુ કે પ્રતિ તદ્વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણરૂપ પૃચ્છના સે વાર વાર સૂત્ર ઓર અર્થ કે અભ્યાસરૂપ પરાવર્તન સે તથા ધર્મકથા સે વર્તમાન હોતા હુઆ ખી અનુપયુક્ત અવસ્થાસંપન્ન હોને સે આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । અનુપયોગ કા નામ હી દ્રવ્ય હૈ ।

ભાષાર્થ—“ ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણં તુ યહ્લોકે તદ્-વ્યમ્ ” યહ દ્રવ્યનિષ્લેષ કા લક્ષણ હૈ । ભૂતપર્યાય યા ભવિષ્યત્ પર્યાય કા જો કારણ આધાર હોતા હૈ, વહ દ્રવ્ય હૈ જિસ પ્રકાર કિસી રાજા કે યુવરાજ કો રાજા કહ દિયા જાતા હૈ યદ્યપિ વહ અખી વર્તમાન મેં રાજારૂપપર્યાય સે યુક્ત નહીં હૈ—આગે ઉસે રાજપર્યાય પ્રાપ્ત હોગી, પરંતુ ફિર ખી ઉસે વ્યવહાર મેં લોગ રાજા કહતે હૈ । યહ ભવિષ્યત્ પર્યાય કી અપેક્ષા દ્રવ્ય નિષ્લેષકા વિષય હૈ । જોપહિલે રાજા થા—કારણ વશ જબ વહ રાજાગદી કા પરિત્યાગ કર દેતા હૈ—તબ ખી લોગ ઉસે રાજા કહતે હૈ । યહાં ઉસ રાજા મેં યદ્યપિ વર્તમાન સમય મેં રાજપર્યાય સે યુક્તતા નહીં હૈ તૌ ખી ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે હી ઉસે રાજા કહા જાતા હૈ । યહ ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે રાજપર્યાય કા આધાર હોને કે કારણ દ્રવ્ય-નિષ્લેષ કા વિષય હૈ પ્રકૃત મેં હિસ નિષ્લેષ કી આયોજના હિસ પ્રકાર સે

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારંવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાંયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સંપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનું નામ જ દ્રવ્ય છે.

ભાષાર્થ—“ ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણં તુ યહ્લોકે તદ્ દ્રવ્યમ્ ” આ દ્રવ્ય નિષ્લેષનું લક્ષણ છે. ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત્ પર્યાયનો જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે. જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામાં આવે છે. જો કે તે વર્તમાનમાં રાજા રૂપ પર્યાયથી યુક્ત નથી. આગળ તેને રાજા પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાંયે તેને વ્યવહારમાં લોકો રાજા કહે છે. આ ભવિષ્યત્ પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિષ્લેષનો વિષય છે. જે પહેલાં રાજા હતો—પણ કોઈ કારણસર રાજગાદિનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે. અહીં તે રાજામાં જો કે વર્તમાન સમયમાં રાજા પર્યાયથી યુક્તતા નથી છતાંયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામાં આવે છે. આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામાં આવે છે. આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિષ્લેષનો વિષય છે. પ્રકૃતમાં આ નિષ્લેષની આયો-

अनन्तारधर्मामृतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौणीचर्चा

३४२

अथ नोआगमतो द्रव्यावश्यकमुच्यते-अत्र नो शब्दः सर्वथा प्रतिषेधे देशतः प्रतिषेधेऽपि च वर्तते । तथा च सर्वथा-आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यकं, तथा होती है कि जो वर्तमान में आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है आगे भविष्यत् काल में उस शास्त्र का ज्ञाता होंगे उसे तथा जो भूतकाल में उस शास्त्र का ज्ञाता था अब वर्तमान काल में उसका ज्ञाता नहीं है-उसे आवश्यक इस प्रकार जानना या कहना यहद्रव्यनिक्षेप की अपेक्षा आवश्यक है। इसके मूल में दो भेद हैं? आगम द्रव्य निक्षेप और दूसरा नोआगमद्रव्यनिक्षेप। आवश्यक शास्त्र आदि का जो ज्ञाता हो, शिष्यों को जो उसे पढ़ाता हो, उस विषयक गुरु आदि के निकट जो तात्त्विक चर्चा आदि भी करता हो इस प्रकार वाचना, प्रच्छन्ना-पर्यटना अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेशरूप पांचो प्रकार के स्वाध्याय से जो उसकी पर्यालोचना कर रहा है-परन्तु उसमें उपयोग नहीं है-अनुपयुक्त है वह आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। इसमें आवश्यक शब्द के अर्थ का ज्ञान ही आगमरूप से विवक्षित है। अतः आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता होता हुआ भी उसमें अनुपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है यह बात निश्चित हुई।

नो आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है-जहां आगम का सर्वथा अभाव या आगम के एक देश का अभाव विवक्षित होता

जना એ રીતે હોય છે કે વર્તમાનમાં જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમાં તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમાં તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણાં વર્તમાનકાળમાં તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, 'આવશ્યક' આ રીતે જાણવું કે કહેવું આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે. એના મૂળ રૂપે એ ભેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ. આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્દ-વિષયક ગુરુ વગેરેની પાસે જઈને જે તાત્વિક ચર્ચા વગેરે પણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાંચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમાં તેનો ઉપ-યોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય 'આવશ્યક' છે. એમાં આવશ્યક શબ્દના અર્થનું જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે. એથી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાંયે તેમાં અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે.

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યાં આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તેનો

દેશતઃ આગમાભાવમાશ્રિત્ય દ્રવ્યાવશ્યકં ચ-નોઆગમતો દ્રવ્યાવશ્યકમ્ । તત્-ત્રિવિધમ્-જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યકં, ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યકં, તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યકં ચેતિ ।

હૈ-વહ નો આગમ કી અપેક્ષા સે દ્રવ્ય આવશ્યક માના ગયા હૈ । “ નો આગમ ” મેં નો શબ્દ સર્વથા આગમ કે અભાવ કા અથવા ઉસકે એક દેશ કે અભાવ કા બોધક હૈ । હસકે જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર-દ્રવ્યાવશ્યક, ઔર તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક, હસ પ્રકાર ત્રીન ભેદ હૈં । આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જો પહિલે (ભૂતકાલ મેં) જ્ઞાતા થા-તથા દૂસરોં કે લિયે હસ શાસ્ત્ર કા ઉપદેશ આદિ બી જિસને પહિલે દિયા હૈ એસે જીવ કા અચેતન શરીર જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક હૈ જો જીવ હસ સમય આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જ્ઞાતા નહીં હૈ ભવિષ્યત્ કાલ મેં ઉસકા જ્ઞાતા બનેગા ઉસકા વહ સચેતન શરીર ભવિષ્યત્ કાલ મેં આવશ્યક શાસ્ત્ર કે જ્ઞાન કા આધાર હોને કી અપેક્ષા સે, ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યક હૈ । તદ્વ્યતિરિક્તદ્રવ્યાવશ્યક લૌકિક કુપ્રાવચનિક ઔર લોકોત્તર કે ભેદ સે ૩ પ્રકાર કા હૈ । લૌકિકજનોં દ્વારા આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક દ્રવ્યઆવશ્યક હૈ । જૈસે રાજસભા મેં જાને વાલે રાજા, યુવરાજ, તલ-વર (કોટપાલ) આદિ જન પ્રાતઃ કાલ મેં ઉઠકર રાજસભા મેં જાને કે લિયે પ્રથમ પ્રાભાતિક વિધિયોં સે નિપટતે હૈં-મુગ્ધ ધોતે હૈં, દાતોં કો

આગમની અપેક્ષાથી દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામાં આવ્યો છે “ નોઆગમ ” માં નો શબ્દ આગમના સંપૂર્ણપણે અભાવનો કે તેના એક દેશના અભાવનો બોધક છે. તેના જ્ઞશરીર દ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર દ્રવ્યાવશ્યક અને તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક આ પ્રમાણે ત્રણ ભેદો છે. આવશ્યક શાસ્ત્રનો જે પહેલાં (ભૂતકાળમાં) જ્ઞાતા હતો તેમજ બીજાઓ માટે આ શાસ્ત્રનો ઉપદેશ વગેરે પણ જેણે પહેલાં આપ્યો છે એવા જીવનું અચેતન શરીર જ શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે. જે જીવ અત્યારે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમાં તેનો જ્ઞાતા થશે તેનું તે સચેતન શરીર ભવિષ્યકાળમાં આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાનનો આધાર હોવાને કારણે ભવ્ય શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે. તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક લૌકિક કુપ્રાવચનિક અને લોકોત્તર એમ ત્રણ પ્રકારનો છે. લૌકિક માણસો વડે આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે જેમ રાજસભામાં જનારા રાજા, યુવરાજ, તલવર (કોટપાલ) વગેરે લોકો સવારે ઉઠીને રાજસભામાં જવા માટે પ્રથમ પ્રાભાતિક વિધિયોથી પરવારે છે, મુગ્ધ ધુએ છે,

જ્ઞાતગતિ-જ્ઞઃ, જ્ઞસ્ય શરીરં-જ્ઞશરીરં તદેવ દ્રવ્યાવશ્યકમિતિ વિગ્રહઃ । જીવ પરિત્યક્તમાવશ્યકશાસ્ત્રજ્ઞાનવતઃ શરીરં જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યકમ્ । યઃ કશ્ચિદ્ જીવઃ જન્મકાલાદારમ્બ્ય અનેનૈવ આત્મેન - ગૃહીતેન શરીરસમુચ્છ્રયેણ, જિનોપદિષ્ટેન ભાવેન આવશ્યકમિત્યેતત્ પદં=શાસ્ત્રં આગામિનિ કાલે શિક્ષિવ્યતે ન તાવચ્છિક્ષતે, તત્તજીવાધિષ્ઠિતં શરીરં ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યકમિતિ । જ્ઞશરીર-ભવ્યશરીરવ્યતિ-રિત્તં દ્રવ્યાવશ્યકં ત્રિવિધમ્-લૌકિકં, કુપ્રાવચનિકં, લોકોત્તરિકં, ચેતિ ।

લૌકિકં દ્રવ્યાવશ્યકમ્ “યે રાજેશ્વરતલવરાદયઃ પ્રભાતસમયે-મુખધાવન-દન્તપ્રક્ષાલન-તૈલ-કઙ્કતક-સર્પપ-દૂર્વા-દર્પણ-ધૂપ-પુષ્પ-માલ્ય-ગન્ધ-તામ્બૂલ-વસ્ત્રાદિકાનિ દ્રવ્યાવશ્યકાનિ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પશ્ચાદ્ રાજકુલદેવકુલાદૌ ગચ્છન્તિ, તત્-તેષાં સમ્બન્ધિમુખધાવનાદિ ।

કુપ્રાવચનિકં દ્રવ્યાવશ્યકમ્ ‘યે ઇમે ચરકચીરિકાદયઃ પાષ્ણંડસ્થાઃ, ઇન્દ્ર-સ્કન્દ-રુદ્ર-શિવ-વૈશ્રવણ-દેવ-નાગ-યક્ષ-ભૂત-મુકુન્દાઽઽર્યા-દુર્ગા- કોટ્ક્રિયા-ણામ્ - ઉપલેપનસંમાર્જનાઽઽવર્ષણધૂપપુષ્પગન્ધમાલ્યાદિકાનિ દ્રવ્યાવશ્યકાનિ કુર્વન્તિ, તેષાં તદ્ ઇન્દ્રસ્કન્દાદેરુપલેપનાદિ । કુત્સિતં પ્રવચનં યેષાં તે કુપ્રવચના સ્તેષામિદં કુપ્રાવચનિકમ્ । ઉપલેપનં ચન્દનપદ્ધેન, સંમાર્જનં-સ્નપનાનન્તરં વસ્ત્રેણ જલપ્રોચ્છનમ્ આવર્ષણ=ગન્ધોદકેન, ‘ગુલાવજલ’ ઇત્યાદિ ભાષાપ્રસિદ્ધેન ।

નામાવશ્યકમ્-આવશ્યકનામકો ગોપાલદારકાદિઃ, સ્થાપનાવશ્યકમ્-આવ-સાફ કરતે હૈં, સ્નાન કરતે હૈં । સુગંધિત તૈલ લગાતે હૈં ઇત્યાદિ આવ-શ્યક કાર્ય કરતે હૈં । પીછે રાજસભા મેં યા દેવકુલ મેં જાતે હૈં । ડનકા યહ મુલ ધાવન આદિ કાર્ય લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । ચરક ચીરિક આદિ પાશ્વંડિયોં દ્વારા જો ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, વૈશ્રવણ, દેવ, નાગ ઓર યક્ષાદિકોં કી મૂર્તિયોં કા ચંદન સે લેપન, અભિષેક કરાને કે બાદ વસ્ત્ર સે મૂર્તિસ્થ જલ કા પોંછના મંદિર મેં યા ડન મૂર્તિયોં પર ગુલાવ-જલ કા છિડકાવ આદિ કરના યે સઘ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક હૈ ।

જ્ઞાંત સાક્ષ કરે છે, સ્નાન કરે છે, સુગંધિત તેલ લગાવે છે, વગેરે આવશ્યક કાર્યો કરે છે. ત્યારપછી રાજસભામાં અથવા તે દેવકુળમાં બાય છે. તેમનું મુખ ધોવું વગેરે કામ લૌકિક-દ્રવ્ય આવશ્યક છે. ચરક ચીરિક વગેરે પાષ્ણંડીઓ વડે જે ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, શિવ, વૈશ્રવણ, દેવ, નાગ અને યક્ષો વગેરેની મૂર્તિઓનું ચંદનથી અભિષેક કરાવ્યા બાદ વસ્ત્રથી મૂર્તિના પાણીને લૂંછવું, મંદિરમાં કે તે મૂર્તિઓ ઉપર ગુલાબજળનું સિંચન વગેરે કરવું આ બધું કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક છે. આ પ્રમાણે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્યના લેદથી આ

શ્યક્રિયાવતઃ કસ્યચિત્ કાષ્ટકર્માદિપુ પ્રતિકૃતિઃ, દ્રવ્યાવશ્યકં ચ આવશ્ય-
કોપયોગશૂન્યા દેહાગમક્રિયાઃ, ઇન્દ્રિયાવશ્યકેષુ ઉપયોગાભાવેન ચાણગુણરહિતત્વેન
ચ કર્મનિર્જરાગ્નનકૃત્વામાવાદારાધ્યયેન જિનાજ્ઞા નાસ્તિ, તસ્માદેતત્ત્રિવિધમાવ-
શ્યકં ધર્મપદવાચ્યં ન ભવતીતિ નિશ્ચયાદલક્ષ્યમેવ । લોકોત્તરિકદ્રવ્યાવશ્યકં પવ-
હસ પ્રકાર નામ, સ્થાપના ઓર દ્રવ્ય કે ભેદ સે યહ આવશ્યક ત્રીન
પ્રકાર કા હોતા હૈ । કિસી ગોપાલ કે પુત્ર કા “ આવશ્યક ” હસ પ્રકાર
કા કૃતનામ સંસ્કાર નામ આવશ્યક હૈ । આવશ્યક ક્રિયાઓ સે યુક્ત
કિસી વ્યક્તિ કી કાષ્ટ આદિ મેં તદાકાર રૂપ સે યા અતદાકારરૂપ સે
પ્રતિકૃતિકો કલ્પના કરના યો ડસે બનાલેના યહ સ્થાપના આવશ્યક હૈ ।
આવશ્યક મેં ઉપયોગ સે શૂન્ય પ્રાણી કી જો બી આગમ ઓર નો આગમ
કી અપેક્ષા સે ક્રિયાઈ હૈં વે સબ દ્રવ્ય આવશ્યક હૈં । હન ત્રીનો આવ-
શ્યકોં મેં ઉપયોગ-ભાવરૂપ-આવશ્યક કે અભાવ સે તથા ચારિત્રગુણ
તદનુકૂલ પ્રવૃત્તિ કે આચરણ સે રહિત હોને સે કર્મોં કી નિર્જરા કરાને
મેં સાધકપના નહીં હૈ । અતઃ જિનેન્દ્રદેવ ને હનકે આરાધન કરને કી
આજ્ઞા પ્રદાન નહીં કી હૈ । ધર્મ કો હી આરાધન કરને કી ડન્હોને આજ્ઞા
દી હૈ ક્યોં કિ વહી કર્મોં કી નિર્જરા કરાને મેં સાધક હૈ । હન ત્રીનોં
મેં કર્મોં કી નિર્જરા કરાને કા અભાવ હોને સે ધર્મસ્વરૂપતા નહીં હૈ ।
ધર્મપદ વાચ્ય બી યે નહીં હૈં । હસીલિયે યે ત્રીનોં ધર્મ કે લક્ષણ સે શૂન્ય
હોને સે ડસકે અલક્ષ્ય હૈં, એમા સમજના ચાહિયે । લોકોત્તરિક દ્રવ્ય

આવશ્યક ત્રણ પ્રકારનું હોય છે કોઈ ગોપાળના પુત્રનો ‘ આવશ્યક ’ આ-
રીતે કરેલો ‘ સંસ્કાર ’ નામ આવશ્યક છે. આવશ્યક ક્રિયાઓથી યુક્ત કોઈ
વ્યક્તિની કાષ્ટ વગેરેમાં તદાકાર રૂપથી કે અતદાકાર રૂપથી પ્રતિકૃતિની કલ્પના
કરવી કે પ્રતિકૃતિનું નિર્માણ કરવું તે સ્થાપના આવશ્યક છે. આવશ્યકમાં
ઉપયોગથી રહિત પ્રાણીની જે કંઈપણ આગમ અને નો આગમની અપેક્ષાથી
ક્રિયાઓ છે તે બધી દ્રવ્ય આવશ્યક છે. આ ત્રણે આવશ્યકોમાં ઉપયોગ ભાવ
રૂપ આવશ્યકના અભાવથી તેમજ ચારિત્રગુણ તદનુકૂળ પ્રવૃત્તિના આચરણ વગર
થઈ જવાથી કર્મોની નિર્જરા કરાવવામાં સાધકપણું નથી. તેથી જીનેન્દ્ર દેવે
તેમના આરાધનની આજ્ઞા આપી નથી. ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓ-
શ્રીએ આજ્ઞા આપી છે કે-કે ધર્મજ કર્મોની નિર્જરા કરાવવામાં સાધક છે.
આ ત્રણેમાં કર્મોની નિર્જરા કરાવવાનો અભાવ હોવાને કારણે ધર્મસ્વરૂપતા
નથી. એ ધર્મપદ વાચ્ય પણ નથી. તેથી આ ત્રણે ધર્મના લક્ષણથી રહિત
હોવાને કારણે તેના અલક્ષ્ય છે એમ સમજવું જોઈએ, સામાયિક વગેરે લોકો-

ચનોક્તં સદપિ જિનાજ્ઞાવાહ્યૈઃ સ્વચ્છન્દવિહારિભિર્મૂલોત્તરગુણરહિતૈઃ ષટ્કાયનિરનુ-
કમ્પૈરનુપયોગપૂર્વકં ક્રિયમાણં સામાયિકાદિકમ્ તત્ત્વ ધર્મપદવાચ્યં ન ભવિતુમર્હતિ,
તત્રાપિ નિર્જરાજનકત્વાભાવેન વિધેયતયા જિનાજ્ઞાયા અભાવાત્ ।

અવમેવ-નામજિનઃ સ્થાપનાજિનસ્તથા દ્રવ્યજિનશ્ચ નિર્જરાજનકત્વાભાવા-
દારાધ્યત્વેન જિનાજ્ઞાયા અભાવાત્ । તદારાધનં ધર્મપદવાચ્યં ન ભવિતુમર્હતિ ।

આવશ્યક સમાયિક આદિ હૈં इनके करने का विधान यद्यपि प्रवचन
शास्त्र में विहित है तो भी इसे जो धर्म का अलक्ष्य बनाया गया है
उसका कारण यह है कि ये जब जिनदेव की आज्ञा से बहिर्भूत बने
हुए, स्वेच्छाचारी, मूलगुण और उत्तर गुणों से रहित एवं षट्काय
के जीवों की रक्षा करने में आसवधान मनुष्यों द्वारा अनुपयोगपूर्वक
करने में आते हैं तब ये द्रव्य आवश्यकरूप से कहे जाते हैं । और
इसीलिये ये धर्मपद के वाच्य नहीं हैं अर्थात् धर्मरूप नहीं हैं । जहां
धर्मरूपता नहीं है वहां कर्मों की निर्जरा कारकत्व भी नहीं है । यह
सर्व सम्मत सिद्धान्त है । भगवान ने जो इस अवस्था में इन्हें विधेय
नहीं कहा है उसका यही कारण है । अतः जिस प्रकार नाम आव-
श्यक, स्थापना आवश्यक और द्रव्य आवश्यक ये तीन निक्षेप आरा-
ध्यरूप से तीर्थंकर प्रभु ने अनविधेय कहे हैं, उसी प्रकार से नामजिन
स्थापनाजिन तथा द्रव्यजिन भी आराध्य नहीं हैं । इनकी आराधना
करने में जो धर्म की प्राप्ति होना कहते हैं या मानते हैं उन्हें जिन

તર દ્રવ્ય આવશ્યક છે. પ્રવચન શાસ્ત્રમાં એમનાં આચરણનું વિધાન વિહિત
છે છતાંયે એને જે ધર્મના અલક્ષ્ય રૂપમાં બતાવવામાં આવ્યો છે. તેની મત-
લબ એ છે કે બ્યારે તે જનદેવની આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત બનેલા સ્વેચ્છાચારી,
મૂળગુણ તેમજ ઉત્તર ગુણોથી રહિત અને ષટ્કાય જીવોની રક્ષા
કરવામાં આસવધાન માણસો વડે અનુપયોગ પૂર્વક આચરવામાં આવે
ત્યારે તે દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપમાં કહેવાય છે. એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય
નથી. એટલે કે ધર્મ રૂપ નથી. બ્યાં ધર્મરૂપતા નથી ત્યાં કર્મોની નિર્જરા
કારકતા પણ નથી. આ સર્વમાન્ય સિદ્ધાન્ત છે. ભગવાને જે આ અવસ્થામાં
એમને વિધેય કહ્યા નથી તેનું કારણ પણ એ જ છે. એટલા માટે જેમ નામ
આવશ્યક, સ્થાપના આવશ્યક અને દ્રવ્ય આવશ્યક આ ત્રણ નિક્ષેપોને આરાધ્ય
રૂપથી તીર્થંકર પ્રભુએ અવિધેય કહ્યા છે, તેમજ નામ જિન, સ્થાપના જિન
તેમજ દ્રવ્યજિન પણ આરાધ્ય નથી. એમની આરાધના કરવામાં જે ધર્મની
પ્રાપ્તિ થવી બતાવવામાં આવે છે કે માનવામાં આવે છે, તેમને જિનભગવાનની

एवं च प्रतिमापूजनमपि धर्मलक्षणस्य लक्ष्यं न भवति. तत्र धर्मत्वाभाव-
निश्चयात् । 'मोक्षकामो जिनप्रतिमां पूजयेत्' इत्येवमर्हतो भगवत आज्ञायाः प्रवचने-
ऽनुपलब्धेः । धर्मविषये सर्वत्र भगवदाज्ञोपलभ्यते—दृश्यते हि आवश्यकार्थं भगव-
भगवान की आज्ञा से बहिर्भूत ही समझना चाहिये । यदि इन निक्षेपों
की या स्थापनानिक्षेप की आराधना करने से आराधक जीवों को धर्म
का लाभ होता तो वे उनकी आराधना करने का भव्य जीवों को अव-
श्य २ उपदेश देते । इस प्रकार की स्वमनः कल्पित प्रवृत्ति से उनकी
पूजा आदि करने में षट्काय के जीवों की कितनी विरोधना होती है
यह एक स्वानुभवगम्य बात है । अतः जहाँ आरंभ है वहाँ धर्म नहीं
है । जहाँ धर्म नहीं है उसकी आराधना से कर्मों की निर्जरा भी नहीं
हो सकती है । इस प्रकार से नाम स्थापना और द्रव्यजिन आदि तीन
निक्षेप भी धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य माने गये
हैं । जब स्थापना जिन ही उसका अलक्ष्यभूत है, तो फिर जिन की
प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा आदि कार्य भी धर्मलक्षण से शून्य होने
से वह भी उसका अलक्ष्य है ऐसा निश्चित हो जाता है भगवान ने
इस प्रकार की आज्ञा शास्त्र में कहीं भी नहीं दी है " मोक्षकामो जिन-
प्रतिमां पूजयेत् " कि मुक्ति की अभिलाषा वाला प्राणी जिन प्रतिमा
की पूजा करें । धर्मकी आराधना करने की ही उन्होंने ने आगम में आज्ञा

આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત જ સમજવા બોધ્યો. આ નિક્ષેપોની કે સ્થાપના નિક્ષેપોની
આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોને ધર્મનો લાભ થતો હોય ત્યારે તો તેઓ
તેમની આરાધના કરવા માટે ભવ્ય જીવોને ચોક્કસ ઉપદેશ આપતા. આ રીતે
પોતાના મનથી જ કલ્પના કરીને તેમની પૂજા વગેરે કરવામાં ષટ્કાય જીવોની
કેટલી બધી વિરાધના હોય છે. તે બંને જ અનુભવવા જેવી વાત છે. એટલા
માટે જ્યાં આરંભ છે ત્યાં ધર્મ તો નથી જ અને જ્યાં ધર્મ નથી તેની આરા-
ધનાથી કર્મોની નિર્જરા પણ થઈ શકે તેમ નથી. આ રીતે નામ સ્થાપના અને
દ્રવ્ય જિન વગેરે ત્રણ નિક્ષેપો પણ ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવા બદલ તેને
અલક્ષ્ય માનવામાં આવ્યા છે. જ્યારે સ્થાપના જિન જ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ
છે, ત્યારે જિનની પ્રતિમા બનાવીને તેની પૂજા વગેરે કાર્યો પણ ધર્મલક્ષણથી
રહિત હોવાથી તે પણ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે આવી ચોક્કસ ખાતરી થઈ
બીજી છે. ભગવાને આ બંનેની આજ્ઞા શાસ્ત્રમાં કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી
“ મોક્ષકામો જિનપ્રતિમાં પૂજયેત્ ” કે મોક્ષની ઈચ્છા રાખનારો પ્રાણી જિન
પ્રતિમાનું પૂજન કરે. ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓશ્રીએ આગમમાં આજ્ઞા

અનગારવમાન્યુતવર્ણિણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રોપદીચર્ચા

૩૫૫

દાજ્ઞા, દર્શનાર્થે જ્ઞાનાર્થે ચ ભગવદાજ્ઞા પુનરહિંસાસંયમતપઃસંવરાદિવિધિરપિ શાસ્ત્રે પ્રદર્શિતઃ પરંતુ પ્રતિમાપૂજનાર્થમાજ્ઞા ક્વાપિ નોપલભ્યતે શાસ્ત્રેષુ, પ્રત્યુત-કુપ્રાવચનિકદ્રવ્ય આવશ્યકલક્ષણાક્રાન્તત્વેન પ્રતિમાપૂજનં જૈનાગમવિરુદ્ધમિતિ સૂચિતમ્। ઇન્દ્રાદિપૂજનં હિ કુપ્રાવચનિકસ્ય નોઆગમતો દ્રવ્ય આવશ્યકસ્યોદાહ-રણતયા ભગવતા પ્રદર્શિતમ્। તેન સર્વં પ્રતિમાપૂજનં કુપ્રાવચનિકં તાદૃશદ્રવ્ય આવ-શ્યકે ભગવતા નિશ્ચિતમિતિ સુસંઘં પ્રતીયતે। પટ્ટકાયહિંસાસાધ્યાયાઃ પૂજાયા

પ્રદાન કી હૈ જૈસે-આવશ્યક, દર્શન ઓર જ્ઞાન કી આરાધના પ્રત્યેક મોક્ષાભિલાષી ભવ્ય જન કો કરના ચાહિયે-હસ પ્રકાર કે આવશ્યક આદિ કી આરાધના કરને કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ આગમોં મેં મિલતા હૈ-તથા જિસ પ્રકાર ઁન્હોંને અહિંસા, સંયમ, તપ ઓર સંવર આદિ કી વિધિ શાસ્ત્રોં મેં પ્રદર્શિત કી હૈ-ઁસ પ્રકાર ન તો ઁન્હોંને પ્રતિમા પૂજન કી કહીં ન આજ્ઞા પ્રદાન કી હૈ ઓર ન ઁસ કી વિધિ હી કહી હૈ કુપ્રા-વચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કે લક્ષણ સે યુક્ત હોને સે પ્રત્યુત પ્રતિમાપૂજન કો જૈન આગમ સે વિરુદ્ધ હી સૂચિત કિયા હૈ। કુપ્રાવચનિયોં દ્વારા માન્ય ઇન્દ્રાદિકોં કે પૂજન કો ભગવાન નો આગમ કી અપેક્ષા સે દ્રવ્ય આવશ્યક કે ઉદાહરણ રૂપ મેં પ્રકટ કિયા હૈ ઇસસે હી યહ ઘાત સ્પષ્ટ હો જાતી હૈ કિ ઁન્હોંને અન્ય સમસ્ત પ્રતિમા પૂજન કો બી ઇસી કુપ્રા-વચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કી તરહ દ્રવ્ય આવશ્યક મેં રખા હૈ। પ્રવચન મેં કુત્સિતતા-લોટાપન કુશાસ્ત્રતા હિંસાદિક સાધ્ય પૂજા આદિ કાર્યોં

કરી છે. જેમ આવશ્યક, દર્શન અને જ્ઞાનની આરાધના દરેકે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારા ભવ્ય જનને કરવી ઘટે છે. જેમ આવશ્યક વગેરેની આરાધના કરવા વિધેનો ઉલ્લેખ આગમોમાં મળે છે, તેમજ જેમ તેમણે અહિંસા, સંયમ, તપ અને સંવર વગેરેની વિધિ શાસ્ત્રોમાં બતાવી છે. તેમ તેમણે કેાઇ પણ સ્થાને પ્રતિમા પૂજનની આજ્ઞા કરી નથી અને તેની વિધિ પણ બતાવી નથી. પ્રતિમા પૂજને કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકના લક્ષણથી યુક્ત હોવા બદલ જૈન આગમોથી વિરુદ્ધ બતાવવામાં આવી છે. કુપ્રાવચનીઓ વડે માન્ય ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને ભગવાને આગમોની અપેક્ષાએ દ્રવ્ય આવશ્યકના ઉદાહરણ રૂપમાં બતાવ્યું છે. એથી આ વાત સ્પષ્ટ સમજી શકાય તેમ છે કે તેમણે બીજી પણ બધી પ્રતિમા પૂજને પણ આ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ સ્થાન આપ્યું છે. પ્રવચનમાં કુત્સિતતા કુશાસ્ત્રતા હિંસા વગેરે સાધ્ય પૂજા વગેરે કાર્યોની પુષ્ટિ કરવાથી જ સંભવે છે. બીજા ચરક

વિધાયકતયા પ્રવચનસ્ય કુત્સિતત્વં, તેનૈવ ચેન્દ્રાદિપૂજનસ્ય કુપ્રાવચનિકત્વં ભવતિ । एवं प्ररूपयतो भगवतोऽर्हतः प्रतिमायाः पूजनस्य प्रसङ्ग एव तदानीं नासीत्—हिंसामयत्वात्पूजनस्य, तेन प्रवचने भगवता प्रतिमापूजनप्रतिषेधो विशिष्य नोक्तः । प्रतिषेधवाक्यं हि तदैव सार्थकं, यदाप्रतिषेध्यरूपोऽर्थः कथंचित् प्रसक्तो भवति । जिनप्रतिमापूजनं हि न तावच्छौकिकं द्रव्यावश्यकं, नापि लोकोत्तरिकं द्रव्यावश्यकं, जिनो हि लोकोत्तरो देवस्तत्पूजनमपि स्याच्चेत् लोकोत्तरिकमेव

કી પુષ્ટિ કરને સે હી આતી હૈ । અન્ય ચરક આદિ સમસ્ત પ્રવચનોં મેં ઇન્હીં હિંસાદિક કર્મોં કે કરને કા વિધાન સ્પષ્ટરૂપ સે પાયા જાતા હૈ । ઇસોલિયે યે કુપ્રવચન માને ગયે હૈં । ઇનકે દ્વારા પ્રદર્શિત ઇન્દ્રાદિક પૂજન બી ઇસી નિમિત્ત સે કુપ્રાવચનિક કહા ગયા હૈ । જૈન શાસ્ત્રોં મેં પ્રતિમાપૂજન કે નિષેધ કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ જો દેખને મેં નહીં આતા હૈ, ડસકા યહ કારણ હૈ કિ જિસ સમય પ્રભુ ને ઇન્દ્રાદિક કે પૂજન કા કુપ્રાવચનિક રૂપ માનકર નિષેધ કિયા ડસ સમય ડનકે સમક્ષ અર્હત કી પ્રતિમા કે પૂજન કા પ્રસંગ હી નહીં થા, નહીં તો ઇસકા બી વે સ્વતન્ત્ર રૂપ સે નિષેધ કરતે—ડસરે—પ્રતિમા પૂજન કાર્ય હિંસામય કાર્ય હૈ—ભગવાન ને ધર્મ કે લિયે બી હિંસા કરને કા આદેશ નહીં દિયા હૈ અતઃ જબ વીતરાગ શાસ્ત્ર મેં હિંસા કા વિધાન હી નહીં હૈ—તથ ઇસકા બી વિધાન કેસે વે કરતે પ્રતિષેધ વાક્ય ડસી સમય સાર્થક માના જાતા હૈ જબ પ્રતિષેધ્યરૂપ પદાર્થ કિસી બી રૂપ સે પ્રસક્ત હોતા હૈ ।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમાં એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનું વિધાન સ્પષ્ટ રૂપે જોવામાં આવે છે. એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામાં આવે છે. એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનું પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચનિક કહેવાય છે. જૈન શાસ્ત્રોમાં પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જ ઉલ્લેખ જોવામાં આવતો નથી તેનું કારણ પણ એ છે કે બ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અહંતાની પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતંત્ર રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત. બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનું કાર્ય હિંસામય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી. એટલા માટે બ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમાં હિંસા વિષેનું વિધાન જ નથી ત્યારે આનું વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે. પ્રતિષેધ વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક ગણાય છે બ્યારે પ્રતિષેધ્યરૂપ પદાર્થ કોઈ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે. આ પ્રતિમા

અર્ચનારૂઢિમાંમૂલતવર્ણી શીકા સં ૧૬ દ્રૌપદીશર્ચા

૩૫૭

સ્યાત્ લોકે તુ તસ્ય સમાવેશાનર્હતયા લૌકિકત્વાસંભવાત્ । પ્રવચને ભગવતા યત્ સામાયિકાદિ ષડ્વિધાવશ્યકં પ્રરૂપિતં તદેવ સ્વચ્છન્દવિહારિભિઃ ષટ્કાયર્દિ-સકૈર્જિનાજ્ઞાવાહ્યૈઃ ક્રિયમાણં લોકોત્તરિક-દ્રવ્યાવશ્યકમ્ । તત્ર ષડ્વિધાવશ્યકે જિનપ્રતિમા પૂજનસ્ય પ્રવેશાત્ તસ્ય લોકોત્તરિકદ્રવ્યાવશ્યકે સમાવેશો ન સંભવતિ ।

યહ પ્રતિમાપૂજનરૂપ કાર્ય ન લૌકિક દ્રવ્ય અવશ્યક હૈ ઓર ન લોકો-ત્તર દ્રવ્ય અવશ્યક હી હૈ ।

શંકા—પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નહોં હૈ યહ તો ઓપ કા કહનાં શીક હૈ, ક્યોં કિ યહ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકોં સે સર્વથા મિત્ર હૈ । પરન્તુ ઇસે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનને મેં ઓપકો કયા વિવાદ હૈ । ક્યોં કિ પ્રમુ સ્વયં લોકોત્તર દેવ માને જાતે અતઃ ડનકા પૂજન મી લોકોત્તરિક હી માનનાં ચાહિયે ?

ઉત્તર—પ્રવચન મેં ભગવાન જો સામાયિક આદિ છહ પ્રકાર કે આવશ્યકોં કા વર્ણન કિયાં હૈ—વે જષ જિન આજ્ઞા વાહ્ય-સ્વચ્છન્દવિ-હારી ઓર ષટ્કાય કી વિરાધના કરને મેં નિરત અનુપયુક્ત પુરુષોં દ્વારા કરને મેં આતે હૈં લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આસશ્યક રૂપ સે પ્રતિપાદિત કિયે ગયે હૈં । ઇન ષટ્પ્રકાર કે આવશ્યકોં મેં પ્રતિમાપૂજન કા કોઈ અધિકાર હી નહોં હૈ । અતઃ ઇસે કૈસે લોકોત્તરિક આવશ્યક માના જા સકતા હૈ ।

પૂજનરૂપ કાર્ય માટે ન તો લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને ન તો લોકોત્તર દ્રવ્ય આવશ્યક છે.

શંકા:—પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નથી. તમારી આ વાત તો ઉચિત છે. કેમ કે આ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકોથી સંપૂર્ણપણે ભિન્ન છે. પણ એને લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામાં તમને શે વાંધો છે ? કેમકે પ્રભુ ભતે લોકોત્તર દેવ મનાય છે. ત્યારે તેમનું પૂજન પણ લોકોત્તરિક જ માનવું જોઈએ ?

ઉત્તર—પ્રવચનમાં ભગવાને જે સામાયિક વગેરે છ ભતના આવશ્યકોનું વર્ણન કર્યું છે તેઓ બ્યારે જિન-આજ્ઞા વાહ્ય સ્વચ્છન્દ વિહારી અને ષટ્-કાયની વિરાધના કરવામાં નિરત અનુપયુક્ત પુરુષો વડે આચરવામાં આવે છે. લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામાં આવે છે. આ છ ભતના આવશ્યકોમાં પ્રતિમા પૂજનનો કોઈ અધિકાર જ નથી. એટલા માટે લોકો-ત્તરિક આવશ્યક કેવી રીતે માની શકાય ?

કુપ્રવચનેડૃઠતઃ પૂજાવિધાનં વિશિષ્ય નોક્તં તથાપિ કામપૂરકમૃતમનુષ્યપૂજનવત્
તસ્ય પૂજા પ્રતિમાયાં ક્રિયમાણા કુપ્રાવચનિકીતિ વક્તું શક્યતે । તસ્મિન્ કુપ્ર-
વચને હિ પૂજાધારનિર્ણયાવસરે સામાન્યતઃ પૂજ્યસ્ય સર્વસ્યાપિ પૂજાધારઃ પ્રતિમા-

ભાવાર્થ-શંકાકાર ને પ્રતિમાપૂજન કો લોકોત્તરિક આવશ્યક માનકર દ્રવ્ય આવશ્યક મેં જો ઉસકા સમાવેશ કરના ચાહા હૈ સો ઉસકી હસ આશંકા કા સમાધાન કરતે હુએ સુત્રકારને યહ કહા હૈ કિ જિન આજ્ઞા બાહ્ય એવં સામાયિક આદિ મેં અનુપયુક્ત પુરુષોં દ્વારા કિયે ગયે સામાયિક આદિ ષટ્ વિધ આવશ્યક કાર્ય હી લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક મેં પરિગણિત કિયે ગયે હૈં । इनमें प्रतिमा पूजा का कोई संबंध ही नहीं है-प्रतिमा पूजा षट् विध आवश्यक कार्यों में परिगणित ही नहीं हुई है । अतः उसका वहां पर किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होने से उसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में नहीं गिना जा सकता है अतः इसका समावेश केवल कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक में ही हुआ है ऐसा मानना चाहिये ।

શંકા—કુપ્રવચન મેં ઇન્દ્રાદિકોં કી પૂજા કરને કે વિધાન કી તરહ પ્રતિમા પૂજા કા વિધાન તો પાયા નહીં જાતા હૈ ફિર આપ હસે કુપ્રાવચનનિક મેં અન્તર્ભૂત કૈસે કહ સકતે હૈં ?

ભાવાર્થ:—શંકાકારે પ્રતિમા પૂજનને લોકોત્તરિક આવશ્યક માનીને દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેનો સમાવેશ કરવાની જો ઇચ્છા બતાવી છે. તેની તે શંકાતું સમાધાન કરતાં સૂત્રકારે આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે જિન આજ્ઞા બાહ્ય અને સામાયિક વગેરેમાં અનુપયુક્ત પુરુષો વડે કરવામાં આવેલા સામાયિક વગેરે છ બાતના આવશ્યક કાર્યો જ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં પરિગણિત કરવામાં આવ્યાં છે. એનાથી પ્રતિમા પૂજનો કોઈ સંબંધ જ નથી. પ્રતિમા પૂજા ષટ્વિધ આવશ્યક કાર્યોમાં પરિગણિત જ થઈ નથી. એટલા માટે ત્યાં તેનો કોઈ પણ રીતે સંબંધ નહિ હોવાથી લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેની ગણના થઈ શકે તેમ નથી. એથી ફક્ત દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ થયો છે આમ માની લેવું જોઈએ.

શંકા:—કુપ્રવચનમાં ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવાના વિધાનની જોમ પ્રતિમા પૂજાનું વિધાન તો મળતું નથી ત્યારે તમે એને કુપ્રવચનિકમાં કેવી રીતે સમાવિષ્ટ કરી શકો ?

ચિત્રાદય इति प्ररूपितम् । एवं च जिनपूजनं-कुप्रावचनिकं-नोआगमतो द्रव्या-
वश्यकं प्रतिमायां क्रियमाणत्वात्, इन्द्रादिपूजनवत्, इत्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक
द्रव्यावश्यकतया धर्मपदवाच्यं न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रवचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप
से नहीं किया गया है, तो भी कामपूरक प्रणियों के मनोरथ को पूर्ण
करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में
होती हुई पूजा भी कुप्रावचनन की है ।

इस प्रकार हम अनुमानसे कह सकते हैं । उसमें प्रवचनमें पूजाके
आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत
जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य हैं वे सब गृहीत हुए हैं । इस
प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है ।
इसलिये वह कुप्रावचनिक है । इस प्रकार हम कहते हैं । इस कथन से
यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो
जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी हैं । अतः जिन पूजन भी
प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य
आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नहीं है यह बात
स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान प्रयोग इस प्रकार से
करना चाहिए ।

उत्तर:—જો કે કુપ્રવચનમાં પ્રતિમા પૂજનનું વિધાન સ્વતંત્ર રૂપમાં કર-
વામાં આવ્યું નથી છતાંય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણુસના મૃત
નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામાં આવેલી પૂજા પણ કુપ્રા-
વચનિકી છે. આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ. તે કુપ્રવચનમાં
પૂજાના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજાના આધારભૂત
એટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનું ગ્રહણ થયું છે.

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજાનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે.
એટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ. આ કથનથી એ
વ્યત્તિસિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમાં જે જે
પૂજાઓ કરવામાં આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે. એટલા માટે જિન
પૂજા પણ પ્રતિમામાં આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય
આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપદવાચ્ય નથી. આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ
થઈ જાય છે. આમાં અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે.

અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે-વિવક્ષિતક્રિયાનુભવયુક્તો યોઽર્થઃ સ ભાવઃ, ભાવ તદ્વતોરભેદોપચારાદ્ ભાવઃ । યથા-ऐश्वर्यरूपायाइन्दनक्रियाया अनुभवात्इन्द्रो भाव उच्यते । ભાવશ્ચાસૌ આવશ્યકં ચ, ભાવમાશ્રિત્ય ચા આવશ્યકં ભાવાવશ્યકમ્ ।

“ જિનપૂજનં નો આગમતો કુપ્રાવચનિકં દ્રવ્યાવશ્યકં પ્રતિમાયાં ક્રિયમાણત્વાન્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ ” । અતઃ હસ સમસ્ત પૂર્વોક્ત કથન સે યહ ઘાત સ્પષ્ટ હો જાતી હૈ કિ વહ પ્રતિમાપૂજન કાર્ય લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપ સે ભી પ્રસક્ત હોતા તો ભગવાન્ હસકા અવશ્ય પ્રતિ-
ષેધ કરતે ।

અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે - અથ ભાવ આવશ્યક કયા હૈ હસકા કથન સૂત્રકાર કરતે હૈ-વર્તમાન સમય મેં ઉસ વિવક્ષિતરૂપ પર્યાય સે યુક્ત દ્રવ્ય કા નામ ભાવ હૈ । ભાવ યદ્યપિ વર્તમાન ક્રિયા રૂપ માના ગયા હૈ, ફિર ભી યહાં પર ઉસ ક્રિયા સે યુક્ત દ્રવ્ય કો જો ભાવ કહા હૈ ઉસકા કારણ દ્રવ્ય ઓર પર્યાય કા અભેદ સંબંધ હૈ । ભગવાન દ્રવ્ય કે વિના નહીં રહ સકતા હૈ । ભાવ દ્રવ્ય કો એક પર્યાય હૈ, વહ નિરાશ્રય હોની નહીં હૈ-અતઃ જિસ દ્રવ્ય કે આશ્રય વહ રહેગી ઉન દોનોં મેં અભેદોપચાર સે ઉસ પર્યાય સે ઉપલક્ષિત ઉસ દ્રવ્ય કો હી ભાવ કહ દિયા હૈ । જિસ પ્રકાર ऐश्वर्यरूप इंदन (देदीप्यमान होना)

“ જિનપૂજનં નો આગમતો કુપ્રાવચનિકં દ્રવ્યાવશ્યકં પ્રતિમાયાં ક્રિયમાણ-
ત્વાન્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ ”

એટલા માટે આ પૂર્વેકિત કથનથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે તે પ્રતિમા પૂજન કાર્ય લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક પણ નથી. જે તે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપે પણ પ્રસક્ત હોત તો ભગવાન તેનો ચોક્કસ પ્રતિષેધ કરત.

‘ અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે ’:—હવે આવશ્યક શું છે એનું સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર કરે છે-વર્તમાન સમયમાં તે વિવક્ષિત રૂપ પર્યાયથી યુક્ત દ્રવ્યનું નામ ભાવ છે. જે કે ભાવ વર્તમાન ક્રિયારૂપ માનવામાં આવ્યો છે, છતાંય અહીં તે ક્રિયાથી યુક્ત દ્રવ્યને જ ભાવ બતાવ્યો છે તેનું કારણ દ્રવ્ય અને પર્યાયને અભેદ સંબંધ છે. ભાવ ભગવાન દ્રવ્ય વગર રહી શકતો નથી ભાવ દ્રવ્યની એક પર્યાય છે, તે નિરાશ્રય હોતીજ નથી. એથી જ દ્રવ્યના આશ્રયે તે રહેશે તેઓ બંનેમાં અભેદોપચારથી તે પર્યાયથી ઉપલક્ષિત તે દ્રવ્યને જ ભાવ કહી દીધો છે. જેમ ऐश्वर्य ઇંદન (દેદીપ્યમાન થવું) ક્રિયાના અનુભ-

તદ દ્વિવિધમ્- (૧) આગમતઃ=આગમમાશ્રિત્ય, (૨) નોઆગમતઃ=આગ-
માભાવમાશ્રિત્ય ।

આગમતો ભાવાવશ્યકમાહ—

“ સે કિં તં આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ? આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ જાણખ ઉવઉત્તે,
સેતં આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ” । (અનુયોગ૦)

અથ કિં તદાગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ? , ઉત્તરમાહ—“ જ્ઞાયક ઉપયુક્ત ” આગ-
મતો ભાવાવશ્યકમ્ ।

અર્થમર્થઃ—આવશ્યકપદાર્થજ્ઞસ્તજ્ઞનિતસંવેગેન વિશુદ્ધ્યમાનપરિણામસ્તત્ર ચો
પયુક્તઃ સાધ્વાદિરાગમતો ભાવાવશ્યકમ્ , અત્રાવશ્યકાર્થજ્ઞાનરૂપસ્યાગમસ્યાત્ર

ક્રિયા કે અનુભવ સે ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ ઇન્દ્ર કહા જાતા હૈ ।
હસી પ્રકાર જો આવશ્યક રૂપ ક્રિયા કે અનુભવસે યુક્ત હૈ વહી આત્મા
ભાવાવશ્યક કહલાતા હૈ । આવરૂપ જો આવશ્યક હૈ વહ, અથવા ભાવ
કો આશ્રય કરકે જો આવશ્યક હૈ વહ ભાવાવશ્યક હૈ ।

યહ ભાવ આવશ્યક ભી દો પ્રકાર કા હૈ—૧ આગમ કી અપેક્ષા
ભાવ આવશ્યક ઔર દૂસરા નો આગમ કી અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક ।
હનમેં “ જ્ઞાયકઃ ઉપયુક્તઃ આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ” જ્ઞાયક ઉપયુક્ત
આત્મા આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક માના ગયા હૈ । આવ-
શ્યકરૂપ પદાર્થ કા જો જ્ઞાતા હૈ ઉસકા નામ જ્ઞાયક હૈ । આવશ્યકરૂપ
પદાર્થ કે જ્ઞાન સે જનિત સંવેગ દ્વારા વિશુદ્ધ હુખ પરિણામોં કો નામ
ઉપયોગ હૈ । હસ ઉપયોગ સે વિશિષ્ટ જો સાધુ આદિ જન હૈં વે આગમ
કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક હૈં । ક્યોં કિ હનમેં આવશ્યકરૂપ પદાર્થ

વથી ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ ઇન્દ્ર કહેવાય છે તેમજ બે આવશ્યકરૂપ ક્રિયાના
અનુભવથી યુક્ત છે તે આત્મા ભાવાવશ્યક કહેવાય છે. ભાવરૂપ બે આવશ્યક
છે તે અથવા ભાવને આશ્રય કરીને બે આવશ્યક છે તે ભાવાવશ્યક છે.

આ ભાવ આવશ્યક પણ બે પ્રકારનો છે-૧, આગમનની અપેક્ષા ભાવ
આવશ્યક અને ૨, નો આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક એમનામાં “જ્ઞાયકઃ
ઉપયુક્તઃ આગમતો ભાવાવશ્યકમ્” જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષાથી
ભાવ આવશ્યક માનવામાં આવ્યો છે. આવશ્યકરૂપ પદાર્થનો બે જ્ઞાતા છે તેનું
નામ જ્ઞાયક છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનથી જનિત સંવેગવડે વિશુદ્ધિ
પામેલા પતિષ્ઠામેનું નામ ઉપયોગ છે. આ ઉપયોગથી વિશિષ્ટ બે સાધુ વગેરે
લોકો છે તેઓ આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે. કેમકે તેઓમાં આવ-

સત્ત્વાત્, ભાવાવશ્યકતા ચાત્રાવશ્યકાર્થજ્ઞાનજનિતોપયોગપરિણામવત્ત્વાદ્મા - માશ્રિત્યાવશ્યકમિતિ વ્યુત્પત્તે: । इदमुक्तं भवति आवश्यकार्थज्ञस्य आवश्यकोप-योगपरिणाम आगततो भावावश्यकं, साध्वादित्तु तादृशपरिणामवत्त्वादागततो भावावश्यकमुच्यते । इदमावश्यकोपयोगपरिणामरूपं भावावश्यकं धर्मपदवाच्यं, श्रुतधर्मान्तर्गतत्वात्, अत्र जिनाज्ञायाः सत्त्वात् ।

નોઆગમતોભાવાવશ્યકંત્રિવિધં-લૌકિકં, કુપ્રાવચનિકં,લોકોત્તરિકં ચેતિ
લૌકિકં ભાવાવશ્યકં પૂર્વાહ્ને ભારતસ્ય વાચનં શ્રવણં વા, અપરાહ્ને રામાયણસ્ય

કે જ્ઞાનરૂપ આગમ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । इसलिये साधु आदि जनों में आगम की अपेक्षा से आवश्यकता और इस आवश्यक के अर्थ ज्ञान से जनित उपयोगरूप परिणामों की विशिष्टता होने से भाव रूपता आती है । अतः “ भाव को आश्रित करके जो आवश्यक है वह भाव आवश्यक है ” यह कथन सुसंगत हो जाता है

‘ભાવાર્થ’-“આવશ્યક” इस पद के अर्थज्ञान से विशिष्ट तथा तद-नुकूल उपयोग परिणति संपन्न आत्मा ही आगम की अपेक्षा से भावा-वश्यक कहा गया है । ये भावावश्यक साधु आदि हैं । क्योंकि ये ही उस प्रकार की परिणति वाले होते हैं । अतः श्रुतधर्म के अन्तर्गत होने से यह भावावश्यक ही धर्म पद का वाच्य कहा गया है और ऐसे ही धर्म की आराधना करने की भगवानने आज्ञा प्रदान की है ।

નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક ત્રીન પ્રકાર કા માના ગયા હૈ । (૧) લૌકિક (૨) કુપ્રાવચનિક ઓર લોકોત્તરિક । પૂર્વાહ્ન મેં

શ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનરૂપ આગમને સદ્ભાવ મળે છે. એટલા માટે સાધુ વગેરે લોકોમાં આગમની અપેક્ષાથી આવશ્યકતા અને આ આવશ્યકતાના અર્થ જ્ઞાનથી જનિત ઉપયોગરૂપ પરિણામોની વિશિષ્ટતા હોવાથી ભાવરૂપતા આવે છે. એટલા માટે “ ભાવને આશ્રિત કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવ આવશ્યક છે. ” આ કથ સુસંગત થઈ પડે છે.

ભાવાર્થ:—“ આવશ્યક ” આ પદના અર્થ જ્ઞાનથી વિશિષ્ટ તેમજ તદ-નુકૂળ ઉપયોગ પરિણતિ સંપન્ન આત્મા જ આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યક સાધુ વગેરે છે કેમકે એ લોકો જ આ જાતની પરિણતિવાળા હોય છે. એથી શ્રુતધર્મના અંતર્ગત હોવા બદલ આ ભાવાવશ્યક જ ધર્મપદવાચ્ય કહેવામાં આવ્યો છે અને આ જાતના ધર્મની આરાધના કરવાની ભગવાને પણ આજ્ઞા કરી છે.

નો આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યકતા ત્રણ પ્રકારો છે:- (૧) લૌકિક (૨) કુપ્રાવચનિક (૩) અને લોકોત્તરિક પૂર્વાહ્નમાં ભારતનું વાંચન અથવા શ્રવણ

અમૃતઘર્મામૃતવર્ષિણી ડી० અ० ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૩૬૩

વાચનં શ્રવણં વા । લોકે હિ ભારતસ્ય વાચનં શ્રવણં પૂર્વાહ્ને એવ ક્રિયમાણં દૃશ્યતે, તથા રામાયણસ્ય વાચનં શ્રવણમપરાહ્ન એવ ક્રિયમાણં દૃશ્યતે, વૈપરીત્યે દોષદર્શનાત્ । તત્તથેત્યં લોકેઽવશ્યકરણીયતયાઽઽવશ્યકત્વં તદ્વાચકસ્ય શ્રોતુશ્ચ તદર્થોપયોગપરિણામસત્ત્વાદ્ ભાવત્વં, તદ્વાચકઃ પુસ્તકપત્રાદિપરાવર્તનરૂપયા હસ્તાભિનયરૂપયા ચ ક્રિયયા યુક્તો ભવતિ, શ્રોતાપિ ચ ગાત્રસંયતત્વ-કરસંપુટીકરણાદિ

ભારત કા વાંચના અથવા સુનના, અપરાહ્ન મેં રામાયણ કા વાંચના યા સુનના યે સબ લૌકિક ભાવ આવશ્યક હૈં । લોક મેં ભારત કા વાંચના અથવા સુનના પૂર્વાહ્નમેં હી ક્રિયા જાતા હૈ । રામાયણકા વાંચન ઓર શ્રવણ અપરાહ્ન મેં હી હોતા હુઆ દેખા જાતા હૈ । ઇસસે વિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ કરને સે અનેક પ્રકાર કે દોષોં કા ભોજન બનના પડતા હૈ, ઇસ પ્રકાર લોક મેં ભારતાદિક ગ્રન્થોં કા વાંચના આદિ કાર્ય નિયમિત સમય મેં અવશ્ય કરને યોગ્ય હોને કી વજહ સે આવશ્યક રૂપમેં માના ગયો હૈ । અતઃ ઇસમેં ઇસ પ્રકાર સે આવશ્યકરૂપના આ જાતા હૈ । તથા ઇનકે વાંચને વાલો મેં યા સુનને વાલોં મેં ઇનકે અર્થ કે પ્રતિ ઉપયોગાત્મક પરિણામ કે સદ્ભાવ સે ભાવરૂપતા આતી હૈ । કયોં કિ જયતક ઇનકે વાંચને વાલે મેં ઇનકે અર્થ કે પ્રતિ ઉપયોગાત્મક પરિણામ કી જાગૃતિ નહીં હોગી, તવ તક વે ઇન પુસ્તકોં કે પત્રોં આદિ કા પરાવર્તન કરને રૂપ ક્રિયા ઓર શ્રોતાઓં કો અનેક અર્થ કી સંગતિ બેઠાને કે લિયે હસ્ત આદિ કે સંચાલનરૂપ અભિનય ક્રિયા કા ઉપયોગ હી

અપરાહ્નમાં રામાયણનું વાચન કે શ્રવણ આ બધું લૌકિક ભાવ આવશ્યક છે. લોકમાં ભારતનું વાંચન અથવા તેા શ્રવણ પૂર્વાહ્નમાં જ કરવામાં આવે છે. રામાયણનું વાંચન અને શ્રવણ અપરાહ્નમાં જ થતું જોવામાં આવે છે. એથી વિરુદ્ધ આચરણ કરવાથી માણસ ઘણી જાતના દોષોને પાત્ર થઈ પડે છે. આ પ્રમાણે ભારત વગેરે ગ્રંથોનું વાંચન વગેરે કાર્ય નિયમિત સમયમાં આવશ્યક કરવા યોગ્ય હોવા બદલ આવશ્યક રૂપમાં માનવામાં આવે છે. એથી આમાં આ રીતે આવશ્યકપણું આવી જાય છે. તેમજ એમનું વાંચન કરનારાઓમાં તેમના તરફ ઉપયોગાત્મક પરિણામના સદ્ભાવથી લાવરૂપતા આવે છે. કેમકે બ્યાંસુધી તેમનું વાંચન કરનારાઓમાં તેમના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગાત્મક પરિણામની જાગૃતિ થશે નહિ, ત્યાં સુધી તેઓ તે પુસ્તકના પત્રો વગેરેના પરાવર્તન કરવારૂપ ક્રિયા અને શ્રોતાઓના માટે અનેક જાતના અર્થની સંગતિ બેસાડવા માટે હાથ વગેરેના હલનચલનરૂપ અભિનય ક્રિયા ઉપયોગ જ કેવી રીતે કરી શકે.

ક્રિયાવાન ભવતિ, એવં તયોઃ ક્રિયાવચ્ચેન નોઆગમત્વં, “કિરિયાઽગમો નહોઈ”
 इति वचनात् । क्रियारूपे देशे आगमाभावाद् नोआगमत्वमपि, अत्र नो शब्दस्य
 देशनिषेधबोधकत्वात् । लोके भारतादावागमत्वं व्यवह्रियते, तस्माद्देशत आगमो-
 ऽस्त्यपि । तस्माद् पूर्वाह्णेऽपराह्णे यथानिर्दिष्टकाले भारताद्युपयुक्तो यदवश्यं भारतादि
 वाचयति शृणोति वा, तद् वाचनं श्रवणं च लौकिकं भावावश्यमिति बोध्यम् ।

કેસે કર સકતે હૈં । પરન્તુ ઉસ સમય હસ પ્રકાર કી યે સમસ્ત ક્રિયાઈ
 उनमें प्रत्यक्ष ही देखने में आती हैं । इसी प्रकार श्रोताजन भी अटल
 होकर उनके सुनने में तन्मय हो जाते हैं । समय २ पर हाथ जोड़ने
 रूप क્રિયાઈ भी करते हैं । इस प्रकार की क्रियाई से युक्त होने से उन
 सुनने वांचने वालों में नो आगमता भी है क्यों कि “ किरिया आगमो
 न होइ ” क्रिया आगम नहीं मानी जाती है ऐसा सिद्धान्त का कथन
 है । “ नो आगम ” में नो शब्द आगम के एक देश का वाचक है ।
 इसलिये क्रियारूप एक देश में पूर्णरूप से आगम का अभाव होने से
 आगम की एक देशता उसमें मानने में आती है । भारतादिक पुस्तकों
 में आगमता का कथन लोक की अपेक्षा से ही किया गया जानना
 चाहिये । क्यों कि लोक में अन्य व्यवहारी जन इनमें आगमता का
 व्यवहार करते हुए देखे जाते हैं । इस प्रकार पूर्वाह्ण या अपराह्ण में
 किसी भी निर्दिष्ट समय में भारतादिक ग्रन्थों का ज्ञाता उनमें उपर्युक्त
 होकर जो उनका वांचना आदि कार्य करता है—या जो श्रोताजन उप-

પણ તે વખતે આ બતની આ બધી ક્રિયાઓ તેઓમાં પ્રત્યક્ષરૂપે જોવામાં
 આવે છે. આ રીતે શ્રોતાઓ પણ તલ્લીન થઈને સાંભળવા માટે છે. યોગ્ય
 સમયે તેઓ હાથ જોડવારૂપ ક્રિયાઓ પણ કરે છે. આ બતની ક્રિયાઓથી
 યુક્ત હોવા બદલ તે વાંચનારા તેમજ સાંભળનારાઓમાં નો આગમતા પણ
 છે. કેમકે “ કિરિયા આગમો ન હોઈ ” ક્રિયા આગમ માનવામાં આવતી નથી
 આ સિદ્ધાન્તનું કથન છે. “ નો આગમ ” માં નો શબ્દ આગમના એક દેશનો
 વાચક છે. એટલા માટે ક્રિયારૂપ એકદેશમાં આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ
 હોવાથી તેમાં આગમની એકદેશતા માનવામાં આવે છે. ભારત વગેરે શ્રેણીમાં
 આગમતાનું કથન લોકની અપેક્ષાથી જ કરવામાં આવ્યું છે કેમકે લોકમાં
 બીજા વ્યવહારી લોકો પણ એમાં આગમતારૂપ વ્યવહાર કરતાં જોવાય છે. આ
 રીતે પૂર્વાહ્ણ કે અપરાહ્ણમાં કેઈ પણ નિર્દિષ્ટ સમયમાં ભારત વગેરે શ્રેણી નો
 જ્ઞાતા તેઓમાં ઉપયુક્ત થઈને જે તેમનું વાંચન વગેરે કાર્ય કરે છે અથવા તે

એનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટીકા અં. ૧૬ દ્રોપદીચર્ચા

૩૬૫

કુપાવચનિકં ભાવાવશ્યકમુચ્યતે—યે ઇમે ચરકચીરિકાદયો યાવત્ પાષ્ણંડસ્થા ઉપયુક્તો યથાવસરં યદવશ્યમ્—ઈજ્યાઞ્જલિ-હોમ-જપો-ન્દુરુક્કનમસ્કારાદિકં ભાવ-રૂપમાવશ્યકં કુર્વન્તિ તેષાં તત્ કુપાવચનિકં ભાવાવશ્યકમ્ ।

તત્ર-ઈજ્યા-સન્ધ્યોપાસનમ્, ઞ્જલિઃ-જ્વલાન્જલિઃ સૂર્યાય દીયતે, હોમઃ-નિત્યહવનમ્, જપઃ-ગાયત્ર્યાઃ, ઉન્દુરુક્ક-અયં દેશીયઃ શબ્દઃ ધૂપાર્થકઃ, નમસ્કારઃ=વન્દનમ્, एतेषां ચરકાદિभिઃ પાષ્ણંડસ્થૈરવશ્યં ક્રિયમાણત્વાદાવશ્ય-કત્વમ્ । તદર્થોપયોગશ્રદ્ધાદિપરિણામસદ્ભાવાત્ ભાવત્વમ્ । ચરકાદીનાં તદર્થોપ-

યુક્ત હોકર ઉન્હેં સુનતે હેં વહ સઘ વાચના સુનના આદિ કાર્ય નો આગમ કી અપેક્ષા સે લૌકિક ભાવ આવશ્યક હૈ ।

જો ચરક ચીરિકાદિ જન ઉપયુક્ત હોકર અપને આવશ્યક કાર્ય સ્વરૂપ ઇજ્યા, ઞંજલિ, હોમ જપ, ઉન્દુરુક્ક, ઓર નમસ્કાર આદિ ભાવ-રૂપ આવશ્યક કરતે હેં, ઉનકે યે સઘ કાર્ય કુપાવચનિક ભાવ આવ-શ્યક હેં સંધ્યા કી ઉપાસના કરના ઇજ્યા હૈ, સૂર્ય કે લિયે જલકી ઞંજલિ દેના ઞ્જલિ હૈ, નિત્ય હવન કરના હોમ, ગાયત્રી કા પાઠ કરના જપ, ધૂપ કા યેના ઉન્દુરુક્ક ઓર નમસ્કાર કરના વન્દના કર્મ હેં । યે સઘ કાર્ય ચરકોદિ જનોં દ્વારા પ્રતિદિન અવશ્ય કરને યોગ્ય હોતે હેં-અતઃ ઉનમેં ઉન્હેં કી માન્યતાનુસાર આવશ્યકપના કહા ગયા હૈ ઉનકે કરને મેં ઉનકે અન્તઃ કારણ મેં ઉનકે અર્થ કે પ્રતિ ઉપયોગ ઇવં શ્રદ્ધા ઓદિરૂપ પરિણતિ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । ઇસ

જે શ્રોતાઓ ઉપયુક્ત થઈને તેમનું શ્રવણ કરે છે તે બધું વાંચન શ્રવણ વગેરે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લૌકિક ભાવ આવશ્યક છે.

જે ચરક ચારિક વગેરે લોકો ઉપયુક્ત થઈને આવશ્યક કાર્યસ્વરૂપ ઇજ્યા, ઞંજલિ, હોમ, જપ, ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર વગેરે ભાવરૂપ આવશ્યકો કરે છે, તેઓના આ બધા કાર્યો કુપાવચનિકભાવ આવશ્યક છે. સંધ્યાની ઉપાસના કરવી એ ઇજ્યા છે, સૂર્યને માટે પાણીની ઞંજલિ આપવી તે ઞંજલી છે, દરરોજ હવન કરવો તે હોમ, ગાયત્રી પાઠ કરવો તે જપ અને ધૂપ કરવો તે ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર એ વન્દના કર્મ છે. આ બધા કાર્યો ચરક વગેરે લોકો વડે હમેશાં અવશ્ય કરવાયોગ્ય હોય છે. એટલા માટે આમાં તેમની માન્યતા મુજબ જ આવશ્યકપણું કહેવામાં આવ્યું છે. એમના આચરણથી તેમના હૃદયમાં તેના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગ અને શ્રદ્ધા વગેરે રૂપ પરિણતિ નો સદ્ભાવ મળે છે. આ અપેક્ષાએ ત્યાં ભાવતા અને

યોગરૂપો દેશ આગમઃ, કરશિરઃ સંયોગાદિક્રિયારૂપો દેશસ્તુ નોઆગમઃ, તથા ચ દૈશિકાગનાભાવમાશ્રિત્ય નો આગમત્વમપિ, નોશબ્દસ્યાત્રાપિ દેશનિષેધપરત્વાત્ ।

લૌકિકં કુપ્રાવચનિકં ચ નોઆગમતો ભાવાવશ્યકં ન ધર્મપદવાચ્યમ્, તત્ર જિનાજ્ઞાયા અમાત્રાદિતિ બોધ્યમ્ ।

અથ કિં લોકોત્તરિકં નોઆગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ? ઉચ્યતે અનુયોગદ્વારે ।

“ જળ્લં ઇમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે અપેક્ષા સે વહાં ભાવતા ઓરે એકદેશ સે આગમતા મી હૈ । ક્યોં કિ હાથોં કા જોડના નમસ્કાર કરના આદિ રૂપ જો મી ક્રિયાઈ હૈં વે સવ નો આગમ હૈં । ઇસ અપેક્ષા ઇનમૈં પૂર્ણરૂપ સે આગમવનો ન હોકર આગમ કી એક દેશતા હી હૈ ચરક ચીરીકાદિ દ્વારા માન્ય ગ્રન્થોં કી નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓં કા હી વહાં સદ્ભાવ હૈ ઓરે ઊન્હોં કે અર્થ મૈં ઊનકા ઉપયોગાદિરૂપ પરિણામ હૈ । ઇસલિયે યે સવ ચરક ચીરીકાદિ કી ક્રિયાઈ નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક હૈં । યહાં પર મી નો શબ્દ દેશ નિષેધ પરક હૈ અર્થાત્ આગમ કે એક દેશ કા વાચક હૈ યે લૌકિક ઓર કુપ્રાવચનિક જિન્હૈં નો આગમ કો અપેક્ષા સે ભાવાવશ્યકરૂપ મૈં પ્રકટ કિયા ગયા હૈ ધર્મપદ કે વાચ્ય નહીં હૈં । ક્યોં કિ ઇન કી આરાધના સે જીવોં કે કર્મોં કી નિર્જરા નહીં હોલી હૈ । અતઃ તીર્થકર પ્રભુ ને ઇનકે આરાધન કરને કી આજ્ઞા પ્રદાન નહાં કી હૈ ।

નો આગમ કો અપેક્ષા સે લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક ઇસ પ્રકાર

એકદેશથી આગમતા પણ છે. કેમકે હાથ જોડના, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે. આ દૃષ્ટિએ એમનામાં આગમતા સંપૂર્ણપણે નથી ફક્ત આગમની એકદેશતા જ છે. ચરક ચીરિક વગેરે વડે માન્ય ગ્રંથોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યાં સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થમાં તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે. એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે. અહીં પણ નો શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે. આ લૌકિક અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમાં પ્રગટ કરવામાં આવ્યા છે-ધર્મપદના વાચ્ય નથી. કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થકર પ્રભુએ એમને આરાધનાની આજ્ઞા કરી નથી.

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે:—

જળ્લં ઇમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે તલ્લેસે

तल्लेसे तदञ्जवसिए तत्तिव्वञ्जवसाणे तदद्वोपउत्ते तदप्पिअकरणे तव्भावणा-
भाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेइ, से तं लो-
गुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नोआगमतो भावावस्सयं, से तं भावावस्सयं ॥”

छाया-यत्फलु श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तस्तन्म-
नस्कस्तल्लेइयस्तदध्यवसिनस्तन्नीत्राध्यवसायस्तदर्थोपयुक्तस्तदर्पितकरणस्तद्भावना-
भावित अन्यत्र कुत्रचिन्मनोऽकुर्वन् उभयकालं यत् आवश्यकं सामायिकादि करोति
तेषां तल्लोकोत्तरिकं भावावश्यकम् । तेषां तद् नोआगमतो भावावश्यकम् तदे-
तद्भावावश्यकम् ।

अत्राप्यवश्यं करणी सत्त्वादावश्यकत्वं, तर्थाप्ययोगश्रद्धादिपरिणामस्य सद्भा-
वाद् भावत्वम्, रजोदण्डनमार्मिकाव्यापारस्य शरात्तिकवन्दनकरणानन्तरं सविधि

है-जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते
तम्मणे तल्लेसे तदञ्जवसिए तत्तिव्वञ्जवसाणे तदद्वोपउत्ते तदप्पिअ-
करणे तव्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं
आवस्सयं करेनि, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नो आगमतो
भावावस्सयं से तं भावावस्सयं (अनुयोगद्वार)

श्रमण अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जो सामायिक आदि
आवश्यक क्रियाओं को तच्चित्त होकर (उनमें ही चित्त लगाकर) तज्जन
होकर उनमें ही अन्तःकरणको एकाग्रकर इत्यादि सूत्रमें कथित विधिके
अनुसार दोनों कालों में करतेहैं वह उनको कार्य नो आगम की अपेक्षा
से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक हैं । ये सामायिक आदि क्रियाएँ
अवश्य करने योग्य होने से आवश्यक हैं । कर्त्ता का उनके अर्थ में
उपयोग रूप एवं श्रद्धा आदि रूप परिणाम का सद्भाव होने से उनमें

तदञ्जवसिए तत्तिव्वञ्जवसाणे तदद्वोपउत्ते तदप्पिअकरणे तव्भावणाभाविए
अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेति, से तं लोगुत्तरियं
भावावस्सयं, से तं नो आगमतो भावावस्सयं, से तं भावावस्सयं (अनुयोगद्वार) ।

श्रमणु अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जे सामायिक वगेरे आव-
श्यक क्रियाओने तच्चित्त थधने (तेमनामां मन पशेयीने) तल्लीन थधने
तेमनामां न मन लगायीने वगेरे सूत्रमा कथित विधि सुज्जण अने वण्त
करे छे तेमनुं ते कार्य नो आगमती अपेक्षाओ लोकोत्तरिक भाव आवश्यक
छे. आ सामायिक वगेरे क्रियाओ अवश्य करवा योग्य होवार्था आवश्यक छे.
कर्त्ता तेमना अर्थमां उपयोगइय परिणामनो सद्भाव होवार्था तेमनामां
भावता पणु छे. रजोदण्डरुथी लूमि वगेरेनुं प्रभार्जन करवुं, वंदना वगेरे कृति

૩૬૮

જ્ઞાતાધર્મકથાક્રસ્ત્રે

ષટ્ત્રિધાવશ્યક-કરણરૂપાયાઃ ક્રિયાયાઃ અનાગમત્વાત્ નોભાગમત્ત્વં વોધ્યમ્, અત્રાપિ નો-શબ્દસ્ય દેશનઃ પ્રતિષેધપરત્વાત્ । इदम् लोकोत्तरिकं नो आगमतो भावावश्यकं धर्मपदवाच्यम् तत्र विधेयतया भगवतोऽर्हत आज्ञायाः सद्भावात् । अन्येऽपि धर्मलक्षणमेवमाहुः—

“ वचनादविरुद्धाद्य-दनुष्ठानं यथोदितम् ।

मैत्र्यादिभावसंमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते ” ॥ ૧ ॥

ભાવતા ખી હૈ રજોહરણ સે ભૂમિ આદિ કા પ્રમાર્જન કરના, વંદના આદિ કૃતિ કર્મ કરના આદિ વિધિ પૂર્વક જો ષટ્ વિધ આવશ્યક કરને રૂપ ક્રિયાઈ હૈં વે સવ “ ક્રિયા આગમો ન હોઈ ” હસ નિયમ કે અનુસાર આગમ નહીં હૈં । અતઃ इन में आगम के एक देश अभाव की अपेक्षा से नो आगमता है । यहाँ पर भी नो शब्द सम्पूर्ण रूप से आगमका प्रतिषेध परक न होकर उसके एक देश का ही प्रतिषेधक है । अतः ये सामायिक आदि षट्विध आवश्यक नोआगम की अपेक्षा से लोकोत्तरीक भाव आवश्यक है ’ और इनके ही आराधन करने की जिनेन्द्र देवने भव्य जीवों को आज्ञा दी है । कारण कि ये धर्मपद के वाच्य है इनकी आराधना से भव्यजीवों के कर्मों की निर्जरा होती है ।

દૂસરોં ને ખી હસ પ્રકાર ધર્મ કા લક્ષણ કહા હૈ—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठानं यथोदितम् ।

मैत्र्यादिभावसंमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

કર્મ આચ વાં વગેરે વિધિપૂર્વક જે ષટ્ત્રિધ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે તેઓ સર્વે “ક્રિયા આગમો ન હોઈ” આ નિયમ મુજબ આગમ નથી. એટલા માટે એમનામાં આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી નો આગમતા છે. અહીં પણ નો શબ્દ સંપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરક નથી પણ તેના એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે. એટલા માટે સામાયિક વગેરે આ ષટ્ત્રિધ આવશ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર દેવે એમની આરાધના કરવાની જ ભવ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે. કેમકે આ બધા ધર્મપદના વાચ્ય છે. એમની આરાધનાથી ભવ્ય જીવોના કર્મોની નિર્જરા થાય છે.

ખીજતઓએ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે:—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठानं यथोदितम् ।

मैत्र्यादि भावसंमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

अनमारघमांमृतवर्णिणी टीका अ० १६ द्रौपदीखर्चा

३६९

अस्यव्याख्या वचनादिति ल्यबलोपे पञ्चमी, वचनमनुसृत्येत्यर्थः । वचनम्= अमागः । कीदृशाद् वचनादित्याह— अविशुद्धात्-कषच्छेदतापेषु अविघटमानात्, तत्र विधिप्रतिषेधयोर्वाहुर्येनोपवर्णनं कथयुद्धिः, पदे पदे तद्योगक्षेमकारिक्रियोपदर्शनं छेदयुद्धिः, विधिप्रतिषेधतद्विवक्षाणां जीवादपदार्थानां च स्याद्वादपरीक्षया याथात्म्येन समर्थनं तापयुद्धिः । तच्चवाविरुद्धं वचनं जिनप्रणीतमेव, निमित्तयुद्धेः

अविशुद्ध आगम से यथादित एवं मैत्री आदि भावनाओं से मिश्रित जो अनुष्ठान है वह धर्म है । स्पष्टार्थ—वचन शब्द का अर्थ आगम है । आगम में अविशुद्धता कष, ताप, और छेद द्वारा परीक्षित होने पर ही आती है । जिस प्रकार सुवर्ण की परीक्षा कष-कसोटी पर करने से ताप-अग्नि में तपाने से और छेद-छैनी वगैरह द्वारा काटने से होती है, उसी प्रकार आगम की शुद्धि की परीक्षा भी इन तीन उपायों द्वारा की जाती है । विधि और प्रतिषेध का बहुलता से जिस शास्त्र में वर्णन है, वह शास्त्रकष से शुद्ध कहा जाता है । पद पद पर जिस शास्त्र में इनके योग और क्षेमकरि क्रियाओं का कथन किया गया मिलता है वह शास्त्र छेदसे शुद्धमाना जाता है । विधि एवं प्रतिषेध तथा इन के विषयभूत जीवादिक पदार्थों का स्याद्वाद ढंग से जहाँ पर यथार्थ समर्थन किया जाता है सप्तभंगी द्वारा जहाँ पर इनका सुन्दर शैली से विवेचन करने में आता है वह शास्त्र तप उपायद्वारा शुद्ध माना जाता

अविशुद्ध आगमर्था यथादित अने मैत्री वगैरे भावनाओंकी मिश्रित के अनुष्ठान छे ते धर्म छे. स्पष्टार्थ—वचन शब्दने अर्थ आगम छे. आगममां अविशुद्धता, कष, ताप अने छेद वडे परीक्षित यथा पछी ज आवे छे. जेम सोनानी परीक्षा कष-कसोटी उपर कसवाथी ताप अग्नि उपर तपाववाथी अने छेद-छैनी वगैरेथी कापवाथी डाय छे, तेमज आगमनी शुद्धिनी परीक्षा पथु आ त्रणे उपायो वडे करवामां आवे छे. विधि अने प्रतिषेधनुं भोटा प्रमाणमां के शास्त्रमां वायुन छे, ते शास्त्र कषथी शुद्ध कडेवाय छे. उगले ने पगले के शास्त्रणां ऐमना योग अने क्षेमकरि क्रियाओंनुं कथन करवामां आण्युं छे ते शास्त्र छेदथी शुद्ध मानवामां आवे छे. विधि अने प्रतिषेध तेमज ऐमना विषयभूत लप वगैरे पदार्थानो स्याद्वादना रूपथी न्यां यथाथं वायुन करवामां आवे छे, सप्तभंगी वडे न्यां सुंदर शैलीमां ऐमनुं विवेचन करवामां आवे छे, ते शास्त्र तप उपायवडे शुद्ध मानवामां आवे छे. आ त्रणे

વચનસ્ય હિ વક્તા નિમિત્તમન્તરદ્વયમ્, તસ્ય ચ રાગદ્વેષમોહપારતન્ન્યમશુદ્ધિઃ, તેભ્યો વિતથ્યવચનમવૃત્તેઃ, ન ચૈવાડશુદ્ધિર્જિને ભગવતિ, જિનત્વવિરોધાત્, જયતિ રાગદ્વેષ-મોહરૂપાન્તરજ્ઞાન્ રિપૂનિતિ શબ્દાર્થાન્નુપપત્તેઃ તપનદહનાદિશબ્દવત્, અન્વર્થતયા ચાસ્યાભ્યુપગમાત્, નિમિત્તશુદ્ધ્યભાવાદ નાજિનપ્રણીતવચનમવિરુદ્ધમ્ । યતઃ—
 હૈ । इन तीनों उपायों से परीक्षित आगम ही परिशुद्ध कहा गया है ।
 अविरुद्ध वचन का नाम ही आगम है ।

इन कषादिकों से जो आगम में शुद्धता आती है उसका कारण निमित्त की शुद्धि है । निमित्त शुद्ध जिन प्रणीत वचन ही हैं । अन्य प्रणीत वचन नहीं । निमित्त में भी शुद्धि का कारण राग, द्वेष और मोह का अभाव है । वचन का अन्तरंग कारण वक्ता ही हुआ करता है वक्ता की प्रमाणता से ही वचन-आगम में प्रमाणता आती है इसी-लिये राग द्वेष आदि से कलुषित व्यक्तियों के वचन प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं । क्यों कि राग द्वेष आदिक सद्भाव में वचनों में परस्पर विरुद्ध अर्थ की प्ररूपकता स्वयं ही आ जाती है अतः यह निश्चित सिद्धान्त है कि जहाँ पर इनका सर्वथा अभाव है वही सच्चा आगम का प्रणेता हो सकता है । और उसी आगम में अविरुद्धता है । ऐसा अवि-रुद्ध आगम जिन प्रणीत ही हो सकता है क्यों कि उनमें पूर्वोक्त राग-द्वेष आदि द्वारा अशुद्धि का सर्वथा अभाव हो चुका है इस के सर्वथा दूर होने से ही वे “जिन” इस प्रकार की संज्ञा वाले हुए हैं । “जयति

ઉપાયોથી પરીક્ષિત આગમ જ પરિશુદ્ધ કહેવામાં આવ્યો છે. અવિરુદ્ધ વચનનું નામ જ આગમ છે. કષ વગેરેથી આગમમાં જે શુદ્ધતા આવે છે તેનું કારણ નિમિત્તની શુદ્ધિ છે. જિન પ્રણીત વચનો જ નિમિત્તશુદ્ધ છે. બીજાઓ વડે પ્રણીત વચનો નહિ. નિમિત્તમાં પણ શુદ્ધિનું કારણ રાગ, દ્વેષ અને મોહનો અભાવ છે. વચનનું અંતરંગ કારણ બોલનાર જ હોય છે. બોલનારા (વક્તા) ની પ્રમાણતાથી જ વચન-આગમમાં પ્રમાણતા આવે છે. એટલા માટે જ રાગ દ્વેષ વગેરેથી કલુષિત માણસોના વચનો પ્રમાણ કોટિમાં આવતાં નથી. કેમકે રાગદ્વેષ વગેરે સદ્ભાવ વચનોમાં પરસ્પર વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપકતા બને જ આવી જાય છે. એટલા માટે આ નિશ્ચિત સિદ્ધાંત છે કે જ્યાં એમનો સંપૂર્ણ અભાવ છે તે જ સાચા આગમનો પ્રણેતા થઈ શકે છે અને તે આગમમાં જ અવિરુદ્ધતા છે. એવું અવિરુદ્ધ આગમ જિનપ્રણીત જ થઈ શકે છે કેમકે તેમનામાં પૂર્વોક્ત રાગદ્વેષ વગેરે વડે અશુદ્ધિને સંપૂર્ણપણે અભાવ થઈ ચૂક્યો છે અશુદ્ધિ સર્વ રીતે મટી જવાથી તેઓ ‘જિન’ સંજ્ઞાવાળા થયા છે.

कारणस्वरूपानुविधायि कार्य, तत्र दुष्टकारणाऽऽरब्धं कार्यमदुष्टं भवितुमर्हति, निम्बबीजादिक्षु यष्टिरिवेति । अन्यथा—कारणव्यवस्थोपरमप्रसङ्गात् ।

यच्च—यदृच्छाप्रणयनप्रवृत्तेषु तीर्थान्तरीयेषु रागादिमत्स्वपि घुणाक्षरोत्किरण

रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् इति जिनः ” राग द्वेष आदिक जो अन्तरंग शत्रु हैं इन पर जिसने विजय पायी है वे ही जिन कहलाते हैं जिस प्रकार तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) आदि शब्द यथानाम तथा गुण वाले हुआ करते हैं, इसी प्रकार “ जिन ” यह नाम भी यथा नाम तथा गुण वाला है यथा नाम तथा गुण का होना ही नाम की सार्थकता है । जिन्होंने ने इन अन्तरंग शत्रुओं को परास्त नहीं किया उनके वचनों में परस्पर अविरोद्धार्थता नहीं आसकती है—क्यों कि वहाँ पर निमित्त की शुद्धि नहीं हैं । इसीलिये अजिन प्रणीत वचन अविरोद्ध नहीं होते हैं । लोक में भी जिस प्रकार नीम के बीज से इक्षु की उत्पत्ति देखने में नहीं आती उसी प्रकार सदोष कारण से उत्पन्न हुआ कार्य भी निर्दोष नहीं होता है । कार्य में निर्दोषता कारण कि निर्दोषता पर आधार रखती है । न्याय शास्त्र का भी यही सिद्धान्त है “ कारण स्वरूपानुविधायि कार्य ” कि कार्य, कारण के स्वरूप का अनुविधायक होता है । यदि इस प्रकार की व्यवस्था न मानी जावे तो फिर कार्य कारण भाव की व्यवस्था ही नहीं बन सकती है । हर एक पदार्थ

“ जयति रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् इति जिनः ” रागद्वेष वगैरे के अन्तरंग शत्रुओं के तेमना उपर जेमले विजय भेजव्यो के तेमो ज जिन कहेवाय के, जेम तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) वगैरे शब्दों नाम जेवा ज गुणवाणा डोय के, ते प्रमाणे ज “ जिन ” आ नाम पख नाम प्रमाणे ज गुणवाणुं के, जेवुं नाम तेवा गुणो डोवा के ज नामनी सार्थकता के, जेमले आ अन्तरंग शत्रुओंने डराव्या नथी तेमना वचनोमां परस्पर अविरोद्धार्थता आवी शकती नथी केम के त्यां निमित्तनी शुद्धि नथी, ओटका भाटे अजिन प्रणीत वचनो अविरोद्ध डोता नथी, लोकमां पख जेम बीमडाना जीजथी शेरडीनी उत्पत्ति जेवामां आवती नथी तेमज सदोष कारणथी उत्पन्न थयेतुं कार्य पख निर्दोष डोतुं नथी, कार्यमां निर्दोषता कारणनी निर्दोषता उपर आधारित डोय के, न्यायशास्त्रने पख ओज सिद्धांत के, “ कारणस्वरूपानुविधायिकार्य ” के कार्य कारण भाव स्वरूपने अनुविधाता डोय के, जे आ जतनी व्यवस्था मानवामां आवे

व्यवहारेण क्वचित् किंचिदविरुद्धमपि वचनमुपलभ्यते, मार्गानुसारिबुद्धौ वा प्राणिनि क्वचित्, तदपि जिनप्रणीतमेव, तन्मूलकत्वात् तस्य ।

हर एक का कार्य और कारण हो जायगा । अतः आगमरूप कार्य की शुद्धि के लिये निमित्त रूप कारण शुद्धि का होना अवश्य आवश्यकीय माना गया है ।

प्रश्न—आपने जो कहा कि आगम में अविरुद्धता उसके कारणभूत प्रणेता के अधीन है—सो यह बात हमें मान्य हैं । परन्तु इससे यह बात तो सिद्ध नहीं होती है कि वे अविरुद्ध वचन जिन भगवान के ही हैं’ अन्य के नहीं—कारण कि अन्य सिद्धान्तकारों के वचनों में भी किसी अंशसे अविरुद्धार्थता देखी जाती है । अतः उन्हें सदोष मान कर आप जो उनमें अनासता सिद्ध करते हैं सो यह बात कैसे मान्य हो सकती है ?

उत्तर—शंका तो ठीक है—परन्तु विचार करने से इसका उत्तर भी सहजरूप में मिल जाता है । अन्य सिद्धान्तकारों ने जो कुछ रचनाएँ की हैं—वे सब उन्होंने ने अपनी इच्छानुसार ही की हैं । अपनी निज कल्पना में जो कुछ उन्हें सूझा वही उन्होंने ने लिखा है । उनकी रचनाओं में पूर्वापर विरोध स्पष्ट प्रतीत होता है इससे उनमें रागादिक दोषों का अस्तित्व सिद्ध होता है । अब रही उनके वचनों में घुणाक्षर

નહિ તો કાર્ય કારણ ભાવની વ્યવસ્થા બની શકે તેમ નથી. દરેક પદાર્થ દરેક કનુ' કાર્ય અને કારણ થઈ જશે. એટલા માટે આગમરૂપ કાર્યની શુદ્ધિ માટે નિમિત્તરૂપ કારણ શુદ્ધિ થવી ચોક્કસપણે આવશ્યકીય માનવામાં આવી છે.

પ્રશ્ન:—તમે કહ્યું કે આગમમાં અવિરુદ્ધતા તેના કારણભૂત પ્રણેતાના આધીન છે—એ વાત એમને માન્ય છે. પણ એનાથી આ વાત તો સિદ્ધ થતી નથી કે તે અવિરુદ્ધ વચનો જિન ભગવાનના જ છે, બીજાઓના નહિ. કેમકે બીજા સિદ્ધાંતકારોના વચનોમાં પણ કોઈ પણ અંશે અવિરુદ્ધાર્થતા ભેવામાં આવે છે. એટલા માટે તેમને દોષયુક્ત માનીને તમે જો તેમનામાં અનાપ્તતા સિદ્ધ કરો છો આ વાત કેવી રીતે માન્ય થઈ શકે તેમ છે !

ઉત્તર:—શંકા તો ઠીક છે, પણ વિચાર કરવાથી આનો જવાબ પણ સરળ રીતે મળી શકે તેમ છે. બીજા સિદ્ધાંતકારોએ જે રચનાઓ કરી છે તે બધી તેમણે પોતાની ઈચ્છા મુજબ જ કરી છે. પોતાની કલ્પનાથી જે કંઈ તેમને ચોખ્ખુ લાગ્યું તે તેમણે લખ્યું છે. તેમની રચનાઓમાં પૂર્વાપર વિરોધ સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ આવે છે. એનાથી તેઓમાં રાગ વગેરે દોષો છે એવી વાત સિદ્ધ થાય છે. હવે ધુણાક્ષર ન્યાયથી કોઈક કોઈક સ્થાને તેમના વચનોમાં અવિરુદ્ધ

કીદશમનુષ્ઠાનં ધર્મઃ? इत्याह—' यथोदितम् ' यथा येन प्रकारेण कालाद्या-
राधनानुसाररूपेण—उदितं=प्रतिपादितं, तत्रैवाविरुद्धवचने इति गम्यम् ।

અન્યથા—

जो जहवायं न कुणइ, मिच्छादिद्वी तओ उ को अनो ! ।

वड्ढेइ मिच्छत्तं, परस्स संकं जणेमाणो ॥ इति ।

छाया-यो यथावादं न करोति, मिथ्यादृष्टिस्ततस्तु कोऽन्यः ।

वर्धयति मिथ्यात्वं, परस्य शङ्काजनयन् ॥ इति ।

पुनरपि कीदशमित्याह—' मैत्र्यादिभावसंमिश्रम् ' इति । मैत्र्यादयः=मैत्री
मुदिता करुणा माध्यस्थलक्षणा ये भावाः=अन्तःकरणपरिणामाः, तत्पूर्वकाश्च

ન્યાય સે કહી ૨ અવિરુદ્ધ અર્થ પ્રતિપાદકતા સો વહ ઉનકી નિજ કી
ઘર કી વસ્તુ નહીં હૈ—ઉસકા મૂલ સ્રોત અવિરુદ્ધ અર્થ કા પ્રરૂપક જિન
પ્રણીત આગમ હી હૈ । યહી બાત માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાલે વ્યક્તિ મેં મી
સમજ લેનો ચાહયે । વહ જો કુછ મી સત્યાર્થ કહતા હૈ ઉસકા મૂલ
કારણ જિનપ્રણીત આગમ કા સહારા હી હૈ । શ્લોક કથિત “યથોદિત”
પદ હસ બાત કા સમર્થન કરતા હૈ કિ દેશ કાલ આદિ કી આરાધના
કે અનુસાર જો આચાર-અનુષ્ઠાન પ્રતિપાદિત કિયા ગયા હૈ । ઉસસે જો
અવિરુદ્ધ કહા ગયા હૈ—વહી ધર્મ હૈ હસસે વિપરીત નહીં । “ મૈત્ર્યાદિ-
ભાવ સંમિશ્રમ્ ” હસ પદ દ્વારા સૂત્રકાર યહ પ્રતિપાદિત કરતે હૈં કિ
વહ અનુષ્ઠાન મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા ઓર માધ્યસ્થ હન ચાર લક્ષણોં સે
યુક્ત હોતા હૈ । યે ધર્મ કે બાહ્ય ચિહ્ન હૈં । હનકે સદ્ભાવ સે આત્મા મેં

અર્થ પ્રતિપાદકતા પણ છે તે તેમની પોતાની વસ્તુ તો નથી જ કેમકે તેનાં
મૂળિયાં તો અવિરુદ્ધ અર્થના પ્રરૂપક જિનપ્રણીત આગમમાં જ છે. એ જ વાત
માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાળી વ્યક્તિમાં પણ સમજ લેવી. બોધએ. તે જે કંઈ પણ
સત્યાર્થ કહે છે તેનું મૂળ કારણ જિન પ્રણીત આગમ જ છે. શ્લોક કથિત
“યથોદિત” પદ આ વાત ને સ્પષ્ટ કરે છે કે દેશકાળ વગેરેની આરાધના
બુજબ જે આચાર-અનુષ્ઠાન-પ્રતિપાદિત કરવામાં આવ્યાં છે, તેનાથી જે અ-
વિરુદ્ધ કહેવામાં આવ્યું છે તે ધર્મ છે. એનાથી વિપરીત નહિ. “મૈત્ર્યાદિ
ભાવસંમિશ્રમ્” આ પદવડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરે છે કે તે અનુષ્ઠાન-
મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા અને માધ્યસ્થ આ ચાર લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે. આ
બધા ધર્મના બાહ્ય ચિહ્નો છે. એમના સદ્ભાવથી આત્મામાં ધર્મનું અસ્તિત્વ

વાદ્યચેષ્ટાવિશેષાઃ, તૈઃ સંમિશ્રં=સંયુક્તં, મૈત્ર્યાદિભાવાનાં નિઃશ્રેયસામ્યુદયધર્મમૂલત્વેન શાસ્ત્રાન્તરેષુ પ્રતિપાદનાત્ । તદેવંવિધમનુષ્ઠાનં ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે શબ્દતે સુધીભિરિતિ ।

નન્વેવં વચનાનુષ્ઠાનં ધર્મં ઇતિ પ્રાપ્તં, તથા ચ પ્રીતિભક્ત્યસંજ્ઞાનુષ્ઠાનેષ્વન્યાપ્તિરિતિ ચેન્ન-ઇહ તુ વચનાદિત્યત્ર વેદાત્ પ્રવૃત્તિરિત્યત્રેવ પ્રયોજ્યત્વાર્થિકા ધર્મં કા અસ્તિત્વ જાના જાતા હૈ અન્ય મિદ્ધાન્તકારોં ને મી ઇન્હે નિઃશ્રેયસ ઓર સ્વર્ગ કે કારણમૂલ ધર્મં કા મૂલ કહા હૈ । અતઃ જો આગમ સે અવિરુદ્ધ હૈ, કાલ આદિ કી આરાધના કે અનુસાર જો આરાધિત હોતા હૈ ઓર જો મૈત્રી આદિ ચાર ભાવનાઓં સે ગર્ભિત હૈ એસા અનુષ્ઠાન હી ધર્મં હૈ । એસે હી ધર્મં કી આરાધના કરને કા ગળ-ધર આદિ કા આદેશ હૈ ।

માવાર્થ-તીર્થકર કથિત આગમ કે અનુસાર હોને વાલે અનુષ્ઠાન કા નામ ધર્મં હૈ । ઇસકા ફલિતાર્થ યહી હૈ કિ જિસ અનુષ્ઠાન મેં તીર્થકર પ્રભુ દ્વારા કથિત આગમ સે વિરોધ નહીં આતા હૈ વહી ધર્મં હૈ । તથા ચ-પ્રીતિ ભક્તિ ઓર અસંગ રૂપ અનુષ્ઠાનોં મેં ઇસ લક્ષણ કી અપ્રાપ્તિ નહીં હોતી હૈ ક્યોં કિ વહાં પર મી ઇસ લક્ષણ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ “ વાચનાનુષ્ઠાનં ધર્મઃ ” ઇસ પ્રકાર કે કથન મેં “ વેદાત્ પ્રવૃત્તિઃ ” કી તરહ પ્રયોજ્ય અર્થ મેં પંચમી વિભક્તિ હુઈ હૈ અતઃ જિસ પ્રવૃત્તિ કા પ્રયોજ્ય વચન હૈ વહ ધર્મં હૈ । (વચનાનુષ્ઠાનં ધર્મઃ) યહાં સે લેકર (પ્રીતિ ભક્તિ અસંગાનુષ્ઠાન ઇત્યાદિ તક) લિખને કી આવશ્યકતા

જાણવામાં આવે છે. બીજા સિદ્ધાંતકારોએ પણ આ બધાને નિઃશ્રેયસ અને સ્વર્ગના કારણભૂત ધર્મનું મૂળ બતાવ્યું છે. એથી જે આગમથી અવિરુદ્ધ છે કાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આરાધિત હોય છે અને જે મૈત્રી વગેરે ચાર ભાવનાઓથી યુક્ત છે એવું અનુષ્ઠાન જ ધર્મ છે. એવા જ ધર્મની આરાધના કરવા માટે ગણધર વગેરેનો આદેશ છે.

ભાવાર્થઃ—તીર્થકર કથિત આગમમુજબ આચાર્યેલા અનુષ્ઠાનનું નામ ધર્મં છે. એનો અર્થ આ પ્રમાણે ક્ષિત થયો છે કે જે અનુષ્ઠાનમાં તીર્થકર પ્રભુ વડે કથિત આગમથી વિરોધ જણાતો નથી તે જ ધર્મ છે. તેમજ પ્રીતિ, ભક્તિ અને અસંગ રૂપ અનુષ્ઠાનોમાં આ લક્ષણની અપ્રાપ્તિ પણ હોતી નથી કેમકે ત્યાં પણ આ લક્ષણનો સદ્ભાવ મળે છે. “ વાચનાનુષ્ઠાનં ધર્મઃ ” આ બાતના કથનમાં “ વેદાત્ પ્રવૃત્તિઃ ” ની જેમ પ્રયોજ્ય અર્થમાં પંચમી વિભક્તિ થઈ છે. એટલા માટે જે પ્રવૃત્તિનું પ્રયોજ્ય વચન છે તે ધર્મ છે. (વચનાનુષ્ઠાનં ધર્મઃ) અહીંથી માંડીને પ્રીતિ ભક્તિ અસંગાનુષ્ઠાન વગેરે સુધી લખવાની

जननारघमांमृतवर्षणी टी० अ० ११ द्रौपदीबन्धा

३७५

पञ्चमी, तथा च-वचनप्रयोज्यप्रवृत्तिकत्वं लक्षणमिति न कुत्राप्यव्याप्तिदोषावकाशः प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानानामपि वचनप्रयोज्यत्वाऽनपायादिति ।

किं च--हिंसादिपापपरिहारो धर्मसिद्धेर्लिङ्गमित्यार्हताः स्वीकुर्वन्ति ।
तथा चोक्तम्-

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।

लिङ्गानि धर्मसिद्धेः, प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥ इति ।

पापजुगुप्सा=पापपरिहारः ।

षट्कायवधसाध्यं प्रतिमापूजनं कुर्वतां धर्मसिद्धिः कथं स्यादिति विचारयन्तु सुधियः । अपरं च--

प्रतीत नहीं होता है क्यों कि वचनानुष्ठान धर्म का अर्थ वचन के अनुसार होने वाला अनुष्ठान धर्म है इसमें कोई जातका दोष नहीं आता है । ”

किंच—हिंसादिक पांच पापों का परित्याग धर्म सिद्धि का चिह्न है इस प्रकार की मान्यता जैनियों की है । शास्त्रान्तर में यही बात प्रकट की गई है—

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।

लिङ्गानि धर्मसिद्धेः प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥ (षोडश-ग्रंथ ४ प्रकरण)

उदारता—हृदय की विषालता, दाक्षिण्य—सर्व जीवों के अनुकूल प्रवृत्ति, पापजुगुप्सा—पाप का परित्याग, निर्मलबोध—तत्त्वज्ञान, और जन प्रियत्व ये ५ धर्मसिद्धि के लक्षण हैं । अब यहां पर विचारने की बात यह है कि जब पाप का परिहार करना यह धर्मसिद्धि का लक्षण

आवश्यकता જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મને અર્થ વચન મુજબ થનાર અનુષ્ઠાન ધર્મ છે. આમાં કોઈ પણ જાતનો દોષ નથી.

કિંચ—હિંસા વગેરે પાંચ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનું ચિહ્ન છે. આ જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે. શાસ્ત્રાન્તરમાં પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે—

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।

लिङ्गानि धर्मसिद्धेः प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥ (षोडश-ग्रंथ ४ प्रकरण)

ઉદારતા—હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય—બધા જીવોને અનુકૂળ થઈ પડે તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા—પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ બોધ—તત્ત્વજ્ઞાન, અને જનપ્રિયત્વ આ પાંચે ધર્મસિદ્ધિનાં લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનું લક્ષણ

एकेन्द्रियादिषट्जीवनिकायजीवानां रक्षणं धर्मस्य मूलमिति वदतामर्हतां षट्कायविराधनासाध्यायाः प्रतिमापूजायाः अङ्गीकारे जैनत्वमेव नश्यति, जैन धर्मस्य मूलवस्तत्र समुच्छेदात् ।

तथा चोक्तम्-जीवदयसच्चवयणं, परधनपरिवज्जणं सुसीलं च ।

खंती पंचिदयनि-ग्गहो य धम्मस्स मूलाइं ॥ दर्शनशुद्धि-२ तत्त्व)

है तो प्रति मा का पूजन करने वाले के इसका परिहार कैसे हो सकता है । क्यों कि यह पहिले ही प्रकट किया जा चुका है कि यह प्रतिमा-पूजन कार्य षट् काय के आरंभ के बिना साध्य हो ही नहीं सकता । अतः प्रतिमापूजन वाले को धर्मसिद्धि का लाभ मानना यह एक मनगढ़ंत कल्पना ही है-शास्त्रीय कल्पना नहीं । शास्त्र में तो यही जिनेन्द्र देव की आज्ञा है कि एकेन्द्रिय आदि षट् निकाय के जीवों की रक्षा करना ही प्रत्येक जैन यात्र का कर्तव्य है, और यही धर्म का मूल है जब इस प्रकार की वीतराग प्रभु की आज्ञा है-तो फिर यह तो सोचो की षट् निकाय की विराधना से साध्य इस प्रतिमापूजन की मान्यता में जैनत्व का रक्षण ही कैसे हो सकता है-। प्रत्युत जैनधर्म का इस प्रकार की मान्यता में समूलतः नाश ही हो जाता है ।

जीवदयसच्चवयणं परधनपरिवज्जणं सुसीलं च ।

खંती પંચિદિય નિગ્ગહોય ધમ્મસ્સ મૂલાઈં ॥ (દર્શન શુ ૨ તત્ત્વ)

છે ત્યારે પ્રતિમાની પૂજા કરનારાઓ માટે આનો પરિહાર કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે, કેમકે આ વાત પહેલાં જ પ્રગટ કરવામાં આવી છે કે આ પ્રતિમા પૂજન કાર્ય ષટ્કાયના આરંભ વગર સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી. એથી પ્રતિમા પૂજનવાળા માટે ધર્મસિદ્ધિનો લાભ સમજી લેવો આ એક ખોટી કલ્પના માત્ર છે. શાસ્ત્રીય કલ્પના નથી. શાસ્ત્રમાં તો જિનેન્દ્રદેવની એ જ આજ્ઞા છે કે એકેન્દ્રિય વગેરે ષટ્કાયના જીવોની રક્ષા કરવી જ દરેકે દરેક જૈનનું કર્તવ્ય છે અને એ જ ધર્મનું મૂળ છે. બ્યારે આ જાતની વીતરાગ પ્રભુની આજ્ઞા છે ત્યારે આ વાત ઉપર તો વિચાર કરીએ કે ષટ્કાય નિકાયની વિરાધનાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા પૂજનની માન્યતામાં જૈનત્વનું રક્ષણ જ કેવી રીતે થઈ શકે છે. આ જાતની માન્યતાથી તો જૈન ધર્મનો મૂળરૂપે વિનાશ જ થઈ જાય છે.

जीवदयसच्चवयणं परधनपरिवज्जणं सुसीलं च ।

खंती પંચિદિયનિગ્ગહોય ધમ્મસ્સ મૂલાઈં ॥ (દર્શન શુ ૨ તત્ત્વ)

મનનારધર્મમૃતધર્મિણી ટીકા અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૧૭૭

જીવાશ્વેતનાદિલિઙ્ગવ્યક્ત્યા એકેન્દ્રિયાદયઃ તેષાં દયા=રક્ષણં જીવદયેતિ ।
 હસ્વત્વં માકૃતપ્રભવમ્ । ધર્મમૂલં ભવતીતિ સર્વત્ર ક્રિયાધ્યાહારઃ કાર્યઃ ।

પ્રતિમાપૂજનં વિશુદ્ધપરિણામજરત્વાદુપાદેયમિતિકથનં નિર્મૂલમ્--

ધર્માઙ્ગેષુ દયાયાઃ પ્રાધાન્યાત્ પ્રથમ્યં વર્તેતે । હિંસાસાધ્યાયાં પ્રતિમાપૂજાયાં
 દયાયા અભાવાદ્ ધર્માઙ્ગત્વં ન સિધ્યતિ । તથા ચ વિશુદ્ધાત્મપરિણામરૂપં ધર્મ
 પ્રતિ કારણત્વં પ્રતિમાપૂજનસ્ય ન સંભવતિ । અન્યત્ચ--

હસ લોક મેં યહી બાત કહી ગઈ હૈ । જીવોં કી દયા કરના સત્ય
 બોલના, પર ધન કે હરણ કરને કા ત્યાગ કરના, કુશીલ કા ત્યાગના,
 ક્ષમાભાવ રખના, પાંચોં દ્રવિયોં કો વશ મેં રખના યે સબ ધર્મ કે મૂલ
 હૈ । જિસ પ્રકાર વિના મૂલ-જડ કે વૃક્ષ કી સ્થિતિ આદિ નહીં હો
 સકતી હૈ-ઉસી પ્રકાર ઉનકે વિના બી ધર્મરૂપી મહાવૃક્ષ કી જીવાત્મા-
 ઓં મેં સ્થિરતા નહીં હો સકતી હૈ જો વ્યક્તિ “પ્રતિમા કે પૂજને સે
 વિશુદ્ધ પરિણામોં કી આત્મા મેં જાગૃતિ હોતી હૈ ” હસ બાત કા સમ-
 ર્થન કરતે હુએ ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતે હૈં ઉનકા યહ કથન બિલકુલ હી
 નિર્મૂલ હૈ ક્યોં કિ ધર્મ મેં સર્વપ્રથમ સ્થાન દયા કો હી દિયા ગયા હૈ
 જીવોં કી હિંસા સે સાધ્ય હસ પ્રતિમાપૂજન મેં ઉસ દયા કા સંરક્ષણ
 હી નહીં હોતા હૈ-હસલિયે હસે ધર્મ કા અંગ કૈસે માના જા સકતા હૈ
 જો ધર્મ કા હી અંગ નહીં બનતા હૈ ઉસસે કૈસે પરિણામોં મેં વિશુદ્ધતા
 કી જાગૃતિ હો સકતી હૈ અનઃ યહ પ્રતિમાપૂજન ધર્મ પ્રાપ્તિ મેં કારણ
 નહીં હૈ એસા માનના ચાહિયે ।

આ પ્રલોકમાં એ જ વાત બતાવવામાં આવી છે કે જીવ ઉપર દયા
 કરવી, સત્ય બોલવું, પારકાના ધનને લઈ લેવાની વૃત્તિને દૂર કરવી, કુશીલને
 ત્યાગ કરવો, ક્ષમાભાવ રાખવો, પાંચ ઇન્દ્રિયોને વશમાં રાખવી આ બધાં
 ધર્મનાં મૂળ છે. જેમ મૂળ-જડ વગરનાં વૃક્ષની સ્થિતિ વગેરે જ થઈ શકે
 તેમ નથી તેમજ એમના વગર પણ ધર્મરૂપી મહાવૃક્ષની જીવાત્માઓમાં સ્થિરતા
 થઈ શકે તેમ નથી. જે વ્યક્તિ “પ્રતિમાના પૂજનથી વિશુદ્ધ પરિણામોની
 આત્મામાં જાગૃતિ થાય છે.” આ વાતને યોગ્ય માનીને આની ઉપયોગિતા
 સિદ્ધ કરે છે, તેમનું આ કથન સાવ નિર્મૂળ-વ્યર્થ છે. કેમકે ધર્મમાં સૌ
 પ્રથમ સ્થાન દયાનેજ આપવામાં આવે છે. જીવોની હિંસાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા
 પૂજનમાં તે દયાની રક્ષા જ થતી નથી. એટલા માટે આને ધર્મનું અંગ કેવી
 રીતે માની શકીયે. અને જે ધર્મનું જ અંગ થઈ શકતું નથી તેનાથી કેવી રીતે
 પરિણામોમાં વિશુદ્ધતાની જાગૃતિ થઈ શકે. એટલા માટે આ પ્રતિમાપૂજન
 ધર્મપ્રાપ્તિમાં કારણ નથી આમ માની લેવું જોઈએ.

ધર્માલમ્બનાનિ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રે ભગવતા પ્રજ્ઞપ્તાનિ—

“ધર્મં ણં ચરમાણસ્સ પંચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા ।

તં જહા—છકાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીરં ” ॥ ઇતિ ।

ભગવતા ધર્માલમ્બનાનિ પચ્ચૈવ કથિતાનિ । તત્ર “છકાયા” ઇત્યુક્ત્યા ગણરાજાદીનામપિ સંગ્રહે સત્યપિ પુનસ્તેષાં ત્રિશિષ્યોપન્યાસઃ પ્રાધાન્યરૂપોપનાર્થઃ

અન્યથ—“ધર્મં ચરમાણસ્સ પંચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા—તંજહા—છકાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીરં” ઇતિ—ભગવાને ધર્મ કે છહકાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ ઓર શરીર હસ પ્રકાર યે છહ આલમ્બન સ્થાન સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર મેં કહે હેં । હનમેં જિન પ્રતિમા કા કથન નહીં કિયા હૈ—હસસે યહ ભલી ખાંતિ વિદિત હો જાતા હૈ કિ જિન પ્રતિમા ઓર હસકા પૂજન ધર્મ કા અવલમ્બન રૂપ નહીં હૈ યદિ જિન પ્રતિમા કા પૂજન કાર્ય ધર્મ કા અવલમ્બનરૂપ સિદ્ધાન્તકારોં કી દૃષ્ટિ મેં માન્ય હોતા તો હે અવશ્ય હન સ્થાનોં કે કથન કરતે—જિસ પ્રકાર છહકાય, ગણ, રાજા હત્યાદિ કા કથન કિયા હૈ । યદ્યપિ “છહકાય” હસ એક પદ સે હી ગણ, રાજા આદિ કા સ્વતઃ કથન સિદ્ધ હો જાતા હૈ, ક્યોં કી હન સબ કા સમાવેશ હસી એક પદ મેં હો જાતા હૈ । ફિર હી હનકા ભિન્ન ૨ રૂપ સે જો નામ નિર્દેશ કિયા હૈ હસકા કારણ યે ધર્મ કે પ્રધાન આલમ્બન રૂપ હેં હસ બાત કો પ્રકટ કરને કે લિયે હી કિયા ગયા હૈ । હસી પ્રકાર

અને બીજું પણ કહ્યું છે કે “ધર્મં ચરમાણસ્સ પંચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા—તં જહા—છકાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીરં” ઇતિ, ભગવાને ધર્મનાં છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલમ્બનસ્થાન સ્થાનાંગ સૂત્રમાં કહ્યાં છે. આ બધામાં જિન પ્રતિમાનું કથન કરવામાં આવ્યું નથી. એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનું પૂજન ધર્મનું અવલમ્બન નથી. જો સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમાં જિન પ્રતિમાના પૂજનનું કાર્ય ધર્મના અવલમ્બન રૂપમાં માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનું પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ, રાજા વગેરેનું કથન કર્યું છે તેમ કર્યું હોત. જો કે “છહકાય” આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનું સ્વતઃ કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમાં જ થઈ જાય છે, છતાંય આ બધાનો સ્વતઃ રૂપમાં જે નામ નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલમ્બનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામાં આવ્યો છે. આ પ્રમાણે જો જિનપ્રતિમા પણ

अनधीरधर्माभूतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीखर्चा

३७६

दर्शनवन्दनपूजनादिना जिनप्रतिमायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वाऽष्टकर्मक्षयहेतुत्व स्वीकारे तु अस्या अपि निश्रास्थानत्वेन निश्रास्थानेषु विशिष्य तदुपन्यासमकृत्वा “पंच निस्साठाणा पण्णत्ता” इति कथनं विरुध्यते । तस्मात् जिनप्रतिमाया निश्रास्थानेष्वनभिधानात् प्रतिमायां धर्मात्मनस्त्वं न सिध्यति । एवं च तत्पूजनं कुशलात्मपरिणामविशेषस्य धर्मस्य कारणं नास्तीति विश्वसनीयम् ।

प्रतिमापूजायामारम्भः परिग्रहश्चावश्यं भावी । ताभ्यां विना पूजाया असंभवात् तथाऽपि-प्रतिमापूजोपदेशकाः एवं वदन्ति--

यदि जिन प्रतिमा भी दर्शनवन्दना और पूजादिक द्वारा सम्यक्त्वशुद्धि एवं अष्टकर्मों के क्षय का कारण होती तो उसका भी धर्म का आलम्बनरूप होने से यहां पर विशेषरूप से शास्त्रकार को कथन करना चाहिये था ! परन्तु ऐसा तो सूत्रकार ने किया नहीं है । फिर भी यदि उसे धर्म का अवलम्बनरूप स्वीकार किया जाय तो इस सूत्र में प्रतिपादित ‘पांच ही निश्रास्थान हैं’ इस कथन से विरोध आता है कारण कि उन स्थानों से अतिरिक्त एक और जिनप्रतिमापूजन धर्म का आलम्बन रूप स्थान बढ़ जाता है अतः ‘पंच निस्साठाणा पण्णत्ता’ इस सूत्र प्रदर्शित उपन्यास से यह बात पुष्ट होती है कि जिन प्रतिमा धर्म का आलम्बन स्थान नहीं है । यह तो उस के पक्षपातियों के ही दिमाग की एक उटपटांग सूझ है यह जानते हुए भी कि जिनप्रतिमापूजन में आरंभ और परिग्रह अवश्यंभावी हैं, इनके बिना वह कथमपि साध्य हो नहीं सकती है, तो भी जिनपूजाके उपदेशक खेद है कि जनता को

दर्शन वन्दना અને પૂજા વગેરે વડે સમ્યક્ત્વ શુદ્ધિ અને અષ્ટ કર્મોના ક્ષયનું કારણ હોત તો ધર્મના આલંબનરૂપ હોવા બદલ અહીં વિશેષરૂપમાં શાસ્ત્રકારો વડે તેનું કથન કરવું જોઈએ. પણ સૂત્રકારે આનું કંઈ કયું નથી. છતાં જો તેને ધર્મના અવલંબનરૂપે સ્વીકારીએ તો આ સૂત્રમાં પ્રતિપાદિત “પાંચ જ નિશ્રાસ્થાનો છે” આ કથનથી વિરોધ જણે. થાય છે. કેમકે તે સ્થાનોથી અતિરિક્ત એક બીજા જિનપ્રતિમા પૂજન ધર્મના આલંબનરૂપ સ્થાનની વૃદ્ધિ થઈ જાય છે. એથી “પંચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા” આ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસથી આ વાત પુષ્ટ થાય છે કે જિનપ્રતિમા ધર્મનું આલંબન સ્થાન નથી આ તો ફક્ત તેના તરફદારીઓના મસ્તિષ્કની જ બ્યર્થની કલ્પના છે. જિનપ્રતિમા પૂજનમાં આરંભ અને પરિગ્રહ અવશ્યંભાવી છે. એના વગર તે કોઈ પણ સંજોગે સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી આનું બાણુવા છતાં બહુ દુઃખ સાથે કહેવું પડે છે કે જિન પૂજાના ઉપદેશકો સમાજને “પૂણ્ય કાય-

अपि च—“ पूयाए कायवहो, पडिकुट्टो सो उ किं तु जिणपूया ।

सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ गिरवज्जा ” ॥१॥

छाया-पूजायां कायवधः प्रतिकुष्ठः सतु किन्तु जिनपूजा ।

सम्यक्त्वबुद्धिहेतु-रिति भावनीया तु निरवधा ॥१॥

सर्वमेतदुत्सूत्रप्ररूपणम्--श्रूयतां प्रवचनं तावत्--

दો ટ્ઠાણાઈં અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિપણ્ણત્તં ધમ્મં લમેજ્જ સવણયાए ।
તં જહા-આરંભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ । દોઢાણાઈં અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલં
બોધિં બુઝ્ઝિજ્જા । તં જહા-આરંભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ ॥ (સ્થા. ૨ ટા. ૧૩.)ઈતિ

“ પૂયાए कायवहो पडिकुट्टो सो उ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउं,
त्ति भावणीया उ गिरवज्जा ॥ १ ॥ इस प्रकार की उत्सूत्र प्ररूपणा द्वारा
भ्रम में ही डालते रहते हैं। हमें तो बुद्धि पर तरस आता है कि वे क्यों
नहीं इस सिद्धान्त को समझने की चेष्टा करते हैं कि-“ दोट्टाणाईं अप-
रियाणित्ता आया णो केवलिपण्णत्तं धम्मं लमेज्ज सवणयाए । तं जहा-
आरंभे चेव परिगगहे चेव । दोट्टाणाईं अपरियाणित्ता आया णो केवल-
बोधिं बुझिज्जा तं जहा-आरंभे चेव परिगगहे चेव (स्था. २ टा. १ उ.)
ये दो धनधान्य आदि रूप परिग्रह और प्राणातिपात आदि रूप आरंभ
स्थान अनर्थ के कारण है । जब तक आत्मा ज्ञ परिज्ञा से इन्हें जान कर
और प्रत्याख्यान परिज्ञा से इनका परित्याग नहीं कर देती है तब वह
ब्रह्मदत्त की तरह केवलि द्वारा कथित धर्म के सुननेका अधिकारी नहीं
हो सकती है और न इन दोनों के त्याग किये बिना वक्र सम्यक्त्व को

वहो पडिकुट्टो सोउ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउं, त्ति भावणीया उ गिर-
वज्जा ॥ १ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા વડે ભ્રમમાં જ નાખી રાખે છે.
અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાંતને સમ-
જાવવાની કોશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે “ દો ટ્ઠાણાઈં અપરિયાણિત્તા
આયાણો કેવલિપણ્ણત્તં ધમ્મં લમેજ્જ સવણયાए । તં જહા-આરંભે ચેવ પરિગ્ગહે
ચેવ । દો ટ્ઠાણાઈં અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિબોધિં બુઝ્ઝિજ્જા તં જહા-
આરંભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ (સ્થા ૦ ૨ ટા ૦ ૧ ૩૦) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે
રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરંભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે.
જ્યાં સુધી આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે
એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યાં સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત
ધર્મને સાંભળવા માટે અધિકારી (યોગ્ય પાત્ર) ગણાઈ શકે તેમ નથી. અને
તે એમને જ્યાં સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યાં સુધી તે સમ્યક્ત્વ મેળવવા યોગ્ય

જીનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૪૮૧

‘દો ટાળાઈં’ દ્વે સ્થાને=દ્વે વસ્તુની ‘અપરિયાણિતા’ અપરિજ્ઞાય=જ્ઞપરિજ્ઞયા ‘પ્રતાવારમ્ભપરિગ્રહાવનર્થાય’ इत्यविज्ञाय अलं ममाभ्यामिति परिहाराभिमुख्य-
द्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च ब्रह्मदत्तान् तयोः प्रवृत्तः, ‘आया’
आत्मा=जीवः, नो केवल्लिङ्गत्वं=जिनोक्तं धर्मं लभेत श्रवणतया-श्रवणभावेन
श्रोतुमित्यर्थः । जैनधर्मश्रवणानर्हो भवतीति भावः । तद् यथा आरम्भः-प्राणा-
तिपातादिरूपः, पापस्थानम् परिग्रहः-धनधान्यादिसंग्रहः ।

દ્વે સ્થાને અપરિજ્ઞાય - જ્ઞપરિજ્ઞયાડનર્થકારણમજ્ઞાત્વા પ્રત્યાખ્યાનપરિજ્ઞયા
અપ્રત્યાખ્યાય ચ તત્ર પ્રવૃત્તઃ ‘આયા’ આત્મા-જીવઃ કેવલં વૉર્ધિ=અર્થાત્
સમ્યક્ત્વં ન બુધ્ધેત=ન પ્રાપ્નુયાદિત્યર્થઃ ।

પાને કે ખી યોગ્ય વન સકતી હૈ ” યહ સૂત્ર હમૈં યહ શિક્ષા દેતા હૈ કિ
ખલા જિસ પરિગ્રહ ઓર આરંભયુક્ત આત્મામેં કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મ સુનને
તક કી ખી યોગ્યતા નહીં હૈ ઓર ન જિસમેં સમ્યક્ત્વ કા અનુભવ હૈ,
હૈ વસ આત્મા મૈં “ વહ પ્રતિમા સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ કા કારણ હોતા
” હસ પ્રકાર કી માન્યતા આકાશ કે ફૂલ કે સમાન એક કલ્પના
માત્ર હી હૈ । અતઃ યહ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત હોતા હૈ કિ હસ પ્રતિમાપૂજન
મેં ન તો ધર્મ કે કોઈ મૌલિકતત્ત્વ કા સમાવેશ હૈ ઓર ન ધર્મ કા કોઈ
અંગ હી હૈ । યહ ન તો ધર્મ કા આલમ્બનરૂપ હૈ ઓર ન ધર્મ કે લક્ષણ
સે હી યુક્ત હૈ । ફિર ખી હસે ધર્મ પદ કા વાચ્ય માનના કેવલ સ્પષ્ટ
રૂપ સે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણામાત્ર હૈ હસ પ્રકાર શાસ્ત્રીયમર્યાદા કે વિરુદ્ધ હસ
પ્રતિમા પૂજન કા ઉપદેશ દેને વાલે તથા પ્રતિમાપૂજન કરાને વાલે ઉપ-

ખની શકે તેમ નથી. “ આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે
પરિગ્રહ અને આરંભયુક્ત આત્મામાં કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મ સાંભળવા સુધીની
પણ યોગ્યતા નથી અને જેમાં સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામાં
“ તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ હોય છે. ” આ જાતની માન્યતા આકા-
શના પુષ્પની જેમ એક ખોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજું શું છે ? એટલા
માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમાં ધર્મના ન કોઈ
મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનું કોઈ પણ એક અંગ છે. આ
ધર્મનું આલમ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી. છતાં ય તેને
ધર્મપદવાચ્ય માનવું તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા માત્ર છે. આ રીતે શાસ્ત્રની
મર્યાદાથી વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

યત્ર કેવલિપ્રજ્ઞધર્મસ્ય શ્રવણાયાપિ યોગ્યતા ન ભવતિ, સમ્યક્ત્વસ્ય ચ નાનુ-
ભવઃ, તત્ર સમ્યક્ત્વશુદ્ધિદેહત્વં ગગનકુસુમવન્મનોવિકલ્પમાત્રમ્ । યસ્ય પ્રતિમા-
પૂજનસ્ય નાસ્તિ ધર્મમૂલત્વં ન ચાસ્તિ ધર્માંગત્વં, નાપિ ધર્માલમ્બનત્વં, ન ચાપિ
ધર્મલક્ષણસમન્વિતં, તસ્ય ધર્મપદવાચ્યસ્વકલ્પને - સુસ્પષ્ટમેવોત્સુત્રપરૂપણમ્ ।
ભગવતાઽર્હતા-પ્રવચ્ચને અનુપદિષ્ટસ્ય પ્રતિમાપૂજનસ્યોપદેશકરણેન ખ્રાન્તિ જનયતાં
પ્રતિમાપૂજનં કારયતાં ચ કા ગતિઃ સ્યાદિતિ સમાલોચનીયં સુધીમિઃ । અપરં ચ—

દોહિં ઠાળેહિં આયા કેવલિપન્નત્તં ધમ્મં લભેજ્જા સવળયાણં તં જહા સ્વણ
ચેવ ઉવસમેણ ચેવ એવં જાવ મળપડજવનાણં ઉપ્પાડેજ્જા તં જહા—સ્વણ ચેવ ઉવ-
સમેણ ચેવ । (સ્થા ૦ ૨ ઠા ૦ ૪ ૩૦)

“સ્વણ ચેવ ” ઇતિ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય ચ કર્મણ ઉદય-
પ્રાપ્તસ્ય ક્ષયેણ, અનુદિતસ્ય ચોપશમેન=ક્ષયોપશમેનેત્યર્થઃ । અત્ર પદદ્વયેન ક્ષયોપ-
શમરૂપોઽર્થો ગૃહ્યતે । યાવત્ કરણાત્—“કેવલં બોદિં શુદ્ધેજ્જા ।”

કેવલિપ્રજ્ઞધર્મસ્ય શ્રવણં તથા સમ્યક્ત્વં ચ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય
ચ કર્મણઃ ક્ષયોપશમાદેવ લભ્યતે ઇતિ ભગવતા પ્રતિબોધિતમ્ । ઇદમત્રબોધ્યમ્
નહિ રુધિરલિપ્તવસ્ત્રસ્ય રુધિરેણ પ્રક્ષાલને શુદ્ધિર્ભવતિ પ્રત્યુત મલિનતરત્વમેવ,

દેશક તથા પ્રેરક કી વાસ્તવિક વસ્તુસ્થિતિ સે જનતા કો અંધકાર મેં
રખ્ખને કે કારણ કયા ગતિ હોગી યહ સ્વયં શુદ્ધિમાનો કો વિચાર ને
જૈસી વાત હૈ ।

અપરં ચ—દોહિં ઠાળેહિં આયાકે વલિપન્નત્તં ધમ્મં લભેજ્જા સવળ-
યાણં—તં જહા ઇત્યાદિ સૂત્ર—

इसका भावार्थ यह है—जीव केवलियों द्वारा प्रज्ञप्त धर्म का श्रवण
तथा सम्यक्त्व का लाभ ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म के क्षय
और क्षयोपशम से ही करता है प्रतिमापूजन से नहीं । जिस प्रकार
रुधिर से मैले वस्त्र की सफाई रुधिर में ही घोलने से नहीं होती, उसी

પૂજન કરાવનારા ઉપદેશકો પ્રેરકરૂપ થઇને યથાર્થ વસ્તુસ્થિતિથી સમાજને
અંધારામાં રાખે છે તે બદલ તેમની શી દશા થશે તે વિદ્વાનો સમજી શકે છે.

અને બીજું પણ કે—દોહિં ઠાળેહિં આયા કેવલિપન્નત્તં ધમ્મં લભેજ્જા
સવળયાણં—તં જહા—ઇત્યાદિ સૂત્ર—

આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે કેવલિઓ વડે પ્રજ્ઞા ધર્મનું શ્રવણ
તેમજ સમ્યક્ત્વનો લાભ જીવ જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શન મોહનીય કર્યના ક્ષય
અને ક્ષયોપશમથી કરે છે. પ્રતિમાપૂજનથી નહિ. જેમ લોહીથી ખરડાયેલા
વસ્ત્રની સાફસૂદી લોહી વડે ધોવાથી થતી નથી તેમજ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિ
અથવા તે કર્મોના વિનાશ પ્રતિમાપૂજનથી થતો નથી બલકે જેમ તે લોહીથી

મનનારવમાનુતવર્ષિણી ટીકા અં ૧૬ દ્રૌણકીલ્પા

૩૮૩

તથા-સમ્યક્ત્વશુદ્ધયર્થે કર્મક્ષયાર્થં ચ પ્રતિમાપૂજને પ્રવૃત્તસ્ય જીવસ્ય ષટ્કાયો-
પમર્દનસાધ્યપૂજયા જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય ચ કર્મણો વૃદ્ધૌ સત્યાં સમ્ય-
ક્ત્વસ્ય કેવલિ પ્રજ્ઞપ્રધર્મસ્યાઽપિ પ્રાપ્તિઃ કાલત્રયેઽપિ ન સંભવતિ કિં પુનઃ કર્મક્ષયાશા

સમ્યક્ત્વમાત્મનઃ ક્ષાયોપશમિકો ભાવઃ । પ્રતિમા તુ ન ક્ષયોપશમસ્વરૂપા, ન
ચાપિ ક્ષયોપશમદેતુઃ, જ્ઞાનાવરણીયદર્શનમોહનીયકર્મનિર્જરાજનકત્વાભાવાત્,
દેશતઃ કર્મક્ષયો હિ નિર્જરા તાં પ્રતિ તપસ એવ કારણત્વાત્ । ઉક્તં ચોત્તરાધ્યયનસૂત્રે-

પ્રકાર સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ અથવા કર્મોં કા વિનાશ પ્રતિમાપૂજનસે નહીં
હોતા હૈ, પ્રત્યુત્ત જિસ પ્રકાર વહ રુધિરયુક્ત વસ્ત્રરુધિર સે સાફ કિયે
જાને પર અધિક મલિન હો જાતા હૈ ઉસી પ્રકાર ષટ્કાય કી વિરાધના
સાધ્ય હસ પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન જીવ બી જ્ઞાનાવરણીય ઓર દર્શન-
મોહનીય કર્મ કી વૃદ્ધિ કરતા હુઆ અધિકાધિક મલિન હોતા રહતા હૈ
વહ કબી બી હનકી વૃદ્ધિમેં સમ્યક્ત્વ ઓર કેવલિ પ્રજ્ઞપ્રધર્મ કા પાને
વાલા નહીં બન સકતા હૈ । હસલિયે કર્મોં કે ક્ષય કરને કી આશા સે
પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન મનુષ્ય અપને કર્મોં કા હસ કાર્યસે ક્ષય કરતા
હૈ યહ એક દુરાશામાત્ર હૈ અરે ! જવ હસ કાર્ય સે જીવ સમ્યક્ત્વ ઓર
કેવલિપ્રજ્ઞપ્રધર્મ તક કે બી લાભ સે સદા વંચિત રહતા હૈ તો ઉસસે
ફિર કર્મ ક્ષય માનના યહ કોરી કલ્પના માત્ર હી હૈ । સમ્યક્ત્વ યહ
જીવ કા ક્ષાયોપશમિક ભાવ હૈ । પ્રતિમા ન ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ હૈ ઓર
ન ઉસ ક્ષયોપશમ મેં કારણ રૂપ હી હૈ । કારણ કિ હસ સે જ્ઞાનાવર-
ણીય ઓર દર્શનમોહનીય કર્મ કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । કર્મોં કા

ખરડાયેલું વસ્ત્ર લોહીવડે સાફ કરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ ષટ્કાયની
વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમાં તદલીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય
દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે. તે
કોઈ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમાં સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્રધર્મને મેળવી
શકનાર થઈ શકતો નથી. એટલા માટે કર્મોંને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા
પૂજનમાં તદલીન માણસ પોતાના કર્મોંને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય
કરવા માંગે છે તે ફક્ત દુરાશા માત્ર છે. જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ
અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્રધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ-
ક્ષયની આશા રાખવી તે ખોટી કલ્પના માત્ર જ છે. સમ્યક્ત્વ જીવને ક્ષયો-
પશમિક લાવે છે. હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયો-
પશમમાં કારણ રૂપે છે. કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

“भवकोडीसंचियं कम्मं तपसा निज्जरिज्जइ ।” (अ ३०, गा ६) तत्त्वार्थ-सूत्रेऽपि—

“तपसा निर्जरा च” (अ० ९ सू० ४ ।

अत्र चकारः संवरसमुच्चयार्थः । समितिगुप्तिधर्मानुपेक्षापरीषद्वज्रचारित्रैः संवरो भवति, तपसा तु निर्जरा संवरोऽपि चेति भावः सम्यक्त्वं नाम सम्यग्दर्शनं, तच्च स्थानाङ्गसूत्रम्— (स्था० २३० १) द्विविधं प्रोक्तं । निसर्गसम्यग्दर्शनम् अभिगमसम्यग्दर्शनं चेति । निसर्गतः=स्वभावतः—न परोपदेशतो यदुत्पद्यते, तन्निसर्गसम्यग्दर्शनम् । अभिगमात्—सद्गुरुरूपदेशतो यदुत्पद्यते, तदभिगम-सम्यग्दर्शनम् ।

एक देश क्षय होना निर्जरा है । इस निर्जरा के प्रति कारणता तो तप में बनलाई गई है । देखो उत्तराध्ययन सूत्र में यही बात कही है—

“ भवकोडी संचियं कम्मं तपसा निज्जरिज्जइ ” करोड़ों भवों में संचित कर्मों की जीव तप से निर्जरा कर देता है । तत्त्वार्थ सूत्र में भी “ तपसा निर्जरा च ” इस सूत्र द्वारा यही बात कही गई है—तप से निर्जरा और संवर दोनों होते हैं । सूत्रस्थ “ च ” शब्द से संवर का ग्रहण हुआ है ।

भावार्थ—इसका यही है कि पांच समिति, ३ गुप्ति, १० यतिधर्म १२, अनुपेक्षा, २२ परोषहों का जीनना एवं ५ प्रकार का चारित्र पालना—इनसे संवर होता है और तप से संवर एवं निर्जरा दोनों ही हाते हैं । स्थानाङ्गसूत्र में सम्यग्दर्शन दो प्रकार का कहा गया है—१ निसर्ग

કર્મોની નિર્જરા થઈ શકે તેમ નથી. કર્મોના એકદેશનેા ક્ષય થવો તે નિર્જરા પ્રત્યે કારણતા તો તપમાં બતાવવામાં આવી છે, બુદ્ધિા ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં એ જ વાત સ્પષ્ટ કરી છે:—

“ ભવકોડી સંચિયં કમ્મં તપસા નિજ્જરિજ્જઈ ” કરોડો ભવોમાં સંચિત કર્મોની નિર્જરા એવ તપથી કરી નાંખે છે. તત્ત્વાર્થ સૂત્રમાં પણ “ તપસા નિર્જરા ચ ” આ સૂત્રવડે એ જ વાત કહેવામાં આવી છે કે તપથી નિર્જરા તેમજ સંવર બંને થાય છે. “ સૂત્રમાં આવેલ “ ચ ” શબ્દથી સંવરનું પ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે.

ભાવાર્થ—આનો આ પ્રમાણે છે કે પાંચ સમિતિ, ૩ ગુપ્તિ, ૧૦ યતિધર્મ, ૧૨ અનુપેક્ષા, ૨૨ પરીષદોને એતવા અને ૫ પ્રકારના ચારિત્રનું પાલન કરવું આ બધાથી સંવર થાય છે. અને તપથી સંવર અને નિર્જરા બંને થાય છે. સ્થાનાંગસૂત્રમાં સમ્યગ્દર્શન બે પ્રકારનું બતાવવામાં આવ્યું

મગધાર્થમાનૃતવર્ષિની ટીકા અ૦ ૧૬ પ્રૌપવીચ્છાં

૩૮૫

કેચિત્તુ--અત્રાભિગમશબ્દાર્યો નિમિત્તમપિ, તત્ત્વ પ્રતિમાદિ इति વદન્તિ, તન્મોહનીયકર્મોદયવિલસિત્ત્વમ્ -- અભિગમસમ્યગ્દર્શને હિ પ્રતિમાનિ-મિત્તકર્ત્વં ન સંભવતિ શ્રવણાદિના ક્ષયોપશમહેતોરેવ સદ્ગુરુપદેશસ્યાત્રાભિગમન-
 ઔર દૂસરા અભિગમ । જો સમ્યગ્દર્શન જીર્ણો કો સ્વભાવ સે હી હોતા હૈ । સદ્ગુરુ કૈ ઉપદેશ સે જો જીવ કો પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ અભિગમ સમ્યગ્દર્શન હૈ । નિસર્ગ ઔર અભિગમ મેં અન્તરંગ કારણદર્શન મોહ-નીય કર્મ કા ક્ષયોપશમ આદિ સમાન હૈં પરન્તુ હસકૈ હોને પર ખી જો જીવ કો સદ્ગુરુ કૈ ઉપદેશ સે પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ અભિગમ ઔર જો હસકૈ વિના પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન હૈ કોઈ ૨ વ્યક્તિ અભિગમ શબ્દ કા અર્થ નિમિત્ત પરક ખી કરતૈ હૈં ઔર વહ નિમિત્ત “પ્રતિમા આદિ હૈં” ઈસા માનતૈ હૈં । પરન્તુ યહ ઉનકા કથન કેવલ મોહ કર્મ કા હી વિલાસ હૈ ક્યોં કિ અભિગમ સમ્યગ્દર્શન મેં પ્રતિમા રૂપ નિમિત્ત કલા સંભવિત નહીં હોતી હૈ-વહાં તો શ્રવણ આદિ સે દર્શન મોહનીય કર્મ કૈ ક્ષયોપશમ કૈ કારણરૂપ સદ્ગુણ કૈ ઉપદેશ કા હી અભિગમ શબ્દ સે ગ્રહણ હુઆ હૈ । યદિ સમ્યગ્દર્શન કી ઉત્પત્તિ મેં વહ કારણ હોતા તો ઉસ કા ગ્રહણ નિમિત્તરૂપ સે હોતા પરન્તુ ઈસા તો હોતા નહીં હૈ-કારણ કિ વહ અચેતન હૈ ઉસ સે પ્રવચન કૈ અર્થ કા ઉપદેશ હોતા નહીં હૈ । પ્રવચન કૈ અર્થ કૈ ઉપદેશ સુનેવિનાં શ્રોતા-ઓં કો પ્રવચન કા અર્થ જ્ઞાન કૈસે હો સકતા હૈ ? અર્થજ્ઞાન હુવ વિના

છે. ૧ નિસર્ગ અને ૨ અભિગમ. સદ્ગુરુના ઉપદેશથી નહિ પણ જીવને સ્વભાવથી જ જે સમ્યગ્દર્શન થાય છે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે. સદ્ગુરુના ઉપદેશથી જે જીવને સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત થાય છે તે અભિગમ સમ્યગ્દર્શન છે. નિસર્ગ અને અભિગમમાં અંતરંગ કારણ દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમ વગેરે સમાન જ છે પણ એના હોવા છતાંય જીવને જે સદ્ગુરુના ઉપદેશથી મળે છે તે અભિગમ અને જે એના વગર મળે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે. કેટલીક વ્યક્તિઓ અભિગમ શબ્દનો અર્થ નિમિત્ત પરક પણ કરે છે અને તે નિમિત્ત “પ્રતિમા વગેરે છે” એવું માને છે. પણ આવું કથન તેમના કૃત્ત મોહ કર્મના જ વિલાસ છે કેમકે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં પ્રતિમા રૂપ નિમિ-ત્તકતા સાંભવિત થઈ શકે તેમ નથી. ત્યાં તો શ્રવણ વગેરેથી દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમના કારણરૂપ સદ્ગુણના ઉપદેશનું જ અભિગમ શબ્દથી અહણ થયું છે. જે સમ્યગ્દર્શનની ઉત્પત્તિમાં તે કારણ હોત તો તેનું અહણ નિમિત્ત રૂપથી થાત પણ આવું થતું નથી કેમકે તે અચેતન છે તેનાથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ થઈ શકતો નથી, પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ સાંભળ્યા વિના

શબ્દેન ગ્રહણાત્ સમ્યક્ત્વં હિ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપં, તત્ત્વ પ્રવચનાર્થજ્ઞાનાદેવ, પ્રવ-
ચનાર્થજ્ઞાનં ચ નિર્જરામૂલકં, નિર્જરા ચ વિનયવૈયાવૃત્ત્યસ્વાધ્યાયરૂપતપોવિશે-
ષેભ્યઃ, તત્ર ચ સદ્ગુરુપદેશઃ કારણં, ન તુ પ્રતિમા । સો હિ સદ્ગુરુવત્ પ્રવચનાર્થ-
શ્રુપદેષ્ટુમસમર્થા, તસ્યા જહત્વાત્, । નાપિ સા નિર્જરાહેતુઃ, વિનયાદિતપોરૂપ-
કર્મા કી નિર્જરા નહીં હો સકતી હૈ । નિર્જરા કે અભાવ મેં દર્શન
મોહનીય કર્મ કે ક્ષય ઉપશમ આદિ રૂપ સમ્યક્ત્વ કી ઉત્પત્તિ સંભવિત
નહીં હૈ । અતઃ અભિગમ સમ્યગ્દર્શન મેં સદ્ગુરુ કા ઉપદેશ હી નિમિત્ત
માના ગયા હૈ ઓર ઉસીકા ગ્રહણ વહાં પર ઉસ શબ્દ સે હુઆ હૈ
પ્રતિમા કા નહીં-इसी का खुलाशा “सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं,
तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं - निर्जरा च
विनय वैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरुपदेशः कारणं
न तु प्रतिमा ” अर्थ इन पंक्तियों में लिखा गया है । तत्त्वार्थ का श्रद्धान
करना सम्यक्त्व है । वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है
और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी
कर्मा की निर्जरा हुए विना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय,
वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आरा
धना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा संबंध से
अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत
हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાએને પ્રવચનનું અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઈ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કર્મોની
નિર્જરા પણ થઈ શકતી નથી. નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય
ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સંભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ
સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામાં આવ્યો છે. અને
તે શબ્દથી તેનું જ શ્રદ્ધા થયું છે પ્રતિમાનું નહિ. આનું જ સ્પષ્ટીકરણ
“સમ્યક્ત્વં હિ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપં, તત્ત્વ પ્રવચનાર્થજ્ઞાનાદેવ, પ્રવચનાર્થજ્ઞાનં
નિર્જરા મૂલકં નિર્જરા ચ વિનયવૈયાવૃત્ત્યસ્વાધ્યાયરૂપતપોવિશેષેભ્યઃ, તત્ર ચ
સદ્ગુરુપદેશઃ કારણં ન તુ પ્રતિમા ” આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે
તત્ત્વાર્થનું શ્રદ્ધાન કરવું તે સમ્યક્ત્વ છે. તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનું મૂળ
કારણ નિર્જરા જ માનવામાં આવે છે. પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા
વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતું નથી. વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ
નિર્જરાના કારણ છે. તપની આરાધનામાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે. આ
રીતે પરંપરા સંબંધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત
રૂપમાં ગૃહીત થયો છે. નહિ કે પ્રતિમા, કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

બૈનગારઘમાંમૃતઘડિણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૩૮૭

ત્વાભાવાત્, કથં તદ્દિ સમ્યક્ત્વં પ્રતિમાયાઃ સંભવતિ ? કથમપિ નદિ । અત્ એવો-
પદેશસ્ય સમ્યક્ત્વં પ્રતિ કારણત્વં પ્રદર્શયન્ ભગવાનવાદીત્-ઉત્તરાધ્યયનસૂત્રે-
(અ૦ ૨૮ ગા૦ ૧૫)

“ તદ્દિયાણં તુ ભાવાણં સઘ્ભાવે ઉવણ્ણણં ।

ભાવેણં સદ્દહંતસ્સ સમ્મત્તં તં વિયાહિયં ॥ ઇતિ ।

છાયા—તથ્યાનાં તુ ભાવાનાં સઘ્ભાવ ઉપદેશનમ્ ।

ભાવેન શ્રદ્ધતઃ સમ્યક્ત્વં તદ્ વ્યાખ્યાતમ્ ॥

જીવાજીવાદિપદાર્થાનાં સઘ્ભાવે યદ્ ઉપદેશનં=ગુરોરુપદેશઃ, તદ્ ભાવેન-
અન્તઃકરણેન શ્રદ્ધતઃ મોહનીયકર્મણઃ ક્ષયેન ક્ષયોપશમેન વા યાઽભિરુચિરુપદ્યતે,
તત્ સમ્યક્ત્વં તીર્થકરૈર્વ્યાખ્યાતમ્ ।

કે અર્થ કા ઉપદેશ કરને મેં અચેતન હોને સે સર્વથા અસમર્થ હૈ કમોં
કી નિર્જરા મેં ભી વહ હેતુ રૂપ નહીં હોતી હૈ—કારણ કિ કમોં કી
નિર્જરા કે હેતુ તો વિનયાદિક તપ હી માને ગયે હૈ, પ્રતિમા વિનયાદિ
તપ સ્વરૂપ નહીં હૈ । અતઃ પ્રતિમા મેં સમ્યક્ત્વ કી ઉત્પત્તિ મેં કારણતા
કિસી ભી પ્રકાર સંભવિત નહીં હોતી હૈ—ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર મેં સદ્ગુરુ
કે ઉપદેશ કો સમ્યક્ત્વ કે પ્રતિ કારણ પ્રકટ કરતે હુએ સિદ્ધાન્તકાર
કહતે હૈ કિ—તદ્દિયાણં તુ ભાવા ણં સઘ્ભાવે ઉવણ્ણણં ।

ભાવેણં સદ્દહંતસ્સ સમ્મત્તં તં વિયાહિયં ॥ ઇતિ ॥

જીવ ઓર અજીવ આદિ પદાર્થોં કા સદ્ગુરુ ને જો યથાવસ્થિત
સ્વરૂપ પ્રકટ કિયા હૈ, ઉસકા ઉસીરૂપ સે અન્તઃ કરણ સે શ્રદ્ધાન
કરને વાલે પ્રાણી કે દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષય અથવા ક્ષયોપશમ

પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ કરવામાં અચેતન હોવા બદલ સંપૂર્ણપણે અસમર્થ
છે. કારણ કે કમોંની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ્ઞ માનવામાં આવ્યા
છે. પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામાં સમ્યક્ત્વની
ઉત્પત્તિમાં કારણતા કોઈ પણ રીતે સંભવી શકે તેમ નથી. ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં
સદ્ગુરુના ઉપદેશને સમ્યક્ત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતાં સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

તદ્દિયાણં તુ ભાવાણં સઘ્ભાવે ઉવણ્ણણં ।

ભાવેણં સદ્દહંતસ્સ સમ્મત્તં તં વિયાહિયં ॥ ઇતિ ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોંને જો યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરુએ પ્રકટ
કર્યું છે તેનું તે રૂપથી અન્તઃકરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહ-
નીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનું નામ જ

यदि प्रतिमाऽपि सम्यक्त्वलाभे निमित्तं स्यात्तर्हि भगवता स्थानाङ्गसूत्रे प्रतिमानिमित्तकत्वेन सम्यग्दर्शनस्य तृतीयभेदोऽपि वाच्यः, तस्यानुक्तत्वात् प्रतिमायाः सम्यक्त्वलाभे निमित्तत्वं नास्तीति बोध्यम् । किं च—

प्राणातिपातसाध्यायाः प्रतिमापूजायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वं वदन्तः स्व-
दुर्गतिं न पश्यन्ति मोहान्धाः, स्थानाङ्गसूत्रे हि प्राणातिपातस्य दुर्गतिहेतुत्वं
प्रदर्शितम्—

पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति । तं तहा-पाणाइवाएणं, मुसावाएणं,
अदिन्नादाणेणं, मेहुणेणं, परिग्गहेणं ” इति । (स्था. ५ ठा. १ उ.)

से जो रुचि उत्पन्न होती है उसी का नाम सम्यग्दर्शन है ऐसा तीर्थंकर प्रभुने कहा है यदि सम्यक्त्व की प्राप्ति में प्रतिमा निमित्त होती तो स्थानाङ्ग सूत्र में जो “ दोहिं ठाणेहिं आया केवलि पन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ” ऐसा कहा है वहां यदि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा भी निमित्त होती तो उसके निमित्त होने से दो स्थानों की जगह सम्यक्त्व की प्राप्ति में तीन स्थानों का कथन सूत्रकार को करना चाहिये था परन्तु वहां दो स्थानों के अतिरिक्त तृतीयस्थान का कथन हुआ नहीं है, अतः इससे यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा निमित्त नहीं है । फिर भी प्राणातिपात द्वारा साध्य प्रतिमा पूजन को मोह के आवेश से ऊंचे हुए व्यक्ति सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण बताते हुए अपनी दुर्गति का कुछ भी खयाल नहीं करते हैं यही एक बड़े आश्चर्य की बात है देखो प्राणातिपात को स्थानाङ्ग सूत्र में दुर्गति

સમ્યગ્દર્શન છે, આમ તીર્થંકર પ્રભુએ કહ્યું છે. જે સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમાં નિમિત્ત રૂપે હોત તો સ્થાનાંગ-સૂત્રમાં જે “ દોહિં ઠાણેહિં આયા કેવલિપન્નત્તં ધમ્મં લભેજ્જા સવણયાએ ” આ પ્રમાણે કહ્યું છે, ત્યાં જે સમ્યક્ત્વના લાભમાં પ્રતિમા પણ નિમિત્ત થઈ શકત તો તેને નિમિત્ત રૂપે થવા બદલ જે સ્થાનોની જગ્યાએ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમાં ત્રણ સ્થાનોનું કથન સૂત્રકારે કરવું જોઈતું હતું, પણ ત્યાં તો જે સ્થાનો સિવાય ત્રીજા સ્થાનનું કથન થયું જ નથી. એથી આ સિદ્ધાન્તની ખાત્રી થાય છે કે સમ્યક્ત્વના લાભમાં પ્રતિમા નિમિત્ત નથી. છતાંયે પ્રાણાતિપાત વડે સાધ્ય પ્રતિમા પૂજનને અજ્ઞાનની નિદ્રામાં પડેલી વ્યક્તિઓ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ બતાવતી પોતાની દુરવસ્થા તરફ સહેજ પણ જોતી નથી તે એક બહુ નવાઈ જેવી વાત છે. જુઓ પ્રાણાતિપાતને સ્થાનાંગસૂત્રમાં દુર્ગતિનું જ કારણ બતાવવામાં આવ્યું છે—(પંચહિં ઠાણેહિં

કિં ચ-યથા લોકે મુખ્યાનાં સુવર્ણમાત્રસામ્યેના શુદ્ધસુવર્ણેઽપિ પ્રવૃત્તિમવલોક્ય શુદ્ધાશુદ્ધપરીક્ષણાય વિચક્ષણૈઃ કષ્ણછેદતાપા આદ્રિયન્તે તથાઽત્રાપિ પરીક્ષણીયે શ્રુતચારિત્રલક્ષણે ધર્મે કષાદયઃ સમાદરણીયા ભવન્તિ ।

પ્રાણિવધાદીનાં પાપસ્થાનાનાં યસ્તુ શાસ્ત્રે પ્રતિષેધઃ, તથા સ્વાધ્યાયધ્યાનાદીનાં યશ્ચ તત્ર વિધિઃ સ ધર્મકષઃ । પ્રાણિવધસંપર્કવતિ પૂજને તુ ધર્મત્વબુદ્ધિર્મોહવશાદેવ ભવતિ, શાસ્ત્રે પ્રાણિવધસ્ય પ્રતિષેધાત્ । અતસ્તત્ર નાસ્તિ કષશુદ્ધિઃ ।

કા હી કારણ કહા હૈ “ પંચર્હિ ઠાળેર્હિ જીવા દુગ્ગાં ગચ્છન્તિ-તં જહા-પાળાઈવાણં, મુસાવાણં, અદિન્નાદાળેણં, મેહુળેણં, પરિગ્ગહેણં ઇતિ । (સ્થા. ૫ ઠા. ૧ ડ.) ” હન પાંચો સ્થાનોં સે જીવ દુર્ગતિ કે પાત્ર બનતે હૈં - પ્રાણાતિપાત સે, મૃષાવાદ સે, અદત્તાદાન સે મૈથુન સે ઓર પરિગ્રહ સે । કિઞ્ચ-લોક મેં જિસ મેં જિસ પ્રકાર ભોળેભાળે વ્યક્તિયોં કી સુવર્ણમાત્ર કી સમાનતા સે અશુદ્ધ સ્વર્ણ મેં બી યહ સત્ત્વા સુવર્ણ હૈં ઇસ પ્રકારકી પ્રવૃત્તિ કો દેખકર સુવર્ણપરીક્ષક જન ઉસકે સમ્યક્ત્વ ઓર અસમ્યક્ત્વ પરીક્ષાકે લિયે કષ છેદ ઓર તપ રૂપ ઉપાયોં કા અવલમ્બન કરતે હૈં ઉસી પ્રકાર પરીક્ષણીય ઇસ શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ કી પરીક્ષા કે લિયે સૂત્રકારોં ને કષાદિક પરીક્ષા કે સાધનોં કા ઉપયોગ કિયા હૈં પ્રાણિવધાદિક પાપસ્થાનોં કા શાસ્ત્ર મેં જો નિષેધ કા વિધાન હુઆ હૈં તથા સ્વાધ્યાય ઇવં અધ્યયન આદિ કા જો વહાં પર વિધાન કિયા ગયા હૈં યહી ધર્મ કા કષ હૈં પૂજન મેં યહ ધર્મ કષ નહીં હૈં કયોં કિ વહ પ્રાણિ વધ કે સંપર્ક સે દૂષિત હૈં-અતઃ ફિર બી જો ઉસમેં ધર્મ

જીવા દુગ્ગાં ગચ્છન્તિ-તં જહા-પાળાઈવાણં, મુસાવાણં, અદિન્નાદાળેણં, મેહુ-ળેણં પરિગ્ગહેણં ઇતિ) (સ્થા. ૫, ઠા. ૧ ડ.) આ પાંચે સ્થાનોથી જીવ દુર્ગ-તિને યોગ્ય ઠરે છે-પ્રાણુતિપાતથી, મૃષાવાદથી, અદત્તાદાનથી, મૈથુનથી અને પરિગ્રહથી. અને બીજું પશુ કે લોકમાં જેમ ભોળા પ્રાણુસોની સુવર્ણમાત્રની સમાનતાથી અશુદ્ધ સુવર્ણમાં પશુ ‘ આ સોનું ખરું છે, ’ આ જાતની પ્રવૃત્તિ બોધને સુવર્ણ પરીક્ષકો તેના ખરા-ખોટાની પરીક્ષા માટે કષ, છેદ અને તાપ રૂપ ઉપાયોનો આસરો લે છે તેમજ પરીક્ષણીય આ શ્રુતચરિત્ર રૂપ ધર્મની પરીક્ષા માટે સૂત્રકારોએ કષ વગેરે પરીક્ષાના સાધનોનો ઉપયોગ કર્યો છે. પ્રાણિ વધ વગેરે પાપસ્થાનોનું શાસ્ત્રમાં જે નિષેધ રૂપ વિધાન થયું છે તેમજ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરેનું જે ત્યાં વિધાન કરવામાં આવ્યું છે તે જ ધર્મની કસોટી-કષ છે. પૂજનમાં આ ધર્મ કષ નથી કેમકે તે પ્રાણિવધના સંપર્કથી દૂષિત છે. છતાંય તેમાં ધર્મત્વની શુદ્ધિ રાખવામાં આવે છે તે ક્રમ

યત્ર વિધિઃ પ્રતિષેધથેતિ દ્વયં કદાચિત્ સ્વરૂપતો વૈપરીત્યં ન યાતિ, અર્થાત્-સ્વાધ્યાયધ્યાનાદૌ નિયમતઃ પ્રવૃત્ત્યા વિધિપરિશુદ્ધિઃ, તથા હિંસાદૌ નિયમતો નિવૃત્ત્યા પ્રતિષેધપરિશુદ્ધિર્ભવતિ, સ ધર્મચ્છેદ ઉચ્યતે । પ્રતિમાપૂજાયાં તુ નાસ્તિ ચ્છેદશુદ્ધિઃ, તસ્યાઃ ષટ્કાયોપમર્દનસાધ્યત્વેન પ્રતિષેધપરિશુદ્ધયભાવાત્ ।

પ્રવચને જીવાજીવાદીનાં તત્ત્વાનાં યથાવસ્થિતસ્વરૂપનિરૂપણં મોક્ષસાધક મિત્યેવં નિશ્ચયસ્તાપશુદ્ધિઃ । યથા વહ્નૌ તાપનેન સુવર્ણસ્ય યથાવસ્થિતસ્વરૂપાવિર્ભાવઃ તથા-પ્રવચનોક્તતત્ત્વાનુસન્ધાનેન ધર્મસ્ય સ્વરૂપમાવિર્ભવતિ । અત્ર પ્રતિમાપૂજાયાં પ્રવચનોક્તસંસ્કરનિર્જરાતત્ત્વલક્ષણાનાક્રાન્તત્વાન્નાસ્તિ તાપશુદ્ધિઃ ।

ત્વકી બુદ્ધિ હોતી હૈ વહ કેવલ મોહકા હી આવેશ હૈ । પ્રાણિવધ શાસ્ત્ર સે નિષિદ્ધ હૈ । જહાં પર વિધિ ઓર પ્રતિષેધ યે દોનોં કમી બી અપને સ્વરૂપ સે વિપરીતપને કો પ્રોસ નહીં હોતે હૈં વહાં પર છેદ સે શુદ્ધિ માની જાતી હૈ જિસ પ્રકાર સ્વાધ્યાય ઓર અધ્યયન આદિ શુભ કાર્યોં મેં નિયમ સે શાસ્ત્ર મેં પ્રવૃત્તિ પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ ઓર હિંસાદિ કાર્યોં સે ઉસમેં નિયમ સે નિવૃત્તિ કહી ગઈ હૈ । પ્રતિમા પૂજન મેં યહ છેદ શુદ્ધિ નહીં હૈ । ક્યોં કિ હસમેં પ્રતિષેધ સે પરિશુદ્ધિ કા અભાવ હૈ હસ કો કારણ યહ હૈ કિ વહ ષટ્કાય કે જીવોં કે ઘાત સે સાધ્યકાર્ય હૈ । પ્રવચન મેં જીવ ઓર અજીવ આદિ તત્ત્વોં કે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ કા વર્ણન હી મોક્ષકા સાધક હૈ હસ પ્રકાર કા નિશ્ચય હી તાપ શુદ્ધિ હૈ । જિસ પ્રકાર અગ્નિ મેં તપાને સે સ્વર્ણ કા યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રકટ હોતા હૈ । ઉસી પ્રકાર પ્રવચન કથિત તત્ત્વોં કે અનુસન્ધાન સે ધર્મ કે સ્વરૂપ કા અવિર્ભાવ હોતા હૈ હસ પ્રતિમાપૂજન મેં ધર્મતત્ત્વકે અવિર્ભાવ કરને

અજ્ઞાનનો જ ઊભરો છે. પ્રાણિ વધ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ છે. જ્યાં વિધિ અને પ્રતિષેધ આ બંને કોઈ પણ વખતે પોતાના સ્વરૂપથી વિપરીતાવસ્થામાં પરિવર્તિત થતા નથી ત્યાં છેદથી શુદ્ધિ માનવામાં આવે છે જેમ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરે શુભ કાર્યોમાં નિયમથી શાસ્ત્રમાં પ્રવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે અને હિંસા વગેરે કાર્યોથી તેમાં નિયમથી નિવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે. પ્રતિમા પૂજનમાં આ છેદ શુદ્ધિ નથી કેમકે આમાં પ્રતિષેધથી પરિશુદ્ધિનો અભાવ છે. આનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે ષટ્કાયના જીવોના ઘાતથી સાધ્ય કાર્ય છે. પ્રવચનમાં જીવ અને અજીવ વગેરે તત્ત્વોના યથાવસ્થિત સ્વરૂપનું વર્ણન જ મોક્ષનું સાધક છે. આ બાતનો નિશ્ચય જ તાપ શુદ્ધિ છે. જેમ અગ્નિમાં તપાવવાથી સોનાનું યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રકટ થાય છે તેમજ પ્રવચન કથિત તત્ત્વોના અનુસન્ધાનથી ધર્મના સ્વરૂપનો અવિર્ભાવ થાય છે. આ પ્રતિમા પૂજનમાં ધર્મ

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રોપદીચર્ચા

૩૨૧

૧મિઃ કષાદિમિઃ પરિશુદ્ધસ્યૈવ ધર્મત્વં સંભવતિ તાદૃશસ્યૈવ ધર્મફલ-
જનકત્વાત્ ।

યથા-આધાકર્માદિદોષદૂષિતાહારાદિદાને ધર્મબુદ્ધ્યા ક્રિયમાણે ધર્મ-
વ્યાઘાતઃ, યથા વા ઇન્દ્રાદિપૂજાદૌ ધર્મવ્યાઘાતઃ, તથૈવ ધર્મબુદ્ધ્યા પ્રતિમાપૂજનેઽપિ
ધર્મવ્યાઘાતઃ સ્યાત્, તસ્ય જીવોપઘાતહેતુત્વાત્ ।

“ પ્રતિમાપૂજા-ધર્મવ્યાઘાતવતી, આગમોક્તન્યાયનિરાકૃતત્વાત્, અયોગ્ય-
પ્રમ્લજ્યાદાનવત્, ઇન્દ્રાદિપૂજાવદ્ વા ” ઇત્યાદ્યનુમાનેનાપિ પ્રતિમાપૂજાયાં ધર્મ-
વ્યાઘાતો ભવતીતિ વિશ્વસનીયમ્ । ઉક્તં ચ—

કી યોગ્યતા તક ખી નહીં હૈ । કારણ કિ યહ પ્રવચન કથિત સંવર
ઔર નિર્જરા તત્ત્વ કે લક્ષણ સે યુક્ત નહીં હૈ-અતઃ હસમેં તાપ શુદ્ધિ
ખી નહીં હૈ । ઇન કષાદિકોં દ્વારા પરિશુદ્ધ હુઈ વસ્તુ મેં હી ધર્મતા
આતી હૈ ઔર વહી યથાર્થ મેં ધર્મ કે ફલકા પ્રદાતા હોતા હૈ । પ્રતિમાપૂ-
જન મેં યહ વાત નહીં હૈ-અતઃ વહ ધર્મરૂપ નહીં હૈ ।

કિંચ-ધર્મબુદ્ધિ સે ઘનાયે ગયે, પરંતુ આધાકર્મ આદિદોષો સે
દૂષિત એસે આહાર કે દાન મેં તથા ઇન્દ્ર આદિકોં કા પૂજન કરને મેં જિસ
પ્રકાર ધર્મ કા વ્યાઘાત માના ગયા હૈ, ઁસી પ્રકાર ધર્મબુદ્ધિ સે કી ગઈ
પ્રતિમા કા પૂજન મેં ખી જીવોં કા ઘાત હોને સે ધર્મ કા વ્યાઘાત હોતા
હૈ । હસલિયે આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર યહ પ્રતિમાપૂજન ઉપો-
દેય કોટિ મેં નહીં આતા હૈ । ફિર ખી જો હસે કરતે હૈં-કરાતે હૈં-વે
આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત સે સર્વથા બાહ્ય હૈં-ઔર ધર્મ કા વ્યાઘાત કર-

તત્ત્વને આવિભૂત કરવા સુધીની પણ ક્ષમતા નથી, કેમકે આ પ્રવચન કથિત
સંવર અને નિર્જરા તત્ત્વનાં લક્ષણથી યુક્ત નથી. એટલા માટે આમાં તાપ
શુદ્ધિ પણ નથી. આ કષ વગેરે વડે પરિશુદ્ધ થયેલી વસ્તુમાં જ ધર્મતા આવે
છે અને તે જ સાચા સ્વરૂપમાં ધર્મના ફળને આપનાર છે. પ્રતિમા પૂજનમાં
આ વાત નથી એથી તે ધર્મ રૂપ નથી.

ધર્મબુદ્ધિથી તૈયાર કરવામાં આવેલા, પણ આધાકર્મ વગેરે દોષો વડે
દૂષિત એવા આહારના દાનમાં તેમજ ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવામાં જેમ ધર્મનો
વ્યાઘાત માનવામાં આવ્યો છે, તેમ જ ધર્મબુદ્ધિ રાખીને કરવામાં આવેલા
પ્રતિમા પૂજનમાં પણ જીવોનો ઘાત હોવાથી ધર્મનો વ્યાઘાત હોય છે. એટલા
માટે આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત મુજબ આ પ્રતિમા પૂજન ઉપાદેય કેટિમાં
આવતું નથી. છતાં યે જે આને કરે છે, કરાવે છે તેઓ આગમ કથિત સિદ્ધા-
ન્તથી સર્વથા બાહ્ય છે અને ધર્મના વ્યાઘાતક છે એથી અયોગ્યને આપેલી

“ પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ, શાસ્ત્રોક્તન્યાયવાધિતે ।

દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો, ધર્મવ્યાધાત એવ હિ ” ॥ હારિભદ્રાષ્ટકમ્

યતુ-જિનમતિમાયા દર્શનં વન્દનં ચાવશ્યકમેવ સાધૂનામિતિ વન્દનાદ્યકૃત્વા
મક્તપાનં ન કલ્પને તેપામિત્યાહુસ્તન્નિર્મૂલમ્—

અહોરાત્રકૃત્યેષુ સાધુકલ્પેષુ જિનમતિમાદર્શનાદેરનુકૃત્વાત્ । શૃણુ તાવદહોરાત્ર-
કૃત્યં સાધૂનામ્—

નેવાલે હૈં અતઃ અયોગ્ય કો દીક્ષા દાન કો તરહ અથવા ઇન્દ્રાદિક કે પૂજન કો તરહ યહ પ્રતિમાપૂજન આગમોક્ત ન્યાય સે નિરાકૃત હોને સે ધર્મ કા વ્યાધાત કરનેવાલા હૈં એમા વિશ્વાસ કરના ચાહિયે । તથા ચ અનુમાનપ્રયોગોઽયં-પ્રતિમાપૂજા ધર્મવ્યાધાતવતી આગમોક્તન્યાયનિરાકૃતત્વાત્ અયોગ્યપ્રવ્રજ્યાદાનવત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવદ્વા । ઇસ અનુમાન મેં દિયા ગયા હેતુ અસિદ્ધ નહીં હૈ-કયોં કિ “ પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ શાસ્ત્રોક્તન્યાયવાધિતે - દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો ધર્મવ્યાધાત એવ હિ ” દૃષ્ટાન્ત મેં ઇસ હેતુ કા ઇસ શ્લોક દ્વારા કથિત પ્રકાર સે સદ્ભાવ પાંચા હી જાતા હૈ ।

જો યહ કહા જાતો હૈ કિ જિનપ્રતિમા કે દર્શન વન્દન કિયે વિના સાધુઓં કો આહાર પાની કરના કલ્પનીય નહીં હૈ-અતઃ ડસકા દર્શન વન્દન કરના સાધુઓં કે લિયે આવશ્યક હૈ વહ ચિલકુલ નિર્મૂલ હૈ-કારણ કિ દિનરાત સંબંધી જિતને બી સાધુઓં કે કલ્પ હૈં ડન મેં ઇસ જ્ઞાત કા કહીં બી કથન કિયા હુઆ નહીં મિલતા હૈ-દિનરાત સંબંધી સાધુઓં કે યે કૃત્ય હૈં—

દીક્ષાની જેમ અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજાની જેમ આ પ્રતિમાપૂજન આગમ કથિત ન્યાયથી નિરાકૃત હોવા બદલ ધર્મને નાશ કરનાર છે આમ માની જ લેવું બેગએ. “ તથા ચ અનુમાનપ્રયોગોઽયં પ્રતિમાપૂજા ધર્મવ્યાધાતવતી આગમોક્તન્યાયનિરાકૃતત્વાત્ અયોગ્ય-પ્રવ્રજ્યાદાનવત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવદ્વા । આ અનુમાનમાં આપેલ હેતુ અસિદ્ધ નથી, કારણ કે-પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ શાસ્ત્રોક્તન્યાયવાધિતે -દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો ધર્મવ્યાધાત એવ હિ । દૃષ્ટાન્તમાં આ હેતુને આ શ્લોક વડે જે કથિત પ્રકાર છે તેનો સદ્ભાવ મળે છે.

જે એમ કહેવામાં આવે છે કે જીન પ્રતિમાના દર્શન કર્યા વગર સાધુઓને આહાર પાણી કરવું યોગ્ય નથી. એથી તેના દર્શન વન્દન કરવા સાધુઓના માટે આવશ્યક છે તે સાવ ખોટી વાત છે. કેમકે દિવસ અને રાત્રિને લગતા સાધુઓને માટે જેટલા કલ્પ છે તેમાં આ વાતનું કથન ક્યાંયે નથી. દિવસ અને રાત્રિના સાધુઓના આ નીચે લખ્યા મુજબ કૃત્યો છે—

ભનગારધર્મામૃતવર્ણિની ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચાં

૩૯૩

પદમે પોરિસિ સજ્ઞાયં, વીણ જ્ઞાણં જ્ઞિયાયણ ।

તદ્યાણ મિલ્લાયરિયં, ચઉત્થીણ પુણો વિ સજ્ઞાયં ॥

પદમે પોરિસિ સજ્ઞાયં, વીણ જ્ઞાણં જ્ઞિયાયણ ।

તદ્યાણ નિદ્મોક્ષં ચ, ચઉત્થીણ પુણો વિ સજ્ઞાયં ॥ इति,

(ઉત્તરાધ્યયનસૂત્રે ૨૬ અ.)

કિં ચ-સામાયિકાધ્યાવશ્યકેષ્વપિ પ્રતિમાદર્શનાદેરનુક્તત્વાદ્ જિનાજ્ઞાયા એવ
ચ ધર્મમૂલત્વાત્તસ્ય ધર્મત્વં ન સિધ્યતિ ।

યત્તુ-પુષ્પાદિસમખ્યર્ચનલક્ષણો દ્રવ્યસ્તવઃ સાધુના દેય એવ શ્રાવકેણ તુ
ઉપાદેયોઽપિ તથા ત્રાહ-ભાષ્યકાર:-

અકસિણ પવત્તગાણં, વિરયાવિરયાણ એસ સ્વલુ જુત્તો ।

સંસારપયણુકરણો દવ્વત્થણ કૂવદિટ્ઠંતો (ભાષ્યકારઃ ૪૨)

પદમે પોરિસિ સજ્ઞાયં વીણ જ્ઞાણં જ્ઞિયાયણ ।

તદ્યાણ મિલ્લાયરિયં ચઉત્થીણ પુણો વિ સજ્ઞાયં ॥

પદમે પોરિસિ સજ્ઞાયં વીણ જ્ઞાણં જ્ઞિયાયણ ।

તદ્યાણ નિદ્મોક્ષં ચ ચઉત્થીણ પુણો વિ સજ્ઞાયં ॥

(ઉત્તરા- સૂત્ર ૨૬ અ-)

અર્થસ્પષ્ટ છે । इसी प्रकार साधुओं के जो सामायिक आदि आव-
श्यक कृत्य हैं, उनमें भी प्रतिमा के दर्शन आदि करना नहीं कहा है ।
धर्म का मूल तो जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा की आराधना करने में है
इसलिये दर्शन वगैरह ये धर्म के मूल नहीं हैं । भाष्यकारने जो इस गाथा
द्वारा “ अकसिण पवत्तगाणं विरयोविरयाण एस स्वलु जुत्तो । संसार
पयणुकरणो दव्वत्थण कूवदिट्ठंतो ” (भाष्यकार ४२) यह कहा है कि

પદમે પોરિસિ સજ્ઞાયં વીણ જ્ઞાણં જ્ઞિયાયણ ।

તદ્યાણ મિલ્લાયરિયં ચઉત્થીણ પુણો વિ સજ્ઞાયં ॥

પદમે પોરિસિ સજ્ઞાયં વીણ જ્ઞાણં જ્ઞિયાયણ ।

તદ્યાણ નિદ્મોક્ષં ચ ચઉત્થીણ પુણો વિ સજ્ઞાયં ॥ (ઉત્તરાસૂત્ર-૨૬ અ.)

અર્થ સરળ છે. આ રીતે સાધુઓના જે સામાયિક વગેરે આવશ્યક
કૃત્યો છે, તેમનામાં પણ પ્રતિમાના દર્શન વગેરે કરવાની વાત કહી નથી.
ધર્મનું મૂળ તો જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાને આરાધવામાં આવે છે. માટે દર્શન
વગેરે આ બધા ધર્મનાં મૂળ નથી. ભાષ્યકારે જે આ ગાથા વડે-(અકસિણ
પવત્તગાણં વિરયાવિરયાણ એસ સ્વલુ જુત્તો । સંસારપયણુકરણો દવ્વત્થણ

અકૃત્સ્નપ્રવર્તકાનાં અકૃત્સ્નસંયમપ્રવૃત્તિમતાં વિરતાવિરતાનાં=દેશવિરતીનાં શ્રાવકાણામ્ એવ દ્રવ્યસ્તવઃ સ્વલુ યુક્ત એવ । કિંમૂતોઽયમિત્યાહ-સંસાર પ્રતનુ-કરણઃ=સંસારસયકારકઃ इत्यर्थः । નન્નુ દ્રવ્યસ્તવો હેયઃ પ્રકૃત્યેવાસુન્દરઃ સ કથં શ્રાવકાણાં યુક્તઃ ? । इत्याशङ्क्याह-कूपदृष्टान्त इति-

યથા લોકે કેઽપિ જલાભાવતરતૃષ્ણાકુલાઃ પિપાસાપનોદનાથર્થે કૂપં સ્વનન્તિ તે કૂપસ્વનકા મૃત્તિકાકર્દમાદિભિશ્ચ મલિના ભવન્તિ, પશ્ચાત્ તદુદ્ભવેન જલેન તેષાં તૃષ્ણાયાસ્તથા મૃત્કર્દમમલસ્ય ચ નાશો ભવતિ તદનન્તરમપિ તે તદન્યે ચ

શ્રવણોં કે લિયે ઉપાદેય ધી પુષ્પ આદિકોં દ્વારા ભગવાન કી પૂજા સ્વ-રૂપ દ્રવ્યસ્તવ સાધુઓં કે લિયે હેય હી હૈ । ક્યોં કિ સાધુ સર્વ આરંભ ઔર પરિગ્રહ કે સર્વથા ત્યાગી હૈં-શ્રાવક નહીં વે દેશ વિરતિ સંપન્ન હૈં । અતઃ ઉનકે લિયે દ્રવ્યસ્તવ સંસાર કા ક્ષય કારક માના ગયા હૈ કૂપ કા દૃષ્ટાન્ત દેકર ભાષ્યકાર ને હસ શંકા કા પરિહાર ક્રિયા હૈ કિ જિસ પ્રકાર જલ કે અભાવ સે પિપાસા કો દૂર કરને કે લિયે કોઈ ૨ મનુષ્ય કૂપ કો સ્વોદતે હૈં ઔર ઉસે સ્વોદતે સમય મિટ્ટી ઔર કીચડ સે મલિન ધી હો જાતે હૈં પરન્તુ પશ્ચાત્ ઉસ કૂપ મેં નિકલે હુણ જલ સે વે ઉસ કીચડ ઔર લગી હુઈ મિટ્ટી કો સાફ કર દેતે હૈં ઔર સમય ૨ પર અપની પિપાસા કી ધી શાંતિ કરતે રહતે હૈં । દૂસરે ઔર ધી લોક ઉસસે લોભ ઉઠાતે હૈં । હિસ પ્રકાર ઉસ જલયુક્ત કુપ્પં સે સ્વોદને વાલે વ્યક્તિયોં કો તથા ઔર ધી અન્યજનોં કો સમય ૨ પર અનેક પ્રકાર સે લાભ હોતા રહતા હૈ । ઠીક હિસી તરહ હિસ દ્રવ્યસ્તવ મેં જો કિ સંયમ

કૂવદિદ્વંતો ।) (ભાષ્યકાર ૪૨) આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે શ્રાવકોને માટે ઉપા-દેય હોવા છતાં પુષ્પ વગેરે વડે લગવાનની પૂજા સ્વરૂપ દ્રવ્યસ્તવ સાધુઓના માટે તો ત્યાગ્ય જ છે, કેમકે સાધુ સર્વ આરંભ અને પરિગ્રહના સંપૂર્ણપણે ત્યાગી હોય છે. શ્રાવક નથી, તેઓ દેશ વિરતિ સંપન્ન છે. એટલા માટે તેમને સામે સાંખીને વિચાર કરીએ તો દ્રવ્યસ્તવ સંસારને ક્ષય કરનાર માનવામાં આવ્યો છે. કૂપનું દૃષ્ટાંત આપીને ભાષ્યકારે આ શંકાને દૂર કરી છે કે જેમ પાણીના અભાવને લીધે પીડાઈને તરસ મટાડવા માટે કેટલાંક માણસો વાવ ખોદે છે અને તે વખતે તેઓ માટી અને કાઠવથી ખરડાઈ જાય છે પણ ત્યાર પછી વાવમાંથી નીકળતા પાણીથી જ તેઓ કીચડ તેમજ શરીરે ચોટેલી માટીને સાફ કરી નાખે છે અને વખતો વખત ચોતાની તરસ પણ મટાડે છે. બીજા પણ કેટલાક લોકો તેનાથી લાભ મેળવે છે. આ રીતે તે પાણી ભરેલી વાવથી

લોકા જલેન સુખિનો ભવન્તિ एवं द्रव्यस्तवे यद्यप्यसंयमो भवति तथापि तत् एव सा परिणामशुद्धिर्भवति, या तद् असंयमोपार्जितमन्यच्च निरवशेषं क्षपयति इति ।

“ तस्माद्विरताविरतैः श्रावकैरेव द्रव्यस्तवः कर्तव्यः ।

शुभानुबन्धी प्रभूतनिर्जराफल इति कृत्वा ” इत्यુक्तम्—

તદસત્—અત્ર હિ કૂપદૃષ્ટાન્તો ન સંઘટતે કૂપસ્વનનેન જલમુત્પદ્યતે इति सकल लोकपत्यक्षं, किन्तु पदकायवधं कुर्वतः कारयतश्च धर्ममूलभूताया दयाया एव

की रक्षा नहीं होती है, तो भी यह कर्त्ता को परिणामों में शुद्धि का हेतु होता है। इससे कर्त्ता उस द्रव्यस्तव के करने में उद्भूत असंयम द्वारा उपार्जित पापों का सम्पूर्णरूप से विनाश कर देता है। इसलिये विरताविरत (एकदेश संयम की आराधना करनेवाले पंचमगुणस्थान-वर्ती श्रावकों द्वारा यह द्रव्यस्तव कर्त्तव्य कोटि में आने से उपादेय है। कारण कि यह उनके लिये शुभानुबन्धी और कर्मों की अधिक निर्जरा-रूप फल का प्रदाता होता है ” यह सब भाष्यकार का कथन ठीक नहीं है। कारण कि उन्होंने ने जो कूप का दृष्टान्त देकर इस विषय की पुष्टि करनी चाहिये, उससे प्रकृत विषय की वास्तविक पुष्टि नहीं होती है। यह तो प्रत्येक लौकिक जन के प्रत्यक्ष अनुभव में आने जैसी बात है कि कूप के खोदने से जल निकलता है इस में तो विवाद की कोई जरूरत ही नहीं है, किन्तु प्रतिमा की पूजा करने और करानेवालों से षट्-

ખોદનાર લોકોને તેમજ બીજા પણ ઘણા માણસોને વખતો વખત ઘણી રીતે લાભ થતા રહે છે. ઠીક આ પ્રમાણે જ દ્રવ્યસ્તવમાં જે કે સંયમની રક્ષા થતી નથી, છતાંય તે કર્તાના માટે પરિણામમાં શુદ્ધિનું કારણ હોય છે. તેનાથી કર્તા તે દ્રવ્યસ્તવના કરવામાં ઉદ્ભૂત અસંયમ વડે મેળવેલા પાપોનો સંપૂર્ણ પણે વિનાશ કરી નાખે છે. એથી વિરતાવિરત (એકદેશ સંયમની આરાધના કરનાર પંચમ ગુણસ્થાનવર્તી) શ્રાવકો વડે આ દ્રવ્યસ્તવ કર્તવ્ય કોટિમાં આવવાથી ઉપાદેય છે. કારણ કે તે તેમના માટે શુભાનુબંધી અને કર્મોની વધારે નિર્જરા ફળને આપનાર છે. ભાષ્યકારનું આ બધું કથન યોગ્ય નથી, કારણ કે તેઓએ જે વાવનું દૃષ્ટાંત આપીને આ વિષયની પુષ્ટિ કરવા પ્રયત્ન કર્યો છે, તેનાથી પ્રકૃત વિષયની વાસ્તવિક રૂપમાં પુષ્ટિ થતી જોવામાં આવતી નથી. દરેકે દરેક માણસના માટે આ તો એક પ્રત્યક્ષ અનુભવ કરી શકાય તેવી હકીકત છે કે વાવ ખોદવાથી પાણી નીકળે છે, આમાં તો ચર્ચાની કોઈ વાત જ બીજી થતી નથી. પણ પ્રતિમાની પૂજા કરનાર અને કરાવનારાઓથી

કાચ કે જીવો કી રક્ષા નહીં હો સકતી હૈ-અનસે અનકી વિરાધના હોતી હૈ । ઁસી પરિસ્થિતિ મેં ધર્મ કે મૂલભૂત સિદ્ધાન્ત કા હી જથ વહાં અભાવ હૈ તથ અસ પૂજન કાર્ય કે અનકે પરિણામોં મેં શુદ્ધિ માનના યહ કથન શાસ્ત્ર સે વિરુદ્ધ ઔર પ્રત્યક્ષ આદિ સમસ્ત પ્રમાણોં સે બાધિત હોતા હુઆ કિસી ઔ સમદ્વદાર વ્યક્તિ કો માન્ય નહીં હો સકતા હૈ પ્રતિમા પૂજનકે પક્ષપાતી જો હસ પ્રકાર અપને પક્ષમેં તર્ક કરતે હૈં કિ-

સમ્યક્ સ્નાત્વોચિતે કાલે સંસ્નાપ્ય ચ જિનાન્ ક્રમાત્ ।

પુષ્પાહારસ્તુતિભિશ્ચ પૂજયેદિતિ તદ્વિધિઃ ॥

તથા-જિનપ્રભસૂરિકૃતપૂજાવિધૌ-સરસસુરહિચંદણેણં..... અંગેસુ પૂઅં કાઝગ પંચગકુસુમેહિં ગંધવાસેહિં ચ પૂષ્પ સદ્ગર્ભેઃ સુગંધિભિઃ સરસૈરભૂપતિતૈર્વિકાશિભિરસહિતદલૈઃ પ્રત્યગ્રૈશ્ચ પ્રકીર્ણૈર્નાનાપ્રકારગ્રથિતૈર્વા પુષ્પૈઃ પૂજયેત્ ” ઇતિ-તથા-કુસુમક્ષયગંધપર્ફવધૂયનેવેજ્જફલજલેહિં પુણો અદ્ભુવિહકમ્મદલની અદ્ભુવયારા હવહ પૂષ્પા ” ઇતિ કિશ્ચ-

જિનભવનં જિનવિમ્બં જિનપૂજાં જિનમતં ચ યઃ કુર્યાત્ ।

તસ્ય નરામરશિવસુખફલાનિ કરપલ્લવસ્થાનિ ॥

પદ્કાચ જીવોની રક્ષા થઈ શકતી નથી, તે કાર્યથી તો તેમની વિરાધના જ હોય છે. આવી પરિસ્થિતિમાં ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તોનો જ બચારે અભાવ છે ત્યારે તે પૂજા રૂપ કાર્યથી તેમના પરિણામોમાં શુદ્ધિ માનવી આ વાત શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ અને પ્રત્યક્ષ વગેરે બીજા બધા પ્રમાણોથી બાધિત થતી કોઈ પણ સમગ્ર માણસના માટે તો માન્ય થઈ શકે તેમ નથી. પ્રતિમા પૂજનની તરફદારી કરનારાઓ પોતાની વાતને પુષ્ટ કરવા માટે જે આ બાતની ખોટી દલીલો સામે મૂકે છે કે-

સમ્યક્ સ્નાત્વોચિતે કાલે સંસ્નાપ્ય ચ જિનાન્ ક્રમાત્ ।

પુષ્પાહારસ્તુતિભિશ્ચ પૂજયેદિતિ તદ્વિધિઃ ॥

તથા-જિનપ્રભસૂરિકૃતપૂજાવિધૌ-સરસ-સુરહિચંદણેણં અંગેસુ પૂઅં કાઝગ પંચગકુસુમેહિં ગંધવાસેહિં ચ પૂષ્પ સદ્ગર્ભેઃ સુગંધિભિઃ સરસૈરભૂપતિતૈર્વિકાશિભિરસહિત-દલૈઃ પ્રત્યગ્રૈશ્ચ પ્રકીર્ણૈર્નાનાપ્રકારગ્રથિતૈર્વા પુષ્પૈઃ પૂજયેત્ । ઇતિ તથા કુસુ-મક્ષયગંધપર્ફવધૂયનેવેજ્જફલજલેહિં પુણો અદ્ભુવિહકમ્મદલની અદ્ભુવયારા હવહ પૂષ્પા ” ઇતિ કિશ્ચ-

જિનભવનં જિનવિમ્બં જિનપૂજાં જિનમતં ચ યઃ કુર્યાત્ ।

તસ્ય નરામરશિવસુખફલાનિ કરપલ્લવસ્થાનિ ॥

અનનારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૩૧૭

સમુચ્છેદાત્ પરિણામશુદ્ધિરત્પદ્યત્ત્વમ્ ઇતિ પ્રવચનવિરુદ્ધં કલ્પનં સર્વપ્રમાણવાધિતં કસ્યાનુમતં ભવેત્ । અપિ તુ ન કસ્યાપિ ।

(આચારાઙ્ગસૂત્રે ભગવતાઽભિહિતમ્ (અ. ૧ ડ. ૧)

“ હમસ્સ ચેવ જીવિયસ્સ પરિવંદણમાણણપૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપ-
રિધાયહેઠં સે સયમેવ પુઢવિસત્થં સમારંભઇ, અણ્ણેહિં વા પુઢવિસત્થં સમારંભાવેઠ,

ભાવાર્થ—પૂજક ઉચિત સમય મેં અચ્છી તરહ સ્નાન કરકે જિનેન્દ્ર
કા અભિષેક કર પુષ્પ આદિકોં સે ઉન કી પૂજા કરે । જિનપ્રભસૂરિ દ્વારા
વિરચિત પૂજાવિધિ મેં મી પૂજા કે વિષય મેં યહી વિધિ પ્રદર્શિત કી
ગઈ હૈ સરસ સુગંધિત ચંદન સે ભગવાન કે નવ અંગો મેં તિલકરૂપ
પૂજન કર પૂજક સુગંધિત, જમીન પર નહીં ગિરે હુણ, પત્ર વિનાકે તાજે
પંચ જાતિ તે પુષ્પોં દ્વારા પ્રભુ કી પૂજા કરે । પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ,
ધૂપ, નૈવેદ્ય ફલ ઓર જલ હન આઠ દ્રવ્યોં સે આઠ કર્મોં કો નાશ કર-
નેવાલી અષ્ટપ્રકારી પૂજા હોતી હૈ । જિનમંદિર, જિનપ્રતિમા જિનપૂજા
ઓર જિનમત કો જો કરતા હૈ, ઉસ મનુષ્ય કે હાથ મેં મનુષ્યગતિ દેવ-
ગતિ ઓર મોક્ષ કે સુખ આ જાતે હૈ—અર્થાત્ વહ મનુષ્ય હન ગતિયોં
કે સર્વોત્તમ સુખ ભોગ કર મોક્ષસુખ કા ભોક્તા બન જાતા હૈ—સો હસ
પ્રકાર કા યહ પૂજન વિષયક સમસ્ત કથન પ્રવચન સિદ્ધ હી હૈ કયોંકી
આચારાંગસૂત્ર મેં ભગવાન ને “હમસ્સ ચેવ જીવિયસ્સ પરિવંદણ માણણ-
પૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપરિધાયહેઠં” સે સયમેવ પુઢવિસ-

ભાવાર્થ—પૂજા કરનાર યોગ્ય સમયે સારી રીતે સ્નાન કરીને જિનેન્દ્રનો
અભિષેક કરે તેમજ પુષ્પ વગેરેથી તેમની પૂજા કરે. જિનપ્રભાસૂરિ વડે વિર-
ચિત પૂજાવિધિમાં પણ પૂજના વિષયમાં આ વિધિ જ બતાવવામાં આવી છે.
સરસ સુગંધિત ચંદનથી ભગવાનનાં નવ અંગોમાં તિલક રૂપ પૂજન કરી પૂજા
કરનાર સુવાસયુક્ત, જમીન ઉપર પડેલાં નહિ, પત્ર વગરનાં તાજાં, પાંચ જાતિનાં
પુષ્પોથી પ્રભુની પૂજા કરે. પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ, ધૂપ, નૈવેદ્ય, ફળ અને
પાણી આ આઠ દ્રવ્યોથી આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અષ્ટ પ્રકારની પૂજા હોય
છે. જિન મંદિર, જિન પ્રતિમા, જિન પૂજા અને જિન મતને જે કરે છે, તે
માણસની પાસે મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ અને મોક્ષનાં સુખો આવી જાય છે.
એટલે કે તે માણસ આ ગતિઓનાં સર્વોત્તમ સુખો ભોગવીને મોક્ષ સુખને
ભોગવનાર બની જાય છે, માટે આ જાતનું આ પૂજનને લગતું બધું કથન
પ્રવચન સિદ્ધ જ છે, કેમકે આચારાંગ સૂત્રમાં ભગવાને—(હમસ્સ ચેવ જીવિ-
યસ્સ પરિવંદણં માણણપૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપરિધાયહેઠં સે

અળે વા પુઢવિસત્થં સમારંભંતે સમણુજાણહ । તં સે અહિયાણ તં સે અબોહીણ ।”ઈતિ જીવઃ કસ્મૈ પ્રયોજનાય પૃથિવીકાયસ્ય સમારમ્મં કરોતીત્યાહ—“ઈમસ્સ ચેવ ” ઇત્યાદિ । અસ્યૈવ=ક્ષણભંજુરસ્ય, “જીવિયસ્સ” જીવનસ્ય-જીવનસ્યાર્થે, તથા-પરિવન્દનમાનનપૂજનાય=પરિવન્દન-પ્રશંસા, તદર્થે યથાSSશ્ર્વ્યગૃહાદિકરણે, માનનં=સત્કારઃ તદર્થે, યથા-કીર્તિસ્તમ્માદિકરણે, પૂજનં=સ્વપૂજનં પ્રતિમાપૂજનં ચ, તત્ર સ્વપૂજનં-વસ્ત્રરત્નાદિપુરસ્કારલાભસ્તદર્થે, તથા-પ્રતિમાપૂજનાર્થં ચ પ્રતિમાદિરચને તથા-જાતિમરણમોચનાય, તથા દુઃસ્વપ્રતિઘાતહેતું-દુઃસ્વવિધ્વંસાર્થં ।

ત્થં સમારંભહ, અળેહિં વા પુઢવિસત્થં સમારંભાવેહ, અળે વા પુઢવિસત્થં સમારંભંતે સમણુજાણહ । તં સે અહિયાણ તં સે અબોહીણ ” ઇતિ-ઈસ સૂત્ર મેં “જીવ કિસ પ્રયોજન કે લિયે પૃથિવીકાય કા સમારંભ કરતા હૈ ” ઇસ પ્રશ્ન કો ઉત્તર દેતે હુણ યહ કહા હૈ કિ યહ જીવ ઇસ ક્ષણભંજુર જીવન કે લિયે પરિવન્દન-પ્રશંસા કે લિયે-આશ્ચર્યોત્પાદક ગૃહ આદિ બનવા ન દે માન-સત્કાર કે લિયે કીર્તિસ્તંભ આદિ કરાને મેં, અપની પ્રતિષ્ઠા કે લિયે વસ્ત્ર રત્નકમ્બલ આદિ પુરસ્કાર મેં તથા પ્રતિમાપૂજન કે લિયે પ્રતિમાદિ બનવાને મેં તથા જાતિ-પરલોક મેં સુખ-કે લિયે દેવમન્દિર આદિકે બનવાનેમેં, મરણ-જિનકી સ્મૃત્યુ હો ચુકી હૈ એસે અપને પિતા આદિ કી સ્મૃતિ કે લિયે સ્તૂપ આદિ કી રચના કરાને ને મેં, મોચન-મુક્તિ પ્રાપ્તિ કે લિયે દેવ પ્રતિમા આદિ બનવાનેમેં અથવા અનેક પ્રકારકે દુઃસ્વોંકે વિનાશકે લિયે વર્તમાનકાલમેં સ્વયં બી પૃથિવી

સમમેવ પુઢવિસત્થં સમારંભહ, અળેહિં વા પુઢવિસત્થં સમારંભાવેહ, અળેવા પુઢવિસત્થં સમારંભંતે સમણુજાણહ તં સે અહિયાણ તં સે અબોહીણ) ઇતિ—“જીવ શા માટે પૃથિવીકાયનો સમારંભ કરે છે ” એ સવાલનો જવાબ આપતાં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે કે આ જીવ આ ક્ષણભંજુર જીવન માટે પરિવંદન-પ્રશંસા માટે આશ્ચર્યોત્પાદક ઘર વગેરે બનાવવામાં, માન-સત્કાર માટે કીર્તિસ્તંભો વગેરે તૈયાર કરાવવામાં, પોતાની પ્રતિષ્ઠા માટે વસ્ત્ર, રત્ન, કામળ વગેરે રૂપ પુરસ્કાર તેમજ પ્રતિમા પૂજન માટે પ્રતિમા વગેરે બનાવવામાં જાતિ પરલોકમાં સુખ પ્રાપ્તિ થાય તેના માટે દેવ-મંદિરો વગેરે તૈયાર કરાવવામાં, મરણ-જેઓ મરણ પામ્યા છે તેવા પોતાના પિતા વગેરેની યાદમાં સ્તૂપ, સમાધિ વગેરે બનાવવામાં, મોચન-મુક્તિ મેળવવા માટે દેવ-પ્રતિમા વગેરે બનાવવામાં અથવા તો ઘણી જાતનાં દુઃખોના વિનાશ માટે વર્તમાન કાળમાં પોતે યજ્ઞ પૃથિવીકાયના વિનાશ સ્વરૂપ દ્રવ્યભાષ શસ્ત્રનો વ્યાપાર

अमरारधमांमृतवर्णिनी टी० अ० १६ द्रौपदीचर्चा

३९९

सः जीवनपरिवन्दनमाननपूजनाद्यर्थं जनः स्वयमेव पृथिवीशस्त्रं समारभते = पृथिव्युपमर्दकं द्रव्यभावशस्त्रं व्यापारयति । अन्यैर्वा पृथिवीशस्त्रं समारम्भयति = उद्योजयति । पृथिवीशस्त्रं समारभमाणान् अन्यान् समनुजानाति अनुमोदयति । एवमतीतानाम्गताभ्यां, तथा मनोवाक्यैश्च पृथिवीशस्त्रसमारम्भभेदा अवगन्तव्याः । पृथिवीशस्त्रं समारभमाणः किं फलं प्राप्नोतीत्याह—“ तं से अहियाए ” इत्यादि । “ तं ” तत् = पृथिवीकायसमारम्भणं, “ से ” तस्य = पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य “ अहियाए ” अहिताय = अकल्याणाय भवतीति शेषः । “ तं ” तत् = तदेव च पृथिवीकायसमारम्भणमेव च “ से ” तस्य पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य “ अवो-दीए ” अवोधये सम्यक्त्वालाभाय जिनधर्मप्राप्त्यभावाय च भवति ।

पृथिवीकायसमारम्भणं हि-कृतकारितानुमोदितभेदेन त्रिविधम्, तस्यातीत-काय के विनाशस्वरूप द्रव्य भाव शस्त्रका व्यापार करता है, दूसरों से कराता है और इस शस्त्र का प्रयोग करने वाले प्राणियोंकी अनुमोदना करता है इसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में मनवचन और काय से (त्रियोग और त्रिकरणके संबंधसे) यह जीव पृथिवी कायका समारम्भ करने वाला हुआ है और होगा । अतः जिस प्रकार वर्तमान में त्रियोग और त्रिकरण के संबंध से इस पृथिवी काय समारंभ के भेद होते हैं उसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में भी उनके संबंध इसके भेद जानलेना चाहिये । यह पृथिवी काय का समारंभरूप शस्त्रका प्रयोग प्रयोक्ता जीवको कभी भी कल्याण एवं सम्यक्त्व के लाभ जिनधर्म की प्राप्ति की प्राप्ति कराने वाला नहीं होता है ।

भावार्थ—पृथिवीकाय का समारम्भ कृत, कारित और अनुमोदना

(कार्य) करे छे, जीवज्यो पास करवे छे अने आ शस्त्रने प्रयोग करनार प्राणीज्योनी अनुमोदना करे छे. आ प्रमाणे भूत अने भविष्यकालमां मन, वचन अने कायथी (त्रियोग अने त्रिकरणना संबंधथी) आ एव पृथिव. कायने समारंभ करनार थये छे अने थये. ओटला माटे जेम वर्तमानकालमां त्रियोग अने त्रिकरणना संबंधथी आ पृथिविकाय समारंभना लेह (प्रकार) होय छे तेमज भूत अने भविष्यत कालमां पण तेमना संबंध तेमज लेह जखी लेवा जेछये. आ पृथिविकायना समारंभ इय शस्त्रने प्रयोग प्रयोक्ता एवना माटे कदापि कल्याण सम्यक्त्वने लाभ तेमज एन धर्मनी प्राप्ति करावनार थो नथी.

भावार्थ—पृथिवीकायने समारंभ कृत, कारित अने अनुमोदनाना लेहथी त्रय प्रकारने छे. अतीत अने अनागत कालना लेहोथी तेना जीव त्रय त्रय

વર્તમાનાનાગતભેદેન પ્રત્યેકં ત્રૈવિધ્યે નવધા ભવતિ । નવવિધસ્યાપિ પૃથિવીકાય-
સમારંભણસ્ય મનોવાકાયયોગભેદેન પ્રત્યેકં ત્રૈવિધ્યે સપ્તવિંશતિર્ભેદા ભવન્તિ । एवं
વિધપૃથિવીકાયસમારંભપ્રવૃત્તઃ સ્વલુ ષટ્કાયારંભસંપાતજન્યઘોરતરદુરિતાર્જનેન
દુરન્તસંસારદાવાનલજ્વાલાન્તઃપાતં પ્રાપ્યાનન્તરકનિગોદાદિદુઃસ્વમનુભવન્ ન
કદાચિત્ કલ્યાણં શાશ્વતસુખપદં મોક્ષમાર્ગં પ્રાપ્નોતીતિભાવઃ ॥

મગવતા પૃથિવીકાયસમારંભણવદપ્કાયાદિસમારંભણમપ્યહિતાયાવોધયે
ચ ભવતીત્યપિ તત્રૈવ પ્રરૂપિતમ્ । યત્રૈકસ્ય પૃથિવીકાયસ્ય સમારંભણે સમ્યક્ત્વ-
કે ભેદ સે ત્રીન પ્રકાર કા હૈ-હસકે અતીત ઓર અનાગત કાલ કે ભેદ
સે ત્રીન ૩ પ્રકાર કા ઓર હો જાતે હૈં હસ પ્રકાર યહ ત્રીનો કાલોં કી
અવેક્ષા સે ૯ પ્રકાર કા હૈ । હન નવ પ્રકારોં કે સોથ-મન વચન ઓર
કાય હન ત્રીનોં કા ગુણા કરને સે યહ ૨૭ પ્રકાર કા માના ગયો હૈ હસ
પ્રકાર ત્રિકરણ ઓર ત્રિયોગ કે સંબંધ સે ૨૭ પ્રકાર કે હસ પૃથિવીકાય
કે સમારંભ મેં પ્રવૃત્ત જીવ ષટ્કાય કે આરંભ કે સંપાત જન્ય ઘોરતર
પાપોં કે અર્જન સે દુરન્ત સંસાર રૂપી દાવાનલ કી જ્વાલા કે મધ્ય મેં
નિમગ્ન બન અન્ત મેં અનન્ત નરક નિગોદાદિકોં કે દુઃખો કા અનુભવ
કરતા હુમા કમી મી નિજ કલ્યાણ કા મોક્ષા એવં શાશ્વત સુખ કો
પ્રદાન કરને વાલે મોક્ષ કે માર્ગ કા પથિક નહીં બન સકતા હૈ પૃથિવી-
કાય કે સમારંભ કી તરહ અપ્કાય આદિ કા સમારંભ મી હસ
જીવાત્મા કો સદો અહિતકારી ઓર અવોધ કા દાતા હૈ યહ બાત મી
વહાં પર (આચારાંગ સૂત્ર મેં) મગવાન ને કહી હૈ અવ વિચારિણ-જબ

લેદો થઈ જાય છે. આ રીતે આ ત્રણે કાળોની અવેક્ષાએ નવ પ્રકારનો છે.
આ નવ પ્રકારોની સાથે મન, વચન અને કાય અને ત્રણેનો ગુણકાર કરવાથી
આ ૨૭ પ્રકારનો માનવામાં આવ્યો છે. આ પ્રમાણે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગના
સંબંધથી ૨૭ પ્રકારના આ પૃથિવિકાયના સમારંભમાં પ્રવૃત્ત જીવ ષટ્કાયના
આરંભના સંપાત જન્મ ઘોરતર (ભયંકર) પાપોને કારણે દુરંત સંસાર રૂપી
દાવાનલના અગ્નિમાં પડીને છેવટે અનંત નરક નિગોદ વગેરે દુઃખોને અનુ-
ભવતા કદાપિ પોતાના કલ્યાણને લોકતા થઈને અને શાશ્વત-સુખને આપનાર
મોક્ષ માર્ગનો પથિક (વટેમાર્ગ) બની શકતો નથી. પૃથિવિકાયના સમારંભની
જેમ અપૂકાય વગેરેનો સમારંભ પણ આ જીવાત્મા માટે હિંમેશાં અહિતકારી
અને અમોઘ (અજ્ઞાન) આપનારો છે. આ વાત પણ આચારાંગ સૂત્રમાં
ભગવાને કહી છે. હવે આટલું તો આપણે પણ સમજી શકીએ છીએ કે જ્યારે
જીવના માટે ફક્ત પૃથિવિકાયનો સમારંભ જ જ્યારે અહિત કરનાર અને મોક્ષના

મનનારથમાનુસૂતવર્ણી ટી૦ અ૦ ૧૬ ત્રૌપદીચર્ચા

૫૦૧

મલમ્બ્યં, કિં પુનસ્તત્ર પટ્કાયસમારમ્ભો સ્વર્ગાપવર્ગલાભસ્ય સંભવઃ । પરિવન્દન-
માનનપૂજનાર્થ જાતિમરણમોચનાર્થ દુઃસ્વપ્રતિઘાતાર્થ ચ યે જીવાઃ પૃથિવીકાયાદિ-
સમારમ્ભં કુર્વન્તિ, તે તત્ફલં વિપરીતમેવ લભન્તે યતોઽસૌ સમારમ્ભઃ અવોધિમહિતં
ચોત્પાદયતીત્યુક્તં ભગવતા । પરંતુ તત્ર પ્રતિમાપૂજકાઃ શાસ્ત્રવિરુદ્ધમેવં કથયન્તિ-
પ્રતિમાપૂજાયાં સ્વાભ્યુદયમોક્ષાર્થ ક્રિયમાણઃ પટ્કાયસમારમ્ભઃ સ્વલુ અવોધિમ-
જીવ કે લિયે યહ અકેલા પૃથિવીકાય કા સમારંભ હી અહિત કા કર્તા
ઔર મોક્ષ કે માર્ગ સે વંચિત રાખનેવાલા કહા ગયા હૈ તો મલા કિસ
કાર્ય મેં પટ્કાય કે જીવોં કા સમારંભ હોતા હૈ, ઉસ કાર્ય સે અથવા
ઉસ પ્રકાર કે સમારંભ સે જીવોં કો સ્વર્ગ ઔર અપવર્ગ (મોક્ષ) કા
લાભ કેસે હો સકતા હૈ ? અર્થાત્ કિસી તરહ નહીં હો સકતા ।

જો મનુષ્ય પરિવંદન માનન ઔર પૂજન કે નિમિત્ત તથા જાતિ ઔર
મરણ કે મોચન કે નિમિત્ત એવં દુઃખો કે વિનાશ કરને કે નિમિત્ત
પૃથિવીકાય આદિ કા સમારંભ કરતે હૈં, વે ઉસકા વિપરીત હી ફલ
મોગતે હૈં યહ વાત અચ્છી તરહ સે પ્રકટ કી જા ચુકી હૈ । ક્યોં કિ
પ્રતિમાપૂજા ચોધ એવં હિત પ્રાપ્તિ કે લક્ષ્ય કો લેકર કે હી કી જાતી હૈ
-પરંતુ હિસ લક્ષ્ય કી સિદ્ધિ ન હોકર ઉસસે ઉલ્ટા કર્તા જીવ અવોધ
એવં અહિત કા પ્રાપ્ત હી હોતા હૈ એસા શ્રી મહાવીર પ્રભુ કા કથન હૈ ।
ફિર મી હિસકે પક્ષપાતી જન હિસ વાત પર ધ્યાન ન દેકર શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ
હી કથન કરતે હૈં-વે યહ કહતે હૈં “ કિ હિસ પ્રતિમાપૂજન મેં માના કિ

માર્ગથી દૂર ફેંકી દેનાર બતાવવામાં આવ્યો છે ત્યારે કયા કાર્યમાં પટ્કાયના
જીવોના સમારંભ હોય છે, તે કાર્યથી અથવા તો તે જાતના સમારંભથી
જીવને સ્વર્ગ અને અપવર્ગ (મોક્ષ) નો લાભ કેવી રીતે સંભવી શકે તેમ
છે ? એટલે કે કોઈ પણ કાળે જીવને આ કાયથી સ્વર્ગ કે મોક્ષનો લાભ
થઈ શકતો નથી.

જે માણસ પરિવંદન, માનન અને પૂજનના માટે તેમજ જાતિ અને
મરણના મોચન માટે અને દુઃખોના વિનાશ માટે પૃથિવિકાય વગેરેનો સમા-
રંભ કરે છે, તેઓ તેનું ઉલટું ફળ ભોગવે છે આ વાત સારી રીતે સમ-
જાવવામાં આવી છે, કેમકે પ્રતિમા પૂજા બોધ તેમજ હિત પ્રાપ્તિના લક્ષ્યને
લઈને જ કરવામાં આવે છે. પણ આ લક્ષ્યની સિદ્ધિ ન થતાં તેનાથી સાવ
વિપરીત કર્તા જીવ અવોધ અને અહિતને ભોગવે છે એવું જ શ્રી મહાવીર
પ્રભુએ કહ્યું છે. છતાંય પ્રતિમા પૂજના કેટલાક તરફદારીઓ આ વાતને લક્ષ્યમાં
ન રાખતાં શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ જ કથનને વળગી રહે છે. તેઓ આ પ્રમાણે કહે છે

હિતં નોત્પાદયતિ, પ્રત્યુત્ત બોધિં નરામરશિવસુખરૂપં હિતં ચ સમ્યગ્ જનયતીતિ, વદેતત્ સાક્ષાત્ મવચનવિરુદ્ધમિતિ ।

કિં ચ આચારાઙ્ગસૂત્રે પૃથિવીકાયસમારંભસ્ય ફલમુત્ત્વા ભગવતા પુનરભિહિ-
તમ્—‘એસ સ્વલુ ગંથે, એસ સ્વલુ મોહે એસ સ્વલુ મારે, એસ સ્વલુ નિરયે, ઇચ્છત્થં
ગઢિં લોએ, જમિણં વિરુવરુવેહિં સત્થેહિં પુઢવિકમ્મસંમારંભેણં પુઢવિસત્થં સમા-
રંભમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે વિહિંસહ ।’ (આ૦ ૧ અ૦ ૨ ઉ૦)

છાયા— એસ સ્વલુ ગ્રન્થઃ, એસ સ્વલુ મોહઃ, એસ સ્વલુ મારઃ, એસ સ્વલુ નરકઃ
ઇત્યર્થે ગૃહ્ણો લોકઃ, યદિમં વિરુપરૂપૈઃ શસ્ત્રૈઃ પૃથિવીકર્મસમારંભેણ પૃથિવીશસ્ત્રં

ષટ્કાય કા સમારંભ હોતા હૈ—પરન્તુ યહ સમારંભ સ્વાભ્યુદય એવં મુક્તિ
પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત હી ક્રિયા જાતા હૈ—અતઃ યહ કર્તા જીવોં કો ન અહિત
કા હી ઉત્પાદક હોતા હૈ ઓર ન બોધિ કે લાભ સે વંચિત રહતા હૈ
પ્રત્યુત્ત યહ ઉન્હેં બોધિ એવં નર અમર ઓર મોક્ષ કે સુખ સ્વરૂપ હિત
કા પ્રદાન કરને વાલા હી હોતા હૈ ” સો હસ પ્રકાર કા ઉનકા યહ કથન
સાક્ષાત્ શાસ્ત્ર સે વિરુદ્ધ હી હૈ—યહ વાત આચારાંગ સૂત્ર સે ખલી ખાંતિ
પુષ્ટ હોતી હૈ ઉસમેં પૂર્વોક્તરીતિ સે પૃથિવીકાય કે સમારંભ કા ફલ કહ-
કર ફિર યહ કહા ગયા હૈ—“ એસ સ્વલુ ગંથે, એસ સ્વલુ મોહે, એસ સ્વલુ
મારે, એસ સ્વલુ નરયે, એચ્છત્થં ગઢિં લોએ, જમિણં વિરુવરુવેહિં સત્થેહિં
પુઢવિકમ્મસમારંભેણં પુઢવિસત્થં સમારંભમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે
વિહિંસહ ” (આ- ૧ અ- ૨ ઉ-) યહ પૃથિવીકાય કા સમારંભરૂપ શસ્ત્ર
નિશ્ચય સે જીવોં કો અષ્ટપ્રકાર કે જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કા વન્ધ

કે—આપણે થોડા વખત માટે આમ પણ માની લઇએ કે આ પ્રતિમા પૂજ-
નમાં ષટ્કાયના સમારંભ થાય છે—પણ આ સમારંભ સ્વાભ્યુદય અને મુક્તિની
પ્રાપ્તિ માટે જ કરવામાં આવે છે. એટલા માટે આ કર્તા જીવોના માટે અહિ-
તનો ઉત્પાદક પણ હોતો નથી અને બોધિના લાભથી પણ તેઓને વંચિત
રાખતો નથી. આ તો તેમને બોધિ અને નર અમર અને મોક્ષના સુખ સ્વરૂપ
હિતને આપનાર જ હોય છે. પણ તેમનું આ કથન પ્રત્યક્ષ રૂપમાં શાસ્ત્રથી
વિરુદ્ધ જ છે. આ વાત આચારાંગ સૂત્રથી સારી પેઠે પુષ્ટ થઈ જાય છે. તેમાં
પૂર્વોક્ત રીતથી પૃથિવીકાયના સમારંભનું ક્ષણ અતાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—

‘એસ સ્વલુ ગંથે, એસ સ્વલુ મોહે, એસ સ્વલુ મારે એસ સ્વલુ નરયે, એચ્છત્થં
ગઢિં લોએ જમિણં વિરુવરુવેહિં સત્થેહિં પુઢવિકમ્મસમારંભેણં પુઢવિસત્થં
સમારંભમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે વિહિંસહ ” (આ. ૧ અ. ૨ ઉ.)

આ પૃથિવીકાયનું સમારંભ રૂપ શસ્ત્ર થોડેસા જીવોના માટે આઠ પ્રકારના

સમારંભમાણ: અન્યાન્ અનેકરૂપાન્ પ્રાણાન્ વિદ્ધિસતિ । एषः=પૃથિવીશસ્ત્રસમારંભ: સ્વલુ નિશ્ચયેન ગ્રન્થઃ=ગ્રંથયતે=વચ્ચયતે જીવોડનેનેતિ ગ્રન્થઃ, અષ્ટવિધકર્મવન્ધઃ, વન્ધજનકત્વાદ્ ગ્રન્થ ઇત્યુચ્યતે । તથા-एष मोहः વિપર્યાસઃ વીપરીતજ્ઞાનરૂપ ઇત્યર્થઃ તથા-एष मारः=નિગોદાદિમરણરૂપઃ । તથા-एष खलु नरकः-નારક જીવનાં દશવિધયાતનાસ્થાનમ્ । ઇત્યર્થમ્-एतदर्थं कर्मबन्ध-मोह मरण-नरकरूपं घोरं दुःखफलं प्राप्य पुनः पुनरेतदर्थमेव लोकः=અજ્ઞાનવશવર્તી જીવઃ મુદ્ધઃ-લિપ્સુરસ્તિ । યદ્યપિ વિષયભોગાસક્તો લોકઃ શરીરાદિપરિપોષણાર્થે પરિવંદનમાનનપૂજનાર્થે જાતિમરણમોચનાર્થે દુઃસ્વપ્રતિઘાતાર્થે ચ પૃથિવીશસ્ત્રસમારંભં કરોતિ, તથાપિ તત્ફલં કર્મવન્ધમોહમરણનરકરૂપમેવ લભતે, અતઃ પૃથિવીકર્મસમારંભસ્ય તદેવ ફલં ભવતીતિ ભાવઃ । તદેવં પ્રવચનવિરુદ્ધપ્રરૂપણ-

કરારને વાલા હોને સે ગ્રન્થસ્વરૂપ, વિપરીત જ્ઞાન કા જનક હોને સે મોહરૂપ, નિગોદાદિ જીવોં કા ઇસ મેં મરણ હોતા હૈ-હસલિયે માર સ્વરૂપ તથા નારકિયોં કી દશ પ્રકાર કી યાતના કા હેતુ હોને સે યહ નરકરૂપ માના ગયા હૈ । ઇસ પ્રકાર યહ જીવ ઇસ પૃથિવીકાય કે સમારંભરૂપ શસ્ત્ર કે ફલસ્વરૂપ કર્મવન્ધ, મરણ ઓર નરકરૂપ ઘોરતર દુઃખોં કો ભોગતા હુઆ ભી અજ્ઞાન કે આધીન હોકર ડસી શસ્ત્ર કે પ્રયોગ કરને કા ફિર ભી અભિલાષી હો રહા હૈ । યદ્યપિ વિષય ભોગોં મેં આસક્ત બના હુઆ યહ જીવ શરીર આદિ કી પુષ્ટિ પરિવંદન, માનન, પૂજન ંવં જાતિ ઓર મરણ કે મોચન કે લિયે તથા દુઃખોં કે વિનાશ કે લિયે પૃથિવીકાય કે સમારંભરૂપ શસ્ત્ર કા પ્રયોગ કરતા હૈ-પરંતુ ફિર ભી ઇસકા વહ કર્મવન્ધ, મોહ, મરણ, નરકરૂપ ફલ કા હી ભોક્તા બનતા

જ્ઞાનાવશણીય વગેરે કર્મેનો બંધ કરાવનાર હોવા બદલ ગ્રન્થ સ્વરૂપ, વિરુદ્ધ જ્ઞાનને ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી મોહ રૂપ, નિગોદ વગેરે જીવોનું આમાં મરણ થાય છે માટે માર સ્વરૂપ તેમજ નારકીઓની દશ પ્રકારની યાતનાનું કારણ રૂપ હોવાથી આ નરક રૂપ માનવામાં આવ્યું છે. આ રીતે આ જીવ આ પૃથિવિકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રના રૂપ સ્વરૂપ કર્મબંધ, મરણ અને નરક રૂપ ઘોરતર દુઃખોને ભોગવવા છતાં પણ અજ્ઞાનવશ થઈને તે જ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરવા માટે ફરી તૈયાર થઈ રહ્યો છે. જો કે વિષય ભોગોમાં આસક્ત બનેલો આ જીવ શરીર વગેરેની પુષ્ટિ પરિવંદન, માનન, પૂજન અને જાતિ મરણના મોચન માટે તેમજ દુઃખોને દૂર કરવા માટે પૃથિવિકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરે છે પણ છતાંયે તે કર્મબંધ, મોહ, મરણ અને નરક રૂપ રૂપને ભોગવનાર જ બને છે. એટલા માટે આપણે ચોક્કસ કહી શકીએ તેમ છીએ

પરાઃ સર્વદોષનિર્મુક્તં શુદ્ધમદ્વિતીયમનવચં જૈનધર્મં સાવધપૂજોપદેશેન કુપ્રાવચનિ-
કોપમેયં કુર્વન્તઃ સંસારદાવાનલે જનતાં પાતયન્તઃ સ્વયં ચ મોહનીયકર્મોદયવશા-
દન્ધા ઇવ સન્માર્ગતો નિપતન્તઃ સ્વાત્માનમહિતેન મિથ્યાત્વેન ચ પુનઃ પુનઃ સંયો-
જયન્તિ । યદિ મૃગતૃણાઽપિ કેષાંચિત્ પિપાસાકુલાનાં સ્વચ્છજલધારાવાહિની
ભવેત્, તદા પ્રતિમાપૂજાપિ તેષાં દ્રવ્યલિજ્જિનાં પરિણામશુદ્ધિ સંપાદિની અષ્ટવિ-
ધકર્મદલની નરામરશિવસુખવિધાયિની ભવેદિતિ બોધ્યમ્ ।

હૈ । અતઃ પ્રતિમાપૂજન કા ઉપદેશ નિશ્ચિત્ હૈ કિ પ્રવચનમાર્ગ સે વિરુદ્ધ
હૈ । ઇસ વિરુદ્ધ પ્રરૂપણા કરને મેં તત્પર મનુષ્ય સર્વ દોષોં સે રહિત, શુદ્ધ
ઔર અદ્વિતીય ઇવં અનવચ્ચ ઇસ જૈનધર્મ કો સાવધ પૂજા કે ઉપદેશ
સે કુપ્રાવચનિક કી તરહ કલંકિત-સદોષ કર સંસારરૂપી દાવાનલ મેં
ખોલે ખાલે પ્રાણિયોં કો ઢાલ રહે હૈં ઔર સ્વયં ખી મોહનીય કર્મ કે
ઉદય સે અન્ધ કી તરહ બન કર સન્માર્ગ સે વિમુક્ત હોતે હુઅ અપની
આત્મા કો અહિત ઔર મિથ્યાત્વ કે કલંક સે કલુષિત કર રહે હૈં ।
અરે-કહીં મૃગતૃણા સે ખી પ્યાસે વ્યક્તિયોં કી પ્યાસ બુદ્ધતી હૈં ? યદિ
નહીં, ફિર મૃગતૃણા તુલ્ય ઇસ પ્રતિમા પૂજન સે કર્તા કી સમ્યક્ત્વ
ઔર હિત કી પ્રાપ્તિ હોને રૂપ પ્યાસ કેસે બુદ્ધ સકતી હૈ-સોચો । હાં ।
યદિ ઇસા હોતા કિ મૃગતૃણા સ્વચ્છજલ કી ધારા વહાકર પ્યાસે
પ્રાણિયોં કી તૃષ્ણા કો શાંત કરતી-તો યહ પ્રતિમા પૂજન ખી દ્રવ્યલિજ્જિ
યોં કે પરિણામોં મેં શુદ્ધિ કરતી હુઈં ઉનકે અષ્ટકર્મોં કોં દલને વાલી
ઔર ઉન્હેં નર, અમર ઇવં શિવસુખ પ્રદાન કરને વાલી ખી હો સકતી ।

કે પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ પ્રવચન માર્ગથી વિરુદ્ધ છે આ જાતની વિરુદ્ધ
પ્રશ્નપણા કરવામાં તત્પર માણસ બધા દોષોથી રહિત, શુદ્ધ, અદ્વિતીય અને
અનવચ્ચ આ જૈન ધર્મને સાવધ પૂજના ઉપદેશથી કુપ્રાવચનિકની જેમ કલંકિત
હોયુક્ત બનાવીને સંસાર રૂપી દાવાનલમાં લોખા પ્રાણીઓને નાખી રહ્યો છે
અને જાતે પણ મોહનીય કર્મના ઉદયથી આંધળાની જેમ થઇને સન્માર્ગથી
દૂર થતાં પોતાના આત્માને અહિત અને મિથ્યાત્વના કલંકથી કલુષિત કરી
રહ્યો છે. મૃગજળથી પણ કોઈ દિવસે તરસ્યા માણસોની તરસ મટી શકી છે ?
જો આબું નથી તો પછી મૃગજળ જેવી આ પ્રતિમા પૂજનથી કર્તાની સમ્ય-
ક્ત્વ અને હિતની પ્રાપ્તિ થવા રૂપ તરસ કેવી રીતે મટી શકે તેમ છે. જોમૃગજળ
નિર્ભજ પાણીને ઝરો થઇને તરસ્યાં પ્રાણીઓની તરસ મટાડી શકત તો આ
પ્રતિમા પૂજા પણ દ્રવ્યલિગિઓના પરિણામોમાં શુદ્ધિ કરનારી તેમના આક કર્મોને
નષ્ટ કરનારી અને નર, અમર અને શિવ-સુખ આપનારી પણ થઈ શકત ?

યતુ-બ્રાહ્મીલિપિરિત્વ પ્રતિમા વન્ધ્યા, ‘ નમો બંમીએ લિવીએ ’ ઇતિપદં યદ્ વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસેરાદાવુપન્યસ્તં તત્ર બ્રાહ્મીલિપિરશ્વરવિન્યાસઃ, સા યદિ શ્રુતજ્ઞાનસ્યાઽઽ કારસ્થાપના, તદા તદ્વન્ધ્યત્વે સાકારસ્થાપનાયા ભગવત્પ્રતિમાયાઃ સ્પષ્ટમેવ વન્ધ્યસ્વમ્ તુર્યપન્યાયાદિત્યુક્તં, તન્મોહનીયકર્મોદયવિલસિતમ્-

શ્રુતજ્ઞાનરૂપસ્ય ભાવશ્રુતસ્ય સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાનવતઃ શ્રુતપઠનાદિક્રિયાવતઃ સાધ્વાદેશ્વિત્રાદિકં ભવતિ, શ્રુતતદ્વતોરભેદોપચારાત્ સાધ્વાદિઃ શ્રુતમુચ્યતે । સ્થાપનાવશ્યકસ્ય સ્થાપનાશ્રુતસ્ય ચ તથૈવાનુયોગદ્વારે ભગવતા વર્ણનાત્ । યદેવં લિપિઃ શ્રુતજ્ઞાનસ્ય સ્થાપનારૂપત્વં ન પ્રાપ્નોતિ । તસ્માત્ પ્રતિમાયાં બ્રાહ્મીલિપિદ્દષ્ટાન્ત પ્રદર્શનપુત્રમૂત્રપ્રરૂપણમ્ ।

કિન્ન—પ્રતિમાપૂજન કી પુષ્ટિ કે લિયે “ નમો બંમીએ લિવીએ ” વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસિ કી આદિ મેં લિયે હુએ હસ સૂત્ર કે બલ પર જો ઉસકે પક્ષપાતી જન યહ કહતે હૈ—“ કિ અક્ષર વિન્યાસરૂપ બ્રાહ્મીલિપિ જિસ પ્રકાર શ્રુતજ્ઞાન કે આકાર કી સ્થાપનારૂપ હોકર વન્ધ્ય-વન્ધનીય માની ગઈ હૈ ઉસી પ્રકાર સાકાર સ્થાપનારૂપ ભગવાન કી પ્રતિમા મેં બી વન્ધનીયતા સ્પષ્ટ હી હૈ ” સો યહ કથન વિચાર કરને પર ઠીક નહીં બેઠતા હૈ ।

તથાહિ—શ્રુતજ્ઞાનરૂપ ભાવશ્રુત કી સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાનસંપન્ન, ઓર શ્રુત કે પઠન કી ક્રિયા વિશિષ્ટ એસે જો સાધુ આદિજન હૈં ઉનકે ચિત્ર આદિ સ્વરૂપ પડતી હૈ અર્થાત્ શ્રુતજ્ઞાની સાધુ આદિ કે ચિત્રસ્વરૂપ હી શ્રુતજ્ઞાનરૂપ ભાવશ્રુતકી સ્થાપના હોતી હૈ । બ્રાહ્મીલિપિ અક્ષર વિન્યાસ હૈ । વહ શ્રુતજ્ઞાન કી સ્થાપના હૈ । યર્હા શ્રુતજ્ઞાની સાધુ આદિ કો જો

અને બીજું પણ કે-પ્રતિમા પૂજનની પુષ્ટિ માટે “ નમો બંમીએ-લિવીએ ” વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞસિની શરૂઆતમાં આવેલા આ સૂત્ર સુજ્ઞ બે તેની તરફદારી કરનારા માણસો આમ કહે છે કે “ અક્ષર વિન્યાસ રૂપ બ્રાહ્મી લિપિ જેમ શ્રુતજ્ઞાનના આકારની સ્થાપના રૂપ થઈને વન્ધ્ય-વંધનીય માનવામાં આવી છે, તેમજ આકાર-સ્થાપના રૂપ ભગવાનની પ્રતિમામાં પણ વંધનીયતા સ્પષ્ટ દેખીતી વાત જ છે પરંતુ આ કથનનો પણ વિચાર કર્યા બાદ થોડો લાગતું નથી. તેમજ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાન સંપન્ન અને શ્રુતના પઠનની ક્રિયા વિશિષ્ટ એવા જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેમના ચિત્ર વગેરે સ્વરૂપ હોય છે. એટલે કે શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેના સ્વરૂપ જ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના હોય છે બ્રાહ્મી-લિપિ અક્ષર વિન્યાસ છે. તે શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના છે. અહીં શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેને જે ભાવશ્રુત રૂપ કહેવામાં આવ્યો છે તે શ્રુતજ્ઞાન

યત્તુ-અભયદેવીયત્તૌ સંજ્ઞાક્ષરરૂપં દ્રવ્યં શ્રુતં નમસ્કુર્વન્નાહ-‘ નમો વંમીઈ લિવીઈ ’ ઇત્યુક્તં તદ્ ભ્રાન્તિમૂલકમ્ પુસ્તકવર્તિન્યા અકારાદિવર્ણસંકેતરૂપાયા લિપેર્દ્રવ્યશ્રુતત્વં ન સંભવતિ યતઃ શ્રુતં નામ દ્વાદશાંગીરૂપમર્હત્પ્રવચનં શાસ્ત્રં યસ્ય કસ્યચિજ્જીવસ્ય શિક્ષિતં સ્થિતં જિતં યાવદ્ વાચનોપગતં ભવતિ સ જન્તુસ્તત્ર વાચનાપ્રચ્છનાદિમિર્વર્તમાનોઽપિ શ્રુતોપયોગાભાવાદાગમમાશ્રિત્ય દ્રવ્યશ્રુતમ્, આ

ભાવશ્રુતરૂપ કહા ગયા હૈ-વહ શ્રુતજ્ઞાન ઔર શ્રુતવાન મેં અભેદ કે ઉપચાર સે હી કહા ગયા સમજ્ઞાના ચાહિયે। હસી રૂપ સે હી મગવાન ને અનુયોગ દ્વાર મેં સ્થોપના આવશ્યક ઔર સ્થાપના શ્રુત કા કથન કિયા હૈ। અતઃ લિપિ મેં ભાવશ્રુત કી કલ્પના સે શ્રુતજ્ઞાન કી સ્થાપના માનના કથમપિ યુક્તિ સંગત નહીં હૈ। હસી પ્રકાર લિપિ મેં દ્રવ્યશ્રુતતા મી નહીં આતી હૈ। ક્યોં કિ દ્વાદશાંગીરૂપ અર્હત પ્રવચન કા નામ શ્રુત હૈ। શ્રુતજ્ઞાન કા જ્ઞાતા જલ્ ઉસમેં અનુપયુક્ત અવસ્થાનચાલા હૈ। તલ્ વહી આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્યશ્રુત કહા જાતા હૈ। સંજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિ કો દ્રવ્યશ્રુત નહીં કહા હૈ। હસ કથન સે હસ વાત કી પુષ્ટિ હોની હૈ કિ-અભયદેવ વિરચિત વૃત્તિ મેં “ નમો વંમીઈ લિવીઈ ” હસ પદ કા અર્થ સંજ્ઞા અક્ષરરૂપ દ્રવ્યશ્રુત પરક માનકર જો નમસ્કાર કિયા ગયા હૈ -વહ ભ્રાન્તિમૂલક હૈ, ક્યોં કિ પુસ્તક મેં રહી હુઈ સંકેતિત અકાર આદિ વર્ણ કી આકૃતિ મેં દ્રવ્યશ્રુતતા સંભવિત નહીં હોની હૈ। વાચના, પૃચ્છના આદિ સે અધિગત શ્રુત મેં અનુપયુક્તજ્ઞાતા હી દ્રવ્યશ્રુત હૈ હસી

અને શ્રુતવાનમાં અભેદોપચારથી જ કહેવાયેલા સમજવો જોઈએ. આ રૂપથી જ ભગવાને અનુયોગદ્વારમાં સ્થાપના આવશ્યક અને સ્થાપના શ્રુતનું કથન કર્યું છે. એટલા માટે લિપિમાં ભાવશ્રુતની કલ્પનાથી શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના માનવી કોઈ પણ રીતે યોગ્ય નથી આ પ્રમાણે જ લિપિમાં દ્રવ્યશ્રુતતા પણ આવતી નથી. કેમકે દ્વાદશાંગી રૂપ અર્હત પ્રવચનનું નામ શ્રુત છે. આ શ્રુતજ્ઞાનનો જ્ઞાતા જ્યારે તેમાં અનુપયુક્ત અવસ્થાવાળો હોય છે ત્યારે તે આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્યશ્રુત કહેવાય છે. સંજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિને દ્રવ્યશ્રુત કહી નથી. આ કથનથી આ વાતની પુષ્ટી થાય છે કે અભયદેવ વિરચિત વૃત્તિમાં “ નમો વંમીઈ લિવીઈ ” આ પદનો અર્થ સંજ્ઞા અક્ષર રૂપ દ્રવ્ય શ્રુતપરક માનીને જે નમસ્કાર કરવામાં આવ્યા છે તે ભ્રાન્તિમય છે, કેમકે પુસ્તકમાં રહેલી સંકેતિત અકાર વગેરે વર્ણની આકૃતિમાં દ્રવ્યશ્રુતતા સંભવિત નથી હોતી. વાચના, પૃચ્છના વગેરેથી અધિગત શ્રુતમાં અનુપયુક્ત જ્ઞાતા જ દ્રવ્યશ્રુત છે

મનગારઘમાંમૃતવર્ણિની ટીકા અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૪૦૭

ચારાઙ્ગાદિકં પ્રતિપૂર્ણઘોષં કળ્થોષ્ટ્રવિપ્રમુક્તં પઠિતવતઃ સાધ્વાદેસ્તદર્થજ્ઞાનાભાવે સતિ દ્રવ્યશ્રુતત્વં ભવતિ, તથૈવાનુયોગદ્વારે દ્રવ્યશ્રુતસ્ય વર્ણનાત્ । વર્ણસંકેતરૂપા લિપિસ્તુ ન શબ્દાત્મિકા, યતો વર્ણસ્યૈવોચ્ચારણમુપપદ્યતે, ન તુ તત્સંકેતસ્ય લિપિમતઃ પુસ્તકાદેસ્તુ શ્રુતં શિક્ષિતં યાવદ્ વાચનોપગતં ન ભવિતુમર્હતિ અતસ્તસ્ય દ્રવ્યશ્રુતત્વં ન સંભવતિ કથં પુનસ્તદ્ગતલિપેસ્તત્સંભવઃ ? કથમપિ નહિ ।

કિં ચ-દ્રવ્યશ્રુતસ્ય વન્ધત્વમેવ નાસ્તિ, અનુપયુક્તત્વાચરણગુણશૂન્યત્વાચ્ચ, તસ્માદ્ ભાવશ્રુતસ્યૈવ વન્ધત્વપાત્તૌ દ્રવ્યશ્રુતનમસ્કારકલ્પનં ભ્રાન્તિમૂલકમેવ । ‘નમો બંમીએ લિવીએ’ અસ્યાયમર્થઃ-વર્ણાત્મકભાષાસંકેતરૂપા લિપિર્બ્રાહ્મીલિપિઃ

પ્રકાર દ્રવ્યશ્રુત કા વર્ણન અનુયોગદ્વાર મેં કિયા ગયા મિલતા હૈ । અકાર આદિ વર્ણરૂપ સે સંકેતિત લિપિ મેં શબ્દાત્મકના આમી નહી સકતી હૈ-કયોં કિ વર્ણ કા હી ઉચ્ચારણ હોતા હૈ-ઉસકે સંકેત કા નહીં । લિપિયુક્ત પુસ્તકાદિ મેં ભી વાચના આદિ કુછ નહીં હોતા હૈ । કયોં કિ વહ જડ હૈ-ચેતન મેં હી યે વાચના પૃચ્છના આદિ હોતે હૈ । અતઃ ઉસ મેં દ્રવ્યશ્રુતતા માનના સર્વથા અયુક્ત હૈ ઇસલિયે વહ નિશ્ચિત હોતા હૈ કિ અકાર આદિ વર્ણરૂપ સે સંકેતિત લિપિ મેં ઓર ઇસ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તકાદિક મેં દ્રવ્યશ્રુતતા કિંચિત માત્ર ભી સંભવિત નહીં હૈ ।

કિંચ-અનુપયુક્ત હોને સે ઓર ચરણગુણ શૂન્ય હોને સે દ્રવ્યશ્રુત મેં વંધતા આ હી નહીં સકતી હૈ । ભાવશ્રુત મેં હી ઉપયોગ સહિત ઓર ચરણગુણ યુક્તતા હોને સે વંધતા આતી હૈ-અતઃ દ્રવ્યશ્રુત મેં નમસ્કાર કરને કી કલ્પના કરના કેવલ ભ્રાન્તિમૂલક હી હૈ “નમો બંમીએ

આ રીતે દ્રવ્યશ્રુતનું વર્ણન અનુયોગ દ્વારમાં કરવામાં આવ્યું છે. અક્ષર વગેરે વર્ણરૂપથી સંકેતિત લિપિમાં શબ્દાત્મકતા આવી શકે તેમ નથી. કેમકે ઉચ્ચારણ તો દ્રવ્યનું જ થાય છે, તેના સંકેતનું નહિ. લિપિ યુક્ત પુસ્તકો વગેરેમાં પણ વાચના વગેરે કંઈ જ હોતું નથી. કેમકે તે જડ છે, ચેતનમાં જ વાચના પૃચ્છના વગેરે થાય છે. એથી તેમાં દ્રવ્યશ્રુતતા માનવી સાવ અયોગ્ય છે. એથી એ વત એકસ થાય છે કે અક્ષર વગેરે વર્ણરૂપથી સંકેતિત લિપિમાં અને આ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તક વગેરેમાં દ્રવ્યશ્રુતતા થોડી પણ સંભવિત નથી.

અને બીજું પણ કે-અનુપયુક્ત હોવાથી અને ચરણગુણ શૂન્ય હોવાથી દ્રવ્યશ્રુતમાં બંધતા આવી જ શકતી નથી. ભાવશ્રુતમાં જ ઉપયોગ સહિત અને ચરણગુણ યુક્તતા હોવાથી વંધતા આવે છે. એટલા માટે દ્રવ્યશ્રુતમાં નમસ્કાર કરવાની કલ્પના કરવી ભ્રાન્તિમૂલક જ છે. “નમો બંમીએ લિવીએ” આનો અર્થ

બ્રાહ્મીશબ્દસ્ય માપાર્થકત્વાત્, ઉક્તં ચામરકોશે-‘બ્રાહ્મી તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાન્-
વાણી સરસ્વતી’ इति । यद्वा-अष्टादशपकारा लिपिः श्रीमन्नाभेयजिनेन ब्राह्मिना-
मिकां स्वसुतां प्रदर्शिता तस्मात् सा लिपिर्ब्राह्मीत्युच्यते । लिपिज्ञानस्य श्रुतज्ञा-
नोपयोगितया भावश्रुतहेतुं लिपिज्ञानरूपं भावलिपिं वन्दमानः श्रीसुधर्मा स्वा-
मी प्राह-‘ नमो बभीए लिबीए ’ इति । श्रुतज्ञानं प्रति लिपिज्ञानं कारणं, यतो
लिपिज्ञानेन तत्संकेतितशब्दस्मरणं, ततस्तदर्थज्ञानं जायते । तस्माद् भगवदुक्ता-
र्थस्य प्रतिबोधनाय तन्बोधकशब्दज्ञातरूपं श्रुतं लिपिवद् कर्तुंकामः श्रुतबोधिकां

लिबीए ” इसका अर्थ इस प्रकारसे संगत बैठता है-अकार आदि वर्णा-
त्मक भाषा के संकेतरूप लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि है-ब्राह्मी शब्द
इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अमर कोष में भी यही बात कही है-“ ब्राह्मी
तु भारती भाषा गीर्वाण् वाणी सरस्वती ” । अथवा-श्री आदिनाथ
प्रभु ने अपनी ब्राह्मी नाम की पुत्री को १८ प्रकार की लिपि कही थी
इसलिये भी उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि इस प्रकार से पड़ गया
है । श्रुतज्ञान में उपयोगी होने से इस लिपि के ज्ञान को भावश्रुत का
कारण माना है । इसलिये लिपि ज्ञानरूप भाव लिपि को वन्दन करते
हुए श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं “ नमो बंभीए लिबीए ” । श्रुतज्ञान के
प्रति लिपि ज्ञान कारण है-क्यों कि लिपि के ज्ञान से अकारादि वर्णा-
त्मक लिपि रूप से संकेतित उस उस शब्द का स्मरण होता है और
उससे उसके अर्थ का ज्ञान होता है । अतः भगवान् द्वारा प्रतिपादित
अर्थ को समझाने के लिये उस अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्दों के

આ પ્રમાણે સુસંગત બેસી શકે છે કે-અકાર વગેરે વર્ણાત્મક ભાષાના સંકેત
રૂપ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ છે. બ્રાહ્મી શબ્દ ‘ ભાષા ’ આ અર્થમાં પ્રયુક્ત
થયો છે. અમરકોશમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે કે “ બ્રહ્મી તુ
ભારતી ભાષા ગીર્વાણ્વાણી સરસ્વતી ” અથવા તો શ્રી આદિનાથ પ્રભુએ પોતાની
બ્રાહ્મી નામની પુત્રીને અઠાર પ્રકારની લિપિઓ બતાવી હતી. એટલા માટે
પણ આ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ પડી ગયું છે. શ્રુતજ્ઞાનમાં ઉપયોગી હોવાથી
આ લિપિના જ્ઞાનને ભાવશ્રુતનું કારણ માનવામાં આવ્યું છે. એથી લિપિજ્ઞાન
રૂપ ભાવલિપિને વંદન કરતાં શ્રીસુધર્માસ્વામી કહે છે કે “નમો બંમીએ લિબીએ”
શ્રુતજ્ઞાનનાં પ્રતિ લિપિજ્ઞાન કારણ છે કેમકે લિપિના જ્ઞાનથી અકાર વગેરે વર્ણાત્મક
લિપિ રૂપથી સંકેતિત તે શબ્દનું સ્મરણ થાય છે. અને તેનાથી તેના અર્થનું જ્ઞાન
થાય છે એટલા માટે ભગવાનદ્વારા પ્રતિપાદિત અર્થને સમજાવવા માટે તે અર્થનું

અનગારધર્માશ્રુતવર્ણિનો ટીકો મં ૧૬ ત્રોપદીચર્ચા

૪૦૧

ભાવલિપિ પ્રતિ સમુપજાતભક્તિઃ શ્રીસુધર્મા સ્વામી લિપિજ્ઞાનસ્ય માહાત્મ્યં પ્રકટ-
યન્ ભાવશ્રુતં પ્રતિ ભાવલિપે! કારણતયાઽભ્યર્હિતત્વેન તતઃ પૂર્વં ભાવલિપિવન્દનં
કૃતવાન્, તત્પશ્ચાદ્ ભાવશ્રુતં નમસ્કુર્વન્નવાદીત્ 'નમઃ સુયસ્સ' ઇતિ ।

યતુ-અભયદેવસૂરિણા સ્વકૃતટીકાયામુક્તમ્ 'જિણપટ્ટિમાણં અચ્ચણં કરેહ'
ત્તિ એકસ્યાં વાચનાયામેતાવદેવ દ્રશ્યતે । વાચનાન્તરે તુ-'ઠ્ઠાયા જાવ સઘ્વાલં-
કારવિભૂસિયા મજ્જણધરાઓ પટ્ટિનિક્કમ્મહ પટ્ટિનિક્કમિત્તા જેણામેવ જિણધરે
તેણામેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા જિણધરં અણુપવિસહ ૨ ત્તા, જિણપટ્ટિમાણં
સમૂહરૂપ શ્રુત કો લિપિવદ્ધ કરને કી ઇચ્છા સે શ્રી સુધર્માસ્વામી કિ
જિન કી ભક્તિ શ્રુતયોધક ભાવલિપિ કે પ્રતિ જાગૃત્ત હુઈ હૈ લિપિજ્ઞાન
કે માહાત્મ્ય કો પ્રકટ કરતે હુએ ભાવશ્રુત કો નમસ્કાર કરને કે પહિલે
ભાવલિપિ કો હી નમસ્કાર કરતે હૈં ક્યોં કિ ભાવશ્રુત કે પ્રતિ ભાવ-
લિપિ કો હી કારણતા હૈ, ઓર હસી નિમિત્ત સે યહ ડસકી અપેક્ષા
પૂઞ્ય માની ગઈ હૈ ભાવલિપિ કો નમસ્કાર કરને કે પશ્ચાત્ હી ડન્હોં ને
“નમઃ-સુયસ્સ” ભાવશ્રુત કો નમસ્કાર હસ સૂત્ર દ્વારા કિયા
હૈ । “જિણપટ્ટિમાણં અચ્ચણં કરેહ” હસ પાઠ કો લેકર જો ટીકોકાર
અભયદેવ સૂરિ ને જિનપ્રતિમા કિ પૂજન કરને કી વાત કહી હૈ-સો ટીક
નહીં હૈં । ક્યોં કિ માલૂમ હોતા હૈ, કિ ડન્હેં મૂલ પાઠ કા નિશ્ચય હી
નહીં હુઆ હૈ-કારણ કિ એક વાચના મેં તો યહી પાઠ મિલતા હૈ-તથ
કિ દૂસરી વાચના મેં “ઠ્ઠાયા જાવ સઘ્વાલંકારવિભૂસિયા મજ્જણધ-
રાઓ પટ્ટિનિક્કમ્મહ, ૨ જેણામેવ જિણધરે તેણામેવ ઉવાગચ્છહ, ૨

પ્રતિપાદન કરનારા શબ્દોના સમૂહરૂપ શ્રુતને લિપિવદ્ધ કરવાની ઇચ્છાથી શ્રીસુધર્મા
સ્વામી-કે એમની શ્રુતયોધક ભાવલિપિ પ્રત્યે ભક્તિ ઉત્પન્ન થઇ છે-લિપિ
જ્ઞાનના માહાત્મ્યને પ્રકટ કરતાં ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કરતાં પહેલાં ભાવલિપિ-
ને જ નમસ્કાર કર્યા છે. કેમકે ભાવશ્રુત પ્રત્યે ભાવલિપિ જ કારણતા છે અને
આ કારણથી જ આ તેના કરતાં પૂજ્ય માનવામાં આવી છે. ભાવલિપિને નમ-
સ્કાર કર્યા બાદ જ તેમણે “નમઃ સુયસ્સ” આ સૂત્ર વડે ભાવશ્રુતને નમ-
સ્કાર કર્યા છે. “જિણપટ્ટિમાણં અચ્ચણં કરેહ” આ પાઠના આધારે જે ટીકા-
કાર અભયદેવસૂરિએ જિનપ્રતિમાની પૂજની વાત કહી છે તે યોગ્ય નથી કેમકે
તેમને મૂળ પાઠને નિશ્ચય જ થયો નથી. એમ જણાઇ આવે છે કારણ કે એક
વાચનામાં તો એ જ પાઠ મળે છે. ત્યારે બીજી વાચનામાં —

(ઠ્ઠાયા જાવ સઘ્વાલંકારવિભૂસિયા મજ્જણધરાઓ પટ્ટિનિક્કમ્મહ, ૨ જેણા-
મેવ જિણધરે તેણામેવ ઉવાગચ્છહ, ૨ જિણધરં અણુપવિસહ, જિણપટ્ટિમાણં આહોપ

આલોષ પળામં કરેહ ૨ ત્તા, લોમહૃથયં પરામુસહ ૨ ત્તા, एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्छेह तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ ' ति । तेन मूलपाठस्य निश्चयस्तस्य नाभूदिति विज्ञायते ।

અતઃ પરં ચ—‘ વામં જાણું અંચેહ દાહિણં જાણું ધરણિયલંસિ ણિવેસેહ ૨ ’
 इति प्रतिमापूजकैः स्वीकृतो मूलपाठस्तत्र वर्तते, टीकाकारस्तु—‘ दाहिणं जाणुं धरणीतलंसि निहद्दु ’ इति पाठं टीकायां विलिख्य निगदति—‘ निहद्दु ’ निहत्य स्थापयित्वेत्यर्थः, ‘ णिवेसेह ’ इत्यत्र—‘ निहद्दु ’ इति पाठभेदः कृतः । तेनाप्येतद् विदितं भवति—यस्य यादृशं मनस्यभिरुचितं स तादृशमिह मूलपाठं प्रकल्पयति स्म इति ।

જિણધરં અણુપવિસહ જિણપડિમાણં આલોષ પળામં કરેહ, ૨ લોમહૃથયં પરામુસહ, ૨ एवं जहा सूरियाभो जिनपडिमाओ अच्छेह तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ ” ति यह पाठ मिलता है । इसके बाद “ वामं जाणुं धरणीतलंसि णिवेसेह २ ” ऐसा पाठ मिलता है—और यही पाठ प्रतिमा पूजकों को संमत है । परन्तु टीकाकार श्री अभयसूरि ने “ दाहिणं जाणुं धरणीतलंसी निहद्दु ” ऐसा पाठ टीकामें रखकर ‘ निहद्दु ’ इस पद की टीका “ स्थापना करके ” ऐसी की है । इस प्रकार “ णिवेसेह ” की जगह ‘ निहद्दु ’ ऐसा पाठ भेद किया गया है । इसी प्रकार प्रतिमा पूजकों द्वारा स्वीकृत “ तिक्खुत्तो मुद्धानं धरणीतलंसि नमेह ” इस मूल पाठ में भी परिवर्तन “ नमेह ” क्रिया पद में “ निवेशयति ” इस रूप से कर दिया है । इससे यह बात निश्चित होनी है कि जिस के मन

પળામં કરેહ, ૨ લોમહૃથયં પરામુસહ, ૨ एवं जहा सूरियाभो जिनपडिमाओ अच्छेह तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ) ति,

આ પાઠ મળે છે ત્યારપછી “ વામં જાણું ધરણિયલંસિ ણિવેસેહ ૨ ” આ બાતનો પાઠ મળે છે અને એ જ પાઠ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીએને માટે સંમત રૂપ છે. પણ ટીકાકારશ્રી અભયદેવસૂરિએ “ દાહિણં જાણું ધરણીતલંસી નિહદ્દુ ” આ બાતનો પાઠ ટીકામાં કરીને “ નિહદ્દુ ” આ પદની ટીકા—સ્થાપના કરીને આ પ્રમાણે કરી છે. આ રીતે “ ણિવેસેહ ” ના સ્થાને “ નિહદ્દુ ” આ બાતનો પાઠ બેઠ કરવામાં આવ્યો છે. આ રીતે જ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીએ વડે સ્વીકૃત (તિક્ખુત્તો મુદ્ધાણં ધરણીતલંસિ નમેહ) આ મૂળપાઠમાં પણ “ નમેહ ” ક્રિયાપદમાં “ નિવેશયતિ ” આ બાતનું પરિવર્તન કરી નાખ્યું છે. આથી આ વાતની ખાત્રી થાય છે કે જેના મનમાં જેવો પાઠ ગમ્યો તેણે તે પ્રમાણે જ કાવે તેમ પોતાની કલ્પનાથી મૂળ પાઠમાં

તદનન્તરં પુનઃ પ્રતિમાપૂજકૈઃ સ્વીકૃતે-મૂલપાઠે-‘ તિવસ્યુતો મુદ્ધાણં ધરણિ-
યલંસિ નમેઈ ’ ઇતિ દૃશ્યતે, ‘ નમેઈ ’ ઇત્યત્ર ટીકાકારઃ-‘ નિવેસેઈ ’ ઇતિલિખિત્વા
નિવેશ્યતીત્યર્થ ઉક્તઃ, તેનાત્ર-મૂલપાઠસ્ય સ્વસ્વકપોલકલ્પિતત્વં સિધ્યતિ, દ્રૌપ-
દ્યાશ્રરિતે ટીકાકૃતાઽભયદેવસૂરિણા પુનરીદૃશઃ પાઠો લબ્ધઃ-

‘ઈસિં પચ્ચુન્નમતિ ૨ ત્તા, કરયલ ૦ જાવ કદ્દુદુ એવં વયાસી-નમોત્યુળં અરિ-
હંતાણં ભગવંતાણં જાવ સંપત્તાણં વંદઈ નમસઈ ૨ જિણધરાઓ પહિનિકલ્લમઈ ’ ઇતિ
ઈમે પાઠં ટીકાયાં વિલિખ્ય ટીકાકારઃ ગ્રાહ—

‘તત્ર વન્દતે=ચૈત્યવન્દનવિધિના પ્રસિદ્ધેન, નમસ્યતિ=પશ્ચાત્ પ્રણિધાનાદિયોગે-
નેતિ વૃદ્ધાઃ । ન ચ દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્રં ચૈત્યવન્દનમભિહિતં સૂત્રે ઇતિ સૂત્ર-
મેં જૈસા પાઠ રુચા હૈ ઉસને ઉસી પ્રકાર મૂલ પાઠ મેં જિન કલ્પના કા
પાઠ પ્રક્ષિપ્ત કરકે પાઠ ભેદ કર દિયા હૈ । અતઃ સ્વકપોલકલ્પિત હોને
સે અસલી મૂલ પાઠ કા નિશ્ચય હી નહીં હોતા હૈ, દ્રૌપદી કે ચરિત મેં
ટીકાકાર અભયદેવસૂરિ કો હસ પ્રકાર કો પાઠ ઉપલબ્ધ હુઆ-ઈસિં
પચ્ચુન્નમતિ ૨, કરયલ ૦ જાવ કદ્દુદુ એવં વયાસી-નમોત્યુળં અરિહંતાણં
ભગવંતાણં જાવ સંપત્તાણં વંદઈ, નમસઈ ૨, જિણધરાઓ પહિનિકલ્લમઈ
ઇતિ ” પાઠ કો લિલ્લકર ઉન્હોં ને ટીકા કી । વન્દતે-નમસ્યતિ પદ કે
અર્થ કા ખુલાશા કરતે હુએ વે કહતે હૈં કિ પ્રસિદ્ધ ચૈત્યવંદન વિધિ કે
અનુસાર નમન કરના વંદના ઓર હસકે વાદ પ્રણિધાન આદિ કે યોગ
સે નમસ્કાર કરના નમન હૈ પેસા સિદ્ધાન્ત વૃદ્ધોં કા હૈ । સૂત્ર મેં જબ
દ્રૌપદી કા પ્રણિપાત દણ્ડક માત્ર ચૈત્યવંદન કહા હૈ-અર્થાત્ દણ્ડકી
તરહ પ્રણામ કરને રૂપ ચૈત્યવંદન કહા ગયા હૈ-તો હસી સે યહ

કહકે ઉમેરો કરીને પાઠ લેકે કરી નાખ્યો છે. એટલા માટે સ્વકપોલકલ્પિત
હોવા બદલ અસલ મૂળપાઠને નિશ્ચય જ થઈ શકે તેમ નથી. દ્રૌપદી ચરિતમાં
ટીકાકાર અભયદેવસૂરિને આ બાતનો પાઠ મળ્યો છે કે-(ઈસિં પચ્ચુન્નમતિ
૨, કરયલ ૦ જાવ કદ્દુદુ એવં વયાસી-નમોત્યુળં અરિહંતાણં ભગવંતાણં જાવ
સંપત્તાણં વંદઈ, નમસઈ ૨, જિણધરાઓ પહિનિકલ્લમઈ ઇતિ) આ પાઠને લખીને
તેમણે ટીકા કરી છે. ‘ વન્દતે ’ ‘ નમસ્યતિ ’ પદના અર્થનું સ્પષ્ટીકરણ કરતાં
તેઓ કહે છે કે પ્રસિદ્ધ ચૈત્ય વંદન વિધિ મુજબ નમન કરવું. વંદના અને
ત્યારપછી પ્રણિધાન વગેરેના યોગથી નમસ્કાર કરવો નમન છે, વૃદ્ધોનો આ
બાતનો સિદ્ધાન્ત છે. સૂત્રમાં ક્યારે પ્રણિપાત દંડક માત્ર ચૈત્યવંદન કહ્યું છે
ત્યારે એનાથી જ આ વાત સિદ્ધ થઈ બાક છે કે બીજા શ્રાવકોને પણ આ

तस्मादस्य विधिनिषेधबोधकत्वं न संभवतीत्याह - 'न च चरितानुवादवच-

भावार्थ—कोई अन्य श्रावक जन ऐसा समझकर कि सूत्रमें जब द्रौपदी ने दण्डकी तरह होकर, चैत्यवन्दन किया है तो इसी सूत्रकी प्रमाणता लेकर हमें भी इसी तरहसे प्रणाम करना चाहिये सो इस प्रकार की मान्यता उनकी ठीक नहीं है कारण कि यह चरित का ही अनुवादक है। चरितका अनुवादक वाक्य विधेयरूप से मान्य नहीं होता है। यह सूत्र चरित का अनुवादक रूप है—इसका यह भाव है कि यह वाक्य ज्ञात अर्थ का प्रदर्शक होने से पहिले जो जो बातें २ जिस २ रूपमें हो चुकी हैं उन सब का अनुवादक रूप है। “जयं चरे जयं चिद्रे” इत्यदि सूत्र की तरह यह विधि वाक्य नहीं है। इसीलिये भगवान ने प्रतिमा के पूजन और वंदना, नमन करने आदि की आज्ञा कहीं भी सूत्र में नहीं दी

ભાવાર્થ—ગમે તે શ્રાવક આમ સમજીને કે સૂત્રમાં જ્યારે દ્રીપદીએ ઠંડાકારે થઇને ચૈત્ય વંદન કર્યું છે તો આ સૂત્રને જ પ્રમાણુ સ્વરૂપ માનીને અમારે પણ આ પ્રમાણુ જ પ્રણામ કરવા જોઇએ. તો તેમની આ વાત પણ કીક કહી શકાય તેમ નથી, કેમકે આ ચરિતનો જ અનુવાદક છે. ચરિતનું અનુવાદક વાક્ય વિધેય રૂપમાં માન્ય હોતું નથી. આ સૂત્ર ચરિતનો અનુવાદક રૂપ છે. આનો ભાવ એ છે કે આ વાક્ય જ્ઞાત અર્થનો પ્રદર્શક હોવાથી જે જે વાતો જે રૂપમાં થઈ ચૂકી છે તે બધાનું અનુવાદક રૂપ છે— “જયં ચરે જયં ચિદ્વે” ઇત્યાદિ સૂત્રની જેમ આ વિધિવાક્ય નથી. એટલા માટે ભગવાને પ્રતિમાના પૂજન અને વંદન, નમન કરવા વગેરેની આજ્ઞા સૂત્રમાં

નાનિ વિધિનિષેધસાધકાનિ ભવન્તિ અન્યથા સૂર્યાદેવાદિવક્તવ્યતાયાં બહૂનાં શસ્ત્રાદિવસ્તુનામર્ચનં શ્રૂયતે ઇતિ તદપિ વિધેયં સ્યાત્' ।

અત્રેદં બોધ્યમ્—‘ ન ચ દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્રં ચૈત્યવંદનમભિહિતં સૂત્રે’
 ઇત્યાદિ વાક્યસન્દર્ભેણ ટીકાકારેણાભયદેવસૂરિણા દ્રૌપદ્યા વંદનમેવ કૃતં ન તુ પૂજનાદિકમિતિબોધયતા તાવાનેવ પાઠઃ સ્વીકૃત ઇતિ । તસ્માદ્ વિધિરૂપેણ પ્રતિ માપૂજનાય ભગવતોઽર્હત આજ્ઞા ન લભ્યતે ઇતિ વાદસ્તાવદાસ્તામ્ , ચરિતાનુવાદ-
 રૂપેણાપિ શાસ્ત્રે ભગવતાઽર્હતપ્રતિમાપૂજનં કાપિ નોક્તમિતિ સિદ્ધમ્ । एवं चायमे-
 है चरितानुवाद् रूप वाक्य में विधि और निषेध बोधकता संभवित
 नहीं होती है इसी ध्येय से “ न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेध-
 साधकानि भवन्ति ” ऐसा माना जाता है नहीं तो फिर, सूर्याभदेव
 द्वारा जिस प्रकार बहुत शस्त्र आदि वस्तुओं का पूजन करना सुना
 जाता है उसी प्रकार प्रतिमा पूजकों के लिये भी इनका पूजन विधेय
 मान लेना चाहिये ।

भावार्थ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્રં ચૈત્યવંદનમભિહિતં સૂત્રે ”
 ઇત્યાદિ વાક્ય કે દ્વારા ટીકાકાર અભયસૂરિ ને ઇતના હી પાઠ સ્વીકૃત કિયા હૈ કિ દ્રૌપદી ને સિર્ફ વંદના હી કી હૈ, પ્રતિમાપૂજન નહીં
 હસલિયે હસસે યહ વાત સિદ્ધ હો જાતી હૈ જય ચરિતાનુવાદ રૂપ સે
 બી શાસ્ત્ર મેં કહીં બી ભગવાન ને અર્હત કી પ્રતિમા કા પૂજન નહીં
 કહા હૈ । તવ વિધિરૂપ સે પ્રતિમા પૂજન કે લિયે ભગવાન અર્હત કી
 આજ્ઞા હૈ એસી માન્યતા કોરી કલ્પનામાત્ર હી હૈ । હસ પ્રકાર સ્થાનક-

કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી. ચરિતાનુવાદ રૂપ વાક્યમાં વિધિ અને નિષેધ
 બોધકતા સંભવિત થતી નથી. આ ધ્યેયથી (ન ચ ચરિતાનુવાદવચનानि विधि-
 निषेधसाधकानि भवन्ति) એમ માનવામાં આવે છે. નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ
 વડે જેમ ઘણાં શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સંભળાય છે તેમજ
 પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમાં માની લેવી બેઠબે.

ભાવાર્થ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્રં ચૈત્યવંદનમભિહિતં સૂત્રે ”
 વગેરે વાક્ય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો
 છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વંદના જ કરી છે, પ્રતિમા પૂજા નાહ. એથી આ વાત
 સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે બ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમાં
 કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હતની પ્રતિમાના પૂજન વિધે કહ્યું નથી. ત્યારે
 વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા
 ફક્ત કલ્પના માત્ર જ છે. આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયની આ માન્યતા

તદ્રૂપઃ સ્થાનકવાસિનાં સિદ્ધાન્તઃ શાસ્ત્રાનુકૂલઃ સત્ય ઇતિ નિશ્ચીયતામ્ । અર્હદ્વન્દ-
નમપિ દ્રૌપદ્યા ન કૃતમિત્યગ્રે સપ્રમાણં નિરૂપયિષ્યામઃ ।

કિં ચ—પ્રતિમાપૂજકાનાં પ્રમાણભૂતે મહાનિશ્ચયસૂત્રેઽપિ ‘પ્રતિમાપૂજાયાઃ
સાવચતયા તદર્થં ત્રિનાલયવિધાનં સાવચં ભવતીતિ મત્વા દ્રવ્યલિંગિભિઃ પૃષ્ઠેન
કુવલયપ્રભનામ્નાડનગારેણ નિગદિતં સાવચમિદં નાહં વાઙ્માત્રેણાપિ કુર્વે’ ઇતિ ।
તદેવમનેન મળતાસતા તીર્થંકરનામગોત્રં કર્મર્જિતમ્ । એકમવાવશેષીકૃતશ્ચ
મ્ભોદધિઃ । તતસ્તૈઃ સર્વૈરેકમતં કૃત્વા તસ્ય સાવચાચાર્ય ઇતિ નામ દત્તં પ્રસિ-
દ્ધિનીતં ચ । ઇતિ પ્રતિબોધિતમ્ ।

વાસી સંપ્રદાય કી યહ માન્યતા નિર્દોષ એવં શાસ્ત્રાનુકૂલ ઓર સત્ય હૈ
કિ અર્હંત કી પ્રતિમા બનાકર પૂજના શાસ્ત્ર હિતમાર્ગ સે વિપરીત માર્ગ
હૈ । અર્હંત કી પ્રતિમા કી વન્દના ખી દ્રૌપદી ને નહીં કી હૈ ઇસ વાત
કો ખી હમ આગે પ્રમાણ દેકર પુષ્ટ કરેમે ।

કિન્ચ—પ્રતિમાપૂજકોં દ્વારા પ્રમાણરૂપ સે સ્વીકૃત મહાનિશ્ચય સૂત્ર
મેં ખી યહી સમજાયા ગયા હૈ કિ પ્રતિમાપૂજન સ્વયં એક સાવચકર્મ હૈ,
ઉસકે નિમિત્ત જનાલય આદિ બનવાના ખી સાવચકર્મ હૈ । એસા સમ-
જ્ઞકર—કુવલયપ્રભનામક આચાર્ય ને દ્રવ્ય લિંગિયોં દ્વારા પૂછે જાને પર
યહી ઉત્તર દિયા હૈ કિ યે સચ સાવચકર્મ હૈ, મેં અપને વચનોં સે ખી
ઇસ વિષય કા જરા ખી મંડન નહીં કર સકતા હું ” ઇસ પ્રકાર કહને
વાલે ઉન કુવલયપ્રભનામક આચાર્યને તીર્થંકર નામ ગોત્ર કર્મ ઉપાર્જન
કરકે એકમવાવતારી બને । સાવચકર્મ નિષેધ કરને વાલે હોને સે

નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્રાનુકૂલ અને સત્ય છે કે અર્હંતની પ્રતિમા બનાવીને પૂજવી
શાસ્ત્રવિહિત માર્ગથી ઉલટો માર્ગ છે અર્હંતની પ્રતિમાની વંદના પણ દ્રૌપ-
દીએ કરી નથી, આ વાતને પણ અમે આગળ સપ્રમાણસિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કરીશું.

અને બીજું પણ કે—પ્રતિમા પૂજકો વડે પ્રમાણ રૂપે સ્વીકૃત મહાનિશ્ચય
સૂત્રમાં પણ એ જ વાત સમજાવવામાં આવી છે કે પ્રતિમા પૂજન બાદે એક
સાવચ કર્મ છે. તેના નિમિત્તે જનાલય વગેરે બનાવવા તે પણ સાવચ કર્મ છે,
એમ બીજીને જ કુવલયપ્રભ નામના આચાર્યે દ્રવ્યલિંગિઓ વડે પૂછાએલા
પ્રશ્નના ઉત્તરમાં આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે કે આ બધું સાવચકર્મ છે. હું મારા
વચનોથી પણ આ વિષયનું જરાય પણ મંડન કરી શકું તેમ નથી. આ રીતે
કહેનાર તે કુવલયપ્રભ નામક આચાર્યે તીર્થંકર નામ ગોત્રકર્મ ઉપાર્જન કરીને
એકલવાવતારી બન્યા. સાવચકર્મ નિષેધ કરનાર હોવાથી તે ચૈત્યવાસીઓએ

भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतमं प्रति कथयति—

४१५

भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतमं प्रति कथयति—‘अस्या ऋषभादिचतुर्विंशतिकायाः प्राक् अतीतकालेन याऽतीता चतुर्विंशतिका, तस्यां मत्सदृशः सप्तहस्त-तनुर्धर्मश्रीनामा चरमतीर्थङ्करो बभूव, तस्मिंश्च तीर्थङ्करे सप्ताश्वर्याणि अभूवन् । असंयतपूजायां प्रवृत्तायामनेके श्रद्धेभ्यो गृहीतद्रव्येण स्वस्वकारितचैत्यनिवासि-नोऽभूवन्, तत्रैको मरकतच्छविः कुवलयप्रभनामाऽनगारो महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यगणपरिवृतः समागात्, तैर्वन्दित्वोक्तम्, तदेव तत्रत्यप्रकरणं प्रदर्श्यते, तथा हि—महानिशीथसूत्रे पञ्चमाध्ययने—

जहा णं भयवं ! जह तुममिहाइ एगवापारत्तियं चाउम्मासियं पउंजियंताण-मिच्छाए अणेगे चेइयालाया भवंति नूणं तज्झाणणत्तीए. ता कीरउ अणुगहमम्हाणं उन चैत्यवासियों ने मिलकर उनका नाम ‘सावधाचार्य’ रख दिया, और प्रसिद्ध भी कर दिया । जैसे—भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कहते हैं—इस ऋषभादि चौबीसी के पहले भूतकालमें जो चौबीसी होगई है उस चौबीसीमें मेरे जैसा सात हाथप्रमाण शरीर वाला धर्म श्री नामका अंतिम तीर्थकर हो गया है, उस तीर्थकर के समयमें सात आश्रय हुए थे, उनमें “असंयतपूजा” नामका एक आश्रय था । उस असंयतपूजाकी प्रवृत्ति होनेपर बहुतसे साधु श्रावकों के पैसों से अपने अपने बनवाये हुवे चैत्योंमें निवास करते थे अर्थात् चैत्यवासी हो गये थे, वहां पर एक श्याम कांतिवाले कुवलयप्रभ नाम के मुनि महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यपरिवार सहित पधारे थे, उनको उन चैत्यवासियों ने वंदना कर के जो कहा सो इस प्रकार है । जिस पाठ का यह कथानक है वह पाठ इस प्रकार है—

तेमनुं नाम “सावधाचार्य” ओ प्रभाणे राखुं अने प्रसिद्ध पणु कथुं. जेमडे लगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतमने कडे छे के—आ ऋषभादि चौबी-सीना पडेला भूतकालमां जे चौबीसी थछ गछ छे ते चौबीसीमां मारा जेवा सात हाथ प्रभाणु शरीरवाणा धर्मश्री नामना छेदला तीर्थकर थछ गया छे. ते तीर्थकरना समयमां सात आश्रयों थथा हुता, तेमां “असंयतपूजा” नामनुं ओक आश्रय हुतुं ते असंयत पूजाणी प्रवृत्ति थछ त्यारे अनेक साधु-श्रावकेना पैसाथी पोतपोताना माटे अनावरावेला चैत्येमां वास करता हुता अर्थात् चैत्यवासी थछ गया हुता. त्यां ओक श्याम वर्णवाणा कुवलयप्रभ नामना मुनिमहाराज के जेओ महा तपस्वी, उग्र विहारी हुता, तेओ पोताना शिष्य परिवार सहित त्यां पधार्या हुता तेमने ते चैत्यवासीओओ वंदना करीने जे कहुं ते आ प्रभाणे छे—

इहेव चाउम्मासियं । ताहे भणियं तेण महानुभागेणं - गोयमा ! जहा भो भो पियंवए ! जइ वि जिणालए तहा वि सावज्जमिणं णाहं वायामित्तेणं पि आयरिज्जा । एवं च समयसारपरं तत्तं जइद्वियं अविपरीतं णीसंकं भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंणीं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा ! आसंकलियं तित्थयर-
नामकम्मगोयं तेणं कुवलयप्पमेणं, एगभवानसेसीकओ भवोयही ॥ इति ।

छाया-यथा खलु भगवन् ! यदि त्वमिहापि एकवर्षारात्रिकं चातुर्मासिकं प्रयो-
क्तुणामिच्छया अनेके चैत्यालया भवन्ति नूनं । तद्ध्ययानाज्ञप्त्या तस्मात् करोतु
अनुग्रहमस्माकम् इहैव चातुर्मासिकम् । तदा भणितं तेन महानुभागेन - गौतम !
यथा भो भो पियंवदाः ! यद्यपि जिनालयः, तथापि सावधमिदं नाहं बाह्मात्रे-
णापि आचरामि । एवं च समयसारपरं तत्त्वं यथास्थितम् अविपरीतं निःशङ्कं
भणता तेषां मिथ्यादृष्टिलिङ्गिनां साधुवेषधारिणां मध्ये गौतम ! आसंकलितं तीर्थ-
करनामकर्मगोत्रं तेन कुवलयप्रमेण एकभवान्वशेषीकृतो भवोदधिः ॥ इति

“जहा णं भयवं ? जइ तुमभिहाइ एकवासारत्तियं चाउम्मा-
सियं पउंजियंताणमिच्छाए अणेगे चेइयालया भवन्ति नूनं तज्झाण-
णत्तीए, ता कीरउ अणुगहम्महाणं इहेव चाउम्मासियं । ताहे भणियं
तेण महानुभागेणं गोयमा ! जहा भो भो पियंवए जइवि जिणालए
तहा वि सावज्जमिणं णाहं वायामित्तेणं पि आयरिज्जा । एवं च
समयसारपरं तत्तं जइद्वियं अविपरीतं णीसंकं भणमाणेण तेसिं मिच्छदि-
ट्ठिलिंणीं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा ! आसंकलियं तित्थयरनाम-
गोत्तं तेणं कुवलयप्पमेणं एगभवान्वसेसीकओ भवोयही । इति (महा-
निशीथ पञ्चम अध्ययन) इस सूत्रका भावार्थ इस प्रकार है-

हे भगवन् ! आप यहां एक वर्षारात्रिक चारमहिने ठहरे

“जहा णं भयवं ! जइ तुमभिहाइ एकवासारत्तियं चाउम्मासियं पउं-
जियंताण मिच्छाए, अणेगे चेइयालया भवन्ति नूनं तज्झाणत्तिए ता कीरउ
अणुगहम्महाणं इहेव चाउम्मासियं । ताहे भणियं तेण महानुभागेणं गोयमा ।
जहा भो भो पियंवए जइवि जिणालए तहावि सावज्जमिणं णाहं वायामित्तेणं
पि आयरिज्जा । एवं च समयसारपरं तत्तं जइद्वियं अविपरीतं णीसंकं
भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंणीं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा ! आसंकलियं
तित्थयरनामगोत्तं तेणं कुवलयप्पमेणं एगभवान्वसेसीकओ भवोयही । इति
(महानिशीथ पञ्चम अध्ययन) आ सूत्रने भावार्थ आ प्रमाणे छे डे-डे भगवन् !

મહાનગરધર્માનુસંધિની ટીકા અંક ૧૬ પ્રૌઢદીક્ષણી

૫૧૭

હેમગવન ! હવે યદિ યથા સ્થલુ ત્વમ્ એકવર્ષારાત્રિકં ચાતુર્માસિકં તિષ્ઠસિ પ્રયોક્તૃણામ્=પ્રવર્તકાનામ્ ઇચ્છયા-આજ્ઞયા અનેકે ચૈત્યાલયા નૃણાં ભવન્તિ=ભવિષ્યન્તિ, તત્ તસ્માદ્ નિવાસાર્થમાજ્ઞામુપાદાય હૈવ ચાતુર્માસિકં કુરુ તાવદસ્માક-મનુગ્રહં કુરુ ભવદીયાજ્ઞયા બહવશ્ચૈત્યાલયાં ભવિષ્યન્તિ। તતશ્ચાસ્માકમુપકારઃ ક્રિયા-તામિતિ ભાવઃ । તદા તેષાં સાવચ્છપૂજાર્યાં પ્રવૃત્તાનાં દ્રવ્યલિજ્ઞિનાં વચનં શ્રુત્વા તેન મહાનુભાવેન કુવલયપ્રભનાસ્નાડનગારેણ મણિતમ્=ઉક્તમ્, યથા-ઓ ઓ પ્રિય-વદાઃ । ઓ દેવાનુપ્રિયાઃ । યદ્યપિ જિનાલયઃ, તથાપિ સાવચ્છમિદં જિનભવને કૃતે

-અર્થાત્ યહીં પર ચૌમાસા વ્યતીત કરેં । પ્રવર્તકોં કી આજ્ઞા સે યહાં પર અનેક ચૈત્યાલય બન જાયેંગે । હસ લિયે આપ યહીં પર ચૌમાસા વ્યતીત કરને કા અનુગ્રહ કરેં । હમારે ઉપર આપકા બડા હી અનુગ્રહ હોગા । આપકે ઉપદેશ સે નિશ્ચય સમક્ષિયે અનેક ચૈત્યાલયોં કા નિર્માણ હો જાયગા । હસ પ્રકાર સે ડન દ્રવ્યલિગિયોં સે પ્રાર્થિત હોને પર મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ આચાર્ય ને કહા કિ હે દેવા-નુપ્રિય ! યદ્યપિ તુમ જિનાલય કે વિષય મેં કહતે હો-પરન્તુ-મેં હસ કાર્ય કો કરવાને મેં શ્રેય નહીં દેલતા હું-કારણ કિ યહ સાવચકાર્ય હૈ જિન ભવન બનવાના ઓર ડસકે બનવાને કી પ્રેરણા કરના હન ડોનોં પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિયોં મેં પૃથિવીકાય આદિ હહ પ્રકારકે જીવોં કી વિરાધના હોતી હૈ હસી પ્રકાર સે પૂજન કરને મેં બી ષટ્કાય કે જીવ-નિકાયોં કા આરંભ અવશ્યંભાવી હૈ । હસલિયે અનેક પ્રકાર કે ષટ્-કાય કે જીવોં કે વિધાત કા હેતુ હોને સે પૂજન કે નિમિત્ત બી જિન ભવન કા બનવાના સાવચતર કાર્ય હૈ એસે સાવચતર કાર્ય કા મેં કિસી બી પ્રકારસે ઉપદેશ નહીં ડુંગા । મેં કમી બીએસા ઉપદેશ નહીં ડુંગા કિ

તમે અહીં એકવર્ષારાત્રિક-ચાર માસ-રોકાઓ-એટલે કે અહીં તમે ચોમાસું પુરું કરો. પ્રવર્તકોની આજ્ઞાથી અહીં ઘણા ચૈત્યાલયો બની જશે. એથી તમે અહીં જ ચોમાસું પુરું કરવાની કૃપા કરો, અમારા ઉપર તમારો ભાર અનુગ્રહ થશે. તમારા ઉપદેશથી અમને ચોક્કસ ખાતરી છે કે ઘણા ચૈત્યાલયોનું નિર્માણ થઈ જશે. આ રીતે દ્રવ્ય લિંગિઓની પ્રાર્થના સાંભળીને મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ આચાર્યે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો કે તમે જિનાલયના વિષે કહેા છો, પણ મને આ કામ કરાવવામાં શ્રેય લાગતું નથી, કેમકે આ સાવચકર્મ છે. જન-ભવન બનાવવું અને તેને બનાવવાની પ્રેરણા આપવી આ બંને જાતની પ્રવૃત્તિઓમાં પૃથિવિકાય વગેરે છ જાતના જીવોની વિરાધના થાય છે આ રીતે પૂજા કરવામાં પણ ષટ્કાયના જીવનિકાયોનો આરંભ અવશ્યંભાવી છે. એટલા માટે ઘણી જાતના ષટ્કાયના જીવોના વિધાતના માટે હેતુરૂપ હોવા બદલ પૂજના માટે પણ જનભવન બનાવવું સાવચતર કાર્ય છે. એવા સાવચતર કાર્ય

કારિતે ચ પૃથિવીકાયાદિષ્ઠ્ઠીવનિકાયવિરાધના, તથૈવ જિનપૂજાયામપિ તસ્માત્ પૂજાર્થકત્વાજ્જિનભવનવિધાનં સાવચ્છતરં, બહુતરપદ્ધકાયજીવોપધાતહેતુત્વાત્ નાહં વાહ્માત્રેણાઽપિ ઉપદેશદાનરૂપેણ વાચ્યોગમાત્રેણાપિ આચરામિ=કુર્વે જિનાલયં કર્તુ-મુપદેશં ન કરિષ્યામીત્યર્થઃ । एवं च=अनेन प्रकारेण, समयसारपरं शास्त्रसिद्धान्त-साराऽशेषश्रेष्ठं तत्त्वं त्रिकरणत्रियोगैः प्राणातिपातो वर्जनीय इत्यादिरूपं यथास्थितं यथावस्थितस्वरूपं प्रमाणभूतं, अविपरीतं=त्रिपर्ययज्ञानाविषयं, निश्शङ्कं=संशयवर्जितं वचनं भणता=कथयता, तेषां मिथ्यादृष्टिलिङ्गिनां मिथ्यादृष्टयः कुतीर्थिकास्तद्वज्जी-वोपधातकारिणांसाधुवेषधारिणां=मध्ये हे गौतम ! आसंकलितम्=सम्पक् संश्र-हीतम् उपार्जितमित्यर्थः । किमुपार्जितमित्याह-तीर्थकरनामगोत्रं तेन कुवलयप्र-भेण, एकभवावशेषो कृतो भवोदधिः । सुगममेतत् ।

जिस में जिनालय बनवाने का विधान हो । इस प्रकार प्रवचन सिद्धान्त की सारभूत वस्तुस्थिति को यथार्थ रूप से विना किसी संकोच के प्रकट करने वाले उन मुनिराज ने उन साधुवेष धारी द्रव्यलिंगियों के बीच कि जो मिथ्यादृष्टियों की तरह जीवों की हिंसा करने में प्रवृत्त थे उनके सामने इस प्रकार शुद्ध प्ररूपणा करनेसे हे गौतम ! तीर्थकर नाम गोत्र कर्म का बंध किया-और संसार भी उनका एक भव मात्र बाकी रह गया इस उद्घरण से यही समझना चाहिये-कि जब प्रतिमा पूजन के लिये भी मंदिर बनवाना सावद्य कर्म है और इस सावद्यकार्य का उपदेश देना भी साधु के लिये वर्जनीय है-इसी अभिप्राय से कुवलयप्रभ सूरि ने इस कार्य का निषेध किया-इस निषेध से उन्हें तीर्थकर नाम-गोत्र कर्म का बंध हुआ और संसार भी उनका एक भव मात्र बाकी बचा-तो फिर सर्व प्रकार से सावद्य कर्मों का परित्याग

માટે હું કોઈ પણ રીતે ઉપદેશ આપવા તૈયાર નથી, હું આ જાનને ઉપદેશ કોઈપણ વખતે આપવા તૈયાર નથી કે જેમાં જીનાલય બનાવવાનું વિધાન સરખું હોય. આ રીતે પ્રવચન સિદ્ધાંતની સારભૂત વસ્તુસ્થિતિને સાચા રૂપમાં વગર કોઈ પણ જાતના સંકેતે-પ્રગટ કરનારા તે મુનિશાસ્ત્રે તે સાધુ વેષધારી દ્રવ્ય લિંગિઓની સામે કે જેઓ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળાઓની જેમ જીવોની હિંસા કરવામાં પ્રવૃત્ત હતા-શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરી. આ રીતે શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવાથી હે ગૌતમ ! તીર્થકર નામ-ગોત્રકર્મનો બંધ કયો અને સંસાર પણ એક ભવ જેટલો જ શેષ રહ્યો. આ ઉદાહરણથી આપણે એજ વાત સમજવી જોઈએ કે જ્યારે પ્રતિમા પૂજન માટે પણ મંદિર બનાવવું સાવધકર્મ છે અને આ સાવધકાર્યનો ઉપદેશ કરવો પણ સાધુના માટે ત્યાજ્ય છે. આ હેતુથી જ કુવલયપ્રભસૂરીએ આ કાર્યનો નિષેધ કયો છે. આ નિષેધથી તેમને તીર્થકર

જૈનગાર્ધમામૃતઘષિણી ટીકા અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૪૧૨

અત્રેદં બોધ્યમ્—યત્ર પ્રતિમાપૂજાર્થ ક્રિયમાણસ્ય જિનાલયસ્ય વાચોપદેશકરણં સાવધમિતિ જાનતા તત્પરિવર્જને કૃતે તીર્થકર નામગોત્રં કર્મ સમુપાર્જિતં, તત્ર સર્વથા સાવધમાર્ગે પરિવર્જયતાં સર્વપ્રાણિરક્ષણાર્થમહિંસાધર્મં સર્વતઃ પ્રચારયતાં પ્રવચન-સિદ્ધાન્તસારં વિજાનતાં સંયમમાર્ગે પ્રવૃત્તિમતાં સમ્યક્ત્વશુદ્ધિમતાં પ્રતિમાપૂજામકુર્વતાં તન્નિષેધયતાં કિં નામાત્મનઃ કલ્યાણકરં કાર્યમવશિષ્ટમ્, ઇતિ ।

અથ વિવાહસમયે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવતી નાસોદિતિ ઘર્ષ્યતે—જૈનાગમાનાં વિદ્વાંસઃ=સમ્યગિદં વદન્તિ—સનિદાનસ્ય જીવસ્ય નિદાનફલપ્રાપ્તિર્યાવન્ન ભવતિ, તાવદસૌ સમ્યક્ત્વવશ્ચિતો જૈનધર્માદ્ દૂર એવાવતિષ્ઠતે ।

કરને વાળે, સમસ્ત પ્રાણિયોં કો રક્ષા કે નિમિત્ત અહિંસાધર્મ કા પ્રચાર કરને વાળે, પ્રવચન સિદ્ધાન્ત કે સાર કો જાનને વાળે, સંયમમાર્ગ મેં પ્રવૃત્તિ વાળે, સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ સે વિશિષ્ટ ઓર પ્રતિમા કી પૂજા નહીં કરને વાળે એવં ઉસકા નિષેધ કરને વાળે એસે સંયમિયોં કા અથ ઓર કૌનસા એસા કાર્ય બાકો રહા હૈ જો ઉનકી આત્મા કે લિયે કલ્યાણ કા સાધન ન હો ।

અથ યહાં હસ બાત કા વર્ણન કિયા જાતા હૈ કિ વિવાહ કે સમય દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવાલી નહીં થી ।

જૈન આગમોં કા ખલીખાંતિ પરિશીલન કરને વાળે વિદ્વાન હસ બાતકો અચ્છી તરહ જાનતે હૈં કિ જિસ જીવ ને જો નિદાન કિયા હૈ—જયતક ઉસકે ફલ કી પ્રાપ્તિ ઉસ જીવ કો નહીં હો જાતી—તયતક વહ જીવ સમ્યક્ત્વ સે વંચિત રહકાર જિનધર્મ સે દૂર હી રહતા હૈ ।

નામ—ગોત્ર કર્મનો બંધ થયો અને સંસાર પણ તેમને માટે બેકલબ બેટ-લો જ શેષ રહ્યો હતો. તે પછી સર્વ રીતે સાવધકર્મોના પરિત્યાગ કરનારા બધા પ્રાણીઓની રક્ષાના નિમિત્તે અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા પ્રવચન સિદ્ધાંતના સારને બાણનારા, સંયમ માર્ગમાં પ્રવૃત્તિ કરનારા, સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિથી વિશિષ્ટ અને પ્રતિમા પૂજા નહિ કરનારા અને તેને નિષેધ કરનારા એવા સંયમીઓનું એવું કયું કામ શેષ રહ્યું છે કે જે તેમના આત્માના કલ્યાણનું સાધનરૂપ ન હોય ?

હવે અહીં આ વાતનું વર્ણન કરવામાં આવે છે કે લક્ષના વખતે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવાળી ન હતી

જૈન આગમોં સારી રીતે પરિશીલન કરનારા વિદ્વાનો આ વાતને સારી પેઠે બોલે છે કે જે જીવે જે નિદાન કયું છે—બધાં સુધી તેના ફળની પ્રાપ્તિ તે જીવને થઈ જતી નથી ત્યાં સુધી તે જીવ સમ્યક્ત્વથી વંચિત રહીને જન-ધર્મથી દૂર રહે છે.

“ પુત્રવક્યનિયાયેણં ચોદ્વજમાણી ૨ જેણેવ પંચ પંડવા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્વ, ઉવાગચ્છિત્તા તે પંચ પંડવે તેણં દસદ્વવળ્ણેણં કુસુમદામેણં આવેદિયપરિવેદિયં કરેદ્, કરિત્તા, एवं वयासी-एए णं मए पंच पंडवा वरिया । ” इति सूत्रपाठ प्रामाण्याद् विवाहसमये पूर्वकृतनिदानाधीनतया सम्यक्त्वरहित्यं द्रौपद्या आसीत् अतस्तस्यास्तदानीं श्राविकात्वं न सिध्यति युगपत् पञ्चानां पतीनां वरणेन तस्याः पूर्वसंस्कारोदयवशाद् विपुलसुखभोगलालसाऽपि स्वाभाविकी, अतः सा कौमारे वयसि श्राविका नासीदिति युक्तिसिद्धस्यार्थस्यापलापः केन शक्यते कर्तुम् ।

द्रौपदी कस्य पूजनं कृतवतीति जिज्ञासायां निर्णीयते—

“ પુત્રવક્યનિઢ્વાળેણં ચોદ્વજમાણી ૨ જેણેવ પંચ પંડવા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્વ, ઉવાગચ્છિત્તા તે પંચ પંડવે તેણં દસદ્વવળ્ણેણં કુસુમદામેણં આવેદિય પરિવેદિયં કરેદ્ । કરિત્તા एवं वयासी-एए णं मए पंच पंडवा वरिया ” इस प्रकार के इस प्रमाणिक सूत्र पाठ से यह स्पष्टरीति से विदित हो जाता है कि विवाह के समय पूर्वकृत निदान के अधीन होने से द्रौपदी सम्यक्त्व रहित थी इसी लिये उस समय उस में श्राविकापना भी सिद्ध नहीं होता है । तथा एक ही साथ पांच पांडवों को पतिरूप से वरण करने से उसके पूर्व संस्कार के उदय से विपुल सुख भोगने की लालसा भी स्वभाविकी ज्ञात होती है इसलिये वह कुमार अवस्था में श्राविका नहीं थी इस युक्ति सिद्ध अर्थ का अपलाप कौन कर सकता है !

द्रौपदी ने किस की पूजा की इस प्रकार की जिज्ञासा होने पर

“ પુત્રવક્યનિયાળેણં ચોદ્વજમાણી ૨ જેણેવ પંચ પંડવા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્વ, ઉવાગચ્છિત્તા, તે પંચ પંડવે તેણં દસદ્વવળ્ણેણં કુસુમદામેણં આવેદિયપરિવેદિયં કરેદ્ । કરિત્તા एवं वयासी-एए णं मए पंच पंडवा वरिया ”

આ જાતના આ પ્રામાણિક સૂત્રપાઠથી આ સ્પષ્ટ રૂપમાં માલુમ થઈ જાય છે કે લક્ષના વખતે પૂર્વકૃત નિદાનને સ્વાધીન હોવાને કારણે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વ રહિત હતી. એટલા માટે તે સમયે તેમાં શ્રાવિકાપણું સિદ્ધ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એકી સાથે પાંચે પાંડવોને પતિરૂપમાં વરણ કરવાથી તેના પૂર્વ સંસ્કારોના ઉદયથી વિપુલ સુખ ભોગવવાની ઇચ્છા પણ સ્વાભાવિકી માલુમ થાય છે. એથી તે કુમાર અવસ્થામાં શ્રાવિકા હતી નહિ. આ યુક્તિ અર્થનો પરિહાર કોણ કરી શકે તેમ છે.

દ્રૌપદીએ કોની પૂજા કરી ? આ જાતની જિજ્ઞાસાને સામે રાખીને ટીકા-

મનનારધમાંમૃતવર્ષિની ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૪૨૧

અલ્પહસૌભાગ્યપ્રચુરભોગકામનયા કામદેવસ્યૈવ પૂજનં તદાનીમુપપદ્યતે ।
કામપૂજનં વિવાહોત્સવે વિસ્તરતો ભવતીતિ લોકે પ્રસિદ્ધમસ્તીતિ પ્રતિમાપૂજકોઽપિ
શ્રી વર્ધમાનસૂરિઃ પ્રોક્તવાન । સ્પષ્ટં ચૈતત્ તદ્વિગ્રચિતે આચારદિનકરે દ્વિતીય-
વિભાગે—“ પરસમયે ગણપતિકન્દર્પસ્થાપનમ્ । ગણપતિકન્દર્પસ્થાપનં સુગમં
લોકપ્રસિદ્ધમ્ । ” ઇતિ ।

ટીકાકાર નિર્ણય કરતે હૈં—

અલ્પહસૌભાગ્ય એવં પ્રચુર ભોગ કી ઇચ્છા સે કામદેવ કા હી
પૂજન ઉસ સમય દ્રૌપદી ને કિયા હૈ—યહી બાત સંગત બૈઠતી હૈ । લોક
મૈં બી યહી વ્યવહાર દેખા જાતા હૈ કિ વિવાહ કે સમય અચ્છી તરહ
ગાજે ઘાજે કે સાથ કામ દેવકા પૂજન લોગ કિયા કરતે હૈં । ઇસ બાત
કો વર્ધમાન સૂરિ બી જો પ્રતિમાપૂજન કે પક્ષપાતી હૈં સ્વીકાર કરતે
હૈં ઓર એસા હી કહતે હૈં । ઇસી બાત કા સ્પષ્ટીકરણ ઁઁહોં ને સ્વનિ-
ર્મિત આચારદિનકર કે દ્વિતીય વિભાગ મૈં કિયા હૈ—વે લિખતે હૈં કિ-
—“ પરસમયે ગણપતિકન્દર્પસ્થાપનમ્ । ગણપતિકન્દર્પસ્થાપનં સુગમં
લોકપ્રસિદ્ધમ્ ” ઇતિ ।

લૌકિક શાસ્ત્રમૈં ગણપતિ એવં કંદર્પ (કામદેવ) કી સ્થાપના હોતી
હૈ અતઃ ગણપતિ ઓર કન્દર્પકા સ્થાપન કરના સુગમ ઓર લોકપ્રસિદ્ધ હૈ ।

કાર નિર્ણય કરતાં કહે છે કે—

અખંડ સૌભાગ્ય તેમજ પ્રચુર ભોગની ઇચ્છાથી જ તે સમયે દ્રૌપદીએ
કામદેવનું જ પૂજન કર્યું છે, આ વાત જ ચોગ્ય લાગે છે. લોકમાં પણ આ
બાતને જ વહેવાર બેવામાં આવે છે કે લગ્નના વખતે વાળંબોની સાથે સારી
રીતે કામદેવનું પૂજન લોકો કરતા રહે છે. આ વાતને વર્ધમાનસૂરિ પણ કે
બેઓ પ્રતિમા પૂજનના તરફદાર છે—સ્વીકાર કરે છે અને આ પ્રમાણે જ કહે
છે. આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ તેમણે સ્વનિર્મિત આચાર દિનકરના બીજા વિભા-
ગમાં કર્યું છે. તેઓ લખે છે કે—

“ પરસમયે ગણપતિકન્દર્પસ્થાપનમ્ । ગણપતિકન્દર્પસ્થાપનં સુગમં લોક
પ્રસિદ્ધમ્ ” ઇતિ ।

લૌકિક શાસ્ત્રમાં ગણપતિ અને કંદર્પ (કામદેવ) ની સ્થાપના થાય છે. તેથી
ગણપતિ કંદર્પની સ્થાપના કરવી તેજ સુગમ અને લોકપ્રસિદ્ધ છે.

“जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ” अत्र जिनशब्दः कामदेवपरः । जिनशब्दस्य बहवोऽर्थाः कोशादौ प्रसिद्धाः सन्ति । यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव, जिनः सामान्यकेवली ।

कन्दर्पोऽपि जिनश्चैव, जिनो नारायणो हरिः ॥ इति (हैमी नाममाला)

विजयगच्छीयः श्रीगुणसागरसूरिरपि ढालसागरनामके काव्ये षष्ठखण्डे द्रौपद्याः पूज्यदेवं निर्णीतवान् । उक्तं च तेन—

करि पूजा कामदेवनी भांखे द्रुपदी नार ।

देव दया करी मुझने भलो देजो भरतार ॥ १ ॥

अर्हन् सकलकर्म कषायमोहपरीपहान् जयतीति जिन उच्यते । सामान्य

“जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ” इस सूत्र में जिन शब्द जिनेन्द्र भगवान का वाचक नहीं है, किन्तु कामदेव का वाचक है क्यों कि जिन शब्द के अनेक अर्थ कोषादिक ग्रन्थों में प्रसिद्ध हैं—यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव जिनः सामान्यकेवली ।

कन्दर्पोऽपि जिनश्चैव जिनो नारायणो हरिः ॥

इति (हैमीय नाममाला)

विजय गच्छीय श्री गुणसागर सूरि ने भी “ढालसागर” नाम के काव्य में छठवें खंड में द्रौपदी के आराध्य देव का निर्णय किया है । उन्होंने लिखा है—

करि पूजा कामदेव नी भांखे द्रुपदी नार ।

देव ! दया करी मुझने भलो देजो भरतार ॥१॥

इस सूत्र में अर्हन्त भगवान को ‘जिन’ इसलिये कहा गया है

“जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ”

आ सूत्रमां एन शण्ड एनेद्र भगवानने वायक नथी पणु कामदेवने वायक छे केमके एन शण्डोना घणु अर्थो कोष वजेरे ग्रन्थोमां प्रसिद्ध छे केमके—

अर्हन्नपि जिनश्चैव जिनः सामान्यकेवली ।

कन्दर्पोऽपि जिनश्चैव जिनो नारायणो हरिः ॥ इति (हैमीय नाममाला)

विजयगच्छीय श्री गुणसागरसूरिओ पणु ‘ढालसागर’ नामना काव्यना छुवा अंडमां द्रौपदीना आराध्यदेवने निर्णय करतां तेमणे कहुं छे के—

करि पूजा कामदेवनी भांखे द्रुपदिनार ।

देव ! दया करी मुझने भलो देजो भरतार ॥ १ ॥

आ सूत्रमां अर्हन्त भगवानने ‘एन’ ओटला भाटे कथा छे के तेमणे

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટીકા જા. ૧૬ દ્રૌપદીચર્ચા

૪૨૩

કેવલી ઘનઘાતકકર્મચતુષ્ટયં જયતીતિ જિન ઉચ્યતે । વિષ્ણુઃ સ્વભુજવલેન સ્વખંડ-
ત્રયં જયતીતિ જિન ઉચ્યતે । જિનશબ્દસ્ય કામદેવોઽર્થશ્ચાપિ સંગતઃ, યતઃ સંસારિ-
ણાં કામદેવવશવર્તિત્વેન લોકજયકારિત્વાઙ્ગિનત્વં કામસ્યોપપદ્યતે । રૂપરહિત-
સ્યાપિ સિદ્ધસ્ય પ્રતિમાં પૂજ્યત્વેન શાસ્ત્રાનુક્તામપિ પ્રતિમાપૂજકાઃ પ્રકલ્પયન્તિ,
તદ્વદનઙ્ગસ્યાપિ કામસ્ય લૌકિકશાસ્ત્રપ્રસિદ્ધ તદ્વચાનમનુસૂત્ય પ્રતિમા પ્રકલ્પયત ઇતિ

કિં ઉન્હાં ને સમસ્ત કષાય, કર્મ, મોહ ઓર પરીષર્હોં કો જીતા હૈ । સામાન્ય કેવલી 'જિન' હસલિયે કહે ગયે હૈં કિં ઉન્હોં ને ચાર ઘનઘા-
તિયા કર્મોં કો અપની આત્મા સે સમૂલ નષ્ટ કર દિયા હૈ । વિષ્ણુ 'જિન' હસલિયે કહલાયે કિં ઉન્હોં ને અપને ભુજવલ સે ભરતરખંડ
કે છહ્ છંડોં મેં સે ત્રીન છંડોં કો અપને વશ કિયા હૈ હસી લિયે યે
અર્દ્ધચક્રી ભી કહલાતે હૈં । કામદેવ કો 'જિન' હસ લિયે કહા ગયા હૈ
કિં હસકે વશ સમસ્ત ત્રિલોક હૈ ત્રિલોક મેં કોઈ ભી પ્રાણી એસા નહીં
બચા કિં જિસે હસ ને અપને વશ મેં ન કિયા હો ।

શંકા—દ્રૌપદી ને કામદેવ કી મૂર્તિ કી પૂજા કી—આપ કી ઘઠ
વાત ઉસ સમય માની જા સકતી—જષ કિં કામદેવ કી મૂર્તિ ઘન
સકતી હોતી ? પરન્તુ કામદેવ કી મૂર્તિ તો ઘન નહીં સકતી ક્યોં કિ
વહ તો અમૂર્તિક—અશરીર—અનઙ્ગ હૈ । અંગવાલે કી હી મૂર્તિ ઘનતી
હૈ—અનંગ કી નહીં ।

બધા કષાય કર્મ, મોહ અને પરિષદોને છુટ્યા છે. સામાન્ય કેવલી “જન”
એટલા માટે કહેવામાં આવ્યા છે કે તેમણે ચાર ઘનપતિઓના કર્મોને પોતાના
આત્માથી સમૂળ નષ્ટ કરી નાખ્યા છે વિષ્ણુ ‘જન’ એટલા માટે કહેવાય
છે કે તેમણે પોતાના ભુજ બળથી ભરતખંડના છ ખંડોમાંથી ત્રણ ખંડોને
પોતાને વશ કર્યા છે એથી તેઓ અર્દ્ધચક્રી પણ કહેવાય છે. કામદેવને ‘જન’
એટલા માટે કહેવામાં આવ્યા છે કે તેના વશમાં ત્રણે લોકો છે. ત્રણે લોકોમાં
એકું કોઈ પ્રાણી રહ્યું નથી કે જેને કામદેવે પોતાના વશમાં ક્યું ન હોય.

શંકા—દ્રૌપદીએ કામદેવની મૂર્તિની પૂજા કરી તે તમારી આ વાત ત્યારેજ
યોગ્ય કહી શકાય કે જ્યારે કામદેવની મૂર્તિ બની શકતી હોય ? પણ કામદેવની
મૂર્તિ તો તૈયાર થઈ શકે તેમ નથી કેમકે તે તો અમૂર્તિક—અશરીર અનંગ
છે. અંગવાળાની જ મૂર્તિ બને છે, અનંગની નહિ.

નાસ્ત્યત્ર સંશયઃ । લક્ષ્મીગૌર્યાદિદેવ્યા અપિ સ્વામીષ્ઠપતિપ્રાપ્તિકામનયા પૂજનં લોકે પ્રસિદ્ધમસ્તિ । લૌકિકમન્ત્રશાસ્ત્રે મન્ત્રરત્નમઙ્ગૂષાયાં કામદેવારાધનસ્યામી ષ્ઠપતિલાભદેતુત્વં નિગદિતમ્—

“ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ, સાપીષ્ટં પતિમાપ્નુયાત્ ॥ ” ઇતિ ।

અધુનાઽપિ પરિણયનસમયે કુલદેવપૂજનં લોકે ક્રિયમાણં દ્રશ્યતે । કામદેવોઽપિ

ઉત્તર—યહ કહના ઠીક નહીં હૈ. કયોં કિ મૂર્તિ પૂજક જન અનઙ્ગ-સિદ્ધોં કી ભી તો મૂર્તિ બનાકર उसकी पूजा किया करते हैं । यद्यपि सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं कही गई है-तौ भी मूर्तिपूजक जन अपनी कल्पना से उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजा करते ही हैं—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेव की भी लोग अपनी कल्पनासुर मूर्ति बनाकर पूजते हैं । इस में आपत्ति की कौनसी बात है ।

લક્ષ્મી, ગૌરી આદિ દેવિયોં કી ભી પૂજા લોક મેં અપને કો અભિ-લષિત પતિ પ્રાપ્તિ કી કામના સે સ્ત્રિયોં દ્વારા કી હી જાતી હૈ । લૌકિક મન્ત્ર શાસ્ત્ર મેં મન્ત્રરત્નમઙ્ગૂષા મેં કામદેવ કા આરાધન—“ કન્યામિષ્ટા-મવાપ્નોતિ સાપીષ્ટં પતિમાપ્નુયાત્ ” ઇસ શ્લોકાર્થદ્વારા ઇચ્છિત પતિ પ્રાપ્તિ કા કારણ કહા ગયા હૈ ।

વર્તમાન સમય મેં ભી દેખો ! વિવાહ કે સમય મેં લોક મેં કુલ દેવતા કા પૂજન કિયા હી જાતા હૈ યહ કુલ દેવતા કા પૂજન હી એક

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનંગ સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે એ કે શાસ્ત્રોમાં સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવવાની આજ્ઞા કરવામાં આવી નથી છતાંય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ બનાવીને પૂજા કરે જ છે. તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ અનંગ કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ બનાવીને તેને પૂજે છે, આમાં વાંધા જેવી કોઈ વાત નથી.

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમાં પોતાની ઇચ્છા મુજબ પતિ મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામાં આવે જ છે. લૌકિક મન્ત્ર શાસ્ત્રમાં મન્ત્ર રત્ન મંજૂષામાં કામદેવનું આરાધન “ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ સાપીષ્ટં પતિ માપ્નુયાત્ ” આ અર્દ્ધશ્લોક વડે ઇચ્છિત પ્રતિપ્રાપ્તિનું કારણ બતાવવામાં આવ્યું છે.

વર્તમાન સમયમાં પણ આપણે જોઈએ તો લક્ષ્મી સમયે લોકમાં કુળ દેવતાનું પૂજન કરવામાં આવે જ છે. આ કુળદેવતાનું પૂજન જ એક રીતે

અભ્યાર્થમામૃતચર્ચિણી ડી૦ અ૦ ૧૨ દ્રૌપદીચર્ચા

૪૨૫

રાગવતાં ગૃહસ્થાનાં કુલદેવત્વેન વ્યવહિયમાણ આસીત્ । દ્રૌપદ્યાઽપિ સ્વકુલદેવઃ પૂજિત ઇતિ યુક્તમુત્પત્ત્યામઃ ।

અત્ર—“ નમોઽસ્થુ ણં અરિહંતાણં ” ઇતિ પાઠસ્તુ પ્રવચનવિરુદ્ધ એવ વર્તેતે, લૌકિકકુલદેવપ્રતિમાઽર્ચનપ્રકરણે લોકોત્તરસ્ય ભગવતોઽર્હતઃ પ્રસન્નાભાવાત્ । પૂર્વભવકૃતનિદાનવત્યાઃ કામભોગાનુરક્ત્યા દ્રૌપદ્યાઃ કામદેવાર્ચનસમયે કામભોગ-વિરતસ્ય વીતરાગમાર્ગોપદેશકસ્ય વીતરાગસ્ય ભગવતોઽર્હતો વન્દનં નૈવ શાસ્ત્રાનુ-કૂલમ્ । અત્ર પરિણયાવસરે કુલદેવપૂજનપ્રસન્ને ભગવતોઽર્હતઃ પ્રસન્નપ્રેવ નાસ્તિ,

તરહ સે કામદેવ કા પૂજન અનુસરણ હૈ । એક સમય થા કિ જબ કામ-દેવ હી, રાગશાલી ગૃહસ્થ જનોં કે લિયે કુલ દેવતા કે રૂપ સે વૈવાહિક વ્યવહાર મેં માન્ય હોતા થા । દ્રૌપદીને ખી ઉસ સમય જો કુલ દેવતા કા પૂજન કિયા—વહ કામદેવ કા હી પૂજન કિયા યહી યુક્તિ સંગત થૈઠતી હૈ । હસ પૂજન કે પ્રકરણ મેં જો “ નમોસ્થુણં અરિહંતાણં ” યહ પાઠ આતા હૈ વહ પ્રવચન વિરુદ્ધ હી હૈ ક્યોં કિ લૌકિક કુલદેવતા કી પ્રતિમા કે અર્ચન-પ્રકરણ મેં લોકોત્તર અર્હત ભગવાન કે પ્રકરણ કા સંબંધ હી ક્યા હૈ । ઉસ સમય જબ કિ વહ પૂર્વ ભવ મેં કિયે ગયે નિદાન સે યુક્ત થી-ઑર કામભોગ મેં અનુરક્ત હૃદયવાલી થી હસ કે લિયે કામદેવકા અર્ચન(પૂજન) કરનેકા સમય હી સ્પષ્ટરૂપસે જ્ઞાત હોતા હૈ કામભોગોં સે વિરત વીતરાગ માર્ગ કે ઉપદેશક વીતરાગપ્રમુ અર્હત ભગવાન કી પૂજન વંદના કા નહીં । યહી સિદ્ધાન્ત શાસ્ત્રાનુકૂલ હૈ—અન્ય નહીં । અરે કહીં

કામદેવના પૂજનનું અનુસરણ છે. એક વખત એવો હતો કે બ્યારે કામદેવજ, રાગશાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમાં લક્ષ-સંબંધી વ્યવહારમાં માન્ય ગણાતો હતો. દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જો કુળ દેવતાનું પૂજન કર્યું તે કામદેવનું જ પૂજન કર્યું હતું એ જ વાત બરાબર લાગે છે. આ પૂજનના પ્રકરણમાં જો “ નમોસ્થુણં અરિહંતાણં ” આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિરુદ્ધ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમાં લોકોત્તર અર્હત ભગવાનના પ્રકારણનો સંબંધ જ શી રીતે થોડો કહી શકાય. તે વખતે કે બ્યારે તે પૂર્વ ભવમાં કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમાં અનુ-રક્ત હૃદયવાળી હતી એવી સ્થિતિમાં તો તેના માટે કામદેવની અર્ચના કર-વાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઈ આવે છે. કામભોગોથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રમુ અર્હત ભગવાનની પૂજા વંદના માટે તે વખત થોડો કહી શકાય નહિ. આ સિધ્ધાંત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ. યુધ્ધમાં

દ્રૌપદ્યાઃ પૂર્વભવકૃતનિદાનફલપ્રાપ્ત્યભાવેન સમ્યક્ત્વરહિતત્વાત્ । યસ્ય પૂજનં તસ્યૈવ વન્દનં તુ ન્યાયોપપન્નં ભવતિ, અત્ર પૂજનં કુલદેવતાયાઃ, વન્દનં તુ વીતરાગસ્યાર્હત્ત્વમિતિ લોકન્યાયવિરુદ્ધમ્ । તસ્માદ્ દ્રૌપદ્યા વીતરાગસ્યાર્હતો વન્દનમપિ તદાનીં ન કૃતમિતિ સર્વપ્રમાણસિદ્ધમ્ ।

અત્રાભયદેવસુરિણા સ્વકૃતવૃત્તૌ યદુક્તમ્ એકસ્યાં વાચનાયામેતાવદેવ દૃશ્યતે “ જિણપદિમાણં અચ્ચળં કરેઙ્ ” ઇતિ ।

વીરરસકે સિવાય યુદ્ધમેં જાનેવાલે વીરકે લિયે મહારાગ ભી આનંદદાયી હો સકતા હૈ ? । કબી નહીં પરિણય-વિવાહકે અવસર મેં કુલદેવતા કી હી પૂજા કરને કા પ્રસંગ હોતા હૈ-ન કિ ભગવાન અર્હંત કી । અતઃ ઇસ પ્રકાર કા પ્રસંગ માનનો એક મનગદંત કલ્પના માત્ર હી હૈ ! ક્યોં કિ ઇસ સમય દ્રૌપદી પૂર્વભવ મેં કિયે હુએ નિદાન કી ફલ પ્રાપ્તિ કે અભાવ સે સમ્યક્ત્વ રહિત થી, ફિર ઉસે ઉસ સમય કામદેવ કી હી ઇચ્છિત ફલ પ્રાપ્તિ કે લિયે પૂજા કી સૂઝેગી, યા ઉસકે અભાવ કો કરને વાલે જિન ભગવાન કી પૂજા કી । યહ સ્વયં વિચારને જૈસી બાત હૈ જિસ કા પૂજન કિયા જાતા હૈ ઉસી કી વંદના કી જાતી હૈ-પૂજન તો હો કુલદેવતારૂપ કામદેવ કા ઓર વંદના કી જાય વીતરાગ પ્રભુ શ્રી અરિહંત દેવ કી । ઇસ પ્રકાર કી માન્યતા તો લૌકિકરીતિ સે ભી વિરુદ્ધ પડતી હૈ । ઇસલિયે સર્વ પ્રમાણોં સે યહ સિદ્ધ હોતા હૈ કિ દ્રૌપદી ને જિનપ્રતિમા કા પૂજન નહીં કિયા ।

જનાર લડવૈયા માટે વીર રસ સિવાયનો મહારાગ પણ શું આનંદ પમાડનાર થઈ શકે છે ? નહીં જ લગ્નના સમયે તો ભગવાન અર્હંતની પૂજા કરતાં તો કુળદેવતાની પૂજા કરવાનો પ્રસંગ જ યોગ્ય લેખાય છે. એટલા માટે આ જાતના પ્રસંગની વાત માનવી એ મનુષ્યાની કલ્પના માત્ર જ છે. કેમકે આ સમયે દ્રૌપદી પૂર્વભવમાં કરેલા નિદાનની ફળ પ્રાપ્તિના અભાવને લીધે સમ્યક્ત્વથી રહિત હતી અને એવી સ્થિતિમાં ઇચ્છિત ફળ પ્રાપ્તિ માટે તેને કામદેવની પૂજા કરવાની ઇચ્છા થાય કે તેનાથી વિરુદ્ધ ફળ આપનાર જીન ભગવાનની પૂજાની ? આ જાતે વિચાર કરવા યોગ્ય વાત છે. જેની પૂજા કરવામાં આવે છે, તેને જ વંદના કરવામાં આવે છે. પૂજા તો કુળ દેવતા કે કામદેવની થાય અને વંદના વીતરાગ પ્રભુ શ્રી અરિહંત દેવની કરવામાં આવે. આ જાતની માન્યતા તો લૌકિક રીતિથી પણ વિરુદ્ધ છે. આ પ્રમાણે બધી રીતે વિચારતાં આ સિદ્ધ થાય છે કે દ્રૌપદીએ જીન પ્રતિમાનું પૂજન કર્યું નથી.

જનનારવમીશ્રુતવિગી ટીકા અં ૧૬ દ્રૌપદીવરિતનિકપણમ્

૪૨૭

વાચનાન્તરે તુ ‘ળ્હાયા’ ઇત્યાદિ, તથા-દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્રં ચૈત્યવંદનમભિહિતં સૂત્રે ઇતિ, તદપ્યત્ર પાઠે સિદ્ધાન્તવિરુદ્ધપાઠપ્રક્ષેપસંભાવનાં પ્રધોતયતિ ! અત્ર યદ્વાચ્યં તત્પ્રાગેવ નિગદિતમ્ ।

મૂલમ્-તણ્ણં તં દોવડરાયવરકન્નં અંતેઝરિયાઓ સન્વા-
લંકારવિભૂસિયં કરેંતિ કિં તે ? વરપાયપત્તણેઝરા જાવ ચેહિયા-
ચક્કવાલમયહરગવિંદપરિક્ખિત્તા અંતેઝરાઓ પહિણિક્ખમહ-
પહિણિક્ખમિત્તા જેણેવ બાહિરિયા ઝવટ્ટાણસાલા જેણેવ ચાઝ-
ઘંટે આસરહે તેણેવ ઝવાગચ્છહ ઝવાગચ્છિત્તા કિહ્હાવિયાણ
લેહિયાણ સદ્ધિં ચાઝઘંટં આસરહં દુરુહહ, તણ્ણં સે ધટ્ટઝજુણે
કુમારે દોવડેણ કણ્ણાણ સારત્થં કરેહ, તણ્ણં સા દોવડે રાય-
વરકણ્ણા કંપિલ્લપુરં નયરં મઝ્ઝં મઝ્ઝેણં જેણેવ સયવરમંડવે તેણેવ
ઝવાગચ્છહ ઝવાગચ્છિત્તા રહં ઠવેહ રહાઓ પચ્છોરુહહ પચ્છોરુ-

અભયદેવ સૂરિ ને સ્વરચિત વૃત્તિ મેં જો યહ કહા હૈ કિ એક વાચના
મેં “ જિનપહિમાણં અચ્ચળં કરેહ ” દૂસરી અન્ય વાચના મેં “ ળ્હાયા
હત્યાદિ-તથા દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્રં ચૈત્યવંદનમભિહિતં સૂત્રે ઇતિ ”
સો યહ ઝનકા કથન હસ બાત કી સંભાવના કો પ્રકટ કરના હૈ કિ હસ
પાઠ મેં સિદ્ધાન્ત સે વિરુદ્ધ પાઠ કા પ્રક્ષેપ હુઆ હૈ । હસ વિષય મેં જો
કુહ્હ હમેં સમાધાન કરના થા વહ્હ હમને પહિલે હી કર દિયા હૈ ।

॥ દ્રૌપદી પૂજાચર્ચા સમાપ્ત ॥

અભયદેવસૂરિએ સ્વરચિત વૃત્તિમાં જે એ કહ્યું છે કે એક વાચનામાં
“ જિનપહિમાણં અચ્ચળં કરેહ ” બીજી વાચનામાં “ ળ્હાયા હત્યાદિ-તથા દ્રૌપદ્યાઃ
પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્રં ચૈત્યવંદનમભિહિતં સૂત્રે ઇતિ । ” તો તેમનું આ કથન આ
વાતને પ્રકટ કરે છે કે આ પાઠમાં સિદ્ધાન્તથી વિરુદ્ધ એવા પાઠનો પ્રક્ષેપ
થયો છે. આ વધે જે કંઈ યોગ્ય સ્પષ્ટીકરણ કરવાનું હતું તે અમે પહેલાં
કરી દીધું છે.

દ્રૌપદી પૂજા ચર્ચા સમાપ્ત.

४२८

शुताचर्मकथासूत्रे

हिता किड्वावियाए लोहियाए य सद्धि सयंवरमंडपं अणुप-
 विसइ अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं
 रायवरसहस्साणं पणामं करेइ, तएणं सा दोवई रायवर० एणं
 महं सिरिदामगंडं किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छया-
 ईहिं गंधद्वार्णिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गिणहइ, तएणं
 सा किड्वाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं
 गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से दाहिणेणं
 हत्थेणं दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीर महु-
 रभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसा-
 मत्थगोत्तविक्रंतिकंति बहुविह आगममाहप्परूवजोवणगुण-
 लावणकुलसीलजाणिया कित्ठणं करेइ, पढमं ताव वणिहपुंगवाणं
 दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्कवलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणा-
 वमद्दगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बलवीरियरूव-
 जोवणगुणलावन्नकित्तिया कित्ठणं करेइ, ततो पुणो उग्गसेण-
 माईणं जायवाणं, भणइ य-सोहगरूवकलिए वरेहि वरपुरिस-
 गंधहत्थीणं । जो हु ते होइ हिययइओ, तएणं सा दोवई
 रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झं मज्झेणं समतिच्छ-
 माणी२ पुव्वकयणियाणेणं चोइउजमणीं २ जेणेव पंच पंडवा
 तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते पंचपंडवे तेणं दसद्ववण्णेणं
 कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढियं करेइ करित्ता एवं वयासी-
 एएणं मए पंच पंडवा वरिया, तएणं तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं

अमनारवमामृतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४२९

बहूणि रायसहस्ताणि महयारसदेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति
सुवरियं खलु भो ! दोवइए रायवरकन्नाए २ त्तिकट्टु सयंवरमंड-
वाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया २ आवासा
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, तएणं धट्टज्जुणे कुमारे पंच
पंडवे दोवइं रायवरकण्णं चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ दुरुहित्ता
कंपिल्लपुरं मज्झं मज्झेणं जाव सयं भवणं अणुपविसइ, तएणं
दुवए राया पंच पंडवं देवइं रायवरकन्नं पट्टयं दुरुहेइ दुरुहित्ता
सेया पीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोमं कारवेइ
पचण्हं पंडवाणं दोवइए य पाणिग्गणं करावेइ तएणं
से दुवए राया, दोवइए रायवरकण्णयाए इमं एयारूवं
पीईदाणं दलयइ, तं जहा — अट्ट हिरण्णकोडीओ जाव अट्ट
पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विउलं धणकणग जाव
दलयइ तएणं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाणं विउ-
लेणं असण ४ वत्थगंथ जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘ तएणं तं ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु तां द्रौपदीं राजवरकन्या
‘ अंतेउरियाओ ’ आन्तः पुरिक्यः = अन्तःपुरवर्तिन्यः स्त्रियः सर्वालंकारविभू-
षितां कुर्वन्ति, ‘ किं ते ’ तत्-तत्सौन्दर्यं किं वर्णयामि तद् वाचाऽभिलषितुं न

तए णं तं दोवइं रायवरकन्नं इत्यादि ।

टीकार्थ—(तए णं) इसके बाद (तं दोवइं रायवरकन्नं) उस राजवर कन्या
द्रौपदी को (अंतेउरियाओ सन्वालंकारविभूषितं करेति) अतः पुर
की स्त्रियों ने समस्त अलंकारों से विभूषित किया । (किंते) उस समय

तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं इत्यादि—

टीकार्थ—(तए णं) त्यारपछी (तं दोवइं रायवरकन्नं) ते राजवर कन्या
द्रौपदीने (अंते उरियाओ-सन्वालंकारविभूषितं करेति) रघुनासनी श्रीमे.मे
समस्त अलंकाराथी शयुगारी. (किं ते) ते समयता तेना सौंदर्यतुं वणुन

४३०

ज्ञाताधमेकयाङ्गसूत्रे

शक्यत इत्यर्थः । 'वरपायपत्तणेउरा' वरपादमाप्तनूपुरा=वरणस्थापित प्रशस्त-
नूपुरा यावत्-चेडियाचक्रवालमयहरगविन्दपरिक्लिप्ता चेटिकाचक्रवालमहतरक
वृन्देन-अनेकदासीमहतरसमूहेन परिक्षिप्ता-परिवृता, अन्तःपुरात् प्रतिनिष्क्रामति
-निःसरति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या=बाहिः प्रदेशस्था 'उवट्टाणसाला' उप-
स्थानशाला=आस्थानमण्डपः-सभामण्डप इत्यर्थः, यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथस्तत्रैवोपाग-
च्छति, उपागम्य 'किङ्कावियाए' क्रीडिकया-क्रीडनधात्र्या कीदृश्या कीडिकया-
इत्याह 'लेहियाए' इति लेखिकया=राजकुलवंशनामादिपरिचारिकया सार्ध

के उसके सौन्दर्य का हम क्या वर्णन करें । वह बाणी द्वारा कहने के
योग्य नहीं है अर्थात् बाणी से उसको वर्णन नहीं हो सकता है । (वर
पायपत्तणेउरा जाव ॥ चेडियाचक्रवालमयहरगविन्दपरिक्लिप्ता अंते
उराओ पडिनिक्खमइ) चरणों में स्थापित किये गये हैं-पहिराये गये
हैं-प्रशस्तनूपुर जिसको ऐसी वह द्रौपदी यावत् अनेक समझदार
दासियों के महोमहिम समूह से परिक्षिप्त होकर-अंतःपुर से बाहिर
निकली । (पडिनिक्खमिता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव
चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता किङ्कावियाए लेहि-
याए सद्धि चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ) बाहिर निकलकर वह जहां
बाहिर में सभामण्डप और उसमें भी जहां चारघंटों वाला अश्वरथ था
वहां आई । वहां आकर वह अपनी क्रीडनधात्री के कि जो लेखिका
राजकुल, वंश नाम आदि की परिचायिका थी साथ उस चारघंटोंवाले

आपणु केवी रीते करी शकीये. बाणी वडे तेनुं वणुंन अशक्य छे ओट्ठे
के बाणीभां ओट्ठी शक्ति नथी के तेना सौंदर्यनुं सथोट वणुंन करी शके.

(वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्रवालमयहरगविन्दपरिक्लिप्ता अंतेउराओ
पडिनिक्खमइ)

पगोभां जेणुं सुंदर नूपुर पडेयां छे ओवी ते द्रौपदी धणी अतुर दासी-
ओथी वीटणाधने रणवासथी जहार नीकणी.

(पडिनिक्खमिता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छिता किङ्कावियाए लेहियाए सद्धि चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ)

जहार नीकणीने ते ज्यां जहारना सला-म'उपमां चार घंटवाणो अश्व-
रथ छतो त्यां आवी. त्यां आवीने ते पोताथी क्रीडन धात्री-के जे लेखिका
राजकुल, वंश नाम वगैरेनी परिचारिका छती-तेनी साथे ते चार घंटवाणा
अश्वरथ उपर सवार थर्ध गध.

चातुर्थ्यण्डमश्वरथं 'दुरुह' दूरोदिति=आरोहति । ततस्तदनन्तरं धृष्टद्युम्नः कुमारो द्रौपद्याः कन्यायाः 'सारथ्यं' सारथ्यं-सारथिकर्म करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन यत्रैव स्वयंवरमण्डपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति रथात् प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्य क्रीडिकया लेखिकया च सार्थं स्वयंवरमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य करतलपरिशृहीत दशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तेषां वासुदेवमुखानां बहूनां राजवरसह-अश्वरथ में सवार हो गई । (तएणं से धट्टज्जुण्णे कुमारे दोवईए कक्षाए सारथ्यं करेइ, तएणं सा दोवइ रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ) उस के सवार होते ही धृष्टद्युम्न कुमार ने उस द्रौपदी कन्या का सारथ्य किया-उसके रथ पर सारथि का काम किया-द्रौपदी के रथ को हांका । इस तरह धृष्टद्युम्न के द्वारा हांके गये रथ पर बैठी हुई वह राजवर कन्या द्रौपदी कांपिल्य पुर नगर के बीच से होकर जहां स्वयंवर-मंडप था उस ओर चल दी । (उवागच्छत्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता किङ्कावियाए लेहियाए सद्धिं सयंवरमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसत्ता करयल तेमिं वासुदेववासुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ) वहां पहुंचकर उसने रथ को खड़ा करवा दिया-रथके खड़े होते ही वह उससे नीचे उतरी, नीचे उतर कर वह उस लेखिका क्रीडन धात्री के साथ स्वयंवर मंडप में प्रविष्ट हुई । प्रविष्ट होकर के उसने अपने दोनों हाथों को जोड़ कर उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को प्रमाण

(तएणं से धट्टज्जुण्णे कुमारे दोवईए कक्षाए सारथ्यं करेइ, तएणं सा दोवइ रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नगरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ)

न्यारे ते सवार थरं गधं त्यारे कुमार धृष्टद्युम्ने ते द्रौपदी राजवर कन्याना रथ उपर जेसीने सारथीनु काम संजाण्युं आ प्रमाणे धृष्ट मन वडे हांकेवाभां आवेला ते रथ उपर सवार थरने ते राजवर कन्या द्रौपदी कांपिल्यपुर नगरनी वन्धे थरने न्यां स्वयंवर मंडप हतो त्यां रवाना थरिं

(उवागच्छत्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता किङ्कावियाए लेहियाए सद्धिं सयंवरमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसत्ता करयल तेमिं वासुदेव वासुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ)

त्यां पडोन्हीने तेणे रथने थोलावडाव्यो, न्यारे रथ थोव्यो त्यारे ते रथ उपरथी नीचे उतरी, नीचे उतरीने ते लेखिका क्रीडन धात्रीनी साथे स्वयंवर मंडपमां प्रविष्ट थरिं प्रविष्ट थरने तेणे वासुदेव प्रमुख हजारो राजाव्योने थोताना थरने साथ जेसीने नमस्कार क्यो

સ્નાનાં પ્રણામં કરોતિ, તતઃ સ્વલુ સા દ્રૌપદી રાજવરકન્યા એકં મહત્ શ્રીદામકાણ્ડં
 'કિં તે' કિં તત્-તત્સૌન્દર્યસૌગન્ધ્યવર્ણનં કિં કરોમિ? તદ્ અર્પ્યમિતિભાવઃ ।
 'પાટલમલ્લિયચંપય જાવ સત્તચ્છયાઈર્હિ' પાટલમલ્લિકાચમ્પક-યાવત્ સત્તચ્છ-
 દાદિભિઃ 'ગંધદ્વાર્ણિ' ગન્ધધ્રાણિ ગન્ધવૃક્ષિ 'મુયંતં' મુશ્વત્=દદત્ પ્રકાશયદિત્યર્થઃ
 પરમસુખસ્પર્શં દર્શનીયં ગૃહ્ણાતિ । તતઃ સ્વલુ સા ક્રીડિકા=ક્રીડનધાત્રી યાવત્-
 સુરુપા જાવ 'વામહસ્થેણં ચિલ્લગં દપ્પણં' યાવત્ વામહસ્તેન ચિલ્લગં દર્પણમ્ અથ
 યાવચ્છબ્દેનેદં બોધ્યમ્-સાભાવિયયંસં ચોદ્દહજનસસ ઉસ્યુયકરં વિચિત્રમણિરયણ-
 વદ્દચ્છરુહં' ઇતિ । સ્વાભાવિકઘર્ષ=સ્વાભાવિકો નૈસર્ગિકો ઘર્ષો ઘર્ષણં યત્ર સ તથા
 તં દર્પણમિત્યન્વયઃ । સ્વભાવાદેવ ચિક્ષણમિત્યર્થઃ, તથા-ચતુર્દશજનસ્યૌત્સુક્યકરં=
 તરુણલોકરય પ્રેક્ષણાભિલાષજનકં, તથા-વિચિત્રમણિરતનવદ્દચ્છરુહં=વિચિત્રમણિ-
 રત્નૈર્બદ્ધઃ છરુહો-મુષ્ટિ પ્રદાનસ્થાનં, યસ્ય સ તથા તં, તથા-'ચિલ્લગં' દેદીપ્ય-
 માનં દર્પણં-વામહસ્તેન "ગદ્દેઝળ" ગૃહીત્વા 'સલલિયં' સલલિતં 'દપ્પણ-

ક્રિયા' (તણં સા દોવઈ રાયવરકન્ના એગં મહં સિરિદામગંડં કિંતે ?
 પાટલમલ્લિયચંપય જાવ સત્તચ્છયાઈર્હિ ગંધદ્વાર્ણિ મુયંતં પરમસુહ્ર્ણાસં
 દરિસણિજ્જં ગેણ્હઈ) હસકે બોદ ઉસ રાજવર કન્યા દ્રૌપદી ને એક
 બડા વિસ્તૃત શ્રી દામકાંડ-જિસ કી સુન્દરતા ઓર સુગંધિ કા હમ કયા
 વર્ણન કરે-જો અપૂર્વ થા-પાટક-ગુલાબ કે પુષ્પોં સે, મલ્લિકા-મોંઘરા કે
 પુષ્પોં સે યાવત્ સત્તચ્છદ વૃક્ષ કે પુષ્પોં કે ગૂંથા ગયા થા, ઓર જિસ મેં
 સે નાસિકા કો તૃપ્તિ કરને વાલી ગંધ નિકલ રહી થી ।

જિસકા સ્પર્શ પરમ સુખ દાયક થા-તથા જો દર્શનીય થા અપને હાથ
 મેં લિયા (તણં સા કિઙ્કાવિયા જાવ સુરુવા જાવ વામહસ્થેણં ચિલ્લગં-
 દપ્પણં ગદ્દેઝળ સલલિયં દપ્પણસંકંતવિવસંદંસિણ ય સે દાહિણેણં

(તણં સા દોવઈ રાયવરકન્ના એગં મહં સિરિદામગંડં કિં તે ! પાટલમ-
 લ્લિય ચંપય જાવ સત્તચ્છયાઈર્હિ ગંધદ્વાર્ણિ મુયંતં પરમસુહ્ર્ણાસં દરિસણિજ્જં ગેણ્હઈ)

ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ એક બહુ મોટો ભારે શ્રીદામકાંડને
 કે જેની સુન્દરતાનું વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી અને જે અપૂર્વ હતો-પાટલ
 શુભાળના પુષ્પોથી, મલ્લિકા-મોંઘરાના પુષ્પોથી, અમ્પાના પુષ્પોથી યાવત્
 સત્તચ્છદ વૃક્ષના પુષ્પોથી તે તૈયાર કરવામાં આવ્યો હતો અને જેમાંથી
 નાસિકાને તૃપ્તિ થાય તેવી સુવાસ પ્રસરી રહી હતી જેનો સ્પર્શ અત્યંત
 સુખકારી તેમજ જે દર્શનીય હતો-હાથમાં લીધો.

(તણં સા કિઙ્કા વિયા જાવ સુરુવા જાવ વામહસ્થેણં ચિલ્લગં દપ્પણં ગદ્દે-
 ઝળ સલલિયં દપ્પણસંકંતવિવસંદંસિણ ય સે દાહિણેણં હસ્થેણં દરિસણ પવર-

अनगराद्यमासृतवर्षिणी टोका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४३३

संकंतविबसंदसिए य ' दर्पणसंक्रान्तविम्बसंदर्शितान=दर्पणे संक्रान्तानि यानि राज्ञां विम्बानि-प्रतिविम्बानि, तैः संदर्शिताः=प्रतिबोधितास्तांश्च प्रवरराजसिंहान् सिंहसदृशशूरान् श्रेष्ठनृपान् दक्षिणेन हस्तेन ' से ' तस्याः द्रौपद्याः ' दरिसिए ' दर्शयति इह कर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठी । तथा-' फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया ' स्फुटविशदविशुद्धरिमितगम्भीरमधुरमणिता= अर्थतः

हृत्प्रेणं दरिसिए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया सा तेसि सव्वेसि पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसामत्थ-गोत्तविवकंतिकंतिबहुविहआगममहाप्परूवजोव्वणगुणलावणं कुलजाणिया कित्तणं करेइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने अपने हाथ में एक चमकता हुआ दर्पण लिया । यहां दर्पण के इन और विशेषणों का यावत् शब्द से ग्रहण हुआ है वे विशेषण ये हैं ' सामावियघंसं चोदहज्जणस्स उस्सुयकरं विचित्तमणिरयणवद्धछहं " इनका अर्थ इस प्रकार है-यह दर्पण स्वभायतः चिकना था । तथा तरुणजनों के चित्त में अपने को देखने की अभिलाषा का जनक था । सृष्टि से पकड़ने का जो इसका स्थान था वह विचित्र मणि-रत्नों से निर्मित था । उस दर्पण में जिन २ सिंह जैसे शूरवीर राजाओं के उस समय प्रतिविम्ब पड़े हुए थे उन प्रतिविम्बों को लेकर उस धायने उन श्रेष्ठ राजाओं को उस द्रौपदी के लिये अपने दक्षिण हाथ से बतलाया ! बतलाते समय उन्हें दिखाते समय-बह धात्री बिलकुल अर्थ की अपेक्षा स्फुट एवं वर्ण

रायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया सा तेसि सव्वेसि पत्थि-वाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसामत्थगोत्तविवकंतिकंतिबहुविहआगममहाप्परूवजोव्वण गुणलावणं कुलजाणिया कित्तणं करेइ)

त्यारपणी ते कीडनधात्रीये पोताना हाथमां ओक यमकतो अरीसो दीधो. अही ' अरीसा ' माटे य वत् शब्दधी नीये वज्ज्या मुज्जण विशेषणानुं पणु अद्धयु समज्जुं नेधये. (सामावियघंसं चोदहज्जणस्स उस्सुयकरं विचित्त मणिरयणवद्धछहं) आ विशेषणानुं स्पष्टीकरण आ प्रमाणे छे-ते अरीसो स्वाभाविक रीते दीसो हतो, तेमज्ज तरुणु अरिओना चित्तमां तेने नेवान्नी सद्धज्ज आवे धव्वा जअत थाय तेयो हतो. ते अरीसानो हाथो विचित्र मणीरत्नोधी जडेसो हतो. ते अरीसामां सिद्ध जेरा शूरवीर जे जे राजाओ देखाया ते धात्रीये ते राजाओने पोताना जमणु हाथधी सङ्केत करीने अताव्या. अतावती वणने अने समजवती वणते ते धाय अर्थनी अपेक्षाधी

की अपेक्षा विशद ऐसी विशुद्ध-शब्दार्थ दोष रहित-स्वर युक्त मेघ ध्वनि समान गंभीर मधुर वाणी से भाषण करती जाती थी। उस भाषण में वह उन सब राजाओं के माता, पिता, वंश, सत्त्व, सामर्थ्य, गोत्र, विक्रम, कांति, अनेक शास्त्रों का ज्ञातृत्व, माहात्म्य, तथा रूप, यौवन गुण, लावण्य, कुल एवं शील की ज्ञाता होने के कारण इन सब का वर्णन करती जाती थी। वंश से हरिवंश आदि का और कुल से वंशके अवान्तर भेद का कथन होता है। (पहमं ताव वणिहपुं गवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेल्लोकयलवगाणं सत्तुसयसहस्रमाणाव महगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं यलवीरियरुवजोव्वणं

(षष्ठं ताव वृद्धिपुंगवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्कवलवगाणं सत्तु-
सयसहस्समाणावमदगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं वलवीरियक्कव-

બનનારધમોમુતવર્ણી ટાં ૦ ૪૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ્

૪૪૫

માવિની સિદ્ધિરેષાં, તે ભવસિદ્ધિકાસ્તેષાં મધ્યે વરપુણ્ડરીકાણીવ યે શ્રેષ્ઠાસ્તે તથા તેષાં, તથા 'ચિહ્નગાણં' તેજસા દેદીપ્યમાનાનાં 'ચિહ્નગ' ઇતિ દેશી શ્લોકઃ । તથા- 'બલવીર્યરૂપજોઘ્વણગુણલાવણકિત્તિયા' બલવીર્યરૂપયૌવન-ગુણલાવણ્ય કીર્તિકા=બલ-કાયિકં, વીર્યમ્-ઉત્સાહઃ, રૂપં-સૌન્દર્ય, યૌવનં-તારુણ્ય, ગુણાન્-ઔદાર્યગામ્ભીર્યાદીન્, લાવણ્ય-યૌવનવયોજન્યં કાન્તિવિશેષં, કીર્તયતિ યા સા તથા, સા ક્રીડિકાધાત્રી કીર્તનં કરોતિ સ્મેત્યર્થઃ । અત્ર પૂર્વોક્તમપિ વિશેષણં કિંચિદ્ વિશેષબોધનાર્થં પુનઃ કથિતમ્ ।

તતસ્તદનન્તરં પુનઃ સા ક્રીડનધાત્રી 'ઉગ્ગસેણમાઈણં જાયવાણં' ઉગ્ગસેના-દીનાં યાદવાનાં બલવીર્યાદિ કીર્તનં કરોતિ કૃત્વા મળતિ ચ=સા ધાત્રી દ્રૌપદીં ગુણલાવણ્ય કિત્તિયાકિત્તણં કરેઈ) સર્વસે પહિલે ઉસ ક્રીડન ધાત્રી ને વૃષ્ણિવંશ કે પુંગવ સમુદ્રવિજય આદિદશ દશાહોં કે કિ જો ત્રેલોક્ય મેં ભી વિશિષ્ટ બલશાલી માને જાતે થે, લાભોં શત્રુઓં કે માન કો મર્દન કરને વાલે થે, ભવસિદ્ધિક પુરુષોં મેં જો શ્રેષ્ઠ કમલ કે જૈસે માને ગયે હેં, ઓર જો અપને સ્વાભાવિક તેજ સે સદા દમકતે રહતે થે બલ કા, વીર્ય કા, રૂપ કા, યૌવન કા, ગુણોં કા, લાવણ્ય કા, કીર્તિકા હોને કે કારણ કીર્તન-વર્ણન કિયા । શારીરિક શક્તિકા નામ બલ, ઉત્સાહ કા નામ વીર્ય, સૌન્દર્ય કા નામ રૂપ તારુણ્ય કા નામ યૌવન હૈ । ઔદાર્ય ગાંભીર્ય આદિ ગુણ હૈ । યૌવન વય સે જન્ય જો કાંતિ શરીર મેં આતી હૈ વહ લાવણ્ય હૈ (તઓ પુણો ઉગ્ગસેણમાઈણં જાયવાણં મળઈ ય સોહગસ્ત્રવકલિય વરેહિ વર પુરિસગંધહત્યીણં જો હુ તે હોઈ હિયય-દહઓ, તણં સા દોવઈ રાયવરકન્નગા વહૂર્ણ રાયવરસહસ્તાણં મજ્જં જોઘ્વણગુણલાવણ્યકિત્તિયા કિત્તણં કરેઈ)

તે ક્રીડન ધાત્રીએ સૌ પહેલાં વૃષ્ણિ વંશમાં પુંગવ (શ્રેષ્ઠ) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાહોંનું-કે જેઓ ત્રણે લોકોમાં પણ વિશિષ્ટ શક્તિશાળી ગણાતા હતા, લાખો શત્રુઓના માનનું મર્દન કરનારા હતા, ભવસિદ્ધિક પુરુષોમાં જેઓ કમળની જેમ શ્રેષ્ઠ ગણાતા હતા અને જેઓ પોતાના સ્વાભાવિક તેજથી હમેશાં પ્રકાશતા રહેતા હતા, બળ, વીર્ય, રૂપ, યૌવન, ગુણો, લાવણ્ય, કીર્તિ વગેરેથી સંપન્ન હતા-વર્ણન કર્યું. શારીરિક શક્તિનું નામ બળ, ઉત્સાહનું નામ વીર્ય, સૌન્દર્યનું નામ રૂપ અને તારુણ્યનું નામ યૌવન છે. ઔદાર્ય, ગાંભીર્ય ગુણો છે. યુવાવસ્થામાં જે શરીર કાંતિવાળું થાય છે તેને લાવણ્ય કહેવામાં આવે છે.

(તઓ પુણો ઉગ્ગસેણમાઈણં જાયવાણં મળઈ ય સોહગસ્ત્રવકલિય વરેહિ વરપુરિસગંધહત્યીણં જો હુ તે હોઈ હિયયદહઓ તણં તે દોવઈ રાયવરકન્નગા

પુનરાહ— ‘સોહગસ્ત્રવકલિષ્ઠ’ ઇત્યાદિ, એવમત્રાન્વયમુલ્લેખનવ્યાખ્યા—‘વરપુરિ-
સગંધહસ્તીણં’ વીરપુરુષગન્ધહસ્તિના=હસ્તિષ્ઠ ગન્ધહસ્તિન ઇવ યે વિશિષ્ટગુણસદ્ધા-
વાત્ પુરુષેષુ સર્વતઃ શ્રેષ્ઠાસ્તે વરપુરુષગન્ધહસ્તિનસ્તેષાં મધ્યે ‘સોહગસ્ત્રવકલિષ્ઠ’
સૌભાગ્યરૂપકલિતઃ—અતિશયેન સૌભાગ્યસૌન્દર્યસમન્વિતઃ, યઃ સ્વલુ તે તવ હૃદય-
દયિતઃ=હૃદયપ્રિયઃ ‘હોઈ’ ભવતિ, તં ‘વરેહિ’ વરય=પતિભાવેન સ્ત્રીકુરુ ઇત્યર્થઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ દ્રૌપદી રાજવરકન્યા વહૂનાં રાજવરસહસ્રાણાં મધ્યમધ્યેન
‘સમિચ્છમાણી ૨’ સમતિકામન્તી=ગચ્છન્તી ‘પુલ્લકયણિયાણેણ’ પૂર્વકૃતનિ-
દાનેન=સુકુમારિકાભવે ભર્તૃપશ્ચકામિત્યાપરૂપં નિદાનં કૃતં તેન, ‘ચોઈજમાણી ૨’
પ્રેર્યમાણા ૨ યત્રૈવ પશ્ચ પાંડવાસ્તત્રૌત્રોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તાન્ દશાર્ધવર્ણેન—
પશ્ચર્ણેન કુસુમદામ્ના ‘આવેદિયપરિવેદિષ્ઠ’ આવેદિયપરિવેદિષ્ઠિતાન્ કરોતિ,
મજ્જેણં સમતિચ્છમાણી ૨ પુલ્લકયણિયાણેણં ચોઈજમાણી ૨ જેણેવ
પંચપંડવા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) હસકે વાદ ઉસ ક્રીડન ધાય ને યાદવ
વંશવાલે ઉગ્રસેન આદિ યાદવોં કે વલવીર્ય આદિ કા વર્ણન કિયા—
ઉસને દ્રૌપદી સે કહા યે જૈસે હાથિયોં મેં ગંધહસ્તી શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ ઉસી
તરહ યે પુરુષોં મેં વિશિષ્ટ ગુણોંકે સદ્ધાવ કે કારણ સર્વ પ્રકાર સે શ્રેષ્ઠ
હૈ—ઉનકે બીચ મેં જો તુજે સૌભાગ્યરૂપ સંકલિત પ્રતીત હો ઓર તેરે
હૃદય કો પ્યારા લગે—ઉસે તૂં પતિરૂપ સે વરલે । હસકે વાદ વહ રાજવર
કન્યા દ્રૌપદી ઉન હજારોં રાજાઓં કે બીચ સે હોતી હુઈ સુકુમારિકા કે
ભવ મેં કૃત નિદાન કે પ્રમાવ સે વાર ૨ પ્રેરિત હોકર જહાં પાંચ પાંડવ
થે—વહાં પહૂંચી—(ઉવાગચ્છિત્તા તે પંચ પાંડવે તેણં દસદ્વર્ણેણં કુસુમ-
દામેણં આવેદિયપરિવેદિયં કરેઈ, કરિત્તા એવં વયાસી, એણં મણ પંચ
વહૂં રાજવરસહસ્રાણં મજ્જં મજ્જેણં સમતિચ્છમાણી ૨ પુલ્લકયણિયાણેણં ચોઈ-
જમાણી ૨ જેણેવ પંચ પંડવા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ)

ત્યારપછી ક્રીડન ધાત્રીએ ઉગ્રસેન વગેરેનું વર્ણન કર્યું અને કહ્યું કે—
હાથીઓમાં જેમ ગંધ હસ્તી ઉત્તમ ગણાય છે તેમજ પુરુષોમાં સર્વશ્રેષ્ઠ
ગુણવાન એવા એઓ બધી રીતે સારા છે, આ બધામાં તને જે સૌભાગ્ય-
શાળી લાગતા હોય અને તને જેઓ ગમતા હોય તેઓને તું પતિ રૂપમાં
સ્ત્રીકારી લે. ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી તે હબરે રાબાઓની વચ્ચેથી
પસાર થઈને પોતાના સુકુમારિકાના ભવમાં કરેલા અભિલાષથી પ્રેરાઈને જ્યાં
પાંચ પાંડવો હતા ત્યાં પહોંચી.

(ઉવાગચ્છિત્તા તે પંચ પાંડવે તેણં દસદ્વર્ણેણં કુસુમદામેણં આવેદિય
પરિવેદિયં કરેઈ, કરિત્તા એવં વયાસી, એણં મણ પંચપંડવા વરિયા, તણં

मैत्रेयारघमोमृतवर्णिनी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

६३७

कृत्वा एवमवादीत्-एते खलु पञ्च पाण्डवा मया वृता इति । ततः खलु 'तां वासुदेवपामोक्त्वा बहूनि रायसहस्राणि' तानि वासुदेवप्रमुखानि बहूनि राज-सहस्रसंख्यका वासुदेवप्रमुखा राजान इत्यर्थः । महता २ शब्देनोद्धोषयन्त एवं वदन्ति-सुवृत्तं खलु भोः ! द्रौपद्या राजवरकन्यया इति कृत्वा-इत्युक्त्वा स्वयंवर-मण्डपात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वका स्वका आवा-सास्तत्रोपागच्छन्ति । ततः खलु धृष्टद्युम्नः कुमारः पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां चातुर्घण्टमश्वरथं 'दुरुहः' दूरोहयति=आरोहयति दूरोह्य काम्पि-

पण्डवा वरियो, तएणं तेसि वासुदेवपामोक्त्वाणं बहूणि रायसहस्राणि, महया २ सहेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति, सुवरियं खलु भो ! दोव-इए रायवरकन्नाए त्ति कट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडि-निक्खमिस्सा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ) वहां पट्टं च कर उसने उन पांचो पांडवों को उस पंचवर्णवाली माला से अवेष्टित कर दिया । करके फिर वह इस प्रकार कहने लगी-ये पांच पांडव मैंने पतिरूप से वर लिये हैं । इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं ने बड़े २ जोर के शब्दों से ऐसा कहा इस राजवर कन्या द्रौपदीने बहुत अच्छे वर वरे ऐसा कहकर वे उस स्वयंवर मंडप से बाहिर हो गये । बाहिर आकर फिर वे जहां अपने २ आवास स्थान थे वहां चले आये । (उवागच्छिस्सा तएणं धट्टज्जुण्णे कुमारे पंच पंडवे दोवइं रायवरकण्णं चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहिस्सा कंपिल्लपुरं तेसि वासुदेवपामोक्त्वाणं बहूणि रायसहस्राणि, महया २ सहेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति, सुवरियं खलु भो ! दोवइए रायवरकन्नाए २ त्ति कट्टु सयंवरमंड-वाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिस्सा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ)

त्यां पंडोचीने तेष्से ते पांच पांडवोने पांच वर्षावाशी भाणाथी अवे-ष्टित, परिवेष्टित करी लीधा. त्थारपछी तेओने कडेवा लागी के डे पांच पांडवो । मे' तमने पति रूपमां वरी लीधा छे. त्थारभाड ते वासुदेव प्रमुख हजारो राजओओ ओहु भोटा सादथी आ प्रमाओ कहुं के आ २.००० वर कन्या द्रौपदीओ ओहु ० सारा वरो पसंड कर्या छे. आम कहीने तेओ सवे स्वयंवर मंडपमाथी ओडार नीकणी गया. ओडार नीकणीने तेओ न्यां पोताना आवास स्थानो हुतां त्यां जाता रह्या.

(उवागच्छिस्सा तएणं धट्टज्जुण्णे कुमारे पंचपंडवे दोवइं रायवरकण्णं चाउ-ग्घटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहिस्सा कंपिल्लपुरं मअं मज्जे णं जाव सयं भवणं अणु-

४३८

जीताथमकयाज्ञसूत्रे

ल्यपुरस्य मध्यमध्येन यावत् स्वकं भवनमनुप्रविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पट्यं' पट्टकं=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरो-इयति=भारोहयति, दूरोह्यं श्वेतपीतैः कलशैः 'मज्जावेइ' मज्जयति=स्नपयति अग्निहोमं विवाहविधिनाऽग्नी होमं कारयति, पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपद्याश्च पाणिग्रहणं कारयति, अत्र पञ्चानां पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये षष्ठी । ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपद्या राजवरकन्यायाः इममेतद्रूपं प्रीतिदानं यौतुकदानं ददाति,

मज्झं मज्झेणं जाव सयं भवणं अनुपविसइ, तएणं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकन्यं पट्यं दुरूहेइ, दुरूहिता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्निहोमं कारवेइ, पंचणं पंडवानं दोवइए य पाणिग्राहणं करावेइ,) इसके बाद धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पांच पांडवों को एवं राजवर कन्या द्रौपदी को चारघंटों से युक्त उस अश्वरथ पर बैठाया-बैठाकर कांपिल्यपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहां अपना भवन था वहां आया वहां आकर वह उसमें उन सब के साथ प्रविष्ट हुआ । इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पांचों पांडवों को और राजवर कन्या उस द्रौपदी को एक पट्टक पर बैठा दिया-बैठाकर फिर उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चांदी सोने के घड़ों से-अभिषेक करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और उसकी साक्षी पूर्वक पांचों-पांडवों के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का पाणि ग्रहण संस्कार करवा दिया । (तएणं से दुवए राया दोवइए राय-

पविसइ, तएणं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकन्यं पट्यं दुरूहेइ, दुरूहिता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्निहोमं कारवेइ, पंचणं पंडवानं दोवइए य पाणिग्राहणं करावेइ)

त्यारपछी धृष्टद्युम्न कुमारे ते पांच पांडवोंने अने राजवर कन्या द्रौपदीने आर घंटवाणा ते अश्वरथ उपर भेसाडया अने भेसाडीने कांपिल्यपुर नगरनी पक्के थपने न्यां पोतानुं लवन छतुं त्यां गया. त्यां जठने तेओ सवे तेमां प्रविष्ट थया. त्यारपछी ड्रुपद राजाओ ते पांचे पांडवोंने अने राजवर कन्या ते द्रौपदीने ओक पट्टक उपर भेसाडी दीधा अने भेसाडीने तेबे तेभने सइइ, अने पीणा कणशेथी-ओटले के आंही अने सोनाना कणशेथी अभिषेक करावडाओये. अभिषेक करावीने तेबे अग्निहोम करावराओये अने तेनी साक्षीमां पोतानी कन्या द्रौपदीने छस्तभेजाप तेओनी साथे करावी दीधा.

(तएणं से दुवए राया दोवइए रायवरकणयाए इमं एयाकं पीईदानं

अनगरधर्मांशुसर्वाङ्गी डी० अ० १३ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४३९

तद् यथा—अष्ट हिरण्यकोटीः, यावत्=अष्ट रजतकोटी, अष्ट सुवर्णकोटीः, अष्ट 'पेसणकारीओ' प्रेषणकारिणीः, आज्ञाकारिणीः दासचेटीः—दासपुत्रीः, अन्नं च विपुलं धनकनक—यावत् धनं—गणिमादिकं, कनकम् अघटितस्वर्णं, यावच्छन्देन—रत्ननि—कर्केतनादीनि, मणयश्चन्द्रकान्ताद्याः मौक्तिकानि च शङ्खश्च प्रतीत एव शिलाप्रवालानि च विद्रुमाणि रक्तरत्नानि—पद्मरागादीनि तान्येव सद् विद्यमानं यत् सारं=प्रधानं स्वापतेयं द्रव्यं तद् ददाति स्म ।

ततः खलु स द्रुपदो राजा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञः विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रगन्धादिमिर्यावत् सत्कारयति संमानयति, सत्कार्यं संमान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २२ ॥

वरकण्णयाए इमं एयारुवं पीईदाणं दलयइ, तं जहा—अट्टहिरण्यकोटीओ जाव अट्टपेसणकारिओ दासचेटीओ, अण्णं च विउलं-धणकणग जाव दलयइ, तण्णं से दुवए राया ताई वासुदेव पामोक्खाणं विउलेणं असण ४ वत्थगंध जाव पडिविसज्जेइ) इसके बाद द्रुपद राजाने राजवर कन्या उस द्रौपदी के लिये इतना इस प्रकार प्रीति दान दिया आठ हिरण्य कोटि—चांदी के बने हुए आठ करोड़ आभूषण, सुवर्ण के बने हुए आठ करोड़ आभूषण यावत् आज्ञा कारिणी ८ आठ दासियों और भी बहुत सा गणिमादिक रूप धन, अघटित सुवर्ण, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणि, मौक्तिक, शङ्ख, विद्रुम, पद्मरागादि रक्त रत्न । यह सब सारभूत द्रव्य उसके लिये प्रदान किया । इसके बाद द्रुपदराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार एवं वस्त्र गंध आदि से सत्कृत सम्मानित कर अपने यहां से बिदा कर दिया ॥ सू० २२ ॥

दलयइ, तं जहा अट्ट हिरण्यकोटीओ जाव अट्ट पेसणकारीओ दासचेटीओ, अण्णं च विउलं धणकणग जाव दलयइ, तण्णं से दुवए राया ताई वासुदेव पामोक्खाणं विउलेणं असण ४ वत्थ गंध जाव पडिविसज्जेइ)

त्यारपछी द्रुपद राजाओ राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाछे प्रीतिदान आभ्युं के आठ हिरण्य—कोटि—चांदीना आठ करोड़ आभूषणो यावत् आज्ञाभां रडेनारी आठ दासीओ अने भीन्नुं पणु धणुं गणुिम वगेरे रुप. धन, अघटित सुवर्ण, कर्केतन वगेरे रत्न, चन्द्रकान्त वगेरे मणि, मौक्तिक, शङ्ख, विद्रुम, पद्मराग वगेरे रक्त रत्नो आभ्या. आ अणुं सारभूत धन द्रौपदीने आभ्युं. त्यारपछी द्रुपद राजाओ ते वासुदेव प्रमुख हजारो राजाओने अशन, पान, खाद्य, अने स्वाद्य रुप थार नतना आहारो अने वस्त्र, गंध वगेरेथी सत्कृत सम्मानित करीने पोताना नगरथी बिदाय कयो. ॥ सूत्र २२ ॥

मूलम्—तएणं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं राय० करयल एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थि-णाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवइए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह, तएणं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं२ जाव पहारेत्थ गमणाए । तएणं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सदा० २ एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थि-णाउरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिसए कारेह अब्भु-ग्गयमूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेंति, तएणं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं दोवइए देवीए सद्धिं हयगयसंपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडि-निक्खमइ२ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए, तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबि० सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपा-मुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणांति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छइ, तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्टुट्टे ण्हाए कयवलि० जहा दुवए जाव जहारिहं आवासे दलयइ, तएणं ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव

मनगारधर्मावृत्तवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४४१

सयाइं२ आवासाइं तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तएणं
से पंडुराया हत्थिणाउरणयरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता
कोडुंविय० सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणु-
प्पिया ! विउलं असण४ तहेव जाव उवणेति, तएणं ते
वासुदेवपामोक्खा वहवे राया पहाया कयवलिकम्मा तं
विउलं असणं४ तहेव जाव विहरंति, तएणं से पंडुराया
पंच पंडवे दोवइं च देविं पट्टयं दुरुहेइ दुरुहित्ता सेयपी-
एहिं कलसेहिं पहावेति पहावित्ता कल्लाणकारि करेइ करित्ता
ते वासुदेवपामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेणं असण४
पुप्फवत्थेणं सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ताइं
वासुदेवपामोक्खाइं वहूहिं जाव पडिगयाइं ॥ सू० २३ ॥

टीका-‘ तएणं से ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु पाण्डू राजा तेषां वासुदेव-
प्रमुखानां बहूनां राजसहस्राणां करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं
कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुमियाः ! इस्तिनापुरे नगरे पञ्चानां पाण्ड-
वानां द्रौपद्याश्च देव्याः कल्याणकरो भविष्यति तत्-वस्मात् गूयं खलु हे देवानु-
मियाः मामनुगृह्यन्तः, अकालपरिहीनं=हालविलम्बरहितं-शीघ्रं समवसरत=आग-

‘ तएणं से पंडुराया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से पंडुराया) उस पांडुराजा ने (तेसिं
वासुदेव पामोक्खा णं) उन वासुदेव प्रमुख (बहूणं राय० करयल
एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियो । हात्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवानां
दोवइए देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं

तएणं से पंडुराया इत्यादि—

टीकार्थ-‘ (तएणं) त्वारपछी (से पंडुराया) ते पांडु राजाये (ते सिं
वासुदेवपामोक्खाणं) ते वासुदेव प्रमुख

(बहूणं राय० करयल एवं वयापी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! हात्थिणाउरे
नयरे पंचण्हं पंडवानां दोवइए, देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भेणं देवाणु-
प्पिया ! ममं अनुगृहिमाणा अकालपरिहीणं समोसरइ)

મને કુરુત । તતઃ સ્વલુ વાસુદેવમમુખાઃ પ્રત્યેકં ૨ યાવત્ પ્રાધારયત્ ગમનાય= હસ્તિનાપુરં નગરં ગન્તું પ્રવૃત્તા इत्यर्थः ।

તતઃ સ્વલુ સ પાણ્ડુનામકો રાજા કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શન્દયતિ, શન્દયિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છત સ્વલુ યુયં હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! હસ્તિનાપુરે પચ્ચાર્ના પાણ્ડવાનાં પશ્ચ 'પાસાયવર્ડિસણ' પ્રાસાદાવતંસકાન્ કારયત । કિં ભૂતાનિત્યાહ-'અન્બુ-ગયમુસિય' અભ્યુદ્ગતોચ્છિતાન્-અત્યુચ્ચાનિત્યર્થઃ । વર્ણકઃ-પ્રથમાધ્યયનોક્ત-

અણુગિળ્હમાણા અકાલપરિહીણં સમોસરહ) હજારોં રાજાઓં સે અપને દોનોં હાથોં કી અંજલિ કરકે ઓર ઉસે શિર પર રસ્થકર કે ઘડી નમ્રતા કે સાથ નમસ્કોર કરકે-ઇસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર નગર મેં પાંચ પાંડવોં ઓર દ્રૌપદી દેવી કા કલ્યાણકોરી ઉત્સવ હોગા ઇસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ સબ મેરે ઉપર અનુગ્રહ કરકે શીઘ્ર સે શીઘ્ર પધારેં । (તણં વાસુદેવપામોક્ત્વા પત્તેયં ૨ જાવ પહારેત્થ ગમ-ણાણ) ઇસ કે બાદ વે વાસુદેવ પ્રમુખ પ્રત્યેક જન વહાં હાસ્તિના પુર જાને કે લિયે પ્રસ્થિત હો ગયે । (તણં સે પંડુરાયા કોટુમ્બિકપુરિસં સદાવેહ ૨ એવં વયાસી-ગચ્છહ પંતુભ્મે દેવાણુપ્પિયા હત્થિણાઝરે પંચણં પંડવાણં પંચ પાસાયવર્ડિસણ કારેહ, અન્બુગયમુસિય વળ્ણઓ જાવ પઢિ-રુવે) ઇતને મેં પાંડુરાજા ને કૌટુમ્બિકપુરુષોં કો બુલાયા ઓર બુલાકર ઉનસે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ હસ્તિના પુર જાઓ વહાં જાકર પાંચોં પાંડવોં કે લિયે પાંચ શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદ બનવાઓ । યે પ્રાસાદ

હજારો રાજાઓને પોતાના અને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને ખૂબ જ નમ્રપણે નમસ્કાર કર્યા અને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર નગરમાં પાંચે પાંડવો તેમજ દ્રૌપદી દેવીનો કલ્યાણકારી ઉત્સવ થશે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ મારા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે ત્યાં પધારો. (તણં વાસુદેવપામોક્ત્વા પત્તેયં ૨ જાવ પહારેત્થ ગમણાણ) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેક રાજા ત્યાંથી હસ્તિનાપુર જવા ઉપડી ગયા.

તણં સે પંડુરાયા કોટુમ્બિકપુરિસં સદાવેહ ૨ એવં વયાસી-ગચ્છહ પંતુભ્મે દેવાણુપ્પિયા હત્થિણાઝરે પંચણં પંડવાણં પંચ પાસાયવર્ડિસણ કારેહ, અન્બુગયમુસિય વળ્ણઓ જાવ પઢિરુવે)

તે વખતે પાંડુ રાજાએ કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવ્યાને તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે હસ્તિનાપુર જાઓ અને ત્યાં જઈને

ભગવાંરથમોમૃતવર્ષિણો ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ્

૪૪૬

મેઘકુમાર-પ્રાસાદવદ્ વર્ણનં વિજ્ઞેયમ્ યાવદ્ અનેકસ્તમ્ભશતસંનિવિષ્ટાન્ પ્રતિ-
રૂપાન્-શોભાસૌન્દર્યસમ્પન્નાન્ । તતઃ સ્વલુ તે કૌદુમ્બિકપુરુષાઃ-‘તથાઽસ્તુ’
ઇત્યુક્ત્વા પ્રતિશૃણ્વન્તિ=આજ્ઞાં સ્વીકૃર્વન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય હસ્તિનાપુરં ગત્વા પશ્ચ
પ્રાસાદાવતંસકાન્ યાવત્ કારયન્તિ । તતસ્તદનન્તરં પાણ્ડુરાજા પશ્ચભિઃ પાણ્ડૈ
દ્રૌપદ્યા દેવ્યા ચ સાર્ધં હયગજરથપદાતિસંપરિવૃતઃ કામ્પિલ્પપુરાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ-
પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યત્રૈવ હસ્તિનાપુરં નગરં તત્રૈવોપાગતઃ ।

તતઃ સ્વલુ સ પાણ્ડુરાજા તેષાં વાસુદેવપ્રમુખાણામાગમનં જ્ઞાત્વા કૌદુમ્બિક-
પુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છત સ્વલુ યુયં હે દેવાનુમિયાઃ !

बहुत ऊँचे हैं। इन प्रासादों का वर्णन प्रथम अध्ययन में उक्त मेघ
कुमार के प्रासादों जैसा जानना चाहिये। यावत् ये प्रासाद अनेक स्तं-
भशत से युक्त हों-शोभा सौन्दर्य से संपन्न हों। (तएणं ते कोडुम्बिय
पुरिसा पडिसुणेति, जा करावेति) राजा की इस प्रकार की आज्ञा को
उन कौटुम्बिक पुरुषों ने मान लिया और हस्तिनापुर जाकर उन्होंने
पांच प्रासाद कथित रूपसे बनवा दिये। (तएणं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं
दोवइए देवीए मर्द्धि हय गय संपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २
जेणेव हस्तिणाउरे तेणेव उवागए) इसके बाद वे पांडुराजा पांडवों
और द्रौपदी देवी को साथ लेकर हय, गज, आदि चतुरंगिणी सेना के
साथ २ कांपिल्यपुर नगर से चल दिये-चलकर जहां हस्तिनापुर नगर
था-वहां आये (तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं

પાંચે પાંડવો માટે પાંચ ઉત્તમ મહેલ બનાવડાવેા. મહેલ બંધા હોવા બેઠાએ.
આ મહેલોતું વર્ણન પહેલા અધ્યયનમાં વર્ણવવામાં આવેલા મેઘ કુમારોના
મહેલો જેવું બાણી લેવું બેઠાએ. યાવત્ આ બધા મહેલો ધણા સંકટો થાંભલા-
ઓથી યુક્ત તેમજ શોભા તથા સૌંદર્ય સંપન્ન હોવા બેઠાએ. (તएणं તે
કોડુમ્બિયપુરિસા પડિસુણેતિ જાવ કરાવેતિ) આ બાતની રાબાની આજ્ઞાને
કૌટુમ્બિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને હસ્તિનાપુર બંધને તેઓએ કહેવા
મુજબજ પાંચ મહેલો તૈયાર કરાવી દીધા.

(તएणं સે પંડુए પંચહિં પંડવેહિં દોવइए દેવીए મર્द्धિ હયગયસંપરિવુડે
કંપિલ્લપુરાઓ પડિનિક્ખમइ ૨ જેણેવ હસ્થિણાઉરે તેણેવ ઉવાગए)

ત્યારપછી તે પાંડુ રાજા પાંચે પાંડવો અને દ્રૌપદી દેવીને લઇને સાથે
ઘોડા, હાથી વગેરેની ચતુરંગિણી સેનાની સાથે કાંપિલ્યપુર નગરની બહાર
નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યાં પહોંચ્યા.

(તएणं સે પંડુરાયા તેસિં વાસુદેવપામોક્ખાણં આગમણં જાણિત્તા કોડુંબિય૦

હસ્તિનાપુરસ્ય નગરસ્ય બહિઃ પ્રદેશે વાસુદેવપ્રમુખાણાં બહૂનાં રાજસહસ્તાણામાવા-
સાન્ કારયત, કૌટુશાનાવાસાન્ इत्याह—‘अणेगखंभ’ इत्यादि । अनेकस्तम्भ-
शतसंनिविष्टान्, तथैव—यथाऽऽवासान् कारयितुं पाण्डुना कथितं, तथैव कारयित्वा
कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रत्यर्पयन्ति=राज्ञे निवेदयन्ति स्म । ततः खलु वासुदेव-
प्रमुखा बहु सहस्रसंख्यका राजानो यत्रैव स्वकाः स्वका आवसास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

जाणिस्ता कोटुंबिय० सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्हे
देवानुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोकखाणं
बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह) वहां आकर उन पांडुराजा ने उन
वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का आगमन जानकर कौटुम्बिक पुरुषों
को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रियो ! तुम
लोग जाओ और हस्तिनापुर नगर के बाहिर वासुदेव प्रमुख हजारों
राजाओं को ठहरने के लिये आवासों को बनवाओ (अणेगखंभसय
तद्देव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामोकखा बहवे रायसहस्सा
जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति) ये आवास अनेक सेंकड़ोंस्तम्भों
से युक्त हों । इस प्रकार जैसे आवासों को बनवाने के लिये पांडु राजा
ने उन कौटुम्बिक पुरुषों से कहा था—वैसे ही आवास उन कौटुम्बिक
पुरुषों ने बनवादिये और बनवाकर पीछे इसकी खबर भी राजा को
करदी । इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहां हस्तिनापुर

सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्हे देवानुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स
नयरस्स बहिया वासुदेवपामोकखाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह)

ત્યાં આવીને તે પાંડુ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને
આવી ગયેલા જાણીને પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને
તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને હસ્તિનાપુર
નગરની બહાર વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને રહેવા માટે આવાસો બનાવો.

(अणेगखंभसय० तद्देव जाव पच्चप्पिणंति, तए णं ते वासुदेवपामोकखा
बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति)

આ બધા આવાસો સેંકડો સ્તંભોથી યુક્ત હોવા જોઈએ. આ રીતે પાંડુ
રાજાએ જે જાતના આવાસો બનાવડાવવાનો હુકમ કર્યો હતો તે કૌટુમ્બિક
પુરુષોએ તે જ જાતના આવાસો બનાવડાવી દીધા અને બનાવડાવીને કામ પુરું
થઈ જવાની રાજાને ખબર આપી. ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ
જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યાં આવી ગયા.

कौटिल्यमोक्षतत्त्वविवेकी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४४५

उपागत्य तथैव यावद् विहरन्ति । ततः खलु स पाण्डू राजा हस्तिनापुरं नगर-
मनुपविशति, अनुपविश्य कौटुम्बिकपुरुषान् शङ्कयति, शङ्कयित्वा एवमवादीत-
यूयं खलु हे देवानुमिथाः ! विपुलम् अशनपानपानस्वाद्यस्वाद्यं, उपस्कारयत,
उपस्कार्य यज्ञैव वासुदेवप्रमुखास्तत्रैवोपनयत । तथैव यावद् उपनयन्ति, ततस्ते
कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव विपुलमशनादि चतुर्विधाऽऽहारमुपस्कारयन्ति उपस्कार्य
यावद् वासुदेवादीनामन्ति के-उपनयन्ति=उपस्थापयन्ति ।

नगरं था वहाँ आगये । (तएणं से पंडुराराया तेसि वासुदेवपामोक्खा
णं आगमणं जाणित्ता हट्टुट्टे ण्हाए कयवलिकम्मे जहा दुवए जाव जहा
रिहं आवासे दलयंति, तएणं ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव
सयाइं २ आवासाइं तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरंति) वासुदेव
प्रमुख उन हजारों राजाओं का आगमन जानकर पांडुराजाने हर्षित एवं
संतुष्ट होकर स्नान किया बाणसादि पक्षियों के लिये अन्नादि का देने
रूप बलि कर्म किया- जिस प्रकार दुपद राजाने यथा योग्य आवास-
स्थान इन्हों के लिये दिये थे उसी तरह पांडुराजा ने भी उन्हें जो जिस
के योग्य स्थान था वह आवासस्थान दिया । पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख
हजारों राजा जहाँ अपने २ ठहरने के लिये आवासस्थान थे वहाँ गये
वहाँ जाकर वे उसी तरह से ठहर गये । (तएणं से पंडुराराया हत्थिणा-
उरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडुंभिय० सदावेइ, सदावित्ता
एवं बयासी-तुम्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ तहेव जाव उव-

(तएणं से पंडुराराया तेसि वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्टुट्टे
ण्हाए कयवलिकम्मे जहा दुवए जाव जहारिहं आवासे दलयंति, तएणं ते वासुदेव
पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइं २ आवासाइं तेणेव उवाग० तहेव
जाव विहरंति)

वासुदेव प्रमुख ते हजारों राजाओं का आगमन सांभालने उचित तेमजे
संतुष्ट यजने पांडु राजाओं स्नान कयुं. कागडा वगेरे पक्षीओंना भाटे अन्न
वगेरेना लाग अर्पने बलि कर्म कयुं. दुपद राजाओं जेम ते राजाओंने यथा-
योग्य आवास स्थानो रखेवा भाटे आप्या हुता तेमजे पांडु राजाओं पणु
तेओ अधाने उचित आवासे आप्या. त्यारपछी तेओ वासुदेव प्रमुख हजारों
राजाओं जथा पोतपोताना रोकवाना आवासे हुता त्यां गया, त्यां पछोथीने
तेओ त्यां रोकार्थ गया.

(तएणं से पांडुराराया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता,
कोडुंभिय० सदावेइ, सदावित्ता एवं बयासी-तुम्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहवो राजानः स्नाताः कृतबलिकर्माणः= काकादिजीवेभ्यः कृतान्नादिसंविभागाः, तद् विपुलम् अशनं पानं स्वाद्यं स्वाद्यं तथैव-आस्वादयन्तो विस्वादयन्तः परिभुञ्जाना यावद् विहरन्ति=आसतेस्म । ततस्तदनन्तरं स पाण्डुराजा तान पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं च देवीं 'पट्टयं' पट्टकं= पट्टकोपरि 'दुरुहेइ' दूरोहयन्ति=आरोहयति । आरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः स्नपयन्ति,

जैति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा तं विउलं असणं ४ तहेव जाव विहरन्ति-तएणं से पंडुराया पंचपंडवे दोवई च दोवि पट्टयं दुरुहेइ, दुरुहित्ता सेयपीएहिं ण्हावेति, ण्हावित्ता कल्लाण कारि करेइ) इस के बाद पांडुराजा ने हस्तिनापुर नगर में प्रवेश किया प्रवेश कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो ! तुम लोग विपुल मात्रामें अशनादि रूप चतुर्विध आहार बनवाओ बनवाकर फिर उसे जहां वासुदेव प्रमुख राजा ठहरे हुए हैं वहां लेजाओ । इस प्रकार की अपने राजाकी आज्ञानुसार उन्होंने वैसा ही किया-चतुर्विध आहार बनवाया और फिर उसे वासुदेव आदि राजाओं के पास पहुँचा दिया । आहार के पहुँचने पर उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने स्नान किया बलिकर्म किया-काक आदि जीवों के लिये कून अन्नमें से विभाग देनेरूप कियाकी-बादमें उन्होंने ने उस चतुर्विध आहार को किया । इसके पश्चात् पांडुराजा ने उन पाँचों पांडवों

४ तहेव जाव उवर्णेति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा तं विउलं असणं ४ तहेव जाव विहरन्ति-तएणं से पंडुराया पंच पंडवे दोवई च दोवि पट्टयं दुरुहेइ, दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेति ण्हावित्ता कल्लाणकारि करेइ)

त्यारपछी पांडुराज हस्तिनापुर नगरमां प्रविष्ट थया. प्रविष्ट थधने तेओओे कौटुम्बिक पुश्पोने ओलाव्या अने ओलावीने तेओओे आ प्रभाण्णे कहुं के हे देवानुप्रियो ! तमे बोके विपुल मात्रामां अशन वगेरे ३५ तार नतने आहार बनावडावे. बनावडावीने तमे ते आहारने ब्यां वासुदेव प्रमुख राजओे शेकाया छे त्यां लध नओे, आ रीते पोताना राजनी आरा सांल-जीने ते बोकेओे ते प्रभाण्णे न क्युं. तेओओे तार नतना आहारो बना-वडाव्या अने त्यारपछी ते आहारोने वासुदेव प्रमुख राजओेनी पासे पडो-आडी दीधा. आहार पडोआडी दीधा आद ते वासुदेव प्रमुख राजओेओे स्नान क्युं अने कागडा वगेरे पक्षीओेने अन्न लाग अपीने अलिकर्म क्युं. त्यार पछी तेओओे ते तार नतना आहारने ब्या. त्यारआद पांडु राजओे ते

स्नपयित्वा 'कल्लाणकारि' कल्याणकारि-शुभकारकं कर्म कारयति, कारयित्वा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा पुष्पवस्त्रादिभिः सत्कारयति, संमानयति, सत्कार्यं संमान्य यावत् प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानो यावत् प्रतिगताः ॥ सू० २३ ॥

मूलम्—तएणं ते पंच पंडवा दोवईए देवोए सद्धिं कल्ला-
कल्लि वारंवारेणं ओरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरंति, तएणं
से पंडू राया अन्नया कयाइं पंचहिं पंडवेहिं कोतीए देवीए

को और द्रौपदी देवी को एक पट्टक पर बैठाया-बैठाकर उन का श्वेत पीत कलशों से चांदी और सोने के घड़ों से स्नान करवाया स्नान कर-
वाकर फिर उसने उनका शुभकारक कर्म करवाया । (करित्ता ते वासु-
देव पामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेणं असण ४ पुण्णवत्थेणं सक्कारेइ
सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं
जाव पडिगयाइं) शुभकारक कर्म करवाकर बाद में उन वासुदेव प्रमुख
हजारों राजाओं का उस पांडुराज ने विपुल अशन पान आदिरूप
चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्रादि से खूब सत्कार किया सन्मान
किया । यावत् फिर उन्हें अपने यहांसे अच्छी तरह से बिदा कर दिया ।
इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहां २ से जो २ आये थे
वहां २ चले गये ॥ सू० २३ ॥

पांचे पांडवे। अने द्रौपदी देवीने ओक पट्टक उपर ओसाडया अने ओसाडीने
सद्देह तेमज पीणा कणशेथी ओटले के चांदी अने सोनाना कणशेथी तेमने
स्नान कराव्युं, स्नान कराव्या भाइ तेमणे तेमनी पांसेथी शुल कर्मो करावडाव्यां.

(करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेणं असण पुण्णवत्थेणं
सक्कारेइ, सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ तएण ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं
जाव पडिगयाइं)

शुल कर्मो कराव्या भाइ ते वासुदेव प्रमुખ छल्लरे राज्ञेअने ते पांडु
राज्ञेअ विपुल अशन-पान वजेरे ३५ चतुर्विध आहारथी तेमज पुष्प वस्त्र
वजेरेथीअ ४ सत्कार कर्ये अने सन्मान क्युं, यावत् त्थारपछी तेअने त्थांथी
सारी रीते विहाय कर्या, वासुदेव प्रमुખ छल्लरे राज्ञेअ पञ्च क्थांथी आव्या
छता त्थां जता रक्खा. ॥ सूत्र २३ ॥

दोवइए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियालसद्धि संपरिवुडे
 सीहासणवरगए यावि विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लणारए दंस-
 णेणं अइभइए विणीए अंतो२ य कल्लसहियए मज्झत्थोवत्थिए
 य अल्लीणसोमपियदंसणे सुरुवे अमइलसगलपरिहिए काल-
 मियचम्मउत्तरासंगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदि-
 त्तिसिए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए
 पियगंधब्बे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणिओवयणिउप्पयणि
 लेसणीसु य संकामणिअभिओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसु य
 बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केस-
 वस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धणिसढ-उम्मुयसारणगयसुमुह-
 दुम्मुयहातीण जायवाणं अद्ध्युट्ठाण कुमारकोडीणं हिययदइए
 संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहुसु य सम-
 रसयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहंसदक्खणं अणुगवेस-
 माणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसितिलोक्कवलवगाणं आमं-
 तेऊण तं भगवई पक्कमणिं गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभि-
 लंधयंतो गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्ठणासम-
 संवाहमहस्समंडियं थिमियमेइणीतलं वसुहं ओलोइंतो रम्मं हत्थि-
 णाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए, तएणं से
 पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ पासित्ता पंचहिं पंड-
 वेहिं कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता
 कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइंपच्छुगगरइ पच्छुगगिच्छत्ता तिकल्ल-

अनगारधर्मासृतवर्णिनी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४४२

तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ महरिहेणं
आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए
दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं
रज्जे जाव अंतेउरेय कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से पंडूराया कौंती-
देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लणारयं आढंति जाव पज्जुवासंति,
तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजय अविरय अपडिहयप-
च्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भु-
ट्टेइ नो पज्जुवासइ ॥ सू० २४ ॥

टीका—‘ तएणं ते ’ इत्यादि । ततस्तस्तदनन्तरं खलु ते पञ्चपाण्डवा
द्रौपद्या देव्या साथं ‘ कल्लाकल्लि ’ कल्याकल्ये प्रतिदिवसं वारंवारेण उदारान्
भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहरन्ति । ततः खलु स पण्डू राजाऽन्यदा कदाचित्
पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या देव्या द्रौपद्या देव्या च साथं ‘ अंतो अंतेउरपरियाल ’

‘ तएणं ते पंच पंडवा ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते पंच पंडवा) वे पांचों पांडव (दोवईए
देवीए) द्रौपदी देवी के साथ—(कल्लाकल्लि वारंवारेण ओरालाइं भोग
भोगाइं जाव विहरंति—तएणं से पंडूराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं
कौंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धि अंतेउरपरियालसद्धि संपरिवुडे
सीहासणवरगए यावि चिहरइ) प्रतिदिन बारी बारी से उदारकाम
भोगों को भोगने लगे एक दिन की बात है—कि पांडु राजा किसी एक
समय पांचों पांडवों एवं अपनी पत्नी कुन्ती देवी और पुत्रवधू द्रौपदी

टीकार्थ—“ तएणं ते पंच पंडवा इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपञ्जी (ते पंच पंडवा) ते पांच पांडवो (दोवईए
देवोए) द्रौपदी देवीनी साथे

(कल्लाकल्लि वारंवारेण ओरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरंति—तएणं
से पंडूराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कौंतीए देवीए दोवईए देवीए य
सद्धि अंतेउरपरियालसद्धि संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि चिहरइ)

हरेश्वर वाराहस्वती उदार कामोभोग भोगववा लाग्या. ओक द्विवस्वनी बात

અન્તઃ=અન્તઃપુરસ્ય પ્રાસાદમધ્યે અન્તઃપુરપરિવારેણ 'પરિચાલ' ઇતિ લુપ્તરૂપી-
યાન્તં સાર્થં સંપરિચિતઃ સિંહાસનચરગતશ્રાપિ વિહરતિ । 'ઈમં ચ' અસ્મિન્ સમયે
સ્વલુ 'કચ્છુલ્લનારણ' કચ્છુલ્લનામ્નાપ્રસિદ્ધો નારદઃ દર્શનેન 'અહમહણ'
અતિભદ્રકઃ=ભદ્રદર્શનઃ 'વિણીણ' વિનીતઃ=નમ્રો વાહ્યતઃ 'અંતો ય' અન્તશ્ચ-
કલુષહૃદયઃ, 'મજ્જત્થોવત્થિણ ય' માધ્યસ્થ્યોપસ્થિતઃ=વાહ્યતો મધ્યસ્થભાવં પ્રાપ્તઃ
'અલ્લીણસોમપિયદંસણે' આલીનસૌમ્યપ્રિયદર્શનઃ આલીનાનામાશ્રિતાનાં સૌમ્યમ્
=આહ્લાદકં, પ્રિયં = પ્રીતિકારકં દર્શનં યસ્ય સ તથા, સુરૂપઃ - સુન્દરાકૃતિકઃ,
તથા-'અમહલસગલપરિહિણ' અમલિનસકલપરિહિતઃ=અમલિનં સકલમ્-અસ્વ-
ખંડમ્ પરિહિતં-સ્વકલસ્વસ્ત્રરૂપં પરિધાનં યસ્ય સ તથા, 'કાલમિયચમ્મઉત્તરાસંગ-

કે સાથ અંતઃપુર કે પ્રાસાદ કે ખીતર અન્તઃપુરપરિવાર કે સાથ
સિંહાસન પર વૈઠે હુણ થે-કિ (ઈમંચ ણં) હસી સમય (કચ્છુલ્લનારણ
પંડુરાયભવણંસિ અહવેગેણ સમોવહણ દંસણે ણં અહમહણ, વિણીણ,
અંતોય કલુસહિણ મજ્જત્થોવત્થિણ ય, અલ્લીણસોમપિયદંસણે સુરૂવે
અમહલસગલપરિહિણ) પાંડુરાજા કે ભવન મેં કચ્છુલ્લનામ સે પ્રસિદ્ધ
નારદ ગગન-આકાશ-માર્ગ સે વહે વેગસે ઉત્તર કર આયે। નારદ દેખને
મેં અતિ ભદ્ર થે। ઉપર સે વહે વિનીત થે। પરન્તુ ખીતર મેં હનકા
હૃદય બહુત અધિક કલુષિત થા। કેવલ ઉપર સે યે માધ્યસ્થ ભાવ
સંપન્ન થે। અપને આશ્રિત વ્યક્તિયોં કો હનકા દર્શન આહ્લાદક એવં
પ્રીતિ કારક હોતા થા। આકૃતિ હનકો વડી સુન્દર થી। હનકા સ્વકલ
રૂપ પરિધાન અમલિન-સોફ સ્વચ્છ ઓર સ્વખંડ રહિત થા। (કાલમિય

છે કે તે પાંડુ રાજા કોઈ એક વખતે પાંચે પાંડવો, પોતાની પત્ની કુંતી દેવી
અને પુત્ર વધુ દ્રૌપદીની સાથે રણવાસના મહેલની અંદર પોતાના પરિવારની
સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા. (ઈમં ચ ણં) તે વખતે

(કચ્છુલ્લનારણ પંડુરાયભવણંસિ અહવેગેણ, સમોવહણ દંસણે ણં અહમહણ
વિણીણ અંતોય કલુસહિણ મજ્જત્થોવત્થિણ ય, અલ્લીણસોમપિયદંસણે સુરૂવે
અમહલસગલપરિહિણ)

પાંડુ રાજાના ભવનમાં કચ્છુલ્લ નામથી પંકાયેલા નારદ ગગન-આકાશ
માર્ગથી બહુ જ વેગથી ઉતરીને આવ્યા. નારદ દેખાવમાં અત્યંત ભદ્ર હતા.
ઉપર ઉપરથી તેઓ એકદમ વિનમ્ર હતા. પણ અંતર તેમનું મન ખૂબ જ
કલુષિત હતું. ફક્ત ઉપર ઉપરથી જ તેઓ માધ્યસ્થ ભાવ સંપન્ન હતા.
આશ્રિત વ્યક્તિઓને તેમનું દર્શન આહ્લાદક અને પ્રીતિકારક હતું. તેમની
આકૃતિ ખૂબ જ સુંદર હતી. તેમનું વસ્ત્ર રૂપ પરિધાન, એકદમ સ્વચ્છ-નિર્મળ
હતું અને અંદરહિત હતું.

अमंगारधमोमृतवर्णिनी टी० अ० १६ द्रौपदीवर्तितनिरूपणम्

४५१

रह्यवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासंगरचितवक्षाः—कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचितं शोभितं वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीयवस्त्रधारकः । तथा—'दण्डकमण्डलुहस्त्ये' दण्डकमण्डलुहस्तः—'जडामउडदित्तसिरए' जटामुकुटदीप्तशिरस्कः, जण्णोवइयगणे-त्तियमुंजमेहलवागलधरे' यज्ञोपवीतगणेत्रिकामुञ्जमेखलावलकलधरः—तत्र यज्ञो-पवीतं यज्ञसूत्रं गणेत्रिका—रुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणं, मुञ्जमेखला—मुञ्जमयं कटि-बन्धनसूत्रं वलकलं वृक्षत्वक्, तेषां धारकः स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत-रुद्राक्षमालाः, मुञ्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतवलकल इत्यर्थः । 'हत्थकयकच्छ-भीए' हस्तकृतकच्छपिकः—हस्ते कृता कच्छपिका—वीणा येन स तथा, 'पियगं-धव्वे' मियगन्धर्वः—गानप्रियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे' धरणिगोचरप्रधानः—धरणिगोचराणां—भूमिचारिणां जनानां मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात् चम्पउत्तरासंगरह्यवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये, जडामउडदित्तसिरए, जन्नो वइयगणेत्तिय मुंजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंधव्वे, धर-णिगोयरप्पहाणे, संवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसंकावणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासंग से सुशोभित था । दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोंमें था । जटारूपी मुकुट से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था । यज्ञसूत्र—जनेऊ, गणेत्रिका कलाई का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुञ्जमेखला—मुंज का बना हुआ कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्होंने धारण कररक्खी थी । हाथमें कच्छपिका—वीणा ले रक्खी थी । गान इन्हें बहुत प्रिय था । भूमि गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे—क्यों कि ये आकाश में भी विहार

(कालमियचम्पउत्तरासंगरह्यवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइय गणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे, धरणि-गोयरप्पहाणे, संवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य संकावणि अभि-ओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे)

तेभनुं वक्षस्थल काणा डरखुना यमइय उत्तरासंगथी शैलतुं डतुं. दंड अने कमंडल तेभनां डथोभां डता. जटा इपी मुकुटथी तेभनुं मस्तक प्रकाशित थरं रहं डतुं. यज्ञ सूत्र—जनेऊ, गणेत्रिका—कांडाभां पहरेवान्नी आल-रखु इय रुद्राक्षनी माला, मुंज—मेखला—मुंजनुं अनेतुं केडभां पडोवानुं अंधन सूत्र अने वृक्षकनी छाल तेओओ धारखु करेदी डती. डायभां तेओओ कच्छ-पिका—वीणा धारखु करेदी डती. संगीत तेभने प्रिय गमतुं डतुं. भूमि गोचरीओने वच्चे तेओ प्रधान डता केमके तेओ आकाशभां बिथरखु डरता

“ સંવરણાવરણિઓવ્યણિઉપ્પયણિછેસળીસુ ય ” સંવરણ્યાવરણ્યવપતન્યુત્પતની-
શ્લેષળીષુ ચ ’ સંવરણી-સ્વસ્યાન્તર્ધાનકારિણી વિદ્યા, આવરણી-પરસ્યાન્તર્ધાન-
કારિણી વિદ્યા, અવપતનીઅવોડવતરણી વિદ્યા, ઉત્પતની-ઉર્ધ્વગમનકારિણી વિદ્યા,
શ્લેષળી-વજ્રલેપાદિવત્ સન્ધાનકારિણી વિદ્યા, તામુ, તથા-‘ સંક્રામણિ અભિ-
ઓગપ્પણત્તિ ગમળીથંમળીસુ ય ’ સંક્રમણ્યમિયોગપ્રજ્ઞપ્તિગમનીસ્તમ્ભનીષુ ચ-
સંક્રામળી-વિદ્યા-વિશેષ: યયા-પરશરીરાદૌ પ્રવેષ્ટું શક્નોતિ, સા વિદ્યા, અભિ-
યોગ: સ્વર્ણાદિનિર્માણવિદ્યા વશીકરણવિદ્યા ચ, પ્રજ્ઞસિ: = અવિદિતાર્થબોધિની ગમની

કરતે થે । સંવરણી, આવરણી અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષળી इन विद्या-
ओं में तथा संक्रमणी, अभियोग, प्रज्ञप्ति, गमनी स्तम्भनी इन नाना
प्रकार की विद्याधर संबन्धी विद्याओं में इनकी कीर्ति विख्यात थी ।
जिस विद्या के प्रभाव से अपने आपको अन्तर्धान कर दिया जाता
जाता है उसका नाम संवरणी विद्या है । दूसरा जिस विद्या से अन्त-
र्धान करदिया जाता है उस विद्या का नाम आवरणी विद्या है । जिस
विद्या के प्रभाव से ऊपर से नीचे उतरा जाता है उसका नाम अव-
पतनी और जिसके प्रभाव से ऊर्ध्व में गमन किया जाता है उसका
नाम उत्पतनी विद्या है । वज्रलेप आदि की तरह जो चिपका देती है
वह श्लेषणी विद्या है । जिस विद्या के बल से दूसरे के शरीरमें प्रविष्ट
होना होता है-ऐसी परशरीरप्रवेशकारिणी विद्याका नाम संक्रमणी
विद्या है । स्वर्ण आदि के बनाने की जो निपुणता है-एवं परको

હતા. સંવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા-
ઓમાં તેમજ સંક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞસિ, ગમની, સ્તંભની આ અનેક
જાતની વિદ્યાધર સંબંધી વિદ્યાઓમાં તેમની કીર્તિ ચોખેર પ્રસરેલી હતી જે
વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સંવરણી વિદ્યા
છે. જે વિદ્યાથી બીજાને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે. જે
વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના
પ્રભાવથી ઉર્ધ્વ (આકાશ) માં ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનું નામ ઉત્પ-
તની છે. વજ્ર લેપ વગેરેની જેમ જે ચોંટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે. જે
વિદ્યાના બળથી બીજાના શરીરમાં પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી
વિદ્યાનું નામ સંક્રમણી વિદ્યા છે. સોનું વગેરે બનાવવામાં જે નિપુણતા છે
અને બીજાને વશવર્તી કરવાની જે શક્તિ છે તે વિદ્યાનું નામ અભિયોગ

भगवान् रामायणम् अथ श्री रामायणम्

४५३

—गमनप्रकर्षसाधिका—आकाशगामिनी च विद्याविशेषः—स्तम्भनी—स्तम्भनकारिणी विद्या, तासु 'बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु' बहुषु—नानाविधासु विद्याधरीषु=विद्या-धर सम्बन्धिषु विद्यासु 'त्रिस्त्रयजसे' विश्रुतयशाः—विद्यासु नैपुण्या=विख्यातकीर्तिः, इष्टः=प्रियः, रामस्य=बलदेवस्य केशवस्य=कृष्णवासुदेवस्य च पुनः केषां प्रियइत्याह—'पञ्जुन्नपईवसंब अनिरुद्धनिसदउस्सुयसारणगयसुमुहदुम्मुहाईणं जायवाणं' प्रद्युम्न प्रतीपशाम्बानिरुद्धनिषधोत्सुकसारणगजसुमुखदुर्मुखवादीनां यादवानाम्, प्रद्युम्नादीनां संख्यामाह—प्रद्युम्नः, प्रतीपः, शाम्बः, अनिरुद्धः, निषधः, उत्सुकः,

वश में करने कि जो शक्ति है उस विद्या का नाम अभियोग विद्या है। अविदित अर्थ जिस के प्रभाव से विदित हो जावे वह प्रज्ञप्ति विद्या गमन प्रकर्ष की साधक तथा आकाश में गमन कराने वाली विद्या गमनी विद्या स्तम्भन कराने वाली विद्यास्तम्भनी विद्या है। (इष्टे रामस्स य केसवस्स य पञ्जुन्नपईवसंब अनिरुद्धनिसदउस्सुय सारण गयसुमुह दुम्मुहातीण जायवाणं अद्दुद्वाण कुमारकोडीणं हिययदइए संधवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, भंडणामिलासी, बहुसु य समर सयसंपराएसु दंसणए, समंतओ कलहंसदक्खणं अणुगवेसमाणे, असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कवलवगाणं, आमंतेऊण तं भगवई पक्कमणि गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागरनगरनिगमखेडक्कवडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहरसमंडियं थिमिणमेइणीतलं वसुहं आलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए) बलदेव एवं कृष्ण वासुदेव को ये इष्ट थे तथा साढे तीन करोड, प्रद्युम्न, प्रतीप, शाम्ब, अनिरुद्ध निषध उत्सुक, सारण, गज सुकुमाल सुमुख दुर्मुख

विद्या छे अविदित अर्थ जेना प्रभावथी बाणी शक्य ते प्रज्ञप्ति विद्या, गमन प्रकर्षनी साधिका तेभज आकाशमां गमन करनारी विद्या गमनी विद्या छे-बाय छे स्तम्भन करानारी विद्या स्तम्भनी विद्या छे। (इष्टे रामस्स य केस-वस्स य पञ्जुन्नपईवसंब अनिरुद्धनिसदउस्सुयसारणगयसुमुहदुम्मुहातीण जायवाणं अद्दुद्वाणकुमारकोडीणं हिययदइए संधवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, भंडणामिलासी, बहुसयसमरसयसंपराएसु दंसणए समंतओ कलहंसदक्खणं अणुगवेसमाणे अस-माहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कवलवगाणं, आमंतेऊण तं भगवई, पक्कमणि गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागरनगरनिगमखेडक्कवडमडंबदोण-मुहपट्टणासमसंवाहसहरसमंडियं थिमिण मेइणीतलं वसुहं आलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए) अणदेव तेभज कृष्ण वासुदेवने तेओ छिट हता अने साढे त्रय करोड प्रद्युम्न, प्रतीप, शाम्ब, अनिरुद्ध, निषध, उत्सुक, सारण, गज सुकुमाल, सुमुख दुर्मुख अथवा वदय कुमाराने भाटे तेओ इदधहयित हता ओठसे के भूम ज प्रिय हता. ओठसा

૪૫૪

કોતાધર્મકથાસૂત્ર

સારણઃ, ગજસુકુમાલઃ, સુમુખઃ, દુર્મુખઃ, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषां ' अद्दुद्गाणं कुमारकोडीणं ' अर्धचतुर्थीनां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिप्रमितानां यादवकुमाराणामित्यर्थः ' हिययदइए ' हृदयदयितः=हृदयप्रियः, ' संथावए ' संस्तावकः-यादवानां प्रशंसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवादः, युद्धं=शस्त्रादिभिः प्रहरणं, कोलाहलो=जनानां महाध्वनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका यस्य स तथा, ' भंडणामिलासी ' भण्डनाभिलाषी=भण्डनं राटिः-कलहः ' राइ ' इति भाषायां तस्याभिलाषी तथा-बहुषु च समरशतसंपरायेषु=समरशतसंग्रामेषु दर्शनरतः=दर्शनाऽऽसक्तः, ' समंतभो ' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्परं च कलहं ' सदक्खणं ' सदाक्षणं=सर्वस्मिन् क्षणे ' अणुगवेसमाणे ' अनुगवेषयन्=अन्वेषयन्, ' असमाहिकरे ' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्थैर्यकरः केषां चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—' दसारवरवीरपुरिसतिलोकबलवगाणं ' दशार्हवरवीर-पुरुषत्रैलोक्यबलवतां-दशार्हाः-समुद्रविजयादयो दशसंख्यकाः त एव वराः श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यंत प्रिय थे। इसी कारण यादवोंके प्रशंसक थे। कलहविवाद युद्ध एवं मनुष्यों का कोलाहल ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राइ (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसंग्राम के देखने में इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોનાં વખાણ કરનારા હતા. કલહ-કંકાસ, વિવાદ, યુધ્ધ અને માણસોના શોરબકોર આ બધું તેમને બહુ જ ગમતું હતું. આ બધાથી તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કહ્યો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એટલે કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કંકાસ કહ્યો કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક ભેટા રહેતા હતા. સેંકડો યુદ્ધોના ખીલાસ દૃશ્ય ભેષામાં તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો. તેઓ બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લકાવવાની શોધમાં જ ચોટી રહેતા હતા. નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોક્યમાં સર્વિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરૂષ સમુદ્ર-વિજય વગેરે દશ દશાહો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ આપનારા હતા.

अमगारधर्मावृत्तवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४५५

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये बलवन्तः नैमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमंतेऊण तं भगवई' आमन्त्य=प्रयुज्य तां भगवतीं-विद्यां, कीदृशीं विद्यामिन्याह—'पक्रमणि' प्रक्रमणी=प्रकृष्टगमनशक्ति-शालिनी 'गगणगमनदच्छं' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पइओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुलङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेटकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडियं' ग्रामाकर-नगरनिगमखेटकर्बटमंडवद्रोणमुखपत्तनाश्रमसंवाहसहस्समण्डितं, तत्र-अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगरं, निगमं=वणिग्ग्रामं खेटं=धूलीप्रकारं, कर्बटं=कुत्सितनगरं, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मण्डपं यत्र जल-स्थलमार्गाभ्यां, मण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुखं, पत्तनं=द्वेधा-जलपत्तनं स्थलपत्तनं, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहन्ति स संवाह एतैः सहसैर्मण्डितं, स्तिमित-मेदिनीतलं, 'वसुहं' वसुधां भूमिं 'ओलोइंतो' अवलोकयन्=पश्यन् रम्यं हस्ति-नापुरं नगरमुपागतः पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

ततः खलु स पाण्डुराजा कच्छुल्लनारयं 'कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्तं पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय दशार्हं ये उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे । गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एवं आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके छे आकाश में उड़ा करते थे । ये नारद, गमन से आकाशतल को उल्लंघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्बट, मंडप, द्रोणमुख, पत्तन, संवाह इनके सहस्रों से मंडित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहाँ से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाण्डुराज के भवन में पहुँचे । ऐसा संबंध यहाँ लगाना (तर्ण से पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ) इस के बाद पाण्डुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पासित्ता) तो

गमनमां विशिष्ट शक्ति आपनारी अने आकाशमां उडाडीने लछ जनार ते भगवती प्रक्रमणी विद्याना भणथी तेओ आकाशमां उडता रडेता डता. आरीते आ नारद गमनथी आकाशने ओणंणीने सडओ ग्राम, आकर, नगर, निगम ओट, कर्बट, मंडप, द्रोणमुख, पत्तन, संवाहोथी, मंडित अने स्तिमित पृथ्वीने ओता रमणीय हस्तिनापुर नगरमां आव्या अने त्यांथी आकाश मार्गमां थधने पांडुराजना भवनमां पडोव्या. (तर्ण) से पांडुराया कच्छुल्ल-नारयं एज्जमाणं पासइ) तयारभाइ पांडुराजने कच्छुल्लनारदने न्यारे आवता ओया (पासित्ता) तयारे ओधने (पंचहिं पंडवेहिं कुंवीप देवीप सक्तिं आसणाओ

कच्छुल्लनारदं सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गत्य 'तिक्खुत्तो' त्रिः कृत्वा - त्रिवारं, 'आयाहिणपयाहिणं' आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्यति वंदित्वा, नत्वा, महारहेण-महतां योग्येन आसनेन उपनिमन्त्रयति । उश्वेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाए' उदकपरिस्पृष्टायां जलच्छटेन भिक्षायां 'दम्भोवरिपच्चथुयाए' दम्भोपरिप्रत्यवस्तृतायां कुशे पर्यास्तीर्णायां 'भिसियाए' वृष्यां आसनविशेषे निषीदति=उपविशति, निषद्य पाण्डुं राजानं राज्ये यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्तं-कुशलवार्तां पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्तीं देवीं पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारदं 'आढंति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । ततः खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम् 'असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु' असंपत्ताविरताप्रतिहताप्रत्यारूयातपापकमेति कृत्वा, तत्र-असंपत्तः-वर्तमानकालिकसर्वसावधानुष्ठाननिवृत्तः

देवकर (पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ) ये पांचो पांडवो एवं कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे। (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तद्वयाइं पच्चुगच्छइ) और उठकर सात आठ पैर कच्छुल्लनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुगच्छित्तो तिकखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमसइ, महारहेण आसणेणं उवणिमंतेइ तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दम्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसीयाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंते-उरेय कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से पंडुराया कौंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परिमाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्होंने

अब्भुट्ठेइ) तेथो पांचे पांडवो अने कुंतीनी साथे पोताना आसन उपरथी उभा थया. (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तद्वयाइं पच्चुगच्छइ) अने उभा थयने कच्छुल्ल नारदना स्वागत भाटे सात आठ उगलां साथे गया.

(पच्चुगच्छित्ता तिकखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमसइ, महारहेण आमणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दम्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंते-उरेय कुसलोदंतं पुच्छइ तएणं से पंडुराया कौंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति जाव, पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परिमाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ)

મગધારમાંનિવૃત્તકર્ણીની ટીકા અ૦ ૧૧ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ્

૪૫૭

સંયતસ્તથા વિધો ન ભવતિ યઃ સોઽસંયતઃ=સંયમરહિત ઇત્યર્થઃ, અવિરતઃ=અતીત કાલિકપાપાઙ્ગુપ્સાપૂર્વકં, ભવિષ્યતિ ચ સંવરપૂર્વકમુપરતો નિવૃત્તો વિરતસ્તથા વિધો ન ભવતિ યઃ સોઽવિરતઃ, વિરતિરહિતઃ, અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા પ્રતિહતં=વર્તમાનકાલે સ્થિત્યનુભાગદ્વાસેન નાશિતં તથા પ્રત્યાખ્યાતં=પૂર્વકૃતાતિ-

ઉનકે લિયે ત્રીન બાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ ક્રિયા-કરકે ઉનકો વંદનાકી નમસ્કાર ક્રિયા। વંદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઉન્હોને ઉનસે મહાન્ પુરુષોં કે બેઠને યોગ્ય આસન પર બેઠને કે લિયે પ્રાર્થના કી-હસ કે બાદ વે કચ્છુલ્લ નારદ જલ કે છીટોં સે સિક્ત હુએ આસન પર કિ જો દર્મ કે ઉપર આસ્તીર્ણ થા બેઠ ગયે। બેઠકર ઉન્હોને પાંડુ રાજા સે રાજ્ય કી યાવત્ અંતઃ પુર કી કુશલ વર્તી પૂછી। ઉનકે પૂછને પર પાંડુ રાજાને કુન્તી દેવી ને એવં પાંચોં પાંડવોં ને ઉન કચ્છુલ્લ નારદ કો સ્વૂષ આદર ક્રિયા યાવત્ અચ્છી તરહ સે ઉનકી પર્યુપાસના કી। દ્રૌપદી ને ઉન્હેં અસંયત, અવિરત એવં અપ્રતિહત પ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાનકર ઉનકા આદર નહીં ક્રિયા, ઉનકે આગમન કી અનુમોદના નહીં કી ઓર ન વહ ઉનકે આને પર ડઠી। વર્તમાન કાલિક સર્વ સાવધ અનુષ્ઠાન સે જો નિવૃત્ત હોતા હૈ વહ સંયત હૈ-એસા સંયત જો નહીં હોતા હૈ વહ અસંયત કહલાતા હૈ। અતીત કાલ મેં હુએ પાપોં સે જુગુપ્સા પૂર્વક ઓર ભવિષ્યકાલ મેં ઉનસે સંવર પૂર્વક જો ઉપરત હોતા

સામે જઘને તેમણે ત્રણવાર તેમની ચોમેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરી. ત્યારપછી તેમણે વંદન તેમજ નમન કર્યા અને પછી તેમને પોતાના કરતાં મોટા ભાણસોને બેસવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનંતી કરી. ત્યારબાદ તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાંટાઓથી ભીના પાથરેલા દર્બના આસન ઉપર બેસી ગયા. બેસીને તેઓએ પાંડુરાજાને રાજ્યની યાવત્ રણવાસની કુશળવાર્તા પૂછી. પાંડુરાજા, કુન્તીદેવી અને પાંચે પાંડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર કર્યો યાવત્ સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી. તેમને અસંયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા બાણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો નહિ, તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને જ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે ઊભી થઈ નહિ. વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવધ અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સંયત છે, આ વ્યાખ્યા મુજબ જે સંયત નથી તે અસંયત કહેવાય છે. ભૂતકાળમાં થઈ ગયેલા પાપકર્મોથી જુગુપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્ય-કાલમાં તેમનાથી સંવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિરતિથી રહિત છે. વર્તમાનકાળમાં જેમાં

ચારનિન્દ્યા ભવિષ્યત્યકરણેન નિરાકૃતમ્ , અનયોઃ કર્મધારયે પ્રતિહતપ્રત્યાહ્યાતં તતો નચૂતત્પુરુષઃ, ન પ્રતિહતપ્રત્યાહ્યાતમ્-અપ્રતિહતપ્રત્યાહ્યાતં-ન પ્રતિહતં નાપિ-પ્રત્યાહ્યાતં પાપકર્મ યેન સોઽપ્રતિહતપ્રત્યાહ્યાતપાપકર્મ, ઇતિ કૃત્વા-એવં મત્વા 'નો આઢાઈ' નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ=નાનુમોદયતિ નો અમ્યુત્તિઘ્ઘતિ નો પર્યુપાસ્તે સ્મ ॥ સુ૦૨૪ ॥

હૈ વહ ચિરત હૈ। એસા જો નહીં હોતા હૈ વહ અચિરત હૈ-ચિરતિ સે રહિત હૈ। વર્તમાન કાલ મેં જિસમેં પાપકર્મોં કો સ્થિતિ ઓર અનુભાગ કે હાસ સે નાશ કર દિયા હૈ, તથા પૂર્વકૃત અતિચારોં કી નિંદા સે ભવિષ્યત્ કાલ મેં અકરણ સે જિસને ઉન્હેં નિરાકૃત કર દિયા હૈ એસા પ્રાણી પ્રતિહત પ્રત્યાહ્યાત પાપકર્મ કહલાતા હૈ। એસા જો નહીં કરતા હૈ-પાપકર્મોં કો ન પ્રતિહત કરતા હૈ ઓર ન પ્રત્યાહ્યાત કરતા હૈ-વહ અપ્રતિહત પ્રત્યાહ્યાત પાપકર્મ હૈ-। અષ્ટાદશ કર ગ્રાહ્ય (કરસે યુક્ત) જો હોતા હૈ વહ ગ્રામ હૈ। સ્વર્ણ આદિ કી ઉત્પત્તિકી જાને જિસમેં હો વહ આકર હૈ। જિસમેં અઠારહ તરહ કા ટેક્સ કર નહીં લગતા હૈ વહ નગર હૈ। જહાં પર વણિકજનોં કા નિવાસ હો વહ નિગમ હૈ। ઘૂલી કા પ્રાકાર જિસમેં હોતા હૈ-અર્થાત્ ઘૂલિ કે પરકોટે સે જો ઘિરા હોતા હૈ વહ ખેટ હૈ। કુત્સિત નગર કા નામ કર્બટ હૈ- જહાં એક અઢાઈ કોસ કે અન્તરાલ મેં (ચારોં દિશા સે) ગ્રામ આદિ નહીં પાચે જાતે હૈં વહ મડમ્બ હૈ। જહાં પર સ્થલમાર્ગ સે એવં જલ માર્ગ સે ભાળડ (વસ્તુ) આતે હૈં વહ દ્રોણમુખ હૈ। જલ પત્તન ઓર સ્થલપત્તન કે ભેદ સે પત્તન દો પ્રકાર કા હોતા હૈ। જહાં તાપસલોગ નિવાસ કરતે હોં વહ

પાપકર્મોંની સ્થિતિ અને અનુભાગના હાસથી નાશ કર્યો છે તેમજ પૂર્વકૃત અતિચારોંની નિંદાથી ભવિષ્યકાળમાં અકરણથી જેણે તેમને નિરાકૃત કરી દીધા છે એવું પ્રાણી પ્રતિહત પ્રત્યાહ્યાત પાપકર્મ કહેવાય છે. એવું જે કરતો નથી એટલે કે જે પાપકર્મોંની પ્રતિહત કરતો નથી અને પ્રત્યાહ્યાત પણ કરતો નથી તે અપ્રતિહત પાપકર્મ છે. જેમાં સામાન્ય માણસો વસે તે ગ્રામ છે. સોના વગેરેની ખાણો જ્યાં હોયતે આકર છે. જેમાં કોઈપણ જાતનો વેરો નાખવામાં આવતો નથી તે નગર છે. જ્યાં વાણીયાઓને નિવાસ હોય તે નિગમ છે. માટીની ભીંત ચોમેર બનાવેલી હોય તે ખેટ છે. કુત્સિત નગરનું નામ કર્બટ છે. જ્યાં અઢિ ગાઉ સુધીમાં ચારે તરફ ગ્રામ વગેરે હોતાં નથી તે મડમ્બ છે. જ્યાં સ્થળ માર્ગથી અને જળ માર્ગથી વાહનો આવે છે તે દ્રોણમુખ છે. જલપત્તન

ભેનગારધર્મોદ્યુતવર્ણી ટીકા અં. ૧૧ દ્રોપદીબરિતનિરૂપણમ્

૪૫૧

મૂલમ્—તણ્ણં તસ્સ કચ્છુલ્લનારયસ્સ ઇમેયારૂવે અઙ્ગ-
 ત્થિણ્ણં ચિંતિણ્ણં પત્થિણ્ણં મણોગણ્ણં સંકપ્પે સમુપ્પજ્જિત્થા અહોણં
 દોવઈ દેવી રૂવેણં જાવ લાવણ્ણેણ ય પંચહિં પંડવેહિં અણુબદ્ધા
 સમાણી મમં ણો આઢાઈ જાવ નો પજ્જુવાસઈ તં સેયં ચ્છલુ મમ
 દોવઈણ્ણં દેવીણ્ણં વિપ્પિયં કરિત્તણ્ણં ત્તિકટ્ઠુ એવં સંપેહેઈ સંપેહિત્તા
 પંડુયરાયં આપુચ્છઈ આપુચ્છિત્તા ઉપ્પયણિં વિજ્જં આવાહેઈ
 આવાહિત્તા તાણ્ણં ઉક્કિટ્ઠાણ્ણં જાવ વિજ્ઞાહરગઈણ્ણં લવણસમુદ્દં
 મઙ્ગમઙ્ગેણં પુરત્થાભિમુહે વીઙ્ગવઈડં પયત્તે યાવિ હોત્થા ।
 તેણં કાલેણં તેણં સમણં ઘાયડસંડે દીવે પુરત્થિમદ્દદાહિણ્ણુ
 ભરહવાસે અમરકંકાણામરાયહાણી હોત્થા, તણ્ણં અમરકંકાણ્ણં
 રાયહાણીણ્ણં પડમનામે ણામં રાયા હોત્થા મહયા હિમવંતં
 વણગઓ, તસ્સ ણં પડમનાભસ્સ રત્તો સત્ત દેવોસયાઈ ઓરોહે
 હોત્થા, તસ્સ ણં પડમનાભસ્સરણ્ણો સુનામે નામં પુત્તે જુવરાયા
 યાવિ હોત્થા, તણ્ણં સે પડમનામે રાયા અંતો અંતેરંસિ ઓ-
 રોહસંપરિવુડે સિંહાસણવરગણ્ણં વિહરઈ, તણ્ણં સે કચ્છુલ્લનારણ્ણં
 જેણેવ અમરકંકા રાયહાણી જેણેવ પડમનાભસ્સ ભવણે તેણેવ
 ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા પડમનાભસ્સ રત્તો ભવણંસિ જ્ઞાતિં
 વેગેણં સમોવઈણ્ણં, તણ્ણં સે પડમનામે રાયા કચ્છુલ્લં નારયં

આશ્રમ હૈ જહાં પર પર્વત આદિ દુર્ગમ સ્થાનોમ્ મનુષ્ય ધાન્ય આદિ
 રક્ષતે હૈ—વહ સંવાહ હૈ અર્થાત્ નગર કે બાહર કા પ્રદેશ જહાં આભીર
 વગેરે લોગ નિવાસ કરતે હો ॥ સૂત્ર ૨૪ ॥

સ્થાપત્તનની દૃષ્ટિએ પત્તનના એ પ્રકારે છે, જ્યાં પર્વત વગેરે દુર્ગમ સ્થાનોમાં
 માણસ ધાન્ય વગેરેની રાખે છે તે સંવાહ કહેવાય છે. અર્થાત્ નગરની બહાર-
 રનો પ્રદેશ કે જ્યાં બરવાડ વગેરેનો વાસ હોય છે. ॥ સૂત્ર ૨૪ ॥

एउजमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्टेइ अब्भुट्ठित्ता
 अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए
 उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चस्थुयाए भिसियाए निसीयइ
 जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ, तएणं से पउमनाभे राया णियग-
 ओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारयं एवं वयासी-तुभं देवाणु-
 प्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि, तं अत्थि
 आइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जा-
 रिसए णं मम ओरोहे ?, तएणं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं
 रत्ता एवं बुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ करित्ता एवं वयासी
 -सरिसे णं तुमं पउमणाभा ! तस्स अगडदइदुरस्स, के णं
 देवाणुप्पिया ! से अगडदइदुरे ?, एवं जहा मल्लिगाए एवं खल्लु
 देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स
 रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंड-
 वाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए
 णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठयस्स अयं तव ओरोहो सतिमंपि
 कलं ण अघंतित्तिरुहु, पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव
 पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए
 एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवईए देवीए रूवे य३ मुच्छिए ४
 दोवइए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी-
 एवं खल्लु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे

अनेकार्थमोक्षवर्धनी टी० अ० १५ द्रौपदीविरचितनिरुपमम्

४६१

जाव सरीरा तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! दोवई देवीं इहमा-
 णियं, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एवं वयासी — नो
 खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जणं
 दोवई देवी पंचपंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाई
 जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवई
 देवीं इहं हव्वमाणेमि त्तिकहु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता
 ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुदे मज्झमज्झेणं जेणेव हत्थिणा-
 उरे णयेरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तेणं कालेणं तेणं समएणं
 हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि
 सुहपसुत्ते याविं होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-
 ट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवईं देवीं
 गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव
 पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणा-
 भस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवईं देवीं ठावेइ ठावित्ता
 ओसोवणिं अवहरइ अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी—एसणं देवाणुप्पिया मए
 हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए
 चिट्ठइ, अतो परं तुमं जाणसित्तिकहु जामेव दिसिं पाउब्भूए
 तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २५ ॥

६४६

होलाधमैकयाज्ञस्वै

टीका—‘तएणं तस्स’ इत्यादि । ततः खलु तस्य कच्छुल्लनारदस्य अयमेत-
द्रूपः आध्यात्मिकचिन्तितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः समुत्पद्यत, अहो !
खलु द्रौपदी देवी रूपेण यावत् लावण्येन च पञ्चभिः पाण्डवैरनुवद्वासती मां नो
आद्रियते यावत् नो पर्युपास्ते, तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम द्रौपद्या देव्याः ‘वि-
प्पियं करित्तए’ विप्रियं कर्तुम्, पाण्डवकृतसत्कारसंमानगर्विता विवेकरहिता जाता-

—तएणं तस्स कच्छुल्लनारदस्स इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तस्स कच्छुल्लनारदस्स) उन कच्छुल्ल
नारदको (हमेयारूवे) यह इस रूप (अज्झत्थिए, चित्तिए, पत्थिए, मणो-
गए, संकप्पे समुत्पज्जित्था) आध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत
संकल्प उत्पन्न हुआ । (अहो णं दोवईदेवी रूवेणं जाव लावण्येणं य पंचहिं
पंडवेहिं अणुवद्वा समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ तं
सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ,
संपेहित्ता पंडुरायं आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ
आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुदं मज्झं
मज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवइउं पयस्से यावि होत्था) देखो—यह कितने
आश्चर्य की बात है कि द्रौपदी देवी ने रूप यावत् लावण्य से पांवों
पाण्डवों के साथ भोगासक्त बनकर मेरा कोई आदर नहीं किया है यावत्
किसी भी प्रकार की पर्युपासना नहीं की है । इसलिये अब मुझे यही
उचित—श्रेयस्कर है कि मैं इस द्रौपदी देवी का विप्रिय करूँ—अनिष्टकरूँ

तएणं तस्स कच्छुल्लनारदस्स इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपद्धी (तस्स कच्छुल्लनारदस्स) ते कच्छुल्ल नारदने
(हमेयारूवे) आ नतने। (अज्झत्थिए, चित्तिए, पत्थिए, मणोगए, संकप्पे
समुत्पज्जित्था) आध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत संकल्प उत्पन्न। के
(अहोणं दोवई देवी रूवेणं जाव लावण्येणं य पंचहिं पंडवेहिं अणुवद्वा
समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए
विप्पियं करित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुरायं आपुच्छइ आपुच्छित्ता
उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवण-
समुदं मज्झं मज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवइउं पयस्से यावि होत्था)

बुझो, आ केवी नवाधनी पात छे के द्रौपदी देवीओ इय यावत् लाव-
ण्यधी पांवे पांडवानी साथे भोगासक्त थधने भारे। केध पञ्च रीते आदर
क्यों नथी यावत् केध पञ्च नतनी पर्युपासना करी नथी। ज्येश्ठी हवे मने
ज्येष्ठ भोअ ज्येष्ठ छे के भजे ते रीते द्रौपदीओ विप्रिय-अहित-कइ। डमणुं

अमरावतचर्मावृत्तचर्चिणी टी० अ० १६ द्वौपदीचरितनिरूपणम्

४२३

तस्मान्मदापहरणेन अस्याः प्रतिकूलचरणं भेयः इति भावः । इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एवं संग्रहते=पर्यालोचयति, संग्रह्य पाण्डुं राजानमापृच्छ्य 'उत्प-
यणि विज्जं' उत्पतनीम्-विद्याम् 'आवाहेइ' आवाहयति-स्मरति आवाह्य, मत्वा
सया उत्कृष्टया यावद् विद्याधरगत्या लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन पौरस्त्याभिमुखः=
पूर्वदिगभिमुखः, 'वीइवइउं पयसे' व्यतिव्रजितुं प्रवृत्तः=गमनतत्परश्चाप्यभवत् ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'धायईसंडे' धातकीषण्डे धातकीषण्डनामके,
द्वीपे 'पुरत्थिमद्वदाहिणड्ढुभरहवासे' पौरस्त्यार्धदक्षिणार्ध-भारतवर्षे=पूर्वदिग्-
तिनि दक्षिणार्धभरतक्षेत्रे अमरकंका नाम राजधानी आसीत् । ततः खलु अमर-
कंकायां राजधान्यां पञ्चनाभो नाम राजाऽभवत् । स कीदृश इत्याह-'महया हिम-
वंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' महा-हिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः=महाहिम-
वानिव तथा-महामलयमन्दरमहेन्द्रवत् सारः=प्रधानः । अन्यनृपापेक्षयाऽधिकम-
हत्वादिगुणविभवैश्वर्यसम्पन्न इत्यर्थः, विस्तरतस्तु व्याख्यानं प्रथमाध्ययने कृतम्,

यह इस समय पांडवों द्वारा कृत सत्कार सम्मान से गर्विष्ठ बनी हुई
है-सो विवेक रहित बन गई है-इसलिये इसके मद को उतारना चाहिये
अतः इसके प्रतिकूल आचरण करना यही मुझे श्रेयस्कर है । इस प्रकार
मन में रखकर उन्होंने ने विचार किया-विचार करके फिर उन्होंने ने पांडु-
राज से पूछा हे राजन् हम जाते हैं-पूछकर उन्होंने ने उत्पतनी नाम की
विद्या का ओहान किया स्मरण किया-स्मरण कर के उस उत्कृष्ट यावत्
विद्याधर संबन्धी गति से वहां से पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के वे
उड़ने में प्रवृत्त भी हो गये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे
पुरत्थिमद्वदाहिणड्ढुभरहे वासे अमरकंका नाम रायहाणी होत्था-तएणं
अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था, महया हिमवंतं०

ते आ पांडवो वडे सत्कृत तेमज्ज सन्मानीत थधने गर्विष्ठा बनी गर्ध छे तेथी
ते अविवेकी थध पडी छे, ऐथी छवे ऐना मढेने उतारवो जेधजे, ऐना
विइद्ध आयरवु जेधजे, आ प्रभाछे तेज्जेजे मनमां विचार कर्यो. विचार करीने
तेमछे पांडुरायने पूछथुं के छे राजन् ! अमे जइजे, जे प्रभाछे पूछीने तेज्जेजे
उत्पतनी नामनी विद्यानुं आहान कर्युं, स्मरण कर्युं. स्मरण करीने ते उत्कृष्ट
यावत् विद्याधर संबन्धी गतिथी त्यांथी पूर्व दिशा लणी सुभ करीने उडवा लाग्या.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्वदाहिणड्ढुभरहे वासे अम-
रकंका नाम रायहाणी होत्था तएणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया

વર્ણકઃ=વર્ણનં પૂર્વોક્તવદ્ વોધ્યમ્, તસ્ય સ્વલુ પદ્મનાભસ્ય રાજ્ઞઃ 'સત્તદેવીસયાઈ' સત્તદેવીશતાનિ=દેવીનાં રાજ્ઞીનાં શતાનિ-સસશતાનિમાર્યાઃ 'ઓરોહે' અવરોધે=અન્તઃ પુરે આસન્ તસ્ય સ્વલુ પદ્મનાભસ્ય રાજ્ઞઃ સુનામો નામ પુત્રો યુવરાજશ્ચાપ્ય-ભવત્। તતઃ સ્વલુ સ પદ્મનામો રાજા અન્તઃ પ્રદેશે 'અંતેઊરંસિ' અન્તઃ પુરે 'આરોહસંપરિવુઢે' અવરોધસંપરિવૃતઃ - સ્ત્રીપરિવારસંપરિવૃતઃ, સિંહાસનવરગતો વિહરતિ-આસ્તેસ્મ।

ઘણ્ણઓ તસ્સણં પડમનાભસ્સ રણ્ણો સત્તદેવીસયાઈ ઓરોહે હોત્થા તસ્સ ણં પડમનાભસ્સ રણ્ણો સુનામે નામં પુત્તે જુવરાયા યાત્રિ હોત્થા તણ્ણં સે પડમણામે રાયા અંતો અંતેઊરંસિ ઓરોહસંપરિવુઢે સિંહાસણ વરગણ વિહરઈ) ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં ઘાતકી પંડ નામ કે દ્વીપ મેં પૂર્વ દિગ્વર્તી દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર મેં અમરકંકા નામ કી રાજધાની થી। ઉસ અમરકંકા નામ કી રાજધાની મેં પદ્મનાભ નામ કો રાજા રહતા થા। યહ રાજા મહા હિમવાન્ પર્વત કી તરહ તથા મહા મલય, મન્દર એવં માહેન્દ્ર કી તરહ અન્ય રાજાઓ કી અપેક્ષા અધિક મહસ્વાદિગુણો સે વિભવ સે એવં ऐश्वर्य સે સંપન્ન થા। इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है। इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये। उस पद्मनाभ राजा के अंतःपुर में ७०० सात सौ रानियां थीं। सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहां एक दिन की यात है

હોત્થા, મહયા હિમવંતઃ=ઘણ્ણઓ,તસ્સણં પડમનાભસ્સ રણ્ણો સત્તદેવી સયાઈ ઓરોહે હોત્થા તસ્સ ણં પડમનાભસ્સ રણ્ણો સુનામે નામં પુત્તે જુવરાયા યાત્રિ હોત્થા તણ્ણં સે પડમણામે રાયા અંતો અંતે ઊરંસિ ઓરોહસંપરિવુઢે સિંહાસણવરગણ વિહરઈ)

તે કાળે અને તે સમયે ઘાતકી પંડ નામે દ્વીપમાં પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમાં અમરકંકા નામે રાજધાની હતી. તે અમરકંકા નામે રાજધાનીમાં પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો. તે રાજા મહા હિમાચલ પર્વતની જેમ તેમજ મહામલય, મંદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા રાજાઓ કરતાં વધારે મહત્ત્વ વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સંપન્ન હતો. આ પદોનું સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમાં કરવામાં આવ્યું છે. આ રાજાનું વર્ણન પણ પહેલાંની જેમ જ સમજવું જોઈએ. તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમાં ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો. એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમાં સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા.

अमरारधमाश्रितवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिर्दण्डम्

४१५

ततः खलु स कच्छुल्लनारदो यत्रैवामरकङ्काराजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य राज्ञो भवने ' झत्ति ' झटिति वेगेन समोवइए ' समुपेतः=आकाशादवतीर्णः । ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लं नारदं एजमानम्-आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायार्घ्येण यावदासनेन उपनिमन्त्रयति-जलमासनं च ग्रहीतुं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्ल-

कि अतःपुर के भीतर स्त्री परिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे । (तएणं से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउम नाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएणं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदग परिकासियाए दम्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुस-लोदंतं आपुच्छइ) वे कच्छुल्ल नारद जहां अमर कंका राजधानी थी, जहां पद्मनाभ का भवन था वहां आये । आकर के वे पद्मनाभ राजा के भवन में बहुत शीघ्र वेग से उतरे । पद्मनाभ राजा ने जैसे ही कच्छुल्ल नारद को आते हुए देखा तो देखकर के अपने आसन से उठे और उठकर के उन्होंने ने उन्हे अर्घ्य यावत् आसन से आमंत्रित किया ।

(तएणं से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएणं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिकासियाए दम्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ)

ते कच्छुल्ल नारद ज्यां अमरकंका राजधानी હતી, ज्याં પદ્મનાભનું ભવન હતું ત્યાં આવ્યા, આવીને તે પદ્મનાભ રાજના ભવનમાં શીઘ્ર વેગથી ઉતર્યા. પદ્મનાભ રાજાએ જ્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આવતા જોયા ત્યારે તેઓ પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને તેમણે તેઓને અર્ધ્થ યાવત્

नारदः उदकपरिस्पृष्टायां-जलाभिषिक्तायां दर्भोपरि प्रस्थवस्तृतायां वृष्याम् आस-
नशेषे निषीदति, यावत् कुशलोदन्तं=कुशलवार्ताम् आपृच्छति=सुखोपविष्टं तं
कच्छुल्लनारदं पद्मनाभः कुशलवार्तां पृच्छतीत्यर्थः । ततः खलु स पद्मनाभो राजा-
निजकावरोधे स्त्रीपरिवारे जातविस्मयः=समुत्पन्नगर्वः, कच्छुल्लनारदम् एवं-
वक्ष्यमाणक्रमेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वं बहून् ग्रामान् यावत् गृहाणि अनु-
प्रविशति, तत्=तस्माद् अस्ति 'आइं' इति वाक्यालङ्कारे ते=त्वया कुत्रचिद् हे

इसके बाद वे कच्छुल्लनारद जल के छींटो से सिंचित आसन पर जो
दर्भ के ऊपर बिछा हुआ था बैठ गये-बैठकर उन्होंने पद्मनाभ राजा
से कुशलवार्ता पूछा। पद्मनाभ राजा ने भी सुख पूर्वक बैठे हुए उन
कच्छुल्ल नारद से उन के कुशल समाचार पूछे। (तएणं से पउमनाभे
राया णियगओरो हे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुब्भं
देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि तं अत्थि आइं
ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं मम
आरोहे ? तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेणं रत्ता एवं वुत्ते समाणे ईसिं
विहसियं करेइ, करित्ता एवं वयासी-सरिसेणं तुमं पउमणाभा ! तस्स
अगड ददुदुरस्स, केणं देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ! एवं जहा मल्लि-
णाए एवं खलु देवाणुप्पिया !) इसके बाद पद्मनाभ राजा ने अपने
अतःपुर में विस्मित बनकर कच्छुल्लनारद से इस प्रकार

आसन उपर ओसवा भाटे विन'ती करी. त्थारपछी ते कच्छुल नारद पाणीना
छांटाओथी सिंचित दर्भ'ना उपर पाथदेला आसन उपर ओसीने पद्मनाभ राजाने
तेओना परिवारनी कुशलताना समाचारे पूछया. पद्मनाभ राजाओ पणु आसन
उपर सुओथी ओठेला ते कच्छुल्लनारदने कुशल समाचारे पूछया.

(तएणं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं
एवं वयासी-तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि, तं
अत्थि आइं ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं मम
ओरोहे ? तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेणं रत्ता एवं वुत्ते समाणे ईसिं विह-
सियं करेइ, करित्ता एवं वयासी-सरिसेणं तुमं पउमणाभा ! तस्स अगडददुदुरस्स
केणं देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ? एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवाणुप्पिया !)

त्थारपछी पद्मनाभ राजाओ पोताना रणुवासना वैभवने ओधने आश्चर्य
धधने कच्छुल्ल नारदने आ प्रभाणु कछुं के डे देवानुप्रिय ! तमे वणु आभ
यावत् धरोमां आवण करता रहे छे ते डे देवानुप्रिय ! शुं तमे पडेबां

अनन्तारवर्माभूतवर्षिणी टी० अ० १६ त्रौपदीवर्तितनिरूपणम्

४३७

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्यः स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्तः सन् ' ईषद् विहसितं ' मन्दहासं करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य ' अगडददुरस्स ' अगडददुरस्स=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् बहिः प्रदेशे विद्यमानं न किमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रावस्थितं किमपि वस्तु न वेत्सीति भावः । कच्छुल्लनारदस्य वचनं श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारदं पृच्छति—' के णं देवाणुप्पिया ! से अगडददुरे ' इति । हे देवानुप्रिय ! कः खलु सोऽगडददुरः ? एवं पद्मनाभेन राज्ञा पृष्ठः सन् कच्छुल्लनारदः प्राह—' एवं यथा मल्लिणाए ' यथा मल्लिज्ञाते वर्णितमेवमत्र बोध्यम् समुद्रदुर्गकूपदुर्गयोः परस्परवार्तालापो यथा संजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः । पुनः कच्छुल्ल-

कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते रहते हो—तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा अन्तः पुर पहिले कभी देखा है—जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे—हँसकर तब उन्होंने उनसे इस प्रकार कहा—हे पद्मनाभ ! तुम उस कूपमं डूक के समान हो—जो अपने निवासस्थान भूत कुंए से बाहिरी प्रदेश में विद्यमान कुछभी नहीं जानते हो । कच्छुल्ल नारद के वचन सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा—देवानुप्रिय ! वह अगडददुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा—मल्लि नाम के अध्ययन में कूपमंडूक और समुद्र मंडूक के परस्पर में वार्तालाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है—सो नारद ने यह आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया— पुनः कच्छुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણવાસ જોયો છે ? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા લાગ્યા, હસીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પદ્મનાભ ! તમે તે કૂપ મંડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડું પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી. કચ્છુલ નારદના વચન સાંભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ નારદને પૂછ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે અગડ દર્દુરકનું આખ્યાન કેવી રીતે છે ? ત્યારે નારદે તેમને મલ્લિ નામે અધ્યયનમાં વર્ણવવામાં આવેલા કૂપ મંડૂક અને સમુદ્ર મંડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સંપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સંભળાવ્યું.

૪૪૮

શ્રીતાપમૈકયાજ્ઞવલ્કે

નારદોવદતિ-एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः स्नुषा पञ्चानां पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते द्रौपद्याः खलु देव्याश्चिन्नस्यापि पादाद्भुष्टकस्यायं तवावरोधः तवान्तःपुरवर्तिनी काचिदपि देवी 'सयतमंपि कलं' शततमामपि कलां नाहति, इति कृत्वा=एवं ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति । ततः कच्छुल्लनारदोगन्तुकामः

કહતે હૈં કિ હે દેવાનુપ્રિય । સુનો-વાત હસ પ્રકાર હૈ-(જંબૂ દીવે દીવે ભારહે વાસે હથિળાઝરે દુવયસ્સ રળ્ળો ધૂયા, ચૂલળીએ દેવીએ અત્તયા પંડુસ્સ સુળ્હા, પંચળં પંડવાળં મારિયા દોવઈ દેવી રૂવેળ ય જાવ ઉક્કિઠ્ઠ સરીરા, દોવઈએ પં દેવીએ છિન્નસ્સ વિ પાયંઘુટ્ટયસ્સ અયં તવ અવરોહો સય-ન્નમપિ કલં ણ અગઈ ત્તિકટ્ટુ પડમળામં આપુચ્છઈ આપુચ્છિત્તા જાવ પઢિ-ગણ, તણં સે પડમળામે રાંયા કચ્છુલ્લનારયસ્સ અંતિએ ઇયમઠ્ઠં સોચ્ચા ણિસમ્મ દોવઈએ, દેવીએ રૂવે ય ચ્છિએ ૪ દોવઈએ અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોસ-હસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) જંબૂદ્વીપ નામ કે પ્રથમ દ્વીપ (મધ્ય જંબુદ્વીપ મેં) મેં ભારતવર્ષ મેં, હસ્તિનાપુર નામ કે નગર મેં દ્રુપદ રાજા કી પુત્રી ચુલની દેવી કી આત્મજા, પાંડુ રાજા કી સ્નુષા-પુત્રવધૂ-પાંચ પાંડવો કી માર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈ । યહ રૂપ સે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈ । તુમ્હારા યહ અંતઃપુર ઉસકે કટે હુએ પૈર કે અંગૂઠે કે સૌવે અંશ કે ચરાચર

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! જાણો, વાત એવી છે કે—

(જંબૂ દીવે દીવે ભારહેવાસે હથિળાઝરે દુવયસ્સ રળ્ળો ધૂયા, ચૂલળીએ દેવીએ અત્તયા પંડુસ્સ સુળ્હા, પંચળં પંડવાળં મારિયા દોવઈ દેવી રૂવેળ ય જાવ ઉક્કિઠ્ઠસરીરા, દોવઈએ પં દેવીએ છિન્નસ્સ વિ પાયંઘુટ્ટયસ્સ અયં તવ અવરોહો સયન્નમપિ કલં ણ અગઈ ત્તિકટ્ટુ પડમળામં આપુચ્છઈ, આપુચ્છિત્તા જાવ પઢિ-ગણ, તણં સે પડમળામે રાયા કચ્છુલ્લનારયસ્સ અંતિએ ઇયમઠ્ઠં સોચ્ચા ણિસમ્મ દોવઈએ, દેવીએ રૂવેય મુચ્છિએ ૪ દોવઈએ અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોસહસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ)

જંબૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નામે નગ-રમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચૂલની દેવીની આત્મજા, પાંડુ રાજાની સ્નુષા-પુત્રવધૂ પાંચ પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે. તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે. તમારો આ રજુવાસ તેના કપાયેલા અંગૂઠાના સોમા ભાગની બરાબર પશુ નથી, આ બધું હું વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છું. દ્રૌપદી જેવી નારી કોઈ પણ

अनन्तरधर्मासुतवर्णिनी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

३६६

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कारं प्राप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्या गगनमुद्घयन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ण्य निश्म्य हृत्प्रधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः= लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अध्युपपन्नः= एकाग्रचित्तः सन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पौषधशालां प्रमार्ज्य यावदष्टम- भक्तं कृत्वा 'पूर्वसंगतिकं' पूर्वमित्रं देवम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एवं खलु हे देवानुमिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुमिय !

भी नहीं है। ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। इस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहाँ से चलने के लिये अभिलाषी बन गये—तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहाँ से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में बिलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहाँ पौषधशाला थी वहाँ गये। (उवागच्छता पोमहसालं जाव पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !

नथी. आ प्रभाणु कहीने ते कच्छुल्ल नारद त्यांथी आलना भाटे तेरथा थछ गथा. तेमणु पद्मनाभ राजाने जवा भाटे पूछथुं, पूछीने यावत् त्यांथी तेओ पद्मनाभ राजानी पांसेथी सत्कृत थधने उत्पतनी विद्याना प्रभावथी आका- शने ओजोगता जाता रहा. त्थारपछी ते पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारदना भुण्ठथी आ समाचारने सांलणीने अने तेने हृदयमां धारणु करीने द्रौपदी देवीना रूप, यौवन अने लावण्यथी मूर्च्छित ४ थछ गथा, यावत् तेमनुं मन तेमां ओकठम थोटी गथुं. आ स्थितिमां तेओ जथां पौषधशाणा हती त्यां गथा.

(उवागच्छता पोमहसालं जाव पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! दोई देवीं इहमाणियं तपणं पुव्वसंगइयं देवे पद्मनाभं एवं

દ્રૌપદીં દેવીમ્ ' હ્રદ માણિયં ' હ્રદાનેતુમ્ । તતઃ સ્વલુ પૂર્વસંગતિકો દેવઃ પદ્મનાભં
નૃપમ્ એવમવાદીત-હે દેવાનુપ્રિય ! નો સ્વલુ એતદ્ ભૂતં વા ભવદ્ વા ભવિષ્યદ્ વા,
યત્ સ્વલુ દ્રૌપદી દેવી પશ્ચ પાંડવાન્ મુક્ત્વાઽન્યેન પુરુષેણ સાર્થમુદારાન્ ભોગાન્
યાવદ્ વિહરતિ, તથાપિ ચ સ્વલુ અહં તવ પ્રીત્યર્થં દ્રૌપદીં દેવીમિહ દ્રવ્યપ્રાનયામીતિ

દોવઈં દેવોં હ્રદમાણિયં તણં પુર્વસંગદે દેવે પડમનામં એવં વયાસી-નો
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! એયં ભૂયં વા ભવ્યં વા ભવિસ્સં વા જળં દોવઈં
દેવી પંચ પંડવે મોત્તગ અન્નેગં પુરિસેગં સદ્ધિ ઓરાલાઈં જાવ વિહરિ-
સ્સહ) વહાં જાકર ડન્હોં ને ઉસ પોષવ શાલા કો રજોહરણ
સે સાફ કિયા યાવત્ અષ્ટમ ભક્ત કર કે પૂર્વ સંગતિ દેવ કા આવાહન
કિયા દેવોં કે આનેપર પૂર્વ સંગતિક દેવ સે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુ-
પ્રિય ! જંબૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત વર્ષ મેં હસ્તિનાપુર નગર મેં
પાંડવો કી માર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈ । યહ યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈ । હસલિવે
હે દેવાનુપ્રિય ! મૈં ઉસ દ્રૌપદી દેવી કો તુમસે યહાં લે આને કે લિયે
ચાહતા હૂં । પદ્મનાભ કી હસ બાત કો સુનકર પૂર્વભવ કે મિત્ર ઉસ
દેવ ને ઉસ સે તબ એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! એસી બાત દ્રૌપદી કે સાથ
ન પહિલે હુઈ હૈ, ન આગે હોગી-ઔર ન અવ વર્તમાન મેં હો સકતી હૈ,
જો દ્રૌપદી દેવી પાંચ પાંડવો કો છોડકર અન્ય કિસી દુસરે પુરુષ કે
સાથ ઉદાર યાવત્ મનુષ્ય ભવ સવન્ધી કામ સુખોં કો ભોગે (તહાવિ-

વયાસી નો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! એયં ભૂયં વા ભવ્યં વા ભવિસ્સં વા જળં દોવઈં
દેવો પંચ પંડવે મોત્તગ અન્નેગં પુરિસેગં સદ્ધિ ઓરાલાઈં જાવ, વિહરિસ્સહ)

ત્યાં જઈને તેમણે તે પૌષધશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ
ભક્ત કરીને પૂર્વ સંગતિ દેવનું આવાહન કર્યું. દેવ બ્યારે આવી ગયો ત્યારે
તેમણે પૂર્વસંગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જંબૂદ્વીપ
નામના દ્વીપમાં ભરત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નગરમાં પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી
છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે. એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને
તમે અહીં લઈ આવો. એવી ભારી ઇચ્છા છે. પદ્મનાભની આ વાતને સાંભળીને
પૂર્વભવના મિત્ર તે દેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી
દેવીની સાથે આ ભાતનું આચરણ ન પહેલાં થયું છે ન ભવિષ્યમાં થશે અને
ન વર્તમાનમાં થવાની શક્યતા છે દ્રૌપદી દેવી પાંચે પાંડવો સિવાય બીજા
કોઈ પુરુષની સાથે ઉદાર યાવત્ મનુષ્યભવ સંબંધી કામસુખો ભોગવે આ
બાત તદ્દન અસંભવિત છે.

अमगराधर्मावृत्तवर्षिणी टीका ७० १६ द्रौपदीचरितमिरूपणम्

४७१

कृत्वा=उक्त्वा पद्मनाभम् आपृच्छति आपृच्छतया उत्कृष्टया देवसम्बन्धिन्या गत्या यावत् लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन=उपरिभागेन गगनमार्गेण, यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैव आधारयद् गमनाय ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरो राजा द्रौपद्या सार्धमुपरि आकाशतले=प्रासादादालिकोपरि सुहृत्सुहृत्प्राप्त्यासीत्, ततः खलु स पूर्वसंगतिको देवो यत्रैव युधिष्ठिरो राजा यत्रैव द्रौपदीदेवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रौपद्यै

य णं अहं तव पियद्वतयाए दोवईं देवीं इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) फिर भी मैं तुम्हारी प्रीति के निमित्त द्रौपदी देवी को यहाँ शीघ्र लेकर आता हूँ । ऐसा कहकर उसने जाने के लिये उन पद्मनाभ से पूछा, पूछकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसंबन्धी गति से यावत् लवण समुद्र के बीच से होकर जहाँ हस्तिनापुर नगर था उस और चल दिया ! (तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया, दोवईए सद्धिं उप्पि आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया जेणेव दोवईं देवी तेणेव उवागच्छइ) उस काल और उस समय में हस्तिनापुर नगरमें युधिष्ठिर राजाके साथ द्रौपदी आकाशतलमें-प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सोये हुए थे । वह पूर्व संगतिक देव जहाँ वे युधिष्ठिर राजा और जहाँ वह द्रौपदी देवी थी वहाँ आया-(उवागच्छित्ता

(तद्वात्रि य णं अहं तव पियद्वतयाए दोवईं देवीं इहं हव्वमाणेमि त्ति षट्ठ पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

छतांअने तमने पुश करवा भाटे हुं द्रौपदी देवीने शीघ्र अहाँ लव आवुं छुं. आभ कहीने तेणे अवा भाटे पद्मनाभ राजने पूछयुं. पूछीने ते पोतानी उत्कृष्ट देवभव संबन्धी गतिथी यावत् लवण समुद्रनी पन्थे थधने न्यां हस्तिनापुर नगर हुतुं ते तरइ रवाना थयो.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया, देवईए सद्धिं उप्पि आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया जेणेव दोवईं देवी तेणेव उवागच्छइ)

ते काले अने ते समये हस्तिनापुर नगरमां युधिष्ठिर राजा अने द्रौपदी देवी भलेखनी अगाशी उपर सूता छता. ते पूर्व संगतिक देव न्यां ते युधिष्ठिर राजा अने न्यां ते द्रौपदी देवी छती त्यां आव्यो.

देव्यै 'आसोवणियं' अवस्वापनीं निद्रां 'दलयइ' ददाति सुखमसुप्तां द्रौपदीं गाढनिद्रयाऽऽक्रान्तां कृतवानित्यर्थः । दत्त्वा-गाढनिद्रावतीं कृत्वा द्रौपदीं देवीं शृद्धीत्वा तथा उत्कृष्टया देवसम्बन्धिन्यागत्या यावत् यज्ञैवामरकंका राजधानी यज्ञैव पद्मनाभस्य भवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य भवने 'असोगवणियाए' अशोकवनिकायाम् अशोकवाटिकायां द्रौपदीं देवीं स्थापयति, स्थापयित्वा 'आसोवणि अवहरइ' अवस्वापनीं निद्रामपहरति, अपहृत्य

दोषईए देवीए ओसोवणियं दलयइ, दलित्ता दोवई देवि गिण्हइ, गिण्हत्ता तीए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणि अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया । मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतोपुरं तुमं जाणिसि त्तिकइहुजामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए) वहां आकर उसने उसने द्रौपदी देवी को गाढ निद्रा में सुला दिया, सुलाकर फिर उसने उस द्रौपदी को वहां से उठाया-और उठाकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसंबन्धी गति से चलकर यावत् जहां अमरकंका नगरी और जहां पद्मनाभ राजा का भवन था वहां आया-। वहां आकर के उसने पद्मनाभ के भवन में अशोकवाटिका में द्रौपदी देवी को रखदिया । रखकर के फिर उसने उसे गाढ निद्रा से रहित कर

(उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ, दलित्ता दोवई देवि गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे-तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए, दोवइ देवीं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणि अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतोपुरं तुमं जाणिसित्ति वहु जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए)

त्यां आवीने तेण्हे द्रौपदीने गाढ निद्रासां सूवाडी दीधी, सुवाडीने तेण्हे ते द्रौपदीने त्यांथी उठावी अने उठावीने ते उत्कृष्ट देवभव संबंधी गतिथी आदीने यावत् त्यां अमरकंका नगरी अने त्यां पद्मनाभ राजानुं अभवन छतुं त्यां आये। त्यां आवीने तेण्हे पद्मनाभना भवनसां अशोक-वाटिकासां द्रौपदी देवीने भूडी दीधी, भूडीने तेण्हे गाढ निद्रा द्वर करी दीधी, गाढ निद्रा द्वर

यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिय ! मया हस्तिनापुराद् द्रौपदी इह हव्यमानीता तवाशोकवनिकायां तिष्ठति, अतः परं त्वं जानासि ' इति कृत्वा=उक्त्वा, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० २५ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी-नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेणं वा किं पुरिसेणवा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकार विभूसिण अंतेउरपरियालं संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवई देवी ओहय० जाव झियायमाणीं पासइ पासित्ता एवं वयासी-किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि, एवं

दिया-गाढ निद्रा से रहित कर फिर वह वहाँ से जहाँ पद्मनाभ राजा थे वहाँ गया-वहाँ जाकर उसने उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! मैं हस्तिनापुर नगर से द्रौपदी को यहाँ ले आया हूँ। वह तुम्हारी अशोक वाटिका में ठहरी है, अतः अब तुम जानो। ऐसा कहकर वह देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वापिस चला गया। सू- २५

करीने ते ज्ज्यां पद्मनाभ राजा हुता त्यां गये। त्यां जधने तेण्हे तेमने आ प्रभाण्हे कळुं के हे देवानुप्रिय ! हस्तिनापुर नगरथी द्रौपदी देवीने हुं अळीं लळ आण्ये। छुं. ते तभारी अशोक-वाटिकाभां छे, अथी हवे तमे नाल्हा. आ प्रभाण्हे कळीने ते देव जे दिशा तरइथी प्रकट थये हुतो ते जे दिशा तरइ पाछो जतो रह्यो. ॥ सूत्र २५ ॥

४७४]

वातायमेकयाज्ञसूने

खलु तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूदी-
वाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठि-
हस्स रण्णो भवणाओ साहरिया तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया !
ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सच्चिं विपुलाइं भोगभोगाइं
जाव विहराहि, तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एवं वयासी-
एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे बारवइए
णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, तं णं
से छण्हं मासाणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ तएणं अहं देवा-
णुप्पिया ! जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणाणिदेसेचिट्ठि-
स्सामि, तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणित्ता २ दोवईं
देविं कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्ठं छट्ठेणं अनि-
विखत्तेणं आयांबिलपरिग्गहिएणं तवोकस्मेणं अप्पाणं भावेमाणे
विहरइ ॥ सू० २६ ॥

टीका—‘ तएणं सा ’ इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदी देवी ततो मुहूर्त्तान्तरे
प्रतिबुद्धा=जागरिता सती तद् भवनम् अशोकवनिनां च ‘ अपञ्चभिजाणमाणी ’
अमृत्यभिजानन्ती भवनादिकमपरिचितं जानन्ती एवमवादीत—नो खलु अस्माक-

—तएणं सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सा दोवईदेवी) वह द्रौपदीदेवी (ताओ
मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी) १ मुहूर्त्त के बाद जगी सो जग कर
उसने (तं भवणं असोगवणियं च अपञ्चभिजाणमाणी एवं वयासी)
उस भवन को एवं उस अशोकवाटिका को अपरिचित जानकर अपने
मन में ऐसा विचार किया—(नो खलु अहं एसे सएभवणे, णो खलु

तएणं सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (ताओ मुहुत्तरस्स
पडिबुद्धा समाणी) ओक भुङ्गुत्त पछी जगी अने जगीने तेणे (तं भवणं
असोगवणियं च अपञ्चभिजाणमाणी एवं वयासी) ते भवन अने ते अशोक
वाटिकाने अपरिचित जाल्लेने पोताना मनभां आ जतने विचार कर्थे के—

असोगवणीसुतवर्णिनी टीका अ० १६ द्रौपदीवर्तितनिरूपणम्

४७५

मेतद् भवनं नो खलु एषाऽस्माकं 'सगा' स्वका=स्वकीया, अशोकवनिका, तद् न ज्ञायते खलु-अहं केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा अन्यस्य राज्ञोऽशोकवनिकायां 'साहरिया' संव्ता-आनीताऽस्मि' इति कृत्वा=इति विचार्य, अपहतमनःसंकल्पा=अनिष्टयोगेन भग्न-मनोरथा विषादप्लुपगतेत्यर्थः यावद् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति ।

ततः खलु पद्मनाभो राजा स्नातो यावत् सर्वालंकारविभूषितोऽन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतो यत्रैवाशोकवनिका यत्रैव द्रौपदी देवी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ, णं अहं केणई देवेणवा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्ति कइदु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ) यह मेरा निज का भवन नहीं है, यह मेरी निज की अशोक वाटिका नहीं है। तो पता नहीं पड़ता क्या मैं किसी दूसरे राजा की अशोकवाटिका में किसी देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर महोरग अथवा, गंधर्व के द्वारा हरण कर लाई गई हूँ। इस प्रकार के विचार से उस का मनः संकल्प अपहत हो गया-अनिष्ट के योग से उस का मनोरथ भग्न हो गया और वह खेदखिन्न हो गई यावत् आर्तध्यान करने लगी। (तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकारविभू-सिए अंतेउरपरियालं संपपिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्ता दोवई देवीं ओहय० जाव झियो-

(नो खलु अम्हं एसे सएमवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्ति कइदु ओहयमण संकप्पा जाव झियायइ)

आ भाइं लवन नथी, आ भारी अशोक वाटिका नथी. क'ई अजर पडती नथी, शुं हुं भीअ केई राजनी अशोक वाटिकाभां केई देव, दानव, किंपुरुष किन्नर, महोरग अथवा तो गंधर्व वडे अपहृत थछने लई जवामां आवी छुं. आ जतना विचारोथी तेनुं मन उदास थछ गयुं, अनिष्टना योगथी तेनो मनोरथ लज्ज थछ गये। अने ते जेद-भिन्न थछ गछ यावत् आर्तध्यान करवा लागी.

(तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए अंतेउरपरियालं संपपिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

४७६

होताधर्मकथासूत्रे

द्रौपदीं देवीमपहतमनःसंकल्पां यावद् ध्यायन्तीं=आर्तध्यानं कुर्वतीं पश्यति दृष्ट्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वं ' ओहय० जाव झियाहि ' अपहतमनः संकल्पा यावद् ध्यायसि=विप्रीदसि एवं खलु त्वं हे देवानु-प्रिये ! मम पूर्वसंगतिकेन देवेन जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिना-पुराद् नगराद् युधिष्ठिरस्य राज्ञो भवनात् संहता=अपहताऽसि, ततस्तस्माद् मा

यमाणी पासइ, पासित्ता एवं वयासी, किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुण्वसंगइण्णं देवेणं जंबूद्दीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापु-राओ नयराओ जुहिट्टिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं माणं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोग-भोगाइं जाव विहराहि) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा नहा धोकर यावत् सर्वालंकारो से विभूषित हो अपने अंतःपुर परिवार से संपरि-वृत होकर जहां वह अशोक वाटिका थी-और उसमें भी जहां वह द्रौपदी देवी बैठी थी-वहां आया-वहां आकर के उसने द्रौपदी देवी से अपहत मनः संकल्पवाली यावत् आर्तध्यान करती हुई देखकर इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम क्यों अपहत मनः संकल्प होकर यावत् आर्तध्यान कर रही हो-खेद खिन्न हो रही हो तुम यहां हे देवानुप्रिय ! मेरे पूर्व भव के मित्र देव के द्वारा जंबूद्वीप नाम के द्वीप से भारतवर्ष के हस्तिनापुर नगर से युधिष्ठिर राजा के भवन से हरण कर ले आई

च्छित्ता दोवई देवीं ओहय० जाव झियायमाणी पासइ, पासित्ता एवं वयासी किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ममपुण्वसंगइण्णं देवेणं जंबूद्दीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्टिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं माणं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोग-भोगाइं जाव विहराहि)

त्यारपछी ते पद्मनाभराज स्नान करीने यावत् सर्वालंकारेथी विभूषित थधने पोताना रणुवास-परिवारने साथे लधने न्यां अशोक वाटिका छती अने तेमां पणु न्यां ते द्रौपदी देवी छेटी छती त्यां आओथे. त्यां आवीने तेछे द्रौपदी देवीने अपहतमनः संकल्पवाणी यावत् आर्तध्यान करती जेधने आ प्रभाछे कछुं के छे देवानुप्रिये ! तमे शा माटे अपहतमनः संकल्पा थधने यावत् आर्तध्यान करी रही छे ? जेह-मित्त थधं रह्य छे ? छे देवानुप्रिये ! भारा पूर्वभवना मित्र देव वडे तमे जंबूद्वीप नामना द्वीपना, भारत वर्षना हस्तिनापुर नगरना युधिष्ठिर राजना भवनथी अपहत थधने अही लाववाभां

भक्तगारधमौमृतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४३३

खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! अपहृतमनःसंकल्पा यावद् ध्याय, आर्तध्यानं मा कुरु त्वं मया सार्धं विपुलान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहर=मदीयमासादे तिष्ठ' इति ।

ततः खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे द्वारवत्यां नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो मम प्रियभातृकः=ममप्रियस्य भर्तुर्भ्राता परिवसति, तद् यदि खलु स षण्णां मासानां मध्ये 'ममं' मां 'कूवं' देशीशब्दोऽयम्, अन्वेषयितुं ग्रहीतुं वा नो शीघ्रमागच्छति-ततः खलु गई हो। इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम आपहृतमनःसंकल्प बनकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो अब मेरे साथ विपुल कामभोगों को भोगती हुई मेरे प्रासाद में रहो। (तएणं सा दोवई देवी पउमणांमं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्णे णांमं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, तं जइणं से छण्हं मासाणं मम कूवं णो हव्व मागच्छइ, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसिं तस्स आणाओवायवयणणिहेसे चिट्ठिस्सामि तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणेइ २ दोवईं देवीं कण्णंतेउरे ठवेइ; तएणं सा दोवई देवी छट्ठं छट्ठेणं अणिविखत्तेणं आयंबिलपरिग्गहिणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) इसके बाद उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! सुनो-जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारतवर्षमें द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव मेरे प्रिय पतिके भ्राता रहते हैं। वे यदि छह मासके भीतर मुझे अन्वेषण करनेके लिये या

आवी छे अथी छे देवानुप्रिये ! तमे अपहृतमनः संकल्पा यधने यावत् आर्तध्यान न करो। तमे अनुप्यलव संभंधी काम लेगे। लोगतां मारा भडेलमां रहे।

(तएणं सा दोवई देवी पउमणांमं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबू द्वीवे दीवे, भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्णे णांमं वासुदेवे मम प्रियभाउए परिवसइ, तं जइणं से छण्हं मासाणं मम कूवं णो हव्व मागच्छइ, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसिं तस्स आणाओवायवयणणिहेसे चिट्ठिस्सामि तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणिता २ दोवईं देवीं कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्ठं छट्ठेणं अणिविखत्तेणं आयंबिलपरिग्गहिणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ)

त्यारपछी द्रौपदी देवीअे पद्मनाभने आ भ्रमाछे कछुं हे देवानुप्रिय ! सांभजो, जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भारत वर्षमां द्वारावती नगरीमां कृष्ण-वासुदेव मारा प्रिय पतिना भाई रहे छे। तेअो छ भहीनानी अंदर मारी तपास

અહં હે દેવાનુપ્રિય ! યત્-ત્વં વદસિ=વદિષ્યસિ ‘ તસ્સ ’ તત્ર ‘ આણાઓવાયવય-
 ગણિદેસે ’ આજ્ઞાવપાતવચનનિર્દેશે સ્થાસ્યામિ, તવાજ્ઞાકારિણી વશવર્તિની ભવિ-
 ણ્યામીત્યર્થઃ, આજ્ઞા-અવશ્યં વિધેયતયા આદેશઃ, ઉપપાતવચનં સેવાવચનં, નિર્દેશઃ-
 કાર્યાણિ પ્રતિ પ્રશ્નેક્રુતે યન્નિપતર્થમુત્તરમ્, एषां समाहारद्वन्द्वः તત્ર, તતઃ સ્વલુ
 સ પદ્મનાભો રાજા દ્રૌપદ્યા એતમર્થ પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય દ્રૌપદીં દેવીં ‘ કળ્પંતેઉરે’
 કન્યાન્તઃ પુરે સ્થાપયતિ, તતઃ સ્વલુ સા દ્રૌપદીદેવી ‘ છટ્ઠં છટ્ટેળં ’ ષષ્ઠષ્ઠેન
 પ્ષઠમક્તાનન્તરં પુનઃ ષષ્ઠમક્તેન, ‘ અનિવિવત્તેળં ’ અનિશ્ચિત્તેન=વિરામરહિતેન
 અન્તરરહિતેનેત્યર્થઃ, ‘ આયંબિલપરિગૃહિણં ’ આયંબિલપરિગૃહીતેન તપઃ કર્મણા
 આત્માનં ભાવયન્તી વિહરતિ ॥ સૂ. ૨૬ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે જુહ્વાદિહ્લે રાયાતઓ મુહુત્તંતરસ્સ પડિબુદ્ધે
 સમાણે દોવઈં દેવિં પાસે અપાસમાણો સયણિજ્ઞાઓ ઉદ્દેઈ ઉદ્દિત્તા
 દોવઈં દેવીં સઘ્વઓ સમંતા મગ્ગગગવેસણં કરેઈ કરિત્તા
 દોવઈં દેવીં કથ્થઈ સુઈં વા ખુઈં વા પવત્તિ વા અલભમાણે
 જોણેવ પંડુરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા પંડુરાયં એવં વયાસી
 એવં-સ્વલુ તાઓ ! મમં આગાસતલગંસિ સુહપસુત્તસ્સ પાસાઓ

છેને કે લિયે યહાં જલ્દી સે નહીં આયેંગે તો ઉસકે બાદ હે દેવાનુપ્રિય !
 જૈસા તુમ કહોંગે વૈસા મેં કરૂંગી-તુમ્હારી આજ્ઞા કારિણી વશવર્તિની
 બન જાઝૂંગી। એસા અર્થ “ આણાઓવાયવયગણિદેસે ” હન પદો કા
 નિકલતા હૈ। હસકે બાદ પદ્મનાભ રાજા ને દ્રૌપદી કે હસ કથન કો
 સ્વીકાર કરકે ઉસે કન્યા કે અન્તઃ પુર મેં રલ્લદિયા। વહાં વહ દ્રૌપદી
 દેવી આયંબિલ પરિગૃહીત છટ્ટ છટ્ટ કી અન્તર રહિત તપસ્યા સે અપને
 આપ કો ભાવિત કરતી હુઈ રહને લગી। સૂ. ૨૬

કરતાં કરતાં અહીં નહિ આવી શકે તો ત્યારપછી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેમ
 કહેશે તેમ કરીશ, હું તમારી આજ્ઞાકારિણી વશવર્તિની બની બઠશ. “ આણા
 ઓવાયવયગણિદેસે ” આ પદોથી આ બાતને। અર્થ નીકળે છે. ત્યારપછી
 પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના તે કથનને સ્વીકારી લીધું અને તેને કન્યાના અન્તઃ
 પુરમાં મૂકી દીધી. ત્યાં તે દ્રૌપદી દેવી આયંબિલ પરિગૃહીત છટ્ટ છટ્ટની અન્તર
 રહિત તપસ્થાથી પોતાની બાતને ભાવિત કરતી રહેવા લાગી. ॥ સૂ. ૨૬ ॥

अनगरचर्मामृतवर्षिणी ८०० अ० १६ द्रौपदीचरितनिर्दणम्

४५९

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण
वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा
अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ ! दोवइए देवीए सब्बओ
समंता मग्गणगवेसणं कयं, तएणं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे
सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुभ्भे देवाणुप्पिया !
हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियच्चउक्कच्चरमहापहपहेसु महया२
सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !
जुहिट्टिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवइ
देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं-
पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा
अवक्खित्ता वा, तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवइए देवीए सुइं
वा जाव पवित्तिं वा परिकहेइ तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थ-
संपयाणं दाणं दलयइ त्तिकट्ठु घोसणं घोसावेह२ एयमाणत्तियं
पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति,
तएणं से पंडुराया दोवइए देवीए कथइ सुइं वा जाव अलभ-
माणे कोत्तीं देवीं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं
तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं णयरिं कणहस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं
णिवेदेहि कणह णं परं वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा
अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवर्त्तीं वा
उवलभेज्जा, तएणं सा कोत्तीं देवीं पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी
जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखंध-

वरगया हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु-
जणवये मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी
जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं
वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी
तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं
वयह-एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणा-
उराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखइ, तएणं
ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंबि-
यपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय
बारवईए य मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए
पायग्गहणं करेइ करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ
दुरुहित्ता वारावइए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेवसए गिहे तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ । तएणं से
कण्हे वासुदेवे कोंती देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्त-
रागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी संदिसउ णं पिउच्छा !
किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं
एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स
आगासतले सुहपसुत्तस्स पासो दोवई देवी ण णज्जइ केणइ
अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए

अमगणगवेसणं करित्तए, तएणं से कणहे वासुदेवे कौंती

४६१

देवीए मगणगवेसणं करित्तए, तएणं से कणहे वासुदेवे कौंती
पिउच्छि एवं वयासी-जं णवरं पिउच्छा ! दोवइए देवीए कत्थइ
सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ
अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं साहत्थि उवणेमित्तिकहु कौंती
पिउत्थि सक्कारेइ संमाणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कौंती
देवी कणहेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं
पाउ० तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० २५ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स युधिष्ठिरो राजा ततो मुहूर्तान्-
न्तरे प्रतिबुद्धः सन् द्रौपदीं देवीं पार्श्वे ‘अपासमाणो’ अपश्यन्=अनवलोकयन्
शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रौपद्या देव्याः सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं करोति,
कृत्वा द्रौपद्या देव्या ‘कत्थइ’ कुत्रापि ‘सुइं’ श्रुतिं सामान्यवृत्तान्तं वा,
‘खुइं’ श्रुतिं लिङ्गादि शब्दं वा ‘पवत्ति’ प्रवृत्तिं वा विशेषवृत्तान्तं अलभमानो

तएणं से जुहिट्ठिल्ले राया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से जुहिट्ठिल्ले राया) वे युधिष्ठिर राजा
(तओ मुहुत्तंतरस्स) एक मुहूर्त के बाद (पडिबुद्धे समाणे) जगे-और
जगकर उन्होंने (दोवई देवीं) द्रौपदी देवी को (पासे अपासमाणो सयणि-
ज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सब्बओ समंता मगणगवेसणं करेइ)
अपने पास जब नहीं देखा तो वे अपनी शय्या से उठे और उठकर
द्रौपदी देवीकी सषओरसे उन्होंने मार्गणा गवेषणाकी (करित्ता दोवईए
देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्ति वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया

‘तएणं से जुहिट्ठिल्ले राया’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपथी (से जुहिट्ठिल्ले राया) ते युधिष्ठिर राजा (तओ
मुहुत्तंतरस्स) ओक मुहूर्त बाद (पडिबुद्धे समाणे) जाग्या. अने जागीने
तेभण्णे (दोवई देवीं) द्रौपदी देवीने,

(पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सब्बओ समंता
मगणगवेसणं करेइ)

न्यारे पोतानी पासे नेछ नहि त्यारे पोतानी शय्या उपरथी जिला
थया अने जिला थरने द्रौपदी देवीनी आभेर भागण्णु गवेषणु करी.

(करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्ति वा अलभमाणे

યગૈવ પાણ્ડુ રાજા તઝૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પાણ્ડુ રાજાનમેવમવાદીત્—હે તાત !
 एवं खलु ममाकाशतले प्रासादाद्दालिकोपरि 'सुहृपसुत्तस्स' सुखप्रसुत्तस्य पार्श्वाद्
 द्रौपदी देवी 'ण णज्जइ' न ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किन्नरेण वा
 किंपुरुषेण वा गन्धर्वेण वा इता वा नीता=अन्यत्र प्रापिता वा अवक्षिप्ता वा=?
 रूपगतादौ कुचित् पातिता वा इत्यर्थः, तत्-तस्माद् इच्छामि खलु हे तातः !
 द्रौपद्या देव्याः सर्वतः समन्ताद् मार्गेणगवेषणं कर्तुम् ।

તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા પંડુરાયં एवं वयासी एवं खलु ताओ
 ममं आगासतलगंसि सुहृपसुत्तस्स प्रासाओ दोवई देवी ण णज्जइ,
 केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा
 गंधर्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा) मार्गणा गवेषणा
 करके जब उसने द्रौपदी देवी की कहीं भी शोध, सामान्य खबर को
 उस के चिह्नस्वरूप छिक्का आदि के शब्द को, अथवा प्रवृत्ति-विशेष
 घृत्तान्त को नहीं पाया तब वे जहाँ पांडुराजा थे वहाँ गये-वहाँ जाकर
 के उन्होंने पांडुराजा से इस प्रकार कहा-हे तात ! जब मैं प्रासाद की
 अद्दालिकाके ऊपर सुखसे सो रहा था-तब मेरे पाससे न मालूम द्रौपदी
 देवी को किसी देवने, दानवने, किन्नरने, किंपुरुषने, महोरगने, गंधर्वने
 हरण कर कहाँ रख दिया है।-या उसे किसी कुएं में या खड्डे में डाल
 दिया है (इच्छामि णं ताओ दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण
 गवेषणं कयं) इस लिए हे तात ! मैं द्रौपदी देवी की सब तरफ से

जेणेव પંડુરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા પંડુરાયં एवं वयासी एवं खलु
 ताओ ममं आगासतलगंसि सुहृपसुत्तस्स प्रासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ
 देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधर्वेण वा
 हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा)

માર્ગણા ગવેષણા કર્યો બાદ પણ બ્યારે તેમણે દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ
 રીતે, સામાન્ય ખબર અને ચિહ્ન સ્વરૂપ છોક વગેરે શબ્દને અથવા તે
 પ્રવૃત્તિ-વિશેષ વૃત્તાંત-ની પણ બાણ થઈ નહિ ત્યારે તેઓ બ્યાં પાંડુરાજા
 હતા ત્યાં ગયા, ત્યાં જઈને તેમણે પાંડુરાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત !
 બ્યારે હું મહેલની અગાશીમાં સૂઈ રહ્યો હતો ત્યારે મારી પાસે ન બાણ
 કોણે દ્રૌપદી દેવીનું કોઈ દેવે, દાનવે કે કિન્નરે કે કિંપુરુષે કે મહોરગે કે
 ગંધર્વે હરણ કર્યું છે. અથવા તે દ્રૌપદી દેવીને કોઈએ કૂવામાં કે બાડામાં
 નાખી દીધી છે. (इच्छामि णं ताओ दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-

अमनारथमोद्धतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीवर्तितनिरूपणम्

४८३

ततः खलु स पाण्डुराजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवा-
दीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिकचतुष्क-
चत्वरमहापथपथेषु महता महता शब्देनोद्घोषयन्तः एवं वदत-एवं खलु हे देवानु-
प्रियाः ! युधिष्ठिरस्य राज्ञ आकाशतलके सुखमसुप्तस्य पार्श्वे द्रौपदी देवी न
ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा

और सब प्रकार से मार्गणा और गवेषणा करना चाहता हूँ । (तए णं
से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी गच्छहाणं
तुम्हे देवानुप्रिया ! हत्थिगाउरे नगरे, सिंघाडगतीय चउक्कचच्चर महा
पहपहेसु महया २ सदेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवा-
नुप्रिया ! जुहिद्विल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ
दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ, देवेण वा दानवेण वा किन्नरेण वा किंपुरि-
सेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा)
इस बात को सुनकर के उन पांडुराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया
और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग हस्तिनापुर
नगर में जाओ-और वहां के शृंग्गाटक, त्रिक चतुष्क, चत्वर, महापथ
इन समस्त मार्गों में बड़े जोर २ से ऐसी घोषणा बार २ करो कि हे
देवानुप्रियों ! सुनो प्रासादकी अट्टालिका पर सुखपूर्वक सोये हुए युधिष्ठिर
राजा के पास से न मालूम किसी देवने, या दानवने, किसी, किन्नरने,

गवेषणं कयं) એટલા માટે હે તાત ! હું ચોભેર બધી રીતે દ્રૌપદી દેવીની
માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા ઇચ્છું છું.

(तए णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी गच्छहाणं
तुम्हे देवानुप्रिया ! हत्थिगाउरे नगरे, सिंघाडगतीयचउक्कचच्चरमहापह-
पहेसु महया २ सदेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवानुप्रिया !
जुहिद्विल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण
णज्जइ, केणइ देवेण वा दानवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा
गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा)

આ વાતને સાંભળીને પાંડુ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો હસ્તિનાપુર
નગરમાં જાઓ અને ત્યાંના શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા
માર્ગોમાં મોટા સાદે આ જાતની ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો,
મહેલની અગાશી ઉપર સુખેથી સૂતા યુધિષ્ઠિર રાજાની પાસેથી ન જાણે કોઈ
દેવે કે દાનવે અથવા તો કોઈ કિન્નરે કે કિંપુરુષે અથવા કોઈ મહોરગે કે

૪૮૭

કાતાધર્મકથાસંગ્રહ

ગન્ધર્વેણ વા હતા વા નીતા વા અવક્ષિપ્તા વા, તત્=તસ્માદ્ યઃ સ્વલુ હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ શ્રુતિં વા ક્ષુતિં વા પ્રવૃત્તિં વા પરિકથયતિ, તસ્ય સ્વલુ
પાણ્દુ રાજા વિપુલમર્થસંપદાનં દાનં દદાતિ=હતિ કૃત્વા-સ્ત્યુત્વા ઘોષણાં ઘોષ-
યત, ઘોષયિત્વા એતામણ્ણિકાં પ્રત્યર્પયત । તતઃ સ્વલુ તે કૌડુમ્બિકપુરુષાસ્ત-
થૈવ ઘોષણાં કૃત્વા યાવદાજ્ઞાં પ્રત્યર્પયન્તિ=હે સ્વામિન ! મવદાજ્ઞયા ઘોષણા
કૃતાઽસ્માભિરિતિ નિવેદયન્તિ ।

યા કિસી કિંપુરુષ ને યા કિસી મહોરગ ને યા કિસી ગંધર્વ ને દ્રૌપદી
દેવી કો હરણ કર લિયા હૈ-યા હરણકર ઉસે કહીં રલ્લ દિયા હૈ અથવા
કિસી કુર્ષે મેં યા સ્વહે મેં ડાલ દિયા હૈ (તં જો ણં દેવાણુપ્પિયા ! દોવ-
ઈં દેવીં સુઈં વા જાવ પવત્તિં વા પરિકહેઈ, તસ્સ ણં પંડુરાયા વિઝલં
અત્થસંપયાણં દાણં દલયઈ, ત્તિ કટ્ટુ ઘોસણં ઘોસાવેહ ૨ એયમાણત્તિયં
પચ્ચપ્પિણહ, તણં તે કોહુંબિય પુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ-તણં સે
પંડુરાયા દોવઈં દેવીં કત્થઈ સુઈં વા જાવ અલમમાણે કોતીં દેવીં
સદાવેઈ) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈં બી મનુષ્ય દ્રૌપદી દેવી કી શોધ
કરેગા યાવત્ ઉસકે વિશેષવૃત્તાન્ત કો લાકર દેગા-હમ સે આકર
કહેગા, ઉસકો પાંડુરાજા બહુત અધિક માત્રા મેં અર્થ સંપ્રદાન-દાન-
દેગા । હસ પ્રકાર કી તુમ ઘોસણા કરો, ઓર ઘોષણા કર કે ફિર
હમેં હસકી પીછે સ્વર દો । હસ પ્રકાર રાજા કી આજ્ઞા પાકર ઉન
કૌડુમ્બિક પુરુષોં ને હસો પ્રકારકી ઘોષણા કરકે હસ કી સ્વર રાજાકે

ગંધર્વે દ્રૌપદી દેવીનું અપહરણ કયું છે કે હરણ કરીને તેને ક્યાંક મૂકી દીધી
છે કે કોઈ ક્ષણમાં અથવા તો ખાડામાં નાખી દીધી છે.

(તં જો ણં દેવાણુપ્પિયા ! દોવઈં દેવીં સુઈં વા જાવ પવત્તિં વા પરિકહેઈ,
તસ્સ ણં પંડુરાયા વિઝલં અત્થસંપયાણં દાણં દલયઈ, ત્તિ કટ્ટુ ઘોસણં ઘોસાવેહ ૨
એયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ, તણં તે કોહુંબિયપુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ-તણં સે
પંડુરાયા દોવઈં દેવીં કત્થઈ સુઈં વા જાવ અલમમાણે કોતીં દેવીં સદાવેઈ)

તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈં પણ માણસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત્
તેના વિશે સર્વિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે,
તેને પાંડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે. આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને
ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો. આ રીતે રાજાની આજ્ઞા
સાંભળીને તે કૌડુંબિક પુરુષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર
રાજાને આપી. ત્યારપછી ત્યારે પાંડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ સ્થાને

અનગારવમૌચુતચરિણી ટીકા અં ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ્

૬૮૧

તતઃ સ્વલુ સ પાણ્ડુ રાજા દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ કુત્રાપિ શ્રુતિ વા યાવત્ પ્રવૃત્તિમ્
અભમાનઃ કુન્તીં દેવીં શબ્દયતિ શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છ સ્વલુ ત્વં હે
દેવાનુપ્રિયે ! દ્વારવતીં નગરીં કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય એતમર્થં નિવેદય=સુખપ્રસુતા
દ્રૌપદી ક્રેનાઽપિ હતા નીતા કૂપાદૌ પ્રક્ષિપ્તા વેતિ ન જ્ઞાયતે इत्येतद्रूपं वृत्तान्तं कथय,
કૃષ્ણઃ સ્વલુ પરં વાસુદેવો દ્રૌપદ્યા માર્ગણગવેષણં કુર્યાત્ અન્યથા ન જ્ઞાયતે દ્રૌપદ્યા
દેવ્યાઃ શ્રુતિ વા પ્રવૃત્તિ વા શ્રુતિ વા ઉપલભેત ।

પાસ મેજદી ! ઇસકે बाद जब पांडुराजा ने द्रौपदी देवी की कहीं पर
भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्होंने ने कुन्ति देवी को बुलाया-
(सहावि० ए० वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा-(गच्छहणं तुमं
देवाणुप्पिया ! वारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि,
कण्हेणं परं वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसणं करेज्जा-अन्नहा न नज्जई,
दोवईए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलमेज्जा) हे देवानुप्रि-
यो ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वायुदेव के पास जाओ-और उनसे
इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया
है । हरण कर उसे कहीं पहुचा दिया है या किसी कुँ में या खड्डे में
डाल दिया है । पता नहीं पड़ता है । वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही
द्रौपदी की मार्गणा गवेषणा करेंगे । नहीं तो द्रौपदी देवी की श्रुति, श्रुति
अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी-यह नहीं कहा जा सकता है ।

શ્રુતિ યાવત્ પ્રવૃત્તિ મેળવી નહિ ત્યારે તેમણે કુન્તી દેવીને બોલાવી. (સહા
વિ० એ० વયાસી) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(ગચ્છહ ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! વારવઈં નયરિં કણ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ એયમટ્ઠં
ણિવેદેહિ, કણ્હેણં પરં વાસુદેવે દોવઈએ મગ્ગણગવેસણં કરેજ્જા અન્નહા ન નજ્જઈ,
દોવઈએ દેવીએ સુતીં વા ખુતીં વા પવત્તીં વા ઉવલમેજ્જા)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમાં કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ
અને તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરો કે સુખથી સુતેલી દ્રૌપદીનું કોઈએ
હરણ કરી લીધું છે. હરણ કરીને તેને ક્યાંક મૂકી દીધી છે અથવા તો કોઈ
કૂવામાં કે ખાડામાં નાખી દીધી છે. ન જાણું શું થઈ ગયું છે ? કૃષ્ણવાસુદેવ
મને ખાતરી છે કે ચોક્કસ દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા ગવેષણા કરશે નહિતર દ્રૌપદી
દેવીની શ્રુતિ, શ્રુતિ અથવા પ્રવૃત્તિની જાણ અમને થશે એવી શક્યતા જણાતી નથી.

તતઃ સ્વલુ સા કુન્તી દેવી પાણ્ડુના રાજા એવમુક્તા સતી યાવત્ પ્રતિશ્રુણોતિ= પાણ્ડુત્પત્ત્યાજ્ઞાં સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય-સ્વીકૃત્ય સ્નાતા કૃતવલિકર્મા હસ્તિસ્કન્ધ-વરગતા હસ્તિનાપુરસ્ય મધ્યમધ્યેન નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય કુરુજનપદસ્ય=કુરુનામ-કસ્ય દેશસ્ય મધ્યમધ્યેન યત્રૈવ સૌરાષ્ટ્રજનપદઃ, યત્રૈવ દ્વારવતી નગરી, યત્રૈવાગ્રો-ધ્યાનં=યત્રાન્યસ્થાનાદાગતાનાં સ્થિત્યર્થમાવાસો વિદ્યતે તાદૃશં વહિઃ પ્રદેશવર્ત્યુપવ-નમ્, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય હસ્તિસ્કન્ધાત્ પ્રત્યવરોહતિ=પ્રત્યવતરતિ, પ્રત્ય-વરુહ્ય કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીદ્-ગચ્છત સ્વલુ યુગં હે

(તણં સા કૌંતી દેવી પંડુરણા એવં વુત્તા સમાણી જાવ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા, પહાયા કયવલિકમ્મા હત્થિસ્વંધવરગયા હત્થિણાઠરં મજ્ઞં મજ્ઞેણં ણિગચ્છહ ણિગચ્છિત્તા કુરુજ્ઞણવયં મજ્ઞં મજ્ઞેણં જેણેવ સુરદ્દ જણવણે જેણેવ વારવહ્ ણયરી જેણેવ અગ્ગુજ્ઞાણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવા-ગચ્છિત્તા હત્થિસ્વંધાઓ પચ્ચોરુહહ, પચ્ચોરુહિતા કોહુંબિયપુરિસે સહા-વેહ, સહાવિત્તા એવં વયાસી) इस के बाद पांडुराजा द्वारा इस प्रकार कही गई कुंती देवी ने पांडुराजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया-और स्वीकार कर के उसने स्नान किया-काक आदि पक्षियों के लिये अन्नदेने रूप बलि कर्म किया। बाद में वह हाथी के ऊपर बैठकर हस्तिनापुर नगर के बीच से होकर निकली-निकलकर वह कुरुदेश के बीच से होती हुई जहाँ सौराष्ट्र जनपद था और उसमें भी जहाँ द्वाारवती नगरी थी-वहाँ पर भी जहाँ वह अग्रउद्यान था कि जिसमें बाहरसे आये हुए पथिक विश्राम के लिये ठहर जाते थे-वहाँ गई। वहाँ जाकर

(તણં સા કૌંતી દેવી પંડુરણા એવં વુત્તા સમાણી જાવ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા, પહાયા કયવલિકમ્મા હત્થિસ્વંધવરગયા હત્થિણાઠરં મજ્ઞં મજ્ઞેણં ણિગચ્છહ, ણિગચ્છિત્તા કુરુજ્ઞણવયં મજ્ઞં મજ્ઞેણં જેણેવ સુરદ્દજણવણે જેણેવ વારવહ્ ણયરી જેણેવ અગ્ગુજ્ઞાણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા હત્થિસ્વંધાઓ પચ્ચોરુહહ, પચ્ચોરુહિતા કોહુંબિયપુરિસે સહાવેહ, સહાવિત્તા એવં વયાસી) ત્યારપછી પાંડુરાજા વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલી કુંતી દેવીએ પાંડુરાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેણે સ્નાન કર્યું. કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું ત્યારપછી તે હાથી ઉપર સવાર થઈને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળી. નીકળીને તે કુરુદેશની વચ્ચે થઈને જ્યાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતું અને તેમાં પણ જ્યાં અગ્ર ઉદ્યાન હતું-કે જેમાં બહારથી આવનારા પથિકો વિશ્રામ માટે રોકાતા હતા-તેમાં

जननारथमांशुतवर्षिणी डी० न० १६ प्रौपदीचरितनिरूपणम्

४८७

देवानुप्रियाः ! यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवानुप्रविशत, अनुप्रविश्य कृष्णं वासुदेवं करतलपरिशृङ्गीतदशनखं शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं वदत एवं खलु हे स्वामिन् ! युष्माकं पितृष्वसा कुन्ती देवी हस्तिनापुराद् नगराद् इह हव्यमागता युष्माकं दर्शनं काङ्क्षति । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् कथयन्ति=कृष्ण-वासुदेवस्य समीपे कुन्तीकथितं वचनं निवेदयन्तीत्यर्थः । ततः खलु कृष्णो वासु-बह हाथी से नीचे उतरी और उतर कर के उसने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया— बुलाकर उनसे इस प्रकर कहा—(गच्छह णं तुब्भे देवानु-प्रिया ! जेणेव बारवईणयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह, एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कौंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया.—तुब्भं दंसणं कंखइ, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए सोच्छा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगयबारवईए य मज्झं मज्झेणं जेणेव कौंती देवी—तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में जाओ—वहां जाकर कृष्ण वासुदेव को दोनों हाथोंकी अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख-कर शिर झुकाते हुए नमस्कार करना—बादमें उनसे ऐसा कहना—कि हे स्वामिन् ! आपकी पितृष्वसा—भुआ—कुन्ती देवी हस्तिनापुर नगर से यहां अभी—आई है—वे आपके दर्शन करना चाहती हैं । उन कौटु-म्बिक पुरुषोंने कुन्ती देवी की इस आज्ञा को शिरोधार्य कर श्री कृष्ण

शेकाध. त्यां जेधने ते हाथी उपरथी नीचे उतरी अने उतरीने तेणे कौटुम्बिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने तेमने आ प्रभाळे कळुं के—

(गच्छह णं तुब्भे देवानुप्रिया ! जेणेव बारवई णयरी, तेणेव अणुरविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कौंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया, तुब्भं दंसणं कंखइ, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव केहेति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरि-साणं अंतिए सोच्छा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगयबारवईए य मज्झं मज्झेणं जेणेव कौंती देवी—तेणेव उवागच्छइ)

हे देवानुप्रियो ! तमे द्वारावती नगरीमां जेयो, त्यां जेधने कृष्णवासु-देवने जेने हाथीनी अजलि बनावीने अने तेने मस्तके मूळीने भायुं नीचे नभावीने नमस्कार करजे त्यारपछी तेमने आ प्रभाळे विनंती करजे के हे स्वामिन् ! तमारी पितृष्वसा—शेध कुंती देवी हस्तिनापुर नगरथी अत्यारे अर्धी आव्या छे तेयो तमने जेवा भागे छे. ते कौटुम्बिक पुरुषोये कुंती देवीनी आ आज्ञाने स्वीकारीने श्रीकृष्ण वासुदेवने आ सभाचारनी जणर आधी

देवः कौटुम्भिकपुरुषाणामन्तिके श्रुत्वा निशम्य हस्तिस्कन्धवरगतो हयगजरथ-
पदातिसंपरिहृतो द्वावतया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव कुन्ती देवी तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य कुन्त्या देव्याः पादग्रहणं करोति,
कृत्वा कुन्त्या देव्या सार्धं हस्तिस्कन्धं 'दुरुहइ' दूरोहति-आरोहतीत्यर्थः । दूरुह्य
द्वावतया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकं
गृहमनुप्रविशति ।

वासुदेव के लिये इस समाचार की खबर करदी कृष्ण वासुदेव कौटु-
म्भिक पुरुषों के पास से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में
धारण कर हाथी पर बैठ, हयगज, रथ एवं पदातिर्यों के साथ २ द्वारा
वती नगरी के बीच से होते हुए जहाँ कुन्तीदेवी थी वहाँ आये । (उवा-
गच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कौंतीए देवीए पाय-
ग्रहणं करेइ, करित्ता कौंतीए देवीए सद्धि हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता
बारवईए जयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कौंतीदेवीं
पहायं कयबलिकम्मं जिमियमुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं
वयासी) वहाँ आकर वे हाथी पर से नीचे उतरे और उतरकर कुन्ती
देवी के चरणों में नमन किया-चरण स्पर्श करके कुन्तीदेवी के साथ २
हाथी पर बैठ गये-बैठ कर के द्वारावती नगरी के ठीक भीतर से होकर
जहाँ अपना गृह-प्रासाद-था वहाँ आये-वहाँ आकर प्रासाद के भीतर

दीधी. कृष्णवासुदेवे कौटुम्भिक पुरुषाणी पासेथी आ समायासे सांलणीने तेने
हृदयमां धारण करेने, हाथी उपर सवार थधने, घोडा, हाथी, रथ अने पाय-
दणोनी साथे द्वारावती नगरीनी वच्चे थधने ज्थां कुंती देवी उतां त्यां आव्या.
(उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहि । कौंतीए देवीए पायग्रहणं
करेइ, करित्ता कौंतीए देवीए सद्धि हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए जयरीए
मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयंगिहं अणु-
पविसइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कौंती देवी पहायं कयबलिकम्मं जिमियमुत्त-
रागयं जाव सिहासणवरगयं एवं वयासी)

त्यां पछांथीने तेज्जा हाथी उपरथी नीचे उतरथी अने उतरिने कुंती
देवीने पगे लाग्या अने पगे लागीने कुंती देवीनी साथे हाथी उपर सवार
थया. सवार थधने ज्थां पोतानुं लवन उतुं त्यां आव्या, त्यां आवीने लवननी

તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ કુંતીં દેવીં સ્નાતાં કૃતવલિર્માણં કાકાદિભ્યઃ
કૃતાન્નસંવિભાગા જિમિત્તશુક્રોત્તરાગતાં જિમિતા-મોજનં કૃતવતી શુક્રોત્તરામતા-
શુક્રોત્તરકાલં-મોજનોત્તરકાલમ્-આગતા, તાં તથા, યાવત્ સુલાસનવ્રગતા=સુલ-
પૂર્વકં વિશિષ્ટાસનોપવિષ્ટામ્ એવમવાદીત્-હે પિતૃધ્વસઃ ! સંદિશન્તુ કિમાગમનપ્રયો-
જનમ્ ?, તતઃ સ્વલુ સા કુંતી દેવી કૃષ્ણં વાસુદેવમેવમવાદીત્-એવં સ્વલુ હે પુત્ર !
હસ્તિનાપુરે નગરે યુધિષ્ઠિરસ્યાકાશતલે સુલપસુત્તસ્ય પાર્શ્વાદ દ્રૌપદી દેવી ન
જ્ઞાયતે કેનાપિ અહતા યાવદ્ અવક્ષિપ્તા વા, તત્ તસ્માદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે પુત્ર !

ચલે ગયે । કુંતી ને વહાં જાકર સ્નાન ક્રિયા ચલિકર્મ ક્રિયા । બાદ મેં
ચતુર્વિધ આહાર કો જીમકર જબ વે સુલપૂર્વક બેઠ ગઈ ત્ય કૃષ્ણ
વાસુદેવ ને ડનસે કહા (સંદિસડ ણં પિડચ્છા ! કિમાગમનપઓચણં ?
તણં સા કોંતી દેવી કણં વાસુદેવં એવં વયાસી એવં સ્વલુ પુત્તા ! હસ્થિ
ણાડરે જુહિદ્વિલ્લસ અગાસતલે સુહપસુત્તસ પાસાઓ દોવઈ દેવી ણ
જગ્ગઈ, કેણઈ અવહિયા જાવ અવક્ષિપ્તા વા તં ઇચ્છામિણં પુત્તા ! દોવઈ
એ દેવીએ મગ્ગણગવેસણં કરિત્તણ) હે શુઆજી ! કહિયે-કિસ કારણ
સે આપ યહાં પધારીં હેં ? હસ પ્રકાર કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પૂછને પર ડસ
કુંતીને ડન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહો-પુત્ર ! સુનો-આને કા
કારણ હસ પ્રકાર હૈ-હસ્તિનાપુર નગરમેં પ્રાસાદ કી અદાલિકા કે
ઉપર સુલકે સાથ સોયે હુણ યુધિષ્ઠિર કે પાસ સે દ્રૌપદી દેવી ન માલૂમ
કિસીને હરણ કરલી હૈ-યાવત્ કિસી કુંણ મે યા લલ્લુ મેં ડાલ દી હૈ ।

અંદર ગયા. કુંતીએ ત્યાં પહોંચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું. ત્યાર
પછી ત્યાર બાતના આહારો જમીને જ્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઇને બેસી
ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યું કે:—

(સંદિસડ ણં પિડચ્છા ! કિમાગમનપઓચણં ? તણં સા કોંતી દેવી
કણં વાસુદેવં એવં વયાસી એવં સ્વલુ પુત્તા ! હસ્થિણાડરે જયરે જુહિદ્વિલ્લસ
આગાસતલે સુહપસુત્તસ પાસાઓ દોવઈ દેવીણ જગ્ગઈ, કેણઈ અવહિયા જાવ
અવક્ષિપ્તા વા તં ઇચ્છામિણં પુત્તા ! દોવઈએ મગ્ગણગવેસણં કરિત્તણ)

કહો, શા કારણથી તમે અહીં આવ્યા છો ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના
પ્રશ્નને સાંભળીને કુંતી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર !
સાંભળો, હું એટલા માટે અહીં આવી છું કે હસ્તિનાપુર નગરમાં મહેલની
અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન જાણે કેાણે દ્રૌપદી દેવીનું
હરણ કરી લીધું છે યાવત કેાઇ ક્ષમામાં એ કે ખાડામાં નાખી દીધી છે. એથી
હે પુત્ર ! હું ઇચ્છું છું કે:—દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી જોઈએ.

द्रौपद्या देव्या मार्गणगवेषणं 'करित्तए' कर्तुम् इति । ततः खलु स कृष्णो वासु-
देवः कुन्तीं 'पिउच्छि' पितृष्वसारमेवमवादीत्-यत् नवरं हे पितृष्वसः । यदि
द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा क्षुतिं वा प्रवृत्तिं वा यावत् लभे, 'तो णं' तर्हि
खलु, अहं पातालाद् भवनाद् वा अर्धभरताद् वा=खण्डत्रयमध्यात् समन्तात्=सर्वतः
स्थानाद्, द्रौपदीं देवीं 'साहत्थि' स्वहस्तेन 'उवणेमि' उपनयामि, इति
कृत्वा==इत्युक्त्वा कुन्तीं 'पिउत्थि' पितृष्वसारं सत्कायति संमानयति, सत्कार्यं

इस लिये हे पुत्र ! मैं चाहती हूँ कि द्रौपदी की मार्गणा एवं गवेषणा
होनी चाहिये । (तएणं से कण्हे वासुदेवे कीर्तीं पिउच्छि एवं वयासी-
जं णवरं पिउच्छी दोवइए देवीए कत्थइं सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं
पायालाओ वा भवणाओ अद्ध भरहाओ वा, समंतओ दोवइं साहत्थि
उवणेमि त्ति कट्टु कीर्ती पिउच्छि सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविस-
ज्जेइ, तएणं सा कीर्ती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया, समा-
णी जामेव दिसि पाउ० तामेवदिसि पडिगया) तब कृष्ण वासुदेव ने
अपनी भुआ कुंती देवी से इस प्रकार कहा-हे भुआ ! मैं और अधिक
तो क्या कहूँ-द्रौपदी देवी की यदि मैं कहीं पर भी श्रुतिक्षुति, और
प्रवृत्ति पा लेता हूँ तो मैं चाहे वह पाताल में हो, या किसीके भवन में
हो, या अर्ध भरत क्षेत्र में से कहीं पर भी क्यों न हो-उस द्रौपदी देवी
को सब जगह से अपने हाथों से ला कर दूँगा । इस प्रकार कहकर
उन कृष्ण वासुदेव ने अपनी पितृष्वसा कुंती देवी का सत्कार किया,

(तएणं से कण्हे वासुदेवे कीर्त पिउच्छि एवं वयासी जं णवरं पिउच्छा
दोवइए देवीए कत्थइं सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ
अद्ध भरहाओ वा, समंतओ दोवइं साहत्थि उवणेमि त्ति कट्टु कीर्ती पिउच्छि
सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कीर्ती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं
पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसि पाउ० तामेव दिसि पडिगया)

त्यारे कृष्ण वासुदेवे पोताना केई कुंती देवीने आ प्रभावे कथुं के डे
इअ ! हुं वधारे शुं भुं, द्रौपदी देवीनी जे हुं केई पणु स्थाने श्रुति, क्षुति
अने प्रवृत्ति भेजवी लक्ष तो बदे ते पाताणमां डोय, केईना लवनमां डोय
के अर्ध भरत क्षेत्रमां गमे त्यां केम न डोय ते द्रौपदी देवीने गमे त्यांथी हुं
दावी आपने आपीश तेम छुं. आ प्रभावे कडीने ते कृष्ण वासुदेवे पोताना केई
पितृष्वसा-कुंतीदेवीने सत्कार कर्यो अने सन्मान कथुं. सत्कार तेमज्ज सन्मान

अंगारवर्मावृतवर्णिनी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४९१

समान्य यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णेन वासुदेवेन प्रतिविसर्जिता सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता ॥ सू० २७ ॥

मूलम्-तएणं से कणहे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सदावेइ
सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बार-
वइ एवं जहा-पंडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति,
पंडुस्स जहा तएणं से कणहे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउ-
रगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समो-
वइए जाव णिसीइत्ता कणहं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ,
तएणं से कणहे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुमं णं देवा-
णुप्पिया ! बहूणि गामा जाव अणुपविससि, तं अत्थि याइं
ते कहिं वि दोवइए देवीए सुतीं वा जाव उवलद्धा ?, तएणं
से कच्छुल्ले कणहं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-
प्पिया ! अन्नया कयाइं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिण-
बुभरहवासं अवरकंकारायहाणि गए, तत्थ णं मए पउमना-
भस्स रत्तो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठुप्पवा यावि
होत्था तएणं कणहे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं
चेव णं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्वकम्मं, तएणं से कच्छुल्ल-
नारए कणहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं

सन्मान क्रिया, सत्कार सम्मान कर यावत् उन्हें प्रति विसर्जित कर दिया । इसके बाद वे कुन्ती देवी वहां से प्रतिविसर्जित होकर जिस दिशा से प्रकट हुई थीं-उसी दिशा की ओर चली गईं ॥ सू० २७ ॥

अरीने तेभने विहाय कयां, त्थारपछी ते कुन्तीदेवी त्यांथी विहाय भेजवीने जे दिशा तरइथी आवां हतां ते जे तरइ पाछां रवाना थयां ॥ सूत्र २७ ॥

तएणं से कणहे वासुदेवे इत्यादि ॥ सूत्र २८ ॥

आवाहेइ आवाहिता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसिं
 पडिगए, तएणं से कणहे वासुदेवे दूयं सदावेइ सदावित्ता
 एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं पंडुस्स
 रत्तो एयमंढुं निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडे
 दीवे पुरच्छिमद्धे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि
 दोवइए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा
 चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए
 ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु, तएणं से दूए जाव भणइ,
 पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कणहे
 वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी—
 गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिंताडेह, ते वि
 —तालेंति, तएणं तेसिं सण्णाहियाए भेरीए सइं सोच्चा
 समुद्विजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पणं बलवयसा-
 हस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया
 हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिविखत्ता जेणेव सभा सु-
 हम्मा जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 करयल जाव बद्धावेति, तएणं कणहे वासुदेवे हत्थिखंधवर-
 गए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय० महया
 भडचडगरपहकरेणं बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्ग-
 च्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलित्ता खंधावारणिवेसं करेइ

अनन्यार्थमोत्तमवर्णिनी टीका अं० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४९३

करिन्ता पोसहसालं अणुपविसइ अणुपविसित्ता सुट्टियं देवं
मणसि करेमाणे२ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठ-
मभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ, भणदेवाणु-
प्पिया ! जं मए कायब्बं, तएणं से कणहे वासुदेवे सुट्टियं
एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी जाव पउ-
मनाभस्स भवणंसि साहरिया तणं तुमं देवाणुप्पिया ! मम
पंचहिं पंडवेहिं सद्धि अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्धे
मगं वियरेहि, जणं अहं अमरकंकारायहाणा दोवईए कूवं
गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-
किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रत्तो पुव्वसं-
गइएणं देवेणं दोवई जाव सहरिया तहा चेव दोवई देविं
धायइसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साह-
रामि, उदाट्ठ पउमणाभं रायं सपुरवल्वाहणं लवणसमुद्धे
पक्खिवामि !, तएणं कणहे वासुदेवे सुट्टियं देवं एवं वयासी-
मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुमं णं देवा-
णुप्पिया ! लवणसमुद्धे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मगं विय-
राहि, सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से
सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं होउ, पंचहिं
पंडवेहिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्धे मगं वियरइ,
तएणं से कणहे वासुदेवे चाउरंगिणासेणं पडिविसज्जेइ-पडिवि-
सज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धि अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्धं

४२४

श्रीताघमैकयाज्ञसूत्रे

मज्झमज्झेणं वीइवयइ वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका राय-
हाणी जेणेव अमरकंकाए अणुजाणे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता रहं ठवेइ ठवित्ता दारुयं सारहिं सदावेइ सदावित्ता
एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अमरकंकारायहाणीं
अणुपविसाहिं पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं
अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं निडाले
साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुट्ठे कुविए चांडिकिए एवं वयासी--हं भो
पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया दुरंतपंतलक्खणा हीणपुन्नचा-
उइसा सिरीहिरिधी परिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्नं तुमं ण
याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि
एस णं कणहे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए
कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुए सारही कणहेणं वासुदेवेणं
एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्ठे जाव पडिसुणैइ पडिसुणित्ता अमरकंका
रायहाणिं अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एवं
वयासी--एस णं सामी ! मम विणयपडिवित्ती इमा अन्ना मम
सामिस्स समुहाणत्तित्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं
अणुक्कमइ अणुक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामइ पणामित्ता
जाव कूवं हव्वमागए, तएणं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा
एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु
एवं वयासी--णो अप्पिणामि णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुञ्जसज्जो णिग्गच्छामि
त्तिकट्ठु दारुयं सारहिं एवं वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये
अवज्जे त्तिकट्ठु असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं णिच्छुभा-
वइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव
णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एवं वयासी-एवं खलु अहं
सामी ! तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपु-
रुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रिय ! द्वा-
वतीं नगरीम्, ‘एवं यथा पाण्डुस्तथा घोषणां घोषयत’—यथा पाण्डु राजा हस्ति-
नापुरे घोषणां कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणां

—तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव
ने (कौटुम्बिकपुरिसे सहावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सहावित्ता)
बुलाकर (एवं वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया
बारवहं) हे देवानुप्रियों ! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एवं जहा पंडु
तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा) वहां पांडु
राजाकी तरह घोषणा करो—अर्थात् पांडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की
खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों
द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी—इसी प्रकार की घोषणा करने के

‘तएणं से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि.

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपणी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवे (कौटुम्बिक
पुरिसे सहावेइ) कौटुम्बिक पुरुषोंने भोलाव्या (सहावित्ता) भोलावीने (एवं
वयासी) तेभने आ प्रभाण्णे कल्लुं के—(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया बारवई)
हे देवानुप्रियो ! तमे द्वारावती नगरीमां जाओ (एवं जहा पंडु तथा घोसणं
घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा) त्यां पांडु राजानी जेम ज घोषणा
करो ओटवे के पांडु राजाओ जेम द्रौपदीनी शोध करवा माटेनी द्रव्य आप-
वानी घोषणा हस्तिनापुर नगरमां करावी इती ते प्रभाण्णे ज घोषणा करवा

કૃત્વા 'જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ' યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ-ઘોષણાંકૃત્વા-કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવ-
 સ્યાન્તિકે તે કૌદુમ્બિકપુરુષા નિવેદયન્તિ-દ્વારાવત્યાં નગર્યાં સર્વત્ર ઘોષણાકૃતા-
 ઽસ્માભિરિતિ । 'પંદુસ્સ જહા' પાણ્ડોર્યથા યથા પાણ્ડો વૃષસ્વ વર્ણકસ્તથાઽત્રાપિ
 વોધ્યઃ । યથા પાણ્ડુરાજા દ્રૌપદ્યાઃ શ્રુતિં યાવત્ પ્રવૃત્તિં ન લબ્ધવાન્, તથા કૃષ્ણવા-
 સુદેવોઽપિ દ્રૌપદ્યાઃ શ્રુત્યાદિકં ન પ્રાપ્તવાનિતિ ભાવઃ । તતઃ સ્વલુ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ
 અન્યદા=અન્યસ્મિન્ કસ્મિંશ્ચિત્ સમયે 'અંતો' અન્તઃ-સ્વપ્રાસાદે અન્તઃપુરગતો-
 ઽવરોધે યાવદ્ વિહરતિ । 'ઈમં ચ ણં' અસ્મિન્ સમયે ચ સ્વલુ 'કચ્છુલ્લણ' કચ્છુ-
 લ્લકો નારદો યાવત્ સમવસ્યતઃ=ગગનતલાદવતરન્ કૃષ્ણસન્નિ સમાગતઃ યાવત્
 નિવધ=ઉપવિધ્ય ગગનતલાદવતરન્ કૃષ્ણસન્નિ સમાગતઃ, યાવત્ નિવધ=ઉપવિધ્ય

લિપે કૃષ્ણ વાસુદેવ ને અપને કૌદુમ્બિક પુરુષોં કો આદેશ દિયા કિ વે
 ખી દ્વારાવતી મેં હસી તરહ કી ઘોષણા કરેં । અપને રાજા કી આજ્ઞાનુ-
 સાર ઝન્હોં ને દ્વારાવતી મેં ઘોષણા કરદી ઓર હસ કી સ્વર પીછે કૃષ્ણ
 વાસુદેવ કો કર દી । યહાં અવશિષ્ટ વર્ણન પાંડુ રાજા કે જૈસા વર્ણન
 હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । અર્થાત્ ઘોષણા કરાને પર ખી દ્રૌપદી કી
 કિસી ખી પ્રકાર કી સ્વર વગૈરહ કા કોઈ ખી સમાચાર પાંડુ રાજા કો
 નહીં મિલા વૈસા કૃષ્ણ વાસુદેવ કો ખી નહીં મિલા (તણં) તથ (સે
 કળહે વાસુદેવે અન્નયા અંતો અંતેરગણ ઓરોહે જાવ વિહરહ ઇમં ચ
 ણં કચ્છુલ્લણ જાવ સમોસરણ) વે કૃષ્ણ વાસુદેવ એક દિન કી બાત હૈ
 કિ અપને અન્તઃ પુર કે પ્રાસાદ કે ખોતર અન્તઃપુર કી સ્ત્રિયોં કે સાથ
 બેઠે હુણ થે કિ હસી સમય વે કચ્છુલ્લ નામ કે નારદ આકાશ માર્ગ સે

માટે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને આજ્ઞા કરી કે તેઓ પણ
 દ્વારાવતી નગરીમાં આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરે. પોતાના રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે
 તે લોકોએ દ્વારાવતી નગરીમાં ઘોષણા કરી અને ઘોષણાનું કામ થઈ ગયું છે
 તેની ખબર પણ કૃષ્ણ વાસુદેવની પાંસે પહોંચાડી હીધી. અહીં અવશિષ્ટ વર્ણન
 પાંડુ રાજાનું જેવું છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવું જોઈએ. એટલે કે ઘોષણા કર્યા
 પછી પણ પાંડુ રાજાને દ્રૌપદી દેવીની કોઈ પણ જાતની ખબર કે સમાચાર
 મળ્યા નહિ તે પ્રમાણે કૃષ્ણ વાસુદેવને પણ કોઈ પણ સમાચારો ઘોષણા
 બાદ મળ્યા નહિ. (તણં) ત્યારે (સે કળહે વાસુદેવે અન્નયા અંતો અંતે-
 રગણ ઓરોહે જાવ વિહરહ, ઇમં ચ ણં કચ્છુલ્લણ જાવ સમોસરણ) એક દિવસની
 વાત છે કે તે કૃષ્ણ વાસુદેવ પોતાના મહેલની અંદર રણવાસની સ્ત્રીઓની
 સાથે બેઠા હતા તે વખતે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ માર્ગથી ઉતરીને ત્યાં

अमरगारधर्मासूतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४९७

कृष्णं वासुदेवं कुशलोदन्तं=कुशलवार्तां पृच्छति, ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्ल नारदमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु बहूनि ग्रामाकरादीनि परिभ्राम्यसि, तत्र बहूनि गृहाणि यावदनुभविससि, तत् तस्मादस्ति 'आइं' इति वाक्यालंकारे ते त्वया यदि कुत्रचिद् द्रौपद्यादेव्याः श्रुतिर्वा यावद् उपलब्धा=ज्ञाता ? तर्हि कथय' इति भावः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः अहमन्यदाकदाचिद् धातकीषण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्थे=पूर्वदिग्भागव-वर्तिनि, दक्षिणार्धभरतवर्षे-अमरकंकानाम्नीं राजधानीं गतः । तत्र खलु मया उत्तरकर वहां आये-(जाव णिसी इत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से कणहे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणुपविससि तं अत्थि आइं ते कहिं वि दोवईए देवीए सुतीं वा जाव उवलद्धा तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) यावत् बैठकर उन्होंने ने कृष्ण वासुदेव से कुशल वृत्तान्त पूछा -कृष्णवासुदेव ने तब कच्छुल्ल नारद से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम आकर आदिस्थानों में परिभ्रमण करते रहते हो-अनेक गृहादिकों में आते जाते रहते हो तो कहो-कहीं पर क्या तुम्हें द्रौपदी देवी की श्रुति उपलब्ध हुई है-उसकी तुम्हें किसी प्रकार की कोई खबर मिली है-उसका किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह उपलब्ध हुआ है ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर कच्छुल्ल नारद ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइं

आव्या. (जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से कणहे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी, तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणु-पविससि तं अत्थि आइं ते कहिं वि दोवईए देवीए सुतीं वा जाव उवलद्धा-तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) त्यां आवीने णेहा अने णेसीने तेभण्णे कृष्ण वासुदेवने कुशल वार्ता पूछी. वासुदेवे तयारे कच्छुल्ल नारदने आ प्रभाण्णे कहुं के हे देवानुप्रिय ! तमे धर्यां ग्राम, आकर वगेरे स्थानांमां परि-भ्रमण करता रहो छो, धर्या धरे वगेरेमां आवण्ण करता रहो छो तो कडो, कडो पण्ण स्थाने तमने द्रौपदी देवीनी श्रुति मणी छे-तेना तमने कडो पण्ण जतना सभायारे मत्था छे, तेनुं कडो पण्ण जतनुं थिह तमने मत्थुं छे ? आ रीते कृष्ण वासुदेवना प्रश्नने सांजणीने कच्छुल्ल नारदे ते कृष्ण वासुदेवने आ प्रभाण्णे कहुं के:-

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइं धायईसंडे दीवे पुरस्थिमदं
का ६३

पद्मनाभस्य राज्ञो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी दृष्टपूर्वा चाप्यभवत्, अयं भावः—
काचिद्द्रौपदीसदृशी देवी पद्मनाभस्य राज्ञोभवने दृष्टा किंतु सा मया न सम्यग्-
ज्ञाता नापि सम्यगपरिचिता, इति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेव-
मवादीत्—हे देवानुप्रियाः युष्माकमेव खलु 'एवम्' इदं 'पुत्रकर्म' पूर्वकर्म
—पूर्वकृतं कर्म, युष्माभिरेवेदं कर्म पूर्वं कृतमित्यर्थः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः
कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः सन् उत्पतनीं विद्यामावाहयति । आवाह्य यस्याः एवदिशः
प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो दत्तं शब्दयति=

धायईसंछे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणद्धभरह्वासं अमरकंका रायहाणिं गए
तत्थ णं मए पडमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी जारिमिया दिट्ठ-
पुच्चा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं
चेव णं देवाणुप्पिया ! एवं पुत्रकम्मं-तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं
वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहिता
जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए) सुनो मै तुम्हें बताना हूं
—हे देवाणुप्रिय ! मै किसी एक समय द्वितीय धातकी खंड द्वीप में पूर्व
दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकंका नाम की राजधानी में
गया हुआ था वहां मैने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी
एक नारी देखी थी—परन्तु मै उसे अच्छी तरह नहीं जान सका—और
न उससे परिचित ही हो सका—। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण
वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सय से
पहिले किया है—इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दाहिणद्धभरह्वासं अमरकंका रायहाणिं गए, तत्थणं मए पडमनाभस्स रण्णो
भवणंसि दोवई देवी, जारिमिया दिट्ठपुच्चा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे
कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेवणं देवाणुप्पिया ! एवं पुत्र कम्मं-तएणं से कच्छुल्ल
नारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहिता
जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए)

सांभलो, तमने हुं अधी विगत अतावुं छुं. हे देवानुप्रिय ! ठाढ़ ओक
वज्जते हुं धातकी षंडद्वीपमां, पूर्व दिशा तरइना दक्षिणार्ध भरत क्षेत्रमां,
अमरकंका नामे राजधानीमां गयेो छते. त्यां मे पद्मनाभ राजना भवनमां
द्रौपदी देवी जेवी ओक नारी जेई छती. पणु हुं तेने सारी पेछे ओणणी
शक्यो नहिं अने न तेनाथी परिचित थछ शक्यो. नारदनी आ वात सांभलीने
कृष्णवासुदेवे तेमने कहुं हे देवानुप्रिय ! सौ पछेदां तमे ज आ काम कयुं छे.
त्यारपछी ते कच्छुल्लनारदे कृष्ण वासुदेवनी आ वात सांभलीने पोतानी उत्पतनी

अमरकंकायामृतवर्षिणी टीका० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

४२६

आह्वयति, शब्दयित्वा—एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरं पाण्डोराज्ञ एतमर्थं निवेदय—एवं खलु हे देवानुप्रिय ! धातकीषण्डे द्वीपे ' पुर-स्थिमद्वे ' पौरस्त्यार्थे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरकंकायां राजधान्यां पञ्चनाभभवने द्रौपद्या देव्याः प्रवृत्तिरूपलब्धा, तत्=तस्मात् गच्छन्तु पञ्च पाण्डवाश्चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरिवृता ' पुरस्थिमवेयालीए ' ' पौरस्त्यवेलायां—पूर्वदिग्वर्तिनि लवणसमुद्रे मां ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्तः—प्रतीक्षमाणा स्तिष्ठन्तु, ततस्त-दनन्तरं स दूतो यावत् पाण्डोरग्रे गत्वा कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं भणति=कथयति= ' पडिवालेमाणा चिद्वह ' अयं भावः—' धातकीषण्डे द्वीपे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अम-रकंकायां राजधान्यां पञ्चनाभभवने द्रौपद्याः प्रवृत्तिरूपलब्धा, तस्मात् पञ्च पाण्ड-

इस प्रकार कहे जाने पर अपनी उत्पत्तनीविद्याका स्मरण किया। स्मरण करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की ओर चले गये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सहावेइ सहावित्ता एवं वयासी गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेहि) इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने दूत को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ—वहाँ पांडु राजा से ऐसा कहना—(एवं खलु देवाणुप्पिया ! घायइसंडे दीवे पुरिस्थिमद्वे अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा—तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरस्थिमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिद्वंतु) हे देवानुप्रिय ! वह वक्तव्य विषय यह है—धातकी षंड नाम के द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में वर्तमान अमरकंका नाम की राजधानी में पञ्चनाभ राजा

विधानुं स्मरणं कथुं स्मरणं करीने पछी तेआ ने दिशा तरइथी आव्या उता तेअ दिशा तरइ पाछा खाना थळ गया। (तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी—गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेहि) त्थारपछी ते कृष्ण वासुदेवे इतने ओलाव्या अने ओलावीने तेने आ प्रभाण्णे कहुं के हे देवानुप्रिय ! तमे हस्तिनापुर नगरमां जआ—अने त्यां पांडु राजाने आ प्रभाण्णे कहे के—

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! घायइसंडे दीवे पुरिस्थिमद्वे अमरकंकाए राय हाणीए पउमणाभा भवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा—तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरस्थिमवेयालीए ममं पडिवाले माणा चिद्वंतु) हे देवानुप्रिय ! धातकी षंड नामे द्वीपमां पूर्व दिशा तरइना दक्षिणार्ध भरत क्षेत्रमां विद्यमान अमरकंका नामनी राजधानीमां पञ्चनाभ राजाना अव-

वाश्चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरिवृताः पौरस्त्यवेलायां मां प्रतिपालयन्तस्तिष्ठन्तु' इति । एवं दूतमुखात् कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं श्रुत्वा तेऽपि पण्डवा यावत् तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, के भवन में द्रौपदी देवी की खबर मिली है-इसलिये पांचो पांडव चतुरंगिणी सेना के साथ युक्त होकर लवण समुद्र की पूर्व दिग्भागवर्तिनी बेला पर जाकर वहाँ मेरी प्रतीक्षा करें । (तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाण। चिट्ठह, ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंभियपुरिसे सहावेइ सहावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्मे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह ते वि ताडेति, तएणं तीसे सण्णाहियाए भेरिए सद् सोच्चा विजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पणं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव बगुरा परिकिखत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार अपने राजा कृष्णवासुदेव की आज्ञा लेकर वह दूत हस्तिनापुर गया वहाँ जाकर उसने इस समाचार को पांडुराजा से कह दिया । वे पांचों पांडव इस समाचार को दूत के मुख से सुनकर चतुरंगिणी सेना के साथ लवण समुद्र के पूर्व दिग्भागवर्ती तट पर जाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा में ठहर गये-। इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर

नमां द्रौपदी देवीना वावउ भज्जा छे ते। उवे पांचे पांडवे। अतुरंगिणी सेनानी साथे प्रयाणु करीने लवण समुद्रना पूर्व किनारा उपर पडोन्थीने भारी प्रतीक्षा करे.

(तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवाले माणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंभिय पुरिसे सहावेइ सहावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुम्मे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह ते वि ताडेति, तएणं से सण्णाहियाए भेरिए सद् सोचा समुद्रविजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पणं बल वय साहस्सीओ सन्नद्धबद्धजाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव बगुरापरिकिखत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ)

आ रीते पोताना राज्ञ कृष्ण वासुदेवनी आज्ञा भोग्याने ते दूत हस्तिनापुर तरङ्ग खाना थये। त्यां पडोन्थीने तेणे पांडु राजने भधा सभायादे। कही संभणाव्या। पांचे पांडवे। दूतना सुभथी आ सभायादे सांभणीने पोतानी अतुरंगिणी सेना साथे त्यांथी प्रयाणु करीने लवण समुद्रना पूर्व किनारा उपर पडोन्थीने त्यां कृष्ण वासुदेवनी प्रतीक्षा करता रोकाड गया। तयारपछी कृष्ण वासुदेवे कौटुम्बिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने तेमने आ प्रमाणे कहुं

ભેરીનારથમાં મૃતબલિનો ટોકા અં ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણં

૫૦૧

શબ્દયિત્વા પવનવાદીત્-ગચ્છત સ્વલુ યૂયં હે દેવાનુપ્રિયાઃ સાંનાહિકીં સૈનિકાનાં સજ્જીભવનાર્થં નાદો યસ્યાસ્તાં ભેરીં તાઢયત તેઽપિ તાઢયન્તિ, તતઃ સ્વલુ તસ્યાઃ સાંનાહિક્યા ભેર્યાઃ શબ્દં શ્રુત્વા સમુદ્રવિજયપ્રમુક્તા દશ દશાર્દાં યાવત્ 'હૃત્પણ્ણં બલવયસાહસીઓ' ષટ્ પચ્ચાશદ્ બલવત્સાહસ્યાઃ=ષટ્પચ્ચાશત્સદસપ્રમિતા બલ-વન્ત્વૈત્યર્થઃ 'સન્નદ્વબદ્-જાવ ગાદિયાઊહપહરણા' અત્ર યાવચ્છબ્દેનૈવં દ્રષ્ટવ્યમ્-સન્નદ્વબદ્વર્મિતકવચા ઉત્પીઢિતશરાસનપટ્ટકાઃ પિનદ્વાગ્રૈવેયકચદ્વાબિદ્વિમલ વરચિહ્નપટ્ટાઃ મૃદીતાયુધપહરણા ઇતિ । વ્યાખ્યાઽસ્મિન્નેવાધ્યયને પૂર્વમુક્તા અપે-કિકાઃ=કેચિદ્ હપગતાઃ કેચિદ્ ગજગતાઃ યાવદ્ વાગુરાપરિશિષ્તાઃ=મનુષ્યવૃન્દૈઃ પરિવૃતાઃ, યજૈવ કૃષ્ણો વાસુદેવસ્ત્રૈવોપાગચ્છન્તિ ઉપાગત્ય કરતલ૦ યાવદ્ જયેન વિજયેન વર્ધયન્તિ । તતઃ સ્વલુ કૃષ્ણો વાસુદેવો હસ્તિસ્કન્ધવરગતઃ સકો-

उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम सुधर्मा सभा में जाओ वहाँ जाकर तुम सांनाहिकी भेरी बजाओ-। कौटुम्बिक पुरुषोंने ऐसा ही किया सुधर्मा सभामें जाकर उस सांनाहिकी भेरीको बजाया-। इस सांनाहिकी भेरीकी गर्जनाको सुनकर समुद्रविजय आदि दश दशार्ह यावत् ५६, हजार प्रमित बलवीर पुरुष सन्नद्ध बद्धर्मिवतकवच होकर, यावत् आयुध प्रह-रणों को लेकर तैयार सुसज्जित हो गये । यहाँ यावत् शब्द से उत्पी-डितशरासन पट्टकाः, “ पिनद्वग्रावैवेयकचद्वबिद्वविमलवरचिह्नपट्टाः ” इस पाठ का संग्रह हुआ है । इन शब्दों की व्याख्या इसी अध्ययन में पहिले की जा चुकी है । इनमें कितनेक घोड़ों पर, कितनेक हाथियों पर, बैठकर अन्य मनुष्यों के समूह से परिवृत्त हो जहाँ वह सुधर्मा सभा और जहाँ वे कृष्णवासुदेव थे वहाँ आये । (उवागच्छित्ता करयल जाव

કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સુધર્મા સભામાં જાઓ, ત્યાં જઈને તમે સાંનાહિકી ભેરી વગાડો, તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ પણ તે પ્રમાણે જ આજ્ઞાનું પાલન કર્યું. સુધર્મા સભામાં જઈને તેઓએ સાંનાહિકી ભેરી વગાડી. સાંનાહિકી ભેરીનો અવાજ સાંભળીને સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્દો યાવત્ ૫૬ હજાર પ્રમિત બળવીર પુરુષો કવચો વગેરેથી સુસજ્જ થઈને યાવત્ આયુધ પ્રહરણોને લઈને તૈયાર થઈ ગયા. અહીં યાવત્ શબ્દથી “ ઉત્પીઢિતશરાસનપટ્ટકાઃ, પિનદ્વાગ્રૈવેયક-ચદ્વાબિદ્વિમલવરચિહ્નપટ્ટાઃ ” આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ શબ્દોની વ્યાખ્યા આ અધ્યયનમાં જ પહેલાં કરવામાં આવી છે. આમાં કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર બેસીને તેમજ કેટલાક માણસોના સમૂહોથી પરિવૃત્ત થઈને જ્યાં તે સુધર્મા, સભા અને જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યા.

રણમાલ્યદામ્ના છત્રેણ ધાર્યમાણેન શ્વેતવરચામરૈરુદ્ધૂયમાનૈઃ, હયગજરથપદાતિ સંપરિવૃતો મહામટચટકરપ્રકરેણ દ્વારવત્યા નગર્યા મધ્યમધ્યેન નિર્ગચ્છતિ, યતૈવ પૌરસ્ત્યવેલા તત્રૈવોપાગચ્છતિ ઉપાગત્ય પશ્ચભિઃ પાણ્ડવૈઃ સહ 'એમયઓ'

વદ્ધાવેતિ, તણં કળ્હે વાસુદેવે હત્થિસ્વંધવરગણ સકોરંટમલ્લદામેણં છત્તેણં. સેયવરં. હયગયં. મહયા મહચઢગરપહકરેણં ચારવર્ષેણ ણયરીણ મજ્ઞં મજ્ઞેણં ણિગચ્છહ, જેણેવ પુરત્થિમવેયાલી તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પંચર્હિં પંડવેહિ સદ્ધિં એમયઓ મિલહ, મિલિત્તા સ્વંધાવા-રણિવેસં કરેહ, કરિત્તા પોસહસાલં અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા સુદ્ધિયં દેવં મળસિ કરેમાણે ૨ ચિટ્ઠહ, તણં કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ અટ્ટમમત્તંસિ પરિણમમાણંસિ સુદ્ધિઓ આગઓ મળ દેવાણુપ્પિયા ! જં મણ કાયવ્વં) વહાં આકર ઉન સબ્બને કુલ્લવાસુદેવ કો દોનોં હાથ જોડકર બહે વિનય કે સાથ નમસ્કાર કરતે હુણ જય વિજય શબ્દોં દ્વારા વધાર્હી દો ! હસકે બોદ વે કુલ્લવાસુદેવ હાથી પર સવાર હુણ । સવાર હોતે હી છત્ર ધારિયોં ને ઉન પર કોરંટ પુણ્ણોં કી માલા સે ચિરાજિત છત્ર તાના, ચામર ઢોરને વાલોં ને ઉનપર શ્વેત ચામર ઢોરના પ્રારંભ કરદિયા । હસ પ્રકાર હય, ગજ, રથ, એવં પૈદલસેના સે ઘિરે હુણ વે કુલ્લવાસુદેવ મહામટોં કે સમૂહ કે સાથ ૨ દ્વારાવતી નગરી કે ઘોચ સે હોકર નિકલે, નિકલકર જહાં વહ લવણસમુદ્ર કી પૂર્વ દિગ્ભાગવર્તિની વેલા થી વહાં પહુંવે ।

(ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ વદ્ધાવેતિ, તણં કળ્હે વાસુદેવે હત્થિ સ્વંધ-વરગણ સકોરંટમલ્લદામેણં છત્તેણં. સેયવરં. હયગયં મહયા મહચઢગરપહકરેણં ચારવર્ષેણ ણયરીણ મજ્ઞં મજ્ઞેણં ણિગચ્છહ જેણેવ પુરત્થિમવેયાલી તેણેવ ઉવા-ગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પંચર્હિં પંડવેહિ સદ્ધિં એમયઓ મિલહ, મિલિત્તા સ્વંધાવા-રણિવેસં કરેહ, કરિત્તા પોસહસાલં અણુપવિસહ. અણુપવિસિત્તા, સુદ્ધિયં દેવં મળસિ કરેમાણે ૨ ચિટ્ઠહ, તણં કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ અટ્ટમમત્તંસિ પરિણમમાણંસિ સુદ્ધિઓ આગઓ મળદેવાણુપ્પિયા ! જં મણ કાયવ્વં)

ત્યાં પહોંચીને તે બધાએ બંને હાથ જોડીને બહુ જ વિનમ્રતાથી નમ-સ્કાર કરતાં જયવિજય શબ્દોથી તેમને વધામણી આપી. ત્યારપછી તે કુલ્લ-વાસુદેવ હાથી ઉપર સવાર થયા. સવાર થતાં જ છત્રધારીઓએ તેમની ઉપર કોરંટ પુણ્ણોની માળાથી શોભતું છત્ર તાણું તેમજ ચામર ઢોળનારાઓએ ચામર ઢોળવાની શરૂઆત કરી. આ પ્રમાણે ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળથી પરિવૃત્ત થયેલા તે કુલ્લ-વાસુદેવ મહાભટોના સમૂહની સાથે સાથે દ્વારાવતી નગરીની વચ્ચે થઈને પસાર થયા અને જ્યાં તે લવણ સમુદ્રનો પૂર્વી કિનારો

अमरकंकायहाणी मृतवाणिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५०६

एकतः एकस्मिन् स्थाने मिलति, मिलित्वा स्कन्धावारनिवेशं=सैनिकानामावासं करोति कृत्वा पौषधशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य “ सुद्वियं देवं ” सुस्थितं-सुस्थितनामानं देवं लवणसमुद्राधिष्ठितं मनसि कुर्वन्=स्मरन् तिष्ठति, ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्याष्टमभक्ते परिणममाणे सुस्थितो देव आगतः, आगत्य वदति-हे देवानुप्रियाः ! भणन्तु कथयन्तु यन्मया कर्तव्यमिति ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थितदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभस्य भवने संहता, तत्=तस्मात् खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! मम पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धं ‘ अप्पच्छट्ठस्स ’ आत्मपण्डस्य-आत्मा-अहं पण्डो यत्र तस्य समुदायस्य-अस्माकं पण्णामित्यर्थः, पण्णां स्थानां लवणसमुद्रे मार्गं वितर=देहि, येनाहममरकङ्कां राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ‘ कूवं ’ प्रत्यानयनकर्तुं गच्छामि ।

वहाँ पहुँचकर वे पाँच पाण्डवों के साथ एक स्थान पर संमिलित हुए । संमिलित होकर उन्होंने अपनी सेना को ठहरने का स्थान नियत किया-स्थान नियतकर के फिर वे पौषधशाला में प्रविष्ट हो गये वहाँ प्रविष्ट होकर उन्होंने ने लवण समुद्र के अधिपति सुस्थित देव का स्मरण किया-। इसके बाद जब कृष्णवासुदेव का अष्टमभक्त समाप्त हो रहा था-तब वह सुस्थित देव उनके पास आया-और कहने लगा-हे देवानुप्रिय ! कहिये-मेरे लायक क्या काम है ? (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुद्वियं एवं वयासी एवं खलु देवानुप्रिया । दोवई देवी, जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया, तएणं तुमं देवानुप्रिया मम पंचहि पंडवेहि सद्धिं अप्पच्छट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्रे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंकारायहाणी दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुद्विए देवे कण्हं

હતો ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ પાંચે પાંડવોની સાથે એક સ્થાને એકત્ર થયા. એકત્ર થઈને તેમણે પોતાના સૈન્યના પડાવનું સ્થાન નક્કી કર્યું. સ્થાન નક્કી કરીને તેઓ પૌષધશાળામાં પ્રવિષ્ટ થયા. ત્યાં જઈને તેઓએ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવનું સ્મરણ કર્યું. ત્યારબાદ બ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવને। અષ્ટમ ભક્ત પૂરે થઈ રહ્યો હતો, ત્યારે તે સુસ્થિત દેવ તેમની પાસે આવ્યો અને કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! બોલો, મારા લાયક શું કામ છે ?

(તएणं से कण्हे वासुदेवे सुद्वियं एवं वयासी एवं खलु देवानुप्रिया । दोवईदेवी, जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया, तएणं तुमं देवानुप्रिया मम पंचहि पंडवेहि सद्धिं अप्पच्छट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्रे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंका रायहाणीं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुद्विए देवे कण्हं

તતઃ સ્વલુ સ સુસ્થિતો દેવઃ કૃષ્ણં વાસુદેવમેવમવાદીત્—હે દેવાનુપ્રિય ! કિં સ્વલુ યથૈવ પદ્મનાભસ્ય રાજઃ પૂર્વસંગતિકેન દેવેન દ્રૌપદી યાવત્ સંહતા, તથૈવ દ્રૌપદીં દેવીં ધાતકીષ્ણઙાદ્ દ્વીપાદ્ ભારતાદ્ યાવદ્ હસ્તિનાપુરં સંહરામિ । ‘ઉદાહુ’ ઉતાહો ! =અથવા, કથય, પદ્મનાભં રાજાનં સપુરબલવાહનં=નગરસૈનિકવાહન-સહિતં લવણસમુદ્રે પ્રશ્નિપામિ ? તતઃ સ્વલુ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ સુસ્થિતં દેવમ્ એવ-વાસુદેવં એવં વયાસી કિણ્હં દેવાણુપ્પિયા ! જહા ચેવ પડમણાભસ્સ રાજો પુવ્વસંગહણં દેવેણં દોવઈ જાવ સંહરિયા, તહા ચેવ દોવઈં દેવિં ધાયઈસં-હાઓ દીવાઓ ભારહાઓ જાવ હસ્થિનાપુરં સાહરામિ, ઉદાહુ પડમણાભં રાયંસપુરબલવાહનં લવણસમુદ્રે પશ્ચિલ્લવામિ ?) તથ કૃષ્ણવાસુદેવ ને હસ સુસ્થિત દેવ સે હસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! સુનો—દ્રૌપદી દેવી યોવત્ પદ્મનાભ કે ભવન મેં હરણ કર રહી ગઈ હૈં હસલિયે હે દેવાનુ-પ્રિય ! તુમ આત્મવષ્ઠ મેરે પાંચ પાંડવો કે સાથ છહોં રથોં કો લવણ સમુદ્ર મેં માર્ગ પ્રદાન કરો । અર્થાત્ પાંચ પાંડવોં કે ઓર છટે મેરે હસ પ્રકાર હમારે છહ રથોં કો જાને કે લિયે રાસ્તા દો—કિં જિસસે મૈં અમ-રકંકા રાજધાની મેં દ્રૌપદીદેવી કો વાપિસ લે આને કે લિયે જા સકું । તથ સુસ્થિત દેવ ને હસ કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુ-પ્રિય ! જિસ પ્રકાર પદ્મનાભ રાજા કે પૂર્વ સંગતિક દેવને દ્રૌપદીદેવી કા યાવત્ હરણ કિયા હૈ, હસી તરહ મૈં ભી દ્રૌપદી દેવી કો ધાતકી સ્વંહ દ્વીપ કે ભરત ક્ષેત્ર સે યાવત્ હસ્તિનાપુર મેં હરણકર લા સકતા હૈ—

વાસુદેવં એવં વયાસી કિણ્હં દેવાણુપ્પિયા ! જહા ચેવ પડમણાભસ્સ રાજો પુવ્વ-સંગહણં દેવેણં દોવઈ જાવ સંહરિયા, તહા ચેવ દોવઈં દેવિં ધાયઈસંહાઓ દીવાઓ ભારહાઓ જાવ હસ્થિનાપુરં સાહરામિ, ઉદાહુ પડમણાભં રાયં સપુરબલ-વાહનં લવણસમુદ્રે પશ્ચિલ્લવામિ ?)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ-પ્રિય ! સાંભળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના જવનમાં હરણ કરાધને રાખ-વામાં આવી છે. એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ‘આત્મવષ્ઠ’ મારા તેમજ પાંચે પાંડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમાં થઈને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો. એટલે કે પાંચે પાંડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા માટે રસ્તા આપો. જેથી હું દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકંકા રાજધાનીમાં જઈ શકું. ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસંગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનું યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી અંડદીપના ભરત ક્ષેત્રમાંથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમાં હરણ કરીને લાવી શકું તેમ છું અને જો

404

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्मनाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकते हैं (तएणं कण्हे वासुदेवे सुद्धियं देवं एवं वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस प्रकार कहा- (माणं तुमं देवानुप्पिया ! जाव साहराहि तुमं णं देवानुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहराणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरहि सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुद्धिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी, एवं होउ, पंचहि पंडवेहि सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहराणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणी-सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहि पंडवेहि सद्धिं अप्पछट्ठे छहि रहेहि लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर, सैनिक एवं वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो । मैं

હો દેવાનુપ્રિય ! તમે આ પ્રમાણે કરવાની તસ્દી લો નહિ એટલે કે પક્ષનાશતા લવનમાંથી દ્રૌપદી દેવીનું હરણ કરો નહિ તેમજ પક્ષનાશ રાજ્યને નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત લવણ સમુદ્રમાં ફેંકો પણ નહિ. તમે તો હો દેવાનુપ્રિય ! ફક્ત અમારા છએ રથો માટે લવણ સમુદ્રમાં માર્ગ આપો.

देवः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—एवं भवतु इति, ततोऽसौ पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धम् आत्मषष्ठस्य षण्णां रथानां लवणसमुद्रे मार्गं वितरति ततः खलु स कृष्णो वासुदेवश्चतुरङ्गिणीं सेनां प्रतिविसर्जयति, प्रतिविसर्ज्य पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठः षड्भीरुथैर्लवणसमुद्रं मध्मध्येन 'वीक्ष्य' व्यतिव्रजति—गच्छति, व्यतिव्रज्य यत्रैवामरकङ्का राजधानी, यत्रैवामरकङ्काया अग्रोद्यानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा दारुकं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! अमरकङ्काराजधानोमनुपविश, अनु-

स्वयं ही द्रौपदी देवी को वहां से वापिस ले आऊंगा । अथवा मैं स्वयं ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊंगा तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा—अच्छा ऐसा ही हो—इस प्रकार कह कर उसने आत्म षष्ठ के छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग वितरित कर दिया । तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरंगिणी सेना को वहां से वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पांच पांडवों के साथ छहों रथों को—१ एक अपने रथको और पांच पांडवोंके रथोंको—लेकर लवणसमुद्रके भीतरसे होकर चलने लगे । चलते २ वे जहां अमरकंकाराजधानी थी—और उसमें भी जहां वह अग्रोद्यान था वहां पहुँचे । (उवाग्गच्छित्ता रहं ठवेइ) वहां पहुँच कर उन्होंने अपने रथ को रोक दिया—(ठवित्ता दारुकं सारहिं सद्वावेइ, सद्वावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवानुप्पिया ! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि २, पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं

त्यां जधने हुं जते ज द्रौपदी देवीने त्यांथी पाछी लछ आवीश. जेटवे के हुं जते ज द्रौपदी देवीने देवा माटे जजश. तयारे ते सुस्थित देवे कृष्ण-वासुदेवने कल्लुं के साइं, आभ ज करे. आ प्रभाछे कहीने तेछे आत्मषष्ठना छये रथेने लवण समुद्रमां रस्ते आभ्ये. तयारपछी कृष्ण-वासुदेवे पोतानी चतुरंगिणी सेनाने त्यांथी पाछी वजावी दीधी अने पाछी वजावीने तेओ पांच पांडवानी साथे छये रथेने—जेक पोताना रथने अने पांच पांडवानी रथेने—लधने लवण समुद्रनी वरये थधने पसार थवा लाग्या. आभ पसार थतां तेओ ज्यां अभरकंका राजधानी अने तेमां पण ज्यां ते अग्रोद्यान हतुं त्यां पछोन्ग्या. (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ) त्यां पछोन्गीने तेमछे पोताना रथने जिले राभ्ये.

(ठवित्ता दारुकं सारहिं सद्वावेइ, सद्वावित्ता एवं वयासी, गच्छह णं तुमं देवानुप्पिया ! अमरकंका रायहाणीं अणुपविसाहि २ पउमणाभस्स रण्णो वामेणं

પ્રવિશ્ય પદ્મનાભસ્ય રાજ્ઞો વામેન પાદેન ' પાયપીઠ ' પાદપીઠમ્ સિંહાસનસંલગ્ન-
સોપાનમ્ આક્રમ્ય કુન્તાગ્રેણ લેહં પ્રત્રિકાં ' પળામેહિ ' અર્પય=દેહિ અર્પયિત્વા
' તિવલિયં ' ત્રિવલિકાં રેલાત્રયયુક્તાં ' મિઝડિં ' મૂકુટિં- ' ણિઢાલે ' છલાટે
' સાહદ્રુડ ' સંહત્ય-ઉન્મીય ' આસુરુતે ' આશુરુત્તઃ=શીઘ્રં ક્રોધાવિષ્ટઃ ' રુદ્ધં '
રુષ્ટઃ ' કુદ્ધે ' ક્રુદ્ધઃ ' કુવિષ્ ' કુપિતઃ ચંડિકિષ્ ' ચાણ્ડિકિયતઃ-રોષયુક્તઃ,
एवमवादीत्-હં મો ! પદ્મનાભ ! ' અપ્રતિથયપતિથયા ' અપ્રાર્થિતપ્રાર્થિત !-મર-
ણવાઝછક ! ' દુરંતપંતલલક્ષણ ! ' દુરંતપ્રાન્તલક્ષણ ! ; પૂર્વે વ્યાખ્યાતમેતત્ ,

પાયપીઠં અક્ષમિત્તા કુંતાગ્રેણ લેહં પળામેહિ, તિવલિયં મિઝડિં ણિઢાલે
સાહદ્રુડ આસુરુતે રુદ્ધે કુદ્ધે કુવિષ્ ચંડિકિષ્ એવં વયાસી હં મો પડમણાહા
અપ્રતિથયપતિથયા ! દુરંતપંતલલક્ષણા ! હીણપુણ્ણચાઝહસા ! સિરિહિરિ
ધી પરિવજ્જિયા ! અઙ્ગ ણ ભવસિ કિન્નં તુમં ણ યાણાસિ, કણ્ઠસ્સ
વાસુદેવસ્સ અહવણં જુદ્ધસઙ્ગે ણિગચ્છાહિ) રથ કો રોકકર વહાં
સ્થાપિત કર-દારુક સારથિ કો બુલાયા બુલાકર કે ડસસે એસા કહા-
હે દેવાનુપ્રિય તુમ જાઓ-અમરકંકા રાજધાની મેં જાઓ વહાં જાકર
પદ્મનાભ રાજાકે પાદપીઠકો વામ પાદસે આક્રમિત કર, કુન્ત (માલા)કે
અગ્રભાગ સે ડસે પત્રિકા દો દેકર કે અપની મુકુટી કો માલપર ચઢા-
કર, ઇકદમ ગુસ્સે મેં આકર, રુષ્ટ, કુપિત એવં ક્રુદ્ધ હોકર ક્રોધ કે
આવેશ સે તમ તમાતે હુએ તુમ ડસસે એસા કહોં-અરે ઓ પદ્મનાભ !
અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણવાઝછક-! દુરંતપ્રાન્ત લક્ષણ ! મોલુમ હોતા હૈ

પાણં પાયપીઠં અક્ષમિત્તા કુંતાગ્રેણ લેહં પળામેહિ, તિવલિયં મિઝડિં ણિઢાલે
સાહદ્રુ આસુરુતે રુદ્ધે કુદ્ધે કુવિષ્ ચંડિકિષ્ એવં વયાસી હં મો પડમણાહા !
અપ્રતિથયપતિથયા ! દુરંતપંતલલક્ષણા ! હીણપુણ્ણચાઝહસા ! સિરિ હિરિધી
પરિવજ્જિયા ! અઙ્ગ ણ ભવસિ કિન્નં તુમં ણ યાણાસિ, કણ્ઠસ્સ વાસુદેવસ્સ
અહવણં જુદ્ધસઙ્ગે ણિગચ્છાહિ)

રથને ઊભો રાખીને, ત્યાં જ રથને મૂકીને ઢાઙ્ક સારથિને બોલાવ્યો.
અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમરકંકા
રાજધાનીમાં જાઓ અને ત્યાં જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડાબા પગથી
આક્રમિત કરીને કુંતાના અગ્ર ભાગથી તેને પત્રિકા આપો. પત્રિકા આપીને
તમે પોતાની ભરમરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રુષ્ટ, કુપિત અને
ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમાં આવીને તેને આ પ્રમાણે કહો કે અરે ઓ
પદ્મનાભ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણ વાઝછક ! દુરંત પ્રાંત લક્ષણ ! (નીચ

દીપ્તપુષ્પચાતુર્દશા ! ' દીપ્તપુષ્પચાતુર્દશિકઃ - અલબ્ધપુષ્પચાતુર્દશિકજન્મા, ચતુર્દશીજાતો હિ ભાગ્યવાન્ ભવતિ । તથા- ' સિરી હિરિ ધી પરિવિજિયા ! ' શ્રી હી ધી પરિવિજિત ! લક્ષ્મી લજ્જા બુદ્ધિ રહિત !, અથ ન ભવસિ, કિં સ્વલ્પ ત્વં ન જાનાસિ, કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય ભગિનીં દ્રૌપદીં દેવીમિદં ' હવં આણમાણે ' હવ્યમાનયત્ , 'તં' તત્-તસ્માત્ ' એવમપિ ' એતામપિ=આનીતામપિ આહૂર્ પૂર્વ-કાદ્ ઇન્ગતૌ ' इत्यस्मात्કृत प्रत्ययः, ' અહવ ' અથવા સ્વલ્પ ' જુદ્ધ સજ્જે ' યુદ્ધ-સજ્જઃ-યુદ્ધાય સજ્જઃ=સન્નદ્ધઃ સન્ ' ણિગ્ગચ્છાદિ ' નિર્ગચ્છ-બહિર્નિઃસર એષ સ્વલ્પ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ પશ્ચભિઃ પાષ્ઠઃ સહ ' અપ્પછદ્ધે ' આત્મપષ્ઠઃ=આત્મા પષ્ઠો યત્ર સ સમૂહે, દ્રૌપદી દેવ્યાઃ ' કૂવં ' પ્રત્યાનયનં કર્તું હવ્યમાગતઃ ।

તૂ અલબ્ધ પુષ્પ ચાતુર્દશિક જન્મ વાલા હૈ-તૂ-ચતુર્દશી મેં ઉત્પન્ન હુઆ નહીં હૈ-કયોં કિ ચતુર્દશી કે દિન ઉત્પન્ન હુઆ વ્યક્તિ ભાગ્યશાલી હોતા હૈ કિન્તુ તૂં એસા નહીં હૈ અર્થાત્ અભાગા હૈ તૂં શ્રી હી, બુદ્ધિ સે રહિત હૈ । યાદ રાખ-યા તો આજ તૂં નહીં હૈ યા મેં નહીં હું તુજે યહ સ્વાલ નહીં હૈ-કિ યહ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ વાસુદેવ કી બહિન હૈ જિસે તૂંને યહાં હરણ કરવા કર મંગવાઈ હૈ । અતઃ યદિ અપની કુશલ ચાહતા હૈ, તો તૂં હસ હરણ કરવા કર અપને યહાં મંગવાઈ ગઈ દ્રૌપદી દેવી કો કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પાસ જાકર પીછે વાપિસ પહુંચા દે । નહીં તો યુદ્ધ કે લિયે સજ્જિત હોકર ઘર સે બાહિર નિકલ આ । (એસણં કળે વાસુદેવે) યે કૃષ્ણ વાસુદેવ (પંચહિં પંડવેહિં અપ્પછદ્ધે દોવઈ દેવીએ કૂવં હવમાગણ, તણં સે દારુણ સારહી કળે ણં વાસુદેવે ણં એવં ધુત્તે

વિચારો તેમજ નીચ લક્ષણો યુક્ત) અમને એમ લાગે છે કે તું અલબ્ધ પુષ્પ ચાતુર્દશિક જન્મવાળો છે, એટલે કે તું ચૌદશને દિવસે જન્મ્યો નથી કેમકે ચૌદશને દિવસે ઉત્પન્ન થનારી વ્યક્તિ ભાગ્યશાળી હોય છે. તું શ્રી, હી અને બુદ્ધિ વગરનો છે. બરોબર સાંભળી લે કે આજે કાં તો તું નહિ કે કાં હું નહિ. તને એટલી પણ ખબર નથી કે આ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ-વાસુદેવની બહેન છે-કે જેને તે હરણ કરાવીને અહીં મંગાવી છે. હવે જો તું પોતાનું ભણું ઇચ્છતો હોય તો તું આ હરણ કરાવીને પોતાને ત્યાં રાકી રાખેલી દ્રૌપદી દેવીને કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે જઈને પાછી સોંપી દે. નહિતર યુદ્ધના માટે તૈયાર થઈને બહાર મેદાનમાં આવી જા. (એસ ણં કળે વાસુદેવે) આ કૃષ્ણવાસુદેવ

(પંચહિં પંડવેહિં અપ્પછદ્ધે દોવઈ દેવીએ કૂવં હવમાગણ, તણં સે દારુણ

બૈનૈનારખમાંમૃતવર્ષિણી રીકાં ચં૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ્

૫૦૧

તતઃ સ્વલુ સ દારુકઃ સારથિઃ કૃષ્ણેન વાસુદેવેનૈવમુક્તઃ સન્ હૃષ્ટતુષ્ટો યાવન્ પ્રતિશ્રુણોતિ ' તથાઽસ્તુ ' ઇતિ કૃત્વાઽઽજ્ઞાં સ્વીકરોતિ પ્રતિશ્રુત્ય=અમર-કઙ્કારાજધાનીમનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય યત્રૈવ પદ્મનાભસ્તૈવૌપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય કરતલપરિગૃહીતદશનચં શિરઆવૃત્તં મસ્તકેઽજ્જલિં કૃત્વા યાવદ્ વર્ધયતિ-જયેન વિજયેન ચાભિનન્દયતિ । વર્ધયિત્વા-અભિનન્ધ્ય એવમવાદીત્-એષા સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! મમ વિનયપ્રતિપત્તિઃ ઇયમન્યા મમ સ્વામિનો વિનયપ્રતિપત્તિઃ, “ સમુ-સમાણે હૃદ્વતુદ્દે જાવ પહિસુણેઈ, પહિસુણિત્તા, અમરકંકા રાયહાર્ણિ અણુ-પવિસઈ, અણુપવિસિત્તા જેણેવ પડમનાહે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગ-ચ્છિત્તા, કરયલ જાવ વદ્ધાવેત્તા એવં વયાસી-એસણં સામી મમ વિણ-યપહિવિત્તી, હિમા અન્ના મમ સામિસ્સ સમુદ્દાણત્તિ ત્તિ કદ્દુ અસુરુત્તે નામ પાણં પાયપીઠં અણુકમઈ) પાંચ પાંડવોં કે સાથ આત્મ ષષ્ઠ હોકર દ્રૌપદી દેવી કો લેને કે લિયે અમી અમી આયે હુણ હૈં । હસ પ્રકાર કૃષ્ણવાસુદેવ કે દ્વારા કહે ગયે ઉસ દારુક સારથિ ને હૃષ્ટ તુષ્ટ હોકર કૃષ્ણવાસુદેવ કી આજ્ઞા સ્વીકાર કરલી । સ્વીકાર કર કે ફિર વહ અમરકંકા રાજધાની મેં પ્રવેશ કિયા વહાં પ્રવેશ કર વહ વહાં પહુંચા જહાં પદ્મનાભ રાજા થે । ઉનકે સમીપ જાકર ઉસ ને પહિલે ઉન્હેં દોનોં હાથોં કી અંજલિ બના કર ઔર ઉસે મસ્તક પર રલ્લકર નમસ્કાર કિયા-જય વિજય શબ્દોં સે ઉન્હેં બંધાયા-બાદ મેં ઉસને હસ પ્રકાર કહના પ્રારંભ કિયા-હે સ્વામિન્ ! યહ તો મેરી વિનય પ્રતિપત્તિ હૈ-દૂત સારદી કળ્હેણં વાસુદેવેણં એવં બુત્તે સમાણે હૃદ્વતુદ્દે જાવ પહિસુણેઈ પહિસુણિત્તા, અમરકંકા રાયહાર્ણિ અણુપવિસઈ, અણુપવિસિત્તા જેણેવ પડમનાહે તેણેવ ઉવાગ-ચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા, કરયલ જાવ વદ્ધાવેત્તા એવં વયાસી-એસણં સામી મમ વિણ-યપહિવિત્તી, હિમા અન્ના મમ સામિસ્સ સમુદ્દાણત્તિ ત્તિ કદ્દુ આસુરુત્તે વામપાણં પાયપીઠં અણુકમઈ)

પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઇને દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવી ગયા છે. આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવ વડે કહેવામાં આવેલાં વચનો સાંભળીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઇને તે દારુક સારથીએ તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. સ્વીકારીને તે અમરકંકા રાજધાનીમાં પ્રવિષ્ટ થયો. પ્રવિષ્ટ થઇને તે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતા તેમની પાસે જઇને સૌ પહેલાં તેણે બંને હાથોની અંજલિ બતાવીને અને તેને મસ્તકેં મૂકીને નમસ્કાર કર્યો અને જય વિજય શબ્દોથી રાજાને વધામણી આપી. ત્યારપછી તેણે આ પ્રમાણે કહેવાની શરૂઆત કરી કે હે સ્વામી ! આ તો મારી વિનય પ્રતિપત્તિ છે. દૂતની ફરજ બજાવતાં મેં

ઠાણત્તિ ” સ્વમુસ્વાજ્ઞપ્તિ:-સ્વમુલ્લેન કથિતા આજ્ઞપ્તિ:-આજ્ઞા ’ હતિ કૃત્વા ‘આમુ-
રુત્તે ’ આશુરુત્ત: શીઘ્રં ક્રોધાન્નિષ્ટ:, વામપાદેન પાદપીઠં ‘ અણુક્રમઙ્ ’ અનુક્રા-
મતિ, અનુક્રમ્ય કુન્તાગ્રેણ લેલ્લં-પત્રિકાં ‘ પળામઙ્ ’ અર્પયત્તિ । અર્પયિત્વા યાવત્
‘ કૂલ્લં ’ પ્રત્યાનયનં કર્તું હવ્યમાગત: । તત: સ્વલુ સ પશ્ચનામો દારુકેણ સાર-
થિના ઇવમુક્ત: સન્ અશુરુત્ત:=શીઘ્રં: ક્રોધાન્નિષ્ટં, ત્રિવલિકાં રેલાત્રયયુક્તાં
ઘુકુર્ટિ-‘ નિડાલે ’ લલાટે-માલમદેશે ‘સાહદ્દુ’ સંહત્ય-ઉત્ત્રીય, ઇવમવાદીત્-
નો અર્પયામિ સ્વલુ અહં હે દેવાણુમિય કૃળ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય દ્રૌપદીમ્, ઇવ સ્વલુ
અહં સ્વયમેવ યુદ્ધસજ્જો નિર્ગચ્છામિ=અયુનેવ યુદ્ધાર્થે વહિર્નિ:સરામિ ઇતિકૃત્વા

કે કર્તવ્ય અનુમાર મૈને યહ આપકો નમસ્કાર ક્રિયા હૈ જય વિજય આદિ
શબ્દોં દ્વારા વધાઈ દી હૈ-પરન્તુ મેરે સ્વામીકી ડનકે મુલ્લસે આપકે લિયે
જો આજ્ઞા દી ગઈ હૈ વહ દૂસરી હૈ-ઔર વહ ઇસ પ્રકાર હૈ-ઇસ પ્રકાર
અપને મુલ્લ સે કહકર વહ શીઘ્ર ક્રોધ સે ભર ગયા, ઔર વામપાદ સે
ડસકે પાદપીઠ પર ચઢ ગયા । (અવક્રમિત્તા) ચઢકર ફિર (કૌંતગ્ગેણ
લેહં પળામઙ્) ફિર ડસને ડસકે લિયે કુન્ત કે અગ્રમાગ સે પત્રિકા
અર્પિત કી । (પળામિત્તા જાવ કૂલ્લં હવ્યમાગ) પત્રિકા અર્પિત કરકે
યાવત્ કૃળ્ણવાસુદેવ પાંચો પાંડવોં કે સાથ યહાં દ્રૌપદી દેવી કો વાપિસ
લેને કે લિયે હવ્વ-અમી અમી-આયે હૈં યહ સવ સમાચાર ડસે સુના-
દિયા । (તર્ણં સે પડમળામે દારુણં સારહિળા ઇવંવુત્તે સમાળે આમુ-
રુત્તે ત્તિવલિં મિડડિ નિડાલે સાહદ્દુ ઇવં વયાસી ણો અપ્પિળામિ, ણં
અહં દેવાણુપ્પિયા ! કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ દોવહૈં, ઇસ ણં અહં સયમેવ

વિનયોપચાર માટે નમસ્કાર કર્યો છે તેમજ જય વિજય વિજય શબ્દો દ્વારા
તમને વધામણી આપી છે. પરંતુ મારા સ્વામીએ તેમના મુખથી તમારે માટે
જે કંઈ આજ્ઞા આપી છે તે કંઈક બીજુ જ છે અને તે આ પ્રમાણે છે કે-
હવે આમ કહીને એકદમ ક્રોધમાં લાલચોળ થઈ ગયો અને ડાળા પગથી
તેના પાદાસન ઉપર ચઢી ગયો. (અવક્રમિત્તા) ચઢીને (કૌંતગ્ગેણ લેહં પળા-
મઙ્) તેણે રાજાને કુંત (બાલા) ના અગ્રભાગથી પત્રિકા આપી. (પળામિત્તા
જાવ કૂલ્લં હવ્યમાગ) પત્રિકા આપીને યાવત કૃળ્ણ-વાસુદેવ પાંચે પાંડવોની
સાથે અહીં દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવ્યા છે. આ જાતના બધા
સમાચારો તેને કહી સંભળાવ્યા.

(તર્ણં સે પડમળામે દારુણેણ સારહિળા ઇવં વુત્તે સમાળે આમુરુત્તે ત્તિ
વલિં મિડડિ નિડાલે સાહદ્દુ ઇવં વયાસી-ણો અપ્પિળામિ, ણં અહં દેવાણુપ્પિયા ।

दारुकं सारथिमेवमवादीत्—

केवलं भोः । ' रायसत्येषु ' राजशास्त्रेषु-राजनीतिषु दूतः ' अवज्ज्ञे ' अवध्यः= न हन्तव्यः, इत्युक्तमस्ति तस्मात् त्वां मुञ्चामि इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तं दूतम् असत्कार्यं, असम्मान्य अपद्वारेण ' निच्छुभावेह ' निक्षोभयति-निष्कासयति, ततः खलु म दारुकः सारथिः पद्मनाभेनासत्कार्यं यावत्-' निच्छुद्धे ' निक्षोभितः= निःसारितः ' समाणे ' सन्, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिमृहीतदशनखं शिरावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा कृष्णं यावद् एवमवादीत्—

जुद्धसज्जो णिगच्छामि, त्ति कट्टु दारुकं सारथं एवं वयासी-केवलं भो रायसत्येषु दूये अवज्ज्ञे त्ति कट्टु असत्कारिय असम्मानिय अवहारेणं निच्छुभावेह) तब वह पद्मनाभ जब दारुक सारथि ने इस प्रकार कहा तो इकदम क्रोधित होकर त्रिवलि युक्त भ्रुकुटि को माथे पर चढ़ा कर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिय ! मैं द्रौपदी को कृष्णवासुदेव के लिये अर्पित नहीं करता हूँ-पीछी नहीं देता हूँ—। इसके लिये मैं अभी स्वयं ही युद्ध करने को तैयार हूँ—। इस प्रकार कहकर फिर उसने उस दारुक सारथि से ऐसा कहा अरे ! राजनीति के शास्त्रों में दूत अवध्य कहा गया है-इस लिये तुझे छोड़ देना हूँ । इस तरह कहकर उसने दूत को असत्कृत और असम्मानित कर पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया । (तएणं दारुए सारही पउमणाभे णं असत्कारिय जाव निच्छुद्धे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा

कण्हस्स वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुद्धसज्जो णिगच्छामि त्ति कट्टु दारुकं सारहि एवं वयासी-केवलं भो । रायसत्येषु दूये अवज्ज्ञे त्ति कट्टु असत्कारिय असम्मानिय अवहारेणं निच्छुभावेह)

दाउक सारथिना आ प्रभाण्णे वय्थेना सांलणीने पद्मनाल ओकहम कोधमां लावथेण थर्हं गथे। अने लभभरे चढावीने आ प्रभाण्णे कडेवा लाग्ये के डे देवानुप्रिय ! हुं कृष्ण-वासुदेवने द्रौपदी कोपण्ण स्थितिमां सोंपवा तैयार नथी. ओना माटे हुं अत्यारे पण्ण युद्ध करवा तैयार छुं. आ प्रभाण्णे कडीने तेण्णे दाउक सारथीने कहुं के अरे ! राजनीतिना शास्त्रोमां दूत अवध्य कडेवामां आग्ये छे अथी तने जतो कइ छुं. आ प्रभाण्णे कडीने तेण्णे इतने असत्कृत अने असम्मानित करीने पाछवा आरण्णथी अहार कढावी भूक्ये।

(तएणं दारुए सारही पउमणाभेणं असत्कारिय जाव निच्छुद्धे समाणे जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एवं

एवं खलु अहं हे स्वामिन् ! युष्माकं वचनेन यावत् 'णिच्छुभावेइ' निक्षोभयति= पद्मनाभः क्रोधाविष्टः सन् द्रौपदीं न दास्यामीत्युक्त्वा दूतो न हन्तव्य इति कृत्वा मामसत्कार्यं, असंमान्यापद्वारेण निःसारयति स्म ' इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्—तएणं से पउमणाभे बलवाउयं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । आभिसेक्कं हरिथर-यणं पडिकप्पेह, तथाणंतरं च णं से बलवाउए छेयायरियउव-देसमइविकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ, तएणं से पउमनाहे सन्नद्धं अभिसेयं दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं से कणहे वासु-देवे पउमणाभं रायाणं एज्जमाणं पासइ पासित्ता तं पंच पंडवे

गच्छइ, उवागच्छित्ता करयलं कणहं जाव एवं वयासी--एवं खलु अहं सामी ? तुव्मं वयणेणं जाव णिच्छुभावेइ) इस प्रकार जब वह दारुक सारथि पद्मनाभ के द्वारा असत्कृत यावत् होकर बाहिर निकलवा दिया, तब वह वहाँ से चलकर जहाँ कृष्णवासुदेव थे वहाँ आया । वहाँ आकर उसने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा--हे स्वामिन् ? मैंने पद्मनाभ राजा से आपके वचन जैसे ही कहे वैसे ही उसने "क्रोध में आकर" मैं नहीं दूंगा, दूनमारने योग्य नहीं होता है--इत्यादि कहकर मुझे असत्कृत एवं असंमानित कर अपने यहाँ से पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया है ॥ सूत्र २८ ॥

वयासी--एवं खलु अहं सामी ! तुव्मं वयणेणं जाव णिच्छुभावेइ)

आ प्रभाषे न्यारे ते हासुके सारथि पद्मनाभ राजा पडे असत्कृत यावत् असंमानित यधने अडार कढावी भूकथो त्यारे ते त्यांथी अडार आवीने न्यां कृष्ण-वासुदेव डता त्यां आन्थो. त्यां आवीने तेणे अने हाथोथी अंजलि जनावीने अने तेने मस्तके भूडिने कृष्ण-वासुदेवने आ प्रभाषे कछुं के छे स्वामी ! पद्म-नाभ राजाने मे न्यारे तमारो संदेश कछी संभजान्थो. त्यारे संभजतांनी साथे ज ते क्रोधमां लराधने "हुं द्रौपदी देवी पछी आपीश नडि, यावत् इत अवध्य डाय छे." वगेरे वचनोथी असत्कृत तेभज असंमानित करीने भने तेणे पोताना लवनना पाछला पारणेथी अडार कढावी भूकथो छे. ॥ सू. २८ ॥

अननारघमांमृतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५१३

एवं वयासी--हं भो दारगा ! किन्नं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झहिह उयाहु पेच्छहिह ?, तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--अम्हे णं सामी ! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहंति दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलगा यावि होत्था, तएणं से पउमनाभे राया तं पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्धूयपडागा जाव दिसोदिसिं पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रत्ता हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव आधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमणाभेणं रत्ता सद्धिं संपलगा ?, तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुत्ताया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे तं पंच पंडवे एवं वयासी--जइ णं तुब्भे देवाणु-प्पिया ! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमना-भेणं सद्धिं संपलग्गं ताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहिय-पवर जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं रत्ता सद्धिं जुज्झामि रहं

दुरुहइ दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता सेयं गोखीरहारधवलं तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुस-
 न्निगासं निययबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंच-
 जण्णं संखं परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपुरियं करेइ, तएणं तस्स
 पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलइभाए हयजाव पडिसेहिए, तएणं
 सेकण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो धणुं पूरेइ पूरित्ता धणुसहं करेइ,
 तएणं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेणं धणुसद्देणं
 हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएणं से पउमणाभेराया तिभाग-
 बलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे
 आधारणिज्जत्तिकट्टु सिग्धं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता अमरकंका रायहाणिं अणुपविसइ अणुप-
 विसित्ता दाराइं पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएणं से कण्हे
 वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रहं
 ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमु-
 ग्धाएणं समोहणइ, एगं महं णरसीहरूवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया
 महया सद्देणं पाददहरयं करेइ, तएणं से कण्हेणं वासुदेवेणं
 महया महया सद्देणं पाददहरणं कएणं समाणेणं अमरकंका
 रायहाणी संभग्गपागारगोपुराट्टालयच्चरियतोरणपल्हत्थियपव-
 रभवणासिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तएणं
 से पउमणाभे राया अमरकंका रायहाणिं संभग्ग जाव
 पासित्ता भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ तएणं सा

अनेगारधर्मासृतवर्णिणी टी० अ० १६ त्रौपदीवृत्तिनिरूपणम्

५१५

दोवईदेवी पउमनाभं रायं एवं वयासी— किण्णं तुमं देवा-
णुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स
विप्पियं करेमाणे ममं इहं हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए
गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलग-
वत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं
गहाय ममं पुरओ काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं
उवेहि, पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तएणं
से पउमनाभे, दोवइए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता
ण्हाए जाव सरणं उवेइ उवित्ता करयल० एवं वयासी—दिट्ठाणं
देवाणुप्पियाणं इड्डी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया !
जाव खमंतु णं जाव णाहं भुज्जो२ एवं करणयाएत्तिकट्ठु पंज-
लिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थि
उवणेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी—हं
भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया४ किण्णं तुमं ण जाणसि
मम भगिणिं दोवइंदेवीं इह हव्वमाणमाणेतं एवमवि गए णत्थि
ते ममाहितो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्ठुपउमणाभं पडिविसज्जेइ
पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ गिण्हित्ता रहंदुरूहेइ दुरूहित्ता
जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं
दोवइं देविं साहत्थि उवणेइ, तएणं से कण्हे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं
अप्पछट्टे छहिं रहेहिं लवणसमुद्धं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे
दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव प्हारेत्थ गमणाए ॥ सू० २९ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि। ततः खलु स पद्मनाभः ‘बलवाउयं’ बलव्या-
पृतं-सैन्यनायकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—‘सिप्रमेव-शीघ्रमेव भो
देवानुप्रिय ! ‘आभिसेकं’ आभिषेक्यं प्रधानं हस्तिरत्नं ‘पडिकप्पेह’ प्रतिक-
ल्प्य सुसज्जितं कुरु, तदनन्तरं च स बलव्यापृतः खलु “छेयायरियउवदेसमह-
विकप्पणाविगप्पेहि” छेकाचार्योपदेशमतिविकल्पनाविकल्पैः—तत्र छेकः—निपुणः,
आचार्यः—कलाशिक्षकः, तस्योपदेशाद् या मतिरिद्विस्तस्या विकल्पना—विचारणा,
तज्जनितो विकल्पः—विशिष्ट रचनाशक्तियेषां तः, ‘जाव उवणेइ’ यावद् उपत-

—तएणं से पउमणाभे इत्यादि ॥

टीका—(तएणं) इसके बाद (से पउमणाभे) उन पद्मनाभ राजा ने
(बलवाउयं सदावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सदावित्ता) और
बुलाकर फिर उससे (एवं बयासी) इस प्रकार कहा—(खिप्पामेव भो
देवानुप्पिया ! आभिसेकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम
शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो। (तयाणंतरं च णं से
बलवाउए छेयायरिय उवदेसमह विकप्पणा विगप्पेहि निउणेहि जाव
उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुणकला शिक्षक के उपदेश
से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति
जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो शोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस
हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया। जब उन्होंने ने उस हस्तिरत्न को चम-
कीले निर्मल वेष से शीघ्र परिवर्द्धित—करदिया। वस्त्राच्छादन द्वारा

तएणं से पउमणाभे इत्यादि—

टीका—(तएणं) त्थारपछी (से पउमणाभे) ते पद्मनाभ राजाभे (बलवाउयं
सदावेइ) पोताना सैन्य नायकने ओलाव्यो. (सदावित्ता) अने ओलावीने तेने
(एवं बयासी) आ प्रभावे कहुं के (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! आभिसेकं
हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तमे सत्वरै प्रधान हस्तिरत्नने
सुसज्ज करे. (तयाणंतरं च णं से बलवाउए छेयायरियउवदेसमहविकप्पणा
विगप्पेहि निउणेहि जाव उवणेइ) त्थारपछी ते सैन्य नायके निपुण कलाशिक्ष-
कना उपदेशथी जेभवे विशिष्ट रचना भाटे बुद्धि तेभज कल्पना शक्ति भेजवी
छे, तेभज श्रृंगार कलाभां जेओ. अतीव अतुर छे तेवा भावसे वडे
हस्तिरत्नने सुसज्जित कराव्यो. न्यारे सत्वरै तेभवे ते हस्तिरत्नने अमकता
निर्माण वेषथी परिवर्द्धित करी दीथे—वस्त्राच्छादन वडे आच्छादित करीने सुथे-

भगवद्गीतासुतवर्णिनी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५१७

यति-अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्-सुनिउणेहिं नरेहिं हस्तिरयणं परिकल्पेऽ, उज्ज-
लनेवत्थ हव्यपरिवत्थियं सुसज्जं इत्यादि परिकल्पित्ता ' इति सुनिपुणैः=शोभा-
करणचतुरैः, नरेहिंस्तिरत्नं परिकल्पयति-शोभयति किं भूतं हस्तिरत्नं-उज्ज्वल-
नेपथ्यहव्यपरिवत्थितं उज्ज्वलनेपथ्येन-सुतिमन्निर्मलवेषेण शीघ्रं परिवत्थितः
वस्त्राच्छादनमुशोभितः, तथा-सुसज्जं-घण्टाभरणादिभिः समलङ्कृतं, एवं परि-
कल्प्य सबलव्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके तं हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति ।
ततः खलु स पद्मनाभः सन्नद्धवद्धवर्मितकवचः - आभिषेक्यं हस्तिरत्नं दूरोदति-
आरोदति दूरुह्य ह्यगजरथपदातिपरिवृतः यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव माधारयद्
गमनाय ।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभं राजानम् एजमानम्=आगच्छन्तं
पश्यति । दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत्-हं भो ! दारकाः भो वत्साः !

आच्छादित कर सुशोभित करदिया-अर्थात्-झूल वगैरह डालकर उसे
बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घंटा आभरण आदि से उसे अलं-
कृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ
राजा के पास पहुँचा (तएणं से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ,
दूरुहत्ता ह्यगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पदारेत्थ गमणाए, तएणं
से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाणं एजमाणं पासइ पासित्ता ते पंच पंडवे
एवं वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, वद्ध, वर्मित कवच
वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ़ हो गया और आरूढ़
होकर हय, गज, रथ, एवं पैदल सैन्य को साथ लेकर जहाँ कृष्णवासुदेव
थे उस और चल दिया । जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता
हुआ देखा तो देखकर उन्होंने ने पांच पांडवों से ऐसा कहा-(हं भो

लित करी दीधो अटले के झूल वगैरे नाभीने णहुअ सरस रीते सुसज्जित
करी दीधो तेमअ घंट, आभरणो वगैरेशी तेने अलंकृत करी दीधो। त्थारे ते
सैन्य नायक ते हस्तिरत्नने लधने पद्मनाभ राजानी पासे गथो।

(तएणं से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ दूरुहत्ता ह्यगय जेणेव
कण्हे वासुदेवे तेणेव पदारेत्थ गमणाए, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाणं
एजमाणं पासइ, पासित्ता ते पंच पंडवे एवं वयासी)

त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा कवच तेमअ धीम शस्त्रोथी सन्नद्ध थधने
ते प्रधान हस्तिरत्न उपर सवार थध गथो अने सवार थधने घोडा, हाथी,
रथ अने पायदण सेनाने साथे लधने कृष्ण-वासुदेव उता ते तरइ रवाना
थथो। कृष्ण-वासुदेवे त्थारे पद्मनाभ राजाने आवतो लेथो त्थारे तेने लेधने पांचे

किं खलु यूयं पद्मनाभेन सार्धं ' जुञ्जिहिह ' युध्यथ ! ' उयाहु ' उताही-अथवा ' पेच्छिहिह ' प्रेक्षध्वे, ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-वयं खलु हे स्वामिन् ! युध्यामः, यूयं प्रेक्षध्वम् । ततः खलु पञ्च पाण्डवाः सन्नद्धवद्वर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणाः स्थान्=स्व स्व रथोपरि दूरोहन्ति=आरोहन्ति दूरोह्य यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवदन्-‘अम्हे वा पउमणाभे वा राया ’ वयं वा भवामः पद्मनाभो वा राजा, इति

दारगा ! किन्नं तुम्हे पउमनाभेणं सद्धिं जुञ्जिहिह उयाह पेच्छिहिह ? तएणं ते पंडवा कर्णं वासुदेवं एवं वयासी) हे वत्सो ! क्या तुमलोग पद्मनाभ के साथ युद्ध करोगे-या युद्ध को देखोगे ? तब उन पांडवों ने कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा-(अम्हेणं सामी ! जुञ्जामो, तुम्हे पेच्छह, तएणं पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहिस्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिस्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेणं सद्धिं संपलगा यावि होत्था) हे स्वामिन् ! हम तो युद्ध करेंगे-आप उस का निरीक्षण करें । इसके बाद वे पांचो पांडव सन्नद्धवद्वर्मित कवचवाले होकर यावत् आयुध प्रहरणों को ले २ कर अपने २ रथों पर सवार हो गये । सवार होकर फिर वे जहां पद्मनाभ राजा थे-उस और गये-वहां जाकर उन्होंने ने पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-या तो आज हम नहीं या पद्म-

पांडवोंने आ प्रभाणु कहुं-(हं भो दारगा ! किन्नं तुम्हे पउमनाभेणं सद्धिं जुञ्जिहिह उयाहु पेच्छिहिह ? तएणं ते पंच पंडवा कर्णं वासुदेवं एवं वयासी) हे वत्स ! शुं तमे पद्मनाभ राजानी साथे भेदने उतरशो ? के इत्ता युद्धने भेदो ? त्पारे ते पांडवोअे कृष्ण-वासुदेवने आ प्रभाणु कहुं के:-

(अम्हेणं सामी ! जुञ्जामो, तुम्हे पेच्छह, तएणं पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहिस्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिस्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेणं सद्धिं संपलगा यावि होत्था)

हे स्वामी ! अमे तो युद्ध भेडीशुं, तमे अमारा युद्धने लुओ. त्पार-पछी ते पांचे पांडवो कवचथी सुसन्नद्ध थडने आयुध प्रहरणुने लडने पोत-पोताना रथो उपर सवार थड गया. सवार थडने तेओ पद्मनाभ राजा तरक्ष रवाना थया. पद्मनाभ राजानी पांचे पंडोअीने तेणु आ प्रभाणु कहुं के-
“ आओ कां तो अमे नडि अने कां पद्मनाभ नडि. ” आभ कहीने तेओ पद्मनाभ राजानी साथे युद्ध करवा लाग्या.

कृत्वा=इत्युक्त्वा-पद्मनाभेन सार्धं योद्धुं संपलग्नाश्चाप्यभवन्, ततः खलु स पद्मनाभो राजा तान् पञ्च पाण्डवान् क्षिप्रमेव 'हयमहियपवरनिवडियचिन्धद्वयपङ्कागा' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्नध्वजपताकान्-तत्र हयाः-अश्वा मथिताः-पीडिताः, प्रवराः-प्रशस्ताः, चिह्नध्वजपताका निपातिता येषां तान्, शस्त्रास्त्रप्रहारजनित प्राप्तान् इत्यर्थः, यावद् दिशो दिशं=सर्वतः 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=प्रतिनिवर्तयति स्मेत्यर्थः । ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पद्मनाभेन राज्ञा हयमथितप्रवरनिपतित यावत् प्रतिषेधिताः सन्तः 'अत्थामा' अस्थामानः-बलरहिताः, 'जाव आधारणिज्जा' अत्र यावच्छब्देन-'अवला अवीर्या' इत्यनयोः संग्रहः । अवलाः-

नाभ राजा ही नहीं" ऐसा कहकर वे पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करने में संलग्न हो गये । (तएणं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया, समाणा, अत्थामा जाव आधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएणं से वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी कहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेणं रत्ता सद्धिं संपलग्गा ? तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया । अम्हे तुब्भेहिं अम्भणुत्ताया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो २ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ) तब पद्मनाभ राजा ने उन पांचो पांडवो को बहुत जल्दी पीडित घोडों वाला एवं निपातित प्रशस्त चिह्नध्वज पताका वाला कर दिया । यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से भी उन्हें रोक दिया अथवा-एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड़ दिया । इस तरह वे पांचो पांडव पद्मनाभ राजा के द्वारा पीडित घोडोवाले, एवं निपातित प्रशस्त चिह्न ध्वज पताका वाले जब बन गये और एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से रोक दिये गये-अथवा खदेड़ दिये गये तब बलरहित बनकर यावत्

(तएणं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया समाणा, अत्थामा जाव आधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी कहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेणं रत्ता सद्धिं संपलग्गा ? तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया । अम्हे तुब्भेहिं अम्भणुत्ताया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो २ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ)

त्यारपछी पद्मनाभ राजाએ તે પાંચે પાંડવોને થોડા વખતમાં જ પીડિત થોડાઓવાળા તેમજ નિપાતિત પ્રશસ્ત ચિહ્નધ્વજ પતાકાવાળા બનાવી દીધા યાવત એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ જઈ શકે નહિ તેમ તેઓએ રસ્તા રોકી લીધો. અથવા તે એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂક્યા. આવી

सन्त्यहीनाः अशीर्षाः—आन्तरिकशक्तिरहिताः, उत्साहहीना इत्यर्थः, तथा—अधा रणीयाः=आत्मानं रणभूमौ धारयितुमशक्ताः, इति कृत्वा—इति विचार्य, यत्रैः कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—‘कहणं’ कथं खलु यूयं हे देवानु प्रियाः ! पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं योद्धुं संप्रयुज्यताम् ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! वयं युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तः सन्नद्धवद्वर्जितकवचाः रथान् ‘दुरुहामो’ दूरोहामः—आरोहामः आरूढाः, आरूढा यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैव गत्वा युद्धाय संपलग्नाः ततः पराजयं प्राप्ता यावत् प्रतिषेधिता’ इति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवा-

रणभूमि में अपने आपको टीका ने मैं भी असमर्थ जानकर जहाँ कृष्ण-वासुदेव थे वहाँ आये । वहाँ पहुँच तेही कृष्णवासुदेवने उनसे—उन पाँचो पाण्डवों से—इस प्रकार कहा—जब आपलोग पराजित हो गये तो पद्मनाभ राजा के साथ युद्धरत हुए—लड़े—तब उन पाँचो पाण्डवो ने कृष्ण-वासुदेव से इस प्रकार कहा, हे देवानुप्रिय ! हमलोगो ने आप से अभ्यनुज्ञान होकर ही कवच आदि से सुसज्जित हो रथों पर आरोहण किया, और आरोहण कर जहाँ पद्मनाभ राजा था वहाँ हमलोग पहुँचे । वहाँ पहुँचकर हमलोग उनके साथ युद्धरत हो गये । बाद में पराजित हो गये । और पराजित होकर फिर ऐसे बन गये जो उसने हमें एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड़ दिया या जाने से रोक दिया । (तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पं. पं.) तब कृष्णवासुदेव ने उन पाँचो पाण्डवो से

परिस्थितिमां लायार थधने यावत् युद्धभूमिमां चेतानी नतने टकावी शक-
वाभां पञ्च असमर्थ नाल्हीने पाँचे पांडवो न्यां कृष्ण-वासुदेव हुता त्यां
आव्या. त्यां पडोयतां न कृष्ण-वासुदेवे पाँचे पांडवोने आ प्रभाणे कहुं के
तमे लोके पद्मनाभ राजनी साथे युद्धरत थधने परालत थध गया छे ? तयारे
ते पाँचे पांडवोने कृष्ण-वासुदेवने आ प्रभाणे कहुं के छे देवानुप्रिय ! अमे
अधा आपनी आरा भेगवीने कवच वगेरेथी सुसज्जित थधने रथे उपर
सवार थया. सवार थधने अमे न्यां पद्मनाभ राज हुतो त्यां गयो. त्यां
पडोयनीने अमे अधा तेनी साथे युद्ध करवा लाग्या अने तेने परिष्ठांमे अमे
हारी गया छीअे. हार पाभीने अमे अेवी लयकर परिस्थितिमां सपडाछ
गया हुता के नेथी अेक दिशा तरक्षथी नील दिशा तरक्ष नवाभां पञ्च असर्थ
थध गया अथवा तो तेणे अमने अेक दिशाभांथी नील दिशा तरक्ष भगाडी
भूक्या छे. (तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पं. पं.) तयारे कृष्ण-वासुदेवे ते पाँच
पांडवोने आ प्रभाणे कहुं के—

अनारधमाभूतधाविणी टी० अ० १९ ब्रौपदीचरितनिरूपणम्

५२१

दीत्-यदि खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! पूर्वमेवं वक्तारो भवत, ' अम्हे, ' णो पउमामे राया ' इति ' वयं भवामः, नो पद्मनाभो राजा ' इति " वयमेव जेष्णामो न तु पद्मनाभो राजा ' इत्यर्थः. तथा-यदि पूर्वम्-इति कृत्वा-इत्येवं निश्चयं मनसि निधाय, पद्मनाभेन सार्धं ' संपलग्गता ' युद्धाय संपलग्ना भवत, ' तो णं ' तद्धि खलु ' तुम्हे, णो पउमणाहे ' यूयं नो पद्मनाभः=यूयमेव जेतारो भवेत, न तु पद्मनाभः, तथा यूयं तं हयमथितश्वरनिपतित चिह्नवज्रपताकं यावत्-पद्मनाभं ' पडिसेहंते ' प्रतिषेधयेत=प्रतिनिवर्तयेत । तत्=तस्मात् ' पेच्छह ' प्रेक्षध्वं, खलु

इस प्रकार कहा-(जहणं तुम्हे देवाणुप्पिया ! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धि संपलग्गताओ णं तुम्हे णो पउमणाहे, हय-महिय-पवर-जाव.पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! अहं णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धि जुज्झामि, रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेयं गोखीरहारधवलंतणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदु सन्निगासं निययवलस्स हरिसज्जणं रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्णं संखं परामुसइ) हे देवानुप्रिय ! तुम तो पहिले ऐसा कहते थे कि हम जीतेगे, पद्मनाभ राजा नहीं जीतेगा-और ऐसा ही मन में विचार कर-निश्चय कर-तुमलोगों ने पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करना प्रारंभ किया-तो तुमलोगों को ही जीतना चाहिये था । पद्मनाभ राजा को नहीं-और तुम्हीं लोग उसे पीड़ित छोड़ों वाला एवं निपातितप्रश

(जहणं तुम्हे देवाणुप्पिया ! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धि संपलग्गताओ णं तुम्हे णो पउमणाहे, हयमहियपवर जाव.पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! अहं णो पउमणाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धि जुज्झामि, रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयं गोखीरहारधवलंतणसोल्लियसिंदुवार कुंदेंदु सन्निगासं निययवलस्स हरिसज्जणं रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्णं संखं परामुसइ)

हे देवानुप्रिय ! तमे तो पडेलेधी न आ प्रमाणे कडेता हुता के अमेन एतीशुं, पद्मनाभ राजा एतसे नहि. अने आ प्रमाणे विचार करीने न तमे दोडोअे पद्मनाभ राजानी साथे युद्धनी शइआत करी हुती, आवी परिस्थिभां तो तभारे एत भेजववी जेधअे. पद्मनाभ राजानी एत नहि अवी जेधअे. तमे दोडो तेने पीडित घोडाअेवाजो अनावत, तभने ते नहि पणु आ अधी तभारी मननी धअ्छा अइण थरु शकी नहि. अेधी हे देवानुप्रियो ! हवे जुअो,

यूयं हे देवानुप्रियाः ! ' अहं नो पद्मनाभे राया ' ' अहं नो पद्मनाभो राजा ' = अहमेव जेता भवामि, न तु पद्मनाभो राजा, इति कृत्वा पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं युध्यामि, इत्युक्त्वा रथं ' दुरूह ' दूरोदति-आरोदति-स कृष्ण वासुदेवः पद्मनाभेन सह योद्धुं रथमारूढवान् इत्यर्थः । आरूढ यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' सेयं ' श्वेतं-गोक्षीरहारधवलं=गोदुग्धवत्-हारवच्च धवलं शुक्लं ' तणसोल्लिपसिन्दुवारकुन्देन्दुमन्निगासं ' ' तणसोल्लिपा ' मल्लिका अयं देशीयः शब्दः सिन्दुवारो=निर्गुण्डी, कुन्दं-कुन्दनाम्ना प्रसिद्धः श्वेतपुष्पविशेषः, इन्दुश्चन्द्रस्तद्वत् संनिकाशः-प्रभा यस्य स तं, नियमबलस्य ' निमग्नबलस्य स्वकीयसेनाय ' हरिसज्जणं ' हर्षजननं-हर्षोत्पादकं, ' रिउसेण विणासकरं ' रिपुसैन्यविनाशकरं=शत्रुसैन्यबलहारकं पाञ्चजन्यं शङ्खं पाञ्चजन्यनामकं शङ्खं ' परामुसं' परामुशति हस्ते गृह्णाति, परामुश्य 'मुहवायपूरियं करेइ' मुखरातपूरितं मुखवातेन ध्मातं करोति-वाद्यतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य तेन शङ्खशब्देन ' बल-

स्त चिह्नध्वज पताका वाला बनाते-वह तुम्हें ऐसा नहीं बनाता-परन्तु ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विचार सफली भूत नहीं हुआ अतः देवानुप्रियो ! अब देखो-मैं उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं । ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर सवार हो गये । और सवार होकर वे वहाँ पहुँचे जहाँ पद्मनाभ राजा था । वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने अपने पांचजन्य श्वेतशंख को जो अपनी सेनाको हर्ष का जनक एवं शत्रु सेना का संहारक था एवं गोक्षीर तथा हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया । इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुण्डी कुन्दपुष्प एवं चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी । (परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) उसे उठाकर उन्होंने ने मुँह से बजाया- (तएणं तस्स पडमणाहस्स तेणं संखसहेणं बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) तब उस पद्मनाभ की सेना

तेनी साथे हुं डवे मेढाने पडुं छुं आमां विजय भने ज प्राप्त थसे, पद्मनाभ राजाने नडि. आभ कडीने कृष्ण-वासुदेव रथ उपर सवार थय गया अने सवार थधने जयां पद्मनाभ राजा હતો त्यां पडोंच्या त्यां पडोंच्याने तेमळे पोताना पांचजन्य सहेइ शंभने-डे जे तेमनी सेना माटे हर्षोत्पादक तेमज शत्रुओंनी सेना माटे संहार इय હતો तथा गायना इध अने હારના જેવો સહેइ હતો-હાથમાં લીધો. તે શંખની કાંતિ મલ્લિકા નિર્ગુણ્ડી કુંદ પુષ્પ અને ચન્દ્ર જેવી હતી. (પરામુસિત્તા મુહવાયપૂરિયં કરેइ) લઈને તેમણે અુખથી વગાડ્યો. (તएणं तस्स पडमणाहस्स तेणं संखसहेणं बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) ते वખते ते पद्मनाभ राजानी सेनानो त्रिसाग शंખना

तिभाए हते ' बलत्रिभागो हतः—सैन्यस्य तृतीयांशो हतमथित यावत् दिशोदिशं प्रतिषेधितः—मतिनिवृत्तः पलायित इत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु स कृष्णो वासुदेवो धनुः परामृशति गृह्णाति, परामृश्य ' वेढो ' वेष्टः वर्णकः धनुर्विषयकं वर्णनं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिरित्यर्थः, ' धणुं पूरेइ ' धनुः पूरयति धनुषि गुणमारोपयति पूरयित्वा धनुः शब्दं करोति ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य द्वितीयवारं ' बलतिभाए ' बलत्रिभाग बलस्य सैन्यस्य तृतीयोभागस्तेन धनुः शब्देन ' हयमहिय पवरनिवडिय विन्धद्वयपडागे ' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्नध्वजपताको यावत् का त्रिभाग उस शंख के शब्द से हत हो गया मथित हो गया यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा की तरफ भाग गया । तएणं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ, वेढो धणुं पूरेइ, पूरित्ता धणुसइं करेइ) इसके बाद कृष्ण वासुदेवने धनुष को उठाया । इस धनुष का वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में किया गया है । सो वहां से जानना चाहिये उठाकर उन्होंने उस पर ज्या का आरोपण किया फिर उसे चढ़ाया—सो उससे शब्द हुआ (तएणं तस्स पडमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेणं धणुसइेणं हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएणं से पडमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ) तब उस पद्मनाभ राजा की सैन्य का तृतीयभाग उस धनुष के शब्द से हत हो गया, मथित हो गया, उस की प्रवर चिह्न स्वरूप ध्वजपताकाएँ सब गिर गईं यावत्

शब्दधी ७ हत थई गये, मथित थई गये यावत् ओइ दिशा तरइधी भीउ दिशा तरइ नाशी गये. (तएणं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ, वेढो धणुं पूरेइ, पूरित्ता धणुसइं करेइ) त्थारपणी कृष्ण-वासुदेवे धनुष उठावुं. आ धनुषनुं पणुंन ७ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिमां करवामां आवुं छे. निशासुओओ त्थांधी जल्ली लेवुं लेछओ. उठावीने तेओओ तेनी उपर प्रत्यंथा चढावी. त्थारपणी धनुषने चढावुं अने तेनाधी शब्द थयो—

(तएणं तस्स पडमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेणं धणुसइेणं हयमहिय जाव पडिमेहिए. तएणं से पडमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ)

ते पद्मनाभ राजानी सेनाने ग्रीले लाग ते धनुषना शब्दधी ७ हत थई गये, मथित थई गये, तेनी प्रवर चिह्न-स्वरूप ध्वज पताकाओ जधी पड़ी

દિશો દિશં પ્રતિષેધિતઃ, તતઃ સ્વલુ સ પદ્મનાભો રાજા ' ત્રિભાગવલાવશેષે ' ત્રિભાગવલાવશેષઃ તૃતીયાંશાવશિષ્ટસૈન્યવાન્ સન્ અસ્થામા, અવલઃ, અવીર્યઃ, અસ્થામેત્યાદિ પ્રાગ્વ્યાખ્યાતમ્ અપુરુષકારપરાક્રમઃ-પૌરુષપરાક્રમરહિતઃ, અધાર-નીયઃ-પ્રાણાન્ ધારાયિતુમશક્તઃ, इति कृत्वा=इति विचार्य शीघ्रं त्वरितं यत्रैवा मरकंका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अमरकंकां राजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य द्वाराणि ' पिहेइ ' पिधत्ते, रोधसज्जः=दुर्गं निरुध्य तिष्ठति, ततः स्वलु स कृष्णो

વહ એકદિશા સે દૂસરી દિશા મેં ભાગ ગયા અથવા ભાગને મેં અસમર્થ બન ગયા । હસ કે બાદ તૃતીયાંશાવશિષ્ટ સેના વાલા હોકર વહ પદ્મનાભરાજા બલ રહિત હો ગયા, પર્યાપ્ત સૈન્ય રહિત હો ગયા એવં અંતરિક શક્તિ-ઉત્સાહ હીન હો ગયા । અતઃ વહ પૌરુષ પરાક્રમ સે રહિત હોને કે કારણ રણભૂમિ મેં ઠહરને કે યોગ્ય નહીં રહા । અથવા પ્રાણોં કો ધારણ કરને મેં બી અસમર્થ બન ગયા । હસલિયે વહ વહાં સે શીઘ્ર બઢી ઉતાવલી સે જહાં અમરકંકા નગરી થી વહાં આ ગયા । (ઉવાગચ્છિત્તા અમરકંકં રાયહાણિ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા દારાઈં પિહેइ પિહિત્તા રોહસજ્જે ચિદ્વइ, તણં સે કળે વાસુદેવે, જેણેવ અમરકંકા તેણેવ ઉવાગચ્છइ) વહાં આકર વહ અમરકંકા રાજધાની મેં ગયા । જાકર ઉસને દરવાજોંકો બંદ કરવા દિયા । બંદ કરવાકર ફિર વહ અપને દુર્ગ (કિલ્લા) કો રક્ષા કરતા હુઆ વહાં ઠહરા । હસકે બાદકૃષ્ણવાસુદેવ

ગઈ થાવત્ તે સેનાને ભાગ એક દિશા તરફથી બીજીદિશા તરફ નાશી ગયો. અથવા તો તે નાશી જવામાં પણ અસમર્થ થઈ ગયો. ત્યારપછી ત્રીજા ભાગ જેટલી સેના જ જેની પાસે રહી છે એવો તે પદ્મનાભ રાજા સાથે નિર્ભંજ થઈ ગયો, પર્યાપ્ત સૈન્ય રહિત થઈ ગયો અને આંતરિક શક્તિ-ઉત્સાહ રહિત થઈ ગયો. તે પૌરુષ પરાક્રમ વગરનો થઈ તે રણભૂમિમાં ટકી શકે તેમ પણ રહ્યો નહિ અથવા તો તે પ્રાણોને ધારણ કરવામાં પણ અસમર્થ થઈ ગયો. એથી તે સત્વરે જ્યાં અમરકંકા નગરી હતી ત્યાં આવી ગયો.

(ઉવાગચ્છિત્તા અમરકંકં રાયહાણિ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા-દારાઈં પિહેइ, પિહિત્તા રોહસજ્જે ચિદ્વइ, તણં સે કળે વાસુદેવે, જેણેવ અમરકંકા તેણેવ ઉવાગચ્છइ)

ત્યાં આવીને તે અમરકંકા રાજધાનીમાં ગયો, ત્યાં જઈને તેણે દરવાજાઓને બંધ કરાવી દીધા. બંધ કરાવીને તે પોતાના દુર્ગની રક્ષા કરતાં ત્યાંજ રોકાયો. ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યાં તે અમરકંકા નામે નગરી હતી ત્યાં

अमरकंकामृतचविणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५२५

वासुदेवो यत्रैवामरकङ्का तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यत्र रोहति प्रत्यवरुह्य, 'वेउव्वियसमुग्घाएणं' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मात् मात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणेन खलु 'समोहणइ' समुद्घातं करोति समुद्घट्ति एकं महत् 'णरसीहरुवं' नरसिंहरूपं 'विउव्वइ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन करोति विकुर्व्य महता २ शब्देन 'पाददहरयं' पाददर्दरकं=भूमौ चरणाघातं करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराजधानी 'संभगपागारगोपुराट्टालयचरिय-तोरणपलहत्थियपवरभवणसिरिधरा' सम्भगपाकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्य-स्तितप्रवरभवनश्रीमृदा=तत्र संभगानि-पाकारश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहांवह अमरकंका थी वहां गये (उवा०) वहां जाकर के (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहिता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोह-णइ) उन्होंने अपने रथको खड़ा किया-खड़ा करके फिर वे उससे नीचे उतरे । नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया । वैक्रियशरीरको निर्माण करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होता है-उसका नाम वैक्रिय समुद्घात है । (एगं महं णरसिंहरुवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया २ सदेणं पाददहरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभगपागारगोपुराट्टालचरियतोरणं पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले संभिवइया) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके अपनी भयंकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया । इस तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकंका राजधानी की

गया. (उवा०) त्यां ज्धने (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहिता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ) तेभण्णे पोताना रथने ज्जोला राज्जे, ज्जोला राणीने तेज्जा तेमांथी नीचे उतथी. नीचे उतरीने तेभण्णे वैक्रिय समुद्घात कथी. वैक्रिय शरीरने ज्जनावया भाटे ज्जे आत्मप्रदेशेने ज्जहार काढवामां आवे छे ते वैक्रिय समुद्घात कडेवाय छे.

(एगं महं णरसिंहरुवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सदेणं पाददहरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभगपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणं पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले संभिवइया)

आ समुद्घात वटे तेभण्णे ज्जेक निशाण काय नरसिंह रूपनी विकुर्वण्णा करी. नरसिंह रूपनी विकुर्वण्णा करीने पोतानी भयंकर गर्जनाथी भूमि उपर बरबोलेना आघात कथी. आ रीते गर्जनापूर्वक कथयेला बरबोलातथी अमर-

च तोरणानि च यस्यां सा तथा, तत्र गोपुराणि-प्रतोल्यः अट्टालकाः-प्राकारो
परिस्थान् विशेषाः, चरिका-नगरप्राकारान्तरेऽष्टद्वस्तोमार्गः। तथा-पर्यस्तितानि-
सर्वतः क्षिप्तानि प्रवरभवनानि श्रीगृहाणि-भण्डागाराणि कोशागाराणि च यस्यां स
तथा, ततो द्विपदः कर्मधारयः। कृष्णवासुदेवेन भूमौ चरणाघातशब्देन अमर-
कंकाराजधान्याः प्राकारगोपुरादिकं विध्वंसितमित्यर्थः, तथा-‘सरस्सरस्स
अनुरणशब्दोऽयम् निपतनक्रियाविशेषणं धरणितले संनिपतिता=अमरकंक
राजधानी सरस्सरस्सेति शब्दं कुर्वाणा भूमौ पतितेत्यर्थः। ततः खलु स पद्मनाभे
राजा अमरकंकं राजधानीं संभग्नप्राकारादिकां यावत्-धरणितले संनिपतितां
दृष्ट्वा भीतः त्रस्तः, उद्विग्नः, संजातभयः, द्रौपद्या देव्याः शरणमुपैति प्राप्नोति
ततः खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभं राजानमेवमवादीत्-किं खलु त्वं हे देवानु-
प्रिय ! न जानासि कृष्णस्य वासुदेवस्योत्तमपुरुषस्य विप्रियं कुर्वन् मामिह अत्र

गलियों को अटारियों को, चरिकाओं को, श्री गृहों को कोशागारों को
श्री कृष्ण ने ध्वंस कर दिया। तथा वह अमरकंक राजधानी भी सरसर
शब्द करती हुई उस गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से जमीन पर
गिर पड़ी। (तएणं से पडमणाभे राया, अमरकंक रायहाणि संभग्न
जाव पासित्ता, भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ) तब पद्मनाभ राजा
अमरकंक राजधानी को प्राकार गोपुर आदि की ध्वस्त अवस्थावाली
देखकर अत्यन्त भीत हुआ त्रस्त हुआ, उद्विग्न हुआ। और संजात-
भय संपन्न होकर द्रौपदी देवी की शरण में पहुँचा। (तएणं सा दोवई
देवी, पडमनाभं रायं एवं वयासी) तब उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ
राजा से इस प्रकार कहा- (किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! न जानासि कण्ह-

कंका राजधानीनी शेरीओने, अटारीओने, चरिकाओने, श्रीगृहोने, कोशा-
गारोने श्रीकृष्णे नष्ट करी नाअ्या तेमज ते अमरकंक राजधानी पणु सरसर
शब्द करती गर्जनापूर्वक करवामां आवेला अरणाघातथी जमीनदोस्त थई गई.

(तएणं से पडमणाभे राया, अमरकंक रायहाणि संभग्न जाव पासित्ता,
भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ)

पद्मनाभ राजा अमरकंक राजधानीना प्राकार, गोपुर वगैरेना विनाश
लैधने भूण ज लयलीत थई गयो, त्रस्त थई गयो तेमज उद्विग्न थई गयो
अने संभतलय संपन्न थइने द्रौपदी देवीनी शरणे पडोअ्यो. (तएणं सा
दोवई देवी पडमनाभं रायं एवं वयासी) त्यारे ते द्रौपदी देवीअे पद्मनाभ
राजाने आ प्रभाणे कहुं डे—

अनंगारघर्मासृतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५२७

हृदयं-शीघ्रम् आनयसि-आनीतवानसि तत्-तस्मात्-‘एवमवि गण’ एवमपि गते-इत्थंममापहरणे कृतेऽपि, गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! स्नातः ‘उल्लपड-साडए’ आर्द्रपट्टसाटकः स्नानेनाऽऽर्द्धीकृतोत्तरीयपरिधानवस्त्रधारी ‘अवचूलग-वत्थणियत्थे’ अवचूलकवस्त्रणियत्थः=अवचूलकम्-अधोमुखं नीचेर्लम्बमानं चूलं-वस्त्राञ्चलं-वस्त्रपासं यथा भवति तथा ‘णियत्थं’ परिहितं वस्त्रं येन स तथा-स्त्रीणां परिधानमिव चरणपर्यन्तलम्बितवस्त्रान्तं यथास्यात्तथा परिहितवस्त्र इत्यर्थः । ‘अंतेउरपरियालसंपरिवुडे’ अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः=स्त्री परिवारेण सहितः, ‘अग्गाइं’ अग्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा मां पुतः ‘काउं’ कृत्वा कृष्णं स्म वा सुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि) हे देवानुप्रिय ! क्या तुम उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव को नहीं जानते हो जो उनको अनिष्ट कर तुम मुझे यहां ले आये हो । (तं एवमविगणं गच्छहणं तुमं देवानुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे, अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय, ममं पुरओ, काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि) खैर अब इस बात को जाने दो-हे देवानुप्रिय ! तुम स्नान करो, और गीले वस्त्र पहिने हुए ही श्री कृष्णवासुदेव की शरण में जाओ । जाते समय तुम स्त्रीयों के परिधान के समान चरण पर्यन्त लटकते हुए वस्त्र पहिनकर जाना । अकेले मत जाना किन्तु अपने अंतःपुर की समस्त स्त्रियों को साथ में ले जाना । रीते हाथ भी मत जाना किन्तु भेट निमित्त वेश कीमती रत्नों को लेकर और मुझे आगे करके चलना ।

(किष्णं तुमं देवानुप्पिया ! न जानासि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि)

हे देवानुप्रिय ! शुं तमे उत्तम पुरुष कृष्ण-वासुदेवने ओणअता नथी. भने अही दावीने तमे तेमनुं न अनिष्टं कथुं छे.

(तं एवमविगणं गच्छहणं तुमं देवानुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे, अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय, ममं पुरतो, काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि)

ओर, छोडो ओ बातने. हे देवानुप्रिय ! तमे हवे स्नान करो अने भीना वओथी न श्रीकृष्ण वासुदेवनी शरणमां नओ. जती वअते तमे ओओना परिधान (वस्त्रिया) नी जेमज पग सुधी लटकता वओ पडेओ. तमे ओकला जता नडि परंतु वसुवासनी अधी ओओने साथे लधने ओओ. तमे आली हाथे तेमनी पासे जता नडि पणु कंधे केट स्वश्र्प किमती वओने लधने

વાસુદેવ ' કરયલપાયપડિય ' કરતલપાદપતિત:-સંયોજિતકરતલદ્વયઃ, પાદયોઃ પતિતઃ સન્ શરણં ઉપૈહિ-ત્રાયસ્વમામિતિષદન્ ઉપગતો ભવેત્યર્થઃ । હે દેવાનુ-પ્રિય ! ' પણિવૃચ્છલા ' પ્રણિપતિતવત્સલા-ચરણોપરિનિપતિતાનાં વત્સલાઃ સ્નેહવન્તઃ સ્વલુ ઉત્તમપુરુષાઃ ભવન્તિ પ્રણામમાત્રેણ મહાપુરુષાઃ પ્રસીદન્તીત્યર્થઃ । તતસ્તદનન્તરં સ પદ્મનાભો રાજા દ્રૌપદ્યા દેવ્યા એતમર્થ=ઉત્તકથનરૂપમર્થ પતિ-શ્રુગોતિ-સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય સ્નાતો યાવત્ શરણમુપૈતિ દ્રૌપદીવચનમનુસૃત્ય પદ્મનાભો રાજા કૃષ્ણવાસુદેવસ્ય શરણમુપગત इत्यર્થઃ । ઉપેત્ય કરતલપરિગૃહીત-દશનલં શિર આવર્ત મસ્તકેઽન્જલિ કૃત્વા એવં=અધ્યમાગપ્રકારેણ, આગીદ્=દૃઢ્વા

વહાં પહુંચ કર તુમ દોનોં હાથ જોડ કર उनके चरणों में गिर जाना (પણિવૃચ્છલા ણં દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા તણં સે પડમનામે દોવડેય દેવોય એયમદ્વં પડિસુણેઇ, પડિસુણિત્તા પઢાઇ જાવ સરણં ઉવેઇ, ઉવિત્તા, કરયલ૦ એવં વયાસી દિઢાણં દેવાણુપ્પિયાણં ઇઢી, જાવ પરવકમે તં સ્વામેમિ ણં દેવાણુપ્પિયા ।) હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષ જો હુઆ કરતે હું વે પ્રણિપતિતવત્સલ હુઆ કરતે હું-પ્રણામમાત્રસે મહાપુરુષ પ્રસન્ન હો જાયા કરતે હું-અર્થાત્ નમન કરનેવાલેકો વે નહીં મારતે તથ પદ્મનાભ રાજાને દ્રૌપદી દેવીકે હસ શિક્ષાપ્રદ કથનરૂપ અર્થકો સ્વીકાર કર લિયા । સ્વીકાર કર બાદમેં ઉસને સ્નાન કિયા, યાવત્ વહ દ્રૌપદીકે કહે અનુસાર કૃષ્ણવાસુદેવ કી શરણમેં પહુંચ ગયા । શરણ મેં પહુંચ કર ઉસને અપને દોનોં હાથોં કો જોડકર અંજલિ બનાઈ ઓર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે ઉસે શિરપર રસ્થા । ફિર હસ પ્રકાર બોલા-આપ દેવાણુપ્રિયકી મેંને ઋદ્ધિ

તેમજ અને આગળ રાખીને ચાલજો. ત્યાં પહોંચીને તમે અને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો.

(પણિવૃચ્છલાણં દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા, તણં સે પડમનામે દોવડેય દેવીય એયમદ્વં પડિસુણેઇ, પડિસુણિત્તા પઢાઇ જાવ સરણં ઉવેઇ, ઉવિત્તા કરયલ૦ એવં વયાસી, દિઢા ણં દેવાણુપ્પિયાણં ઇઢી જાવ પરવકમે તં સ્વામેમિ ણં દેવાણુપ્પિયા ।

હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે. કેવળ નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે. આ બધું સાંભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો. સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણમાં ગયો. શરણમાં જઈને તેણે પોતાના અને હાથ જોડીને અંજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરીને તેના માથા ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો કે-દેવાણુપ્રિય ! તમારી

સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાણામ્ કદિર્યાવત્ પરાક્રમઃ—તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ સ્વલુ હે દેવા-
નુપ્રિયાઃ ! યાવત્ ક્ષમન્તુ સ્વલુ યાવત્ નાહં ભૂયો ભૂયઃ એવં કરણતયા=પુનરેવં
ન કરિષ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા—ઇત્યુત્ત્વા—‘ પંજલિબુઢે ’ પાંજલિપુટઃ—સંયોજિત-
કરતલદ્વયઃ પાદપતિતઃ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય દ્રૌપદીં ‘ સાહત્થિ ’ સ્વહસ્તેન, ઉપ-
નયતિ । તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ પદ્મનાભમેવમવાદીત્—હં ભોઃ ! પદ્મનાભ !
અપ્રાર્થિતપ્રાર્થિત !—હે મરણવાંછુક ! ૪ કિં સ્વલુ ત્વં ન જાનાસિ મમ મગિનીં
દ્રૌપદીં દેવીમિહહવ્યમાનયન્, ‘ તં ’ તત્—તસ્માત્ ‘ એવમવિ ગણ ’ એવમપિગતે
અનેનપ્રકારેણ શરણં પ્રાપ્તે સતિ, નાસ્તિ તે તવ મદ્ભયમિદાનીમિતિ કૃત્વા પ્રતિ-
વિસર્જયતિ । પ્રતિવિસૃજ્ય દ્રૌપદીં દેવીં યૃક્તાતિ, યૃદ્ધીત્વા રથં દૂરોદતિ=આરોહયતિ

દેસલી, યાવત્ પરાક્રમ દેસ લિયા । હે દેવાનુપ્રિય ! મૈં અપને અપરાધ
કી ક્ષમા માંગતા હું । (જાવ સ્વમંતુ) યાવત્ આપ મુઝે ક્ષમા દે । (જં
જાવ ણા હં મુઝજો ૨ એવં કરણાણ) અબ મૈં પુનઃ એસા નહીં કરુંગા ।
(ત્તિ કદ્દુ પંજલિબુઢે પાયવઢિણ કણ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ દોવહં દેવિં સા
હત્થિ ઉવણેહ) હસ પ્રકાર કહકર વહ દોનોં હાથ જોડ ઉન કૃષ્ણવા-
સુદેવ કે પૈરોં પર ગિર પઢા ઓર અપને હાથ સે હી ઉસને ફિર ઉનકે
લિયે દ્રૌપદી સૌપદી । (તણં સે કણ્હે વાસુદેવે પડમણામં એવં વયાસી
—હં ભો ! પડમણાભા ! અપત્થિયપત્થિયા ૪ કિણ્ણં તુમં જ જાણાસિ
મમ મગિણિ દોવહં દેવિં હહ હવ્વ માણમાણે તં એવમવિગણ, જણ્થિ તે
મમાહિંતો હયાણિં મયમત્થિ ત્તિ કદ્દુ પડમણામં પઢિવિસજ્જેહ, પઢિ
વિસજ્જિત્તા દોવહં દેવિં ગિણ્હહ, ગિણ્હિત્તા રહં દુરુદ્દેહ, દુરુહિત્તા જેણેવ

મેં કદિ બેઠ લીધી છે, યાવત્ તમારૂં પરાક્રમ પણ મેં બેઠ લીધું છે. હે
દેવાનુપ્રિય ! હું મારા અપરાધ બદલ ક્ષમા માંગુ છું । (જાવ સ્વમંતુ) યાવત્
તમે મને ક્ષમા કરો. (જં જાવ ણાહં મુઝજો ૨ એવં કરણાણ) હવે ફરી હું
આવું કદાપિ નહિ કરું । (ત્તિ કદ્દુ પંજલિબુઢે પાયવઢિણ કણ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ
દોવહં દેવિં સાહત્થિ ઉવણેહ) આ પ્રમાણે કહીને તે બંને હાથ બેડીને
કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગેમાં આઝોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ
દ્રૌપદી તેમને સોંપી દીધી.

(તણં સે કણ્હે વાસુદેવે પડમણામં એવં વયાસી—હં ભો ! પડમણાભા !
અપત્થિયપત્થિયા ૪ કિણ્ણં તુમં જ જાણાસિ મમ મગિણિં દોવહં દેવિં હહ, હવ્વ
માણમાણે ત એવમપિ ગણ, જણ્થિ તે મમાહિંતો હયાણિં મયમત્થિ ત્તિકદ્દુ પડમ-
ણામં પઢિવિસજ્જેહ પઢિવિસજ્જિત્તા દોવહં દેવિં ગિણ્હહ, ગિણ્હિત્તા રહં દુરુદ્દેહ,

આરોહ્ય યત્રૈવ પશ્ચ પાણ્ડવાસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પશ્ચાર્ના પાણ્ડવાનાં દ્રૌપદીં
દેવીં ' સાહર્ત્થિ ' સ્વહસ્તેન, ઉપનયતિ=દદાતિ । તતઃ સ્વલ્લ સ કૃષ્ણઃ પશ્ચભિઃ
પાણ્ડવૈઃ માર્ધમાત્મવષ્ઠઃ પદ્મભીરથૈર્લવણસમુદ્રસ્ય મધ્યમધ્યેન યત્રૈવ જમ્બૂદ્વીપો
દ્વીપઃ, યત્રૈવ ભારતં વર્ષં તત્રૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય=ગન્તું પ્રવૃતઃ ॥ સુ. ૨૨॥

પંચ પંડવે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા પંચણ્દં પંડવાણં દોવહં દેવિ
સાહર્ત્થિ ઉવણેઈ) તથા કૃષ્ણવાસુદેવ ને પદ્મનાભ સે હસ પ્રકાર કહા
અરે ઓ પદ્મનાભ ! તુમ હસ તરહ સે અકાલ મેં હી મરણ કે અભિલાષી
વયોં ઘને ડકયાતુક્ષે યહ પતા નહીં થા કિ દ્રૌપદી મેરી બહિન હૈ । વયોં તૂં
હસ કો યહાં હે આયા ! સ્વૈર-જય તૂં હસ રૂપ મેં મેરી શરણ મેં આચુકા
હૈ-તો અથ તુક્ષે કિસી બી પ્રકાર કા મેરી તરફ સે ભય નહીં રહા-એસા
કહકર કૃષ્ણવાસુદેવ ને ઉસે વિસર્જિત કર દિયા-અપને સ્થાન પર ઉસે
જાને કી આજ્ઞા દેદી-। બાદ મેં દ્રૌપદી કો સાથ મેં લિયા ઓર લેકર વે
રથ પર આરૂઢ હુઅ । આરૂઢ હોકર ફિર વે, વહાં આયે-જહાં પાંચો
પાંડવ થે વહાં આકર ઉન્હોં ને દ્રૌપદી કો અપને હાથોં સે પાંચો પાંડવો
કે સુપુર્વ કર દિયા । (તણં કળે પંચેહિં પંડવેહિં સદ્ધિ અપ્પ છદ્દે છદ્ધિ
રહેહિં લવણસમુદ્ મજ્ઞં મજ્ઞેણં જેણેવ જંબૂદીવે દીવે જેણેવ ભારહે
વાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણા) હસકે બાદ વે કૃષ્ણવાસુદેવ પાંચો
પાંડવોં કે સાથ આત્મવષ્ઠ હોકર છહોં રથોં કો હે લવણ સમુદ્ર સે થીચો

દુરુહિતા જેણેવ પંચ પંડવે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ ઉવાગચ્છિત્તા પંચણ્દં પંડવાણં દોવહં
દેવિ સાહર્ત્થિ ઉવણેઈ)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ !
તમે આ પ્રમાણે અસમયમાં જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો, શું
તમને ખબર નહોતી કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તું એને અહીં શા માટે લઈ
આવ્યો ? ખેર, તું બ્યારે આ સ્થિતિમાં મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે
મારા તરફથી કેઈ પણ જાતનો ભય રાખવો જોઈએ નહિ. આમ કહીને કૃષ્ણ
વાસુદેવે તેને વિદાય કર્યા. ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઈને તેઓ રથ ઉપર
સવાર થયા. સવાર થઈને તેઓ બધાં પાંચે પાંડવો હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં
આવીને તેમણે પોતાના હાથથી દ્રૌપદીને પાંચે પાંડવોને સોંપી દીધી.

(તણં સે કળે પંચેહિં પંડવેહિં સદ્ધિ અપ્પ છદ્દે છદ્ધિ રહેહિં લવણસમુદ
મજ્ઞં મજ્ઞેણં જેણેવ જંબૂદીવે દીવે જેણેવ ભારહેવાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણા)

ત્યારબાદ તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મવષ્ઠ થઈને છએ

બંતારધર્માનૃતકવિગો ટી૦ ૪૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ

૫૩૧

મૂલ્ય-તેણં કાલેણં તેણં સમણં ધાયઙ્સંડે દીવે પુરત્થિ-
મિદ્ધે ભારહે વાસે ચંપાળામં ણયરીહોત્થા, પુણ્ણભદ્દે ચેદ્ધણ, તત્થ
ણં ચંપાણ નયરીણ કવિલે ણામં વાસુદેવે રાયા હોત્થા, મહિયા
હિમવંતં વણ્ણઓ, તેણં કાલેણં તેણં સમણં મુણિસુવ્વણ
અરહા ચંપાણ પુણ્ણભદ્દે સમોસઢે, કપિલે વાસુદેવે ધમ્મં સુણેદ્ધ
તણં સે કવિલે વાસુદેવે મુણિસુવ્વયસ્સ અરહઓ ધમ્મં સુણે-
માણે કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ સંઘસઢ્ઠં સુણેદ્ધ, તણં તસ્સ કવિ-
લસ્સ વાસુદેવસ્સ ઇમેયારૂવે અજ્ઞત્થિણ સમુપ્પજિત્થા - કિં
મણ્ણે ધાયઙ્સંડે દીવે ભારહે વાસે દોઢ્ઢે વાસુદેવે સમુપ્પણ્ણે ?
જસ્સ ણં અયં સંઘસઢ્ઠે મમંપિવ મુહવાયપૂરિણ વીયં ભવદ્ધ, તણં
મુણિસુવ્વણ અરહા કવિલં વાસુદેવં એવં વયાસી-સે ણૂણં તે
કવિલા વાસુદેવા ! મમ અંતિણ ધમ્મં ણિસામેમાણસ્સ સંઘસઢ્ઠં
આકણિત્તા ઇમેયારૂવે અજ્ઞત્થિણ કિં મન્ને જાવ વીયં ભવદ્ધ, સે
ણૂણં કવિલા વાસુદેવા ! અયમટ્ઠે સમટ્ઠે ? હંતા ! અત્થિ, નો
કવિલા ! એવં મૂયં વા ૩ જન્નં એગે સેત્તે એગે જુગે સમણ દુવે
અરહંતા વા ચક્કવટ્ટી વા બલદેવા વા વાસુદેવા વા ઉપ્પજિંસુ
ઉપ્પજિંજિતિ ઉપ્પજિજ્જસ્સંતિ વા, એવં સ્ખલુ વાસુદેવા ! જંબૂદ્વીવાઓ
ભારહાઓ વાસાઓ હત્થિણાઉરણયરાઓ પંડુસ્સ રણ્ણો પુવ્વ-

બીચ હો જહાં જંબૂદ્વીપ નામ કા દ્વીપ, જહાં ભરતક્ષેત્ર નામ કા ક્ષેત્ર થા
ઉસ ઓર ચલ દિયે ॥ સૂ૦૨૯ ॥

રથાને લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યાં જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, અને
તેમાં પશુ જ્યાં ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર હતું તે તરફ રવાના થયા. ॥ સૂત્ર ૨૬ ॥

संगइएणं देवेणं अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कणहे वासुदेवे पंचहि पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्टे छहिं रहेहि अमरककं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं तस्स कणहस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामे संगामेमाणस्स अयं संखसहे तव मुहवाया० इव वीइं भवइ, तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ२ एवं वयासी-गच्छामि णं अहं भंते ! कणहे वासुदेवे उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि, तएणं मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एवं वयासी - नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा३ जणं अरहंतो वा अरहंतं पासइ चक्कवट्ठी वा चक्कवट्ठिं पासइ बलदेवा वा बलदेवं पासइ वासुदेवो वा वासुदेवं पासइ, तहविय णं तुमं कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासिहिंसि, तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंधं दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्धं२ जेणेव वेला-उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासइ पासित्ता एवं वयइ-एसणं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कणहे वासुदेवे लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं वीइवयइत्तिकट्ठु पंचजन्नं संखं परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ, तएणं से कणहे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसहं आयन्नेइ आयन्नित्ता पंचजन्नं जाव पूरियं करेइ, तएणं दोवि वासुदेवा संखसइसा-

जेनेगारघमांमृतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५३३

मायारिं करेइ, तएणं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया ! एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कणहेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया किन्नं तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कणहस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—‘ तेणं कालेणं ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकी-षण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत् । तस्या बहिर्भागे पूर्णभद्रं नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत् । तत्र=तस्यां खलु चम्पानगर्यां

‘ तेणं कालेणं तेणं समएणं ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस कालमें और उस समयमें (धायइसंडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चंपा नामं नगरी होत्था, पुण्ण भहे चेइए) धातकी षंड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चंपा

‘ तेणं कालेणं तेणं समएणं ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये (धायइ संडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चंपा नामं नगरी होत्था, पुण्णभहे चेइए) धातकी षंडद्वीपभां पूर्व दिग्भागवर्ती भरतक्षेत्रभां चंपा नगरी હતી, તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતું.

૫૩૪

હોતાધર્મકથાક્રસ્ટ

‘કવિલે નામં’ કપિલો નામ વાસુદેવો રાજાડસીત્ ‘મહયા હિમવંતં’ વળ્ણઓ’ મહાહિમવાનિત્યાદિ વર્ણકઃ=વર્ણનં પૂર્વોક્તવદ્ બોધ્યમ્ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે મુનિસુવ્રતોડર્હન્ ચંપાયાં નગર્યાં પૂર્ણમ્દ્રે નામ્નિ ચૈત્યે સમવસ્રુતઃ । તસ્ય સમીપે કપિલો નામ વાસુદેવો ધર્મં શ્રુણોતિ । તતઃ સ્વહ્રુ સ કપિલો વાસુદેવઃ મુનિસુવ્રતસ્યાર્હતોડન્તિકે ધર્મં શ્રુત્વન્ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય શક્ષ્ણશ્વદં શ્રુણોતિ તતઃ સ્વહ્રુ તસ્ય કપિલસ્ય વાસુદેવસ્ય અયમેતદ્રૂપઃ=વક્ષ્યમાણસ્વરૂપઃ, ‘અજ્ઞત્થિય’ આધ્યાત્મિકઃ=આત્મગતઃ સંકલ્પો=ચિત્તચારઃ, યાવદ્ સમુદપચત-કિમ્-અન્યો ધાતકીષ્ણદે દ્વીપે ભારતે વર્ષે દ્વિતીયો વાસુદેવઃ

નામકી નગરી થી । ઉસમેં પૂર્ણમ્દ્ર નામ કા ઉદ્યાન થા । (તત્થળં ચંપાણ નયરીણ કપિલે નામ વાસુદેવે રાયા હોત્થા, મહયા હિમવંત વળ્ણઓ તેળં કાલેળં તેળં સમણં મુણિસુવ્વણ અરહા, ચંપાણ પુણ્ણમ્દ્રે સમોસદે) ઉસ ચંપાનગરીમેં કપિલ નામ કે વાસુદેવ રાજ્ય કરતે થે । યે મહા હિમવાન્ પર્વત જૈસે ગુળોંસે પૂર્ણ થે । પહિલે જૈસા વર્ણન રાજાઓંકા મિત્ત ૨ જગહ ક્રિયા ગયા હૈ વૈસા હી વર્ણન હસકા મી જાનના ચાહિયે । ઉસ કાલ ઔર ઉસ સમય મેં મુનિ સુવ્રત તીર્થંકર ચંપા નગરી મેં હસ પૂર્ણ મ્દ્ર ઉદ્યાન મેં આયે હુણ થે (કવિલે વાસુદેવે ધમ્મં સુણેહ, તણં સે કવિલે વાસુદેવે મુણિસુવ્વયસ્સ અરહાઓ ધમ્મં સુણેમાણે કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ સંલ્લસદં સુણેહ, તણં તસ્સ કવિલસ્સ વાસુદેવસ્સ હમેયાલ્લવે અજ્ઞત્થિય સમુપ્પજ્જિત્થા-કિં મણ્ણે, ધાયહસંદે દીવે ભારહે વાસે દોચ્ચે વાસુદેવે સમુપ્પણ્ણે ? જસ્સ ણં અયં સંલ્લસદે મમંપિવ મુહવાયપૂરિણ વીયં

(તત્થળં ચંપાણ નયરીણ કપિલે નામ વાસુદેવે રાયા હોત્થા, મહયા હિમવંત વળ્ણઓ, તેળં કાલેળં તેળં સમણં મુણિસુવ્વણ અરહા, ચંપાણ પુણ્ણમ્દ્રે સમોસદે)

તે ચંપા નગરીમાં કપિલ નામે વાસુદેવ રાજ કરતા હતા. તેઓ મહા હિમવાન વગેરે જેવા બળવાન હતા. પહેલાં જુદા જુદા રાજાઓનું જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણે આ રાજાનું પણ વર્ણન બાણી દેવું જોઈએ. તે કાળે અને તે સમયે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર ચંપા નગરીમાં તે પૂર્ણ-મ્દ્ર ઉદ્યાનમાં પધાર્યા હતા.

(કવિલે વાસુદેવે ધમ્મં સુણેહ, તણં સે કવિલે વાસુદેવે મુણિ સુવ્વયસ્સ અરહાઓ ધમ્મં સુણેમાણે, કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ સંલ્લસદં સુણેહ, તણં તસ્સ કવિલસ્સ વાસુદેવસ્સ હમેયાલ્લવે અજ્ઞત્થિય સમુપ્પજ્જિત્થા-કિં મણ્ણે ધાયહસંદે દીવે ભારહેવાસે દોચ્ચે વાસુદેવે સમુપ્પણ્ણે ? જસ્સ ણં અયં સંલ્લસદે મમં પિવ મુહવાય-પૂરિણ વીયં ભવહ)

समुत्पन्नः ? यस्य वासुदेवस्य खलु अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखवातपूरितः—मद्वादित-
 शङ्खध्वनिरिवेत्यर्थः, ' वीयं भवइ ' द्वितीयो भवति । ततः खलु मुनिसुव्रतोऽहं
 कविलं वासुदेवम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—' से ' पूर्णं इत्यादि—' से '
 नूनं ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्मं ' गिसामेमाणस्स ' निशामयतः=
 शृण्वतः, शङ्खशब्दम् ' आकणित्ता ' आकर्ष्य=श्रुत्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतदूयः
 आध्यात्मिकः संकल्पो विचारः समुदपद्यत—किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्यायं
 शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति ' से ' अथ नूनं हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थः
 समर्थः=किं सत्यः ?, कपिल वासुदेवः प्राह—हंता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो !
 अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतो भगवानाह—हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्=
 ईदृशं, ' भूयं वा ' भूतं वा=अतीतं वा, भवइ वा=वर्तमानं वा भविष्यद् वा अना-
 गतं वा कालत्रयेऽप्येवं न भवतीत्यर्थः, ' जन्नं ' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक-
 भवइ) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस
 कपिल वासुदेवने मुनि सुव्रत प्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण
 वासुदेवकी शंखध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार
 आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ—क्या धातकी षंड नामके
 द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ?
 कि जिसके शंखका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शंखके शब्द जैसा
 हुआ है ? (तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—से पूर्णं
 ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं गिसामेमाणस्स संखसहं आक-
 णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीयं भवइ से पूर्णं कविला
 वासुदेव ! अयमद्वे समद्वे ? हंता अत्थि, नो खलु कविला एयं भूयं वा ३ जन्नं

तेमनी पासे ते कपिल वासुदेव धर्मोपदेश सांलणी रह्या उता. ते कपिल
 वासुदेवे मुनिसुव्रत प्रभुनी पासे धर्मोपदेश सांलणतां ७ कृष्णवासुदेवना शंखने
 ध्वनि सांलण्यो. त्पारे ते कपिल वासुदेवने आ जतने आध्यात्मिक यावत्
 मनोगत संकल्प उत्पन्न थयो के शु धातकी षंड नामना द्वीपमां विद्यमान
 भरतक्षेत्रमां केऽथ भीलो वासुदेव उत्पन्न थयो छे ? केमके तेना शंखने आ
 ध्वनि मारा वडे वगाउवामां आवेला शंखना ध्वनि जेवे ७ छे.

(तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—से पूर्णं ते कवि-
 लावासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं गिसामेमाणस्स संखसहं आकणित्ता इमेयारूवे
 अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीयं भवइ, से पूर्णं कविला वासुदेवा ! अयमद्वे
 समद्वे ? हंता, अत्थि, नो खलु कविला एयं भूयं वा ३ जन्नं एगखेसे एगे जुगे

સ્મિન્ યુગે, એકસ્મિન્ સમયે દ્વાવર્હન્તૌ વા ચક્રવર્તિનૌ વા બલદેવૌ વા વાસુદેવૌ વા 'ઉપ્પજ્ઞિસુ' ઉદપન્નેતામ્, 'ઉપ્પજ્ઞિતિ' ઉત્પન્નેતે 'ઉપ્પજ્ઞિસ્સંતિ' ઉત્પત્સ્યેતે વા, એવં સ્વલુ હે વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાદ્ ભારતાદ્ વર્ષાદ્ હસ્તિનાપુરનગરાત્ પાણ્ડો રાજ્ઞઃ 'સુળ્હા' સ્તુવા=પુત્રવધૂઃ, પશ્ચાન્નાં પાણ્ડવાનાં માર્યાં દ્રૌપદી દેવી તવ પત્ર એગે સ્થેત્તે એગે જુગે એગે સમયે દુવે અરહંતા વા, ચક્રવટ્ટી વા, બલદેવા વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્ઞિસુ, ઉપ્પજ્ઞિતિ, ઉપ્પજ્ઞિસ્સંતિ વા,) તથા મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુને ડન કપિલ વાસુદેવ સે ઇસ પ્રકાર કહા હે કપિલ વાસુદેવ ! મેરે પાસ ધર્મ કો સુનતે સમય તુમ્હેં શંખ શબ્દ શ્રવણ કર ઇસ પ્રકાર કા યહ આધ્યાત્મિક સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ હૈ, કિ કયા કોઈ દૂસરા વાસુદેવ ઉત્પન્ન હો ગયા હૈ-જિસકે શંખ કા શબ્દ સુણે સુનાઈ દિયા હૈ । કહો કપિલ વાસુદેવ ! યહી ઘાત હૈ ન ? તથા કપિલ વાસુદેવને કહા-હાં પ્રભો ! યહી ઘાત હૈ-એસા હો વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ હૈ-તથા મુનિસુવ્રત ભગવાનને કપિલ વાસુદેવસે કહા-હે કપિલ વાસુદેવ એસી ઘાત ન ભૂતકાલ મેં હુઈ હૈ ઓર ન ભવિષ્યકાલ મેં હોગી-ન વર્તમાન મેં હોતી હૈ કિ જો એક હી ક્ષેત્રમેં એક હી યુગમેં એક હી સમય મેં દો અર્હંત પ્રભુ, દો ચક્રવર્તી, દો બલદેવ, દો વાસુદેવ, ઉત્પન્ન હો રહે હોં, ઉત્પન્ન હુએ હોં ઓર આગે ઉત્પન્ન હોં ! (એવં સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીપા-ઓ ભારહાઓ વાસાઓ હત્થિણાડરણયાઓ, પંડુસ્સરણ્ણો સુળ્હા એગે સમયે દુવે અરહંતા વા ચક્રવટ્ટી વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્ઞિસુ, ઉપ્પજ્ઞિતિ, ઉપ્પજ્ઞિસ્સંતિ વા)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાંભળતાં શંખ-શબ્દ સાંભળીને તમને આ જાતનો આધ્યાત્મિક સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શંખનો ધ્વનિ મને સંભળાઈ રહ્યો છે. બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા, પ્રભુ ! એ જ વાત છે. મારા મનમાં એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે. ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમાં થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમાં સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમાં, એક જ યુગમાં, એક જ સમયમાં એ અર્હંત પ્રભુ, એ ચક્રવર્તી, એ બળદેવ, એ વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય.

(એવં સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂ દ્વીપાઓ ભારહાઓ વાસાઓ હત્થિણાડરણયા-રાઓ, પંડુસ્સરણ્ણો, સુળ્હા પંચજ્ઞે પંડવાણં મારિયા દોઢૈ દેવી તવ પડમનાભસ્સ

અમરવારધર્મામૃતચરિણી ડી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ

૫૩૭

નામસ્ય રાજ્ઞઃ પૂર્વસંગતિકેન દેવેનામરકઙ્કાનગરી ' સાહરિયા ' સંહતા=આનીતા, તતઃ સ્વલુ સઃ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ પશ્ચભિઃ પાંડવૈઃ સર્ધં આત્મષષ્ઠઃ પદ્મીરથૈરમરકંકાં રાજધાનીં દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ ' કૂવં ' દેશી શબ્દોયં પ્રત્યાનયનાર્થકઃ પ્રત્યાનયનં કર્તુમ્ હ્યમાગતઃ, તતઃ સ્વલુ તસ્ય કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય પદ્મનાભેન રાજ્ઞા સર્ધં ' સંગામં ' સંગ્રામં=યુદ્ધં ' સંગામેમાણસ્સ ' યુધ્યત, અયં શક્ષશબ્દસ્તવમુ-સ્વવાતપૂરિત ઇવ દ્વિતીયો ભવતિ । તતઃ સ્વલુ સ કપિલો વાસુદેવો મુનિસુવ્રતં વન્દતે, નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છામિ સ્વલુ અહં હે

પંચણહં પંડવાણં આરિયા દોવર્ઈદેવી તવ પડમનાભસ્સ રણ્ણો પુવ્વસંગઈ-ણં દેવેણં અમરકંકા નયરિં સાહરિયા, તણં સે કણ્હે વાસુદેવે પંચઈં પંડવેઈં સદ્ધિં અપ્પછટ્ટે છઈં રહેઈં અમરકંકં રાયહાણિં દોવર્ઈદેવીએ કૂવં હવ્હમાગણ, તણં તસ્સ કણ્ણસ્સ વાસુદેવસ્સ પડમનાભેણં રણ્ણા સદ્ધિં સંગામં, સંગામેમાણસ્મ અયં સંલ્લસદે તવ મુહવાયાં ઇવ-વીયં ભવઈ) સુનો બાત હસ પ્રકાર હૈ જંબૂદ્વીપ કે ભરત ક્ષેત્ર મેં વર્તમાન હસ્તિનાપુર નગર સે પાંડુરાજા કી પુત્રવધૂ પાંચ પાંડવોં કી પત્ની દ્રૌપદી દેવી કો તુમ્હારે પદ્મનાભ રાજા કો પૂર્વ ભવીય મિત્ર કોઈ દેવ હરણ કર અમરકંકા નગરી મેં લે આયા । તથા ભરત ક્ષેત્ર કે વાસુદેવ કૃષ્ણ પાંચ પાંડવોં કે સાથ આત્મષષ્ઠ હોકર છહ રથોં સે उस અમરકંકા નગરી મેં દ્રૌપદી દેવી કો વાપિસ લે જાને કે લિયે ઘટ્ટત જલ્દી આયે । તથા ઉન કૃષ્ણ વાસુદેવ કે, પદ્મનાભ રાજા કે સાથ યુદ્ધ કરતે સમય શંખ કા યહ શબ્દ તુમ્હારે શંખ કે શબ્દ જૈસા હુઆ હૈ । (તણં સે કવિલે વાસુદેવે મુણિસુવ્વયં વંદંતિ, ૨ એવં વયાસી ગચ્છામિ ણં

રણ્ણો પુવ્વસંગઈણં દેવેણં અમરકંકા નયરિં સાહરિયા તણં સે કણ્હે વાસુદેવે પંચઈં પંડવેઈં સદ્ધિં અપ્પછટ્ટે છઈં રહેઈં અમરકંકં રાયહાણિં દોવર્ઈદેવીએ કૂવં હવ્હમાગણ, તણં તસ્સ કણ્ણસ્સ વાસુદેવસ્સ પડમનાભેણં રણ્ણા સદ્ધિં સંગામં, સંગામે માણસ્સ અયં સંલ્લસદે તવ મુહવાયાં ઇવ વીયં ભવઈ)

સાંભળો, વિગત એવી છે કે જંબૂદ્વીપના ભરતક્ષેત્રમાં વિદ્યમાન હસ્તિનાપુર નગરથી પાંડુરાજાની પુત્રવધૂ પાંચે પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદી દેવીને તમારા પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વભવનો મિત્ર કોઈ દેવ હરીને અમરકંકા નગરીમાં લઈ આવ્યો હતો. ત્યારપછી ભરતક્ષેત્રના વાસુદેવ કૃષ્ણ પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મ-ષષ્ઠ થઈને છ રથો ઉપર સવાર થયા અને સત્વરે દ્રૌપદી દેવીને પાછાં મેળવવા માટે ત્યાં પહોંચી ગયા. પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરતાં કૃષ્ણવાસુદેવે જે શંખધ્વનિ કર્યો છે તે તમારા શંખના ધ્વનિ જેવો છે.

(તણં સે કવિલે વાસુદેવે મુણિ સુવ્વયં વંદંતિ, ૨ એવં વયાસી, ગચ્છામિ

भदन्त ! कृष्णं वासुदेवमुत्तमपुरुषं पश्यामि ततः खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिलं वासुदेवम् एवमवादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एवं भूतं वा, भवति वा भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्तं पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिनं पश्यति बलदेवो वा बलदेवं पश्यति वासुदेवो वा वासुदेवं पश्यति, तथा ऽपि च खलु त्वं

अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि) इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को बंदना की—नमस्कार किया बंदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा—हे भदन्त ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो मेरे जैसे पुरुष हैं—वासुदेव पद के धारक हैं—जाकर मिलता हूँ । (तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा—(नो खलु देवानुप्पिया ! एवं भूयं वा ६ जणं अरहंतो, वा अरहंतं पासइ, चक्रवट्ठी वा चक्रवट्ठि पासइ, बलदेवो वा, बलदेवं पासइ, वासुदेवो वा वासुदेवं पासइ) हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भविष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिले, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिले, एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिले । ऐसा सिद्धान्त का नियम है कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है ।

णं अहंभंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि)

આ પ્રમાણે સાંભળીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વંદન તેમજ નમન કર્યાં. વંદન અને નમન કરીને તેમની આંખે આ પ્રમાણે વિનંતી કરતાં કહ્યું કે હે ભદ્રંત ! હું જાઉં છું અને જઈને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરુષ કૃષ્ણ વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે—તેમને મળું છું. (તણં મુણિ સુવ્વવે અરહા કવિલં વાસુદેવં એવં વયાસી) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(નોં જલુ દેવાનુપ્પિયા ! એવં ભૂયં વા ૩ જણં અરહંતો વા અરહંતં પાસઈ, ચક્રવટ્ઠી વા ચક્રવટ્ઠિ પાસઈ, બલદેવો વા, બલદેવં પાસઈ, વાસુદેવો વા વાસુદેવં પાસઈ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સંભવી નથી, વર્તમાનમાં પણ સંભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં પણ સંભવી શકશે નહિ કે એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે, એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે. આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો નિયમ છે કે એક

जीवगारवमोमृतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५३६

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजतः श्वेतपीतानि-ध्वजा-
ग्राणि 'पासिहिसि' द्रक्ष्यसि । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुव्रतं वन्दते,
नमस्यति वन्दिस्वा नमस्यिस्वा इस्तिस्कन्धं दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्रं २
यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तटं वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य
कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयमाणस्स' व्यतिव्रजतः=
गच्छतः, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एवं वदति एतणं मम सदृशपुरुषः
उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयइ' व्यतिव्रजति=
गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्यं शङ्खं परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखवातपूरितं
करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्खं वादयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि-

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बल-
देव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता
है । (तह वि य णं तुमं कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं
वीडवयमाणस्स सेया पीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि) हां, इतना हो सकता
हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे हों तब
तु मउनकी श्वेत पीत ध्वजाओंके अग्र भाग को देख सकते हो । (तएणं
से कविळे वासुदेवेमुणिसुव्वयं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता, हत्थि-
खंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता सिग्धं २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं वीडवयमाणस्स
सेयापीयाहिं धयग्गाइं पासइ, पासित्ता एवं वयइ-एतणं मम सरिसपुरिसे
उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं वीडवयइत्ति कट्टु

तीर्थ'करनी साथे भील तीर्थ'करने। भेजाप डोछ पणु स'भेजोभां थतो नथी,
ओक अकवर्तीना भील अकवर्तीनी साथे, ओक भणदेवने भील भणदेवनी साथे
तेमअ ओक वासुदेवने भील डोछ पणु वासुदेवनी साथे कडापि भेजाप थतो
नथी. (तह वि य णं तुमं कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं वीड-
वयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि) हां, ओम थछ शके छे के न्यारे
ते कृष्णवासुदेव लवण समुद्रनी वन्धे थछने पसार थता छाय त्यारे तमे तेमनी
सइइ, पीणी ध्वजओना अग्रभागने जेछ शके छे. (तएणं से)

कविळे वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंधं दुरुहइ,
दुरुहित्ता सिग्धं २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कणहस्स
वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं वीडवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइं
पासइ, पासित्ता एवं वयइ, एतणं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

लस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दम् 'आयन्नेइ' आकर्णयति=शृणोति, आकर्ण्य पाञ्च-
जन्यं यावत् मुखवातपूरितं करोति=कृष्णो वासुदेवः स्वकीयं शङ्खं वादयति, ततः
खलु द्वावपि वासुदेवौ 'संखसहसामायारि' शङ्खशब्दसामाचारि=शङ्खशब्देन
परस्परमिलनं कुरुतः ।

पंचजनं संखं परामुसह, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) इस प्रकार
प्रभु का आदेश सुनकर उन कपिलवासुदेव ने उन प्रभु मुनिसुव्रत
भगवंत को वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार करके फिर वे
अपने प्रधान हस्ती पर आरुढ़ हुए । और आरुढ़ होकर शीघ्र जहाँ
लवणसमुद्र का वेलातट था -वहाँ पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने लवण-
समुद्र के बीच से होकर जाते हुए कृष्णवासुदेव की श्वेत पीत ध्वजाओं
के अग्रभाग को देखा देखकर तब मनमें विचार-किया ये ही मेरे जैसे
उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव लवणसमुद्र के बीच से होकर जा रहे हैं-
ऐसा विचार कर उन्होंने अपने पांचजन्य शंख को उठाया और उठा-
कर उसे अपने मुख की वायु से पूरित किया (तएणं से कण्हे वासुदेवे
कविलस्स वासुदेवस्स संखसहं आयन्नेइ, आयन्नित्ता, पंचजन्ने, जाव
पूरियं करेइ, तएणं दो वि वासुदेवा संखसहसामायारिं करेइ, तएणं

लवणसमुद्रं मज्झं मज्जेणं वीइवयइत्ति कहु पंचजनं संखं परामुसइ परामुसित्ता
मुहवायपूरियं करेइ)

आ रीते प्रभुनी आत्ता सांखणीने ते कपिल वासुदेवे ते प्रभु मुनिसुव्रत
भगवंतने वंदन अने नमस्कार कर्था. वंदन अने नमस्कार करीने तेओ पोताना
प्रधान हाथी उपर सवार थया अने सवार थधने जह्दी जयां लवण समु-
द्रने किनारे हतो त्यां पछोन्थ्या. त्यां पछोन्थीने तेमणे लवणसमुद्रनी वन्थे
थधने पसार थता कृष्णवासुदेवनी सहेइ-पीणी ध्वजयोना अग्रभागने नेथे
अने नेधने मनमां विचार कथे के मारा जेवा उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव
ओ ज छे के जेओ लवण-समुद्रनी वन्थे थधने पसार थध रक्षा छे. आम
विचार करीने तेमणे पांच जन्य शंखने उठाओ अने उठावीने पोताना मुणना
पवनथी तेने पूरित कर्था.

(तएणं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसहं आयन्नेइ, आय-
न्नित्ता, पंचजनं जाव पूरियं करेइ तएणं दो वि वासुदेवा संखसहं सामायारिं
करेइ, तएणं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

अमरकङ्कासंभृतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५४१

ततस्तदनन्तरं स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यामरकङ्का राजधानीं संभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवादीत्—किं—कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकंका संभग्नतोरणा यावत्—सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिलं वासुदेवमेवमवादीत्—एवं खलु हे स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन 'तुम्हे परिभूए' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् सन्निपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेजेव अमरकंका तेजेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्ता अमरकंका रायहाणि संभग्नतोरणं जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी) तब कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शंख शब्द को सुना सुनकर उन्होंने ने भी पांचजन्य शंख को अपने मुख की वायु से पूरित किया—बजाया—इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न मिलकर शंख के शब्द से परस्पर में मिले । अब वे कपिल वासुदेव जहां वह अमरकंका नगरी थी वहां आये । वहां आकर उन्होंने अमरकंका राजधानी को संभग्न तोरण आदि वाला देखा । देखकर तब पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा—(किण्णं देवाणुप्पिया ! ऐसा अमरकंका संभग्न जाव सन्निवइया ? तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु सामी ? जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुम्हे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकंका नगरी क्या कारण है—जो

अमरकंकारायहाणि संभग्नतोरणं जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी)

अथारे कृष्णवासुदेवे कपिल वासुदेवना श'भने भवनि सांलउथो त्यारे तेमछे पथु येताना पांचजन्य श'भने भुभना पवनथी पूरित कुर्यो अने वगाउथो. आ रीते तेओ भ'ने वासुदेव प्रत्यक्ष रीते नडि पथु श'भना भवनिथी परस्पर भल्या. त्यारपछी ते कपिल वासुदेव भ्यां ते अमरकंका नगरी छती त्यां आल्या. त्यां आवीने तेमछे अमरकंका राजधानीने धनयो वजे-रेथी नष्ट थयेली जेछ, जेछने तेमछे पद्मनाभ राजने आ प्रभाछे कछुं के—

(किण्णं देवाणुप्पिया ऐसा अमरकंका संभग्न जाव सन्निवइया ? तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुम्हे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया)

તતઃ खलु स कपिलो वासुदेवः पद्मनाभस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा पद्मनाभम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हं भो ! पद्मनाभ ! अप्रार्थितं प्रार्थित ! =मरण-वाञ्छक !, किं खलु त्वं न जानासि मम सदृशपुरुषस्य वासुदेवस्य त्रिपियं=विरुद्धं कुर्वत् !, इत्युक्त्वा आश्रुस्तः=शीघ्रं क्रोधाऽऽक्रान्तः, यावत् पद्मनाभं ' निष्पियं ' निर्विषयं=विषयात् स्वराज्याद् निर्गतं-निष्कासितं कर्तुम् ' आणवेह ' आज्ञापयति पद्मनाभस्य पुत्रममरकङ्काराजधान्यां महता महता राज्याभिषेकेण अभिविञ्चति,

સંભગ્ન તોરણ આદિ ચાલી હોકર ભૂમિસાન્ હો ગઈ હૈ । તથ પદ્મનાભ રાજા ને ડસ કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા-હે સ્વામિન્ । હસકા કારણ હસ પ્રકાર હૈ-જંબૂદ્વીપ નામ કે પ્રથમ દ્વીપ સે ભરતક્ષેત્ર સે યહાં બહુત હી શીઘ્ર ઓકર કૃષ્ણ વાસુદેવ ને ઓપકી કુછ ભી પરવાહ ન કરકે-કપિલ વાસુદેવ હમારી કુછ ભી હાનિ નહીં કર સકતે હૈ-એસા અપને મન મેં સમજ કરકે-અમરકંકા મેં આકર-ડસે પહિલે સંભગ્ન તોરણ ચાલી કિયા-ઑર બાદ મેં વિઘ્વસ્તકર દિયા । (તણં સે કવિલે વાસુદેવે પડમણાહસ્સ અંતિદ એયમટ્ટં સોચ્ચા પડમણાહં એવં વચાસી) તથ પદ્મનાભ રાજા કે મુખ સે હસ સમાચાર કો સુનકર કે ડસ કપિલ વાસુદેવ ને ડસ પદ્મનાભ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(હં ભો ! પડમ-ણાભા ! અપત્થિયપત્થિયા ! કિન્નં તુમં ન જાણાસિ મમ સરિસપુરિસ-સ્સ કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ ત્રિપિયં કરેમાણે ? અસુરુત્તે જાવ પડમણાહં નિષ્પિયં આણવેહ, પડમણાહસ્સ પુત્તં અમરકંકા રાયહાણીએ મહ્યા

હે દેવાનુપ્રિય ! શા કારણથી આ અમરકંકા નગરીની ધન્યો વગેરે પણ તૂટી ગઈ છે અને સંપૂર્ણ નગરી વિનષ્ટ થઈ ગઈ છે । ત્યારે પદ્મનાભ રાજાએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! વાત એવી છે કે જંબૂદ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપના ભરતક્ષેત્રથી અહીં બહુ જ જલ્દી આવીને કૃષ્ણવાસુદેવે તમારી જરાએ દરકાર કર્યા વગર “ કપિલ વાસુદેવ અમારું કંઈ જ કરી શકશે નહિ ” આ જાતનો પોતાના મનમાં વિચાર કરીને પહેલાં તે અમરકંકાના તોરણો નષ્ટ કર્યાં અને ત્યારપછી આ નગરીને પણ જમીનદોસ્ત કરી નાખી છે । (તણં સે કવિલે વાસુદેવે પડમણાહસ્સ અંતિદ એયમટ્ટં સોચ્ચા પડમણાહં એવં વચાસી) ત્યારે પદ્મનાભ રાજાના મુખથી આ બધી વિગત સાંભળીને તે કપિલવાસુદેવે તે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(હં ભો ! પડમણાભા ! અપત્થિયપત્થિયા ! કિન્નં તુમં ન જાણાસિ મમ સરિસ પુરિસસ્સ કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ ત્રિપિયં કરેમાણે ? અસુરુત્તે જાવ પડમણાહં નિષ્પિ-

अमरारक्षमांमृतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५४३

यावत् प्रतिगतः=पद्मनाभस्य पुत्रं राज्येऽभिषिच्य कपिलवासुदेवो यस्यादिशः
मादुर्भूतस्तां दिशं प्रतिगत इति भावः ॥ सू० ३० ॥

मूलम्—तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुदं मज्झं मज्झेणं
वीइवयइ, तं पंच पंडवे एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवानु-
प्पिया ! गंगामहानइ उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणा-
हिवइं पासामि, तए णं तं पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं
वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानइ तेणेव उवागच्छंति उवाग-
च्छित्ता एगट्ठियाए नावाए मग्गणगवेसणं करेति करित्ता एग-
ट्ठियाए नावाए गंगामहानइ उत्तरंति उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं
वयंति—पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगामहाणइं बाहाहिं
उत्तरित्ताए उदाहु णो पभू उत्तरित्ताएत्ति कट्टु एगट्ठियाओ नावाओ

महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव पडिगए) अरेओ मरणवाञ्छक
पद्मनाभ ! मेरे जैसे पुरुष कृष्ण वासुदेव का विप्रिय-अनिष्ट-करते हुए
तुमने मेरा कुछभी ख्याल नहीं किया ? इस प्रकार कह कर वे उस पर
बहुत अधिक कुपित हो गये । यावत् उस पद्मनाभ राजा को उन्हों ने
अपने देश से बाहिर भी निकाल दिया । तथा-उसका जो पुत्र सुनाभ
था । उस को बड़े भारी उत्सवके साथ राज्य में अभिषिक्त किया । इस
प्रकार पद्मनाभ के पुत्र को राज्य में अभिषिक्त करके वे कपिल वासु-
देव जिस दिशासे आये थे उस दिशाकी ओर वापिस चले गये ॥ सू० ३० ॥

सयं आणवेइ, पउमणाइस्स पुत्तं अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसे-
एणं अभिसिंचइ, जाव पडिगए)

अरे, ओ मृत्युने छञ्छनार पद्मनाभ ! भास जेवा पुरुष कृष्णवासुदेवतुं
पुइ करतां ते भारी पणु दरकार करी नहि ? आ प्रभावे छडीने तेओ भूअअ
छेधित थछ गया. यावत् ते पद्मनाभ राजने पोताना देशथी अहार पणु नसाडी
भूक्यो. त्यारपछी तेना पुत्र सुनाभने भारे उत्सवनी साथे राअ्याभिषेक क्यो.
आ रीते पद्मनाभना पुत्रने राअ्याअने अक्षिषिक्त करीने कपिल वासुदेव जे
दिशा तरक्षी आअ्या हुता ते दिशा तरक्ष पाछा अता रहा. ॥ सूत्र ३० ॥

णूमेति णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणार चिट्ठंति, तएणं
 से कणहे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ पासित्ता जेणेव
 गंगामहाणइं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ
 समंता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए
 बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेणहइ एगाए बाहाए गंगं महाणइं
 वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिन्नं उत्तरिउं पयत्ते यावि
 होत्था, तएणं से कणहे वासुदेवे गंगामहाणइं बहुमज्झदेस-
 भागं संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था
 तएणं कणहस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अब्झत्थिए जाव
 समुप्पज्जित्था अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगा-
 महाणइं वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा बाहाहिं
 उत्तिण्णा, इत्थं भूएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव
 णो पडिसेहिए, तएणं गंगादेवी कणहस्स वासुदेवस्स इमं एया-
 रूवं अब्झत्थियं जाव जाणित्ता थाहं वितरइ, तएणं से कणहे
 वासुदेवे सुहुत्तंतरं समासासइ समासासित्ता गंगामहाणइं बावट्ठिं
 जाव उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ उवा-
 गच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी-अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया !
 महाबलवगा जेणं तुब्भेहिं गंगामहाणइं वासट्ठिं जाव उत्तिण्णा,
 इत्थं भूएहिं तुब्भेहिं पउमं जाव णो पडिसेहिए, तएणं ते पंच
 पंडवा कणहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं
 वयासी-एवं खल्ल देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा

अमगारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० अ० १६ त्रौपदीचरितनिरूपणम्

५४५

जेणेव महाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्टियाए
सग्गणगवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो
तएणं से कणहे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोच्चा
णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवालियं एवं वयासी-अहो णं जया
मए लवणसमुद्धं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्णं वीइवइत्ता
पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्गं दोवई
साहार्थि उवणीया तथा णं तुब्भेहिं मम महप्पं ण विण्णायं
इयाणि जाणिस्सहत्तिकट्ठु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं
रहे चूरेइ चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ णं रह
मइणे णामं कोड्डे णिव्विट्ठे, तएणं से कणहे वासुदेवे जेणेव सए
खंधावारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं
अभिसमन्नागए यावि होत्था, तएणं से कणहे वासुदेवे जेणेव बार-
वई णयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अणुपविसइ ॥सू० ३१॥

टीका—‘ तएणं से इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स कृष्णो वासुदेवो लवण-
समुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजति=गच्छति व्यतिव्रज्य तान् पञ्च पाण्डवान् एव-
मवादीत-गच्छत खलु यूयं हे देवानुमियाः ! गङ्गामहानदीमुत्तरत्त=उत्तीर्णा भवत,

तएणं से कणहे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणहे वासुदेवे) उन कृष्णवासुदेवने
(लवणसमुद्धं) जब लवण समुद्र में (मज्झं मज्झेणं वीइवइ) बीच से
होकर वे चले जा रहे थे । (ते पंच पंडवे एवं वयासी) तब पांच पांडवों
से ऐसा कहा—(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । गंगामहानइ उत्तरइ जाव

तएणं से कणहे वासुदेवे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्या२५४ (से कणहे वासुदेवे) ते कृष्णवासुदेवे (लवणसमुद्धं)
हे व्या२ तेआ लवण समुद्रनी (मज्झं मज्झेणं वीइवइ) वर्ये थपने पसार
थता उता त्या२ (ते पंच पंडवे एवं वयासी) पांथे पांडवाने आ प्रभावे
कथुं (गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया । गंगा महानदि उत्तरइ जाव ताव अहं सुट्ठियं

यावत् तावदहं सुस्थितं देवं लवणाधिपतिं पश्यामि, सुस्थितेन देवेन सह मिलित्वा तमापृच्छयागच्छामि, ततः खलु ते पञ्चपाण्डवा कृष्णेन वासुदेवेन एवमुक्ताः सन्तो यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' एगद्वियाए ' एकार्थि-कायाः=महानौकासमानकार्यकारिण्याः ' णावाए ' नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं कुर्वन्ति । कृत्वा=मार्गणगवेषणं कृत्वा नौकायामारुह्य ते पञ्च पाण्डवा एकार्थि-कया नावा गङ्गामहानदीं मुत्तरन्ति, उत्तीर्य अन्योन्यम्=परस्परमेव वदन्ति-' पहू ' मभुः=समर्थः, खलु हे देवानुप्रियाः ! कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानदीं ' बाहार्हि ' बाहुभ्यां=भुजाभ्याम् ' उत्तरित्तए ' उत्तरीतुम् ' उदाहु ' उताहो-अथवा नो

ताव अहं सुद्वियं लवणाहिवं पासामि) हे देवानुप्रिया ! तुमलोग जाओ-और गंगानदी को पार करो तबतक मैं लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर और उनकी आज्ञा लेकर आता हूँ । (तएणं ते पंच पंडवा कण्हेण वसुदेवेण एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगद्वियाए णावाए मग्गणगवेसणं करंति, करित्ता एगद्वियाए गंगामहानई उत्तरंति) इस तरह कृष्ण वासु-देव द्वारा कहे गये वे पांचों पांडव जहां गंगा महानदी थी-वहां आये । वहां आकर के उन्होंने एकार्थिक-महानौकासे जैसी कार्य साधक-नौका मार्गणा एवं गवेषणा की, मार्गणा गवेषणा कर के वे पांचों पांडव नौका पर चढ़ गंगा महानदीसे पार हो गये । (उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूणं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगा महानई बाहार्हि उत्तरि-

लवणाहिवं पासामि) हे देवानुप्रिया ! तमे बोडो हवे जेओ अने गंगा नदीने ओणगे त्यांसुधी हुं लवणु समुद्रना अधिपति सुस्थित देवने मणीने अने तेमनी आज्ञा प्राप्त करीने आवुं छुं.

(तएणं ते पंच पंडवा कण्हेण वसुदेवेण एवं वुत्ता समाणा, जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगद्वियाए णावाए मग्गणगवेसणं करंति, करित्ता एगद्वियाए नावाए गंगा महानई उत्तरंति)

आ रीते कृष्णवासुदेव वडे आज्ञापित थयेला ते पांचे पांडवो ज्यां गंगा महा नदी छती त्यां आव्या. त्यां आवीने तेमणे ओकार्थिक महानौका जेवी काममां आवी शके तेवी नौकानी भागंछा तेमज गवेषणा करी. भागंछा तेमज गवेषणा करीने ते पांचे पांडवो नौका छपर सवार थडने गंगा महा नदीने पार छतरी गया.

(उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूणं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगा-

भैरवगारधमोमृतवर्षिणी टी० ७० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणं

५४७

मभुः=समर्थ उत्तरीतुम्, इति कृत्वा गङ्गामहानद्या बाहुभ्यामुत्तरणे कृष्णवासु-
वदेस्य सामर्थ्यमस्ति, नास्ति वा तद् विजानामीति विचार्य एकार्थिकां नावं=
नौकां 'णूमेति' गोपयन्ति । गोपयित्वा कृष्णं वासुदेवं 'पडिवालेमाणा' प्रति-
पालयन्तः=प्रतीक्षमाणाः तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थितं देवं
लवणाधिपतिं पश्यति=सुस्थितेन साकं मिलति दृष्ट्वा तमापृच्छथ यत्रैव गङ्गामहा-
नदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एकार्थिकाया नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं
करोति, कृत्वा, एकार्थिकां नावमपश्यन् एकेन बाहुना रथं सतुरगं=सहाश्वं,

ए ए उदाहुणो पभू उत्तरिस्स ए त्तिकट्टु एगट्ठियाओ णावाओ णूमेति,
णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवाले माणा २ चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासु-
देवे सुट्ठियं लवणाहिबइं, पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव
उवागच्छइ) जब पार होकर वे तट पर पहुँच चुके-तब परस्पर में
उन्होंने ने ऐसा विचार किया-हे देवानुप्रियो ! देखो कृष्ण वासुदेव गंगा
महानदी को हाथों से तैरकर पार करने में समर्थ हो सकते हैं
या नहीं हो सकते हैं ? इस प्रकार विचार करके उन्होंने ने उस एकार्थि
नौका को कृष्ण वासुदेव के आने के लिये वापिस उस पार भेजा नहीं
वहीं पर छिपा दिया । और छिपाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा करते
वे वहीं ठहरे रहे । उधर-कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित
देव से जाकर मिले और उसकी आज्ञा लेकर जहाँ गंगा नदी थी वहाँ
आये । (उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेई,
करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ

महानई बाहाहिं उत्तरित्तेए, उदाहु णो पभू उत्तरित्तेए त्तिकट्टु एगट्ठियाओ णावाओ
णूमेति, णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा २ चिट्ठंति, तए णं से कण्हे वासुदेवे
सुट्ठियं लवणाहिबइं, पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ)

पार उतरीने न्यारे तेओ किनारे पडोथी गया त्यारे तेभळे परस्पर
विचार कर्यो के हे देवानुप्रियो ! कृष्णवासुदेव गंगा महानदीने हाथो वडे
तरीने पार करी शके के नहि ? आम विचार करीने तेभळे ते 'ऐकार्थि'
नौकाने कृष्णवासुदेवने लाववा माटे पाछी भेकडी नहि पथु त्यांज छुपावी
दीधी. अने छुपावीने तेओ त्यांज कृष्णवासुदेवनी प्रतीक्षा करता रोकाई गया.
कृष्णवासुदेव लवण समुद्राधिपति सुस्थितदेवने भज्या अने तेनी आज्ञा प्राप्त
करीने न्या गंगा नदी छती त्यां आल्या.

(उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता
एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए

૫૪૮

જાતાધર્મકથાક્રસ્થે

સસારથિં યુક્તાતિ એકેન બાહુના ગજ્ઞાં મહાનદીં 'વાસટ્ઠિં' દ્વાપઠ્ઠિં યોજનાનિ અર્ધયોજનં ચ 'વિત્થિન્નં' વિસ્તીર્ણમ્, ઉત્તરિતું પ્રવૃત્તશ્ચાપ્યભવત્, તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવો ગજ્ઞામહાનદ્યાં બહુમધ્યદેશભાગં સંપ્રાપ્તઃ સન્ 'સંતે' શ્રાન્તઃ=શ્રમંપ્રાપ્તઃ, 'તંતે' તાન્તઃ=સ્થિન્નઃ 'પરિતંતે' પરિતાન્તઃ=પર્વથા સ્થિન્નઃ 'બદ્ધ-સેષ' સંપ્રાપ્તસ્વેદઃ, જાતશ્ચાપ્યભવત્ ।

તતઃ સ્વલુ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્થાયમેતદ્દૂપ આધ્યાત્મિકો યાવત્ મનોગત સંકલ્પઃ સમુદપધત-અહો સ્વલુ પશ્ચ પાણ્ડવા મહાવલ્લવન્તઃ, યૈર્ગજ્ઞામહાનદી દ્વાપઠ્ઠિં યોજનાનિ અર્ધયોજનં ચ વિત્થિના-વિસ્તીર્ણાં બાહુભ્યામુત્તીર્ણાં, 'ઇત્થંભૂર્ણિ' ઇત્થંભૂતૈઃ-ઈદૃશપરાક્રમશાલિભિઃ સ્વલુ પશ્ચભિઃ પાણ્ડવૈઃ પદ્મનાભો રાજા યાવત્ નો

૧ગા૧ બાહા૧ ગંગં મહાણઈં વાસટ્ઠિં જોયણાઈં અદ્વજોયણં ચ વિચ્છિન્નં ઉત્તરિપયસે યાવિ હોત્થા) વહાં આકર કે ઉન્હોં ને ૧કાર્થિક નૌકા કી સઘ તરફ સઘ પ્રકારસે માર્ગંગા ગવેષણા કી 'માર્ગંગાગવેષગ કરકે જબ ઉનકે દેસવને મેં ૧કાર્થિક નૌકા નહીં આઈ, તથ સારથિ ઔર ઘોડોં સે યુક્ત રથ કો ઉન્હોં ને ૧ક હાથ સે પકડા ઔર ૧ક હાથ સે ૬૨॥, સાઢે વાસઠ, યોજન વિસ્તીર્ણાં ઉસ ગંગા મહાનદી કો તૈરકર પાર કરના પ્રારંભ કિયા । (ત૧ણં સે કળ્હે વાસુદેવે ગંગા મહાણઈ૧ બહુમજ્જદેસ-ભાગં સંપત્તે સમાણે સંતે, તંતે, પરિતંતે, બદ્ધસે૧ જા૧ યાવિ હોત્થા, ત૧ણં કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ ઈમે ૧યારુવે અજ્ઞસ્થિ૧ જાવ સમુપ્પજ્જિત્થા -અહોણં પંચ પંડવા મહાવલ્લવગા, જેહિં ગંગામહાણઈં વાસટ્ઠિં જોયણાઈં અદ્વજોયણં ચ વિચ્છિણ્ણા બાહાહિં ઉત્તિણ્ણા ઇત્થંભૂર્ણિ ણં પંચહિં પંડ-

ગંગં મહાણઈં વાસટ્ઠિં જોયણાઈં અદ્વજોયણં ચ વિચ્છિન્નં ઉત્તરિપયસે યાવિ હોત્થા)

ત્યાં આવીને તેમણે 'એકાર્થિક' નૌકાની યોગેર બધી રીતે માર્ગંગા ગવેષણા કરી. માર્ગંગા તેમજ ગવેષણા કરીને જ્યારે 'એકાર્થિક' નૌકા તેમના જોવામાં આવી નહિ ત્યારે સારથિ અને ઘોડાથી યુક્ત રથને તેમણે એક હાથમાં ઊપાડ્યો અને એક હાથ વડે ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણાં તે ગંગા મહા નદીને તરીને પાર કરવા લાગ્યા.

(ત૧ણં સે કળ્હે વાસુદેવે ગંગા મહાણઈ૧ બહુમજ્જદેસ ભાગં સંપત્તે સમાણે સંતે, તંતે, પરિતંતે, બદ્ધસે૧ જા૧ યાવિ હોત્થા, ત૧ણં કળ્હસ્સ વાસુદે વસ્સ ઈમે ૧યારુવે અજ્ઞસ્થિ૧ જાવ સમુપ્પજ્જિત્થા-અહોણં પંચ પંડવા મહાવલ્લવગા જેહિં ગંગા મહાણઈં વાસટ્ઠિં જોયણાઈં અદ્વજોયણં ચ વિચ્છિણ્ણા બાહાહિં ઉત્તિણ્ણા ઇત્થં

जेनमारबेमामृतवर्षिणी दी० अ० १६ द्रौपदीवरितनिरूपणम्

५५९

प्रतिषेधितः=नो पराजितः, इदमाश्चर्यम्, ततः खलु गङ्गादेवी कृष्णस्य वासुदेवस्य इममेतद्रूपमाध्यात्मिकं यावत् मनोगतं संकल्पं ज्ञात्वा 'थाहं' स्ताप्यं-गांधर्वित-रति,=ददाति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो ब्रह्मर्तान्तरे 'समासासह' समाश्व-सिति-विश्रामं प्राप्नोति समाश्वस्य गङ्गामहानदीं द्वाषष्टिं यावद् उत्तरति, उत्तीर्य

बेहि पञ्चमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएणं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारुवं अज्झस्थिए जाव जाणित्ता थाहं वितरइ) तैरते २ जष बे कृष्णवासुदेव गंगा महानदी के ठीक मज्झ-मध्य भाग में आये-तब वहां तक आते २ बे श्रम प्राप्त हो गये, खेदखिन्न बन गये, और सर्वथा थक गये। यहां तक कि उनके शरीर भर में थकावट की बजह से पसीना २ हो गया। तब उन कृष्णवासुदेव को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ। देखी-ये पांचो पांडव बड़े बलिष्ठ हैं-जिन्होंने ने ६२॥, योजन विस्तीर्ण इस गंगा महा-नदी को हाथों से तैरकर पार कर दिया परन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात हैं-कि ऐसे पराक्रम से युक्त होते हुए भी इन पांडवों से वह पद्मनाभ राजा प्रतिषेधित नहीं हो सका-जीता नहीं जा सका। इस प्रकार के उन कृष्णवासुदेव के इस रूप इस आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प को गंगादेवी ने जानकर उन्हें थाह दे दी (अधार दिया)। (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुहुत्तंत्तरं समासासह) थाह प्राप्त कर कृष्णवासुदेव ने वहां भूएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पञ्चमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएणं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारुवं अज्झस्थिए जाव जाणित्ता थाहं वितरइ)

तरतां तरतां ज्यारे कृष्णवासुदेव गंगा महानदीना अेकहम मध्यमां आन्धा-त्यांसुधी आवतां आवतां तो तेजो थाकी गया, जेदगिन्न थर्ध गया, अने अेकहम थाकी गया। थाकने लीधे तेमनुं संपूषुं शरीर परसेवाथी तरयेण थर्ध गयुं। त्यारे ते कृष्णवासुदेवने आ जतने। आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उद्भवयो के लुज्यो आ पांचे पांडवो केटला अधा भलिष्ठ छे के जेमले ६२" योजन विस्तीर्ण आ गंगा महानदीने लाथो वडे तरीने पार करी छे पषु जेनी साथे आ पषु अेक नवारि जेवी वात छे के जेवा पराक्रमी होवा छतांजे आ पांडवोथी ते पद्मनाभ राज यावत् पराजित करी सकाये। नहि। कृष्णवासुदेवना गंगा महानदीअे आ जतना आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प जालीने तेमना भाटे थाड आपी। (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुहुत्तंत्तरं समासासह) थाड जेजवीने कृष्णवासुदेवे थोडीवार त्यां विश्राम क्यो (समासा०) विश्राम क्यो आड तेमले

યજૈવ પશ્ચ પાણ્ડવાસ્તર્જીવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પશ્ચ પાણ્ડવાન્ એવમવાદીત—
 અહો खलु यूयं हे देवानुप्रियाः । महाबलवन्तः येन युष्माभिर्गङ्गा महानदी द्वाषष्टि
 योजनानि अर्धयोजनं च विस्तीर्णा यावद् उत्तीर्णा, इत्थंभूतैर्युष्माभिः पद्म-
 नाभो यावत् नो प्रतिषेधितः पराजयं न प्रापितः, ततः खलु ते पश्च पाण्डवाः
 थोड़ी देर तकविश्राम किया (समासा०) विश्राम करके फिर उन्होंने (गंगा
 महाणई बावट्टि जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पंचपंडवा तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी-अहोणं तुम्हे देवाणुप्पिया ! महा-
 बलवगा जेणं तुम्हेहिं गंगा महाणई वासट्टि जाव उत्तिण्णा, इत्थंभूएहिं
 तुम्हेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएणं ते पंचपंडवा कण्हे णं वासु-
 देवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-
 प्पिया ! अम्हे तुम्हेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणई तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्टियाए मग्गणगवेसणं तं चेव जाव
 णूमेमो तुम्हे पडिवाले माणा चिट्ठामो) सांढे बासठ योजन विस्तीर्ण
 उस गंगा महानदी को तैरकर पार कर दिया । पार करके फिर वे वहां
 आये-जहाँ ये पाँचो पांडव थे ! वहाँ आकर उन्होंने ने उन पाँचो पांडवों
 से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुमलोग बहुत ही अधिक बलशाली
 हो जो तुमलोगों ने ६२½ योजन विस्तीर्ण इस गंगा महानदी को बाहुओं
 से तैरकर पार कर दिया । परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि इतने बल-
 शाली होकर भी जो तुम से पद्मनाभ राजा पराजित नहीं हो सका ।

(गंगा महाणई बावट्टિ जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी-अहोणं तुम्हे देवाणुप्पिया !
 महाबलवगा जेणं तुम्हेहिं गंगा महाणई वासट्टि जाव उत्तिण्णा इत्थं भૂएहिं तुम्हेहिं
 पउमं जाव णो पडिसेहिए, तएणं ते पंच पंडवा कण्हे णं वासुदेवेणं एवं वुत्ता
 समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुम्हेहिं विस-
 ज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्टियाए
 मग्गण गवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुम्हे पडिवाले माणा चिट्ठामो)

૬૨” યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગંગા મહાનદીને તરીને પાર પહોંચી ગયા
 પાર પહોંચીને તેઓ જ્યાં પાંચે પાંડવો હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે
 પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો
 કેમકે તમે હોકોએ ૬૨” યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગંગા મહાનદીને હાથે વડે
 તરીને પાર કરી છે. પણ એની સાથે આ એક નવાઈ જેવી વાત છે કે તમે
 આટલા બધા બળવાન હોવા છતાં પણ પદ્મનાભ રાજાને હરાવી શક્યા નહિ.

कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—एवं खलु हे देवानु-
प्रियाः ! वयं युष्माभिर्विसर्जिताः सन्तो यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैवोपागच्छामः,
उपागत्य 'एगट्टियाए' एकार्थिकाया नावो मार्गणगवेषणं कृत्वा 'तं चेव
जाव णूमेमो' तदेव=यदुक्तं पूर्वं तदेवात्र बोध्यमित्यर्थः—तां नावमधिरुह्य वयं
गङ्गामहानदीमुत्तीर्णाः, ततः खलु हे देवानुप्रियाः ! गङ्गां महानदीं बाहुभ्या-
मुत्तरितुं भवन्तः शक्नुवन्ति नवा, इति ज्ञातुं वयमेकार्थिकां नौकां यावद् 'णूमेमो'
गोपयामः, युष्मान् 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः—प्रतीक्षमाणा वयं तिष्ठामः ।

ततः खलु स कृष्णो वामुदेवस्तेषां पञ्चानां पाण्डवानाम् एतमर्थं श्रुत्वा
आकर्ण्य निश्चयं हृद्यवधार्य आशुरुक्ताः—शीघ्रं संजातकोपः, यावत् त्रिवलिकां=रेखा-

इस प्रकार जब कृष्णवासुदेवने उन पांचो पांडवों से कहा तब उन्होंने ने
कृष्णवासुदेव से ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! सुनिये—बात इस प्रकार है
जब हमलोगों को आपने वहां से विसर्जित कर दिया—तब हमलोग
जहां गंगा महानदी थी—वहां आये—वहां आकर हमलोगों ने एकार्थिक
नौका की मार्गणा गवेषणा की—नाव के मिलते ही हमलोग उसपर चढ़-
कर यहाँ गंगा नदी को पार कर आये हैं । हमलोगों ने यहाँ आकर
फिर हे देवानुप्रिय ! ऐसा विचार किया — कि — कृष्णवासुदेव गंगा
महानदी को हाथों से पार कर सकते हैं या नहीं—इसी बात को जानने
के लिये हमलोगों ने उस एकार्थिक नौका को यहीं छिपा कर रख दिया
है । और आपकी प्रतीक्षा में यहाँ ठहरे हुए हैं । (तएणं से कण्हे वासु-
देवे तेसि पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिव-

आ रीते न्यारे कृष्णवासुदेवे ते पांचे पांडवोने कहुं त्थारे तेभण्णे कृष्णवासु-
देवने आ प्रभाण्णे कहुं के हे देवानुप्रिय ! सांभणो, बात ऐवी छे के अभने
अधाने तमे न्यारे विदाय कयां त्थारे अभे लोके। न्यां गंगा महानदी इती
त्यां आब्या। त्यां आवीने अथाअे अेकार्थिक नौकानी मार्गणा गवेषणा करी।
नौका प्राप्त यतां न अभे अथा तेमां ऐसीने गंगा महानदीने पार करीने आ
तरङ्ग आवी गया। आ तरङ्ग आवीने हे देवानुप्रिय ! अभे लोकेअे आ प्रभाण्णे
विचार कर्यो के—कृष्णवासुदेव गंगा महानदीने हाथो वडे तरीने पार करी शकथे
के केम ? आ बात अणुवा भाटे न अभे लोकेअे ते अेकार्थिक नौकाने छुपावीने
तभारी प्रतीक्षा करतां अभे अहीं न ऐसी रह्यां इता।

(तए णं से कण्हे वासुदेवे तेसि पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म
आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं वयासी—अहोणं जया मए कवणसमुहं दुवे जोयण

त्रयुक्तां भ्रुकुटिं ललाटे उन्नीय प्रदर्श्य, एवमवादीत्-अहो-आश्चर्यं खलु 'जया यदा-यस्मिन् समये, मया लवणसमुद्रं' दुवे जोयणसयमहस्ता वित्थिणं 'द्वियो-जनशतसहस्रविस्तीर्णं द्विलक्षयोजनपरिमितं विस्तीर्णं 'वीश्वइत्ता' व्यतिव्रज्य-समुल्लङ्घ्य, पद्मनाभं राजानं 'हयमहिय-जाव पडिसेहिता' इतमथित-यावत्

लियं एवं वयासी-अहोणं जया मए लवणसमुद्रं दुवे जोयणसयमहस्ता विच्छिन्नं वीश्वइत्ता पउमणामं हयमहिय जाव पडिसेहिता अमरकंका संभग० दोवई साहसिं उवणीया तथा णं तुम्हेहिं मम माहपं ण वि-ण्णायं इयाणिं जाणिस्सह, त्ति कट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंड-वाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिविसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ णं रह-महणे णामं कोइडे णिवेडे, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धि अभिसमन्ना-गए यावि होत्था, से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवईए णयरी तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ) उन पांचो पांडवों के मुख से इस कथन रूप अर्थ को सुनकर और उसे अपने हृदय में अवधारित कर उन कृष्णवासुदेव को इकदम क्रोध आ गया। त्रिवलियुक्त उनकी दोनों भ्रुकुटियां ललाटतट पर चढ़ गईं। उसी समय उन्होंने उन पांडवों से कहा यह बड़े आश्चर्य की बात है-जिस समय मैंने २ दो लाख योजन विस्तारवाले लवणसमुद्र को उल्लंघन कर पद्मनाभ राजा को संग्राम में जीता-उस की सेना को हत मथित किया-राजचिन्हस्वरूप उसकी

सयसहस्ता विच्छिन्नं वीश्वइत्ता पउमणामं हय महिय जाव पडिसेहिता अमर-कंका संभग० दोवई साहसिं उवणीया तथाणं तुम्हेहिं मम माहपं ण विण्णायं इयाणिं जाणिस्सह, त्ति कट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिविसए आणवेइ आणवित्ता तत्थणं रहमहणे णामं कोइडे णिवेडे, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधा-वारेणं सद्धि अभिसमन्नागए यावि होत्था तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवइ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ)

ते पांचे पांडवोना भुभथी आ कथनइय अर्थने सांखणीने अने तेने पोताना हुइयमां अवधारित करीने ते कृष्णवासुदेव अकदम क्रोधाविष्ट थय गया। त्रिवलियुक्त तेमना अने लभभरो वड थय गया। तेमणे तेन समये पांडवोने आ प्रभाणे कहुं के आ भरेभर नवाध जेवी वात छे के न्यारे मे २ लाख योजन विस्तीर्ण लवण समुद्रने ओणजीने पद्मनाभ राजने युद्धमां लुत्थो, तेनी सेनाने मथी नाभी, राजचिह्न स्वरूप तेनी प्रशस्त ध्वज पताकाओने

अमरकंका नगरी स्थापितकथिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५५३

प्रतिषेध्य-इतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकं यावत् प्रतिषेध्य = संग्रामात् प्रतिनिवर्त्य-पश्चान्नामं विजित्येत्यर्थः, अमरकंकां राजधानीं संभनतोरणा यावद् विनिपातिता-विध्वंसिता, तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=भवद्भयः पदत्ताः, 'तयाणं' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माहृष्यं' माहात्म्यं=महत्त्वं बलं, 'ण विष्णायं' न विज्ञातम् 'इयाणि' इदानीम्-अस्मिन् समये 'जाणि-स्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्डं 'परामुसइ' परामुशति-गृह्णाति पञ्चानां पाण्डवानां रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिविसए आणवेइ' निर्विषयान् आज्ञापयति-धिपयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्याता इति निर्विषयास्तान्, यूयं मम देशात् निर्विगच्छत, इत्याज्ञापयति स्म 'इत्यर्थः। आज्ञाप्य तत्र खलु 'रथमदणे णामं कोट्टे णिविट्ठे' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्टः-रथमर्दनपुरं नाम नगरं स्थापितम्।

ततस्तदनन्तरं स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वकः=निजः, 'खंधावारे' स्कन्धावारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-सैनिकेन सार्धम् अभिसमन्वागतः=मिलितश्चाप्यभवत्। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुमन्त्रिषति ॥सू० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी अमरकंका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने हाथ से लाकर तुम लोगों को दिया उस समय तुम लोगों ने मेरे बल को नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह दंडे को उठाया-और उससे पांचों पाण्डवों के रथों को चूर २ कर दिया। चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी। आज्ञा देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा दिया। इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कंधावार या चर्हा

जमीनहोस्त करी नाणी तेनी राजधानी अमरकंका नगरीने नष्ट करी नाणी अने तेनी पासेथी द्रौपदीने लारीने तभने सोपी दीधी ते वप्पते तमे लोका भारा अजने लणी शक्या नहि तो डवे भारा अजने तमे गुण्यो-आम कहीने ते कृष्णवासुदेवे लोहदंडने हाथमां दीधा अने तेनाथी तेमणे पांचे पांडवोना रथोना लूकेलूका उडावी दीधा. रथोने नष्ट करीने तेमणे पांचे पांडवोने देशवी अहार जाता रहैवानी आज्ञा आपी. आज्ञा आपीने ते कृष्णवासुदेवे तौ अने एक रथमर्दन नामे नगर बसायुं. त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव ज्यां पोताना सैन्यनी छावणी इती त्यां आयो. त्यां आवीने तेज्या पोताना सैनिकाने

मूलम्—तएणं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवा-
गच्छंति उवागच्छित्ता जेणेव पंडू तेणेव उवागच्छंति उवाग-
च्छित्ता करयल एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेणं
णिव्विसया आणत्ता, तएणं पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी—
कहणं पुत्ता ! तुम्हे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता?,
तएणं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी—एवं खलु ताओ !
अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुदं दोन्नि जोयणसय-
सहस्साइं वीइवइत्ता तएणं से कण्हं अम्हे एवं वयासी—गच्छह
णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! गंगामहाणइं उत्तरह जाव चिट्ठह ताव
अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं
लवणाहिवइं ददट्ठण तं चेव सव्वं नवरं कण्हस्स चित्ता ण जुज्जइ
जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ, तएणं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं
वयासी—दुदट्ठणं पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमा-
णेहिं, तएणं से पंडुराया कोत्तिं देविं सदावेइ सदावि त्ता एवं
वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं कण्हस्स वासुदे-
वस्स णिवेदेहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्वि-
सया आणत्ता तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणइं भरहस्स सामी
तं संदिसंतुणं देवाणुप्पिया पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं

आये । वहाँ आकर वे अपने सैनिकों के साथ मिले । बाद में जहाँ
द्वारावती नगरी थी उस ओर चल दिये वहाँ पहुँच कर वे द्वारावती
नगरी में प्रविष्ट हुए ॥ सू० ३१ ॥

अर्थात्, त्यासभाद तेओ के तरइ द्वारावती नगरी छती ते तरइ रवाना थया.
त्यां पडोअीने तेओ द्वारावती नगरीमां प्रविष्ट थया. ॥ सूत्र ३१ ॥

जैनगारधमावृत्तवर्षिणी टीका सं० १६ त्रौपदीचरितनिर्दण्डम्

५५५

वा गच्छंतु ? , तएणं सा कौंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थि-
खंधं दुरुहइ दुरुहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था !
किमागमणपओयणं ? , तएणं सा कौंती कण्हं वासुदेवं एवं
वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमं पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता
तुमं च णं दाहिणइभरह जाव विदिसं वा० गच्छंतु ? , तएणं
से कण्हे वासुदेवे कौंतिं देविं एवं वयासी-अपूर्ववयणाणं पिउ-
त्था ! उत्तमेपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्रवट्ठी तं गच्छंतु णं
देवाणुप्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिहं वेलाऊलं तत्थ पंडुमहुरं
णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्तिकट्ठु कौंतिं देविं सकारेइ
सम्माणेइ जाव पडिविसजेइ, तएणं सा कौंती देवी जाव पंडुस्स
एयमट्ठं णिवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सदावेइ सदावित्ता एवं
वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिहं वेलाऊलं तत्थ णं
तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह, तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव
तहात्ति पडिसुणेंति सबलवाहणा हयगय० हत्थिणाउराओ पडि-
णिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिह्ले वेयाली तेणेव उवा-
गच्छइ उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं निवेसेंति निवेसित्ता तत्थ
णं तेविपुलभोगसमिति समण्णागया यावि होत्था ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘ तएणं ते इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव
हस्तिनापुरं नगरं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यत्रैव पाण्डू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति,

—: तएणं ते पंच पंडवा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते पंच पंडवा) वे पांचों पांडव (जेणेव
हत्थिणा उरे) जहां हस्तिनापुर नगर था (तेणेव उवागच्छंति) वहां

तएणं ते पंच पंडवा इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यापछी (ते पंच पंडवा) ते पांचे पांडव (जेणेव हत्थिणा
उरे) ज्यां हस्तिनापुर नगर छंतुं (तेणेव उवागच्छंति) त्यां व्याख्या. (उवा-

ઉપાગત્ય કરતલપરિશૃદ્ધીતદશનસ્વં શિરઆવર્તે મસ્તકેઽર્જલિ કૃત્વા, એવં=વશ્ય-
માણમકારેણ, અશદિષુઃ-એવં સ્વલુ હે તાત ! વયં કૃષ્ણેન નિર્વિષયાઃ=વિષયાદ
મમ દેશાદ્ બહિર્નિર્ગતાઃ આજ્ઞપ્તાઃ=કૃષ્ણોઽસ્માન્ દેશાદ્ બહિ નિર્ગન્તુમાજ્ઞમવાનિ-
ત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ પાણ્ડુ રાજા તાન્ પશ્ચ પાણ્ડવાન્ એવમવાદીત્-‘કહ્ણ’ કથ-
કેન કારણેન સ્વલુ હે પુત્ર ! ગૃયં કૃષ્ણેન નિર્વિષયા આજ્ઞપ્તાઃ ? તતઃ સ્વલુ તે
પશ્ચ પાણ્ડવાઃ પાણ્ડુ રાજાન્ એવમવદન્-એવં સ્વલુ હે તાત ! વયમમરકઙ્કાતઃ પ્રતિ-
નિવૃત્તા લવણસમુદ્રં ‘દોષ્ણિજોયણસયં સહસ્સાઈ’ દ્વિયોજનશતસહસ્રાણિ દ્વિલક્ષ-
યોજનપરિમિતં ‘વીહવૃક્ષા’ વ્યતિવ્રજિતાઃ-ઉલ્લહિતાઃ । તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો-

આગળ (ઉવાગચ્છિત્તા) વહાં આકર કે (જેણેવ પંડુ) વે જહાં પાંડુ
રાજા થે (તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ) વહાં ગયે (ઉવાગચ્છિત્તા) વહાં જાકર
(કરચલ૦ એવં વયાસી) ઉન્હોં ને અપને ૨ દોનોં હાથોં કોં જોડકર ઉનસે
હસ પ્રકાર કહા-(એવં સ્વલુ તાઓ !) હે પિતાજી ! સુનો-(અમ્હે કહ્ણે-
ણં ણિવિસયા આણત્તા) હમલોગોં કો કૃષ્ણ વાસુદેવ ને દેશ સે નિકલ
જને કો કહા હૈ (તણં પંડુરાયા પંચ પંડવે એવં વયાસી) તથ પાંડુ રાજા
ને ઉન પાંચોં પાંડવોં સે હસ પ્રકાર કહા-(કહ્ણં પુત્તા તુમ્હે કહ્ણેણં
વાસુદેવેણં ણિવિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કિસ કારણ કો લેકર કૃષ્ણ
વાસુદેવ ને તુમલોગોં કો દેશ સે બાહિર નિકલ જાને કો કહા હૈ (તણં
તે પંચ પંડવા પંડુરાયા એવં વયાસી) તથ ઉન પાંચોં પાંડવોં ને પાંડુ
રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(એવં સ્વલુ તાઓ ! અમ્હે અમરકંકાઓ પઢિ-
ણિયત્તા લવણસમુદ્રં દોષ્ણિ જોયણસયસહસ્સાઈ વીહવૃક્ષા) હે તાત !

ગચ્છિત્તા) ત્યાં આવીને (જેણેવ પંડુ) તેઓ ક્યાં પાંડુ રાજા હતા (તેણેવ
ઉવાગચ્છંતિ) ત્યાં ગયા. (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યાં જઈને (કરચલ૦ એવં વયાસી)
તેમણે પોતાપોતાના બંને હાથો બોંધીને તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે
(એવં સ્વલુ તાઓ) હે પિતા ! સાંભળો, (અમ્હે કહ્ણેણં ણિવિસયા આણત્તા)
કૃષ્ણવાસુદેવે અમને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે. (તણં પંડુ
રાયા પંચ પંડવે એવં વયાસી) ત્યારે પાંડુ રાજાએ પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું
કે-(કહ્ણં પુત્તા તુમ્હે કહ્ણેણં વાસુદેવેણં ણિવિસયા આણત્તા) હે પુત્રો !
કૃષ્ણવાસુદેવે શા કારણથી તમને દેશમાંથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી
છે ? (તણં તે પંચ પંડવા પંડુરાયા એવં વયાસી) ત્યારે તે પાંચે પાંડવોએ
પાંડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(એવં સ્વલુ તાઓ ! અમ્હે અમરકંકાઓ પઢિ-
ણિયત્તા લવણ-સમુદ્રં દોષ્ણિ જોયણસયસહસ્સાઈ વીહવૃક્ષા) હે પિતા ! સાંભળો,

अनंगारघमासृतवर्णिना टीका अ० १६ द्वीपदीधरितैर्निरूपणम्

५५७

ऽस्मान् एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! गङ्गामहानदीमुत्तरत, यावत् तिष्ठत । ताव अहं एवं तदेव ' जाव चिद्दामो ' एवं यथा कृष्णवासुदेवस्य वाक्यं पूर्वश्रुतं तथैवात्र बोध्यम्-तावदहं सुस्थितं लवणाधिपतिं पश्यामीति । ' जाव चिद्दामो ' यावत्तिष्ठामः-अत्र यावच्छब्देनैवं योजनीयम्-ततः खलु वयं कृष्णवासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो नौकया गङ्गामहानदीमुत्तीर्य, कृष्णो बाहुभ्यां गङ्गामहानदीमुत्तरितुं समर्थो न वेति विज्ञातुं तां नौकां संगोपितवन्तः, ततः कृष्णं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठाम इति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थितं लवणाधिपतिं दृष्ट्वा, ' तं चेव सर्व्वं ' तदेव सर्व्व-गङ्गामहानद्यास्तटे समागत्य, एकार्थिकां नाव-

सुनो-बात इस प्रकार है-जब हमलोग अमरकंका नगरी से पीछे आकर २, दो लाख योजन विस्तार वाले लवणसमुद्र को पार कर चुके (तएणं) तब (से कण्हे अम्हं एवं वयासी) उन कृष्ण वासुदेव ने हमलोगों से इस प्रकार कहा-(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगा महाणइ उत्तरह जाव चिद्दह-ताव-अहं एवं तहेव जाव चिद्दामो) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग चलो और गंगा महानदी को पार करो-तब तक मैं सुस्थित देव से मिलकर और आज्ञा प्राप्तकर आता हूँ । कृष्ण वासुदेव द्वारा इस प्रकार आज्ञास हुए हमलोगों ने नौका से गंगा महानदी को पार करके वहीं पर उस नौका को छुपा दिया-इस अभिप्रायसे कि देखें कृष्ण वासुदेव अपने हाथों से तैर कर इस गंगा महानदी को पार कर ने में समर्थ हो सकते हैं या नहीं । नौका को छिपाकर हमलोग वहीं पर उनकी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे । (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुद्धियं लवणाहिवइं

बात आ प्रमाणे छे के ज्यारे अमे अमरकंका नगरीथी पाछा वृणतां २ लाख योजन जेटला विस्तारवाणा लवण समुद्रने पार करी थूक्या (तएणं) त्यारे (से कण्हे अम्हं एवं वयासी) ते कृष्णवासुदेवे अमने आ प्रमाणे कहुं के- (गच्छणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगा महाणइ उत्तरह जाव चिद्दह-ताव अहं एवं तहेव जाव चिद्दामो) हे देवानुप्रियो ! तमे जज्यो अने गंगा महानदीने पार करी तेठलाभां हुं सुस्थित देवने भणीने अने तेमनी पासेथी आज्ञा भेगवीने आवुं छुं. आ प्रमाणे कृष्णवासुदेव वडे आज्ञापित थयेला अमे नौका वडे गंगा महानदीने पार करीने त्यांज ते नौकाने छुपावी दीधी. नौकाने छुपाववा पाछा अमारो अे जतनो आशय छेतो के कृष्णवासुदेव पोताना छाथेथी तरीने गंगा महानदीने पार करी शके छे के नहि ? नौकाने छुपावीने अमे त्यांज तेमनी प्रतीक्षा करतां रोकार्थ गया. (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुद्धियं

મદ્દુગ્ધા એકેન વાહુના રથં સતુરગં સસારથિં ઘટીત્વા, એકેન વાહુના ગજ્ઞામહાનદી મુત્તીર્ય, સમાગતઃ । ‘ નવરં કળહસ્સ ચિંતા ન બુઝ્ઞઃ ’ નવરં કૃષ્ણસ્ય ચિન્તા ન બુઝ્યતે નવરં=વિશેષસ્તુ હે તાત ! નૌકાયાં સંગોપિતાયાં સમ્યાં કૃષ્ણઃ કેનોપાયેન ગજ્ઞામહાનદીં તરિષ્યતિ ઇતિ ચિન્તાઃસ્માભિર્ન બુઝ્યતે=ન ક્રિયતેસ્મ, અનેનાપરાધેન ‘ જાવ અમ્હે ણિવિવસણ આણવેહ ’ યાવત્-રથાંશ્રૂણીકૃત્યાઃસ્માન્ નિર્વિષયાન્ આજ્ઞાપયતિ । તતસ્તદનન્તરં સ પાણ્ડુ રાજા તાન્ પશ્વપાણ્ડવાનેવમવાદીત્-‘ દુદ્દુગ્ધં ’ દુદ્ધુ=અશોભનં સ્વલુ હે પુત્રાઃ । તં યુષ્માભિઃ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય વિપ્પિયં ’ ત્રિપિયમ્-અનિષ્ટમ્ કુર્વહ્નિઃ, તતઃ સ્વલુ સ પાણ્ડુ રાજા કુન્તીં દેવીં શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા, એવમવાદીત્-ગચ્છ સ્વલુ સ્વં હે દેવાનુપ્રિયે ! દ્વારવતીં

દદ્દુગ્ધુ તંચેવ સર્વં-નવરં કળહસ્સ ચિંતા ન જુઝ્ઞતિ જાવ અમ્હે ણિવિવસણે આણવેહ) બાદ મેં કૃષ્ણ વાસુદેવ લવણસમુદ્રાધિપતિ સુસ્થિત દેવ સે મિલકર જ્યો હી ગંગા મહાનદી કે તટ પર આયે-તો ઉન્હેં વહ નૌકા નહીં મિલી-હસ કારણ વે ? એક હાથ સે તુરગ એવં સારથિ યુક્ત રથ કો હે દૂસરે હાથ સે ગંગા મહાનદી કો તૈર કર જહાં હમલોગ થે-વહાં આ ગયે । “ કૃષ્ણજી કિસ તરહ ગંગા મહાનદી કો પાર કરેંગે ” યહ વિચાર હમવોગોં ને નૌકા કો છિપાતે સમય નહીં ક્રિયા । હસી અપરાધ સે ઉન્હોં ને હમારે રથોં કો ચકના ચૂર કર દેશ સે બાહિર નિકલ જાને કે લિયે આજ્ઞા દી હૈ । (તણં સે પંડુરાયા તે પંચ પંડવા એવં વયાસી-દુદ્દુગ્ધં પુત્તા ! કયં કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ વિપ્પિયં કરેમાણેહિ-તણં સે પંડુરાયા કોતિ દેવિ સદાવેહ સદાવિન્તા એવં વયાસી-ગચ્છહ ણં તુમં

લવણાહિરઃ દદ્દુગ્ધુ તં ચેવ સર્વં-નવરં કળહસ્સ ચિંતા ન જુઝ્ઞતિ જાવ અમ્હે ણિવિવસણે આણવેહ) ત્યારપછી કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત-દેવને અળીને બ્યારે ગંગા મહાનદીના કિનારા ઉપર આવ્યા ત્યારે તેમને નૌકા જડી નહિ. ત્યારે તેઓ એક હાથમાં ઘોડા અને સારથિ સહિત રથને ઉઘડીને બીજા હાથથી ગંગા મહાનદીને તરીને બ્યાં અમે હતા ત્યાં આવી ગયા. “ કૃષ્ણવાસુદેવ કેવી રીતે ગંગા મહાનદીને પાર કરશે ” નૌકાને છુપાવતાં અમે આ વિષે વિચાર જ કર્યો નહોતો. આ અપરાધથી તેમણે અમારા રથોને નષ્ટ કરી નાખ્યા અને અમને દેશની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા કરી છે.

(તણં સે પંડુરાયા તે પંચ પંડવે એવં વયાસી-દુદ્દુગ્ધં પુત્તા ! કયં કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ વિપ્પિયં કરેમાણેહિ-તણં સે પંડુરાયા કોતિ દેવિ સદાવેહ, સદા-

અન્યારધનાન્તરવર્ષિની ડીકા જા. ૧૬ દ્રૌપદીચરિતમિરૂપણમં

૫૫૧

નગરી, કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય નિવેદય, एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! युष्माभिः पञ्च पाण्डवा निर्विषयाः देशनिकासिताः आह्वताः, यूयं च खलु हे देवानुप्रियाः ! दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिनः । ' तं ' तत्=तस्मात् संदिशन्तु=कथयन्तु हे देवानु-
प्रियाः ! ते पञ्च पाण्डवाः कतरां दिशं विदिशं वा गच्छन्तु ? भवतामेव सर्वे देशाः, तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्तः । ततः खलु सा कुन्ती
पाण्डुना राजैवमुक्ता सती हस्तिस्कन्धं दूरोदति-आरोहयति-दृष्ट्वा ' जहाहेहा '

देवाणुप्पिया ! बारवहं कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहिं एवं खलु देवाणु-
प्पिया ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया !
दाहिणद्धुमरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा
कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु ?) तब पांडु राजा ने उन पांचों
पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगों ने यह सुन्दर काम नहीं किया
जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हें नहीं रुचने
वाला काम किया इस प्रकार कहकर पांडु राजा ने उसी समय कुन्ती
देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । तुम द्वारा-
वती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो
-कि आपने पांच पांडवों को देश से बाहिर निकल जानेके लिये आज्ञा
दी है-सो हेदेवानुप्रिय ! आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-
अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जब
आपके ही सर्व देश हैं-तो ये कहाँ जावें आग कहें । (तएणं सा कौन्ती

वित्ता एवं वयासी-गच्छहइं णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारव कण्हस्स वासुदेवस्स
निवेदेहिं एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं
च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणद्धुमरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते
पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु ?)

ત્યારે પાંડુ રાજાએ તે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે લોકોએ
કૃષ્ણવાસુદેવનું ખુરં કરીને સારું કયું નથી તેમને અણુગમતું કામ તમે કયું
છે. આ પ્રમાણે કહીને પાંડુ રાજાએ તે જ વખતે કુંતી દેવીને બોલાવી.
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દારાવતી નગરીમાં
કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને વિનંતી કરો કે તમે પાંચે પાંડવોને
દેશથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી છે. હે દેવાનુપ્રિય ! તમે દક્ષિણાર્ધ
ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ છો તો બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ
જાય. જ્યારે બધા દેશો તમારા જ છે ત્યારે બતાવો કે આ લોકો કયાં જાય ?

यथा अधः, यथापूर्वं द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि बोध्यम् यावत् संदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैवं बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन सत्कृता स्नाता कृतभोजना-सुखासनवरगताऽभवत् इति, ततस्तां कृष्णः पृच्छति संदिशन्तु=कथयन्तु खलु हे पंडुणा एवं वृत्ता समाणी, इत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहिस्ता जहा हेद्वा जाव संदिशन्तु णं पिउत्था ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कौंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणद्धु भरह जाव विदिसं वा गच्छंतु ? तएणं से कण्हे वासुदेवे कौंतीदेवि एवं वयासी अपूर्हवयणा णं पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, बलदेवा, चक्रवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्ठु कौंतीदेविं सकारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ) पांडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी हाथी पर चढ़ी और चढ़ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह वहां पहुँची । यहां यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका संबन्ध लगा लेना चाहिये-जब कुंती द्वारावती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया । बड़े ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुंतीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निबट कर आनंद के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुखासन पर

(तएणं सा कौंती पंडुणा एवं वृत्ता समाणि, इत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहिस्ता जहा हेद्वा जाव संदिशन्तु णं पिउत्था ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कौंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणद्धु भरह जाव विदिसं वा गच्छंतु ? तएणं से कण्हे वासुदेवे कौंती देवि एवं वयासी-अपूर्हवयणा णं पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, बलदेवा, चक्रवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्ठु कौंती देविं सकारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)

आ प्रभाषे पांडु वडे आरापित थयेली कुंती देवी हाथी उपर सवार भई अने सवार थयने पड़ेलां जेम ते द्वारावती नगरी गई हती तेमज्ज अत्थारे पणु पड़ेथी. अह्मी यावत् शब्दथी आ नतनो पाठ समज्जे जेधजे ठे अत्थारे कुंती द्वारावती नगरीमां आवी त्थारे कृष्णवासुदेवे तेमनो भूमज्ज सत्कार कयो. अहुं ज हाथी तेमनो प्रवेशोत्सव उज्जयो. कुंतीजे पणु स्नान वगेरे नित्यउभेथी परवारीने सुजेथी अतुर्विध आहार कयो. त्थारपछी विश्राम

અનગારવમામૃતવર્ષિની ટીકા અ૦ ૧૬ શ્રૌપવીચરિતનિરૂપણમ્

૫૧૧

પિતૃશ્વસઃ ! કિમાગમનપ્રયોજનમ્ ? , તતઃ સ્વલુ સા કુંતી કૃષ્ણં વાસુદેવમેવમવા-
દીત્—એવં સ્વલુ હે પુત્ર ! ત્વયા પશ્ચ પાણ્ડવા નિર્વિષયા આજ્ઞાતાઃ ત્વં ચ સ્વલુ
દક્ષિણાર્ધભરતસ્ય યાવત્ સ્વામી, તત્ કથય તે પશ્ચ પાણ્ડવાઃ કતરાં દિશં વિદિશં
વા ગચ્છન્તુ ? ! તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ કુંતીં દેવીમેવમવાદીત્—‘ અપૂર-
વચ્ચના ણં ’ અપૂતિવચનાઃ=સકૃદ્વચનાઃ સ્વલુ હે પિતૃશ્વસઃ ! ઉત્તમપુરુષાઃ વાસુ-
દેવા ચલદેવાશ્ચક્રવર્તિનઃ, ‘ તં ’ તત્-તસ્માત્ ગચ્છન્તુ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયે ! પશ્ચ
પાણ્ડવાઃ ‘ દાદિણિલ્લં ’ વેલાઝલં ‘ દાક્ષિણાત્યં વેલાકૂલં—દક્ષિણસમુદ્રતટમ્ , તત્ર
‘ પંડુમહુરં ’ પાણ્ડુમથુરાં નગરીં ‘ ણિવેસંતુ ’ નિવેશયન્તુ, મમાદૃષ્ટસેવકા ભવન્તુ,

અન્હોને આરામ કિયા । ઇતને મેં કૃષ્ણ વાસુદેવ ને જવ વે વિશ્રામ કર
ચુકીં ડન સે પૂછા—કહિયે મુઆ જી ! કિસ પ્રયોજન કો લેકર યહાં
આપકા આગમન હુઆ હૈ તથ કુંતી ને કૃષ્ણ વાસુદેવ સે ઇસ પ્રકાર કહા
હે પુત્ર ! આનેકા પ્રયોજન ઇસ પ્રકાર હૈ—તુમને જો પાંચો પાંડવોં કો
અપને દેશ સે બાહિર નિકલ જાને કી આજ્ઞા દી હૈ—સો ઇસ વિષય મેં
યહ પૂછના હૈ કિ તુમ તો દક્ષિણાર્ધ ભરત કે અધિપતિ હો અતઃ હમેં
સમસ્રાહ્યે કૌનસી દિશા યા વિદિશા મેં જાવેં ? ઇસ પ્રકાર કુંતીદેવીંકે
મુલસે સુનકર કૃષ્ણ વાસુદેવ ને ડસસે એસા કહા—હે મુઆ જી—ઉત્તમ
પુરુષ, વાસુદેવ, ચલદેવ, એવં ચક્રવર્તીં યે સથ અપૂતિવચન વાલે હોતે
હેં—જો કુહા કહતે હેં વહા એક હી બાર કહતે હેં—ડસમેં પરિવર્તન નહીં
હોતા હૈ—ઇસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! પાંચો પાંડવ દક્ષિણસમુદ્ર પર જાવેં ઓર
વહાં પાંડુ મથુરા નગરી કો બસાવેં—સ્થાપિત કરેં—ઓર મેરે અદૃષ્ટ સેવક

માટે તેમણે સુખાસાન ઉપર આરામ કર્યો. ત્યારે તેઓ સારી રીતે વિશ્રામ
કરી ચૂક્યા ત્યારે તેમને કૃષ્ણવાસુદેવે પૂછ્યું કે—બાબો, ફાઈબા, શા કારણથી
તમે અહીં પધાર્યા છો ? ત્યારે કુંતીએ કૃષ્ણવાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે
પુત્ર ! હું એટલા માટે આવી છું કે તમે પાંચે પાંડવોને પોતાના દેશમાંથી
બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા કરી છે તો આ વિષે મારે આ વાતનું સ્પષ્ટી-
કરણ કરવું છે કે તમે તો દક્ષિણાર્ધ ભરતના અધિપતિ છો, તો આવી પરિ-
સ્થિતિમાં તમે જ અમને બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય ?
આ પ્રમાણે કુંતી દેવીના મુખથી બધી વાત સાંભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને
આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ફાઈબા ! વાસુદેવ, બળદેવ અને ચક્રવર્તી આ બધા
ઉત્તમ પુરુષો અપતિ વચનવાળા હોય છે—તેઓ જે કંઈ પણ કહે છે તે એકજ
વાર કહે છે તેમાં કોઈ પણ બાતનો ફેરફાર થઈ શકતો નથી. એટલા માટે
હે દેવાનુપ્રિય ! પાંચે પાંડવો દક્ષિણ સમુદ્ર તરફ જાય અને ત્યાં પાંડુ મથુરા

इति कृत्वा कुन्तीं देवीं सत्कारयति संमानयति. सत्कार्यं, संमान्य यावद् विसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिनं समारुह्य हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डो राज्ञ एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डू राजा पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे पुत्राः ! ' दाहिणिल्लं वेलाऊलं ' दाक्षिणात्यवेलाकूलं-दक्षिणसमुद्रतटं, तत्र खलु यूयं पाण्डुमथुरां नगरीं निवेशयत ।

होकर रहें। इस प्रकार कहकर उन्होंने ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सम्मान किया। सत्कार सम्मान करके फिर उन्हें अपने यहां से विदा दिया। (तएणं सा कोन्ती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेह, तएणं पंडू पंच पंडवे सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेलाऊलं तत्थणं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गज० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था) वहां से हाथी के ऊपर बैठ कर कुन्तीदेवी हस्तिनापुरमें आई, यावत् पांडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्होंने ने सुना दिया। इसके बाद पांडु राजा ने पांचों पांडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहां से दक्षिण दिग्वर्नी समुद्र तट पर जाओ और वहां पांडु मथुरा

नगरीने वसावे अने मारा अट्ठ सेवके। थअने त्यां निवास करे. आ प्रभाछे कडीने तेभछे कुन्ती देवीने सत्कार कये अने सम्मान कयुं. सत्कार तेभअ सम्मान करीने तेभछे कुन्तीदेवीने त्यांथी विदाय कयां.

(तएणं सा कोन्ती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेह, तएणं पंडू पंच पंडवे सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेलाऊलं तत्थणं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गज० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति निवेसित्ता, तत्थणं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था)

त्यांथी हाथी ऊपर सवार थअने कुन्तीदेवी हस्तिनापुर आवी गयां. यावत् कृष्णवासुदेवनी ने कंठ आजा हती ते पांडु राजने कडी संलग्गानी. तयारपछी पांडु राजअ छे पांचे पांडवोने बोलाव्या अने बोलावीने तेभने आ प्रभाछे कहुं के छे पुत्रा ! तभे अडींथी दक्षिण दिशा तरङ्गना समुद्रना किनारा ऊपर आअे अने त्यां पांडु-मथुरा नगरीने वसाव्यो. पिता पांडु राजनी आ प्रभाछे

मैनगरधर्मासुतवर्णिनी श्लोका अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५३३

ततः खलु पञ्च पाण्डवाः पाण्डो राज्ञो वचनं यावत्—‘तद्वृत्ति’ तथाऽस्तु’ इति कृत्वा प्रतिश्रूयन्ति = स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य सवलवाहनाः—सैन्ययानसहिताः, इयमजरथपदातिसंपरिवृताः, हस्तिनापुरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रनिनिष्क्रम्य यत्रैव ‘दाक्षिणिल्लं वेलाऊलं’ दाक्षिणात्यं वेलाकूलं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पाण्डुमथुरां नगरीं निवेशयन्ति निवेश्य तत्र खलु ते विपुलभोगसमिति समत्वा-गताश्चाप्यभवन् ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई देवी अन्नया कयाइं आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था, तएणं सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुखं दारगं पयाया सूमालणिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारुवं गुणनिष्फन्नं नामधिज्जं करेति जम्हाणं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णमधेज्जं पंडुसेणे, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेति पंडुसेणत्ति, वावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समो-सदा परिसा निग्गया पंडवा निग्गया धम्मं सोच्चा एवं जं णवरं देवाणुप्पिया ! दोवई देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च

नगरी को बसाओ। पिता पांडु राजा की इस आज्ञा को उन पांचों पांडवों ने “तद्वृत्ति” कहकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर वे हय, गज, रथ, एवं पदातिरूप चतुरंगिणी सेना से परिवृत्त होकर हस्तिनापुर नगर से निकले और निकलकर जहां दाक्षिणात्य वेलाकूल था वहां आये—वहां आकर उन्होंने पांडु मथुरा नगरी को बसाया। बसाकर वहां के विपुल भोगों को भोगते हुए रहने लगे ॥ सू० ३२ ॥

आज्ञाने ते पांचे पांडवोऽपि “तद्वृत्ति” कहीने स्वीकारी लीथी. स्वीकार करीने तेओ घोडा, हाथी, रथ अने पायदणवाणी चतुरंगिणी सेनानी साथे हस्तिना-पुर नगरथी अहार नीकल्या—अने नीकलीने जथां दक्षिण दिशाने समुद्रने किनारे हतो त्यां पछोन्थ्या, त्यां पछोन्थीने तेमणे पांडु-मथुरा नगरी बसावी. बसावीने तेओ त्यां पुच्छण कामोओ भोगवतां रहेवा लाग्या. ॥ सूत्र ३२ ॥

कुमारं रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया ! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देविं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मो णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी—जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह ममं के अण्णे आलंवे वा जाव भविस्सइ ?, अहंपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सज्जिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएणं ते पंच पंडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति, तएणं से पंडुसेणं रायाकोडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिबियाओ जाव पच्चोरुहंति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोदस्स पुव्वाइं अहिज्जंति अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥सू०३२॥

अनेनारच्यमानृतवर्षिणी टी० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५६५

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् ‘आवणसत्ता’ आपन्नसत्ता=गर्भवती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु संपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुरूपं सुन्दरं दारकं=वालकं ‘पयाया’ पजाता=पजनितवती, किं भूतं दारकं=सूमाल=सुकुमारपाणिपादं, ‘णिव्वत्तवारसाहस्स’ निर्वृत्तद्वादशाहस्स=संप्राप्तद्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूपं गुणनिष्पन्नं नामधेयं कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेव दारकः पञ्चानां पाण्डवानां पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, ‘तं’ तत्-तस्माद्

—तएणं सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाई) किसी एक समय (आवणसत्ता जाया यावि होत्था) गर्भावस्थासे संपन्न हुई । (तएणं सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७।१ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया । यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सूमालणिव्वत्तवारसाहस्सइमं एयारूवं गुणनिष्पन्नं नामधिज्जं करेति जम्हाणं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे । जब बारहवां दिन लगा—तब माता पिताओं ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्—यह पुत्र हम पांचो पांडवों का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएणं सा दोवई देवी इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपणी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (अन्नया कयाई) के।१ अंक पणते (आवणसत्ता जाया यावि होत्था) सगर्भा थई. (तएणं सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया) न्यारे गळीं नव मास ७।१ दिवसने। थई गथे। त्थारे ते द्रौपदी देवीअे पुत्रने जन्म आये, ते आणके भूण ज सुन्दर हुतु.

(सूमालणिव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूवं गुणनिष्पन्नं नामधिज्जं करेति, जम्हाणं अम्हं एसदारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पंडुसेणे)

तेना हाथ पग वगेरे जथा अवयवो भूण ज सुकौमल हुता. न्यारे आरभो दिवस आये। त्थारे माता-पिताअे ते पुत्रनुं नाम तेना शुणे। विधे विचार करतां आ प्रभावे राभ्युं के आ पुत्र अमारा पांचे पांडवोने छे,

भवतु अस्माकमस्य दारकस्य नामधेयं ' पाण्डुसेन ' इति । ततः खलु तस्य दार-
कस्याम्बापितरौ नामधेयं कुर्वन्ति - 'पाण्डुसेन ' इति । ' बावत्तरिं कलाओ ' दास-
सति कलाः शिक्षिताः, यावद् भोगसमर्थो जातः, राजकन्यां परिणोय युवराजो
यावत् मानुष्यकान् भोगान् भुञ्जानो विहरति-ओस्ते ।

વત્પન્ન હુઆ હૈ-અતઃ હમારે હસ પુત્ર કા નામ પાંડુસેન હોના ચાહિયે
(તણં તસ્મ દારગસ્સ અમ્માપિયરો નામધેજ્જં કરેતિ પંડુસેણત્તિ)
હસ રહ્યાલ સે ડન્હોં ને ડસ નવજાત પુત્ર કા નામ પાંડુસેન રલ્લ દિયા ।
(બાવત્તરિં કલાઓ જાવ ભોગસમસ્થે જાણે જુવરાયા જાવ વિહરહ યેરા
સમોસદા, પરિસાં નિગ્ગયા, પંડવા નિગ્ગયા, ધમ્મં સોચ્ચા એવં વયાસી
જં ણવરં દેવાનુપ્પિયા ! દોવહં દેવિં આપુચ્છામો પંડુસેણં ચ કુમારં રજ્જે
ઠાવેમો તઓ પચ્છા દેવાનુપ્પિયા ! અંતિણ મુંડે ભવિત્તા જાવ પવ્વયામો)
પાંડુસેન કુમાર કો ૭૨ કલાઓં મેં નિપુણ બનાને કે લિયે માતા પિતાને
ડસે કલાચાર્ય કે પાસ ભેજ દિયા । ધીરે ૨ વહ ૭૨, કલાઓં મેં
નિષ્ણાત બન ગયા । યાવત્ ભોગ ભોગને કે લાયક અવસ્થા સંપન્ન ભી
હો ગયા । રાજકન્યાઓં કે સાથે હસકા વૈવાહિક સંબન્ધ કર કે પિતાઓં
ને હસે યુવરાજ પદ પ્રદાન ભી કર દિયા-યાવત્ યહ મનુષ્યભવ સંબન્ધી
કામ સુખોં કો અનુભવ કરતા હુઆ અપને સમય કો આનન્દ કે સાથ

તેમજ દ્રૌપદી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો છે, એટલા માટે અમારા આ
પુત્રનું નામ પાંડુસેન હોવું જોઈએ.

(તણં તસ્મ દારગસ્સ અમ્માપિયરો નામધેજ્જં કરેતિ પંડુસેણત્તિ)
આ વિચારથી તેમણે તે નવજાત પુત્રનું નામ પાંડુસેન રાખ્યું.

(બાવત્તરિં કલાઓ જાવ ભોગસમસ્થે જાણે જુવરાયા જાવ વિહરહ, યેરા
સમોસદા, પરિસા નિગ્ગયા, પંડવા નિગ્ગયા. ધમ્મં સોચ્ચા એવં વયાસી જં ણવરં
દેવાનુપ્પિયા ! દોવહં દેવિં આપુચ્છામો પંડુસેણં ચ કુમારં રજ્જે ઠાવેમો તઓપચ્છા
દેવાનુપ્પિયા ! અંતિણ મુંડે ભવિત્તા જાવ પવ્વયામો)

પાંડુસેન કુમારને ૭૨ કળાઓમાં નિપુણ બનાવવા માટે માતાપિતાઓએ •
કલાચાર્યની પાસે મોકલ્યો. આમ ધીમે ધીમે તે ૭૨ કળાઓમાં નિષ્ણાત બની
ગયો. યાવત્ તે સંસારના ભોગો ભોગવવા યોગ્ય અવસ્થાવાળો પણ થઈ ગયો. ૭
રાજકન્યાઓની સાથે લગ્નો કરાવીને પિતાઓએ તેને યુવરાજ પદ પણ સોંપી
દીધું. યાવત્ તે મનુષ્ય-લવ સંબંધી કામસુખોને અનુભવતો પોતાના વખતને
સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો. એક વખતની વાત છે કે પાંડુ-મથુરા નગરીમાં

अथ कदाचित् तत्र—'थेरा समोसड़ा' स्थविराः समवसृताः, परिषन्निर्गता, पाण्डवा अपि स्थविराणां वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवाः प्रतिबुद्धाः सन्त एवमदन्—यत् नवरं हे देवानुप्रियाः द्रौपदीं देवीमापृच्छामः, पाण्डुसेनं च कुमारं राज्ये स्थापयामः, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्यां गृह्णीमः, तदा स्थविरा ऊचुः—'अहासुहं देवानुप्रिया !' हे देवानुप्रियाः यथासुखं=सुखं यथा भवति तथा कुरुत, अलं विलम्बेन, इति भावः । ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदीं देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमवदन्—एवं खलु हे देवानुप्रिये ! वयं स्थविरा-

व्यतीत करने लगा। एक समय की बात है कि पांडु मथुरा नगरी में स्थविरों का आगमन हुआ। स्थविरों का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वंदना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने-अपने घर से निकले पांचों पांडव भी निकले—परिषद् को आगयी हुई देखकर स्थविरों ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद् पीछे चली गई। पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गये—उसी समय उन्होंने उन स्थविरों से कहा—हे देवानुप्रियों ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूछकर और पांडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियों के समीपमुंडित होकर यावत् प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहते हैं। पांडवों की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरों ने पांडवों से इस प्रकार कहा—(अहासुहं देवानुप्रिया ! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छह, उवागच्छत्ता दोवहं देविं सदावेति, सदावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवानुप्रिया !

स्थविरो पधायी, स्वविरोना आगमननी जणु थतां नगरीना अधा दोके तेमनी वंदना तेमज तेमनी पासेथी धर्मोपदेश सांलणवा भाटे पोतपोताना धेरथी निकय्था, पांचे पांडवे पणु त्यां पडोन्था. परिषदने आवेली जेधने स्थविरो धर्मो उपदेश आप्यो. उपदेश सांलणीने परिषद जाती रही पांडवे ने धर्मो उपदेश सांलणीने प्रतिप्राधित थध गया. तेमणे तेज समथे स्थविरोने जितंती करतां कहुं के छे देवानुप्रियो ! अमे द्रौपदी देवीने पूछी तेमज पांडुसेन कुमारने राज्यासनने अलिपिऊत करीने तमारी पासे मुंडित थधने यावत् प्रव्रज्या अहणु करवानी अलिवाषा राणीये छीये. पांडवोनी आ जतनी छार्दिक धरिछा जणुने ते स्थविरोये ते पांचे पांडवोने आ प्रमाणे कहुं के—

(अहासुहं देवानुप्रिया ! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छह, उवागच्छत्ता दोवहं देविं सदावेति, सदावित्ता एवं वयासी, एवं

णामन्तिके धर्मं श्रुतवन्तो यावत् प्रव्रजामः, त्वं हे देवानुप्रिये ! किं करोषि किं करिष्यसि ? । ततः खलु सा द्रौपदी तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-यदि खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! संसारभयोद्विग्नाः=जन्मेमरणादि दृखाद् भीताः सन्तो यावत् प्रव्रजथ, मम कोऽन्य आलम्बो वा यावद् भविष्यति ?, अहमपि च खलु संसारभयोद्विग्ना देवानुप्रियैः सार्धं प्रव्रजिष्यामि, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुसेनस्य अभियेक्षं=राज्याभियेक्षं कृत्वा स्वराज्ये स्थापितवन्तः, यावद् राजा जातः, यावद् राज्यं प्रमाधयन्=पालयन् विहरति=भ्रष्टस्तेषु ।

अम्हेहि धेराणं अंतिए धम्मं णिसंते जाव पव्वयामो-तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि) हे देवानुप्रियों ! जिस प्रकार तुम्हें सुख मिले बैसा तुम को ! अच्छे काम में बिलम्ब मत करो । इसके बाद-वे पांचों पांडव जहां अपना घर था वहां आये-वहां आकर के उन्होंने ने द्रौपदी देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! सुनो बान इस प्रकार है-हमलोगों ने स्थविरीके पास धर्मका श्रवण किया है । अनः हमलोगों की भावना मुंडित होकर उनके पास प्रव्रजित होने की है । अथ-तुम्हारी भावना क्या है-हे देवानुप्रिये करो तुम हमारे बाद क्या करोगी-(तएणं सा दोवई देवा ते पंच पंडवे एवं वयासी-जहं णं तुव्मे देवाणुप्पिया ! संसारभउद्विग्गा पव्वयह ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सह ? अहं पि य णं संसारभउद्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वहस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्जं पसाहे

खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहि धेराणं अंतिए धम्मं णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि)

हे देवानुप्रिये ! जेम तमने सुख भणे तेम करे, सारा काममां मोडुं करे नहिं त्थारपथी तेओ पांचे पांडवे न्थां पे.तानुं घर हतुं त्यां आन्था. त्यां आवीने तेमणे द्रौपदी देवीने बोलावी. बोलावीने तेने आ प्रमाणे कहुं हे हे देवानुप्रिये ! सांलणे, वात येरी छे के अमोओ स्थविरीनी पासेथी धर्मनुं श्रवणु कथुं छे, ओटला माटे अमारी धन्छा सुंजित यधने तेमनी पासेथी प्रव्रज्या अहणु करवानी छे. हवे तमारी शी धन्छा छे ? हे देवानुप्रिये ! अमने कडो. अमे प्रव्रज्या अहणु करी दधंशुं त्थारभाह तमे शुं करथो ?

(तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जहं णं तुव्मे देवाणुप्पिया ! संसारभउद्विग्गा पव्वयह, ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सह ? अहं पि य णं संसारभउद्विग्गा, देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वहस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरइ)

जननारक्षमांस्तुतवर्णिनी द्वौ० अ० १३ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५६९

ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा द्रौपदी च देवी अन्यदा कदाचित् पाण्डुसेन राजा-
मापृच्छन्ति, ततः खलु स पाण्डुसेनो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-
येत्वा, एवमवादीत्-सिप्रमेव भो ! देवानुप्रियाः ! निष्क्रमणाभिषेकं=दीप्तोपयोग-
स्तूनि यावद् उपस्थापयत, पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविका उपस्थापयत, ' यावत्
त्यबरोहन्ति=अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्, ततः पाण्डुसेनस्य राज्ञोवचनमाकर्ण्य ते
राणे विहरइ) इस प्रकार पांडवों का कहना सुनकर द्रौपदी देवी ने
उन पांचों पांडवों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुमलोग यदि
संसार भय से उद्दिग्ध होकर प्रव्रजित होना चाहते हो, तो फिर मेरे
लेये आप के सिवाय और कौन दूसरा आलंबन अथवा आधार होगा ।
मतः मैंभी आप देवानुप्रियों के साथ संसार भय से उद्दिग्ध होकर
शिक्षित होऊँगी । इस प्रकार द्रौपदी देवी का कथन सुनकर उन पांचों
पांडवों ने पाण्डुसेन कुमार का राज्याभिषेक करके उसे राज्यपद में स्था-
पित किया । इस तरह पांडुकुमार राजा हो गया । यावत् राज्य का वह
सच्ची तरह पालन करने लगा । (तएणं ते पंच पंडवा दोवर्इय देवी
मन्नया कयाइं पंडुसेनरायाणं आपुच्छंति, तएणं से पंडुसेणे राया कोडुं-
बेय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणु-
प्पया । निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्टवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ
सेवियाओ उवट्टवेह, जाव पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा उवा-

आ प्रभाणु पांडवोनुं कथन सांभणीने द्रौपदी देवीअे ते पांचे पांडवोने
आ प्रभाणु कथुं के डे देवानुप्रियो ! तमे न्यारे संसारभयथी उद्दिग्ध थधने
प्रवन्त्या अडणु करवा धव्छो छो त्यारे तमारा वगर भारा भाटे आ संसारमां
णीनुं कथुं आवणन अथवा तो जीअे कथे आधार थरो ? अेटला भाटे हुं
पणु तमारी साथे संसारभयथी उद्दिग्ध थधने दीक्षा अडणु करवा धव्छुं छुं ।
आ प्रभाणु द्रौपदी देवीनुं कथन सांभणीने ते पांचे पांडवोअे पांडुसेन कुमारने
राज्याभिषेक करीने तेने राज्यासने ऐसादी दीघो. आ प्रभाणु पांडुसेन कुमार
राज थध गये। यावत् ते राज्यनुं सारी रीते रक्षणु करवा लाये..

(सएणं ते पंच पंडवा दोवर्इय देवी अन्नया कयाइं पंडुसेनरायाणं आपुच्छंति,
एणं से पंडुसेणे राया कोडुं वियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव
भो देवाणुप्पिया । निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्टवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ
सेवियाओ उवट्टवेह, जाव पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव उवागं
माळित्तेणं जाव समणा जाया, चोइस्सपुब्बाइं अहिजंति, अहिजित्ता बहूणि

કૌટુંબિકપુરુષાસ્તથાસ્તુ ' ઇત્યુક્ત્વા તથૈવ યાવદુપસ્થાપયન્તિ, તદા તે પચ્ચ પાંડવાઃ પુરુષસહસ્રવાહિનીઃ શિબિકા આરૂઢા, પાંડુમથુરાયા નગર્યા મધ્યમધ્યેન નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય શિબિકાભ્યઃ પ્રત્યવરોહન્તિ=પ્રત્યવતરન્તિ । પ્રત્યવરૂઢા, 'જેણેવ' યત્રૈવ સ્થવિરાસ્તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય એવમવાદિષુઃ- ' આલિત્તે ણં જાવ સમણા

ગચ્છહ આલિત્તેણં જાવ સમણા જાયા, ચોદસપુત્રવાહં અહિજ્જન્તિ, અહિજ્જિન્તા, ઘટ્ટણિ ઘાસાહં છટ્ટદ્દમદસમદુવાલસેહિં માસદ્દમાસસખમ-ખેહિં અપ્પાણં ભાવેમાણા વિહરંતિ) હસકે બાદ પાંચો પાંડવોં ને ઔર દ્રૌપદી દેવી ને કિસી એક સમય પાંડુસેન રાજા સે દીક્ષિત હોને કે લિયે પૂછા । તથ પાંડુસેન રાજા ને કૌટુંબિક પુરુષોં કો બુલાયા બુલોકર ડનસે એસા કહા-ભો દેવાનુપ્રિયો ! તુમલોગ શીઘ્ર હી દીક્ષા મેં ઉપયોગ આનેવાલી વસ્તુઓં કો લાકર ઉપસ્થિત કરો-તથા પુરુષ સહસ્રવાહિની શિબિકાઓં કો ભી ઉપસ્થિત કરો-હસ પ્રકાર પાંડુસેન રાજા કે ઘષ્ઠન સુનકર ડન કૌટુંબિક પુરુષોં ને " તથાસ્તુ " કહકર ડનકી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા-ઔર દીક્ષા મેં ઉપયોગી સમસ્ત સામગ્રી કો એવં પુરુષ સહસ્રવાહિની શિબિકાઓં કો લાકર ઉપસ્થિત કર દિયા । તથ વે પાંચો પાંડવ ડન પુરુષ સહસ્રવાહિની શિબિકાઓં પર આરૂઢ હોકર પાંડુ મથુરા નગરી કે બીચ સે હોકર નિકલે । વહાં સે નિકલકર વે જહાં સ્થવિર ઠહરે હુએ થે-વહાં-આથે-વહાં આકર સબકે સય શિબિકાઓં સે

વાસાહં છટ્ટદ્દમદસમદુવાલસેહિં માસદ્દમાસસખમખેહિં અપ્પાણં ભાવેમાણા વિહરંતિ)

ત્યારપછી પાંચે પાંડવોએ અને દ્રૌપદી દેવીએ કોઈ એક વખતે પાંડુસેન રાજાને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા માટે પૂછ્યું. ત્યારે પાંડુસેન રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દીક્ષા વખતે ઉપયોગમાં આવનારી બધી વસ્તુઓ જલદી લઈ આવો. તેમજ પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી પણ લઈ આવો. આ પ્રમાણે પાંડુસેન રાજાના વચન સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ' તથાસ્તુ ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને દીક્ષા માટે ઉપયોગી એવી બધી વસ્તુઓ તેમજ પુરુષ-સહસ્રવાહિની પાલખી લઈ આવ્યા. ત્યારપછી તે પાંચે પાંડવો તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓ ઉપર સવાર થઈને પાંડુ-મથુરા નગરીની વચ્ચે યઈને નીકળ્યા. ત્યાંથી નીકળીને તેઓ જ્યાં સ્થવિર હતા ત્યાં પહોંચ્યા, ત્યાં પહોંચીને તેઓ બધા પાલખીઓમાંથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને સ્થવિરોની

श्रीनारायणमृतवर्षिणी टीका० अ० १६ द्रौपदीचरितनिरूपणम्

५७१

जाया ' आदीप्तोऽयं लोकः खलु इत्यादि । यावद् श्रमणाः जाताः, चतुर्दशपूर्वाणि अधीयते स्म, अधीत्य बहूनि वर्षाणि षष्ठाष्टमदशम द्वादशैर्मासार्धमासक्षपणैस्तपोभि- रात्मानं भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्का- रस अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठमदसमदुवाल- सेहिं जाव विहरइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु सा द्रौपदी देवी शिबि- कातः प्रत्यवरोहति प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यावत् प्रव्रजिता—दीक्षां गृहीत्वती । ' सुव्वयाए ' सुव्रतायै=सुव्रतानामधेयायै ' अज्जाए ' आर्यायै ' सिस्सिणीयत्ताए '

नीचे उतरे । नीचे उतरकर स्थविरो के पास पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने मे स्थविरो से इस प्रकार कहा—हे भदंत ! यह समस्त लोक आदीप्त—हो रहा है इत्यादिरूप से अपनी भावना प्रदर्शित कर यावत् वे श्रमण हो गये । चौदह पूर्वों का उन्होंने ने अध्ययन किया । अध्ययन करके अनेक वर्षों तक षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मास अर्धमास की तपस्याओं को वे करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ३३ ॥

' तएणं सा दोवई ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (दोवई देवी) द्रौपदीदेवी (सीयाओ पच्चो- रुहइ) अपनी शिबिका से नीचे उतरी—(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाइं

पासे पड़ोइया. त्यां पड़ोइयिने तेभल्ले स्थविरेने विनंती करतां आ प्रभाल्ले कल्लुं के डे लहन्ता । आ संपूषुं जगत सज्जगी रल्लुं छे वगेरे उपथी पोतानी भावना प्रकट करीने यावत् तेभल्ले श्रमल्ले थरं गया. चौद पूर्वोनुं तेभल्ले अध्य- यन कथुं, अध्ययन करीने धल्लुं वर्षो सुधी तेभल्ले षष्ठ, अष्टम. दशम, द्वादश, मास अर्धमासनी तपस्याओ करता रल्ला. ॥ सूत्र ३३ ॥

तएणं सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपछी (दोवई देवी) द्रौपदी देवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) पोतानी पादभीमां नीचे उतरी.

(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअंगाइं

५७२

श्रीताम्रकथासुख

शिष्यातया ददाति पाण्डुसेनो राजा द्रौपदीं सुव्रतायै शिष्यारूपेण दत्तवानिति-
भावः । एकादशाङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि पष्ठाऽष्टमदशमद्वादशैस्तपोभिर्वा-
दात्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्—तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पंडुमहुराओ
णयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिकखमंति पडि-
णिकखमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तेणं कालेणं
तेणं समएणं अरिहा अरिट्टनेमी जेणेव सुरट्टाजणवए तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुरट्टाजणवयंसि संजमेणं तवसा
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स
एवमाइक्खइ०—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्टनेमी
सुरट्टाजणवए जाव वि०, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच
अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं
सहावेति सहावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
अरहा अरिट्टनेमी पुव्वाणु० जाव विहरइ, तं सेयं खलु
अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्टनेमिं वंदणाए गमित्तए

छट्ठमदसमदुवालसेहि जाव विहरइ) नीचे उतरकर यावत् वह भी
प्रव्रजित हो गई । पांडुसेन राजा ने उसे—द्रौपदी को सुव्रता नाम की
साध्वी के शिष्यारूप से प्रदान किया । द्रौपदी आर्या ने ग्यारह अंगों
का अध्ययन किया । बाद में अनेक वर्षों तक छट्ठ अष्टम, दशम, द्वादश
तपस्याओं से अपने आपको उसने भावित किया ॥ सू० ३४ ॥

अहिज्जइ, बहूणि वासाइं छट्ठमदसमदुवालसेहि जाव विहरइ)

नीचे उतरीने यावत् ते पणु प्रव्रजित थई गइ. पांडुसेन राजाके
द्रौपदीने सुव्रता नामनी साध्वीने शिष्याना रुपमां अपि० करी. द्रौपदी आर्याके
अगियार अंगोनुं अध्ययन कयुं. त्थारपछी घण्ठां वर्षां सुधी छट्ठ, अष्टम,
दशम, द्वादश तपस्याओथी पोताना आत्माने तेखे भावित कयो. ॥ सू. ३४ ॥

अणगारसमांमृतवर्चसी श्री० अ० १३ प्रौपदीचरितनिरूपणम्

५७३

अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव थेरा
 भगवंतो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता थेरं भगवंतं वंदंति
 णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो णं तुब्भेहिं
 अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिद्विनेमिं जाव गमित्तए,
 अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते जुहिद्विल्लपामोक्खा पंच
 अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा । थेरे
 भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ
 पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गा-
 माणुगामं दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव
 उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विह-
 रंति, तएणं ते जुहिद्विलवज्जा चत्तारि अणगारा मासख-
 मणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति वीयाए एवं
 जहा गोयमसामी णवरं जुहिद्विल्लं आपुच्छंति जाव अड-
 माणा बहुजणसहं णिसामेति, एवं खलु देवाणुप्पिया !
 अरहा अरिद्विनेमी उज्जितसेल्लेसिहरे मासिएणं भत्तेणं
 अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए
 जाव पहीणे, तएणं ते जुहिद्विलवज्जा चत्तारि अणगारा
 बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोक्खा हत्थिकप्पाओ पडिणि-
 क्खमंति पडिणिक्खमित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव
 जुहिद्विल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं
 पच्चक्खंति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति पडि-

कमिच्चा एसणमणेसणं आलोएंति आलोइच्चा भत्तपाणं
 पडिदंसेंति पडिदंसित्ताएवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !
 जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं
 पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्तासेत्तुंजं पव्वयं सणियं सणियं
 दुरुहित्तए 'संलेहणा झूसणा झूसियाणं' कालं अणवकंख-
 माणाणं विहरित्तएत्तिकु अणमण्णास्स एयमट्ठं पडिसुणेंति
 पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेति परि-
 ट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजे पव्वए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता
 सेत्तुजं पव्वयं दुरुहंति दुरुहित्ता जाव कालं अणवकंखमाणा
 विहरंति । तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा
 सामाइयमाइयाइं चोइसपुव्वाइं० वड्डूणि वासाणि० दोमा-
 सियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइणग्ग-
 भावे जाव तमट्ठमाराहेति तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव
 केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा ॥ सू० ३३ ॥

टीका—'तएणं थेरा' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स्थविरा भगवन्तोऽ-
 न्यदाकदाचित् पाण्डुमथुरातो नगरीतो सहस्राब्रवणादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति-
 निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ।

—तएणं थेरा भगवंता इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (थेरा भगवंतो) उन स्थविर भगवंतोने
 (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (पंडुमथुराओ) पांडु मथुरा (णय-
 रीओ) नगरी से (सहसंबवणाओ) सहस्राब्रवन नाम के (उज्जा-

तएणं थेरा भगवंता इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्पारभाट (थेरा भगवंतो) ते स्थविर भगवंतोओ (अन्नया
 कयाइं) केछ ओक वधते (पंडु मथुराओ) पांडु मथुरा (णयरीओ) नगरीओ
 (सहसंबवणाओ) सहस्राब्रवन नामना (उज्जाणाओ) उद्यानभां (पडि-

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्मयत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपा-
गच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति । ततः
खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एवं भाषते, एवं प्ररूपयति एवं प्रज्ञाप-
यति-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमिः सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति ।
ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगारा बहुजनस्थान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्यं
ब्रुवन्ति, शब्दयित्वा एवमवदन्, एवं खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा-

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमंति) विहार किया (पडिणिक्खमिस्सा)
विहार करके (बहिया जणवयविहारं विहरंति) बाहिर के जनपदों
में विचरने लगे (तेणं कालेणं तेणं समएणं अरिहा अरिद्धनेमी जेणेव
सुरद्धा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरद्धा जणवयंसि
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स
एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हन् अरिष्टनेमि
प्रभु विहार करते हुए जहाँ सौराष्ट्र जनपद था-वहाँ आये वहाँ आकर
के वे उस सौराष्ट्र जनपद में संयम और तप से अपने आत्मा को
भावित करते हुए विचरने लगे । जब वहाँ के अनेक लोगों को इसकी
खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एवं खलु देवानु-
प्रिया ! अरिहा । अरिद्धनेमी सुरद्धा जणवए जाव वि० तएणं ते जुहि-
ट्टिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्न-

णिक्खमंति) विहार कथी. (पडिणिक्खमिस्सा) विहार करीने तेओ (बहिया
जणवयविहारं विहरंति) पडारना जनपदोमां विहार करवा लाग्या.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं अरिहा अरिद्धनेमी जेणेव सुरद्धा जणवए
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरद्धा जणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-
माणे एवमाइक्खइ)

ते कांणे अने ते समये अर्हन् अरिष्टनेमि प्रभु विहार करतां करतां न्यां
सौराष्ट्र जनपद इतो त्यां आया. त्यां आवीने तेओ ते सौराष्ट्र जनपदमां
संयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करतां विचरवइ करवा लाग्या.
न्यारे त्यांना बहुतो लोडोने आ वातनी बहुतो थड त्यारे तेओ परस्पर आ
प्रमाणे कडेवा लाग्यो के—

(एवं खलु देवानुप्रिया ! अरिहा अरिद्धनेमी सुरद्धाजणवए जाव वि० तएणं
ते जुहिट्टिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं
सदावेति, सदावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवानुप्रिया ! अरिहा अरिद्धनेमी

નુપૂર્વર્પા=તીર્થકરાણાં મર્યાદયા યાવદ્ વિહરતિ, 'તં' તત્-તસ્માદ્ 'સેયં' શ્રેયઃ સ્વલુ અસ્માકં યત્ સ્થવિરાન્ આપૃચ્છચાર્હન્તમરિષ્ટનેર્મિ વન્દનાયૈ ગન્તુમ્ । અન્યોન્યસ્ય =પરસ્પરસ્યૈતમર્થં સર્વે પશ્ચાન્નગારાઃ પ્રતિશ્રુવન્તિ, સ્વીકુર્વન્તિ પ્રતિશ્રુત્ય યૈવ સ્થવિરા ભગવન્તસ્તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય તાન્ સ્થવિરાન્ ભગવતો વન્દન્તે નમસ્યન્તિ ચ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવમવાદિષુઃ-ઈચ્છામઃ સ્વલુ યુષ્માભિરભ્યનુજ્ઞાતાઃ સન્તોડ્ઠન્તમરિષ્ટનેર્મિ યાવદ્ ગન્તુમ્ । સ્થવિરા ઋતુઃ યથામુત્ત્વં હે દેવાનુપ્રિયા !

મન્નં સદ્ધોવેતિ, સદ્ધાવિસ્તા એવં ઘયાસી-એવં સ્વલુ દેવાણુપ્રિયા ! અરિહા અરિદ્ધનેમી પુન્વાણુ જાવ વિહરહ, તં સેયં સ્વલુ અમ્હં થેરા આપુચ્છિસ્તા અરહં અરદ્ધિનેમિ વંદના઼ ગમિત્તણ (હે દેવાનુપ્રિયો ! સુનો-અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તીર્થકર પરસ્પરાનુસાર વિહાર કરતે હુણ યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદ મેં આયે હુણ હેં । લોગોં કે મુખ સે ઇસ જાત કો ડન પાંચ યુધિષ્ઠિર આદિ અનગારો ને સુના-તથ આપસ મેં એક દૂસરે કો-બુલાયા-ઑર બુલાકર ઇસ પ્રકાર કહા-દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદ મેં તીર્થકર પરસ્પરા કે અનુસાર ભગવાન્ અરિષ્ટનેમિ વિહાર કર રહે હેં-અતઃ હમલોગોં કો સ્થવિરોં કી આજ્ઞા લેકર અર્હત અરિષ્ટનેમિ કો વંદના કરને કે લિયે ચલનાં વહુત અચ્છા હૈ-ઉચિત્ત હૈ-(અન્નમન્નસ્સ ઇયમટ્ઠં પઢિસુણેતિ, પઢિસુણિત્તા જેણેવ થેરા ભગવંતો, તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિસ્તા થેરે ભગવંતે વંદંતિ ણમંસંતિ, વંદિત્તા ણમંસિત્તા એવં ઘયાસી-ઈચ્છામો ણં

પુન્વાણુઁ જાવ વિહરહ, તં સેયં સ્વલુ અમ્હં થેરા આપુચ્છિસ્તા અરહં અરિદ્ધનેમિ વંદના઼ ગમિત્તણ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તીર્થકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં પધારેલા છે. લોકોના મુખથી આ વાતને તે પાંચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સાંભળી. ત્યારે તેઓએ પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થકર પરંપરા મુજબ ભગવાન અરિષ્ટનેમિ વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિષ્ટનેમિને વંદન કરવા માટે અમારે જવું જોઈએ.

(અન્નમન્નસ્સ ઇયમટ્ઠં પઢિસુણેતિ, પઢિસુણિત્તા જેણેવ થેરા ભગવંતો, તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિસ્તા થેરે ભગવંતે વંદંતિ ણમંસંતિ, વંદિત્તા ણમંસિત્તા એવં ઘયાસી-ઈચ્છામો ણં તુમેર્હિ અન્નપુષ્પાયા સમાણા અરહં અરિદ્ધનેમિ જાવ ગમિત્તણ)

अनंगारघमासृतवर्षिणी टी० अ० ११ द्रौपदीचरितनिर्घणम्

५७७

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगाराः स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञाताः सन्तः
स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिक्रातु
प्रतिनिष्क्रामन्ति, मास-मासेन 'अणिक्वित्तेण' अनिक्षिप्तेन=अन्तररहितेन तपः

तुभेहिं अब्भुण्णनाया समाणा अरहं अरिद्धनेमि जाव गमित्तए अहासुहं
देवाणुप्पिया ! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भग-
वंतेहिं अब्भुण्णनाया समाणा थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमं-
सित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिकखमंति, मासं मासेणं अणिक्वित्ते
णं त । कम्मेणं गामाणुगामं दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे
तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव
विहरंति-तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपार-
णए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति, बीयाए जहा गोयमसामी,
णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसहं णिसामेति) इस
प्रकार का परस्पर का यह विचार उन्होंने ने स्वीकार कर लिया-स्वीकार
करके फिर वे जहाँ स्थविर भगवंत थे-वहाँ गये-वहाँ जाकर उन्होंने ने
उन स्थविर भगवंतों को वंदना की नमस्कार किया । वंदना नमस्कार
कर फिर उनसे इस प्रकार कहा हमलोग आप भगवंतों से आज्ञा प्राप्त
कर अर्हंत नेमिनाथ प्रभु को वंदना करने के लिये सौराष्ट्र जनपद जाना
चाहते हैं । तब उन स्थविर भगवंतों ने उनसे कहा हे देवानुप्रियो !
यथासुखम्-तुम्हें जैसे सुख हो-वैसा करो इस प्रकार उनस्थविर भग-

अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भग-
वंतेहिं अब्भुण्णनाया समाणा थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं
अंतियाओ पडिणिकखमंति, मासंमासेणं अणिक्वित्तेणं तवोक्कम्मणं गामाणुगामं
दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सह-
संबवणे उज्जाणे जाव विहरंति तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मास
खमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति, बीयाए एवं जहा गोयमसामी,
णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसहं णिसामेति)

आ रीते तेज्जाजे ज्येकणीजाना विचारोने स्वीकारी लीधा, स्वीकारीने
तेज्जा जथां स्थविर भगवंत छता त्यां गया. त्यां जठने तेभजे ते स्थविर
भगवंतोने वंदन अने नमस्कार कर्था. वंदन अने नमस्कार करीने तेभने आ
प्रभाजे विनंती करी के अभे आप भगवंतनी आज्ञा भेजवने अर्हंत नेमि-
नाथ प्रभुना वंदन भाटे सौराष्ट्र जनपदमां जवा धच्छीजे छीजे. त्यारे ते
स्थविर भगतोजे तेभने आ प्रभाजे आज्ञा करी के हे देवानुप्रियो ! ' यथा
सुखम् ' तभने जे काममां आनंद प्राप्त थाय ते करे. आ प्रभाजे ते स्थविर

कर्मणा ग्रामानुग्रामं 'दूइजमाणा' द्रवन्तः=गच्छन्तः, यावत् यत्रैव 'हस्तिकल्पे नयरे' हस्तिकल्पं नगरं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिकल्पस्य बहिः सहस्रा-
म्रवणे उद्याने यावद् विहरन्ति। ततः खलु ते युधिष्ठिरवज्जार्जित्वारोऽनगारा मास
क्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां स्वाध्यायं कुर्वन्ति, 'बीयाए' द्वितीयायां पौरु-
ष्यां ध्यानं ध्यायन्ति तृतीयायां पौरुष्यामत्वरितमचपलमसंभ्रान्तसदोरकमुख-
वस्त्रिकां प्रतिलेखयन्ति, भाजनवस्त्राणि प्रतिलेखयन्ति, भाजनानि च-पात्राणि
प्रमार्जयन्ति, भाजनान्यवगृह्णन्ति, गृहीत्वा एवं यथा गौतमस्वामी श्रमणं महावीर-
मापृच्छति नवरं-अथमत्र विशेषः। अत्र चत्वारोऽनगाराः युधिष्ठिरमापृच्छन्ति यावत्

वंतों से आज्ञा प्राप्त कर वे युधिष्ठिर प्रमुख पांच अनगार उन स्थविर
भगवंत को बंदना नमस्कार करके उनके पास से चले आये और निर-
न्तर मास मास खमण करते हुए एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार
करने लगे। इस तरह ग्रामानुग्राम विहार करते हुए वे पांचों अनगार
जहाँ हस्तिकल्पनाम का नगर था वहाँ आये। वहाँ आकर वे हस्तिकल्प
नगर के बाहिर सहस्राभ्रवन उद्यान में जाकर ठहर गये। इसके बाद वे
युधिष्ठिर के सिवाय चारों अनगार मासक्षपण के दिन प्रथम पौरुषी में
स्वाध्याय करते, द्वितीय पौरुषी में ध्यान करते, और तृतीय पौरुषी में
अत्वरित, अचपल एवं असंभ्रान्त होकर सदोरकमुखवस्त्रिकाकी प्रतिले-
खना करते, भाजन और वस्त्रोंकी प्रतिलेखना करते-फिर उन्हें उठाते-
और लेकर जिस प्रकार गौतम स्वामी श्रमण महावीर स्वामी से पूछकर
गोचरी के लिये निकलते उसी प्रकार ये भी युधिष्ठिर से पूछ कर हस्ति

लगव'तोनी आज्ञा भेजवीने ते युधिष्ठिर प्रमुख पांचे अनगारे ते स्थविर
लगव'तोने वंदन तेभज नमस्कार करीने तेभनी पासेधी आवता रझा अने
सतत मास भमणु करतां ऐक गामथी जीजे गाम विहार करवा लाग्या. आ
रीते ग्रामानुग्राम विहार करतां ते पांचे अनगारे त्यां हस्तिकल्प नामे नगर
हुंतु त्यां आव्या. त्यां आवीने तेज्जे हस्तिकल्प नगरनी गहार सहस्राभ्रवन
उद्यानमां जधने सुकाम कर्यो. त्यारभाइ ते युधिष्ठिर सिवायना आरे अनगारे
मासक्षपण पारणाना द्विसे प्रथम पौर्षीमां स्वाध्याय करता, द्वितीय पौर्षीमां
ध्यान करता अने तृतीय पौर्षीमां गोचरी भाटे नीकणती वण्णते पणु अथपण
असंभ्रात थधने सदोरकमुखवस्त्रिकानी प्रतिलेखना करता, भाजन अने वस्त्रोनी
प्रतिलेखना करता, त्यारभाइ तेभने उपाडता अने उपाडीने जेम गौतम स्वामी
श्रमणु लगवान महावीर स्वामीनी आज्ञा भेजवीने गोचरी भाटे नीकणता
तेभज तेज्जे पणु युधिष्ठिरनी आज्ञा भेजवीने हस्तिकल्प नगरमां उच्च, नीच,

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचमध्यमकुलानि ' अडमाणा ' अटन्तः बहुजनशब्दं निशामयन्ति-शृण्वन्ति-किं शृण्वन्तीत्याह- ' एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! अहं अरिष्टनेमिः ' उज्जितसेलसिहरे ' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासिकेन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः ' पञ्चहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं ' पञ्चभिः पञ्चविंशताऽनगारशतैः=शट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिवृतः सर्वदुःखप्रहीणो जातः ' ।

' तणं ' ति ' ततः खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रकल्पनगरं मे उच्च, नीच एवं मध्यम कुलों मे गोचरी के लिये आये। उस समय इन्होंने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एवं देवानुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भक्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तणं ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजनस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति) देवानुप्रियों ! अहंत अरिष्टनेमि उज्जयंतशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिवृत हो कर सर्व दुःखों से रहित हो गये हैं। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमंति जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव

अने मध्यम कुलोभां गोचरी भाटे आव्या. ते समये तेभण्णे घण्ण माणुसेना सुभथी अे नतना सभायारे सांलण्या के—

(एवं देवानुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भक्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तणं ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजनस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति)

हे देवानुप्रियो ! अहंत अरिष्टनेमि उज्जयंत शैलशिखर उपर-गिरनार पर्वत उपर-एक मासना आरे नतना आहारना परित्याग ३५ लक्ष प्रत्याख्यानथी ५३६ अनगारोनी साथे कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिवृत थने सर्व दुःखोथी मुक्त थन गया छे. आ प्रमाणे घण्ण माणुसेना सुभथी आ नतना सभायारे सांलणीने ते युधिष्ठिर पगरना आरे अनगारे ते हस्तिकल्प नगरथी नीकल्या.

૫૮૦

જાતાધર્મકથાકલ્પ

મ્રવણમુદ્યાનં યત્રૈવ યુધિષ્ઠિરોડનગારસ્તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગમ્ય ભક્તપાનં 'પચ્ચ-
ક્ષન્તિ' પ્રત્યાખ્યાન્તિ=પ્રત્યાખ્યાય 'ગમનાગમનસ્સ' ગમનાગમનં પ્રતિક્રામન્તિ
ઈર્વાપધિકીં કુર્વન્તિ પ્રતિક્રમ્ય 'એસણમણેસણં' એસણામનેષણામ્ આલોચયન્તિ,
આલોચ્ય ભક્તપાનં-પ્રતિદર્શયન્તિ-યુધિષ્ઠિરસ્ય પુરોડવસ્થાપ્ય પ્રતિદર્શયન્તિ, પ્રતિ-
દર્શ્ય એવમવાદિષુઃ-એવં ચલુ હે દેવાનુપ્રિય ! યાત્ કાલગતઃ=અર્હન્ અરિષ્ટનેમિ
મોક્ષપ્રાપ્તઃ, 'તં' તસ્માત્ શ્રેયઃ ચલુ અસ્માકં હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! इमं पूर्वगृहीतं

જુહિદ્વિલ્લે અણગારે તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા ભક્તપાણં પચ્ચ-
ક્ષન્તિ, પચ્ચક્ષિત્તા ગમનાગમનસ્સ પડિક્કમંતિ પડિક્કમિત્તા એસણમ-
નેસણં આલોપ્પંતિ, આલોપ્પિત્તા ભક્તપાણં પડિદંસેંતિ પડિદંસિત્તા એવં
વયાસી-એવં ચલુ દેવાણુપ્પિયા ! જાવ કાલગપ્પ તં સેયં ચલુ અમ્હં દેવા-
ણુપ્પિયા ! इमं पुव्वगृहीतं भक्तपाणं परिद्वेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं
સણિયં દુરુહિત્તપ્પ) નિકલકર વે જહાં સહસ્રામ્રવન નામ કા ઉદ્યાન થા
ઔર ઉસ મેં મો જહાં યુધિષ્ઠિર અનગાર વિરાજમાન થે, વહાં આયે ।
વહાં આકર ઉન્હોં ને ઉનકી સાક્ષી સે ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરદિયા ઔર
ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરકે ફિર ઉન્હોં ને ઈર્વાપથ શુદ્ધિ કી । શુદ્ધિ કરકે
એષણા અનેષણા કી આલોચના કરકે ફિર ઉન્હોં ને લાયે દુપ્પ ઉસ
આહાર કો યુધિષ્ઠિર અનગાર કે સમક્ષ રચ્ચ કર દિચલાયા । દિચલાકર
ફિર વે હિસ પ્રકાર કહને લગે । હે દેવાનુપ્રિય ! अर्हन् अरिष्टनेमि मुक्ति
કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં-હિસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! हमको अब यही उचित

(પડિનિક્કમિત્તા જેણેવ સહસંવવણે ઉડ્ઝાણે જેણેવ જુહિદ્વિલ્લે અણગારે
તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ ઉવાગચ્છિત્તા ભક્તપાણં પચ્ચક્ષન્તિ પચ્ચક્ષિત્તા ગમનાગમનસ્સ
પડિક્કમંતિ, પડિક્કમિત્તા એસણમનેસણં આલોપ્પંતિ, આલોપ્પિત્તા ભક્તપાણં પડિદંસેંતિ
પડિદંસિત્તા એવં વયાસી-એવં ચલુ દેવાણુપ્પિયા ! જાવ કાલગપ્પ તં સેયં ચલુ
અમ્હં દેવાણુપ્પિયા ! इमं पुव्वगृहीतं भक्तपाणं परिद्वेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं
સણિયં દુરુહિત્તપ્પ)

નીકળીને તેઓ જ્યાં સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું અને તેમાં પણ
જ્યાં યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે તેમની સામે
લક્ષ્ય પાનતું પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધું. પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઈર્વાપથની શુદ્ધિ
કરી. શુદ્ધિ કરીને એષણા અને અનેષણા કરી, આલોચના કરી. આલોચના
કરીને તેમણે લઈ આવેલા તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને
ખતાઓ. ખતાવ્યા બાદ તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય !
अर्हन् अरिष्टनेमि प्रबुद्धे मुक्ति भेगवी छे अटका भाटे छे दैवानुप्रिय ।

ધેનૈર્ગાર્ધમામૃતવર્ષિણી ટીકા અં ૧૬ દ્રૌપદીકરિતનિરૂપણમ્

૫૮૧

મક્તપાનં પરિષ્ઠાપ્ય ' સેતુંજં ' શત્રુંજયં-શત્રુંજયનામકં પર્વતં શ્વનૈઃ શનૈર્દૂરોદિતુમ્
=આરોદિતુમ્, તથા-' સંલેહનાશ્સનાશ્સિયાણં ' સંલેહના જોષણાજુષ્ટાનાં=સંલે-
હનાયાં કષાયશરીરકૃષીકરણે યા જોષણા-પ્રીતિઃ સેવા વા તયા જુષ્ટાઃ-સેવિ-
તાસ્તેષાં=સંલેહનાતપઃકારિણામિત્યર્થઃ-કાલમ્-અનવકાઙ્ક્ષમાણાનામ્ - અનિ-
ચ્છતામ્ વિદર્શુમ્, ઇતિ કૃત્વાઽન્યોન્યસ્યૈતમર્થે પ્રતિશ્રુષ્વન્તિ=સ્વીકુર્વન્તિ, પ્રતિ-
શ્રુત્ય તવ્ પૂર્વગૃહીતં મક્તપાનમ્ એકાન્તે=માસુકે સ્થાને પરિષ્ઠાપયન્તિ, પરિષ્ઠાપ્ય
યત્રૈવ શત્રુંજયઃ પર્વતસ્તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય શત્રુંજયં પર્વતં શ્વનૈઃ શનૈર્દૂરોદન્તિ
આરોદન્તિ, દુરૂહ્ય યાવત્-કાલમનવકાઙ્ક્ષમાણા વિદરન્તિ ।

હૈ કિ હમ્ હસ પૂર્વ ગૃહીત મક્ત પાન કા પરિષ્ઠાપન કર શત્રુંજય નામકે
પર્વત પર ધીરે ધીરે ચઢે (સંલેહના શ્સના શ્સિયાણં કાલં અણવકંત્વ-
માણાણં વિદરિત્તે સ્તિકદૃદ્ધ અણમણસ્સ એમદં પડિસુળેંતિ, પડિસુ-
ણિત્તા તં પુવ્વગહિયં મક્તપાણં એગંતે પરિદ્વેંતિ, પરિદ્વિત્તા જેણેવ
સેતુંજં પવ્વે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ) ઔર વહાં કાય ઔર કષાય કો
કૃશ કરનેવાલી સંલેહના મરણાશંસા સેરહિત હોકર પ્રીતિ પૂર્વક
ધારણ કરે હસ પ્રકાર વિચાર કરકેઁઁઁને પરસ્પર કે હસ વિચાર રૂપ
અર્થ કો સ્વીકાર કર લિયા । સ્વીકાર કરકે ફિર ઉસ પૂર્વ ગૃહીત મક્ત
પાન કો ઁઁઁને એકાન્ત સ્થાન મેં પરિષ્ઠાપિત કર દિયા ઔર પરિષ્ઠાપિત
કરકે વે સય જહાં શત્રુંજય પર્વત થા વહાં ચલે ગયે (ઉવાગચ્છિત્તા)
વહાં જાકર કે (સેતુંજં પવ્વયં દુરૂહંતિ, દુરૂહિત્તા જાવ કાલં અણવ-

હવે અમને એ જ વાત યોગ્ય લાગે છે કે અમે આ પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનનું
પરિષ્ઠાપન કરીને શત્રુંજય નામના પર્વત ઉપર ધીમે ધીમે ચઢીએ.

(સંલેહના શ્સના શ્સિયાણં કાલં અણવકંત્વમાણાણં વિદરિત્તે સ્તિકદૃદ્ધ
અણમણસ્સ એમદં પડિસુળેંતિ, પડિસુણિત્તા તં પુવ્વગહિયં મક્તપાણં એગંતે પરિ-
દ્વેંતિ, પરિદ્વિત્તા જેણેવ સેતુંજં પવ્વે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ)

અને ત્યાં કાય અને કષાયને કૃશ કરનારી સંલેહનાને મરણાશંસાથી
રહિત થઇને પ્રેમપૂર્વક ધારણ કરીએ. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક
બીજાના આ વિચાર રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો. સ્વીકાર કરીને તેમણે તે
પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનને એકાન્ત સ્થાને પરિષ્ઠાપિત કરી દીધું. અને પરિષ્ઠાપિત
કરીને તેઓ સર્વે જ્યાં શત્રુંજય પર્વત હતો ત્યાં આઘ્યા ગયા. (ઉવાગચ્છિત્તા)
ત્યાં જઇને—

(સેતુંજં પવ્વયં દુરૂહંતિ, દુરૂહિત્તા જાવ કાલં અણવકંત્વમાણા વિદરિત્તિ,

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगाराः 'सामाह्यमाह्याइं' सामायि-
कादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा षष्ठाष्ट-
मादितपः कृत्वा द्विमासिकया संलेखनयाऽऽत्मानं 'ज्ञोसित्ता' जुष्ट्वा सेवित्वा
यस्यार्थाय क्रियते नग्नभावो=निर्ग्रन्थभावः यावत् तमर्धमाराधयति, आराध्य
अनन्तम् अनन्तार्थविषयकं यावत् 'केवलवरणाणदंसणे' केवलवरज्ञानदर्शनं समु-
त्पन्नं यावत् सिद्धाः=सिद्धिगतिं प्राप्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३५ ॥

कंखमाणा विहरन्ति, तएणं ते जुहिद्विल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामा-
ह्यमाह्याइं चोदसपुव्वाइं बहूणि वासाणि० दो मासियाए संलेहणाए
अत्ताणं ज्ञोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहंति,
तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणादंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा)
वे शत्रुंजय पर्वत पर चढे चढकर के उन्होंने मरणाशंसा से रहिन होकर
संलेखना धारण करली । इस तरह उन युधिष्ठिर प्रमुख पंच अनगारोंने
सामायिक आदिचतुर्दश पूर्वोका अध्ययन करके अनेक वर्षों तक श्राम-
ण्य पर्याय का पालन करके तथा षष्ठ, अष्टम, आदि तपस्याओं को
करके अन्त में दो मास की संलेखना से अपने आप की प्रीति पूर्वक
सेवित किया और जिस निमित्त नग्न भाव-निर्ग्रन्थ अवस्था धारण की
थी उस अर्थ को उन्होंने ने सिद्ध कर लिया । सिद्ध करके-आराधित कर
के अनन्त अर्थ को विषय करने वाले केवलवरज्ञानदर्शन को उत्पन्नकर
यावत् वे सिद्धि गति को प्राप्त हो गये ॥ सूत्र ३५ ॥

तएणं ते जुहिद्विल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाह्यमाह्याइं चोदसपुव्वाइं०
बहूणि वासाणि० दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणे ज्ञोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ,
णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहंति, तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाण
दंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा)

तेओ शत्रुंजय पर्वत उपर चढया अने चढीने तेमणे मरणाशंसाथी
रहित यधने संलेखना धारण करी लीधी. आ प्रमाणे ते युधिष्ठिर प्रमुख
पांच अनगारोओ सामायिक वगेरे चतुर्दश पूर्वोक्त अध्ययन करीने बलां वर्षो
सुधी श्रामण्य-पर्यायनुं पालन करीने तेमन षष्ठ, अष्टम वगेरे तपस्याओने
करीने छेवटे ओ मासनी संलेखनाथी प्रेमपूर्वक पोतानी जतने सेवित करी
अने ओ निमित्तने लधने नग्नभाव-निर्ग्रन्थ अवस्था धारण करी छती ते
अर्थने तेमणे सिद्ध करी लीधी. सिद्ध करीने आराधित करीने अनन्त अर्थने
विषयइय ज्ञानावनार केवलज्ञान दर्शनने उत्पन्न करीने यावत् तेओओ सिद्धगति
प्राप्ती लीधी. ॥ सूत्र ३५ ॥

अमत्तारचमामृतवर्षिणी टीका अ० १६ द्रौपदीचरितनिष्पणम्

५८३

मूलम्—तएणं सा दोवई अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए
सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूणि
वासाणि० मासियाए संलेहणाए० आलोइयपडिक्कंता कालमासे
कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं
दस सागरोवमाइं ठिई पणत्ता तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस
सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, से णं भंते ! दुवए देवे ताओ जाव
महाविदेहे वासे सिज्जइ जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! सम-
णेणं जाव संपत्तेणं सोलमस्स णायज्जयणस्स अयमट्ठे पणत्ते
त्तिवेमि ॥ सू० ३४ ॥ सोलसमं नायज्जयणं समत्तं ॥ १६ ॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु सा द्रौपदी आर्या
साध्वी सुव्रतानामार्थिकाणामन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते,
अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा मासिक्या संलेखनया आलोचित-
प्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा ‘बंभलोए’ पंचमे ब्रह्मलोके देवत्वेन ‘उववन्ना’

‘तएणं सा दोवई’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सा दोवई अज्जा) उस द्रौपदी आर्यानि
(सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहि-
ज्जइ) सुव्रता आर्या के पास सामायिक आदि ११ अंगों का अध्ययन
किया (अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए संलेहणाए० आलोइय-
पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना) अध्ययन करके
अनेक वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर एक मास की संलेखना

तएणं सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्पार५४ (सा दोवई अज्जा) ते द्रौपदी आर्याणि (सुव्व-
याणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ) सुव्रता
आर्यानी पासे सामायिक वगेरे ११ अंगोनं अध्ययन कयुं.

(अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए संलेहणाए० आलोइय पडिक्कतां
कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना)

अध्ययन करीने बहूनि वर्षे सुधी श्रामण्य पर्यायनं पालन कयुं. त्पार-

ઉત્પન્ના, તત્ર તસ્મિન્ દેવલોકે-સ્વલુ અસ્ત્યેકેવાં=કેવાંચિદવાનામ્ દશસાગરોપ-
માનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા, તત્ર સ્વલુ દ્રૌપદેવસ્યસ્ય દશસાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા તત્ર
સ્વલુ ગૌતમઃ પુચ્છતિ-હે ભદ્રન્ત ! સ્વલુ દ્રૌપદો દેવ આયુર્ભવસ્થિતિક્ષયેણ 'તાઓ'
તસ્માદ્ દેવલોકાચ્ચ્યુત્વા કુત્રગમિષ્યતિ કુત્રોત્પત્સ્યતે ? ભગવાન્ પ્રાહ- ' જાવ '
ઇતિ યાવન્મહાવિદેહે વર્ષે સેત્સ્યતિ, યાવત્ સર્વદુઃસ્વાનામન્તં કરિષ્યતિ ।

સે આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત બન વે કાલ અવસર કાલ કર કે પાંચવેં બ્રહ્મ-
લોક મેં દેવ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । (તત્થ ણં અત્યે ગદ્દયાણં દેવાણં
દસ સાગરોવમાઈં ઠિઈં પળ્લન્તા, તત્થ ણં દુવયસ્સ દેવસ્સ દસ સાગરો-
વમાઈં ઠિઈં પળ્લન્તા, સેણં ભંતે ! દુવણ દેવે તાઓ જાવ મહાવિદેહે વાસે
સિજ્ઞહ, જાવ કાહિહ । એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં સોલસમ-
સ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લન્તે સિંબેમિ) ઉસ દેવલોક મેં કિતનેક
દેવોં કી દશ સાગર કી સ્થિતિ પ્રજ્ઞસ હુઈ હૈં । સો વહાં દ્રૌપદી દેવ કી
દશ સાગર કી સ્થિતિ હુઈ । અથ ગૌતમ પૂછતે હૈં હે ભદ્રન્ત ! વહ દ્રૌપદી
દેવ આયુ એવં ભવસ્થિતિ કે ક્ષય હોને પર વહાં સે ચવ કર કહાં જાવે-
ગા-કહાં ઉત્પન્ન હોગા ? ઉત્તર મેં ભગવાન કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! વહ
દ્રૌપદી દેવ વહાં સે ચવ કર મહાવિદેહ ક્ષેત્ર મેં ઉત્પન્ન હોગા ઓર વહીં
સે સિદ્ધ બનેગા યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અંત કરેગા ।

પછી એક માસની સંલેખનાથી આલોચિત પ્રતિક્રાંત બનીને તેઓ કાળ અવ-
સરે કાળ કરીને પાંચમા બ્રહ્મલોકમાં દેવના પર્યાયથી જન્મ પામી.

(તત્થ ણં અત્યેગદ્દયાણં દેવાણં દસ સાગરોવમાઈં ઠિઈં પળ્લન્તા, તત્થ ણં
દુવયસ્સ દેવસ્સ દસ સાગરોવમાઈં ઠિઈં પળ્લન્તા, સેણં ભંતે ! દુવણ દેવે તાઓ
જાવ મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞહ, જાવ કાહિહ । એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેણં જાવ
સંપત્તેણં સોલસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લન્તે સિંબેમિ)

તે દેવલોકમાં કેટલાક દેવેની દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞસ થઈ છે. આ
પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીની ત્યાં દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞસ થઈ.

હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદ્રન્ત ! તે દ્રૌપદી દેવીની આયુ
અને ભવસ્થિતિ પૂરી થયા બાદ ચવીને કયાં જશે ? કયાં ઉત્પન્ન થશે ?

તેના ઉત્તરમાં ભગવાન કહેવા લાગ્યા કે હે ગૌતમ ! તે દ્રૌપદી દેવ
ત્યાંથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ બનશે.
યાવત્ તેઓ પોતાના સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે.

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૬ દ્રૌપદીચરિતનિરૂપણમ

૫૮૫

સુધર્માસ્વામી કથયતિ-‘ एवं खलु ’ इत्यादि । एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाता-
ध्ययनस्यायं=पूर्वकथितः अर्थः=द्रौपदीदृष्टान्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः, प्ररूपितः, इति
ब्रवीमि व्याख्यापूर्ववत् ॥ ३४ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-
लापालापक-प्रविशुद्भगद्यपयनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
त्रपतिकोल्हापुरराजपदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-
व्रतिविरचितायां-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्या, नगारधर्मांमृतवर्षि-
ष्याख्यायां व्याख्यायां षोडशमध्ययनं समाप्तं ॥ १६ ॥

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો
સિદ્ધિ ગતિનામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં હસ ષોડશ જ્ઞાનાધ્યયન
કા યહ પૂર્વોક્ત દ્રૌપદી દૃષ્ટાન્ત રૂપ ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈં । એસા
મૈં ઉન્હીં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે દ્વારા કહે શ્રુત ઉપદેશ કે અનુસાર
કહતા હૈં ॥ સૂત્ર ૩૬ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“ જ્ઞાતાધર્મકથાંગસૂત્ર ” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા
સોલહવાં અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે જો
સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે. આ સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વે
વર્ણવેલો દ્રૌપદી દૃષ્ટાંત ૩૫ ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. તે શ્રમણ ભગવાન
મહાવીર વડે કહેવાયેલા શ્રુત ઉપદેશ મુજબ જ તમને હું કહી-હો છું. ॥સૂ.૦૩૬॥
શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનું સોળમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

॥ अथ सप्तदशाध्ययनम् ॥

व्याख्यातं षोडशाध्ययनम्, साम्प्रतं सप्तदशं व्याख्यायते । पूर्वस्मिन् अध्ययने द्रौपद्या नागश्रीभवे कुत्सितदानेन तस्या एव सुकुमारिकाभवे निदानेन चानर्थः प्रोक्तः, साम्प्रतमवशेन्द्रियत्वेनानर्थो भवतीत्युच्यते, इति सम्बन्धेन सम्बद्धस्यास्याध्ययनस्येदमादिमं सूत्रम्—‘ जङ्गणं भंते ! ’ इत्यादि ।

मूलम्—जङ्गणं भंते ! समणैणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते सत्तरसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणैणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पत्तत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं

सत्रहवां अध्ययन का प्रारंभ

—आकीर्ण-जातिमान् घोड़े का सत्रहवां अध्ययन प्रारंभः—

सोलहवां अध्ययन संपूर्ण हुआ—अब सत्रहवां अध्ययन कहा जाता है । पूर्व अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि द्रौपदी ने नागश्री के भव में कुत्सित दान दिया था—कडवे तुंबेका आहार मुनिराज को दिया था—तथा जब वह सुकुमारिका के भव में उत्पन्न हुई थी तो उसने निदानबंध किया था इससे उसे महान् अनर्थ की प्राप्ति हुई । अब इस अध्ययन में यह विषय स्पष्ट किया जावेगा—कि जो अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं रखते हैं—वे अनर्थ के भागी होते हैं । इसी संबंध से सम्बन्धित हुए इस अध्ययन का यह आदिम सूत्र है—

सत्तरमा अध्ययननो प्रारंभ

—आकीर्ण जातिमान् घोडानुं सत्तरमुं अध्ययन प्रारंभः—

सोणमुं अध्ययन पूरं थछं गथुं छे, हवे सत्तरमा अध्ययननी शरुआत थाय छे. सोणमा अध्ययनमां ओ वातनुं स्पष्टीकरण करवामां आओं छे के द्रौपदीओ नागश्रीना लवमां कुत्सित (जोडुं) दान कथुं हतुं. कडवा तुंबानो आहार मुनिराजने आओ हतो. तेमज न्यारे ते सुकुमारिकाना लवमां उत्पन्न थछं हती त्यारे तेओ निदान बंध कथो हतो. तेथी तेने महान अनर्थनी प्राप्ति थछं हती. हवे आ सत्तरमा अध्ययनमां ओ वात स्पष्ट करवामां आवशे के ओओ पोतानी इन्द्रियोने वशमां राखता नथी—तेओ अनर्थ ओगवे छे. ओज वातने स्पष्ट करतुं सत्तरमा अध्ययननुं आ पडेहुं सूत्र छे.

बैनगारघर्मानृतवर्षिणी टी० अ० १७ नौकावणिग्वर्णनम्

५८७

समएणं हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ णं कण्णकेऊ
 णामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थणं हत्थिसीसे णयरे बहवे
 संजत्ता णावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव बहुजणस्स अप-
 रिभूया यावि होत्था, तएणं तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं
 अन्नया एगयओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुदं अणेगाइं
 जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था तएणं तेसिं जाव बहूणि
 उप्पाइयसयाइं जहा मार्गदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ
 समुत्थिए, तएणं सा णावा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्ज-
 माणी२, संचालिज्जमाणी२, संखोहिज्जमाणी२, तत्थेव परिभ-
 मइ, तएणं से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठसुइए णट्ठसण्णे मूढ-
 दिसाभाए जाए यावि होत्था, ण जाणइ कयरं देसं वा दिसं
 वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिए त्तिकट्ठु ओहयमणसंकप्पे
 जाव झियायइ, तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य
 गब्भिह्लगा य संजत्ताणावावाणियगा य जेणैव से णिज्जामए
 तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवा-
 णुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह ?, तएणं से
 णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-एवं खलु
 देवाणुप्पिया ! णट्ठमइए जाव अवहिए त्ति कट्ठु तओ ओहय-
 मणसंकप्पे जाव झियामि, तएणं ते कुच्छिधाराय ४ तस्स
 णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ४ णहाया
 कयबालिकम्मा करयल बहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लि-

नाए जाव उवायमाणा२ चिट्ठंति, तएणं से णिज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी— एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालियदीवे तेणं संवूढा एसणं कालियदीवे आलोक्कइ, तएणं ते कुच्छिधारा य४ तस्स णिज्जामगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोयवहणं लवेति लवित्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति, तत्थ णं ते बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासंति पासित्ता तेसिं गंधं अग्घायंति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं उब्भमंति, तेणं तत्थ पउरतणपाणिया निव्वभया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=

—जइणं भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(भंते ! हे भदन्त ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं) यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धिगति नामकस्थान को प्राप्तकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णसे सत्तर-

जइणं भंते ! इत्यादि—

टीकार्थ—(भंते !) हे भदन्त ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं) ने श्रमण भगवान् महावीरे के—जेणो सिद्धिगति नामना स्थानने भेणवी थूकया छे.

पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिशीर्षं नाम नगरमासीत् । ‘वण्णओ’ वर्णकः=‘ऋद्धे’ इत्यादि-नगरवर्णनम् पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् ‘वण्णओ’ वर्णकः—‘महयाद्विमवंते’ इत्यादि राजवर्णनं पूर्ववद् बोध्यम् । तत्र खलु हस्तिशीर्षे मस्स णं भंते ! णायज्झणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते) सोलहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है—तो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर ने सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है (एवं खलु जंबू !) इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी अब उन्हें समझाते हैं—वे कहते हैं हे जंबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है:—

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ, णं कणगकेऊणामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थ, णं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजत्ता णावा वाणिगया परिवसंति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था) उस काल और उस समय में हस्तिशीर्ष नाम का नगर था । “ऋद्ध” इत्यादि रूपसे पूर्व अध्ययनों में वर्णित पाठ की तरह इस नगर का वर्णन जानना चाहिये । उस नगर में कनक केतु नामका राजा रहता था । इसका भी वर्णन “महया द्विमवंत” इत्यादिरूप से पहिले के अध्ययनोंमें वर्णित राजाओंके वर्णन जैसा ही जानना चाहिये । उस

(सोलसमस्स णायज्झणस्स अयमट्ठे पणत्ते सत्तरमस्स णं भंते ! णायज्झणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते)

सोणमा ज्ञाताध्ययननो पूर्वोक्त इधे अर्थ प्ररूपित कर्था छे त्यारे सिद्धिगति स्थानने भेणवी बुद्धेला ते ज श्रमणु लगवान महावीरे सत्तरमां ज्ञाताध्ययननो शे अर्थ प्ररूपित कर्था छे.

(एवं खलु जंबू) आ रीते ज'णूना प्रश्नने सांलणीने तेभने समज्जवतां सुधर्मा स्वामी कडेवा लाग्या के डे ज'णू ! तभारा प्रश्ननो जवाज आ प्रमाणे छे के:—

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थणं कणगकेऊणामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थणं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजत्ता णावा वाणिगया परिवसंति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था)

ते काले आने ते समये हस्तिशीर्ष नामे नगर હતું. “ઋદ્ધ” વગેરે રૂપમાં પહેલાંના અધ્યયનોમાં વર્ણન કરવામાં આવેલા પાઠની જેમ આ નગરનું વર્ણન પણ બાણી લેવું બેધબે. તે નગરમાં કનકકેતુ નામે રાજા રહેતો હતો.

નગરે વહવઃ ‘ સંજત્તાળાવાવાણિયગા ’ સંયાત્રાનૌકાવાણિજકાઃ=સં=સજ્જતા યાત્રા=દેશાન્તરગમનં સંયાત્રા, તત્પથાના નૌકાવાણિજકાઃ=પોતવણિજઃ-સંયાત્રા- નૌકા વાણિજકાઃ પરિવસન્તિ કીદશાઃ ? इत्याह-आढ्या यावत् ‘ बहुजनस्स ’ बहुजनस्य सम्बन्धसामान्ये पष्ठीजनसमुदायेनेत्यर्थः ‘ अपरिभूया ’ अपरिभूताः= पराभवरहिता चाप्यासन् । ततः खलु तेषां संयात्रानौका वाणिजकानाम् अन्यदा= अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये ‘ एगयाओ ’ एकतः एकत्रमिलित्वा ‘ जहा अरहणओ ’ यथा अईल्लकः=अत्रैवाष्टमाध्ययनोक्ताईल्लकवत् यावत् लवणसमुद्रमनेकानि योजन- शतानि ‘ ओगाढा ’ अवगाढाः=उत्तीर्णाश्चप्यासन् । ततः=तत्र खलु तेषां यावत् बहूनि ‘ उप्पाइयसयाइं ’ औत्पातिकशतानि=आकस्मिकौत्पातशतानि यथा माक- न्दिकदारकयोः-जिनरक्षितजिनपालितयोः संजातानि तथैवास्यापि यावत् ‘ कालि- यवाए ’ कालिकवातः प्रलयकालिकवत्प्रचण्डवातश्च तत्र समुत्थितः । ततः=तदन- न्तरं खलु सा नौका तेन कालिकवातेन ‘ आघोलिज्जमाणी २ ’ आघूर्ण्यमाना २ पुनः पुनर्भ्रम्यन्ती ‘ संचालिज्जमाणी २ ’ संचाल्यमाना २ पुनः पुनश्चाल्य- हस्तिशीर्षं नगरमें अनेक पोत वणिक् (नावसे व्यापार करने वाले) रहते थे । ये एक साथ मिलकर ही परदेश में जाकर व्यापार किया करते थे । इनकी उस नगर में अच्छी प्रतिष्ठा थी-कारण ये सब के सब लक्ष्मीदेवी के विशेष रूप से कृपापात्र थे । (तएणं તેસિ સંજત્તા ળાવા વાણિયગાળં અન્નયા એગયાઓ જહા અરહણાઓ જાવ લવણસમુદ્દં અળેગાઈં જોયણ- સયાઈં ઓગાઢા યાવિ હોત્થા, તણં તેસિ જાવ બહૂણિ ઉપ્પાહયસયાઈં જહા માગંદિયદારગાળં જાવ કાલિયવાએ ય તત્થ સમુત્થિએ, તણં સા તેણં કલિયવાણં આઘોલિજ્જમાણી ૨ સંચાલિજ્જમાણી ૨ સંચોહિજ્જમાણી

આ રાજાતું વર્ણુન પણ “ મહ્યા હિમવંત ” વગેરે રૂપમાં પહેલાંના અધ્ય- યનોમાં વર્ણિત રાજાઓના વર્ણુન જેવું જ બાણી લેવું જોઈએ. તે હસ્તિશીર્ષ નગરમાં ઘણા પોતવણિકો (વહાણ વડે વેપાર કરનારા) રહેતા હતા તેઓ સર્વે એકી સાથે મળીને પરદેશમાં જતા અને ત્યાં વેપાર કરતા હતા. તે નગરમાં તેમની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી. કેમકે ખાસ કરીને તેઓ સર્વે લક્ષ્મીના કૃપાપાત્ર હતા.

(તણં તેસિ સંજત્તા ળાવા વાણિયગાળં અન્નયા એગયાઓ જહા અરહણાઓ જાવ લવણસમુદ્દં અળેગાઈં જોયણસયાઈં ઓગાઢા યાવિ હોત્થા, તણં તેસિ જાવ બહૂણિ ઉપ્પાહયસયાઈં જહા માગંદિયદારગાળં જાવ કાલિયવાએ ય તત્થ સમુ- ત્થિએ તણં સા ળાવા તેણં કલિયવાણં આઘોલિજ્જમાણી ૨ સંચાલિજ્જમાણી

अनवारधर्मावृत्तवर्णिणी टी० अ० १७ निर्यामकस्यद्विगुमूढरवम्

५११

माना 'संखोद्विज्जमाणी २' संज्ञोभ्यमाणा २ पुनः पुनः क्षोभं प्राप्यमाणा सती तत्रैव=एकस्थान एवैतस्ततः परिभ्राम्यति किन्तु ततः परं गन्तुं न प्रभरतीति भावः । ततः खलु स निर्यामकः=नाविकः 'णट्टमइए' नष्टमतिकः=मतिज्ञानरहितः 'णट्टसुइए' नष्टश्रुतिकः=विस्मृतनिर्यामकशास्त्रः दिग्निर्णयं कर्तुमशक्तत्वात् 'णट्टसण्णे' नष्टसङ्गः=मार्गज्ञानरहितः 'मूढदिसाभाए' मूढदिग्भागः=पूर्वादि-दिग्भिभागज्ञानरहितः जातश्चर्यासीत्, पुनश्च स न जानाति यत् कतरं=कं देशं

२ तत्थेव परिभ्रमइ, तएणं से णिज्जामए णट्टमइए णट्ट सुइए णट्ट सण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था) एक दिनकी बात है कि जब ये सांघ्या-त्रिक पोत वणिक एक जगह मिलकर बैठे हुए थे तब अष्टम अध्ययन में वर्णित अरहन्नक सेठ की तरह इनका लवण समुद्रसे होकर परदेश में व्यापार निमित्त जाने का विचार हुआ । विचार स्थिर होते ही ये जय नौका द्वारा लवण समुद्र में सैकड़ों योजन तक निकल चुके तब इनके लिये जिन रक्षित और जिनपालितकी तरह आकस्मिक अनेक उत्पातशत (सैकड़ों) हुए । उस समय प्रलय कालकी तरह प्रचण्ड वायु उठी । उससे उनकी नौका बार २ डगमगा ने लगी इधर से उधर फिर ने लगी । बार २ चञ्चल होकर बार २ क्षुब्ध होकर एक ही स्थान पर नीची ऊँची होने लगी-उससे आगे वह नहीं बढ़ी । इससे निर्यामिक-नाविक-मतिज्ञान से रहित हो गया । दिशाओं का निर्णय करने का ज्ञान उसका जाता रहा । वह मार्ग ज्ञान रहित होकर दिग्मूढ बन गया । (ण जणइ

२ संखोद्विज्जमाणी १ तत्थे वपरिभमइ, तएणं से णिज्जामए णट्टमइए णट्टसुइए णट्टसण्णे मूढ दिसाभाए जाए यावि होत्था)

एक दिवसनी रात छे के ब्यारे तेओ सवे सांघ्यात्रिक पोतवणिके ओक स्थाने ओकत्र थधने जेठा छेता त्यारे आठमा अध्ययनमा वर्णित अरहन्नक शेठनी जेम तेमने पणु लवणु समुद्रमा थधने परदेशमा वेपार भाटे जवाने विचार थये. विचार स्थिर थतां ज तेओ ब्यारे नौका वडे लवणु समुद्रमा से'कडे योजन सुधी पडो'थी गया त्यारे लनपालित अने लनरक्षितनी जेम ज तेमना भाटे पणु से'कडे ओचिता उपद्रवे उत्पन्न थया. ते वणते प्रलय काणना जेवे अथ'उ वायु कुं'कावा लाग्ये. तेथी तेमनी नौका बार'वार उग्र-भगवा लागी, आभधी तेम इरवा लागी. वारेधडीओ ब'यण थधने, बार'वार क्षुब्ध थधने ओक ज स्थान उपर नीचे उपर थवा लागी, तेनाथी आगण बधी नडि. तेथी निर्यामिक-नाविक मतिज्ञानधी रहित थध गये. दिशा-ओने जणुवानुं तेनुं ज्ञान जतुं रथुं. मार्गज्ञानधी रहित थधने दिग्मूढ बनी

वा दिशं वा विदिशं वा प्रति मे पोतवहनम् नौकायानं ' अवहिए ' अपहतम् महा वातेन नीतम् , इति । इति कृत्वा=इतिमनसि निधाय अपहतमनः संकल्पो यावद् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति । ततः खलु ते बहवः कुक्षिधाराश्च=पार्श्वतो नौका चालकाः कर्णधाराश्च=नाविकाः । ' गम्भिल्लगाय ' गार्भेयकाश्च नौमध्ये यथावसर कर्मकराः, संयात्रानौका वाणिजकाः=भाण्डपतयश्च यत्रैव स निर्यामकः=नौका-धिपतिगत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमत्रादिषुः-किं खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! अपहतमनःसंकल्पाः निरुत्साहमनस्काः यावत् ' झियायह ' ध्यायथ आर्तध्यानं कुरुथ, आदरार्थं बहुवचनम् । ततः खलु स निर्यामकस्तान् बहून् कुक्षिधारांश्च ४

कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिएत्ति कट्टु) अतः जब उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं रहा कि यह महावात मेरी नौका को किस दिशा अथवा विदिशा की ओर ले गया है-तब इस प्रकार मन में विचार कर के वह (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायह) अपहत मनः संकल्पवाला बनकर यावत् आर्तध्यान करने लगा । (तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गम्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणियमा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ) इतने में अनेक कुक्षिधर-पार्श्व में बैठकर नौका चलाने वाले कर्णधार-नाविक, गार्भेयक-नौका के भीतर यथावसर काम करने वाले और सांयात्रिक पोत वणिज जहाँ वह निर्यात्रिक था-वहाँ आये । (उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएणं से णिज्जामए

गयो. (ण जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिएत्ति कट्टु)
ऐथी ज्यारे तेने आ वातनी पणु अमर रही नडि डे आ भडावात अमारी नौकाते कुछ दिशा अथवा तो विदिशा तरङ्ग लक्ष गयो छे. त्यारे मनमां आ जतने विचार करीने ते (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायह) अपहतमनः संकल्पवालो धरने यावत् आर्तध्यान करवा लाग्यो.

(तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गम्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणियमा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ)

ऐटला भां घण्टा कुक्षिधर-पार्श्वभां भेसीने नौका अलावनारा, कुक्षिधर नाविक, गार्भेयक-नौकाभां यथा समय काम करनारा अने सांयात्रिको-पोत-वणिजो ज्यो ते निर्यामक हुतो त्यां गया.

(उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-

एवमवादीत् एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! अहं नष्टमतिकः यावत् न ज्ञायते कं देशं वा दिशं वा विदिशं वा प्रतिपोतवहनम् 'अवद्विष्ट' अपहतं=महावातेन नीतम् ? इति कृत्वा=इति विचार्य ततः=तस्मात्कारणात् अपहतमनःसङ्कल्पो यावत् ध्यायामि=आर्तध्यानं करोति । ततः खलु ते कुक्षिधाराश्च ४ सर्वे तस्य निर्यामकस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय भीताः, वस्ताः, वसिताः, उद्विग्नाः, सञ्जातभयाः सन्ताः स्नाताः कृतबलिकर्माणि 'करयल०' करयलपरिगृहीतं शिर आवर्त्त दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा बहूनां इन्द्राणां च स्कन्दानां च यथा मल्लिजाते तथैव यावत्-बहूनां रुद्रादीनां देवानां देवीनां च=उपयाचितशतानि अनेकविध-ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्रिया ! णट्टम-इए जाव अवद्विष्ट त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि) वहां आकर के उन्हीं ने उस से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! क्या कारण है जो तुम अपहतमनः संकल्प यावत् होकर आर्तध्यान कर रहे हो । उन सब की ऐसी बात सुनकर उस निर्यामक ने उन अनेक कुक्षिधार ४ आदिकों से इस प्रकार कहा-सुनो बात इस प्रकार है-मैं इस समय नष्ट मतिज्ञान आदि वाला हो रहा हूँ-मुझे यह पता नहीं पड़ रहा है कि मेरी यह नौका महावातके द्वारा किस देशमें और किस दिशाअथवा विदिशा में ले आई गई है-इस कारण मैं इस समय निस्तसाह मन-वाला आदि बन रहा हूँ । (तएणं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ५ ण्हाया कयबलिकस्मा करयल बहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा २ एवं खलु देवाणुप्रिया णट्टमइए जाव अवद्विष्ट त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि)

त्यां जधने तेभाण्णे तेने आ प्रभाण्णे कल्लुं के डे देवानुप्रिय ! शा कारणुथी तमे अपहतमनः संकल्पवाणा यधने आर्तध्यान करी रह्या छे। तेओ सर्वेनी आ वात सांलणीने नियामके ते धण्णा कुक्षिधार ४ वगेरे जधने आ प्रभाण्णे कल्लुं के सांलणी, वात ओधी छे के अत्यारे हुं नष्ट मतिज्ञानवाणो यध गये। छुं भने ओ जतनी पणु समज पउती नथी के आ भारी नौका महावात वडे प्रेराधने क्या देशमां अने कई दिशा अथवा तो विदिशामां तण्णाई आवी छे, ओटला माटे हुं अत्यारे निराश भनवाणो यध गये। छुं।

(तएणं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ५ ण्हाया कयबलिकस्मा करयलबहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा २ विट्ठति, तएणं से णिज्जामए तओ मुहुत्तंवरस्स

માન્યતાશતાનિ ' ઉચ્ચીયમાણા ૨ ' ઉપયાચમાનાઃ ૨ પુનઃ પુનઃ કુર્વાણાઃ-તત્ત-
ત્પ્રસાદનાર્થમનેકવિધાં પ્રતિજ્ઞાં કુર્વન્તસ્તિષ્ઠન્તિ, તતઃ खलु म निर्यामकः ततो-
मुहूर्तान्तरात्=मुहूर्तानन्तरं लब्धमतिकः लब्धश्रुतिकः, लब्धसज्ज्ञः, अमूढदिग्भागः
सर्वथा समुपलब्धसंज्ञ इत्यर्थः जातश्चाप्यासीत् । ततः खलु म निर्यामकस्तान् बहून्
चिह्नंति तएणं से णिज्जामए तओ मुहुत्तंनरस्स लद्धमइए ३ अमूढदि-
साभाए जाए यावि होत्था) इस तरह वे कुक्षिधार वगेरह उस निर्या-
मक के मुख से इस प्रकार के वचन सुनकर और उन्हें हृदय में अव-
धारण कर भीत, त्रस्त, उद्विग्न एवं उत्पन्न भयगाले हो गये ।
उन्होंने ने उसी समय स्नान एवं वायसादि पक्षियों को अन्नादि देने रूप
बलिकर्म करके अपने २ हाथों की अंजलि बनाई और उसे मस्तक पर
रखकर अनेक इन्द्रों की स्कन्दों की, अनेक रुद्रादिक देवताओं की अनेक
देवियों की जैसा कि मल्लिनामक अध्ययन में कहा है-सैकड़ों तरह की
धार २ मनौती की, उनके प्रसाद के लिये अनेक प्रकार की प्रतिज्ञाएँ
की । इस के बाद उस निर्यामक की मति ठिकाने आ गई । वह दिशाओं
के ज्ञान करने में समर्थ बन गया । मार्ग का ज्ञान उसे हो गया । तथा
यह पूर्व दिशा है यह पश्चिम दिशा है इत्यादि रूप से उसे दिशाओं
के विभाग का भी ज्ञान हो गया । (तएणं से णिज्जामए ते बह्वे
कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमइए

લલ્લમइए ३ અમૂઢદિસાભાए जाए यावि होत्था)

તે કુક્ષિધાર વગેરે લોકોએ નિર્યામકતા મુખથી આ પ્રમાણે વચ્ચનો
સાંભળીને અને તેમને હૃદયમાં ધારણ કરીને ભીત, ત્રસ્ત, ઉદ્વિગ્ન અને
ઉત્પન્ન ભયવાળા થઈ ગયા. તેઓએ તરફાળ સ્નાન તેમજ કાગડા વગેરે પક્ષી-
ઓને અન્નભાગ વગેરે આપીને બલિકર્મ કર્યું અને ત્યારપછી તેઓએ પોતાના
હાથોની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને ઘણા ઇન્દ્રોની, ઘણા રૂદ્ર
વગેરે દેવતાઓની ઘણી દેવીઓની-મહી નામક અધ્યયનમાં જે પ્રમાણે વર્ણન
કરવામાં આવેલું છે તે પ્રમાણે સેંકડો બીજાની વારંવાર માનતાઓ માની,
તેમને પ્રસાદ થઠાવવાની અનેક બીજાની પ્રતિજ્ઞાઓ કરી. ત્યારપછી તે નિર્યા-
મકની વિવેક શક્તિ બીજાત થઈ ગઈ. તેને દિશાઓનું જ્ઞાન થવા લાગ્યું.
માર્ગનું જ્ઞાન તેને થઈ ગયું તેમજ આ પૂર્વ દિશા છે, આ પશ્ચિમ દિશા
છે, વગેરે રૂપથી પણ તેને દિશાઓના વિભાગોનું જ્ઞાન થઈ ગયું.

(તएणं से णिज्जामए ते बह्वे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी एवं खलु
अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए-अमूढेणं देवाणुप्पिया !

અનંગારેધમાંમૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૭ કાલિકદ્વીપે દિરણ્યાદીનાંવર્ણનમ્ ૫૧૫

કુક્ષિધારાંશ્ચ ૪ એવમવાદીત્-એવં સ્વલુ અહં હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! અધુના લબ્ધમતિકો
યાવદ્ અમૂઢદિગ્માગો જાતોઽસ્મિ-વયં સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! ' કાલિયદીવં-
તેણં ' કાલિકદ્વીપાન્તે=કાલિકદ્વીપસમીપે સ્વલુ ' સંવૂઢા ' સંવૂઢાઃ=સંપ્રાપ્તાઃ,
એષઃ=અગ્રે વર્તમાનોઽયં સ્વલુ કાલિકદ્વીપઃ ' આલોકકઃ ' આલોકયતે=દશ્યતે । તતઃ
સ્વલુ તે કુક્ષિધારાશ્ચ ૫ સર્વે તસ્ય નિર્યામકસ્યાન્તિકે એતમર્થં શ્રુત્વા હૃષ્ટતુષ્ટાઃ
પ્રદક્ષિણાનુકૂલેન=પૃષ્ઠપ્રદેશાગમનસીઝત્વાત્માનુકૂલેન વાતેન યયૈવ કાલિકદ્વીપસ્ત-
ત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય પોતવહનં લંબંતિ=લમ્બયન્તિ=શૃङ્ખલાભિર્બંધનન્તિ સ્થિરી
કુર્વન્તિ-इत्यर्थः, લમ્બયિત્વા ' એગદ્વિપાર્હિ ' એકાર્થિકાભિઃ-એકઃ=સમાનઃ પ્ર-
જાવ અમૂઢદિસામ્રાજ્યા એ-અમ્હેણં દેવાનુપ્રિયા ! કાલિયદીવંતેણં
સંવૂઢા, એસણં કાલિયદીવે આલોકકઃ, તણં તે કુચ્છિધારા ૪ ય તસ્સ
જિજ્ઞામગસ્સ અંતિજ એમઢું સોચ્છા હૃદ્વતુઢા પાયક્ષિણાણુકૂલેણં વાણં
જેણેવ કાલિયદીવે તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) હસ કે વાદ ઉસ નિર્યામક ને
ઉન અનેક કુક્ષિધાર આદિકોં સે એસા કહા હે દેવાનુપ્રિયોં ! મૈં લબ્ધમ-
તિવાલા હો ગયા હૂં મેરી બુદ્ધિ ઠિકાને આ ગઈ હૈં । યાવત્ અવ મૈં પૂર્વાદિ
દિશાઓં કા વિભાગ કર સકતા હૂં । હસ સમય હમલોગ કાલિક દ્વીપ
કે પાસ આ ગયે હૈં । દેસ્યોં યહ સામને કાલિક દ્વીપ હી દિસલાઈ દે
રહા હૈં । હસ તરહ ઉસ નિર્યામક કે મુખ સે સુનકર વે સવ કુચ્છિધાર
આદિ બઢે પ્રસન્ન હુજ, ઉન્હેં વઢા અધિક સંતોષ હુઆ । હસી સમય
અનુકૂલ વાયુ ને ઉન સવ કો જહાં વહ કાલિક દ્વીપ થા વહાં પહુંચા
દિયા । (ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહનં લંબંતિ, લંબિત્તા એગદ્વિપાર્હિ કાલિય-
કાલિયદીવં તેણં સંવૂઢા, એસણં કાલિયદીવે આલોકકઃ, તણં તે કુચ્છિધારા ૪
ય તસ્સ જિજ્ઞામગસ્સ અંતિજ એમઢું સોચ્છા હૃદ્વ તુઢા પાયક્ષિણાણુકૂલેણં વાણં
જેણેવ કાલિયદીવે તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ)

ત્યારબાદ તે નિર્યામકે તે ઘણા કુક્ષિધાર વગેરે લોકોને આ પ્રમાણે કહ્યું
કે હે દેવાનુપ્રિયા ! મારી બુદ્ધિ શક્તિ ફરી બદલત થઈ ગઈ છે. મારી બુદ્ધિ
વ્યવસ્થિત થઈ ગઈ છે. યાવત્ હવે હું પૂર્વ વગેરે દિશાઓનું વિભાજન પણ
સમજી શકું છું. અત્યારે અમે કાલિક દ્વીપની પાસે આવી ગયા છીએ. જુઓ
આ સામે કાલિક દ્વીપજ દેખાઈ રહ્યો છે. આ પ્રમાણે તે નિર્યામકના મુખથી
સાંભળીને તે બધા કુક્ષિધાર વગેરે લોકો ખૂબજ પ્રસન્ન થયા, તેઓને ખૂબજ
સંતોષ થયો, એજ વખતે અનુકૂળ પવને તેઓને ન્યાં કાલિકાદ્વીપ હતો
ત્યાં પહોંચાડી દીધા.

(ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહનં લંબંતિ, લંબિત્તા એગદ્વિપાર્હિ કાલિયદીવં ઉત્ત-

हणतुल्यः अर्थः=प्रयोजनं यासां तास्तथा, तामिः=सहायिकाभिलिखनौकाभिः
 कालिकद्वीपम् उत्तरन्ति स्म । तत्र खलु ते बहून् हिरण्याकरान्=रजताकरान्
 सुवर्णाकरांश्च, रत्नाकरांश्च, वज्राकरान्=वज्राख्यरत्नखनीरित्यर्थः, तथा बहून्
 तत्राश्वांश्च पश्यन्ति, किं ते=किम्भूतास्ते ? इत्याह—‘ हरिरेणुसोणिसुत्तगा ’
 हरिरेणुसोणिसुत्तगा=हरिद्वर्णधूलिकृतकटिसूत्राः ‘ आङ्गणवेढा ’ आकीर्णवेष्टः—
 वर्णनग्रन्थो—अत्र वाच्यः—‘ हरिरेणुसोणिसुत्तगा ’ इत्यादिरूपं वर्णनं सर्वमत्र कथनी-
 यमित्यर्थः । ततः खलु तेऽश्वास्तान् पश्यन्ति, दृष्ट्वा तेषां गन्धम् ‘ अग्रायन्ति ’
 आजिघ्रन्ति, आग्राय भीताः=भयं प्राप्ताः, त्रस्ताः=घ्रासं प्राप्ताः त्रसिताः=विशेष-
 दीवं उत्तरन्ति, तत्स्थणं ते बहवे हिरण्णागरे य सुवर्णागरे य रघणागरे
 य वहरागरे य बहवे तत्स्थ आसे पासन्ति, किं ते ? हरिरेणुसोणिसुत्तगा-
 आङ्गणवेढा, तण्णं ते आसा ते वाणियए पासन्ति पासित्ता तेसिं गंधं
 अग्रायन्ति, अग्रायित्ता भीया तत्स्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ
 अणेगाइं जोयणाइं उव्वमन्ति) वहाँ पहुँच कर उन्होंने लंगर डाल दिया।
 अर्थात् जहाज को साँकलों से बांधकर वहाँ स्थिर कर दिया। बाद में
 वे एकार्थिक-समान प्रयोजन साधक-छोटी २ नौकाओं से उस कालिक
 द्वीप में उतरे। वहाँ पर उन्होंने अनेक हिरण्य की खानों को सुवर्ण की
 खानों को, रत्न की खानों को, हीरे की खानोंको तथा अनेक घोड़ों को
 देखा। उन पर कटिसूत्र हरिद्वर्ण वाली धूलि से रचा गया था। ये सब
 जात्यश्व थे। उन जात्यश्वों ने उन पोतवणिकों को देखा। उनकी गंध
 को उन्होंने सूँघा। सूँघ कर वे सबके सब भयभीत हो गये। त्रस्त हो
 रंति, तत्स्थणं ते बहवे हिरण्णागरे य सुवर्णागरे य रघणागरे य वहरागरे य बहवे
 तत्स्थ आसे पासन्ति, किं ते ? हरिरेणुसोणिसुत्तगा आङ्गणवेढा, तण्णं ते आसा ते
 वाणियए पासन्ति, पासित्ता तेसिं गंधं अग्रायन्ति, अग्रायित्ता भीया तत्स्था
 उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उव्वमन्ति)

त्यां पडोन्थीने तेमळे लंगर नाज्युं. ओटवे के वडाळुने सांकणे वडे
 आंधीने त्यां ठाळुं राज्युं. तयारपछी तेओ ऐकार्थिक नानी नानी नौकाओ वडे
 ते कालिक द्वीपमां उतर्या. त्यां तेमळे घल्ली किरण्यनी आळो, सुवर्णनी आळो।
 तेमज घळा घोडाओने जेया. घोडाओ उपर कटिसूत्र लीला रंगनी माटी
 वडे अनाववासां आळ्युं उतुं. आ अधा जात्यश्वो उता. ते जात्यश्वोओ ते
 चातवाळिकेने जेया. तेमळे तेमनी गंधने सूंधी. सूंधीने तेओ अधा जय-
 भीत थई गया. त्रस्त थई गया. विशेषरूपथी तेमना यित्तमां जयतुं संथरयु

अनंगारधर्मावृतवर्षिणी टी० अ० १७ कालिकद्वीपे हिरण्यादिना पोतप्रणमम् ५१७

तस्मात्सं प्राप्ताः, उद्विग्नाः=उद्वेगं प्राप्ताः उद्विग्नमनसः=व्याकुलमानसः सन्तः ततः= तस्मात्स्यानात् अनेकानि योजनानि=अनेकयोजनदूरम्, 'उन्मत्तं' उन्मत्त-
म्वन्ति=पलायन्ते स्म । ते=अश्वाः खलु तत्र वने 'पउरगोयरा' प्रचुरगोवराः-
प्रचुरः=बहुलः गोवरः=संचरणभूमिभागो येषां ते तथा, स तु तृणजलरहितोऽपि
भवतीत्याह-'पउरतणपाणिग्या' प्रचुरतृणपाणीयाः-प्रचुराणि=प्रभूतानि तृणानि
पाणीयानि च येषु ते तथा, निर्भयाः=श्वापदादिभयरहिताः, अतएव 'निरुव्विग्गा'
निरुद्विग्नाः=मनः क्षोभरहिताः सन्तः सुखं सुखेन विहरन्ति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तएणं ते संजत्तानावावाणियगा अणमणं एवं
वयासी-किणं अम्हं देवाणुप्पिया ! आसेहिं ?, इमे णं वहवे
हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वड्ढागरा य तं
सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वड्ढस्स
य पोयवहणं भरित्तए त्तिकट्ठु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति
पडिसुणित्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वड्ढस्स य
तणस्स य अणस्स य कट्ठस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेति

गये । विशेषरूप से उनके चित्त में भय का संचार हो गया । उनका
मन उद्विग्न हो गया । इस तरह होकर वे सब वहां से अनेक योजन
दूर तक वन में भाग गये । (तत्र तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिग्या
निव्वम्या, निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति) वहां वन में उनको विचरण
करने के लिये बहुत अधिक विस्तृत भूमिभाग था तृण जल की वहां
सर्व प्रकार से प्रचुरता थी । अतः वे उस वन में श्वापद आदि के भय
से निर्मुक्त होकर बिना किसी मनः क्षोभ के आनन्द के साथ विचरण
करने लगे ॥ सूत्र १ ॥

थधं गथुं. तेभनुं भन उद्विग्न थधं गथुं. आ प्रभाखे तेओ भधा त्यांथी धणु
येओनो इर सुथी वनभां नासी गथा. (तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतण-
पाणिग्या निव्वम्या, निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति) त्यां वनभां विचरण्ण करवा
भाटे भहुं न विस्तृत भूमिभाग छतो. धास, पाणीनी त्यां भधी रीते सरस
सगवड छती. ओटला भाटे तेओ वनभां डिंसड प्राणीओना लयथी मुक्क थधने
क्षोभरहित थधने सुभेथी विचरण्ण करवा लाग्या. ॥ सूत्र १ ॥

भरित्ता पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव भंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोयवहणं लंवेति लम्बित्ता सगडी-सागडं सज्जेति सज्जित्ता तं हिरण्णं जाव वडरं च एगट्ठियाहिं पोयवणाओ संचारेति संचारित्ता सगडीसागडं भरेति भरित्ता संजोइंति संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेति करित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति गेण्हित्ता हत्थि सीसं नगरं अणुपविसंति अणुपविसित्ता जेणेव कणगकेऊराया तेणेव उवागच्छइ उवाग-च्छित्ता जाव उववेति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘तएणं ते संजत्ता’ इत्यादि । ततः खलु ते संयात्रानौकावाणि-जका अन्योन्यमेवमवादिबुः—किं खलु अस्माकं हे देवानुप्पियाः ! अथैः—इमे खलु बह्वो हिरण्णागराश्च, सुवर्णागराश्च, रत्नागराश्च वज्रागराश्च सन्ति, तत् श्रेयः खलु अस्माकं हिरण्यस्य च सुवर्णस्य च रत्नस्य च वज्रस्य च पोतवहनं भर्तुम् इति

‘तएणं ते संजत्ता नावा वाणिजगा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते संजत्ता नावावाणिजगा) उन सांया-त्रिक नौका वाणिक जनों ने (अणमण्णं एवं बयासी) परस्पर में इस प्रकार से चिन्तार किया—(किण्णं अम्हं देवानुप्पिया ! आसेहिं ? इमेणं बह्वे हिरण्णागरा य सुवर्णागरा य रत्नागरा य वज्रागरा य तं सेयं खलु अम्हं हिरण्यस्त य सुवर्णस्त य रत्नस्त य वज्रस्त य पोयवहणं

तएणं ते संजत्ता नावा वाणिजगा, इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपथी (ते संजत्ता नावा वाणिजगा) ते सांयात्रिक नौका वल्लिङ्गनोअे (अणमण्णं एवं बयासी) अेक भीनानी साथे आ प्रभावे विचार कथे के—

(किण्णं अम्हं देवानुप्पिया ! आसेहिं ? इमेणं बह्वे हिरण्णागरा य सुव-र्णागरा य रत्नागरा य वज्रागरा य तं सेयं खलु अम्हं हिरण्यस्त य सुवर्णस्त

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી.૦.મ.૦.૧૭ કાલિકાદ્વીપે હિરણ્યાવિના પોતભરણમ્ ૫૨૯

કૃત્વા=ઈતિ વિચાર્ય અન્યોન્યસ્ય એતમર્થ મતિશ્રુવન્તિ=સ્વીકૃવન્તિ, પ્રતિશ્રુમ્ય હિર-
ણ્યસ્ય ચ સુવર્ણસ્ય ચ રત્નસ્ય ચ વજ્રસ્ય ચ તૃણસ્ય ચ અન્નસ્ય ચ કાષ્ઠ્ય ચ પાની-
યસ્ય ચ પોતવહનં ભરન્તિ, મૃત્વા પ્રદક્ષિણાનુકૂલેન=પૃષ્ઠતઃ સમાગચ્છતાઽનુકૂલેન
વાતેન યતૈવ ' ગંભીરપોયપટ્ટણે ' ગમ્ભીરપોતવત્તનં=પોતાવતરણસ્થાનં વર્તેતે તતૈ-
વોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય પોતવહનં ' લંબેતિ ' લમ્બયન્તિ=શ્રુહ્ણલાપાતાદિના સ્થાપ-
યન્તિ, લમ્બયિત્વા=સ્થાપયિત્વા શકટીશાકટં સઙ્ગયન્તિ, મઙ્ગયિત્વા ' તં ' તદ્
હિરણ્યં યાવદ્ વજ્રં ચ ' એગદ્વિયાદિ ' એકાર્થિકામિઃ=લઘુનોકામિઃ પોતવહનાત્
' સંચારેતિ ' સંચારયન્તિ=હિરણ્યાદિકમવતારયન્તિ, સંચાર્ય=અવતાર્ય તૈઃ શકટી-
ભરિત્તાપ્તિ કદ્દુ અન્નમન્નસ્ય એયમદ્દં પડિસુર્ણેતિ પડિસુ. હિરણ્ણસ્ય
રણસ્ય ચ વહરસ્ય ચ તણસ્ય ચ અણસ્ય ચ કદ્દસ્ય ચ પાણિયસ્ય પોય-
વહણં ભરેતિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! હમ્મેં હન અશ્વોં સે કયા તાત્પર્ય હૈ । યે
જો હિરણ્ય કી ય્વાનેં હૈં, સુવર્ણ કી ય્વાનેં હૈં, રત્ન કી ય્વાનેં હૈં વજ્ર કી
ય્વાનેં હૈં ઝનમેં સે હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન એવં વજ્રોં કો લેકર પોત ભર
લેને મેં આનંદ હૈં હસ પ્રકાર વિચાર કર ઝનહોને એક દૂસરેકો હસ યોત
કો માન લિયા । માન કરકે ફિર ઝનહોને હિરણ્ય કો સુવર્ણ કો રત્ન
કો વજ્ર કો તૃણ કો અનાજ કો કાષ્ઠ લકડી-ઝોર પાનીકો જહાજ મેં
ભર લિયા । (ભરિત્તા પયક્ષિણાણુકૂલેણં વાણં જેણેવ ગંભીર પોયપટ્ટ-
ણે તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહણં લંબેતિ, લંબિત્તા,
સગડીસાગડં સઙ્ગેતિ સઙ્ગિત્તા તં હિરણ્યં જાવ વહરં ચ એગદ્વિયાદિ
ય રણસ્ય ચ વહરસ્ય ચ પોયવહણં ભરિત્તાપ્તિ કદ્દુ અન્નમન્નસ્ય એયમદ્દં પડિ-
સુર્ણેતિ પડિસુ. હીરણ્ણસ્ય રણસ્ય ચ વહરસ્ય ચ તણસ્ય ચ અણસ્ય ચ કદ્દસ્ય
ચ પાણિયસ્ય પોયવહણં ભરેતિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ઘોડાઓથી અમારે શી નિસ્બત છે ? આજે હિર-
ણ્યની ખાણ છે, સુવર્ણથી ખાણ છે, રત્નની ખાણ છે, વજ્રની ખાણ છે,
તે ઓમાંથી હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્નો, અને વજ્રોને લઈને વહાણને ભરી લેવા-
માં જ આનંદ છે. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક ણીળની વાતને
સ્વીકારી લીધી. સ્વીકારીને તેમણે હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્નો, વજ્રો, તૃણ, અનાજ,
કાષ્ઠ-લાકડાંઓ, અને ખાણીને વહાણમાં ભરી લીધાં.

(ભરિત્તા પયક્ષિણાણુકૂલેણં વાણં જેણેવ ગંભીર પોયપટ્ટણે તેણેવ ઉવાગ-
ચ્છન્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહણં લંબેતિ, લંબિત્તા, સગડીસાગડં સઙ્ગેતિ સઙ્ગિત્તા
તં હિરણ્યં જાવ વહરં ચ એગદ્વિયાદિ પોયવહણાઓ સંચારેતિ, સંચારિત્તા સગડી

शाकटं भरन्ति, भुत्वा शकटीशाकटं संयोजयन्ति संयोज्य यत्रैव हस्तिशीर्षकं नगरं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिशीर्षकस्य नगरस्य बहिः 'अगुञ्जाणे' अग्र्योद्याने=आगन्तुकनिवासोद्याने सार्धनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा, महार्थं यावत् प्राप्नुते गृह्णन्ति, गृहीत्वा हस्तिशीर्षं नगरमनु-

पोयवद्गणाभ्यो संचारेति, संचारित्ता सगडीसागडं भरेति, भरित्ता संजोइति, संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए णयरे तेणेव उवागच्छन्ति) भरकर के फिर वे लोग अपने पृष्ठ भाग से होकर आनेवाली अनुकूल वायु की सहायता से जहां पोत के ठहरने का स्थान बंदरगाह-था वहां आये। वहां आकर के उन्होंने अपने पोत को लंगर डालकर ठहरा दिया। पोत ठहरा करके फिर उन्होंने शकटी-गाड़ी और शकटों-गाड़ों को सज्जित किया-रस्सी आदि बांध कर उन्हें तैयार किया। जब वे अच्छी तरह सुसज्जित हो चुके-तब बाद में उन लोगों ने छोटी २ नौकाओं से उस पोत-नाव पर रखे हुए हिरण्य आदि वज्र पर्यंत के समस्त सामान को उतार लिया और उतार कर उन शकटी-गाड़ी शकटों-गाड़ों में उसे भर दिया। भरने के बाद फिर उन्होंने उन शकटी शाकटों को जोत दिया-जोतकर फिर वे जहां हस्तिशीर्ष नगर था वहां आये (उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयस्स बहिया अगुञ्जाणे सत्थणिवेसं करेति, करित्ता सगडी सागडं मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हति, गेण्हित्ता हत्थिसीसं नगरं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव सागडं, भरेति, भरित्ता संजोइति, संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए णयरे तेणेव उवागच्छइ)

लरीने तेओ भधा पोतानी पीठ तरइथी वडेता अनुकूण पवननी सहायताथी न्यां वडाणु जेणुं राअवानुं स्थान-अंदर हुंतुं त्यां आव्या. त्यां आवीने तेमणे पोताना वडाणुने लंगर नाभीने लांगथुं. वडाणुने लांगरी तेमणे शकटी-गाड़ी, अने शकटो-गांओने सुसज्ज कयां. दोरी वगेरेथी आंधीने तेमने तैयार कयां. न्यारे ते सारी रीते सुसज्ज थई ग्यां त्यारे ते दोकाओ नानी नानी नौकाओथी ते वडाणुमां भूकेला डिरइथी मांओने वज्र सुधीना भधा सामानने उतारी दीधो, अने उतारीने ते शकटी-गाड़ी अने शकटो-गाडाओमां लरी दीधो. अर्थां पछी तेमणे ते शकटी-गाड़ी अने शकटो-गाडाओने जेतर्थां अने जेतरीने तेओ न्यां हस्तिशीर्ष नगर हुंतुं त्यां गया.

(उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयस्स बहिया अगुञ्जाणे सत्थणिवेसं करेति, करित्ता सगडीसागडं मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पहुडं गेण्हति गेण्हित्ता

अनगरघमांमृतवर्षिणी टी० अ० १७ कालिकद्वीपगत आकीर्णाश्वत्थकथयता १०१

प्रविसन्ति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतु राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत् तत्प्राभृतम् ' उवर्णेति ' उपनयन्ति भूपसमीपे स्थापयन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ताणावावाणि-
यगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता तं संजत्ताणावा-
वाणियगा एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! गामागार जाव
अहिंडह लवणसमुद्धं च अभिक्खणं पोयवहणेणं ओगाहह
तं अत्थि आइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठुप्पुवे ?, तएणं ते
संजत्ताणावावणियगा कणगकेऊं एवं वयासी—एवं खलु अम्हे
देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव
कालियदीवं तेणं संबूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव

कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उवर्णेति) वहाँ
आकर के वे लोग उस हस्तिशीर्ष नगर के बाहर के प्रधान उद्यान में
ठहर गये वहाँ ठहर उन्होंने ने वहाँ पर शकटी-गाड़ी शाकटी-गाड़ों की
ढील-ठहरा दिया । ढीलकर के बाद में महार्थ-महाप्रयोजन साधक भूत
-यावत् प्राभृत भेंट को उन्होंने ने अपने २ हाथों में लिया-और लेकर के
वे हस्तिशीर्ष नगर में प्रविष्ट हुए नगर में प्रविष्ट होकर वे जहाँ कनक
केतु राजा थे वहाँ पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने ने उस महाप्रयोजन साधक
भूत प्राभृत को राजा के पास रख दिया ॥ सू० २ ॥

हत्थिसीसं नगरं अणुपविसन्ति, अणुपविसित्ता, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवा
गच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उवर्णेति)

त्यां आवीने तेओ णधा ते हस्तिशीर्ष नगरनी बहारना मुख्य उद्या-
नमां शेकाध गया, त्यां शेकाधने तेमणे त्यां ४ शकटी-गाडी अने शाकटी-
गाडांओने छोडी भूक्यां. त्थारणाए तेमणे महार्थ-महाप्रयोजन साधक भूत
यावत् सेटने पोतपोताना छाथेमां दीधी अने लधने तेओ हस्तिशीर्ष नग-
रमां प्रविष्ट थया. नगरमां प्रविष्ट थधने तेओ ज्थां कनककेतु राजा छेतो त्यां
पडोन्था. त्यां पडोन्थीने तेमणे ते महाप्रयोजन साधक ३५ सेटने राजनी
सामे भूडी दीधी. ॥ सूत्र २ ॥

का ७६

बहवे तत्थ आसा किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति, तएणं सामी अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छे-रण दिट्ठपुव्वे, तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते संजत्तए एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएणं ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊं रायं एवं वयासी-एवं सामि तिकट्ठु आणाए पडिसुणेंति, तएणं कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति, तएणं ते कोडुंबिय० सगडीसागडं सज्जेति सज्जित्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य वित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोत्तिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भेरेंति भरित्ता बहूणं किण्हाण य जाव सुक्किलाणं य कट्ठकम्माण य ४ गंधिमाण य ४ जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भेरेंति बहूणं कोट्टपुडाण य केयईपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भेरेंति बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भेरेंति । बहूणं कोयवियाण य कंबलाण

अंगारखपांमुनवविणो टी० अ० १७ कालिकवीपगतआकीर्णश्ववक्तव्यता ६०३

य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिला-
 वद्याण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदिय पाउग्गाणं
 दव्वाणं सगडीसागडं भरेति भरित्ता सगडीसागडं जोएंति
 जोइत्ता जेणेव गंभीरण पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छंति उवाग-
 च्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति सज्जित्ता
 तेसिं उक्किट्टाणं सहफरिसरसरूवगंधाणं कट्टस्स य तणस्स य
 पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं
 च बट्टणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेति भरित्ता दक्खि-
 णाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवा-
 गच्छित्ता पोयवहणं लंबेति लंबित्ता ताइ उक्किट्टाइं सहफरिसरस-
 रूवगंधाइं एगट्टियाहिं कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च णं
 ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा
 तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्त-
 वीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि
 समुदीरेमाणा चिट्ठंति तेसिं परिपरंतेणं पासए ठवेति ठवित्ता
 णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति
 वा जाव तुयट्ठंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि
 किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अन्नाणि
 य बहूणि चक्खिंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति तेसिं परि-
 परंतेणं पासए ठवेति ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया
 चिट्ठंति जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं तेसिं बहूणं

कोट्टपुडाण य जाव अन्नेसि च बहूणं घाणिदियपाउग्गाणं
दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेति करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव
चिट्ठंति जत्थ २ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स
जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिदियपाउग्गायं दव्वाणं पुंजे य
निकरे य करेति करित्ता वियरण् खणंति खणित्ता गुलपाणगस्स
खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेति
भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेति जाव चिट्ठंति, जहिं २
च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयविया य
जाव हंसगब्भा य अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं
अत्थुयपच्चत्थुयाइं ठवेति ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति,
तएणं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सदफरिसरसरूवगंधा तेणेव
उवागच्छंति उवागच्छित्ता तत्थणं अत्थेगइया आसा अपुव्वा
णं इमे सदफरिसरसरूवगंधा इतिकट्ठु तेसु उक्किट्ठेसु सदफरिस-
सरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद जाव गंधाणं
दूरंदूरेणं अवक्कमंति, तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया
णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति, एवामेव समणाउसो!
जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव सदफरिसरसरूवगंधेसु
णो सज्जइ णो रज्जइ णो गिज्जइ, णो मुज्जइ णो अज्जोववजेइ
से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिजे जाव वीइ-
वइस्सइ ॥ सू० ३ ॥

अनेगारधर्माभूतवर्णिणी टी० अ० १७ कालिकद्वीपगत आकीर्णाश्ववक्तव्यता ६०५

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स कनककेतु राजा तेषां संयात्र-
नौकावाणिजकानां तन्महार्थं यावत् प्राप्तं ‘पडिच्छइ’ प्रतीच्छति=स्वीकरोति
प्रतीप्य तान् संयात्रनौकावाणिजकान् एवमवादीत्-यूयं खलु हे देवानुप्रियाः !
‘गामागर जाव अहिडइ’ ग्रामाकर यावत् - ग्रामाकरनगरादिषु आहिण्डथ=
गच्छत, लवणसमुद्रं च अभीक्ष्णं २ पोतवहनेन अवगाह्यवे ‘तं’ तत्=तर्हि
अस्ति ‘आइं’ इतिवाक्यात्कुरे किमपि ‘भे’ युष्माभिः ‘कहिंचि’ कुत्रचिद्
‘अच्छेए’ आश्चर्यकर्म=आश्चर्यजनकवस्तु ‘दिट्ठपुण्वे’ दृष्टपूर्वम् ? यदि दृष्टमस्ति
तर्हि कथयतेतिभावः । ततः खलु ते संयात्रनौकावाणिजकाः कनककेतुमेवमव-

—तएणं से कणगकेऊ राया इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगकेऊ राया) उस कनककेतु राजा
ने (तेसिं संजत्ता णावा वाणिजगणं तं महत्थं जाव पडिच्छइ, पडि-
च्छित्ता—ते संजत्ता णावा वाणिजगा एवं वयासी—तुम्हेणं देवानुप्रिया !
गामागर जाव आहिडइ लवणसमुद्रं च अभिक्खणं २ पोयवहणेणं
ओगाहइ तं अत्थिआइं केइं भे कहिंचि अच्छेए दिट्ठपुण्वे ?) उन
सांयात्रिक पोतवणिक जनो की उस महार्थसाधक भेट को स्वीकार कर
लिया और स्वीकार करके फिर उन सांयात्रिक पोतवणिक जनो से इस
प्रकार कहा हे देवानुप्रियो तुमलोग अनेक ग्राम आकर नगर आदि
स्थानो में जाते रहते हो और बार २ पोतवहन द्वारा लवणसमुद्र में
अवगाहन करते रहते हो तो कहो कहीं पर तुम ने यदि कोई आश्चर्य
कारी वस्तु देखी हो तो कहो—(तएणं ते संजत्ता णावा वाणिजगा कण-

तएणं से कणगकेऊ राया इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपणी (से कणगकेऊ राया) ते कनककेतु राजा

(तेसिं संजत्ता णावा वाणिजगणं तं महत्थं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता—
ते संजत्ता णावा वाणिजगा एवं वयासी—तुम्हेणं देवानुप्रिया ! गामागर जाव
आहिडइ लवणसमुद्रं च अभिक्खणं २ पोयवहणेणं ओगाहइ तं अत्थि आइं केइं
भे कहिंचि अच्छेए दिट्ठपुण्वे ?)

ते सांयात्रिक पोतवणिकजनोनी ते महार्थ साधक लेऽने स्वीकारी वीधी,
अने स्वीकारीने ते सांयात्रिक पोतवणिकजनोने आ प्रभाषे कहुं के हे देवानु-
प्रियो ! तमे छोडो धणुं गाम, आकर, नगर वगेरे स्थानोमां आवण करता
रहो छे अने वडाणु वडे लवण समुद्रनी वारंवार यात्रा करता रहो छे तो
अमने कडो के तमे कोर नवार्थ पमाडे तेवी अद्भुत वस्तु जेथ छे ?

६०६

जाताधर्मकथासूत्रे

दन्-एवं खलु वयं हे देवानुप्रियाः ! इहेव हस्तिशीर्षे नगरे परिवसामः, 'तंचेव' तदेव पूर्वोक्तवर्णनं सर्वमत्र वाच्यम् 'जाव' यावत् कालिकद्वीपान्ते=कालिक-द्वीपसमीपे खलु 'संवूढा' संव्यूढाः-माप्ताः, तत्र खलु बहवो हिरण्याकराश्च यावद् बहवस्तत्राश्वाः सन्ति, किंते किम्भूतास्ते ? इत्याह-‘हरिरेणु जाव’ हरिद्रेणु शोणि-सूत्रकाः यावद्-तेऽस्मद्गन्धमाघ्राय भीताः सन्तः अनेकानि योजनानि दूरम् ‘उब्भ-मन्ति’ उद्भ्रमन्ति पलायन्ते स्म, ततः खलु हे स्वामिन् ! अस्माभिः “कालिक-द्वीपे तेऽश्वाः सन्ति” तदेव ‘अच्छेरए’ आश्चर्यकं दृष्टपूर्वमिति । ततः खलु स

गकेऊं एवं वयामी एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हस्तिशीर्षे नगरे वसामो तं चेव जाव कालियदीवं तेणं संवूढा तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किंते ? हरिणेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भ-मन्ति-तएणं सामी अम्हे हि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुब्बे) इस प्रकार राजा की घात सुनकर उन सांघात्रिक पोतवणिगजनों ने उन कनककेतु राजा से कहा हे देवानुप्रिय ! हमलोग इसी हस्तिशीर्ष नगर में रहते हैं । हमलोग यहाँ से लवणसमुद्र में होकर व्यापार के निमित्त बाहर परदेश गये हुए थे-। मार्ग में हमलोगों को अनेक प्रकार के सैकड़ों उपद्रव हुए-उनसे जिस किसी तरह सुरक्षित हो हमलोग कालिकद्वीप के समीप पहुँच गये । वहाँ हमने अनेक हिरण्य आदि की खानों को एवं अनेक अश्वों को कि जिनका कटिभाग हरिद्वर्णवाली धूलि से रचित कटिसूत्रसे चिन्हित था देखा, वे हमलोगों की गंध को सूँघ-

(तएणं ते संजत्ता णागा वाणियगा कगगकेऊं एवं वयामी-एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हस्तिशीर्षे नगरे वसामो तं चेव जाव, कालिअ दीवं तेणं संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किं ते ? हरि-रेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमन्ति-तएणं सामी अम्हेहि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुब्बे)

आ प्रभाषे राजनी वात सांलणीने ते सांघात्रिक पोतवणिगजनोअ ते कनककेतु राजने कल्लुं के डे देवानुप्रिय ! अमे जधा आ हस्तिशीर्षं नगर-भां ज रडीअे छीअे. अमे जधा व्यापार जेऽवा भाटे अडीथी लवणु समुद्रभां थधने जडार परदेशभां गया हता. रस्ताभां घण्णी जतना सेकडो उपद्रवो थया. छेवटे गमे तेम करीने सुरक्षित रुपभां अमे जधा कालिकद्वीपनी पासे गया. त्यां अमेअे घण्णी हिरण्य वगेरणी आबोने अने घण्णा अश्वोने-के जेमना कटिभागो लीला रंगनी भाटीथी जनावेला कटिसूत्रथी चिह्नित हता-जेया. अभासी जधने सूंधीने ते अश्वो त्याथी डेटलाक योजने इर सुधी

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૭ કાલિકદ્વીપગત આકીર્ણાશ્વત્કથયતા ૬૦૭

કનકકેતુ રાજા તેણાં 'સંજતિગાણ' સાંયાત્રિકાણામન્તિકે એતમર્થ શ્રુત્વા તાન્ સાંયાત્રિકાન્ એવમવદત્-ગચ્છત્ત્વં ચલુ યુયં હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! મમ કૌટુંબિક-પુરુષૈઃ સાર્દ્ધં કાલિકદ્વીપાત્તાનશ્વાનાનયત । તતઃ ચલુ તે સંયાત્રાનૌકાવણિજકાઃ કનકકેતુ રાજાનયેવમવાદિષુઃ હે સ્વામિન્ ! એવમસ્તુ 'ત્તિ કદ્દુ' ઇતિ ક્રુત્વા=ઇત્યુક્ત્વા 'આણાણ' આજ્ઞાયાઃ=આજ્ઞામિત્યુર્થે 'પઢિસુળેતિ' પ્રતિશ્રુત્વન્તિ=કર વહાંસે કહં યોજન દૂરતક જંગલમેં આગ ગયે । અનઃ હે દેવાનુપ્રિય "કાલિકદ્વીપ મેં હમલોગોં ને ડન ઘોડોં રૂપી આશ્ચર્ય કો દેસા હૈ । (તણં સે કળગકેઝ રાયા તેસિ સંજત્તગાળં અંતિણ એયમટ્ટં સોચ્ચા તે સંજત્તણ એવં વયાસી-ગચ્છહ ણં તુભે દેવાણુપ્પિયા ! મમ કોટુંબિય પુરિસેહિં સદ્ધિ કાલિયદીવાઓ તે આસે આણેહ તણં તે સંજત્તા ણાવા વાણિયગા કળગકેઝ રાયં એવં વયાસી એવં સામિત્તિ કદ્દુ આણાણ પઢિસુળેતિ, તણં કળગકેઝ રાયા કોટુંબિયપુરિસે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવં વયાસી-ગચ્છહ ણં તુભે દેવાણુપ્પિયા ! સંજત્તિણિં સદ્ધિ કાલિય-દીવાઓ મમ આસે આણેહ, તે વિ પઢિસુળેતિ)

ઇસકે બાદ કનક કેતુ રાજા ને ડન સાંયાત્રિક પોતવણિક્જનોં કે મુલ્લ સે ઇસ અર્થ કો સુન-કર ડન સાંયાત્રિકોં સે ઇસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમલોગ જાઓ ઓર મેરે કૌટુંબિક પુરુષોં કે સાથ કાલિકદ્વીપ સે ડન અશ્વોં કોલાઓ । ઇસ પ્રકાર સુનકર પોતવણિક્જનોં ને કનક કેતુ રાજા સે એસા કહા

વનમાં નાસી ગયા. હે દેવાનુપ્રિય ! અમેએ કાલિક દ્વીપમાં તે અશ્વ રૂપી અદ્ભુત વસ્તુને જોઈ છે.

(તણં સે કળગકેઝ રાયા તેસિ સંજત્તિગાળં અંતિણ એયમટ્ટં સોચ્ચા તે સંજત્તણ એવં વયાસી-ગચ્છહ ણં તુભે દેવાણુપ્પિયા ! મમ કોટુંબિયપુરિસેહિં સદ્ધિ કાલિયદીવાઓ તે આસે આણેહ, તણં તે સંજત્તા ણાવા વાણિયગા કળગ-કેઝ રાયં એવં વયાસી એવં સામી ત્તિ કદ્દુ આણાણ પઢિસુળેતિ, તણં કળગકેઝ રાયા કોટુંબિયપુરિસે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવં વયાસી-ગચ્છહ ણં તુભે દેવાણુ-પ્પિયા ! સંજત્તિણિં સદ્ધિ કાલિયદીવાઓ મમ આસે આણેહ, તે વિ પઢિસુળેતિ)

ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ તે સાંયાત્રિક પોતવણિક્જનોના મુખથી આ વાતને સાંભળીને તે સાંયાત્રિકાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો મારા કૌટુંબિક પુરુષોની સાથે કાલિક દ્વીપમાં જાઓ અને ત્યાંથી તે અશ્વોને લાવો. આ પ્રમાણે કનકકેતુની આજ્ઞા સાંભળીને તે પોતવણિક્જનોએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! તમારી આજ્ઞા અમારા માટે પ્રમાણુ સ્વરૂપ છે. આમ કહીને તેમણે કનકકેતુ રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. ત્યાર

स्वीकुर्वन्ति । ततः खलु कनककेतु राजा कौटुम्बिकपुराणं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! सांपात्रिकैः साद्धं कालिकद्वीपात् मह्यम् अश्वानानयत । तेऽपि=कौटुम्बिकपुराणः 'पड्डिमुणैति' प्रतिश्रुयन्ति 'तथास्तु' इत्युक्त्वा राजाज्ञां स्वीकुर्वन्ति । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुराणः शकटीशाकटं 'सज्जेति' सज्जयन्ति=कालिकद्वीपे गमनार्थं सज्जीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा तत्र खलु शकटीशाकटे बहूनां च बल्लकीनां च, भ्रामरीणां च 'कच्छभीण य' कच्छभीनां च- 'कच्छभी' इति कच्छभाकारवीणाविशेषः, भंभानां=मेरीणां च, पड्डिभ्रामरीणां च,

हे-स्वामिन् ! हमें आपकी आज्ञा प्रमाण है-ऐसा कहकर उन्होंने ने कनक केतु राजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया । इसके बाद कनक केतु राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम सांपात्रिक पोतवणिक जनों के साथ जाओ -और कालिकद्वीप से मेरे लिये घोड़ों को ले आओ । राजा की इस आज्ञा को उन लोगों ने भी स्वीकार कर लिया । (तएणं ते कौटुम्बियपुरिस्सा सगडीसागडं सज्जेति, सज्जित्ता तत्थणं बहूणं वीणाण य बल्लकीण य भ्रामरीण य कच्छभीण य भंभान य छ्वभ्रामरीण य वित्तवीणाण य अन्नेसि च बहूणं सोइंदिय पाउग्माणं दव्वाणं सगडी सागडं भरेति, भरित्ता बहूणं किण्हाणं य जाव संघाइमाण य अन्नेसि च बहूणं चक्खिदियपाउग्माणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेति) इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया-सज्जित करके उनमें उन्होंने ने अनेक वीणाओं को, बल्लकियों को, भ्रामरियों को, कच्छप

आठ कनककेतु राजाએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સાંપાત્રિક પોતવણિકજનોની સાથે જાઓ અને કાલિક દ્વીપમાંથી મારા માટે ઘોડાઓને લાવો. રાજાની આ આજ્ઞાને તે લોકોએ પણ સ્વીકારી લીધી.

(તएणं તે કૌટુંબિયપુરિસ્સા સગડીસાગડં સજ્જેતિ, સજ્જિત્તા તત્થણં બહૂણં વીણાણ ય બલ્લકીણ ય ભ્રામરીણ ય કચ્છભીણ ય ભંભાણ ય છવ્ભ્રામરીણ ય વિક્તવીણાણ ય અન્નેસિ ચ બહૂણં સોઈંદિયપાઉગ્માણં દવ્વાણં સગડીસાગડં ભરેતિ, ભરિત્તા બહૂણં કિણ્હાણં ય જાવ સંઘાઈમાણ ય અન્નેસિ ચ બહૂણં ચક્કિદિયપાઉગ્માણં દવ્વાણં સગડીસાગડં ભરેતિ)

ત્યારપછી તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ગાડી અને ગાડાંઓને જોતથી, જોત-રૂંને તેમાં તેમણે ઘણી વીણાઓ, વલ્લકીઓ, ભ્રામરીઓ, કાચળાના આકાર

अनगरधर्माभूतवर्णिनी टी० अ० १७ कालिकद्वीपगत आकीर्णाभ्यवक्तव्यता १०९

‘चित्तवीणाणय’ वृत्तवीणानां=गोलाकार वीणानां च-अन्येषां च बहूनां नानाविधानां ‘सोइंदियपाउग्गाण’ श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणां=कर्णेन्द्रियसुखजनकानां द्रव्याणां=तन्व्यादिरूपाणां शकटीशकटं भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थः, भूत्वा बहूनां ‘किण्हाणय जाव मुक्काणय’ कृष्णानां यावत्-नीलानां पीतानां रक्तानां शुक्लानां च कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्तानां ‘कट्टकम्माण य’ काष्ठकर्मणां=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादीनाम्, ‘पोत्थकम्माणय’ पुस्तपु कर्मणां-पुस्तपु=वस्त्रताडपत्रकर्मलादिषु कर्माणि=लेखनकर्मणि, तेषाम्, ‘चित्तकम्माण य’ चित्रकर्मणां=पट्टकादिषु चित्ररूपाणाम्, ‘लेप्पकम्माणय’ लेप्पकर्मणां=मृत्तिकासेटिकादिना वल्ल्याद्याकाररचना विशेषरूपाणाम्, तथा-‘ग्रन्थिमाण य’ ग्रन्थिमानां=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानाम्-यावत्-‘वेढिमाण य’ वेष्टिमानां=लतादि वेष्टनतो निष्पादितानाम्, ‘पूरिमाण य’ पूरिमाणं=रुनकादिषु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भंभाओं भेरियों-को, बड़ भ्रामरियों को-गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखजनक तंत्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त, शुक्ल और कृष्ण रंग से रंगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्तकर्मों को-वस्त्र, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के लेखों को, निबन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई कविता आदि कों को-चित्रकर्मों को-पट्टिया आदि पर उकेरे गये विविध चित्रों को-लेप्पकर्मों को-मृत्तिका सेटिका आदि से बल्ली आदि रूप में बनाये गये चित्रों को, ग्रंथियों को विशेष चतुराई के साथ गांठों से बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रची गई चीजों को,-दोपियों को, हाथों की पैरों की अंगुलियों में पहिरने योग्य

येथी वीण्णुओ, लंभाओ-लेरीओ (नगाराओ) बड़-भ्रामरीओ, गोण आकार-वाणी वीण्णुओ तेमज्ज जीज पण्ण धण्ण कण्णेन्द्रियने सुअ आपे तेवा तंत्री वगेरे साधनेने लर्या. लरीने लीला, पीणा, राता, सइइअने काणा रंगोथी रंगोओलां लाकडांनो अनेलां रमकडांने, पुस्तकर्मोने-वस्त्र ताडपत्र अने कागज वगेरे उपर लभाओला जतजतता लेओने, निअधोने, इडा, चोपाइ वगेरेमां लभाओली उपदेशक कविताओ वगेरेने, चित्र कर्मोने-इलक वगेरे उपर चित्रित करैलां धण्ण चित्रोने लेप्प कर्मोने, भाटी सेटिका वगेरेथी लता वगेरे इपमां अनाववामां आवेला चित्रोने, ग्रंथिओने-विशेअ आतुयंथी गांठोथी अनाववामां आवेलां रमकडांने, लताओ वगेरे वडे वेष्टित करीने अनाववामां आवेली वस्तु-

निष्पादितानाम्, 'संघादमाण य' सङ्घातिमानां=लोहकाष्ठादिभी रथादिवद् वस्तु-
समूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अन्येषां च बहूनां 'चर्चिषदियपाउग्माणं' चक्षुरि-
न्द्रियप्रायोग्याणां=नयनानन्दजनकानां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा
बहूनां 'कोट्टपुडाण य' कोष्ठपुटानां = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतकीपुटानां
च यावत्-एलापुटानां च, कुङ्कुमपुटानां च, उशीरपुटानां= 'खस' इतिभाषा
प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लवङ्गपुटानां चेत्यादि। अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रिय-
प्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा बहोः खण्डस्य च गुडस्य च
शर्करायाश्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः 'मच्छंडियाए य' मत्स्यण्डिकायाः=
'कालपीमिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुलकन्द' इति
प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति।
तथा बहूनां 'कोयवियाण य' कोयविकानां = रूतपूरितपावरणविशेषाणां
'रजाई' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलानां=रत्नकम्बलानाम्, पावरणानां=शाटिकानां
'चदर' इति प्रसिद्धानाम्, 'नवतयाण य' नवतकानाम्=ऊर्णामयपर्याणानां

आभूषण आदि कों को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों
पर कुन छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन
पूरिमों को और संघातिमों को-लोहकाष्ठ आदि की तरह अनेक वस्तुओं
के समुदाय से निष्पादित चित्रों को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को
सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा। (बहूनां कोट्टपुडाण य, केयई पुडा-
ण य जाव अन्नेसि च बहूनां चर्चिषदियपाउग्माणं द्रव्याणां सगडीसागडं
भरेति, बहुस्स खंडस्स य गुलस्स सकराए य मच्छंडियाए य पुष्फुत्तर
पउमुत्तराणय अन्नेसि च जिह्विषदिय पाउग्माणं द्रव्याणां सगडीसागडं
भरेति बहूनां कोयवियाण य केवलणय पावरणाण य नवतयाण य

आने-टोपीआने, हाथो, पगे। अने आंगणीआमां पडेरवानां आभूषण वगे-
रेने पूतणीनी जेम जे सुवर्ण वगेरेनां पतरां उपर छाणुं पाडीने तेमने
पूरीने अनाववाभां आवेला चित्रे। ओटले के पूरिआने अने संघातिआने
छोणउं, काष्ठ वगेरेथी अनाववाभां आवेला २५ वगेरेनी जेम धणी वस्तुआने
ओकत्रित करीने तेमना वडे अनाववाभां आवेला चित्रे। तेमज्जीनां पण
धणां नेत्र इन्द्रियने गये तेवा द्रव्येने लयां।

(बहूनां कोट्टपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसि च बहूनां चर्चिषदिय
पाउग्माणं द्रव्याणां सगडीसागडं भरेति, बहुस्स खंडस्स य गुलस्स सकराए य
मच्छंडियाए य पुष्फुत्तरपउमुत्तराण य अन्नेसि च जिह्विषदियपाउग्माणं द्रव्याणां
सगडीसागडं भरेति बहूनां कोयवियाण य केवलण य पावरणाण य नवतयाण

अनगारधर्माभूतवर्णिनी टी० अ० १७ कालिकटोपगत आकीर्णाश्वस्तव्यता ६११

‘जीन’ इति प्रसिद्धानाम्, मलयानां च=मलयदेशोत्पन्नस्त्रविशेषाणाम्, ‘मसूराण य’ मसूरकाणां=वस्त्रादिनिर्मित वृत्ताकारासनविशेषाणाम्, ‘शिलावट्टाण य’ शिलापट्टाणां=पट्टाकारचिकणशिलानां यावत् हंसगर्भाणां=हंसः=चतुरिन्द्रियकृमि-विशेषः, गर्भः=तन्निर्वर्तित कोसिहारोरुतरूपः, तन्मयवस्त्राण्यपि हंसगर्भाणीत्यु-

मलयाण य मसूराण य शिलावट्टाण य जाव हंसगन्भाण य अन्नेसि च फासिन्द्रियपाउग्गाणं दब्बाणं सगडीसागडं भरेति) इसी तरह अनेक कोष्ठपुटों को-सुगंधित द्रव्य विशेषों को केतकीपुटों को-सुगंधित पुष्पों यावत् एलापुटों को-इलायचियों को, उखीरपुटों को, खश के समुदाय को-कुंकुमपुटों को तथा और भी अनेक, घ्राणेन्द्रिय को तृप्ति कारक द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों में भरा। बहुत सी खांड, बहुत से गुड़ बहुत सी शर्करा-मिसरी-बहुत सी मत्स्यण्डी-कालपी मिसरी बहुत से गुलकंद, बहुतसे पद्मपाक को तथा और भी जिह्वाह-न्द्रिय को तृप्ति करने वाले द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों में भरा। इसी तरह स्पर्शन इन्द्रिय को आनंददेने वाले कोयविकों को-रूई कपास-से भरे हुए प्रावरण विशेषों को-रजाहयों को-कम्बलों को-रत्न कम्बलों को-प्रावरणों को-चदरों को-नवलकों को-ऊन के बने हुए पल्लेचों को-जीनों को-मलयदेश के बने हुए वस्त्रों को, मसूरकों को-वस्त्रों से बनाये हुए गोलाकार आसनो को-शिलापट्टों को-पट्टाकार चिकनी

य मलयाणय मसूराण य शिलावट्टाण य जाव हंसगन्भाण य अन्नेसि च फासिन्द्रियपाउग्गाणं दब्बाणं सगडीसागडं भरेति)

आ प्रभाञ्जे धञ्जा डोण्ट पुटकेने-सुगंधित द्रव्य-विशेषोने, केतकी पुटोने डेवडानां पुष्पोने यावत् ऐलापुटोने, ऐलचीओने, उखीर पुटोने-अशना समुदायोने, कुंकुम पुटोने तेमञ्ज भीम पञ्च धञ्जा घ्राणेन्द्रिय (नाक) ने तृप्ति पमाउतारा द्रव्योने तेओओ गाडी अने गाडाओमां लयां। अहुञ्ज पुण्डण प्रभाञ्जमां भांड, गोण, साकर-मिश्री, मत्स्यण्डी-कालपी मिश्री, (उंची नालनी साकर) गुलकंद, पद्मपाक तेमञ्ज भीम पञ्च धञ्जा जिह्वाह इन्द्रिय (जुल) ने तृप्ति आपनार द्रव्योने ते लोकोओ गाडी अने गाडाओमां लयां। आ प्रभाञ्जे स्पर्शेन्द्रियने सुभ आपनारी कोयविकोने इथी लरेला प्रावरण विशेषोने-रजधओने, कामणोने, रत्न कामणोने, प्रावरणोने, आहरोने, नवलकोने, जिनथी जनाववामां आवेलां पदेवाओने-लुओने-मलय देशना वस्त्रोने, मसूरकोने-वस्त्रो वडे जनाववामां आवेला गोण आकार आसनोने, शिलापट्टकोने-पट्टना आकारनी

વ્યન્તે, તેષાં કૌશેયવસ્ત્રાણાં ' રેશમીવસ્ત્ર ' इति भाषा पसिद्धानां च तथा-
अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं
योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरकं=गम्भीरनामकं पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति,
उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा ' पोयवहणं ' पोतवहनं=नौकां
सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् ' उक्किट्वाणं ' उत्कृष्टानां=श्रेष्ठानां शब्दस्पर्शरसरूप-
गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च ' सामियस्स य ' समीतस्य=

શિલાઓં કો, હંસ ગર્ભોં કો-રેશમી વસ્ત્રોં કો, તથા ઔર મી સ્પર્શન
ઇન્દ્રિય કો આનન્દ દેને ઘાલી વસ્તુઓં કો उन लोगों ने गाड़ी और
गाड़ों में भरा। (भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गंभी-
रए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति,
मोइत्ता पोयवहणे सज्जेति, सज्जित्ता तेसि उक्किट्वाणं सदफरिसरस-
रूपगंधाणं कट्टस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाणय समियस्स
य गोरसस्स य जाव अन्नेसि च बहूणं पोयवहणपाउग्गा णं पोयवहणं
भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को जोत दिया।
जोतकर के फिर वे वहाँ आये-जहाँ गंभीर नाम का पोतस्थान था-बंद-
रगाह था। वहाँ आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को ढील-रोक
दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके
बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गंधोंको काष्ठको तृण
को पानीय द्रव्य को तंदूलों को, गेहूँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીલી શિલાઓને, હંસ ગર્ભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ ખીણ પણ ઘણી સ્પર્શ-
ન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમાં ભરી.

(भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव
उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति,
सज्जित्ता तेसि उक्किट्वाणं सदफरिसरसरूपगंधाणं कट्टस्स य तणस्स य पाणि-
यस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसि च बहूणं पोयवहण
पाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાંઓને ભેતર્યા. ભેતરીને તેઓ
ત્યાંથી જ્યાં ગંભીર નામે પોતસ્થાન (બંદર) હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને
તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાંઓને છોડી મૂક્યા. અને ત્યારપછી નૌકાઓને
સુસજ્જિત કરી. સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,
રૂપ અને ગંધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તંદુલો (ચોખા) ને,

भरिन्नारधमौमृतवर्षिणी टी० म० १७ कालिकद्वीपगत आकीर्णाश्वक्तव्यता ६१३

गोधूमादीनामटुकस्य 'आटा' इति प्रसिद्धस्य, 'गोरसस्य य' गोरसस्य=घृता-
दिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहनं
भरन्ति, घृत्वा 'दक्खिणाणुकूलेण' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव
कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहनं 'लंबेति' लम्बयन्ति=
तीरस्थापितशङ्कुषु बध्नन्ति, वद्ध्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान्
शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'एगट्टियाहिं' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालिय-
दीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारंति' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यों को उस नौका में भरदिया।
(भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता पोयवहनं लंबेति, लंबित्ता ताइं उक्किट्ठाइं सदफरिसरस-
रूप गंधाइं एगट्टियाहिं कालियदीवे उत्तारंति। जहिं २ च णं ते आसा
आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तहिं २ च णं ते कोडुं
बियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि
सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति) भर करके फिर ये लोग जब
पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहां से चलकर जहां
कालिक द्वीप था वहां आये-वहां आकर के इन लोगों ने
लंगर डाल दिया-लंगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा
आदिकों को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि
वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खांड आदि पदार्थों को

धड़ना डोढने, गोरस धी वगेरेने यावत् भीळ पळु धव्वा वडाळु यात्राभां
धाम लागे तेवां द्रव्याने ते नौकाभां भर्यां.

(भरित्ता दक्खिणाणुकूले णं वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पोयवहनं लंबेति, लंबित्ता ताइं उक्किट्ठाइं सदफरिसरस-
रूपगंधाइं एगट्टियाहिं कालियदीवे उत्तारंति। जहिं २ च णं ते आसा आसायंति वा
सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तहिं २ च णं ते कोडुं बियपुरिसा ताओ
वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य
दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति)

भरीने तेओ भधा न्यारे पाछणधी वडेतो अनुकूल पवन वडेवा लाग्यो
त्यारे त्यांथी रवाना थधने न्यां डालिक द्वीप छेते त्यां आव्या. त्यां आवीने
ते डोडोअे लंगर नाप्युं. लंगर नाभीने वडाळुमांथी शफटना साधन रुप
वीळा वगेरेने, कोमण स्पर्शना साधनभूत उथी लारेला रळध वगेरे वस्त्रोने,
रसना (लस) इन्द्रियने भभता आंड वगेरे पदार्थोने, नेत्र इन्द्रियने आनंठ

६१४

होताधर्मकथासूत्रे

‘ जहिं २ च णं ’ यत्र यत्र च वने खलु ते ‘ आसा ’ अथाः=जात्या अथाः ‘ आसयंति वा ’ आसते=उपविशन्ति ‘ सयंति वा ’ शेरतेस्वपन्ति वा ‘ चिद्वन्ति वा ’ तिष्ठन्ति वा, ‘ तुयद्वन्ति वा ’ त्वग्वर्त्तयन्ति=शरीरं प्रसार्य स्वपन्ति वा ‘ तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः ‘ ताओ ’ ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि ‘ समुदीरेमाणा ’ समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषा-मन्वानां ‘ परिपेरंतेणं ’ परिपर्यन्तेन=सर्वतः समःतात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थः ‘ पासए ’ पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः ‘ निच्चला ’ निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः ‘ णिप्फंदा ’ निःस्पन्दाः=हस्ताद्यवयवसंचाररहिताः ‘ तुसिणीया ’ वचनव्यापाररहिताः ‘ चिद्वन्ति ’ तिष्ठन्ति ।

तथा-यत्र यत्र तेऽन्धाः आसते वा यावत् त्वग्वर्त्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः बहूनि कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लानि काष्ठ-

नेत्र इन्द्रिय को आनंद देनेवाले नीले पीले आदि रंगवाले चित्रों को एवं घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगंधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया । बाद में जहां २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, खेदते थे, वहां २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनों को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहा-वनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये । और (तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिद्वन्ति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयद्वन्ति वा तत्थ २ णं ते कौटुम्बिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणि य

पमाडनार नीला, पीला वगैरे रंगना चित्राने अने घ्राण (नाक) इन्द्रियने सुगंध आये तेवा काष्ठपुट वगैरे सुगंधित द्रव्योंने मंडाणुमांथी नानी नानी छोडीओमां भूडीने कालिक द्वीप उपर भूडी दीधी. तयारपछी न्यां ते जाति अश्वो भेसता छता, सूता छता, रडेता छता, आराम करता छता त्यां ते कौटुम्बिक पुरुषो ते हस्तिशीर्ष नगरथी लई आवेली वीणाथी मांडीने वृत्त-वीणा सुधनी साधनेने तेमज्ज पीज पणु श्रोत्र (कान) इन्द्रियने गमे तेवी साधन सामग्रीने मधुर ध्वनिथी बजाडतां त्यां देकाई गया अने—

(तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिद्वन्ति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयद्वन्ति वा तत्थ २ णं ते कौटुम्बिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणि य

अनगारधर्मावृत्तवर्षिणी टीका अ०१७ कालिकवृत्तिगत आकीर्णाश्वयकव्यता ६५

कर्माणि यावत् संघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वानां परिपरेन्तेन=सर्वतः समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति २ ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वप्नन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषां बहूनां कोष्ठपूटानां च यावद् अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणां

जाव संघादमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्षुर्दिशपाउग्माणि य दन्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसि परिपरेत्तेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चल्ला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठन्ति) उस के चारों तरफ चारों दिशाओं में-बीणा आदिकों को स्थापित करते रहे । स्थापित करके फिर वे वहीं पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कंपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये ।

इस तरह-जिस २ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, छेदते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि संघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुर्दिश को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुर्दिश को सुहाबनी लगानेवाली जो वस्तुएँ थीं उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वों की चारों दिशाओं में रख दिया । रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । (जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणिय जाव संघादमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्षुर्दिश पाउग्माणि य दन्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसि परिपरेत्तेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चल्ला, णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठन्ति)

तेमनी आमेर, आरे आर दिशाओमां वीष्ठाओ वगेरे भूमी. भूमीने तेओ त्तां ४ निश्चल-इत्तन चलननी क्रियाथी रहित थधने आगेने हलाव्या वगर चुपचाप त्यां भेसी गया. आ प्रमाणे ४ ४ वनमां अश्वो (घोडाओ) भेसता हता, सूता हता, रहता हता, आराम करता हता ते ते वनमां ते कौटुम्बिक पुरुषोओ साथे लावेली घल्ली काणी, नीली, पीली राती, सङ्केद रंगनी काष्ठकर्म वगेरे संघातिम सुधीनी अथी वस्तुओने के ओओ अक्षु (आंण) धन्द्रियने सुअ आपनारी हती तेमअ भील पल्ल अक्षु धन्द्रियने सुअ आपनारी ओटली सारी वस्तुओ हती तेमने लेगी करी अने अश्वोनी आमेर तेमने गोडवी सीधी गोडवीने तेओ त्तां ४ निश्चल, निस्पन्द थधने चुपचाप त्यां ४ भेसी गया.

(जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं तेसि बहूणं फोट्टपुट्टाणं य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिदियपाउग्माणं दन्वाणं पुंजेय णियरे य करेंति,

द्रव्याणां पुञ्जांश्च एकवस्तुसमूहरूपान् निकरांश्च नानाविधवस्तुराशिरूपान् कुर्वन्ति, कृत्वा तेषामश्वानां परिपर्यन्तेन=सर्वादिभ्यु यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ३ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र खलु गुडस्य यावद् अन्येषां च बहूनां जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्यणां पुञ्जांश्च निकरांश्च कुर्वन्ति, कृत्वा 'विय-

२ णं तेसि बहूणं फोडुपुडाणं य जाव अन्नेसि च बहूणं घाणिदिय पाउग्गाणं दब्बाणं पुंजेय णियरे य करेति करित्ता तेसि परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयेति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसि च बहूणं जिह्वेन्द्रिय पाउग्गाणं दब्बाणं पुंजे य णियरे य करेति, करित्ता वियरेण खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसि च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेति-भरित्ता तेसि परिपेरंतेणं पासए ठवेति जाव चिट्ठंति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ णं ते बह्वे कोयविया य जाव गम्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदियपाउग्गाइं अत्थुय पच्चत्थुयाइं ठवेति, ठवित्ता तेसि परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति) जहां जहां वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उन अनेक कोष्ठ पुटों के यावत् अन्य और घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्य द्रव्यों, के पुंजों को निकरो को एकात्रित कर दिया और करके फिर वे उन अश्वों की चारों दिशाओं में यावत् चुपचाप बैठ गये । जहां २ वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने गुड के यावत् दूसरे और रसनेन्द्रिय आलहादक करित्ता तेसि परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयेति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसि च बहूणं जिह्वेन्द्रिय पाउग्गाणं दब्बाणं पुंजे य णियरे य करेति, करित्ता वियरेण खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसि च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेति-भरित्ता तेसि परिपेरंतेणं पासए ठवेति जाव चिट्ठंति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बह्वे कोय-विया य जाव गम्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थु-याइं ठवेति, ठवित्ता तेसि परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति)

न्यां न्यां ते घोडाओ भेसता हुता, सूता हुता, रडेता हुता, आराम करता हुता त्यां त्यां ते कौटुम्बिक पुरुषोओ ते घण्टा के छ पुटोने यावत् भीष्म पणु घण्टी घ्राणेन्द्रिय (नाक) ने सुप्प पमाडे तेवी वस्तुओने पुष्कण प्रमा-खुमां त्यां गोडवी हीधी, ओकडी करी हीधी अने ओकडी करीने तेओ ते घोडाओने आरे तरइ यावत् चुपचाप धधने भेसी गया. ते घोडाओ न्यां न्यां भेसता हुता, सूता हुता, रडेता हुता, आराम करता हुता त्यां त्यां ते कौटु-

अनगारधमामृतवणिजी टी० अ० १७ कालिकद्वोपगत आकीर्णाश्वक्कव्यता ६१७

ए ' विवराणि=गर्तानि खनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावत् अन्येषां च बहूनां पानकानां विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषां परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रूतपूरितप्रावरणविशेषान् यावत् हंसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्थुय पच्चत्थुयाइ ' आस्तुतप्रत्यवस्तुतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषां परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति, द्रव्योंके पुंज एवं निकर लगाकर खड़े कर दिये । एक ही वस्तुओंकी जो राशि होती है उसका नाम पुंज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है । बाद में वहाँ पर उन्होंने ने अनेक गर्त खड़े किये । गर्त करके उनमें गुडपानक खण्डपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये । बाद में वहाँ पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । इसी तरह जिन २ वनों में वे घोड़े बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, एवं लेटते थे, वहाँ २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक रूई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हंसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शेन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रों को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया । बाद में वे उनके चारों ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तएणं ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगंधा तेणेव उवा-

मिक पुरुषोअे गोणता यावत् भील' धण्णां रसनेन्द्रिय (जुल) ने सुण पमाडे तेषां द्रव्योना पुजे अने निकरे लगावीने भङ्गी दीधां. अेक ज वस्तुना ढग-
लाने पुज तेमज जुही जुही वस्तुओना ढगलाओने निकर कडे छे. त्थारपणी ते ढोकिओ त्थां ज धण्णा भाडाओ तैयार कर्था. ते भाडाओमां तेओअे गोण-
पानक, पांडपानक, यावत् भील पणु धणी जतना पानकौ बरी दीधां. त्थार
भाड तेओ त्थां ज तेमनी थारे तरक् निश्चल-निस्पंद थधने चुपचाप जेसी
गया. आ प्रमाणे जे जे वनेमां ते घोडाओ जेसता डता, सूता डता, रडेता
डता अने आराम करता डता त्थां त्थां ते कौटुम्बिक पुरुषोअे धण्णां इना
प्रावरणोने यावत् हंसगर्भोनि, रेशमी वस्त्रोने तेमज भील पणु धण्णां स्पर्शे-
न्द्रियने सुण आपे तेषां वस्त्रोने ढीसां प्रावरणोधी आच्छादित करी दीधां.
त्थारपणी तेओ भधा चुपचाप तेनी थारे तरक् जेसी गया.

(तएणं ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगंधा तेणेव उवाग-

ઉપાગત્ય તત્ર સ્વલુ-‘અત્યેગદ્યા’ અસ્ત્યેકે=કેચિદ્ અશ્વાઃ-‘અપૂર્વાઃ=અદૃષ્ટપૂર્વાઃ સ્વલુ ઇમે શબ્દસ્પર્શસરુપગન્ધાઃ સન્તિ’ ઇતિ કૃત્વા=ઇતિ વિચિન્ત્ય તેષુ ઉત્કૃષ્ટેષુ= આકર્ષકેષુ શબ્દસ્પર્શસરુપગન્ધેષુ ‘અમુચ્છિયા’ અમૂર્છિતાઃ=મૂર્છારહિતાઃ, પ્રાપ્તદેયોપાદેયવિવેકાઃ અમૃદા=અસક્તિરહિતાઃ, અપ્રથિતાઃ=લોભતન્તુભિરબદ્ધાઃ, અનધ્યુપપન્નાઃ=તદેકાપ્રતારહિતાઃ કિશ્ચિન્માત્રમપિ તેષ્વાસક્તિમકુર્વાણાઃ સન્તઃ તેષામુત્કૃષ્ટાનાં ‘સદ્ જાત્ર ગંધાણં’ શબ્દસ્પર્શસરુપગન્ધાનાં દૂરંદૂરેણ=અતિદૂરત ઇવ ‘અવક્રમંતિ’ અપક્રામન્તિ=પલાયન્તે સ્મ । તે ચ સ્વલુ તત્ર પ્રચુરગોચરાઃ= પ્રચુરચરણભૂમયઃ પ્રચુરતૃણપાનીયાઃ, નિર્ભયાઃ, નિરુદ્વિગ્નાઃ ‘સુહં સુદેહં’ સુલ્લ-સુલ્લેન=સુલ્લપૂર્વકં વિહરન્તિ ।

ગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા તત્થ ણં અત્યે ગદ્યા આસા અપુવ્વા ણં ઇમે સદ્-ફરિસરસરુવગંધાઈં સ્તિ કદ્દુ તેસુ ઉવ્કિક્કદ્દેસુ સદ્ફરિસરસરુવગંધેસુ અમુચ્છિયા ૪ તેસિં ઉવ્કિક્કદ્દાણં સદ્ જાત્ર ગંધાણં દૂરં દૂરેણં અવક્રમંતિ) થાદમેં વે અશ્વ જહાંં યે પૂર્વોક્ત ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રુપ ગંધ ઓર સ્પર્શવાળે પદાર્થ થે વહાંં પર આયે વહાંં આકર કે ઇનમેં કિતનેક અશ્વ “યે શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રુપ, ગંધ અદૃષ્ટપૂર્વ હૈ” એસા વિચાર કર ઊન આકર્ષક શબ્દ રુપ, રસ, સ્પર્શ એવં ગંધો મેં-ઊન પદાર્થો મેં-મૂર્છિત નહીં બને । હેય ઉપાદેય કે વિવેક સે યુક્ત બને હુએ વે કિતનેક અશ્વ ઊન મેં આસક્તિ સે રહિત હી રહે લોભરુપતન્તુ સે બન્ધે નહીં । તથા કિશ્ચિન્માત્ર ખી ઊનમેં આસક્તિ નહીં કારતે દુએ વે ઊન શબ્દ, સ્પર્શ રુપ, ઓર ગંધોં કો બહુત હી દૂર સે છોડુકર ચલ દિયે । (તેણં તત્થ પડરગોચરા

ચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા તત્થ ણં અત્યેગદ્યા આસા અપુવ્વા ણં ઇમે સદ્ફરિસરસરુવ-સ્તિ કદ્દુ તેસુ ઉવ્કિક્કદ્દેસુ સદ્ફરિસરસરુવગંધેસુ અમુચ્છિયા ૪ તેસિં ઉવ્કિક્કદ્દાણં સદ્ જાત્ર ગંધાણં દૂરં દૂરેણં અવક્રમંતિ)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ આ અથા પૂર્વે મૂકેલા ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થો હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓમાંથી કેટલાક ઘોડાઓ “આ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ અદૃષ્ટપૂર્વ છે.” આમ વિચાર કરીને તે આકર્ષક શબ્દ, રૂપ, રસ, સ્પર્શ અને ગંધવાળા તે પદાર્થોમાં મૂર્છિત (મોહાંધ-લોભુપ) થયા નહિ. હેય અને ઉપાદેયના વિવેકથી સાવધ બનેલા કેટલાક ઘોડાઓ તે પદાર્થોમાં નિરાસક્ત જ રહ્યા. તેઓ લોભ રૂપી દોરીથી બંધાયા નહિ. થોડી પણ આસક્તિ બતાવ્યા વગર તેઓ તે શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થોને ખૂબ દૂરથી જ છોડીને જતા રહ્યા. (તેણં તત્થ પડરગોચરા પડરત્તણવાણિયા ણિન્મયા નિરુદ્વિગ્ગા સુહં

संमंगराद्यमामृतवर्षिणो टी० अ० १७ कालिकद्रोपगत आकोणश्ववक्तव्यता ६१६

अथोपनयं प्रदर्शयति,—‘एवामेव’ एवमेव=शब्दाद्यपूर्णिताकीर्णाश्ववत् ‘सम-
णाउसो’ हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थी वा यावत्-आचार्योपा-
ध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् शब्दस्पर्शसरूपगन्धेषु ‘नो सज्जइ’ नो सज्जते=
आसक्तिमान् न भवति ‘नो रज्जइ’ नो रज्जते अनुरक्तो न भवति, नो गृध्यति,
न वाञ्छति, नो मुञ्चति=न मूर्च्छति, नो अभ्युपगच्छते=न तल्लीनो भवति, स खलु
इह लोक एव बहूनां श्रमणादीनां चतुर्विधसङ्घस्य अर्चनीयः=समाननीयः यावत्
चातुरन्तसंसारकान्तारं ‘वीइवइस्सइ’ व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति-पारं
गमिष्यतीत्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

पउरत्तणपाणिआ णिअमया णिरुवियग्गा सुहं सुहेणं विहरंति) और
जंगल में ही जो प्रचुरचरने की जमीन थी-जिसमें अधिक से अधिक
मात्रा में तृण और पानी भरा हुआ रहता था उसमें ही निर्भय, निरु-
द्विग्न होकर सुखपूर्वक रहे। अब इस दृष्टान्त का उपनय प्रदर्शित करने
के लिये सूत्रकार कहते हैं-। (एवामेवसमणाउसो ! जो अहं णिगंथो
वा णिगंधी वा जाव सह फरिसरसरूपगंधेषु णो सज्जइ णो
णो रज्जइ, जो गिज्जइ, णो मुज्जइ, णो अज्झोववज्जेइ, से णं इह-
लोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ) हे आयु-
ष्मन्त श्रमणो ! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन एवं निर्ग्रन्थी
साध्वी जन अचार्य उपाध्यय के पास प्रव्रजित होकर शब्द स्पर्श, रस,
रूप, और गंध इन पाँचों इन्द्रियों के विषयो में आसक्ति युक्त नहीं
होता है, अनुरक्त नहीं बनता है, उन्हें चाहता नहीं है, उनमें मूर्छित
नहीं होता है, उनमें तल्लीन नहीं होता है, वह इस लोक में ही अनेक

सुहेणं विहरंति) અને વનમાં જ પ્રચુર ચરવાની જમીન હતી, જ્યાં વધારેમાં
વધારે ઘાસ અને પાણી હતાં ત્યાં જ નિર્ભય, નિરુદ્વિગ્ન થઈને સુખથી રહેવા
લાગ્યા. હવે આ દૃષ્ટાન્તને ઉપનય રૂપે કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે:—

(એવમેવ સમણાઉસો જો અહં ણિગંથો વા ણિગંધી વા જાવ સહફરિસ-
સરૂપગંધેષુ ણો સજ્જઇ ણો રજ્જઇ, જો ગિજ્જઇ, ણો મુજ્જઇ, ણો અજ્ઞોવવજ્જેઇ,
સે ણં ઇહલોએ ચેવ બહૂણં સમણાણં ૪ અચ્ચણિજ્જે જાવ વીઇવઇસ્સઇ)

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ
કે નિર્ગ્રંથ સાધવીઓ આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને શબ્દ,
સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા
નથી, અનુરક્ત થતા નથી, તેમને ઇચ્છતા નથી, તેઓમાં મૂર્છિત થતા નથી

મૂલમ-તત્થ ણં અરથેગઈયા આસા જેનેવ ઉક્કિટ્ઠા સદ્ધરિસ-
 રસરુવગંધા તેનેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા તેસુ ઉક્કિટ્ઠેસુ
 સદ્ધરિસે ૫ મુચ્છિયા જાવ અજ્ઞોવવળ્લા આસેવિડં પયત્તા
 યાવિ હોત્થા, તણં તે આસા તે ઉક્કિટ્ઠે સદ્ધ ૫ આસેવમાળા
 તેહિં વહૂહિં કૂડેહિ ય પાસેહિ ય ગલણસુ ય પાણસુ ય
 ષજ્ઞંતિ, તણં તે કોડુંબિયપુરિસા તે આસે ગિણંતિ ગિણિહત્તા
 ઇગઢ્ઠિયાહિં પોયવહળે સંચારેતિ સંચારિત્તા તણસ્સ કટુસ્સ
 જાવ ભેરેતિ, તણં તે સંજત્તાનાવાવાણિયગા દક્ખિણાણુ-
 કૂલેણં વાણં જેનેવ ગંભીરપોયટ્ટળે તેનેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવા-
 ગચ્છિત્તા પોયવહળં લંવેતિ લંવિત્તા તે આસે ઉત્તારેતિ ઉત્તા-
 રિત્તા જેનેવ હરિથિસીસે ણયરે જેનેવ કળમકેઝ રાયા તેનેવ
 ઉવાગચ્છંતિ ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ વદ્ધાવેતિ વદ્ધાવિત્તા
 તે આસે ઉવળેતિ, તણં સે કળમકેઝ તેસિં સંજત્તાનાવા-
 વાણિયગાણં ઉસ્સુક્કં વિયરઈ વિયરિત્તા સકારેતિ સમ્માણેતિ
 સક્કારિત્તા સમ્માણિત્તા પઢિવિસજ્ઞેઈ, તણં સે કળમકેઝ
 કોડુંબિયપુરિસે સદાવેઈ સદાવિત્તા સક્કારેતિ ૦ પઢિવિસ-
 જ્ઞેઈ, તણં સે કળમકેઝ રાયા આસમદણ સદાવેઈ સદા-
 વિત્તા एवं વયાસી-તુબ્ભેણં દેવાણુપ્પિયા ! મમ આસે વિણ-

શ્રમણ આદિ જનોંકા તથા ચતુર્વિધ સંઘકા સંમાનનીય હોતા હૈ । યાવત્
 વહ્ હસ ચતુર્ગતિ સંસાર કાન્તારકો પાર કર દેને વાલા હોતાહૈ ॥સૂ૦૩॥

તે આ લોકમાં જ ઘણા શ્રમણ વગેરેથી તેમજ ચતુર્વિધ સંઘથી સન્માન પ્રાપ્ત
 કરે છે. યાવત્ તે આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારને પાર કરનાર થઈ
 નામ છે. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

संस्कारधर्मासुतवर्षिणी टी० अ० १७ आकीर्णश्वदाष्टान्तिकयोजना

६२१

एह, तएणं ते आसमदगा तहत्ति पडिसुणंति पडिसुणित्ता ते
आसे बहूहिं मुहवंधेहिं य कणगबंधेहि य णासाबंधेहि य
खुरबंधेहि य खलिणबंधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहिय
अंकणाहि य वित्तप्पहारेहि य लयप्पहारेहि य कसप्पहारेहिय
छिवप्पहारेहि य विणयंति विणयित्ता कणगकेउस्स रत्तो
उवणेति । तएणं से कणगकेऊ राया ते आसमदए सक्का-
रेइ सक्कारित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं ते आसा बहूहिं मुह-
बंधेहि य जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमाणसाणि
दुक्खाइं पावेति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो
वा निगंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सदफरिसरसरूवगंधेसु
य सज्जइ रज्जइ गिज्जइ मुज्जइ अज्झोववज्जइ से णं इह-
लोए चेव बहूणं समणाण य जाव साविथाण य हीलणिजे
जाव अणुपरियट्ठिस्सइ ॥ सू० ४ ॥

टीका- 'तत्थ णं' इत्यादि । तत्र खलु 'अत्थेगइया' अत्थेके=केचित्
अथा यत्रैव उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषु उत्कृ-
ष्टेषु=शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु मूर्च्छिताः यावत्-अभ्युपपन्नाः=तत्तद्विषयेषु एकाग्रतां
प्राप्ताः सन्तस्तान् आसेवितुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । ततः खलु तेऽथा एतान् उत्कृष्टान्

‘तत्थणं अत्थे गइया’ इत्यादि ।

टीकार्थ- (तत्थणं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सदफरिसरसरूव-
गंधा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसु उक्किट्ठेसु सदफरिसे ५ मुच्छिया
जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था) उस जंगल में उन

तत्थणं अत्थेगइया इत्यादि—

टीकार्थ- (तत्थ णं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठासदफरिसरसरूवगंधा
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसु उक्किट्ठेसु सदफरिसे ५ मुच्छिया जाव अज्झो-
ववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था)

ते वनमां ते घोऽओमां केट्ठाके घोऽओमां ओवा पथु हत्ता के ओओ

શબ્દસ્પર્શસરૂપગન્ધાન્ ' આસેવમાણા ' આસેવમાનાઃ તત્સુસ્વાનુભવં કુર્વાણાઃ તૈર્વ-
દ્દુભિઃ કૂટૈશ્ચ વન્ધનવિશેષૈઃ, પાશૈશ્ચ રજ્જ્વાદિરૂપૈઃ ગલણ્ણુ=ગલેણુ=કળ્થેણુ પાદેણુ ચ
' વજ્જંતિ ' વધ્યન્તે-તે કૌટુમ્બિકપુરુષાસ્તાનશ્વાન્ વધનન્તિ સ્મેત્યર્થઃ । તતઃ

ઘોડોં મેં સે કિતનેક ઘોડેં એસેં મીં થેં જોં જહાંં વેં ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ સ્પર્શ
રસ, રૂપ એવં ગંધ યેં પાંચોંં ઇન્દ્રિયોંં કે આકર્ષક વિષય થેં વહાંં આકર
उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श आदि विषयों में मूर्छित यावत् तल्लीन बनगये।
और उन्हें सेवन करने में प्रवृत्त भी हो गये। (तएणं ते आसा ते
उक्किट्ठे सद ५ आसेवमाणा तेसिं बहूहिं कूडेहिं य पासेहिं य गलणसु य
पाएसु य वज्जंति, तएणं ते कोटुं वियपुरिसा ते आसे गिण्हंति गिण्हित्ता
एगट्ठियाहिं य पोयवहणे संचारेति, संचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव
भरंति. तएणं ते संजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं
जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंवेति-
लंविता ते आसे उत्तारंति) इसके बाद वे घोड़े उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श
रस, रूप, एवं गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों को सेवन करते हुए
रज्जादिरूपबन्धन विशेषों द्वारा कंठों और पैरोंमें बांध लिये गये। अर्थात्
उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इन घोड़ों को उस समय रस्सियों द्वारा बांध-
लिया। बांध करके फिर उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उन्हें पकड़ लिया पकड़

ત્યાં તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઇન્દ્રિયોના
આકર્ષક વિષયો હતા ત્યાં આવીને તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ વગેરે વિષયોમાં
મૂર્છિત (આસકત) યાવત્ તલ્લીન થઈ ગયા અને તેમના સેવનમાં પ્રવૃત્ત
પણ થઈ ગયા.

(તएणं તે આસા તે ઉક્કિટ્ઠે સદ ૫ આસેવમાણા તેસિંં બહૂંહિં કૂડેંહિં ય
પાસેહિંય ગલણસુ ય પાણસુ ય વજ્જંતિ, તएणं તે કોટું વિયપુરિસા તે આસે
ગિણ્હંતિ ગિણિહ્તા એગટ્ઠિયાહિં ય પોયવહણે સંચારેતિ, સંચારિત્તા તણસ્સ કટ્ઠસ્સ
જાવ ભરંતિ, તएणं તે સંજત્તા ણાવા વાણિયગા દક્ખિણાણુકૂલેણં વાएणं જેણેવ
ગંમીરપોયપટ્ટણે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહણં લંવેતિ-લંવિત્તા તે
આસે ઉત્તારંતિ)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ
પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોનું સેવન કરતાં દોરડાઓ વગેરે રૂપ બાંધન વિશેષથી
ઠોકો અને પગોમાં બાંધાઈ ગયા. એટલે કે તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ તે ઘોડા-
ઓને દોરડાઓથી પાંખી લીધા. બાંધીને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ તે ઘોડાઓને

अनंगारचमामृतवणिणी टीका अ० १७ भाकीणाश्वदाष्टातितद्योजना १२३

खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्तान्श्वान् गृह्णन्ति, गृहीत्वा 'एगद्वियाहिं' एकार्थिवाभिः= छपुनौकाभिः पोतवहने=बृहन्नौकायां 'संचरेंति' सञ्चारयन्ति=आरोहयन्ति सञ्चार्यतृणस्य काष्ठस्य च यावत् पोतवहनं भरन्ति तृणकाष्ठादिभिरितिभावः । ततः खलु ते संयात्रनौकावाणिजकाः दक्षिणानुकूलेन=स्वानुकूलेन वातेन यत्रैव गम्भीरपोतपत्तनं=पोतलम्बनस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहनं 'लंबेति' लम्बयन्ति=शंकुषु बद्ध्वा स्थापयन्ति, लम्बयित्वा तान्=अश्वान् 'उत्तारेंति' उत्तारयन्ति, उत्तार्य यत्रैव हस्तिशीर्षं नगरं यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'करयल जाव' करतरपरिगृहीतं शिरभावत्तं दशनखं मस्तके-

करं फिर उन्हें छोटी २ नौकाओं द्वारा लाकर बड़ी नौका में चढ़ाया-
चढ़ा करके फिर उसमें तृण और काष्ठ आदि को भरा । इसके बाद वे
सांयात्रिक पोतवणिक दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर जहां गंभीर
नामका पोतपट्टण (चन्द्रगाह) था वहां आये । वहां आकर के उन्होंने ने
अपने पोत को लंगर डालकर ठहरा दिया । ठहरा कर उन अश्वों को
उस पोत से फिर उन्होंने ने नीचे उतार लिया । (उत्तारित्ता जेणेव
हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छन्ति उवाग-
च्छित्ता करयल जाव बद्धवेंति, बद्धावित्ता ते आसे उवणेंति, तएणं
से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता णावावाणिगगाणं उस्सुक्कं वियरइ, विय-
रित्ता सक्कारेइ संमाणेइ सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिबिसज्जेइ) उतार
कर फिर वे वहां उन्हें ले गये जहां हस्तिशीर्ष नगर और उसमें भी

पकडी लीधा. पकडीने तेमणे नानी नानी छोडीओ वडे मोटा वडाणुमां यडाओया.
यडाओया आइ तेओओ तेमां घास ओने काष्ठ लयां. त्यारपकडी ते सांयात्रिक
पोतवणिके दक्षिणने अनुकूल पवन वडेवा लाओये त्यादे त्यांथी रवाना यधने
न्यां गंभीर नामे पोतपट्टण (अंदर) छतुं त्यां आओया. त्यां आवीने तेमणे
पोताना वडाणुने लंगर नाभीने रोक्युं. त्यारआइ तेमणे छोडाओने वडाणु-
मांथी नीचे उतार्या.

(उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवा-
गच्छन्ति, उवागच्छित्ता करयल जाव बद्धवेंति, बद्धावित्ता ते आसे उवणेंति, तएणं
से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता णावा वाणिगगाणं उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता
सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारित्ता, संमाणित्ता पडिबिसज्जेइ)

नीचे उतारीने तेओ ते छोडाओने हस्तिशीर्ष नगरमां न्यां कनककेतु
राजा छतो त्यां लई गया. त्यां ओधने पडेलां तेमणे ओने लाथ जेडीने राजा

ऽञ्जलिं कृत्वा 'वर्द्धयन्ति' वर्द्धयन्ति जयविजयशब्देनाभिनन्दन्ति, वर्द्धयित्वा तान् अश्वान् राज्ञः समीपे 'उवर्णेति' उपनयन्ति । ततः खलु स कनककेतु राजा तेषां संयात्रनौकावाणिजकानाम् 'उस्सुक्कं' उच्छुल्कम् = 'एभ्यः केनापि-करो न ग्राह्यः' इत्येवंरूपमाज्ञापत्रं वितरति=ददाति, वितीयं सत्करोति-मधुर-वचनोदिभिः, संमानयति-वस्त्रादिभिः, सत्कार्यं सम्मान्य प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स कनककेतु राजा 'आसमद्दए' अश्वमर्दकान्=अश्वशिक्षकान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-युयं खलु हे देवानुप्रियाः ! ममाश्वान् 'विण-एह' विनयत=शिक्षयत-गत्यादिकलाकुशलान् कुरुतेत्यर्थः । ततः खलु तेऽश्व-मर्दकाः 'नहन्ति' तथेति 'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिश्रुष्यन्ति=वृषाज्ञां स्वीकुर्वन्ति,

जहां कनककेतु राजा थे । वहां जाकर उन्होंने पहिले दोनों हाथ जोड़ कर राजा कनककेतु को नमस्कार किया-जय विजय शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी-बधाई देकर बाद में उन घोड़ों को उनके समक्ष उपस्थित कर दिया इसके बाद कनककेतु राजा ने उन सांघात्रिक पोतवणिजकजनों के लिये निःशुल्क (कररहित) अवस्था वितरित की इन्हीं से कोई भी राज्यकर्मचारी टेक्स न लेवे इस प्रकार का आज्ञापत्र उन्हें लिखकर दे दिया । आज्ञापत्र लिखकर देने के बाद राजाने उनका मधुर वचनों द्वारा भस्कार किया । वस्त्रादि प्रदान पूर्वक उनका सम्मान किया । फिर सत्कार सम्मान करके उन्हें विसर्जित कर दिया । (तएणं से कणककेऊ कोडुंबियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता सबकारेति० पडिविसज्जेह, तएणं से कणगकेऊराया आसमद्दए सदावेह सदावित्ता एवं वयासी तुब्भेणं देवानुप्पिया ! मम आसे विणएह) इस के बाद कनककेतु राजाने कौडु-

कनककेतुने नमस्कार कर्था अने जय-विजय शब्दों वडे तेमने वधामल्ली आपी. वधामल्ली आपीने तेमछे ते अधा घोराम्भेने तेमनी सामे उपस्थित कर्था त्थारपछी कनककेतु राजाछे ते सांघात्रिक पोतवणिज्जेने माटे कर माझी करी आपी तेमनी पासोथी डोह पछु राज्य कर्मचारी कर (टेक्स) ले नहि तेवुं आज्ञापत्र तेमने लणी आथुं आज्ञापत्र आपीने राजाछे तेमने मधुर वचने वडे सत्कार कर्था अने वस्त्रो वजेरे आपीने तेमनुं सम्मान कर्था. त्थारपछी तेमने विदाय कर्था.

(तएणं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता सबकारेति० पडिविसज्जेह, तएणं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सदावेह सदावित्ता एवं वयासी तुब्भेणं देवानुप्पिया ! मम आसे विणएह)

अमंगारधर्मावृत्तवर्णिनी टीका अ० १७ भाषीणांश्वदाष्टान्तिकयोजना

१२५

प्रतिश्रुत्य तान् अश्वान् बहुभिर्मुखबन्धैश्च कर्णबन्धैश्च नासाबन्धैश्च बालबन्धैश्च केशबन्धैरित्यर्थः खुरबन्धैश्च 'खलिणबन्धेहि य' खलीनबन्धैः 'लगाम' इति प्रसिद्धबन्धनैः, 'अहिलाणेहि य' अभिलानैः='जीन' इति प्रसिद्धैः, पडियाणेहि 'पर्याणकैः'='तंग' इति प्रसिद्धैश्चर्ममयैरश्वोपकरणविशेषैः, 'अंकणाहि य' अङ्कनाभिः=तप्तलोहशलाकादिभिर्ङ्कनकरणैश्च 'वित्तप्पहारेहि य' वेत्रप्रहारैश्च

म्बिक पुरुषों को बुलाया, बुलाकर उनका आदर सत्कार किया। फिर उन्हें विसर्जित कर दिया। इसके पश्चात् कनककेतु राजा ने अश्वशिक्षकों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम इन हमारे इन घोड़ों को शिक्षित बनाओ-गत्यादिकला में निपुण करो। (तएणं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहूहिं मुह बंधेहि य कण्णबंधेहिं णासा बंधेहि य बालबंधेहि य खुरबंधेहि य खलिणबंधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अंकणाहि य वित्तप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति) राजा कनककेतु की इस आज्ञा को उन अश्वमर्दकों ने "तहत्ति" कहकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्होंने ने अनेक विध मुख बंधनों से, कर्णबंधनों से नामाबंधनों से लगामरूप बंधनों से अभिलानों से-पलेचाओं से-पर्याणकों से तंगों के कसने से-अंकनों से-तप्त हुई लोहकी शलाकाओं द्वारा डाम लगाने से वेत्र के प्रहारों से, लनाओं के प्रहारों से, चाबुकों के

त्यारपणी कनककेतु राज्ञे कौटुम्बिक पुरुषेण भोलाव्या, भोलावीने तेमने सत्कार कर्यो अने पणी तेमने विहाय कर्यो। त्यारपाह कनककेतु राज्ञे अश्वशिक्षकेण भोलाव्या अने भोलावीने तेमने आ प्रसाखे कहुं ठे छे देवानुप्रियो! तमे अमारा आ घोडाओने शिक्षित अनावो, दोडावा वगेरेनी कणाओमां निपुण अनावो।

(तएणं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहूहिं मुह बंधेहि य कण्ण बंधेहिं णासा बंधेहि य बालबंधेहि य खुर बंधेहि य खलिण बंधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अंकणाहि य वित्तप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति)

राजा कनककेतुनी आज्ञाने ते अश्वमर्दकोऽपि "तहत्ति" कहीने स्वीकारी लीधी। स्वीकार करीने तेमण्णे धणी जातना मुअ अंधनोथी, कण्ण अंधनोथी, नासा अंधनोथी, पाण अंधनोथी, पुर अंधनोथी, लगाम अंधनोथी, अभिलानोथी, पलेचाओथी, पर्याणकोथी, तंगाने कसवाथी, अंकनोथी, तपावामां आवेली दोअउनी शणीओ वडे अमवाथी, वेतोना आघातोथी सता-

‘लयप्पहारेहि य’ लताप्रहारैश्च, ‘कसप्पहारेहि य’ कशाप्रहारैश्च ‘कशा’—चाबुक’ इति भाषायाम्, ‘छिवप्पहारेहि य’ छिवाप्रहारैः=चर्ममयचिकणकशाप्रहारैश्च ‘विणयंति’ विनयन्ति=शिक्षयन्ति, विनीय=शिक्षयित्वा कनककेतो राज्ञ उपनयन्ति । ततः खलु सः कनककेतू राजा तान् अश्वमर्दकान् सत्करोति सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति । ततः खलु तेऽश्वाः बहुभिर्मुखवन्थैश्च यावत्-छिवाप्रहारैश्च बहूनि शरीरमानसानि दुःखानि प्राप्नुवन्ति ।

‘एवामेव’ एवमेव=शब्दादिविषयमूर्छिताकीर्णाश्ववत् ‘समणाउसो’ हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके मत्तजितः सन् इष्टेषु शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु ‘सज्जइ’ सज्जते=आसक्तो

प्रहारों से, छिपा-चर्म की बनी हुई चिकनी कशाओं के प्रहारों से उन घोड़ों को शिक्षित बना दिया । (विणयित्ता कणगकेऊरस रण्णो उवणेंति तएणं से कणगकेऊराया ते आसमइए सक्कारेइ सक्कारित्ता पडिविस ज्जेइ, तएणं ते आसा बहूहि मुहबंधेहि जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमानसाणी दुक्खाइं पावेंति) शिक्षित बनाकर फिर वे उन घोड़ों को कनककेतु राजा के पास ले गये । बादमें राजा कनककेतु ने उन अश्वमर्दकों का सत्कार सम्मान किया । सत्कार सम्मान करके फिर उन्हें विसर्जित कर दिया । वे घोड़े लेकर अनेक विध उन मुख बंधनों से यावत् चर्ममय चिकणकशाओं के प्रहारों से नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दुखों को पाने लगे । (एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्धफरिसरस

ओना प्रहारेथी आयुकेना प्रहारेथी, छिपा आसडाना अनेसा वीसा आयुकेना प्रहारेथी ते घोडाओने केणव्या.

(विणयित्ता कणगकेऊ राया ते आसमइए सक्कारेइ, सक्कारित्ता पडिविस-ज्जेइ तएणं ते आसा बहूहि मुह बंधेहि जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमानसाणि दुक्खाइं पावेंति)

ठेणवीने-शिक्षित बनावीने ते घोडाओने तेओ कनककेतु राजा पास लेइ गया. त्थारपछी कनककेतुओ ते अश्वमर्दकेओ सत्कार तेभज सम्मान कयुं. सत्कार अने सम्मान करीने तेभने विसर्जित कया. ते घोडाओ धण्डा भुण्ण बंधनेथी यावत् आसडाना वीसा आयुकेना प्रहारेथी अनेक जतना शारीरिक अने मानसिक दुःखो भोगरा लाग्या.

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्धफरिसरसरूपगंधेषु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्जइ, मुज्जइ, अज्झोवज्जइ,

અનુપરિવર્તિત્વો ટીકા અં ૧૭ આક્રોળાશ્વદાષ્ટાન્તિકયોજના ૬૨૭

भवति, 'रज्जइ' रज्यते=अनुरक्तो भवति, 'गिज्जइ' गृध्यति=तद्वाञ्छासक्तो भवति, 'मुज्जइ' मुह्यति=मूर्च्छितो भवति, 'अज्जोववज्जइ' अध्येपपद्यते=सर्वथा तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव बहूनां श्रमणानां च यावत्-श्रमणीनां आवकाणां आशिकाणां च 'हीलणिज्जे' हीलनीयः यावत् चातुरन्तसंसारकान्ता-रम् 'अणुपरियट्ठिस्सइ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यतीति भावः ॥सू०४॥

मूलम्-कलरिभियमहुर तंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु ।

सहेसु रजाणा रमंति सोइंदियवसट्ठा ॥ १ ॥

सोइंदियदुइन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।

दीविगरुयमसहंसो वहवंधं तिच्चिरो पत्तो ॥ २ ॥

ટીકા-અથેન્દ્રિયાસંવરણદોષાન્ ગાથાભિઃ પ્રદર્શયતિ-'કલરિભિયં' 'ઈત્યાદિ કલરિમિતમધુસ્તન્ત્રી તલ તાલવંસકકુદાભિરામેષુ ।

रुवगंधेषु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्जइ, मुज्जइ, अज्जोववज्जइ, सेणं इहलाहे चेव बहूणं समाणाण य जाव साविघाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्ठिस्सइ) इसी प्रकार हे आयुष्मन् श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होता है, अनुरक्त होता है, उनकी चाह से बंधता है, उनमें मूर्च्छित बनता है, सर्व प्रकार से उनमें तल्लीन होता है वह इस लोक में ही अनेक श्रमणजनों द्वारा श्रमणी, आवक और आशिकाओं द्वारा हीलनीय-निन्दा का पात्र-होता है यावत् वह चतुर्गतिरूप इस संसार कान्तार में भटकता है ॥ सू०४ ॥

सेणं इहलोए चेव बहूणं समाणाण य जाव साविघाण य हीलणिज्जे जाव अणु પરિયટ્ઠિસ્સइ)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુજનો કે સાધ્વીજનો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને ઈષ્ટ, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત હોય છે, અનુરક્ત હોય છે, તેમની ઈચ્છા કરીને તેઓમાં બંધાઈ જાય છે, તેઓમાં મૂર્છિત બની જાય છે, બધી રીતે તેઓમાં તલલીન બની જાય છે. તે આ લોકમાં જ ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ઘણી શ્રમણી, આવક અને આશિકાઓ વડે હીલનીય-નિન્દનીય-હોય છે યાવત્ તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સંસાર-કાંતારમાં ભટકતો રહે છે. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

શબ્દેષુ રજ્યમાના, રમન્તે શ્રોત્રેન્દ્રિયવશાર્ત્તાઃ ॥ ૧ ॥

શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્વસ્ય અથ એતાવાન્ ભવતિ દોષઃ ।

દ્વીપિકારુતમસહમાનો, -વધવન્ધં તિત્તિરઃ પ્રાપ્તઃ ॥ ૨ ॥

શ્રોત્રેન્દ્રિયવશાર્ત્તાઃ=કર્ણેન્દ્રિયવશવર્ત્તિનઃ કલાઃ શ્રવણસુખદાઃ રિમિતાઃ સ્વર-
ઘોલનાવિશેષયુક્તાઃ મધુરાઃ-પ્રિયાઃ કલરિમિતમધુરધ્વનિજનકત્વાત્ તદ્દૂપા યે તન્ત્રી-
તલતાલવંશાઃ-વીણા-કરતાલ-વેળવસ્તૈઃ સમુદ્ભાવિતત્વાત્-કકુદઃ-પ્રધાનાઃ, અમિ-
રામાઃ-મનોહરાસ્તેષુ-શબ્દેષુ રજ્યમાનાઃ=અનુસ્ક્તાઃ સન્તઃ રમન્તે=મોદન્તે ॥ ૧ ॥
' સોઈંદિયે ' ત્યાદિ । ' સોઈંદિયદુર્દાન્તત્તણસસ ' શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્વસ્ય શ્રોત્રેન્દ્રિયં
દુર્દાન્તં યસ્ય સ શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તં=શ્રોત્રેન્દ્રિયસ્ય જેતુમશક્યથતયા તદ્વશવર્ત્તીત્યર્થઃ,
તસ્ય ભાવસ્તત્ત્વં, તસ્ય, શ્રોત્રેન્દ્રિયાશ્રીનતાયાઃ, ' એત્તિઓ ' એતાવાન્=વક્ષ્યમાણ-
પ્રકારકઃ દોષો ભવતિ । તં સદ્દષ્ટાન્તં પ્રદર્શયતિ-'દીવિગરુયમસહંતો ' દ્વીપિકારુ-
તમસહમાનો-દ્વીપિકા=વ્યાધ પન્જરસ્થતિત્તિરઃ, તસ્યાઃ સ્તં શબ્દમ્ અસહમાનો=

' કલરિમિય ' इत्यादि ।

અથ સૂત્રકાર, ઇન્દ્રિયોં કે અસંવરણ સે જો દોષ ઉત્પન્ન હોતે હૈં
ઉન્હેં હન ગાથાઓં દ્વારા પ્રદર્શિત કરતે હૈં-કર્ણેન્દ્રિય કે વશવર્ત્તી બને હુએ
પ્રાણી ફલ-શ્રવણ સુખદ, રિમિત-સ્વરોં કે ઘોલના વિશેષ સે યુક્ત એસે
મધુરપ્રિય, તંત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાલ, વંશવાસુરી હન સે ઉત્પન્ન
હોને કી વજહ સે કકુદ-અત્યન્ત, અમિરામ-મનોહર એસે શબ્દો મેં
અનુસ્ક્ર હોતે હુએ યદ્યપિ મુદિતમન હોતે હૈં પરન્તુ શ્રોત્રેન્દ્રિય હનકી
દુર્દમન હોનેકે કારણ-શ્રોત્રેન્દ્રિય હનકી જિતનેમેં અશક્ય હોનેકે કારણ
તદ્વશવર્ત્તી બને હુએ વે પ્રાણી જિસ તરહ વ્યાધ કે પંજર મેં રહી હુઈ
તિત્તિરી કે શબ્દ કો સુનકર તીતરપક્ષી-કામરાગ કે વશ સે આકૃષ્ટ

' કલરિમિય ' इत्यादि—

સૂત્રકાર હવે ઇન્દ્રિયોના અસંવરણથી જે દોષો ઉત્પન્ન થાય છે તેમને
આ ગાથાઓ વડે પ્રદર્શિત કરે છે. કર્ણેન્દ્રિયના વશમાં થયેલા પ્રાણીઓ કલ-
શ્રવણ સુખદ, રિમિત સ્વરોને વિશેષ રૂપમાં મેળવવાથી ઉત્પન્ન થયેલો ધ્વનિ,
મધુર-પ્રિય, તંત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાળ, વંશ-વાંસળી એમનાથી ઉત્પન્ન
હોવા બદલ કકુદ-અત્યંત, અમિરામ-મનોહર એવા શબ્દોમાં અનુસ્ક્ર થતાં
જે કે તેઓ મુદિતમન-પ્રસન્ન થાય છે. પરંતુ તેમની શ્રોત્રેન્દ્રિય (કાન) દુર્દ-
મનીય હોવા બદલ એટલે કે મશ્રોત્રેન્દ્રિય ઉપર કાળુ મેળવવાનું કામ તેમના
માટે અશક્ય હોવા બદલ તેને વશ થયેલા પ્રાણીઓ જેમ વ્યાધા-શિકારીના
ખીજામાં સપડાઈ ગયેલી તિત્તિરીના શબ્દને સાંભળીને તીતર પક્ષી કામરાગના

ભનંગારધમાંમૃતવર્ષિણી ટીકા અ. ૧૭ આકીર્ણશ્વદાષ્ટાન્તિકયોજના ૧૨૧

તિત્તિરઃ વધં=મરણં બન્ધં=પંજરાદિ બન્ધનં પ્રાપ્તઃ-પ્રાપ્નોતીત્યર્થઃ અથ
વાક્યાલક્ષારે ॥ ૨ ॥

મૂલમ્-થળજહળવયળકરચરણનયળગર્વિતવિલાસિયગર્હસુ ।

રૂપેસુ રઝજમાણા રમંતિ ચર્કિંચદિયવસદ્દા ॥ ૩ ॥

ચર્કિંચદિયદુર્દાન્તત્તળસ્સ અહ્ એત્તિઓ ભવઈ દોસો ।

જં જલણંમિ જલંતે પડઈ પયંગો અબુદ્ધીઓ ॥ ૪ ॥

ટીકા-સ્તનજઘનવદનકરચરણનયગર્વિતવિલાસિયગર્હસુ ।

રૂપેષુ રજ્યમાના, -રમન્તે ચક્ષુરિન્દ્રિયવશાર્તાઃ ॥ ૩ ॥

ચક્ષુરિન્દ્રિયદુર્દાન્તત્ત્વસ્ય અથ એતાવાન્ ભવતિ દોષઃ ।

યદ્જ્વલને જ્વલતિ, પતતિ પતઙ્ગઃ અબુદ્ધિકઃ ॥ ૪ ॥

થળે ' ત્યાદિ । ચક્ષુરિન્દ્રિયવશાર્તાઃ સ્ત્રીણાં સ્તનજઘનાદિ રૂપેષુ રજ્યમાનાઃ
=અનુરક્તા રમન્તે ॥ ૩ ॥

જ્વલને=અગ્નૌ । શેષં સુગમમ્ ॥ ૪ ॥

હોકર વધ ઓર બંધન કો પાતા હૈં ઉસી તરહ નાના પ્રકાર કે વધ બંધનો
કો પાયા કરતે હૈં ॥ ગા. ૧-૨ ॥

' થળજહળ, ચર્કિંચદિય 'ઈત્યાદિ ।

યથાપિ ચક્ષુન્દ્રિય કે વિષય કી પ્રાપ્તિ કરને મેં વ્યાકુલ હુએ પ્રાણી
ઉસ વિષય કી પ્રાપ્તિ હોને પર આનન્દમગ્ન બન જાયા કરતે હૈં-વે સ્ત્રીયો
કે સ્તન, જઘન, વદન, કર, ચરણ, નયન, ગર્વિત વિલાસયુક્ત ગમના-
દિરૂપ ચક્ષુન્દ્રિય કે વિષય કો બાર બાર દેખકર આસક્ત હોતે હૈં-
પરંતુ યહ્ન ઇન્દ્રિય જઘ દુર્દાન્ત બન જાયા કરતી હૈં-તબ એસે પ્રાણી જિસ

આવેશમાં આવેને મૃત્યુ તેમજ બંધનને પ્રાપ્ત કરે છે, તેમજ અનેક જાતના
વધબંધનો મેળવે છે. " ગા. ૧-૨ "

થળ જહળ ચર્કિંચદિય ઇત્યાદિ—

જો કે ચક્ષુન્દ્રિયના વિષયને મેળવવા માટે અત્યંત ઉત્સુક બનેલા
પ્રાણીઓ તે વિષયની પ્રાપ્તિ થઈ જવા બાદ આનંદમગ્ન થઈ જાય છે-તેઓ
સ્ત્રીઓના સ્તન, જઘન, મુખ, હાથ, ચરણ, નયન, ગર્વિત વિલાસ-યુક્ત ગમન
વગેરે રૂપ ચક્ષુન્દ્રિયના વિષયને વારંવાર જોઈને આસક્ત થઈ જાય છે, પરંતુ આ
ઇન્દ્રિય બ્યારે દુર્દાન્ત બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ અસાની પતંગની

મૂલ્ય-અગુરુવરપવરધૂવણ ઉડય મહાણુલેવણવિહીસુ ।

ગંધેસુ રજમાણા રમંતિ ઘાણિંદિયવસદ્ધા ॥ ૫ ॥

ઘાણિંદિયદુદ્દંતત્તણસ્સ અહં એત્તિઓ હવ્વહ્વ દોસો ।

જં ઓસહિંગંધેણં વિલાઓ નિદ્ધાવહ્વ ઉરગો ॥ ૬ ॥

ટીકા-અગુરુવરપવરધૂવણ ઋતુજમાલ્યાનુલેપનવિધિષુ ।

ગંધેષુ રજ્યમાના, -રમન્તે ઘ્રાણેન્દ્રિયવશાર્તાઃ ॥ ૫ ॥

ઘ્રાણેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્ત્વસ્ય અથ એતાવાન્ ભવતિ દોષઃ ।

યદ્ ઔષધિગન્ધેન વિલાદ્ નિર્ધાવતિ ઉરગઃ ॥ ૬ ॥

ઘ્રાણેન્દ્રિયવશાર્તાઃ અગુરુરઃ=ઋણાગુરુઃ, પવરધૂવણં=દશાઙ્ગાદિરૂપો ધૂપઃ, ‘ ઉડયમલ્લ ’ ઋતુજમાલ્યાનિ=તત્તદ્ઋતુજાતપુષ્પાણિ, અનુલેપનાનિ=ચન્દનકુકુમાદિરૂપાણિ, તેષાં વિધયઃ=પ્રકારા યેષુ ગન્ધેષુ તત્ત રજ્યમાનાઃ=અનુરક્તાઃ સન્તો રમન્તે ॥ ૫ ॥

‘ ઓસહિંગંધેણં ’ ઔષધિગન્ધેન=કેતક્યાદિવનસ્પતિસુગન્ધાનુરાગવશેન

પ્રકાર અજ્ઞાની પતંગ અપને પ્રાણોં કો અગ્નિ મેં ઢાલ દેતા હૈં ઉસી પ્રકાર ઉસી વિષય મેં અપને પ્રાણોં કા નાશ કરતે હૈં ॥ ગા૦ ॥ ૩-૪ ॥

અગુરુવર, ઘાણિંયિય હત્યાદિ ।

ઘ્રાણેન્દ્રિય કે વશવર્તી બને હુએ પ્રાણી અગુરુવર-ઋણાગુરુ, પવર, ધૂવણ, -દશાઙ્ગાદિરૂપ ધૂપ, ઋતુજમાલ્ય-તત્તદ્ઋતુ કે પુષ્પ, અનુલેપન-ચન્દન કુકુમ આદિ કે વિવિધ લેપ રૂપ ગંધ મેં અનુરક્ત હોતે હુએ હર્ષિત મન હોતે હૈં, પરન્તુ વેં હસ હન્દ્રિય કી દુર્દમનતા કા કુછ બી વિચાર નહોં કરતે હૈં । જબ યહ્ હન્દ્રિય દુર્દમન બન જાતી હૈં-તબ એસે પ્રાણી

જેમ પોતાના પ્રાણોને અગ્નિમાં હોબી દે છે, તેમજ તે પશુ તે વિષયમાં જ પોતાના પ્રાણોને નષ્ટ કરી નાખે છે. “ ગા. ૩-૪ ”

અગુરુવર, ઘાણિંયિય હત્યાદિ ।

ઘ્રાણેન્દ્રિયના વશમાં પડેલા પ્રાણીઓ અગુરુવર-ઋણાગુરુ, પવર, ધૂવણ દશાઙ્ગાદિ રૂપ ધૂપ ઋતુ જ માલ્ય-તત્તદ્ ઋતુના પુષ્પો, અનુલેપન-ચન્દન-કુકુમ વગેરેના ભતભતના લેપના ગંધમાં અનુરક્ત થઈને હર્ષિત થઈ જાય છે, પરંતુ હૃષીકૃતમાં તો તેઓ તે હન્દ્રિયની દુર્દમતા વિષેનો કોઈ પણ ભતનો વિચાર કરતા જ નથી. જ્યારે તે હન્દ્રિય દુર્દમ બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ

મનનારખમમૃતવર્ષિણા ટીકા અ૦ ૧૭ આકીર્ણશ્વદાષ્ટાન્તિકયોજના ૧૩૧

ઉરગઃ=સર્પઃ ચિલાત્ 'નિધાવર્ધ' નિર્ધાવતિ=નિસસરતિ, તતો વધં વન્ધનં ચ પ્રાપ્નો-
તીતિ ભાવઃ । શેષં સ્પષ્ટમ્ ॥ ૬ ॥

મૂલમ્-તિત્તકદુય કસાયંવમહુસ્વજ્જપેજ્જલેજ્ઞેસુ ।

આસાપસુ ય ગિહ્ધા રમંતિ જિહ્વિભદિયવસટ્ટા ॥ ૭ ॥

જિહ્વિભદિય દુહંતત્તણસસ અહ એત્તિઓ હવહ્ દોસો ।

જં ગલલગ્ગુક્કિવત્તો ફુરહ્ થરવિરહ્લિઓ મચ્છો ॥ ૮ ॥

છાયા—તિત્તકદુકકષાયામ્લમધુરંવહુસ્વાદપેયલેહ્યેષુ ।

આસ્વાદેષુ ચ શુદ્ધા, રમન્તે જિહ્વેન્દ્રિયવશાર્ત્તાઃ ॥ ૭ ॥

જિહ્વેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્વસ્ય, અથ એતાવાન્ ભવતિ દોષઃ ।

યદ્ ગલલગ્ગોત્કિષ્ણઃ, સ્ફુરતિ સ્થલ વરહ્લિતો મત્સ્યઃ ॥ ૮ ॥

ટીકા-જિહ્વેન્દ્રિયવશાર્ત્તાઃ-તિત્તં=મરીચાદિકં, કદુકં=કારવેલ્લાદિકં, કષાયઃ=આમલકાદિકમ્, અમ્લં=કામ્બાદિકં, મધુરં=મોદકાદિકં, વહુ=અનેકવિધં 'સ્વજ્ઞ' સ્વાદં=કદલીકઞ્ઞાદિકં, 'પેજ્ઞં' પેયં=દુગ્ધાદિકં, 'લેજ્ઞં' લેહ્યં=દધિશર્કરાદિ-
કેતકી આદિ કી ગંધ સે આકૃષ્ટ થનકર જિસ પ્રકાર ચિલ સે નિકલા
સર્પ વધવધન આદિ કણ્ટો કો પાતા હૈ વૈસે કણ્ટ પાતે હૈ ॥ ગા૦ ૫-૬ ॥

'તિત્તકદુય જિહ્વિભય' इत्यादि ।

જો પ્રાણી જિહ્વાન્દ્રિય કે વશવર્તી બના રહતા હૈ વહ મરીચ આદિ
કે જૈસે તિત્ત સ્વાદ મેં કરેલા કે જૈસે કદુક સ્વાદ મેં, આમલ આદિ કે
જૈસે કષાયરસ મેં કરમ્બાદિકે જૈસે અમ્લ-સ્વદં રસ મેં, મોદકાદિ કે
જૈસે મધુર સ્વાદ મેં તથા વિવિધ પ્રકાર કે કદલી ફલાદિક સ્વાદ પદાર્થો
મેં, દુગ્ધાદિ પેયપદાર્થો મેં, એવં દધિ ઓર શર્કર આદિ સે નિષ્પન્ન હુય

કેતકી વગેરેની ગંધથી આકૃષ્ટ થઈને જેમ દરમાંથી નીકળેલા સાપ વધવધન
વગેરે કંઠોને પ્રાપ્ત કરે છે તેમજ કણ્ટ પ્રાપ્ત કરે છે. ॥ ગા. ૫-૬ ॥

તિત્તકદુય જિહ્વિભદિય इत्यादि ।

જે પ્રાણી જીહ્વા ન્દ્રિય (જીભ) ને વશ થયેલા હોય છે, તે મરચું
વગેરેના જેવા તીખા સ્વાદમાં, કારેલા જેવા કડવા સ્વાદમાં, આમલી વગેરેના
જેવા કષાય રસમાં, કરંબાદિના જેવા અમ્લ-ખાટા રસમાં, લાડવા વગેરેના
જેવા મધુર સ્વાદમાં તેમજ ભત્તજાતનાં કેળાં વગેરેના ખાદ્ય પદાર્થોમાં, દૂધ
વગેરે જેવા પેય પદાર્થોમાં, અને દહીં તેમજ ખાંડ વગેરેથી તૈયાર થયેલા

નિષ્પન્નં શ્રીચ્છંદાદિકમ્, एतेषां द्वन्द्वः, तेषु आस्वादेशु=आस्वाद्यन्ते इति आस्वादाः रसास्तेषु गृह्णाः=आसक्ताः सन्तः रमन्ते ॥ ७ ॥

‘જિર્નિમિદિયે’ ત્યાદિ । પૂર્વે ગણે=મત્સ્યવેધને લાગ્ન; મત્સ્યવેધનેન મુલે વિદ્વદિત્યર્થ; પશ્ચાદ્ ઉત્તિમ્નઃ=જલાદુદ્ધૃતઃ; इति कर्मधारयः, एवंभूतो मत्स्यः स्थलविरल्लितः=स्थले निपातितः सन् स्फुरति व्याकुलो भूम्वा भूमौ लुठति । શેષં સ્પષ્ટમ્ ॥ ૮ ॥

મૂલમ્-‘उडभयमाणा सुहेसु य सविभवहिययमणनिव्वुइकरेसु ।

फासेसु रज्जमाणा रमन्ति फासिंदियवसट्ठा ॥ ९ ॥

फासिंदिय दुइंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।

जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥

છાયા-‘ऋनुभज्यमानमुखेषु च, सविभद्दयमनोनिर्वृत्तिकरेषु ।

स्पर्शेषु रज्यमाना, रमन्ते स्पर्शेन्द्रियवशात्ताः ॥ ९ ॥

સ્પર્શેન્દ્રિય દુર્દાન્તત્વમ્, અથ ઇનાગાનુ ભજતિ દોષઃ ।

યદ્ જનતિ મસ્તકં કુજ્જરસ્ય લોહકુસત્સીક્ષ્ણઃ ॥ ૧૦ ॥

ટીકા-‘उडभये’ ત્યાદિ । ‘स्पर्शेन्द्रियवशात्ताः’-‘उडभयमाणसुहेसु य’ ऋनुभज्यमानमुखेषु ऋनुषु=हेमन्नादिषु भज्यमानानि=सेव्यमानानि मुखानि, येषु ते,

શ્રી ચંદ્ર ઓદિ લેહ્ય પદાર્થોં મેં આમક્તમતિ હોકર વહા હર્ષ મનાયા કરતે હેં । પરંતુ જય જનકો વહ જન્દ્રિય દુર્દાન્ત બન જાતો હે તય એસે પ્રાણી જૈસે મત્સ્યવેધન સે-મછલી પકડને કે કાંટે વંશી-સે મુલ્ક મેં વિદ્વદુહા મત્સ્ય જલ મેં સે ત્રીંચકા ઘાહર ભૂમિ ર ઢાલ દિયા જાતા હે ઓર વહ ભૂમિપર તડપ્ ૨ કર મર જાતા હે ઉસ જન્દ્રિય કે વિષય મેં ફેનકર તડપ્ ૨ કર મર જાયા કરતે હેં ॥ ગા૦ ૭-૮ ॥

શ્રીખંડ વગેરે લેહ્ય (ચાટીને ખાઈ શકાય તેવા) પદાર્થોમાં આસક્ત થઈને ખૂબ જ હર્ષિત થતા રહે છે. પરંતુ બ્યારે તેમની આ ઇન્દ્રિય દુર્દાન્ત બની જાય છે, ત્યારે એવા પ્રાણી જેમ મત્સ્યવેધનથી-માછલી પકડવાના કાંટાથી મુખમાં વિદ્વદુહા થયેલું માછલું પાણીમાંથી બહાર ખેંચીને બહાર જમીન ઉપર નાખવામાં આવે છે અને તે જમીન ઉપર તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે, તેમજ તે ઇન્દ્રિયના વિષયમાં ફસાઈને તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે. ॥ ગા. ૭-૮ ॥

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૭ આકીર્ણશ્વદાષ્ટાન્તિકયોજના

૬૩૩

તેષુ તથોક્તેષુ તથા સવિભવાનાં-સંપત્તિશાલિનાં હૃદયસ્ય મનસથ નિર્વૃત્તિકરેષુ સુખકરેષુ । एवं भूतेषु स्वर्शेषु रज्यमानाः=अनुरक्ताः रमन्ते ॥ ९ ॥

‘ફાર્સિદિયે’ ત્યાદિ । કુઝરસ્ય=કરિણીસ્પર્શલુબ્ધસ્ય હસ્તિનો મસ્તકં તીક્ષ્ણો-લોહાકુશઃ સ્વનતિ=વિદારયતિ । શેર્પં સુગમમ્ ॥ ૧૦ ॥ ૫ ॥ સૂ૦ ॥

મૂલમ્—કલરિભિય મહુરતંતીતલતાલવંસકઠાભિરામેસુ ।

સદેસુ જં ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૧ ॥

થળજહ્ણવયળકરચરણનયળગઢિવયવિલાસિયગર્હસુ ।

રૂવેસુ ન રત્તા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૨ ॥

અગુરુવરપવરધ્રુવળ ઉડયમલ્લાણુલેવળવિહીસુ ।

ગંધેસુ જે ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૩ ॥

તિત્તકહુયકમાયંવમહુરવહુલ્લજ્જપેજ્જલેજ્જેસુ ।

આસાણસુ ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૪ ॥

(ઉડમયમાર્ગ, ફાર્સિદિયદુહંત ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ—જો પ્રાણી સ્પર્શને ઇન્દ્રિયકે વશાવર્તી હોતે હેં વે અપની સ્પર્શ-નેન્દ્રિયકી લોલુપતાસે હેમન્ત આદિ પ્રત્યેક ઋતુ સંવન્ધી સુખ ભોગતે હેં । તથા સંપત્તિશાલિયોં કે હૃદય મેં ઓર મન સુખકર સ્પર્શોં મેં અનુરક્ત બને રહતે હેં । ઇસ તરહ કાતે ૨ જબ ઇનકી યહ સ્પર્શને ઇન્દ્રિય દુર્દાન્ત બન જાતી હૈ તથ વે પ્રાણી જિસ પ્રકાર તીક્ષ્ણ લોહ કો અંકુશ કરિણી (હસ્તિની) કે સ્પર્શ કરને મેં લુબ્ધક બને હુઅ મત્ત ગજરાજ કે મસ્તક કો વિદાર દેતા હૈ ડસી તરહ ઇસ સ્પર્શને ઇન્દ્રિય કે દ્વારા વિનષ્ટ કર દિયે જાતે હેં ॥ ગા૦ ૯-૧૦ ॥

ઉ ડ મયમાર્ગ, ફાર્સિદિયદુહંત ઇત્યાદિ ।

જે પ્રાણીઓ સ્પર્શેન્દ્રિયને વશ થાય છે, તેઓ પોતાની સ્પર્શેન્દ્રિયની લોલુપતાથી હેમંત વગેરે દરેકે દરેક ઋતુઓના સુખો ભોગવે છે. તેમજ સંપત્તિવાળાઓના હૃદય અને મનસુખદ સ્પર્શોમાં આસક્ત બનીને રહે છે. આમ કન્તાં કરતાં જ્યારે તેમની આ સ્પર્શેન્દ્રિય દુર્દાન્ત બની જાય છે ત્યારે તે પ્રાણીઓ (હાથિણી) ને સ્પર્શવામાં લુબ્ધ બનેલા મત્ત ગજરાજના મસ્તકને વિદીર્ણ કરી નાખે છે તેમજ આ સ્પર્શેન્દ્રિય વડે વિનષ્ટ કરી નાખવામાં આવે છે. ॥ ગા. ૯-૧૦ ॥

उउभयमाणसुहेसु य सविभवाहियमणनिव्वुइकरेसु ।

पासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरण ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—‘कलरिभिय’ इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशककुदाभिरामेषु ।

शब्देषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥

स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।

रूपेषु ये न रक्ता,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥

अगुरुवरप्रवरधूपन,—ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।

गन्धेषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥

तिक्तकडुककपायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेय लेहेषु ।

आस्वादेषु न गृद्धा,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥

ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिवृत्तिकरेषु ।

स्पर्शेषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्त्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रिय के विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त—गृद्ध—नहीं होते हैं ॥ गा० ११—१५ ॥

कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्त कडुय च उ उ भयमाण, इत्यादि ।

आ गाथाओं वटे सूत्रकार आ वात स्पष्ट करवा भागे छे के के शब्द वगेरे पांचे इन्द्रियोना विषयोभां आसक्त यतां नथी, तेभनुं वशार्त्तमरणुं भुं नथी, आ गाथाओंनी व्याख्या सरल छे ।

के प्राणी कर्णइन्द्रियना विषयभूत शब्दों, नासिका इन्द्रियना, विषयभूत गंधों, जिह्वा इन्द्रियना विषयभूत रसों में तेभन स्पर्शन इन्द्रियना विषयभूत स्पर्शों में अत्यंत आसक्त—गृद्ध यतां नथी, तेओ वशार्त्तमरणुने प्राप्त करता नथी ॥ गा. ११—१५ ॥

534

સૂત્રકાર હવે આ પાંચ ગાથાઓ વડે એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમાં શ્રમણજનોને કદાપિ રાગ-દ્વેષ નહિ

રૂપેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, ચક્ષુર્વિષયમુપગતેષુ ।
 તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન ભવિતવ્યમ્ ॥ ૧૭ ॥
 ૧-ભદ્રકપાપકેષુ=અનુકૂલ-પ્રતિકૂલેષુ ।
 ગન્ધેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, ઘ્રાણવિષયમુપગતેષુ ।
 તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન ભવિતવ્યમ્ ॥ ૧૮ ॥
 રસેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, જિહ્વાવિષયમુપગતેષુ ।
 તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન ભવિતવ્યમ્ ॥ ૧૯ ॥
 સ્પર્શેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, કાયવિષયમુપગતેષુ ।
 તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન ભવિતવ્યમ્ ॥ ૨૦ ॥

વિષય કો સમજાતે હૈં યહાં ભદ્રક શબ્દ કા અર્થ અનુકૂલ ઓર પાપક શબ્દ કા અર્થ પ્રતિકૂલ હૈ । જય શબ્દ રૂપ વિષય શ્રોત્રેન્દ્રિય કા હો તો ઉસ સમય યાહે વહ મનોજ્ઞ હો યા અમનોજ્ઞ હો કેસા હી ક્યોં ન હો ઉસમેં શ્રમણ-સાધુ-કો કમી ભી તુષ્ટ અથવા રુષ્ટ નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ॥ ૧૬ ॥

ચક્ષુઃન્દ્રિય કા વિષયભૂતરૂપ જય ઉસ ઇન્દ્રિય દ્વારા ગ્રહણ કરને મેં આવે-તય વહ યાહે મનોજ્ઞ હો યા અમનોજ્ઞ હો ઉસમેં શ્રમણ જન કો કમી ભી હર્ષ વિષાદ-તુષ્ટ રુષ્ટ-નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ૧૭ ॥

મનોજ્ઞ એવં અમનોજ્ઞ ગંધ જય ઘ્રાણન્દ્રિય કા વિષય હો તય સાધુ કો ઉસ વિષય મેં કમી ભી તુષ્ટ રુષ્ટ નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ૧૮ ॥

મનોજ્ઞ અથવા અમનોજ્ઞ રસ જિહ્વાન્દ્રિય કા વિષય હો-તય ઉસમેં શ્રમણ જન કો કમી ભી તુષ્ટ ઓર રુષ્ટ નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ૧૯ ॥

કરવો જોઇએ. અહીં ભદ્રક શબ્દનો અર્થ અનુકૂળ અને પાપક શબ્દનો અર્થ પ્રતિકૂળ છે. જ્યારે શબ્દરૂપ વિષય શ્રોત્ર ઇન્દ્રિયનો હોય તો ભલે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, ગમે તેવો કેમ ન હોય, તેમાં શ્રમણ-સાધુ-ને કદાપિ તુષ્ટ કે રુષ્ટ થવું જોઇએ નહિ. ॥ ગા. ૧૬ ॥

ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપ જ્યારે તે ઇન્દ્રિય વડે ગ્રહણ કરવામાં આવે ત્યારે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, શ્રમણને કદાપિ તેમાં હર્ષ-વિષાદ-તુષ્ટ-રુષ્ટ નહિ થવું જોઇએ ॥ ગા. ૧૭ ॥

મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ ગંધ જ્યારે ઘ્રાણ ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે સાધુને તે વિષયમાં કદાપિ તુષ્ટ કે રુષ્ટ નહિ થવું જોઇએ. ॥ ૧૮ ॥

મનોજ્ઞ અથવા તો અમનોજ્ઞ રસ જ્યારે જિહ્વા ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે તેમાં શ્રમણ-જનને કદાપિ તુષ્ટ અને રુષ્ટ થવું જોઇએ નહિ. ॥ ગા. ૧૯ ॥

‘सदेसु य’ इत्यादि, गाथा पञ्चकं सुगमम् ॥

सुधर्मास्वामी माह—‘ एवं खलु हे खम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्संपाप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अपमर्धः=पूर्वोक्तो भावः पक्षस्तः=प्ररूपितः । इति ब्रवीमि—व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात — जगद्वल्लभ—मसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-
ललितकलापालापक — मविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक—वादिमानमर्दक
श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित—
कोल्हापुरराजगुरु—बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्माभृ-
तवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तदशमध्ययनं समाप्तं ॥ १७ ॥

८ आठ प्रकार का स्पर्श चाहे वह अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल हो—
जब २ स्पर्शन इन्द्रिय का विषय हो उसमें साधु को किसी भी तरह से
कभी भी तुष्ट एवं रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ २० ॥

इस प्रकार हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति
नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का यह
पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है । ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुसार
कह रहा हूँ ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत “ज्ञाता
धर्मकथाङ्गसूत्र” की अनगार धर्माभृतवर्षिणी व्याख्या का सत्रहवां
अध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

८ બાતનો સ્પર્શ—લલે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય
જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમાં સાધુને કોઈ પણ રીતે
કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવું જોઈએ નહિ ॥ ગા. ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ
નામક સ્થાનને મેળવ્યું છે—આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં
અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. આવું હું તેમના કહ્યા મુજબ જ તમને કહી રહ્યો છું.

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્માભૃતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનું સત્તરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वैण सहायमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने इन्द्रियवशवर्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थौ प्रोक्तौ, इह तु लोभाविष्टानां लोभरहितानां च तावेवोच्येते, इत्येवं पूर्वैण सह संबद्धमिदमध्ययनम्, तस्येदमादिमं सूत्रम्-‘जइणं भंते’ इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसभस्स णाय-
ज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, अट्टारमस्स णं भंते ! णायज्झय-
णस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ? एवं खलु जंबू !
तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहं णामं णयरे होत्था ।
वण्णओ० । तत्थ णं धण्णे णामं सत्थवाहे । भद्दाभारिया तस्स
णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंचसत्थवाह-

अठारहवां अध्ययन प्रारंभ

सुंसमाहारिका का वर्णन

सत्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका हैं। अब १८ वां अध्ययन प्रारंभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है-कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशकृत इन्द्रियवाछे जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं। इस अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है-‘जइणं भंते’ इत्यादि।

अठारमा अध्ययनने प्रारंभ

सुंसमाहारिकानुं वर्णन

सत्तरसुं अध्ययन पुई थयुं छे. छवे अठारमा अध्ययननी शरुआत थाय छे. आ अध्ययनने पडेला अध्ययननी साथे आ नतने संजंघ छे के पडेला अध्ययनमां इन्द्रिय वशवर्ती तेमज वशीकृत इन्द्रियोवाणा छवोने अर्थनी प्राप्ति थाय छे, ते विषे कडेवामां आयुं छे. सूत्रकार छवे आ अध्ययनमां आ वातनुं स्पष्टीकरख करशे के के छवे लोभकषायथी तेमज लोभकषायथी इदित डोय छे. तेओ अनर्थं अने अर्थं प्राप्तिने लायक हरे छे. आ अध्ययननुं पडेनुं सूत्र आ छे—जइणं भंते समणेणं महावीरेणं इत्यादि—

दारगाहोत्था, तं जहा—धण्णे धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणर-
 विखए । तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्सधूया भद्दाए अत्तया
 पंचणहं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमाणां दारिया होत्था,
 सूमालपाणिपाया, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं
 दासचेडे होत्था, अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलाव-
 णकुसले यावि होत्था। तएणं से चिलाए दासचेडे सुंसुमाए दारियाए
 बालग्गाहे जाए यावि होत्था । सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हइ,
 गिण्हत्ता, बहूहिं दारएहि य दारियाहि य बालेहिं बालियाहि य
 डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं
 आभिरममाणे २ विहरइ । तएणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं
 दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वट्ठइ
 आगेलियाओ, तेंदुसए, पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं
 आभरणमल्लालंकारं अवहरइ अप्पेगइए आउस्सइ, एवं अवहसइ
 निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ । तएणं ते
 बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कंदमाणा य साणं २
 अम्मापिऊणं णिवेदेति । तएणं तेसिं बहूणं दारगाणय ६
 जाव अम्मापियरो जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति,
 उवागच्छत्ता धन्ने सत्थवाहे बहूहिं खिज्जणाहि य रूटणाहि
 य उवलंभणाहि य खिज्जमाणाहिय रूटमाणाहि य उवलंभमाणा
 य धणस्स एयमट्ठं णिवेदेति ॥ सू० १ ॥

टीका—‘ जड्णं भन्ते ! ’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन याचन्मोक्षं सम्प्राप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः जितेन्द्रियाऽजितेन्द्रियाणामर्थानर्थप्राप्तिरूपो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, अष्टादशस्य तु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन याचन्मोक्षं सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामी प्राह—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, ‘ वण्णओ ’ वर्णकः=नगरवर्णनं पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु धन्यो नाम सार्थवाहः परिवसति । तस्य भद्रा नाम भार्याऽसीत् । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य पुत्राः, भद्राया आत्मजाः पञ्च सार्थवाहदारका आसन् । तेषां नामान्याह—‘ तं जहा ’ तद्यथा—

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि—(जड्णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स गायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते अट्ठारसमस्स ण भन्ते गायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?) हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीर ने जो कि सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं मन्त्रहर्षे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है—तो उन्हीं सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १८ वें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? (एवं खलु जम्बू !) इस प्रकार जम्बू स्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जम्बू ! सुनो—तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—(तेणं कालेणं तेणं समएणं रागगिहे णामं णयरे होत्था । वण्णओ० तत्थणं धण्णे णामं सत्थवाहे—भद्रा भारिया—तस्सणं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्राए अत्ताया पंच सत्थवाहदारका होत्था, तं जहा—

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामीने पूछे छे के—

(जड्णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स गायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते भट्ठारसमस्स ण भन्ते गायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?)

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीर के—वे जो सिद्धिगति नामक स्थानने भेगवी युक्ता छे सत्तरमा ज्ञाताध्ययनने आ पूर्वोक्त इथे अर्थ निरूपित कथी छे तो ते ज सिद्धिगति नामक स्थानने भेगवी युक्ता अट्ठे भगवान महावीर १८ मा ज्ञाताध्ययनने शो अर्थ प्ररूपित कथी छे ?

(एवं खलु जम्बू !) आ प्रभाण्णे जम्बू स्वामीजे प्रश्न पूछये त्थारणाह श्री सुधर्मा स्वामी तेमने कडे छे के छे जम्बू ! सांभजो, तभारा प्रश्नने जवाब आ प्रभाण्णे छे—

(तेणं कालेणं तेणं समएणं रागगिहे णामं णयरे होत्था ! वण्णओ० तत्थणं धण्णे णामं सत्थवाहे—भद्रा भारिया—तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्राए

भनगरधर्मावृत्तवर्णिनी टी० अ० १८ सुंस्मादारिकावर्णनम्

६४१

धनः १ धनपालः २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाहा आत्मजा धनादीनां पञ्चानां पुत्राणाम् 'अणुमगजाया' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्ग जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुंस्मा नाम दारिका आसीत् । कीदृशी सा ?—'सूमालपाणिपाया' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरवरणा । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेटः=दासपुत्र आसीत् । योहि 'अहिण-घण्णे २- धणपाले-२ धणदेवे ३, धणगोवे-४ धणरक्खिए-५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था । इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये । उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था । इसकी पत्नी का नाम भद्रा था । इस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पाँच पुत्र थे—धन-१ धनपाल-२ धनदेव-३ धनगोप-४ और धनरक्षित-५ ।

(तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमगजातीया सुंस्मा णामं दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाएणामं दासचेडे होत्था, अहं णं पंचेदिय सरीरे मंसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थवाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुंस्मा नामकी पुत्री थी—जो धनादिक पाँच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी । इसके कर, चरण बड़े कोमल थे । इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट=दास पुत्र—था—जिस अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा—घण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे-४, धणरक्खिए-५)

तेकाणे अने ते समये राजगृह नामे नगर હતું. તેનું વર્ણન પહેલાંની જેમ સમજી લેવું જોઈએ. તે નગરમાં ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો. તેની પત્નીનું નામ ભદ્રા હતું. તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાંચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે—ધન-૧, ધનપાલ-૨, ધનદેવ-૩, ધનગોપ-૪, અને ધનરક્ષિત-૫.

(તસ્સ ણં ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ધૂયા ભદ્દાએ અત્તયા પંચણ્હં પુત્તાણં અણુ-મગજાતીયા સુંસ્મા ણામં દારિયા, હોત્થા, સૂમાલપાણિપાયા, તસ્સ ણં ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ચિલાએ ણામં દાસચેડે હોત્થા, અહં ણં પંચેદિય સરીરે મંસોવચિએ, બાલકીલાવણકુસલે યાવિ હોત્થા)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા-ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુંસ્મા નામે એક પુત્રી હતી. તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી. તેના હાથ-પગ બહુ જ કોમળ હતા. તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો. તેનું

पंचिदियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=प्रतिपूर्णसर्वेन्द्रियशरीरः, ' मांसोपचित ' मांसोपचितः=मांसैरुपचितः, पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालक्रीलावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलश्चापि आसीत् । ततः खलु स दासचेटः सुसुमाया दारिकायाः ' बालगगाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितुं नियुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जाताश्चाप्यभवत् । सहि चिलातः सुसुमां दारिकां कटघां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारिकैश्च दारिकाभिश्च बालकैश्च बालिकाभिश्च, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालककुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूनां ' दाराण जाव ' दारकाणां यावत्=दारकाणां दारिकाणां डिम्भकानां डिम्भिकानां कुमाराणां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था । जो प्रमाणोपेत पांचवें इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था । मांसोपचित था पुष्ट देहवाला था । यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था । (तएणं से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालगगाहे जाए यावि होत्था सुसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहिं य.....विहरइ-तेसिं बहूणं दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वइए आडोलियाओ तेंदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइयाए आउस्सइ, एवं अवहरइ, निच्छोडेइ, निग्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए ताळेइ) इसलिये वह दासचेट सुसुमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया । अतः वह चिलान दास चेटक सुसुमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिम्भक डिम्भिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

नाम खिलात હતું. તે સપ્રમાણ પાંચે ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ શરીરવાળો હતો. તે માંસલ તેમજ પુષ્ટ શરીરવાળો હતો તે બાળકોને રમાડવામાં સવિશેષચતુર હતો.

(તएणं से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालगगाहे जाए यावि होत्था सुसुम दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहिं य विहरइ तेसिं बहूणं दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वइए आडोलियाओ तेंदुरुए पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणं मल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एवं अवहरइ, निच्छोडेइ, निग्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए ताळेइ)

તેથી તે દાસચેટ સુસમા દારિકાને રમાડવા માટે નિયુક્ત કરવામાં આવ્યો. આ પ્રમાણે તે खिलात दास चेटक सुसुमा दारिकाने બાળકોમાં બેસાડીને ઘણા દારક દારિકાઓની સાથે બાળક તેમજ બાળાઓની સાથે ડિમ્બક

अनेगारबमोमृतबधिणी डी० अ० १८ सुसमाचारिकावर्णनम्

६६३

च मध्ये 'अप्येगइयाणं' अप्येकेषाम् 'खुल्लए' खुल्लकान्=कर्पदकविशेषान् 'कोडी' इति भाषा प्रसिद्धान् अपहरति=चोरयति। एवं 'वट्टए' वर्तकान्=जत्वादिमयगोलकान् 'आडोलियाओ' आडोलिका इति नाम्नाप्रसिद्धान् बाल क्रीडनवस्तुविशेषान् 'तेंदुसए' देशीशब्दोऽयम्-नेन्दुकान् 'पोत्तुल्लए' वस्त्रमयपुत्तल्लिकाः, 'साडोल्लए' उत्तरीयवस्त्राणि चोरयति। तथा अप्येकेषाम् आभरणमाल्यालङ्कारान् अपहरति। अनन्तरम् 'अप्येगइए' अप्येककान् 'आउस्सइ' आकुश्यति=निष्ठुरवचनेन 'एवं' अवहसइ' अपहसति=अपशब्दमुच्चार्य हास्यं करोति, 'निच्छोडेइ' निश्छोटयति= 'यदि त्वं किमपि वदिष्यसि तदा त्वां बहिर्निष्काशयिष्यामीत्यादि शब्दैस्तान् भोषयति, तथा 'णिब्भच्छेइ' निर्भर्त्सयति=तेषां निर्भर्त्सनां करोति, एवं 'तइजेइ' तर्जयति 'मया कृतं किमपिकार्यं यदि स्व मातापितृभ्यो यूयं वदिष्यथ

के साथ बार २ खेलने में लगा रहता। खेलते २ वह चिलान दास-चेटक उन अनेक दारक दारिका, डिम्भका, डिम्भिका, कुमार कुमारिकाभा में से कितनेक बच्चों के खेलने के साधन भूत कर्पदक विशेषों को कौडियों को चुरा लेता कितनेक के जतुके बने हुए चपेटों को, कितनेक के अडोलिक नाम से प्रसिद्ध खिलेनी को, कितनेक बच्चों की गेंदों को कितनेक बच्चों की वस्त्र के बनी हुई गुडियों को, तथा कितनेक बच्चों के उत्तरीयवस्त्रों-को करियों को चुरालेता था। कितनेक बच्चों के आभरणों को मालाओं को और अलंकारों को भी चुरालिया करता था कितनेक बच्चों को गाली देना कितनेक बच्चों की वह निष्ठुर बचनों को उच्चारण कर हँसी मजाक करने लग जाता था। यदि तू कुछ कहेंगाता मैं तुझे यहाँ से बाहिर निकाल दंगा इत्यादि शब्दों से कितनेक बच्चों को वह डरा दिया करता था। कितनेक बच्चों को

अने डिभिकयो साथे अने कुमार कुमारिकायोनी साथे बार-बार रमवामां ज्योटी रहते। हते। ते खिलात दासचेर रमतां रमतां बच्चां दारक-दारिक, डिभक-डिभिक, कुमार-कुमारिकायोभांथी केटलाक भाण्डोनां रमवानां साधन कर्पदक विशेषाने-कोडीयोने चोरी हते, केटलाकनां लाणना अनेला चपेटा-योने, केटलाकनां अडोलिक नामथी प्रसिद्ध अवा रमकडांयोने, केटलाक भाण्डोनी हडीयोने, केटलाक भाण्डोनी वस्त्रथी अनेली दींगलीयोने तेमज केटलाक भाण्डोना उत्तरीय वस्त्रोने चोरी जेतो हते। ते केटलाक भाण्डोना आभरणोने, भाण्डोयोने अने घरेणुंयोने पणु चोरी जेतो हते। ते केटलाक भाण्डोने गाणो हते। अने केटलाक भाण्डोनी निष्ठुर वचने। ओलीने ठा-भरकरी करवा लागतो हते। "जे तु कंछ पणु ओलथे तो हु तने अहीथी अडार बादी

तदायुष्मार्कं प्राणान् अपहरिष्यामीत्येवंरूपैर्वाक्यैरङ्गुलिनिर्देशपूर्वकं तेषु भीतिमुत्पादयति । तथा अप्येककान् बालकान् ' तालेइ ' ताडयति चपेटादिभिः । ततः खलु ते बहवो दारकश्च यावत्-कुमारिकाश्च सर्वे बाला ' रोयमाणा य ' रुदन्तश्च ' कंदमाणा य ' क्रन्दन्तश्च=उच्चैः स्वरेण चीत्कारं कुर्वन्तः ' सायं २ ' स्वेषाम् २ ' अम्मापिऊण ' अम्मापितृभ्यश्चमर्थं निवेदयन्ति । ततः खलु तेषां बहूनां=दार-

बहूनि भर्त्सित कर देता " मेरा किया हुआ कुछ भी काम यदि तुम लोग अपने माना पिता से कहोगे-तो याद रखना मैं तुम्हारे प्राणों को ले लूंगा-तुम्हें जान से मार डालूंगा " इस तरह कितनेक बालकों को वह अंगुलि दिखा २ कर भयभीत कर दिया करता । कितनेक बालकों को वह धप्पड़ आदि भी मार देता । (तएणं ते बहवे दारगा-य जाव रोयमाणा य कंदमाणा य ४ सायं २ अम्मापिऊणं निवेदेति, तएणं तेसिं बहूणं दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव घण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता घण्णं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणाहिं य रुंठणाहिं य उवलंभणाहिं य खिज्जमाणा य रुंठमाणा य उवलंभेमाणा य घण्णस्स एयमट्ठं निवेदेति) इस तरह वे अनेक दारक यावत् कुमारिकाएँ सब ही रो रो कर के आक्रंदन करके-उच्चस्वर से चीत्कार करके-अपने २ माता पिताओं से उस दासचेटक की इस वार्ताव

भूझीश वगेरे वचनोत्थी केटलांक आणकेने ते जीवडावी देतो હતો. કેટલાંક આળકેની તે ભર્ત્સના પણ કરતો હતો-મારી કોઈ પણ વાત તમે તમારા માતાપિતાને કહેશો તો યાદ રાખજો હું તમને જીવતા નહિ છોડું. તમને હું બનથી મારી નાખીશ. " આ પ્રમાણે કેટલાંક આળકેની સામે તે આંગળીઓ ચીંધી ચીંધીને જીવડાવી દેતો હતો. કેટલાંક આળકેને તે તમાથો વગેરે પણ લગાવી દેતો હતો.

(તएणं તે બહવે દારગા ય ૬ જાવ રોયમાણા ય કંદમાણા ય ૪ સાયં ૨ અમ્માપિऊणं નિવેદેતિ, તएणं તેસિં બહૂણં દારગાણ ય ૬ જાવ અમ્માપિउरो જેણેવ ઘણે સત્થવાહે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ઘણં સત્થવાહં બહૂહિં ચિજ્જનાહિં ય રુંઠનાહિં ય ઉવલંભણાહિં ય ચિજ્જમાણા ય રુંઠમાણા ય ઉવલંભેમાણા ય ઘણસ્સ એયમટ્ઠં નિવેદેતિ)

આ પ્રમાણે તે ઘણાં દારક યાવત્ કુમારિકાઓ રડતાં રડતાં, આક્રંદન કરતાં કરતાં, મોટા સાદે ચીત્કાર કરીને પોતપોતાનાં માતાપિતાને તે દાસ-ચેટકની ખરાબ વર્તણૂક વિષે ફરિયાદો કરવા લાગ્યાં. પોતાનાં આળકેને

अनेगारघमांमृतवर्षिणी दी० अ० १८ सुसंमादारिकावर्णनम्

६४५

कादीनां अम्बापितरः यत्रैव धन्यः सार्थवाहस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य धन्यं सार्थवाहं बहुभिः 'खिज्जणाहि य' खेदनाभिश्च=खेदजनकवाग्भिः 'रुंठणाहि य' रोदनाभिः साश्रुरुदितवाग्भिः, 'उलंभणाहि' उपालम्भनाभिः=किमेतदुचितम् ? भवादृशम् ? इत्यादि वाग्भिश्च 'खेज्जमाणा' खेदयन्तः स्वखेदं प्रकाशयन्तः 'रुंठमाणा य' रुदन्त उलंभमाणा य' उपालम्भयन्तश्च धन्याय सार्थवाहाय एवमर्थ=चिलातकृताऽपराधरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तएणं से धणणे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एय-
मट्टं भुज्जो भुज्जो णिवारेइं, णो चेव णं चिलाए दासचेडे
उवरमइ। तएणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण
य ६ अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ। तएणं ते
बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव
णिवेदेति। तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धणणे सत्थवाहे तेणेव

की शिकायत करने लगे। अपने २ बालकों के मुख से इस प्रकार की दासचेटक थी हरकत सुनकर उन दारक आदि को के माता पिता जहां धन्य सार्थवाह होता था वहां आते और आकर के धन्य सार्थवाह को अनेक खेदजनक वचनों द्वारा रोते २ उपालंभ=उलहना दिया करते-क्या आप जैसे व्यक्तियों को यह उचित-है-इस तरह से उससे कहा करते। इस तरह वे खेदजनक तथा अश्रु भरकर कही गई वाणियों द्वारा अपना खेदप्रकाशित करते हुए रोते हुए एवं उलहना देते हुए धन्यसार्थवाह के लिये चिलातकृत अपराध रूप अर्थ की निवेदना करते ॥सू० १॥

मुझेथी आ प्रभाणु दास चेटकनी भराभ वतल्लुक विषेनी विगत सांलणीने ते दारक वजेरेनां मातापिता न्यां धन्यसार्थवाह डोने त्यां आवता अने आवीने धन्यसार्थवाहने घणुं कठोर वचनेथी रउतां रउतां ढपडे आपतां रडेतां डतां. "शुं तमारी जेवी व्यक्तितने आ वात शोले छे ?" आ प्रभाणु ते कछां करतां डतां आ प्रभाणु तेओ भेदजनक तेमज अश्रुलीनी डालतमां कडेदी बाणुओ वडे पोतालुं दुःख प्रकट करतां, रउतां तेमज ढपडे आपतां धन्य-सार्थवाहने चिलाते जे कंठ भराभ वतल्लुक करी डोय ते भडल इरियाहो करतां रडेतां डतां. ॥ सूत्र १ ॥

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं
 णिवेदेति । तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६
 अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेडं
 उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ, उद्धंसइ, णिब्भच्छेइ
 निच्छोडेइ, तज्जेइ उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ
 गिहाओ णिच्छुभइ । तएणं से चिलाए दासचेडे साओ
 गिहाओ निच्छूढे समाने रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव
 पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य
 वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहं सुहेणंपरिवड्ढइ ॥सू० २॥

टीका—‘ तएणं से ’ इत्यादि । ततः खलु धन्यः सार्थवाहः चिलातं दास-
 चेदम् ‘ एयमट्ठं ’ एतमर्थम्=एतस्मादर्थान् दारकादीनां कपर्दकापहरणादिरूपाद-
 र्थान् भूयोभूयो निवारयति । नो चैव खलु दासचेद एतस्माद्दुष्कृत्यादुपरमते ।
 ततः खलु स चिलातो दासचेदः तेषां बहूनां ‘ दारगाण य ’ दारकाणां च=दार-

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं से धण्णे सत्थवाहे) इसके बाद उस धन्यसार्थवाहने
 (चिलायं दासचेडं) चिलात दास पुत्र को (एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेइ)
 बालकों के कपर्दक आदि चुराने रूप अर्थ से चार २ मना किया, परन्तु
 (णो चैव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ) वह चिलात दारक उस काम
 से विरक्त नहीं हुआ । (तएणं से दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं से धण्णे सत्थवाहे) त्थारणाद ते धन्य सार्थवाहे (चिलायं दास
 चेडं) चिलात दासपुत्रने (एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेइ) आणकेनी केडीओ
 वगेरेने ओरी ज्वा भदल पारंपार मनाछ करी, परंतु (णो चैव णं चिलाए
 दासचेडे उवरमइ) ते चिलात दारक पोतानी भराण वर्तलुक छोडीने सुधर्यो नछि.

(तएणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अज्जेगइयाणं

अनारधमासुतवर्षिणी टी० अ० १८ सुसमाहारिकावर्णनम्

६४७

कादीनां मध्ये अप्येकेषां 'खुल्लए' खुल्लकान्=कपर्दकविशेषान् अपहरति 'जाव तालेइ' यावत्ताडयति=पूर्वोक्तक्रमेण एव कपर्दकाद्यपहरणं यावत्तर्जनं ताडनं च करोति । ततः खलु बहवो दारकाश्च दारकादयो रुदन्तश्च यावत् स्वेषां २ अम्मापितृभ्यो निवेदयन्ति । ततः खलु ते आसुरुत्ताः=स्व पुत्रवचनं श्रुत्वा झटिति क्रोधाग्निष्ठमानसाः यत्रैव धन्यः सार्थवाहः तत्रैव उपागच्छन्ति । उपागत्य बहूभिः 'खेज्जणाहि जाव एयमट्ठं' खेदनाभिर्यावत् एतमर्थम्=खेदसंभूचनाभिर्यावत् उपालम्भनयुक्ताभिर्याग्भिः चिलातदासचेट्ठ कृताऽपराधलक्षणम् अर्थम् निवेदयन्ति । ततः खलु धन्यः सार्थवाहो बहूनां 'दारगाणं' दारकाणां ६=दारकादीनाम् अम्मापितृणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चम्य आसुरुत्ताः चिलातः दासचेट्ठम् 'उच्चावचाभिः=अनेकविधाभिः 'आउमणाहि' आक्रोशनाभिः=कोपजनकैर्वचनैः 'आउसइ' आक्रुश्यति=आक्षिपति 'उद्धंसइ' उद्धर्षयति=नामगोत्रादिनाऽधः पातयति-निन्दतीत्यर्थः । नेत्रमुखादि वक्रीकमणेन 'णिब्भच्छेइ' निर्भर्त्सयति=

अप्येगह्याणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएणं ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव णिवेदेति) इस तरह समझाने पर भी वह चिलात दासचेट उन अनेक दारकों आदि में से कितनेक दारक आदिकों के कपर्दक (कौड़ी) विशेषों को चुराता रहा यावत् उन्हें ताड़ित करता रहा-मारता पीटता रहा । और वे बालक आदि भी रोते हुए अपने २ माता पिताओं से उस के अपराध को जा २ कर कह देते रहे । (तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्ता, बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं णिवेदेति, तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायदासचेट्ठं उच्चावयाहिं आउमणाहिं आउसइ उद्धंसइ णिब्भच्छेइ,) इस प्रकार अपने २ बालकों के मुख से बार २

सुद्धए अवहरइ जाव तालेइ, तएणं ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव णिवेदेति)

आ प्रभाषे समन्वया छतांअ ते चिलात दासचेट्ठं धण्डा दारके वगे देमां डेटलाइ दारके वगेरेनी डोडीअने चोरतो न रद्धो यावत् ते अण्डेने ताडित करतो रद्धो, तेभन भारतो पीटतो रद्धो. अने ते अण्डे वगेरे पण्ड २३तां २३तां पोतपोतानां मातापिताने आनी इरियाहो ३२तां न रद्धां.

(तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्ता बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं णिवेदेति, तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेट्ठं उच्चावयाहिं आउमणाहिं आउसइ उद्धंसइ, णिब्भच्छेइ)

तिरस्करोति, ' निच्छोडेइ ' निच्छोटपति=त्यजति, ' तज्जेइ ' तर्जयति= ' निस्सर मम गृहात् नोवेत्त्वां ताडयिष्यामि ' इत्यादि वचनेन भर्त्सयति ' उच्चावयाहिं तालणाहिं ' उच्चावचाभिर्यष्टिमुष्टयाद्यनेकविधाभिस्ताडनाभिः ' तालेइ ' ताडयति ' साओ गिहाओ ' स्वस्माद् गृहात् ' णिच्छुमइ ' निक्षिपति=निः सारयति । ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेन सार्थवाहेन स्वस्माद् गृहात् ' णिच्छूदे ' निक्षिप्तः=निः सारितः सन् राजगृहे नगरे सिंघाडग जाव गहेसु श्रृङ्गाटक यावन्महापथपथेषु चतुष्पथादिषु सर्वत्र स्थलेषु, देवकुलेषु च सभासु च

चिलात दासचेटक की पूर्वोक्त अपराधों को जब २ वे सुना करते तब वे गुस्से में भर २ कर जहाँ धन्यसार्थवाह होता वहाँ चले जाते रहे। और वहाँ जाकर बड़े खेद के साथ रोते हुए अपने २ दुःखों को प्रकट करते रहे इस तरह बार २ उन दारक आदि के माता पिताओं के सुख से इस दासचेटक के दुष्कृत्य को सुनकर वह धन्य सार्थवाह क्रोध में आकर उस दासचेटक चिलात को अनेक विधकोप जनक ऊँचे नीचे शब्दों से धिक्कार ने लगते थे उसका नाम गोत्र आदि की निंदा करने लग जाते थे। नेत्र, सुख, आदि को टेढ़ा करके उसका तिरस्कार भी करते थे। (णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुमइ, तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूदे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु

आ प्रभाषे पोतपोतानां णाणकेने सुणथी वारंवार चिलात दासचेटकनी क्रियादो न्यारे न्यारे तेओ सांखणतां त्यारे त्यारे तेओ गुस्से थधने न्यां धन्यसार्थवाड ढता त्यां नता ढता, अने त्यां नधने तेओ णडु न दुःखनी साथे रडतां रडतां पोतपोताना दुःखेने प्रकट करता रडता ढता, आ प्रभाषे वारंवार ते दारक वगेरेना मातापिताना सुणथी ते दासचेटकनी अराण वतल्लुंके विषेनी विगत सांखणीने ते धन्यसार्थवाड कोधमां अराधने ते दासचेटक चिलातने वल्लु कोध उत्पन्न करे तेवा अराण वयनोथी धिक्कारवा लागतो ढतो तेमअ तेनां नाम गोत्र वगेरेनी निंदा करवा लागतो ढतो, आओ, सुण वगेरे अगाडीने तेना तिरस्कार पणु करता रडता ढता,

(णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुमइ, तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूदे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु य पवासु य जूय खलणसु य वेप्पा धरेसु य पाणधरेसु य सुहं वुद्धेणं परिवद्दइ)

अननारधमांमृतवर्षिणी टी० अ० १८ सुसमाहारिकाचरितनिरूपणम्

६४९.

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'बेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुखं सुखेन परिवड्डुः' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवा-
रिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी मंस-
पसंगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य बेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहंसुहेणं परि-
वड्डुः) और यहाँ तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड़ भी देता रहा
और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नहीं तो मैं तुझे मारूँगा इस
तरह के वचनों से उस को निरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस
की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलाट दासचेटक
पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश
होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताडनाओं से ताडित कर
अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने
इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब यह राजगृह नगरमें श्रृंगा-
टक आदि मार्गोंमें अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों
में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में—प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के
स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहों में घूम फिर
कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥ सू० २ ॥

અને છેવટે આ વાત ત્યાં સુધી પહોંચી કે કોઈ કોઈ વખતે તે તેને
બહાર પશુ કાઢી મૂકતો હતો. અને કોઈ કોઈ વખતે તેને આ બતનાં વચ-
નોથી ઠપકો પશુ આપતો રહેતો હતો કે તું મારા ઘરમાંથી નીકળી બહાર નહિ-
તર તને હું મારી નાખીશ. પરંતુ બ્યારે આ બતની શિક્ષાઓની કે બય
પ્રદર્શનની તે દાસ ચેટક ઉપર કશી અસર થઈ નહિ ત્યારે છેવટે ધન્યસાર્થ-
વાહે હતાશ થઈને તેને લાકડી, મુઝીઓ વગેરેથી તાડિત કરીને પોતાના ઘેરથી
બહાર કાઢી મૂક્યો. આ પ્રમાણે બ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે તેને પોતાના ઘેરથી
બહાર કાઢી મૂક્યો ત્યારે તે રાજગૃહ નગરનાં શ્રંગાટક વગેરે રસ્તાઓમાં
રખડેલની જેમ બટકવા લાગ્યો અને દેવકુળોમાં, સભાસ્થાનોમાં, પરબોમાં,
બુઝારના અહાઓમાં, વેશ્યાઓનાં ઘરોમાં અને શરાબખાનાઓમાં બટકીને
જેમ તેમ કરીને પોતાનું પાલન-પોષણ કરવા લાગ્યો. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

होत्था । तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिण-
 पुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था, विसम-
 गिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा, वंसी कलंकपागारपरिक्खित्ता
 छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-
 खंडी विदियजणणिग्गमपवेसा अठ्ठिभतरपाणिया सुदुल्ल-
 भजलपेरंता सुबहुस्स वि कुवियवलस्स आयगस्स दुप्पहंसा
 यावि होत्था । तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं
 चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिंए जाव अधम्मकेऊ समुट्टिए
 बहुणगरणिग्गयजसे सूरु दढप्पहारी साहसिए सद्देही । से
 णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचणहं चोरसयाणं आहेव-
 च्चं जाव विहरइ । तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई
 बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधि-
 च्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण
 य बालघायगाण य विसंभघायगाण य जूयकाराण य
 खंडरक्खाण य अत्तेसिं च बहूणं छिन्नभिन्नबहिराययाणं
 कुडंगे यावि होत्था । तएणं से विजए तक्करे चोर-
 सेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमे जणवयं बहुहिं
 गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि
 य खत्तखणणेहि य पंथकुट्टणेहि य उवीलेमाणे २ विद्धंसे-
 माणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरइ । तएणं से
 चिलाए दासचेडे रायगिहे बहुहिं अत्थाभि संकीहि य चोज्जामि

अनंतवारचमोदुनरविनी टी० म० १८ सुसमादारिकाचरितनिरूपणम् ३५१

संकीहिय दाराभिसंकीहि य धणिण्हि य जूइकरेहि य पर-
बभवमाणे२ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता,
जेणेव सीहयुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
विजयं चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ सू०३ ॥

टीका—‘तएणं से इत्यादि । ततः खलु स चिलातो दासचेटः ‘अणोह-
ट्टिए’ अनपघटितः, यो हि दुष्कृतौ प्रवर्तमानं कमपि हस्तौ धृत्वा निवारयति,
सोऽपघट्टकः, निवार्यमाणस्तु अपघटितः, अयं हि निवारयितुरभावात् अनपघटितः=
निरङ्कुशः ‘अणिवारिए’ अनिवारितः, हितोपदेशकस्याभावात् अनिवारितः,

‘तएणं से चिलाए दासचेडे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह चिलात दासचे-
टक (अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सहरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोउज-
प्पसंगी मंसप्पसंगी, जूयप्पसंगी, वेसापसंगी, परदारप्पसंगी जाए यावि
होत्था) अनपघटित—निरङ्कुश बन गया—जो दुष्कर्म में प्रवर्तमान किसी
को भी हाथ पकड़कर उससे निवारित कर देता है उसका नाम अपघट्टक
और जो दूर किया जाता है वह अपघटित कहलाता है । निवारण कर
नेवाले का अभाव होने से यह चिलात दासचेटक अनपघटित इसी
कारण से बन गया । हितोपदेशक कोई उसका रहा नहीं अतः यह
कुत्सित काम करने से पीछे नहीं हटता—इसलिये यह अनिवारित होकर
जो मन में आता उसे कर डालता—अतः उद्दण्ड बन गया । स्वच्छन्द

तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपल्ली (से चिलाए दासचेडे) ते चिलात दास चेटक
(अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई, सहरप्पयारी मज्जप्पसंगी, चोउजप्पसंगी मंस-
प्पसंगी, जूयप्पसंगी, वेसापसंगी, परदारप्पसंगी, जाए यावि होत्था)

अनपघटित—स्वच्छंद भनी गये, दुष्कर्मों में पड़ेला गये तेने के हाथ
पकड़ीने तेमांथी तेने दूर करे छे तेनुं नाम अपघट्टक :अने के दूर
करवाभां आवे छे ते अपघटित कहेवाय छे. चिलात दासचेटकेने जोटा कामेथी
दूर लई जनार—तेने निवारण करनार कोरुं हुं नहि अथी ते अनपघटित
थई गये। तेने कोरुं हितोपदेशक हुतो नहि तेथी ते कुत्सित काम कर-
वाभां पण पीछेहुं करतो न हुतो, अराअ कामेथी तेने शकनार नहि होवाने
कारणे ते मनमां आवे तेम करतो हुतो अथी ते उदंड भनी गये हुतो. ते

‘ સચ્છંદમર્દ ’ સ્વચ્છંદમતિઃ=સ્વાભિપ્રાયવર્તી-ઉદ્ગ્રહાદિત્યર્થઃ, અતઃ ‘ સદ્રપ્પ-યારી ’ સ્વૈરપ્રચારી = સ્વચ્છંદવિહારી ‘ મઞ્જપ્પસંગી ’ મઘપ્રસક્તી મઘપાપી, ‘ ચોઞ્જપ્પસંગી ’ ચૌર્યપ્રસક્તી=ચૌર્યકર્મણિ પરાયણઃ, ‘ માંસપ્પસંગી ’ માંસપ્રસક્તી=માંસભક્ષણશીલઃ, ‘ જૂયપ્પસંગી ’ ઘૂતપ્રસક્તી-ઘૂતક્રીડાપ્રસક્તઃ, ‘ વેસાપસંગી ’ વેશ્યાલમ્પટઃ, એવં ‘ પરદારપ્પસંગી ’ પરદારપ્રસક્તી=પરદારરતો જાતશ્રાપિ આસીત્ । તતઃ સ્વલુ રાજગૃહસ્ય નગરસ્ય અદૂરસામન્તે દક્ષિણપૌરસ્ત્યે દિગ્ભાગે અગ્નિકોણે સિંહગુહાનામ ચોરપલ્લી આસીત્, યા હિ પલ્લી ‘ વિસમગિરિકટકકોડંબસન્નિવિટ્ઠા ’ વિષમગિરિકટકકોડમ્બસન્નિવિટ્ઠા=વિષમો નિમ્નોન્નતો યો ગિરિકટકઃ=પર્વત મધ્યભાગઃ, તસ્ય યઃ કોડમ્બઃ પ્રાન્તભાગઃ, તત્ર સન્નિવિટ્ઠા=સ્થિતા આસીત્ । પુનઃ ‘ વંસીકલંકપાગારપરિચ્છિન્તા ’ વંશીકલંકપાકારપરિચ્છિન્તા=વંશીકલક્રુક્કા વંશજાલમયી વૃત્તિઃ, સૈવ પ્રાકારઃ, તેન પરિચ્છિન્તા=પરિવેષ્ટિતા=વંશનિર્મિતજાલ-મયપ્રાકારઃ સમન્તાત્-પરિવેષ્ટિતા, ‘ છિણ્ણસેલવિસમપ્પવાયકાલિહોવગૂઠા ’=છિન્નશૈલવિષમપ્રપાતપરિચ્છોપગૂઠા=છિન્નોઽવ્યવાત્તરાપેક્ષયા વિભક્તો યઃ શૈલઃ=પર્વતઃ, તત્સમ્બન્ધિનો યે વિષમાઃ પ્રપાતા-ગતીઃ, ત એવ પરિચ્છિન્તા તયા ઉપગૂઠા=આશ્લિષ્ટા પરિવેષ્ટિતા-વિભક્તશૈલાવ્યવનિર્ગતવિષમપ્રપાતરૂપપરિચ્છિન્તાપરિવેષ્ટિત્યર્થઃ ‘ એગદુવારા ’ એકદ્વારા=એકં દ્વારં=પ્રવેશનિર્ગમરૂપં યસ્યાઃ સા=એકપ્રવેશનિર્ગમા, ‘ અણેગલ્લંડી ’ અણેકલ્લંડા=અણેકાનિ લ્લંડાનિ=વિભાગા રક્ષાદેતોર્યસ્યાં સા અણેકલ્લંડા, યત્ર=સ્વરક્ષાર્થે અણેકાનિ સ્થાનાનિ સન્તિ, ‘ વિદિયજણિગમપવેસા ’

વિહારી હો ગયા-મઘપ્રસંગી હો ગયા-મદિરા પીને લગ ગયા । માંસ ખાને લગ ગયા, ચોરી કરને લગા, જૂઆ સ્થેલને લગા, વેશ્યાસેવન કરને લગા, ઓર પરદાર સેવન કરને મેં ખી લંપટ હો ગયા । (તર્ણ રાય-ગિહસ્સ નયરસ્સ અદૂરસામંતે દાહિણપુરત્થિમે દિસીમાપ સીહગુહા નામં ચોરપલ્લી હોત્થા-વિસમગિરિકટકકોડંબસન્નિવિટ્ઠા વંસીકલંક પાગારપરિચ્છિન્તા છિણ્ણસેલવિસમપ્પવાયકાલિહોવગૂઠા રગ્ગદુવારા, અણેગલ્લંડી, વિદિયજણિગમપવેસા અર્ઘિભતરપાણિયા સુદુલ્લભજલ

સ્વચ્છંદ વિહારી થઈ ગયો હતો, દારૂ પિનારો થઈ ગયો હતો. તે માંસ ખાવાલાગ્યો, ચોરી કરવા લાગ્યો, જુગાર રમવા લાગ્યો, વેશ્યા-સેવન કરવા લાગ્યો અને પરસ્ત્રી સેવનમાં પણ લંપટ થઈ ગયો હતો.

(તર્ણ) રાયગિહસ્સ નયરસ્સ અદૂરસામંતે દાહિણપુરત્થિમે દિસીમાપ સીહગુહા નામં ચોરપલ્લી હોત્થા-વિસમગિરિકટકકોડંબસન્નિવિટ્ઠા વંસીકલંકપાગારપરિચ્છિન્તા, છિણ્ણસેલ વિસમપ્પવાયકાલિહોવગૂઠા એગદુવારા, અણેગલ્લંડી, વિદિયજણિગમપવેસા

અર્ધિમતરપાણિયા ટી૦ અ૦ ૧૮ સુસુમાધારિકાચરિતનિકૂળનમ્ ૬૫૧

વિદિતજનનિર્ગમપ્રવેશ=વિદિતજનાનામેવ=વિશ્વાસવતામેવ નિર્ગમપ્રવેશૌ યસ્યાં સા=
વિશ્વસ્તજનનિર્ગમપ્રવેશવતી ' અર્ધિમતરપાણિયા ' અભ્યન્તરપાણીયા=મધ્યસ્થિત-

પેરંતા, સુષહરસ વિકૂચિયબલસ આગયસ દુપ્પહંસા, યાચિ હોત્યા તત્થ
સીહગુહા ચોરપલ્લી ચિજણામં ચોરસેણાવર્ઘે પરિવસર્ઘે, અહમ્મિય
જાવ અહમ્મકેઝસમુદ્ધિયે વહુગગરણિગયજસે, સૂરે દદપ્પહારી
સાહસિયે સદ્ધેહી-સેણં તત્થ સીહગુહા ચોરપલ્લી પંચણં ચોર
સયાણં આદિવચ્ચં જાવ વિહરહ) ઉસી રાજગૃહ નગર કે ન અધિક દૂર
પર ઓર ન અધિક પાસ મેં દક્ષિણ પૌરસ્ય દિગ્વિભાગ મેં-અગ્નિફોગ
મેં-સિંહગુહા નામ કી એક ચોર પલ્લી થી-યહ ચોરપલ્લી વિષમ ગિરિ-
કંટક કે પ્રાન્ત ભાગ મેં-નિમ્નોત્તરપર્વત કે મધ્યભાગ કે અન્ત ભાગ મેં
સ્થિત થી । હસકે ચારોં ઓર વાંસોં કી વાડ થી-યહ વાડ હી હસકા
પ્રાકાર (કિલા) થા-ઉસસે યહ ઘિરી હુઈ થી । અવપવાન્તરોં કી અપેક્ષા
સે વિમક્ત જો પર્વત તત્સંબંધી જો વિષમ પ્રપાત સ્વદ્ધા ઉન વિષમ
સ્વદ્ધેરુપ પરિચા સે યહ પરિવેષ્ટિત થી । નિકલને કા ઓર આને કા હસ
મેં એક હી દ્વાર થા । હસમેં રક્ષા કે નિમિત્ત ચોરોંને અનેક સ્થાન બના
રહે થે । પરિચિત-વિશ્વાસવાલે-વ્યક્તિ હી હસમેં આ જા સકતે થે ।

અર્ધિમતરપાણિયા, સુદુલ્લભજલપેરંતા, સુષહરસ વિ કૂચિયબલસ આગયસ દુપ્પહંસા,
યાચિ હોત્યા તત્થ સીહગુહા ચોરપલ્લી ચિજણામં ચોરસેણાવર્ઘે પરિવસર્ઘે, અહ-
મ્મિય જાવ અહમ્મકેઝ સમુદ્ધિયે વહુગગરણિગયજસે, સૂરે દદપ્પહારી, સાહસિયે
સદ્ધેહી સેણં તત્થ સીહગુહા ચોરપલ્લી પંચણં ચોરસયાણં અદિવચ્ચં જાવ વિહરહ)

તે રાજગૃહ નગરથી ઘણે દૂર પણ નહિ અને ઘણી નજીક પણ નહિ
એવી, દક્ષિણ પૌરસ્ય દિગ્વિભાગમાં અગ્નિકોણમાં-સિંહગુહા નામે એક
ચોરપલ્લી હતી તે ચોરપલ્લી જાંચી નીચી ગિરિમાળાઓના પ્રાંત ભાગમાં
નિમ્નોત્તર પર્વતના મધ્યભાગના અંતભાગમાં આવેલી હતી તેની ચોમેર
વાંસોની વાડ હતી. તે વાડ જ તેનો કોટ (કિલ્લો) હતો. તેનાથી તે ઘેરા-
એલી હતી અવપવાંતરોની અપેક્ષાએ વિભક્ત જે પર્વત અને તરસંબંધી જે
વિષમ પ્રપાત-ખાડો-તે વિષમ ખાડાકૂપી પરિભ્રાથી તે પરિવેષ્ટિત હતી.
આવવા અને જવા માટે તેમાં એક જ દરવાજો હતો. ચોરોએ પોતાની રક્ષા
માટે ઘણાં સ્થાનો બનાવેલાં હતાં. પરિચિત વિશ્વાસુ માણસો જ તેમાં આવજા
કરી શકતા હતા. પાણી માટે તેની વચ્ચે એક જળાશય હતું, તેની બહાર

जलाशया 'सुदुर्लभजलपेरंता' सुदुर्लभजलपर्यन्ता=सुदुर्लभं जलं पर्यन्ते=मान्त-
भागे=बहिर्भागे यस्याः सा=जलरहितबहिर्भागा 'सुबहुस्स वि' सुबहोरपि
कृषियबलस्स 'कृषिकबलस्य=चोरगवेषकसैन्यस्य 'आगयस्स' आगतस्य 'दुष्प-
हंसा' दुष्पञ्चंसा दुर्धर्षणीया चापि आसीत् । तत्र खलु सिंहगुहायां चोरपल्लीयां
विजयो नाम चोरसेनापतिः=चोरनायकः परिवसति यो हि 'अधम्मि ए जाव'
अधार्मिको यावत्=अधर्मेण चरति अधार्मिकः अधर्माचरणशीलः-अत्र यावत्पदेन-
इतबारभ्य 'घायाए वहाए अच्छायणाए' इत्यन्तः पाठो ग्राह्यः, तथाहि-'अध-
म्मिहे' अधर्मिष्ठः=सर्वथा धर्मरहितः, 'अधम्मक्खाई' अधर्माख्यायी-अधर्मक-
थकः, 'अधम्माणुगे' अधर्मानुगः=अधर्मानुगामी 'अधम्मपलोई' अधर्मप्रलोकी=
अधर्मदर्शी 'अधम्मपलज्जणे' अधर्मप्ररञ्जनः=अधर्मानुरक्तः, 'अधम्मसीलसमु-
दायारे' अधर्मशीलसमुदाचारः=अधर्म एव शीलं स्वभावः समुदाचारश्च यस्य सः,

पानी के लिये इसमें बीच में एक जलाशय था-इसके बाहिरी भाग में
जल नहीं था। अनेक भी चोर गवेषक सेनाजन यहां आजावे तो भी
वे इस पल्ली का नाश नहीं कर सकते थे। इस सिंहगुहा नामकी चोर
पल्ली में विजय नाम का एक चोर सेनापति रहता था। यह अधार्मि-
क यावत् अधर्म केतुग्रह जैसा उदित हुआ था। यहां यावत् शब्द से
"घायाए वहाए अच्छायणाए" यहां तक का पाठ ग्रहण किया गया
है-इस का खुलाशा भाव इस प्रकार है-अधार्मिक शब्द का अर्थ होता
है अधर्माचरणशील-यह विजय नामका चोर अधर्माचरणशील था। अध-
र्मिष्ठ था-सर्वथा धर्मसे रहित था, अधर्माख्यायी था-अधर्मका कथन कर-
नेवाला था, अधर्मानुग था-अधर्म का अनुगामी था, अधर्मप्रलोकी था-
अधर्म का ही देखने वाला था-अधर्मप्ररञ्जन था अधर्म में अनुरक्त था

पाणी હતું નહિ. ઘણા ચોરાની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યાં આવે છતાંયે તે
પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા. તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમાં વિજય
નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો. તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની
જેમ ઉદય પામ્યો હતો. અહીં યાવત્ શબ્દથી "ઘાયાએ વહાએ અચ્છાયણાએ"
અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે
છે:-અધાર્મિક શબ્દનો અર્થ-અચરણશીલ હોય છે. તે વિજય નામે ચોર
અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી
હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુસારી હતો, અધર્મનો અનુગામી
એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર
હતો, અધર્મપ્રરંજન હતો, અધર્મમાં આસક્ત હતો, અધર્મશીલ સમુદાયારી

अधर्माधर्माभ्युपनिषद् टी० अ० १८ सुसमाहारिकाचरितनिरूपणम्

१५५

अधर्मशीलोऽधर्माचरणश्चेत्यर्थः, 'अधर्मेण चेव वित्तिं कप्पे माणे विहरइ' अधर्मेणैव वृत्तिं कलरयन् विहरति=अधर्मेणैव सावधानुष्ठानेनैव, वृत्तिं कलरयन्=जीविका-मुपार्जयन् 'विहरइ' विहरति=भास्ते । पुनः 'इणछिदंभिद्वियत्तए' जहिछिन्धि भिन्धि विकर्तकः='इण' जहि=मारय यष्ट्यादिना 'छिद' छिन्धि=छेदय-खड्गादिना, 'भिद' भिन्धि=भेदय मल्लादिना, इतिशब्दैः स्वानुयायिनः प्रेरयन् प्राणिनो विक्रन्तति यः सः, जहि छिन्धिभिन्धि विकर्तकः, इति, 'लोहियपाणी' लोहितपाणिः=लोहितौ पाणी यस्य सः, रक्तरञ्जितकरयुगलः 'चंडे' चण्डः उत्कटरोषः 'रुदे' रौद्रः=भयानकः 'लुल्ले' क्षुद्रः=क्षुद्रकर्मचारी 'उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसंपयोगवहुले' उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिकपटकूटसाइसंपयोग-

अधर्मशील समुदाचारवाला था-अर्थात् इसका स्वभाव और आचरण दोनों अधर्ममय थे-अधर्म ही इस का स्वभाव था और अधर्म ही इस का आचरण था । अतः अपनी जीविका का निर्वाह सावध अनुष्ठानों (अधर्म) द्वारा ही किया करता था । यष्ट्यादि द्वारा इसे मारो, खड्गादि द्वारा इसे छेदो भल्लादि द्वारा इसे भेदो इस प्रकार के शब्दों से यह अपने अनुयायियों को सदा प्रेरित करता हुआ स्वयं जीवों का छेदन भेदन न किया करता था । इसके दोनों हाथ रक्त से रंजित रहते थे । इस का क्रोध बहुत प्रचंड था देखने में यह बड़ा भयानक दिखता था । क्षुद्र कर्मकारी था । "उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसंपयोग वहुले" उत्कंचन, वंचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साह, इनका व्यव-

हूतो-अेटवे के तेनो स्वभाव अने आचरण अने अधर्ममय हुतां. अधर्मां ज तेनो स्वभाव हुतो अने अधर्मां ज तेनुं आचरण हुतुं. अथी ते पोतानुं एवन सावध अनुष्ठानो वडे अेटवे के अधर्मानुं आचरण करीने पुई करतो हुतो. लाकडी वगेरैथी अने भारे, तरवार वगेरैथी अने कापी नाजो, बाढाओ वगेरैथी अने बेदी नाजो आ जतना शब्दोथी ते पोताना अनुयायीअने हभेशां हुकम करतो रहेतो हुतो. ते पोते पण एवेनुं छेदन-भेदन करतो रहेतो हुतो. तेना अने हाथो लोहीथी भरडाओला रहेता हुता. तेनो क्रोध अत्यंत प्रचंड हुतो. देभावमां ते पूअ ज भयानक लागतो हुतो, ते क्षुद्र कर्म करनार हुतो.

(उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसंपयोगवहुले) उत्कंचन, वंचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साह आ अधानो वडेवार तेना एवनमां

बहुलः, तत्र-उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपागतविचक्षणमयात् तत्क्षणे-
वञ्चनाकरणम् वञ्चनं=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निःकृतिः=मायाप्रच्छाद-
नार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनका-
दीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभावः, एषां संपयोगो
व्यवहारः स एव बहुलः प्रचुरो यस्य सः, 'निस्सीले' निःशीलः=शीलरहितः,
'निर्व्वण' निर्व्वर्तः=अणुव्रतरहितः, 'निर्गुणे' निर्गुणः=गुणव्रतरहितः, 'निप-
च्चक्खाणपोसहोववासे' निःप्रत्याख्यान पौषधोपवासः = प्रत्याख्यानपौषधोप-
वासरहितः 'बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं चायाए वहाए उच्छाय-
णाए' बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां घाताय, वञ्चाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वंचन करने में प्रवृत्त हुआ
वंचक जन जब पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस-
का नाम उत्कंचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वंचन है।
दूसरों का वंचन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी
को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस
का नाम निःकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है।
तराजू एवं तोलने आदि के बांटों को कमती बढ़ती रखना इसका नाम
कूट है। “साइ” यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का
अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्व्वर्त था-व्रत
रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, “प्रत्याख्यान और पौषधोपवास
से वर्जित था “ बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं चायाए
वहाए उच्छायणाए अधम्मकैऊ समुट्ठिए ” अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

પુષ્કળ પ્રમાણમાં હોના. ભોળા માણસોના વંચનમાં પ્રવૃત્ત થયેલો વંચક જ્યારે
પાસે આવેલા માણસને બીકથી ઠગતો તથી તેનું નામ ઉત્કંચન છે. પ્રતારણનું
નામ વંચન છે. બીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનું નામ માયા છે. પોતાની
માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજા માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામાં આવે છે
તેનું નામ નિઃકૃતિ છે. વેશ વગેરે બદલવું તે કપટ કહેવાય છે. ત્રાજવાં તેમજ
જોખવાના વજનોને હલકાં અને ભારે કરવાં તેનું નામ કૂટ છે. “ સાઇ ”
આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે. તે નિઃશીલ
હોતો, -શીલ રહિત હોતો, નિર્વર્ત વ્રત રહિત હોતો. નિર્ગુણ હોતો-ગુણ રહિત
હોતો. પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હોતો. “ બહૂણં ” દુપયચઉપ્પય-
મિયપસુપક્ખિસરીસિવાણં ચાયાए वहाए - उच्छायणाए अधम्मकैऊ समुट्ठिए ”

मनगारवर्माभूतवर्षिणी दी० अ० १८ सुसमाहारिकाचरितवर्णनम्

१५७

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिमकलजीवानां सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेऊ समुट्ठिण' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्मः पापप्रधानो यः केतुः=केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुनगर-णिग्गायजसे 'बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गतं जनमुखाभिःसृतं यशः ख्यातिर्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'ददप्पहारी' ददमहारी=ददमहरणशीलः 'साहसिए' साहसिकः=अविमृश्यकारी 'सदवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रवणेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। 'से' सः = विजयश्रौरः खलु तत्र सिंहगुह्यार्या चोरपल्लीयां पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्चं जाव' आधिपत्यं यावत्=स्वामित्वं कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापतिः बहूनां चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिनां च 'गंठिभेयगाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'संधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदकानां=भित्तिसंधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाणय' क्षात्र-खनकानां=संधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात हो चुका था। बड़ा शूरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था। शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पांचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएणं से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य अणधारगाण य

घण्टा द्विपद, त्र्युपद, मृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साय) वगैरे प्राणीभेदानां घात भाटे, वध भाटे तेमज तेमना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुग्रहणी जेमज उदय पाभ्यो હતો. ઘણાં નગરોમાં તે કુખ્યાત થઈ ચુક્યો હતો. તે ભારે શૂરવીર હતો, તેનો પ્રહાર ખૂબ જ ભારે થતો હતો. વગર વિચાર્યા કામ કરવામાં જ તેનો સ્વભાવ હતો. શબ્દ શ્રવણ કરીને તે યોતાના લક્ષ્યને વીધી નાખવામાં ખૂબ જ નિપુણ હતો. તે વિજય ચોર સિંહ ગુફા નામની તે ચોર-પક્ષીમાં પાંચસો ચોરોનો સ્વામી-યાવત્ સ્વામિત્વ ભોગવતો રહેતો હતો.

(તएणं से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऊण-

રાજદ્રોહિણાં 'અળધારમાણય' ઋણધારકાણામ્ બાલધાતકાનાં 'વીસંભવાયમાણય' વિશ્વમ્ભવાતકાનાં=વિશ્વાસઘાતિનાં દ્યૂતકારકાણાં 'સ્વંડસ્ત્રાણય' 'સ્વંડસ્ત્રાણાં'=રાજવિરોધેન ભૂમિસ્વંડધારિણામ્ એવમ્ અન્યેષાં ચ વહૂનાં 'છિન્નભિન્નબહિરાદયાણં' 'છિન્નભિન્નબહિરાદતાનામ્-છિન્ના=છિન્નદસ્તાદિકાઃ, ભિન્ના=ભિન્નકર્ણનાસિકાદિકાઃ, બહિરાદતા=રાજાપરાધેન દેશનિષ્કાશિતાઃ, એતેષાં દ્વન્દ્વાઃ, તેષાં ચ 'કુટુંગે' કુટુંકઃ=કુટુંકઃ ઇવ કુટુંકઃ - વંશવનં રક્ષાર્થમાશ્રયણીયત્વસામ્યાત

બાલધાયમાણય વીસંભવાયમાણય જૂયકારણય સ્વંડસ્ત્રાણય અન્નેસિં વહૂણં છિન્નભિન્ન બહિરાયમાણં કુટુંગે યાવિહોત્યા) વહુ વિજય તસ્કર ચોર સેનાપતિ અનેક ચોરોં કા અનેક પરસ્ત્રી લંપટોં કા ગ્રન્થિ ભેદ કો કા, સંધિચ્છેદકોં કા-મકાન કો ભીત ફોડકર ધનકા અપહરણ કરનેવાલોં કા, ક્ષાત્રસ્ત્રનકોં કા સંધિ રહિત ભીત કો ફોડકર ચોરી કરનેવાલોં કા, રાજા કા અપકાર કરને વાલોં કા-રાજદ્રોહિયોં કા, ઋણ કરને વાલોં કા બાલ હત્યા કરને વાલોં કા વિશ્વાસઘાત કરને વાલોં કા જુઆ खेलनेવાલોં કા, રાજા કી આજ્ઞા લિયે વિના હી કુછ જમીન કો અપને અધિકાર મેં કરનેવાલોં કા, તથા ઓર ભી અનેક છિન્ન, ભિન્ન બહિરાહત વ્યક્તિયોં કા યહ કુટુંક જૈસાં થા। જિન કે હાથ આદિ કાટદિયે ગયે હૈં એસે પ્રાણી, છિન્ન શબ્દ સે જિનકી નાક આદિ કાટ હી ગઈ હૈં એસે પ્રાણી ભિન્ન શબ્દ સે એવં રાજાપરાધ કે કારણ જો દેશ સે બાહિર નિકાલ દિયે ગયે હૈં એસે મનુષ્ય યહાં બહિ આહત શબ્દ

ધારમાણય બાલધાયમાણય વીસંભવાયમાણય જૂયકારણય સ્વંડસ્ત્રાણય અન્નેસિં વહૂણં છિન્નભિન્નબહિરાયમાણં કુટુંગે યાવિ હોત્યા)

તે વિજય તસ્કર ચોર સેનાપતિ ઘણા ચોરા, ઘણા પરસ્ત્રી લંપટો, અધિભેદકો, સંધિચ્છેદકો-ઝાકોઈ પાડીને ધનનું અપહરણ કરનારાઓ, ક્ષાત્ર-ખનકો-સંધિભાગ વગરની ભીંતમાં ઝાકોઈ પાડીને ચોરી કરનારાઓ, રાજના અપકારકો-રાજદ્રોહીઓ, ઋણ કરનારાઓ (દેવાદારો) બાળહત્યા કરનારાઓ, બાળહત્યા કરનારાઓ, વિશ્વાસઘાત કરનારાઓ, બુગાર રમનારાઓ, રાજની આજ્ઞા લીધા વગર જ થોડી જમીનને પોતાના અધિકારમાં લેનારાઓ તેમજ ખીબ પણ ઘણા છિન્ન, ભિન્ન બહિરાહત લોકોના માટે તે કુટુંક જેવો હતો. જેમના હાથ પગ વગેરે કાપી નાખવામાં આવ્યા છે એવાં પ્રાણીઓ, છિન્ન શબ્દ વડે જેમનાં નાક વગેરે કાપવામાં આવ્યાં છે એવાં પ્રાણીઓ, ભિન્ન શબ્દ વડે અને રાજાપરાધ બદલ જે દેશમાંથી બહાર કાઢી મૂકવામાં આવ્યા છે એવાં માણસો અહીં "બહિઃ આહત" શબ્દ વડે સંબોધિત કરવામાં આવ્યા

અનંગારધમાં મૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૮ સુસમાદારિકાચરિતવર્ણનમ

૬૫૨

ચાપિ અબૂત । તતઃ સ્વલુ સ વિજયસ્તસ્કરઃ ચોરસેનાપતિઃ રાજગૃહસ્ય 'દાહિણ પુરત્થિમં' દક્ષિણપૌરસ્ત્યં અગ્નિકોણસ્થિતં જનપદં બહુભિઃ 'ગામધાણ્હિ' ગ્રામ-
ધાતૈઃ=ગ્રામવિનાશૈશ્વ, નગરધાતૈશ્વ, 'ગોગ્ગહણેહિય' ગો ગ્રહણૈઃ=ગર્વાં લુઠ્ઠનૈઃ,
બંદિગ્ગહણેહિય' વન્દિગ્રહણૈઃ=લુઠ્ઠને યે જના ગૃહીતાસ્તે વન્દિનઉચ્યન્તે, તેષાં
ગ્રહણૈઃ=સ્વકારાયાં સ્થાપનૈઃ, 'સ્વત્ત્ત્વણેહિય' ક્ષાત્રત્ત્વનનૈશ્વ એવં વિધૈષ્ડુકૃત્યૈઃ

સે પ્રતિષોધિત કિયે ગયે હૈં । રક્ષણાર્થ આશ્રયણીય હોને કી સમાનતા
સે હસે કુટંક-વંશવન-જૈસા કહા ગયા હૈ । (તણં સે વિજય તક્કરે
ચોરસેનાવડૈ રાયગિહસ્સ દાહિણપુરત્થિમં જણવયં બહૂહિં ગામધાણ્હિં ય
નગરધાણ્હિં ય ગોગ્ગહણેહિ ય બંદિગ્ગહણેહિ ય સ્વત્ત્વણેહિય, પંથકુ-
હણેહિ ય ઉલીએ માણે ૨ વિદ્વંસણે માણે ૨ ણિત્થાણં, ણિદ્વણં કરેમાણે
વિહરહ, તણં સે ચિલાણ દાસચેડે રાયગિહે બહૂહિં અત્થામિસંકીહિ ય
ચોજ્જામિસંકીહિ ય દારામિસંકીહિ ય ઘણિણિય ય જૂયકરેહિ ય પર-
બ્ભવમાણે ૨ રાયગિહાઓ નગરાઓ ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ
સીહગુહા ચોરપલ્લી તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાચ્છિત્તા વિજયં ચોરસેનાવડૈ
ઉવસંપજિત્તાણં વિહરહ) ચોરોં કા સેનાપતિ વહ વિજય તસ્કર રાજ-
ગૃહ નગર કે અગ્નિકોણ મેં સ્થિત જનપદોં કો, અનેક ગ્રામોં કે વિનાશ
સે નગરોં કે ઘાત સે, ગાવોં કે લૂટને સે, લૂટતે સમય પકડે ગયે મનુષ્ય
કો અપને કારાગાર મેં બંદ કરને સે, ક્ષત્રત્ત્વનન સે-મકાનોં મેં છોતદેને

છે. રક્ષણુ માટે આશ્રયણીય હોવાના સામ્યથી તેને કુટંક-વાંસનાવન'ની જેમ
ખતાવવામાં આવ્યો છે.

(તણં સે વિજય તક્કરે ચોરસેનાવડૈ રાયગિહસ્સ દાહિણપુરત્થિમં જણવયં
બહૂહિં ગામધાણ્હિ ય નગરધાણ્હિ ય ગોગ્ગહણેહિ ય બંદિગ્ગહણેહિ ય સ્વત્ત્વણેહિ ય
પંથકુહણેહિ ય ઉલીએમાણે ૨ વિદ્વંસણે માણે ૨ ણિત્થાણં, ણિદ્વણં કરેમાણે વિહરહ,
તણં સે ચિલાણ દાસ ચેડે રાયગિહે બહૂહિં અત્થામિસંકીહિ ય ચોજ્જામિસંકી-
હિ ય ઘણિયેહિ ય જૂયકરેહિ ય પરબ્ભવમાણે ૨ રાયગિહાઓ નગરાઓ ણિગ્ગચ્છહ,
ણિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ સીહગુહા ચોરપલ્લી તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા વિજયં
ચોરસેનાવડૈ ઉવસંપજિત્તાણં વિહરહ)

ચોરોનો સેનાપતિ તે વિજય તસ્કર રાજગૃહ નગરના અગ્નિકોણના
જનપદોને, ઘણાં ગ્રામોને વિનાશ કરીને નગરોને ઘાત કરીને ગાયોને લૂટીને
લૂટતી વખતે પકડી પાડેલા માણુસોને ચોતાના કારાગારમાં પૂરી દબને, ક્ષત્ર-
ત્ત્વનન કરીને, મકાનોમાં ખાતર પાડીને અને મુસાફરોને મારીને નિરંતર

‘પંથકુટ્ટણેહિય’ પાન્થકુટ્ટણે=પથિકજનમારણેશ્ચ ‘ઉવીણેમાણે ૨’ ઉત્પીડયન્ ૨=સન્તતમુત્પીડનં કુર્વન્, ‘વિધ્વંસેમાણે ૨’ વિધ્વંસયન્ ૨=સર્વદા વિધ્વંસં કુર્વન્, ‘ગિસ્થાણં’ નિઃ સ્થાનં=ગૃહરહિતં, ‘ગિદ્ધણં’ નિર્ધનમ્=ધનરહિતં કુર્વન્ વિહરતિ । તતઃ સ્વલ્લુ સ ચિલાતો દાસચેટઃ રાજગૃહે વહુભિઃ ‘અત્યાભિસંકીહિય’ અર્થાભિશક્તિભિઃ=અયં ચિલાતો મદીયમર્થં ગૃહીતવાન્, ગ્રહીષ્યતિ વા ઇત્યભિશક્તિ-શીલૈઃ ‘ચોજ્જાભિસંકીહિય’ ચૌર્યાભિશક્તિભિઃ=અયં મમ ગૃહે ચૌર્યં કૃતવાન્ કરિષ્યતિ વેત્યભિશક્તિ-શીલૈશ્ચ ‘દારાભિસંકીહિ’ દારાભિશક્તિભિઃ=‘અયં મમ દારાન્ દૂષિતવાન્ દૂષયિષ્યતિ વેત્યભિશક્તિ-શીલૈઃ તથા ધનિકૈશ્ચ દ્યૂતકરૈશ્ચ પરા-ભૂયમાણઃ ૨= પુનઃ પુનઃ પરાભવં પ્રાપ્યમાણો રાજગૃહાત્ નગરાદ્ બહિઃ નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય, યત્રૈવ સિંહગૃહા ચોરપલ્લી તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય વિજયં ચોરસેના-પતિમ્ ઉપસંપદ્ય=પ્રાપ્ય વિહરતિ ॥ સૂ.૩ ॥

સે, એવં પથિકજનોં કે મા.ને સે, નિરન્તર પીડિત કરતા વિધ્વંસ કરતા કરતા ઓર ગૃહ વિહિન કરતા રહતા થા । હસ કે પશ્ચાત્ વહ દાસચેટક ચિલાત રાજગૃહ નગર મેં અનેક અર્થાભિશંક-હસ ચિલાત ને હમલોગોં કે દ્રવ્ય કો હરણ ક્રિયા હૈ તથા હસી તરહ સે યહ આગે ખી કરેગા-પ્રકાર કી શંકા કરને વાલે, ચૌર્યાભિશંકી હસને હમલોગોં કે ઘર મેં ઘુસકર પહિલે ચોરી કી હૈ-તથા હસી તરહ યહ આગે ખી કરેગા-હસ પ્રકાર કી આશંકા કરને વાલે, દારાભિશંકી-હસને પહિલે હમારી સ્ત્રિયોં કે સાથ ઘલાત્કાર ક્રિયા હૈ-હસી તરહ સે યહ આગે ખી કરેગા હસ તરહ કી અપની સ્ત્રિયોં કે સાથ ઘલાત્કાર કરને કી આશંકાવાલે પુરુષોં કે દ્વારા તથા ધનિક વ્યક્તિયોં કે દ્વારા, જુઆ સ્થેલને વાલે જ્વારિયોં કે દ્વારા પુનઃ પુનઃ પરાભૂત હોતા હુઆ રાજગૃહ નગર સે બાહર નિકલા

પીડિત કરતો, વિધ્વંસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો. ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમાં ઘણા અર્થાભિશંક-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનું હરણ કર્યું છે. તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ હરણ કરશે, આ બાતની શંકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશંકી-એણે અમારા ઘરોમાં પેસીને પહેલાં ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમાં પણ તે ચોરી કરશે જ-આ બાતની ચોરીની આશંકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશંકી-એણે પહેલાં અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર ઘલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ તે ચોક્કસ આવું કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર ઘલાત્કારની આશંકાવાળા પુરુષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારંવાર પરાભૂત થતો

अनैगारचमोमृतवर्षिणो टी० अ० १८ सुसमाश्रितिकाचरितवर्णनम्

६६१

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणा-
वइस्स अग्गे असिलट्ठगाहे जाए यावि होरथा, जाहे वि य णं
से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्ठिं वा काउं
वच्चइ ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुं पि हु कुवियवलं
हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणह
समग्गे सीहगुहं चोरपल्ली हव्वमागच्छइ । तएणं से विजए
चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते
य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से
विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मणा संजुत्ते यावि
होरथा । तएणं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स
महयाइं इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेति, करित्ता बहुइं
लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया
यावि होरथा । तएणं ताइं पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सदावेति,
सदावित्ता एवं वयासी—एवं खल्ल अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए
चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे
विजएणं चोरसेणावइणावहुईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा-
विण, तं सेयं खल्ल अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीह-
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकहु
अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलायं तीए
सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति । तएणं से चिलाए

और निकल कर जहां वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहां आया
वहां आकर वह चार सेनपति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

शङ्खशुद्ध नगरधी बडार नीकल्यो अने नीकणीने न्यां ते सिद्धशुद्ध नामे चोरपल्ली
हती त्यां आये, त्यां आवीने चोर सेनापतिनी साथे रहेवा दाये ॥सू०३॥

६६२

श्रीताचमैकयाङ्गसूत्रे

चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ । तएणं से चिलाए
चोरसेणावई चोराणय जाव कुडंगे यावि होत्था । से णं तत्थ
सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचणहं चोरसयाण य एवं जहा विजओ
तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं
जाव नित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य
चोरसेनापतेरस्यः=प्रधानः ‘असिउद्धगाहे’ असियष्टिग्राहः=असिः=करवालः,
यष्टिः=वंशदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियष्टिग्राहः=असियष्ट्यादिप्रचालनचतुरो
जातश्चापि अभूत् । ‘जाहे वि यणं’ यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक
चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर
का (अगो.....यावि हो०) सब से प्रधान असि, यष्टि, ग्रह-तलवार
और लाठी के चलाने में चतुर-बन गया । (जाहे वि य णं से विजए
चोरसेणावईगामघायं वा जाव पंथकोट्ठिं वा काउं वच्चइ, ताहे वि य णं
से चिलाए दासचेडे सुबहुं पि हु कूवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहेइ,
पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लि हव्वमाम-
च्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामों का घात करने के लिये,

(तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपल्ली (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक शिखात
(विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करेनो (अगो....
यावि हो०) सौरी प्रधान आसि, यष्टि (लाकड़ी) आड, तलवार अने लाठी
अज्ञातवासां चतुर अनी अथो.

(जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्ठिं वा
काउं वच्चइ, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुं पि हु कूवियबलं हयविम-
हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लि
हव्वमामच्छइ)

अथार ते चोर सेनापति विजय अ.भोना घात भाटे यावत् पयिकेने
हुंत्वा भाटे नीकेणतो हुतो त्पारे ते दास चेटक शिखात चोराने पडववा भाटे

ग्रामघातं वा यावत् 'पंथकोट्टि' पान्यकुट्टिम्=पथिकजनलुण्ठनं वा 'काउं' कर्तुं 'वच्चइ' व्रजति=गच्छति 'ताहेवि य' तदाऽपि च खलु स चिन्तातो दासवेष्टः सुबहु अपि 'हुं' इति वाक्यान्ङ्कारे कूवियवळं 'कूपिकवलं=चोरगवेषकसैन्यं 'हयविमहिय जाव' हतविमथित यावत्-सर्वथा विध्वस्तं कृत्वा 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=निवारयति। पुनरपि 'लद्धट्ठे' लब्धार्थः=लब्धः प्राप्तः, अर्थः=स्वाभिलषितं येन सः=प्राप्तस्वाभिलषितः, अत एव 'कयकज्जे' कृतकार्यः=कृतं कार्यं येन सः, कृतनिजकृत्यः 'अणहसमग्गे' अनयसमग्रः=अनयम्=अक्षतम्-अन्तराले केनाप्यनपहतं समग्रं=समस्तं चौरीद्यपहतवस्तुजातं यस्य सः=अलुण्ठित सर्वस्वः सिंहगुहां चोरपल्लि 'हव्वं' शीघ्रमागच्छति। ततः खलु स विजयश्चोर-सेनापतिः चिलातं तस्करं बह्वीः चोरविद्याश्च चोरमन्त्राश्च चोरमायाश्चोरनिकृतीश्च मायायाः प्रच्छादनार्थं या माया सा 'निकृतिः' उच्यते ताः 'सिक्खावेइ'

यावत् पथिक जनो को लूटने के लिये चलता था-तब वह दास चेटक चिलात भी चोर गवेषक सैन्य को हत, विमथित यावत् सर्वथा विध्वस्त करके पीछे भगा देता था-और स्वाभिलषित अर्थ को प्राप्तकर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर लिया करता था। इस तरह वह चोरी में मिले हुए द्रव्य को सुरक्षित रखता हुआ-बीच में किसी के भी द्वारा द्रव्य की छीना छपटी से रहित होता हुआ उस सिंहगुहा नाम के चोरपल्ली में बहुत जल्दी लौट आता था! (तएणं से विजए चोर सेनावई चिलायं तस्करं बह्वईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते :य चोर मायाओ चोर निगडीओ य सिक्खावेइ) उस चोर सेनापति विजय तस्कर ने चिलात चोर के अनेक चोर विद्याओं को, अनेक चोरमंत्रों को अनेक विध चोर सम्बन्धी मायाचारी को और माया को छिपाने के

आवेदा सैन्यने हत, विमथित यावत् संपूर्ण रीते विध्वस्त करीने लगादी भूकतो હતો અને પોતાના ઇચ્છિત અર્થને પ્રાપ્ત કરીને પોતાના કાર્યમાં સફળતા મેળવતો હતો. આ પ્રમાણે તે ચોરીમાં મેળવેલા દ્રવ્યને સુરક્ષિત રાખતો વચ્ચે કોઈ પણ બીજા વડે દ્રવ્યની લૂટ-પાટ ન થાય-તેમ પોતાની જાતને સુરક્ષિત રાખતો તે શીઘ્ર સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લીમાં પાછો આવતો રહેતો હતો.

(તરણં સે વિજણ ચારસેનાવઈ ચિલાયં તસ્કરં બહૂઈઓ ચોરવિજ્ઞાઓ ચોરમંતે ચ ચોરમાયાઓ ચોરનિગડીઓ ચ સિક્ખાવેઈ)

તે ચોર સેનાપતિ વિજય તસ્કરે ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓને, ઘણા ચોરમંત્રોને, ઘણી ચોર સંબંધી માયાચારીઓને અને માયાને છુપાવવા માટે બીજી માયાચારીઓ શીખવાડી.

शिक्षयति । ततः खलु स विजयो चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् 'कालधम्मणा' कालधर्मेण=मृत्युना संयुक्तश्चापि अभवत् मृतइत्यर्थः । ततः खलु तानि पञ्चचोर-शतानि=पञ्चशतसंख्यकाश्चौराः, विजयस्य चोरसेनापतेः महता २ इड्डिसकार-समुदणं 'ऋद्धिसत्कारसमुदयेन 'णीहरणं' निर्हरणं=श्मशानभूमिनयनं 'करेति' कुर्वन्ति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतककृत्यानि कुर्वन्ति, कृत्वा यावत् विगत-शोका जाताश्चापि अभवन् । ततः खलु तानि पञ्चचोरशतानि अन्योऽन्यं शब्द-यति शब्दयित्वा एवमवादिषुः—सर्वे मित्रित्वा परस्परमेवं विचारितवन्तइत्यर्थः एवं

लिये दूसरी और माया चारी को सिखला दिया । (तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मणा संजुत्ते यावि होत्था, तएणं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्डी सकार समुदणं णीहरणं करेति करित्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तएणं ताइं पंच चोर सयाइं अन्नमन्नं सहावेति, सहावित्ता एवं वयासी) इस से बाद वह चोर सेनापति विजय किसी एक दिन कालधर्मगत हो गया । तब उन पांच सौ चोरों ने चोर सेनापति विजय तस्कर को बड़े ठाट बाट के साथ अर्धी-श्मशान यात्रा निकाली बादमें उन्होंने ने मृत्युसंबन्धी जितने भी लौकिक कृत्य होते हैं वे सब किये । लौकिक कृत्य करके सबके सब धीरे २ शोक रहित जब बन चुके—तब उन पांच सौ चोरों ने परस्पर में एक दूसरे को बुलायो—और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा—विचार

(तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मणा संजुत्ते यावि होत्था, तएणं ताइं पंच चोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्डी सकारसमुदणं णीहरणं करेति करित्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तएणं ताइं पंच चोर सयाइं अन्नमन्नं सहावेति, सहावित्ता एवं वयासी)

त्यारपछी ते चोर सेनापति विजय केअ ओक दिवसे मृत्यु पाये। त्यारे ते पांचसे चोराये चोर सेनापति विजय तस्करनी लारे ठाठथी श्मशानयात्रा कादी त्यारपछी तेमणे तेना मृत्यु संभंधी लौकिक कृत्यो कयो। लौकिक कृत्यो पूरा कयो बाद धीमे धीमे त्यारे भधा शोक रहित थथा त्यारे ते पांचसे चोराये परस्पर ओकणीलने ओकाव्या अने ओक स्थाने ओकत्र थधने तेमणे आ प्रभाणे विचार कयो के—

अन्नगारधमांमृतवर्षिणी टी० अ० १८ सुंनुमावारिकाधरितवर्णनम्

१३५

खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! विजयश्चोरसेनापतिः कालधर्मेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहूर्द्भो चोर-विज्जाओ जाव ' बह्व्यः चोरविद्या यावत्-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षासु ' सिक्खाए ' शिक्षितः=पारङ्गमितः, ' तं ' तस्मात् कारणात् ' सेयं ' श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! चिलातं तस्करं सिंहगुहायाश्चोर-पल्याश्चोरसेनापतितयाऽभिपिञ्चितम्, अर्थात् अयं चिलातः तस्करोऽस्माभिः चोर सेनापतिपदे नियोज्यः, ' तिकट्टु ' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमट्टं ' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-(एवं खलु अम्हं देवानुप्रिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्म-णा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तस्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूर्द्भो चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाए, तं सेयं खलु अम्हं देवानुप्रिया ! चिलायं तस्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्टं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं । उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याएँ आदि सब कुछ सिखलाही दिया है । अतः हमलोगों को अब यही उचित है कि हमलोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पल्ली का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करलें अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एवं खलु अम्हं देवानुप्रिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तस्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूर्द्भो चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाए, तं सेयं खलु अम्हं देवानुप्रिया ! चिलायं तस्करं सीह गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्टं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति)

हे देवानुप्रियो ! भुओ, अम्हारा नायक चोर सेनापति विजय तो हुवे भरषु पाभ्या छे. तेमछे आ चिलात चोरने धणी चोर विद्याओ वगैरे अधु शीषव्युं छे. ओट्ठा भाटे हुवे अभने ओ न येव्य लागे छे के अभे लोके चिलात चोरने आ सिंहगुहा नामनी चोरपल्लीने। चोर सेनापति बनायी लधओ. ओट्ठे के चोर सेनापतिना स्थाने आ चिलात चोरनी नीम-लुं कशी लधओ. आ प्रभाछे विचार करीने तेमछे ओके भीजना विचार इय

‘ પહિમુર્ણેતિ ’ પ્રતિશ્રુયન્તિ=સ્વીકૃવન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય, ચિલાતં તસ્કરં ચોરસેના-
પતિતયા અર્થાત્ ચોરસેનાપતિપદે અભિષિચ્ચતિ । તતઃ સ્વલુ સ ચિલાતઃ ચોરસેના-
પતિર્જાતઃ, કીદૃશઃ ? इत्याह-‘ अहम्मिए जाव ’ अधार्मिको यावत्-विजयचोर-
सेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भवन् विहरति । ततः स्वलु स चिलातः चोर-
सेनापतिः ‘ चोराण य जाव ’ चोराणां च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च
‘ कुडंगे ’ कुडङ्गः आश्रयस्थानं चाऽपि आसीत् । स स्वलु तत्र सिंहगुहायां चोर-
पल्लयां पञ्चानां चोरशतानां च एवं यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्च-
शतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्थं

સ્વીકાર કર લિધા । ઓર સ્વીકાર કરકે ઉસ ચિલાત ચોર કો અન્ત મેં
ઉસ સિંહગુહા નામકી ચોર પહી કા ઝન્હોં ને ચોર સેનાપતિ કે રૂપ મેં
અભિષેક કર દિયા । (તણં સે ચિલાં ચોરસેનાવર્ડે જાવ અહમ્મિં
જાવ વિહરહ તણં સે ચોર સે० ચોરાણ ય જાવ કુડંગે યાવિ હોથા,
સે ણં તત્થ સીહગુહાં ચોરપહીં પંચણં ચોરસયાણં ય એવં જહા
વિજઓ તદ્દેવ સલ્લં જાવ રાયગિહસસ દાહિણપુરત્થિમિલ્લં જળવયં
જાવ ણિત્થાણં નિદ્ધણં કરેમાણે વિહરહ) હસ તરહ વહ ચિલાત ચોર
સેનાપતિ બન ગયા । ચોરસેનાપતિ બનકર વહ વિજય ચોર સેનાપતિ
કી તરહ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જૈસા હો ગયા । અતઃ વહ ચિલાત
ચોર સેનાપતિ ચોરોં કા યાવત્ પારદારિક આદિકોં કા કુડંગ કી તરહ
વાસોં કે વન કે સમાન-આશ્રયસ્થાન બન ગયા ઓર ઉસ સિંહગુહા
નામકી પહી મેં પાંચસો ચોરોં કા આધિપત્ય કરતા હુઆ વિજય તસ્કર

અર્થને સ્વીકારી લીધા અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરને તે સિંહગુહા
નામની ચોરપલ્લીને તેમણે ચોર સેનાપતિના રૂપમાં અભિષેક કરી દીધા.

(તણં સે ચિલાં ચોરસેનાવર્ડે જાવ અહમ્મિં જાવ વિહરહ તણં સે
ચોર સે० ચોરાણ ય જાવ કુડંગે યાવિ હોથા, સેણં તત્થ સીહગુહાં ચોરપહીં
પંચણં ચોરસયાણં ય એવં જહા વિજઓ તદ્દેવ સલ્લં જાવ રાયગિહસસ દાહિ-
પુરત્થિમિલ્લં જળવયં જાવ ણિત્થાણં નિદ્ધણં કરેમાણે વિહરહ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઇ ગયો. ચોર સેનાપતિ
બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જેવો
થઇ ગયો. તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરને યાવત્ પારદારિક વગેરેના
કુડંગની જેમ-વાસોના બનની જેમ-આશ્રયસ્થાન બની ગયો અને તે સિંહગુહા

अनंगारघमांमृतवर्षिणी श्री० अ० १८ सुसुमादारिकाविरचितवर्णनम्

६१७

जनपदं 'निस्थाणं निदणं' निस्थानं निर्धनं गृहरहितं धनरहितं च कुर्वन्
विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइं विउलं
असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता पंचचोरसए आमंतेइ ।
तओ पच्छा णहाए कयबलिकम्मेभोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं
चोरसएहिं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च
जाव पसणं च आसाएम्माणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए
ते पंच चोरसए विउलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ,
सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवा-
णुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्डे०, तस्स
णं धूया, भद्दाए अत्तया पंचणहं पुत्ताणंअणुमग्गजाइया सुंसुमा
णामं दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा, तं गच्छामो
णं देवाणुप्पिया ! धणस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंयामो, तुब्भं
विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले ममं सुंसुमा दारिया । तएणं ते
पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति ।
तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं
अल्लचम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुट्ठावरण्हकालसमयंसि पंचहिं
चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमु-
हिणहिं फलएहिं णिकट्टाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं

की तरह राजगृह नगर के बाहिर के अग्निकोणस्थ जनपदों को गृह
रहित और धन रहित करने लग गया ॥ सूत्र ४ ॥

नामनी चोरपट्टीमां पांयसे। थोदेने। अग्निपति थधने विजय तस्करनी जेम
राजगृह नगरनी अड्डारना अग्निकोणु तरइना जनपदोने गृहरहित अने धन-
रहित ओटवे के अरबाह करवा दाय्या. ॥ सूत्र ४ ॥

તે વિજય તરફર ચોર સેનાપતિ ઘણા ચોરા, ઘણા પરત્વી લ'પટો, અધિભેદકો, સંધિચેદકો-ખાકોઈ પાડીને ધનનું અપહરણ કરનારાઓ, ક્ષાત્ર-ખનકો-સંધિભાગ વગરની લીંતમાં ખાકોઈ પાડીને ચોરી કરનારાઓ, રાજના અપકારકો-રાજદ્રોહીઓ, ઋણ કરનારાઓ (દેવાદારો) બાળહત્યા કરનારાઓ, બાળહત્યા કરનારાઓ, વિશ્વાસઘાત કરનારાઓ, બુઘાર રમનારાઓ, રાજની આજ્ઞા લીધા વગર જ થોડી જમીનને પોતાના અધિકારમાં લેનારાઓ તેમજ બીજા પણ ઘણા છિન્ન, ભિન્ન બહિરાહત લોકોના માટે તે કુટંક જેવો હતો. જેમના હાથ પગ વગેરે કાપી નાખવામાં આવ્યા છે એવાં પ્રાણીઓ, છિન્ન શબ્દ વડે જેમનાં નાક વગેરે કાપવામાં આવ્યાં છે એવાં પ્રાણીઓ, ભિન્ન શબ્દ વડે અને રાજ્યાપરાધ બદલ જે દેશમાંથી બહાર કાઢી મૂકવામાં આવ્યા છે એવા માણસો અહીં “ બહિઃ આહત ” શબ્દ વડે સંબોધિત કરવામાં આવ્યા

अमंगारधर्मासृतवर्णिणी टीका अ० १८ सुसुमादारिकाचरितवर्णनम्

६६९

भुत्तुतरागए' जिमितभुत्तोत्तरागतः=जिमितः=कृतभोजनः भुत्तोत्तरकालमागतः यावत् परमशुचिभूतः सुखासनवरगतः सन् तानि पञ्च चोरशतानि विपुलेन=अत्यर्थेन 'धूपपुष्पगन्धमल्लालंकारेण' =धूप पुष्पगन्धमाल्यालंकारेण=धूपः=सुगन्धित द्रव्येण उत्पन्नो धूपः, पुष्पं=कुसुमम्, गन्धः=चन्दनादि माल्यम्-माला, अलङ्काराणि=आभरणानि, एतेषां च समाहारद्वन्द्वः, तेन सत्करोति, सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य एवम्-अवदत्-एवं खलु हे देवानुमिथाः ! राजगृहे नगरे धन्यो

ल्लालंकारेण सत्कारेह, सम्माणेह, सत्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी) विपुल मात्रो में, अशन पान, खादिम एवं स्वादिमरूप चारों प्रकार का आहार बनवा कर उन पांचसौ चोरों को आमंत्रित किया। जब वे सब आचुके-तब उस चिलात चोर ने स्नान से निवट कर और वायसादि को अन्नादिका भाग देनेरूपबलिकर्म आदि कर भोजन मंडपमें बैठकर उन पांच सौ चोरों के साथ उस विपुलमात्रा में निष्पन्न हुए अशन, पान, खादिम, एवं स्वादिमरूप चारों प्रकार के आहार को तथा सुरा, यावत् प्रसन्न मदिरा को खूब मनमाने रूप में पिया खाया जब वे सब के सब अच्छी तरह भोजन कर उत्तर काल में परमशुचिभूत होकर आनंद के साथ एक स्थान पर आकर बैठचुके तब उस चिलात चोर सेनापति ने उनका धूप से-सुगंधित द्रव्य से निष्पन्न हुए धूप से, पुष्पों से, चंदन आदि से, मालाओं से, और आभरणों से सत्कार किया सम्मान किया। सत्कार सम्मान करके फिर उनसे उसने इस प्रकार

पुष्कण प्रभाषुमां अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आरे जातने। आहार जनावडावीने ते पांचसो चोराने आमंत्रित कर्था। न्यारे तेज्जो जधा आवी गया त्यारे ते खिलात चारे स्नान कर्तुं अने तयारपछी तेज्जो कागडा वगेरे पक्षीज्जोने अन्न वगेरेने लाग अर्पीने बलिकर्म वगेरे कर्तुं। तयारभाह तेज्जो खोजन मंडपमां जेसीने ते पांचसो चोरानी साथे ते पुष्कण प्रभाषुमां जनावडावेला, अशन, पान, खादिम अने स्वादिम रूप आरे प्रकारना आहारने तेमज सुरा यावत् प्रसन्न मदिराने जूज धराध धराधने आधा-पीधां। न्यारे तेज्जो जधा सारी रीते जभीने परमशुचीभूत बधने आनंदपूर्वक जेक स्थान उपर आवीने जेकडा थया-जेसी गया, त्यारे ते खिलात चोर सेनापतिजे तेमने धूपथी, पुष्पेथी, चंदन वगेरेथी, भाजाज्जेथी अने आभरणेथी सत्कार कर्था अने सम्मान कर्तुं। सत्कार तेमज सम्मान करीने तेज्जो तेमने आ प्रभाषे कथुं हे—

૬૭૦

જીતાધર્મકયાક્ષત્ર

નામ સાર્થવાહઃ આદ્યોઽસ્તિ । તસ્ય સ્વલુ દુહિતા મદ્રાયા આત્મજા પશ્ચાનાં પુત્રા-
નામનુમાર્ગજાતિકા=પશ્ચાનાં પુત્રાનાં જનનાન્તરં સમુત્પન્ના સુંસુમા નામ દારિકા
ચાપિ અસ્તિ, કીદશી સા ? ' અહીં જાવ સુરુવા ' અહીં યાવત્ સુરુવા=અહીં
પશ્ચેન્દ્રિયશરીરા યાવત્ સુરુપવતી, ' તં ' તત્=તસ્માદ્ ગચ્છામઃ સ્વલુ હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્ય ગૃહં વિલુમ્પામઃ=લુપ્તામઃ, યુક્તમકં ધનકનક

કહા-(એવં સ્વલુ દેવાનુપ્રિયા ! રાયગિહે ગયરે ધણે જામં સત્થવાહે
અહું તસ્સ ણં ધૂયા મદ્રાએ અત્તયા પંચણં પુત્તાણં અણુમગ્ગજાડ્યા
સુંસમા જામં દારિયા યાવિ હોત્થા, અહીં જાવ સુરુવા તં ગચ્છામોણં
દેવાનુપ્રિયા ! ધણસસ સત્થવાહસસ ગિહં વિલુમ્પામો તુલ્લં વિડલે
ધણકળમ જાવ સિલપ્પવાલે, મમં સુંસમા દારિયા ! તણં તે પંચ
ચોરસયા ચિલાયસસ ચોરસેણવઈસસ એયમટ્ઠં પહિસુણેતિ । તણં સે-
ચિલાએ ચોરસેણાવઈ તેહિં પંચહિં ચોરસહિં સદ્ધિ અલ્લચમ્મં દુરુહહ,
દુરુહિત્તા પુવ્વાવરણ્હકાલસમયંસિ પંચહિં ચોરસેહિં સદ્ધિ) હે દેવાનુ-
પ્રિયો ! સુનો-એક યાત કહના હૈ-વહ્નિસ પ્રકાર હૈ-રાજગૃહ નગર મેં
ધન્ય નામ કા એક ધનિક એવં સર્વજન માન્ય સાર્થવાહ રહતા હૈ । ઇસ
કી એક લડકી હૈ । જિસકા નામ સુંસમા હૈ । યહ્નિસ ઉસકી પત્ની મદ્રા
માર્ગા સે પાંચ પુત્રોં કે બાદ ઉત્પન્ન હુઈ હૈ । યહ્નિસ અહીં પાંચોં ઇન્દ્રિયોં સે
યુક્ત શરીરવાળી હૈ તથા બહુત અધિક સુકુમાર એવં સુંદર હૈ । ઇસલિયે
-ચલો હે દેવાનુપ્રિયોં ! હમ સચ ચલેં ઓર ધન્ય સાર્થવાહ કે ઘર કો

(એવં સ્વલુ દેવાનુપ્રિયા ! રાયગિહે ગયરે ધણે જામં સત્થવાહે અહું
તસ્સ ણં ધૂયા મદ્રાએ અત્તયા પંચણં પુત્તાણં અણુમગ્ગજાડ્યા સુંસમા જામં દારિયા
યાવિ હોત્થા અહીં જાવ સુરુવા તં ગચ્છામો ણં દેવાનુપ્રિયા ! ધણસસ સત્થ-
વાહસસ ગિહં વિલુમ્પામો, તુલ્લં વિડલે ધણકળમ જાવ સિલપ્પવાલે, મમં સુંસમા
દારિયા ! તણં તે પંચ ચોરસયા ચિલાયસસ ચોરસેણાવઈસસ એયમટ્ઠં પહિ
સુણેતિ । તણં સે ચિલાએ ચોરસેણાવઈ તેહિં પંચહિં ચોરસેહિં સદ્ધિ અલ્લ ચમ્મં
દુરુહહ, દુરુહિત્તા પુવ્વાવરણ્હકાલસમયંસિ પંચહિં ચોરસેહિં સદ્ધિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, તમને મારે એક યાત કહેલી છે તે આ
પ્રમાણે છે કે રાજગૃહ નગરમાં ધન્ય નામે એક ધનિક અને સર્વજનમાન્ય
સાર્થવાહ રહે છે. તેને એક પુત્રી છે, તેનું નામ સુંસમા છે. ધન્યની પત્ની
મદ્રામાર્ગાના ગર્ભથી તે પુત્રી પાંચે બાઈઓ બાદ જન્મ પામી છે. તે અહીં
પાંચે ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત શરીરવાળી છે તેમજ ખૂબ જ સુકુમાર અને સુંદર છે.

યાવત્ શિલપ્રવાહઃ, મમ સુંસુમા દારિકા-લુપ્થિતેષુ વસ્તુષુ મધ્યે ધનકનકમણિ-
મૌક્તિકશિલાપ્રવાહાદિ વસ્તુજાતાનિ ઘુષ્માકં ભવન્તુ. મમ તુ એકા સુંસુમા દારિકા
ભવિષ્યતિ । તતઃ સ્વલુ તાનિ પશ્ચ ચોરશતાનિ ચિલાતસ્ય ચોરસેનાપતેઃ એતમર્થ
પતિશ્રુન્વન્તિ=સ્વીકુર્વન્તિ । તતઃ સ્વલુ સ ચિલાતશ્ચોરસેનાપતિઃ તૈઃ પશ્ચમિઃ
ચોરશતૈઃ સાર્દ્ધં 'અલ્લવમ્મં' આર્દ્રવમ્મં દૂરોહતિ, લુપ્થકાદિ લુપ્થનપ્રસ્થાનાત્
પૂર્વં માઙ્ગલ્યાર્થમાર્દ્રવમ્મંયારોહન્તીતિ તેષાં વ્યવહારઃ, દૂસ્થા, 'પુન્નાવરપ્પકાલસમ-
યંસિ' પૂર્વાપરાક્કાલસમયે '=દિનસ્ય ચતુર્થપ્રહરે પશ્ચમિશ્ચોરશતૈઃ સાર્દ્ધં
'સણ્ણદ્ધ જાવ ગહિયાઝહપહરણે' સન્નદ્ધ યાવત્ ગૃહીતાયુધપ્રહરણઃ=સમ્પદ્ધવદ્ધ-
વર્મિતકવચઃ=સંનદ્ધઃ=સજ્જીકૃતઃ, વદ્ધઃ=કશાવન્ધનેન સંવદ્ધઃ, વર્મિતઃ=અક્કે પરિ-
હિતઃ કવચો યેન સ તથોક્તઃ, 'ગૃહીતાયુધપ્રહરણઃ' ગૃહીતાનિ આયુધપ્રહરણાનિ

લૂટે-જો વસ્તુ હમ તુમ લૂટેંગે ડનમેં સે તુમ્હારી તો ધન, કનક, મણિ,
મૌક્તિક શિલાપ્રવાહ આદિ ચીજેં હોમી-ઑર મેરી કેવલ એવં વહ સુંસ-
માદારિકા હોમી-। હસ તરહ ડન પાંચસૌ ચોરોં ને અપને સેનાપતિ
ચિલાત ચોર કી હસ વાત કો માન લિયા । હસકે વાદ યહ ચોર સેના-
પતિ ચિલાત, ડન પાંચસૌ ચોરોં કે સાથ મીલે ચમડે પર બેઠ ગયા ।
લુટેરે લૂટેને કે લિયે જબ પ્રસ્થાન કરતે હૈ તચ વે પહિલે મીલે ચમડે પર
શુભ શકુન માનને કે નિમિત્ત બેઠતે હૈ એસા ડનમેં વ્યવહાર હૈ બેઠકર
ફિર વહ દિન કે ચતુર્થપ્રહર મેં પાંચસૌ ચોરોં કે સાથ (સીહગુહાઓ
ચોરપલ્લીઓ પહિનિક્કલમહ) ડસ સિંહગુહા નામ કી ચોરપલ્લી સે
નિકલા । (સણ્ણદ્ધ જાવ ગહિયાઝહપહરણે માહ્યગોસુહિપહિં ફલપહિં

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણે બધા ત્યાં જઈએ
અને ધન્ય સાર્થવાહતા ધરને લુંટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુંટીશું
તેમાંથી ધન, કણક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાહ વગેરે વસ્તુઓ તમારી ઘરે
અને ફક્ત તે સુંસમા દારિકા મારી થશે. આ પ્રમાણે તે પાંચસો ચોરોએ
પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી. ત્યારપછી તે ચોર
સેનાપતિ ચિલાત, તે પાંચસો ચોરોની સાથે સાથે ભીના ચામડા ઉપર બેસી
ગયો. લુંટારાઓ લુંટવા માટે ન્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલાં શુભ
શકુન માટે ભીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ જાતનો તેઓમાં રિવાજ છે.
ભીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહેારમાં પાંચસો ચોરોની
સાથે (સીહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ પહિનિક્કલમહ) તે સિંહગુહા નામની
ચોરપલ્લીમાંથી નીકળ્યો.

येन सः, गृहीताऽस्त्रशस्त्रः, 'माइयगोमुहियेहि' माइकगोमुखितैः = माइकानि = पक्ष्मत्राणि, गोमुखितानि = गोमुखाकाराणि = माइकानि च तानि गोमुखितानि तैः = उदररक्षार्थं भल्लूकरोमाट्टतैर्गोमुखाकारैः 'फलएहिं' फलकैः = पट्टिकेति प्रसिद्धः 'गिकट्टाहिं असिलट्टीहिं' निष्कृष्टाभिः असिपट्टिभिः, कोशवहिकृतैः खड्गैः, 'अंसगएहिं तोणेहिं' अंशगतैस्तूणैः = स्कन्धस्थितैस्तूणीरैः, 'सजीवेहिं धनूहिं' सजीवैर्धनुभिः = कोटयारोपितप्रत्यश्वैर्धनुभिः, 'समुक्खित्तेहिं सरेहिं' समुत्सिप्तैः शरैः = तूणीरसकाशान्निष्काशितैर्वाणैः, 'समुल्लालियाहिं दीहाहिं' समुल्लालिताभिः दीहाभिः = समुच्छालितैः शस्त्रविशेषैः 'ओसारियाहिं' अवस्वरिताभिः = नादिताभिः 'उरुघंटियाहिं' उरुघण्टिकाभिः = विशालघण्टाभिः 'छिप्पतूरेहिं

गिकट्टाहिं असिलट्टीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धनूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं, ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महयार उक्किट्टी सीहणाये चोरकलकल रवं समुहरवं भूयं करेमाणे) चोरपल्ली से वह किस तरह की स्थिति में निकला—यही बात सूत्रकार इन पंक्तियों में कह रहे हैं—वे कहते हैं कि जब वह अपनी चोरपल्ली में से निकला तो उस समय उसने अपने शरीर पर कवच को सज्जित करके कशाबंधन से अच्छी तरह बांध रखा था "गृहीतायुधप्रहरणः" आयुध और प्रहरण उसके दोनों हाथों में थे। रीछ के रोम से युक्त गोमुखाकार पट्टिका से, म्यान से बाहिर खेंची हुई तलवारों से, कंधों पर लटकते हुए भाथोंतूणीरों—से ज्यापर चढ़े हुए धनुषों से, तूणीर से निकाले गये बाणों से ऊपर उछाले गये शस्त्र विशेषों से,

(सण्णद्ध जाव गहियावहपहरणे माइयगोमुहियेहिं फलएहिं गिकट्टाहिं असिलट्टीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धनूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दिहाहिं ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया २ उक्किट्टसीहणाये चोरकलकलरवं समुहरवं भूयं करेमाणे)

शोरपल्लीभांथी तेओ। केवा रीते अडार नीकल्या ओ ७ वात सूत्रकार आ पंक्तिओभां २५४ करी रह्या छे. तेओ कडे छे के न्यारे ते पोतानी शोरपल्लीभांथी नीकल्या त्यारे तेओ पोताना शरीर उपर कवच धारणु करीने तेने कशाबंधनथी सारी रीते भांथी राख्युं डतुं. "गृहीतायुधप्रहरणः" आयुध अने प्रहरण तेना अने छाथेभां डतां. रीछना रोमथी युक्त गोमुखाकार पट्टिकाथी, म्यानभांथी अडार काढेली तरवारथी, अंभाओ उपर लटकता तूणीरथी, न्या उपर चढ़ेला धनुषथी, तूणीरभांथी काढवाभां आवेलां भाओथी, उपर डूँकवाभां आवेलां शस्त्र विशेषथी, शज्ज करता—भोटा धोथी

अनगरचमामृतवर्णिणी टी० अ० १८ सुंमुमाद्वारिकाचरितवर्णनम्

१७३

वज्रमाणेहि ' क्षिप्रतूर्यैः वाद्यमानैः=द्रुतं वाद्यमानैः तूर्यैः उपलक्षितः सन् ' महया-
महया उक्किट्टसीहणाये चोरकलकलरवं ' महामहोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलरवं-
अत्यन्तोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलशब्दं समुद्रवभूतं=समुद्रवेलावृद्धिसमये ध्वनि-
मिवकुर्वन्, यद्वा महता महता उत्कृष्टसिंहनादेन-' लुप्ततृतीयान्तं पदम् '
स्वकृतोत्कृष्टसिंहनादेनेत्यर्थः, शेषं पूर्ववत् । सिंहगुहातश्चोरपल्लीतः प्रतिनिष्का-
म्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव राजगृहं नगरं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य राजगृहस्य
नगरस्य अदूरसामन्ते एतं महद् ' गहणं ' गहनम्=वनम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य,
दिवसम्=शेषदिवसभागं क्षपयन्=व्यतियन् तिष्ठति ॥ सू०५ ॥

शब्दाद्यमान-बड़े २ घंटों से जल्दी २ बजते हुए बाजोंसे वह उपलक्षित
—युक्त था । तथा उसके निकलने पर जो चोरों का कलकल रव हुआ—वह
सिंह की गर्जना के जैसा महान उच्चस्वर था—तथा जिस समय समुद्र
बहता है उस समय जैसा उसका शब्द होता है—वैसा ही वह कल २
रव गर्भीर था । (पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूर सामन्ते एतं महं गहणं
अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवसं खवेमाणे चिट्ठइ) चोरपल्ली से
निकलकर वह जहां राजगृह नगर था वहां आया—वहां आकर के वह
राजगृह नगर के अदूरसामन्त—न अति दूर न अति समीप रहे हुए एक
महान जंगल में छिप रहे वहां छिपकर उसने अपना वह दिवस वहीं
पर ठहर कर समाप्त कर दिया ॥ सू०५ ॥

जल्दी जल्दी वागतां वाज्जोअथी ते युक्त इतो. तेमज्ज न्यारे ते नीक्खये
त्यारे योशेने जे धंघाट थये ते सिद्धनी गज्जना जेवे भइ ध्वनि इतो.
तेमज्ज न्यारे समुद्रमां भरती आवे छे अने त्यारे जेवे तेनो ध्वनि डोय
छे, ते भाणुसेनो ध्वनि पणु तेवो ज गंभीर इतो. (पडिनिक्खमित्ता जेणेव
रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामन्ते
एतं महं गहणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवसं खवेमाणे चिट्ठइ) चोरपल्लीमांथी
नीक्खणीने न्यां राजगृह नगर इतुं त्यां ते आव्यो. त्यां आवीने ते राजगृह
नगरथी धणु इर पणु नडि अने धणु नल्ल पणु नडि ओवा ओक मोटा वनमां
छुपाधनेरइ. त्यां छुपाधनेतेणु योतानो ते दिवस त्यां ज पसार करी दीधो. ॥ सू०५ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयांसि
 निसंत पडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहिएहिं
 फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहस्स
 नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 उदगवत्थिं परामुसइ, आयंते चोक्खे सुइमूए तालुग्घाडणिविजं
 आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उद-
 एण अच्छोडेइ, कवाडं विहाडेइ विहाडित्ता रायगिहं अणुप-
 विसइ, अणुपविसित्ता, महयारसदेणं उग्घोसेमाणेर एवं वयासी
 —एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए णामं चोरसेणावई
 पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमाणए
 धणणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे, तं जोणं णवियाएमाउ-
 याएदुद्धं पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धणणस्स सत्थ-
 वाहस्स गिहं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणणस्स गिहं विहा-
 डेइ। तएणं से धणणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं
 सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पंचहिं
 पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमइ । तएणं से चिलाए चोरसेणावई
 धणणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग
 जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेणहइ, गेणिहत्ता, रायगिहाओ
 पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव
 पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः ‘अद्वरत्तकालसमयंसि’ अर्धरात्रकालसमये=मध्यरात्रे, कीदृशे ‘निसंतपडिनिसंते’ निशान्त-प्रतिनिशान्ते=निशान्तं=जनध्वनिरहितं प्रतिनिशान्तं=प्रत्येकं गृहं यस्मिन् तस्मिन्, जने प्रसुप्ते सतीत्यर्थः, पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धम् ‘माइयगोमुहिण्हि’ माइयगोमु-खितैः, उदररक्षार्थं भल्लूकरोमावृतैर्गोमुखाकारैः ‘फलएहिं’ फलकैः=पट्टकैः उदरव-द्धकाष्ठफलकैरित्यर्थः, यावत् ‘मूइआहिं उरुवंटियाहिं’ मूकिताभिरुख्यंष्टिकाभिः=निः शब्दी कृताभिः विशालघण्टाभिर्युक्तः यत्रैव राजगृहस्य नगरस्य पौरस्य द्वारं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, ‘उदगवत्थि’ उदगवत्ति=चर्ममयजलपात्रम्, ‘मसक’ इति प्रसिद्धम् ‘परामुसइ’ परामुशति=गृह्णाति, अनन्तरम् ‘आयंते’ आवान्तः=कृतगुवादि प्रक्षालनः ‘चोक्खे’ चोक्षः=स्वच्छः अतएव ‘तालुग्वाडणिं विज्जं’

‘तएणं से चिलाए चोरसेणावई’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (चोरसेणावई से चिलाए) चोरसेनापति वह चिलात चोर (निसंतपडिनिसंते अद्वरत्तकालसमयंसि) जब जन ध्वनिरहित प्रत्येक घर हो गया ऐसे मध्यरात्रिके समयमें (पंचहिं चोर-सएहिं सद्धिं) उन पांचसौ चोरों के साथ (माइय गोमुहिण्हि फलएहिं जाव मूइआहिं उरुवंटियाहिं जेणेव रायगिहस्स नगरस्स पुरस्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ) अपने उदर की रक्षा के निमित्त बद्ध भल्लूक के रोमों से आवृत हुए गोमुखाकार काष्ठफलकों से यावत् निःशब्दीभूत विशाल घंटिकाओं से युक्त होकर जहां राजगृह नगर का पूर्वदिशा का द्वार था वहां आया । (उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ, आयंते, चोक्खे, सुइभूए, तालुग्वाडणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स

‘तएणं से चिलाए चोरसेणावई’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारभाइ (चोरसेणावई से चिलाए) चोर सेनापति ते चिलात चोर (निसंतपडिनिसंते अद्वरत्तकालसमयंसि) न्याये दरेके दरेके धरमां भाणुसेना अवाज्ज ओकदम अंध अंध गये, जेना ते मध्यरात्रिना समये (पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं) ते पांचसौ चोरानी साथे

(माइय गोमुहिण्हि फलएहिं जाव मूइआहिं उरुवंटियाहिं जेणेव राय गिहस्स नगरस्स पुरस्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ)

पोताना पेटनी रक्षा भाटे रीछना रेमाथी आवुत्त थयेला गोमुआकार काष्ठ इलकोथी यावत् शांत अंध अंधेदी मोठी घंटिकाओथी युक्त अंधने न्यां राजगृह नगरनुं पूर्व दिशानुं द्वार छतुं त्यां आव्या. (उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ आयंते चोक्खे सुइभूए, तालुग्वाडणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता

तालोद्घाटिनीं विद्याम् 'आवाहेइ' आवाहयति=स्मरति 'आवाहत्ता' आवाह्य=स्मृत्वा राजगृहस्य द्वारकपाटानि उदकेन 'आच्छोडेइ' आच्छोटयति=अभिषिञ्चति, 'आच्छोडित्ता' आच्छोटय=अभिषिच्य, कपाटं 'विहाडेइ' विघाटयति=उद्घाटयति, विघाटय सकलचोरैः सहितः राजगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य महता महता=अतिमहता शब्देन 'उग्योसमाणे २' उद्गोषयन् २=मुहुर्मुहुर्घोषणां कुर्वन् एवमवदत्, घोषणाप्रकारमाह-एवं खलु अहं हे देवानुप्रियाः ! चिलातो नाम चोरसेनापतिः पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धम् सिंहगुहातश्चोरपल्लीत इह 'हव्यं' हव्यं=

दुवारे कवाडे उदणं अच्छोडेइ कवाडं विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिहं अणुपविसइ अणुपविसित्ता महया २ सहेणं उग्योसेमाणे २ एवं बयासी-एवं खलु अहं देवानुप्रिया चिलाए नामं चोरसेणावेई पंचहिं चोरस-एहिं सद्धिं सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्यमागए धण्णस्स सत्थवा-हस्स गिहं घाउंकामे) वहां आकर के उसने चर्ममय जलपात्र को-मसक को-अपने हाथ में लिया-और उसके जल से आचमन किया-आचमन करके जब वह शुद्ध परमशुचीभूत हो चुका-तब उसने तालोद्घाटिनी विद्या का आवाहन किया-स्मरण किया-और स्मरण करके राजगृह के द्वार कपाटों को उदक के छींटों से सिञ्चित किया। सिञ्चित करके फिर उसने उन कवाडों को खोला और खोल करके फिर वह समस्त चोरों के साथ राजगृह नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया। प्रविष्ट होकर के उसने वहां बड़े-आवाजसे बारंबार घोषणा करते हुए इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! सुनो-मैं चोरसेनापति चिलान नाम का चोर हूँ-अभी २

रायगिहस्स दुवारकवाडे उदणं अच्छोडेइ कवाडं विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिहं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया २ सहेणं उग्योसेमाणे २ एवं बयासी-एवं खलु अहं देवानुप्रिया चिलाए नामं चोरसेणावेई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्यमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउंकामे)

त्यां आवीने तेणे आभडानी थेली-भशक-ने पोताना हाथमां दीधी अने तेना पाणीथी आयमन कथुं. आयमन करीने न्यारे ते शुद्ध परम-शुचीभूत थर्ध बूद्धेया त्यारे तेणे तालोद्घाटिनी विद्यानुं आवाहन कथुं-स्मरण कथुं, अने स्मरण करीने राजगृहना दरवाजनां कमाडोने पाणीथी सिञ्चित करीने तेणे ते कमाडोने उघाडयां. उघाडीने ते अघा येथेनी साथे राजगृह नगरनी अंदर प्रविष्ट थर्ध गयो. प्रविष्ट थर्धने तेणे त्यां मोटा साडे बारंवार घोषणा करतां आ प्रमाणे कथुं के डे देवानुप्रियो ! सांभलो, हुं चोर सेनापति

કેનેગારધર્મામૃતવર્ષિની ટી. ૦ અ. ૧૮ સુસુમાદારિકાચરિતવર્ણનમ

૬૭૬

શીઘ્રમ્ આગતઃ ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્ય ગૃહં 'ઘાઝકામે' ધાતયિતુકામઃ=લુઠયિતુકામઃ
 હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! યૂયં મૃણુત, પશ્ચશ્વતચૌરૈઃ સદાહં ચિલાતશ્ચોરસેનાપતિરત્રધન્યસ્ય
 સાર્થવાહસ્ય ગૃહં લુઠયિતુમાગતોઽસ્મીતિ ભાવઃ, 'તં' તત્=તસ્માત્ કારણાત્
 'જો જં' યઃ સ્વલુ 'જવિયાણ માઝાણ' નવ્યાયાઃ માતૃકાયાઃ 'દુદ્ધં પાઝકામે'
 દુગ્ધં પાતુકામઃ=યઃ સ્વલુ મદીયહસ્તાન્મૃત્યું પ્રાપ્ય પુનર્ભાવિભવભાવિન્યા નૂતનાયા
 માતૃદુગ્ધામિલાપીભવેત્ 'સેજં' સ સ્વલુ 'જિગ્મચ્છઝ' નિર્ગચ્છતુ મમ સંમુલ્લ
 માગચ્છતુ 'ત્તિ કદ્દુ' ઇતિ કૃત્વા=ઇત્યમુક્ત્વા યત્રેવ ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્ય ગૃહં તત્રેવ
 પાંચસૌ ચોરોં કે સાથ યહાં સિંહગુહા નામ કી ચોરપત્લી સે આયા હુઆ
 હું। મેરી ઇચ્છા ધન્યસાર્થવાહ કે ઘર કો લૂટને કી હૈ-(તં) ઇસલિયે
 -(જો જં જવિયાણ, માઝાણ, દુદ્ધં પાઝકામે સેજં જિગ્મચ્છઝ, ત્તિકદ્દુ
 જેજેવ ધળ્લસસ સત્થવાહસસ ગિહે તેજેવ ઝવાગચ્છઝ, ઝવાગચ્છિત્તા
 ગિહં વિહાઢેઝ। તણં સે ધળ્લે ચિલાણં ચોરસેનાવજ્ઞા પંચહિં ચોર-
 સણિં સદ્ધિ ગિહં ઘાઝજમાણં પાસઝ, પાસિત્તા ખીણ તત્થે ૪ પંચહિં
 પુત્તેહિં સદ્ધિ ઇગંતં અવક્કમઝ,। તણં સે ચિલાણ ચોરસેનાવજ્ઞ ધળ્લસસ
 સત્થવાહસસ ગિહં ઘાણ, ઘાહિત્તા સુવહુધળ્લકળગ જાવ સાવણ્ણં સુંસમં
 ચ દારિયં ગેળ્હઝ, ગેળ્હિત્તા રાયગિહાઓ પઢિળિલ્લમઝ, પઢિળિલ્લમિત્તા
 જેજેવ સીહગુહા તેજેવ પહારેત્થ ગમળાણ) જો નવીન માતા કા દૂધ
 પીના ચાહતા હો-મેરે હાથ સે મૃત્યુ કો પ્રાપ્ત કર પુનઃ ભાવિભવ મેં
 હોનેવાલી જનની કા દુગ્ધ પાન કરને કા જો અમિલાપી બન રહા હો

ચિલાત નામે ચોર છું. હમણાં જ હું પાંચસૌ ચોરોની સાથે અહીં સિંહગુહા
 નામની ચોરપત્લીથી આવ્યો છું. ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લૂટવાની મારી
 ઇચ્છા છે. (તં) માટે

(જોજં જવિયાણ, માઝાણ, દુદ્ધં પાઝકામે સેજં જિગ્મચ્છઝ, ત્તિ કદ્દુ
 જેજેવ ધળ્લસસ સત્થવાહસસ ગિહે તેજેવ ઝવાગચ્છઝ, ઝવાગચ્છિત્તા ધળ્લસસ ગિહં
 વિહાઢેઝ, તણં સે ધળ્લે ચિલાણં ચોરસેનાવજ્ઞા પંચહિં ચોરસણિં સદ્ધિ ગિહં
 ઘાઝજમાણં પાસઝ, પાસિત્તા ખીણ તત્થે ૪ પંચહિં પુત્તેહિં સદ્ધિ ઇગંતં અવક્કમઝ।
 તણં સે ચિલાણ ચોરસેનાવજ્ઞ ધળ્લસસ સત્થવાહસસ ગિહં ઘાણ, ઘાહિત્તા સુવહુ
 ધળ્લકળગ જાવ સાવણ્ણં સુંસમં ચ દારિયં ગેળ્હઝ, ગેળ્હિત્તા રાયગિહાઓ પઢિ-
 ળિલ્લમઝ, પઢિલ્લમિત્તા જેજેવ સીહ ગુહા તેજેવ પહારેત્થ ગમળાણ)

જે નવી માતાનું દૂધ પીવા ઇચ્છે છે એટલે કે મારા હાથથી મૃત્યુ
 પામીને ફરી ખીળા બવમાં થનારી માતાનું દૂધ પીવા જે ઇચ્છતો હોય તે

उपागच्छति, उपागत्य धन्यस्य गृहं 'विहाडे' विघाटयति=उद्धाटयति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः चिलातेन चोरसेनापतिना पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं गृहं 'घाड्ज्जमाणं' घात्यमानं=लुण्ठयमानं पश्यति, हृष्टा, मीतः=भयं प्राप्तः, त्रस्तः=त्रासंगतः, त्रसितः=विशेषतस्त्रासं प्राप्तः 'उव्विग्गे' उद्विग्नः=भयमस्माकं सर्वस्वमपहरति अहमस्य किमपि कर्तुं न शक्नोमीति हेतोः परमचिन्तामापन्नः, पञ्चभिः पुत्रैः सार्धम् 'एगंतं' एकान्तम्=भयरहितं स्थानम् 'अवक्कमइ' अपक्राम्यति=अपगच्छति । ततः खलु स चिलातः चोरसेनापतिः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं घातयति=लुण्ठयति घातयित्वा लुण्ठयित्वा सुबहुं 'धणकणग जाव सावएज्जं' धनकनक यावत् स्वापतेयम्=धनकनक मणिमौक्तिकादिकं द्रव्यं सुसुमां च दारिकां गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सिंहगृहा तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुमुद्यतोऽभूत् ॥ सू०६ ॥

-वही मेरे सम्मुख आवे-इस प्रकार कहकर वह जहां धन्यसार्थवाह का घर था वहां गया-वहां जाकर उसने धन्यसार्थवाह के घर को खोला जब धन्यसार्थवाह ने पांचसौ चोर के साथ चोरों सेनापति चिलात के द्वारा अपने घर को लुटता हुआ देखा-तो देखकर वह भय को प्राप्त हो गया-और त्रस्त एवं त्रसित-विशेष त्रास को प्राप्त होकर अन्त में वह उद्विग्न बन गया यह हमारा सर्वस्व हरण कर रहा है और मैं इसका कुछ भी नहीं कर सकता हूँ-इस ध्यान से वह चिन्ताकुल हो गया-और चिन्ताकुल होकर अपने पांचों पुत्रों के साथ वहां से निर्भय स्थान में चला गया । चोर सेनापति चिलात ने धन्य सार्थवाह को खूब मनमाना लूटा और लूट करके उसमेंसे बहुत सा धन कनक, मणि, मौक्तिक आदि द्रव्यों को एवं सुसमादारिका को ले लिया-। लेकर वह राजगृह नगर से

भारी सामे आवे आ प्रमाणे कहींने ते न्यां धन्य सार्थवाहनं घर छंतुं त्यां गये। त्यां जेधने तेणे धन्य सार्थवाहना घरने उद्धाड्युं न्यादे धन्य सार्थवाहे पांचसौ चोरानी साथे चोर सेनापति चिलात चडे पोताना घरने लुटानुं जेथुं त्यादे जेधने ते लयलीत थध गये। अने त्रस्त तेमज त्रसित (विशेष त्रास) प्राप्त करीने छेवटे उद्विग्न थध गये। आ अमाइ सर्वस्व हरण करी रह्यो छे अने हुं जेनुं कंठज जगारी शकतो नथी। आ जतने विचार करीने ते चिन्ताकुल थध गये। अने चिन्ताकुल थधने ते पोताना पांचे पुत्रानी साथे त्यांथी निर्भय स्थानमां जतो रह्यो। चोर सेनापति चिलाते धन्य सार्थवाहना घरने पूण छच्छा मुज्ज लूट्युं अने लूटीने तेमांथी धाखुं धन, कनक, मणि, मोती वगैरे द्रव्ये तेमज सुसमा दारिकाने लध लीधी। लधने ते राजगृह

अनगरधर्मावृत्तवर्षिणी टी० अ० १८ सुंसुमादारिकाचरितनिरूपणम् ६७९

मूलम्—तएणं से धन्ने सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता, महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेंति, उवणित्ता, एवं वयासी—एवंखलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं ममगिहं घाएत्ता धणकणगं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव पडिगए । तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुंसुमा दारियाए कूवं गमित्तए, तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! सै विउले धणकणगे, ममं सुंसुमा दारिया । तएणं ते णगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पीडसुणित्ता संनद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया२ उक्किट्ठुं जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता, जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, चिलाएणं चोरसेणाव-इणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हयमहिय जाव पडिसेहेंति । तएणं ते पंच चोरसया णयरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विउलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ

वापिस निकला—और निकल करके जहां सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी—उस ओर चलने के लिये उद्यत हो गया ॥ सू० ६ ॥

नगरभांथी पाछे अडार आये। अने आनीने न्यां सिद्धगुहा नामे चोरपल्ली छती ते तरङ्ग खाना थवा तैयार थछ गये। ॥ सूत्र ६ ॥

समंता विप्पलाइत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया ते विउलं धण-
 कणगं गेण्हंति, गेण्हत्ता जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति ।
 तएणं से चिलाए तं चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय
 जाव भीए तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीह-
 मद्धं अडविं अणुप्पविट्ठे । तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं
 चिलाएणं अडवीमुहं अवहीरमाणिं पासित्ताणं पंचहिं पुत्तेहिं
 सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धवद्ध० चिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छ-
 माणे अभिगज्जंते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे
 अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ । तएणं से चिलाए तं धण्णं
 सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सन्नद्धवद्ध० समणुगच्छ-
 माणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कार-
 परक्कमे जाहे णो संचाएइ सुंसुमं दारियं णिव्वाहितए, ताहे
 संते तंते परितंते नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता
 सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता, तं गहाय तं
 अग्गामियं अडविं अणुप्पविट्ठे । तएणं से चिलाए तीसे अगा-
 मियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठ दिसाभाए,
 सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओ-
 रालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउं
 जाव आहारं आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं४
 हिलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ, जहा व से चिलाए
 तक्करे ॥ सू० ७ ॥

अन्नगारधर्माभूतवर्षिणी टी० अ० १८ सुंसुमादारिकावर्तितनिरूपणम्**१८१**

टीका—‘तणं से’ इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति । उपागत्य सुबहुं धनकनकं सुंसुमां च दारिकाम् अपहृतां ज्ञात्वा ‘महत्थं महग्घं महरिहं’ महार्थं महाघं महार्हम्=महानर्थः प्रयोजनं यस्मिन् तत्=महार्थं=महाप्रयोजनकम् ; बहुमूल्यं पुनः महतां योग्यम् ‘पाहुडं’ प्राभृतं=उपायनं गृहीत्वा यत्रैव ‘णगरगुत्तिया’ नगरगोप्तृकाः=नगररक्षकाः कोटपालादयः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत्=महाघं महार्हं प्राभृतम् ‘उवणेइ’ उवनयति=समर्पयति, उपनीय=समर्प्य एवमवदत्—एवं खलु हे देवानु-

‘तणं से धन्ने सत्थवाहे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तणं) इसके बाद (से धन्ने सत्थवाहे) वह धन्य सार्थवाह (जेणेव सरगिहे तेणेव उवागच्छइ) जहां अपना घर था वहां आया (उवागच्छित्ता सुबहुं धणकणमं सुंसमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरियं पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ) वहां आकरके उसने अपने घरमें से बहुत सा धन कनक एवं सुंसमा दारिका को हरण किया हुआ जब जाना तब वह महार्थ बहुमूल्य एवं महापुरुषों के योग्य भेंट लेकर जहां नगर रक्षक—कोटपाल—आदि थे वहां गया—(उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेति, उवणित्ता एवं वयासी) वहां जाकर उसने उस महाप्रयोजन साधक भूत बहुमूल्य तथा महापुरुषों के योग्य भेंट को उनके समक्ष रखदिया—और रखकर उनसे उसने इस प्रकार कहा—(एवं

‘तणं से धन्ने सत्थवाहे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तणं) त्तरपछी (से धन्ने सत्थवाहे) ते धन्य सार्थवाह (जेणेव सरगिहे तेणेव उवागच्छइ) जहां पीतानुं घर छतुं त्यां आय्यो।

(उवागच्छित्ता सुबहु धणकणमं सुंसमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरियं पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ)

त्यां आवीने तेण्हे पीताना घरमांथी पुण्ण प्रमाणुमां धन, कनक अने सुंसमा दारिकानुं उरण्ण करवामां आवेतुं जाण्णीने ते महार्थ, अहु किमती अने महापुरुषोने योग्य छोट लधने ज्थां नगर-रक्षक-कोटपाल-वगेरे छता त्यां गथे। (उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेति, उवणित्ता एवं वयासी) त्यां जधने तेण्हे ते महाप्रयोजन साधकभूत अहु किमती तेमज्ज महा पुरुषोने योग्य छोटने तेमनी सामे भूझी दीधी अने भूझीने तेमने तेण्हे आ प्रमाणे विनंती करतां कछुं के—

મિયા: ! ચિલાતચોરસેનાપતિ: સિંહગુહાયાચોરપલ્યા: ! હે હવ્યમાગમ્ય પંચમિથોર-
શતૈ: સાર્દમ્ મમ ગૃહં ' ઘાપ્તા ' ઘાતયિત્વા=લુપ્થયિત્વા સુબહું ધનકનકં સુંસમાં
ચ દારિકાં ગૃહીત્વા ' જાવ પડિગ' યાવત્ પ્રતિગત: =પંચમિથોરશતૈ: સાર્ધં
સિંહગુહાં ચોરપલ્લીં પ્રતિનિવૃત્ત ઇત્યર્થ:, ' તં ' તત્=તસ્માત્ કારણાત્ ઇચ્છામ:
સ્વલુ હે દેવાનુમિયા: ! ' સુંસમા દારિયાણ સુંસમા દારિકાયા ' કૂવં ' પ્રત્યાન-
યને ' ગમિત્ત' ગન્તુમ્ । ' તુઘ્મેણં દેવાણુપ્પિયા । ' યુષ્માકં સ્વલુ હે દેવાનુ-
મિયા: ! તત્=અપહતં વિપુલં ધનકનકમ્=હે દેવાનુમિયા: ! ચોરાપહતં ધનકના-
દિકં સર્વં યુષ્માકં ભવતુ, મમ સુંસમા દારિકા ભવતુ । તત: સ્વલુ તે નગરગોપ્ત્રકા:

સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાવર્ડ સીંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ
હે હવ્યમાગમ્ય પંચર્હિ ચોરસર્હિ સર્દિ મમ ગિહં ઘાપ્તા, સુબહું ધન-
કનકં સુંસમં ચ દારિયં ગુહાય જાવ પડિગ-તં ઇચ્છામો ણં દેવાણુ-
પ્પિયા ! સુંસમા દારિયાણ કૂવં ગમિત્ત-તુઘ્મેણં દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે
ધનકનકે મમ સુંસમા દારિયા) હે દેવાનુમિયોં સુનો ચોર સેનાપતિ
ચિલાત ચોર ને સિંહગુહા નામ કી ચોરપલ્લી સે યહાં શીઘ્ર આકર
પાંચસૌ ચોરોં કે સાથ મેરે ઘર પર ડાંકા ઢાલા હૈ । ઉસમેં ઉસને બહુત
સા ધન, કનક એવં સુંસમા દારિકા કો લૂટા હૈ ઓર-લૂટકર વહ વહાં
વાપિસ અપને સ્થાન પર ચલા ગયા હૈ । અત: હે દેવાનુમિયોં ! મેં ચાહતા
હૂં કિ આપ લોગ ઉસ સુંસમા દારિકા કો છેને કે લિયે જાવેં, મિલને પર
વહ હત ધનકનક આદિ સબ આપકા રહે-ઓર સુંસમા દારિકા મેરી

(એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાવર્ડ સીંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ
હે હવ્યમાગમ્ય પંચર્હિ ચોરસર્હિ સર્દિ મમ ગિહં ઘાપ્તા, સુબહું ધનકનકં સુંસમં
ચ દારિયં ગુહાય જાવ પડિગ તં ઇચ્છામો ણં દેવાણુપ્પિયા ! સુંસમા દારિયાણ
કૂવં ગમિત્ત-તુઘ્મેણં દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે ધનકનકે મમ સુંસમા દારિયા)

હે દેવાનુમિયો ! સાંભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની
ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાંચસૌ ચોરોની સાથે મારા ઘરમાં ઘાડ
પાડી છે. તેમાં તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુંસમા દારિકાની લૂંટ કરી છે.
લૂંટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુમિયો !
મારી ઈચ્છા છે કે તમે સુંસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને
મેળવી લીધા બાદ તે અપહૃત કરાયેલું ધન કનક વગેરે બધું તમે રાખો અને
સુંસમા દારિકાને મને સોંપી દેજો.

अनगारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० अ० १८ संसुमाकारिकाचरितनिरूपणम्

६८३

पुरुषाः धन्यस्य एतमर्थं प्रतिश्रुयन्ति=स्वीकृवन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य 'सन्नद्ध जाव गहियाउहपरणा' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरणाः=सन्नद्धवद्धवर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणा इत्यस्य व्याख्या पूर्ववद् बोध्या, 'महया २ उक्किट्ट जाव समुदरवभूर्यपिव' महा महोत्कृष्ट यावत् समुद्रवभूतमिव, वेलावृद्धिसमये समुद्रध्वनिमिव महाध्वनि 'करेमाणा' कुर्वन्तो राजगृहात् निर्गच्छन्ति, निर्गत्य रहे। (तएणं ते नगरगुत्तिया धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपरणा महया २ उक्किट्ट० जाव समुदरवभूर्यं पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छन्ति णिग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे-तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था तएणं ते नगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हयमहिय जाव पडिसेहेति, तएणं ते पंच चोरसया नयरगोत्ति-एहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विउलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था) धन्य सार्थवाह की इस बात को सुनकर उन नगर रक्षकों ने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उसी समय उन्हों ने अपने २ शरीरपर कवच को सज्जित करके कशाबंधन से बांध लिया यावत् आयुध और प्रहरणों को छे लिया-। वेलावृद्धिके समय में जिस प्रकार समुद्र की ध्वनि होती है-उसी प्रकार की महाध्वनि करते हुए फिर वे राजगृह नगर

(तएणं ते नगरगुत्तिया धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडि-सुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपरणा महया २ उक्किट्ट० जाव समुदरवभूर्यं पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छन्ति, णिग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे-तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था-तएणं ते नगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हयमहिय जाव पडिसेहेति, तएणं ते पंच चोरसया नयरगोत्ति-एहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विउलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था)

धन्य सार्थवाहनी ते वातने सांझणीने नगर रक्षकोंने तेने स्वीकारी लीधी अने स्वीकारीने तेभण्णे तरत न पोतपोताना शरीरे। ऊपर कवचो पडेरीने कशा अंधेनाथी आंध्यां यावत् आयुध अने प्रहरणोने साथे लछ लीधां। अरतीना समये जेवो समुद्रनो ध्वनि डोय छे तेवो न महाध्वनि करतां तेजो राजगृह नगरमांथी अडार नीकल्या अने नीकणीने ज्यां चोर सेनापति ते

यत्रैव चिलातश्चोरः, तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य चिलातेन चोरसेनापतिना सार्धं 'संप्रगम्ना' संप्रगम्नाः=युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चापि अभवन् । ततः खलु नगर-गोप्तृकाः चिलातं चोरसेनापतिं 'हयमहियं जाव' इतमथित यावत्=इतम-थित प्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकं=हता=मारिताः, मथिताः=निःशेषतां प्राप्तिताः, प्रवरवीराः=श्रेष्ठवीरा यस्यासौ इतमथितप्रवरवीरः, घातितः=घातः शस्त्रादिप्रहारेण क्षतिः, स संज्ञातोऽस्य घातितः क्षत इत्यर्थः, निपतिता=भूमौ पतिता चिह्नध्वज पताकाः यस्याऽसौ, निपतितचिह्नध्वजपताकः, एतेषां कर्म-धारयः, तम्, यावत् प्रतिषेधयन्ति=निवारयन्ति । ततः खलु ते 'पंचचोरसया' पञ्चशतचौराः 'णगरगोप्तिहिं' नगरगोप्तृकैः=नगररक्षकैः पुरुषैः 'हयमहिय जाव पडिसेहिया' इतमथितयावत्प्रतिषेधिताः=प्रतिषेधिताः सन्तः तत् विपुलं धनकनक=धनकनकमणिमौक्तिकादिकं 'विच्छड्डेमागा' विच्छर्दयन्तः=प्रक्षिपन्तः 'विप्पकिरेमाणा य' विप्रकिरन्तश्च=इतस्ततो विकिरणं कुर्वन्तः 'सच्चओ समंता' सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिक्षु 'विप्पलाइत्था' विप्लायन्तः=पलायिताः ततः खलु ते

से बाहर निकले-और निकलकर जहाँ चोर सेनापति वह चिलात चोर था वहाँ गये-वहाँ पहुँचते ही उनका चोर सेनापति उस चिलात चोर के साथ युद्ध होना प्रारंभ हो गया-उस युद्ध में उन्होंने ने उस चिलात के सैन्य को पहिले खूब मारा-पीटा-बाद में उन्हें बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर दिया । कितनेक चोरों को उन्होंने ने क्षत किया । उसकी चिह्न ध्वजपता-काओं को जमीन पर डाल दिया । इस प्रकार उसे हरतरह परास्त कर दिया । जब वे पांचसौ चोर नगररक्षक पुरुषों द्वारा हर प्रकारसे इतमथित यावत् प्रतिषेधित हो चुके तब वे उस विपुल धनकनक मणिमौक्तिक आदिको छोड़कर तथा इधर उधर डालकर सर्व प्रकारसे चारों दिशाओंमें इधर उधर भाग गये । (तएणं ते णयरगुत्तिथा तं विउलं धणकणगं

चिलात चोर हतो त्यां गया. त्यां जतांनी साथे ज चोर सेनापति चिलातनी साथे तेमनुं युद्ध शरं थर्छ गयुं. युद्धमां तेमण्णे पडेल्लां तो चिलातनी सेना साथे ञ्ण मार-पीट करी अने त्थारपणी तेने नष्ट-भ्रष्ट करी नाणी. डेटलाक चोराने तो तेमण्णे क्षत (धवायेला) कर्या. तेमनी चिह्नभूत ध्वज पताकाओंने जमीनहोस्त करी नाणी. आ प्रमाण्णे तेने ञ्णी रीते डरावी दीधो. न्यारे ते पांचसो चोरो नगर रक्षक पुरुषो वडे सर्व रीते हत, मथित यावत् प्रतिषेधित थर्छ गया त्यारे तेओ ते पुष्कण धन, कनक, मण्णी, मोती वगैरेने त्यां ज भूडीने आभतेम नाणीने थारे दिशाओंमां आभतेम पलायन थर्छ गया.

अनेगारघमांमृतवर्णिणी टी० अ० १८ सुंसुमादारिकावरितवर्णेनम्

१८५

नगरगोप्तकाः=नगररक्षकाः=तं विपुलं धनकनकं=धनकनकादिकं गृह्णन्ति, गृहीत्वा, यत्रैव राजगृहं नगरं तत्रैव उपागच्छन्ति । ततः खलु स चिलातः तां चोरसेनां 'हयमहिय जाव' इतमथित यावत्=इतमथितप्रवलवीरघातितनिपतित चिह्नध्वजपताकाम् यावद् दृष्ट्वा भीतस्त्रस्तः सुंसुमां दारिकां गृहीत्वा एकां मङ्गीम् 'अग्गामियं' अग्रामिकाम्=ग्रामरहिताम् 'दीहमद्धं' दीर्घाध्वा=दीर्घमार्गाम् 'अडविं' अटवीम्=अनुपविष्टः । ततः खलु धन्यः सार्थवाहः सुंसुमां दारिकां चिलातेन 'अडवीमुहं' अटवीमुखम्=अरण्यसम्मुखम् 'अवहीरमणिं' अपहिय-माणाम्-नीयमानां 'पासित्ता' दृष्ट्वा पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् 'अप्पच्छे' आत्म-पण्डः 'सन्नद्धवद्धं' सन्नद्धवद्धवर्मितकवचः चिलातस्य 'पदमग्गवीहिं' पद-

गेण्हन्ति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छन्ति । तएणं से चिलाए तं चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुंसमं दारियं गहाय एणं महं अग्गामियं दीहमद्धं अडविं अनुप्पविट्ठे) उन नगर रक्षकों ने उस विपुल धन कनक आदिको ले लिया और लेकर राजगृह नगर में वापिस आ गये । इस के बाद वह चिलात चोर अपनी उस सेना को नगर रक्षकों द्वारा इत मथित प्रवल वीरवाली एवं घातित तथा निपतित चिह्न ध्वज पताका वाली देखकर त्रस्त हो गया और सुंसुमादारिका को लेकर एक बड़ी भारी ग्रामरहित अटवी में घुस गया (तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहं अवहिरमणिं पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छे सन्नद्धवद्ध चिलायस्स पदमग्गवीहिं अनुगच्छमाणे अभिगज्जंते हाक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे

(तएणं ते णयर गुत्तिया तं विउलं धणकणगं गेण्हन्ति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छन्ति । तएणं से चिलाए तं चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुंसमं दारियं गहाय एणं महं अग्गामियं दीहमद्धं अडविं अनुप्पविट्ठे)

ते नगर रक्षकोंએ ते पुष्कળ પ્રમાણમાં પડેલાં ધન, કનક વગેરેને લઇ લીધું અને લઈને રાજગૃહ નગરમાં પાછા આવી ગયા. ત્યારપછી તે ચિલાત ચોરે પોતાની તે ચોર સેનાને નગર રક્ષકો વડે હત, મથિત તેમજ ઘાતિત અને નિપતિત ચિહ્નધ્વજ પતાકાઓવાળી ભેઠને ત્રસ્ત થઈ ગયો અને સુસમા દારિકાને લઈને એક ભારે મોટી ગ્રામરહિત અટવીમાં પેસી ગયો.

(તएणં ધણે સત્યવાહે સુસમં દારિયં ચિલાएणં અડવીમુહં અવહીરમાણિં પાસિત્તા ણં પંચહિં પુત્તેહિં સદ્ધિં અપ્પછદ્દે સન્નદ્ધવદ્ધચિલાયસ્સ પદમગ્ગવીહિં અણુગચ્છમાણે અભિગજ્જંતે હાક્કારેમાણે પુક્કારેમાણે અભિતજ્જેમાણે અભિહાસે-

६८६

नीताधर्मकथाकृत

मार्गविधि=पदमार्गप्रचारम्=चरणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो धावन् 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघवदगर्जनां कुर्वन् 'हकारेमाणे' 'हंमो' दुष्ट ! तिष्ठ-तिष्ठ' इत्यादि, वाक्यैः हकारयन्=आकारयन् 'पुकारेमाणे' पूत्कारयन् 'तिष्ठ २, नोचेच्चां हनिष्यामीत्यादिवाक्यैः तमाह्वयन् 'अभितज्जेमाणे' अभितर्जन्='रे निर्लेज्ज' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कुर्वन्, 'अभितासेमाणे' अभितासयन्=अस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिट्ठाओ' पृष्ठतः=चिलातचोरस्य पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=पश्चाद्वावति । ततः खलु स चिलातः तं धन्यं सार्थवाहं पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् 'अप्पच्छट्ठं' आत्मपण्डं 'सन्नद्धबद्धवर्मितकवचं यावत् समनुगच्छन्तं=पश्चाद्वावन्तं पश्यति, दृष्ट्वा 'अत्थामे ४' अस्थामा=आत्मबल-रहितः, अबलः=सैन्यरहितः, अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः सन्

अभितासेमाणे पिट्ठाओ अणुगच्छह) धन्यसार्थवाह ने जब सुंसमा दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई जय जाना-तब वह अपने पांचों पुत्रों के साथ आत्मपण्ड होकर कवच बांध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट ! ठहर ठहर इस प्रकार से कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लेज्ज ! इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला ।

(तण्णं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छट्ठं अन्नद्धबद्धं समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्ठाओ अणुगच्छह)

न्यारे धन्य सार्थवाहे सुंसमा दारिकाने चिलात चोर वडे अटवीमां डेरथु करीने लर्थ जवाथेवी जण्णी, त्यारे ते पोताना पांचे पुत्रोनी साथे आत्म-पण्ड थधने कवच बांधीने ते चिलात चोरनी पाछण तेना पद चिह्नोंनुं अनु-सरथु करतो मेघना जेवी ध्वनि करतो "अरे ओ दुष्ट ! जेसोरे, जेसोरे," आ प्रमाणे कहेतो "जेसोरे, जेसोरे, नडितर मरी गयेसो जण्णे" आ प्रमाणे डाकल करतो, तेने ओलावतो 'अरे निर्लेज्ज !' आस तर्जित करतो तेभज शस्त्र अस्त्र वजेरेने जतावीने तेने त्रसित करतो आदथो.

(तण्णं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छट्ठं सन्नद्ध-बद्धं समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कार

जननारघमांमृतचरिणी टी० अ० १८ सुसुमादारिकाचरितनिरूपणम्

६८७

पुरुषकारः=पौरुषम्, पराक्रमः=सामर्थ्यं, तद्रहितः सन् 'जाहे' यदा नो शक्नोति
सुसुमां दारिकां 'णिन्वाहित्त्ए' निर्वाहयितुं=बोडुम्, 'ताहे' तदा 'संते'
श्रान्तः=परिश्रमं गतः, 'तंते' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, 'परितंते' परितान्तः=
सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, 'नीलुप्पल०' नीलोत्पल०=नीलोत्पगंवल्गुलि-
कादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् 'असिं' करवालं 'परामुसइ' परामुशति=
कोशान्निःसारयति. परामृश्य, सुसुमाया दारिकायाः 'उत्तमंगं' उत्तमाङ्गं=शिरः

अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे जाहे णो संचाएइ सुंसमं दारियं णिन्वा
हित्त्ए, ताहे संते तंते परितंते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता
सुंसमाए दारियाए उत्तमंगं छिदइ, छिदित्ता, तं गहाय तं अग्गामियं
अडविं अणुपविट्ठे, तएणं से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए
तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहं गुहं चोरपल्लिं असं-
पत्ते अंतराचेव कालगए) जस चिलात चोर ने उस धन्यसार्थवाह को
पांचो पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ होकर एवं कवच आदि से सुसज्जित
होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देख कर आत्मबल
रहित हो गया। इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और
पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुंसमा दारिका को अपने पास रखने
के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि
युक्त और परितान्त सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल,
गवल्गुलिका, आदि विशेषणों वाली अपनी तलवार को उठाया-भ्यान

परक्कमे जाहे णो संचाएइ सुंसमं दारियं णिन्वाहित्त्ए, ताहे संते तंते परितंते
नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुंसमाए दारियाए उत्तमंगं छिदइ,
छिदित्ता, तं गहाय तं अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएणं से, चिलाए तीसे
आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुहं
चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए)

न्यारै चिलात चोर ते धन्य सार्थवाहने पांचे पुत्रोनी साथे आत्मषष्ठ
थधने तेमज्ज कवच वगेरैथी सुसज्जित थधने पोतानी पाछण पाछण आवतो
जेथो त्यारै ते जेधने आत्मभय वगरने थधं गथो. आ प्रमाणे सेना रहित
उत्साह रहित तेमज्ज पौरुष अने पराक्रम रहित थधं गथेदो ते न्यारै सुंसमा
दारिकाने पोतानी पासे राखवामां पणु असमर्थ थधं गथो त्यारै तेले श्रान्त,
तान्त, ग्लानि युक्त अने परितान्त तेमज्ज अधी रीते भिन्नता प्राप्त करीने
नीलोत्पल, गवल्गुलिका वगेरै विशेषणोवाणी पोतानी तरवारने उपाडी अने
भ्यानमांथी अडार काढी अने अडार काढीने सुंसमा दारिकानुं माथुं कापी

છિનત્તિ, છિન્ના, 'તં' તત્ત્વ=ઉત્તમાર્જ્જ્વ ગૃહીત્વા તામ્ અગ્રામિકામ્=જનાવાસરહિ-
તામ્ અટવીમનુપવિષ્ટઃ=પ્રવેશ કરવાનું. તતઃ ચલુ ચિલાતઃ તસ્યામગ્રામિકાયા-
મટઁયાં 'તળ્હાણ' તળ્ણયા=પિપાસયા અભિભૂતઃ સન્ 'વિમ્હુટ્ઠદિસામાણ' વિસ્મ-
તદિગ્માગઃ=પૂર્વાદિદિશાવિવેકવિકલઃ સન્ સિંહગુહાં ચોરપછીમ્ 'અમંપત્તે' અસ-
મ્પાત્તઃ 'અંતરાચેવ' અન્તરા એવ=મધ્ય એવ 'કાલંગણ' કાલંગતઃ=ત્રસૌ ચોરો
મૃત્યું પ્રાપ્તવાનું. અસ્ય શેષચરિતં ગ્રન્થાન્તરાદવસેયમ્, શાસ્ત્રેતુ-ઉપયોગિ ચરિતં
તાવન્માત્રં ભગવતોપદિષ્ટમ્.

અથ ચિલાતદ્દષ્ટાન્તેન ભગવાન્ નિર્ગ્રન્થાદીન્ સંબોધ્ય પ્રતિબોધયતિ — 'એવા-
મેવ' એવમેવ=અનેન પ્રકારેણ 'સમણાઉસો' આયુજ્ઞતઃ શ્રમણાઃ ! 'જાવ પવ્વ-
હણ સમાણે' યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સન્=યોડ્સ્માકં નિર્યન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા આચાર્યો-
પાધ્યાયાનાં સમીપે પ્રવ્રજિતઃ સન્ 'ઇમસ્સ' અસ્ય 'ઓરાલિયસરીરસ્સ' ઔદારિકશરીરસ્ય
વાન્તાસવસ્સ યાવદ્ વિદ્ધંસનધર્મસ્ય 'વળ્ણહેઉં' વર્ણહેતું =
કાન્તિવિશેષપ્રાપ્ત્યર્થમ્, યાવત્-'રૂપહેઉં' રૂપહેતું=સૌન્દર્યાર્થમ્, 'બલ્લહેઉં'

સે બાહર કિયા ઔર ઉઠાકર સુંસમા દારિકા કે મસ્તક કો કાટ ઢાલા
ઉસ કટે હુણ મસ્તક કો લેકર ફિર નિર્જન અટવી મેં પ્રવેશ કર ગયા ।
ઉસ અટવી મેં પિપાસા સે વ્યાકુલ હોકર વહ પૂર્વાદિ દિશાઓં કે
વિવેક સે રહિત હો ગયા-ઇસ તરહ વહ પુનઃ વહાં સે પીછે વાપિસ
અપની સિંહગુહા નામકી ચોર પછી મેં નહીં આ સકા-ઔર વીચ હી મેં
કાલ કવલિત બન ગયા । ઇસકા અવશિષ્ટ ચરિત્ર ગ્રંથાન્તર સે જાન
હેના ચાહિયે । યહાં તો ભગવાન્ ને જિતના ચરિત્ર ઇસકા ઉપયોગી
જાના ઉતનાહી ઉપદિષ્ટ કિયા હૈ !-(એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વ-
હણ સમાણે ઇમસ્સ ઓરાલિયસરીરસ્સ વંતાસવસ્સ જાવ વિદ્ધંસન-
ધમ્મસ્સ વળ્ણહેઉં જાવ આહારં આહારેહ્ સેણં ઇહલોણ ચેવ બહ્ણં સમ-

નાખ્યું. તે કપાએલા માથાને લઈને તે નિર્જન-અટવીમાં પેસી ગયો.
અટવીમાં તે તરસથી વ્યાકુળ થઈને પૂર્વ વગેરે દિશાઓના વિવેકથી રહિત
થઈ ગયો અને આ પ્રમાણે તે ફરી ત્યાંથી તે પોતાની સિંહગુહા નામની ચોર-
પટ્ટીમાં કોઈ પણ દિવસે પાછો આવી શક્યો નહિ અને વચ્ચે જ મૃત્યુ પામ્યો.
તેનું બાકીનું ચરિત્ર બીજા ગ્રંથમાંથી જાણી લેવું જોઈએ, અહીં તો ભગવાને
બેટલું ચરિત્ર તેનું ઉપયુક્ત બોલ્યું તેટલું કહ્યું છે.

(એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહણ સમાણે ઇમસ્સ ઓરાલિયસરીરસ્સ
વંતાસવસ્સ જાવ વિદ્ધંસનધમ્મસ્સ વળ્ણહેઉં જાવ આહારં આહારેહ્ સેણં ઇહલોણ

અનભારણ્યમૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૮ સુંસુમાદારિકાચરિતવર્ણનમ્

૬૮૯

બલહેતું=શરીરબલવર્ધનાર્થમ્, 'વીરિયહેતું' વીર્યહેતુમ્=આન્તરિકશક્તિસંપાદનાર્થમ્, આદારમ્ આદારયતિ, સ સ્વલુ દ્વ લોકે એવ વહૂનાં શ્રમણાનાં શ્રમણીનાં શ્રાવકાણાં શ્રાવિકાણાં ચ 'હીલણિજ્જે જાવ' હીલનીયો યાવત્, યાવત્પદેન, નિન્દનીયઃ, સ્ત્રિસનીયઃ ગર્હણીયો ભવેત્, પરલોકેऽપિ દુઃખં પ્રાપ્નોતિ, યાવત્-ચાતુરન્તસંસારકાન્તારમ્ 'અણુપરિયટ્ઠિસ્સઈ' અનુપર્યટ્ઠિપ્યતિ=અમિષ્યતિ, યથા સ ચિલાતસ્તસ્કરઃ-ચિલાતતસ્કરવદિતિ ભાવઃ ॥મૂ૦૭ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે ધણ્ણે સત્થવાહે પંચહિં પુત્તેહિં સદ્ધિં અપ્પ-છટ્ટે ચિલાયં પરિધાડેમાણેર તણ્ણાણ્ણ લુહાણ્ણ ય સંતે તંતે પરિતંતે

ણાણં ૪ હીલણિજ્જે ૩ જાવ અણુપરિયટ્ઠિસ્સઈ જહાવ સે ચિલાણ તક્કરે) અથ પ્રમુ દસ ચિલાત કે દૃષ્ટાન્ત સે નિર્ગન્થ આદિકોં કો સંબોધિત કર પ્રતિબોધિત કરતે હૈં-હે આયુષ્મંત શ્રમણોં ! હસી તરહ જો હમારા નિર્ગન્થ શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય ઉપાધ્યાય કે પાસ પ્રવ્રજિત હોકર વાન્તાસ્રવવાલે યાવત્ વિધ્વંસન ધર્મવાલે હસ ઔદારિક શરીર મેં કાન્તિ વિશેષ પ્રાપ્તિ કે લિયે સૌન્દર્ય આદિરૂપ વિશેષ કે લિયે, બલવર્ધન કે લિયે તથા આન્તરિક શક્તિ વૃદ્ધિકે લિયે આહાર કો લેતા હૈ-કરતા હૈ:- વહ હસ લોક મેં અનેક શ્રમણ શ્રમણી, શ્રાવક તથા શ્રાવિકા જનેં દ્વારા હીલનીય યાવત્ નિન્દનીય, સ્ત્રિસનીય ગર્હણીય સો હોતા હી હૈ-પરન્તુ પર ભવમેં ભી વહ દુઃખોં કોહી પાતા હૈ । યાવત્ એસા જીવ હસ ચતુર્ગતિરૂપ સંસાર કાન્તાર મેં ચિલાત ચોર કી તરહ પ્રરિભ્રમણ હી કરતા રહતા હૈ ॥ સૂત્ર ૭ ॥

ચેવ વહૂણં સમણાણં ૪ હીલણિજ્જે ૨ જાવ અણુપરિયટ્ઠિસ્સઈ, જહાવ સે ચિલાણ તક્કરે)

હવે પ્રમુ તે ચિલાતના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને નિર્ગન્થ વગેરેને સ બોધિત કરીને આજ્ઞા કરે છે કે હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! આ પ્રમાણે જે અમારા નિર્ગન્થ શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને વાન્તાસ્રવવાળા યાવત્ વિધ્વંસન ધર્મવાળા આ ઔદારિક શરીરમાં કાન્તિ વિશેષની પ્રાપ્તિ માટે, સૌન્દર્ય વગેરે રૂપ વિશેષના માટે, બળવર્ધન માટે તેમજ આંતરિક શક્તિને વધારવા માટે આહાર ગ્રહણ કરે છે. તે આ લોકમાં ઘણા શ્રમણ, શ્રમણી, શ્રાવક તેમજ શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય યાવત્ નિન્દનીય, સ્ત્રિસનીય અને ગર્હણીય તો હોય જ છે પણ સાથે સાથે તે પરલવમાં પણ દુઃખ જ મેળવે છે. યાવત્ એવો જીવ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાન્તારમાં ચિલાત ચોરની જેમ ભટકતો જ રહે છે. ॥ સૂત્ર ૭ ॥

नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावइं साहत्तिं गिण्हित्तए । से णं
तओ पडिनियत्तइ, पडिंनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा दारिया
चिलाएणं जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता, सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ,
पासित्ता परसुनियत्तेव चंपगवरपायवे धसत्तिधरणियलंसि निव-
डइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छट्ठे
आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया२ सदेणं कुहू२
सुपरुन्ने सुचिरं कालं बाहमोक्खं करेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे
पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए
सव्वओ समंता परिघाडेमाणे तण्हाए लुहाए य परिभूए समाणे
तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गण-
गवेसणं करेइ, करित्ता संते तंते परितंते, णिव्विन्ने, तीसे अग्गा-
मियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं
उदगं आसादेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पच्छट्ठे उदगं
अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोविया तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेष्टं पुत्तं धणदत्तं सद्दावेइ, सद्दावित्ता
एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए
चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिघाडेमाणा तण्हाए लुहाए
य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स
मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो, तएणं
उदगं, अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए, तण्णं

अनारधमौमृतवर्षिणी टी० अ० १८ सुसुमादारिकाचरितवर्णनम्

६९१

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं
 च आहारेइ, आहारित्ता, तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा
 तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडविं णित्थरिहिह, रायगिहं च
 संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य
 धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएणं से जेट्ठपुत्ते
 धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं वयासी-
 तुब्भे णं ताओ ! अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइ-
 ट्ठावगा संरक्खगा संगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवि-
 याओ ववरोवेमो, तुब्भे णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं
 तुब्भे णं तातो ! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च
 आहारेह, अग्गामियं अडविं णित्थरह, तं चेव सव्वं भणइ जाव
 अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएणं धण्णं सत्थ-
 वाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी-मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं
 गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं ताओ ! ममं जीवि-
 याओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एवं पंचमे पुत्ते तएणं
 से धण्णे सत्थवाहे पंचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता, तं पचं
 पुत्ते एवं वयासी-मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमाविजीवियाओ वव-
 रोवेमो, एसणं सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्प-
 जडे, तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए मंसं च
 सोणियं च आहारेत्ताए । तएणं अम्हे तेणं आहारेणं अविद्ध-
 त्थासमाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो । तएणं तं पंच पुत्ता

धष्णणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेति । तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गि-पाडेइ, पाडित्ता, अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइं परिक्खेवेइ, परिक्खेवित्ता, अग्गिपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति । ते णं आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणा गया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया यावि होत्था । तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सू०८ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मवष्टुः चिलातं ‘परिधाडेमाणे २’ परिधावन् २=चिलातं ग्रहीतुकामस्त-त्पृष्ठतोऽनुधावन् ‘तण्हाए छुहाए य’ तृणया धुधया च’ संते’ श्रान्तः,=मनसा खिन्नः, ‘तंते’ तान्तः=शरीरेण क्लान्तः, ‘परितंते’ परितान्तः=मनसा शरीरेण च

—तएणं से धण्णे सत्थवाहे । इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ छठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह (चिलायं परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड़ ने की इच्छा से उस के पीछे २ बार बार दौड़ता हुआ, (तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाए चिलायं चोरसेणावई साहत्थि गिण्हित्तए) पिपासा और

‘तएणं से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपथी (पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचे पुत्रोनी साथे छट्ठे ते धन्य सार्थवाह (चिलायं परिधाडेमाणे २) चिलात चोरनी पाछण पाछण तेने पडडी पाडवा भाटे वारंवार दोडतां दोडतां (तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाए चिलायं चोरसेणावई साहत्थि गिण्हित्तए) तस्स अने भूअथी श्रान्त थछं अथो, भिन्न थनी अथो, तांत थछं

अंनमारधमांमृतवर्णिणी टी० अ० १८ सुंसुमादारिकाचरितवर्णनम्

६२३

खिन्नः, 'नो संचाएइ' नो शक्नोति चिलातं चोरसेनापतिं 'साइत्थि' स्वहस्तेन ग्रहीतुम् । तदा स खलु 'तओ' ततः=चिलातग्रहणव्यापारात्, 'पडि-नियत्तइ' प्रति निवर्तते, प्रतिनिवृत्त्य, यत्रैव सा सुंसुमा दारिका चिलातेन जीविताद् 'ववरोविया' व्यपरोपिता=पृथक्कृता=मारिता सती पतिता आसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुंसुमां दारिकां चिलातेन जीविताद् व्यपरोपितां पश्यति, दृष्ट्वा 'परसुनियत्तेव' परशुनिकृत् इव=परशुच्छिन्नो यथा चम्पकवरपादपस्तद्वत्

क्षुधा से श्रान्त हो गया-खिन्न बन गया, तान्त हो गया-शरीर से मुरझा गया-परितान्त हो गया-इकदम उत्साह रहित बन गया-सो वह उसे अपने हाथ से पकड़ने के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका-(सेणं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएणं जीवियाओ ववरोविया-तेणेव उवागच्छइ) अतः-वह वहां से लौट आया-और लौटकर वहां गया जहां वह अपनी पुत्री सुंसुमा चिलातचोर के द्वारा-जीवन से रहित की गई पड़ी थी। (उवागच्छित्ता सुंसुमा दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि निवडइ-तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया २ सदेणं कुहू २ सुपरुन्ने सुचिरं कालं वाहमोक्खं करेइ) वहां जाकर उसने सुंसुमा दारिका को चिलातचोर के द्वारा जीवन से रहित की गई देखा। देखते ही वह पुत्रों सहित परशु से काटे गये उत्तम

गयो-शरीर तेनुं यिभडाए गयुं, परितांत थइ गयो-साव निइत्साडी गनी गयो, अेवी डावतमां ते पोताना डायथी तेने पडडी पाडवामां समर्थ थइ शकथे नडि (सेणं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएणं जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ) तेथी ते त्यांथी पाछे इरी गयो, अने पाछे इरीने ते न्यां यिदात थोर वडे डण्णुयेदी पोतानी पुत्री सुंसुमा दारिका पडी छती त्यां गयो।

(उवागच्छित्ता सुंसुमा दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ पासित्ता परसुनियत्तेव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि निवडइ,-तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया २ सदेणं कुहू २ सुपरुन्ने सुचिरं कालं वाहमोक्खं करेइ)

त्यां न्धने तेण्णे सुंसुमा दारिकाने यिदात थोर वडे डण्णुयेदी नेहं नेतानी साथे न ते पुत्रोनी साथे परशु वडे कपाअेदा उत्तम अ'प'क वृक्षानी

६२४

जाताधर्मकथाङ्कसूत्रे

सपुत्रो धन्यः सार्थवाहः ' धसति ' धस ' इति शब्दपूर्वकं धरणीतले निपतति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः आत्मपष्ठः ' आश्वस्त ' आश्वस्त=उच्छ्वासं मुञ्चन् सचेष्टः सन् ' कूवमाणे ' कूजन् = अव्यक्तशब्दं कुर्व ' कंदमाणे ' क्रन्दन् उच्चस्वरेण, पुनः ' विलवमाणे ' विलपन्=विलापं कुर्वन् ' महया महया सहेणं ' महतामहता शब्देन=अत्युच्चैः शब्देन ' कुहू २ सुपरुन्ने ' कूहू २ सुपरुदन्-कुहू कुहू इति शब्दमुच्चार्यात्यर्थं रुदितः सन् सुचिरं कालं=बहुकालपर्यन्तं ' वाहमोक्त्वं ' वाष्पमोक्षम्=अश्रुमोचनं करोति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मपष्ठः चिलातं तस्यामग्रामिकायाम् अटव्यां सर्वतः समन्तात् ' परिधाडे

चंपक वृक्ष के समान " धस " इस शब्द पूर्वक भूमिपर गिर पड़ा । बाद में पांच अपने पुत्रों के साथ आत्मपष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्थवाह आश्वस्त, उच्छ्वास छोड़ता हुआ सचेष्ट-हो गया सो अव्यक्त शब्द करता हुआ खूब जोर २ से रोने लगा, विलाप करने लगा । एवं बहुत ऊँचे २ शब्दों से कुहू कुहू करता हुआ-हाय सांसे लेता हुआ-बहुत देरतक रोता रहा-अश्रुमोचन पूर्वक आक्रंदन करता रहा-(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडे माणे तण्हाए लुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेह) इसके बाद पांचो पुत्रों के साथ आत्मपष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उस अग्रामवाली अटवी में चिलातचोर के पीछे पीछे बार २ दौड़ता हुआ तृषा और क्षुधा से पीड़ित होकर उस अग्रामवाली अटवी

जैम " धम " शब्दनी साथे जमीन उपर पड़ी गये। तयारपछी पांचे पुत्रो तेमज छठो ते धन्यसार्थवाह आश्वस्त-उच्छ्वास छोडतो-निसासा नाभतो सचेष्ट थरि गये। अने अव्यक्त शब्द करने। धूसके धूसके भूष जेरथी रडवा लाग्यो, विलाप करवा लाग्यो अने णलु मोटा सादे ' कुहू कुहू ' करते। हाय हाय करीने श्वासो लेतो। धण्णीवार सुधी रडतो रह्यो तेमज आंसू पाडतो आक्रंद करतो रह्यो।

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए लुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेह)

त्यारभाह पांचे पुत्रोनी साथे छठो ते धन्यसार्थवाह ते गाम पगरनी निज्जंन अटवीमां चिलात चोरनी पाछण पाछण बारंवार दोडतो दोडतो तृषा

મનગારધર્મામૃતવર્ષિણી દી૦ ૪૦ ૧૮ સુંસુમાદારિકાચરિતવર્ણનમ્

૬૯૫

માળે ' પરિધાવન્ તુષ્ણયા ક્ષુધયા ચ ' પરિભૂષ ' પરિભૂતઃ સન્ તસ્યામગ્રામિકાયામટવ્યાં સર્વતઃ સમન્તાત્=ચતુર્દિશુ ' ઉદગસ્સ ' ઉદકસ્ય=જલસ્ય ' મગ્ગન-ગવેસણ ' માર્ગનગવેષણમ્=અન્વેષણં કરોતિ, કૃત્વા શ્રાન્તઃ, તાન્તઃ, પરિતાન્તઃ ' ણિવિન્ને ' નિર્વિણ્ણઃ=ઔદાસીન્યં પ્રાપ્તઃ । તસ્યામગ્રામિકાયામટવ્યામુદકસ્ય માર્ગનગવેષણં કુર્વન્ નો ચૈવ સ્વલુ ઉદકમ્ ' આસાદેઙ્ ' આસાદયતિ=પ્રાપ્નોતિ । તતઃ સ્વલુ સ ધન્યઃ સાર્થવાહ આત્મષષ્ઠઃ ઉદકમનાસાદયન્ પાનીયમપ્રાપ્નુવન્ યત્રૈવ સુંસુમા જીવિતાદ્ વ્યપરોપિતા મારિતા સતી પતિતાઽઽસીત્ તત્રૈવ ઉપાગ-ચ્છતિ, ઉપાગત્ય જ્યેષ્ઠં પુત્રં ધનદત્તં શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા, એવમવદત્-એવં સ્વલુ મેં ચારોં દિશાઓં મેં જલકી માર્ગણા ઓર ગવેષણા કરને લગા (કરિત્તા સંતે તંતે પરિતંતે ણિવિન્ને તીસે અગ્ગામિયાએ અહવીએ ઉદગસ્સ મગ્ગન-ગવેસણં કરેમાણે ણો ચેવ ણં ઉયગં આસાએઙ્) માર્ગણા ગવેષણા કરકે વહ શ્રાન્ત, મન સે સ્વિન્ન, તાન્તશરીર સે સ્વિન્ન ઓર પરિતાન્ત-બન ગયા શરીર એવં મન ઇન દોનોં સે સ્વિન્ન હો ગયો ઇસ તરહ ઉસ અગ્રા-મવાલી અટવી મેં ઉદકપાની કી માર્ગણા ઓર ગવેષણા કરતે હુએ મી ઉસે જલ નહીં મિલા (તણં સે ધણે સત્થવાહે અપ્પછટ્ટે ઉદગં અણા-સાએમાણે જેણેવ સુંસુમા દારિયા જીવિયાઓ વવરોવિયા-તેણેવ ઉવાગ-ચ્છઙ્) તથ આત્મષષ્ઠ બના હુઆ વહ ધન્યસાર્થવાહ ઉદક પ્રાપ્ત નહીં કરતા હુઆ જર્હા સુંસુમાદારિકા કા શવ પઢા હુઆ-થા વર્હાં આયા -(ઉવાગચ્છિત્તા જેટ્ઠં પુત્તં ધણદત્તં સહાવેઙ્, સહાવિત્તા એવં વયાસી)

અને ક્ષુધા (તરસ અને ભૂખ) થી પીડાઈને તે ગામ વગરની અટવીમાં એકેર પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા લાગ્યો.

(કરિત્તા સંતે તંતે પરિતંતે ણિવિન્ને તીસે અગ્ગામિયાએ અહવીએ ઉદગસ્સ મગ્ગનગવેસણં કરેમાણે ણો ચેવ ણં ઉદગં આસાએઙ્)

માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને તે શ્રાંત, મનથી ખિન્ન, તાંત શરીરથી ખિન્ન અને પરિતાંત બની ગયો. શરીર તેમજ મન આ બંનેથી તે ખિન્ન થઈ ગયો. આ પ્રમાણે તે ગામ વગરની અટવીમાં ઉદક-પાણી-ની માર્ગણા ગવે-ષણા કરતાં તેને પાણી મળ્યું નહિ.

(તણં સે ધણે સત્થવાહે અપ્પછટ્ટે ઉદગં અણાસાએમાણે જેણેવ સુંસુમા દારિયા જીવિયાઓ વવરોવિયા તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્)

ત્યારે આત્મષષ્ઠ બનેલો તે ધન્ય સાર્થવાહ પાણી ન મેળવતાં બન્યાં સુંસુમા દારિકાનું મહદ્ પડયું હતું ત્યાં આગ્યો. (ઉવાગચ્છિત્તા જેટ્ઠં પુત્તં ધણ-દત્તં સહાવેઙ્ સહાવિત્તા એવં વયાસી) ત્યાં આવીને તેણે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

हे पुत्राः ! वयं सुंसुमाया दारिकायाः ' अट्टाए ' अर्थाय=निमित्तं चिलातं तस्करं प्रति ' सव्वओ समंता ' सर्वतः समन्तात्=अटव्यां चतुर्दिक्षु ' परिधाडेमाणा ' परिधावन्तः ' तण्हाए ' तृष्णया=पिपासया, ' छुहाए ' क्षुधया च अभिभूताः सन्तः अस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेपणं कुर्वन्तो नो चैव खलु उदकमासादयामः, ततः खलु उदकम् अनोसादयन्तः=अलभमानाः नो शक्नुमो राजगृहं संपाप्तुम्, ' तण्ण ' तत्खलु=तस्मात् कारणात् खलु यूयं मां हे देवानु-प्रियाः ! जीविताद् व्यपरोपयत, मांसं च शोणितं च ' आहारेह ' आहारयत, आहार्यं=भुक्त्वा, ' तेणं आहारेणं ' तेन आहारेण ' अविद्धत्था ' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्तः तृप्ताः सन्तः ' तओपच्छा ' ततः पश्चात् इमामग्रामिका-वहां आकर के उसने अपने जेष्ठ पुत्र धनदत्त को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-(एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुंसुमाए दारियाए अट्टाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमी से अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणा णो चैव णं उदगं आसाएमो-तएणं उदगं अणासा-एमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए) हे पुत्र सुनो अपने लोग सुंसुमा दारिका के निमित्त चिलातचोर के पीछे २ सब तरफ सब प्रकार से दौड़ते २ प्यास और भूख से दुःखी हो गये हैं हमने इस अग्राम-वाली अटवी में पानी की मार्गणा और गवेषणा भी की-परन्तु वह मिला नहीं अतः पानी की प्राप्ति के अभाव में अब राजगृह नगर में पहुँचने के लिये हम असमर्थ बन चुके हैं । (तएणं तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह, आहारित्ता तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडविं णित्थ-

(एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुंसुमाए दारियाए अट्टाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चैव णं उदगं आसाए मो-तएणं उदगं अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए)

हे पुत्र ! सांलण, अमे सुंसुमा दारिकाने भेलववा भाटे चिलात चोरनी पाछण पाछण आभतेम आरे तरइ लटकतां लटकतां तरस अने लूअथी दुःखी थइ गया छीअे. अमेअे आ गास वगरनी अटवीमां पाछीनी मार्गणा अने गवेसणा पर करी छे, पछु अमे डल भेलवी शक्या नथी. अथी हुवे पाछीना अभावमां अमे राजगृह नगरमां पडिअी शकीशु तेम लागतुं नथी.

(तएणं तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, आहारित्ता तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं

अनगारधर्माभित्तवर्षिणो टी० म० १८ सुसुमाहारिकाचरितवर्णनम्

१९७

मदर्थी 'णित्थरिहिह' निस्तरित्यथ=पारङ्गमित्यथ, राजगृहं च 'संपावेहिह' संप्राप्त्यथ 'मिस्सणाइ० य' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् 'अभिसमागच्छिहिह' अभिसमागमित्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभिः सह संगता भविष्यथ, तथा च 'अत्थस्स' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च 'आभागी' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव युक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्यं सार्थवाहमेव मवदत्-हे तात ! यूयं खलु अस्माकं पिता 'गुरुजणदेवयभूया' गुरुजन-दैवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः 'ठावका' स्थापकाः नीतिधर्मादौ 'पइद्वावका' प्रतिष्ठापकाः=राजादिसमक्षं स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा 'संरक्खणा'

रिहिह रायगिहं च संपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियों ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एवं राजगृह नगर पहुँच जाओगे । (मिस्सणाइ० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएणं से जेठ्ठे पुत्ते) वहाँ पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनों के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुम्हे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडविं णित्थरिहिह रायगिहं च संपावेहिह)

अेथी छे देवानुप्रिय ! तमे मने मारी नाणो अने मारा मांस अने रक्तने आवे, पीवे । आधा-पीधां पछी तमे शरीरना विनाशथी जगरी जशे । अने तृप्ति भेजवीने आ गामवगरनी अटवीने पार करी जशे अने छेवटे राजगृह नगरमां पडोच्यी जशे ।

(मिस्सणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएणं से जेठ्ठे पुत्ते)

त्यां पडोच्यीने तमे पो पना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनोनी साथे भजशे । तेमज धन, धर्म अने पुण्योनी उपभोग करशे । त्यारपछी मोटा पुत्र धनदत्ते

(धण्णेणं सत्थवाहेणं एवे वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी

धन्य सार्थवाह वडे आ प्रभाछे कडेवाया आह पोताना पिता धन्य सार्थवाहने आ प्रभाछे कछुं छे—

૧૨૮

જાતાધર્મકથાજ્ઞાને

સંરક્ષકાઃ યદ્વચ્છાપ્રવૃત્તેઃ ' સંગોવગા ' સંગોપકા દુશ્વરિતપ્રવૃત્તેઃ, ' તં ' તત્=તસ્માદ્
 કારણાત્ ' કઠણં ' કથં સ્વલુ=કેન પ્રકારેણ સ્વલુ હે તાત ! વયં યુષ્માન્ જીવિ-
 તાદ્ વ્યપરોપયામઃ=મારયામઃ, યુષ્માર્કં સ્વલુ માંસં ચ શોણિતં ચ કથમ્ આહાર-
 યામઃ ? ' તં ' તત્=તસ્માદ્ યુયં સ્વલુ હે તાત ! માં ધનદત્તનામાનં જીવિતાદ્ વ્ય-
 પરોપયત=મારયત મમ માંસં ચ શોણિતં ચ આહારયત. અગ્રામિકામટવીં ' નિત્ય-
 પદ્મવાગા સંરક્ષગા સંગોવગા તં કણં અમ્હે તાઓ ! તુભે જીવિયાઓ
 વવરોવેમો તુભં ણં મંસં ચ સોણિયં ચ આહારેમો અગ્ગમિયં અડવિં
 નિત્યરહ તં ચેવ સવ્વં મળાજાવ અત્થસ્સ જાવ પુણ્ણસ્સ આમાગી ખવિ-
 સ્સહ) હે માત ! આપ હમારે પિતા હૈં હસલિયે આપ મેરે લિયે દેવ, ગુરુ-
 જન કે સ્થાન ખૂન હૈં । નીતિ ધર્મ આદિ મેં મુજે સ્થાપિત કરતે રહતે હૈં ।
 રાજ આદિ સમક્ષ આપ અપને પદ પર મુજે બેઠાતે હૈં હસલિયે આપ મેરે
 લિયે સ્થાપક એવં પ્રતિષ્ઠાપક હૈં યથેચ્છા પ્રવૃત્તિ સે આપ હમારી સદા
 રક્ષા કરતે રહતે હૈં હસલિયે આપ મેરે સંરક્ષક હૈં, દુશ્વરિત-પ્રવૃત્તિ સે
 આપ હમે રોકતે રહતે હૈં હસલિયે આપ મેરે સંગોપક હૈં, તો કૈસે મેં હે
 તાત ! આપ કો જીવન સે રહિત કર સકતા હું । ઓર કૈસે આપ કે
 શોણિત ઓર માંસ કો ખા સકતા હું । હસલિયે હે તાત ! આપ હી મુજે
 જીવન સે રહિત કર દીજીયે ઓર મેરે સ્ત્રૂન ઓર માંસ કો આપ સ્વાહ્યે
 તાકિ આપ હસ અગ્રામિક અટવી કો પાર કર સકે ઓર રાજગૃહ નગર

(તુભેણં તાઓ ! અમ્હં પિયા ગુરુજનયદેવખૂયા ઠાવગા પદ્મવાગા સંરક્ષગા
 સંગોવગા તં કઠણં અમ્હે તાઓ ! તુભે જીવિયાઓ વવરોવેમો તુભં ણં મંસં ચ
 સોણિયં ચ આહારેમો અગામિયં અડવિં નિત્યરહ તં ચેવ સવ્વં મળાજાવ અત્થસ્સ
 જાવ પુણ્ણસ્સ આમાગી ખવિસ્સહ)

હે તાત ! તમે અમારા પિતા છો, એથી તમે અમારા દેવ અને ગુરુના
 સ્થાને છો. તમે મને નીતિ ધર્મ વગેરેમાં પ્રવૃત્ત પથુ કરતા રહો છો. રાજ
 વગેરેની સામે તમે પોતાના સ્થાને મને બેસાડો છો એથી તમે મારા સ્થાપક
 અને પ્રતિષ્ઠાપક છો. યથેચ્છા પ્રવૃત્તિથી તમે મારી રક્ષા કરતા રહો છો એથી
 તમે મારા સંરક્ષક છો, દુશ્વરિત પ્રવૃત્તિથી તમે મને રોકતા રહો છો, એથી
 તમે મારા સંગોપક છો. તો આવી પરિસ્થિતિમાં હે તાત ! હું તમને કેવી
 રીતે છવન રહિત બનાવી શકું અને કેવી રીતે તમારા શોણિત અને માંસનું
 ભક્ષણ કરી શકું ? એથી હે તાત ! તમે મુજ ધનદત્તને જ છવન રહિત
 બનાવી દો અને મારા ખૂન અને માંસનું તમે ભક્ષણ કરો. એથી તમે આ
 ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો અને રાજગૃહ નગરમાં પહોંચીને ત્યાં

બૈનગૌરધર્મામૃતવર્ણિનો ટી૦ નં૦ ૧૮ સુસુમાદારિકાચરિતવર્ણનમ્

૧૧૯

રહ ' નિસ્તરત=પારંગચ્છત, ' તંચેવ સઘ્વં મળહ ' તદેવસર્વં મળતિ=યથા ધન્ય સાર્થવાહો ડ્યેષ્ટં પુત્રમવદત્, તથૈવાયમપિ તદેવ સર્વં કથયતિ, યાવત્ અર્થસ્ય ધર્મ- સ્ય પુણ્યસ્ય ચ આભાગિનો ભવિષ્યથ । તતઃ સ્વલુ ધન્યં સાર્થવાહં ' દોચ્ચે ' દ્વિ- તીયઃ પુત્રધનપાલનામા એવમવદત્-મા સ્વલુ હે તાત ! અસ્માકં ડ્યેષ્ટં ભ્રાતરં 'ગુરુ- દેવયં ' ગુરુદૈવતં=દેવ-ગુરુસદૃશમ્, જીવિતાદ્ વ્યપરોપયામઃ=મારયામઃ, યૂયં સ્વલુ હે તાત ! ' મમં ' માં=ધનપાલનામાનં જીવિતાદ્ વ્યપરોપયત યાવત્ અર્થા- દિફલભાજો ભવિષ્યથ । ' એવં '=અનેન પ્રકારેણ ' જાવ પંચમેપુત્તે ' યાવત્

પહુંચ કર વહાં અપને મિત્રાદિ પરિજનોં કે સાથ મિલ સકે । તથા ધન ધર્મ એવં પુણ્ય કે ભોક્તા બન સકે । “ તં ચેવ સઘ્વં મળહ ” હસકા તાત્પર્યં યહી હૈ કિ જિસ પ્રકાર ધન્યસાર્થવાહ ને અપને ડ્યેષ્ટ પુત્ર, ધન- દત્ત સે કહા-ઉસી પ્રકાર ધનદત્ત ને બી અપને પિતા સે બૈસાહી કહા- (તણં ધણં સત્થવાહં દોચ્ચે પુત્તે એવં વયાસી-માણં તાઓ ! અમ્હે જેઠે ભાયરં ગુરુદેવયં જીવિયાઓ વવરોવેમો-તુબ્મેણં તાઓ ! મમં જીવિ- યાઓ વવરોવેહ, મંસં ચ સોણિયં ચ આહારેહ, અગ્ગામિયં અહર્વિ નિત્થરહ તં ચેવ સઘ્વં મળહ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણ્ણસ્સ આભાગી ભવિ- સ્સહ) હસકે ઘાદ ધન્યસાર્થવાહ સે ઉસકે દ્વિતીય પુત્ર ને હસ પ્રકાર કહા-હે તાત ! આપ હમારે ગુરુ દેવતાતુલ્ય ડ્યેષ્ટ ભાઈ કો જીવન સે રહિત મત કીજિયે કિન્તુ આપ તો હે તાત ! મુણે હી જીવિતસે રહિતકર દીજિયે-ઔર મેરે હી રક્ત એવં માંસ કો આપ સ્વાઈયે પીઈયે-તાકિ હસ અગ્રામિક અટવી સે પાર હો સકે હલ્યાદિ પહિલે જૈસા હી હસને

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકે. તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોક્તા બની શકે. “ તં ચેવ સઘ્વં મળહ ” આને અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યું તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યું.

(તણં ધણં સત્થવાહં દોચ્ચે પુત્તે એવં વયાસી-માણં તાઓ ! અમ્હે જેઠે ભાયરં ગુરુદેવયં જીવિયાઓ વવરોવેમો, તુબ્મેણં તાઓ ! મમં જીવિયાઓ વવરોવેહ, મંસં ચ સોણિયં ચ આહારેહ, અગ્ગામિયં અહર્વિ નિત્થરહ તં ચેવ સઘ્વં મળહ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણ્ણસ્સ આભાગી ભવિસ્સહ)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવાં મોટા ભાઈને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ ભારી નાખો અને મારા જ ભોહી અને માંસને તમે ખાઓ પીઓ, જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

પશ્ચમઃ પુત્રઃ=તૃતીયો ધનદેવશ્ચતુર્થો ધનગોપઃ, પશ્ચમો ધનરક્ષિતશ્ચાડપ્યવદત્ । તતઃ
 इत्थं तेषां वचनश्रवणानन्तरं, खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'हियइच्छियं'
 हृदयेष्टम्=હૃદયેષ્ઠમ્=હૃદયેષ્ઠિતં જ્ઞાત્વા તાન્ પુત્રાન્ એવમવાદીત્-માં ખલુ વયં હે પુત્રાઃ !
 एकमपि अस्माकं मध्येएकमपि जीविताद् व्यपरोपयामः एतत् खलु सुंसुमाया
 दारिकायाः शरीरं 'णिष्पाणं' निष्प्राणं=माणરહિતમ્, 'णिच्चेष्टं' निश्चेष्टं=
 चेષ્ટારહિતમ્ 'जीवविप्पजडे' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्ती-
 त्यर्थः?, तच्छ्रेयः=उचितं खलु हे पुत्राः 'अम्हं' अस्माकम् सुंसुमाया दारिकाया
 मांसं च शोणितं च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तरं च खलु वयं तेन आहारेण 'अ-

સય કહા (એવં પંચમે પુત્તે) હસી તરહ ઉસસે તૃતીય ધનદેવને ચતુર્થ
 ધનગોપને એવં પાંચથે ધનરક્ષિત ને બી કહા-(તણં સે ધણે સત્થવાહે
 પંચણં પુત્તાણં હિયइच्छियं જાણિત્તા તં પંચપુત્તે એવં વયાસી) હસ કે
 બાદ ઉસ ધન્યસાર્થવાહ ને પાંચો પુત્રો કે અભિપ્રાય કો જાનકર ઉન
 અપને પાંચો હી પુત્રો સે હસ પ્રકાર કહા-(માણં અમ્હે પુત્તા ! એગમવિ
 જીવિયાઓ વવરોવેમો એસણં સુંસમાએ દારિયાએ સરીરએ ણિપ્પાએ ણિ-
 ચ્ચેષ્ટે જીવવિપ્પજડે-તં સેયં ખલુ પુત્તા ! અમ્હં સુંસમાએ દારિયાએ મંસં
 ચ સોણિયં ચ અહારેત્તએ) હે મેરે પુત્રો ! મેં એક કો બી જીવન સે
 રહિત નહીં કરનાં ચાહતા હૂં કિન્તુ યહ સુંસમાદારિકા કા શરીર જો
 કિ નિષ્પ્રાણ, નિશ્ચેષ્ટ, ઔર જીવન સે રહિત બન ગયા હૈ-હસલિયે હમે
 ઉચિત હૈ કિ હે પુત્રો ! હમ હસ સુંસમાદારિકા કા માંસ એવં શોણિત

તેણે પહેલાંની જેમ જ બધું કહ્યું. (એવં પંચમે પુત્તે) આ પ્રમાણે જ તેને
 ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાંચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યું.
 (તણં સે ધણે સત્થવાહે પંચણં પુત્તાણં હિયइच्छियं જાણિત્તા તં પંચ પુત્તે એવં વયાસી)
 ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્થવાહે પાંચે પુત્રોની હૃદયની અભિલાષા બાણીને
 પોતાના તે પાંચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(માણં અમ્હે પુત્તા ! એગમવિ જીવિયાઓ વવરોવેમો એસણં સુંસમાએ દારિ-
 યાએ સરીરએ ણિપ્પાણે ણિચ્ચેષ્ટે જીવવિપ્પજડે-તં સેયં ખલુ પુત્તા ! અમ્હં સુંસ-
 માએ દારિયાએ મંસં ચ સોણિયં ચ અહારેત્તએ)

હે મારા પુત્રો ! તમારામાંથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી.
 પરંતુ આ સુંસમા દારિકાનું શરીર કે જે નિષ્પ્રાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ
 બની ગયું છે-એટલા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ ચોખ્ખું છે કે આપણે
 આ સુંસમા દારિકાનાં માંસ અને શોણિતને ખાઈએ.

अनंगारधमावृत्तवर्णिनी टी० अ० १८ सुसुमादारिकावृत्तवर्णनम्

७०१

विद्वत्स्था समाणा 'अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्तः राजगृहं 'संपाउणि-
स्सामो' संप्राप्स्यामः । ततः खलु ते पञ्चपुत्राः धन्येन सार्थवाहेन एवमुक्ताः
सन्तः 'एयमट्ठं' एतमर्थम् पूर्वोक्तरूपम् 'पडिसुणेति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकु-
र्वन्ति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् 'अरणिं' अरणिं
यस्मिन् मध्यमानेऽग्निरुत्पद्यते तत्काष्ठम् 'करेइ' करोति=संगृह्णाति, कृत्वा 'सरगं'
सरकम्=निर्मथनकाष्ठं करोति=आनयति कृत्वा, सरकेण अरणिं मथ्नाति=घर्षयति
मथित्वा, 'अग्गिं पाडेइ' पातयति=मन्यनवशादग्निमुत्पादयति 'पाडित्ता' पात-

खवे । (तएण अग्हे तेणं आहारेणं अविद्वत्स्था समाणा रायगिहं संपाउ-
णिस्सामो-तएणं ते पंच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं एवंपुत्ता समाणा
एयमट्ठं पडिसुणेति) इस से हमलोग उस आहार से शरीर नाश को
अप्राप्त होकर राजगृह नगर में पहुँच जावेंगे । इस प्रकार धन्यसार्थवाह
के द्वारा कहे गये उन पाँचों पुत्रों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को स्वी-
कार कर लिया । (तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणिं क-
रेइ, करित्ता सरगंच करेइ, करित्ता सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अ-
ग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुपाइं परिक्खवेइ
परिक्खवित्ता अग्गिं पज्जालेइ पज्जालित्ता सुंसमाए मंसं च सोणियं
च आहारेति) इस के बाद धन्यसार्थवाह ने पाँचों पुत्रों के साथ मिल-
कर अरणिकाष्ठ को एकत्रित किया । एकत्रित कर के फिर वह सरक
काष्ठ को निर्मथनकाष्ठ को ले आया-उसे लेकर के उसने उससे अरणि
का घर्षण किया । इस तरह घर्षण से अग्नि उत्पन्न हो गई । अग्नि के

(तएण अग्हे तेणं आहारेण अविद्वत्स्था समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो
तएणं ते पंच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं एवंपुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेति)

એથી આપણે બધા આ આહારથી શરીર નાશથી બેગરી બધને રાજ-
ગૃહ નગરમાં પહોંચી બધશ. આ પ્રમાણે ધન્ય સાર્થવાહ વડે કહેવાયેલા પાંચે
પુત્રોએ ધન્ય સાર્થવાહની તે વાતને સ્વીકારી લીધી.

(તएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च
करेइ, करित्ता सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधु-
क्खेइ, संधुक्खित्ता दारुपाइं परिक्खवेइ, परिक्खवित्ता अग्गिं पज्जालेइ, पज्जा-
लित्ता सुंसमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेति)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહ પાંચે પુત્રોની સાથે મળીને અરણિ કાષ્ટને
એકઠું કર્યું. એકઠું કરીને તેઓ સરક કાષ્ટને-નિર્મથન કાષ્ટને લઈ આવ્યા.
તેને લઈને તેણે તેથી અરણિકા કાષ્ટનું ઘર્ષણ કર્યું. આ પ્રમાણે ઘર્ષણથી અગ્નિ

यित्वा=उत्पाद्य अग्नि 'संधुक्खेइ' संधुक्षयति=उद्दीपयति, संधुक्ष्य=उद्दीप्य 'दारु-याई' दारुकाणि=इन्धनानि तत्र 'परिक्खिवइ' परिक्षिपति, परिक्षिप्य, अग्नि प्रज्वालयति, प्रज्वालय, सुंसुमाया दारिकाया भजितं मांसं च शोणितं च 'आहा-रेइ' आहारयति । अनन्तरं तेन आहारेण 'अविद्धत्था' अविध्वस्ताः=शरीरना-शमप्राप्ताः सन्तो राजगृहं नगरं संप्राप्ताः 'मित्तणाई० अभिसमण्णागया' मित्र-ज्ञाति=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनैः सह 'अभिसमण्णागया' अभिसमन्वागताः=संमिश्रिताः सन्तः तस्य च त्रिपुलस्य 'धणकणगरयण जाव' धनकनक रत्न यावत् =धनकनकरत्नादिकस्य 'आभागी जाया यावि होत्था' आभागिनो जाताश्चा-प्यभवन् । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः सुंसुमाया दारिकाया बहूनि लौकिकानि उत्पन्न हाने पर उसने फिर उसे धोंका-उद्दीपित किया-जब वह उद्दी-पित हो चुकी-तब उसने उसमें लकड़ियों को लगाया-। इस तरह की क्रिया से जब अग्नि अच्छी तरह प्रज्वलित हो चुकी-तब उसमें सुंसमा दारिका के मांस को और खून को भूँजा-भूँजकर उसे सबने खाया पीया-(तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्त-णाई० अभिसमण्णागया तस्स य त्रिउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी-जाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुंसमाए दारिया ए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसीए याविहोत्था) इस प्रकार उस आहार की सहायता से अविध्वस्त शरीर होकर वे वहाँ से चल कर राजगृह नगर में आ गये । वहाँ अकार वे अपने मित्रज्ञाति आदि परिजनों से खूब हिले मिले । एवं धनकनक आदि द्रव्य के भोक्ता भी बन गये ।

उत्पन्न थर्ग गये। अग्नि उत्पन्न थया आह तेछे तेने उद्दीपित क्यो। न्यारे ते उद्दीपित थछ गये। त्यारे तेछे तेमां लाकडीओ भूकी। आ रीते न्यारे सारी रीते अग्नि प्रज्वलित थछ गये। त्यारे तेमां सुंसमा दारिकाना मांसने अने बोझीने शेक्यां, शेक्या आह तेने अधाओ आधां-पीधां।

(तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता, मित्तणाई० अभिसमणा गया, तस्स य त्रिउलस्स धणकणगरयण जाव आभागीजाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुंसमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगय-सीए यावि होत्था)

आ प्रभाछे ते आहारनी सहायतायी अविनष्ट शरीरवाणा थछने तेओ। त्यांथी खाना थछने राजगृह नगरमां आवी गया। त्यां आवीने तेओ पीताना मित्र ज्ञाति वगेरे परिजनानी साथे भूण आत'द-पूर्वक भज्या, अने धन, कनक वगेरे द्रव्योने बोगववा लाग्या। सुंसमा दारिकाना भरखु पछीनां ओट्ठां

अनगारधर्मावृत्तवर्णिनी टीका अ० १८ सुसुमादारिकाचरितवर्णनम्

७०३

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे ' विगयसोगे ' विगतशोकः=सुसुमामरणजनितशोक-
रहितो जातश्चास्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे
गुणसिलए चेइए समोसढे । से णं धणणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं
सोच्चा पव्वइए, एक्कारसंगवी । मासियाए संलेहणाए सोहम्मे
उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । जहा वि य णं जम्बू !
धण्णेणं सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं
वा नो विसयहेउं वा सुसुमाए मंससोणिए आहारिए, नन्नत्थ
एगाए रायगिहं संपावणट्टयाए । एवामेव समणाउसो ! जो
अम्हं निगंथो वा निगंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंता-
सवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं
विप्पजहियव्वस्स वा नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बल-
हेउं वा नो विसयहेउं वा आहारे आहारेइ, नन्नत्थ एगाए
सिद्धिगमणसंपावणट्टयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं
बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिजे
जाव वीइवइस्सइ ।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं
अट्टारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥सू०९॥

॥ अट्टारसमं अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—' तणं कालेणं ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो
भगवान् महावीरो गुणशिलके चैत्ये ' समोसढे ' समवसृतः=तीर्थंकरपरम्परया

सुसुमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य किये जाते
—वे सब भी उन्होंने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए ॥सू०८॥

लौकिक कृत्यो करवां लेधओ ते सवे तेमळे पताव्यां अने धीमे धीमे तेओ
शेकरडित पण्ण जनी गया. ॥ सूत्र ८ ॥

समागतः । अनन्तरं स धन्यः सार्थवाहः सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रज्यानन्तरम् 'एकारसंगवी' एकादशाङ्गवित्=एकादशाङ्गामिश्रो जातः 'मासियाए' मासिक्या संलेखनया कालं कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्मे कल्पे 'उपपन्नः' । पुनः ततश्च्युतः महाविदेहे वर्षे 'सिज्झिहिइ' सेत्स्यति=मुक्तिं प्राप्स्यति । सम्प्रति धन्यसार्थवाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिनं सम्बोध्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह 'जहा वि इत्यादिना-

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलए चेइए समोसटे, से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए-एकारसंगवी-मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये । उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्थवाह अपने पांचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया । प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशांगों का ज्ञाता भी हो गया । अन्त समय में उसने एक मास की संलेखना धारणकर काल अवसर काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-। वहां से चब कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा । इस धन्यसार्थवाह के दृष्टान्त से जंबू स्वामीको संबोधितकर के श्री

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर

(गुणसिलए चेइए समोसटे । सेणं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए-एकारसंगवी-मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ)

गुणशिलक उद्यानमां आव्या. तेमनी पासेथी धर्मेपदेश सांभणीने ते धन्य सार्थवाह येताना पांथे पुत्रोनी साथे तेमनी पासे प्रव्रजित थर्ध गयो. प्रव्रजित थर्धने ते धीमे धीमे ओकादश (अजियार) अंगोने ज्ञाता पावु थर्ध गयो. छेवटे भृशु समये ओक भात्रनी संलेखना धारण करीने काल अवसर तेछे काल कयो. ते तेना प्रभावथी सौधर्म कल्पमां उत्पन्न थर्ध गयो. त्यांथी यवीने हवे ते महाविदेह क्षेत्रमां मुक्ति प्राप्त करेशे. आ धन्य सार्थवाहना दृष्टान्तने साथे राणीने श्री सुधर्मा स्वामीओ जंबू स्वामीने संबोधित

અમગારધર્માનુસર્વણી ટીકા અ૦ ૧૮ સુસુમાદારિકાજરિતવર્ણનમ્ ૭૦૫

જહાવિ ય જં' યથાઽપિ ચ સ્વલુ=યેન પ્રકારેણ સ્વલુ હે જમ્બૂઃ ! ધન્યેન સાર્થવાહેન નો વર્ણહેતોઃ = નો રૂપહેતોઃ બલહેતોઃ=નો વિષયહેતો. સુસુમાયા દારિકાયા માંસ-શોણિતમાહારિતમ્, ઇમાણ રાયગિહસંપાવણદ્વયાઈ' એકસ્ય રાજગૃહ સંપ્રાપ્ત્યાર્થતાયા અન્યત્ર ન, કિન્તુ-અહં રાજગૃહં સંપાપ્તુયામ્ ઇતિ હેતોરેવ તેન પુત્રૈઃ સહ તદ્ આહારિતમિતિ ભાવઃ ।

મગવાનાહ—' એવામેવ ' એવામેવ=અનેન પ્રકારેણૈવ ' સમણાડસો ' હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ યોઽસ્માકં નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા અસ્ય વાન્તાસ્રવસ્ય પિત્તા-

સુધર્મા સ્વામી ને ડનસે કહા—(જહાં વિ ય જં' જંબૂ ! ધણેણં સત્થવાહેણં જો વણહેડં વા નો રૂવહેડં વા નો બલહેડં વા નો વિસયહેડં વા સુસુમાઈ મંસસોણિઈ આહારિઈ નન્નત્થ ઇમાઈ રાયગિહં સંપાવણદ્વયાઈ-એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હં નિર્ગંથો વા નિર્ગંથીવા હમસ્સ ઓરાલિયસરીર સ્સ વંતાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુવ્કાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવ-સ્સં વિપ્પજહિયવ્વસ્સ નો વણહેડં વા નો રૂવહેડં વા નો બલહેડં વા નો વિસયહેડં આહરં અહારેઈ, નન્નત્થ ઇમાઈ સિદ્ધિગમણસંપાવણદ્વયાઈ) હે જંબૂ ! જિસ તરહ ધન્યસાર્થવાહ ને અપને શરીર મેં કાન્તિ વિશેષ થઢાને કે લિયે, બલ થઢાને કે લિયે, અથવા વિષય સેવન કી શક્તિ થઢાને કે લિયે સુસુમા દારિકા કા માંસ એવં શોણિત નહીં લાયા । કિન્તુ મેં પુત્રોં કે સહિત રાજગૃહ નગર મેં પહુંચ જાઉં હસી એક અભિ-પ્રાય સે સુસુમા દારિકા કા અપને પુત્રોં સહિત માંસ શોણિત સેવન કિયા-હસી તરહ હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જો હમરા નિર્ગ્રન્થ શ્રમણ જન અથવા શ્રમણી જન હૈ-વહ્ હસ વાન્તાસ્રવવાલે, પિત્તાસ્રવવાલે, શુક્રાસ્ર-

કરીને આ પ્રમાણે કહું કે—

(જહાં વિ ય જં' જંબૂ ! ધણેણં સત્થવાહેણં જો વણહેડં વા નો રૂવહેડં વા નો બલહેડં વા નો વિસયહેડં વા સુસુમાઈ મંસસોણિઈ આહારિઈ નન્નત્થ ઇમાઈ રાય-ગિહં, સંપાવણદ્વયાઈ એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હં નિર્ગંથો વા નિર્ગંથી વા હમસ્સ ઓરાલિયસરીર સ્સ વંતાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુવ્કાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવસ્સે વિપ્પજહિયવ્વસ્સ નો વણહેડં વા નો રૂવહેડં વા નો બલહેડં વા નો વિસયહેડં વા આહરં અહારેઈ, નન્નત્થ ઇમાઈ સિદ્ધિગમણસંપાવણદ્વયાઈ)

હે જંબૂ ! જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પેતાના શરીરમાં કાન્તિ વિશેષની વૃદ્ધિ કરવા માટે બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા વિષય સેવનની શક્તિના વર્ધન માટે સુસુમા દારિકાનાં માંસ અને શોણિત નહિ ખાધાં, પણ પુત્રો સહિત હું રાજ-ગૃહ નગરમાં પહોંચી બહુ આ એક જ મતલબથી પેતાના પુત્રોની સાથે સુસુમા દારિકાના માંસ-શોણિત સેવન કર્યાં. આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ શ્રમણજન અથવા શ્રમણીજનો છે તેઓ આ વાંતા-

સૂત્રસ્ય શુકાસૂત્રસ્ય ' જાત્ર અવસ્તં વિપ્રજહિપ્તવસ્સ ' યાવદ્ અવ્યયં વિપત્યા-
હ્યસ્ય ઔદારિકશરીરસ્ય નો વર્ણહેતોર્વા, નો રૂપહેતોર્વા નો વલહેતોર્વા, નો
વિષયહેતોર્વા, આહારમાદરતિ=આહારં કરોતિ, ' એગાપ સિદ્ધિગમનસંપાવણદ્વાપા '
અકસ્યાઃ સિદ્ધિગમનસંપાવણાર્થતાયાઃ ' નન્નત્ય ' અન્યત્ર ન, મોક્ષપ્રાપ્તિરૂપં પ્રયો-
જનં વિદ્યાય વર્ણાદિપ્રયોજનેન આહારં નાદરતીતિ ભાવઃ । સઃ=નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી
વા ચલુ ' હ્રમભવે ચેવ ' હ્રમભવે એવ=અસ્મિન્ જન્મન્યેવ વહૂનાં શ્રમણાનાં વહૂનાં
શ્રમણીનાં વહૂનાં શ્રાવકાણાં વહૂનાં શ્રાવિકાણામ્ ' અચ્ચણિજ્જે ' અર્ચનીયઃ=
આદરણીયઃ ' જાવ વીહવહ્સહ યાવદ્ વ્યતિત્રિજિવ્યતિ=ચાતુરન્તસંસારકાન્તાર-
ચુલ્લહ્વપિવ્યતિ-સંસારપારં ગમિષ્યતીત્યર્થઃ ।

ચાલે, યાવત્ અવહ્ય પરિત્યાગ હોને કી યોગ્યતાવાલે હસ ઔદારિક
શરીર મેં કાન્તિ વિશેષ વધાને કે લિયે ચલ વધાને કે લિયે, અથવા
વિષય કી પ્રવૃત્તિ ચાલૂ રાખને કે લિયે આહાર નહીં લેતા હૈ કિન્તુ-અક-
કેચલ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત કરને કે લિયે હી આહાર લેતા
હેં । મોક્ષ પ્રાપ્તિરૂપ પ્રયોજન કો છોડુકર ઔર કિસી કાન્તિ આદિ વધાને
કે અભિપ્રાકરૂપ પ્રયોજન સે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણ શ્રમણી જન અહાર નહીં
લિયા કરતે હેં-(સેણ) એસે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણ શ્રમણી જન (હ્રમભવે ચેવ
વહૂણં સમણાણં વહૂણં સમણીણં વહૂણં સાવયાણં વહૂણં સાવિયાણં અચ્ચ-
ણિજ્જે જાવ વીહવહ્સહ) હસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણ, શ્રમણી, જનો
દ્વારા તથા શ્રાવક શ્રાવિકાઓ દ્વારા અર્ચનીય-આદરણીય યાવત્ હસ
ચતુર્ગતિરૂપ સંસાર કાન્તાર કો પારકરને ચાલે હોતે હેં । (એવં ચલુ

સ્રવવાળા, પિત્તાસ્રવવાળા, શુકાસ્રવવાળા યાવત્ ચોક્કસ નષ્ટ થનારા આ
ઔદારિક શરીરમાં કાંતિ વિશેષની વૃદ્ધિ માટે, બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા તે
વિષયની પ્રવૃત્તિ ચાલુ રાખવા માટે આહાર લેતો નથી પણ ક્ષુદ્ર અથવા
સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવા માટે જ આહાર ગ્રહણ કરે છે. મોક્ષપ્રાપ્તિ
રૂપ પ્રયોજન વગર (ખીણ કોઈ કાંતિ વગેરેની વૃદ્ધિની અસિદ્ધતા રાખીને
નિર્ગ્રન્થ-શ્રમણીજન આહાર ગ્રહણ કરતા નથી. (સેણ) એવા નિર્ગ્રન્થ
શ્રમણ શ્રમણીજનો—

(હ્રમભવે ચેવ વહૂણં સમણાણં સમણીણં વહૂણં સાવયાણં વહૂણં સાવિયાણં
અચ્ચણિજ્જે જાવ વીહવહ્સહ)

આ બધામાં જ ઘણા શ્રમણ શ્રમણીજનો વડે તેમજ શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ
વડે અર્ચનીય, આદરણીય યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારને પાર
કરી જનારા હોય છે.

અનંગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૮ સુસુમાધારિકાવરિતવર્ણનમ્

૭૦૭

સુધર્માસ્વામીપ્રાહ— ' एवं ' અનેન પૂર્વોક્તપ્રકારેણ સ્વલુ હે જંબૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ ' જાવ સંપત્તેણ ' યાવત્ સંપ્રાપ્તેન=મોક્ષંગતેન અષ્ટાદશસ્ય જ્ઞાતા-ધ્યયનસ્ય ' અયમદ્વે ' અયમર્થઃ=પૂર્વોક્તરૂપોડર્થઃ પ્રરૂપ્તઃ=પરૂપિતઃ, ' તિ વેમિ ' इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ९ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
त्रपतिकोल्हापुरराजपदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-
व्रतिविरचितायां-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानंगारधर्मामृतवर्षि-
ण्याख्यायां व्याख्यायामष्टादशमध्ययनं समाप्तं ॥ १८ ॥

જંબૂ ! સમણેન ભગવતા મહાવીરેણ જાવ સંપત્તેણ અઢારસમસ્સ ણાય-
જ્ઞયણસ્સ અયમદ્વે પળ્લણેત્તિવેમિ) इस प्रकार से हे जंबू ! श्रमण भग-
वान् महावीरने जो सिद्धि गति नमक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस
अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है ।
ऐसा जो मैंने कहा है वह उन्हीं के श्री मुख निर्गतवाणी को सुनकर
ही कहा है-अपनी और से इसमें कुछ भी मिलाकर नहीं कहा है ॥ सू० ९ ॥
श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत

“ જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર ” કી અનંગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા

અઠારહવાં અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

एवं स्वलु जंबू ! समणेणं भगवता महावीरेण जाव संपत्तेणं अठारसमस्स
णायज्जयणस्स अयमद्वे पण्णणेत्तिवेमि)

આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધગતિ
નામક સ્થાનને મેળવી ચુક્યા છે-આ અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત
રૂપથી અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. આણું જે મેં કહ્યું છે, તે તેમના જ શ્રીમુખથી
નીકળેલી વાણીને સાંભળીને જ કહ્યું છે. પોતાના તરફથી ઉમેરીને મેં
કહ્યું નથી. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત

“ જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર ” ની અનંગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાણું

અઢારજું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

અથ ઇકોનવિંશતિતમમધ્યયનમ્—

ગતમષ્ટાદશમધ્યયનમ્, સામ્પતમેકોનવિંશતિતમં વ્યાખ્યાયતે, અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહ અપમિસમ્બન્ધઃ—પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને અસંવૃતાસ્રવસ્ય તદિતરસ્ય ચ અનર્થાર્થૌ ઉક્તૌ, ઇદતુ ચિરં સંવૃતાસ્રવોઽપિ યઃ પશ્ચાદન્યથા સ્યાત્તસ્ય અલ્પકાલં સંવૃતાસ્રવસ્ય ચ અનર્થાર્થૌ પ્રોચ્યેતે, ઇત્યેવં સમ્બન્ધેનાયાતસ્યાસ્યેદમાદિસૂત્રમ્—‘જડ્ઞં-અંતે’ ઇત્યાદિ ।

॥ પુણ્ડરીક-કણ્ડરીક નામ કા ઉત્તીસર્વાં અધ્યયન પ્રારંભ ॥

અઠારહવાં અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા-અથ ૧૯ વાં અધ્યયન પ્રારંભ હોતા હૈ-ઇસ અધ્યયન કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ ઇસ પ્રકાર કા સંબન્ધ હૈ પૂર્વ અધ્યયન મેં અસંવૃતાસ્રવ અથવા સંવૃતાસ્રવ ચાલે પ્રાણી કો અર્થ એવં અનર્થ કી પ્રાપ્તિ હોના સમર્થિત કિયા ગયા હૈ-અર્થાત્ અસંવર ચાલેકો અનર્થ કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ ઓર સંવરચાલે કો ઇષ્ટ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ । અથ ઇસ અધ્યયન મેં સૂત્રકાર યહ પ્રદર્શિત કર રહે હૈં કિ જિસ પ્રાણી ને ચિરકાલ સે આસ્રવકો સંવૃત કર દિયા હૈ-પરંતુ યદિ વહ પીછે સે અસંવૃતાસ્રવ ચાલા બન જાતા હૈ તો ઉસકે અનર્થ કી પ્રાપ્તિ તથા અલ્પ કાલ ખી જિસને આસ્રવ કો સંવૃતકર દિયા હૈ ઉસકે અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ । ઇસ સંબંધ કો લેકર પ્રારંભ કિયે ગયે ઇસ અધ્યયન કા યહ સર્વ પ્રથમ સૂત્ર હૈ ।

પુણ્ડરીક-કણ્ડરીક નામે ઓગણીસમું અધ્યયન પ્રારંભ

અઠારમું અધ્યયન પુરં થઈ ગયું છે હવે ઓગણીસમું અધ્યયન શરૂ થાય છે. આ અધ્યયનને ઓના પૂર્વના અધ્યયનની સાથે આ જાતને સંબંધ છે કે પૂર્વ અધ્યયનમાં અસંવૃતાસ્રવ અથવા સંવૃતાસ્રવવાળા પ્રાણીને અર્થ અને અનર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વાતનું સમર્થન કરવામાં આવ્યું છે. એટલે કે અસંવરવાળાઓને અનર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે અને સંવરવાળાઓને ઇષ્ટ-અર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે. હવે આ અધ્યયનમાં સૂત્રકાર આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરી રહ્યા છે કે જે પ્રાણીએ ચિરકાળથી એટલે કે બહુ લાંબા વખતથી આસ્રવને સંવૃત કરી દીધો છે, પરંતુ જો તે પાછળથી એટલે કે ભવિષ્યમાં અસંવૃતાસ્રવવાળો બની જાય છે તો તેને અનર્થની પ્રાપ્તિ તેમજ થોડા વખત સુધી પણ જેણે આસ્રવને સંવૃત કરી દીધો છે તેને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ વાતને લઈને આરંભાએલા આ અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે:—

अनंगारधमामृतवर्षिणी टीका अ० १९ पुंडरीक-कंडरीकखरित्रम्

७०६

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
संपत्तेणं अट्टारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, एभूण-
वीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? एवं खलु जंबू !
तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे पुव्वविदेहेवासे
सीयाए महाणईए उत्तरिह्हे कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरि-
ह्हस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्व-
यस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णामं विजए पन्नत्ते ।
तत्थ णं पुंडरिगिणी णामं रायहाणी पन्नत्ता णवज्जोयणवित्थि-
ण्णा दुवालसज्जोयणायामा जावपच्चक्खं देवलोगभूया पासाईया
दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तीसेणं पुंडरिगिणीए णयरीए
उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जाणे । तत्थ णं
पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था, तस्स
णं पउमावई णामं देवी होत्था । तस्स णं महापउमस्स रत्नो
पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं जहा-
पुंडरीए य कंडरीए य, सुकुमालपाणिपाया० । पुंडरीए जुव-
राया । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, महापउमे राया
णिग्गए धम्मं सोच्चा, पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए पोंडरीए
राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोइसपुव्वाइं
अहिज्झइ, तएणं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं
से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे ॥ सू० १ ॥

પાશ્ચાત્યે=પશ્ચિમેભાગે ' એગસેલગસ ' એકઝીલકસ્ય=મધ્યજમ્બૂદ્વીપમેરુપર્વતસમીપ-
સ્થસ્ય એક ઝીલકનામકસ્ય ' વચ્ચારપચ્ચયસ ' વક્ષસ્કારપર્વતસ્ય ' પુરત્થિમેણં '
પૌરસ્ત્યે=પૂર્વસ્યાં દિશિ ' એત્થણં ' અત્ર સ્થલુ પુષ્કલાવતી નામ વિજયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ।
તત્ર સ્થલુ પુણ્ડરીવિણી નામ રાજધાની પ્રજ્ઞપ્તા, સા ' ણવજોયણવિત્થિણા '
નવયોજનવિરતીર્ણા = નવયોજનવિસ્તારવતી ' દુવાલસજોયણાયમા ' દ્વાદશ-
યોજનાયામા=દ્વાદશયોજનાનિ આયામો દૈર્ઘ્યં યસ્યાઃ સા=દ્વાદશયોજનદીર્ઘેત્યર્થઃ,
પુનઃ ' જાવ પચ્ચક્કલં દેવલોચભૂયા યાવત્ પ્રત્યક્કલં દેવલોકભૂતા=સાક્ષાત્ સ્વર્ગસદશા-
પુનઃ પાસાદીયા, દર્શનીયા, અભિરૂપા, ધનિરૂપા । તસ્યાઃ સ્થલુ પુણ્ડરીકિણ્યાઃ

પુરત્થિમેણં એત્થણં એકસ્થલાટ્ટણામં વિજયે વણ્ણત્તે) ઇસ પ્રકાર જંબૂસ્વામી
કે પૂછને પર સુધર્મા સ્વામી ઉનસે કહતે હૈં-સુનો-તુમ્હારે પ્રદન કા
ઉત્તર ઇસ પ્રકાર હૈં ઉસ કાલ ઔર ઉસ સમય મેં ઇસ જંબૂદ્વીપ નામ કે
દ્વીપ મેં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમેં, શીતા મહાનદી કે ઉત્તરદિગ્વર્તી તીર પર સ્થિત
નીલ પર્વત કે દક્ષિણ દિગ્ભાગ મેં, તથા ઉત્તર દિગ્વર્તી શીતામુખવનષંડ
કે પશ્ચિમ ભાગ મેં, તથા એક ઝીલક નામ વાલે વક્ષસ્કાર પર્વત કી પૂર્વ
દિશા મેં પુષ્કલાવતી ઇસ નામ કા વિજય હૈં । શીતામુખવનષંડ
કા તાત્પર્ય યહ હૈં-કિ જહાં સે શીતાનદી નીકળી હૈં ઉસ ઉદ્ગમસ્થાન
પર એક વનષંડ હૈં । મધ્ય જંબૂદ્વીપ ઔર મેરુપર્વત કે સમીપ મેં રહા
હુઆ એક ઝીલક નામ કા વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં ।-(તણં પુંડરિગિણીનામં
રાયહાણી પચ્ચત્તા, ણવજોયણવિત્થિણા દુવાલસજોયણાયમા, જાવ પચ્ચ-
ક્કલં દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્જા અભિરૂપા પઢિરૂપા) ઉસ

સીયામુહવનષંડસસ પચ્ચત્થિમેણં એગસેલગસ વચ્ચારપચ્ચયસ પુરત્થિમેણં
એત્થણં પુષ્કલાવટ્ટ ણામં વિજયે વણ્ણત્તે)

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા
લાગ્યા કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા સવાલને જવાબ આ પ્રમાણે છે કે
તે કાળે અને તે સમયે આ જંબૂદ્વીપ નામક દ્વીપમાં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમાં,
શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના
દક્ષિણ દિગ્ભાગમાં તેમજ ઉત્તર દિશામાં આવેલા શીતા મુખવનષંડના પશ્ચિમ
ભાગમાં, તેમજ એક ઝીલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં પુષ્ક-
લાવતી નામે એક વિજય છે. શીતા મુખવન-ષંડનો અર્થ આમ સમજવો
જોઈએ કે જ્યાંથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનષંડ છે.
મધ્ય જંબૂદ્વીપ અને મેરુપર્વતની પાસે આવેલા એકઝીલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે.

(તેત્થણં પુંડરિગિણીનામં રાયહાણી પચ્ચત્તા, ણવ જોયણવિત્થિણા દુવાલસજો-
યણાયમા, જાવ પચ્ચક્કલં દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્જા અભિરૂપા પઢિરૂપા)

નગર્યાઃ ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્ભાગે નલિનીવનં નામ ઉદ્યાનમ્ । તત્ર સ્થલુ પુન્ડરીકિણ્યાં રાજધાન્યાં મહાપદ્મો નામ રાજાઽઽસીન્ । તસ્ય સ્થલુ પદ્માવતી નામ દેવી આસીત્ । તસ્ય સ્થલુ મહાપદ્મસ્ય રાઙ્ગઃ પુત્રો પદ્માવત્યા દેવ્યા આત્મજૌ દ્વૌ કુમારૌ આસ્તામ્ । 'તં જહા' તથથા તયોર્નામરૂપે, તદાહ- 'પુંડરીય ય કંડરીય ય સુકુમાલ-પાણિપાયા' પુન્ડરીકથ કંડરીકથ સુકુમારપાણિપાદૌ કોમલકરચરણૌ । તયોર્મધ્યે પુન્ડરીકો યુવરાજાઽઽસીન્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે 'થેરાગમણં'

પુષ્કલાવતી વિજય મેં પુંડરી કિની નામ રાજધાની થી । યહ નવ યોજન વિસ્તારવાલી તથા ૧૨ યોજન કી લંબી હૈ યહ સાક્ષાત સ્વર્ગ જૈસી પ્રતીત્ત હોતી હૈ । પ્રાસાદીયચિત્ત એવં અન્તઃકરણ કો યહ પ્રસન્ન કરને વાલી હૈ, દર્શનીય-નેત્રોં કો તૃપ્તિ કરને વાલી હૈ, અભિરૂપ-અસાધારણ રચના સે યુક્ત હૈ એવં પ્રતિરૂપ હૈ-હસકે જૈસી ઓર દૂસરી કોઈ નગરી નહીં હૈ એસી । (તીસેણં પુંડરિગિણીય ણયરીય ઉત્તરપુરસ્થિમે દિસિભાણલિણિવણે ણામં ઉજ્જાણે-તત્થ ણં પુંડરિગિણીય રાયહાણીય મહાપડમે ણામં રાયા હોત્થા-તસ્સણં પડમાર્વ્ણામં દેવી હોત્થા, તસ્સ ણં મહાપડમસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાર્વ્ણે દેવીય અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા) ઉસ પુંડરીકિણી નગરી કે ઉત્તર પૌરસ્થ દિગ્ભાગ મેં નલિનીવન નામ કો એક ઉદ્યાન થા । ઉસ પુંડરીકિણી રાજધાની મેં મહાપદ્મનામ કા એક રાજા રહતા થા । ઉસકી દેવી કા નામ પદ્માવતી થા । ઉસ મહાપદ્મ રાજા કે યહાં પદ્માવતી કો કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુણ દો કુમાર થે (તં જહા પુંડરીય ય, કંડરીય ય-સુકુમાલપાણિ પાયાં । પુંડરીય યુવરાયા તેણં કાલેણં

તે પુષ્કલાવતી વિજયમાં પુંડરીકિની નામે રાજધાની હતી. તે નવ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બીજા યોજન જેટલી લાંબી છે. તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ જેવી જ લાગે છે. તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્તઃકરણને તે પ્રસન્ન કરનારી છે, દર્શનીય-આંખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ) રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ-એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવી છે.

(તીસેણં પુંડરિગિણીય ણયરીય ઉત્તરપુરસ્થિમે દિસિભાણલિણિવણે ણામં ઉજ્જાણે-તત્થ ણં પુંડરિગિણીય રાયહાણીય મહાપડમે ણામં રાયા હોત્થા-તસ્સણં પડમાર્વ્ણામં દેવી હોત્થા, તસ્સણં મહાપડમસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાર્વ્ણે દેવીય અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા)

તે પુંડરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્થ દિગ્વિભાગમાં નલિનીવન નામે એક ઉદ્યાન હતો. તે પુંડરીકિણી રાજધાનીમાં મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો હતો. તેની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું. તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્માવતી દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા એ રાજકુમાર હતા.

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી.અ. ૧૯ પુંડરીક-કંડરીકચરિત્રમ્

૭૧૩

સ્થવિરાગમનન=તસ્યા રાજધાન્યા નલિનીવને ઉદ્યાને સ્થવિરાણામાગમનમ્ભૂત । મહા-
પદ્મો રાજા ધર્મ શ્રોતું નિર્ગતઃ, ધર્મ શ્રુત્વા સંજાતવૈરાગ્યઃ પુન્ડરીકં રાજ્યે સ્થાપ-
યિત્વા મન્વ્રજિતઃ । અનન્તરં પુન્ડરીકો રાજા જાતઃ, કંડરીકો યુવરાજઃ । મહા-
પદ્મઽનગારઃ ચતુર્દશપૂર્વાણિ અધીતે । તતઃ સ્વલુ સ્થવિરા બહિર્જપદવિહારં વિહરન્તિ ।
તતઃ સ્વલુ સ મહાપદ્મો બહૂનિ વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાયં પાલયિત્વા યાવદ્ સિદ્ધઃ॥૨૦॥

તેણં સમણં થેરાગમણં, મહાપદમે રાયા ણિગ્ગણ, ધમ્મં સોચા પોંડરીયં
રજ્જે ઠવેત્તા પન્વહણ । પોંડરીય રાયા જાણ, કંડરીય જુવરાયા । મહાપ-
દમે અણગારે ચોદ્દસપુવ્વાઈ અહિજ્જહ, તણં થેરા બહિયા જણવયવિહારં
વિહરંતિ, તણં સે મહાપદમે બહૂણિ વાસાઈ જાવ સિદ્ધે) उनके नाम
इस प्रकार है-१ पुंडरीक और दूसरा कंडरीक-ये दोनों पुत्र सुकुमार
करचणवाले थे । पुंडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था । उस
काल में और उस समय में वहां स्थविरों का आगमन हुआ । महाप-
द्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर
नलिनीवन उद्यान में आये । वहां धर्म का उपदेश सुनकर उन्हें वैराग्यभाव
उत्पन्न हो गया-सो वे पुंडरीक को राज्य में स्थापितकर दीक्षित हो गये ।
पुंडरीक राजा बन गया-और कंडरीक युवराज हो गया । महापद्मराजर्षि
ने चौदह वर्षों का अध्ययन कर लिया । इसके बाद वहां से स्थविरों ने

(तं जहा-पुंडरीय य, कंडरीय य-सुकुमालपाणिपाया० । पुंडरीय जुव-
राया तेणं कालेण तेणं समणं थेरागमणं, महापदमे राया णिगगण, धम्मं सोच्चा
पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पन्वहण । पोंडरीय रાયા જાણ, કંડરીય જુવરાયા । મહા-
પદમે અણગારે ચોદ્દસપુવ્વાઈ અહિજ્જહ, તણં થેરા બહિયા, જણવયવિહારં વિહ-
રંતિ, તણં સે મહાપદમે બહૂણિ વાસાઈ જાવ સિદ્ધે)

તેમનાં નામો આ પ્રમાણે છે-૧ પુંડરીક, અને ૨ કંડરીક. આ બંને
પુત્રો સુકોમળ હાથ-પગવાળા હતા. રાજાએ પુંડરીકને યુવરાજપદ પ્રદાન કર્યું
હતું. તે કાળે અને તે સમયે ત્યાં સ્થવિરોનું આગમન થયું. મહાપદ્મ રાજા
ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળીને નલિનીવન ઉદ્યા-
નમાં આવ્યો. ત્યાં ધર્મોપદેશ સાંભળીને તેને વૈરાગ્યભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયો.
છેવટે પુંડરીકને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તેઓ દીક્ષિત થઈ ગયા. પુંડરીક
રાજા થઈ ગયો અને કંડરીક યુવરાજ થઈ ગયો. મહાપદ્મ રાજર્ષિએ ચૌદ
વર્ષોનું અધ્યયન કરી લીધું. ત્યારપછી સ્થવિરો ત્યાંથી બહાર જનપદોમાં વિહાર

मूळम्-तएणं थेरा अन्नया कयाइं पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिगए । कंडरीए महाजणसदं सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ । थेरा धम्मं परिकहेति पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए । तएणं से कंडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुण्डरीयं रायं आपुच्छामि, जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए, तएणं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइत्तए । तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणि मुंडे जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महयार रायाभिसेएणं अभिसिंचामि । तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स रणो एयमट्ठं णो आढाइ णो-परिजाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ । तएणं पुण्डरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-जाव तुसिणीए संचिट्ठइ । तएणं पुण्डरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएइ, बहूहिं आघवणाहि बाहिर जनपदों में विहार कर दियो । महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालनकर योवत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १ ॥

भाटे नीकणी पड्या. मडापन्न अनगारे धणुं वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनु पालन करीने यावत् सिद्धपदने प्राप्त करी लीधु. ॥ सूत्र १ ॥

अन्नगारवमांशुतवर्षिणी टी० अ० १९ पुंडरीक-कंडरीकचरित्रम्

७१५

य पणवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ । पवइए अणगारे जाए एगारसंगविऊ । तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमांति पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरंति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘तएणं ते’ इत्यादि । ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समवसताः=समगताः । तेषां समागमनं श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितुं निर्गतः । अनन्तरम्—कण्डरीको ‘महाजणसदं’ महाजनशब्द=स्थविरान् वन्दितुं कामानां गच्छतां बहूनां जनानां कोलाहलं श्रुत्वा ‘जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ’ यथामहाबलो यावत्पर्युपास्ते । महाबल इव स्थविराणां समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते । स्थविरा धर्मं ‘परिकहेति’ परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः । तैरुपदिष्टं धर्मं श्रुत्वा पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः ‘जाव पडिगए’ यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

‘तएणं ते थेरा अन्नया कयाइं’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (ते थेरा) वे स्थविर (अन्नया कयाइं किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसदा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुंडरीकिणी राजधानी में आये । वहां वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुंडरीक राजा उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहां जाने के लिये अपने महल से निकले । (कंडरीए महाजणसदं सोचा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्मं परिकहेति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव

‘तएणं ते थेरा अन्नया कयाइं’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्या२५छी (ते थेरा) ते स्थविरो (अन्नया कयाइं) के०छ अ०छ प०छते (पुणरवि) द्वी (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसदा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुंडरीकिणी राजधानीमां आव्या. त्यां तेओ नलिनीवन उद्यानमां रोकाया. पुंडरीक राज तेभनुं आगमन सांखणीने धम्मं बुं व्याख्यान सांखणवानी छिच्छाथी त्यां जवा भाटे पोताना महेसथी नीकल्या. (कंडरीए महाजणसदं सोचा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्मं परि-

नमस्यित्वा प्रतिनिवृत्तः । ततः खलु कण्डरीकः ' उट्टाए ' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति, उत्थया उत्थाय ' जाव ' यावत् स्थविरान् वन्दित्वा नमस्यित्वा एव-मवदत्- ' से जहेयं तुब्भे वदह ' तद्यथेदं यूयं वदथ=हे देवानुप्पियाः ! यूयं यथा यद् वदथ, तत्तथैव, ' जं णवरं ' यन्नवरं=यो विशेषः सचैवम्-यदहं पूर्वं पुण्डरीकं राजानम् आपृच्छामि । ततः खलु ' जाव पव्वयामि ' पावत् प्रव्रजामि ।

पडिगए) इसके बाद कंडरीक युवराज स्थविरों को वंदना करने के लिये जानेवाले अनेक मनुष्यों का कोलाहल सुनकर महाबल राजा की तरह स्थविरों के पास गया-वहां जाकर उसने उनकी वंदना की-नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर फिर उसने उनकी पर्युपासना की । स्थविरों ने धर्म का उपदेश दिया । उस उपदेश को सुनकर पुंडरीक श्रमणोपासक बन गया । बाद में वह स्थविरों को वंदना और नमस्कार कर अपने स्थान पर वापिस वहां से लौट आया । (तएणं से कंडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएणं जाव पव्वयामि-अहामुहं देवानुप्पिया ! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदह, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद कंडरीक उत्थानशक्ति से उठा-उत्थानशक्ति-उठने की शक्ति से उठकर उसने स्थविरों को वंदना की-नमस्कार किया । वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा-हे

कहेति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए) त्थारपणी कंडरीक युवराज स्थविरेणी वंदना करवा भाटे उपडेला अनेक माणुसेना धोधाट सांखणीने भडाणव राजाणी जेम स्थविरेणी पासए गये। त्यां जधने तेणु तेमने वंदन अने नमस्कार कर्या। वंदना अने नमस्कार करीने तेणु तेमनी पर्युपासना करी। स्थविरेअे धर्मोपदेश आय्ये, ते उपदेशने सांखणीने पुंडरीक श्रमणोपासक णनी गये। त्थारपणी ते स्थविरेने वंदन तेमज नमन करीते पाताना निवास-स्थाने पाछे आवते। रह्ये।

(तएणं से कंडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएणं जाव पव्वयामि-अहामुहं देवानुप्पिया ! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदह, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ)

त्थारपणी कंडरीक उत्थान शक्ति वडे जिले थये, उत्थान शक्ति-जिमा थवानी शक्ति वडे जिले थधने तेणु स्थविरेने वंदन तेमज नमस्कार कर्या। वंदना अने नमस्कार करीने तेणु तेमने आ प्रमाणे विनंती करतां कहुं के

इति तद् वचनं श्रुत्वा ते स्थविराः प्रोचुः 'अहासुहं देवानुप्पिया' यथासुखं हे देवानुप्पिया ! हे देवानुप्पिय ! यथा तव सुखकरं भवेत् तथा कुरु । ततः खलु स कण्डरीको यावत् स्थविरान् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकान् समीपात् प्रतिनिष्काम्यति, प्रतिनिष्काम्य, तमेव 'चाउग्घंटं' चतुर्घण्टं=चतस्रो घण्टा यस्मिन् स तम्=घण्टा चतुष्टयोपेतम् अश्वरथं दूरोहति, यावत् प्रत्यवरोहति=स्थादवतरति । अवतरणानन्तरं यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, 'करयल जाव' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं शिर आवत्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा पुण्डरीकमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्पिय ! मया स्थविराणामन्तिके यावद्धर्मो निशान्तः=श्रुतः, स धर्मः=स्थविरप्रोक्तो धर्मः यावत् अभिरुचितः । तत् खलु हे देवानुप्पिय ! 'जाव पव्वइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम्=हे देवानुप्पियाः ! भवद्भिरभ्यनुज्ञातो स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः ।

देवानुप्पियो ! आप जैसा कहते हैं-वह वैसा ही है-मेरी भावना उसे सुनकर संयम लेने की हो गई है-अतः संयम धारण करने के पहिले मैं पुंडरीक राजा से इस विषय में पूछ आता हूँ उसके बाद संयम धारण करना चाहता हूँ । इस प्रकार उसके वचन सुनकर उन स्थविरों ने उससे कहा-हे देवानुप्पिय ! तुम्हे जैसे सुख हो-तुम वैसा करो-इसके बाद कंडरीक ने स्थविरों को वंदना की-नमस्कार किया और वंदना नमस्कारकर वह उनके पास से चला आया (पडिनिक्खमिप्ता) आकर के (तमेवचाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी एवं खलु देवानुप्पिया ! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए

हे देवानुप्पियो ! तमे जेम कडो छो ते अरेअर तेम छे. आ अणु सांलणीने संयम अडणु करवानी भारी छिच्छा थछ गछ छे. ओटला भाटे संयम धारणु करतां पडेलो हं पुंडरीक राजने आ विषे पूछी आवुं छुं. त्यारपछी हं संयम धारणु करवा आवुं छुं. आ प्रमाणे तेनां वचने सांलणीने ते स्थविराओ तेने कहुं छे हे देवानुप्पिय ! तमने जेमां सुण भणे तेम करे. त्यारपछी कंडरीके स्थविराने वंदन तेमअ नमस्कार करीने ते तेमनी पासैथी आवतो रह्यो. (पडिनिक्खमिप्ता) आवीने,

(तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल पुंडरीयं एवं वयासी एवं खलु देवानुप्पिया ! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए-तण्णं देवानुप्पिया !

ततः पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! भ्रातः इदानीं मुण्डो यावत् प्रव्रज अहं खलु त्वां महता २ ' रायाभिसेएण ' राजाभिषेकेण ' अभिसिंचामि=अभिषेचयामि । ततः खलु स कण्डरीको युवराजः पुण्डरीकस्य राज्ञ एतमर्थं नो आद्रियते=स्वस्य राज्याभिषेकरूपमर्थं नो मनुते, ' नो परिजाणइ ' नो प्रतिजानाति=न स्वीकरोति ' तुसिणीए संचिद्धइ ' तूष्णीकः

-तएणं देवाणुप्पिया ! पव्वइत्तए ! तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि-अहं णं तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि) वह वहां आया-जहां चतुर्घटो-पेत भपना अश्वरथ रखा हुआ था । वहां आकर वह उसपर चढ़ गया-चढ़कर वह जहां पुंडरीक राजा थे वहां आया-वहां आते ही वह रथ से नीचे उतरा । नीचे उतरकर पुंडरीक राजा के पास गया-वहां जाकर उसने पुंडरीक राजा को दोनों हाथ [जोड़कर नमस्कार किया-वाद में इस प्रकार कहने लगा-हे देवानुप्रिय मैंने स्थविरो के पास धर्म का उपदेश सुना है-वह मुझे बहुत रुचा है इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैं आपसे आज्ञापित होकर उन स्थविरो के पास संघम लेना चाहता हूँ-इस प्रकार कंडरीक की बात सुनकर पुंडरीकने उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस समय मुंडित होकर स्थविरो के पास संघम धारण मतकरा मैं बड़े जोर शोर के उत्सव के साथ तुम्हारा राज्याभिषेक करना चाहता हूँ । (तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स जाव पव्वइत्तए ! तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणिंमुंडे जाव पव्वयाहि अहं णं तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि)

ते त्यां आण्ये न्यां यतुर्घटवाणे पोताने अश्वरथ डते। त्यां आवीने ते तेमां भेसी गये, अने भेसीने ते न्यां पुंडरीक राजा डते। त्यां गये। त्यां पढांयता न ते रथ उपरथी नीचे उतर्यो, नीचे उतरने पुंडरीक राजा नी पासे गये। त्यां न्धने तेणे अने हाथ न्धने पुंडरीक राजा ने नमस्कार कर्था अने त्थारपछी तेणे तेमने विनंती करतां आ प्रमाणे उछुं के डे देवानुप्रिय ! मे स्थविरो नी पासेथी धर्मोपदेश सांलण्यो छे ते मने पूम न गमी गये छे, अथी डे देवानुप्रिय ! हुं तमारी आशा भेगवीने स्थविरो नी पासेथी संघम अडणु करवा धण्डुं छुं, आ प्रमाणे कंडरीक नी वात सांलणीने पुंडरीके तेने आ प्रमाणे उछुं के डे देवानुप्रिय । तमे डमणुं मुंडित थधने स्थविरो नी पासेथी संघम धारणु कशे नडि, हुं मोटा उत्सव साथे तमारो राज्याभिषेक करवा आहुं छुं.

સંતિષ્ઠતે=તમથં ન સ્વીકૃતવાન્ કેવલં મૌનમવલમ્બ્ય સ્થિતઃ । તતઃ સ્વલુ પુન્ડ-
રીકો રાજા કંડરીકં ખ્રાતરં દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારમ્ ‘ એવં ‘પૂર્વોક્તરૂપેણ
અવાદીત્-‘ જાવ તુસિળીએ સંચિદ્વહ ’ યાવત્-તુષ્ણીકઃ સંતિષ્ઠતે । તતઃ સ્વલુ
પુન્ડરીકઃ કંડરીકં યદા ‘ નો સંચાઈ ’ નો શક્નોતિ = ન સમર્થો ભવતિ
બહુભિઃ ‘ આઘવળાહિ ય ’ આરુયાપનામિશ્ચ-આરુયાપનામિઃ-પ્રવ્રજ્યાવિરોધિમિ-
રાહ્યાનૈઃ ‘ પળ્ણવળાહિ ય ’ પ્રજ્ઞાપનામિશ્ચ ‘ અહં તવ ઝ્યેષ્ઠખ્રાતાઽસ્મિ, તવ હિતં
યેન ભવતિ, તદેવ કથયામિ, ઇત્યાદિ રૂપૈઃ પ્રજ્ઞાપનવાક્યૈઃ એવં ‘ વિળ્ણવળાહિ ય ’
વિજ્ઞાપનામિઃ વિનિતમૃદુવચનાવલિરૂપવાક્યપ્રવચ્છૈઃ, તથા ‘ સળ્ણવળાહિ ય ’
સંજ્ઞાપનામિઃ ‘ પ્રવ્રજ્યાયાં મહાન્ કષ્ટો ભવતિ ’ ઇત્યાદિ સ્વાભીપ્સિતસંજ્ઞાપકૈર્વાક્યૈશ્ચ

રળ્ણો એયમટ્ટં ણો આઢાઈ, ણો પરિજાણઈ, તુસિળીએ સંચિદ્વહ, તણં પુંડ-
રીએ રાયા કંડરીયં દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ એવં વયાસી જાવ તુસિળીએ સંચિ-
દ્વહ, તણં પુંડરીએ કંડરીયં કુમારં જાહે નો સંચાઈ, બહૂહિ આઘવળાહિ
ય પળ્ણવળાહિ ય ૪ તાહે અકામએ ચેવ એયમટ્ટં અણુમન્નિત્થા જાવ
ણિક્ખમળામિસેણં અભિસિચઈ જાવ થેરાણં સીસમિક્ખં દલયઈ)
કંડરીક કુમારને પુંડરીક રાજા કી હસ વાત કો આદર કી દૃષ્ટિ સે
નહીં દેલા-નહીં માના-ઔર ન ઉસે સ્વીકાર હી કિયા-કેવલ ચુપચાપ
હી રહા । પુંડરીક રાજા ને જબ કંડરીક કુમાર કો ચુપચાપ દેલા-તથ
ઉસને દુબારા ઔર તિબારા મો ઉસસે એસા હી કહા-પરંતુ ઉસને હસ
વાત પર ચિલકુલ હી ધ્યાન નહીં દિયા કેવલ ચુપચાપ હી રહા-। અતઃ
જબ પુંડરીક રાજા કંડરીક કુમાર કો ઉસકે ધ્યેય સે વિચલિત કરને

(તણં સે કંડરીએ પુંડરીયસસ રળ્ણો એયમટ્ટં ણો આઢાઈ, ણો પરિજાણઈ,
તુસિળીએ સંચિદ્વહ, તણં પુંડરીએ રાયા કંડરીયં દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ એવં વયાસી
જાવ તુસિળીએ સંચિદ્વહ, તણં પુંડરીએ કંડરીયં કુમારં જાહે નો સંચાઈ, બહૂહિ
આઘવળાહિ ય પળ્ણવળાહિ ય ૪ તાહે અકામએ ચેવ એયમટ્ટં અણુમન્નિત્થા જાવ
ણિક્ખમળામિસેણં અભિસિચઈ જાવ થેરાણં સીસમિક્ખં દલયઈ)

કંડરીક કુમારે પુંડરીક રાજાની આ વાતનું સન્માન કર્યું નહિ-માની
નહિ અને તેના સ્વીકાર પણ કર્યો નહિ, ફક્ત તે મૂંગો થઈને બેસી જ રહ્યો.
પુંડરીક રાજાએ બ્યારે કંડરીક કુમારને મૂંગો મૂંગો બેસી રહેલો જોયો ત્યારે
તેમણે ખીજ વાર અને ત્રીજી વાર પણ તેને આ પ્રમાણે જ કહ્યું. પરંતુ તેણે
આ વાતની સહજ પણ ઠરકાર કરી નહી, ફક્ત મૂંગો થઈને બેસી જ રહ્યો.
છેવટે બ્યારે પુંડરીક રાજા કંડરીક કુમારને તેના ધ્યેયથી મક્કમ વિચારથી

‘आद्यवित्तए’ आख्यापयितुं ४=सर्वथापविरोधयितुं न शक्नोतीति पूर्वण सम्वन्धः, ‘ताहे’ तदा ‘अकामए चेव’ अकामक एव=अनिच्छ एव ‘एयमट्ठ’ एतमर्थम्-कण्डरीकाभिलषितं प्रव्रज्यारूपम्, ‘अणुमग्निस्था’ अन्वमन्यत=स्वीकृतवान्, ‘जाव णिक्खमणाभिसेणं’ यावत् निष्क्रमणाभिषेकेण ‘स्वीकरणानन्तरं निष्क्रमणोपयोगि वस्तुजातमुपनीय सविधि दीक्षाभिषेकेण अभिसिञ्चति, ‘जाव थेराणं सीसभिव्वं दलयइ’ यावत्-स्थविरेभ्यः शिष्यभिक्षाम्=अभिषेकानन्तरं स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं शिबिकायां समुपवेश्य महता समारोहेण सह नलिनीवने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वलघुभ्रातरं शिष्यभिक्षां ददाति । अनन्तरं स कण्डरीकः प्रव्रजितः सन् अनगारो जातः । तथा ‘एकारसंगविऊ’ एकादशाङ्गवित्=एकादशाङ्गज्ञानवान् जातः । ततः खलु स्थविरा भग-

के लिये आख्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा संज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो सके-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही कंडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिषेक से अभिसिंचन किया । अभिषेक के बाद पुंडरीक राजा कंडरीक को शिबिका में बैठाकर बड़े समारोह के साथ नलिनीवन में आये । वहाँ आकर उन्होंने स्थविरों के लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया । इसके बाद कंडरीक (पञ्चइए अणगारेजाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था संपन्न हो गये । (एगारसंगविऊ, -तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णल्लिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति,

विवक्षित करवा भाटे आख्यापनाओ, प्रज्ञापनाओ, विज्ञापनाओ, संज्ञापनाओ वडे पणु समर्थं थछं शक्या नहि त्थारे तेमण्णे ध्विछा न पुडिवा छांओ कंडरीक कुमारने दिक्षाग्रहण करवानी स्वीकृति आपी दीधी. स्वीकृति आप्या बाद तेमण्णे निष्क्रमणने लगती अधी वस्तुओ मंगवावी. न्थारे वस्तुओ आवी गछं त्थारे तेमण्णे तेनुं विधिसर दीक्षाभिषेक वडे अभिसिञ्चन कयुं. अभिषेक कयां बाद पुंडरीक राजा कंडरीकने पालणीमां भेसाडीने लारे समारोहनी साथे नलिनी वनमां आव्या. त्यां आवीने तेमण्णे स्थविरेने पोताना नाना लाधने शिष्यना रूपमां आपी दीधी. थ्यारपछी कंडरीक (पञ्चइए अणगारे जाए) प्रव्रजित थधने अनगारावस्था संपन्न थछं गये।

(एगारसंगविऊ-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नय-

अणगारचमामृतघविणी टीका अ० १९ पुंडरीक-कंडरीकखरित्रम्

७२१

वन्तो अन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या नगर्या नलिनीवनात् उद्यानात् प्रतिनिष्काम्यन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहिं य पंतैहिं य जहा सेलागस्स जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरइ । तएणं थेरा अन्नया कयाइं जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिगए धम्मं सुणेइ । तएणं पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरं सव्वावाहं सरोयं पासइ, पासित्ता, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, थेरे भगवंते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहा पवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि, तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह । तएणं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जाव उवसंपज्जित्ताणं

पडिणिकखमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति) धीरे २ वे ग्यारह अंगोंके पाठी भी बनगये इसके बाद उन स्थविर भगवंतों ने किसी एक दिन पुंडरीकिणी नगरी के उस नलिनीवन नामके उद्यान से विहार किया सो विहार कर वे बाहिर के जनपदों में विचरने लगे ॥ सू० २ ॥

रीओ णलिणीवणाओ उज्जवाणाओ पडिणिकखमंति, पडिणिकखमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति)

धीमे धीमे तेमहे अगियार अंगोनुं अध्ययन करी दीधुं. त्यारभाह ते स्थविर भगवंतोओ केह ओक द्विसे पुंडरीकिणी नगरीना ते नलिनीवन नामना उद्यानथी विहार क्यो, विहार करीने तेओ अहारना जनपदोभां विचरहु करवा लाग्या. ॥ सूत्र २ ॥

विहरन्ति। तएणं पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलागस्स जाव बलियसरीरे जाए । तएणं थेरा भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छन्ति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरन्ति । तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णांसि अस-
 णपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गडिए अज्जोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जण-
 वयविहारं विहरित्तए । तत्थेव ओसण्णे जाए । तएणं से पोंड-
 रीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे पहाए अंतेउरपरियालसंप-
 रिबुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
 गच्छित्ता, कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं
 करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी-
 धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले
 जे णं तुमं रज्जे च जाव अंतेउरं चावि छड्डयित्ता जाव विगो-
 वइत्ता जाव पव्वइए । अहण्णं अहण्णे अकयपुत्ते रज्जे जाव
 अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झो-
 ववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए । तं धन्नेसि णं तुमं देवा-
 णुप्पिया ! जाव जीवियफले । तएणं से कंडरीए अणगारे पुंड-
 रीयस्स एयमहं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ । तएणं कंडरीए पोंड-
 रीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं बुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे
 लउज्जाए गारवेणय पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं
 सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू०३ ॥

बौद्धवारधर्माभूतवर्णिनी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कंडरीकचरित्रम्

७२३

टीका—‘तएणं तस्स’ इत्यादि । ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य अनगारस्य तैः ‘अंतेहि य’ अन्तैश्च=वल्लचणकादिभिः, ‘पंतेहि य’ प्रान्तैश्च=पर्युषितैः, नीरसैः स्वादवर्जितैर्वा अशनादिभिः यथा शैलकस्य राजर्षेस्तथा ऽस्याऽपितथा-विधमाहारं कुर्वतो यावत्प्रकृतिमुकुमारकस्य सुखोपचितस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशीत्याह—उज्ज्वला यावद् दुरधिसया = सोढुमशक्या पुनः सुखलेशरहिता कण्डरीकः ‘दाहवक्कंतिण’ दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहस्य शरीरसन्तापरूपरोगस्य व्युत्क्रान्तिः=उत्पत्तिर्यस्यासौ दाहव्युत्क्रान्तिकः=करचणादिज्वलनवान् चापि विहरति । ततः खलु स्थविरा अन्यदा कदाचित् यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, नलिनीवने समवस्रताः । पुण्डरीकस्तद्दर्शनार्थं स्वभवना-

‘तएणं तस्स कंडरीयस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तस्स कंडरीयस्स अनगारस्स तेहिं अंतेहिं पंतेहिं य जहासेलगस्स जाव दाहवक्कंतिण यावि विहरइ) उस कंडरीक अनगारके वल्लचणक आदि रूप अन्ताहार करनेसे तथा पर्युषित अथवा नीरस आहाररूप प्रान्ताहार करनेसे शैलक राजर्षिकी तरह प्रकृतिसे सुकुमार सुखोपचित होने के कारण शरीरमें वेदना उत्पन्न हो गई । जो उज्ज्वला एवं सोढुमशक्या थी । इस तरह शरीर सन्तापरूप रोग की उत्पत्ति से वे कंडरीक अनगार कर चरण आदि में जलन होने के कारण सुख के लेश से भी वर्जित हो गये । (तएणं येरा अन्नया कयाइं जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्सा नलिनिवणे समोसदा पोंडरीए

तएणं तस्स कंडरीयस्स इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपछी,

(तस्स कंडरीयस्स अनगारस्स तेहिं अंतेहिं पंतेहिं य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतिण यावि विहरइ)

ते कंडरीक अनगारना शरीरमां अद्वयथलुक् वगेरे इय अन्ताहार करवाथी तेमज पर्युषित अथवा नीरस आहार इय प्रान्ताहार करवाथी शैलक राजर्षिनी जेम प्रकृतिथी मुकुमार अने सुखोपचित होवा अद्वय वेदना उत्पन्न थक गध. ते वेदना अत्यंत उग्र अने असह्य कृती. आ प्रभावे शरीर सन्ताप इय रागनी उत्पत्तिथी ते कंडरीक अनगार छाथ पगमां अगतताने दीधे थोडी सुभशांति पछु मेगवी शक्या नडि.

(तएणं येरा अन्नया कयाइं जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्सा नलिनिवणे समोसदा पोंडरीए निगए धम्मं मुणेइ, तएणं पोंडरीए राया

न्निर्गतः तत्र गत्वा धर्मं शृणोति । ततः खलु पुण्डरीको राजा धर्मं श्रुत्वा यत्रैव कण्डरीकोऽनगरस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा कण्डरीकस्य अनगरस्य शरीरं 'सव्वावाहं' सव्वावाधं= पीडासहितं 'सरोयं' सरोयं=रोगसहितं 'पासइ' पश्यति, दृष्ट्वा यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—'अहण्णं भंते !' अहं खलु हे भदन्त ! कण्डरीकस्य

निर्गतं धम्मं सुणेइ, तएणं पुण्डरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कण्डरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्डरीयं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वावाहं सरोयं पासइ) किसी एक समय वे स्थविर पुण्डरीकिणी नगरी में विहार करते हुए आये। वहाँ आकर वे नलिनीवन नाम के उद्यान में ठहर गये। आगमन सुनकर पुण्डरीक राजा उन को वंदना एवं उनसे धर्मश्रवण करने की भावना से अपने राजमहल से निकलकर उस नलिनीवन उद्यान में आये—स्थविरों ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। धर्म का उपदेश श्रवण कर फिर वे जहाँ कण्डरीक अनगर थे उनके पास आये। वहाँ आकर उन्होंने उनको वंदना की नमस्कार किया—। वंदना नमस्कार करके उन्होंने कण्डरीक अनगरके शरीर को पीडासहित एवं रोगसहित देखा—(पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते !

धम्मं सोच्चा जेणेव कण्डरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्डरीयं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वावाहं सरोयं पासइ)

कैछ अेक वधते ते स्थविर पुण्डरीकिणी नगरीमां विहार करता करता आव्या, त्यां आवीने तेओ नलिनीवन नामना उद्यानमां राकाया. तेभनुं आभमन सांभणीने पुण्डरीक राजा तेभने वंदन करवा भाटे तथा तेभनी पासैथी धर्मोपदेश सांभणवा भाटे पोताना राजमहलथी नीकणीने ते नलिनीवन उद्यानमां आव्या. स्थविराओ तेभने धर्मोपदेश आव्या, धर्मोपदेश सांभणीने तेओ न्यां कण्डरीक अनगर छता तेभनी पासै गया. त्यां अर्थने तेभणे तेभने वंदन अने नमस्कार कयां. वंदन अने नमस्कार करीने तेभणे कण्डरीक अनगरना शरीरने पीडा सहित अने रागयुक्त जेथुं.

(पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! कण्डरीयस्स अण-

अनेगारघमांमृतवर्षिणी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कंडरीकचरित्रम्

७२५

अनगारस्य 'अहापवत्तेहि' यथा प्रवृत्तैः=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहि' औषधभैषज्यैः 'जावतेइच्छं' यावत् चिकित्सायां 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे भदन्त ! मम यानशालासु समवसरत=आगच्छत । ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिश्रुयन्ति=एतद्वचनं स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसंग्रह=यानशालां समाश्रित्य विहरन्ति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए' यथा मण्डूकः शौलकस्य यामद् बलिहारीरो जातः =

कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छं आउट्टामि-तं तुग्गे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह-तएणं थेरा भगवंतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणिन्ता जाव उपसंपज्जित्ताणं विहरंति) देखकर जहां स्थविर भगवंत विराजमान थे-वहां पर वे आये वहां आकर उन्होंने ने स्थविर भगवंतों को वंदना एवं नमस्कार किया-। वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदन्त ! मैं कंडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊंगा-अतः हे भदन्त ! आपलोग मेरी यानशाला में यहां से विहार कर पधारें-वहीं ठहरें-। इस प्रकार पुण्डरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवंतों ने स्वीकार कर लिया-और वहां से विहार कर वे पुण्डरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये । (तएणं पुण्डरीए राया जहामंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएणं थेरा

गारस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छं आउट्टामि तं तुग्गेणं भंते मम जाणसालासु समोसरह-तएणं थेरा भगवंतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणिन्ता जाव उपसंपज्जित्ताणं विहरंति)

जेधने तेओ ज्वां स्थविर भगवंत विराजमान छता त्यां आब्बा, त्यां आब्बिने तेमणे स्थविर भगवंतोने वंदन अने नमस्कार कर्या, वंदन अने नमस्कार करीने तेमणे तेमने आ प्रभाणे विनंती करी के डे भदन्त ! हुं कंडरीक अनगारनी यथाप्रवृत्त-प्रासुक-औषध-लैषज्ये (इवाओ) वडे यावत् चिकित्सा (छलाज) करवा भायुं छुं, जेटला भाटे डे भदन्त ! तमे सी अह्मीथी विहार करीने मारी यानशाणाभां आवो अने त्यांज दोकाओ, आ प्रभाणे पुंडरीक राजनी विनंतीने ते स्थविर भगवंतोमे स्वीकार करी दीधि अने त्यांथी विहार करीने तेओ पुंडरीक राजनी यानशाणाभां आवीन दोकाध गया, (तएणं पुण्डरीए राया जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएणं थेरा

यथा मण्डूको राजा शौलकस्य राजर्षेः प्रासुकैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सामकारयत्, तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगारस्य यथा योग्यैरौषधभैषज्यैश्चिकित्साम कारयतिस्म यावत् कतिपयैर्दिनैः कण्डरीको बलितशरीरः=निरामयो जातः। ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकं राजानं आपृच्छन्ति, आपृच्छथ बहिर्जनपद्विहारे विहरन्ति। ततः खलु स कण्डरीकः तस्मात् 'रोगायंकाओ' रोगाङ्काद् विषमुक्तः सन् तस्मिन् 'मनुणंसि' मनोज्ञे=रमणीये अशनपानस्वाद्यस्वाद्ये चतुर्विधे आहारे 'मुच्छिण्' मूर्च्छितः=मूर्च्छां प्राप्तः=आसक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः= आकाङ्क्षावान्, 'गद्विण्' ग्रन्थितः=रसास्वादे निवदमानसः, 'अज्ज्ञोववण्णे' भगवंतो पौंडरीयं रायं पुच्छन्ति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरन्ति, तएणं से कंडरीए ताओ रोगायंकाओ विष्णुमुक्के समाणे तंसि मणुणंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिण् गिद्धे गद्विण् अज्ज्ञोववण्णे णो संचाइए पौंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अणुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए) इसके बाद मंडूक ने जिस प्रकार शौलकराजर्षि की प्रासुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुण्डरीक राजा ने भी कंडरीक अनगार की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई—इस से वे बलितशरीर निरोग हो गये। इसके अनन्तर उन स्थविर भगवंतो ने वहां से विहार करने के लिये पुण्डरीक राजा से पूछा—। बाद में वे वहां से बाहिर जनपदों में विहार कर गये। कंडरीक अनगार कि जो रोगातंकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान, स्वाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवंतो पौंडरीयं रायं पुच्छन्ति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरन्ति, तएणं से कंडरीए ताओ रोगायंकाओ विष्णुमुक्के समाणे तंसि मणुणंसि—असणपाण-खाइमसाइमंसि मुच्छिण् गिद्धे गद्विण् अज्ज्ञोववण्णे णो संचाइए पौंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अणुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए)

त्यारपछी मंडूके जेम शौलक राजर्षिनी प्रासुक, औषध, अने लैषज्ये वडे चिकित्सा करावडावी छती तेमज पुंडरीक राजाअे पणु कंडरीक अनगारनी छयित औषध-लैषज्ये (इवाअ्ये) वडे चिकित्सा करावडावी. तेथी तेअ्ये निशेज-अणज णनी अथा. त्यारपछी ते स्थविर भगवन्तोअे त्याथी विहार करवा भाटे पुंडरीक राजाने पूछयुं. त्यारभाट तेअ्ये अहारना जनपदोमां विहार करी गया. रोगातंगोथी निर्मुक्त थछ गयेला कंडरीक अनगार ते मनोज्ञ, अशन, पान, आद्य अने स्वाद्यरूप आर जतना आहारमां ओटला अथा आसक्त थछ गथा-गृद्ध णनी गया, अथित-रसना आस्वादनमां निगद्ध भान-

अमरारचमामृतवर्षिणी टी० अ० १२ पुण्डरीक-कण्डरीकचरित्रम्

७२७

अध्युपपन्नः=सर्वथा आसक्तः सन् नो शक्नोति पुण्डरीकं राजानमापृच्छय 'बहिया' बहिः 'अब्भुज्जएणं' अभ्युद्यतेन=उग्रविहारेण खलु विहर्तुम्, किन्तु 'तत्थेव' तत्रैव=यानशालायामेव 'ओसण्णे' अवसन्नः,=शिथिलसाधुसमाचारीवान् जातः। तत् खलु स पुण्डरीको राजा 'इमीसे कहाए' अस्या, कथायाः=कण्डरीकोऽनगारो-ऽवसन्नो जातः 'इति वृत्तान्तस्य लब्धार्थः सन् स्नातः 'अंतेउरपरियालसंपरि-बुडे' अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः, यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं त्रिः कृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा, वन्दते नमस्यति, वन्दिस्वा वमस्यिस्वा एवमवादीत्-धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुमिय ! यतस्त्वम् 'कयट्ठे' कृतार्थः=विहितजीवनकृत्यः 'कयपुन्ने' कृतपुण्यः=विहितपत्रजितवेपः। पुनः सुलद्धे 'सुलब्धं'=सुष्ठुतया प्राप्तं खलु हे देवानुमिय ! 'तव' त्वया 'माणु-स्सए' मानुष्यकं=मनुष्यसम्बन्धि, 'जम्मजीवियफले' जन्मजीवितफलम्-जन्म-

-गृह्य वन गये ग्रथित-रसास्वाद में निषद्धमानसवाले हो गये, और अध्युपपन्न वन गये-अर्थात् सर्वथा आसक्त वन गये कि वहाँ से बाहिर उग्र विहार करने के लिये उनका मन ही नहीं हुआ-अतः उन्होंने ने पुण्डरीक नरेश से विहार करने की कोई बात ही नहीं पूछी किन्तु (तत्थेव-ओसन्ने जाए) वहीं पर वे रहते २ शिथिल साधुसमाचारीवाले बम गये। (तएणं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंते-उरपरियालसंपरिबुडे राया जेणेव कण्डरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्डरीयं अणगारं त्तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसिणं तुमं देवानुप्पिया ! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धेणं देवानुप्पिया ! तव माणुस्सजन्मजीवियफले जेणं तुमं रज्जे च जाव अंतेउरं चावि छड्डइत्ता

सवागा थध गया अने अध्युपपन्न बनी गया ओटले के तेओ ओकठम आसक्त थध गया के त्यांभी अहार उग्र विहार करवा भाटे पणु तेओ तैयार थया नहि. ओथी तेभणु पुंडरीक राजाने विहार करवानी आमतमां क'धंन पूछथु' नहि पणु (तत्थेव ओसन्ने जाए) त्यांन रडेतां रडेतां तेओ शिथिल साधु समाचारी थध गया ओटले के साधुओना आचारमां तेओ शिथिल थध गया

(तएणं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियाल-संपरिबुडे राया जेणेव कण्डरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्डरीयं अणगारं त्तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं देवानुप्पिया ! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे

માનવયોનો ઉત્પત્તિઃ, જયિતમ્=જીવનમ્=પાણધારણમ્, તયોઃ ફલમ્=જન્મજીવિ-
તફલમ્=પ્રવ્રજ્યાગ્રહણમેવ મનુષ્યજન્મસારઃ, તદેવ સ્પષ્ટયતિ-યઃ સ્વલુ ત્વં રાજ્યં ચ
યાવદન્તઃ પુરં ચ છદ્વદ્વિત્તા ' છદ્વદ્વિત્તા=ત્યક્ત્વા ' વિગોવદ્વિત્તા ' વિગોપ્ય=તિર-
સ્કૃત્ય યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ અહં સ્વલુ અધન્યઃ અકૃતપુણ્યો રાજ્યે યાવત્ અન્તઃ
પુરે ચ માનુષ્યકેષુ ચ કામભોગેષુ મુચ્છિતો યાવત્ અધ્યુપપન્નો નો શક્નોમિ
યાવત્ પ્રવ્રજિતમ્ = રાજ્યેઽન્તઃ = પુરે માનુષ્યકેષુ ચ કામભોગેષુ નિમગ્ન-
માનસોઽહં ન શક્નોમિ પ્રવ્રજ્યાં ગ્રહીતુમ્ ઇતિ ભાવઃ । ' તં ' તત્ = તસ્માત્

વિગોવદ્વિત્તા જાવ પવ્વહ્ણ) જય પુંડરીક રાજા કો " કંડરીક અનગાર
અવસન્ન હો ગયે હૈ " યહ સમાચાર જ્ઞાત હુઆ-તો વે સ્નાન કર અપને
અન્તઃપુર પરિવાર કો સાથ લેકર જહાં કંડરીક અનગાર થે વહાં આયે
વહાં આકર ઉન્હોં ને કંડરીક અનગાર કો ત્રીન ચાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ
કારકે વંદના કી નમસ્કાર ક્રિયા । વંદના નમસ્કાર કારકે ફિર ઉનસે વે
હસ પ્રકાર કહને લગે-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ ધન્ય હો, તુમ કૃતાર્થ હો, તુમ
કૃતલક્ષણ હો । હે દેવાનુપ્રિય ! તુમને મનુષ્યભવ સંબંધી જન્મ ઓર
જીવન કા ફલ અછ્છી તરહ પાલિયા હૈ । જો તુમ રાજ્ય યાવત્ અન્તઃપુર
કા પરિત્યાગ એવં તિરસ્કાર કર પ્રવ્રજિત હો ગયે હો । (અહ્ણણં અહ્ણણે
અકયપુન્ને રજ્જે જાવ અંતેઉરે ય માણુસ્સણુસુ ય કામભોગેસુ મુચ્છિણ
જાવ અઙ્ગોવવન્ને નો સંચાણમિ જાવ પવ્વહ્ણણં । તં ધન્નેસિ ણં તુમં
સુલલ્લેપં દેશણુપ્પિયા ! તવ માણુસ્સણુ જમ્મ જીવિયફલે જેણં તુમં રજ્જં ચ જાવ
અંતેઉરં ચાવિ છદ્વદ્વિત્તા વિગોવદ્વિત્તા જાવ પવ્વહ્ણ)

જ્યારે પુંડરીક રાજાને કંડરીક અનગારના અવમન્ન થઇ જવાના સમા-
ચારો મળ્યા ત્યારે તેઓ સ્નાન કરીને પોતાના રણુવાસના પરિવારને સાથે
લાઇને જ્યાં કંડરીક અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે કંડરીક
અનગારને ત્રણ વખત આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરીને વંદન તેમજ નમસ્કાર
કર્યા. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે
હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ધન્ય છો, કૃતાર્થ છો, કૃત-લક્ષણ છો. હે દેવાનુપ્રિય !
મનુષ્ય ભવના જન્મ અને જીવનના ફળને સારી પેઠે મેળવી લીધું છે. કેમકે
તમે ખરેખર રાજ્ય યાવત્ રણુવાસને ત્યજીને તેને તિરસ્કૃત કરીને પ્રવ્રજિત
થઇ ગયા છો.

(અહ્ણણં અહ્ણણે અકયપુન્ને રજ્જે જાવ અંતેઉરે ય માણુસ્સણુસુ ય કામ-
ભોગેસુ મુચ્છિણ જાવ અઙ્ગોવવન્ને નો સંચાણમિ જાવ પવ્વહ્ણણં ! તં ધન્નેસિ ણં

અનગારધર્મામૃતચર્ચિણી ટીકા અ૦૧૯ પુંડરીક-કંડરીકચરિત્રમ્

૭૨૯

કારણાત્ સ્વલુ વ્રજીમિ યત્ ધન્યોઽસિ ત્વં હે દેવાનુપ્રિય ! ' જાત્ર મુલબ્ધં જન્મ-
જીવિતફલમ્ , તતઃ સ્વલુ સ કણ્ડરીકોઽનગારઃ પુંડરીકસ્ય એતમર્થઃ=વિહારાભિ-
પ્રાયકમર્થઃ, નો આદ્રિયતે યાવત્ તૂષ્ણીકઃ સંતિષ્ઠતે મૌનમવલમ્બ્ય તિષ્ઠતિ । તતઃ
સ્વલુ કણ્ડરીકઃ પુંડરીકેણ દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ=દ્વિત્રિવારમ્ , એવં=પૂર્વોક્ત-
પ્રકારેણ, ઉક્તઃ સન્ ' અકામએ ' અકામકઃ=કામનારહિતઃ ' અવસ્સવસે ' અપ-

દેવાણુષ્ણિયા ! જાત્ર જીવિતફલે તણં સે કંડરીએ અણગારે પુંડરીયસ્સ
એમદ્વં ણો આદાહ જાત્ર સંચિદ્દહ, તણં કંડરીએ પૌંડરીએણં દોચ્ચંપિ
તચ્ચંપિ એવં ઘુત્તે સમાણે અકામએ અવસ્સવસે લજ્જાએ મારવેણ ય પૌંડ-
રીયં આપુચ્છહ, આપુચ્છિત્તા થેરેહિં સદ્ધિં વહિયા જણવયવિહારં વિહરહ)
મેં અધન્ય હૂં અકૂતપુણ્ય હૂં । જો રાજ્ય મેં યાવત્ અન્તઃપુર મેં તથા મનુષ્ય
સંબંધી કામભોગોંમેં મૂઝિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બના હુઆ હૂં । इसीलिये
प्रव्रज्या ग्रहण करने में असमर्थ हो रहा हूँ । इसी कारण से मैं यह कह
रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन
का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है ।
पुंढरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर
कंढरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि
से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे । कंढरीक
अनगार की इस स्थिति को देखकर पुंढरीक ने दूसरी बार और तीसरी

તુમં દેવાણુષ્ણિયા ! જાત્ર જીવિતફલે તણં સે કંડરીએ અણગારે પુંડરીયસ્સ
એમદ્વં ણો આદાહ જાત્ર સંચિદ્દહ, તણં કંડરીએ પૌંડરીએણં દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ
એવંઘુત્તે સમાણે અકામએ અવસ્સવસે લજ્જાએ મારવેણ ય પૌંડરીયં રાયં આપુચ્છહ,
આપુચ્છિત્તા થેરેહિં સદ્ધિં વહિયા જણવયવિહારં વિહરહ)

હું તો અધન્ય અને અકૂતપુણ્ય છું. કેમકે હું તો રાજ્યમાં યાવત્
રણવાસમાં તેમજ મનુષ્યલવના કામભોગોમાં મૂઝિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બની
રહ્યો છું, એટલા માટે જ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવામાં અસમર્થ થઈ રહ્યો છું.
એથી જ હું આ કહી રહ્યો છું-કે તમે ખરેખર ધન્ય છો, હે દેવાનુપ્રિય !
તમે જ જન્મ અને જીવનનું ફળ કે જે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવા રૂપ છે-તે સારી
રીતે મેળવી લીધું છે. તેઓ ત્યાંથી વિહાર કરી બાથ તે આશયથી કહેતા તે
પુંડરીકના વચનો સાંભળીને કંડરીક અનગારે તેની કશી જ દરકાર કરી નહિ.
તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ. આ બધું સાંભળીને પણ
તેઓ ત્યાંજ મૂંગા થઇને બેસી જ રહ્યા. કંડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઇને

स्ववशः=अपगतस्वातन्त्र्यः सन् ' लज्जाए ' लज्जया, ' गारवेण ' गौरवेण= साधुत्वगौरवेण च पुण्डरीकं राजानमापृच्छति, आपृच्छय स्थविरैः सार्द्धं बहिर्जन-पदविहारं विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्--तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचिकालं उग्गं उग्गेणं विहरइ । तओ पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तण-णिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी, थेराणं अंतियाओ सणियं२ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता, जेणेव पुंडरिणिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता, असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढाविसिलापट्ठयांसि णिसीयइ णिसीइत्ता, ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठइ । तएणं तस्स पोंडरीयस्स अम्म-धाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढाविसिलावट्ठ-यांसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पोंडरीयं रायं एवं-वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर-

वार जब उनसे पूर्वोक्त प्रकारसे कहा-तब उन्होंने ने नहीं इच्छा होने पर भी स्ववशताका अभाव होनेके कारण लज्जावश होकर साधुत्वके गौरवके ख्याल से-पुंडरीक राजा से विहार करनेकी बात पूछी-पूछकर फिर वे वहां से स्थविरोंके साथ बाहिरके जनपदों में विहार कर गये ॥सू० ३ ॥

पुंडरीके भील अने त्रील वार पणु न्यारे पडेतां मुज्ज अ वात कही त्यारे तेभणु पोतानी छिछा नडि डोवा छतांअे दायार थधने, लज्जित थधने, साधुत्वना गौरवने लक्ष्यमां राभीने पुंडरीक राजाने विहार करवानी वात पूछी. पूछीने तेअे त्यांथी स्थविशानी साथे अडारना जनपडेमां विहार करी गया. सू. ३

अनेगारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कण्डरीकचरित्रम्

३३१

पायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झिया-
यइ । तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म
तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठइ, उट्ठित्ता, अंतेउरपरियाल-
संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिव्वुत्तो
आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता, एवं वयासी-धण्णेसि णं
तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए । अहण्णं अधण्णेइ जाव
नो पव्वइत्तए । तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव
जीवियफले । तएणं कंडरीए पुण्डरीएणं एवं वुत्ते समाणे
तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंपि तच्चंपि जाव संचिट्ठइ । तएणं
पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी-अट्ठो भंते ! भोगेहिं ? हंता
अट्ठो तएणं से पोण्डरीए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ,
सदावित्ता, एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! कंड-
रीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह जाव रायाभिसे-
एणं अभिसिंचइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स कण्डरीकः स्थविरैः साथं
किञ्चित् कालम् ‘उग्गं उग्गेणं’ उग्रोग्रेण-अत्युग्रेण विहारेण विहरति । ततः
पश्चात् ‘समणत्तणपरितंते’ श्रमणत्वपरितान्तः=श्रमणधर्मपरिपालने खिन्नः पुनः

‘तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कंडरीए) वे कंडरीक (थेरेहिं
सद्धिं) स्थविरों के साथ (किञ्चिकालं) कुछ काल पर्यन्त (उग्गं उग्गेणं)
अत्युग्रविहार करने में (विहरइ) लग गये (तओपच्छा समणत्तण

‘तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपथी (से कंडरीए) ते कंडरीक (थेरेहिं सद्धिं)
स्थविरांनी साथे (किञ्चिकालं) थोडा वખत सुधी तो (उग्गंउग्गेणं) अतीव
७३ विहार करवाभां (विहरइ) प्रवृत्त थया (तओ पच्छा समणत्तण परितंते)

समणत्तणनिव्विण्णे ' श्रमणत्वनिव्विण्णः=साधुभावे औदासीन्यं प्राप्तः ' समण-
त्तणणिम्मच्छिण्ण ' श्रमणत्वनिर्भस्सितः=श्रमणत्वं निर्भस्सितं येन सः=साधुभावा-
नादरपरायणः, अतएव 'समणगुणमुक्कजोगी' श्रमणगुणमुक्तयोगी=श्रमणगुणेभ्यो-
मुक्तः=रहितो योगः योगः=मनोवाक्यरूपः, सोऽस्यास्तीतित्यक्तश्रमणगुणइत्यर्थः,
स्थविराणामन्तिकात् शनैः शनैः प्रत्यवध्वस्कते=पश्चादागच्छति, प्रत्यवध्वस्वय,
यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी यत्रैव पुण्डरीकस्य भवनं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
अशोकवनिकायाः=अशोकवाटिकायाः अशोकवरपादपस्य अधः पृथ्वीशिलापट्टके
निषीदति=उपविशति, निषद्य, ' ओहयमणसंकप्पे ' अवहतमनः संकल्पः=अवहतो-
मनः संकल्पः=मनोव्यापारो यस्य सः=अपगतमानसिकव्यापारः, ' जाव श्रियाय-

परितंते) बाद में वे श्रमणधर्म के परिपालन करने में खिन्न चित्त बन
गये (समणत्तणनिव्विण्णे समणत्तणणिम्मच्छिण्ण समणगुणमुक्कजोगी
थेराणं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुण्ड-
रिगिणी नयरी जेणेव पुण्डरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ) साधुभाव
के निर्वाह करने में उदासीनता को प्राप्त हो गये-साधुभाव के प्रति उनमें
अनादर भाव आ गया अत एव वे श्रमण गुणों से मुक्त योगवाले बन
गये-श्रमण के गुणों का उन्होंने परित्याग कर दिया। इस तरह वे धीरे
२ स्थविरों के पास से खिसककर एक दिन जहाँ पुण्डरीकिणी नगरी थी
और उसमें भी जहाँ पुण्डरीक राजा का भवन था वहाँ पर आ गये-।
(उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविस्सिला
पट्टयंसि णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव श्रियायमाणे

त्यारपथी तेओ श्रमण धर्माना पालनमां भिन्नचित्त-उदास भनी गया.

(समणत्तणनिव्विण्णे समणत्तणणिम्मच्छिण्ण समणगुणमुक्कजोगी थेराणं
अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुण्डरगिणी नयरी जेणेव
पुण्डरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ)

तेओ साधुभावने नभाववामां उदास भनी गया. साधुभाव प्रत्ये तेम-
नामां अनादर भाव उत्पन्न थई गये, ओथी तेओ श्रमण-गुणोधी मुक्ता
थोगवाणा भनी गया ओटले के श्रमणना गुणोने तेमले त्यल दीधा. आ प्रभावे
तेओ धीमे धीमे स्थविशेनी पासोधी युपथाप नीकणीने ओकद्विस ब्यां पुंडरिक्षी
नगरी हती अने तेमां पणु ब्यां पुंडरीक राब्दानुं लवन हंतुं, त्यां आवी गया.

(उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविस्सिलापट्ट-
यंसि, णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव श्रियायमाणे संचिदइ, तएणं

अनगारधर्मासुतवर्णिनी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कण्डरीकरिचम्

७३३

माणे ' यावद्ध्यायन्=आर्त्तध्यानं कुर्वन् संतिष्ठते । ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य राज्ञोऽम्बधात्री यत्रैव अशोकवनिका तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कण्डरीकमन-गारम् अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टकेऽपहतमनःसंकल्पं यावद् ध्यायन्तं पश्यति, दृष्ट्वा, यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीकं राजानमेवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रिय ! तव ' पिउभाउए ' प्रियभ्राता कण्डरीकोऽनगारोऽशोकवनिकाया अशोकवरपादपस्य अधः पृथ्वीशिलापट्टके अवहतमनःसंकल्पो यावद्ध्यायति । ततः खलु पुण्डरीकः अम्बधात्र्या एतमर्थं=कण्डरीकस्य

संचिद्वह, तएणं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायस्स अहे पुढ-विसिलावट्टयंसि ओहयमणसंकल्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीयं रायं एवं वयासी) वहां आकर वे अशोक वाटिका में अशोक वृक्ष के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर बैठ गये । बैठकर अपहत मानसिक व्यापारवाले होकर वे वहां आर्त्तध्यान करने लगे । इतने में पुण्डरीक राजा की अम्ब-धात्री-धायमाता उस अशोक वाटिका में आई-वहां आकर उसने कंडरीक अनगार को अशोक पादप के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर चिन्तामग्न देखा-देखकर वह जहां पुण्डरीक राजा थे वहां आई-वहां आकर उसने पुण्डरीक राजा से इस प्रकार कहा- (एवं खलु देवानुप्रिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकल्पे जाव झियायइ) हे देवानुप्रिय !

तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि ओहयमणसंक-ल्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीयं रायं एवं वयासी)

त्यां आवीने तेज्जे अशोक वाटिकाभां अशोक वृक्षनी नीचे पृथिविशिला पट्टक उपर भेसी जया. त्यां भेसीने तेज्जे अपहत मानसिक व्यापारवाणा (उदास) थडने आर्त्तध्यान करवा लाग्या. ओटलाभां पुंडरीक राजनी अं-ध्रात्री-धायमाता-अशोक वाटिकाभां आवी. त्यां आवीने तेज्जे कंडरीक अनगारने अशोक वृक्षनी नीचे पृथिविशिला उपर आर्त्तध्यान करता जेया. जेधने ते जयां पुंडरीक राज हता त्यां आवीने तेज्जे पुंडरीक राजने आ प्रभाळे कहुं के

(एवं खलु देवानुप्रिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणि-याए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकल्पे जाव झियायइ)

अशोकवनिकामध्यगताशोकवृक्षाधः स्थितस्यार्तध्यानरूपमर्थं श्रुत्वा निश्चयः=इदं-
वधार्य 'तद्देव' तथैव=यथास्थितस्तथैव 'संभंते समाणे' सम्भ्रान्तः सन्-
'कथं पुनरसौ समागत' इति शङ्कितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=उदिति उत्तिष्ठती-
त्यर्थः, उत्थाय. अन्तः पुरपरिवारसंपरिष्ठितः यत्रैव अशोकवनिका यत्रैव कण्डरीको-
ऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'तिक्खुत्तो' त्रिः कृत्वः=वारत्रयम् आद-
क्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा एवमवादीत्-'धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव
पव्वइए' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! यावत् प्रव्रजितः । अहं खलु
'अधण्णे' ३ अधन्यः ३ यावत् नो शक्नोमि प्रव्रजितुम् । 'तं' तस्मात्कारणात्
'धन्नेसि' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! 'जाव जीवियफले' यावत्
जीवितफलम्=त्वया जन्मजीवितफलं सुखं इति भावः । ततः खलु कण्डरीकेण
एवं=प्रशंसापरवचनेरुक्तः सन् तूष्णीकः संतिष्ठते, 'दोच्चं पि तच्चंति' द्वितीय-
मपि तृतीयमपि वारं पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव संचिद्वइ' यावत् संतिष्ठते=
मौनमवलम्ब्य स्थित इति भावः । ततः खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्-अट्टो-

सुनिधे-तुम्हारे प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक
वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहतमनःसंकल्प होकर यावत् चिन्ता
मग्न बैठे हुए हैं (तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म
तद्देव संभंते समाणे उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता अंतेउरपरियालसंपरिखुडे
जेणेव असोगवणिग्या जाव कण्डरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ,
करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए
अहण्णं अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्ताए तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया !
जाव जीवियफले-तएणं कण्डरीए पुण्डरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए
संचिद्वइ, दोच्चं पि तच्चं पि जाव संचिद्वइ, तएणं पोंडरीए कण्डरीयं एवं
वयासी अट्टो भंते ! भोगेहि ! हंता अट्टो ! तएणं से पोंडरीए राया कोडुं-

छे देवानुप्रिय ! सोअणो, तभाश प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक
वाटिका में अशोक वृक्षकी नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर अपहतमन संकल्प
धरने यावत् चिन्तामग्न धरने ऐसी रह्या छे.

(तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तद्देव संभंते समाणे
उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता अंतेउरपरियालसंपरिखुडे जेणेव असोगवणिग्या जाव कण्ड-
रीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं
देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्णं अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्ताए तं धन्नेसि
णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं कण्डरीए पुण्डरीएणं एवं वुत्ते समाणे
तुसिणीए संचिद्वइ, दोच्चं पि, तच्चं पि जाव संचिद्वइ, तएणं पोंडरीए कण्डरीयं एवं
वयासी, अट्टो भंते ! भोगेहि ? हंता अट्टो ! तएणं से पोंडरीए राया कोडुंबिय

अनगारधर्माभूतवर्षिणी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कण्डरीकचरित्रम्

७३५

बियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिचइ) इस प्रकार अम्बाधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त में जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह संभ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये हैं-इस प्रकार शंकित चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परिवार को साथ लेकर जहां अशोक बनिका थी-वहां पर आये-वहां आकर कंडरीक अनगार के पास पहुँचे-वहां पहुँच कर उन्होंने ने उन्हें तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय ! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एवं अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब भी कहा मैं अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय ! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है। इस तरह प्रशंसा परक वचनों से पुंडरीक राजा द्वारा कहे गये वे कंडरीक अनगार कुछ भी नहीं बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुंडरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुबारा तिवारा भी उन्होंने ने

पुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिचइ)

आ प्रभाण्णे अम्बाधायना भुण्थी आ वात सांखणीने अने तेने भनभां धारण करीने जेवी स्थितिभां तेओ जेहा हुता तेवी अ स्थितिभां स्तब्ध थधने “ तेओ केम आव्या छे ” आ प्रभाण्णे शंकायुक्त थतां-उत्थान शक्ति वडे तेओ जेहा थया अने जेहा थधने जल्दी रणुवासना परिवारने साथे लधने न्यां अशोक वाटिका हुती त्यां आव्या. त्यां आवीने कंडरीक अनगारनी पासे पछिंन्या. त्यां पछिंणीने तेमण्णे तेमने त्रणुवार आदक्षिण प्रदक्षिण कर्या जाद कहेवा लाग्या के हे देवानुप्रिय ! तमने अरेअर धन्यवाद धटे छे के जे तमे राज्य अने रणुवासनेा त्याग करीने प्रव्रजित थर्ग गया छे, वगेरे जेम पछेलां कछुं हुतुं तेमअ ते वअते पणु कछुं. हुं तो अधन्य छुं-३-जे यावत् दीक्षा अडणु करवानुं पणु सामर्थ्य धरावतो नथी. जेथी हे देवानुप्रिय ! तमने धन्य छे. तमोअे अरेअर पोतानां जन्म अने जवनतुं इण सारी रीते प्राप्त करी दीधुं छे. आ प्रभाण्णे प्रशंसाजनक वचनोथी पुंडरीक राजा वडे संजोघित करायेला ते कंडरीक अनगार कंधपिणु जाव्या नहि, तेओ भूंगा थधने जेसीअ

भंते ' भोगेहि ' अर्थो हे भदन्त ! भोगैः ?=किं भोगैः प्रयोजनमस्ति ? इति, कण्डरीकः प्राह—' हंता ! अट्टो '=हन्त ! अर्थः=भोगमुखभोक्तुमानवोऽस्मीति-भावाः । ततः खलु=कण्डरीकाभिप्रायज्ञानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=प्राहयति, शब्दयित्वा, एवमवदत् — क्षिपमेव भो देवानुप्रियाः ! कण्डरीकस्य महार्थम्=अत्यर्थम् ' जाव रायाभिसेयं ' यावत् राजा-भिषेकम् ' उवट्टवेइ ' उपस्थापयत=परिकल्पयत, ' जाव रायाभिसेएण अभिसि-चइ ' यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं राजपदे स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्—तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्होंने ने कुछ नहीं ध्यान दिया केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे—तब पुनः पुंडरीकने उन कंडरीक अनगार से इस प्रकार कहा—हे भदन्त ! क्या आप को भोगों से तृप्त्य है ? तब कंडरीक ने कहा—हां—मेरा मन भोगों को उपभोग करने के लिये हो रहा है । इस तरह कंडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुंडरीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—भो देवानुप्रियो तुम लोग कंडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुंडरीक राजा की इस आज्ञा के अनुसार, उनलोगों ने वैसा ही किया—जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित हो चुकी—तब पुंडरीकने कंडरीक का राज्याभिषेक कर दिया—कंडरीक को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા. પુંડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઈને ખીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું. પણ તેમણે તેની કંઈ દરકાર કરી નહિ. તેઓ ફક્ત મૂંગા થઈને બેસી જ રહ્યા. ત્યારે ફરી પુંડરીકે તે કંડરીક અનગારને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભગવન્ ! તમને શું હજી ભોગ ઉપભોગોની ઈચ્છા છે ? ત્યારે કંડરીકે કહ્યું કે હા, ખરેખરે માફ મન ભોગ ઉપભોગમાં પ્રસૂત થવા ઈચ્છે છે. આ પ્રમાણે કંડરીકની ઈચ્છા જાણીને પુંડરીક રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો કંડરીક માટે—રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો. પુંડરીક રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તેમજ કયું. જ્યારે રાજ્યાભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઈ ગઈ ત્યારે પુંડરીકે કંડરીકનો રાજ્યાભિષેક કરી દીધો. એટલે કે કંડરીકને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટીકા અ૦ ૧૯ પુંડરીક-કણ્ડરીકચરિત્રમ્

૭૩૭

કરિત્તા, સયમેવ ચાઉજ્ઞામં ધમ્મં પઢિવજ્ઞહ, પઢિવજ્ઞિત્તા
કંડરીયસ્સ સંતિયં આચારભંડયં ગેણ્હહ, ગેણિહત્તા, હમં
એયારૂવં અભિગ્ગહં અભિગિણ્હહ-કપ્પહ મે થેરે વંદિત્તા
ળમંસિત્તા થેરાણં અંતિએ ચાઉજ્ઞામં ધમ્મં ઉવસંપજ્ઞિત્તાણં
તઓ પચ્છા આહારં આહરિત્તએ ત્તિકટ્ઠુ, હમં ચ એયારૂવં
અભિગ્ગહં અભિગિણ્હેત્તા ણં પોંડરિગિણીએ પઢિણિવ્વમ્મહ,
પઢિણિવ્વમિત્તા, પુઠ્ઠાણુપુઠ્ઠિવ્વચરમાણે ગામાણુગામં દૂઢ્ઠજ્ઞ-
માણે જેણેવ થેરા ભગવંતો તેણેવ પહારેત્થ ગમનાણાસૂ૦૫॥

ટીકા—‘તણં પુંડરીએ’ ઇત્યાદિ । તતઃ સ્વલુ પુંડરીકઃ સ્વયમેવ પશ્ચ-
મુષ્ટિકં લોચં કરોતિ, તથા સ્વયમેવ ‘ચાઉજ્ઞામં’ ચાતુર્યામં=ચતુર્મહાવ્રતલક્ષણં
ધર્મં પ્રતિપદ્યતે, પ્રતિપદ્ય, ‘કંડરીયસ્સ સંતિયં’ કણ્ડરીકસ્ય સત્કમ્=કણ્ડરીક
સમ્બન્ધિ ઇત્યર્થઃ, ‘આચારભંડયં’ આચારભાણ્ડકં આચારાય=સાધોઃ પશ્ચવિધા-
ચારપરિપાલનાય યદ્ભાણ્ડકં=વસ્ત્રપાત્રસદોકમુખવસ્ત્રિકારજોહરણાદિરુપમ્ તદ્

‘તણં પુંડરીએ સયમેવ પંચમુદ્ધિયં’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણં) ઇસકે ષાદ (પુંડરીએ) પુંડરીક ને (સયમેવ)
અપને આપ (પંચમુદ્ધિયં લોચં કરેહ) અપના પંચમુષ્ટિક લોચ કિયા-
(કરિત્તા સયમેવ ચાઉજ્ઞામં ધમ્મં પઢિવજ્ઞહ પઢિવજ્ઞિત્તા કંડરીયસ્સ
સંતિયં આચારભંડયં ગેણ્હહ) ઓર લોચ કરકે સ્વયં હી ઝન્હોને-ચાતુ-
ર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપ ધર્મ કો ધારણ કર લિયા । એવં કંડરીક કે
અનગાર અવસ્થા સંબન્ધી આચાર ભાણ્ડક કો-વસ્ત્ર, પાત્ર, સદોરક મુખ-
વસ્ત્રિકા, રજોહરણ આદિરૂપ સાધુ ચિહ્નો કો-લે લિયા । (ગેણિહત્તા
હમં એયારૂવં અભિગ્ગહં અભિગિણ્હહ, કપ્પહ મે થેરે વંદિત્તા ળમંસિત્તા

‘તણં પુંડરીએ સયમેવ પંચમુદ્ધિયં’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણં) ત્યારપછી (પુંડરીએ) પુંડરીકે (સયમેવ) પોતાની
ઝાતે જ (પંચમુદ્ધિયં લોચં કરેહ) પોતાનું પંચમુષ્ટિક લુચન કર્યું.

(કરિત્તા સયમેવ ચાઉજ્ઞામં ધમ્મં પઢિવજ્ઞહ, પઢિવજ્ઞિત્તા કંડરીયસ્સ
સંતિયં આચારભંડયં ગેણ્હહ)

અને લુચન કરીને ઝાતે જ તેમણે ચાતુર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપધર્મને ધારણ
કરી લીધી. અને કંડરીકની અનગાર અવસ્થા સંબન્ધી આચાર ભાંડકો-વસ્ત્ર,
પાત્ર, સદોરક મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ વગેરે સાધુ ચિહ્નોને લઈ લીધા.

૭૩૮

જાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્રે

ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા, ઇમમેતદ્વપ્ત્વં=વક્ષ્યમાણમભિગ્રહં=પ્રતિજ્ઞાવિશેષમ્ અભિગૃહ્ણતિ=કરોતિ અભિગ્રહસ્વરૂપમાહ—કલ્પતે. મે સ્થવિરાન્ વન્દિત્વા નમસિયત્વા સ્થવિરાણા-મન્તિકે ચાતુર્યામં ધર્મમ્ ' ઉવસંપજ્જિત્તાણં ' ઉપસંપન્ન=સ્વીકૃત્ય, તતઃ પશ્ચાત્-આહારમાદર્શનમ્ એતિ કૃત્વા નિશ્ચિત્ય, ઇમં ચ એતદ્વપ્તમ્ અભિગ્રહમ્, અભિગૃહ્ય સ્વલુપુન્ડરીકિણ્યાઃ પ્રતિનિષ્ક્રામ્યતિ નિસ્સરતિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય ' પુન્વાણુપુન્વિ ' પૂર્વાણુ-પૂર્વ્યા ચરન્, ગ્રામાણુગ્રામં દ્રષન્ યન્ સ્થવિરા ભગવન્તસ્તત્રૈવ પ્રાધારયદ્-ગમનાય ગન્તું પ્રસ્થિતઃ ॥ સૂ.૫ ॥

થેરાણં અંતિએ ચાઉજ્જામં ધમ્મં ઉવસંપજ્જિત્તાણં, તઓ પચ્છા આહારં આહરિત્તિએ) વાદ મેં ડન્હોને ઇસ પ્રકાર અભિગ્રહ ધારણ કિયા કિ જલતકમેં સ્થવિર ભગવંતો કો વંદના નમસ્કાર કર ડનકે પાસસે ચાતુર્યામ ધર્મકો ધારણ નહીં કર લંગા, તલતક મેં આહાર પાની ગ્રહણ નહીં કરૂંગા ડનકે પાસ ચાતુર્યામ ધર્મ ધારણ કરકે હી આહાર ગ્રહણ કરૂંગા (ત્તિ કદ્દુ ઇમંચ એયારૂવં અભિગ્રહં અભિગિણિહત્તા ણં પોંડરિગિણીએ પહિનિક્કલમહ, પહિનિક્કલમિત્તા પુન્વાણુપુન્વિ ચરમાણે ગામાણુગામં દૂહ-જ્જમાણે જેણેવ થેરા ભગવંતો તેણેવ પહારેત્થ ગમણાએ) ઇસ પ્રકાર કા યહ અભિગ્રહણ કરવે ડસ પુન્ડરીકિણી નગરી સે નિકલે—ઔર નિકલ કર તીર્થકર પરમ્પરાનુસાર વિહાર કરતે હુએ એવં એક ગ્રામ સે દસરે ગ્રામ મેં વિચરણ કરતે હુએ વે ડસ ઔર પ્રસ્થિત હુએ કિ જહાં સ્થવિર ભગવંત ચિરાજમાન થે ॥ સૂત્ર ૫ ॥

(નેણિહત્તા ઇમં એયારૂવં અભિગ્રહં અભિગિણિહ, કલ્પદ, મે થેરે વંદિતા ણમંસિત્તા થેરાણં અંતિએ ચાઉજ્જામં ધમ્મં ઉવસંપજ્જિત્તાણં, તઓ પચ્છા આહારં આહરિત્તિએ)

ત્યારમાદ તેમણે આ જાતનેા અભિગ્રહ ધારણ કયો કે જ્યાં સુધી હું સ્થવિર ભગવંતોને વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ નહિ કરું ત્યાં સુધી હું આહાર પાણી ગ્રહણ કરીશ નહિ. તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ કરીને જ હું આહાર ગ્રહણ કરીશ.

(ત્તિ કદ્દુ ઇમં ચ એયારૂવં અભિગ્રહં અભિગિણિહત્તાણં પોંડરિગિણીએ પહિનિક્કલમહ, પહિનિક્કલમિત્તા પુન્વાણુપુન્વિ ચરમાણે ગામાણુગામં દૂહજ્જમાણે જેણેવ થેરા ભગવંતો તેણેવ પહારેત્થ ગમણાએ)

આ પ્રમાણે તે અભિગ્રહને મનમાં ધારણ કરીને તેઓ તે પુન્ડરીકિણી નગરીની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને તીર્થકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં કરતાં અને આ પ્રમાણે એક ગામથી બીજે ગામ વિચરણ કરતાં કરતાં તેઓએ જ્યાં સ્થવિર ભગવંતો વિરાજમાન હતા તે તરફ પ્રસ્થાન કર્યું. ॥સૂ.૫॥

अनेगारघमामृतवर्षिणी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कंडरीकवरिचम

७१९

मूलम्--तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाण-
भोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिणं य अइ
भोयणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ । तएणं
तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि
पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया
उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिणय-
सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ । तएणं से कंडरीए राया
रज्जे य रट्टे य अंतोउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टुदुहट्टवसट्ठे
अकामए अवस्सवसे कालमासे कालं किञ्चा अहे
सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकाल ट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए
उववण्णे । एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे
पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्ठि-
स्सइ, जहा व से कंडरीए राया ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएणं तस्स’ इत्यादि । ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञस्तं
‘पणीयं’ प्रणीतम् = सरसं गरिष्ठं च पानभोजनम् ‘आहारियस्स समाणस्स’
आहारितस्य सतः=आहारं कुर्वतः सतः ‘अइजागरियेण य’ अतिजागरितेन च=

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तस्स कंडरीयस्स रण्णो) उस कंड-
रीक राजा के (तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजा-
गरिणं य अइभोयणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इस
प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजन के खाने से तथा विषयों की अधिक
आसक्ति के कारण अतिजागरण करने से एवं प्रमाणाधिक भोजन के

‘तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपछी (तस्स कंडरीयस्स रण्णो) ते कंडरीक राजाने

(तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिणं य अइभो-
यणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

ते प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजनना आहारथी तेमज विषयोभां
वधादे पडती आसक्तिना दीधे, वधादे अजरथु करवाथी, अने प्रमाथु करतां

विषयासक्तैरतिजागरणया ' अहमोयणप्पसंगेण ' अतिभोजनप्रसङ्गेन=प्रमाणाधिक-
भोजनेन स आहारो नो सम्पक्क परिणमति=यथावदाहारस्य परिपाको न भवति ।
ततः खलु तस्य कण्डरीकरूप राज्ञः ' तंसि ' आहारंसि ' तस्मिन् आहारे ' अप-
रिणममाणंसि ' अपरिणमति=परिपाकमगच्छति सति ' पुव्वरत्तावरत्तकालसम-
यंसि ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रोर्मध्यभागे ' सरीरंसि ' शरीरे वेदना प्रादु-
र्भूता, कोटशीवेदना ? उज्ज्वला=सुखलेशरहिता, विपुला=विशाला-सर्वशरीरव्याप्ता
' पगाढा ' प्रगाढा ' जाव दुरहियासा ' यावद् दुरधिसत्त्वा=सोढुमशक्या, पुनः
स कण्डरीको राजा ' पित्तज्वरपरिणयसरीरे ' पित्तज्वर परिणतशरीरः=पित्तज्वरेण
परिणतं=व्याप्तं शरीरं यस्य सः=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीरः ' दाहवक्कंतीए ' दाह-
व्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्तः चापि विहरति=आस्ते । ततः खलु स
कण्डरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्नःपुरे च ' जाव अज्झोववन्ने ' यावत्
प्रसंग से कृत आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएणं
तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावर-
त्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव
दुरहियासा पित्तज्वरपरिणयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ)
इसलिये एक दिन की बात है कि उन कंडरीक राजा के जब वह कृत
सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर में रात्रि
के मध्यभागमें वेदना प्रादुर्भूत हुई । जिस वजह से वह वेदना सुख
के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी
बहुत अधिक थी-यावन् वह उन्हें दुरधिसत्त्व हो रही थी । पित्तज्वर
से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कंडरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

पणु वधारे लोअन्न प्रसंगेभां करेला आहारुं पाथन पराअर थुं नडोतुं.

(तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्व-
रत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव
दुरहियासा पित्तज्वरपरिणयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ)

अथी अक द्विपसनी वात छे के ते कंडरीक राजने अथारे लोअन्न ३पमां
लीधेला ते सरस अने गरिष्ठ आहारुं सारी रीते पाथन थुं नडि त्यारे
रात्रिना मध्य भागमां तेमना शरीरमां वेदना थवा भांडी, तेथी तेओ अण अ
हुःणी थया. आ वेदनामां मात्र हुःण अ थुं हुतुं, ते वेदना तेमना स'पणु'
शरीरमां व्याप्त थई रही छती. प्रमाणुमां ते अहु अ वधारे छती. यावत् ते
तेमना भाटे दुरधिसत्त्व (असत्त्व) थई पडी छती. पित्तज्वरथी व्याप्त थयेला
शरीरवाणा ते कंडरीक राजा दाहज्वरनी व्याप्ताओथी सणगी छया.

मैनैगारघमांमृतवर्णिणी दी० अ० १९ पुण्डरीक कंडरीकचरित्रम्

(७४)

अध्युपपन्नः—मूर्च्छितो गृध्रः प्रथितः अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' अर्तदुःखार्तवशार्तः=तत्र=आर्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः=देहदुःखयुक्तः, वशार्तः=राज्यराष्ट्रान्तः पुराद्यासक्तेन्द्रियवशेन विषयसुखवियोग-सम्भाजनया पीडितः=आर्तध्यानोपगत इत्यर्थः । 'अकामए' अकामकः=अनिच्छकः—मरणवाञ्छारहितः, 'अवस्सवसे' अपस्ववशः=अपगतस्वातन्त्र्यः पराधीनः सन् कालमासे कालं कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अधः सप्तम्यां पृथिव्याम् तमस्तमः प्रमाण्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्टिइयंसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये । (तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्टे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कंडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एवं अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिकों में सर्वथा आसक्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दुःखित होकर, देह के दुःख से एकक्षण अर्तध्यान में पड़ गये । अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जावे—तौ भी सांसारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतंत्र थे, इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के सातवें नरक में कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है—अर्थात् ३३ सा-

(तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्टे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए, उक्कोसकालट्टिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

आ प्रमाणे दुःखित थयेला ते कंडरीक राजा राज्य, राष्ट्र अने रण्य-वासमां अध्युपपन्न थर्छ गया अट्टे के वधारे पडता आसक्त थर्छ गया. आ प्रमाणे राज्य वगेरेमां संपूर्णपणे आसक्त लावथी अधायेला ते राजा मनथी दुःखित थधने, शारीरिक कष्टथी ओक क्षण भाटे पण मुक्ति नहि थवाने कारणे विषय सुभोना विभोगनी संभावना अदल तेमज्ज राज्य, राष्ट्र, रण्यवास वगेरेमां आसक्त धन्दिथोना वशमां डोवाने कारणे आर्तध्यानमां भग्न थर्छ गया. छेवटे तेओ भूचुने धन्धिता नडोता छतांओ सांसारिक वातावरणमां अधायेला डोवाने कारणे अथवा वेदनाओधी पीडित डोवाने कारणे तेओ स्ववश डता नहि, परवश—परतंत्र डता, ओथी काण अवसरे काण करीने,—भूचु पाभीने—नीचे तमस्तमप्रभा नामना सातमा नरकमां के ओ उत्कृष्ट काल-

નૈરયિકતયા ઉપપન્નઃ। એતદ્ દૃષ્ટાન્તેન ભગવાન્ મહાવીરઃ સાધુનુપદિશતિ-એવમેવ
=અને નૈવપ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ ! શ્રમણાઃ યઃ કશ્ચિદ્સ્માકં શ્રમણો વા શ્રમણી વા
આચાર્યોપાધ્યાયનામન્તિકે યાવત્પ્રવ્રજિતઃ સન્ પુનરપિ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્
'આસાણ્' આસ્વાદયતિ । સ 'જાવ અણુપરિચટ્વિસસહ' યાવદનુપર્યટિષ્ઠ્યતિ-
યાવત્-ચાતુરન્તસંસારકાન્તારં પરિભ્રમિષ્યતિ । 'જહેવ સે કંડરીણ રાયા' યથૈવ
સ કંડરીકો રાજા ॥ સૂ.૦૬ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે પોંડરીણ અણગારે જેણેવ થેરા ભગવંતો
તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તાથેરે ભગવંતે વંદહ નમંસહ,
વંદિત્તા નમંસિત્તા થેરાણં અંતિણ દોચ્છંપિ ચાઉજ્જામં ધમ્મં
પહિવજ્જહ, છટ્ઠક્ખમણપારણગંસિ પઢમાણ પોરિસીણ સુજ્ઞાયં
કરેહ, કરિત્તા જાવ અહમાણે સીયલુક્ખં પાણભોયણં પહિ-
ગાહેહ, પહિગાહિત્તા, અહાપજ્જત્તમિતિ કદ્દુ પહિણિયત્તહ,

ગર કી જહાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ હૈ-નારકી કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો ગયે ।
હસી બાત કો દૃષ્ટાન્ત સે શ્રી ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ સાધુઓં કો સમ-
જ્ઞાતે હૈ-(એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહૈણ સમાણે પુનરવિ માણુ-
સણ કામભોગે આસાણ જાવ અણુપરિચટ્વિસસહ, જહા વ સે કંડરીણ
રાયા) હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો કોઈં હમારા શ્રમણ અથવા
શ્રમણીજન આચાર્ય ઉપાધ્યાય કે પાસ મેં દીક્ષિત હોકર કે પુનઃ મનુષ્ય
ભવ સંવન્ધી કામભોગોં કો ભોગતા હૈ વહ કંડરીક રાજા કી તરહ
યાવત્ હસ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાન્તાર મેં પરિભ્રમણ કયેગા ॥સૂત્ર૬॥

સ્થિતિ પ્રમાણુ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની ન્યાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની
પર્યાયથી જન્મ પામ્યા. એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાંત રૂપમાં
સાધુઓને સમજાવે છે કે—

એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહૈણ સમાણે પુનરવિ માણુસણ કામભોગે
આસાણ જાવ અણુપરિચટ્વિસસહ, જહા વ સે કંડરીણ રાયા)

આ પ્રમાણુ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે કોઈં અમારા શ્રમણ અથવા
શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઈને ફરી ને તે મનુષ્ય
ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કંડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ
રૂપ સંસાર કાંતારમાં પરિભ્રમણ કરશે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

अणगारघमावृत्तवर्णिणी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कंडरीचरित्रम्

७४३

जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, भत्त-
पाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता, थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए
समाणे अमुच्छिण अगिद्धे अगडिण अणज्झुववण्णे विल-
मिव पण्णगभूणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपा-
णखाइमसाइमं सरीरकोट्ठुगंसि पविक्खवइ । तएणं तस्स
पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइकंतं अरसं विसरं सीय-
लुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल-
समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स सेआहारे णो सम्मं
परिणमइ । तएणं तस्स पुंडरीस्स अणगारस्स सरीरगंसि
वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरप-
रिगयसरीरे दाहवक्कंतिण विहरइ । तएणं से पुंडरीए अण-
गारे अत्थामे अबले अवीरिण अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल
जाव एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं
णमोत्थुणं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोव-
एसयाणं पुट्ठि पि य णं मए थेराणं अंतिण सव्वे पाणाइ-
वाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव
आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उष-
वन्ने । तओ अणतरं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ
जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ । एवामेव समणाउसो ! जाव
पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ णो रज्जइ,
जाव विप्पडिघायमावज्जइ, सेणं इहभवे चेव बहूणं सावगाणं०

अच्छणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे
 कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जेत्तिकट्ठु परलोए
 वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य
 तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं
 जाव वीइवइस्सइ जहावसे पोंडरीए अणगारे । एवं खलुं
 जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं
 जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स
 नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । एवं खलुं जंबू ! समणेणं
 भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं
 छट्ठस्स अंगरस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णेत्ते
 त्तिवेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव
 स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उवागच्छति, उवागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति,
 वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके ‘दोच्चंपि’ द्वितीयमपिचारम् चातुर्यामं=
 चतुर्मंशवत्तरूपं धर्मं प्रतिपद्यते । तथा पष्ठभरणपारणायां संपाप्तायां प्रथमायां

‘तएणं से पोंडरीए अणगारे’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुंडरीक
 अनगार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) जहां स्थविर भग-
 वंत विराजमान थे वहां आ गये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ,
 नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं

(तएणं से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएणं) त्याख्या६ (से पोंडरीए अणगारे) ते पुंडरीक अन-
 गार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) जहां स्थविर भगवंत विरा-
 जमान हैं तां गया ।

(उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं
 अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं, धम्मं पडिक्कइ, छट्ठक्खमणपारणगंस्सि पढमाए

अनगारघमांमृतवर्षिणी टी० अ० १९ पुण्डरीक-कंडरीकचरित्रम्

७४१

पौरुष्यां=प्रथमे प्रहरे स्वाध्यायं करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-
मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्खं' शीतरूक्षं-शीतं=पर्युषितं, रूक्षं
घृतादिरहितं पानं भोजनं प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकट्टु' यथापर्या-
प्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमिति मनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

पडिवज्जइ, छट्टुक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्जायं करेइ
करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोगणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता
अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं
अम्मणुन्नाए समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगद्धिअ अणज्जुववण्णे विल-
मिव पणगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइम
साइमं सरीरकोट्टगंसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्होंने ने स्थविर भग-
वंतों को वंदना नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके बाद में उन्होंने
ने उनसे दुवाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब
षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में
स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों
में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित,
रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे छे छेते-और यह अन्न-
सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहाँ से

पोरिसीए सज्जायं करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोगणं पडिगाहेइ
पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं,
अम्मणुन्नाए समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगद्धिअ अणज्जुववण्णे विलमिव पणगभूएणं
अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमं सरीरकोट्टगंसि पक्खिवइ)

त्यां आवीने तेमण्णे स्थविर भगवतोने वंदना अने नमस्कार कर्थां.
वंदना अने नमस्कार करीने तेमण्णे तेमनी पासिथी जीअवर चातुर्याम-चतु-
र्महाव्रत इय धर्मने धारण कर्थां. ज्यारे षष्ठ क्षपणुनी पारणाने वणत
आव्ये त्यारे तेओ प्रथम पौरुषीमां स्वाध्याय करता अने स्वाध्याय करीने
तेओ उच्च, नीच अने मध्यम कुलोमां भिक्षा भाटे परिभ्रमण करता ते
सभये तेमने शीत-पर्युषित, रूक्ष-धी वगरने, पान आहार भणतो तो तेने
तेओ स्वीकारी लेता अने 'आटवेा आहार उदर-पोषण भाटे पूरतो छे'
आवे। मनमां विचार करीने त्यांथी पाछा इरी जाता. पाछा आवीने भिक्षामां

નિવર્તતે=પર્યાગચ્છતિ, પ્રતિનિવૃત્ત્ય યત્રૈવ સ્થવિરાભગવન્તસ્તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય, ભક્તપાનં પ્રતિદર્શયતિ, પ્રતિદર્શ્ય, સ્થવિરૈર્ભગવદ્ધિરભ્યનુજ્ઞાતઃ સન્ અમૂર્ચ્છિતઃ અગૃહ્ઃ અગ્રથિતઃ અનધ્યુપપન્નઃ=આસક્તિપરિવર્જિત ઇતિભાવઃ, 'વિલમિવ પન્નગભૂષણં અષ્ણાણેણં' વિલમિવ પન્નગભૂતેન આત્મના ઇવ=યથા પન્નગભૂતેન=પન્નગભવમાગતેન આત્મના=જીવેન વિલં પ્રવિષ્યતે, તથા તં 'ફામુષ્ણસ-ખિજ્જં' પ્રામુકૈષ્ણીયં=દ્વાત્ત્વારિશ્વદોષવર્જિતમ્ અશનં પાનં શ્વાયં સ્વાયં 'સરીર-કોટ્ઠગંસિ' શરીરકોષ્ઠકે=ઉદરે પ્રક્ષિપતિ, યથા મુજંગ્ગો વિલસ્ય પાર્શ્વભાગદ્વયમસંસ્પૃશન્ મધ્યભાગતઃ એવાત્માનં વિલે પ્રવેશયતિ તથા સ મુલસ્ય પાર્શ્વદ્વયસ્પર્શરહિત-માહારં કણ્ઠનાભિમુલં પ્રવેશ્ય આહારયતીતિ ભાવઃ । તતઃ સ્વલુ તસ્ય પુણ્ડરી-કસ્ય અનગારસ્ય 'કાલાઙ્કંતં' કાલાતિક્રાન્તં=કાલમતિક્રમ્ય પ્રાપ્તમ્-બુધુશા-

વાપિસ આ જાતે-વાપિસ આકર ફિર પ્રાપ્ત મિક્ષાન્ન કો દિશ્વાને કે લિયે વે જહાં સ્થવિર ભગવંત વિરાજમાન હોતે વહાં આતે-વહાં આકર પ્રાપ્ત મિક્ષાન્ન કો ડન સ્થવિર ભગવંતોં કો દિશ્વાલતે-દિશ્વાલકર જબ વે ડસ આહાર કો શ્વાને કી આજ્ઞા દેતે-તબ વે અમૂર્ચ્છિત ભાવ સે અગૃહ્ણ-ત્તવૃત્તિ સે, એવં આસક્તિ રહિત પરિણતિ સે ડસ પ્રામુક એષ્ણીય-૪૨ દોષોં સે રહિત અશન, પાન, શ્વાય, એવં સ્વાયરૂપ-આહાર કો જિસ તરહ સર્પ-વિલ મેં પ્રવિષ્ટ હોતા હૈ ડસી તરહ સે શરીર કોષ્ઠક મેં-ઉદર મેં ડાલ દેતે થે । કારણ ડસકા ડસ પ્રકાર હૈ-જૈસે મુજંગ વિલ કે પાર્શ્વદ્વય નહી છૂતા હુઆ સીધે મધ્યભાગ સે અપને કો વિલ મેં પ્રવિષ્ટ કરાતા હૈ ડસી તરહ વે મુનિરાજ મુલ્લ કે પાર્શ્વદ્વય કે સ્પર્શ સે રહિત આહાર કો સીધે કણ્ઠનાલ મેં ધર કર આહાર કરતે થે (તણં તસ્સ પુણ્ડરીયસ્સ અનગારસ્સ તં કાલાઙ્કંતં અરસવિરસં મિયલુક્કલં પાણ-

પ્રાપ્ત આહારને બતાવવા માટે જ્યાં તે સ્થવિર ભગવંત વિરાજમાન હતા ત્યાં આવતા. ત્યાં આવીને મેળવેલા આહારને તે સ્થવિર ભગવંતોને બતાવતા અને બતાવીને જ્યારે તેઓ તે આહારને ગ્રહણ કરવાની આજ્ઞા કરતા ત્યારે તેઓ અમૂર્ચ્છિત-ભાવથી, અગૃહ્ણ-ચિત્તવૃત્તિથી અને આસક્તિ રહિત પરિણતિથી તે પ્રામુક એષ્ણીય-૪૨ દોષોથી રહિત અશન, પાન, શ્વાય અને સ્વાયરૂપ આહારને જેમ સાપ દરમાં પ્રવેશે છે તેમજ શરીર કોષ્ઠકમાં-પેટમાં નાખી દેતા હતા. જેમ સાપ દરના બંને પાર્શ્વને સ્પર્શ ન કરતાં સીધો વચ્ચે ધડને ઘોતાની બાતને દરમાં પ્રવિષ્ટ કરાવી લે છે તેમજ તે મુનિરાજ પણ મુખના બંને પાર્શ્વના સ્પર્શથી રહિત આહારને સીધો કંઠનાળમાં મૂકીને ઉદરસ્થ કરતા હતા.

(તણં તસ્સ પુણ્ડરીયસ્સ અનગારસ્સ તં કાલાઙ્કંતં અરસં વિરસં મિય

अनगारधर्माभ्युत्थविषयी टी० अ० १९ पुण्डरीक कंडरीकचरित्रम्

७४७

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरसं विरसं शीतरूक्षं पान भोजनम् 'आहारियस्स' आहारितस्य सतः पूर्वरात्रापररात्रकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्मजागारिकां जाग्रतः=धर्मचिन्तनार्थं जागरणां कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति=नो परिपाकं गच्छति। ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरधिसत्त्वा, एषां व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति। ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारः 'अस्थामे' अस्थामा=शक्तिरहितः, अवले=शारीरिकबलरहितः, 'अवीरिए' अवीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरिस्सकारपरिक्कमे=पुरुषार्थपराक्रमरहितः 'करयल जाव' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं दशनखं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु अहंभूयो यावत्संप्राप्तेभ्यः=मोक्षं गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा-

भोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इस तरह उन पुण्डरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएणं तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतशरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ, तएणं से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिस्सकारपरिक्कमे करयल जाव, एवं वयासी-णमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं थेराणं भगवताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुण्वि पि य णं मए

लुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

आ प्रभाष्ये ते पुण्डरीक अनगारने। कालातिक्रमथी करेत्ते। ते अरस, विरस, शीत, रूक्ष पान आहारतुं रात्रिना मध्य भागभां धर्मचिन्तन भाटे करेत्ते। भगवत्पुणे दीधे सारी रीते पाथन थतुं न डत्तुं।

(तएणं तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतशरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ, तएणं से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिस्सकारपरिक्कमे करयल जाव, एवं वयासी-णमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं थेराणं भगवताणं मम धम्मायरियाणं

મન્તિકે સર્વઃ પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાખ્યાતઃ યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્યં સ્વલુ પ્રત્યાખ્યા-
તમ્=અષ્ટાદશપાપસ્થાનાનિ પ્રત્યાખ્યાતાનિ ઇતિ ભાવઃ, ઇદાનીમપિ તેષામેવ
ધેરાણં અંતિષ્ઠ સર્વે પાણાદ્વાપ્ત પચ્ચક્ષ્ણાપ્ત જાવ મિચ્છાદંસણસલ્લેખં
પચ્ચક્ષ્ણાપ્ત જાવ આલોદ્યપડિક્કંતે કાલમાસે કાલં કિચ્ચા સન્વદ્ધ-
સિદ્ધે ઉવવન્ને) હસ કારણ પુંડરીક અનગાર કે શરીર મેં વેદના પ્રકટ
હો ગઈ । જિસકે કારણ ઉન્હે ક્ષણભર મી શાતા નહી મિલતી । ધીરે ૨
યહ સમસ્ત શરીર મેં મી વ્યાપ્ત હો ગઈ । યાવત્ યહ ઉનકે લિયે સહન
હો સકે એસી નહીં રહી-વે ઉસે વડી કઠિનતા સે સહતે । દાહજ્વર ને
મી હનકે શરીર પર અપના પ્રભાવ જમા લિયા । હસ તરહ યે દાહજ્વર
કો જ્વાલા સે મી આકુલ વ્યાકુલ રહને લગે । ધીરે ૨ હનકા શરીર
શક્તિ રહિત હો ગયા । શારીરિક બલ મી હનકા જાતા રહા । ઉત્સાહ
રહિત એવં પુરુષાર્થ પરાક્રમ સે વિહીન જલ યે હો ગયે તથ કરતલ પરિ-
ગૃહીત દશનલ્લોવાલી અંજલિ કો હન્હોં ને અપને મસ્તક પર રલ્લકર હસ
પ્રકાર કા પાઠ યોલના પ્રારંભ કિયા યાવત્ સુક્તિ પ્રાપ્ત અહંત ભગવંતોં કે
લિયે મેરા નમસ્કાર હો, મેરે ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવંતોં કે
લિયે મેરા નમસ્કાર હો । મૈને પહિલે મી સ્થવિર ભગવંતોં કે નિકટ સમ-
સ્ત પ્રાણાતિપાત પ્રત્યાખ્યાન કર દિયા હૈ-યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્ય

ધમ્મોક્ષસયાણં પુરિષ પિ ય ણં મપ્થે ધેરાણં અંતિષ્ઠ સર્વે પાણાદ્વાપ્ત પચ્ચક્ષ્ણાપ્ત
જાવ મિચ્છાદંસણસલ્લેખં પચ્ચક્ષ્ણાપ્ત જાવ આલોદ્યપડિક્કંતે કાલમાસે કાલં
કિચ્ચા સન્વદ્ધ સિદ્ધે ઉવવન્ને)

એથી તે પુંડરીક અનગારના શરીરમાં વેદના પ્રકટ થઈ ગઈ તેથી તેમને
એક ક્ષણ માટે પણ શાતા મળતી નહોતી. ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ
શરીરમાં પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી
તેઓ તેને ખમતા હતા. દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ
જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાએથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ
રહેવા લાગ્યા. ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઈ ગયું, શારીરિક બળ પણ
તેમનું નષ્ટ થઈ ગયું હતું. આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને
પુરુષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઈ ગયા ત્યારે કરતલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી
અંજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેના પાઠ બોલવા લાગ્યા
કે યાવત્ સુક્તિ પ્રાપ્ત અહંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય,
ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે. મેં પહેલાં પણ ભગવંતોની
પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધું છે. યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનું અઢાર

શ્રેનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ અ૦ ૧૧ પુણ્ડરીક-કંડરીકચરિત્રમ્

૭૫૧

અન્તિકે પ્રાણાતિપાતં યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્યં પ્રત્યાખ્યામિ, एवं ' जाव आलो-
इय पडिक्कंते ' यावदालोचितप्रतिक्रान्तः कालमासे कालं कृत्वा सर्वार्थसिद्धे
उत्पन्नः । ततोऽनन्तरम्=तत्पश्चात् सर्वार्थसिद्धात् ' उव्वट्ठित्ता ' उद्वृत्य=सर्वार्थ-
सिद्धेर्निर्गत्य महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत् सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति । पुण्डरी-
कानगारचरितं दृष्टान्तेनोपदर्श्य श्रमणानुपदिशति भगवान् महावीरः—' एवामेव '
अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः 'जाव पव्वहए ' यावत्प्रव्रजितः=योऽस्माकं
श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् मानुष्यकेषु
कामभोगेषु नो सज्जते नो असक्तिमाश्रयते ' नो रज्जते ' नो रज्यते=नो अनु-
रागवान् भवति, ' जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ ' यावत् नो विप्रतिघातमाप-
द्यते=संयमनाशं न प्राप्नोति, स खलु इह भवे एव बहूनां श्रमणानां बहूनां श्रम-
णीनां बहूनां श्रावकाणां बहूनां श्राविकाणाम् अर्चनीयो वन्दनीयः पूजनीयः
सत्कारणीयः सम्माननीयो भवति, तथा च—स सर्वेषां ' कल्लाणं ' कल्याणं=
कल्याणरूपम् ' मंगलं ' मङ्गलम्=मङ्गलरूपम्, ' देवयं ' दैवतं=धर्मदेवरूपः,
' चेइयं ' चैत्यम्=ज्ञानरूपः पर्युपासनीयश्च भवति ' तिकड्डु ' इति कृत्वा इति

का अष्टादश पापस्थानों का, मैंने प्रत्याख्यान कर दिया है । और अब
भी उन्हीं के साक्षी से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्या-
ख्यान करता हूँ । इस तरह आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे कालअवसर
कालकर सर्वार्थ सिद्ध नामके अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो गये ।
(तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खा-
णमंतं काहिइ, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वहए समाणे माणुस्स-
एहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ
सेणं इह भवे चेव बहूणं सावियाणं अरुचणिज्जे, वंदणिज्जे, पूयणिज्जे,
सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवास-

પાપસ્થાનોનું મેં પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધું છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમાં
પ્રાણુતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનું પ્રત્યાખ્યાન કરું છું. આ પ્રમાણે
આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઇને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના
અનુત્તર વિમાનમાં ઉત્પન્ન થઇ ગયા અને ત્યાં તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે.

(તઓ અણંતરં ઉવ્વટ્ઠિત્તા મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિહિ, જાવ સવ્વદુક્ખાણ-
મંતં કાહિહિ, એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહए સમાણે માણુસ્સ-
એહિં કામ ભોગેહિં ણો સજ્જइ, ણો રજ્જइ, જાવ નો વિપ્પડિઘાયમાવજ્જइ સે ણં इह ભવે
ચેવ બહૂણં સાવિયાણં અરુચણિજ્જે, વંદણિજ્જે, પૂયણિજ્જે, સક્કારણિજ્જે, સમ્માણિ-
જ્જે, કલ્લાણં મંગલં દેવયં ચેइयं પજ્જુવાસણિજ્જે તિ કદ્દુ પરલોપ વિચ ણં ણો

હેતો: પરલોકેડપિ ચ સ્વલુ સા નો આગચ્છતિ= ન માપ્નોતિ વહ્નિ=વહુવિધાનિ
દણ્ડનાનિ ચ મુણ્ડનાનિ ચ તર્જનાનિ ચ તાડનાનિ ચ યાવત્ ચતુરન્તં સંસાર-
કાન્તરં 'વીશ્વસ્સહ' વ્યતિવ્રજિષ્યતિ=ઉલ્લુહ્યયિષ્યતિ, યથા સ પુણ્ડરીકોડનગાર:

ણિજ્જે ત્તિ કહ્હુ પરલોણ વિ ય ણં ણો આગચ્છહ, વહ્હુણિ દંડનાણિ ય
મુંડનાણિ ય તજ્જનાણિ ય તાડનાણિ ય જાવ ચાઉરંતસંસારકંતારં
જાવ વીશ્વસ્સહ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ सिद्ध विमान से चव कर
महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहीं से सिद्धपद के भोक्ता बनेंगे-
यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे। इस तरह पुण्डरीक अनगार के
चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को
उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारा
श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनु-
ष्यभव संबंधी कामभोगों में आसक्त नहीं बनता है, रज्जित-अनुराग
भाव संपन्न-नहीं होता है, यावत् अपने संयम को नष्ट नहीं करता है,
वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक एवं श्राविकाओं
द्वारा अर्चनीय वंदनीय पूजनीय स्तुकरणीय एवं सन्माननीय होता है।
तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप
बन जाता है। लोग उसकी उपासना करते हैं। वह परलोक में भी
अनेक प्रकार के दंडनरूप, दुःखों को, मुंडनों को, तर्जनों को, ताड़नाओं

આગચ્છહ, વહ્હુણિ દંડનાણિ ય મુંડનાણિ ય તજ્જનાણિ ય તાડનાણિ ય જાવ
ચાઉરંતસંસારકંતારં જાવ વીશ્વસ્સહ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાંથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં
જન્મ ધારણ કરીને ત્યાંથી જ સિદ્ધપદ મેળવશે. યાવત્ સમસ્ત દુઃખોને અંત
કરશે. આ રીતે પુણ્ડરીક અનગારના ચરિત્રને દષ્ટાંત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ
શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતાં કહે છે કે આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો !
જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને
મનુષ્ય ભવના કામભોગોમાં આસક્ત થતા નથી. રજ્જિત-અનુરક્ત થતા નથી,
યાવત્ પોતાના સંયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમાં જ ઘણા શ્રમણ-
શ્રમણી અને શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્ચનીય, વંદનીય, પૂજનીય, સ્તુતરણીય
અને સન્માનનીય હોય છે. તેમજ જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મંગલરૂપ, ધર્મ-
દેવરૂપ અને જ્ઞાનરૂપ બની બસ છે. લોકો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમાં
પણ ઘણી બાતના કંડન રૂપ, દુઃખોને, મુંડનોને, તર્જનોને, તાડનાઓને

સુધર્માસ્વામી કથયતિ-एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्धं समापयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन षष्ठस्य अङ्गस्य=षष्ठाङ्गसम्बन्धिनः प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः । 'त्ति वेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ मू०७ ॥

કો નહીં પાતા હૈ ઓર ચતુર્ગતિવાલે હસ સંસાર કાન્તાર કો પુંડરીક અનગાર કી તરહ પાર કરનેવાલા હો જાતા હૈ । (एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरे णं आइगरेणं तिथगरेणं जाव सिद्ध गई नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरे णं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ते णं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पणत्ते तिबेमि) अब श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं कि हे जंबू ! आदिकर तीर्थकर यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १९ वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है । इस तरह हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को अच्छी तरह प्राप्त कर चुके हैं, छठे अंग के प्रथम श्रुतस्कंध का यह पूर्वोक्त रूप से भाव प्रतिपादित किया है । ऐसा मैंने प्रभु के कहे अनुसार ही यह हे जंबू ! तुमसे निवेदित किया है ।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સંસાર કાંતારને પુંડરીક અનગારની જેમ પાર કરનાર થઈ જાય છે.

(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण आइगरेणं तिथगरेणं जाव सिद्ध गई नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीस इमस्स नायज्झयणस्स , अयमट्ठे पणत्ते, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमे पणत्ते तिबेमि)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ ! આદિકર તીર્થ'કર યાવત સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધું છે-છટ્ટા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં ભાવ પ્રતિપાદિત કર્યો છે. હે જંબૂ ! આવું મેં પ્રભુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યું છે. "

તસ્સે ' ત્યાદિ, તસ્ય દલ્લુ પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કંધસ્ય એકોનવિંશતિરધ્યયનાનિ
 યમસરગાણિ' એકસ્વરકાનિ=સમાનોચ્ચારણાનિ=અન્તરાલે ઉદ્દેશરહિતાનિ એકોન-
 વિંશતિ દિવસેષુ સમાપ્યતે ॥ સૂ૦ ૭ ॥

મંગલં ભગવાન્ વીરઃ મંગલં ગૌતમઃ પ્રભુઃ ।

સુધર્મા મંગલં, જંબૂજૈનધર્મશ્ચ મંગલમ્ ॥ ૧ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितकलितक-
 लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
 त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-
 गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-पासीलाठ-
 त्रतिविरचितायां ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्थानगारधर्ममृतव-
 दिण्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमश्रुतस्कंधः समाप्तः ॥

હસ કથન મેં મૈને અપની તરફ સે કોઈ ખી કલ્પના મિશ્રિત નહીં
 કી હૈ કિન્તુ પ્રભુ કે મુલ્ક સે જૈસા મૈને હસે સુના હૈ વૈસા હી યહ તુમ
 સે મૈને કહા હૈ । “ તસ્સે ” ત્યાદિ હસ પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ કે અન્તરાલ મેં
 ઉદ્દેશ રહિત ૧૯ અધ્યયન હૈ । યે અધ્યયન ૧૯ દિનોમૈં સમાપ્ત હોતે હૈ ।

ટીકાર્થઃ—સાંસરિક સમસ્ત જીવોં કે લિયે યદિ મંગલકારી પદાર્થ
 હૈ—તો યે હૈ ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમગણધર, સુધર્માસ્વામી, જંબુ-
 સ્વામી ઓર જૈનધર્મ ।

હસ તરહ જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞ સૂત્રકે પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ સંપૂર્ણ ।

આ કથનમાં મેં મારા તરફથી કોઈપણ ભતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી,
 પણ પ્રભુના મુખથી જેવું મેં સાંભળ્યું છે તેવું જ મેં કહ્યું છે. “ તસ્સે ” ત્યાદિ
 આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધના અન્તરાલમાં ઉદ્દેશ રહિત એગણીસ અધ્યયનો છે.
 આ અધ્યયનો એગણીસ દિવસોમાં સમાપ્ત હોય છે.

ટીકાર્થઃ—અથા સાંસારિક જીવોના માટે જો મંગલકારી પદાર્થો છે તો
 તે જોજ છે—ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જંબુ
 સ્વામી અને જૈન ધર્મ.

“ આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાંગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ સમાપ્ત થયો. ”

॥ अथ ज्ञातासूत्र द्वितीयश्रुतस्कन्धाववरणम् ॥

मङ्गलाचरणम् -

(वसन्ततिलकावृतम्)

आद्ये श्रुते भगवता रुचिरैरनेकै-

ज्ञातैरदायि सकलार्तिहरः सुबोधः ।

स्कन्धे द्वितीयइह धर्मकथा च साक्षाद् ,

विज्ञापिता तमनिशं वरदं स्मरामि ॥ १ ॥

(मालिनीछन्दः)

गणधरगुणधारं, प्राप्तसंसारपारम् ,

भविजनहितकारं, दत्तसम्यक्त्वसारम् , ।

हृतसकलविकारं, भव्यचित्तैकहारं ,

शिवसुखपदधारं, नमि चारित्रसारम् , ॥ २ ॥

-:द्वितीयश्रुतस्कंधप्रारंभ:-

आद्येश्रुते इत्यादि:- प्रथम श्रुतस्कंधमें भगवान् सूत्रकार ने अनेक सुन्दर दृष्टान्तों द्वारा सकल आर्ति (दुःख) हारक सुबोध प्रदान किया है अब वे इस द्वितीय श्रुतस्कंध में साक्षात् धर्मकथाएँ प्रकट करेंगे-अतः ऐसे भगवान् को मैं कि जो भव्यजीवों को कल्याण करनेवाले होते हैं उनको निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

गणधरइत्यादि-जो गणधरों के गुणों को धारण करनेवाले हैं संसार को पार करनेवाले हैं, जो भव्यजनों को हितकारक हैं, सम्यक्त्वरूपी गुणके बोधक हैं-सकल विकारों से रहित है, इसलिये जो भव्यजीवों

द्वितीय श्रुतस्कंध प्रारंभ

आद्य श्रुतेत्यादि-प्रथम श्रुतस्कंधમાં ભગવાન સૂત્રકારે ઘણા સુંદર દૃષ્ટાંતો વડે સમસ્ત આર્તિ (દુઃખ) હારક સુબોધ પ્રદાન કર્યો છે. હવે તેઓ આ બીજા શ્રુતસ્કંધમાં સાક્ષાત્ ધર્મકથાઓ પ્રકટ કરશે એટલા માટે એવા ભગવાનને-કે જેઓ ભવ્ય જીવોનું કલ્યાણ કરનારા છે-હું નિરંતર નમસ્કાર કરું છું. ૧

ગણધર ઇત્યાદિ-જેઓ ગણધરોના ગુણોને ધારણ કરનારા છે, સંસારને પાર કરનારા છે જેઓ ભવ્યજનોના હિતકારક છે, સમ્યક્ત્વ રૂપી ગુણના બોધક છે, આ બધા વિકારોથી રહિત છે, એટલા માટે જ જેઓ ભવ્ય જીવોના

વ્યાખ્યાતઃ પ્રથમો જ્ઞાતાસ્થ્યઃ શ્રુતસ્કન્ધઃ, અથ ધર્મકથાસ્થ્યો દ્વિતીયઃ પ્રારંભ્યતે, અસ્ય પૂર્વેણ સહાયં સમ્બન્ધઃ—પૂર્વસ્મિન્ શ્રુતસ્કન્ધે ઉદાહરણપ્રદર્શનપૂર્વકમાપ્નો-પાલમ્ભાદિના ધર્મસ્થોઽર્થઃ પ્રતિપાદિતઃ, इह तु स एव साक्षाद् धर्मकथाभिः प्रतिपाद्यते, इत्येवं સમ્બન્ધેન સમાયાતસ્યાસ્યેદમાદિસૂત્રમ્—‘ તેણં કાલેણ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે નામં નયરે હોત્થા, વણ્ણઓ, તસ્સ ણં રાયગિહસ્સ ણયરસ્સ વહિયા ઉત્તર-પુરત્થિમે દિસિમાણ તત્થ ણં ગુણસિલણ્ણામં ચેદ્દણ્ણ હોત્થા વણ્ણઓ, તેણં કાલેણં તેણં સમણં સમણસ્સ ભગવઓ મહા-વીરસ્સ અંતેવાસી અજ્જસુહમ્મા ણામં થેરા ભગવંતો જાહસંપન્ના કુલસંપન્ના જાવ ચઉદસપુવ્વી ચઉણાણોવગયા પંચહિં અણગા-

કે ચિત્ત કો હરણ કરનેવાલે હૈં એસે उस सम्पक् चारित्ररूपी सार को धारण करनेवाले मोक्षपद के धारी हँ उसको मैं नमस्कार करता हूँ ।

પ્રથમ જ્ઞાતા નામ કા શ્રુતસ્કંધ વ્યાખ્યાત હો ચુકા અથ ધર્મકથા નામ કા દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ પ્રારંભ કિયા જાતા હૈ । હસ શ્રુતસ્કંધ કા પૂર્વ શ્રુતસ્કંધ કે સાથ હસ પ્રકાર સે સંબંધ હૈ કિ પૂર્વ શ્રુતસ્કંધ મેં ઉદાહરણ પ્રદર્શન પૂર્વક આત્મ તીર્થંકર કે ઉપાલંભ આદિ દ્વારા ધર્મ રૂપ અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા ગયા હૈ । અવ હસ દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ મેં ધર્મ રૂપ અર્થ સાક્ષાત્ ધર્મકથાઓ દ્વારા નિરૂપિત કિયા જાવેગા । હસ દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ કા યહ આદિ સૂત્ર હૈ । તેણં કાલેણં તેણં સમણં ઇત્યાદિ ।

ચિત્તને આકર્ષનારા છે, એવા તે સમ્યક્-ચારિત્ર રૂપી સારને ધારણ કરનારા મોક્ષપદના ધારી છે, તેને હું નમસ્કાર કરું છું.

પ્રથમ જ્ઞાતા નામનો શ્રુતસ્કંધ વ્યાખ્યાત થઈ ચુક્યો છે હવે ધર્મકથા નામનો બીજો શ્રુતસ્કંધ શરૂ કરવામાં આવે છે. આ શ્રુતસ્કંધનો પહેલા શ્રુતસ્કંધની સાથે આ પ્રમાણે સંબંધ છે કે પૂર્વ શ્રુતસ્કંધમાં ઉદાહરણોની સાથે આત્મ તીર્થંકરના ઉપાલંભ વગેરે દ્વારા ધર્મરૂપ અર્થનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. હવે આ બીજા શ્રુતસ્કંધમાં તે જ ધર્મરૂપ અર્થ સાક્ષાત્ ધર્મકથાઓ વડે નિરૂપવામાં આવશે. આ બીજા શ્રુતસ્કંધનું આ પ્રથમ સૂત્ર છે—

‘ તેણં કાલેણં તેણં સમણં ’ ઇત્યાદિ—

अणगारस्समाभुतवपिणी टीका शु. २ व. १ अ. १ द्वितीयश्रुतस्कंधस्योपक्रमः ७५५

रसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुब्बाणुपुठिं चरमाणा गामाणुगामं
दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव
गुणसिलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा
विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा जामेव दिसं
पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं
अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे
जाव पज्जुवासमाने एवं वयासी-जइ णं भंते ! समणेणं जाव
संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स णायानं अयमट्ठे
पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं
जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव
संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पणत्ता, तं जहा — चमरस्स
अग्गमहिस्सीणं पढमे वग्गे १ बलिस्स बइरोयणिंदस्स वइरोय-
णरत्तो अग्गमहिस्सीणं बीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाणं दाहि-
णिच्छाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्गमहिस्सीणं तइओ वग्गो ३
उत्तरिच्छाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्गमहि-
स्सीणं चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिच्छाणं वाणमंतराणं इंदाणं
अग्गमहिस्सीणं पंचमो वग्गो ५ उत्तरिच्छाणं वाणमंतराणं इंदाणं
अग्गमहिस्सीणं छट्ठो वग्गो ६ चंदस्स अग्गमहिस्सीणं सत्तमो वग्गो
७ सूरस्स अग्गमहिस्सीणं अट्ठमो वग्गो ८ सक्कस्स अग्गमहिस्सीणं
णवमो वग्गो ९ ईसाणस्स अग्गमहिस्सीणं दसमो वग्गो १० ॥सू०१॥

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः—नगरवर्णनं सर्वमत्र विज्ञेयम् । तस्य खलु राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणशिलकं नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन-प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये भ्रमणस्य भगवतो महावीर-स्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाइसंपन्ना' जातिसम्पन्नाः=सुविशुद्धमावृत्ताः, कुलसंपन्नाः=विशुद्धपितृवंशः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्नाः, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगताः=मतिश्रुतावधिमनः पर्यवज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर-

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (रायगिहे नामं नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था। (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चंपा नगरी के समान जानना चाहिये। (तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णामं चेइए होत्था, वण्णओ) उस राज-गृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था। यहां पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये—(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणामं थेरा भग-वंतो जाइ संपन्ना कुल संपन्ना जाव चउइसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धि संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइ-

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये (रायगिहे नामं नयरे होत्था) राजगृह नामे नगर હતું. (વણ્ણઓ) આ નગરનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં વર્ણવવામાં આવેલા ચંપા નગરીના વર્ણનની જેમ જ બાણી લેવું જોઈએ.

(તસ્સ ણં રાયગિહસ્સ ણયરસ્સ બહિયા ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિભાએ તત્થણં ગુણસિલએ ણામં ચેઇએ હોત્થા, વણ્ણઓ)

તે રાજગૃહ નગરની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્-ભાગની તરફ એટલે કે ઈશાન કોણમાં એક ગુણશિલક નામે ચૈત્ય-ઉદ્યાન-હતો. અહીં ચૈત્ય વિષેનું બધું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રની જેમ બાણવું જોઈએ.

(તેણં કાલેણં તેણં સમએણં સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતેવાસી અજ્જ સુહમ્માણામં થેરા ભગવંતો જાઇસંપન્ના કુલસંપન્ના જાવ ચઉઇસ પુવ્વી ચઉણાણો-વગયા પંચહિં અણગારસએહિં સદ્ધિ સંપરિવુડા પુવ્વાણુપુવ્વિ ચરમાણા ગામાણુગામં દૂઇ-

अनगारधर्मावृत्तवर्णिनी टी० श्रु. २ व. १ अ. १ द्वितीयश्रुतस्कंधस्योपक्रमः ७५७

नगरशतैः सार्द्धं संपरिवृताः 'पुष्पाणुपुर्वि' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया 'चरमाणा' चरन्तः=विहरन्तः ग्रामानुग्रामं एकग्रामादव्यवधानेनान्यं ग्रामम् 'द्वि-
ज्जमाणा' द्वचन्तः=स्पृशन्तः 'सुहं सुहेणं' सुखं सुखेन=सुखपूर्वकं यथावसर-
मित्यर्थः विहरन्तो यत्रैव राजगृहं नगरं यत्रैव गुणशिलकं चैत्यं यावत्-संयमेन
तपसा आत्मानं भावयन्तो विहरन्ति । अत्र आदरार्थं बहुवचनम् । परिषन्निर्गता ।
धर्मः कथितः । परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽनगारस्यान्तेवासी आर्य जम्बूनामान-
ज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेजेव रायगिहे णयरे जेजेव गुणसिलए
चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरन्ति) उस काल
और उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अंतेवासी आर्य सुधर्मा
नाम के स्थविर भगवंत कि जो विशुद्ध मातृवंशवाले थे विशुद्ध पितृ-
वंशवाले थे, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं लाघव
संपन्न थे, चौदहपूर्व के पाठी थे-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान एवं
मनःपर्यव ज्ञान इन चारों ज्ञानों के धारक थे-पांचसौ अनगारों के साथ
तीर्थंकर परंपरा के अनुसार विहार करते २ एक ग्राम से दूसरे ग्राम में
बिना किसी व्यवधानके विचरण करते हुए सुख पूर्वक समय पर-जहां
राजगृह नगर और उस में भी जहां वह गुणशिलक चैत्य था आये ।
वहां वे संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए उतरे (परिसा
निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं
पडिगयां, तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंते-
ज्जमाणा सुहं सुहेणं विहरमाणा जेजेव रायगिहे णयरे जेजेव गुणसिलए चेइए
जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरन्ति)

ते काले अने ते समये श्रमण भगवान महावीरना अंतेवासी आर्य
सुधर्मा नामना स्थविर भगवंत के जेओ विशुद्ध मातृवंशवाला हुता-विशुद्ध
पितृवंशवाला हुता, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने
लाघव-संपन्न हुता. चौदह पूर्वना पाठी हुता, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान
अने मनःपर्यवज्ञान ओ आरे ज्ञानेना धारक हुता. पांचसौ अनगारोनी साथे
तीर्थंकर परंपरा सुगम विहार करतां करतां ओक ग्रामधी धीजे ग्राम कोछपण
जातना व्यवधान पगर सुजेथी यथा समय न्यां राजगृह नगर अने तेमां
पण न्यां ते गुणशिलक चैत्य हुतुं त्यां आव्या त्यां तेओ संयम अने तप
द्वारा पोताना आत्माने लावित करता देकाया.

(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव
दिसिं पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी

ગારઃ યાવત્-‘પઞ્જુવાસમાણે’ પર્યુપાસીનઃ=સેવમાનઃ એવમવદત્-યદિ સ્વલુ
‘મંતે’ મદન્ત=હે ભગવન્ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્-મોક્ષં સમપ્રાપ્તેન
પષ્ટઠ્યાજ્ઞસ્ય પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કન્ધસ્ય ‘જ્ઞાયાણં’ જ્ઞાતાનામ્=ઉદાહરણાનામ્ અયમર્થઃ
પ્રજ્ઞપ્તઃ દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ હે મદન્ત ! શ્રુતસ્કન્ધસ્ય ધર્મકથાનાં શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રા-
પ્તેન=મોક્ષં ગતેન ભગવતા કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાદ-એવં સ્વલુ હે જમ્બૂ !

વાસી અજ્ઞ જંબૂનામં અણગારે જાવ પઞ્જુવાસમાણે એવં વયાસી-જહ્ણં
મંતે સમણેણં જાવ સંપત્તેણં છટ્ઠસ્સ અંગસ્સ પઢમસ્સ સુયક્વંધસ્સ
જ્ઞાયાણં અયમદ્દે પન્નત્તે દોઢ્ઠસ્સ ણં મંતે ! સુયક્વંધસ્સ ધમ્મકહાણં
સમણેણં જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેણં જાવ
સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં દસવગ્ગા પણ્ણત્તા) રાજગૃહ નગર સે પરિષદ
વંદન કરને કે લિયે આઈ । સુધર્માસ્વામી ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ઉપદેશ
સુનકર પરિષદ અપને ૨ સ્થાન પર પીછે વહાં સે ચલી ગઈ । ઉસ કાલ મેં
ઔર ઉસ સમય મેં આર્ય સુધર્માસ્વામી કે અંતેવાસી આર્ય જંબૂ નામકે
અનગાર ને યાવત્ ઉનકી પર્યુપાસના કરતે હુએ ઉનસે ઈસ પ્રકાર પૂછા
હે મદંત ! યાવત્ મુક્તિકો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને છટેઅંગકે
જ્ઞાતાસૂત્ર પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ કે ઉદાહરણોંકા યહ પૂર્વોક્તિરૂપ સે અર્થ નિરૂ-
પિત કિયા હૈ-તો હે મદંત ! દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધકી ધર્મકથાઓં કા ઉન્હીં
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો હુકે હૈં કયા
અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ ? ઈસ પ્રકાર જંબૂ કે પ્રશ્ન કો સુનકર શ્રી સુધર્મા

અજ્ઞજંબૂ નામં અણગારે જાવ પઞ્જુવાસમાણે એવં વયાસી-જહ્ણં મંતે સમણેણં
જાવ સંપત્તેણં છટ્ઠસ્સ અંગસ્સ પઢમસ્સ સુયક્વંધસ્સ જ્ઞાયાણં અયમદ્દે પન્નત્તે
દોઢ્ઠસ્સ ણં મંતે ! સુયક્વંધસ્સ ધમ્મકહાણં સમણેણં જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે
પણ્ણત્તે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં દસવગ્ગા પણ્ણત્તા)

રાજગૃહ નગરથી પરિષદ વંદન કરવા માટે ત્યાં આવી. સુધર્મા સ્વામીએ
ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને પરિષદ પોતાના સ્થાને પાછી જતી
રહી. તે કાળે અને તે સમયે અર્થ સુધર્મા સ્વામીના અંતેવાસી (શિષ્ય)
આર્ય જંબૂ નામના અનગારે યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરતાં તેમને આ
પ્રમાણે પૂછ્યું કે હે મદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહા-
વીરે છટ્ટા અંગના પ્રથમ શ્રુતસ્કંધના ઉદાહરણોને આ પૂર્વોક્તિ રૂપે અર્થ
નિરૂપિત કર્યો છે તો હે મદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે
મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે-દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધની ધર્મકથાઓનો શો અર્થ
નિરૂપિત કર્યો છે, આ પ્રમાણે જંબૂના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ

अमगारधर्मासृतवर्षिणी टी० श्रु. २ व. १ अ. १ द्वितीयश्रुतस्कंधस्योपक्रमः ७५९

श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा तानेव दर्शयति—
 ‘चमरस्स’ चमरस्य=चमरेन्द्रस्य दाक्षिणात्यासुरकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषीणां प्रथमो-
 वर्गः १। ‘बलिस्स’ बलिनाम्नः ‘वइरोयणिंदस्स’ वैरोचनेन्द्रस्य=वि=विविध-
 प्रकारैः रोचन्ते=दीप्यन्ते दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यो विशिष्टदीप्तिमत्त्वात् इति विरो-
 चनाः, त एव वैरोचनाः=औदीच्यासुरकुमारास्तेषामिन्द्रः वैरोचनेन्द्रस्तस्य ‘वइरो-
 यणरन्नो’ वैरोचनराजस्य=वैरोचनाधिपतेः अग्रमहिषीणां द्वितीयो वर्गः २। असु-
 रेन्द्रवर्जितानां ‘दाहिणिल्लाणं’ दाक्षिणात्यानां=दक्षिणदिक्सम्बन्धिनानां भवन-
 वासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणां तृतीयो वर्गः ३। ‘उत्तरिल्लाणं’ उत्तरीयाणामसु-
 रेन्द्रवर्जितानां भवनवासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणां चतुर्थो वर्गः ४। दाक्षिणात्यानां
 वानव्यन्तराणामिन्द्राणामग्रमहिषीणां पञ्चमो वर्गः ५। उत्तरीयाणां वानव्यन्तरा-
 णामिन्द्राणामग्रमहिषीणां षष्ठो वर्गः ६। चन्द्रस्याग्रमहिषीणां सप्तमो वर्गः ७।

स्वामी ने उनसे कहा—हे जंबू! सुनो—यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए
 श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथाओं के दश वर्ग प्रज्ञप्त किये हैं—(तं
 जहा) वे इस प्रकार हैं—(चमरस्स अग्रमहिषीणं पढमेवग्गे ? बलिस्स
 वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्रमहिषीणं बीओ वग्गो २ असुरिंद-
 वज्जियाणं दाहिणिल्लाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्रमहिषीणं तइओ
 वग्गो ३ उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्रम-
 हिषीणं चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं—इंदाणं अग्रमहि-
 सीणं पंचमो वग्गो, उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्रमहिषीणं छट्ठो
 वग्गो ६, चंदस्स अग्रमहिषीणं सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्रमहिषीणं
 अट्ठमो वग्गो, सक्कस्स अग्रमहिषीणं णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्रम-
 हिषीणं दसमो वग्गो) चमरेन्द्र की—दाक्षिणात्य असुरकुमारेन्द्र की—

तेभने कहुं के हे जंबू! सांभलो, यावत् मुक्तिस्थानने प्राप्त करी चुकेला
 श्रमण भगवान् महावीरे धर्मकथाओंना दश वर्गों प्रज्ञप्त किये छे (तंजहा)
 तेओ आ प्रभाछे छे—

(चमरस्स अग्रमहिषीणं पढमेवग्गे बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो
 अग्रमहिषीणं बीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाणं दाहिणिल्लाणं भवणवासीणं
 इंदाणं अग्रमहिषीणं तइओ वग्गो ३, उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवण-
 वासीणं इंदाणं अग्रमहिषीणं चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं—
 इंदाणं अग्रमहिषीणं पंचमो वग्गो, उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्रमहि-
 सीणं छट्ठो वग्गो ६, चंदस्स अग्रमहिषीणं सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्रमहिषीणं अट्ठमो
 वग्गो, सक्कस्स अग्रमहिषीणं णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्रमहिषीणं दसमो वग्गो)

૭૬૦

હાતાધર્મકથાકલ્પ

સૂરસ્સ=સૂર્યસ્યાગ્રમહિષીનામષ્ટમો વર્ગઃ ૮ । શક્રસ્યાગ્રમહિષીનાં નવમો વર્ગઃ ૯ ।
ઈશાનસ્યાગ્રમહિષીનાં દશમો વર્ગઃ ૧૦ ॥ મુ૦ ૧ ॥

મૂલ્પ-જહ્વ ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં ધર્મકહાણં
દસવગ્ગા પળ્લપ્પા પઢમસ્સ ણં મંતે ! વગ્ગસ્સ સમણેણં જાવ
સંપત્તેણં કે અટ્ટ પલ્લપ્પે ? , એવં સ્વલ્લુ જંબૂ ! સમણેણં જાવ સંપ-
ત્તેણં પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પંચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા તં જહા-કાલી

અગ્રમહિષિયોં કા-પદ્મદેવિયોં કા-પ્રથમ વર્ગ, ષલિ નામક વૈરોચનેન્દ્ર કી
અગ્રમહિષિયોંકા દ્વિતીય વર્ગ, અસુરેન્દ્રકો છોડકર દક્ષિણ દિશા સંબંધી
ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા તૃતીય વર્ગ, ઉત્તર દિશા
સંબંધી ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી તિ જિન મેં અસુરેન્દ્ર છોડ દિયે ગયે
હેં અગ્રમહિષોં કા ૪ ચતુર્થ વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સંબંધી વાનવ્યન્તરોં કે
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોંકા પંચમ વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી વ્યોનવ્યન્તરોંકે
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોંકા છઠ્ઠા વર્ગ, ચન્દ્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા ૭ વાં
વર્ગ, સૂર્યકો અગ્રમહિષિયોંકા આઠવાં વર્ગ, શક્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા
નવમાં વર્ગ, ઔર ઈશાનકી અગ્રમહિષિયોં કા દશમાં વર્ગ । વૈરોચન ઉત્તર-
દિશાકે અસુરકુમાર હેં । યે દક્ષિણ દિશાસંબંધી અસુરકુમારોંકી અપેક્ષા
વિશિષ્ટ દીપ્તિસંપન્ન હોતે હેં ઇસલિયે ઇન્હેં વૈરોચન કહા ગયા હેા ॥ સૂ૦ ૧ ॥

અમરેન્દ્રની-દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની-અગ્રમહિષીઓના-પદ્મદેવીઓના
પહેલો વર્ગ, ષલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓના બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને
બાદ કરતાં દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓના ત્રીજો
વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાંથી અસુરેન્દ્રને
બાદ કરી દીધા છે. અગ્રમહિષીઓના ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સંબંધી વાન-
વ્યન્તરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓના પાંચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી વાન-
વ્યન્તરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓના સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓના
આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહિષીઓના નવમો વર્ગ અને ઈશાનની અગ્રમહિ-
ષીઓના દશમો વર્ગ. વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે. એ દક્ષિણ દિશા
સંબંધી અસુરકુમારો કરતાં વિશિષ્ટ દીપ્તિ-સંપન્ન હોય છે એથી જ એ
વૈરોચન કહેવામાં આવ્યા છે. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

भक्तगारक्षमांमृतवर्षिणी दी० शु. २ व. १ अ. १ कालीदेवीवर्णनम् ७६१

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं
 पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता पढमस्स णं भंते !
 अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?, एवं खलु
 जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए
 चेइए सेणिए राया चेछणा देवी सामी समोसरिए परिसा
 णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं
 काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे
 कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं मह-
 त्तरियाहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं
 अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं
 बहुएहि य कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवीहि
 य सद्धिं संपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवल-
 कप्पं जंबुद्वीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणो२ पासइ,
 तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे
 नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरुवं उग्गहं उग्गिणिहत्ता संज-
 मेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठुत्तुच्चित्तमा-
 णंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भु-
 ट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ
 ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ अणुग-
 च्छित्ता वामं जाणुं अंचइ अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि
 निहट्ठु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

७६२

बाताधर्मकथाकृतसूत्रे

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽस्थुणं
 अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽस्थुणं समणस्स भगवओ महा-
 वीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं
 इह गया पासउ मं भगवं तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ
 नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निस-
 ण्णा, तएणं तीमे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवा-
 सित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सदावेइ
 सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं
 महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च-
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयण-
 सहस्सवित्थिणं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं
 साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइणं भंते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भंते’
 भदन्त ! हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्संपाप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

—जइणं भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थः—(जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा
 पणत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे
 पणत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स) जंबूस्वामी ओ

जइणं भंते ! इत्यादि—

(जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पणत्ता पढमस्स
 णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ? एवं खलु जंबू ! सम-
 णेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स०)

અનંગારચમાં મુતવર્ણિણો ટીકા શ્રુ. ૨ વ. ૧ અ. ૧ કાલીદેવીવર્ણનમ્

૭૬૩

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્થઃ પ્રજ્ઞસઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાહ—એવં સ્વલુ હે જમ્બૂઃ ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પશ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાનિ, તથા—કાલી ૧, રાત્રિઃ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જમ્બૂસ્વામી પૃચ્છતિ—યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પશ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન યાવત્ સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્થઃ પ્રજ્ઞસઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—

એવં સ્વલુ હે જમ્બૂઃ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહં નગરં ગુણશિલકં-
ચૈત્યમ્, શ્રેણિકો રાજા, ચેલ્હના દેવી આસીન્ । સામી=સ્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ (ભંતે) હે ભદંત ! (જહણં) યદિ (સમ-
ણેણં જાવ સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં દસવગ્ગા પળ્લણ્ણા) શ્રમણ ભગવાન્
મહાવીર ને જો કિ સુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ
પ્રરૂપિત કિયે હૈં તો (ણં ભંતે) હે ભદંત ! (સમણેણં જાવ સંપત્તેણં પદમસ્સ
વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે) ડન્હીં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ
મેં વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કયા અર્થ પ્રજ્ઞસ કિયા હૈં ?
(એવં સ્વલુ જંબૂ સમણેણં જાવ સંપત્તેણં પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પંચ અજ્ઞયણા
પળ્લણ્ણા, તં જહા—કાલી રાઈ રયણી વિજ્ઞૂ મેહા જહણં ભંતે ! સમણેણં
જાવ સંપત્તેણં પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પંચ અજ્ઞયણા પળ્લણ્ણા પદમસ્સ ણં ભંતે
અજ્ઞયણસ્સ સમણેણં જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે પળ્લણ્ણા ? એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં
કાલ્લેણં તેણં સમણં રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દે સેણિયે રાયા ચેલ્લ-
ણાદેવી) હસ પ્રકાર જંબૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (ભંતે) હે ભદન્ત !
(જહણં) બે (સમણેણં જાવ સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં દસવગ્ગા પળ્લણ્ણા) શ્રમણ
ભગવાન મહાવીરે કે બેમણે સુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે. ધર્મકથાઓના દશ
વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ણં ભંતે) હે ભદન્ત ! (સમણેણં જાવ સંપત્તેણં
પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પવ્વતે) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે બેમણે
મોક્ષમાં વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે—પહેલા વર્ગના શો અર્થ પ્રજ્ઞસ કર્યો છે ?

(એવં સ્વલુ જંબૂ સમણેણં જાવ સંપત્તેણં પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પંચ અજ્ઞયણા
પળ્લણ્ણા, તં જહા—કાલી રાઈ રયણી વિજ્ઞૂ મેહા જહણં ભંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં
પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પંચ અજ્ઞયણા પળ્લણ્ણા । પદમસ્સ ણં ભંતે, અજ્ઞયણસ્સ સમણેણં
જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે પળ્લણ્ણા ! એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલ્લેણં તેણં સમણં રાયગિહે
ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દે સેણિયે રાયા ચેલ્લણા દેવી)

‘ સમોસરિય ’ સમવસૂતઃ સમાગતવાન્ । ‘ પરિસા ’-પરિષત્=રાજગૃહનગર-વાસ્તવ્યો જનસમૂહઃ ‘ ણિગ્ગયા ’ નિર્ગતા=ભગવદ્વન્દનાર્થં સ્વ સ્વસ્થાનાન્નિસ્સૂતા, ભગવતા ધર્મકથા કથિતા યાવદ્ પરિષદ્ ભગવન્તં ‘ પઞ્જુવાસઈ ’ પર્યુપાસ્તે=સેવતે, તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે કાલી નામ દેવી ચમરચન્દ્રાયાં રાજધાન્યાં ઉન્હે ઉત્તર દેને કે અભિપ્રાય સે કહા કિ (એવં સ્વહુ જંબૂ !) હે જંબૂ ! તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ સુનો યાવત્ સંપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને પ્રથમ વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન પ્રશ્ન કિયે હૈં વે યે હૈં-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, ઓર મેઘા ૫। અથ પુનઃ જંબૂ સ્વામી પ્રશ્ન કરતે હૈં કિ હે ભદ્રં ! યાવત્ સુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હુય શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને પ્રથમ વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન નિરૂપિત કિયે હૈં તો મૈં આપસે પૂછના હૂં કિ ભદ્રં યાવત્ મોક્ષ કો સંપ્રાપ્ત ઉન્હીં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને પ્રથમ અધ્યયન કા વ્યાખ્યાન નિરૂપિત કિયા હૈ ? હસ કા ઉત્તર ઉન્હે સુધર્માસ્વામી હસ પ્રકાર દેતે હૈં-હે જંબૂ ! ડસ કાલ ઓર ડસ સમય મૈં રાજગૃહ નામકી નગરી થી-ડસ મૈં ગુણશિલક નામ કા ઉચ્ચાન થા-નગરી કે રાજા કા નામ શ્રેણિક થા । ડસકી રાની કા નામ ચેલ્લના થા । (સામી સમોસરિય પરિસા ણિગ્ગયા જાવ પરિસા પઞ્જુવાસઈ-તેણં કાલેણં તેણં સમણં કાલી નામં દેવી, ચમરચંદ્રાય રાયહાણીય

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામી । પ્રશ્નને સાંભળીને તેમને ઉત્તર આપવાના ઉદ્દેશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે (એવં સ્વહુ જંબૂ !) હે જંબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે. સાંભળો, યાવત્ સંપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રશ્ન કર્યા છે. તેઓ આ પ્રમાણે છે— ૧ કાલી, ૨ રાત્રિ, ૩ રજની, ૪ વિદ્યુત, અને ૫ મેઘા.

હવે ફરી જંબૂ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદ્રં ! યાવત્ સુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો નિરૂપિત કર્યા છે તો હું તમને ફરી પૂછવા માગુ છું કે હે ભદ્રં ! યાવત્ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પહેલા અધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેને ઉત્તર આપતાં કહેવા લાગ્યા કે જંબૂ ! તે કાળે અને તે વખતે રાજગૃહ નામે એક નગરી હતી. તેમાં ગુણશિલક નામે ઉચ્ચાન હતું. નગરીના રાખતું નામ શ્રેણિક હતું. તેની રાણીનું નામ ચેલ્લના હતું.

(સામી સમોસરિય પરિસા ણિગ્ગયા જાવ પરિસા પઞ્જુવાસઈ-તેણં કાલેણં તેણં સમણં કાલી નામં દેવી, ચમર ચંદ્રાય રાયહાણીય કાલવર્ડિસમભવણે

अनंगारधर्माभूतवर्षिणी टी० अं २ व. १ अ. १ कालीदेवीवर्णनम्

७६५

‘कालवर्डिसगभवणे’ कालावतंसकभवने काले=कालाख्ये सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः, चतसृभिर्महतत्तिकाभिः, सपरिवाराभिस्तिसृभिः=वाह्याभ्यन्तरमध्यरूपाभिः ‘परिसाहिं’ परिषद्भिः पारिवारिकदेवीरूपाभिः, सप्तभिः ‘अणिएहिं’ अनीकैः=हयगजरथपदातिवृषभगन्धर्वनाट्यरूपैः, अत्रायं विवेकः—

कालवर्डिसगभवणे कालंसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महूरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिंवईहिं सोलसहिं आयरखलदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहिंकालवर्डिसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ) वहां पर श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ। लोगों को जब इनके आगमन की खबर लगी—तब समस्त राजगृह निवासी जन इन का वंदना करने के अभिप्राय से गुणशिलक उद्यान में आये। भगवान् ने धर्मकथा कही—यावत् परिषदने भगवान् की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में काली नाम की देवी चमरचंपा नाम की राजधानी में रहती थी। इसके भवन का नाम कालावतंसक था। जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम काल था। यह उस भवन में चार हजार सामानिकों की परिषदों के साथ, चार हजार महत्तरिकाओं के साथ, अपने २ परिवारवाली तीन हजार पारिवारिक देवियों के साथ, सात अनीकोंके—हय, गज, रथ, पदाति, वृषभ, गंधर्व एवं नाट्यरूपसैन्य के—

कालंसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महूरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिंवईहिं सोलसहिं आयरखलदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहिंकालवर्डिसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ)

त्यां श्री महावीर स्वामीजुं आगमन थयुं. ज्यारे लोकेने तेभना आगमननी जणु थयुं त्यारे राजगृहना अधा लोके तेभने वंदन करवाना अलि-प्रायथी गुणशिलक उद्यानमां आण्या. भगवाने धर्मकथा कही संलग्गावी. यावत् परिषदे भगवाननी पर्युपासना करी. ते काणे अने ते सभथे काणी नामनी देवी चमरचंपा नामनी राजधानीमां रहेती छती. तेना भवनतुं नाम कालावतंसक छतुं. जे सिंहासन ऊपर ते जेसती छती तेनुं नाम काल छतुं. ते भवनमां ते चार हजार सामानिकानी परिषदानी साथे, चार हजार महत्तरिकाओंनी साथे, पोटपोताना परिवारवाणी त्रणु हजार पारिवारिक देवीओंनी साथे सात अनीको—होडा, छाथी, रथ, पायदण, वृषल, गंधर्व अने नाट्य

आद्यपञ्चकानि सङ्ग्रामाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपभोगायेति, सप्तभिरनीकाधिप-
तिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षकदेवसाहस्रीभिः, अन्यैर्बहुभिश्च कालावतंसकभवनवासि-
भिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृता 'महयाहय जात्र विहरइ' महताऽहत
यावद् विहरति-'महयाऽऽहत्यनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुङ्गपडुप्पवाइयर-
वेणं' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतल ताल त्रुडित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण,
तत्र-'महता' रवेणोतिसम्बन्धः, आहतानि=अव्याहतानि यानि नाट्यगीतानि,
तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तलाः=हस्ततालः, तालाः=कांस्यतालः, त्रुडि-
तानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिसादृश्याद् घनमृदङ्गः=
स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषां यो
स्वस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति। 'इमं
च णं' अस्मिन्नवसरे खलु केवलरूपं=संपूर्णम् जम्बूद्वीपं नाम द्वीपं=मध्यजम्बूद्वीपं
विपुलेन 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'अभोएमाणी २' अभोगयमाना २
पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोगं ददती सती पश्यति। किं पश्यति? इत्याह-'तत्थ' तत्र=
अवधिज्ञानोपयोगे श्रमणं भगवन्तं महावीरं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजशुद्धे-

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,
तथा और भी बहुत से कालावतंसक भवन में निवास करनेवाले असुर-
कुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत्त होकर रहा करती थी।
अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादिन तन्त्री, हस्त, ताल, कांस्य ताल,
त्रुडित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह
बजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को
भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी।
(इमं च णं केवलरूपं जंबूद्वीपं दीवं विउल्लेणं ओहिणा आभोएमाणी २
पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबू द्वीवेदीवे भारहे वासे रायगिहे

इय सैन्यनी साथे अनीकाधिपतियोंनी साथे, सोलह हजार आत्मरक्षक देवोंनी
साथे तेमञ्च गीत पद्य घण्टा कालावतंसक भवनोभां निवास करनास असुर-
कुमारदेवो अने देवीओंनी साथे परिवृत्त यधने रहेती હતી. ते अयाहत
(सतत) नाट्य गीतो, वादित तन्त्री, हस्तताल, कांस्यताल, त्रुडित वगेरे तूर्य वगेरे
वाद्यो, मेघना ध्वनिनी जेम सारी पेठे वगाउवाभां आवेला मृदंगोना सुंदर
शब्दोथी उपलक्षित दिव्य भोगोने उपभोग करती पोताना समयने सुभेथी
पसार करती रहेती હતી.

(इमं च णं केवलरूपं जंबूद्वीवं दीवं विउल्लेणं ओहिणा आभोएमाणी २
पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबूद्वीवे दीवे भारहेवासे रायगिहे णयरे

जननारधमावृतवर्षिणी डी० भु० २ व० १ अ० १कालीदेवीवर्णनम्

७६७

नगरे गुणशिलके चैत्ये यथाप्रतिरूपं=यथाकल्पम् ' उग्राहं ' अवग्रहं=वसतेराज्ञाम्
' उग्मिण्डिता ' अवग्रह संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्तं पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट-
तुष्टचित्तानन्दिता ' पीडमणा ' प्रीतिमनाः=प्रसन्नमनस्काः ' जावहियया ' यावन्-
हर्षवशविसर्पदहदया=हर्षवशादुल्लसितहृदया सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

णगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरुवं उग्राहं उग्मिण्डिता संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्टतुट्टचित्तमाणंदिया
पीडमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभि-
मुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता
दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु त्तिकखुत्तो मुद्दाणं धरणियलंसि निवे-
सेइ, निवेसित्ता..... कट्ठु एवं वयासी) इस अवसर में उसने
केवल कल्प-सम्पूर्ण-जंबूद्वीप नामके द्वीपको-मध्यजंबूद्वीप को-विपुल
अवधिज्ञान के द्वारा बार २ उपयोग देकर देखा-। उस समय उसने
श्रमण भगवान् महावीर को जंबूद्वीपान्तर्गत भरत क्षेत्र में राजगृह
नगर में गुणशिलक चैत्य में यथाकल्प वसति की आज्ञा लेकर संयम
एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए स्थित देखा। देखकर वह बहुत
अधिक हृष्ट एवं तुष्ट हुई। उसका मन प्रीति से भर आया। हर्ष
के वश से हृदय उल्लसित हो उठा। वह उसी समय अपने सिंहासन

गुणसिलए चेइए अहापडिरुवं उग्राहं उग्मिण्डिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-
माणं पासइ, पासित्ता हट्ट-तुट्ट चित्तमाणंदिया पीडमणा जाव हियया सीहा-
सणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ
ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, वामं-
जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु त्तिकखुत्तो मुद्दाणं धरणिय-
लंसि निवेसेइ निवेसित्ता.....कट्ठु एवं वयासी)

ते समये तेष्णे केवलकल्प-संपूर्ण-जंबूद्वीप नामना द्वीपने मध्य जंबू-
द्वीपने विपुल अवधिज्ञानना उपयोगथी बार-बार जेथो. ते समये तेष्णे श्रमण
भगवान् महावीरने जंबूद्वीपमां आवेला भरतक्षेत्रना राजगृह नगरना गुण-
शिलक चैत्यमां यथाकल्प वसतीनी आज्ञा लधने संयम अने तप द्वारा पोताना
आत्माने भावित करता रहेता जेथो जेधने ते पूज्य हृष्ट अने तुष्ट थछ
गछ. तेनुं मन प्रेमथी तरणेण थछ गथुं हर्षातिरेकथी हृदय उल्लासित थछ
गथुं. ते ते ज वञ्चते पोताना सिंहासन उपरथी उठी अने उठीने ते पादपीठ

પાદપીઠાત્ 'પદ્મોરુહઃ' પ્રત્યવરોહતિ=અવતરતિ, પ્રત્યવરુહઃ=અવતોર્ય 'પાડયાતો' પાદુકે 'ઓમુયદ્' અવમુશ્ચતિ=ચરિત્યજતિ, મુક્ત્વા તીર્થંકરાભિપુચ્ચી સતીમપ્તા-
 ઇપદાનિ 'અણુગચ્છદ્' અણુગચ્છતિ=તમ્મુલ્લં ગચ્છતિ, અણુગમ્ય વામં જાનું
 'અંચેદ્' અશ્ચતિ=ઉર્ધ્વીકરોતિ, અશ્ચિત્વા=ઉર્ધ્વીકૃત્ય દક્ષિણં જાનું ધરણિતલે
 'નિહદ્દુ' નિહત્ય=સ્થાપયિત્વા 'તિવલુત્તો' ત્રિઃ કૃત્વઃ=ત્રિવારમ્ 'મુદ્ધાણં'
 મૂર્ધાનં=મસ્તકં ધરણિતલે નિવેશયતિ=લગયતિ, નિવેશ્ય 'ઈસિં પચ્ચુણ્ણમહ' ઈષ-
 સ્પત્યવનમતિ=સ્તોકં શિરોનામયતિ, મત્યવનમ્ય 'કઢયતુહિયથંભિયાઓ' કટકત્તુટિત્ત
 સ્તમ્ભિતે કટકે=કરભૂષણે તુત્રિતે=વાહુભૂષણે તૈઃ સ્તમ્ભિતે=અવષ્ટચ્ચે 'ભુયાઓ'
 ભુજે 'સાદરદ્' સંહરતિ=અકત્તોકરોતિ, સંહત્ય 'કરયલ જાવ કદ્દુ' કરતલપરિ-
 ગૃહીતં શિર આવર્ચં મસ્તકેઽઙ્ગલિં કૃત્વા એવમવાદીત્- 'નમોત્થુણં' इत्यादि-
 નમોઽસ્તુ ચલુ અર્હદ્મ્યઃ યાવદ્ સિદ્ધિગતિનામધેયં સ્થાનં સમ્પાપ્તેભ્યઃ, નમોઽસ્તુ

સે ડઠી-ઑર ડઠકર વહ પાદપીઠ સે હોકર નીચે આઈ-નીચે આકર
 ડસને દોનોં પાદુકાઓં કો પૈરોં મેં સે ડતાર દિયા। ડતાર કર ફિર વહ
 તીર્થંકરાધિષ્ઠિત દિશા કી ઑર સાત આઠ પદ આગે ગઈ। વહાં આકર
 ડસને અપને વામ જાનુ કો ડંચા કિયા-ડંચા કર કે ફિર દક્ષિણ જાનુ
 કો નીચે ધરણીતલ મેં રખા-રખકર ફિર તીન બાર અપને મસ્તક કો
 નીચે ભૂમિપર લગાયા-લગાકર ફિર વહ કુડ જુકી-શિર કો નીચે-
 નવાયા। વાદ મેં કટક ઑર ત્રુટિત સે ભૂષિત સુજાઓં કો ંકજિત
 કિયા-અકજિત કરકે ફિર ડસને ડન દોનોં હાથોંકી અંજલિ ઘનાઈ-ઑર
 ડસે મસ્તક પર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કર હસ પ્રકાર કહો (નમોત્થુણં
 અરહંતાણં જાવ સંપત્તાણં નમોત્થુણં સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ

ઉપર થઇને નીચે આવા. નીચે આવીને તેણે બંને પાદુકાઓને પગેામાંથી
 ઉતારી દીધી. ઉતારીને તે તીર્થંકર જે દિશા તરફ વિરાજમાન હતા તે દિશા
 તરફ સાત-આઠ ડગલાં આગળ ગઇ ત્યાં જઇને તેણે પોતાના ડાબા દીઁચકુને
 ડાબા કર્યો. ડાબા કરીને પછી તેણે જમણા દીઁચકુને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવો
 ટેકવીને તેણે ત્રણ વખત પોતાના મતકને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યું, ટેકવીને
 તે ઘોડી નમી-મસ્તકને નીચે નમાવ્યું. ત્યારપછી તેણે કટક અને ત્રુટિતથી
 વિભૂષિત ભુજઓને લેગી કરી, લેગી કરીને તેણે તેઓ બંનેની અંજલિ
 બતાવી અને તેને મસ્તક ઉપર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ-પૂર્વક ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યું.

(નમોત્થુણં અરહંતાણં જાવ સંપત્તાણં નમોત્થુણં સમણસ્સ ભગવઓ મહા-
 વીરસ્સ જાવ સંપાદિકામસ્સ વંદાપિ ણં ભગવંતં સત્થગયં હુ ગયા પામડ મં ભગવં

भगवत्समवर्णनी टी० भु २ व. १ अ. १ कालीदेवीवर्णनम्

७१९

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तुकामाय,
वन्दे खलु भगवन्तं 'तत्थ गयं' तत्रगतं=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको-
द्याने समवसृतम् 'इह गया' इह गता=चमरवञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु
मां भगवान् तत्रगत इह गतम्, 'त्ति कट्ठु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा सिद्धामनसरे 'पुरत्थाभिमुही' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभि-
मुखी 'निसण्णा' निपण्णा=उपविष्टा । ततः खलु तस्याः काल्या देव्या अयमेत-

जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इह गया पासउ मं
भगवं तत्थ गए इह गयं त्ति कट्ठु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
सीहामणवरंसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएणं तीसे कालीए देवीए
इमेयारूवे जाव समुपज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त
हुए अहंत भगवन्तों के लिये मेरा नमस्कार हो । सिद्धिगति नामक
स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान् महावीर को मैं
नमस्कार करती हूँ । जम्बूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में
इस समय विराजमान उन भगवान् को मैं इस चमर चंपा नाम की
राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ । वहाँ पर रहे हुए वे प्रभु
मुझे यहाँ पर रही हुई देखे । इस प्रकार कहकर उसने उनको वंदना की
—नमस्कार कियो—वंदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहा-
सन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके बैठ गई । इसके बाद उस
काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः संकल्प उत्पन्न हुआ—
(सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गयं त्ति कट्ठु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता सीहामणवरंसि
पुरत्थाभिमुही निसण्णा—तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुपज्जित्था)

यावत् सिद्धिगति नामक स्थानने प्राप्त थयेवा अहंत भगवन्ताने भारा
नमस्कार छे. सिद्धिगति नामक स्थानने भेजववानी कामनावाणा श्रमणु भगवान्
महावीरने हुं नमस्कार कई छुं. जम्बू द्वीपना राजगृह नगरना गुणशिलक
उद्यानमां अत्थारे विराजमान ते भगवानने हुं आ चमरवञ्चा नामनी राज-
धानी नां रहैती नमस्कार करी रहै छुं. त्यां विराजमान ते प्रभु अहीं रहैती
भने जुओ. आ प्रमाणे छडीने तेओ तेभने वंदन कर्थां अने नमस्कार कर्थां.
वंदन अने नमस्कार करीने ते पोताना उत्तम सिंहासन उपर आवीने पूर्व
दिशा तरई मुण्ण करीने जेसी गछ. त्थारपणी ते काणी देवीने आ नतने।
यावत् मनः संकल्प उत्पन्न थये। ई—

ધ્રુવઃ યાવત્ મનઃ-સદ્ગુણઃ સમુદપચત-શ્રેયઃ સ્વલુ સમ શ્રમણં ભગવન્તં મહાવીરં
વન્દિત્વા યાવત્ ' વજ્રુવાસિત્તે ' પર્યુપાસિતુમ્=સેવિતુમ્, ઇતિ કૃત્વા=ઇતિમનસિ-
નિધાય એવમ્=ઉક્તરીત્યા ' સંપેહેહ ' સમ્પ્રેક્ષતે=વિચારયતિ. સમ્પ્રેક્ષ્ય=વિચાર્ય
' આભિભોગિદેવે ' આભિયોગિકાન્ દેવાન્-ભૂત્યદેવાન્ શબ્દયતિ=આહ્વયતિ,
શબ્દયિત્વા=આહ્વ્ય એવમવદત્-એવં સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! શ્રમણો ભગવાન્ મહા-
વીરઃ એવં યથા સૂર્યામસ્તથૈવ આજ્ઞાપ્તિકાં દદાતિ યાવત્ દિવ્યં સુરવરાભિગમન-
યોગ્યં ' જાણવિમાણં ' યાતવિમાને=યાનાય ગમનાર્થવિમાને કુરુત, કૃત્વા યાવત્-
મમાજ્ઞાં ' પચ્ચપ્પિણહ ' પ્રત્યર્પયત=મહં નિવેદયત । તેઽપિદેવાઃ તથૈવ કૃત્વા યાવત્

કદ્દુ એવં સંપેહેહ સંપેહિત્તા આભિભોગિદેવે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં
વયાસી એવં સ્વલુ દેવાનુપ્પિયા ! સમણે ભગવં મહાવીરે એવં જહા સૂરિ-
યામો તહેવ આણત્તિય દેહ જાવ દિવ્વં સુરવરાભિગમણજોગ્ગં જાણ-
વિમાણં કરેહ, કરિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ) મુજ્જે અવ યહી ઉચિત-શ્રેય-
સ્કર હૈ-કિ મૈં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કો વંદના કરકે યાવત્ उनकी
પર્યુપાસના કરૂં इस प्रकार उसने पूर्वीक्तरूप से विचार किया । विचार
करके उसने उसी समय आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर
उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! श्रमण भगवान् महावीर राज-
गृह नगर के गुणशिलक उद्यान में पधारे हुए हैं-मैं उनको वंदना करने
के लिये जाना चाहती हूँ-अतः तुमलोग मेरे लिये दिव्य सुरवराभिग-
मन योग्य एकयान-विमान तैयार करो इस प्रकार की उसने उन्हें
सूर्याभ देव की तरह आज्ञा दी । और स्थान में उनसे यह भी कह दिया

(સેયં સ્વલુ મે સમણં ભગવં મહાવીરં વંદિતા જાવ વજ્રુવાસિત્તે ત્તિકદ્દુ એવં
સંપેહેહ, સંપેહિત્તા આભિભોગિદેવે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી એવં સ્વલુ
દેવાનુપ્પિયા ! સમણે ભગવં મહાવીરે એવં જહા સૂરિયામો તહેવ આણત્તિય દેહ
જાવ દિવ્વં સુરવરાભિગમણજોગ્ગં જાણવિમાણં કરેહ, કરિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ)

મારા માટે હવે એ જ વાત યોગ્ય છે કે હું શ્રમણ ભગવાન મહા-
વીરને વંદના કરીને યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરું, આ પ્રમાણે તેણે વિચાર
કર્યો. વિચાર કરીને તેણે તરત જ આભિયોગિક દેવાને બોલાવ્યા અને બોલા-
વીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર
રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં પધારેલા છે. તેમને વંદન કરવા માટે
હું ત્યાં જવા ધ્વિષ્ટું છું. એથી તમે બધા મારા માટે દિવ્ય સુરવરાભિગમન
યોગ્ય એક યાન-વિમાન તૈયાર કરો. આ પ્રમાણે તે લોકોને તેણે સૂર્યાભદેવની
જેમ આજ્ઞા કરી, અને સાથે સાથે તેઓને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે બધારે

મહાગારુડમૃતવર્ણિણી ટી૦ શ્રુ૦ ૨ વ૦ ૧ અ૦૧ કાલીદેવીવર્ણનમ

૭૭૧

મત્યર્પયન્તિ=તદાજ્ઞાનુસારેણ કાર્યં કૃત્વા નિવેદયન્તિ । ‘ નવરં ’ નવરં=વિશેષ-
સ્ત્વયમ્-યત્-સૂર્યામસ્ય યાનવિમાનં યોજનશતસહસ્રવિસ્તીર્ણમસ્તિ, અસ્યાસ્તુ-
યોજનસહસ્રવિસ્તીર્ણં યાનવિમાનમસ્તિ, શેષં તથૈવ વિજ્ઞેયમ્ । તથૈવ=સૂર્યામદેવદેવ
કાલી દેવી સ્વસ્ય નામગોત્રં સાધયતિ=કથયતિ । તથૈવ=સૂર્યામદેવદેવ ચ નાટ્ય-
વિધિમ્ ઉપદર્શયતિ, ઉપદર્શ્ય યાત્રત્ પ્રતિગતા=યત આગતા તત્રૈવ પ્રતિનિવૃત્તા॥મૂ૦૨॥

મૂલમ્-મંતેત્તિ ભગવં ગોયમે સમણં ભગવં મહાવીરં વંદઈ
ળમંસઈ વંદિત્તા ળમંસિત્તા એવં વયાસી-કાલિણ ળં મંતે !
દેવીણ સા દિઘ્વા દેવિઙ્ઘીઃ કહિં ગયા૦ કૂડાગારસાલાદિટુંતો,

કિ જય વહ વિમાન બનકર તૈયાર હો જાવે-તવ उसकी पीछे हमें खबर
कर देना । सो उन आभियोगिक देवों ने वैसा ही किया-और पीछे
इसकी खबर उसे कर दी । इसमें (जोयणमहस्मवित्थिणं जाणविमाणं
सेसं तहेव) विशेषता इतनी रही कि सूर्यामदेव का यान विमान एक
लाख योजन का विस्तारवाला था । तब कि इसका यह यान विमान १
हजार योजन का विस्तारवाला था । बाकी सब रचना इसकी उसी
सूर्याम विमान की तरह जाननना चाहिये । (तहेव णामगोयं साहेइ,
तहेव नाटयविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया) सूर्याम देव की तरह काली
देवी ने अपने नाम गोत्र का कथन किया और सूर्याम देव की तरह ही
नाटयविधि को दिखलाया दिखालाकर फिर वह जहां से आई थी वहीं
पर पीछे गई सूत्र २ ॥

વિમાન તૈયાર થઈ બધ ત્યારે તેની મને બાણ કરવામાં આવે. ત્યારપછી તે
આભિયોગિક દેવોએ તેમજ કથું. અને વિમાન તૈયાર થઈ જવાની બગર
દેવીની પાસે એકલાવી દીધી આ વિમાનમાં (જોયણસહસ્તવિત્થિણં જાણ-
વિમાણં સેસં તહેવ) વિશેષતા આટલી જ હતી કે જ્યારે સૂર્યામદેવનું યાન-
વિમાન એક લાખ યોજન જેટલું વિસ્તારવાળું હતું ત્યારે તેનું આ યાન-વિમાન
એક હજાર યોજન જેટલું વિસ્તારવાળું હતું બાકી રચના સંમંધી તેની બધી
વિગત સૂર્યામ-વિમાનની જેમ જ બાણવી બેઠાએ (તહેવ ણામગોયં સાહેइ,
તહેવ નાટયવિहिં ઉવદંસેइ જાવ પડિगया) સૂર્યામદેવની જેમ કાળી દેવીએ
પોતાના નામ-ગોત્રનું કથન કયું અને સૂર્યામદેવની જેમ જ નાટયવિધિ બતાવી
અને બતાવીને તે જ્યાંથી આવી હતી ત્યાં જ પાછી જતી રહી. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

अहो णं भंते ! काली देवी महिद्धिया३ कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविद्धी३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभि-
समण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा !
तेणं कालेणं तेणं समणं इहेव जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे आम-
लकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंवसालवणे चेइए जिय-
सत्तू राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहा-
वइ होत्था अड्डे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स
कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स
णं कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली
णामं दारिया होत्था, बुद्धा बुद्धकुमारी जुण्णजुण्णकुमारी पडि-
यपुयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिवज्जियायावि होत्था, तेणं कालेणं
तेणं समणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमा-
णसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणताहस्सीहिं अट्टत्ती-
साए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंवसालवणे
समोसुढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली
दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव
अम्मपियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं
वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए
आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं
अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पाय-
वंदिया गमित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करोहि;

अनंगारधमोमृतवर्षिणी टी० श्रु० २ व० १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम् ७७३

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया
समाणी हट्ट जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय
मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया
अप्पमहाग्घाभरणांलंकियसरीराचेडियाचक्रवालपरिकिण्णा साओ
गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उव-
ट्ठाणसाला जेणेव धम्मिण जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं दूरुह्वा, तएणं सा काली दारिया
धम्मियं जाणपवरं एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइ-
महालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएणं सा काली दारिया
पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिस-
म्म हट्ट जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिकखुत्तो
वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते !
णिग्गंधं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भं वयह, जं णवरं देवाणु-
प्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं
अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए !, तएणं सा
काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी
हट्ट जाव हियया पासं अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता
तमेव धम्मियं जाणपवरं दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरि-
सादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनि-
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

उवागच्छइ उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव
 वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ध-
 म्मियं जाणपवरं ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ
 पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ !
 मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मं णिसंते सेऽवि य मे धम्मे
 इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अहं अम्मयाओ ! संसार
 भउविग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भ-
 ण्णाया समानी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगा-
 राओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडि-
 बंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्ख-
 डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरियणं
 आमंतेइ आमंत्तित्ता तओ पच्छा णहाए जाव विपुलेणं पुप्फव-
 त्थंगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि-
 यगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं
 कलसेहिं णहावेइ णहावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ करित्ता
 पुरिससहस्सवाहिणियं सीयं दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग-
 सयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव र्वेणं
 आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता
 जेणेव अंवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीयं ठावेइ ठावित्ता

अनगारघमावृतवर्षिणी टीका श्रु० २ व० १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम् ७७५

कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं तं कालियं दारियं अम्मा-
 पियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-
 एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता
 जाव किमंग पुण पासण्याए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! संसार-
 भउव्विगा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव
 पठ्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं, दल-
 यामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं
 देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेह तएणं काली कुमारी पासं
 अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं
 अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ
 ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
 सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पासं अरहं तिव्वुत्तो
 वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-आलित्ते णं
 भंते ! लोए एवं जाव सयमेव पठ्वाविया, तएणं पासे
 अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
 सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं
 दारियं सयमेव पठ्वावेइ, जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं
 सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवंभयारिणी,
 तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइय-
 माइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

ટીકા—કાલીદેવીગમનાનન્તરં ગૌતમઃ પૃચ્છતિ—‘ મંતેતિ ’ इत्यादि । ‘ મંતેતિ ’ हे भदन्त ! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—काल्या खलु हे भदन्त ! देव्या सा=या साम्प्रतं दर्शिता सा दिव्या ‘ देविडू ’ देवद्विः=विमानपरिवारादिरूपा, ‘ देवज्जुई ’ देवद्युतिः=शरीराभरणादीनां दीप्तिरूपा ‘ देवणुभावे ’ देवानुभावः=शक्तिप्रभावादिरूपः, कुत्रगता ? कुत्र प्रविष्टा ? भगवानाह—शरीरंगता, शरीरमनु-

‘ મંતે ત્તિ ભગવં ગોયમે ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થઃ—કાલીદેવી કે ચલે જાને કે બાદ (ભગવં ગોયમે) ભગવાન ગૌતમ ને (મંતે ત્તિ) हे भदन्त ! इस प्रकार संबोधित कर (समणं भगवं महावीरं वंदह णमंसइ) श्रमण भगवान् को वंदना की-नमस्कार किया (वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी) वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने ने उनसे इस प्रकार पूछा—(कालिएणं मंते ! देवीए सा दिव्वा देविडू ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठतो, अहोणं मंते ! कालीदेवी महड्डिया ३, कालिएणं मंते ! देवीए सा दिव्वा देविडू ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एवं जहा सूरियाभस्स जाव) हे भदन्त ! कालीदेवी ने जो इस समय दिव्य विमान-परिवार आदिरूप ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवद्युति एवं शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया—वह सब कहाँ चला

‘ મંતેત્તિ ભગવં ગોયમે ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—કાળી દેવીના જતા રહ્યા બાદ (ભગવં ગોયમે) ભગવાન ગૌતમે (મંતેત્તિ) हे भदन्त ! આ પ્રમાણે સંબોધન કરીને (સમણં ભગવં મહાવીરં વંદહ ણમંસઈ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા. (વંદિત્તા ણમંસિત્તા એવં વયાસી) વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પૂછ્યું કે

(કાલિણં મંતે ! દેવીએ સા દિવ્વા દેવિડૂ ૩ કહિં ગયા૦ કૂડાગાર-સાલાદિટ્ઠતો, અહોણં મંતે ! કાલી દેવી મહદ્ધિયા ૩, કાલિણં મંતે ! દેવીએ સા દિવ્વા દેવિડૂ ૩ કિણ્ણા લદ્ધા, કિણ્ણા પત્તા, કિણ્ણા અભિસમણ્ણા ગયા ? એવં જહા સૂરિયાભસ્સ જાવ)

હે ભદન્ત ! કાળી દેવીએ આત્મારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવદ્યુતિ. તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો ક્યાં અદૃશ્ય થઈ ગયો ? ક્યાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો ?

अननारधमसिद्धिणी टी० शु० २ व० १ क० १ कालिदेवीदर्शनम्

७७७

प्रविष्टा, 'कूटाकारशालादिद्वन्तो' अब कूटाकारशाला दृष्टान्तो बोद्धव्यः। 'अहो' आश्चर्ये खलु हे भदन्त ! कालीदेवी महर्द्धिका महाद्युतिका महानुभावा वर्तते काल्या खलु हे भदन्त ! देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३ 'किष्णा' कथं= केन प्रकारेण 'लद्धा' लब्धा=अर्जिता, 'किष्णा' कथं=केन प्रकारेण 'पप्ता' प्राप्ता=स्वाधीनीकृता 'किष्णा' कथं=केन प्रकारेण 'अभिसमन्नागया' अभिसमन्वागता=उपभोगविषयतया समागता ? एवं 'जहासूरियाभस्स जाव' यथा-सूर्याभस्य यावत्=यथा सूर्याभदेवविषये गौतमस्वामिना प्रश्नः कृतस्तथैवात्रापि विज्ञेयः। अथ भगवान् कालीदेवीपूर्वभववृत्तान्तं वर्णयति—'एवं खलु' इत्यादि। एवं खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहेव=अस्मिन्नेव जम्बुद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे आमलकल्या नाम नगरी आसीत्। 'वण्णओ' वर्णकः=नगरी-वर्णनग्रन्थऔपपातिसूत्रादवसेयः। तत्र आम्रशालवर्णं चैत्यं, जितशत्रू राजा

गया-? कहाँ प्रविष्ट हो गया? इस प्रकार गौतम का प्रश्न सुनकर भगवान् ने उनसे कहा-शरीर में चला गया-शरीर में प्रविष्ट हो गया। इस विषय में कूटाकारशाला का दृष्टान्त जानना चाहिये। हे भदन्त! काली-देवी महर्द्धिक, महाद्युतिक एवं महानुभाववाली है। इस कालीदेवी ने वह देवर्द्धि ३ किस प्रकार प्राप्त की अर्जित की किस प्रकार उसे अपने आधीन किया? और किस प्रकार से उसने उसे अपने भोग की विषयभूत बनाई? इस तरह गौतमस्वामी ने सूर्याभदेव के विषय में जिस तरह से प्रश्न किया उसी तरह से यहाँ पर भी जानना चाहिये-। अब भगवान् कालीदेवी के पूर्वभव के वृत्तान्त का वर्णन करते हैं—(एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं-इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अंबसालवणे चेइए जियसत्तू

आ प्रभाषे गौतमने। प्रश्न सांभलीने भगवाने तेभने कळुं के शरीरमां प्रविष्ट थळ गये-शरीरमां गते। रद्धो. आ विषे कूटाकार शाणानुं दृष्टान्त भाषुवुं जेधजे. हे भदन्त ! काली देवी महर्द्धिक, महाद्युतिक अने महानुभाववाणी छे. आ काली देवीजे ते देवर्द्धि ३ देवी रीते प्राप्त करी छे, अर्जित करी छे, देवी रीते स्वाधीन अनावी छे, अने तेखे तेने देवी रीते पोताना उपलोगनी विषयभूता अनावी छे ? आ प्रभाषे गौतम स्वामीजे सूर्याभदेवना विषे जेम प्रश्न कर्यो छेतो तेमज्ज अर्द्धो पणु भाषवे जेधजे. भगवान् हवे काली देवीना पूर्वभवना वृत्तान्तनुं वर्णन करे छे—

(एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे अमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया

चासीत् । तत्र खलु आमलकल्पायां कालो नाम गाथापतिरासीत् कीदृशः ? इत्याह-
 'अड्डे' आदयः=धनधान्यादि समृद्धि-समृद्धः, 'जाव' यावत् 'अपरिभूए'
 अपरिभूतः=बहुजनैरपि परामर्शितुमशक्यः । तस्य खलु कालस्य गाथापतेः काल-
 श्रीर्नाम भार्याऽऽसीत्, कीदृशीत्याह-सुकुमारपाणिपादा यावत् सुरूपा । तस्य
 खलु कालस्य गाथापतेर्दुहिता कालश्रियः भार्याया आत्मजा काली नाम
 दारिका=पुत्री आसीत् । सा कीदृशी ? त्याह-'बुड्ढा' बृद्धा=बहुवयस्कत्वात्,
 बृद्धकुमारी=अपरिणीतत्वात्, 'जुण्णा' जीर्णा=जीर्णशरीरत्वात्, 'जुण्णकुमारी'
 जीर्णकुमारी=अपरिणीतावस्थायामेव संजातजीर्णशरीरत्वात्, 'पडियपूयत्थणी'

राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था, अड्डे
 जाव अपरिभूए) वे कहते हैं-गौतम सुनो-तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर इस
 प्रकार है-उस काल और उस समय में इसी जंबूद्वीप नामके द्वीप में
 भारतवर्षमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी । नगरीका वर्णन करनेवाला
 पाठ यहां पर औपपातिक सूत्र से योजित करलेना चाहिये । उस नगरी
 में उद्यान था जिसका नाम आम्रशालावन था । इस नगरी के राजा का
 नाम जितशत्रु था । इस आमलकल्पा नगरी में काल नाम का गाथापति
 रहता था । यह धन धान्यादिसे विशेष समृद्ध था और लोगोंमें भी इस
 की अच्छी प्रतिष्ठा थी । (तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं
 भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स
 धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था बुड्ढा
 बुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडियपूयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिव-

तत्थणं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था अड्डे जाव अपरिभूए)

तेओ कडे छे के डे गौतम ! सांलणे, तमारा प्रश्नोना उत्तर आ
 प्रभाणे छे-के ते काले अने ते समये आ जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भारत
 वर्षमां आमलकल्पा नामनी नगरी હતી. નગરીના વર્ણન વિષેના પાઠ અહીં
 ઔપપાતિક સૂત્ર વડે જાણી દેવો જોઇએ તે નગરીમાં એક ઉદ્યાન હતું.
 તેનું નામ આમ્રશાલ વન હતું. તે નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું.
 તે આમલકલ્પા નગરીમાં કાલા નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તે ધનધાન્ય
 વગેરેથી સર્વિશેષ સમૃદ્ધ હતો અને સમાજમાં તેની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી.

(તસ્સ ણં કાલસ્સ ગાહાવઇસ્સ કાલસિરીણામં ભારિયા હોત્થા, સુકુમાલ
 જાવ સુરુ વા, તસ્સ ણં કાલસ્સ ગાહાવઇસ્સ ધૂયા કાલસિરીએ ભારિયાએ અત્તયા
 કાલી ણામં દારિયા હોત્થા બુદ્ધા બુદ્ધકુમારી, જુણ્ણા જુણ્ણકુમારી, પડિયપૂયત્થણી

अंतर्गारधर्माग्रतवर्षिणी टीका श्रु० २ व० १ म० १ कालीदेवीवर्णनम् ७७९

पतितपूतस्तनी-अवनतनितम्बस्तनी, ' णिविन्नवरा ' निर्विण्णवरा=वरवरणे विरक्ता, अतएव ' वरपरिवर्जिता ' वरपरिवर्जिता=पतिरहिता चाप्यासीत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्धेन पुरुषादानीयः=पुरुषश्रेष्ठः आदिकरः यथा वद्धमानस्वामी तथैव पार्श्वप्रभुरपि ' णवरं ' नवरम्-अयं विशेषः-श्रीवद्ध-मानस्वामी सप्तदस्तोच्छ्रेयः, पार्श्वप्रभुः ' णवहत्युस्सेहे ' नवहत्युस्सेधः=नवहत्यु-परिमितशरीरावगाहनः, स षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टत्रिंशता आर्यिका-

ज्जिया यावि होत्था) इस काल गाथापति की कालश्री नाम भार्या थी। इसके हाथ पैर आदि समस्त अंग उपांग विशेष सुकुमार थे। देखने में यह बड़ी सुन्दर थी काल गाथापति के इस काल श्री की कुक्षि से उत्पन्न हुई एक काली नाम की दारिका भी थी। जो बहुत बयस्का हो चुकी थी-इसका विवाह भी नहीं हुआ था। इसलिये कुमारी अवस्था में ही यह वृद्धा जैसी बहु उमरवाली हो गई थी। शरीर भी बहु अवस्था संपन्न होने के कारण इसका जीर्ण हो चुका था। अतः अपरिणीतावस्था में ही यह जीर्ण कुमारी बन गई थी। इसके नितम्ब और स्तन दोनों ही बिल्कुल ढीले हो गये थे नीचे झुक आये थे। वरके वरण करने रूप कार्य से यह विरक्त बन चुकी थी अतः यह वर-परिवर्जित थी-पति से सर्वथा रहित थी। (तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवह-त्युस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जिया साहस्सीहिं

णिविन्नवरा, वरपरिवर्जिता यावि होत्था)

ते काल गाथापतिनी कालश्री नामे भार्या હતી. તેના હાથ-પગ વગેરે અને બધા અંગો તેમજ ઉપાંગો સર્વિશેષ સુકોમળ હતાં. દેખાવમાં તે બહુ જ સુંદર હતી. કાલ ગાથાપતિની આ કાલશ્રીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી એક કાલી નામે દારિકા (પુત્રી) પણ હતી. તે મોટી ઉંમરની થઈ ચૂકી હતી. તેનું લગ્ન પણ થયું નહોતું. એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે ડાશી જેવી બહુ ઉંમરે પહોંચેલી થઈ ગઈ હતી. બહુ ઉંમરે પહોંચેલી હોવા બદલ તેનું શરીર પણ છૂર્ણ થઈ ચૂક્યું હતું. એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે છૂર્ણ કુમારિકા બની ગઈ હતી તેના નિતંબ અને સ્તનો બંને સાવ ઢીલા થઈ ગયા હતા, નીચે લટકવા લાગ્યા હતા. વરને વરણ કરવા રૂપ કાર્યથી તે વિરક્ત બની ગઈ હતી એથી તે વર પરિવર્જિત હતી. તે એકદમ પતિ વગરની હતી.

(તેણં કાલેણં તેણં સમણં પાસે અરહા પુરિસાદાણીએ આઈગરે જહા વદ્ધ-માણસામી ણવરં ણવહત્યુસ્સેહે સોલસહિં સમણસાહસ્સીહિં અટ્ઠત્તીસાએ અજ્જિયા

साहस्रीभिः सार्द्धं संपरिवृतः यावत् आम्रशालवने समवसृतः । परिषन्निर्गता यावत् पर्युपास्ते । ततः खलु सा काली दारिका अस्याः भगवत्पार्श्वप्रभुसमागमन-
रूपायाः कथायाः=वार्त्तायाः ' लद्धट्टा ' लब्धार्था भगवानत्रसमवसृतः, इत्येवं-
रूपार्थमाप्ता ' हृद्द जाव हियया ' हृद्द यावद्दहदया-हृद्दतुष्टचित्तानन्दिता प्रीतमनस्का
हर्षवशविसर्पदहदया सती यत्रैव अम्मापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' करयल
जाव ' करतलपरिवृहीतं शिर आवर्त्त दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-
एवं खलु हे अम्ब तातौ ! पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः आदिकरो यावत्-आम्रशाल-
वने चैत्ये यथा-प्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति=
आस्ते, तद्गच्छामि खलु हे अम्बतातौ ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्या-

सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबलसालवणे समोसडे) उस काल में और उस
समय में पुरुषादानीय पुरुषश्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु जो श्री
वर्द्धमान स्वामी जैसे थे-सोलह हजार श्रमणों के तथा ३८, हजार
आर्थिकाओं के साथ तीर्थंकर परंपरानुसार विहार करते हुए उस
आम्रशालवन में आये। भगवान् महावीर और पार्श्वनाथ प्रभु की शरी-
रावगाहना में विशेषता केवल इतनी ही थी कि उनका शरीर सात हाथ
ऊँचा था और पार्श्व प्रभु का शरीर ९ हाथ ऊँचा था। (परिसा णिग्गया,
जाव पज्जुवासइ, तएणं सा दारिया इमीसे कहाए लद्धट्टा समाणी हृद्द
जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ पासे अरहा पुरिसा-
दाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुम्हेहिं

साहस्रीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबलसालवणे समोसडे)

ते काले अने ते समये पुरुषादानीय-पुरुष श्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ-
अर्हंत प्रभु-ज्यो श्री वर्द्धमान स्वामी जेवा डता-सोण डलर श्रमणो।
तेमज्ज ३८ डलर आर्थिकाओनी साथे तीर्थंकर परंपरा मुज्जम विहार करतां
ते आम्रशाल वनमां आया। भगवान् महावीर अने पार्श्वनाथ प्रभुनी शरी-
रावगाहनामां विशेषता इत्ता आटली ज छे के तेमनुं शरीर सात हाथ जेटुं
जियुं डतुं अने पार्श्व प्रभुनुं शरीर नव हाथ जियुं डतुं।

(परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे
कहाए लद्धट्टा समाणी हृद्द जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा
पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुम्हेहिं अब्भ-

भेनैगारघमांमृतवशिणी टी० अ० २ व० १ अ० १ कालीदेवोवर्णनम् ७२१

ईतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दिका=पादवन्दनाशया गन्तुम् । अम्बापितरौ कथयतः—हे देवानुप्रिये ! पुत्रि यथा सुखं तथा कुरु किन्तु अस्मिन् शुभकार्ये प्रतिबन्ध=प्रमादं मा कुरु । ततः खलु सा कालिका दारिका अम्बापितृभ्यामभ्यनुज्ञाता सती हृष्टयावद्दहया स्नाता कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलपायश्चित्ता शुद्ध-

अम्बणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ?) लोगों को ज्योंही पार्श्व प्रभु के आम्रशालवन में आने की स्खर लगी—त्योही सब जनता प्रभु को वंदना के लिये अपने २ स्थान से निकलकर उस आम्रशालवन में आने लगी । वहाँ आकर प्रभु का धार्मिक उपदेश सुन वह प्रभु की पर्युपासना करने लगी । इसके अनन्तर जब यह समाचार काली दारिका को मिला तो वह बहुत अधिक हर्षित एवं संतुष्ट चित्त हुई । बाद में वह जहाँ अपने माता पिता थे वहाँ पहुँची वहाँ जाकर उसने माता पिता को दोनों हाथ जोड़कर चरण वंदना की—और इस प्रकार कहा—हे माततात ! पुरुषश्रेष्ठ, आदिकर, ऐसे पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु आम्रशालवन में पधारे हुए हैं—इसलिये मैं आपसे आज्ञापित होकर उन पुरुषश्रेष्ठ अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ को वंदना करने के लिये जाना चाहती हूँ । (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि, तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अम्बणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठं जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता

णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ?)

पार्श्व प्रभुना आम्रशालवनमां पधारवानीं भणु यतां न पधा वेडे । प्रभुने वंदन करवा भाटे पोतपोताना स्थानेथी नीकणीने ते आम्रशाल वनमां आववा लाग्या, त्यां आवीने प्रभुने धार्मिक उपदेश सांजणीने तेआ प्रभुनी पर्युपासना करवा लाग्या, त्यारणाड काली दारिकाने आ समाचारो भण्या त्यारे ते भूण न हर्षित तेभन संतुष्ट चित्तवाणी थर्र गछ, त्यारपछी ते न्यां तेना माता-पिता हता त्यां पडोन्थी, त्यां नर्धने तेणु माता-पिताने अने हाथ जोडीने थररु वंदना करी अने त्यारपछी आ प्रभाणु चिन्ती करी के-डे माता पिता । पुरुष श्रेष्ठ, आदिकर जेवा पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु आम्रशाल वनमां पधार्या छे, ओटला भाटे तुं तमारी आज्ञा भेजवीने ते पुरुष श्रेष्ठ अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने वंदन करवा भाटे नवा धररुं छुं ।

(अहा सुहं, देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि, तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अम्बणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठं जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कय

પ્રવેશ્યાનિ માત્રલ્યાનિ વસ્ત્રાણિ પવરપરિહિતા અલ્પમહાર્ગાભરણાલકૃતશરીરા ચેટિકા-
ચક્રવાલપરિકીર્ણાં સ્વકાદ્ યુદ્ધાદ્ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યત્રૈવ વાહ્યા-
ઉપસ્થાનશાલા યત્રૈવ ધાર્મિકો યાનપવરસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ધાર્મિકં યાન-
પવરં દુરુદ્ધા=આરુદ્ધા । તતઃ સ્વલુ સા કાલી દારિકા ધાર્મિકં યાનપવરમ્, एवं
સુદ્ધપ્પવેસાઈ મંગલાઈ વત્થાઈ પવરપરિહિયા અપ્પમહગ્ધાભરણાલંકિય
સરીરા ચેડિયા ચક્રવાલપરિકિર્ણા સાઓ ગિહાઓ પડિનિક્કલમઈ,
પડિનિક્કલમિત્તા જેણેવ બાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા જેણેવ ધમ્મિએ જાણ-
પ્પવરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા ધમ્મિયં જાણપ્પવરં દુરુદ્ધા,
તएणं સા કાલી દારિયા ધમ્મિયં જાણ પવરં જહા દોવઈ જાવ પઞ્જુવાસઈ)
તથ માતા પિતા ને ઉસસે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયે ! તુક્ષે જિસ પ્રકાર
સુખ મિલે ઉસ પ્રકાર તું કર-હસ શુભકાર્ય મેં પ્રતિબંધ-પ્રમાદ મત
કર । હસ પ્રકાર માતા પિતાસે અભ્યનુજ્ઞાત હુઈ ઉસ દારિકા ને હૃષ્ટ તુષ્ટ
ચિત્ત હોકર સ્નાન ક્રિયા વાપસાદિ કે લિયે અન્નકા ભાગરૂપ-બલિકર્મ
ક્રિયા કૌતુક, મંગલ એવં પ્રાયશ્ચિત્ત કરકે શુદ્ધ પ્રવેશ યોગ્ય, મંગલકારી
વસ્ત્રોં કો અચ્છી તરહ પહિરા, ઓર અલ્પભાર બહુમૂલ્ય આભરણોં સે
અલંકૃત શરીર હોકર વહ ચેટિકા ચક્રવાલ સે યુક્ત હો અપને ઘર સે
નિકલી । નિકલકર વહ વહાં ગઈ-જહાં વાહ્ય ઉપસ્થાન શાલા થી-ઉસમેં
જાકર વહ જહાં ધાર્મિક યાનપવર રક્ષા થા-વહાં પહુંચી-વહાં જાકર

કોઉયમંગલપાયચ્છિત્તા સુદ્ધપ્પવેસાઈ મંગલાઈ વત્થાઈ પવરપરિહિયા અપ્પમહગ્ધા-
ભરણાલંકિયસરીરા ચેડિયાચક્રવાલપરિકિર્ણા સાઓ ગિહાઓ પડિનિક્કલમઈ,
પડિનિક્કલમિત્તા જેણેવ બાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા જેણેવ ધમ્મિએ જાણપ્પવરે
તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા, ધમ્મિયં જાણપ્પવરં દુરુદ્ધા તएणं સા કાલી
દારિયા ધમ્મિયં જાણપ્પવરં एवं જહા દોવઈ જાવ પઞ્જુવાસઈ)

ત્યારે માતાપિતાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમ
સુખ મળે તેમ તું કર. આ શુભ કાર્યમાં પ્રતિબંધ-પ્રમાદ કર નહિ આ
પ્રમાણે માતાપિતા વડે આજ્ઞાપિત થયેલી તે દારિકાએ હૃષ્ટ-તુષ્ટ ચિત્ત થઈને
સ્નાન કર્યું. કાગડા વગેરેને અન્નભાગ આપીને બલિકર્મ કર્યું. કૌતુક, મંગલ
અને પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને શુદ્ધ પ્રવેશ યોગ્ય, મંગલકારી વસ્ત્રોંને સારી રીતે પહેર્યા
અને વજનમાં હલકા પણ કિંમતમાં બહુ ભારે એવા આભરણોથી શરીરને
અલંકૃત કરીને દાસીઓના સમૂહથી પરિવેષિત થઈને પોતાના ઘેરથી નીકળી.
નીકળીને તે ત્યાં પહોંચી ત્યાં વાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી. તેમાં જઈને તે
ત્યાં ધાર્મિક યાનપવર ઊભું હતું તેમાં આરૂઢ થઈ ગઈ. આરૂઢ થઈને તે

अन्नगारधर्मानृतवर्णिनी टी० भु० २ व० १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम्

७८३

‘जहा दोवई जाव’ यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीवत् छत्रादीन् तीर्थकरातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरोदवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वकं भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्तं ‘पञ्जुवासइ’ पर्युपास्ते । ततः खलु पार्श्वोर्द्ध्वं पुरुषादानीयः काल्यै दारिकायै तस्यां च महातिमहालयायां पर्षदि धर्मं कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चम्य हृष्टं यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्तं पुरुषादानीयं त्रिकृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योंही उसने द्रौपदी की तरह तीर्थकरातिशयरूप छत्रादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वंदना की, उन्हें नमस्कार किया-वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ट जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिवखुत्तो वंदइ नमंसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय में अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्यांथी स्वाना थई. द्रौपदीनी जेम तेजे ज्यारे तीर्थकरातिशय रूप छत्र वगेरे विभूतिने जेठ के जेतांनी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरमांथी नीचे उतरी पडी. अने पंच अभिगमनपूर्वक भगवाननी पास जेठने तेमने वंदना करी, तेमने नमस्कार कर्या. वंदना अने नमस्कार करीने तेजे तेमनी पर्युपासना करी. त्यारपछी

(तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परिषदानी सामे धर्मकथा सांलणावी.

(तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ट जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिवखुत्तो वंदइ नमंसइ)

पुरुषादानीय ते अर्हत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासैथी धर्मने सांलणीने अने तेने हृदयमां अवधारित करीने ते काली दारिका बहुत ज वधादे हर्षित

નમસ્યિત્વા એવમવાદીત્-શ્રદ્ધામિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! નૈર્ગ્રન્થ્યં પ્રવચનં યાવત્ તદ્ તથૈતદ્ યૂયં વદથ નવરં=વિશેષોડયમ્-યત્-અહમ્ અમ્માપિતરૌ આપુચ્છામિ, તતઃ= માતાપિતરૌ પૃષ્ઠા સ્વલુ અહં દેવાનુપ્રિયાણામન્તિકે યાવત્ પ્રવ્રજામિ । મગવાનાહ-યથાસુખં હે દેવાનુપ્રિયે । । તતઃ સ્વલુ સા કાલી દારિકા પાર્શ્વેન અર્હતા પુરુષા-

હૃદય હુઈ । ઉસને ઉન પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુ કો ત્રીન વાર વંદના નમસ્કાર ક્રિયા । બાદ મેં (વંદિત્તા નમંસિત્તા એવં વયાસી સહ-હામિ ણં મંતે ! ણિગ્ગંથં પાવચણં જાવ સે જહેયં તુભ્મે વયહ, જં ણવરં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુચ્છામિ, તણં અહં દેવાણુપ્પિયાણં અંતિણ જાવ પવ્વયામિ, અહાસુહં દેવાણુપ્પિણ ! તણં સા કાલી દારિયા પાસેણં અરહયા પુરિસાદાણીણં એવં વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા પાસં અરહં વંદહ, નમંસહ, વંદિત્તા નમંસિત્તા તમેવ ધમ્મિયં જાણપવરં દુરુ-હહ, દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અંતિયાઓ અંબસા-લવણાઓ ચેડયાઓ પહિનિક્કલ્લમહ, પહિનિક્કલ્લમિત્તા જેણેવ આમલકપ્પા નયરી, તેણેવ ઉવાગચ્છહ) વંદના નમસ્કાર કરકે ઉસને ઉન પ્રભુ સે એસા કહા-હે ભદંત ! મેં આપકે દ્વારા પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન કો વિશેષ શ્રદ્ધા કો દૃષ્ટિ સે દેખતી હૂં આપને જૈસા યહ પ્રતિપાદિત ક્રિયા હૈ વહ વસ્તુતઃ વૈસા હી હૈ । યહ મુઝે યદ્દુત રુચા હૈ । અતઃ મેં માતા પિતા સે પૂછતી હૂં । ઉનસે પૂછકર ફિર આપ દેવાનુપ્રિય કે પાસ આકર

(હૃદય થઈ. તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુને ત્રણ વાર વંદના અને નમસ્કાર કર્યાં. ત્યારમાઠ

(વંદિત્તા નમંસિત્તા એવં વયાસી સહહામિણં મંતે ! ણિગ્ગંથં પાવચણં જાવ સે જહેયં તુભ્મે વયહ, જં ણવરં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુચ્છામિ, તણં અહં દેવાણુપ્પિયાણં અંતિણ જાવ પવ્વયામિ, અહા સુહં દેવાણુપ્પિણ ! તણં સા કાલી દારિયા પાસે ણં અરહયા પુરિસાદાણીણં એવં વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા પાસં અરહં વંદહ, નમંસહ, વંદિત્તા નમંસિત્તા તમેવ ધમ્મિયં જાણપવરં દુરુહહ દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અંતિયાઓ અંબસાલવણાઓ ચેડયાઓ પહિનિક્કલ્લમહ, પહિનિક્કલ્લમિત્તા જેણેવ આમલકપ્પા નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

વંદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત ! તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં છું. તમે જેવું આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેવું જ છે. મને આ ખૂબ જ ગમી ગયું છે. એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉં છું. તેમને પૂછીને

अमगारधर्मासुतवर्णिनी टी० भु० २ ख० १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम्

७८५

दानीयेन एवमुक्ता सती हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्तं वन्दते नमस्यति। वन्दित्वा नमस्थित्वा तदेव धार्मिकं यानप्रवरं दूरोहति, दूरस्थ पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीय-स्यान्तिकाद् आम्रशालानात् चैत्यात् प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्कम्य यत्रैव आमल-कल्पा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आमलकल्पाया नगर्या मध्य-मध्येन यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यानप्रवरं स्थाप-यति, स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्बा-पितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करतल०' करतलपरिगृहीतं मस्तकेऽञ्जलि-

दीक्षित होना चाहती हूँ। काली दारिका के इस अभिप्राय को सुनकर प्रभुने उससे कहा देवानुप्रिये! यथासुखम्। इस प्रकार वह काली दारिका पुरुषादानीय उन अर्हन्त प्रभु पार्श्वनाथ से अनुमोदित होकर चित्त में बहुत अधिक प्रसन्न हुई। उसने अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभु को वंदना नमस्कार किया-और वंदना नमस्कार करके वहाँ से आकर वह उसी अपने धार्मिक यान पर चढ़ गई चढ़कर वह फिर पुरुषादानीय, अर्हन्त प्रभु पार्श्वनाथ के पास से और उस आम्रशालवन नामके उद्यान से बाहिर चली आई। बाहिर आकर वह जहाँ आमलकल्पा नगरी थी -वहाँ पर आ गई। (उवागच्छित्ता आमलकल्पं गयरि मज्झं मज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कर-

आप देवानुप्रियनी पासे आवीने दीक्षित थवा आहुं छुं। काली दारिकाना आ अलिप्रायने सांलणीने प्रभुये तेने कहुं के डे देवानुप्रिये! 'यथासुखम्' आ प्रभावे ते काली दारिका पुरुषादानीय ते अर्हन्त प्रभु पार्श्वनाथ वडे अनुमो-दित थधने चित्तमां भूण्ण प्रसन्न थधं। तेले अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभुने वंदना नमस्कार कयी अने वंदना नमस्कार करीने त्यांथी आवीने ते तेज पोताना धार्मिक यानमां भेसी गध अने भेसीने ते पुरुषादानीय अर्हन्त प्रभु पार्श्व-नाथनी पासेथी अने ते आम्रशाल वन नामना उद्यानथी अडार आवी गधं। अडार आवीने ते जयां आमलकल्पा नगरी इती त्यां आवी गधं।

(उवागच्छित्ता आमलकल्पं गयरि मज्झं मज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-साला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मि-याओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता करतल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मंण पासस्स

૭૮૬

જાતાધર્મકથાકસુત્રે

કૃત્વા એવમવાદીત્-એવં સ્વલુ હે અમ્બતાતૌ ! મયા પાર્શ્વસ્યાર્હતોઽન્તિકે ધર્મઃ
' નિસંતે ' નિશાન્તઃ=શ્રુતઃ, સોઽપિ ચ ધર્મઃ ' મે ' મમ ' ઇચ્છિષ્ય ' ઇષ્ટઃ=
ઇચ્છાવિષયીભૂતઃ, ' પઢિચ્છિષ્ય ' પ્રતીષ્ટઃ=પુનઃ પુનરભિલષિતઃ ' અભિરુદ્ધ ' અભિરુચિતઃ=આસ્વાદ્યવસ્તુવત્સર્વથાપ્રિયઃ, તતઃ=તસ્માત્ કારણાત્ સ્વલુ અહં હે
અમ્બતાતૌ ! સંસારમયોદ્વિગ્ના મીતા જન્મમરણેભ્યોઽતઃ ઇચ્છામિ સ્વલુ યુષ્માભ્યામ-

ચલ૦ એવં વયાસી-એવં સ્વલુ અમ્મયાઓ ! મય પાસસ્સ અરહઓ અંતિય
ધમ્મે નિસંતે સે વિઃય મે ધમ્મે ઇચ્છિષ્ય પઢિચ્છિષ્ય અભિરુદ્ધ-તણં
અહં અમ્મયાઓ ! સંસારમયોદ્વિગ્ના મીયા જન્મમરણાણં-ઇચ્છામિ
ણં તુલ્લમેહિં અન્નમણુન્નાયા સમાણી પાસસ્સ અરહઓ અંતિય મુંડા મવિત્તા
અગારાઓ અગગારિયં પવ્વહસ્સ) વહાં આકર કે વહ આમલકલ્પ
નગરી કે ધીચોં ધીચ સે હોકર જહાં વહ ઘાહ્યા ઉપસ્થાન શાલા ધી-વહાં
આઈ-વહાં આકર વહ ઉસ ધાર્મિક યાનપવર સે નીચે ઉતરી-નીચે
ઉતર કર ફિર ઘાદ મેં વહ જહાં અપને માતા પિતા થે-વહાં ગઈ-વહાં
જાકર ઉસને અપને દોનોં હાથોં કી અંજલિ બનાકર ઓર ઉસે મસ્તક
પર રલ્લકર ઉસે હસ પ્રકાર કહા-હે માત તાત ! સુનો મૈને અહંત પ્રમુ
પાર્શ્વનાથ કે મુલ્લ સે ધર્મ સુના હૈ-વહ ધર્મ મુલ્લે બહુત અચ્છા લગા હૈ,
બાર બાર ઉસ ધર્મ કો સુનને કી અમિલાવા હો રહી હૈ । જિસ પ્રકાર
આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લગતી હૈ । ડસી પ્રકાર વહ ધર્મ મેરે લિયે સબ
પ્રકાર સે પ્રિય લગા હૈ । ઉસકે સુનને સે મૈ હે માત તાત ! હસ સંસાર

અરહઓ અંતિય ધમ્મે નિસંતે સે વિઃય મે ધમ્મે ઇચ્છિષ્ય પઢિચ્છિષ્ય અભિરુદ્ધ-તણં
અહં અમ્મયાઓ ! સંસારમયોદ્વિગ્ના મીયા જન્મમરણાણી-ઇચ્છામિ ણં તુલ્લમેહિં
અન્નમણુન્નાયા સમાણી પાસસ્સ અરહઓ અંતિય મુંડા મવિત્તા અગારાઓ અગગા-
રિયં પવ્વહસ્સ)

ત્યાં આવીને તે આમલકકલ્પ નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં તે બાહ્ય ઉપ-
સ્થાન શાળા હતી ત્યાં આવી. ત્યાં આવીને તે તે ધાર્મિક યાન પ્રવરમાંથી
નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે જ્યાં તેના માતાપિતા હતાં ત્યાં ગઈ. ત્યાં જઈને
પોતાના બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને તેમને આ
પ્રમાણે કહ્યું કે હે માતાપિતા ! સાંભળો, અહંત પ્રમુ પાર્શ્વનાથના મુખથી
મેં ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, તે મને બહુ જ ગમી ગયું છે. તે ધર્મને વારંવાર
સાંભળવાની ઇચ્છા થઈ રહી છે જેમ આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લાગે છે તેમજ
તે ધર્મ મારા માટે પ્રધી રીતે પ્રિય થઈ પડ્યો છે હે માતાપિતા ! તેના

भैरवगार्धमोमृतवर्षिणी टीका ध्रु० २ व० १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम् ७८३

भयनुज्ञाता सती पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके मुण्डाभूत्वा अगाराद् अनगारितां प्रव्रजितुम्= स्वीकर्तुम् । मातापितरौ कथयतः—यथासुखं हे देवानुषिये ! = यथा रोचते तथा-
कुरु किन्तु अस्मिन् कार्ये प्रतिबन्धं=प्रमादं मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चया-
नन्तरं खलु स कालो गाथापतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम्
उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्रयति,
आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य
सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः=भग्रे कालिकां
दारिकां भेतपीतैः=रजतमुवर्णमयैः कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभू-
षितां करोति, कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनिकां शिविकां दूरोदयति=भारोदयति, दूरोह्य
मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्द्धं संपरिहृतः सर्वद्वर्षा यावत्=वाद्य-

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ—अतः मैं
चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु के
समीप मुंडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लूँ ।
इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे
कहा—(अहासुहं देवानुष्पिया । मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहा-
वई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग
सयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव
विउलेणं पुष्पवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव
मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालियं दारियं सेया
पीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता
पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

अवजुथी हुं आ संसारना लयथी उद्विग्न थधने जन्म-मरणथी लयलीत थधं
गर्ध धुं. जेथी भारी धन्छा छे के हुं तमारी आज्ञा भोगवीने ते अर्हंत
पार्श्वनाथ प्रभुनी पासे मुंडित थधने अगारावस्था त्यल्लने अनगारावस्था
स्वीकारी लउं. आ प्रभाणे पोतानी काली दारिकानी बात सांभलीने
मातापिताजे तेने उल्लुः—

(अहासुहं देवानुष्पिया । मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई
विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरि-
यणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेणं पुष्पवत्थगंधमल्लालंकारेणं
सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालियं
दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता

માનાનેકવિધવાદિત્રવેણ સહ આમલકલપાયા નગર્યાં મધ્યમધ્યેન નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય યત્રૈવાત્રશાલવનં ચૈત્યં તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય છત્રાદિકાન્ તીર્થકરાતિ-

સંબંધિપરિયોગેણ સદ્ધિ સંપરિવુઢે સન્વિદ્વીષ જાત્ર રવેણં આમલકપ્પં નયરિં મજ્જં મજ્જેણં ણિગચ્છહ) હે દેવાનુપ્રિયે ! તુઝે જિસ તરહ અચ્છા લગે વૈસા તૂ કર-હસ કાર્ય મેં પ્રમાદ ન કર । હસ તરહ ઉસ કાલ ગાથાપતિ ને અપની પુત્રી કો દીક્ષા ગ્રહણ કરને મે દદ નિશ્ચયવાલી જાનકર વિપુલ માત્રા મેં અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર નિષ્પન્ન કર-વાયા-બાદ મેં મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોં કો આમંત્રિત કિયા. આમંત્રિત કરકે બાદ મેં ઉસને સ્નાત હોકર વિપુલ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ માલ્ય, ઇવં અલંકારોં સે સત્કાર સન્માન કરકે ઉન મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી, પરિજનોં કે સાથ કાલી દારિકા કા શ્વેત પીત કલશોં દ્વારા અભિષેક કિયા-બાદ મેં ઉસે સમસ્ત અલંકારોં સે વિભૂષિત કિયા-ફિર પુરુષ સહસ્રવાહિની શિથિકા પર ઉસે ચઢવાયા । ચઢવાકર ફિર ઉન મિત્ર, જ્ઞાતિ નિજક, સ્વજન સંબંધી પરિજનોં સે ઘિરા હુઆ હોકર વહ અપની સમસ્ત ઋદ્ધિ કે અનુસાર, વાચમાન અનેક વિધ બાજોં કો ધ્વનિ કે સાથ ૨ આમલકલપા નગરી કે ઠીક બીચોં બીચ સે હોકર નિકલા । (ણિગચ્છિત્તા જોજેદ ઝંબગાલવણે ચેહૃૃ

પુરિસસહસ્સવાહિણીયં સીયં દુરોદ્દેહ, દુરોદ્દિત્તા મિત્તજાદ, ણિગમયગસંબંધિ પરિયોગેણ સદ્ધિ સંપરિવુઢે સન્વિદ્વીષ જાત્ર રવેણં આમલકપ્પં નયરિં મજ્જં મજ્જેણં ણિગચ્છહ)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમ સાડું લાગે તેમ કર આ કામમાં પ્રમાદ કરીશ નહિ. આ પ્રમાણે તે કાલગાથાપતિએ પોતાની પુત્રીને દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો મહત્ત્વ વિચાર બાણીને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરે ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવ્યા. ત્યારબાદ મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને આમંત્રિત કર્યા. આમંત્રિત કરીને તેણે સ્નાન કરીને પુષ્કળ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય અને અલંકારો વડે સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી, પરિજનોની સાથે કાલી દારિકાનો સફેદ, અને પીળા કળશો વડે અભિષેક કર્યો ત્યારબાદ તેને સમસ્ત અલંકારો વડે વિભૂષિત કરી અને ત્યારપછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર તેને ચઢાવી. ચઢાવીને તેણે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધી, પરિજનોની સાથે પરિવેષિત થઈને પોતાની સમસ્ત ઋદ્ધિની સાથે, ઘણાં વાજાંઓના ધ્વનિની સાથે સાથે આમલકલપા નગરીની ઘરાબર વચ્ચે થઈને નીકળ્યો.

अनन्तारघमामृतवर्षिणी दी० शु० २ व० १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम् ८६

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिविकां स्थापयति, स्थापयित्वा कालिकां दारिकां शिवि-
कातः प्रत्यवरोहयति । ततः खलु तां कालिकां दारिकाम् अम्बापितरौ पुरतः
कृत्वा यत्रैव पार्श्वोर्द्ध्वं पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः,
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिष्टाम्—एवं खलु हे देवानुग्रियाः । काली दारिका
आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमङ्ग ! पुनः
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ) निक-
लकर वह वहां गया कि जहां वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था ।
वहां जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छत्रादिक अति-
शयो को देखा । (पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ
पच्चोरुहइ, तएणं तं कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव
पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) देखकर उसने उस पुरुष सहस्रबाहिनी
शिविका को खड़ी कर दिया । खड़ी करके उसमें से काली दारिका को
नीचे उतारा बाद में वे माना पिता उस कालिक दारिका को आगे करके
जहां पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहां गये । वहां
जाकर उन्होंने ने उनको वंदना की—नमस्कार किया । वंदना नमस्कार करके
बाद में उन्होंने ने इस प्रकार प्रभु से कहा—(एवं खलु देवाणुप्पिया !
काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता, जाव किमंगपुणपासणयाए ! एस

(णिग्गच्छित्ता जेणेव अंवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ)

नीकणीने ते त्यां गये के जहां ते आम्रशाल वन नामे उद्यान हेतुं
त्यां जधने तेहे तीर्थंकर प्रकृतिना उदयथी अस्तित्वमां आवता छत्र वगेरे
अतिशयेने जेया.

(पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं
तं कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी)

जधने तेहे ते पुरुष सहस्रबाहिनी पालणीने शङ्गी. शङ्गीने तेमांथी
काली दारिकाने नीचे उतारी. त्यारपत्री ते मातापिता ते कालीक दारिकाने
आगण करीने जहां पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान हता त्यां
गया. त्यां जधने तेमहे तेमने वंदना करी, नमस्कार कया वंदना तेमज नमस्कार
करीने तेमहे प्रभुने विनंती करतां आ प्रभाहे कहुं के—

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! कालीदारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता, जाव किमंग-

‘पासण्याए’ दर्शनाय ? एषा खलु हे देवानुप्रियाः । संसारभयोद्विग्ना इच्छति देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत्प्रजितुं, तद् एतां खलु देवानुप्रियाणां शिष्याभिक्षां दत्तः, ‘पडिच्छंतु’ प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु हे देवानुप्रियाः । शिष्याभिक्षाम् । भगवानाह—यथासुखं हे देवानुप्रियो ! मा प्रतिबन्धं कुरुतम् । ततः खलु काली कुमारी पार्श्वमर्हन्तं कन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा उत्तरपौरस्यं

णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाणं । अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिमिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिमिक्खं) हे देवानुप्रिय ! यह हमारी काली दारिका नामकी पुत्री है । यह हमें बहुत अधिक इष्टा, कान्ता यावत् उदम्बर पुष्प के समान सुनने के लिये भी दुर्लभा है—तो फिर हे अंग ! इसके दर्शन की तो बात ही क्या कहना है । हे देवानुप्रिय ! यह संसारभय से उद्विग्न हो रही है अतः आप देवानुप्रिय के पास मुंडित होकर यावत् संयम लेना चाहती है । इस लिये हम दोनों आपके लिये शिष्या की भिक्षा दे रहे हैं—आप देवानुप्रिय ! हमारी इस शिष्यारूप भिक्षा को स्वीकार करें (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह) इस प्रकार उन दोनों का कथन सुनकर प्रभु ने उनसे कहा हे देवानुप्रियो ! आप को जैसा सुख हो—वैसा आप करो—इसमें विलम्ब करने से लाभ नहीं है । (तएणं) इसके बाद (काली कुमारी पासं

पुण पासण्याए ? एसणं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाणं ! अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिमिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिमिक्खं)

हे देवानुप्रिय ! आ अमारी काली दारिका नामे पुत्री छे. अमारा माटे आ अहु अ पधारे छट्टा, कांता यावत् उदुम्बर पुष्पनी जेम नाम श्रवणुमां पणु दुर्लभा छे. तो पछी अेना दर्शननी तो बात अ शी करवी ? हे देवानुप्रिय ! आ संसार लयथो उद्विग्न थछ रही छे. अेथी आप देवानुप्रिय पासैथी मुंडित थछने यावत् संयम अहुणु करवा छच्छे छे. अेथी अमे अने आपना माटे आशिष्यानी बीक्षा अपणु करीअे छीअे. आप देवानुप्रिय अमारी आ शिष्यारूपी भिक्षानो स्वीकार करो. (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह) आ प्रमाणे तेअो अनेनुं कथन सांलणीने प्रभुअे तेमने कछुं हे हे देवानुप्रियो ! तमने जेम सुअ प्राप्त थाय तेम करो. आमां विलम्ब करवाथी लाभ नथी. (तएणं) त्थारपछी

अमगारधर्मावृतवर्णिनी टी० शु० २ व० १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम्

७११

दिग्भागम् अवक्रामति, अवक्राम्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव आभरणमाल्यालङ्कारम्
अवमुञ्चति=अवतारयति, अवमुच्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव लोचं=केशलुञ्चनं करोति,
कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पार्श्वमर्हन्तं त्रिः
कृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत-आदीतः खलु हे भद-
न्त ! लोकः एवम्=अनेन प्रकारेण यावत्-एषाऽपि स्वयमेव पार्श्वप्रभुणा प्रव्राजिता ।

अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं
अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ,
ओमुइत्ता, सयमेव लोयं करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादा-
णीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिकखुत्तो वंदइ,
नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) काली कुमारी ने पार्श्वनाथ
अरिहन्त प्रभु को वंदना एवं नमस्कार किया-। वंदना नमस्कार करके
फिर वह उत्तर पौरस्थ दिग्भाग ईशान कोण की ओर गई। वहां जाकर
उसने अपने आप आभरण माल्य एवं अलंकारों को उतार दिया।
उतार कर अपने हाथों से उसने बालों का लुंचन किया-लुंचन करके
फिर वह जहां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु बिराजमान थे वहां आई-
वहां आकर उसने पार्श्वनाथ अर्हंत को तीनवार वंदन एवं नमस्कार
किया और वंदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगी
--(आलित्तेणं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वाविया-

(काली कुमारी पासं अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, उत्तरपुरत्थिमं
दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता
सयमेव लोयं करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पासं अरहं तिकखुत्तो वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी)

काली कुमारीये पार्श्वनाथ अरिहंत प्रभुने वंदना अने नमस्कार कर्थां.
वंदना अने नमस्कार करीने ते उत्तर पौरस्थ दिग्भाग ईशान कोणनी तरइ
गछ. त्यां जधने तेणे पोतानी मेणे ज आभरण, माध्य अने अलंकाराने
उतायी. उतारीने पोताना छाये वडे ज तेणे वाजेतुं लुंचन क्युं. लुंचन करीने
ते ज्यां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु बिराजमान छता त्यां आवी. त्यां आवीने
तेणे पार्श्वनाथ अर्हंतने त्रण वार वंदन अने नमस्कार कर्थां. वंदना अने
नमस्कार करीने ते तेभने आ प्रभाणे विनंती करवा लागी के—

(आलित्तेणं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वाविया-तएणं

ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः काली स्वयमेव पुष्पचूलायै आर्यायै शिष्यात्वेन ददाति । ततः खलु सा पुष्पचूला आर्या कालीं दारिकां स्वयमेव प्रव्रजयति यावत्-सा काली तदाज्ञाम् उपसम्पद्य खलु विहरति । ततः सा काली-आर्या जाता, कीदृशी ? त्याह-ईर्यासमिता यावत्-गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा काली अर्या पुष्पचूलाया आर्याया अन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते,

तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुष्पचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुष्पचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पन्नावेइ-जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) हे भदंत ! यह लोक आदीप्त हो रहा है-इस प्रकार से पार्श्वनाथ प्रभु के द्वारा स्वयं ही दीक्षित की गई। इसके बाद उन पुरुषादानीय पार्श्व प्रभु ने काली को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या को शिष्याणीरूप से प्रदान कर दिया। पुष्पचूला आर्या ने उसे काली को इस प्रकार दीक्षित करवा कर अपनी शिष्याणीरूप में उसे स्वीकार कर लिया-यावत् वह काली उस आर्या की आज्ञानुसार अपनी प्रवृत्ति करने लग गई। (तएणं सा काली अज्जा जाव) इस तरह वह काली अब आर्या हो गई। (ईरिया समिया जाव गुत्तवंभयारिणी तएणं सा काली अज्जा पुष्पचूलाए अज्जाए अंतिए

पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुष्पचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुष्पचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पन्नावेइ-जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ)

हे भदन्त ! आ लोक आदीप्त थर्ध रह्यो छे. आ प्रभाण्णु आ पण्णु पार्श्वनाथ प्रभु वडे ज्ञाने न दीक्षित करवाभां आवी. त्यारपणी ते पुरुषादानीय पार्श्व प्रभुण्णे कालीने दीक्षित करीने पुष्पचूला आर्याने शिष्याना रुपभां आवी दीथी. पुष्पचूला आर्याण्णे ते कालीने आ प्रभाण्णु दीक्षित करावीने पोतानी शिष्याना रुपभां तेना स्वीकार करी लांघो. यावत् ते काली ते आर्यानी आज्ञा मुज्जण पोतानी प्रवृत्ति करवा लागी (तएणं सा काली अज्जा जाव) आ रीते ते काली छवे आर्या थर्ध गछ.

(ईरिया समिया जाव गुत्तवंभयारिणी, तएणं सा काली अज्जा पुष्पचूलाए अज्जाए अंतिए समाइयमाइयाइ एक्कारसअंगाइ अदिज्जइ, बहूहि चउत्थ जाव विहरइ)

अनगारधर्माभृतवर्णिनी टी० ५७० २ व० १ अ० १ कालीदेवी वर्णनम् ७९३

बहुभिः चतुर्थ यावत्-षष्ठाष्टमदशमद्वादशभिस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं सा काली अजा अन्नया कयाइं सरीरबाउ-
सिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ पाए धोवइ
सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ कक्खं तराणि धोवइ
गुज्झंतराइं धोवइ जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसी-
हियं वा चेइए तं पुट्टवामेव अद्भुक्खेत्ता तओ पच्छा आसयइ
वा सयइ वा, णिसीहइ वा, तएणं सा पुप्फचूला अज्ज कालिं
अज्जं एत्वं वयासी—नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणीणं णिग्गं
थीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया ! सरी-
रबाउसिया जाया अभिक्खणं२ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि
वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा तं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स
ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि, तएणं सा काली

सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूहि चउत्थ जाव विह-
रइ) उसका रहन शयन आदि सब व्यवहार नियमित एवं सीमित हो
गया। चलती तो वह ईयां समिति से मार्ग का संशोधन कर चलती।
यावत् वह गुप्त ब्रह्मचरिणी बन गई। ९ नौ कोटी से ब्राह्मचर्यव्रत की
संरक्षिका हो गई। इसके बाद उस काली आर्या ने पुष्पचूला आर्या के
पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया—और अनेक
चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, तपस्याओं की आराधना से अपने
आपको भावित किया ॥ सूत्र ३ ॥

तेनुं रहेवुं, सूयुं वगेरे भयुं काम नियमित अने सीमित थछ गयुं.
आलती त्यारे ते धर्या—समित्थी मार्गनुं संशोधन करीने आलती. यावत् ते
गुप्त ब्रह्मचारिणी अनी गछ ६ कोटिथी ब्रह्मचर्य व्रतनी ते संरक्षिका थछ
गछ. त्यारपछी ते काली आर्याअे पुष्पचूला आर्यानी पासै सामायिक वगेरे
अगियार अंगोनुं अध्ययन कयुं अने धय्वा चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम,
द्वादश तपस्याअेनी आराधनाथी पोतानी जतने भावित करी. ॥ सूत्र ३ ॥

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया
संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जंअभि-
क्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिसंति गरिहंति अवमण्णंति अभि-
क्खणं२ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए सम-
णीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज
माणिए इमेयारूवे अज्झात्थिए जाव समुप्पज्जित्था जया
णं अहं अगारवासमज्जे वसित्था तया णं अहं सयवसा जप्पि-
भिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया
तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्का उवस्सयं उवसंप-
ज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्ठु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते
पाडिएकं उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्ठिया
सच्छंदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा,
णीसेहेइ वा, तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी
ओसण्णा ओसणविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहा-
छंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं
पाउणइ पाउणित्ता अद्धमसियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ झूसित्ता
तीसंभत्ताइं अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय
अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंपाए रायहाणीए कालव-
डिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुल-
स्स असंखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवित्तए उववण्णा,

वर्तनगरवर्मासुतवर्षिणी टीका श्रु०२ व०१ अ०१ कालीदेवीवर्णनम्

७९५

तएणं सा कालीदेवी आहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामण पज्जत्तीए० । तएणं सा काली-
देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णैसिं च बहूणं काल-
वडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं
जाव विहरइ, एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा
देविड्डीं लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भंते ! देवीए
केवड्यं कालं ठिई पन्नत्ता ?, गोयमा ! अड्ढाड्ढजाइं पलिओवमाइं
ठिई पन्नत्ता, काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं
उव्वट्ठित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उव्वज्जिहिइ ?, गोयमा ! महा-
विदेहे वासे सिज्झिहिइ, एवं खलु जंबू ! समण्णं जाव संपत्तेणं
पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि ।
धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘ तएणं सा ’ इत्यादि—ततः खलु सा काली आर्या अन्यदा कदा-
चित् ‘ सरीरवाउसिया ’ शरीरा बाकुशिका=शरीरसंस्करणशीला जाता चाप्या-
सीत् । अथ सा किं करोती ? त्याह—अभीक्ष्णं वारंवारं हस्तौ धावति, पादौ धावति,

‘ तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं, ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (सा काली अज्जा) वह काली
आर्या (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (सरीरवाउसिया) शरीर को
संस्कारित करने के स्वभाववाली बन गई इसलिये वह (अभिक्खणं २

‘ तएणं सा काडी अज्जा अन्नया कयाइं ’ इत्यादि—

टीकार्थः—(तएणं) त्थारपछी (सा काली अज्जा) ते काली आर्या
(अन्नया कयाइं) केछे ओछे वण्णते (सरीरवाउसिया) शरीरने संस्कारित
करवाना स्वभाववाणी भनी गछ, ओइला भाटे ते—

(अभिक्खणं २ इत्ये धोवइ, पाए धोवइ सीसं धोवइ, मुइं धोवइ, थणंतराइं धोवइ,

शीर्षं धावति, मुखं धावति स्तनान्तराणि धावति, कक्षान्तराणि धावति, गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु 'ठाणं वा' स्थानम्=उपवेशनस्थलम् 'सेज्जं वा' शय्यां=शयनभूमिम्, 'णिसीहियं वा' निषेधिकां=स्वाध्यायभूमिम् 'चेएइ' चेतयते=करोति 'तं' तत्=स्थानादिकं 'पुव्वामेव' पूर्वमेव=उपवेशनादि क्रियायाः पूर्व 'आसयइ वा' आस्ते=उपविशति, 'सयइ वा' शेते=शयनं करोति, 'णिसीहइ वा' निषेधयति=स्वाध्यायं करोति वा । ततः खलु सा पुष्पचूलाऽऽर्या कालीमार्यामेवमवादीत्-नो खलु कल्पते हे देवाणुप्रिये ! श्रमणीनां

हृत्पथे धोवइ पाए धोवइ, सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ, कक्खंतराणि धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थरं वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएइ-तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइ वा) धारं २ हाथों को धोने लग गई, पैरों को धोने लग गई, शिर को धोने लग गई, मुँह को धोने लग गई, स्तनान्तरों को-स्तनों के मध्यभाग को-धोने लग गई, कक्षान्तरों को-काँखों के मध्यभाग को-धोने लग गई, गुह्यभागों को-गुप्तांगों को धोने लग गई । जहाँ २ वह बैठने का स्थान, शयन, स्थान, स्वाध्याय करने का स्थान नियत करती उसे पहिले से ही वह पानी से सिंचित कर देती-बाद में वह वहाँ बैठती शयन करती, स्वाध्याय करती, (तएणं सा पुष्पचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी) उस काली आर्या की इस स्थिति को देखकर पुष्पचूला आर्या ने उसे इस प्रकार कहा-(नो खलु कल्पइ,

कक्खंतराणी धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थरं वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएइ तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइ वा)

धारं धार धोवने धोवा लागी, पगोने धोवा लागी, माथाने धोवा लागी, मुणने धोवा लागी, स्तनान्तरने-स्तनना वरुणेना स्थानने धोवा लागी, कक्षांतराने-अगदोना मध्य लागने धोवा लागी, गुह्य लागने-गुह्यांगोने धोवा लागी. ज्यां ज्यां तेने जेसवानुं स्थान, शयनस्थान, स्वाध्याय करवानुं स्थान नक्की करती तो तेने पडेदेथी ज ते पाण्णीथी सिंचित करी देती, तयारपथी ते त्यां जेसती, शयन करती, स्वाध्याय करती. (तएणं सा पुष्पचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी) ते काली आर्यानी आवी स्थिति जेधने पुष्पचूला आर्याजे तेने आ प्रभाण्णे कथुं के—

અનંગારધમાંનૃતવર્ષિની ટી૦ શ્રુ. ૨ ઘ. અ૦ ૧ કાલીદેવીવર્ણનમ્

૭૧૭

નિર્ગ્રન્થીનાં શરીરવાકુશિકા જાતાડસિ, યતસ્ત્વમ્-અમીક્ષણં ૨ હસ્તૌ પાવસિ
યાવત્ 'આસયાહિ વા' આસે=ઉપવિશસિ, 'સયાહિ વા' શેષે=અયનં કરોષિ
'ળીસીહિયાહિ વા' નિષેધયસિ=સ્વાધ્યાયં કરોષિ, 'તં' તત્=તસ્માત્ કાર-
ણાત્ ત્વં હે દેવાનુપ્રિયે ! એતત્ સ્થાનમ્-'આલોએહિ' આલોચય યાવત્ પ્રાય-
શ્ચિત્તં પ્રતિપદ્યસ્વ । મૂલે-સમ્બન્ધમામાન્યે વળી । તતઃ સ્વલુ સા કાલી આર્યા

દેવાણુપ્પિયા ! સમળી ણં ળિગ્ગંથીણં સરીરવાડસિયાણં હોત્તણ-તુમં ચ
ણં દેવાણુપ્પિયા ! સરીરવાડસિયા જાયા-અમિક્કલ્લણં ૨ હસ્થે ધોવસિ,
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા ળિસીહિયાહિ વા તં તુમં દેવાણુપ્પિયાણ !
એયસ્સ ઠાણસ્સ આલોએહિ જાવ પાયચ્છિત્તં પઢિવડ્ડજાહિ) હે દેવાનુપ્રિયે !
નિર્ગ્રન્થ શ્રમળિયોં કો શરીરવકુશ હોના કલ્પિત નહીં હૈં । પરન્તુ તુમ
તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ બન રહી હો । વાર ૨ હાથોં કો ધોતી હો
યાવત્ જહાં તુમ્હેં ઉઠના બેઠના હોતા હૈ, શયન કરના હોતા હૈ, સ્વાધ્યાય
કરના હોતા હૈ ઉસ સ્થાન કો પહિલે સે હી સિંચિત કર લેતી હો તથ
જાકર વહાં ઉઠતી બેઠતી હો, શયન કરતી હો, સ્વાધ્યાય કરતી
હો । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ હસ સ્થાન કી આલોચના કરો યાવત્
પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો । (તણં સા કાલી અડ્ડા પુપ્ફચૂલાણ અડ્ડાણ
એયમદ્દં નો આઢાહ, જાવ તુસિળીયા સંચિદ્દહ, તણં તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ

(નો સ્વલુ કલ્પહ, દેવાણુપ્પિયા ! સમળીણં ળિગ્ગંથીણં સરીરવાડસિયાણં
હોત્તણ-તુમં ચ ણં દેવાણુપ્પિયા ! સરીર વાડસિયા જાયા અમિક્કલ્લણં ૨ હસ્થે ધોવસિ,
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા, ળિસીહિયાહિ વા તં તુમં દેવાણુપ્પિયાણ ! એયસ્સ
ઠાણસ્સ આલોએ હિ જાવ પાયચ્છિત્તં પઢિવડ્ડજાહિ)

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગ્રન્થ શ્રમળીઓને શરીરવકુશ થવું કલ્પિત નથી,
પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ થઈ રહી છો. વારંવાર હાથોને
ધૂઓ છો યાવત્ જ્યાં તમારે ઉઠવા બેસવાનું હોય છે, સૂવાનું હોય છે,
સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલાં તમે પાણીથી સિંચિત કરી દો છો,
અને ત્યારપછી તમે ત્યાં ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો.
એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો.

(તણં સા કાલી અડ્ડા પુપ્ફચૂલાણ અડ્ડાણ એયમદ્દં નો આઢાહ જાવ
તુસિળીયા સંચિદ્દહ, તણં તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ અડ્ડાઓ કાલિં અલ્લં અમિ-

पुष्पचूलाया आर्याया एतमर्थे 'नो आढाइ' मो आद्रियते=न मन्यते यावत् 'तुसिणीया' तुष्णीका=समीना संतिष्ठते। ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्याः कालीमार्याम् 'अभिकखणं' २ 'अभीक्षणं' २=वारं वारं 'हीलेंति' हिलन्ति=जन्मकर्मोद्घाटनपूर्वकं निर्भर्त्सयन्ति 'णिदंति' निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वकं दोषोद्घाटनेन अनाद्रियन्ते, 'खिसंति' खिस्मन्ति=हस्तमुखादिविकारपूर्वकमवमन्यन्ते, अपमानं कुर्वन्तीत्यर्थः 'गरिहंति' गर्हन्ते=गुर्वादिसमक्षं दोषाविवरणपूर्वकं तिरस्कुर्वन्ति, 'अवमण्णन्ति' अवमन्यन्ते=रुक्षवचनादिभिरपमानं कुर्वन्ति, तथा-अभीक्षणमभीक्षणम् वारंवारं एतमर्थे=शरीरसंस्करणरूपं निवारयन्ति। ततः खलु तस्याः काल्या आर्यायाः भम-अज्जाभो कालिं अज्जं अभिक्खणं २ हीलेंति, णिदंति, खिसंति, गरिहंति अवमण्णन्ति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तासे कालीए अज्जाए समणीहिं णिगंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था) उत्त काली आर्याने पुष्पचूला आर्याके इस कथन रूप अर्थको नहीं माना। केवल वह यावत् चुपचाप ही रही। उत्तरमें जब उसने उनसे कुछ नहीं कहा-तब उस पुष्पचूला आर्या 'हीलेंति' काली आर्याकी वार २ जन्मकर्म उद्घाटन पूर्वक भर्त्सना (तिरस्कार) करना प्रारंभ कर दिया। 'निदंति' कुत्सित शब्दोच्चारण पूर्वक दोषोद्घाटन करते हुए वे उसकी वार २ निंदा करने लगीं। 'खिसंति' हस्त, मुख, आदि के विकार प्रदर्शन पूर्वक वे उसका अपमान करने लग गईं। 'गरिहंति' गुरु आदिजनों के समक्ष दोषों को प्रकट करके वे उसका तिरस्कार करने लगीं। तथा "अवमण्णन्ति" रुक्षवचन आदि बोल २ कर उसका अपमान भी करने लग गईं।

कखणं २ हीलेंति णिदंति, खिसंति, गरिहंति अवमण्णन्ति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिगंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था)

ते काली आर्याओ पुष्पचूला आर्याना आ कथन इय अर्थने स्वीकार कर्यो नहि इत्ता ते भूगी यधने न ऐसी रही. नवाअभां व्यारे तेणे तेभने कर्ध नहि त्यारे पुष्पचूला आर्याओ काली आर्यानी वारंवार जन्म, कर्म, उद्घाटनपूर्वक भर्त्सना करवा भांडी. कुत्सित शब्दोच्चारण्यथी दोषोद्घाटन करती ते तेनी वारंवार निंदा करवा लागी. हाथ, मुख वगेरेने विदूत करीने ते तेभनुं अपमान करवा लागी. गुरु वगेरेनी साथे दोषोने प्रकट करीने ते तेभने तिरस्कार करवा लागी. तेभज् इक्ष वचने वगेरे बोलीने तेनुं अपमान पणु करवा लागी अने साथे साथे ते आर्या तेने वारंवार शरीर-संस्कार करवानी मनाई पणु करती रही. आ प्रभाणे निअंथ श्रमणीओ वडे वारंवार

अनगारवासमुत्तवर्णिनी डी० . २ व. १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम्

७९२

भीमिः निर्ग्रन्थीभिः अभीक्ष्णमभीक्ष्णं ह्रियमानायाः यावत्-वार्यमाणाया अय-
मेतद्रूपः 'अज्ज्ञतिष्ठ' आध्यात्मिकः=आत्मगतविचारः यावत्-मनोगतः सकल्पः
समुद्पन्नत यदा खलु अहम् अगारवासमध्ये 'वसित्था' उपिता=न्यवसं तस्य खलु
अहं 'सयंवसा' स्वयंवशा=स्वतन्त्रा आसम्, यत्प्रभृति च खलु अहं मुण्डाभूत्वा
अगात् अनगारितां प्रव्रजिताऽभवत् तत्प्रभृति च खलु अहं परवशा जाताऽस्मि
'तं' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कलये प्रादुर्भूतायां रजन्यां यावत् सूर्ये ज्व-
लति=सूर्योदये सति 'पाडिकं' प्रत्येकम्=एकमात्रं मिश्रमित्यर्थः, उपाभयमुपसं-
पद्य खलु विहर्तुम्, 'तिकट्ट' इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एवं सम्प्रेक्षते,

साथ २ में वे भार्या इसे बार २ शरीर संस्कार करने से मना भी
करती रही। इस प्रकार उस काली आर्या के निर्ग्रन्थ अमणियों द्वारा
बार २ भर्त्सित आदि होने पर तथा शरीर संस्कार करने से निषिद्ध होने
पर, इसे यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न
हुआ। (जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयवसा,
जप्पमिहं च णं अहं मुंडा भविता अगाराओ, अणगारियं पव्वइया
तप्पमिहं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कलं पाउप्पभायाए
रयणीए जाव जलंते पाडिककाउवस्सयं उवसंपज्जिता णं विहरित्तए
त्तिकट्ट एवं संपेहेइ संपेहिता कलं जाव जलंते पाडिएकं उवस्सयं
गिण्हइ) जब मैं अपने घर के बीच में रहती थी-उस समय मैं स्वतंत्र
थी। परन्तु जिस दिन से मुंडित होकर अगार अवस्था से इस अनगार
अवस्था में आई हूँ उस दिन से मैं परवश-पराधीन बन चुकी हूँ। अतः
मुझे वही श्रेयस्कर है कि मैं दूसरे दिन प्रातः काल होते ही जब सूर्यो-

भर्त्सित वगेरे यवाथी तेमज् शरीर संस्कारनी मनाछ होवा बदल ते हावी
आथीने आ अतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उद्भवथी के—

(जयाणं अहं अगारवासमज्जे वसित्था तयाणं अहं सयवसा जप्पमिहं-
च णं अहं मुंडा भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पमिहं च णं अहं
परवसा जाया तं सेयं खलु मम कलं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिका
उवस्सयं उवसंपज्जिता णं विहरित्तए त्तिकट्ट एवं संपेहेइ, संपेहिता कलं जाव
जलंते पाडिएकं उवस्सयं गिण्हइ)

न्यारे हुं घरमां रहेती हती त्यारे हुं स्वतंत्र हती. परन्तु न्यारथी मे
मुंडित यधने अगार अवस्थाने त्यलने अनगार अवस्था स्वीकारी छे त्यारथी
हुं परवश-पराधीन यध गध हुं. जोथी भारा भाटे हुवे जे न श्रेयस्कर
नलाय छे के हुं जीने दिसे सभार यतां न न्यारे सूर्य उदय पाभसे त्यारे

सम्प्रेक्ष्य कल्पे यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाण्डिपकं' प्रत्येकम्-उपाश्रयं गृह्णाति । तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनवधट्टिका पट्टच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्णं हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा । ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणविना नित्यपिण्डभोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसणा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽवसी-

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसणा ओसणविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछंदा अहाछंदविहारी, संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सा माण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह बिना रोक टोक, पट्टच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार चार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एवं सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिंचित कर वहाँ उठने बैठने एवं स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के बिना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

णील उपाश्रयभां जती रहू'. आ प्रभाणु तेणु मनभां विचार कर्ये. विचार करीने ते णीजे दिवसे सवार थतां ज सूर्योदय थथा आढ णील उपाश्रयभां जती रहू.

(तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसणा ओसणविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा 'दा अहाछंदविहारी. संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ)

त्यां ते रोक-टोक बिना स्वच्छंद थछने प्रवृत्ति करवा लागी. छच्छा भुञ्ज वारंवार छाय-पग धोवा लागी, छठवा-भेसवा अने सूवाना स्थानने तेमज स्वाध्याय भूमिने पछेवेथी ज पाण्णी वडे सिंचित करीने त्यां छठवा भेसवा तेमज स्वाध्याय करवा लागी. आ जतनी स्वच्छन्द प्रवृत्तिथी ते काली आर्या पासत्था-गाढ कारण वगर नित्य पिंड भोक्त्री-बनी गछ, पार्श्वस्थ

अनगारधर्माभूतवर्णिणी टी० भु. २ व. १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम्

८०१

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-
कषायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छन्दा' यथाच्छन्दा=
स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'संसत्ता'
संसत्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि आमण्य-
पर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिकया संलेखनयाऽऽत्मानं 'झूसेइ' जोष-
यति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेएइ'
छिनत्ति, छित्त्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे
कालं कृत्वा चमरचञ्चायां राजधान्यां कालावतंसके भवने उपपातसभायां
देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग-
मात्रायामवगाहनायां कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई।
कुशीला बन गई-संज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणों की
विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानु-
सार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह
यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परि-
चयजन्य प्रेमबंधन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने
इस तरह होकर अनेक वर्षों तक आमण्य पर्याय का पालन किया-और
(पाउणिक्ता) पालनकर (अर्द्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ,
झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणा-
लोइय अपडिक्कत्ता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए
कालवडिंएस भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूंसन्तरिए अंगुल-

विहारिणी थई गछ. सभाचारी पालन करवाभां शिथिलतावाणी भताववा लागी-
अवसन्न विहारिणी थई गछ. कुशीला थई गछ, संज्वलन कषायने उदय
होवाथी उत्तर गुणानी विराधना करवा लागी, कुशील विहारिणी थई गछ
अने पोतानी छच्छा सुज्जम मार्गानी कल्पना करीने तेभां प्रवृत्त थवा लागी.
अधी ते यथाच्छन्द विहारिणी पणु भनी गछ. गृहस्थ वगेरे लोडोना वधाए
पडता परिचयजन्य प्रेमबंधनथी पोताना आचार पालनभां शिथिल थई गछ.
तेछे आ प्रभाछे धणुं वपे सुधी आमण्य-पर्यायनुं पालन कथुं अने
(पाउणिक्ता) पालन करीने

(अर्द्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए
छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे कालं किच्चा चमर-

पपन्ना=तत्कालसमुत्पन्नासती पञ्चविधपार्याप्त्या यथामूर्याभः=मूर्याभदेववत्, 'जाव भासामणपज्जत्तीए' भासामन.पर्याप्त्या-यावत्-आहारपर्याप्त्या १, शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३. आनमाणपर्याप्त्या ४, भासामनः पर्याप्त्या ५, पर्याप्तिभावं गच्छति । पर्याप्तिबन्धकाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिमसि-कालान्तरापेक्षया भासामनः पर्याप्त्योः स्तोककालान्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्षणात् पर्याप्तिनां पञ्चविधत्वम् । ततः खलु सा काली देवी चतसृणां सामानिक-साहस्रीणां यावत्-अन्येषां च बहूनां कालवर्तंसकभवनवासिनामसुरकुमारणां

स्स असंखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा) अर्द्धमास की संलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया । इस प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३० भक्तों का छेदन करने पर भी उस स्थानकी आलोचना नहीं की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही हटी-अतः अनालोचित अप्रतिक्रान्त बनकर वह जब उस काल अवसर-काल कर चमरचंपा नाम की राजधानी में, कालावर्तंसक भवनमें, उपातातसभामें देवदूष्यवस्त्रसे आच्छादित देवशयनीय 'शय्या' ऊपर अंगुलके असंख्यातवे मात्र की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएणं सा कालीदेवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए ०! तएणं सा कालीदेवी चउण्हं समाणि य साहस्सी णं अण्णेसिं च बहूणं कालवर्तंसकभवनवासीणं असुरकुमाराणं

चंचाए रायहाणीए कालवर्डिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंघी देवदूस-तरिए अंगुलस्स असंखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा)

तेण्हे अर्द्धमासनी संलेखनाथी पोताना आत्माने युक्त कर्यो, आ प्रभाण्हे तेण्हे अनशनों वडे ३० भक्तोंनुं छेदन करीने पण्ण ते स्थाननी आलोचना करी नहिं अने ते अतिचारोना आचरण्णथी पण्ण अट्ठी नहिं, ऐथी अनालोचित अप्रतिक्रान्त थयने ते न्यारे काण अवसरे काण करीने अभरचंया नामनी राजधानीमां कालावर्तंसक भवनमां, उपातात सभामां देवदूष्य वस्त्रथी आच्छादित देवशनीय उपर आंगणीओना असंख्यातमा मात्रनी अवगाहनाथी काली देवीना रूपमां उत्पन्न थयं गय्.

(तएणं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए० । तएणं सा काली देवी चउण्हं समा-णिबसहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवर्तंसकभवनवासी णं असुरकुमा-राणं देवाण य देवीणय आहेवसं जाव विहरइ)

સેનગારચર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ શ્રુ. ૨ વ. ૧ અ૦ ૧ કાલીદેવાર્વણનમ્

૮૦૩

દેવાનાં ચ દેવીનાં ચ ' આહેવચ્ચ ' આધિપત્યં=સ્વામિત્વં કુર્વન્તીપાલયન્તી યાવદ્ વિહરતિ ।

અર્થ=ઉક્તપ્રકારેણ સ્વલુ હે ગૌતમ ! કાલ્યા દેવ્યા સા દિવ્યા દેવર્દ્ધિઃ ૩, લબ્ધા, પ્રાપ્તા, અભિસમન્વાગતા ।

ગૌતમઃ પૃચ્છતિ-કાલ્યા સ્વલુ હે મદન્ત ! દેવ્યાસ્તત્ર ' કેવદ્ધયં ' કિયન્તં

દેવાણ ય દેવીણ ય આહેવચ્ચં જાવ વિહરદ્) હસ પ્રકાર વહ કાલી દેવી અમી અમી ઉત્પન્ન હોકર પાંચ પ્રકાર કી પર્યાસિયોં સે પર્યાસ બની હૈ । પર્યાસિયાં ૬ હોતી હૈં પરન્તુ યહાં પર જો વે પાંચ કી સંખ્યા મેં નિર્દિષ્ટ હુઈ હૈં-ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ પર્યાસિ કે બંધકાલ મેં દેવોં કે આહાર, શરીર આદિ પર્યાસિયોં કે સમાસિકાલ કી અપેક્ષા ભાષા ઓર મનઃ પર્યાય કા સાથ સાથ બંધ હોતા હૈ, હસલિયે હન દોનોં કો એક રૂપ સે યહાં વિવક્ષિત કિયા ગયા હૈ । વે પર્યાસિયાં હસ પ્રકાર હૈ- (૧) આહારપર્યાસિ (૨) શરીર પર્યાસિ (૩) ઇન્દ્રિયપર્યાસિ (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસપર્યાસિ (૫) ભાષા એવં મનઃ પર્યાસિ । વહ કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવોંકા યાવત્ ઓર દૂસરે અનેક કાલાવતંસક ભવનવાસી અસુરકુમાર દેવોં કા દેવિયોં કા આધિપત્ય કર રહી હૈ । (એવં સ્વલુ ગોયમા ! કાલીએ દેવીએ સા દિવ્યા દેવહૃદી ૩ લઢ્ઢાપત્તા અભિસમણ્ણા ગયા,

આ પ્રમાણે તે કાલી દેવી હમણાં જ ઉત્પન્ન થઇને પાંચ પ્રકારની પર્યાસિએથી પર્યાસ બની છે. પર્યાસિએ છ હોય છે. પણ અહીં જે પાંચની સંખ્યામાં જ બતાવવામાં આવી છે. તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે પર્યાસિના બંધકાલમાં દેવોના આહાર, શરીર વગેરે પર્યાસિએના સમાસિકાળની અપેક્ષા ભાષા અને મનઃ પર્યાસિનું એકી સાથે બંધ હોય છે એથી આ બંનેને અહીં એક રૂપમાં જ બતાવવામાં આવી છે. તે પર્યાસિએ આ પ્રમાણે છે— (૧) આહાર પર્યાસિ, (૨) શરીર પર્યાસિ, (૩) ઇન્દ્રિય પર્યાસિ, (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસ પર્યાસિ, (૫) ભાષા અને મનઃ પર્યાસિ. તે કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવો ઉપર યાવત્ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનવાસી અસુર કુમાર દેવો, દેવીએ ઉપર શાસન કરી રહી છે.

(એવં સ્વલુ ગોયમા ! કાલીએ દેવીએ સા વિદ્યા દેવિહૃદી ૩ લઢ્ઢા પત્તા અભિસમણ્ણાગયા, કાલીએ જાં મેટે ! દેવીએ કેવદ્ધયં કાલં ઠિઈ પણત્તા ? ગોયમા અહ્હદા હજ્જાઈ પલ્લિઓવમાઈ ઠિઈ પણત્તા)

કાલં સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞસા ? મગવાન્પ્રાહ-હે ગૌતમ ! ' અદ્વાઈજ્ઞાઈ ' અર્દતૃતીયે=સાર્દે
દ્વે પલ્યોપમે સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞસા ।

ગૌતમઃ પૃચ્છતિ-કાલી હે મદન્ત ! દેવી તસ્માદેવજોકાદ્ અનન્તરમ્=આયુ-
ર્ભવસ્થિતિશ્ચયાનન્તરં ' ઉચ્ચટ્ટિતા ' ઉદ્ચટ્ટ્ય=નિસ્સૃત્ય કુત્ર ગમિષ્યતિ કુત્ર-
ઉત્પત્સ્યતે ? ।

મગવાનાહ-હે ગૌતમ ! સા કાલી દેવી દેવલોકાચ્ચુત્વા મહાવિદેહે વર્ષે
ઉત્પદ્ય સેત્સ્યતિ, ।

કાલીએ ણં મંતે ! દેવીએ કેવહયં કાલં ઠિઈ પળગત્તા ? ગોયમા અદ્વાઈ-
જ્ઞાઈ પલિઓવમાઈ ઠિઈપળગત્તા) હસ તરહ સે હે ગૌતમ ! કાલી દેવી
ને વહ દિવ્ય દેવર્દિ ૩, અર્જિત કી હૈ સ્વાધીન કી હૈ ઓર ઉસે અપને
ઉપભોગ કે યોગ્ય બનાયા હૈ । અબ ગૌતમ પુનઃ પ્રભુ સે પૂછતે હૈ-કિ હે
મદંત ! કાલીદેવી કી કિતની સ્થિતિ હૈ ? ઉત્તર મેં પ્રભુ ને ઉનસે કહા-હે
ગૌતમ ! કાલીદેવી કી સ્થિતિ અઢાઈ પલ્ય કી (પ્રજ્ઞસ હુઈ) હૈ (કાલી
ણં મંતે ! દેવી તાઓ દેવલોગાઓ અળંતરં ઉચ્ચટ્ટિતા કહિં ગચ્છહિહ, કહિં
ઉચ્ચજ્જિહિહ, ? ગોયમા ! મહાવિદેહેવાસે સિજ્ઞિહિહ એવં ચલુ જંબૂ !
સમણેણં જાવ સંપત્તેણં પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળગત્તે
ત્તિવેમિ, ધમ્મકહાણં પદમજ્ઞયણં સમત્તં) હે મદંત ! કાલીદેવી ઉસ
દેવલોક સે આયુ એવં ભવસ્થિતિ કે ક્ષય કે અનન્તર નિકલકર કહાં
જાવેગી, કહાં ઉત્પન્ન હોગી ? હસ ગૌતમ કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર પ્રભુ ને ઉન્હેં
હસ પ્રકાર દિયા-ગૌતમ ! વહ કાલી દેવી દેવલોક સે ચવ કર મહા-

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીએ તે દિવ્ય દેવર્દિ ૩ પ્રાપ્ત કરી
છે. સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતાને માટે ઉપભોગ યોગ્ય બનાવી છે.
હવે ગૌતમ શ્રી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદ્રન્ત ! કાલી દેવીની સ્થિતિ કેટલી
જવાબમાં પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીની સ્થિતિ અઢી પલ્યની
(પ્રજ્ઞસ થઈ) છે.

(કાલીણં મંતે ! દેવી તાઓ દેવલોગાઓ અળંતરં ઉચ્ચટ્ટિતા કહિં ગચ્છિ-
હિહ, કહિં ઉચ્ચજ્જિહિહ ? ગોયમા ! મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિહ, એવં ચલુ
જંબૂ ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળગત્તે
ત્તિ વેમિ, ધમ્મકહાણં પદમજ્ઞયણં સમત્તં)

હે ભદ્રન્ત ! કાલી દેવી તે દેવલોકથી આયુ અને ભવસ્થિતિને પૂરી
કરીને ક્યાં જશે ? ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ? આ પ્રમાણે ગૌતમના પ્રશ્નને સાંભળીને
પ્રભુએ ઉત્તરમાં તેને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાલી દેવી દેવલોકથી અવીને

भनगारधर्मासृतवर्णिणी टीका श्रु. २ व. १ अ० १ कालीदेवीवर्णनम् ८०५

श्रीसुधर्मास्वामी प्राह—एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्-मोक्षं सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः । त्रिवेमि ' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ४ ॥

॥ धर्मकथानां प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगी और वहीं से सिद्ध होगी। अब सुधर्मा स्वामी श्री जंबू ! स्वामी से कहते हैं कि हे जंबू ! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उन्हीं के मुख से सुनकर यह तुमसे कहा है ॥ सूत्र ४ ॥

—:प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त:-

महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थशे अने त्यांथी ज सिद्ध थशे. हवे सुधर्मा स्वामी श्री ज'जू ! स्वामीने कहे छे के छे ज'जू ! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीर प्रथम वर्गना प्रथम अध्ययनना आ पूर्वोक्त इपे अर्थ प्रज्ञप्त कथो छे. आपुं हुं तेमना श्री मुअथी सांलणीने तमने कही गथो छुं. ॥ सूत्र ४ ॥

“ प्रथम वर्गानुं प्रथम अध्ययन समाप्त. ”

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अय-
मट्ठे पणत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भग-
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पणत्ते ?, एवं खलु
जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समणेणं रायगिहे नयरे गुणसिलए
चेइए सामी समोसढे परिता निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं
कालेणं तेणं समणेणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं
जहा काली तहेव आगया णट्ठविहिं उवदंसेत्ता पडिगया
भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुढवभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा !
तेणं कालेणं तेणं समणेणं आमलकप्पा णयरी अंवसालवणे
चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई
दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली तहेव
निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं
काहिति । एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स बीयज्झयणं समत्तं ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइणं भंते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ।

—:द्वितीय अध्ययन प्रारंभ:—

—:जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि ।

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे
भदन्त ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं

जीवु' अध्ययन प्रारंभः—

जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि—

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीने पूछे छे के (भंते) हे भदन्त ।

(जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स

શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામમધેયં સ્થાનં સમ્પાત્તેન ધર્મકથાનાં પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ મોક્ષં સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ= કો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ ?

સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-एवं स्वलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राज-
गृहं नगरम् । गुणशिलकं चैतयम् । स्वामी भगवान् महावीरः समवसतः । परिष-

પદમસ્સ વગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લસે વિહયસ્સ ણં મંતે ! અજ્ઞયણસ્સ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે પળ્લસે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે ણયરે ગુણ-
સિલણ ચેહણ સામી સમોસઢે) યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથાકે પ્રથમ વર્ગ કે પ્રથમ અધ્ય-
યન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ-તો હે ભદન્ત ! દ્વિતીય અધ્યયન કા ડન્હીં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં કયા ભાવ અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ? હસ પ્રકાર જંબૂ સ્વામી કે પૂછને પર સુધર્મા સ્વામી ડનસે કહતે હૈં કિ હે જંબૂ ! સુનો -તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ-ડસ કાલ ઓર ડસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા । ડસમેં ગુણશિલક નામ કા ઉદ્યાન થા । હસમેં મહાવીર સ્વામી સમવસરે ।-(પરિસા નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસહ,

વગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લસે વિહયસ્સ ણં મંતે ! અજ્ઞયણસ્સ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં કે ૦ અદ્દે પળ્લસે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ? તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે ણયરે ગુણસિલણ ચેહણ સામી સમોસઢે)

બે શ્રમણુ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે. ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણુ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિ-સ્થાન મેળવી લીધું છે. બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે. આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું તેમાં મહાવીર સ્વામી પધાર્યા.

(પરિસા નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસહ, તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાઈ દેવી

भिर्गता यावत् भगवन्तं पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' राई ' रात्रिः—
रात्रिनाम्नी देवी चमरचञ्चायां राजधान्याम्, एवं यथा काली तथैव—आगता,
नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता । ' भंते त्ति ' हे भदन्त ! इति सम्बोध्य भगवान्
गौतमः ' पुव्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपृच्छा रात्रि देव्याः पूर्वभवं पृच्छति । भगवान्
प्राह—एवं खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकप्पा नगरी,
अम्रशालवनं चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गोथापतिः, रात्रिर्भीर्माया, तयोः

तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचञ्चाए रायहाणीए एवं जहा
काली—तहेव आ गया नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन
सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और
उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई ।
प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया । सबने प्रभु की पर्युपासना
की । उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-
चञ्चाराजधानी में रहती थी—जैसे वहां काली देवी रहती थी । सो
वह भी प्रभु का आगमन सुनकर वहां आई । वहां आकर उसने नाट्य
विधि दिखलाई—और दिखलाकर फिर वह वहां से वापिस अपने स्थान
पर चली गई । (भंते त्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपुच्छा—एवं खलु
गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंभसाल-
वणे चेइए—जियसत्तू राया—राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचञ्चाए रायहाणीए एवं जहा काली—तहेव आगया नट्टविहिं उवदंसेत्ता
पडिगया)

प्रभुनुं आगमन सांभणीने नगरना अथा नागरिकजने ते प्रभुनां दर्शन
करवा भाटे तेभज तेभनी पासेथी धर्मोपदेश सांभणवा भाटे ते शुशुशिलक
उद्यानमां आया. प्रभुजे अधाने धर्माने उपदेश आये. अथाजे प्रभुनी
पर्युपासना करी. ते काले अने ते समये रात्रि नामे देवी चमरचञ्चा राज-
धानीमां काली देवीनी जेम रहेती छती. ते प्रभुनुं आगमन सांभणीने त्यां
आवी. त्यां आवीने तेहे नाट्यविधि अतावी अने अतावीने ते त्यांथी
पाछी जती रही.

(भंते त्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपृच्छा—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंभसालवणे चेइए—जियसत्तूः राया—राई
गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स समोसरणं—राई दारिया

अनपारधमामृतवर्षिणी टी० शु० २ व० १ अ० २ रात्रिदेवीवर्णनम्

८०६

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समवसरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्कान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली- तहैव निक्खंता, तहेवसरीर वाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिइ एवं खलु जंबू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी । उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था । नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था । वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था । उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था । इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी ।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहां उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई । अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े टाठ बाट के साथ शिविका में बैठकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये । वहां वह दीक्षित हो गई । धीरे २ वह शरीर वाकुशिका बन गई । जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खंता, तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिइ एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

तेना गया गाढ श्रमणु लगवान भडावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व-
वरनी विगत पूछी. प्रभुओ तेमने आ प्रभाणु कहुं के छे गौतम ! ते जाने
अने ते समये आमलकल्पा नामे नगरी छती. तेमां आम्रशालवन नामे
उद्यान छतुं. नगरीना राजानुं नाम जितशत्रु छतुं. त्यां रात्रि नामे ओक
गाथापति रहतेओ छतेओ. तेनी पत्नीनुं नाम रात्रिश्री छतुं. तेओ अनेने रात्रि
नामे ओक पुत्री छती. जेम काळी प्रभुने उपदेश श्रवणु करीने प्रतिबोधने
प्राप्त थछ तेमज त्यां उद्यानमां पधारैला पार्श्वनाथनी पासेथी धर्मोपदेश
सांभलीने ते पणु प्रतिबोधित थछ गछ. ओथी काळीनी जेमज तेने पणु
पोताना मातापितानी पासेथी आज्ञा भेगवी अने त्यारपछी तेना मातापिताओ
तेने पावणीमां जेसाडीने प्रभुनी पासे लछ गया, त्यां ते दीक्षित थछ गछ.
धीमे धीमे ते पणु शरीर वाकुशिका अनी गछ. जेम काळी दारिका पणु आर्या
थछने शरीर वाकुशिका अनी गछ छती. त्यारपछी जेवी स्थिति काळी आर्यानी

६१०

प्रासादसंकथासूत्र

‘ एवं खलु जम्बू ! ’ इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य तिक्षेपकः=उपसंहारः= समाप्तिवाक्यसंबन्धोऽत्र बोध्यः ॥ सू० ५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययनं समाप्तम् ॥-१-२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर वाकूशिका बन गई थी। इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब संबन्ध यहाँ पर इसके विषय में लगाए जा चाहिये और वह संबन्ध “महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों का अन्त करेगी” यहाँ तक जानना चाहिये। इस प्रकार हे जंबू! यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसंहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

यद्यं तेवीज स्थिति ते रात्रिदारिकानी पञ्च यद्यं अर्द्धी आ प्रभावे कालिदारिकानो भवे। संभंध आना विषे समञ्ज लेवे। नोद्यमे अने ते संभंध “महाविदेहमां उत्पन्न यधने ते भधा दुःखानो अंत करे” अर्द्धी सुधी समजये। नोद्यमे आ प्रभावे डे जंभू। प्रथम वर्गना भीज अध्ययनने आ उपसंहार छे। सू. ५

“प्रथम वर्गनुं भीजुं अध्ययन समाप्त”

અથ તૃતીયમધ્યયનમ્

મૂલ્ય—જહ ણં મંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ, એવં સ્વલુ
જંબૂ ! રાયગિહે ણયરે ગુણસિલણ્ણે વેદ્ધેણ્ણે એવં જહેવ રાઈ તહેવ
રયણી વિ, ણવરં આમલકપ્પા નયરી રયણી ગાહાવઈ રયણી-
સિરી ભારિયા રયણી દારિયા સેસં તહેવ જાવ અંતં કાહિઈ
૩ । એવં વિજ્જૂ વિ આમલકપ્પા નયરી વિજ્જુગાહાવઈ વિજ્જુ-
સિરીભારિયા વિજ્જુદારિયા સેસં તહેવ । ૪ એવં મેહા વિ આમ-
લકપ્પાણ્ણે નયરીણ્ણે મેહેગાહાવઈ મેહસિરી ભારિયા મેહા દારિયા
સેસં તહેવ ૫ । એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેણ્ણે જાવ સંપત્તેણ્ણે ધમ્મ-
કંઠાણ્ણં પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ અયમદ્ધે પણ્ણત્તે ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ જહ ણં મંતે ’ इत्यादि । यदि स्वलु भदन्त ! इत्यादि तृतीयाध्ययनस्य
उत्क्षेपकः=जम्बूप्रभृतिरूपः पारम्भवाक्यप्रबन्धोऽत्रवाच्यः । सुधर्मास्वामी कथ-

॥ તૃતીય અધ્યયન પ્રારંભ ॥

(જહ ણં મંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ) इत्यादि ॥

ટીકાર્થ:—(જહ ણં મંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ) અથ જંબૂ
સ્વામી પુનઃ પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! यदि भ्रमण भगवान् महावीर ने
द्वितीय अध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है—तो
तृतीय अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस तरह
से हम तृतीय अध्ययन का जंबू स्वामी का यह प्रश्न आदिरूप वाक्य
प्रबन्ध उत्क्षेपक है—प्रारंभक है—इस प्रश्न का उत्तर श्री सुधर्मा स्वामी

ત્રીજી અધ્યયન પ્રારંભ:—

‘ જહ ણં મંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ:—(જહ ણં મંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ) હવે જંબૂ સ્વામી
કરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! जो भ्रमण भगवान् महावीर जीने अध्ययनने।
आ पूर्वोक्त रूपे अर्थ निरूपित किये छे तो त्रीज अध्ययनने। तेमले शे।
अर्थ प्रतिपादित किये छे ? आ प्रभावे आ त्रीज अध्ययनने। जंभू स्वामीने।
आ प्रश्न वजरे रूप वाक्य प्रबन्ध उत्क्षेपक छे—प्रारंभ छे आ प्रश्नने उत्तर
श्री सुधर्मास्वामी आ प्रभावे आये छे के:—

यति-एवं खलु हे जम्बू ! राजगृहं नगरं, गुणशिलकं चैत्यम् । एवं यथैव रात्रि-
स्तथैवरजनी अपि, नवरम् आमलकलया नगरी, रजनीगाथापतिः, रजनीश्रीभीषा,
रजनी दारिका । शेषं तथैव । यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य तृतीयाध्ययनम् ॥ १-३ ॥

इस प्रकार से देते हैं-(एवं खलु जंबू ! रायगिहे नगरे गुणसिलए
चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, नवरं आमलकलया नगरी, रयणी
गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेसं तहेव जाव अंतं
काहिइ ३) जंबू ! सुनो-उस काल में और उस समय में राजगृह नाम
का नगर था । उसमें गुणशिलक नामका उद्यान था । जिस प्रकार रात्रि
प्रभु का आगमन सुनकर गुणशिलक उद्यान में गई थी उसी तरह
रजनी भी वहाँ गई उसने प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुना । सुन-
कर संसार शरीर और भोगों से वह विरक्त हो गई । दीक्षा लेने का
अपना भाव उसने प्रभु से निवेदन किया । प्रभुने यथासुखं देवानुप्रि-
ये कहकर उसके भाव की सराहना करतेहुए 'शुभस्य शीघ्रं' करने की
अपनी अनुमति प्रकट की-तब यह घर आई और मातासे अपना
दीक्षा लेने का विचार प्रकट किया-इत्यादि सब संबन्ध काली दारिका
के कथानक अनुसार रजनी के साथ लगालेना चाहिये । जब रजनी
देवी प्रभु को वंदना करनेके लिये गुणशिलक उद्यान में आई और वहाँ

(एवं खलु जंबू ! रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव
रयणी वि नवरं आमलकलया नगरी, रयणी-गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी
दारिया सेसं तहेव जाव अंतं काहिइ ३)

हे जम्बू ! सांलणो, ते काणे अने ते समये राजगृह नामे नगर હતું.
તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું. જેમ રાત્રિ પ્રભુનું આગમન સાંલણીને
ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં ગઈ હતી તેમજ રજની પણ ત્યાં ગઈ. તેણે પ્રભુના
મુખથી ધર્મને ઉપદેશ સાંલળ્યો. સાંલણીને તે સંસાર, શરીર અને ભોગોથી
વિરક્ત થઈ ગઈ. તેણે પોતાને દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો ભાવ પ્રભુની સામે
પ્રકટ કર્યો. પ્રભુએ 'યથાસુખમ્' દેવાનુપ્રિયે ! કહીને તેના ભાવની સરાહના
કરી અને શુભ કાર્યમાં વિલંબ કરો નહિ એવી પોતાની અનુમતી દર્શાવી.
ત્યારે તે પોતાને ઘેર આવી અને માતાપિતાની સામે દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો
વિચાર પ્રકટ કર્યો-વગેરે બીજી વિગત કાલી દારિકાની જેમજ રજનીની સાથે
પણ સમજાવેલી બેઠીએ. ત્યારે રજનીદેવી પ્રભુને વંદના કરવા માટે ગુણ-
શિલક ઉદ્યાનમાં આવી અને ત્યાં તેણે નાટ્યવિધિનું પ્રદર્શન કર્યું. ત્યારબાદ

अनगरधर्माभ्युतवर्षिणी लोका धृ. २ घ. १ रजनीदारिकादिभिरिन्नरूपेणम् ८१३

‘ एवं विज्जूवि ’ इत्यादि । एवं विद्युदपि । आमलकल्पा नगरी, विद्युद् गाथापति, विद्युत् श्रीभार्या, विद्युदारिका । शेषं तथैव ।

इति प्रथमवर्गस्य चतुर्थीध्ययनम् ॥ १-४ ॥

उसने नाटयविधिका प्रदर्शन किया बाद में वह जब वहां से प्रभु की पर्युपासना कर वापिस अपने स्थान पर चली गई—तब प्रभु से गौतम गणधर ने उसके पूर्वभव पूछे तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा—उस काल और उस समय में आमलक कल्पा नामकी नगरी थी—उसमें रजनी नामका गाथापति रहता था । रजनी श्री उसकी भार्या का नाम था । इन दोनों के एक पुत्री जिसका नाम रजनी था । इसके विषय का अवशिष्ट कथानक “ समस्त दुःखों का यह अन्त करेगी ” यहां तक का काली दारिका के जैसा ही जानना चाहिये ॥ सू० ६ ॥

॥ प्रथम वर्ग का तीसरा अध्ययन समाप्त ॥

एवं विज्जूवि आमलकल्पा नयरी विज्जू गाहावई ॥

विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेसं तहेव ॥ ४ ॥

एवं मेहावि आमलकल्पाए नयरीए मेहे गाहावई ॥

मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ॥ ५ ॥

(एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्ग-

प्रभुनी पर्युपासना करीने पाछी पोताना स्थाने जती रही त्यारे गौतम गणधरे प्रभुने तेना पूर्वभवो पूछया. त्यारे प्रभुअे तेने आ प्रभाअे कहुं के ते काणे अने ते समये आमलकल्पा नामे नगरी હતી, તેમાં રજની નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો, રજનીશ્રી તેની પત્નીનું નામ હતું. તેअે અંનેને એક પુત્રી હતી—જેનું નામ રજની હતું. એના વિષેની બાકીની બધી વિગત “ સમસ્ત દુઃખોનો તે અન્ત કરશે ” અહીં સુધીની કાલી દારિકાની જેમજ સમજી લેવી જોઈએ. ॥ सूत्र ६ ॥

“ प्रथम वर्गं त्रीणुं अध्ययन समाप्त ॥

(एवं विज्जूवि आमलकल्पा नयरी विज्जु गाहावई ।

विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेसं तहेव ॥ ४ ॥

एवं मेहा वि आमलकल्पाए नयरीए मेहे गाहावई ।

मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ॥ ५ ॥

(एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयं महे पणत्ते ६)

‘ एवं मेधाधि ’ इत्यादि । एवं मेधाऽपि । आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथा-
पतिः, मेघश्रीभार्या, मेघा दारिका । शेषं तथैव ।

श्रीसुधर्मास्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन
धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ॥ सू० ६ ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम् ॥ १-५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-‘ जङ्घं भंते ’ इत्यादि ।

**मूलम्-जङ्घं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्ग-
स्स उक्खेवओ, एवं खलુ जंबૂ ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स**
સ્સ અઘમઠે પળણ્ણે ૬) હસી તરહ કા કથાનક વિદ્યુતકે વિષય મેં ભી
જાનના ચાહિયે । આમલકલ્પા નગરી વિદ્યુત ગાથાપતિ વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા
इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका । इस तरह नाम आदि में ही परिव-
र्तन हुआ है । अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है । मेघ के विषय
में भी यही बात जाननी चाहिये । आमलकल्प- नगरी, मेघ गाथापति,
मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में
परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नहीं । इस प्रकार यहां
तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं । विद्युद्दारिका का
अध्ययन ४ चौथा, एवं मेघा दारिका का अध्ययन ५ पंचम है । इस
तरह हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधि-
पति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है ?

આ પ્રમાણેનું જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ.
આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા. આ બંનેને ત્યાં
વિદ્યુત દારિકા. આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમાં પરિવર્તન થયું છે. અભિધેય
વિષયમાં કોઈ પણ બદલો તફાવત નથી. મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી
લેવી જોઈએ. આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા.
આ પ્રમાણે આ કથાનકમાં પણ નામોમાં જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય
વક્તવ્ય વિષયમાં નહિ. આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો
પૂરા થઈ ગયા છે. વિદ્યુદ્દારિકાનું અધ્યયન થોડું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન
પાંચમું છે. આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેઓ મુક્તિ
સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ
પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

अनगरधर्मासुतवर्णिनी टी० भू० २ व० १ शुंभानिशुंभाविदेवीवर्णनम् ८१५

वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—सुंभा निसुंभा रंभा
निरंभा मयणा, जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मक-
हाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, दोच्चस्स णं
भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ?, एवं खलु
जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेणयरे गुणसिलए चेइए
सामी समोसठे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं
तेणं समएणं सुंभादेवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए
भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्ठविहिं उव-
दंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कौटुए
षेइए जियसत्तू राया सुंभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुंभा
दारिया सेसं जहा कालीए णवरं अद्धुट्ठाइं पलिओवमाइं ठिई
एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसावि चत्तारि
अज्झयणा सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया, एवं
खलु जंबू ! निक्खेवओ विईयवग्गस्स२ ॥ सू० ७ ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन
द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामीप्राह—एवं खलु हे जम्बूः श्रमणेन यावत्

—:द्वितीयवर्गप्रारंभः—

‘ जइणं भंते ! समणेणं ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (भंते !
जइणं समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एवं खलु

भीजे वर्ग प्रारंभ—

‘ जइणं भंते ! समणेणं ’ इत्यादि—

टीकार्थ—जंबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछे छे के—

(भंते ! जइणं समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एवं खलु

મોક્ષં સમ્પ્રાપ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચાધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથથા-શુમ્ભા ૧, નિશુમ્ભા ૨, રમ્ભા ૩, નિરમ્ભા ૪, મદના ૫, । યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યોક્તસમ્પ્રાપ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ-અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત । વર્ગસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્ય કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? । સુધર્માસ્વામી પ્રાહ-એવં

જંબૂ ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં દોચ્ચસ્સ વગ્ગસ્સ પંચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા) હે ભદન્ત ! મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને દ્વિતીય વર્ગ કા ઉત્તેષક પ્રારંભ કિસ રૂપ સે પ્રરૂપિત કિયા હૈ-તવ સુધર્મા સ્વામી ને ડનસે કહા-હે જંબૂ ! સુભો યાવત્ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ ડન શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હૈં-(તં જહા) વે હસ પ્રકાર હૈં-(સુંભા, નિસુંભા, રંભા, નિરંભા મયણા, જહ્ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં દોચ્ચસ્સ વગ્ગ-સ્સ પંચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા, દોચ્ચસ્સણં મંતે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ-કે અદ્દે પળ્લપ્પે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે ગયરે, ગુણસીલણ્ણે ચેદ્દણ-સામી સમોસદે પરિસા ણિમ્મયા જાવ પઙ્ગુવાસહ) (૧) શુમ્ભા, (૨) નિશુંભા (૩) રમ્ભા, (૪) નિરંભા (૫) મદના, । અથ જંબૂ સ્વામી પુનઃ સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ હે ભદન્ત ! યદિ યાવત્ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને દ્વિતીયવર્ગ

જંબૂ ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં દોચ્ચસ્સ વગ્ગસ્સ પંચઅઙ્ગયણા પળ્લપ્પા)

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે બીજા વર્ગના ઉત્તેષક-પ્રારંભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જંબૂ ! સાંભળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે. (તંજહા) તે આ પ્રમાણે છે—

(સુંભા, નિસુંભા, રંભા, નિરંભા, મયણા, જહ્ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપ-ત્તેણં ધમ્મકહાણં દોચ્ચસ્સ વગ્ગસ્સ પંચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા, દોચ્ચસ્સ ણં મંતે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લપ્પે ! એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે ગયરે, ગુણસીલણ્ણે ચેદ્દણ-સામી સમોસદે પરિસા ણિમ્મયા જાવ પઙ્ગુવાસહ)

(૧) શુંભા, (૨) નિશુંભા, (૩) રંભા, (૪) નિરંભા, (૫) મદના. હવે જંબૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

મગધનગરમાં જન્મત સર્વિણી ટી૦ શુ ૨ વ. ૨ શુંમાનિશુંમ દિવેવી વર્ણનમ

૮૧૭

ચલુ હે જંબૂ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહં નગરમ્ । ગુણશિલકં ચૈત્યમ્ । સ્વામી=વર્દમાનસ્વામી સનવસતઃ । પરિવર્તિતના યાવત્પર્યુપાસતે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે શુમ્ભા દેવી લલિચંચાયાં રાજધાન્યાં શુમ્ભાવતંસકે ભવને શુમ્ભે સિંહાસને 'કાલીગમણં' કાલીગમેન=કાલી દેવી સદશપાઠેન યાવત્-નાટ્યવિધિમુપદર્શ્ય યાવત્-પ્રતિગતા । 'પુવ્વભવપુચ્છા' પૂર્વભવપુચ્છા=ગૌતમ-સ્વામી શુમ્ભા દેવ્યાઃ પૂર્વભવં પુચ્છતિ । મગધાન્ કથયતિ-શ્રાવસ્તી નગરી । કોષ્ઠકં ચૈત્યમ્ । જિતશત્રૂ રાજા । શુમ્ભો ગાથાપતિઃ । શુમ્ભશ્રીભાર્યા । શુમ્ભા દારિકા । શેષં યથા કાલ્યાઃ=કાલી દારિકાયા વર્ણનં તથાત્રાપિ વિજ્ઞેયમ્, નવરં=વિશેસ્ત્વ-

કે પાંચ અધ્યયન પ્રરૂપિત ક્રિયે હૈં-તો હે ભદ્રન ! દ્વિતીયવર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા ઉન્હોને કયા અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈં ? હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેને કે લિયે સુધર્મા સ્વામી ઉનસે હસ પ્રકાર કહતે હૈં કિ-હે જંબૂ !-ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા-ઉસમેં ગુણશિલક નામ કા ઉદ્યાન થા-। ઉસમેં વર્દમાન સ્વામી આયે । પ્રભુ કા આગમન સુનકર વહાં કી સમસ્ત જનતા ઉન્હેં વંદન કે લિયે અપને ૨ સ્થાન સે ચલ કર ઉસ ગુણશિલક ઉદ્યાન મેં આઈ । પ્રભુ ને સબકો ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા પરિષદ ઉપદેશ સુનકર પ્રભુ કી યાવત્ પર્યુપાસના કી । (તેજં કાલેજં તેજં સમણં) ઉસી કાલ ઓર ઉસી સમય મેં (શુંમાદેવી લલિચંચાણ રાયદાણીણ સુંમવડેસણ ભવણે સુંમસિ સીહા-સણંસિ કાલીગમણં જાવ નટ્ટવિદિં ઉવડંસેત્તા જાવ પડિગયા પુવ્વભવ પુચ્છા, સાવત્થી જયરી, કોટ્ટણ ચેઈણ જિયસત્તૂ રાયા, સુંમે માહાવડે સુંમ-

સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રવણ ભગવાન મહાવીરે ખીજ વર્ણના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે. તો હે ભદ્રન્ત ! ખીજ વર્ણના પ્રથમ અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ?

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને આ પ્રમાણે કહે છે કે હે જંબૂ ! તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું. તેમાં વર્દમાન સ્વામી પધાર્યા. પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંના બધા નાગરિકો તેમને વંદના કરવા માટે પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા. પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. પરિષદે ધર્મોપદેશ સાંભળીને પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી. (તેજં કાલેજં તેજં સમણં) તે કાળે અને તે સમયે

(શુંમા દેવી લલિચંચાણ રાયદાણીણ સુંમવડેસણ મગધે સુંમસિ સીહાસણંસિ કાલી ગમણં જાવ નટ્ટ વિદિં ઉવડંસેત્તા જાવ પડિગયા, પુવ્વભવપુચ્છા સાવત્થી જયરી, કોટ્ટણ ચેઈણ જિયસત્તૂ રાયા, સુંમે માહાવડે, સુંમસિરી મારિયા, સુંમા-

८१८

ज्ञाताधर्मकयाज्ञसूत्रे

यम्-अस्याः शुम्भादेव्याः 'अद्भुद्वाइं' अर्द्धं चतुर्थानि=सार्द्धं त्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीप्राह-हे जम्बू! निक्षेपकः=उपहारोऽध्ययनस्य वाच्यः ॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम् ॥

सिरी भारिया सुंभादारिया, सेसं जहा कालीए णवरं अद्भुद्वाइं पलिओव-
माई ठिई, एवं खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारि-
अज्झयणा सावत्थीए नवरं मायापिया सरिस नामया एवं खलु जंबू।
निक्खेवओ बिईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुम्भादेवी जो यल्लिचंचा
नामकी राजधानी में शुभावतंसक नामके भवन में रहती थी-और
शुंभनाम के सिंहासन पर बैठी थी-वह काली देवी के प्रकरण में
वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वंदना करने के लिये
आई। वहाँ उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहाँ से
पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी
ने प्रभु से उस शुम्भादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने
उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्ठक
नामका उद्यान था, नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा
पति रहता था। जिसका नाम शुंभ था। इसकी शुंभश्री नाम की
भार्या थी। दारिका का नाम शुंभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेसं जहा कालीए णवरं अद्भुद्वाइं, पलिओवमाई ठिई। एवं खलु जंबू!
निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवरं माया-
पिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू। निक्खेवओ-बिईयवग्गस्स पंच अज्झ-
यणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

शुंभा देवी-के जे अलिखिया नामे राजधानीमां शुभावतंसक नामना
भवनमां रहैती हती अने शुंभ नामे सिंहासन उपर भेसती हती-काली
देवीना प्रकरषुमां वणुं देला पाठ मुज्ज प्रभुनी पासे तेभने वंदना करवा भाटे
आवी। त्यां तेणे नाट्यविधिनुं प्रदर्शन कथुं। त्थारभाह ते त्यांथी पाछी पोताना
स्थाने जती रही। तेभना जता रह्या भाह गौतम स्वामीजे प्रभुनी शुंभा
देवीना पूर्व भवनी पृच्छा करी, त्थारे भगवाने तेभने आ प्रभाणे कथुं के-
श्रावस्ती नामे नगरी हती, तेमां कोष्ठक नामे उद्यान हतुं। नगरीना राजानुं
नाम जितशत्रु हतुं। तेमां शुंभ नामे गाथापति रहैतो हतो। शुंभश्री नामे
तेनी पत्नी हती, तेनी पुत्रीनुं नाम शुंभा हतुं त्थारपणीनुं तेनुं शेष वणुं न
काली देवीनी जेभज समथुं वेवुं जेधजे। तेमां अने आमां तत्तावत जेट-

મંગલાર્ચનોમૃતવર્ષિણી સ્તો ૨ વ. ૨ શુંભાનિશુંભાદિદેવીવર્ણનમ્

૮૧૬

‘ एवं सेसावि ’ इत्यादि-एवं शेषाण्यपि=निशुम्भा १-रम्भा २-निरम्भा ३-मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नव-रम्-एतानां विशेषः-मातरः पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि-निशुम्भाया माता निशुम्भश्रीः, पिता निशुम्भः । रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः । निरम्भाया माता निरम्भश्रीः, पिता निरम्भः । मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः । एते सर्वे गाथापतयः आसन् ।

एवं खलु हे जम्बू ! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथानां द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

કાલીદેવી કા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । ડસમેં ઓર હસમેં કેવલ અન્તર હતના હી હૈ કિ કાલીદેવી કી સ્થિતિ ૨॥ પલ્લ્ય કી થી ઓર હસ શુંભાદેવી કી ૩॥, પલ્લ્ય કી થી । હસ પ્રકાર હે જંબૂ ! હસ દ્વિતીય-વર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા યહ નિક્ષેપક હૈ । હસી તરહ નિશુંભા, રંભા નિરંભા ઓર મદના નામ કે ચાર અધ્યયન ભી જાનના ચાહિયે । ફન મેં વિશેષતા કેવલ હતની હી હૈ કિ યહાં જો માતા પિતા હૈં વે દારિકા સદૃશ નામવાલે હૈં-જૈસે નિશુંભા કે પિતા કા નામ નિશુંભ, માતા કા નામ નિશુંભ શ્રી, રંભાકે પિતા કા નામ રંભ, માતાકા નામ રંભશ્રી, નિરંભા કે પિતા નામ નિરંભ માતા કા નામ નિરંભશ્રી, મદના કે પિતા કા નામ મદન, ઓર માતાકા નામ મદનશ્રી । યે સબ હી ગાથા-પતિ હૈં । હસ તરહ યહ દ્વિતીયવર્ગ કા નિક્ષેપક-ઉપસંહાર-હૈં ।

॥ દ્વિતીયવર્ગ સમાપ્ત ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્લ્યની હતી અને આ શુંભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્લ્યની હતી. આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિક્ષેપક છે. આ પ્રમાણે જ નિશુંભા, રંભા, નિરંભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ જાણી લેવાં જોઈએ. એમનામાં વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે. જેમકે નિશુંભાના પિતાનું નામ નિશુંભ, માતાનું નામ નિશુંભશ્રી, રંભા ના પિતાનું નામ રંભ, માતાનું નામ રંભશ્રી નિરંભાના પિતાનું નામ નિરંભ, માતાનું નામ નિરંભશ્રી, મદનાના પિતાનું નામ મદન અને માતાનું નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસંહાર છે.

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

अथ तृतीयो वर्गः प्रारभ्यते—‘ उक्खेवओ तइयवग्गस्स ’ इत्यादि

मूलम्—उक्खेवओ तइयवग्गस्स एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे, जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउपन्नज्झयणा पणत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं अलादेवी धरणाए रायहाणीए अलावडंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव णट्ठविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी काममहावणे चेइए अले गाहावई अलसिरी भारिया अलादारिया सेसं जहा कालीए णवरं धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ साइरेणं अद्धपलिओवमंठिई सेसं तहेव, एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं कमा सक्का सत्तेरा सोयामणी इंदा घणविज्जुयावि, सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहि-सीओ एवं, एते छ अज्झयणा वेणुदेवस्सवि अविसेसिया भाणियव्वा एवं जाव घोसस्सवि एए चेव छ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिह्माणं इंदाणं चउपण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वाओवि वाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ॥सू०८॥

तइओ वग्गो समत्तो ॥३॥

અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ શ્રુ૦૨ વ૦૩ અલાદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૨૧

ટીકા—‘ ઉક્તેવઓ ’ ઉત્કેષકઃ=જન્મૂપશ્ચાદિરૂપઃ પ્રારંભવાક્યપ્રવંધઃ તૃતીયવર્ગસ્યાત્રવોધઃ । શ્રીસુધર્માસ્વામી પ્રાહ—एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन तृतीयस्य वर्गस्य ‘ चउप्पण्ण ’ चउ-
प्पञ્चाશत् अठादीनि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तथया—तानि यथा—प्रथममध्ययनम् अलेति यावत्—चउप्पञ्चाशत्तममध्ययनम् । जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु हे

—:તૃતીય વર્ગ પ્રારંભ:-

‘ ઉક્તેવઓ તદ્યવગ્ગસ્સ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—તૃતીયવર્ગ કા પ્રારંભવાક્ય પ્રવંધ હસ પ્રકાર હૈ—અર્થાત્ સુધર્માસ્વામી સે જંબૂ સ્વામી ને પ્રશ્ન કિયા કિ ભદંત । શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં હસ તૃતીયવર્ગ કે કિતને અધ્યયન પ્રજ્ઞસ કિયે હૈં—તથ સુધર્મા સ્વામી ને ઉનસે હસ પ્રકાર કહા— (एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तद्वयस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पणत्ता तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउ-
प्पण्णहमे अज्झयणे जहणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तद्वयस्स वग्गस्स चउप्पण्णज्झयणा पणत्ता, पढमस्सणं भंते ! अज्झ-
यणस्स समणेणं जाव संपत्ते णं के अट्ठे पणत्ते ?) हे जंबू ! सुनो—उन मुक्ति प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने तृतीयवर्ग के अलादिक चौपन ५४ अध्ययन प्रज्ञस किये हैं । जंबू स्वामी पुनः पूछते हैं—भदंत ।

ત્રીજો વર્ગ પ્રારંભ—

‘ ઉક્તેવઓ તદ્યવગ્ગસ્સ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—ત્રીજો વર્ગના પ્રારંભ વાક્ય પ્રવંધ આ પ્રમાણે છે—એટલે કે સુધર્મા સ્વામીને જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદ્રન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેમણે મુક્તિ મેળવી લીધી છે. આ ત્રીજો વર્ગના કેટલા અધ્ય-
યનો પ્રજ્ઞસ કર્યા છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तद्वयस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पणत्ता—तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइ मे अज्झयणे जहणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तद्वयस्स वग्गस्स चउप्पण्णज्झय-
णा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?)

હે જંબૂ ! સાંભળો, મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ત્રીજો વર્ગના અલાદિક ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞસ કર્યા છે. જંબૂ સ્વામી ફરી પ્રશ્ન કરે

भदन्त ! श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन धर्मकथानां तृतीयस्य वर्गस्य चतुष्पञ्चा-
शद् अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तेषु प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन
यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मस्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्, गुण-
शिलकं चैत्यम्, स्वामी समवभूतः, परिषन्निर्गता यावत्-भगवन्तं पशुपास्ते ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये अलादेवी=धरणेन्द्रस्याग्रमहिषी धरणायां राजधान्याम्
आलावतंसके भवणे अले सिंहासणे, एवं 'कालीगमणं' कालीगमेन=काली-
सदृशपाठेन यावत् नाट्यविधमुपदर्श्य प्रतिगता । 'पुण्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा-
गौतमस्वामी अलादेव्याः पूर्वभवं पृच्छति, भगवान् कथयति-वागारसी नगरी ।
काममहावनं चैत्यम् । 'अले' अलनामा गाथापतिः । अलश्रीभार्या । अला
दारिका । शेषं 'जहाकालीए' यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तथैव अला-
देव्या वर्णनं विज्ञेयम्, नवरम्-धरणस्याग्रमहिषीतयाऽस्या उपपातः, सातिरेकं=

यावत् मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथा के
तृतीयवर्ग के ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं तो उनमें से हे भदन्त !
उन्हीं यावत् मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम अध्ययन
का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? इस प्रश्न के समाधान निमित्त सुधर्मा
स्वामी उनसे कहते हैं कि-(एवं खलु जंबू !) हे जंबू ! तुम्हारे प्रश्न का
उत्तर इस प्रकार है (तेणं कालेणं तेणं समएणं अलादेवी धरणाए राय
हाणीए अलावडंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमणं
जाव गट्ठविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुण्वभवपुच्छा, वागारसी नयरी,
काममहावणे चेइए अलंगाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारियासेसं
जहा कालीए नवरं धरणस्स अगमहिस्सित्ताए उववाओ, साइरेकं

छे के डे लहन्त ! यावत् मुक्ति प्राप्त करेला श्रमणु भगवान् महावीर धर्मक-
थाना त्रीणवर्गना ५४ बोधनअध्ययनो प्रज्ञप्त कथां छे, तो तेओभांधी डे लहंत !
ते ओ यावत् मुक्ति प्राप्त श्रमणु भगवान् महावीर पडेला अध्ययननो शो
अर्थ प्ररूपित कथो छे ? आ प्रश्नना समाधानमां श्री सुधर्मा स्वामी तेभने
कडे छे के (एवं खलु जंबू !) डे जंबू ! तभारा प्रश्ननो उत्तर आ प्रभाछे छे के

(तेणं कालेणं तेणं समएणं अलादेवी धरणाए रायहाणीए अलावडंसए
भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं काली गमणं जाव गट्ठविहिं उवदंसेत्ता पडिगया,
पुण्वभवपुच्छा, वागारसी नयरी, काममहावणे चेइए, अलं गाहावई, अलासिरी
भारिया, अलादारिया सेसं जहा कालीए नवरं धरणस्स अगमहिस्सित्ताए उव-

अजगार्धमावृत्तवर्णिनी टी० शु० २ व० २ अलादीदेवीनां करिष्वर्णनम् ८२३

अद्वपलिओवमं ठिई सेस तहेव, एव खलु णिवखेवओ पढमज्झयणस्स) उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। वहाँ गुण-शिलक नाम का उद्यान था। उसमें तीर्थंकर परंपरानुसार विहार करते हुए भ्रमण भगवान् महावीर आकर ठहरे हुए थे। नगर की परिषदा प्रभु को वंदना के लिये अपने २ घर से निकलकर उस उद्यान में आई प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। सुनकर लोगों ने यावत् प्रभु की पर्युपासना की। उसी समय वहाँ पर धरणेन्द्र की अग्रमहिषी अलादेवी जो धरणा राजधानी में अलावतंसक इस नाम के भवन में रहती थी—और जिसके बैठने के सिंहासन का नाम अला था प्रभु को वंदना आदि करने के निमित्त आई। वहाँ आकर उस ने नाट्यविधि दिखलाई। दिखलाकर वह फिर वहाँ से पीछे अपने स्थान पर गई। उसके आते ही गौतम स्वामी ने भ्रमण भगवान् महावीर से उसका पूर्वभव पूछा तब भगवान् ने उनसे इस प्रकार कहा वाणारसी नामकी नगरी थी—उसमें काम महावन नाम का उद्यान था। उसमें अलनाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या “अल श्री” इस नामकी थी। इस की एक पुत्री थी जिसका नाम अला था। इसका—अला का शेष कथानक, कालीदेवी का

वाओ, साइरेगं अद्वपलिओवमं ठिई सेसं तहेव, एवं खलु णिवखेवओ पढमज्झयणस्स)

ते काणे अने ते समये राजगृह नामे नगर હતું. તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું. તેમાં તીર્થંકર પરંપરા મુજબ ગિહાર કરતાં પધારીને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે મુકામ કર્યો હતો. નગરની પરિષદ પ્રભુને વંદન કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળીને તે ઉદ્યાનમાં આવી. પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને લોકોએ યાવત્ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી, તે વખતે ત્યાં ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) અલાદેવી કે જે ધરણુ રાજધાનીમાં અલાવતંસક આ નામના ભવનમાં રહેતી હતી, અને જેને બેસવાના સિંહાસનનું નામ અલા હતું—પ્રભુને વંદના કરવા માટે આવી. ત્યાં આવીને તેણે નાટ્યવિધિનું પ્રદર્શન કર્યું, પ્રદર્શન કરીને તે ત્યાંથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી. તેના ગયા પછી તરત જ ગૌતમ સ્વામીએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને તેનો પૂર્વભવ પૂછ્યો. ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે વાણારસી નામે નગરી હતી, તેમાં કામમહાવન નામે ઉદ્યાન હતું, તેમાં અલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તેની ભાર્યાનું નામ અલશ્રી હતું. તેને એક પુત્રી હતી તેનું નામ અલા હતું. અલા ત્રિષેતું શેષ કથાનક પહેલાં

૮૨૪

જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞાત્રુષ્ટે

સાધ્નિકમ્ અર્ધપલ્લયોપમં સ્થિતિઃ । શેષં તથૈવ । एवं खलु निक्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य । एवं क्रमात् शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युदपि ६ । सर्वा एता धरणस्य=धरणेन्द्रस्य अग्रमहिष्य एव । एतानि षड् अध्ययनानि वेणुदेव-स्यापि । ' अविसेसिया ' अविशेषितानि=निर्विशेषानि सदृशानि भणितव्यानि ।

जैसा कथानक पीछे वर्णित किया जा चुका है वैसा ही जानना चाहिये । उसके वर्णन में और इसके वर्णन में केवल अन्तर इतना ही है कि यह धरणेन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में उत्पन्न हुई और इसकी स्थिति १॥ पल्य से कुछ अधिक है । बाकी का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के जैसा ही है । इस तरह यह द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का निक्षेपक-उप-संहार-है ।-(एवं क्रमा सक्का, सतेरा, सोयानगी, इंदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स अगमहिसीओ, एवं, एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एवं जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं-चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वओ वि वाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ८ ॥

(તડઓ વગ્ગો સમત્તો) હસી ક્રમ સે શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદા-મની ૪, ઇન્દ્રા ૫, ઘનવિદ્યુત્ ૬, યે સવ દેવિયાં ધરણેન્દ્ર કી હી અગ્ર-મહિષિયાં થીં । હસ તરહ કે ૬ અધ્યયન વેણુદેવ કે મી હૈં । ઓર ઇનકા

વર્ણવેલા કાલી દેવીના કથાનકની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ. તેના અને આના વર્ણનમાં તફાવત ફક્ત એટલો જ છે કે આ ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષીના રૂપમાં ઉત્પન્ન થઈ અને આની સ્થિતિ ૧॥ પલ્ય કરતાં કંઈક વધારે છે. આનું બાકીનું વર્ણન કાલી દેવી જેવું જ છે. આ પ્રમાણે આ બીજા વર્ગના પહેલા અધ્યયનનો નિષેપક ઉપસંહાર છે.

(एवं क्रमा सक्का सतेरा, सोयामणी, इंदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स, अगमहिसीओ एवं एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसे सिया भाणियव्वा, एवं जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणि-ल्लाणं इंदाणं-चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वाओ वि वाणारसीए काम महा-वणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ॥ ८ ॥ तडओ वग्गो समत्तो)

આ અનુક્રમ પ્રમાણે જ શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદામની ૪, ઇન્દ્રા ૫, ઘનવિદ્યુત ૬, આ બધી દેવીઓ ધરણેન્દ્રની જ અગ્રમહિષીઓ હોતી. આ પ્રમાણે જ ૬ અધ્યયનો વેણુ દેવીનાં પણ છે અને એમનું વર્ણન ધરણેન્દ્રના

અનગારઘર્મામૃતવર્ણિની ટી૦ શુ૦૨ ઘ૦ ૩ રૂપાદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૨૫

एवं यावत् घोषस्यापि=घोषेन्द्रस्यापि, एतान्येव षड् अध्ययनानि सन्ति । एष्वे-
तानि दाक्षिणात्यानामिन्द्राणां चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि भवन्ति । सर्वा अपि पूर्वो-
क्तादेव्यः पूर्वभवे वाणारस्यां जाताः काममहावने चैत्ये भगवतः पार्श्वस्थार्हतः
समीपे प्रव्रजिताः, तृतीयवर्गस्य निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यमवन्धो विज्ञेयः ॥ सू०८ ।

॥ इति धर्मकथानां तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः प्रारभ्यते—‘चउत्थस्स’ इत्यादि ।

મૂલમ્—ચઉત્થસ્સ ઉઠ્ઠેવઓ, એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેણં જાવ
સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં ચઉત્થવગ્ગસ્સ ચઉપ્પણ્ણં અજ્ઞયણા
પણ્ણત્તા, તં જહા—પઢમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણ્ણમ્ અજ્ઞયણે
પઢમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ ઉઠ્ઠેવઓ એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં
તેણં સમણ્ણં રાયગિહે સમોસરણં જાવ પરિસા પજ્જુવાસદ્ધ, તેણં
કાલેણં તેણં સમણ્ણં રૂપા દેવી રૂપાણંદા રાયહાણી રૂયગવ-
વહિંસપ્ ભવણે રૂયગંસિ સીહાસણંસિ જહા કાલીંણ તહા નવરં
પુઠ્ઠવભવે ચંપાણ પુણ્ણભદ્દે ચેદ્ધણ રૂયગે ગાહાવદ્ધે રૂયગસિરી
ભારિયા રૂપા દારિયા સેસં તહેવ, ણવરં મૂયાણંદઅગ્ગમહિસિ-

વર્ણન 'મી ધરણેન્દ્ર' કે વર્ણન જૈસા હી હૈ । ઘોષેન્દ્રકે મી યે હી ૬ અધ્ય-
યન હસી તરહ કે હૈ । હસ તરહ દક્ષિણ દિશા સંબન્ધી હન્દ્રોં કે ૦ ૫૪
અધ્યયન હો જાતે હૈ । યે સબ દેવિયાં પૂર્વભવમેં વાણારસી મેં ઉત્પન્ન હુઈ
ઔર કામમહાવન ઉદ્યાનમેં ભગવાન્ પ્રાર્થનાથ અર્હત પ્રભુકે સમીપ દીક્ષિત
હુઈ । હસ તરહસે ધર્મકથાકા યહ “તૃતીય વર્ગ સમાપ્ત હુઆ હૈ ।”

વર્ણન જેવું જ છે. ઘોષેન્દ્રના પશુ આ જાતનાં જ ૬ અધ્યયનો છે. આ
પ્રમાણે દક્ષિણ દિશા સંબન્ધી હન્દ્રોના ૫૪ અધ્યયનો થઈ જાય છે. આ બધી
દેવીઓ પૂર્વભવમાં વાણારસીમાં ઉત્પન્ન થઈ હતી અને કામમહાવન ઉદ્યાનમાં
ભગવાન પાર્શ્વનાથ અહીં ત પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ. આ પ્રમાણે ધર્મકથાનો
આ ત્રીજો વર્ગ પૂરા થયો છે.

૯૧૬

જાતાધર્મકથાજ્ઞસ્વરૂપે

ત્રાણ ઉવવાઓ દેસૂળં પાલિઓવમં ઠિઈ ણિક્કલેવઓ એવં સુરુ-
યાવિ રૂયંસાવિ રૂયગાવઈવિ રૂયકંતાવિ રૂયપ્પભાવિ, યયાઓ
ચેવ ઉત્તરિહ્ણાણં ઇંદાણં ભાણિયવ્વાઓ જાવ મહાધોસસ્સ,
ણિક્કલેવઓ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ॥ સૂ. ૧ ॥

॥ ચઉત્થો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૪ ॥

ટીકા—‘ચઉત્થસ્સ-ચતુર્થવર્ગસ્ય’ ‘ઉવલેવઓ’ ઉત્ત્કેષકઃ=પારમ્મવાક્ય-
પાઠોઽન્વચ્યઃ । સુધર્મસ્વામી પ્રાહ-એવં સ્વલુ જંબૂઃ । શ્રમણેન યાવત્સમ્પા-
પ્તેન ધર્મકથાનાં ચતુર્થવર્ગસ્ય ચતુષ્પચ્ચાશત્ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તદયથા પ્રથમ-
અધ્યયનં યાવત્-ચતુષ્પચ્ચાશત્તમમધ્યયનમ્ । તેષુ પ્રથમસ્યાધ્યયનસ્ય ઉત્ત્કેષકઃ ।
સુધર્મસ્વામીપ્રાહ-એવં સ્વલુ હે જંબૂઃ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે સમ-

—:ચતુર્થ વર્ગ પ્રારંભ:—

‘ચઉત્થસ્સ ઉવલેવઓ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ:—(ચઉત્થસ્સ ઉવલેવઓ) ચતુર્થ વર્ગ કા પ્રારંભ કિસ
તરહ સે હુઆ હૈ—ઈસ પ્રકાર-જંબૂસ્વામી કે પૂછને પર શ્રી સુધર્મસ્વામી
उनसे कहते हैं कि (एवं स्वलु जंबू) हे जंबू ! सुनो—(समणेणं जाव
संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पणत्ता तं
जहा पढमे अज्झयणे जाव चउप्पणाइ मे अज्झयणे) યાવત્ સુક્તિસ્થાન
કો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ધર્મકથા કે ચતુર્થ વર્ગ કે ૫૪
અધ્યયન પ્રજ્ઞસ કિયે હૈ—વે પ્રથમ અધ્યયન સે લેકર ૫૪ વે અધ્યયન તક
હૈ—(પદમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ ઉવલેવઓ એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં

ચોથો વર્ગ પ્રારંભ.

‘ચઉત્થસ્સ ઉવલેવઓ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—(ચઉત્થસ્સ ઉવલેવઓ) ચોથા વર્ગની શરૂઆત કેવી રીતે
થઈ છે ? આ જાતનો જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ શ્રી સુધર્મ સ્વામી
તેમને કહે છે કે (એવં સ્વલુ જંબૂ) હે જંબૂ ! સાંભળો,

(સમણેણં જાવ સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં ચઉત્થવગ્ગસ્સ ચઉપ્પણ્ણં અજ્ઞયણા
પણત્તા તં જહા પદમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણ્ણામે અજ્ઞયણે)

યાવત્ સુક્તિસ્થાનને પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથાના ચોથા
વર્ગના ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞસ કર્યા છે. તેઓ પહેલા અધ્યયનથી માંડીને ૫૪
મા અધ્યયન સુધી છે.

भैरवगर्भमायुतवर्षिणी टीका ॥ २०२ ॥ ४ रूपदेवीनां चरित्रवर्णनम् ॥ ८२७ ॥

वसरणं=भगवतः श्री महावीरस्वामिनः समागमनं संज्ञातं, यावत् परिषद् भगवन्तं पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रपहिषी रूप-कावतंसके भवने रूपके सिंहासने यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तथा=तद्वत् समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रूपा देवी, रूपाणंदा रायहाणी रूपगवडिसए भवणे रूपगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभदे चेइए रूपगे गाहावई रूपगसिरी भारिया, रूपा दारिया, सेसं तहेव, नवरं भूयाणंद अगमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई निक्खेवओ, एवं सुरुवया वि, रूपंसावि, रूपगाहावई वि रूपकंता वि रूपप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जंबू ! उत्क्षेपक इस प्रकार है-उसकाल में और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ। परिषद् प्रभु को वंदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहां प्रभु विराजमान थे वहां आई। प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया। यावत् सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में भूतानंद इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को वंदना के लिये

(पदमस्स अज्झयगस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रूपादेवी, रूपाणंदा, रायहाणी रूपगवडिसए भवणे रूपगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभदे चेइए रूपगे गाहावई रूपगसिरी भारिया, रूपा दारिया, सेसं तहेव, नवरं भूयाणंद अगमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई निक्खेवओ, एवं सुरुवया वि, रूपंसावि, रूपगाहावई, वि रूपकंता वि रूपप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

हे जंबू ! पड़ेदा अध्ययनते उत्क्षेपक आ प्रभावे छे-ते काले अने ते समये राजगृह नगरमां महावीर स्वामीनुं आगमन थयुं. प्रभुने वंदना करवा भाटे परिषद पोतपोताने स्थानेथी नीकणीने जयां प्रभु विराजमान हुता त्यां आवी, प्रभुजे धर्माने उपदेश आय्ये। यावत् सोअे प्रभुनी पर्युपासना करी, ते काले अने ते समये भूतानंद इन्द्रनी अग्रदेवी (पटराणी) जेतुं नाम इया देवी हुतुं-प्रभुने वंदना करवा भाटे आवी. तेना रडेवाना खवननुं

૮૨૮

શ્રીતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર

રૂપાદેવ્યા અપિ વિજ્ઞેયમ્, નવરં=વિશેષોઽત્રાયમ્-પૂર્વભવે ચમ્પાયાં નગર્યાં પૂર્ણ-
ભદ્રં ચૈત્યમ્, રૂપકો ગાથાપતિઃ, રૂપશ્રીભાર્યા, રૂપાદારિકા, શેષં તથૈવ નવરં
ભૂતાનન્દાગ્રમહિષીતયા તસ્યા ઉપપાતઃ જન્મ । દેશોનં પલ્યોપમં સ્થિતિઃ । નિક્ષે-
પકઃ=સમાપ્તિવાક્યરૂપઃ પ્રવન્ધોઽત્ર વિજ્ઞેયઃ । एवं सुरूपाऽपि २, रूपांशाऽपि ३,
रूपकावत्यपि ४, रूपकान्तापि ५, रूपप्रभापि ६ । एताश्चैव उत्तरीयाणामिन्द्राणां

आई । इसके रहने के भवन का नाम रूपकावतंसक था । और जिस
सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम रूपक था । पीछे जिस प्रकार
का वर्णन कालीदेवी का किया गया है—उसी प्रकार का इनका भी वर्णन
जानना चाहिये । उसके पूर्वभव का वर्णन इस प्रकार है—यह पूर्वभव में
चंपा नामकी नगरी में कि जिसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था और
रूपक गाथापति जिस में रहता था उस गाथापति की यह रूपश्री भार्या
से “रूपा दारिका” इस नाम से पुत्री उत्पन्न हुई थी । बाद में प्रभु का
उपदेश सुनकर यह प्रतिबोध को प्राप्त हो गई और कालीदेवी की तरह
यह आर्या बन गई इसके आगे जिस तरह का काली देवी का वृत्तान्त
बना इसी तरह से इसका भी जानना चाहिये । जब यह काल अवसर
काल कर गई तब यह भूतानंद इन्द्र की अग्रमहिषीरूप से उत्पन्न हुई ।
वहाँ इसकी कुछकम १, पल्य की स्थिति है । इस प्रकार रूपा देवी के
कथानक का यह निक्षेपक है । इसी तरह से (२) सुरूपा (३) रूपांशा
(४) रूपकावती (५) रूपकान्ता और ६ रूपप्रभा का भी वर्णन जानना

નામ રૂપકાવતંસક હતું અને જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનું નામ
રૂપક હતું. જેમ પહેલાં કાલી દેવીનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેમજ આનું
વર્ણન પણ સમગ્ર લેવું જોઈએ. તેના પૂર્વભવનું વર્ણન આ પ્રમાણે છે—
આ પૂર્વભવમાં ચંપા નામની નગરીમાં—કે જેમાં પૂર્ણભદ્રા નામે ઉદ્યાન હતું
અને રૂપક ગાથાપતિ જેમાં રહેતો હતો. તે ગાથાપતિની આ રૂપશ્રી ભાર્યાથી
'રૂપાદારિકા' આ નામથી પુત્રી રૂપે ઉત્પન્ન થઈ હતી. ત્યારપછી પ્રભુને
ઉપદેશ સાંભળીને એ બોધને પ્રાપ્ત થઈ અને કાલી દેવીની જેમ આર્યા થઈ
ગઈ. એના પછીની વિગત કાલી દેવીની હતી તેવી જ એની પણ સમગ્ર લેવી
જોઈએ. જ્યારે તેણે કાળ અવસરે કાળ કર્યો ત્યારે આ ભૂતાનંદ ઇન્દ્રની
અગ્રમહિષી (પટરાણી) ના રૂપમાં ઉત્પન્ન થઈ. ત્યાં તેની થોડી ઓછી
એક પદ્યની સ્થિતિ છે. આ પ્રમાણે રૂપાદેવીના કથાનકનો આ નિક્ષેપક છે.
આ પ્રમાણે જ (૨) સુરૂપા, (૩) રૂપાંશા, (૪) રૂપકાવતી, (૫) રૂપકાંતા અને

ભનૈનારધમોત્તમચિળી ટીકા શુ૦ ૨ લ૦ ૫ કમલાદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૨૬

મણિતવ્યાઃ=અગ્રમહિષ્યો વક્તવ્યાઃ યાવત્ મહાઘોષસ્ય । મહાઘોષેન્દ્રસ્ય । નિક્ષેપ-
કથતુર્થવર્ગસ્ય ॥ સુ૦ ૯ ॥

॥ ઇતિ ધર્મકથાનાં ચતુર્થો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૪ ॥

અથ પશ્ચમો વર્ગઃ પ્રારમ્ભ્યતે-પંચમવગ્ગસ્ત ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-પંચમવગ્ગસ્ત ઉત્તરેવઓ, એવં સ્વલુ જંબૂ ! જાવ
વક્તીસં અજ્ઞયણા ઘણતા, તંજહા-કમલા? કમલપ્પમાર
ષેવ, ઉપ્પલા? ય સુદંસણા? રૂવવર્ડ? બહુરૂવા?, સુરૂવા? સુભગાવિય? ॥ ૧ ॥ પુણ્ણા? બહુપુત્તિયા? ચેવ, ઉત્તમા? તારયાવિય? ૧૨ । પડમા? વસુમતી? ચેવ, કળગા? કળ-
ગપ્પમા? ૧૬ ॥ ૨ ॥ વડેસા? કેડમર્ડ? ચેવ, વડરસેણા? રડ્ડપ્પિયા? ૨૦ । રંહિણી? નવમિયા? ચેવ, હિરી? પુપ્ફ-
વર્ડિય? ૨૪ ॥ ૩ ॥ મુયગા? મુયગવર્ડ? ચેવ, મહાકચ્છો-
ડપરાડિયા? ૨૮ । સુઘોસા? વિમલા? ચેવ, સુસ્સરા? યસર-
સવર્ડ? ૩૨ ॥ ૪ ॥ ઉત્તરેવઓ પદમજ્ઞયણસ્ત, એવં સ્વલુ જંબૂ !
તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહેસમોસરણં જાવ પરિસા
પજ્જુવાસડં, તેણં કાલેણં તેણં સમણં કમલાદેવી કમલા
રાયહાણી કમલવડેસા ભવણે કમલંસિ સીહાસણંસિ સેસં
જહા કાલી કાલેણં તહેવ ણવરં પુવ્વભવે નાગપુરે નયરે સહસંવ-

ચાહિયે । યે દેવિયાં ભૂતાનંદ ઇન્દ્ર કી તરહ ઉત્તરીય ઇન્દ્રોં કી બી અગ્ર-
મહિષિયાં હૈં । ઓર યે હી મહાઘોષેન્દ્ર કી બી હૈં । ઇસ પ્રકાર યહ ચતુર્થ
વર્ગ કા નિક્ષેપક (સ્વરૂપ) હૈ ।

॥ ચતુર્થવર્ગ સમાપ્ત ॥

(૧) ૩૫પ્રમાણું વર્ણનં પશુ સમજી લેવું જોઈએ. આ બધી દેવીઓ ભૂતાનંદ
ઈન્દ્રની જેમ ઉત્તરીય ઇન્દ્રોની પશુ અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) છે. અને
મહાઘોષેન્દ્રની પશુ તેઓજ પટરાણીઓ છે. આ પ્રમાણે આ ચોથા વર્ગનો
નિક્ષેપક છે.

ચોથો વર્ગ સમાપ્ત.

१३०

काताधर्मकथावृत्तौ

वणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए
कमला दारिया पासस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिता-
यकुमारिंदस्स अग्गमहिंसी अद्धपलिओवमं ठिई, एवं सेसा
वि अज्झयणा दाहिणिह्णाणं वाणमंतररिंदाणं भाणियंवाओ
संवाओ णागपुरे सहस्संबवणे उज्जाणे माया पिया धूया सरि-
सनामया, ठिई अद्धपलिओवमं ॥ सू० १० ॥

॥ पंचमो वर्गो समप्तो ॥ ५ ॥

टीका—‘पंचमवर्गस्स’ पञ्चमवर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामी प्राह—एवं
खलु जंबूः । इत्यादि, यावत् द्वात्रिंशद् अध्ययनानि कमलादि नामकानि प्रश्न-
प्तानि, तथा—तेषां नामानि गाथा चतुष्टयेन प्राह—

“कमला १ कमलप्रभा २ चैव, उत्पला ३ च सुदर्शना ४ ।

रूपवती ५ बहुरूपा ६, सुरूपा ७ सुभगा ८ ऽपि च ॥ १ ॥

—पंचम वर्ग प्रारंभः—

‘पंचम वर्गस्स उक्खेवओ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(पंचमवर्गस्स उक्खेवओ) हे भदंत ! पांचवें वर्ग का
उत्क्षेपक प्रारंभ का स्वरूप श्रमण भगवान् महावीर ने किस प्रकार से
प्ररूपित किया है ? इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर सुधर्मस्वामी ने
उनसे इस प्रकार कहा—(एवं खलु जंबू !) हे जंबू ! सुनो—वह इस तरह
से है—(जाव वत्तीसं अज्झयणा पणत्ता—तं जहा (१) कमला (२) कम-
लप्पभा चैव, (३) उत्पला य (४) सुदर्शना । (५) रूपवती (६) बहुरूपा (७)
सुरूपा (८) सुभगाविय, । (९) पुण्णा (१०) बहुपुत्तिया चैव (११) उत्तमा
(१२) तारयाविय । (१३) पउमा (१४) वसुमती चैव (१५) कणगा (१६)
कणगप्पभा (१७) वड्डसा (१८) केउमई चैव (१९) बहरसेणा (२०) रइ-

पांथमो वर्गो प्रारंभः ।

‘पंचम वर्गस्स उक्खेवओ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(पंचम वर्गस्स उक्खेवओ) हे भदंत ! पांचवा वर्गना
उत्क्षेपक-प्रारंभ-तुं स्वरूप श्रमण भगवान् महावीर ने कौन सी प्ररूपित कियुं
छे ? ओ प्रभावे जंबू स्वामीना प्रश्न कर्था प्राह सुधर्मा स्वामीओ तेभने
आ प्रभावे कहुं छे—(एवं खलु जंबू !) हे जंबू ! सांलणे, ते आ प्रभावे छे—

(जाव वत्तीसं अज्झयणा पणत्ता—तं जहा (१) कमला (२) कमलप्पभा
चैव, (३) उत्पला य, (४) सुदर्शना (५) रूपवती (६) बहुरूपा (७) सुरूपा (८)

અનગારાધર્મામૃતચરિત્રી ટી૦ શ્રુ૦ ૨ વ૦ ૫ કમલાદિદેવીનાંચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૩૧

પૂર્ણા ૯ બહુપુત્રિકા ૧૦ ચૈવ, ઉત્તમા ૧૧ તારકા ૧૨ ડપિ ચ ।
 પદ્મા ૧૩ વસુમતી ૧૪ ચૈવ, કનકા ૧૫ કનકપ્રભા ૧૬ ॥ ૨ ॥
 અવતંસા ૧૭ કેતુમતી ૧૮ ચૈવ, વજ્રસેના ૧૯ રતિપ્રિયા ૨૦ ।
 રોહિણી ૨૧ નવમિકા ૨૨ ચૈવ, હ્રીઃ ૨૩ પુષ્પવતી ૨૪ તિ ચ ॥ ૩ ॥
 શુભગા ૨૫ શુભગવતી ૨૬ ચૈવ, મહાકચ્છા ૨૭ અપરાજિતા ૨૮ ॥
 સુગોષા ૨૯ વિમલા ૩૦ ચૈવ, સુસ્વરા ૩૧ ચ સરસ્વતી ૩૨ ॥ ૪ ॥

પ્રિયા । (૨૧) રોહિણી (૨૨) નવમિયા ચેવ (૨૩) હિરી (૨૪) પુષ્પવર્દૈય ।
 (૨૫) શુયગા (૨૬) શુયગવર્દૈ ચેવ (૨૭) મહાકચ્છા (૨૮) પરાઈયા (૨૯)
 સુગોષા (૩૦) વિમલા ચેવ (૩૧) સુસ્સરા (૩૨) સરસવર્દૈ) । સ પંચમ
 વર્ગ કે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કમલાદિ નામવાલે ૩૨ અધ્યયન
 પ્રજ્ઞાસ કિયે હૈં । ઇનકે નામ સૂત્રકાર ચાર ગાથાઓ દ્વારા ઇસ તરહ સે
 પ્રકટ કરતે હૈં । કમલા ૧, કમલપ્રભા ૨, ઉત્પલા ૩, સુદર્શના ૪, રૂપ-
 વતી ૫, બહુરૂપા, ૬, સુરૂપા ૭, સુભગા ૮, પૂર્ણા ૯, બહુપુત્રિકા ૧૦,
 ઉત્તમા ૧૧ તારકા ૧૨, પદ્મા ૧૩, વસુમતી ૧૪, કનકા ૧૫ કનકપ્રભા
 ૧૬, અવતંસા ૧૭, કેતુમતી, ૧૮, વજ્રસેના ૧૯, રતિપ્રિયા ૨૦, રોહિણી
 ૨૧, નવમિકા ૨૨, હ્રી ૨૩, પુષ્પવતી, ૨૪, શુભગા, ૨૫, શુભગવતી ૨૬,
 મહાકચ્છા ૨૭, અપરાજિતા ૨૮, સુગોષા ૨૯, વિમલા ૩૦, । સુસ્વરા

સુભગાવિય, (૯) પુણા (૧૦) બહુપુત્રિયા ચેવ (૧૧) ઉત્તમા (૧૨) તાર્યાવિય,
 (૧૩) પડમા, (૧૪) વસુમતી ચેવ (૧૫) કળગા, (૧૬) કળગપ્પમા, (૧૭)
 વર્ડેસા, (૧૮) કેડમદ ચેવ, (૧૯) વડસસેના, (૨૦) રદ્ધિપિયા, (૨૧) રોહિણી,
 (૨૨) નવમિયા ચેવ (૨૩) હિરી (૨૪) પુષ્પવર્દૈય, (૨૫) શુયગા (૨૬) શુય-
 ગવર્દૈ ચેવ, (૨૭) મહાકચ્છા (૨૮) પરાઈયા, (૨૯) સુગોષા (૩૦) વિમલા ચેવ
 (૩૧) સુસ્સરા, (૩૨) ય સરસવર્દૈ)

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ પંચમા વર્ગના કમલા વગેરે નામેવાળા
 ૩૨ અધ્યયનો પ્રજ્ઞાસ કર્યા છે. એમનાં નામે સૂત્રકાર ચાર ગાથાઓ વડે એ
 પ્રમાણે પ્રકટ કરે છે—કમલા (૧), કમલપ્રભા (૨), ઉત્પલા (૩), સુદર્શના
 (૪), રૂપવતી (૫), બહુરૂપા (૬), સુરૂપા (૭), સુભગા (૮), પૂર્ણા (૯), બહુ-
 પુત્રિકા (૧૦), ઉત્તમા (૧૧), તારકા (૧૨), પદ્મા (૧૩), વસુમતી (૧૪),
 કનકા (૧૫), કનકપ્રભા (૧૬), અવતંસા (૧૭), કેતુમતી (૧૮), વજ્રસેના
 (૧૯), રતિપ્રિયા, (૨૦), રોહિણી (૨૧), નવમિકા (૨૨), હ્રી (૨૩), પુષ્પ-
 વતી (૨૪) શુભગા (૨૫), શુભગવતી (૨૬), મહાકચ્છા (૨૭), અપરાજિતા
 (૨૮), સુગોષા (૨૯), વિમલા (૩૦), સુસ્વરા (૩૧), સરસ્વતી (૩૨).

ઉત્તરોક્તકઃ પ્રથમાધ્યયનસ્ય । જન્મ્સ્વામિના પૃષ્ઠે સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे 'समोसरणं' समवसरणं=भग ३१, सरस्वती ३२, । (उक्त्वेवओ पढमज्झयणस्स एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएणं कमला देवी, कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भरियाए कमला दारिया पासस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिसायकु-मारिंदस्स अग्गमहिंसी अद्धपलिओवमं ठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वओ णागपुरे सहसं-ववणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं) इसके बाद जंबूस्वामी ने श्री सुधर्मास्वामी से पूछा कि इनमें से कमला नामका जो प्रथम अध्ययन है उसका उत्तरेपक किस तरह से है-इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर उनसे सुधर्मास्वामी ने कहा-कि हे जंबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल में और उस समय में राजगृह नामका नगर था। उसमें भगवान् महावीर का आग-मन हुआ। यावत् वहां की परिषद् प्रभु को वंदना करने के लिये आई।

(उक्त्वेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरणं जाव परिसापज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएणं कमला-देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहा-वइस्स कमलसिरीए भरियाए कमला दारिया पासस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिसाय कुमारिंदस्स अग्गमहिंसी अद्धपलिओवमं ठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे मायापिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं)

ત્યારપછી જંબૂ સ્વામીએ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યું કે આ બધામાં કમલા નામે જે પહેલું અધ્યયન છે તેનો ઉત્તરોક્ત કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ તેમને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તેમાં ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું. યાવત્ નગરની પરિષદ તેમને વંદના કરવા માટે આવી. પ્રભુએ સૌને

कमलप्रभामासुतप्रसिद्धी टी० शु०२ व० ५ कमलादिदेवीनां चरित्रवर्णनम् ८३३

वन् महावीरस्वामी समाग्रमनं संजातं, यावत् परिषद् भगवन्तं पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये कमला देवी कमलायां राजधान्यां, कमलावतंसके भवने कमले सिंहासने, शेषं यथा-काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तथैवाऽस्या अपि, नवरत्न विशेषोऽयम्-पूर्वभवे नागपुरं नगरं, सहस्राश्रवनमुद्यानम्, कमलस्य गाथापतेः कमलश्रियो भार्यायाः कमला दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्य अन्तिके 'निकवन्ता' निष्क्रान्ता=प्रव्रजिता, कालस्य पिशाचकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषी। अर्द्धपत्न्योपमं स्थितिः। एवं शेषाण्यपि कमलप्रभादिनामकान्यपि एकत्रिशद् अध्य-

प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। परिषद् ने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में कमला नाम की देवी, कमला राजधानी में कमलावतंसक भवन में रहती थी। उस के सिंहासन का नाम कमला था। इसके आगे का समस्त वर्णन कालीदेवी के वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। परन्तु इसमें जो विशेषता है वह इस प्रकार है-जब गौतमस्वामी ने उसके-अर्थात् देवी के चले जावे के बाद उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा-तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-पूर्वभव के इसके नगर का नाम नागपुर था-उसमें सहस्राश्रवन् नाम का उद्यान था। उस नगर में कमल नामका गाथापति रहता था।-उसकी भार्या का नाम कमला श्री था। इनके एक पुत्री थी जिस का नाम कमला था। वह काललब्धि के आनेपर पुरुषदानीय-पुरुष श्रेष्ठ-पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु के समीप प्रव्रजित हो गई। बाद में मरने पर वह काल नाम के पिशाच कुमारेन्द्र की अग्रमहिषी बनी। वहां इसकी स्थिति अर्द्धपत्न्य की है।

धर्मना उपदेश आये। परिषदे प्रभुनी पर्युपासना करी। ते काले अने ते समये कमला नामनी देवी, कमला राजधानीमां कमलावतंसक भवनमां रहेली હતી। तेना सिंहासननुं नाम कमला હતું. એના પછીતું બધું વર્ણન કालી देवीना वर्णननी જેમ જે સર્વજ્ઞ દેવું જેમજે. પરંતુ આમાં જે કંઈ વિશેષતા છે તે એ પ્રમાણે છે-કે બ્યારે ગૌતમ સ્વામીએ દેવીના ગયા પછી તેના પૂર્વ ભવ વિષેની વિગત પૂછી ત્યારે પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે આના પૂર્વ ભવના નગરનું નામ નાગપુર હતું. તેમાં સહસ્રાશ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું. તે નગરમાં કમલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તેની પત્નીનું નામ કમલાશ્રી હતું. એમને એક દિકરી હતી તેનું નામ કમલા હતું, તે યોગ્ય કાળલબ્ધિના આવસરે પુરુષાદનીય-પુરુષ શ્રેષ્ઠ-પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ગઇ. ત્યારપછી મૃત્યુ થયા બાદ તે કાલ નામના પિશાચ કુમારેન્દ્રની અગ્ર-

૮૧૪

જાતાધર્મકથાસૂત્ર

યજ્ઞાનિ દક્ષિણાત્યાનાં વાનવ્યંતરેન્દ્રાણામગ્રમહિષીણાં મળિતરૂપાનિ । સર્વાશ્રેતાઃ
પૂર્વભવે નાગપુરે નગરે સંજાતાઃ, સહસ્રામ્રવને ઉદ્યાને ભગવત્પાર્શ્વપ્રમોઃ સમીપે પ્રવ્ર-
જિતાઃ । માતાપિતા દુહિતા સદૃશનામકઃ । આસાં સ્થિતિરર્ધપલ્યોપમમ્ ॥સૂ૦ ૧૦॥

॥ ઇતિ ધર્મકથાનાં પञ्चમો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૫ ॥

મૂલમ્—છટ્ટોવિ વગ્ગો પંચમવગ્ગસરિસો, જવરં મહાકાલા-
દીપં ઉત્તરિહ્ણાણં ઇંદાણં અગ્ગમહિસીઓ પુઠ્ઠભવે સાગેય-
નયરે ઉત્તરકુરુ ઉજ્જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસણામયા
સેસં તં ચેવ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ છટ્ટો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૬ ॥

શાકી જો ૩૧, કમલપ્રભા નામકે અધ્યયન હૈં વે દક્ષિણ દિશા સંબંધી
વાનવ્યંતરેન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કે હૈં એસા જાનના ચાહિયે । યે સબ
હી પૂર્વભવ મેં નાગપુર નગર મેં ઉત્પન્ન હુઈ-ઑર સહસ્રામ્રવન નામકે
ઉદ્યાન મેં ભગવાન પાર્શ્વનાથ કે સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ । इन अध्ययनों में
माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा
नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कम-
लप्रभ एवं पुत्री का नाम कमलप्रभा है-इसी तरह से और अध्ययनों में
भी जानना चाहिये । इन सब देवियों की स्थिति अर्धपल्य की है ॥सू१०॥

-:પંચમવર્ગ સમાપ્ત:-

મહિષી (પટરાણી) બની. ત્યાં તેની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે. શેષ જે ૩૧
કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સંબંધી વાનવ્યંતરેન્દ્રોની
અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) નાં સમજવાં જોઈએ. આ બધી પૂર્વભવમાં
નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમાં ભગવાન
પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ. આ બધાં અધ્યયનોમાં માતાપિતા તેમજ
પુત્રી આ સર્વે એક સરખાં નામવાળાં છે. જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યય-
નમાં માતાનું નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનું નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનું નામ
કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ બાણી લેવું જોઈએ. આ
બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે. ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત.

સંસ્કારધર્મામૃતવર્ણી ટી૦ શ્રુ.૨ વ.૬ કમલાદિદેવોનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૬૧

ટીકા—‘ છટ્ટો વિ ’ इत्यादि षष्ठोऽपि वर्गः पञ्चमवर्गसदृशः । नवरम्-एता-
वान् विशेषः—अत्र महाकालादीनाम् उत्तरीयाणामिन्द्राणामग्रमहिष्यः । एताः
सर्वाः पूर्वभवे साकेतनगरे उत्तरकुरुघाने पार्श्वप्रभुसमीपे प्रव्रजिताः मातरः पितरौ
दुहितरः सदृशनामकाः । शेषं तदेव सर्वं वाच्यम् ॥ सू० ११ ॥

इति धर्ककथानां षष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

—:षष्ठवર્ગ પ્રારંભ:—

‘ છટ્ટો વિ વર્ગો પંચમવર્ગસરિસો ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ:—(છટ્ટો વિ વર્ગો પંચમવર્ગસરિસો, નવરં મહાકાલાદીણં
ઉત્તરિલ્લાણં ઇંદાણં અગમહિસીઓ પુન્વમવે સાગેયનયરે ઉત્તરકુરુઝ-
જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસનામયા સેસં તં ચેવ ૧૧) છટ્ટા વર્ગ બી
પંચમવર્ગ કે જૈસે હી હૈ । પરંતુ હસમેં જો ડસકી અપેક્ષા વિશેષતા હૈ
—વહ હસ પ્રકાર હૈ—હસ અધ્યયન મેં ઉત્તર દિશા કે ઇન્દ્ર મહાકાલ
આદિકોં કી અગ્રમહિષિયોં કા વર્ણન હૈ । યે સબ અગ્રમહિષિયાં પૂર્વમ્ભ
મેં સાકેત નગર (અયોધ્યા) મેં ઉત્તર કુરુ નામકે ઉદ્યાન મેં પાર્શ્વપ્રભુ કે
સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ હૈ । માતા પિતા એવં પુત્રિયાં યે સબ એક જૈસા
નામવાલે હૈ । બાકી કા હનકે વિષય કા સમસ્ત કથન કાલીદેવી કે
વર્ણન જૈસા જાનના ચાહિયે ।

—:ષष्ठवर्ग समाप्त:—

છટ્ટો વર્ગ પ્રારંભ:—

‘ છટ્ટો વિ વર્ગો પંચમ વર્ગસરિસો ’ इत्यादि—

(છટ્ટો વિવર્ગો પંચમવર્ગસરિસો, નવરં મહાકાલાદીણં ઉત્તરિલ્લાણં ઇંદાણં
અગમહિસીઓ પુન્વમવે સાગેય નયરે ઉત્તરકુરુ ઝજાણે માયાપિયા ધૂયા સરિસ
નામયા સેસં તં ચેવ ૧૧)

છટ્ટો વર્ગ પશુ પાંચમા વર્ગના જેવો જ છે. પરંતુ આમાં જે તેના
કરતાં વિશેષતા છે, તે એ પ્રમાણે છે કે આ અધ્યયનમાં ઉત્તર દિશાના ઇન્દ્ર
મહાકાલ વગેરેની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) નું વર્ણન છે. આ બધી
અગ્રમહિષીઓ પૂર્વભવમાં સાકેત નગરમાં ઉત્તરકુરુ નામના ઉદ્યાનમાં પાર્શ્વ
પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે. માતાપિતા અને પુત્રીઓ બધાં એક સરખાં
નામવાળાં છે. એમના વિષેનું બાકીનું બધું કથન કાલી દેવીના વર્ણન જેવું
બાણુનું બોધબો.

છટ્ટો વર્ગ સમાપ્ત.

અથ સપ્તમો વર્ગઃ પ્રારભ્યતે—‘ સત્તમસ્સે ’ ત્યાદિ ।

મૂળમ્—સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉક્ખેવઓ, એવં યલુ જંબૂ ।
જાવ ચત્તારિ અજ્ઞયણા પળ્લણ્ણા, તં જહા—સૂરપ્પમા આયવા
અન્નિમાલી પમંકરા, પદમજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ, એવં યલુ
જંબૂ ! તેણં કાલેણં સૈણં સમણં રાયગિહે સમોસરણં જાવ
પરિસા પજ્જુવાસહ, તેણં કાલેણં તેણં સમણં સૂરપ્પમા દેવી
સૂરંસિ વિમાણંસિ સૂરપ્પમંસિ સીહાસણંસિ સેસં જહા કાલીએ
તહાણવરં પુવ્વભવે અરક્ખુરીએ નયરીએ સૂરપ્પમસ્સ ગાહાવ-
હસ્સ સૂરસિરીએ મારિયાએ સુરપ્પમા દારિયા સૂરસ્સ અગ્ગ-
મહિસી ઠિઈ અદ્ધપલિઓવમં પંચહિં વાસસણ્ણિં અબ્ભહિયં
સેસં જહા કાલીએ, એવં સેસાઓવિ સઘ્વાઓ અરક્ખુરીએ
નયરીએ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥ ॥ સત્તમો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘ સત્તમસ્સે ’ તિ-સપ્તમસ્ય વર્ગસ્ય ઉત્ક્રેષ્ઠકઃ । સુધર્મસ્વામીકથ-
યતિ-એવં યલુ હે જમ્બૂઃ ! યાવત્ ચત્તારિ અધ્યયનાનિ મજ્જન્તાનિ, તથા=તાનિ

—:સત્તમવર્ગ પ્રારંભ:—

‘ સત્તમસ્સવગ્ગસ્સ ઉક્ખેવઓ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ:—(સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉક્ખેવઓ એવં યલુ જંબૂ ! જાવ
ચત્તારિ અજ્ઞયણા પળ્લણ્ણા) હે મદંત ! સાતવે વર્ગ કા ઉત્ક્રેષ્ઠક કિસ
પ્રકાર હૈ ? હસ જંબૂસ્વામી કે પ્રદન કરને પર ગૌતમસ્વામી ઉનસે કહતે
હૈ—કિ હે જંબૂ ! સુનો, તુમ્હારે પ્રદન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ—અમ્મણ

સાતમો વર્ગ પ્રારંભ—

‘ સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉક્ખેવઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ:—(સત્તમાસ વગ્ગસ્સ ઉક્ખેવઓ એવં યલુ જંબૂ ! જાવ ચત્તારિ અજ્ઞ-
યણા પળ્લણ્ણા) હે મદંત ! સાતમા વર્ગના ઉત્ક્રેષ્ઠક કેવી રીતે છે ?

જમ્બૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાંભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે કે
હે જમ્બૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે અમણુ ભગવાન
મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના આર અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે.

भगवत्समाप्तवर्णिनी टी० भु २ व. ७ सूरप्रभादिदेवीनां चरित्रवर्णनम् ८३७

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमालिः ३, प्रभङ्कुरा ४ । प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीप्राह—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवद्वर्धमानस्वामिसमागमनम् यावत् परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेषं

भगवान् महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं—(तं जहा—सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी, सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार हैं सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्कुरा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जंबू ! इस प्रकार है—उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान् वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था—प्रभु का आगमन सुनकर वहां की परिषद् उनको वंदना करने के लिये उनके समीप गई—प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया । उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी—और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वंदना करने के लिये आई । इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(तं जहा—सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभादेवी, सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा)

ते चार अध्ययनो आ प्रभाण्णे छे—सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्कुरा ४, छे जंबू ! आ पधामां पडेला अध्ययनो उत्क्षेपक आ प्रभाण्णे छे के ते काले अने ते समये राजगृह नामना नगरमां भगवान् वर्धमान स्वामीनुं आगमन थयुं । प्रभुनुं आगमन सांखणीने त्यांनी परिषद तेभने वंदना करवा भाटे तेभनी पास गथं । प्रभुअे सौने धर्मो उपदेश आय्यो । उपदेश सांखणीने सौअे प्रभुनी पर्युपासना करी । ते काले अने ते समये सूरप्रभा नामनी ओक देवी—जे सूर विमानमां रहेती छती अने सूरप्रभ सिंहासन उपर भेसती छती—प्रभुनी वंदना करवा भाटे आवी । ओना पछीनुं

૯૧૯

કોતાચમૈકયાંજસુચૈ

यथा काल्याः=काली देव्या वर्णनं तथा विज्ञेयम् , नवरम्=अयं विशेषः=पूर्वभवे
अरक्षुर्यां नगर्यां सूरप्रभस्य गाथापतेः, सूरश्रियो भार्यायाः सूरप्रभा दारिका,
सूरस्य अग्रमहिषी स्थितिरर्द्धपल्योपमं पञ्चभिर्वर्षस्यैरन्यधिकम् । शेषं यथा काल्याः ।
एवं शेषा अपि=आतपादिकाः देव्यो वाच्याः । सर्वाः पूर्वभवे अरक्षुर्यां
नगर्यामासन् ॥ सू० १२ ॥

॥ इति धर्मकथानां सप्तमो वंगः समाप्तः ॥ ७ ॥

કા વૃત્તાન્ત લિખા જા ચુકા છે-વૈસા હી હૈં । ઉસમેં કુછ અન્તર નહીં છે
(જાવર) પરન્તુ જિન વાતોં મેં અન્તર છે-વહ્ હસ પ્રકાર છે-(પુવ્વભવે)
યહ પૂર્વભવ મેં (અરક્ષુરીય નયરીય સૂરપ્રભસ્સ ગાહાવહસ્સ સૂરસિરીય
મારિયાય સૂરપ્રભા દારિયા સૂરસ્સ અગ્ગમહિસી ઠિઈ અદ્દપલિઓવમં
પંચહિં વાસસપ્પહિં અઽમહિયં સેસં જહા કાલીય એવં સેસાઓ વિ સવ્વાઓ
અરક્ષુરીય જાયરીય ૧૨) અરક્ષુર નામકી નગરી મેં નિવાસ કરનેવાલે
સૂરપ્રભા ગાથાપતિ કી સૂર શ્રી માર્યાં કી કુક્ષિ સે અવતરી થી । હસકા
નામ સૂરપ્રભા થા । યહ સૂર કી અગ્રમહિષી હુઈ । હસકી વહાં પાંચસૌ
વર્ષ સે અધિક અર્ધપલ્ય કી સ્થિતિ છે । ઓર હસકા હસ અવસ્થા કા
સમસ્ત વર્ણન કાલી સમાન હી છે । હસી તરહ કા આતપાઆદિક ૩
દેવિયોં કા મી જીવન વૃત્તાન્ત છે । યે ૩ તીનોં હી દેવિયાં અપને ૨ પૂર્વ-
ભવ મેં અરક્ષુર નગરી મેં જન્મી થી ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

-:સસમવર્ગ સમાસ:-

આતું વણુન કાલી દેવીના વણુન જેવું જ સમજી લેવું જોઈએ, તેમાં કોઈ
પણ જાતનો તફાવત નથી. (જવર) પરંતુ જે વાતમાં તફાવત છે, તે આ
પ્રમાણ છે. (પુવ્વભવે) આ પૂર્વજવમાં

(અરક્ષુરીય નયરીય સૂરપ્રભસ્સ ગાહાવહસ્સ સૂરસિરીય મારિયાય સૂરપ્રભા
દારિયા સૂરસ્સ અગ્ગમહિસી ઠિઈ અદ્દપલિઓવમં પંચહિં વાસસપ્પહિં અઽમહિયં
સેસં જહા કાલીય, એવં સેસાઓ વિ સવ્વાઓ અરક્ષુરીય જાયરીય ૧૨)

અરક્ષુરી નામની નગરીમાં રહેનારી સૂરપ્રભા ગાથાપતિની સૂરશ્રીમાર્યાના
જર્ણથી જન્મ પામી હતી, તેનું નામ સૂરપ્રભા હતું. તે સૂરની અગ્રમહિષી
(પટરાણી) થઈ. તેની ત્યાં પાંચસો વર્ષ કરતાં વધારે અર્ધપલ્યની સ્થિતિ
છે. તેનું આ અવસ્થા વિષેનું બધું વણુન કાલીના જેવું જ છે. એ પ્રમાણે જ
આતપા વગેરે ૩ દેવીઓનું પણ જીવનવૃત્તાંત છે. આ ત્રણે દેવીઓ પોત-
પોતાના પૂર્વજવમાં અરક્ષુર નગરમાં જન્મ પામી હતી. ॥સૂ૦ ૧૨॥

આતપા વર્ગ જમામ.

नगाराख्यामृतवर्षिणी टी० शु०२ ख०८ चंद्रप्रभादिदेवीनां चरित्रवर्णनम् ८३२

अथाष्टमो वर्गः प्रारभ्यते—' अष्टमस्से ' त्यादि ।

मूलम्—अट्टमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू ! जाव चत्तारि
अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अञ्चि-
माली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं
खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं
जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंद-
प्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि
सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीर-
वडेंसेए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंद-
प्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिंसी ठिई अद्धपलिओवमं
पणासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए,
एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरि-
सणामा ॥ सू० १३ ॥ अट्टमो वग्गो समत्तो ॥ ८ ॥

टोका—‘अष्टमस्ते ति-अष्टमस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामी प्राह-एवं खलु हे जम्बू ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रवृत्तानि, तद्यथा=तानि यथा-चन्द्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्विर्मालिः ३, प्रमङ्गुरा ४ । प्रथमस्याध्ययनस्योत्क्षेपकः । एवं

-:अष्टमवर्ग प्रारंभ-:

^१ अहमस्त उक्त्वेवभो ' इत्यादि ।

टीकार्थ—:(अद्वयस्य उक्तेर्वचो-एवं खलु जंबू ! जाव चत्वारि
अज्जयणा पणस्ता तं-जहा-चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा,

આહમેા વર્ગ પ્રારંભ

‘अद्रुमस्य उक्खेवओ, इत्यादि—

(अट्टमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पणत्ता-तं
जहा-चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पसंकरा, पदमस्स अज्झयणस्स उवखे-

૮૬૦

કાતાચર્મકવાક્યસૂત્રો

खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे श्रीमहावीरस्वामिनः समन्तः
सरणं, यावत्-परिपत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये चन्द्रप्रभा देवी
चन्द्रप्रभे विमाने चन्द्रप्रभे सिंहासने शेषं यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तद्वद्

પદમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं
समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं
समएणं चंदप्पभादेवी चंदप्पभंसि विमाणंसि सीहासणंसि सेसं जहा
कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडेंसए उज्जाणे चंद-
प्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया) हे भदंत ! आठवें
वर्ग का उत्क्षेपक कैसा है ? इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा-
स्वामी ने उनसे कहा-हे जंबू ! सुनो तुम्हाने प्रश्न का उत्तर इस प्रकार
है-अमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के चार अध्ययन प्रज्ञप्त किये है
-वे इस प्रकार से हैं-चंद्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिमांली ३, प्रभं-
करा ४, । इनमें हे जंबू ! प्रथम चन्द्रप्रभा अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार
से है-उस काल में और उस समय में राजगृह नामके नगर में श्री
महावीर स्वामी का आगमन हुआ था-। उनसे धर्म का उपदेश प्राप्त
करने के लिये वहां की समस्त धार्मिक जनता उनके पास आई थी प्रभु
ने सब के लिये धर्म का उपदेश सुनाया-सुनाकर सबों ने उनकी यावत्
पर्युपासना की । उस काल और उस समय में चंद्रप्रभा देवी जो कि

વઓ-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव
परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभादेवी चंदप्पभंसि विमाणंसि
चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए
भंडीरवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया)

हे भदन्त ! आठमा वर्गનો ઉત્તેષક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને
કહ્યું કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે અમણ
લગવાન મહાવીરે આ વર્ગનાં ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે, તે આ પ્રમાણે
છે-ચંદ્રપ્રભા ૧, જ્યોત્સ્નાભા ૨, આર્ચિમાલી ૩, પ્રભંકરા ૪. હે જંબૂ !
આ ચારેમાં પહેલા ચંદ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્તેષક આ પ્રમાણે છે કે તે
કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં શ્રી મહાવીર સ્વામીતું આગમન
થયું તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાંભળવા માટે ત્યાંની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યાં
આવી. પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળાવ્યો. સાંભળીને બધાએ તેમની યાવત્
પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે ચંદ્રપ્રભા દેવી-કે જે ચંદ્રપ્રભ

શ્રમનારધમાંમૃતવર્ષિણી કીકા મુ૦૨૪૦૮ ચન્દ્રપ્રભાદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૫૧

વિજ્ઞેયમ્, નવરં=વિશેષસ્ત્યપમ્-પૂર્વભવે મથુરાયાં નગર્યાં મળ્ડીરાવતંસકબુદ્યાનમ્, ચન્દ્રપ્રભો ગાથાપતિઃ, ચન્દ્રશ્રીર્માયા, ચન્દ્રપ્રભા દારિકા, ચન્દ્રસ્વાગ્રમહિષી, સ્થિતિરર્ધપલ્યોપમં પચાસદ્વિર્વપદસૈરભ્યધિકમ્। શેષં યથા કાલ્યાઃ। એવં

ચંદ્રપ્રભ વિમાન મેં રહતી થી ઓર ચંદ્રપ્રભ સિંહાસન પર બેઠતી થી-શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો વંદના કરને એવં ઉનસે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનને કે લિયે ઉનકે નિકટ આઈ-। હસકે બાદ કા હસકા વૃત્તાન્ત કાલીદેવી કે વૃત્તાન્ત જૈસા હી હૈ। ઉસમેં કોઈ અન્તર નહી હૈ। જહાં અન્તર હૈ-ઉસકા સુલાશા હસ પ્રકાર હૈ-પૂર્વભવ મેં યહ મથુરા નગરી મેં જન્મી થી। વહાં મંડીરાવતંસક ઉદ્યાન થા। ઉસ નગરી મેં ચંદ્રપ્રભ નામ કા ગાથાપતિ રહતા થા। ઉસકી ભાર્યા થી જિસકા નામ ચંદ્રશ્રી થા। ઉનકે યહાં યહ ચંદ્રપ્રભા નામકી પુત્રી થી। યહ ચન્દ્ર કી અગ્રમહિષી બની। (ઠિઈ અદ્વપલિઓવમં, પળ્ળાસાણ વાસતહસ્સેઈ અબ્મહિયં સેસં જહા કાલીએ એવં સેસાઓવિ ચંદસ્સ અગ્રમહિસી) પચાસ હજાર વર્ષ સે અધિક હસકી સ્થિતિ આધેપલ્ય કી હૈ। હસકે બાદ કા હસકા જીવન વૃત્તાન્ત કાલી દારિકા કે જીવન વૃત્તાન્ત જૈસા હી જાનના ચાહિયે। હસી તરહ ડ્યોત્સનામા આદિશેષ ૩ દેવિયોં કે સંબન્ધ કો ઊકર જો અધ્યયન કહે ગયે હૈ-વે જાનના ચાહિયે યે સબ ડ્યોત્સનામા

વિમાનમાં રહેતી હતી અને ચંદ્રપ્રભ વિમાનમાં બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વંદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે આવી. તેના પછીતું તેનું વૃત્તાંત કાલી દેવીના વૃત્તાંત જેવું જ છે તેમાં કોઈ પણ જાતનો તક્ષવત નથી, જ્યાં તક્ષવત છે-તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમાં તે મથુરા નગરીમાં જન્મી હતી, ત્યાં મંડીરાવતંસક ઉદ્યાન હતું. તે નગરીમાં ચંદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. ચંદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનું નામ હતું. તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી. આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ.

(ઠિઈ અદ્વપલિઓવમં, પળ્ળાસાણ વાસતહસ્સેઈ અબ્મહિયં સેસં જહા કાલીએ એવં સેસાઓવિ ચંદસ્સ અગ્રમહિસી)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતાં આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે. એના પછીતું આનું જીવન વિષેનું વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવું જ સમજી લેવું જોઈએ. આ પ્રમાણે જ્યોત્સનામા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સંબંધને લઈને જે અધ્યયનો કહેવામાં આવ્યાં છે તેમને પણ સમજી લેવાં જોઈએ.

૮૪૨

જાતાચર્મકથાજ્ઞપ્તૈ

શેષાઃ=જ્યોત્સ્નાભાદિ દેવ્યોઽપિ વિજ્ઞેયાઃ । સર્વાઃ પૂર્વભવે મથુરાયાં નગર્યાં
જાતાઃ, પાર્શ્વપ્રભુસમીપે ચ પ્રવ્રજિતાઃ । માતાપિતરોઽપિ દુહિતૃસદૃશનામાનઃ ॥ સૂ. ૦૧૩ ॥

इति धर्मकथानामाष्टमो वर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमो वर्गः प्रारभ्यते—‘ णवमस्स ’ इत्यादि ।

મૂલ્ય-ણવમસ્સ ઉઠ્ઠવેવઓ, એવં સ્વલુ જંબૂ ! જાવ અટ્ટુ-
અઙ્ગયણા પળ્લણ્ણા, તં જહા-પડમા સિવા સઈ અંજુ રોહિણી
ણવમિયા, અચલા અચ્છરા, પઢમઙ્ગયણસ્સ ઉઠ્ઠવેવઓ, એવં
સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે સમોસરણં
જાવ પરિસા પઙ્ગુવાસઈ, તેણં કાલેણં તેણં સમણં પડમાવઈ
દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમવડેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ
પડમંસિ સીહાસણંસિ જહા કાલોણ એવં અટ્ટુવિ અઙ્ગયણા
કાલીગમણં નાયઠ્ઠા, ણવરં સાવર્થીણ દો જણીઓ હત્થિણા-
ઉરે દોજણીઓ કંપિલ્લપુરે દોજણીઓ સામેયનયરે દોજણીઓ
પડમે પિયરો વિજયા માયરાઓ સઠ્ઠાઓઽવિ પાસસ્સ અંતિણ
પઠ્ઠવિયાઓ સક્કસ્સ અગ્ગમહિસીઓ ઠિઈ સત્ત પલિઓવમાઈ
મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિંતિ જાવ અંતં કાહિંતિ ॥ સૂ. ૦૧૪ ॥

॥ णवमो वर्गो समप्तो ॥ ९ ॥

આદિ દેવિયાં પૂર્વભવ મેં (મહુરાણ ણયરીણ) મથુરા નગરી મેં ઉત્પન્ન
હુઈ ઔર પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કે સમીપ દીક્ષિત હુઈ । (માયા પિયરો વિઞ્ઞ ધૂયા
સરિસણામા) इन पुत्रियों का नाम वैसा ही नाम इनके माता पिता का है ।

—:મહાવર્ગ સમાપ્ત:-

આ અર્ધી જ્યોત્સ્નાભા વગેરે દેવીઓ પૂર્વભવમાં (મહુરાણ ણયરીણ) મથુરા
નગરીમાં ઉત્પન્ન થઈ અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી દીક્ષિત થઈ. (માયાપિયરો
વિઞ્ઞ ધૂયા સરિસણામા) આ પુત્રીઓનાં નામો જેવાં જ તેમનાં માતાપિતાઓનાં
નામો પણ છે.

આઠમો વર્ગ સમાપ્ત.

ભાગવારંભમાનુસંધાન ટીકા શ્રુત ૨ વં ૧ પદ્માદિદેવોનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૪૩

ટીકા—‘જવમસ્સે’તિ-નવમસ્ય વર્ગસ્યોત્કેષકઃ । એવં સ્વલુ હે જંબૂઃ ! યાવત્-અષ્ટ-અધ્યયનાનિ પદ્ધતાનિ, તથા-પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩ અંજૂઃ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અવલા ૭, અપ્સરાઃ ૮ । એષ પ્રથમાધ્યયનસ્યોત્કે-

—:નવમવર્ગ પ્રારંભ:—

જવમસ્સ ઉક્તેવઓ હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ:—(જવમસ્સ ઉક્તેવઓ-એવં સ્વલુ જંબૂ ! જાવ અદ્વ અજ્ઞ-યણા પળ્લતા-તં જહા-પડમા, સિવા, સર્દ, અંજૂ, રોહિણી, જવમિયા, અવલા, અચ્છરા, -પદ્મજ્ઞયણસ્સ ઉક્તેવઓ-એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે સમોસરણં જાવ પરિસા પજ્જુવાસહ, તેણં કાલેણં તેણં સમણં પડમાવર્દે, દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમવહેસેવ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ પડમંસિ-સીહાસણંસિ જહા કાલીણ એવં અદ્વિ અજ્ઞ-યણા કાલીગમણં નાયઠ્ઠા) હે ભદ્રંત ! નૌવે વર્ગે કા ઉત્કેષક કિસ પ્રકાર સે હૈ ? હસ પ્રકાર જંબૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કરને પર સુધર્મા સ્વામી ડનસે કહતે હૈ કિ હે જંબૂ ! સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ તરહ સે હૈ-શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને હસ વર્ગે કે યાવત્ આઠ અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે-વે હસ પ્રકાર સે હૈ-પદ્મા ૧, શિવા, ૨, શચી ૩, અંજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અવલા ૭, ઓર અપ્સરા । ડનમે હે જંબૂ ! પ્રથમ

નવમે વર્ગ પ્રારંભ.

(જવમસ્સ ઉક્તેવઓ-એવં સ્વલુ જંબૂ ! જાવ અદ્વ અજ્ઞયણા પળ્લતા-તં જહા પડમા, સિવા, સર્દ, અંજૂ, રોહિણી, જવમિયા, અવલા, અચ્છરા, પદ્મજ્ઞયણસ્સ ઉક્તેવઓ-એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે સમોસરણં જાવ પરિસા પજ્જુવાસહ, તેણં કાલેણં તેણં સમણં પડમાવર્દે દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમ-વહેસેવ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ પડમંસિ-સીહાસણંસિ જહા કાલીણ એવં અદ્વ વિ અજ્ઞયણા કાલી ગમણં નાયઠ્ઠા)

હે ભદ્રંત ! નવમા વર્ગનો ઉત્કેષક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે—શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગનાં યાવત્ આઠ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં છે, તે આ પ્રમાણે છે:—પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩, અંજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અવલા ૭ અને અપ્સરા ૮.

૮૪૪

જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસ્વે

પકઃ । एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्= भगवतो महावीरस्य समागमनमभूत्, यावत्-परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पद्मावती देवी, सौधर्मे कल्पे पद्मावतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां पद्मे सिंहासने, यथा काल्याः । एवम् अष्टापि अध्ययनानि कालोगमकेन=काली-देवीसदृशपाठेन ज्ञातव्यानि, नवरं=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे श्रावस्त्यां नगरी 'दोज-

अध्ययन का उत्क्षेप क इस प्रकार से है—उस काल में और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का अगमन हुआ था । लोगों को जब इनके शुभागमन की खबर पड़ी तो वे सब के सब उनको वंदना करने के लिये और उनसे धर्मोपदेश का काम लेने के लिये उनके समीप पहुँचे । प्रभु ने आये हुए परिषद् को श्रुतचारित्ररूप धर्म का उपदेश दिया । उपदेश सुनने के बाद उसने प्रभु की यावत् पर्युपासना की । उस काल में और उस समय में पद्मावती देवी जो कि सौधर्मकल्प में पद्मावतंसक विमान में, सुधर्मा सभामें रहती थी और जिसके सिंहासन का नाम पद्म था श्रमण भगवान् महावीर को वंदना करने और उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये वहाँ आई । इसके बाद का सम्बन्ध कालीदेवी का जैसा वर्णन पहिले किया गया है वैसा ही जानना चाहिये । इसी तरह से अवशिष्ट सात अध्ययन भी जानना चाहिये । इन आठों ही अध्ययनों का पाठ जैसा कालीदेवी का पाठ है वैसा ही है । कोई अन्तर नहीं है (णवरं) परन्तु जहाँ अन्तर है वह—

હે જંબૂ ! આમાં પહેલા અધ્યયનનો ઉત્કેષક આ પ્રમાણે છે—તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું. લોકોને તેમના શુભાગમનની જ્યારે બાજુ થઈ ત્યારે તેઓ સર્વે તેમને વંદન કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે ગયા. પ્રભુએ આવેલા સર્વ લોકોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળાવ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને લોકોએ પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે પદ્માવતી દેવી—કે જે સૌધર્મ કલ્પમાં, પદ્માવતંસક વિમાનમાં સુધર્મા સભામાં રહેતી હતી અને જેના સિંહાસનનું નામ પદ્મ હતું—શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન કરવા અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા ત્યાં આવી. એના પછીનું વર્ણન પહેલાં કરવામાં આવેલા કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ સમજ લેવું જોઈએ. આ પ્રમાણે જ બાકીનાં સાત અધ્યયનો વિષે પણ બાણી લેવું જોઈએ. એ આઠે આઠ અધ્યયનોનો પાઠ કાલી દેવીના જેવો જ

ધનગારધર્મામૃતવર્ષિણી ટી૦ શ્રુ. ૨ ઘ૦ ૧ પદ્માદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૪૫

ળીઓ ' દ્વે જન્યૌ=પદ્મા-શિવામિથે દ્વે દારિકે સંજાતે । एवं हस्तिनापुरे द्वे जन्यौ
श्रुति:-अञ्जू: चेति, काम्पिल्यपुरे द्वे जन्यौ रोहिणीनवमिकानाम्न्यौ, साकेतनगरे
द्वे जन्यौ अचला-अप्सरा इति संजाते । सर्वेषाम् ' पउमे ' पद्म: पद्मेति नामान:
पितर:, विजया=विजयानाम्नो मातर आसन् । सर्वा अपि पार्श्वस्य=पार्श्वप्रभोर-
न्तिके प्रव्रजिता:, शक्रस्याग्रमहिष्यो जाता: । तासां स्थिति: सप्तपल्योपमानि ।
एता: सर्वा महाविदेहे वर्षे सेत्स्यन्ति यावत्सर्वदु:खानामन्तं करिष्यन्ति ॥सू० १४॥

॥ इति धर्मकथानां नवमो वर्ग: समाप्त: ॥ ९ ॥

इस प्रकार से है—(सावत्थीए दोजणीओ) पद्मा और शिवा ये दो
कन्याएँ पूर्व भवमें श्रावस्ती नगरी में उत्पन्न हुईं (हस्तिणाउरे दोजणी-
ओ, कम्पिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनगरे दो जणीओ पउमे पियरो
विजयाभायराओ सब्बाओवि पासस्स अंतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्ग-
महिसीओ ठिई सत्तपलिओवमाई महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव
अंतं कांहिति ' १४') श्रुति और अंजू ये दो हस्तिनापुरमें, रोहिणी,
नवमिका ये दो काम्पिल्यपुरमें, अचला एवं अप्सरा ये दो साकेत नगर
में, उत्पन्न हुईं । इन सब कन्याओंके पिता का नाम पद्म और माता का
नाम विजया था । ये सब कन्याएँ पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुईं
हैं । शक्र की अग्रमहिषियां बनी हैं । इन की स्थिति सातपल्य थी । ये

છે તેમ સમજી લેવું જોઈએ. તેમાં કોઈ પણ બીજાનો તફાવત નથી. (ગવર')
પરંતુ બધાં તફાવત છે—તે આ પ્રમાણે છે (સાવત્થીએ દોજળીઓ) પદ્માવતી
અને શિવા આ બંને કન્યાઓ પૂર્વભવમાં શ્રાવસ્તી નગરીમાં ઉત્પન્ન થઈ.

(હસ્તિનાઉરે દો જળીઓ, કંપિલ્લપુરે દો જળીઓ સાગેય નગરે દો જળીઓ
પઝમે પિયરો વિજયા ભાયરાઓ સબ્બાઓવિ પાસસ્સ અંતિએ પવ્વડયાઓ સક્કસ્સ
અગ્ગમહિસીઓ ઠિઈ, સત્ત પલ્લિઓવમાઈ મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિતિ જાવ અંતં
કાહિતિ " ૧૪ " ।)

શ્રુતિ અને અંજૂ આ બંને હસ્તિનાપુરમાં, રોહિણી અને નવમિકા આ
બંને કાંપિલ્યપુરમાં, અચલા અને અપ્સરા આ બંને સાકેત નગરમાં ઉત્પન્ન
થઈ. આ બધી કન્યાઓના પિતાનું નામ પદ્મ અને માતાનું નામ વિજયા હતું.
આ બધી કન્યાઓ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે અને શકની
અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) બની છે. એમની સ્થિતિ સાત પલ્લ્ય જેટલી

અથ દશમો વર્ગઃ પ્રારમ્ભ્યતે-દસમસ્ત ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-દસમસ્ત ઉત્તરેવઓ, એવં સ્વલુ જંબૂ ! જાવ અટ્ટ
અજ્ઞયણા પળણત્તા, તં જહા-કળ્હા ય કળ્હરાઈ રામા તહરામ-
રક્ષિયા વસૂ ય । વસુગુત્તા વસુમિત્તા વસુંધરા ચેવ ઈસાણે ॥૧॥
પદમજ્ઞયણસ્ત ઉત્તરેવઓ, એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણં
સમણં કળ્હાદેવી ઈસાણે કપ્પે કળ્હવડેસણ વિમાણે સભાણ
સુહમ્માણ કળ્હંસિ સીહાસણંસિ સેસં જહા કાલીણ એવં અટ્ટવિ
અજ્ઞયણા કાલીગમણં ણેયવ્વા, ણવરં પુઠ્ઠભવે વાણારસીણ
નયરીણ દો જળીઓ રાયગિહે નયરે દો જળીઓ સાવસ્થીણ
નયરીણ દો જળીઓ કોસંવીણ નયરીણ દો જળીઓ, રામે
પિયા ધમ્મા માયા સવ્વઓઽવિ પાસસ્ત અરહઓ અંતિણ પઠ્ઠ-
હયાઓ પુપ્ફચૂલાણ અજ્ઞાણ સિસ્સિણીયત્તાણ ઈસાણસ્ત અગ્ગ-
મહિસીઓ ટિઈ ણવ પલિઓવમાઈં મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિ-
હિંતિ બુજ્જિહિંતિ મુચ્ચિહિંતિ સવ્વદુક્ખાણં અંતં કાહિંતિ । એવં
સ્વલુ જંબૂ ! ણિત્તરેવઓ દસમવગ્ગસ્ત ॥ સૂ૦ ૧૫ ॥

॥ દસમો વર્ગો સમાપ્તો ॥ ૧૦ ॥

ટીકા—‘ દસમસ્સે ’ તિ દશમસ્ય ઉત્તરેવઓ : । એવં સ્વલુ હે જંબૂ : । યાવત્
અષ્ટ-અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તદ્વથા-તાનિ ગાથયા પ્રદર્શ્યન્તે ‘ કળ્હે ’ ઇત્યાદિ ।

સર્વ મહાવિદેહ ક્ષેત્ર સે સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરેગી-યાવત્ સર્વ દુઃખો
કા અન્ત કરેગી ॥ સૂ૦ ૧૪ ॥

॥ નવમવર્ગ સમાપ્ત ॥

છે. આ અધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાંથી સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત્ સર્વ
દુઃખોનો અન્ત કરશે. ॥ સૂ૦ ૧૪ ॥

નવમો વર્ગ સમાપ્ત.

જનનારધમામૃતવર્ષિણી કી૦ ૦૨ ૫૦૧૦ કૃષ્ણાદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણનમ્ ૮૪૭

“કૃષ્ણા ૧ ચ કૃષ્ણરાજિઃ ૨, રામા ૩ તથા રામરક્ષિકા ૪ વસુ ૫ વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭, વસુન્ધરા ૮ ચૈવ ર્શાને ॥ ૧ ॥”

તત્તત્ત્રામભિરધ્યયનાનિ પ્રસિદ્ધાનિ । તત્ર પ્રથમાધ્યયનસ્યોત્ત્કેષકઃ । एवं खलु हे जम्बूः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे भगवतः श्रीमहावीर-

॥ दशमवर्ग प्रारंभ ॥

‘દસમસ્સ ઉક્તેવઓ’ ઇત્યાદિ૦ “૧૫”

ટીકાર્થ—(દસમસ્સ ઉક્તેવઓ—এवं खलु जंबू ! जाव अट्ट अज्झयणा पणत्ता—तं जहां-कण्हाय कण्हराई, रामा, तह रामरक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चैव ईसाणे “१”-पढमज्झयणस्स उक्ते-वओ-एवं खलु जंबू !) हे भदन्त श्रमण भगवान महावीर ने दशवें वर्गका उत्क्षेपक किस प्रकार से कहा है ? इस तरह का जंबू ! स्वामी के प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—श्रमण भगवान् महावीरने इस दशवें वर्ग के आठ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं—वे ये हैं—कृष्णा १, कृष्णराजि २, रामा ३, रामरक्षिका ४, वसू ५, वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, और वसुंधरा । इन २ नामों द्वारा इन २ नाम वाले अध्ययन प्रसिद्ध हुए हैं । इनमें प्रथम अध्ययन का हे जंबू ! उत्क्षेपक

દશમા વર્ગ પ્રારંભ—

‘દસમસ્સ ઉક્તેવઓ’ ઇત્યાદિ—

(દસમસ્સ ઉક્તેવઓ—এवं खलु जंबू ! जाव अट्ट अज्झयणा पणत्ता—तं जहां-कण्हाय कण्हराई, रामा तह रामरक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चैव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्स उक्तेवओ-एवं खलु जंबू !)

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા વર્ગનો ઉત્તેષક કેવી રીતે કહ્યો છે ?

આ પ્રમાણેના જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને તેના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે. શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દશમા વર્ગના આઠ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે—કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણારાજિ ૨, રામા ૩, રામરક્ષિકા ૪, વસૂ ૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭ અને વસુન્ધરા ૮.

આ ઉક્ત બુદ્ધ બુદ્ધ નામો વડે એ જ નામના બુદ્ધ બુદ્ધ અધ્યયનો પ્રસિદ્ધ થયાં છે. હે જંબૂ ! આ બધામાંથી પહેલા અધ્યયનનો ઉત્તેષક

स्वामिनः समवसरणं यावत् परिषत् पर्युपास्ते, तस्मिन् काले तस्मिन् समये कृष्णा-
देवी ईशाने कल्पे कृष्णावतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां, कृष्ण सिंहासने, शेषं

इस तरह से हैं—(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव
परिसा पज्जुवासइ) उस काल एवं उस समयमें राजगृह नगरमें भगवान्
महावीर का शुभागमन हुआ था। परिषद् उन को वंदना आदि करने
के लिये उनके समीप पहुँची। प्रभुने सबके लिये धर्म का उपदेश
सुनाया। लोगोंने उपदेश सुनकर प्रभु की पर्युपासना की (तेणं कालेणं
तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए
सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालिए एवं अविट्ठाअज्झ-
यणा कालीगमएणं जेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो
जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, को
संवीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स
अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फाचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसा-
णस्स अगमहिंसीओ ठिई, णवपालिओवमाइं, महाविदेहे वासे सिज्झि-
हिति, बुज्झिहिति, मुच्चिहिति, सव्वदुक्खाणं, अंतंकार्हिति, एवं खलु
जंबू ! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स) उसी काल और उसी समय वहाँ
कृष्णादेवी जो ईशान कल्प में कृष्णावतंसक विमान में रहती थीं—और

आ प्रभावे छे. (तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं, जाव परिसा
पज्जुवासइ) ते काणे अने ते समये राजगृह नगरमां भगवान महावीरनुं
शुभागमन थयुं. तेभने वंदन करवा भाटे परिषद तेभनी पासै पछींथी. सौने
प्रभुओ धर्मापदेश संभज्जाओ. धर्मापदेश संभज्जीने परिषदे प्रभुनी पर्युपासना करी.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे
सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालिए एवं अविट्ठा अज्झयणा
कालीगमएणं जेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे
नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ
रामे पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फ
चूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अगमहिंसीओ ठिई, णवपालि ओव-
माइं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति, मुच्चिहिति, सव्वदुक्खाणं, अंतं
कार्हिति एवं खलु जंबू ! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स)

ते काणे अने ते समये त्यां कृष्णा देवी-के के ईशान-कल्पमां कृष्णा-
वतंसक विमानमां रहती छती अने जेनी संभज्जनुं नाम सुधर्मां तेभज्ज
सिंहासननुं नाम कृष्णा छतुं—आवी अनेना पछीने पाठ कासी देवीना

બાળારાજાનાસુતવર્ણી ૨૦ મુ. ૨ વ. ૧૦ કૃષ્ણાદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણન ૮૪૯

યથા કાર્યાઃ । એવમષ્ટા કૃષ્ણરાજિપ્રભૃતીની અધ્યયનાની કાલીગમકેન=કાલી-
દેવીસદશપાઠેન જ્ઞાતક્યાની નવર=વિશેષઃ યત્-પૂર્વભવે વાણારસ્યાં નગર્યાં દ્વે=
કૃષ્ણ-કૃષ્ણરાજિનામ્ન્યૌ જન્યૌ=દારિકે સંજાતે । एवं રાજગૃહે નગરે દ્વે=વસુ-
વસુગુપ્તા નામ્ન્યૌ જન્યૌ, કૌશામ્ન્યાં નગર્યાં દ્વે=વસુમિત્રા-વસુન્ધરા નામ્ન્યૌ
જન્યૌ=દારિકે સમુત્પન્ને । સર્વાસાં રામઃ=રામામિથઃ પિતા, ધર્મા=ધર્માડમિથા
માતા । સર્વા અપિ પાર્શ્વસ્માર્હતોડન્તિકે પ્રવ્રજિતાઃ, પુષ્પચૂલાયા આર્યાયાઃ શિષ્યા-
ત્વેન પાર્શ્વપ્રભુણા સ્વયં પ્રદત્તાઃ । ईशानस्य=ईशानेन्द्रस्य अग्रमहिष्यो जाताः । तत्र
तासां स्थितिर्नव पत्न्योपमानि वर्त्तते । ततश्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे समुत्पद्य सेत्स्यन्ति,
जिसकी सभा का नाम सुधर्म तथा सिंहासन का नाम कृष्ण था आई ।
इस के आगे का पाठ कालीदेवी के वर्णन में जैसा पाठ कहा गया है
वैसा ही है । इसी तरह से कृष्णराजि प्रभृति अध्ययन भी-कालीदेवी
वर्णन में पठित पाठ के सदृश ही जानना चाहिये । कालीदेवी के पाठ
में और इन आठ अध्ययनोक्त पाठों में जो अन्तर है वह इस प्रकार
से है-पूर्वभव में वाणारसी नगरीमें कृष्णा और कृष्णराजि ये दो जनी
-उत्पन्न हुईं, राजगृहनगर में रामा और रामरक्षिका श्रावस्ती नगरी में
वसु, वसुगुप्ता और कौशांबी नगरी में वसुमित्रा एवं, वसुंधरा उत्पन्न
हुईं । इन सब के पिता का नाम राम और माताओं का नाम धर्मा था ।
ये सबकी सब पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुईं । प्रभुने इन सब
को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या की शिष्यारूप से दिया । ये सब
इस ईशानेन्द्रकी अग्रमहिषी हुईं । वहां इनकी स्थिति नौ पत्न्योपम की
है । वहां से चक्कर ये महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होंगी और वहीं से

વર્ણનમાં જે પ્રમાણે પાઠ કહેવાયો છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવો
એમજો. આ પ્રમાણે જ કૃષ્ણરાજિ વગેરે અધ્યયનો પણ કાલી દેવીના
પાઠમાં અને આ ઉક્ત આઠ અધ્યયનોના પાઠોમાં જે કંઈ તફાવત છે તે
આ પ્રમાણે છે-પૂર્વભવમાં વાણારસી નગરીમાં કૃષ્ણા અને કૃષ્ણરાજિ
આ બંને ઉત્પન્ન થઈ, રાજગૃહ નગરમાં રામા અને રામરક્ષિકા શ્રાવસ્તી
નગરીમાં વસુ, વસુગુપ્તા અને કૌશાંબી નગરીમાં વસુમિત્રા અને વસુન્ધરા
ઉત્પન્ન થઈ. એમના પિતાનું નામ રામ અને માતાનું નામ ધર્મા હતું. એ
બધીએ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજ્યા શ્રદ્ધ કરી હતી. પ્રભુએ સર્વેને
દીક્ષિત કરીને પુષ્પચૂલા આર્યાને શિષ્યાઓના રૂપમાં સોંપી હતી. એ બધી
ઈશાનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓ થઈ. ત્યાં તેમની સ્થિતિ નવ પત્ન્યોપમની છે.
ત્યાંથી ચલીને એ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ-

८५०

ज्ञाताधर्मकथासूत्रे

भोत्स्यन्ति, भोत्स्यन्ति सर्वं दुःखानामन्तं करिष्यन्ति । एवं खलु हे जम्बू ! निक्षेपको दशमवर्गस्व ॥ सू० १५ ॥

॥ इति धर्मकथानां दशमो वर्गः समाप्तः ॥ १० ॥

मूलम्--एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णसे ॥

॥ धम्मकहासुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं ॥

॥ णायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

टीका—सुधर्मास्वामी कथयति—‘ एवं खलु ’ इत्यादि । एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण स्वयं सम्बुद्धेन पुरुषोत्तमेन

सिद्ध पद की भोक्ता बनेंगी केवलज्ञानरूप आलोक से समस्त चराचर पदार्थों की ज्ञाता बनेंगी । द्रव्य एवं भावरूप समस्त कर्मों से छूटजावेगी इस तरह ये वहीं से समस्त दुःखों का अन्त करने वाली होंगी । इस प्रकार हे जंबू ! यह दशावेवर्ग का निक्षेपक है ।

॥ दसमवर्ग समाप्त ॥

‘ एवं खलु जंबू ! ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णसे) अब जंबूस्वामी से श्री सुधर्मास्वामी कहते हैं कि वे

५६ भेजवथे जे जधी केवणज्ञान रूप आबोडथी सभस्त थर अने अथर पदार्थानुं ज्ञान भेजवथे. द्रव्य अने भावरूप जधा कर्मोथी मुक्ता धर जथे. आ प्रमाजे जे जधी त्याथी न जधा दुःखोने अंत करनारी थथे. आ प्रमाजे हे जंबू ! आ दशमा वर्गोने निक्षेपक छे.

दशमो वर्ग समाप्त.

एवं खलु जंबू ! इत्यादि—

(एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं धम्म कहाणं अयमट्ठे पण्णसे)

અનગારધર્મામૃતવર્ષિની કી૦ મુ.૨ વ૦ ૧૦ કૃષ્ણાદિદેવીનાં ચરિત્રવર્ણનમ ૮૧

યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેયં સ્થાનં સંપાન્તેન ધર્મકથાનામયમર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ॥

॥ ધર્મકથાનામકો દ્વિતીયઃ શ્રુતસ્કંધઃ સમાપ્તઃ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकण्ठितकलितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यमैकग्रन्थनिर्मापक-शदिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
प्रतिकूलहापुरराजप्रदत्त- ' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बाह्यप्रज्ञावारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-
प्रतिविरचितवर्षि-ज्ञाताधर्मकथासूत्रस्यामंगारधर्मांशतवर्षि-
ण्याख्या व्याख्या समाप्ता ॥

જાનૂ ! આદિકર, તીર્થંકર, સ્વયં સંબુદ્ધ ગુરુષોત્તમ, યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ એસે અમણ ભગવાન મહાવીર ને ધર્મકથા નામક દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ કા પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞસ કિયા હૈ । (ધમ્મ-કહાસુયક્સંજો સમસો દસહિં ધર્મોહિં) ધર્મકથા નામકા યહ દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ દશવર્ગોં મેં સમાપ્ત હુઆ હૈ । હસ તરહ (જાયાધમ્મકહાઓ સમસાઓ) યહ જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્ર સમાપ્ત હુઆ ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“ જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્ર ” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિની વ્યાખ્યા સમાપ્ત ॥

હેવે જાનૂ સ્વામીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જાનૂ ! આદિકર તીર્થંકર, સ્વયં સંબુદ્ધ, પુરુષોત્તમ યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામના જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરી ચૂકેલા એવા અમણ ભગવાન મહાવીર ધર્મકથા નામના બીજા શ્રુતસ્કંધને પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રજ્ઞપિત કર્યો છે. (ધમ્મકહા સુયક્સંજો સમસો દસહિં ધર્મોહિં) ધર્મકથા નામનો આ બીજો શ્રુતસ્કંધ દશ વર્ગોમાં પૂરો થયો છે. આ પ્રમાણે (જાયાધમ્મકહાઓ સમસાઓ) આ જ્ઞાતા ધર્મકથાક સૂત્ર પૂરું થયું છે. શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્ર ” ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિની વ્યાખ્યા સમાપ્ત

—:શાસપદ્યસ્તિ:—

કાઠિયાવાડદેશેઽસ્તિ, રાજકોટપુરે શુભે
 કોઠારીહરગોવિન્દ કાકાનામ પ્રસિદ્ધિવાન્ ।
 તસ્યાસ્તિભાર્યાપરમા સુશીલા, ધર્માનુરક્તાગૃહકાર્યદક્ષા ।
 શાન્તિમિયા દીનદયાર્દ્રમાવો, નામ્ના પ્રસિદ્ધા કિશ્કરુન્મિમીસા ॥ ૨ ॥
 દિનેષ્વચન્મસ્તનયોઽસ્તિ યસ્ય, કુલસ્ય દીપઃ સત્સત્સ્વધાવઃ ।
 કન્યા સુશીલા સરલા જિતુશ્ચ-સદા-પ્રમોદાચ ચકાસ્તિપિત્રોઃ ॥ ૩ ॥
 વ્યાખ્યાનભવને તસ્ય, જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્રકે ।
 ઘાસીલાલેન મુનિના કૃતા ટીકા સતાં મુદે ॥ ૪ ॥
 દ્વિસહસ્રચતુઃ સંસ્કર્યે, વિક્રમાન્દે સ્વૌ દિને ।
 માઘે શુષ્કલે ચ પશ્ચમ્યાં, સમ્પૂર્ણાં ધર્મેવર્ણિની ॥ ૫ ॥

કાઠિયાવાડદેશ મેં રાજકોટ નામકા અચ્છા નગર હૈ । ઉસ મેં કોઠારી હરગોવિન્દકાકા રહતે હૈ । इनका सुशीलभार्याका नाम रुक्मिणी हें । यह गृहकार्य में बहुत चतुर है । धर्मात्मा है, शान्ति प्रिया है एवं दीन दुःखियों के ऊपर सदा दया भाव रखती है । काका का कुल दीपक एक दिनेशचन्द्र नाम का पुत्र और जितु नाम की-कन्या है । वे दोनों माता पिता के प्रमोद के स्थान भूत हैं ।

સુષ્ઠ ઘાસીલાલ મુનિરાજ ને ણ્હી કે વ્યાખ્યાન ભવન મેં ઠહર કર વિક્રમ સંવત્ ૨૦૦૪ દિન રવિવાર માઘશુક્લા પંચમી કે દિન જ્ઞાતા ધર્મકથાસૂત્ર, સૂત્ર કી યહ ટીકા રચકર સમાપ્ત કી હૈ ।

કાઠિયાવાડ પ્રાંતમાં રાજકોટ નામે એક સરસ રમ્ય નગર છે. તેમાં કોઠારી હરગોવિન્દ કાકા રહે છે. તેમની સુશીલ પત્નીનું નામ રુક્મિણી છે. તેઓ ગૃહકાર્યમાં બહુ જ ચતુર છે, ધર્માત્મા તેમજ શાંતિ પ્રિયાપણુ છે. તેઓ ગરીબ દુઃખીઓના ઉપર હમેશાં દયાભાવ રાખે છે. કાકાનો કુળદીપક એક દિનેશચંદ્ર નામે પુત્ર અને જિતુ નામે એક કન્યા છે. આ બંને માતા-પિતાનાં પ્રમોદનાં આશ્રયસ્થાનો છે.

મેં ઘાસીલાલ મુનિરાજે તેમના જ વ્યાખ્યાન ભવનમાં રહીને વિક્રમ સંવત્ ૨૦૦૪ રવિવાર માઘ શુક્લા પંચમીના દિવસે જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્રની આ ટીકા રચીને પૂરી કરી છે.



ભુવના મુક્ત માર્ગ-દોશ મુદ્રણ
જોડાના રોડ, અમદાવાદ.